व्यवहार से भ्रष्टता में रहना चाहता है और वही नियम उसको जो अपने शुभ कर्म से पथ प्रदर्शन पर आना चाहता है पथ प्रदर्शन देता है वह ईश्वर प्रभुत्व प्राप्त और बुद्धि वाला है (अर्थात पथ प्रदर्शन व पथ भ्रष्टता व्यक्ति के अपने कर्म पर है जैसी करनी वैसी भरनी)(4)

اپنے عمل سے گمراہی میں رہنا چاہتا ہے اور وہی قانون اس کو جو اپنے نیک عمل سے ہدایت پر آنا چاہتا ہے ہدایت دیتا ہے وہ اللہ غالب حکمت والا ہے (یعنی ہدایت گمراہی انسان کے اپنے عملوں پر ہے جیسی کرنی ویسی بھرنی) (۴)

हम इससे पहले मूसा अ0 को भी अपने चिन्हों के साथ प्रेषित कर चुके है, उसे भी हमने आदेश दिया था कि अपनी जाति को नास्तिकता के अन्धकारों से निकाल कर धर्म के प्रकाश में ला और उन्हें ईश्वरीय इतिहास के शिक्षा प्रद घटनांए सुनाकर उपदेश कर उन ऐतिहासिक घटनाओ में बड़े प्रमाण है, हर उस व्यक्ति के लिए जो धैर्य और आज्ञाकारी करने वाला हो (5)

ہم اس سے پہلے موسیٰ کو بھی اپنی نشانیوں کے ساتھ بھیج چکے ہیں اُسے بھی ہم نے حکم دیا تھا کہ اپنی قوم کو کفر کی تاریکیوں سے نکال کر ایمان کی روشنی میں لا۔ اور انہیں تاریخ الٰہی کے سبق آموز واقعات سنا کر نصیحت کر اُن تاریخی واقعات میں بڑی نشانیاں ہیں ہر اس شخص کے لئے جو صبر اور فرمانبرداری کرنے والا ہو (۵)

और (देखो) जब मूसा ने (उपदेश करते हुए) अपनी जाति से कहा था कि ईश्वर के उपकार को याद करो उसने तुमको फिरऔन वालो (की दासता) से मुक्ति दी थी, वह लोग तुम्हें निकृष्टतम दुख में डालते थे, तुम्हारे पुत्रो को वध कर डालते थे, और तुम्हारी स्त्रीयों (पुत्रीयों) को जीवित रहने देते थे, और इस में तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारी बड़ी परिक्षा थी (6)

اور (دیکھو) جب موسیٰ نے (نصیحت کرتے ہوئے) اپنی قوم سے کہا تھا کہ اللہ کے احسان کو یاد کرو جب اس نے تم کو فرعون والوں (کی غلامی) سے نجات دی تھی۔ وہ لوگ تمہیں بدترین عذاب میں ڈالتے تھے تمہارے بیٹوں کو ذبح کر ڈالتے تھے اور تمہاری عورتوں (لڑکیوں) کو زندہ رہنے دیتے تھے اور اس میں تمہارے رب کی طرف سے تمہاری بڑی آزمائش تھی (۶)

और (उस समय को न भूलो) जब तुम्हारे रब ने (प्राकृतिक नियम की) घोषणा की थी कि यदि (मेरी कृपाओं पर) आज्ञाकारी करोगे और भरपूर श्रम तो मैं तुम्हें और अधिक दूंगा और यदि अवज्ञा करोगे तो (याद रखो) मेरा कष्ट भी कठोर है (7)

اور (اس وقت کو نہ بھولو) جب تمہارے رب نے (قانون فطرت کا) اعلان کیا تھا کہ اگر (میری نعمتوں پر) فرمانبرداری کرو گے اور بھرپور محنت تو میں تمہیں اور زیادہ دوں گا اور اگر نافرمانی کرو گے تو (یاد رکھو) میرا عذاب بھی سخت ہے (۷)

यह है वह ईशवरीय नियम जिससे स्वंय व्यक्ति अपने लिए सम्पन्नता और निर्धनता और भ्रष्टता व पथ प्रदर्शन का मार्ग ग्रहण करता है ईश्वर जबरदस्ती न तो किसी को पथ भ्रष्ट करता है न सत्य मार्ग देता है, न धनी करता है निर्धन बस आदमी का अपना कर्म है जैसी करनी वैसी भरनी-और मूसा ने (स्पष्ट) कह दिया कि यदि तुम और जितने और लोग पृथ्वी पर है सबके सब अवज्ञा करो तो ईश्वर भी लालसा रहित और प्रशंसा योग्य है (8)

یہ ہے وہ قانون الٰہی جس سے خود آدمی اپنے لئے خوشحالی اور بدحالی اور گمراہی وہدایت کا راستہ اختیار کرتا ہے۔ اللہ زبردستی نہ تو کسی کو گمراہ کرتا ہے نہ ہدایت دیتا ہے۔ نہ امیر کرتا ہے نہ غریب بس آدمی کا اپنا عمل ہے جیسی کرنی ویسی بھرنی اور موسیٰ نے (صاف) کہہ دیا کہ اگر تم اور جتنے اور لوگ زمین پر ہیں سب کے سب نافرمانی کرو تو اللہ بھی بے نیاز اور قابل تعریف ہے (۸)

तो क्या तुम तक उन लोगों के समाचार नही पहुंचे जो तुमसे पहले हो चुके है? (निःसंदेह पहुंचे) अर्थात जाति नूह जाति आद और जाति समूद और वह जातियां जो उनके बाद हुइ जिनकी स्थिति ईश्वर के अतिरिक्त कोई नही जानता (अर्थात उनका उल्लेख इतिहास से भी मिट गया) उनके पास उनके ईशदूत उज्ज्वल तर्कों के साथ आए परन्तु उन्होंने एक बात न सुनी और उनका मुख बल से बन्द करना चाहा अपनी शक्ति से और कह दिया कि जो संदेश तुमले कर आए हो, हमें उससे इनकार है, और जिस बात की ओर तुम हमें बुला रहे हो हमें उसमें शंका है, हम उस पर विश्वास नही करते (9)

تو کیا تم تک ان لوگوں کی خبر نہیں پہنچی جو تم سے پہلے ہو چکے ہیں؟ (یقیناً پہنچی) یعنی قوم نوح، قوم عاد اور قوم ثمود اور وہ قومیں جو ان کے بعد ہوئیں جن کا حال اللہ کے علاوہ کوئی نہیں جانتا (یعنی ان کا ذکر تاریخ سے بھی مٹ گیا) ان کے پاس ان کے رسول روشن دلیلوں کے ساتھ آئے لیکن انہوں نے ایک بات نہ سنی اور ان کا منہ زبردستی بند کرنا چاہا اپنی طاقت سے اور کہہ دیا کہ جو پیغام تم لے کر آئے ہو، ہمیں اس سے انکار ہے اور جس بات کی طرف تم ہمیں بلا رہے ہو ہمیں اس میں شک ہے ہم اس پر یقین نہیں کر سکتے (۹)

(यह सुन कर) उन ईशदूतों ने कहा तुम्हें ईश्वर के बारे में शंका है? जो आकाशों और पृथ्वी का उत्पन्न करने वाला है और तुम्हें उसका विधान बुला रहा है कि तम्हारे पापों को वह क्षमा कर दे और तुम्हें एक निश्चित अवधि तक कार्य करने की छूट दे उन लोगों ने उत्तर दिया तुम इसके अतिरिक्त कुछ नही

(یہ سن کر) ان رسولوں نے کہا تمہیں اللہ کے بارے میں شک ہے؟ جو آسمانوں اور زمین کا پیدا کرنے والا ہے اور تمہیں اس کا قانون بلا رہا ہے کہ تمہارے گناہوں کو وہ معاف کر دے اور تمہیں ایک مقررمدت تک کام کرنے کی مہلت دے۔ ان لوگوں نے جواب دیا تم اس کے سوا کچھ

कि हमारी भांति के व्यक्ति हो और चाहते हो कि जिन देवताओं को हमारे पूर्वज पूजते आए हैं उनकी पूजा करने से हमें रोक दो (यदि सच्चे हो तो) कोई स्पष्ट प्रमाण प्रस्तुत करो (10)

نہیں کہ ہماری طرح کے آدمی ہو اور چاہتے ہو کہ جن معبودوں کو ہمارے باپ دادا پوجتے آئے ہیں ان کی پوجا کرنے سے ہمیں روک دو (اگر سچے ہو تو) کوئی واضح دلیل پیش کرو (۱۰)

उनके ईशदूतों ने कहा हां हम मानवता की दृष्टि से तो तुम्हारी ही प्रकार के व्यक्ति हैं, परन्तु अन्तर है (ईश्वर ने हम पर दया की है) वह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है अपने उपकार (ईशदौत्य) के लिए चुन लेता है, हम में यह शक्ति नहीं कि तुम्हें कोई चमत्कार दिखा दें हां यदि ईश्वर का आदेश हो (तो ऐसा भी हो सकता है) और विश्वास लाने वालों को ईश्वर ही पर भरोसा करना चाहिए (11) {20:13,22:52,57, 41:6,12:109,16:43}

ان کے رسولوں نے کہا ہاں ہم بشری لحاظ سے تو تمہاری ہی طرح کے انسان ہیں لیکن فرق ہے (اللہ نے ہم پر فضل کیا ہے) وہ اپنے بندوں میں سے جس کو چاہتا ہے اپنے احسان (نبوت) کے لئے چن لیتا ہے ہم میں یہ طاقت نہیں کہ تمہیں کوئی معجزہ دکھا دیں. ہاں اگر اللہ کا حکم ہو (تو ایسا بھی ہوسکتا ہے) اور ایمان لانے والوں کو اللہ ہی پر بھروسا کرنا چاہیے (۱۱) [۲۰:۱۳:۲۲:۵۲،۵۷:۴۱:۶:۱۲:۱۰۹:۱۶:۴۳]

और हम ईश्वर पर भरोसा क्यों न करें जबकि उसने (जीवन के) सीधे मार्गों पर हमें चलाया है और जो दुख तुम हमें दे रहे हो हम उन पर धैर्य करेंगे (हमारा भरोसा ईश्वर पर है) उसी पर भरोसा करने वालो को भरोसा करना चाहिए (12)

اور ہم اللہ پر بھروسا کیوں نہ کریں جب کہ اس نے (زندگی کے) سیدھے راستوں پر ہمیں چلایا ہے اور جو دکھ تم ہمیں دے رہے ہو ہم ان پر صبر کریں گے (ہمارا بھروسا اللہ پر ہے) اسی پر بھروسا کرنے والوں کو بھروسا کرنا چاہیے (۱۲)

(यह सुन कर) नास्तिकों ने अपने ईशदूतों से कहा (यदि तुम न माने तो) हम तुम्हें अपने देश से निकाल बाहर करेंगे, या फिर हमारे धर्म में लौट आओ (जब नास्तिकों की अवज्ञा सीमा से बढ़ गई तो) ईशदूतों की ओर उनके रब ने "वही" भेजी कि (डरो नहीं) हम उन अत्याचारियों को नष्ट कर देंगे (13) {5:67;37:171से173;11:80;58:21}

(یہ سن کر) کافروں نے اپنے رسولوں سے کہا (اگر تم باز نہ آئے تو) ہم تمہیں اپنے ملک سے نکال باہر کریں گے. یا پھر ہمارے مذہب میں لوٹ آؤ (جب کافروں کی سرکشی حد سے بڑھ گئی تو) رسولوں کی طرف ان کے رب نے وحی بھیجی کہ (گھبراؤ نہیں) ہم اُن ظالموں کو ہلاک کردیں گے (۱۳) [۵:۶۷:۳۷:۱۷۱سے۱۷۳:۵۸:۲۱:۱۱:۸۰]

और उनके बाद तुमको इस धरती में स्थान देंगे परन्तु यह (वचन) उसके लिए है जो हमारे सामने खड़ा होने से डरता है और मेरे दण्ड से भय करे (14)

اور ان کے بعد تم کو اس سرزمین میں جگہ دیں گے مگر یہ (وعدہ) اس کے لئے ہے جو ہمارے سامنے کھڑا ہونے سے ڈرتا ہے اور میرے عذاب سے خوف کرے (۱۴)

तब ईशदूतों ने विजय निर्णय की प्रार्थना की और हर उद्दण्ड हठ्ठी (जिसने सत्य को मिटाना चाहा) असफल हो गया (15)

تب رسولوں نے فتح فیصلہ کی دعا مانگی اور ہر سرکش ضدی (جس نے حق کو مٹانا چاہا) نامراد ہوگیا (۱۵)

इसके बाद (अर्थात मरने के बाद) नर्क है वहां उसे पीप का पानी पिलाया जाएगा (16)

اس کے بعد (یعنی مرنے کے بعد) دوزخ ہے وہاں اسے پیپ کا پانی پلایا جائے گا (۱۶)

वह उसको घूंट घूंट पिएगा और गले से नहीं उतर सकेगा और हर ओर से उस पर मृत्यु आ रही होगी, परन्तु वह मरने नही पाएगा और उसके पीछे कठोर दण्ड होगा (17)

وہ اُس کو گھونٹ گھونٹ پئے گا اور گلے سے نہیں اتار سکے گا اور ہر طرف سے اُس پر موت آرہی ہوگی. مگر وہ مرنے میں نہیں آئے گا. اور اس کے پیچھے سخت عذاب ہوگا (۱۷)

जिन लोगों ने अपने ईश्वर का इनकार किया उनके कर्मों की उपमा ऐसी है जैसे आंधी के दिन (कहीं) राख का (ढेर) हो और उसे हवा का झोंका उड़ा ले जाए जो कुछ उन्होंने कमाया उसमें से कुछ भी उनके हाथ न आएगा, यह परले दर्जे की भृष्टता है (18)

جن لوگوں نے اپنے رب کا انکار کیا ان کے اعمال کی مثال ایسی ہے جیسے آندھی کے دن (کہیں) راکھ (کا ڈھیر) ہو اور اسے ہوا کا جھونکا اڑا لے جائے. جو کچھ انہوں نے کمایا اس میں سے کچھ بھی ان کے ہاتھ نہ آئے گا. یہ پرلے درجے کی گمراہی ہے (۱۸)

क्या तुमने नहीं देखा कि ईश्वर ने आकाशों और पृथ्वी को सत्य के साथ उत्पन्न किया है? यदि वह चाहे तो तुमको नष्ट करके और (तुम्हारे स्थान) नई रचना उत्पन्न कर दे (19)

کیا تم نے نہیں دیکھا کہ اللہ نے آسمانوں اور زمین کو حق کے ساتھ پیدا کیا ہے؟ اگر وہ چاہے تو تم کو نابود کردے اور (تمہاری جگہ) نئی مخلوق پیدا کردے (۱۹)

और यह ईश्वर को कुछ भी कठिन नही (20)

اور یہ اللہ کو کچھ بھی مشکل نہیں (۲۰)

और (महा प्रलय के दिन) सब लोग ईश्वर के

اور (قیامت کے دن) سب لوگ اللہ کے سامنے حاضر

सामने उपस्थित होंगे तो निर्बल (बुद्धिहीन) उद्दण्ड नेताओं (कपटी गुरूवों) से कहेंगे हम तो तुम्हारा अनुसरण (आंख बन्द करके) कर रहे थे तो क्या आज ईश्वर के कष्ट में से थोड़ा बहुत कम करा सकते हो? वह कहेंगे (हम तो स्वंय ही कष्ट से पीड़ित हैं तुम्हारी सहायता कैसे करें?) यदि ईश्वर के नियम के अनुसार हम सीधा मार्ग देखते तो हम भी तुम्हें सीधा मार्ग दिखाते (अब जो होना था हुआ) हम रोए पीटे या धैर्य करें हमारे लिए बराबर है (आज) हमारे लिए मुक्ति का कोई उपाए नही (21)

ہوں گے تو کمزور (کم عقل والے) سرکش سرداروں (عیار پیروں) سے کہیں گے ہم تو تمہارے پیچھے (آنکھ بند کرکے) چل رہے تھے.تو کیا آج اللہ کے عذاب میں سے تھوڑا بہت کم کرا سکتے ہو؟ وہ کہیں گے (ہم تو خود ہی عذاب میں مبتلا ہیں تمہاری مدد کیسے کریں؟) اگر اللہ کے قانون کے مطابق ہم سیدھا راستہ دیکھتے تو ہم بھی تمہیں سیدھا راستہ دکھاتے (اب تو جو ہونا تھا ہوا) ہم روئیں پیٹیں یا صبر کریں ہمارے لئے سب برابر ہے (آج) ہمارے لئے رہائی کی کوئی شکل نہیں (۲۱)

और जब निर्णय हो चुकेगा तो शैतान कहेगा (देखो) ईश्वर ने तुमसे जो वचन किया था वह सत्य था (और पूरा होकर रहा) और मैंने जो वचन किया था (वह मिथ्या था अतः) मैंने पूरा नही किया (परन्तु मैं ही अकेला दोषी नही हूं तुम भी इस पाप में साझी हो) मेरा तुम पर किसी प्रकार का बल तो था नही बात केवल इतनी है कि मैंने तुम्हें बुलाया और तुमने (तुरन्त) स्वीकार कर लिया (मानों तुम पहले ही से उसके लिए तैयार थे) तो अब मुझे दोष न दो स्वयं अपने ही को दोष दो (आज अपने अपने का समय है) न मैं तम्हारी सहायता कर सकता हूं न तुम मेरी सहायता को पहुंच सकते हो और तुम अब से पहले (दुनिया में) जो मुझे ईश्वर का साझी बनाते थे और (उसके आदेशों की भांति मेरे आदेश का अनुकरण करते थे) आज मैं उससे अप्रसन्नता प्रकट करता हूं इसमें कोई शंका नही कि (ऐसे) अत्याचारियों के लिए पीड़ा देने वाला दण्ड है (22)

اور جب فیصلہ ہو چکے گا تو شیطان کہے گا (دیکھو) اللہ نے تم سے جو وعدہ کیا تھا وہ سچا تھا (اور پورا ہو کر رہا) اور میں نے جو وعدہ کیا تھا (وہ جھوٹا تھا اس لئے) میں نے پورا نہیں کیا (لیکن اکیلا میں ہی مجرم نہیں ہوں تم بھی اس جرم میں شریک ہو) میرا تم پر کسی طرح کا زور تو تھا نہیں بات صرف اتنی ہے کہ میں نے تمہیں بلایا اور تم نے (فوراً) قبول کرلیا (گویا تم پہلے ہی سے اس کے لئے تیار تھے) تو اب مجھے ملامت نہ کرو خود اپنے ہی کو ملامت کرو (آج نفسی نفسی کا عالم ہے) نہ میں تمہاری فریاد رسی کرسکتا ہوں نہ تم میری مدد کو پہنچ سکتے ہو. اور تم اب سے پہلے (دنیا میں) جو اللہ کا شریک بناتے تھے اور (اس کے حکموں کی طرح میرے احکام کی پیروی کرتے تھے) آج میں اس سے بیزاری ظاہر کرتا ہوں اس میں کوئی شبہ نہیں کہ (ایسے) ظالموں کے لئے (دردناک عذاب ہے) (۲۲)

और जिन लोगों ने इमान का मार्ग ग्रहण किया और दुनिया में शुभ कर्म किए वह उपवनों में प्रविष्ट किये जाऐंगे जिनके नीचे नहरे बह रही होंगी वह अपने स्वामी के आदेश से सदेव उनमें रहेंगे और (आपस में मिलते समय) उनका उपहार होगा तुम पर शान्ति हो (23)

اور جن لوگوں نے ایمان کی راہ اختیار کی اور دنیا میں نیک کام کئے وہ باغوں میں داخل کئے جائیں گے جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی. وہ اپنے پروردگار کے حکم سے ہمیشہ ان میں رہیں گے اور (آپس میں ملتے وقت) ان کا تحفہ ہوگا تم پر سلامتی ہو (۲۳)

क्या तुमने इस बात पर विचार नही किया कि ईश्वर ने एक अच्छी बात की उपमा किस प्रकार वर्णन की वह ऐसी है जैसे एक अच्छा वृक्ष जिसकी जड़ (धरती में) दृढ़ता से जमी हुई हो (ऐसे वृक्ष को तीव्र आन्धी भी कोई हानी नही पहुंचाती) और उसकी शाखाएं आकाश में फैली हो (अर्थात अच्छी बात को हर व्यक्ति पसन्द करता है, और उसकी चारो ओर कीर्ति होती है) (24)

کیا تم نے اس بات پر غور نہیں کیا کہ اللہ نے ایک اچھی بات کی مثال کس طرح بیان کی. وہ ایسی ہے جیسے ایک اچھا درخت جس کی جڑ (زمین میں) مضبوطی سے جمی ہوئی ہو (ایسے درخت کو تیز آندھی بھی کوئی نقصان نہیں پہنچاتی) اور اس کی شاخیں آسمان میں پھیلی ہو (یعنی اچھی بات کو ہر آدمی پسند کرتا ہے اور اس کی چاروں طرف شہرت ہوتی ہے) (۲۴)

वह (अच्छा वृक्ष या अच्छी बात) अपने ईश्वर के आदेश से हर समय फल लाता हो (अर्थात उसकी शाखाएं हर समय फल से लदी रहती हैं या अच्छी बात खूब कीर्ति प्राप्त करती है) ईश्वर ऐसी उपमाएं लोगों के सामने इसलिए वर्णन करता है, ताकि वह विचार करें (25)

وہ (اچھا درخت یا اچھی بات) اپنے رب کے حکم سے ہر وقت پھل لاتا ہو (یعنی اس کی شاخیں ہر وقت پھل سے لدی رہتی ہیں یا اچھی اچھی بات خوب شہرت حاصل کرتی ہیں) اللہ ایسی مثالیں لوگوں کے سامنے اس لئے بیان کرتا ہے کہ وہ سوچیں (۲۵)

और बुरी बात की उपमा ऐसी है जैसे एक अयोग्य (और निर्बल) वृक्ष जिसकी जड़ पृथ्वी के तल पर हो बिल्कुल खोखली कि जब चाहो उखाड़ फेंको उसके लिए जमाव नही (हल्की सी वायु भी उसको गिरा देती है ऐसे ही बुरी बात क्षण भंगुर होती है) (26)

اور بُری بات کی مثال ایسی ہے جیسے ایک ناکارہ (اور کمزور) درخت (جس کی جڑ) زمین کی سطح پر ہو بالکل کھوکھلی کے جب چاہو اکھاڑ پھینکو اس کے لئے جماؤ نہیں (ہلکی سی ہوا بھی اس کو گرادیتی ہے ایسے ہی بُری بات باطل نظریہ ناپائیدار ہوتی ہے) (۲۶)

ईश्वर आस्तिकों (के मनों) को सत्य और पक्की बात से दुनिया के जीवन में भी सुदृढ़ रखता है और प्रलोक में भी रखेगा, और ईश्वर का नियम पापीयों के पथ भ्रष्ट कर देता है और ईश्वर जो चाहता है करता है, (27)

اللہ مومنوں (کے دلوں) کو صحیح اور پکی بات سے دنیا کی زندگی میں بھی مضبوط رکھتا ہے اور آخرت میں بھی رکھے گا۔ اور اللہ کا قانون بے انصافوں کو گمراہ کر دیتا ہے اور اللہ جو چاہتا ہے کرتا ہے (۲۷)

नोट- इन धाराओं में सत्य और मिथ्या की उपमा सामने आ गई सत्य सदैव प्रभुत्वशाली रहता है और हर स्थान चमकता है ऐसे ही ईश्वर और ईश्वर के रसूल व पुस्तके सत्य है, वह सदैव अधिकार प्राप्त रहेंगे और असत्य निर्बल होता है उसको कभी प्रभुत्व नही मिलेगा अतः आस्तिकों को अच्छे कर्म करने चाहिए तो वह भी प्रमुत्वशाली रहेंगे अशुभ कर्मों से परास्त हो जाएंगे,

نوٹ:۔ان آیتوں میں حق اور باطل کی مثال سامنے آگئی حق ہمیشہ غالب رہتا ہے اور ہر جگہ چمکتا ہے ایسے ہی اللہ اور اللہ کے رسول و کتابیں حق ہیں وہ ہمیشہ غالب رہیں گے اور باطل کمزور ہوتا ہے اس کو کبھی غلبہ نہیں ملے گا اس لئے مومنوں کو اچھے عمل کرنے چاہیں تو وہ بھی غالب رہیں گے برُے عملوں سے مغلوب ہو جائیں گے۔

क्या आपने उन लोगों को नही देखा जिन्होंने ईश्वर के उपकार को कृतघ्नता से बदल दिया, और अपनी जाति को तबाही के घर में उतारा (28)

کیا آپ نے ان لوگوں کو نہیں دیکھا جنہوں نے اللہ کے احسان کو ناشکری سے بدل دیا۔اور اپنی قوم کو تباہی کے گھر میں اتارا (۲۸)

(अर्थात) नर्क में जहां वह प्रविष्ट होंगे और वह बुरा स्थान है (29)

(یعنی) دوزخ میں جہاں وہ داخل ہوں گے اور وہ بُرا ٹھکانا ہے (۲۹)

उन लोगों ने (अपने देवताओ को) ईश्वर के बराबर रखा है ताकि लोगों को उसके मार्ग से भटकाऐं उनसे कहदो (जीवन के कुछ दिन) लाभ उठा लो फिर तो तुम्हें नर्क की ओर लौटना है (30)

ان لوگوں نے (اپنے معبودوں کو) اللہ کے برابر بنا رکھا ہے تاکہ لوگوں کو اس کی راہ سے بھٹکائیں۔ان سے کہدو (زندگی کے چند روزہ) فائدے اٹھالو پھر تو تمہیں دوزخ کی طرف لوٹنا ہے (۳۰)

(ऐ रसूल!) मेरे उन बन्दों को जो विश्वास लाए है मेरा यह संदेश पहुंचा दो उससे पहले कि वह (होलनाक) दिन आ जाए जिसमें न तो कर्मों का सोदा होगा और न किसी की मित्रता काम आएगी (अपने लिए मुक्ति का सामान करलें अर्थात) नमाज स्थापित करें और जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है उसमें से (ईश्वर के मार्ग में) गुप्त और प्रकट व्यय करते रहें (31)

(اے رسولؐ!) میرے ان بندوں کو جو ایمان لائے ہیں میرا یہ پیغام پہنچا دو اس سے پہلے کہ وہ (ہولناک) دن آجائے جس میں نہ تو اعمال کا سودا ہوگا اور نہ کسی کی دوستی کام آئے گی (اپنے لئے نجات کا سامان کرلیں یعنی) نماز قائم کریں اور جو کچھ ہم نے انہیں دے رکھا ہے اس میں سے (اللہ کی راہ میں) پوشیدہ اور علانیہ خرچ کرتے رہیں (۳۱)

ईश्वर वही तो है जिसने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया और आकाश (बादल) से पानी बरसाया फिर उसकी सीचाई से तुम्हारी जीविका के लिए भांति भांति के फल उत्पन्न कर दिए और जल पोतों को तुम्हारे लिए प्रस्तुत कर दिया और अधिकार में दे दिया ताकि उसके आदेश से (अर्थात उसके बनाए हुए विधान के अनुसार) समुन्द्र में चले और दरयाओं को भी तुम्हारी बैगार में लगा दिया (32)

اللہ وہی تو ہے جس نے آسمانوں اور زمین کو پیدا کیا اور آسمان (بادل) سے پانی برسایا۔ پھر اس کی آبیاری سے تمہاری غذا کے لئے طرح طرح کے پھل پیدا کر دئے اور جہازوں کو تمہارے لئے فراہم کر دیا قبضہ میں دے دیا۔ تاکہ اس کے حکم سے (یعنی اسی کے بنائے ہوئے قانون کے مطابق) سمندر میں چلیں اور دریاؤں کو بھی تمہاری بیگار میں لگا دیا (۳۲)

और सूरज और चन्द्रमा को भी तुम्हारे काम में लगा दिया कि दोनों (एक प्रबन्ध के आधीन) बराबर चल रहे है, और रात्री और दिन को भी तुम्हारे कार्य में लगा दिया (33) {39:40}

اور سورج اور چاند کو بھی تمہارے کام میں لگا دیا کہ دونوں (ایک نظام کے تحت) برابر چل رہے ہیں۔اور رات اور دن کو بھی تمہارے کام میں لگا دیا (۳۳) [۳۹:۴۰]

(तात्पर्य कि तुम्हें जीवन में काम आने वाली वस्तुऐं) जिस जिस वस्तु की आवश्यक्ता थी जो तुमने मांगी सब उपलब्ध कर दी, यदि तुम ईश्वर की निधियों को गिनना चाहो तो (किसी प्रकार) न गिन सकोगे (परन्तु मानव उसका धन्यवाद नही करता) सत्य यह है कि मानव बड़ा ही अत्याचारी और अवज्ञाकारी है (34)

(غرض کہ تمہیں ضروریات زندگی کے لئے) جس جس چیز کی ضرورت تھی جو تم نے مانگی سب مہیا کر دیں۔ اگر تم اللہ کی نعمتوں کو گننا چاہو تو (کسی طرح) نہ گن سکو گے (مگر انسان اس کا شکر ادا نہیں کرتا) حقیقت یہ ہے کہ انسان بڑا ہی ظالم اور نافرمان ہے (۳۴)

और जब इब्राहीम ने प्रार्थना की कि मेरे ईश्वर इस नगर (मक्का) को शान्ति का स्थान बना दे और मुझे और मेरे वंश को इस बात से दूर रखना कि मूर्तियों की पूजा करने लगे (35)

اور جب ابراہیم نے دعا کی کہ میرے اللہ اس شہر (مکہ) کو امن کی جگہ بنا دے اور مجھے اور میری نسل کو اس بات سے دور رکھنا کہ بتوں کی پوجا کرنے لگیں (۳۵)

ऐ ईश्वर उन्होंने ने बहुत से लोगों को पथ भ्रष्ट किया है, सो जिस व्यक्ति ने मेरा कहा माना वह मेरा है, और जिस ने मेरी अवज्ञा की तो तू चाहे तो उसे क्षमा कर दे क्योंकि तू कृपालु है (36) (मिल्लते इब्राहीम)
ऐ ईश्वर मैंने अपनी सन्तान को घाटी (मक्का) में तेरे पवित्र घर के पास जहां खेती नहीं ला बसाई है इसलिए कि वह नमाज़ स्थापित करें, तो लोगों को ऐसा कर दे कि उनकी ओर झुके रहें, और उनको मेवों से जीविका दे ताकि तेरा धन्यवाद आज्ञाकारी करें, (37) {11:120}
ऐ ईश्वर हम जो कुछ छुपाते हैं और जो कुछ प्रकट करते हैं तू सब कुछ जानता है और ईश्वर से कोई वस्तु छुपी नहीं न आकाश में न पृथ्वी में (38)
सब प्रशंसा ईश्वर के लिए है जिसने मुझको बड़ी आयु में इस्माईल और इस्हाक पुत्र दिए निःसंदेह मेरा रब दुआ सुनने वाला है (39) {11:71}
ऐ ईश्वर! तू मुझे क्षमता दे कि मैं नमाज़ स्थापित करूं और मेरी सन्तान को भी (यह क्षमता दे) ऐ ईश्वर मेरी प्रार्थना स्वीकार कर (40)
ऐ हमारे रब लेखा जोखा के दिन मुझ को और मेरे माता पिता और आस्तिकों को क्षमा कर देना (41)
और (आस्तिकों!) मत कल्पना करना कि अन्यायी जो कर्म कर रहें हैं ईश्वर उनसे अनजान है वह उनको उस दिन तक छूट दे रहा है, जब कि आंखे खुली की खुली रह जाएगी, (42)
(व्याकूल लोग) सिर उठाए भागे चले जा रहे होंगे, दृष्टि (जिधर होगी उधर से) लौट न सकेगी और उनके हृदय (मारे भय के) हवा हो रहे होंगे, (43)
और (ऐ रसूल!) लोगों को उस दिन से डरा दो जब उन पर कष्ट आ जाएगा, तब पापी लोग कहेंगे कि ऐ हमारे ईश्वर हमें थोड़ी सी छूट प्रदान कर, ताकि हम तेरा निमंत्रण (एकेश्वर वाद) स्वीकार करें और तेरे ईशदूतों का अनुकरण करें (तो उत्तर मिलेगा) क्या तुम पहले शपथ नहीं खाया करते थे कि हम को किसी स्थिति में पतन न होगा (और न महा प्रलय को हिसाब होगा) (44)
और तुम उन लोगों की बस्तियों में रहते थे जिन्होंने (ईश्वर के ईशदूतों का विरोध करके) अपनी जानों पर अत्याचार किया था, और तुम पर यह बात प्रकट हो चुकी थी कि हमने उन लोगों के साथ क्या किया था, और तुम्हें समझाने के लिए हमने भांत भांत की उपमाऐं वर्णन कर दी थी, (45)
उन लोगों ने (इस्लाम शान्ति के विरोध में) हर प्रकार के जतन कर डाले थे ऐसे यतन कि पर्वत को अपने स्थान से हिला दें परन्तु ईश्वर के पास उनकी सारी युक्तियों का उत्तर उपलब्ध है (46)

اے رب انہوں نے بہت سے لوگوں کو گمراہ کیا ہے سو جس شخص نے میرا کہا مانا وہ میرا ہے اور جس نے میری نافرمانی کی تو تو چاہے تو اسے معاف کر دے کیونکہ تو مہربان بھی ہے (۳۶) [ملت ابراہیم]
اے اللہ میں نے اپنی اولاد کو میدان (مکہ) میں تیرے مقدس گھر کے پاس جہاں کھیتی نہیں لا بسائی ہے اس لئے تا کہ وہ نماز قائم کریں تو لوگوں کو ایسا کر دے کہ ان کی طرف جھکے رہیں اور ان کو میووں سے روزی دے تا کہ تیرا شکر فرمانبرداری کریں (۳۷) [۱۱:۱۲۰]
اے اللہ ہم جو کچھ چھپاتے ہیں اور جو کچھ ظاہر کرتے ہیں تو سب کچھ جانتا ہے اور اللہ سے کوئی چیز چھپی نہیں نہ آسمان میں نہ زمین میں (۳۸)
سب تعریف اللہ کے لئے ہے جس نے مجھ کو بڑی عمر میں اسماعیل اور اسحاق بیٹے دیئے۔ بے شک میرا رب دعا سننے والا ہے (۳۹) [۱۱:۷۱]
اے اللہ! تو مجھے توفیق دے کہ میں نماز قائم کروں اور میری اولاد کو بھی (یہ توفیق دے) اے رب میری دعا قبول کر (۴۰)
اے رب ہمارے حساب کتاب کے دن مجھ کو اور میرے ماں باپ کو اور ایمان والوں کو بخش دینا (۴۱)
اور (مومنو!) مت خیال کرنا کہ ظالم جو عمل کر رہے ہیں اللہ ان سے بے خبر ہے وہ ان کو اس دن تک مہلت دے رہا ہے جب کہ آنکھیں کھلی کی کھلی رہ جائیں گی (۴۲)
(پریشان لوگ) سر اٹھائے بھاگے چلے جا رہے ہوں گے نظریں (جدھر ہوں گی ادھر سے) لوٹ نہ سکیں گی اور ان کے دل (مارے خوف کے) ہوا ہو رہے ہوں گے (۴۳)
اور (اے رسول) لوگوں کو اس دن سے ڈرا دو جب ان پر عذاب آ جائے گا۔ تب ظالم لوگ کہیں گے کہ اے ہمارے رب ہمیں تھوڑی سی مہلت عطا کر، تا کہ ہم تیری دعوت (توحید) قبول کریں اور تیرے رسولوں کی پیروی کریں (تو جواب ملے گا) کیا تم پہلے قسمیں نہیں کھایا کرتے تھے کہ ہم کو کسی حالت میں زوال نہ ہوگا (اور نہ قیامت کو حساب ہوگا) (۴۴)
اور تم ان لوگوں کی بستیوں میں رہتے تھے جنہوں نے (اللہ کے رسولوں کی مخالفت کر کے) اپنی جانوں پر ظلم کیا تھا۔ اور تم پر یہ بات ظاہر ہو چکی تھی کہ ہم نے ان لوگوں کے ساتھ کیا کیا تھا۔ اور تمہیں سمجھانے کے لئے ہم نے طرح طرح کی مثالیں بیان کر دی تھیں (۴۵)
ان لوگوں نے (اسلام کی مخالفت میں) ہر طرح کی تدبیریں کر ڈالی تھیں۔ ایسی ایسی چالیں کہ پہاڑوں کو اپنی جگہ سے ہلا دیں لیکن اللہ کے پاس ان کی ساری چالوں کا جواب موجود ہے (۴۶)

तो देखो ऐसी कल्पना न करना कि ईश्वर ने जो अपने रसूलों से वचन किया है उसके विरुद्ध करेगा निःसन्देह ईश्वर अधिपती (और) बदला लेने वाला है (47)

تو دیکھوایسا خیال نہ کرنا کہ اللہ نے جواپنے رسولوں سے وعدہ کیا ہےاس کے خلاف کرے گا۔ بے شک اللہ زبردست (اور) بدلہ لینے والا ہے(۴۷)

(यह दण्ड उस दिन मिलेगा) जिस दिन यह पृथ्वी व आकाश दूसरी पृथ्वी व आकाश से बदल दिए जाएंगे और सब लोग ईश्वर अकेले शक्तिशाली के सामने निकल खड़े होंगे (48) {46:20}

(یہ سزا اس دن ملے گی) جس دن یہ زمین وآسمان دوسری زمین وآسمان سے بدل دیے جائیں گے اور سب لوگ اللہ واحد زبردست کے سامنے نکل کھڑے ہوں گے (۴۸)[۴۶:۲۰]

उस दिन तुम पापियों को देखोगे कि ईश्वर के नियम में बंधे होंगे (49)

اس روز تم مجرموں کو دیکھو گے کہ اللہ کے قانون میں بندھے ہوں گے(۴۹)

उनके वस्त्र गंधक के होंगे और उनके मुखों को अग्नि लिपट रही होगी (50)

ان کے لباس گندھک کے ہوں گے اوران کے مونہوں کو آگ لپٹ رہی ہوگی (۵۰)

यह कष्ट इसलिए दिया जाएगा कि ईश्वर अपने नियमानुसार हर व्यक्ति को उसके कर्म का बदला दे इसमें कोई शंका नहीं कि ईश्वर शीघ्र हिसाब लेने वाला है (51)

یہ عذاب اس لئے دیا جائے گا کہ اللہ اپنے قانون کے مطابق ہر شخص کواس کے اعمال کا بدلہ دے۔اس میں کوئی شک نہیں کہ اللہ جلد حساب لینے والا ہے(۵۱)

यह कुरआन मानव के नाम (ईश्वर का) संदेश है (यह इसलिए प्रेषित किया गया है कि) लोगों को सूचित कर दिया जाए कि वह जान लें कि उनका ईश्वर वही अकेला ईश्वर है (और अवज्ञाकारों का अन्त बुरा है) और बुद्धिमान इससे शिक्षा प्राप्त करें (52) महा प्रलय अचानक आएगी.

یہ قرآن انسان کے نام (اللہ کا) پیغام ہے (یہ اس لئے نازل کیا گیا ہے کہ) لوگوں کو خبردار کردیا جائے کہ وہ جان لیں کہ ان کا معبود وہی اکیلا معبود ہے (اور نافرمانوں کا انجام بُرا ہے) اور عقل والے اس سے نصیحت حاصل کریں (۵۲) قیامت اچانک آجائے گی۔

सूरतुल हिजर {15} मक्की

سورہ الحجر (۱۵) مکی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ऐ मुहम्मद स० यह वह धाराएं हैं उस ईश्वर की पुस्तक की जो कुरआन उज्ज्वल है (1)

اے محمدؐ یہ وہ آیتیں ہیں اس اللہ کی کتاب کی جو قرآن روشن ہے(۱)

नोट- कुरआन बिल्कुल स्पष्ट और उज्ज्वल है इसके स्पष्टीकरण और व्याख्या के लिए किसी कथन (रवायत की) की आवश्यकता नहीं है.

نوٹ:۔ قرآن بالکل واضح اور روشن ہے اس کی تشریح اور تفسیر کے لئے کسی روایت کی ضرورت نہیں ہے

पाराह (14) रुबामा

پارہ[۱۴] رُبما

ऐसा समय भी आने वाला है जब सत्य का इनकार करने वाले इच्छा करेंगे काश हम आस्तिक होते (परन्तु उस समय की इच्छा बेकार होगी) (2)

ایسا وقت بھی آنے ولا ہے جب منکرین حق آرزو کریں گے کاش ہم مسلمان ہوتے (مگر اس وقت کی آرزو بے کار ہوگی)(۲)

(ऐ मुहम्मद स०) उन्हें उनकी दशा पर छोड़ दो खाएं, पिएं, दुनिया की सुख सामग्री से लाभ उठाएं मिथ्या आशाओं में मग्न रहें, वह समय दूर नहीं जब उन्हें (अपनी अचेतना का परिणाम) ज्ञात हो जाएगा (3)

(اے محمدؐ) اُنہیں اُن کے حال پر چھوڑ دو کھائیں پئیں، دنیا کی نعمتوں سے فائدہ اٹھائیں باطل امیدوں میں مگن رہیں وہ وقت دور نہیں جب اُنہیں (اپنی غفلت کا انجام) معلوم ہوجائے گا(۳)

और हमने किसी बस्ती (के निवासियों) को वध नहीं किया परन्तु उन (के वध) का समय (नियामनुसार पहले से) निश्चित और ज्ञात था (जिस प्रकार लोग अशुभ कर्मों में लगे होते हैं उसका प्राकृतिक परिणाम यही होता है कि एक मुख्य समय के अन्दर वध हो जाएं) (4)

اور ہم نے کسی بستی (کے باشندوں) کو ہلاک نہیں کیا مگر اس (کی ہلاکت) کا وقت (قانون کے مطابق پہلے سے) متعین اور معلوم تھا (جس طرح لوگ بداعمالیوں میں لگے ہوتے ہیں اس کا قدرتی نتیجہ یہی ہوتا ہے کہ ایک خاص مدت کے اندر ہلاک ہوجائیں)(۴)

(हर जाति अपने कर्मानुसार पुरस्कार या दण्ड पाती है) कोई समुदाय न तो अपने (निश्चित) समय से आगे निकल सकता है और न पीछे रह सकता है (जब कर्मानुसार वध का समय) आ गया तो कोई बचा नहीं सकता (5)

(ہر قوم اپنے اعمال کے مطابق جزا یا سزا پاتی ہے) کوئی امت نہ تو اپنے (مقررہ) وقت سے آگے نکل سکتی ہے اور نہ پیچھے رہ سکتی ہے (جب اعمال کے مطابق ہلاکت کے وقت آگیا تو کوئی بچا نہیں سکتا(۵)

और (नास्तिक कहते हैं कि ऐ व्यक्ति जिसपर शिक्षा की पुस्तक अवतरित हुई है तू तो दीवाना है (6)

اور (کفار) کہتے ہیں کہ اے شخص جس پر نصیحت کی کتاب نازل ہوئی ہے تو تو دیوانہ ہے(۶)

यदि तु सच्चा है तो हमारे पास फ़रिश्तो को क्यों नही ले आता (7)

(कह दो) हम फरिश्तो को अवतरित नहीं करते परन्तु सत्य के साथ और (जब हम फरिश्ते अवतरित करते हैं तो) उस समय छूट नहीं मिलती (8)

इसमें कोई शक नही कि स्वंय हमने अज़्ज़िकर (अर्थात कुरआन को जो शिक्षा की पुस्तक है) प्रेषित किया है और हम इसकी रक्षा करने वाले है (9)

और हमने तुम से पहले लोगों में ईशदूत भेजे थे (10)

परन्तु उन लोगों के पास जो भी ईशदूतों में से आया निःसंदेह वह लोग उसका उपहास उड़ाते रहे (11) ऐसे ही नास्तिक तुम्हारा उपहास उड़ा रहे है.

इसी प्रकार हमारा विधान इस भ्रष्टता को पापीयों के हृदयों में प्रविष्ट कर देता है (12)

सो वह इस पर विश्वास नही लाएंगे और पहलों की गति विधि भी यही रही है (13)

यदि हम उन पर आकाश का कोई द्वार खोल दे और वह उसमें चढ़ने भी लगे (14)

तब भी वह यही कहेंगे कि हमारी आखों को धोका हो रहा है अपितु हम पर जादू कर दिया गया है (15)

और वास्तविक्ता यह है कि हमने आकाश में उज्जवल सितरे उत्पन्न कर दिए और उन्हें देखने वालों के लिए सुन्दर बना दिया (16) {25:61}

और (कुरआन को) हर पतित शैतान से उसे सुरक्षित कर दिया (17)

इस सुरक्षा के होते हुए कौन है जो इस में परिवर्तन करने के लिए हस्तक्षेप कर सके? कोई नही इस सुरक्षा के होते हुए यदि कोई वाद करता है कि मैंने चोरी से कुछ सुन लिया है तो वह झूट बोलता है और इस झूट के बदले में उसके पीछे एक नर्क का चमकता हुआ अग्नि शिखा लग जाता है, जिससे वह बच नही सकता जब तक कि अपने जीवन ही में वह उस झूट से पश्चाताप करके सदाचारी न बन जाए (18) {18:27; 37:6से9, 67:5, 72:8से10, 26:210-212}

नोट- ईश्वर कहता है कि हमने इस कुरआन को हर शैतान पतित से सुरक्षित कर दिया तो फिर ईश्वर की सुरक्षा होते हुए किस का साहस है कि उसमें सुन गिन लेने या परिवर्तन करने का प्रयत्न करें परन्तु खेद कि इन आयात के अनुवादों में ज्ञानियों ने लिखा है कि "हां यदि कोई चोरी से सुनता है" (15:18) परन्तु जो कोई एक-आध बात उचक ले भागे तो तुरन्त ही उसके पीछे दहकता हुआ शोला लग जाता है (37:10) इस अनुवाद से ज्ञात होता है कि शैतान सुन लेते हैं मानों ईश्वर की सुरक्षा को तोड़ कर? तो यह असम्भव है (17:45,46;17:45,46) बस इतना है कि वह पापी लोग झूठा वाद करते है कि हमने परोक्ष का निर्णय सुन लिया और उनके चेले उनके इस वाद को सत्य मान लेते है तो इस झूट के बदले उनके पीछे नर्क का एक तीव्र अग्नि शिखा लग

اگر تو سچا ہے تو ہمارے پاس فرشتوں کو کیوں نہیں لے آتا (۷)

(کہدو) ہم فرشتوں کو نازل نہیں کرتے مگر حق کے ساتھ اور (جب ہم فرشتے نازل کرتے ہیں تو) اس وقت انہیں مہلت نہیں ملتی (۸)

اس میں کوئی شک نہیں کہ خود ہم نے الذکر (یعنی قرآن کو جو نصیحت کی کتاب ہے) نازل کیا ہے اور ہم اس کی حفاظت کرنے والے ہیں (۹)

اور ہمنے تم سے پہلے لوگوں میں رسول بھیجے تھے (۱۰)

لیکن ان لوگوں کے پاس جو بھی رسولوں میں سے آیا یقیناً وہ لوگ اس کی ہنسی اڑاتے رہے (۱۱) ایسے ہی کفار تمہاری ہنسی اڑار ہے ہیں.

اسی طرح ہمارا قانون اس گمراہی کو گنہگاروں کے دلوں میں داخل کردیتا ہے (۱۲)

سو وہ اس پر ایمان نہیں لائیں گے اور پہلوں کی روش بھی یہی رہی ہے (۱۳)

اگر ہم ان پر آسمان کا کوئی دروازہ کھول دیں اور وہ اس میں چڑھنے بھی لگیں (۱۴)

تب بھی وہ یہی کہیں گے کہ ہماری آنکھوں کو دھوکا ہورہا ہے بلکہ ہم پر جادو کردیا گیا ہے (۱۵)

اور حقیقت یہ ہے کہ ہم نے آسمان میں روشن ستارے پیدا کردئے اور انہیں دیکھنے والوں کے لئے خوشنما بنادیا (۱۶) [۲۵:۶۱]

اور (قرآن کو) ہر مردود شیطان سے اسے محفوظ کردیا (۱۷)

اس حفاظت کے ہوتے ہوئے کون ہے جو اس میں تغیر کرنے کے لئے مداخلت کرسکے؟ کوئی نہیں. اس حفاظت کے ہوتے ہوئے اگر کوئی دعوی کرتا ہے کہ میں نے چوری سے کچھ سن لیا ہے تو وہ جھوٹ بولتا ہے اور اس جھوٹ کے بدلے میں اس کے پیچھے ایک دوزخ کا چمکتا شعلہ لگ جاتا ہے جس سے وہ بچ نہیں سکتا جب تک کہ اپنی زندگی ہی میں وہ اس جھوٹ سے توبہ کرکے نیک نہ بن جائے (۱۸) [۱۸:۲۷؛ ۳۷:۶تا۹؛ ۶۷:۵؛ ۷۲:۸تا۱۰؛ ۲۶:۲۱۰ سے ۲۱۲]

نوٹ:۔ اللہ کہتا ہے کہ ہم نے اس قرآن کو ہر شیطان مردود سے محفوظ کردیا تو پھر اللہ کی حفاظت ہوتے ہوئے کس کی مجال ہے کہ اس میں سن گن لینے یا تغیر کرنے کی کوشش کرے مگر افسوس کہ ان آیات کے تراجم میں علماء نے لکھا ہے کہ ''ہاں اگر کوئی چوری سے سنتا ہے (۱۵:۱۸) مگر جو کوئی ایک آدھ بات اچک لے بھاگے تو فوراً ہی اس کے پیچھے دہکتا ہوا شعلہ لگ جاتا ہے (۳۷:۱۰)'' اس ترجمے سے ثابت ہوتا ہے کہ شیطان سن لیتے ہیں گویا اللہ کی حفاظت کو توڑ کر؟ تو یہ ناممکن ہے [۱۷:۴۵،۴۶]

بس اتنا ہے کہ وہ گناہگار لوگ جھوٹا دعوی کرتے ہیں کہ ہم نے غیب کا فیصلہ سن لیا، اور ان کے چیلے ان کے اس دعوی کو سچ مان لیتے ہیں تو اس جھوٹ کے

जाता है अर्थात वह बहुत ही बड़े कष्ट में ग्रस्त होंगे, और यह झूटे वाद केवल कल्पनाएं है, यह झूट उस काल में तो चल सकता था जब ज्ञान का प्रकाश सामान्य न था, अब तो कुरआन और साईन्स के दौर में यह कल्पनाएं अपना मूल्य समाप्त कर चुकी है जिनके लिए सूरत जिन्न की आयत 8 से 10 में बताया गया है, अब कल्पना के पीछे ज्ञान व विश्वास का एक उज्ज्वल अग्नि शिखा अर्थात प्रमाण उपस्थित है जो उस झूट का आवरण उतार देता है और जो इस ज्ञान कुरआन से काम न लेकर उस जादू के चक्कर में फंसा रहता है उसके लिए अपमान व दासता का कष्ट है जो उसका पीछा करता रहता है और नर्क में ले जाता है, यह है वह शहाबे साकिब (चमकता हुआ अग्नि शिखा) या शहाबे मुबीन न कि वह आकाश में तीव्र प्रकाश जो अक्सर बरसात में प्रकट होता रहता है, क्या शैतान केवल बरसात में ही चोरी करते है?

वह तीव्र प्रकाश तो जब उत्पन्न होता है जब किसी उपग्रह का कोई टुकड़ा बहुत तीव्रता से पृथ्वी की ओर आता और रगड़ खाता है उसका इस शहाबे मुबीन से कोई सम्बन्ध नही वह तो ईश्वर का कष्ट है जो उनका पीछा कर रहा है, और वह अवज्ञाकारी उसी में बन्दी रहते है,

एक बात विचार योग्य यह है कि किसी को क्या ज्ञात कि ईश्वर किस स्थान पर और कब निर्णय पारित करता है और सुन्ने वाले तुरन्त वहां जाकर उन निर्णयों में कुछ सुन लें चोरी कर लें, यदि ऐसा है तो ईश्वर की सुरक्षा जो कुरआन के बारे में है, में त्रुटि है और शयातीन का प्रबन्ध ईश्वर के प्रबन्ध को तोड़ कर उसके निर्णयों को सुन लेता है (ईश्वर की शरण) क्या अभी तक वह समय नही आया कि मुस्लिम ज्ञानी बुद्धिमानी का प्रमाण प्रस्तुत करें और मिथ्या अनुवादों व तफसीर को एक ओर कर दें और जो वास्तविक्ता है उसको लोगों के सामने लाएं (26:210से212)

इस सम्बन्ध में सूरत अश्शुआरा की आयत 210 से 212 भी विचारणीय है जिनमें कहा गया है (26:210) इस कुरआन को शैतान नही लाए (211) और वह इसके बारे में जुल्म व ज्यादती नही करेंगे और न ही वह इसकी शक्ति रखते है (212) अपितु वह तो अपने पापों के कारण उस स्थान पर पहुंच गए है कि इसको सुनने से भी वंचित हो गए है, (17:45,46)

(41:26) और नास्तिकों ने कहा इस कुरआन को सुनो ही नही और कोलाहल करो, बकवास करो, क्या अजब कि तुम अधिपति आ जाओ, देखिए शैतान स्वयं ही सुन्ना नही चाहते,

यदि इन आयात के प्रकाश में देखा जाए तो एक बात यह ही सामने आती है कि बुलन्दी वाली पुस्तक कुरआन जो सज्जा वाली है जो लोगों के लिए सुशोभित बना दी गई है जिसकी सुरक्षा का दायित्व ईश्वर का है कि इसके सार नियम विषय में कोई परिवर्तन नही कर सकता, यदि कोई इसके नियम के बदले मिथ्या बात बनाकर कहता है तो उसके पीछे एक उज्ज्वल प्रमाण होगा जो उनकी बात को अनुचित सिद्ध कर देगा और इस झूट के बदले उनके लिए नर्क की यातना चमकती हुई अग्नि भी उपस्थित है जो नर्क में पा लेगा,

ज्ञानियों ने इस सुरक्षा को आकाश से जोड़ा है जो विचारणीय है, क्या शैतान और उसके चेले आकाश में नही जा सकते? जाते है,

بدلے ان کے پیچھے دوزخ کا ایک تیز شعلہ لگ جاتا ہے یعنی وہ بہت ہی بڑے عذاب میں مبتلا ہوں گے۔اور یہ جھوٹے دعوے صرف قیاس آرائیاں ہی ہیں۔ یہ جھوٹ اس زمانہ میں تو چل سکتا تھا جب علم کی روشنی عام نہ تھی اب تو قرآن اور سائنس کے دور ہیں یہ قیاس آرائیاں اپنی قیمت ختم کر چکی ہیں۔جن کے لئے سورت جن کی آیت ۸ تا ۱۰ میں بتایا گیا ہے۔اب قیاس کے پیچھے علم ویقین کا ایک چمکتا ہوا شعلہ یعنی دلیل موجود ہے۔جو اس جھوٹ کو بے نقاب کر دیتا ہے۔اور جو اس علم قرآن سے کام نہ لے کر اس جادو کے چکر میں پھنسا رہتا ہے،اس کے لئے ذلت اور غلامی کا عذاب ہے جو اس کا پیچھا کرتا رہتا ہے۔اور دوزخ میں لے جاتا ہے یہ ہے وہ شہاب ثاقب یا شہاب مبین نہ کہ وہ آسمان میں تیز روشنی جو اکثر برسات میں نمودار ہوتی رہتی ہے۔کیا شیطان صرف برسات میں ہی چوری کرتے ہیں؟

وہ تیز روشنی تو جب پیدا ہوتی ہے جب کسی سیارے کا کوئی ٹکڑا بہت تیزی سے زمین کی طرف آتا ہے،اور رگڑ کھاتا ہے اس کا اس شہاب مبین سے کوئی مطلب نہیں وہ تو اللہ کا عذاب ہے جو ان کا پیچھا کر رہا ہے اور وہ نافرمان اس میں گرفتار رہتے ہیں۔

ایک بات قابل غور یہ ہے کسی کو کیا معلوم کہ اللہ کس مقام پر اور کب فیصلہ صادر کرتا ہے اور سننے والے فوراً وہاں جا کر ان فیصلوں میں سے کچھ سن لیں چوری کر لیں اگر ایسا ہے تو اللہ کی حفاظت جو قرآن کے بارے میں ہے میں کمی ہے اور شیاطین کا نظام اللہ کے نظام کو توڑ کر اس کے فیصلوں کو سن لیتا ہے (نعوذ) کیا ابھی تک وہ وقت نہیں آیا کہ مسلم علماء عقل مندی کا ثبوت پیش کریں اور باطل تراجم وتفاسیر کو ایک طرف کر دیں اور جو حقیقت ہے اس کو لوگوں کے سامنے لائیں۔[۲۶:۲۱۰ سے ۲۱۲]

اس ضمن میں سورت الشعرا کی آیت ۲۱۰ سے ۲۱۲ بھی قابل غور ہیں۔ جن میں کہا گیا ہے (۲۶:۲۱۰) اس قرآن کو شیطان نہیں لائے۔۲۱۱/اور وہ اس کے بارے میں ظلم زیادتی نہیں کریں گے اور نہ ہی وہ اس کی طاقت رکھتے ہیں (۲۱۲) بلکہ وہ تو اپنے گناہوں کی وجہ سے اس مقام پر پہنچ گئے ہیں کہ اس کو سننے سے محروم ہو گئے ہیں (۱۷:۴۵،۴۶)

(۴۱:۲۶) اور کافروں نے کہا اس قرآن کو سنو ہی نہیں اور شور مچاؤ بکواس کرو کیا عجب کہ تم غالب آجاؤ دیکھئے شیطان خود ہی سننا نہیں چاہتے۔

اگر ان آیات کی روشنی میں دیکھا جائے تو ایک بات یہ سامنے آتی ہے کہ بلندی والی کتاب قرآن جو زیب وزینت والی ہے جو لوگوں کے لئے خوش نما بنا دی گئی ہے۔جس کی حفاظت کا ذمہ اللہ کا ہے کہ اس کی روح قانون مضامین میں کوئی تغیر نہیں کر سکتا اگر کوئی اس کے قانون کے بدلے غلط بات بنا کر کہتا ہے تو اس کے پیچھے ایک روشن دلیل ہوگی جو ان کی بات کو غلط ثابت کر دے گی اور اس جھوٹ کے بدلے ان کے لئے دوزخ کا عذاب چمکتا ہوا شعلہ بھی تیار ہے جو دوزخ میں پائے گا۔

عالموں نے اس حفاظت کو آسمان سے جوڑا ہے جو محل نظر ہے کیا شیطان اور اس کے چیلے آسمان میں نہیں جا سکتے؟ جاتے ہیں۔

और धरती को भी हमने फैलाया और उस पर पर्वत (बनाकर) रख दिए और उसमें हर वस्तु (भोजन, पेड़, पौधे इत्यादि) एक निर्धारित मात्रा में उगादी अर्थात संतुलन के साथ (19)

اورزمین کوبھی ہم ہی نے پھیلایا اوراس پر پہاڑ (بنا کر) رکھ دئے اوراس میں ہر چیز (غذا، پیڑ، پودے وغیرہ) ایک معین مقدار میں اگادی یعنی توازن کےساتھ(۱۹)

और हम ही ने तुम्हारे लिए और उनके लिए जिन को तुम जीविका नही देते उसमें जीविका के सामान उत्पन्न कर दिए (20)

اورہم ہی نےتمہارےاوران کے لئے جن کوتم روزی نہیں دیتےاس میں معاش کےسامان پیدا کردئے(۲۰)

और (देखो दुनिया में) कोई वस्तु ऐसी नही है जिस के बड़े बड़े भंडार हमारे पास उपस्थित न हो परन्तु हम उन्हें (आवश्यक्तानुसार) उचित मात्रा में अवतरित करते है (अर्थात किसी में एक कण की भी कमी बेशी नही होती (21)

اور(دیکھودنیا میں) کوئی چیز ایسی نہیں ہے جس کے (بڑے بڑے)ذخیرے ہمارے پاس موجود نہ ہوں لیکن ہم انہیں (ضرورت کے مطابق) مناسب مقدار میں نازل کرتے ہیں (یعنی کسی میں ایک ذرہ کی بھی کمی بیشی نہیں ہوتی)(۲۱)

और हम ही पानी के कणों से भरी हुई वायु चलाते है फिर आकाश से पानी बरसाते है जो तुम्हारे पीने इत्यादि में काम आता है, और तुममें इतनी शक्ति न है कि उसका भंडार संग्रह कर लो (22)

اورہم ہی پانی کے ذروں سے بھری ہوئی ہوائیں چلاتے ہیں پھرآسمان سے پانی برساتے ہیں جوتمہارے پینے وغیرہ میں کام آتا ہےاورتم میں اتنی طاقت نہ ہے کہ اس کا ذخیرہ جمع کرلو(۲۲)

और हम ही जीवित करते है और हम ही मारते है, और हम ही सबके उत्तराधिकारी है, (23)

اورہم ہی زندہ کرتے ہیں اورہم ہی مارتے ہیں اورہم ہی سب کےوارث(مالک)ہیں(۲۳)

और जो लोग तुमसे पहले हो चुके है उनका पूरा विवरण हमको ज्ञात है और जो पीछे आने वाले है उन्हें भी जानते है (अच्छी प्रकार से) (24)

اورجولوگ تم سے پہلےگزرچکے ہیں ان کا پورا حال ہم کو معلوم ہےاور جوپیچھےآنے والے ہیں انہیں بھی جانتے ہیں(اچھی طرح)(۲۴)

(उनकी कोई बात हमसे गुप्त नही है) और तेरा ईश्वर उन सबको (महाप्रलय के दिन अपने सामने संग्रह करेगा उसका कोई कार्य युक्ति से रहित नही

(ان کی کوئی بات ہم سےچھپی ہوئی نہیں)اورتیرا رب ان سب کو(قیامت کےروزاپنے سامنے)جمع کرےگا اس

वह सब कुछ जानता है (25)
और हमने मानव को खनखनाते सड़े हुए गारे से उत्पन्न किया है (26)
और जिन्नों को उससे पहले धुंऐं की अग्नि से उत्पन्न किया था (27)
और (ऐ रसूल जब ऐसा हुआ था कि तेरे ईश्वर ने फरिश्तों से कहा था में सड़े हुए गारे से जो सूख कर बजने लगता है एक व्यक्ति उत्पन्न करने वाला हूं (अर्थात मानव की उत्पत्ति होने वाली है) (28)
जब उसको (आकृति व आचारण मानवता) में ठीक कर लूं और उसमें (बहुमूल्य वस्तु) अर्थात अपने ज्ञान से उसको संवार दूं उसको ज्ञान वाला बना दूं तो उसको उच्चतर स्वीकार कर लेना उसके लिए वातावरण अनुकूल बनाना सहायता करना (29) {12:87}
तो समय आने पर फरिश्ते तो सबके सब सजदे में गिर पड़े अर्थात उच्चतर मान लिया ईश्वर का आदेश माना (30)
परन्तु इबलीस कि उसने सजदा करने वालों के साथ होने से इनकार किया (31)
(ईश्वर ने) कहा कि इबलीस! तूझे क्या हुआ कि तू सजदा करने वालों में सम्मिलित न हुआ अर्थात उच्चतर स्वीकार न किया (32)
उसने कहा मुझ से यह नही हो सकता कि मैं ऐसे को उच्चतर स्वीकार कर लूं जिसे तूने सड़े गारे से बनी खनखनाती मिट्टी से बनाया (33)
ईश्वर ने कहा तू यहां से निकल जा तू पतित है (34)
और बदले के दिन अर्थात महाप्रलय तक तुझ पर धिक्कार होती रहेगी (35)
(उसने) कहा कि ऐ रब मुझे उस दिन तक छूट दे जब लोग (मरने के बाद) जीवित किये जाऐंगे (36)
कहा (ऐ पतित अब तक तुझे ज्ञात न था कि तुझे छूट कब तक है तो सुन और तूने सुना भी नही जो आयात 35 में कहा) मेरे विधान में तुझे अर्थात तेरे कार्य को महा प्रलय तक छूट है (अब तू भी जान ले मेरे विधान बदले नही जाते, और सदाचारी और दुराचारी का पता भी तब ही चलेगा जब तेरी दुष्टता का मुकाबला करती रहेगी बिना परिक्षा के क्या पता कौन सदाचारी है और कौन दुराचारी) (37)
छूट निश्चित समय (अर्थात प्रलय के दिन तक है (जो पहले ही लिखा हुआ है)) (38)
(ईश्वर का निर्णय सुनकर) शैतान ने कहा ऐ रब चूंकि तेरे नियमानुसार मुझ पर (मुक्ति का) मार्ग बन्द हो गया है तू साक्षी रहना (मैंने भी निर्णय कर लिया है कि) धरती में (मानव की बुराईयों को) उनकी दृष्टि में अच्छी कर दूंगा (कि वह बुराई को अच्छा समझने लगेंगे) और सबको सत्य मार्ग से बहकाऊंगा (39)
हां तेरे सदाचारि बन्दे मेरे बहकावा में न जायेगे (40)
ईश्वर ने कहा मुझ तक पहुचने का यही एक सीधा

کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں وہ سب کچھ جانتا ہے (۲۵)
اور ہم نے انسان کو کھنکھناتے سڑے ہوئے گارے سے پیدا کیا ہے (۲۶)
اور جنوں کو اس سے پہلے بے دھوئیں کی آگ سے پیدا کیا تھا (۲۷)
اور (اے رسول!) جب ایسا ہوا تھا کہ تیرے رب نے فرشتوں سے کہا تھا میں سڑے ہوئے گارے سے جو سوکھ کر بجنے لگتا ہے ایک بشر پیدا کرنے والا ہوں (یعنی انسان کی تخلیق ہونے والی ہے) (۲۸)
جب اس کو (صورت و سیرت انسانیہ) میں درست کرلوں اور اس میں (قیمتی چیز) یعنی اپنے علم سے اس کو سنوار دوں اس کو علم والا بنا دوں تو اس کو برتر تسلیم کر لینا اس کے لئے فضا سازگار بنانا مدد کرنا (۲۹) [۱۲:۸۷]
تو وقت آنے پر فرشتے تو سب کے سب سجدے میں گر پڑے یعنی برتر تسلیم کرلیا اللہ کا حکم مانا (۳۰)
مگر ابلیس کہ اس نے سجدہ کرنے والوں کے ساتھ ہونے سے انکار کردیا (۳۱)
(اللہ نے) فرمایا کہ ابلیس! تجھے کیا ہوا کہ تو سجدہ کرنے والوں میں شامل نہ ہوا یعنی برتر تسلیم نہ کیا؟ (۳۲)
اس نے کہا مجھ سے یہ نہیں ہوسکتا کہ میں ایسے کو برتر تسلیم کرلوں جسے تو نے سڑے گارے سے بنی کھنکھناتی مٹی سے بنایا (۳۳)
اللہ نے کہا تو یہاں سے نکل جا تو مردود ہے (۳۴)
اور بدلے کے دن یعنی قیامت تک تجھ پر لعنت ہوتی رہے گی (۳۵)
(اس نے) کہا کہ رب میرے مجھے اس دن تک مہلت دے جب لوگ (مرنے کے بعد) زندہ کئے جائیں گے (۳۶)
کہا (اے مردود اب تک تجھے معلوم نہ تھا کہ تجھے مہلت کب تک ہے تو سن) اور تو نے سنا بھی نہیں (جو آیت ۳۵ میں ہے کہ) میرے قانون میں تجھے یعنی تیرے کام کو قیامت تک مہلت ہے (اب تو بھی جان لے میرے قانون بدلے نہیں جاتے اور نیک اور بد کا پتہ بھی تب ہی چلے گا جب تیرے شر کا مقابلہ کرتا رہے گا بنا آزمائش کے کیا پتہ کون نیک ہے اور کون بد) (۳۷)
مہلت وقت مقرر (یعنی قیامت) کے دن تک ہے (جو پہلے ہی لکھا ہوا ہے) (۳۸)
(اللہ کا فیصلہ سن کر) شیطان نے کہا اے رب چونکہ تیرے قانون کے مطابق مجھ پر (نجات کی) راہ بند ہوگئی ہے اس لئے تو گواہ رہنا (میں نے بھی طے کرلیا ہے کہ) زمین میں (انسان کی برائیوں کو) ان کی نظر میں اچھی کردوں گا (کہ وہ برائی کو اچھا سمجھنے لگیں گے) اور سب کو راہ حق سے بہکاؤں گا (۳۹)
ہاں تیرے نیک بندے میرے بہکائے میں نہ آئیں گے (۴۰)
اللہ نے فرمایا مجھ تک پہنچنے کا یہی ایک سیدھا راستہ ہے

मार्ग है (जिस पर मेरे मुख्य बन्दे चलेंगे अर्थात आज्ञाकारी उन पर तेरा छल न चलेगा (41)

(جس پر میرے خاص بندے چلیں گے یعنی فرمانبرداران پر تیرا فریب نہ چلے گا)(۴۱)

जो मेरे मुख्य बन्दे है उन पर तेरा कुछ बल न चलेगा (कि उनको पाप में डाल सके) हां वह पथ भ्रष्ट लोग जो तेरे पीछे चलेंगे (42)

جو میرے خاص بندے ہیں ان پر تیرا کچھ زور نہ چلے گا (کہ ان کو گناہ میں ڈال سکے) ہاں وہ گمراہ لوگ جو تیرے پیچھے چلیں گے (۴۲)

(तो जो लोग तेरा अनुकरण करेंगे) उन सबके लिए नर्क के कष्ट का वचन है (जो टलने वाला नहीं) (43)

(تو جو لوگ تیری پیروی کریں گے) ان سب کے لئے دوزخ کے عذاب کا وعدہ ہے (جو ٹلنے والا نہیں) (۴۳)

उस (नर्क) के सात द्वार है हर द्वार से प्रविष्ट होने) के लिए (पापीयों का) एक मुख्य दल होगा (44)

اس (دوزخ) کے سات دروازے ہیں ہر دروازے (سے داخل ہونے) کے لئے (گناہ گاروں کی) ایک خاص جماعت ہوگی (۴۴)

(परन्तु उस दिन) सदाचारी और संयमी इन्सान उपवनों और स्रोतों (का भ्रमण व मनोरंजन) में होंगे (45)

(لیکن اس روز) متقی اور پرہیزگار انسان باغوں اور چشموں (کی سیر وتفریح) میں ہوں گے (۴۵)

(उनसे कहा जाएगा) शान्ति और सन्तोष के साथ इन उपवनों में प्रविष्ट हो जाओ (46)

(ان سے کہا جائے گا) سلامتی اور اطمینان کے ساتھ ان باغوں میں داخل ہو جاؤ (۴۶)

उस स्वर्ग में प्रविष्ट होने वालों के हृदयों में कोई मलिनता न होगी क्योंकि उनके हृदयों को हमने अर्थात ईश्वर के नियम ने शुद्ध कर दिया है, दुनिया, में वह दो भाईयों की भांति एक दूसरे के सामने तख्तो सिंहासनों पर बैठे होंगे (47)

اس جنت میں داخل ہونے والوں کے دلوں میں کوئی کدورت نہ ہوگی کیونکہ ان کے دلوں کو ہم نے یعنی اللہ کے قانون نے صاف کر دیا ہے دنیا میں وہ دو بھائیوں کی طرح ایک دوسرے کے سامنے تختوں پر بیٹھے ہوں گے (۴۷)

न उनको वहां कोई दुख होगा और न वह वहां से निकाले जाएगें (48) {39:35, 94:7}

نہ ان کو وہاں کوئی تکلیف ہوگی اور نہ وہ وہاں سے نکالے جائیں گے (۴۸) [۳۹:۳۵، ۹۴:۷]

(ऐ रसूल!) मेरे बन्दों को बता दो कि मैं बड़ा क्षमा करने वाला हूं (और) दयालू हूं (49) {17:53, 39:53}

(اے رسول!) میرے بندوں کو بتا دو کہ میں بڑا بخشنے والا (اور) مہربان ہوں (۴۹) [۱۷:۵۳، ۳۹:۵۳]

और यह कि मेरा कष्ट भी पीड़ा देने वाला है (50)

اور یہ کہ میرا عذاب بھی درد دینے والا ہے (۵۰)

और उनको सुना दो (51)

اور ان کو ابراہیم کے مہمانوں کا احوال سنا دو (۵۱)

जब वह इब्राहीम के पास आए तो उन्होंने कहा तुम पर शान्ति हो तो इब्राहीम ने कहा तुम से शंका है (52) (बछड़े वाली घटना)

جب وہ ابراہیم کے پاس آئے تو انہوں نے کہا تم پر سلامتی ہو تو ابراہیم نے کہا ہمیں تم سے اندیشہ ہے (۵۲) (بچھڑے والا واقعہ)

अतिथियों ने कहा डरो मत हम तुम्हें समझदार और बुद्धि मान पुत्रों (की उत्पत्ति की शुभ सूचना सुनाने आए है (53)

مہمانوں نے کہا ڈرو مت ہم تمہیں سمجھدار اور عقل مند لڑکوں (کی پیدائش کی) خوشخبری سنانے آئے ہیں (۵۳)

वह बोले अब शुभ सूचना देने आए हो जब मैं बूढ़ा हो चुका हूं? अब काहे की शुभ सूचना? (54)

وہ بولے اب خوشخبری دینے آئے ہو جب میں بوڑھا ہو چکا ہوں؟ اب کاہے کی خوشخبری؟ (۵۴)

उन्होंने कहा हम आपको बिलकुल सच्ची शुभ सूचना सुनाते हैं आप निराश लोगों में सम्मिलित न हो (55)

انہوں نے کہا ہم آپ کو بالکل سچی خوشخبری سناتے ہیں آپ مایوس لوگوں میں شامل نہ ہوں (۵۵)

(इब्राहीम ने) कहा कि ईश्वर की दया से (मैं निराश क्यों होने लगा उससे) निराश होना पथ भ्रष्टों का काम है (56)

(ابراہیم نے) کہا کہ اللہ کی رحمت سے (میں مایوس کیوں ہونے لگا اس سے) مایوس ہونا گمراہوں کا کام ہے (۵۶)

फिर इब्राहीम अ0 ने (फरिश्तो से) ज्ञात किया तुम को और किस कार्य के लिए भेजा गया है (57)

پھر ابراہیمؑ نے (فرشتوں سے) پوچھا تم کو اور کس کام کے لئے بھیجا گیا ہے؟ (۵۷)

फरिश्तों ने कहा हम एक अपराधी दल की ओर भेजे गए है (जो अपने अपराध के दण्ड में वध होने वाला है (58)

فرشتوں نے کہا ہم ایک مجرم گروہ کی طرف بھیجے گئے ہیں (جو اپنے جرم کی پاداش میں ہلاک ہونے والا ہے) (۵۸)

परन्तु हां वहां लूत का परिवार है उन्हें हम बचा लेंगे. (59)
परन्तु लूत की पत्नी न बचेगी उसके विषय में हमारा अनुमान है कि वह पीछे रह जाने वालों का साथ देगी (60)
फिर जब फरिश्ते लूत के घर गये (61)
तो लूत ने कहा तुम लोग अजनबी लोग ज्ञात होते हो (62)
फरिश्तों ने कहा नही (ऐसा नही है) हम वह वस्तु (अर्थात यातना) लेकर आए है जिस में लोग भ्रम करते है (63)
और हम आपके पास सत्य बात लेकर आए है और हम सत्य कहते है (64)
तो आप कुछ रात रहे अपने घर वालों को ले निकलें और स्वंय उनके पीछे चलें और तुममें से कोई व्यक्ति पीछे मुड़ कर न देखे और जहां जाने का आदेश दिया गया है वहां चले जाना (65)
और हमने लूत अ0 पर यह बात स्पष्ट कर दी थी कि प्रातः होते होते उन (दुराचारियों) को जड़ मूल से उखाड़ फैंका जाएगा (66)
और नगर वासी (लूत के पास) हर्षित हर्षित आए (67)
(लूत अ0 ने) कहा कि यह मेरे अतिथि है (इनके विषय में) मुझे अपमानित न करना (68)
और ईश्वर से डरो और मुझे अपमानित न करना (69)
वह बोले क्या हमने तुमको सारे संसार (की रक्षा) से मना नही किया (70)
(उन्होंने) कहा यदि तुम्हें करना ही है तो यह मेरी (जाति की) पुत्रीयां है इनसे विवाह कर लो (71) {11:78}
(ऐ मुहम्मद स0) आपका जीवन साक्षी है कि वह अपने उन्माद में उन्मत्त (हो रहे) थे (72) {4:43, 22:2}
सो उनको सूर्य निकलते निकलते चिंघाड़ ने आ पकड़ा (73)
और हमने उस (नगर को उलट कर) नीचे ऊपर कर दिया और उन पर कंकर की पथरीयां बरसाईं (74)
निःसंदेह इस (किस्से) में प्रतिभा वालो के लिए चिन्ह हैं (75)

مگر ہاں وہاں لوط کا خاندان ہے انہیں ہم بچالیں گے(۵۹)
مگر لوط کی بیوی نہ بچے گی اس کے متعلق ہمارا اندازہ ہے کہ وہ پیچھے رہ جانے والوں کا ساتھ دے گی(۶۰)
پھر جب فرشتے لوط کے گھر گئے(۶۱)
تو لوط نے کہا تم لوگ اجنبی معلوم ہوتے ہو(۶۲)
فرشتوں نے کہا نہیں (ایسا نہیں ہے) ہم وہ چیز (یعنی عذاب) لے کر آئے ہیں جس میں لوگ شک کرتے ہیں(۶۳)
اور ہم آپ کے پاس یقینی بات لے کر آئے ہیں اور ہم سچ کہتے ہیں(۶۴)
تو آپ کچھ رات رہے اپنے گھر والوں کو لے نکلیں اور خود ان کے پیچھے چلیں اور تم میں سے کوئی شخص پیچھے مڑ کر نہ دیکھے اور جہاں جانے کا حکم دیا گیا ہے وہاں چلے جانا(۶۵)
اور ہم نے لوطؑ پر یہ بات ظاہر کردی تھی کہ صبح ہوتے ہوتے ان (بدکاروں) کو جڑ بنیاد سے اکھاڑ پھینکا جائے گا(۶۶)
اور اہل شہر (لوط کے پاس) خوش خوش آئے(۶۷)
(لوط نے) کہا کہ یہ میرے مہمان ہیں (ان کے بارے میں) مجھے رسوا نہ کرنا(۶۸)
اور اللہ سے ڈرو اور مجھے رسوا نہ کرنا(۶۹)
وہ بولے کیا ہم نے تم کو سارے جہان (کی حمایت) سے منع نہیں کیا(۷۰)
(انہوں نے) کہا اگر تمہیں کرنا ہی ہے تو یہ میری (قوم کی) لڑکیاں ہیں ان سے شادی کرلو(۷۱)[۷۸:۱۱]
(اے محمدؐ) آپ کی عمر گواہ شاہد ہے کہ وہ اپنی مستی میں مدہوش (ہو رہے) تھے(۷۲)[۴:۴۳،۲۲:۲]
سو ان کو سورج نکلتے نکلتے چنگھاڑ نے آپکڑا(۷۳)
اور ہم نے اس (شہر کو الٹ کر) نیچے اوپر کردیا اور ان پر کھنگر کی پتھریاں برسائیں(۷۴)
بے شک اس (قصے) میں اہل فراست کے لئے نشانی ہے(۷۵)

(15:71) का नोट- जब महा मना लूत अ0 के पास लड़को की आकृति में फरिश्ते आए तो नगर के दुराचारि स्वभाव के लोग तुरन्त दोड़े आपके घर आ गए लूत अ0 ने उनको मना किया, परन्तु वह न माने तब लूत अ0 ने कहा ऐ अत्याचारियों! तुम को लज्जा नही आती कि अतिथियों के साथ तुम वह कर्म करना चाहते हो जो एक बुरा कर्म है और वेसे भी कोई भद्र जाति अपने अतिथियों को अपमानित नही करती, क्या तुम इस लिए यह साहस कर रहे हो कि मुझे निर्बल समझ लिए है, और यह मेरे अतिथि है इस कर्म को न करते हुए यह मेरी जाति की पुत्रीयों है जो तुम्हारे लिए पवित्र है, उनको पत्नी बनाओ परन्तु याद रखो उनके साथ भी तुम अनुचित रीति अपनाओगे तो जाति तुम को बता देगी कि कैसे किस की मर्यादा पर हाथ डाला जाता है, परन्तु तुम उनके साथ ऐसा नही करोगे, चुंकि जाति को मेरी भांति निर्बल नही जानते यद्यपि मैं भी बल हीन नही हूं मेरे साथ ईश्वर है,

जो काम तुम करना चाहते हो वह बुरा कर्म है, जो नही

(۱۵:۷۱) کا نوٹ:۔ جب حضرت لوطؑ کے پاس لڑکوں کی شکل میں فرشتے آئے تو بستی کے اوباش قسم کے آدمی فوراً دوڑے آپ کے گھر آگئے۔ لوطؑ نے ان کو منع کیا، مگر وہ نہ مانے تب لوط نے کہا اے ظالمو! تم کو شرم نہیں آتی کہ مہمانوں کے ساتھ تم وہ فعل کرنا چاہتے ہو جو ایک برا کام ہے اور ویسے بھی کوئی شرم دار قوم اپنے مہمانوں کو بے عزت نہیں کرتی کیا تم اس لئے یہ قدم اٹھا رہے ہو کہ مجھے کمزور سمجھ لیا ہے، اور یہ میرے مہمان ہیں اس کام کو نہ کرتے ہوئے یہ میرے قوم کی بیٹیاں ہیں جو تمہارے لئے پاکیزہ بھی ہیں ان کو بیوی بناؤ مگر یاد رکھو ان کے ساتھ بھی تم ناجائز طریقہ اختیار کروگے تو قوم تم کو بتا دے گی کہ کیسے کس کی عزت پر ہاتھ ڈالا جاتا ہے لیکن تم ان کے ساتھ ایسا نہیں کروگے۔ چونکہ قوم کو میری طرح سے تم کمزور نہیں جانتے۔ حالانکہ میں بھی کمزور نہیں ہوں میرے ساتھ اللہ ہے۔

جو کام تم کرنا چاہتے ہو وہ برا فعل ہے جو نہیں کرنا چاہیے۔ تو کیا تم میں

करना चाहिए तो क्या तुममें कोई एक व्यक्ति भी भद्र सज्जन नही? जो इस कर्म से तुमको रोके, परन्तु जाति नही मानी तो ईश्वर ने जो कहा और किया वह धाराओ में अंकित है,

और वह (नगर) अब तक सीधे मार्ग पर (उपस्थित) है (76)
निःसंदेह उसमें विश्वास लाने वालों के लिए चिन्ह है (77)
और उनके रहने वाले भी बड़े दुराचारि थे (78)
तो हमने उनसे बदला लिया और वह दोनों नगर खुले मार्ग पर है (79)
और हिजर के रहने वालों ने भी रसूलों को झुठलाया था (80)
हमने उन्हें अपने चिन्ह दिखलाए परन्तु वह उनसे मुख फैरते रहे (81)
और वह पर्वत को काट कर घर बनाते थे कि शान्ति से रहेंगे (82)
एक दिन प्रातः को अचानक उनको शक्तिशाली धमाके ने आ पकड़ा (83)
और जो कुछ उन्होंने (अपनी रक्षा के लिए) किया था वह कुछ भी काम न आया (84)
हमने आकाशों और पृथ्वी को और जो कुछ इनके मध्य है सत्य के साथ एक प्रयोजन (और निति) से बनाया है (यहां पर हर कर्म अपना प्राकृतिक फल रखता है, नास्तिकों की अवज्ञा का अन्त तबाही की आकृति में प्रकट होगा) और वह निश्चित समय आके रहेगा (जब ईश्वर का निर्णय नास्तिकों के विरुद्ध प्रचारित होगा) पस (उनके विरोध को) अच्छे ढंग से क्षमा करो (85)
कुछ शंका नही कि तुम्हारा रब ही उत्पन्न करने वाला और जानने वाला है, (86)
हमने आप को सात आयतें (अर्थात अलहमद) दी जो बार बार (नमाज़ की हर रकआत में पढ़ी जाती है) दोहराई जाती है और इसी प्रकार (हर रकआत में अलहमद के साथ) कुरआन भी पढ़ा जाता है (87) {9:31,4:172, 30:38,39:42,65:4, 71:23}

नोट- ईश्वर ने यह बताया है कि नमाज़ की हर रकआत में अलहमद पढ़ी जाएगी और इतनी ही बार कुरआन पढ़ा जाएगा, जो आसानी से पढ़ सको (सूरत मुजम्मिल) आयत में "वाव अतफिया है जैसे (9:31) और (65:4) में है (अर्थात उन्होंने अपने संतगणों को रब बना रखा है और ऐसे ही ईसा इब्न मरयम को भी क्या? रब (9:31) या जैसे (65:4) या उन स्त्रीयों की इद्दत तीन माह है जिनकी माहवारी बन्द हो गई हो और यही आदेश उन पर भी है जिनको अभी माहवारी न आई हो क्या? अर्थात इद्दत तीन माह,

ऐसे ही (15:87) में है अर्थात हर रकआत में अलहमद पढ़ा जाएगा और कुरआन भी अतः हर रकआत में अलहमद के साथ कुरआन पढ़ा जाना है खाली भरी का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता,

और यदि यह स्वीकार कर लिया जाए जैसा की आलिमों ने अनुवाद किया है कि अलहमद दी और अजमत वाला कुरआन दिया तो इससे यह मनोभाव मिलता है प्रकट होता है कि अलहमद कुरआन नही है और हमारे आलिमों ने यह स्वीकार कर रखा है कि कुरआन में नमाज़ पढ़ने की विधि नही है, न रकआत की संख्या है अतः इस स्पष्ट आयत का अर्थ ही बदल दिया जबकि सत्य यह है कि कुरआन में नमाज़ पढ़ने की विधि भी है और रकआत की संख्या भी हां वह विधि निःसंदेह

کوئی ایک آدمی بھی شریف نہیں؟ جو اس کام سے تم کو روکے لیکن قوم نہیں مانی تو اللہ نے جو کہا اور کیا وہ آیتوں میں درج ہے۔

اور وہ (شہر) اب تک سیدھے رستے پر (موجود) ہے (۷۶)
بے شک اس میں ایمان لانے والوں کے لئے نشانی ہے (۷۷)
اور بن کے رہنے والے لوگ بھی بڑے ظالم تھے (۷۸)
تو ہم نے ان سے بھی بدلا لیا اور وہ دونوں شہر کھلے رستے پر ہیں (۷۹)
اور حجر کے رہنے والوں نے بھی رسولوں کو جھٹلایا تھا (۸۰)
ہم نے انہیں اپنی نشانیاں دکھلائیں لیکن وہ ان سے منہ پھیرتے رہے (۸۱)
اور وہ پہاڑ کو تراش کر گھر بناتے تھے کہ امن سے رہیں گے (۸۲)
ایک دن صبح کو اچانک ان کو زبردست دھماکے نے آ پکڑا (۸۳)
اور جو کچھ انہوں نے (اپنی حفاظت کے لئے) کیا تھا وہ کچھ بھی کام نہ آیا (۸۴)
ہم نے آسمانوں اور زمین کو اور جو کچھ ان کے درمیان ہے حق کے ساتھ ایک مقصد (اور مصلحت) سے بنایا ہے (یہاں پر ہر عمل اپنا قدرتی نتیجہ رکھتا ہے حق کی نافرمانی کا انجام تباہی کی شکل میں ظاہر ہوگا) اور وہ وقت مقررہ آ کے رہے گا (جب اللہ کا فیصلہ منکرین حق کے خلاف صادر ہوگا) پس (ان کی مخالفت کو) حسن وخوبی سے درگزر کرو (۸۵)
کچھ شک نہیں کہ تمہارا رب ہی پیدا کرنے والا اور جاننے والا ہے (۸۶)
ہم نے آپ کو سات آیتیں (یعنی الحمد) دیں جو بار بار (نماز کی ہر رکعت میں پڑھی جاتی ہیں) (دہرائی جاتی ہیں) اور اسی طرح (ہر رکعت میں الحمد کے ساتھ) قرآن بھی پڑھا جاتا ہے (۸۷)
[۹:۳۱،۴:۱۷۲،۳۰:۳۸،۳۹:۴۲،۶۵:۴،۷۱:۲۳]

نوٹ:۔ اللہ نے یہ بتایا ہے کہ نماز کی ہر رکعت میں الحمد پڑھی جائے گی اور اتنی ہی بار قرآن پڑھا جائے گا۔ جو آسانی سے پڑھ سکو (سورہ مزمل) آیت میں "واؤ" عطفیہ ہے جیسے (۹:۳۱) اور (۶۵:۴) میں ہے (یعنی انہوں نے اپنے مشائخ کو رب بنا رکھا ہے اور ایسے ہی عیسٰی ابن مریم کو بھی کیا؟ رب (۹:۳۱) یا جیسے (۶۵:۴) یا ان عورتوں کی عدت ۳ ماہ ہے جن کو حیض بند ہوگیا ہے اور یہی حکم ان پر بھی ہے جن کو ابھی حیض نہ آیا ہو کیا؟ یعنی عدت ۳ ماہ

ایسے ہی (۱۵:۸۷) میں ہے یعنی ہر رکعت میں الحمد پڑھا جائے گا اور قرآن بھی اس لئے ہر رکعت میں الحمد کے ساتھ قرآن پڑھا جانا ہے۔ خالی بھری کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔

اور اگر یہ تسلیم کرلیا جائے جیسا کہ عالموں نے ترجمہ کیا ہے کہ الحمد دی اور عظمت والا قرآن دیا تو اس سے یہ تاثر ملتا ہے ظاہر ہوتا ہے کہ الحمد قرآن نہیں ہے اور ہمارے عالموں نے یہ تسلیم کر رکھا ہے کہ قرآن میں نماز پڑھنے کا طریقہ نہیں ہے۔ نہ رکعت کی تعداد ہے اس لئے اس صاف آیت کا مطلب ہی بدل دیا جب کہ حقیقت یہ ہے کہ قرآن میں نماز پڑھنے کا طریقہ بھی ہے اور رکعت کی تعداد بھی۔ ہاں وہ طریقہ یقیناً قرآن میں نہیں ہے جو قرآن سے ہٹ کر رائج کیا ہوا

ہے بھلا جو قرآن میں ہے ہی نہیں تو وہ قرآن میں کیسے ملے گا؟ قرآن میں تو وہ ملے گا جو قرآن میں ہے۔

कुरआन में नही है जो कुरआन से हट कर प्रचलित की हुई है भला जो कुरआन में है ही नही तो वह कुरआन में कैसे मिलेगी? कुरआन में तो वह मिलेगा जो कुरआन में है.

اور اگر عالموں کا وہ ترجمہ ہی صحیح مان لیا جائے جیسا کہ کیا ہے کہ آپ کو سات آیتیں دیں مثانی جو عظمت والا قرآن ہے (جو کہ قاعدے سے غلط ہے) یعنی اس ترجمہ سے نماز میں پڑھنے کا حکم نہیں ہے تب بھی نماز کی ہر رکعت میں قرآن پڑھنے کا دعویٰ تو اس کے علاوہ بھی باقی رہتا ہے سورۃ مزمل سے۔

और यदि आलिमों का वह अनुवाद ही उचित मान लिया जाए जैसा कि किया है कि आपको सात धाराएं दी मसानी जो अजमत वाला कुरआन है (जो कि अनुचित है) अर्थात इस अनुवाद से नमाज़ में पढ़ने का आदेश नही है तब भी नमाज़ की हर रकआत में कुरआन पढ़ने का वाद तो इसके अतिरिक्त भी शेष रहता है सूरत मुजम्मिल से.

اور ہمنے کفار کی کئی جماعتوں کو جو فائدہ دیا ہے تم ان کی طرف (رغبت سے) آنکھ اٹھا کر نہ دیکھنا اور نہ ان کے حال پر افسوس کرو اور مومنوں سے تواضع سے پیش آؤ (۸۸)
اور کہہ دو کہ میں تو صاف صاف ڈرسنانے والا ہوں (۸۹)
(اے رسول! ہم ان منکرینِ حق پر اسی طرح عذاب نازل کریں گے) جس طرح ان پر نازل کیا تھا جنہوں نے (دینِ حق قرآن) کو ٹکڑے ٹکڑے کر دیا (۹۰) (فرقے بن گئے)

और हमने नास्तिकों के कई दलो को जो लाभ दिया है तुम उनकी ओर (रूचि से) आंख उठा कर न देखना और न उनकी दशा पर अनुताप करना और आस्तिकों से नम्रता से प्रस्तुत आना (88)
और कह दो कि मैं तो स्पष्ट डर सुनने वाला हूं (89)
(ऐ रसूल! हम उन सत्य का इनकार करने वालों पर उस प्रकार कष्ट अवतरति करेंगे) जिस प्रकार उन पर प्रेषित किया था जिन्होंने (सत्य धर्म कुरआन) को टुकड़े टुकड़के कर दिया (90) (दल बन गये)

اور جو اپنے قرآن یعنی پڑھنے کی کتاب کو ٹکڑے ٹکڑے کر دیں (۹۱)

और जो अपने कुरआन अर्थात पढ़ने की पुस्तक को टुकड़े टुकड़े कर दें (91)

سنو! تمہارے رب یعنی مجھ اللہ کی شہادت یعنی قانون ہے کہ ضرور ان سب سے قانون کے مطابق ہم پوچھیں گے (۹۲) [۴۲:۴۵؛ ۷۰:۴۰]
ان کاموں کو جو وہ کرتے رہے ہیں (۹۳)
پس جو حکم آپ کو دیا جا رہا ہے وہ لوگوں کو سنا دو اور مشرکوں سے منہ پھیر لو (۹۴) [۵:۶۷]
اور جو لوگ تمہاری ہنسی اڑاتے ہیں (ان سے بدلہ لینے کے لئے) ہم تمہاری طرف سے کافی ہیں (۹۵)
جو اللہ کے ساتھ دوسرے معبود بناتے ہیں (اور ہنسی اڑاتے ہیں) ان کو جلد ہی انجام علوم ہو جائے گا (۹۶)
اور ہم جانتے ہیں ان باتوں سے جو وہ بناتے ہیں آپ کا دل تنگ ہوتا ہے (۹۷)
تو آپ اپنے رب کی تسبیح کہتے اور (اس کی) خوبیاں بیان کرتے رہو اور سجدہ کرنے والوں یعنی فرمانبرداروں میں داخل رہو (۹۸)
اور اپنے رب کی بندگی میں لگے رہو یہاں تک کہ وہ یقینی وقت آجائے (یعنی موت کا) (۹۹)

सुनो तुम्हारे रब अर्थात मुझ ईश्वर की साक्ष्य अर्थात नियम है कि अवश्य उन सबसे नियमानुसार (हम ज्ञात करेंगे) (92) {42:45; 70:40}
उन कर्मों को जो वह करते रहे है (93)
पस जो आदेश आपको दिया जा रहा है वह लोगों को सुना दो और अनेकेश्वर वादियों से मुख फैर लो (94) {5:67}
और जो लोग तुम्हारा उपहास उड़ाते हैं (उनसे बदला लेने के लिए) हम तुम्हारी ओर से पर्याप्त हैं (95)
जो ईश्वर के साथ दूसरे देवता बनाते है (और उपहास करते हैं) उनको शीघ्र ही ज्ञात हो जाएगा (96)
और हम जानते है उन बातों से जो वह बनाते है आपका हृदय तंग होता है (97)
तो आप अपने रब की पवित्रता कहते और (उसके) गुण ब्यान करते रहो और सजदा करने वालों अर्थात आज्ञाकारों में सम्मिलित रहो (98)
और अपने ईश्वर की पूजा में लगे रहो यहां तक कि वह विश्वसनीय समय आजाए (अर्थात मृत्यु का) (99)

سورت النحل (۱۶) مکی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

सूरत अन्नहल (16) मक्की

बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम

اللہ کا حکم (یعنی عذاب) گویا آ ہی پہنچا تو (کافرو!) اس کے لئے جلدی مت کرو (انتظار کرو وہ اپنے وقت پر ضرور آئے گا) اس کی ذات اس سے کہیں بلند و بالا ہے جس کو وہ لوگ اللہ کا شریک بناتے ہیں (۱)

ईश्वर का आदेश (अर्थात कष्ट) मानों आही पहुंचा तो (नास्तिकों!) उसके लिए जल्दी मत करो (प्रतीक्षा करो वह अपने समयस पर अवश्य आएगा) उसका अस्तित्व इससे कही उच्च है जिसको वह लोग ईश्वर का साझी बनाते है (1)

وہ اپنے بندوں میں سے جس پر چاہتا ہے اس پر فرشتوں کو اپنے حکم سے بالروح (یعنی وحی) کے ساتھ بھیجتا ہے کہ

वह अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है उस पर फरिश्तों को अपने आदेश से बिर्रूह (अर्थात वही) के साथ भेजता है कि लोगों को इस वास्तविक्ता से

सूचित कर दो कि मेरे अतिरिक्त कोई पूज्य नही (तो मेरी अवज्ञा से) डरो (2)

لوگوں کواس حقیقت سے خبر دار کردو کہ میرے سوا کوئی معبود نہیں (تو میری نافرمانی سے) ڈرو(۲)

उसी ने आकाशों और पृथ्वी को सत्य के साथ (अर्थात एक सोची समझी व्यवस्था के अधीन) उत्पन्न किया उसका अस्तित्व इससे मुक्त है जो वह लोग अनेकेश्वर वाद कर रहें हैं (3)

اُسی نے آسمانوں اور زمین کو حق کے ساتھ (یعنی ایک سوچے سمجھے نظام کے تحت) پیدا کیا اس کی ذات اس سے بری ہے جو وہ لوگ شرک کرر ہے ہیں (۳)

उसने मानव को वीर्य (की एक बून्द) से उत्पन्न किया फिर वह (ईश्वर के बनाए हुए नियम के अनुसार बढ़कर) एक खुला झगड़े वाला (व्यक्ति) बन गया (4)

اس نے انسان کو نطفہ (کے ایک قطرے) سے پیدا کیا پھر وہ (اللہ کے بنائے ہوئے قانون کے مطابق بڑھ کر) ایک کھلا جھگڑنے والا (انسان) بن گیا (۴)

और (देखो) उसने चौपाए उत्पन्न कर दिए उन (की खालों और ऊन) में तुम्हारे लिए सरदी से बचने का वस्त्र है और भांति भांति के लाभ है, उनमें ऐसे जीव भी है, जिन्हें तुम खाते हो (5)

اور (دیکھو) اس نے چوپائے پیدا کر دئے اُن (کی کھالوں اور اون) میں تمہارے لئے سردی سے بچنے کا لباس ہے اور طرح طرح کے فائدے ہیں ان میں ایسے جانور بھی ہیں جنہیں تم کھاتے ہو(۵)

और जब तुम उन्हें शाम के समय (मैदान से चरा कर घर) वापस लाते हो और जब प्रातः को (घर से लेजा कर मैदानों में) छोड़ देते हो तो तुम्हें (उनका दृश्य कैसा) अच्छा दिखाई देता है (6)

اور جب تم انہیں شام کے وقت (میدان سے چرا کر گھر) واپس لاتے ہو اور جب صبح کو (گھر سے لے جاکر میدانوں میں) چھوڑ دیتے ہو تو تمہیں (ان کا منظر کیسا) چھا دکھائی دیتا ہے(۶)

और (दूर दीर्घ) नगरों में जहां तुम विकट परिश्रम के बिना पहुंच नही सकते वह तुम्हारे भार उठा कर ले जाते है, कुछ शंका नही कि तुम्हारा रब अधिक ममता वाला दयालू है (7)

اور (دور دراز) شہروں میں جہاں تم زحمت شاقہ کے بغیر پہنچ نہیں سکتے وہ تمہارے بوجھ اٹھا کر لے جاتے ہیں کچھ شک نہیں کہ تمہارا رب شفقت والا مہربان ہے(۷)

और उसी ने घोड़े खच्चर और गधे उत्पन्न किए ताकि वह तुम्हारी स्वारी के काम आए और उनमें शोभा भी है वह और बहुत सी वस्तुए उत्पन्न करता है जिनकी तुमको सूचना नही (8) {43:61-66, 36:36}

اور اسی نے گھوڑے خچر اور گدھے پیدا کر دئے تاکہ وہ تمہاری سواری کے کام آئیں اور ان میں زینت بھی ہے وہ اور بہت سی چیزیں پیدا کرتا ہے جن کی تم کو خبر نہیں (۸)[۴۳:۶۱،۶۶؛۳۶:۳۶]

और सीधा मार्ग तो ईश्वर तक जा पहुचता है उसके अतिरिक्त टेढ़े मार्ग है (वह उस तक नही पहुंचते) यदि वह चाहता तो (जबरदस्ती) सबको सीधे मार्ग पर लगा देता (परन्तु उसकी युक्ति का निर्णय है कि यहां व्यक्ति को स्वातंत्रता हो, वह जिस मार्ग पर चलना चाहे चले ईश्वर पर आरोप न आए वह न्याय शील है उसने अपना नियम दे दिया है) (9) {3:103, 11:56}

اور سیدھا راستہ تو اللہ تک جا پہنچتا ہے اس کے علاوہ ٹیڑھے راستے ہیں (وہ اس تک نہیں پہنچتے) اگر وہ چاہتا تو (زبردستی) سب کو سیدھے راستے پر چلا دیتا (لیکن اس کی حکمت کا یہی فیصلہ ہے کہ یہاں آدمی کو آزادی ہو۔وہ جس راہ پر چلنا چاہے چلے اللہ پر الزام نہ آئے وہ عادل ہے اس نے اپنا قانون دے دیا ہے)(۹)[۳:۱۰۳؛۱۱:۵۶]

वही है जिसने आकाश से पानी बरसाया उसमें से कुछ तो तुम्हारे पीने के काम आता है (और कुछ धरती को जल सम्पन्न करता है) जिससे वृक्ष के वन उत्पन्न हो जाते है जिनमें तुम (पशु) चराते हो (10)

وہی ہے جس نے آسمان سے پانی برسایا اس میں سے کچھ تو تمہارے پینے کے کام آتا ہے(اور کچھ زمین کو سیراب کرتا ہے) جس سے درختوں کے جنگل پیدا ہوجاتے ہیں جن میں تم (جانور) چراتے ہو(۱۰)

उस पानी से वह तुम्हारे लिए खेतियां उगाता है, और जेतुन, खजूर, अंगूर और हर प्रकार के फल (उत्पन्न करता है) उसमें उन लोगों के लिए जो मनन चिनतन से काम लेते है बड़े चिन्ह है (11)

اس پانی سے وہ تمہارے لئے کھیتیاں اگاتا ہے اور زیتون کھجور انگور اور ہر طرح کے پھل (پیدا کرتا ہے) اس میں ان لوگوں کے لئے جو غور وفکر سے کام لیتے ہیں بڑی ہی نشانیاں ہیں(۱۱)

उसने तुम्हारे लिए रात्री और दिन और सूर्य और चान्द को काम में लगा दिया है और उसी के आदेश से उपग्रह भी कार्य में लगे हुए है, उसमें उन लोगों के लिए जो विवेक से कार्य करते है चिन्ह है (12)

<u>اس نے تمہارے لئے رات اور دن اور سورج اور چاند کو کام میں لگا دیا ہے اور اسی کے حکم سے ستارے بھی کام میں لگے ہوئے ہیں۔اس میں ان لوگوں کے لئے جو عقل سے کام لیتے ہیں بڑی ہی نشانیاں ہیں(۱۲)</u>

और पृथ्वी में भांति भांति के रंगों की वस्तुएं उत्पन्न की है (सब तुम्हारे काम में लगी हुई है यदि तुम उनसे काम लो) इसमें भी विवेक वालो के लिए बड़ी

اور زمین میں طرح طرح کے رنگوں کی چیزیں پیدا کیں ہیں (سب تمہارے کام میں لگی ہوئی ہیں اگر تم ان سے

کام لو) اس میں بھی سمجھنے والوں کے لئے بڑی نشانیاں ہیں (۱۳)
وہی تو ہے جس نے دریا (سمندر) کو تمہارے کام میں
لگا دیا ہے (مسخر کر دیا) تا کہ اس میں سے تازہ گوشت
(مچھلیاں) کھاؤ اور زیور (کے لئے موتی وغیرہ) نکالے
جسے تم پہنتے ہو اور تم دیکھتے ہو کہ جہاز پانی کو چیرتے
چلے جاتے ہیں تا کہ اس کا فضل تلاش کرو (یعنی دور ملکوں میں جا کر) اللہ کے فضل
سے اور اس کا شکر بجا لاؤ یعنی فرمانبرداری کرو (۱۴)
اور اسی نے زمین پر پہاڑ قائم کر دئے تا کہ تمہیں لے کر
گھومتی رہے اور اسی نے نہریں رواں کر دیں اور راستے
بنا دئے تا کہ تم ایک مقام سے دوسرے مقام تک جا سکو (۱۵)
اور راستوں میں نشانات بنا دئے اور (ستاروں کو دیکھو یہ
یونہی بکھرے ہوئے نہیں ہیں یہ بھی انسان کے فائدے کے لئے ہیں) انہیں
ستاروں سے راستہ معلوم کرتے ہیں (۱۶)
کیا وہ اللہ جو (کائنات کے ایسے زبردست کارخانہ کو) پیدا
کرتا ہے اس جیسا ہو سکتا ہے جو کچھ بھی پیدا نہیں کر سکتا؟ تو
اتنی سی بات بھی تمہاری سمجھ میں نہیں آتی؟ (۱۷)
(لوگو! اللہ کی نعمتیں اتنی زیادہ ہیں کہ) اگر تم اس کی نشانیوں
کو شمار کرنا چاہو (کبھی) نہ شمار کر سکو گے بے شک اللہ بخشنے
والا مہربان ہے (۱۸)
(تو لوگو!) اللہ سے کوئی بات چھپی نہیں رہے گی جو کچھ تم
چھپاؤ گے اور جو کچھ تم ظاہر کرو گے اللہ سب سے واقف ہے (۱۹)
اور جو لوگ اللہ کے علاوہ جن کو پکارتے ہیں وہ کوئی چیز بھی
پیدا نہیں کر سکتے وہ خود ہی کسی کے پیدا کئے ہوئے ہیں (۲۰)
(جنہیں وہ لوگ زندہ سمجھ رہے ہیں اور جن سے مرادیں
مانگتے ہیں) وہ مردے ہیں (بالکل) بے جان اور وہ تو یہ
بھی نہیں جانتے کہ (مرنے کے بعد) کب اٹھائے جائیں گے (۲۱) [۲:۱۲۱]
تمہارا معبود اکیلا اللہ ہے تو جو آخرت پر ایمان نہیں
رکھتے ان کے دل انکار کر رہے ہیں اور وہ سرکش
ہو رہے ہیں (۲۲)
وہ جو کچھ چھپاتے ہیں اور جو ظاہر کرتے ہیں اللہ ضرور اس
کو جانتا ہے وہ سرکشوں کو پسند نہیں کرتا (۲۳)
اور جب ان سے پوچھا جاتا ہے کہ تمہارے رب نے کیا
اتارا ہے تو کہتے ہیں کہ وہ تو (محض) اگلے وقتوں کے
افسانے ہیں (۲۴)
وہ لوگ قیامت کے دن (اپنے گناہوں کا) پورا پورا بوجھ
اٹھائیں گے اور ان لوگوں کے گناہوں کا بوجھ بھی اٹھائیں
گے جن کو وہ بے تحقیق گمراہ کرتے ہیں سن رکھو جو بوجھ وہ
اٹھا رہے ہیں بُرے ہیں (۲۵)
ان سے پہلے جو قومیں ہو چکی ہیں انہوں نے بھی (دعوت

निशानियां है (13)
वही तो है जिसने दरया (समुन्द्र) को तुम्हारे काम
में लगा दिया है (मुसख़्खर कर दिया) ताकि उसमें
से प्रफुल्ल मांस (मीन) खाओ और आभूषण (के
लिए मोती इत्यादि) निकाले जिसे तुम पहने हो
और तुम देखते हो कि पोत पानी को चीरते चले
जाते है ताकि उसकी कृपा दया से और उसका धन्यवाद करो अर्थात
आज्ञाकारी बनों (14)
और उसीने पृथ्वी पर पर्वत स्थापित कर दिए ताकि
तुम्हें लेकर घूमती रहे और उसी ने नहरे जारी कर
दी और मार्ग बना दिए ताकि तुम एक स्थान से
दूसरे स्थान तक जा सको (15)
और मार्गों में चिन्ह बना दिए और (नक्षत्रों को देखो
यह यूंही बिखरे हुए नही है यह भी मनुष्य के लाभ के लिए है) इन्ही
नक्षत्रों से मार्ग ज्ञात करते है (16)
क्या वह ईश्वर जो (संसार के ऐसे प्रचण्ड कर्यालय
को) उत्पन्न करता है उस जैसा हो सकता है जो
कुछ भी पैदा नही कर सकता? तो इतनी सी बात
भी तुम्हारी समझ में नही आती (17)
(लोगों! ईश्वर की सुख सामग्री इतनी अधिक है
कि) यदि तुम उसके चिन्हों की गणना करना चाहो
तो (कभी) गणना न कर सकोगे निःसंदेह ईश्वर
क्षमा करने वाला कृपालु है (18)
(तो लोगों!) ईश्वर से कोई बात छुपी नही रहेगी जो
कुछ तुम छुपाओगे और जो कुछ तुम प्रकट करोगे
ईश्वर सबसे अवगत है (19)
और जो लोग ईश्वर के अतिरिक्त जिनको पुकारते है
वह कोई वस्तु भी उत्पन्न नही कर सकते वह स्वंय
ही किसी के उत्पन्न किए हुए है (20)
(जिन्हे वह लोग जीवित जान रहे है और जिन से
उद्देश्य मांगते है) वह मृतक है (बिलकुल) बे जान
और वह तो यह भी नही जानते कि (मरने के
बाद) कब उठाए जाएंगे (21) {2:121}
तुम्हारा पूज्य तो अकेला ईश्वर है तो जो प्रलोक पर
विश्वास नही रखते उनके हृदय इनकार कर रहें है,
और वह सरकश हो रहे है (22)
वह जो कुछ छुपाते है और जो प्रकट करते है ईश्वर
अवश्य उसको जानता है, वह उद्दण्डों को पसन्द
नही करता (23)
और जब उनसे पूछा जाता है कि तुम्हारे रब ने
क्या अवतरित किया है तो कहते है कि वह तो
(केवल) अगले लोगों की कथाएं है (24)
वह लोग महा प्रलय के दिन (अपने पापों का) पूरा
पूरा भार उठाएंगे और उन लोगों के पापों का भार
भी उठाएंगे जिनको वह बिना पुष्टि पथ भृष्ट करते
है, सुन रखो जो भार वह उठा रहे है बुरे है (25)
उनसे पहले जो समुदाय हो चुके है उन्होंने भी

(सत्य के आवाहन के विरूद्ध हर प्रकार की) युक्तियां की थी (परन्तु परिणाम क्या निकला) उन्होंने अपनी युक्तियों की जो इमारत स्थापित की थी ईश्वर ने उसकी जड़े हिलादी, बस उनकी बनाई हुई इमारत की छत उन्ही पर आ गिरी, और ऐसी दिशा से उन पर कष्ट आया जिसकी उन्हें सम्भावना भी न थी. (26)

حق کے خلاف ہر طرح کی) تدبیریں کی تھیں (لیکن نتیجہ کیا نکلا) انہوں نے اپنی تدبیروں کی جو عمارت قائم کی تھی اللہ نے اس کی بنیادیں ہلا دیں پس ان کی بنائی ہوئی عمارت کی چھت انہیں پر آ گری اور ایسی سمت سے ان پر عذاب آیا جس کا انہیں وہم و گمان بھی نہ تھا (۲۶)

(यह तो दुनिया का कष्ट था इसके बाद) महाप्रलय के दिन ईश्वर उन्हें अपमानित करेगा, और ज्ञात करेगा (आज) वह तुम्हारे देवता कहां गए जिनको तुम मेरा साझी बनाते थे, और जिनके बारे में तुम (धर्म वालों से) झगड़ा किया करते थे? उस समय वह लोग जिन्हें ज्ञान दिया गया था वह पुकार उठेंगे आज के दिन का अपमान और विकार नास्तिकों के लिए है (27)

(یہ تو دنیا کا عذاب تھا اس کے بعد) قیامت کے روز اللہ انہیں رسوا کرے گا اور پوچھے گا (آج) وہ تمہارے معبود کہاں گئے جن کو تم میرا شریک بناتے تھے اور جن کے بارے میں تم (ایمان والوں سے) جھگڑا کیا کرتے تھے؟ اس وقت وہ لوگ جنہیں علم دیا گیا تھا وہ پکار اٹھیں گے آج کے دن کی رسوائی اور خرابی کافروں کے لئے ہے (۲۷)

(उनकी दशा यह है कि) जब फरिश्ते उनकी आत्माएं ग्रहण करने लगते है (और वह) अपने ही लिए अत्याचार करने वाले (होते हैं) तब वह आज्ञापालन की अभिव्यक्ति करेंगे, और कहेंगे हमने कोई बुराई नही की थी, उत्तर दिया जाएगा क्यों नही? तुमने बुराई की बात अवश्य की थी और तुम जो कुछ कर रहे थे ईश्वर को सब ज्ञात है (28)

(اُن کا حال یہ ہے کہ) جب فرشتے ان کی روحیں قبض کرنے لگتے ہیں (اور وہ) اپنے ہی حق میں ظلم کرنے والے (ہوتے ہیں) تب وہ اطاعت کا اظہار کریں گے اور کہیں گے ہم نے تو کوئی بُرائی نہیں کی تھی۔ جواب دیا جائے گا کیوں نہیں؟ تم نے بُرائی کی بات ضرور کی تھی اور تم جو کچھ کر رہے تھے اللہ کو سب معلوم ہے (۲۸)

अतः नर्क के द्वारों में प्रविष्ट हो जाओ सदैव इसमें रहोगे घमण्ड करने वाले का कैसा बुरा ठिकाना है (29)

لہٰذا دوزخ کے دروازوں میں داخل ہو جاؤ ہمیشہ اس میں رہو گے تکبر کرنے والوں کا کیسا بُرا ٹھکانا ہے (۲۹)

और जब सदाचारियों से पूछा जाता है तुम्हारे स्वामी ने क्या अवतरित किया? तो वह कहते है, अच्छा कथन जो लोग सदाचारी है उनके लिए दुनिया में भी भलाई है और परलोक का घर तो बहुत ही अच्छा है और सदाचारियों का घर बहुत ही अच्छा है (30)

اور جب پرہیز گاروں سے پوچھا جاتا ہے تمہارے رب نے کیا نازل کیا؟ تو وہ کہتے ہیں اچھا کلام جو لوگ نیکوکار ہیں ان کے لئے دنیا میں بھی بھلائی ہے اور آخرت کا گھر تو بہت ہی اچھا ہے اور پرہیز گاروں کا گھر بہت ہی اچھا ہے (۳۰)

सर्वकालिक रहने का स्वर्ग जिसमें वह प्रविष्ट होंगे उनके नीचे नहरें बह रही है, वहां जो चाहेंगे उनके लिए प्रस्तुत होगा ईश्वर सदाचारियों को ऐसा ही अच्छा बदला देता है (31)

دائمی قیام کی جنت جس میں وہ داخل ہوں گے ان کے نیچے نہریں بہ رہی ہیں وہاں جو چاہیں گے ان کے لئے میسر ہوگا اللہ پرہیز گاروں کو ایسا ہی اچھا بدلہ دیتا ہے (۳۱)

(उनकी दशा यह है कि) जब फरिश्ते उनकी आत्माएं निकालने लगते है और वह कुफ्र व अनेकेश्वर वाद से पवित्र होते है, तो कहते है तुम पर शान्ति हो (और कहते है कि) जो कर्म तुम किया करते थे उनके बदले में स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओगे (32)

(ان کی کیفیت یہ ہے کہ) جب فرشتے ان کی جانیں نکالنے لگتے ہیں اور وہ کفر و شرک سے پاک ہوتے ہیں تو کہتے ہیں تم پر سلامتی ہو (اور کہتے ہیں کہ) جو عمل تم کیا کرتے تھے ان کے بدلے میں بہشت میں داخل ہو جاؤ گے (۳۲)

(ऐ रसूल!) क्या वह लोग इस बात की प्रतीक्षा कर रहें है कि उनके पास फरिश्ते आजाएं या फिर तेरे ईश्वर का आदेश (कष्ट) आ पहुंचे, ऐसा ही उन लोगों ने किय था जो उनके पहले थे और ईश्वर ने उन पर अत्याचार नही किया अपितु वह स्वंय अपने आप पर अन्याय करते थे (33)

(اے رسول!) کیا وہ لوگ اس بات کا انتظار کر رہے ہیں کہ ان کے پاس فرشتے آ جائیں یا پھر تیرے رب کا حکم (عذاب) آ پہنچے ایسا ہی ان لوگوں نے کیا تھا جو ان سے پہلے تھے اور اللہ نے ان پر ظلم نہیں کیا بلکہ وہ خود اپنے آپ پر ظلم کرتے تھے (۳۳)

तो उनके अशुभ कर्मों के बुरे बदले मिले और जिस वस्तु के साथ वह हंसी किया करते थे उसने उनको (हर ओर से) घेर लिया (34)

تو اُن کو اُن کے اعمال بد کے بُرے بدلے ملے اور جس چیز کے ساتھ وہ ہنسی کیا کرتے تھے اس نے ان کو (ہر طرف سے) گھیر لیا (۳۴)

और अनेकेश्वर वादी कहते है यदि ईश्वर चाहता तो

اور مشرک کہتے ہیں اگر اللہ چاہتا تو ہم اور ہمارے باپ دادا

हम और हमारे पूर्वज उसको छोड़ कर औरों की पूजा न करते, और न उसके (आदेश के) बिना किसी वस्तु को (अपने मन से) अवैध कर लेते ऐसी ही गति विधि उन लोगों की रही जो उनसे पहले हो गए हैं (जब उन लोगों की दशा यह हो तो) रसूलों के लिए इसके सिवा क्या रह जाता है कि स्पष्ट ईश्वर का संदेश पहुंचा दे (मानना न मानना लोगों का कार्य है) (35) {8:41, 14:34}

اس کو چھوڑ کر اوروں کی پوجا نہ کرتے اور نہ اس کے (فرمان کے) بغیر کسی چیز کو (اپنے جی سے) حرام کر لیتے ایسی ہی روش ان لوگوں کی رہی جو ان سے پہلے گزر چکے ہیں (جب ان لوگوں کا حال یہ ہو تو) رسولوں کے لئے اس کے سوا کیا رہ جاتا ہے کہ صاف صاف اللہ کا پیغام پہنچا دیں (ماننا نہ ماننا لوگوں کا کام ہے) (۳۵) [۸:۴۱، ۱۴:۳۴]

और सत्य यह है कि हमने हर समुदाय में कोई न कोई रसूल अवश्य उत्पन्न किया (ताकि कोई जाति हमारे आदेशों से वंचित न रहें चुनाचे सबने यही घोषणा की) ईश्वर की बन्दगी करो और मूर्तियों की पूजा से बचो (इस घोषणा के बाद) ईश्वर के नियम ने कतिपय जातियों को सीधा मार्ग दिखा दिया और कतिपय ऐसी थी जिन पर पथ भ्रष्टता सिद्ध हो गई सो पृथ्वी में चल कर देखो कि झुठलाने वालों का अन्त कैसा हुआ (36)

اور حقیقت یہ ہے کہ ہم نے ہر امت میں کوئی نہ کوئی رسول ضرور پیدا کیا (تا کہ کوئی قوم ہمارے احکام سے بے خبر نہ رہے چنانچہ سب نے یہی اعلان کیا) اللہ کی بندگی کرو اور بتوں کی پوجا سے بچو (اس اعلان کے بعد) اللہ کے قانون نے بعض قوموں کو سیدھی راہ دکھا دی اور بعض ایسی تھیں جن پر گمراہی ثابت ہو گئی سو زمین میں چل کر دیکھو کہ جھٹلانے والوں کا انجام کیسا ہوا (۳۶)

(ऐ रसूल!) यदि तुम उन लोगों को सत्यता पर लाने के लिए कैसी ही इच्छा रखते हो (वह सत्य मार्ग पाने वाले नही इसलिए कि) ईश्वर का नियम ऐसे लोगों पर सफलता और कल्याण का मार्ग नही खोलता जिन्हें (उनके दुषकर्मों के आधार पर) सत्य मार्ग नही दिखाता ऐसे लोगों का कोई सहायक नही (कि कष्ट से बचा ले) (37)

(اے رسول!) اگر تم ان لوگوں کو راہ راست پر لانے کے لئے کیسے ہی خواہش مند ہو (وہ راہ پانے والے نہیں اس لئے کہ) اللہ کا قانون ایسے لوگوں پر کامیابی اور فلاح کی راہ نہیں کھولتا جنہیں (ان کی بداعمالیوں کی بنا پر) راہ حق نہیں دکھاتا ایسے لوگوں کا کوئی مددگار نہیں (کہ عذاب سے بچا لے) (۳۷)

और वह ईश्वर की कठोर शपथ खाते हैं कि जो मर जाता है ईश्वर उसे (प्रलय के दिन समाधि से) नहीं उठाएगा तो सुनो वह मिथ्या कहते हैं ईश्वर अवश्य उठाएगा इस लिए कि ईश्वर का वचन सत्य है और उसका पूरा करना उसे अवश्य है परन्तु अधिकांश लोग नहीं जानते (38)

اور وہ اللہ کی سخت سخت قسمیں کھاتے ہیں کہ جو مر جاتا ہے اللہ اسے (قیامت کے دن (قبر سے) نہیں اٹھائے گا تو وہ غلط کہتے ہیں اللہ ضرور اٹھائے گا اس لئے کہ اللہ کا وعدہ سچا ہے اور اس کا پورا کرنا اسے ضرور ہے لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے (۳۸)

ईश्वर (का वचन इस लिए सत्य होगा) ताकि जिन बातों में वह मत भेद करते हैं वह उन पर प्रकट कर दे और इसलिए कि नास्तिक जान लें कि वह झूटे थे (39)

(اللہ کا وعدہ اس لئے سچا ہوگا) تا کہ جن باتوں میں وہ اختلاف کرتے ہیں وہ ان پر ظاہر کر دے اور اس لئے کہ کافر جان لیں کہ وہ جھوٹے تھے (۳۹)

(और हमें मृतकों को जीवित करना कुछ भी कठिन कार्य नही है क्योंकि हमारा हर होने वाला कार्य पहले से निर्णीत है, अन्तर यह है कि लोगों को ज्ञात नही) और जब उस कार्य के होने का समय आ जाता है तो उस समय हमें केवल यह कहना पड़ता है कि अब हो जा बस वह हो जाता है, (ऐसे ही पुनः जीवित होने का प्रसंग है) (40) {16:61,77}

(اور ہمیں مردوں کو زندہ کرنا کچھ بھی مشکل کام نہیں ہے کیونکہ ہمارا ہر ہونے والا کام پہلے سے طے ہے فرق یہ ہے کہ لوگوں کو معلوم نہیں) اور جب اس کام کے ہونے کا وقت آ جاتا ہے تو اس وقت ہمیں صرف یہ کہنا پڑتا ہے کہ اب ہو جا بس ہو جاتا ہے (ایسے ہی دوبارہ زندہ ہونے کا معاملہ ہے) (۴۰) [۱۶:۶۱، ۷۷]

और जो लोग अत्याचार सहने के बाद ईश्वर के लिए देश छोड़ देंगे हम उनको दुनिया में अच्छा स्थान देंगे और परलोक का फल तो बहुत बड़ा है, काश वह उसे जान लें (41)

اور جو لوگ ظلم سہنے کے بعد اللہ کے لئے وطن چھوڑ دیں گے ہم ان کو دنیا میں اچھا ٹھکانا دیں گے اور آخرت کا اجر تو بہت بڑا ہے کاش وہ اسے جان لیتے (۴۱)

अर्थात जो लोग धैर्य करते हैं और अपने ईश्वर पर आस्था रखते हैं (42)

(हे रसूल!) हमने आप से पहले जितने रसूल भेजे निःसंदेह सब आप ही की भांति नर थे (फरिश्ते या स्त्री न थे) हम उनपर वही प्रेषित करते थे, बस यदि तुम लोग नही जानते तो पुस्तकवालों से ज्ञात कर लो (43) {13:109, 22:52}

یعنی جو لوگ صبر کرتے ہیں اور اپنے رب پر بھروسہ رکھتے ہیں (۴۲)

(اے رسول!) ہم نے آپ سے پہلے جتنے رسول بھیجے یقیناً سب آپ ہی کی طرح آدمی تھے (فرشتے یا عورت نہ تھے) ہم ان پر وحی بھیجتے تھے پس اگر تم لوگ نہیں جانتے تو اہل کتاب سے معلوم کر لو (۴۳) [۱۳:۱۰۹، ۲۲:۵۲]

हमने उन रसूलों को उज्जवल तर्कों और पुस्तकों के साथ (भेजा था इसी प्रकार आप पर) अज़्ज़िकर

ہم نے ان رسولوں کو روشن دلیلوں اور کتابوں کے ساتھ (بھیجا تھا اسی طرح آپ پر) الذکر (یعنی قرآن) نازل کیا

(अर्थात कुरआन) अवतरित किया ताकि जो नियम उनकी ओर भेजे गए हैं आप उनपर स्पष्ट कर दें और इस लिए भी कि वह लोग इसमें मनन चिन्तन करें (44)

क्या जो लोग बुरे कार्य (अर्थात इस्लाम को मिटाने) की युक्तियां कर रहे हैं क्या वह इस बात से निर्भीक हो गए कि ईश्वर उन्हें धरती में धंसा दे या उन पर कष्ट आ जाए जहां से उनको सूचना ही न हो (45)

या उनको चलते फिरते (अर्थात युक्ति करते) पकड़ ले वह ईश्वर को विवश नही कर सकते (46)

या जब उनपर कष्ट का भय उत्पन्न हो जाए तो उन को पकड़ ले निःसंदेह तुम्हारा ईश्वर बहुत ममता करने वाला और कृपालु है (47)

क्या उन लोगों ने ईश्वर की रचनाओं में से किसी वस्तु पर भी विचार नही किया? और यह नही देखा कि हर वस्तु का साया दाएं से बाएं को और बाएं से दाएं को ढलता रहता है और ईश्वर के आगे विवश हो कर सजदा करता है (अर्थात ईश्वर के नियमानुसार घटता बढ़ता रहता है) (48)

और (इसी प्रकार) सब जीवधारी जो आकाशों में हैं और जो पृथ्वी में हैं सब ईश्वर के आगे सजदा करते हैं (अर्थात उसके नियम का पालन करते हैं) और फ़रिश्ते भी उसके आज्ञाकारी हैं और तनिक घमण्ड नही करते (49)

(उनका सजदा क्या है?) वह अपने रब से जो उनके ऊपर है डरते हैं और उन्हें जो आदेश होता है उसका पालन करते हैं (50)

ईश्वर ने कहा है कि दो दो ईश्वर न बनाओ ईश्वर वही एक अर्थात मैं हूं तो मेरी अवज्ञा करने से डरते रहो (51)

और जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है सब उसी का है, और उसी की पूजा अनिवार्य है तो तुम ईश्वर के सिवा औरों से क्यों डरते हो (52)

और जो सुख सामग्री दुनिया में तुमको मिली है सब ईश्वर की ओर से है फिर जब तुमको कोई कष्ट पहुंचता है तो उससे याचना करते हो (53)

फिर जब वह तुमसे कष्ट दूर कर देता है तो कुछ लोग तुममें से ईश्वर के साथ साझी करने लगते हैं (54)

ताकि जो (सुख सामग्री) हमने उनको प्रदान की है उनकी कृतघ्नता करें तो दुनिया में लाभ उठा लो, शीघ्र ही तुमको इसका परिणाम ज्ञात हो जाएगा (55)

और हमने उन्हें जो जीविका दी है उसमें वह उन अस्तित्वों का अंश निर्धारित करते हैं, जिनके बारे में उन्हें कुछ भी ज्ञान नही (नास्तिकों!) निःसंदेह ईश्वर तुमसे इस बारे में अवश्य प्रति प्रश्न करेगा कि तुम (सत्य के विरुद्ध) कैसा कुछ मिथ्या रोप करते रहे हो (56)

और वह ईश्वर के लिए पुत्रियां प्रस्ताव करते हैं, उसका अस्तित्व इससे पवित्र है (कि उसके पुत्र पुत्रीयां हो) और स्वंय अपने लिए पुत्र जिनके वह

تاکہ جو احکام ان کی طرف بھیجے گئے ہیں آپ ان پر واضح کردیں اوراس لئے بھی کہ وہ لوگ اس میں غور وفکر کریں (۴۴)

کیا جو لوگ بُرے مقصد (یعنی اسلام کو مٹانے) کی تدبیریں کررہے ہیں کیا وہ اس بات سے بےفکر ہوگئے کہ اللہ انہیں زمین میں دھنسا دے یا ان پر عذاب آجائے جہاں سے ان کو خبر ہی نہ ہو (۴۵)

یا ان کو چلتے پھرتے (یعنی تدبیر کرتے) پکڑ لے وہ اللہ کو عاجز نہیں کرسکتے (۴۶)

یا جب ان پر عذاب کا ڈر پیدا ہوجائے تو ان کو پکڑ لے بے شک تمہارا رب بہت شفقت کرنے والا اور مہربان ہے (۴۷)

کیا ان لوگوں نے اللہ کی مخلوقات میں سے کسی چیز پر بھی غور نہیں کیا؟ اور یہ نہیں دیکھا کہ ہر چیز کا سایہ دائیں سے بائیں کو اور بائیں سے دائیں کو ڈھلتا رہتا ہے اور اللہ کے آگے مجبور ہوکر سجدہ کرتا ہے (یعنی قانون الٰہی کے مطابق گھٹتا بڑھتا رہتا ہے) (۴۸)

اور (اسی طرح) تمام جاندار جو آسمانوں میں ہیں اور جو زمین میں ہیں سب اللہ کے آگے سجدہ کرتے ہیں (یعنی اس کے قانون کی پابندی کرتے ہیں) اور فرشتے بھی اس کے فرمانبردار ہیں اور ذرا غرور نہیں کرتے (۴۹)

(ان کا سجدہ کیا ہے؟) وہ اپنے رب سے جو ان کے اوپر ہے ڈرتے ہیں اور انہیں جو حکم ہوتا ہے اس کی تعمیل کرتے ہیں (۵۰)

اللہ نے کہا ہے کہ دو دو معبود نہ بناؤ معبود وہی ایک یعنی میں ہوں تو میری نافرمانی کرنے سے ڈرتے رہو (۵۱)

اور جو کچھ آسمانوں میں اور زمین میں ہے سب اسی کا ہے اور اس کی عبادت لازم ہے تو تم اللہ کے سوا اوروں سے کیوں ڈرتے ہو (۵۲)

اور جو نعمتیں دنیا میں تم کو ملی ہیں سب اللہ کی طرف سے ہیں پھر جب تم کو کوئی تکلیف پہنچتی ہے تو اس سے فریاد کرتے ہو (۵۳)

پھر جب وہ تم سے تکلیف دور کردیتا ہے تو کچھ لوگ تم میں سے اللہ کے ساتھ شریک کرنے لگتے ہیں (۵۴)

تاکہ جو (نعمتیں) ہم نے ان کو عطا کی ہیں ان کی ناشکری کریں تو دنیا میں فائدے اٹھالو عنقریب تم کو اس کا انجام معلوم ہوجائے گا (۵۵)

اور ہم نے انہیں جو رزق دیا ہے اس میں وہ ان ہستیوں کا حصہ مقرر کرتے ہیں جن کے بارے میں انہیں کچھ بھی خبر نہیں (منکرو) یقیناً اللہ تم سے اس بارے میں ضرور باز پرس کرے گا (حقیقت کے خلاف) کیسی کچھ افترا کرتے رہے ہو (۵۶)

اور وہ اللہ کے لئے بیٹیاں تجویز کرتے ہیں اس کی ذات اس سے پاک ہے (کہ اس کے بیٹے بیٹیاں ہوں) اور خود

बड़े इच्छुक है (57)
जब उनमें से किसी को पुत्री होने की सूचना दी जाए तो (मारे लज्जा के) उस का मुख काला पड़ जाए और शोक में डूब जाए (58) {12:84}
जिस बात की उसे सूचना दी जाए वह (उसके लिए) ऐसी बुरी सूचना होगी कि (लज्जा के मारे) लोगों से छुपता फिरेगा (और सोच में पड़ जाता है कि) आया अपमान सहन करके पुत्री को जीवित रहने दे या धरती में दबा दे (खेद उनकी बुद्धि पर) क्या बुरा निर्णय है जो वह लोग करते है (59)
जो लोग प्रलोक पर विश्वास नही रखते उनके लिए बुरी बातें है, और ईश्वर का विशेषण उच्च और ज्येष्ठ है वह सब पर अधिकार प्राप्त है उसका कोई कार्य युक्ति से रहित नही (60)
यदि ईश्वर लोगों को उनके अन्याय के आधार पर तुरन्त दण्ड देने लगता तो धरती के तल पर एक जीव भी शेष न रहता परन्तु वह उनको एक निश्चित समय तक छूट देता रहता है, फिर जब वह समय आ जाता है, तो न एक घड़ी पीछे रह सकते है, और न एक घड़ी आगे (61)
और वह मुझ ईश्वर के लिए ऐसी वस्तुएं प्रस्ताव करते है जिनको स्वंय ना पसंद करते है और मुख से झूट बके जाते है कि उनको (प्रलय के दिन भलाई) अर्थात (मुक्ति) होगी कुछ शंका नही कि उनके लिए अग्नि है वह नर्क में सबसे आगे होंगे (62)
(ऐ रसूल!) मैं ईश्वर शाक्षी हूं कि हमने आपसे पहले कितनी ही जातियों की ओर रसूल भेजे तो शैतान ने उनके आचारण उनको सुसज्जित कर दिखाए तो आज भी वही उनका मित्र है, और उनके लिए बड़ा कष्ट है (63) {22:52}
(ऐ रसूल!) हमने तुझ पर पुस्तक इस लिए अवतरित की है कि जिन बातों में वह लोग मत भेद कर रहें है उनकी वास्तविक्ता उनपर स्पष्ट कर दें और उन लोगों के लिए उपदेश और कृपा है जो विश्वास लाते है (64)
ईश्वर ने आकाश (बादल) से पानी बरसाया फिर उस (कि सींचाई) से धरती को जो मृत हो चुकी थी (पुनः) जीवित कर दिया निःसंदेह इस स्थिति में उन लोगों के लिए जो (सत्य वाणी को ध्यान से) सुनते है चिन्ह है (65)
और तुम्हारे लिए पशुओं में भी एक शिक्षा है उनके जिस्मों के अन्दर की उस वस्तु से अर्थात आंतों की सामग्री तत्व और रक्त के सम्भोग से निर्मल दूध पिलाते है, जो पीने वालों के लिए अत्यन्त रुचिकर है (66) {22:21}
और खजूर और अंगूर के वृक्षों से अच्छी जीविका

اپنے لئے بیٹے جن کے وہ بڑے خواہش مند ہیں (۵۷)
جب ان میں سے کسی کو بیٹی ہونے کی خبر دی جائے تو (مارے شرم کے) اس کا چہرہ کالا پڑ جائے اور غم میں ڈوب جائے (۵۸) [۱۲:۸۴]
جس بات کی اسے خبر دی جائے وہ (اس کے نزدیک) ایسی بُری خبر ہوگی کہ (شرم کے مارے) لوگوں سے چھپتا پھرے گا (اور سوچ میں پڑ جاتا ہے کہ) آیا ذلت برداشت کر کے بیٹی کو زندہ رہنے دے یا زمین میں دفن کردے (افسوس ان کی عقل پر) کیا بُرا فیصلہ ہے جو وہ لوگ کرتے ہیں (۵۹)
جو لوگ آخرت پر یقین نہیں رکھتے ان کے لئے بُری باتیں ہیں اور اللہ کی صفت اعلیٰ اور برتر ہے وہ سب پر غالب ہے اس کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں (۶۰)
اگر اللہ لوگوں کو ان کے ظلم کی بنا پر فوراً سزا دینے لگتا تو زمین کی سطح پر ایک جاندار بھی باقی نہ رہتا لیکن وہ ان کو ایک مقررہ وقت تک مہلت دیتا رہتا ہے پھر جب وہ وقت آجاتا ہے تو نہ ایک گھڑی پیچھے رہ سکتے ہیں اور نہ ایک گھڑی آگے (۶۱)
اور وہ مجھ اللہ کے لئے ایسی چیزیں تجویز کرتے ہیں جن کو خود نا پسند کرتے ہیں اور زبان سے جھوٹ بکے جاتے ہیں کہ ان کو (قیامت کے دن بھلائی) یعنی (نجات) ہوگی کچھ شک نہیں کہ ان کے لئے آگ ہے اور وہ دوزخ میں سب سے آگے ہوں گے (۶۲)
(اے رسول!) میں اللہ گواہ ہوں کہ ہم نے آپ سے پہلے کتنی ہی امتوں کی طرف رسول بھیجے تو شیطان نے ان کے کردار ان کو آراستہ کر دکھائے تو آج بھی وہی اُن کا دوست ہے اور ان کے لئے عذاب الیم ہے (۶۳) [۲۲:۵۲]
(اے رسول!) ہم نے تجھ پر کتاب اس لئے نازل کی ہے کہ جن باتوں میں وہ لوگ اختلاف کر رہے ہیں ان کی حقیقت ان پر واضح کردے اور ان لوگوں کے لئے ہدایت اور رحمت ہے جو ایمان لاتے ہیں (۶۴)
اللہ نے آسمان (بادل) سے پانی برسایا پھر اس (کی آبپاشی) سے زمین کو جو مردہ ہو چکی تھی (دوبارہ) زندہ کردیا بلاشبہ اس صورت حال میں ان لوگوں کے لئے جو (کلام حق کو غور سے) سنتے ہیں نشانی ہے (۶۵)
اور تمہارے لئے مویشیوں میں بھی ایک سبق ہے ان کے جسموں کے اندر کی اس چیز سے یعنی آنتوں کی غذا مادہ اور خون کے اختلاط سے خالص دودھ پلاتے ہیں جو پینے والوں کے لئے نہایت خوشگوار ہے (۶۶) [۲۲:۲۱]
اور کھجور اور انگور کے درختوں سے اچھا رزق دیتے ہیں (جو

देते है (जो पीने के काम भी आता है) परन्तु तुम उसको मादक बना लेते हो (जो बहुत बुरी बात है) निःसंदेह इसमें एक चिन्ह है विवेक से काम लेने वालों के लिए (67)

پینے کے کام بھی آتا ہے) مگر تم اس کو نشہ آور بنا لیتے ہو (جو بہت بُری بات ہے) یقیناً اس میں ایک نشانی ہے عقل سے کام لینے والوں کے لئے (۶۷)

और तेरे ईश्वर ने शहद की मक्खियों को संकेत किया अर्थात उसका स्वभाव ही ऐसा बनाया कि पर्वतों में और वृक्षों में और (ऊंची) छतरीयों में जो लोग बनाते है घर बना (68)

اور تیرے رب نے شہد کی مکھیوں کو اشارہ کیا یعنی اس کی جبلت ہی ایسی بنائی کہ پہاڑوں میں اور درختوں میں اور (اونچی) چھتریوں میں جو لوگ بناتے ہیں گھر بنا (۶۸)

फिर हर प्रकार के फलों और फूलों से रस चूसती फिरे फिर अपने रब के बनाए हुए स्पष्ट मार्ग पर आज्ञाकारी के साथ चली जाए (देखो उसके पेट से अनेक रंगों का पीने का मधुर पेय निकलता है, उस में लोगों के रोगों का आरोग्य है निःसंदेह सोचने वालों के लिए इसमें भी चिन्ह है (69) {6:70, 76:21}

پھر ہر طرح کے پھلوں اور پھولوں سے رس چوستی پھرے پھر اپنے رب کے بتائے ہوئے صاف راستہ پر فرمانبرداری کے ساتھ چلی جائے (دیکھو اس کے پیٹ سے مختلف رنگوں کا پینے کا مشروب نکلتا ہے اس میں لوگوں کے امراض کی شفا ہے بے شک سوچنے والوں کے لئے اس میں بھی نشانی ہے (۶۹) [۶:۷۰؛۷۶:۲۱]

(16:7) ईश्वर तुम्हें पेदा करता है फिर तुम्हारी जिस्मानी बनावट को पूरा करता है अर्थात भरपूर ज्वानी तक पहुंच जाते हो फिर तुममें से कतिपय को बुढ़ापे की आयू तक पहुंचा देता है जिसमें अंग कमजोर हो जाते है (70)

اللہ تمہیں پیدا کرتا ہے پھر تمہاری جسمانی بناوٹ کو پورا کرتا ہے یعنی بھرپور جوانی تک پہنچ جاتے ہو پھر تم میں سے بعض کو بڑھاپے کی عمر تک پہنچا دیتا ہے جس میں قویٰ کمزور ہو جاتے ہیں (۷۰)

ईश्वर ने तुममें से कतिपय को जीविका में श्रेष्ठता प्रदान की है (कोई धनी है कोई निर्धन) फिर ऐसा क्यों नही होता कि जिन लोगों को अधिक जीविका दी गई है वह अपने अधीनस्थों को (कर्मचारियों) उनका अंश लोटा दें जो ज्ञात है (8:41) जिससे सब उस जीविका में बराबरी अनुभूत करें तो क्या वह लोग ईश्वर की दया के विरोधी है (71)

اللہ نے تم میں سے بعض کو روزی میں فضیلت بخشی ہے (کوئی امیر ہے کوئی غریب) پھر ایسا کیوں نہیں ہوتا کہ جن لوگوں کو زیادہ روزی دی گئی ہے وہ اپنے ماتحتوں کو (ملازموں کو) ان کا حصہ لوٹا دیں جو معلوم ہے (۸:۴۱) جس سے سب اس روزی میں برابری محسوس کریں تو کیا وہ لوگ اللہ کی نعمتوں کے منکر ہیں (۷۱)

और ईश्वर ने तुम्हारी ही जाति प्रकार में से तुम्हारे लिए स्त्रीयां उत्पन्न की और स्त्रीयों से तुम्हारे लिए पुत्र और पोते उत्पन्न किये और खाने को तुम्हें पवित्र जीविका दी, तो क्या बेमूल वस्तुओं पर विश्वास लाते हो और ईश्वर की सुख सामग्री से इनकार करते हो (72)

اور اللہ نے تمہاری ہی جنس میں سے تمہارے لئے عورتیں پیدا کیں اور عورتوں سے تمہارے لئے بیٹے اور پوتے پیدا کئے اور کھانے کو تمہیں پاک رزق دیا۔ تو کیا بے اصل چیزوں پر ایمان رکھتے ہو اور اللہ کی نعمتوں سے انکار کرتے ہو (۷۲)

वह लोग ईश्वर को छोड़ कर ऐसो को पूजते है जो उनको आकाशों और पृथ्वी से जीविका देने का कुछ भी अधिकार नही रखते और न (किसी प्रकार की) शक्ति रखते है (73)

وہ لوگ اللہ کو چھوڑ کر ایسوں کو پوجتے ہیں جو ان کو آسمانوں اور زمین سے روزی دینے کا کچھ بھی اختیار نہیں رکھتے اور نہ (کسی اور طرح کا) مقدور رکھتے ہیں (۷۳)

तो (लोगों!) ईश्वर के लिए मिथ्या उपमाएं न बनाओं (उचित उपमाओं की विधि) ईश्वर ही जानता है और तुम नही जानते (74) {36:13}

تو (لوگو!) اللہ کے لئے غلط مثالیں نہ بناؤ (صحیح مثالوں کا طریقہ) اللہ ہی جانتا ہے اور تم نہیں جانتے (۷۴) [۳۶:۱۳]

ईश्वर एक उपमा वर्णन करता है (इस पर विचार करो उदाहरणतः) एक दास है किसी दूसरे व्यक्ति के अधिकार में वह स्वयं किसी बात का अधिकार नही रखता और एक दूसरा व्यक्ति है जिस को हमने अच्छी जीविका दे रखी है वह व्यक्ति इस (धन) से जो हमने उसको दी है गुप्त और प्रकट व्यय करता है (विचार करो) क्या वह दोनों बराबर हो सकते है? कदापि नही इसी प्रकार समझलो कि ईश्वर हर प्रशन्सा का अधिकारी है परन्तु अधिकांश व्यक्ति नही जानते (75) {16:112}

اللہ ایک مثال بیان کرتا ہے (اس پر غور کرو مثلاً) ایک غلام ہے کسی دوسرے آدمی کے قبضہ میں وہ خود کسی بات کا اختیار نہیں رکھتا۔ اور ایک دوسرا آدمی ہے جس کو ہم نے اچھی روزی دے رکھی ہے وہ شخص اس (دولت) سے جو ہم نے اس کو دی ہے پوشیدہ اور ظاہر خرچ کرتا ہے (غور کرو) کیا وہ دونوں برابر ہو سکتے ہیں؟ (ہرگز نہیں) اسی طرح سمجھ لو کہ اللہ ہر تعریف کا مستحق ہے لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے (۷۵) [۱۶:۱۱۲]

ईश्वर एक और उपमा दो व्यक्तियों की वर्णन करता है, एक गूंगा है जो इतनी भी शक्ति नही रखता कि एक शब्द भी बोल सकें, और अपने स्वामी पर भार है वह जहां कही भेजता है उससे कोई बात अच्छी बन नही आती और दूसरा ऐसा है कि दूसरो को समता और न्याय का आदेश देता है और स्वंय भी सीधे मार्ग पर है (विचार करो) क्या यह दोनों बराबर हो सकते है? (76) {10:6-16}

اللہ ایک اور مثال دو آدمیوں کی بیان کرتا ہے ایک گونگا ہے جو اتنی بھی طاقت نہیں رکھتا کہ ایک حرف بھی بول سکے اور اپنے مالک پر دوبھر ہے وہ جہاں کہیں بھیجتا ہے اس سے کوئی بات بن نہیں آتی. اور دوسرا ایسا ہے کہ دوسروں کو عدل وانصاف کا حکم دیتا ہے اور خود بھی سیدھی راہ پر ہے (غور کرو) کیا یہ دونوں برابر ہو سکتے ہیں؟ (۷۶) [۱۰:۶،۱۶]

आकाशों और पृथ्वी के छुपे हुए (भेदों का) ईश्वर ही को ज्ञान है (लोग ज्ञात करते है महा प्रलय कब आएगी?) प्रलय का आना ऐसा है जैसे आंख का झपकना अपितु उससे भी शीघ्र (अचानक) विश्वास करो कि ईश्वर की सत्ता से कोई वस्तु बाहर नही (77)

آسمانوں اور زمین کے چھپے ہوئے (رازوں کا) اللہ ہی کو علم ہے (لوگ پوچھتے ہیں قیامت کب آئے گی؟) قیامت کا آنا ایسا ہے جیسے آنکھ کا جھپکنا بلکہ اس سے جلدتر (اچانک) یقین کرو کہ اللہ کی قدرت سے کوئی چیز باہر نہیں (۷۷)

और (अपनी वास्तविकता पर विचार करो देखो) ईश्वर ने तुम्हें तुम्हारी माताओं के पेट से इस स्थिति में उत्पन्न किया कि तुम कुछ भी नही जानते थे, ईश्वर ने तुम्हें कान दिए (कि सुन सको) आंखे दी (कि देख सको) ह्रदय दिया (कि सोचों समझों यह सारी सामग्री इसलिए दी कि) शायद उस ईश्वर की आज्ञाकारी करो (78)

اور (اپنی حقیقت پر غور کرو دیکھو) اللہ نے تمہیں تمہاری ماؤں کے پیٹ سے اس حال میں پیدا کیا کہ تم کچھ بھی نہیں جانتے تھے اللہ نے تمہیں کان دئے (کہ سن سکو) آنکھیں دیں (کہ دیکھ سکو) دل دیا (کہ سوچو سمجھو یہ ساری نعمتیں اس لئے دیں کہ) شاید اس اللہ کی فرمانبرداری کرو (۷۸)

क्या उन लोगों ने पक्षीयों को नहीं देखा कि आकाशय वातावरण में घिरे हुए (उड़ते रहते) हैं (विचार करो) ईश्वर के नियम के अतिरिक्त उन्हें अन्तरिक्ष में कौन थामे हुए हैं? (हां ईश्वर का नियम) इसमें विश्वास वालों के लिए बड़े चिन्हें है (79)

کیا ان لوگوں نے پرندوں کو نہیں دیکھا کہ آسمانی فضا میں گھرے ہوئے (اڑتے رہتے) ہیں (غور کرو) اللہ کے قانون کے علاوہ انہیں فضا میں کون تھامے ہوئے ہے؟ (ہاں اللہ کا قانون) اس میں ایمان والوں کے لئے بڑی نشانیاں ہیں (۷۹)

और ईश्वर ने तुम्हारे घरों को तुम्हारे रहने का स्थान बना दिया, और चौपायों की खालों से तंबू बना दिए अत्यन्त हल्के यात्रा के दिन और अन्यात्रा दिन दोनों स्थिति में (काम में लाते हो) और चौपायों के ऊन, रूवों और बालों से कितने ही सामान लाभ दायक और काम में आने वाली वस्तुएं बना दी जो एक मुख्य समय तक काम देती है (80) {2:241, 7:24, 12:17}

اور اللہ نے تمہارے گھروں کو تمہارے رہنے کی جگہ بنادیا. اور چوپایوں کی کھالوں سے خیمے بنادئے نہایت سبک اور ہلکے سفر کے دن اور حضر کے دن دونوں حالتوں میں (کام میں لاتے ہو) اور چوپایوں کے اون روؤں اور بالوں سے کتنے ہی سامان مفید اور کارآمد چیزیں بنادیں. جو ایک خاص مدت تک کام دیتی ہیں (۸۰) [۲:۲۴۱؛ ۷:۲۴؛ ۱۲:۱۷]

और ईश्वर ने अपनी उत्पन्न की हुई वस्तुओं से तुम्हारे लिए साए बनाए और पर्वतों में शरण लेने के स्थान बना दिए और तुम्हारे लिए वस्त्र प्रस्तुत कर दिया और आहिनी वस्त्र दिए जो तुम को शस्त्रों के प्रहार से बचाता है (देखो) इस प्रकार ईश्वर अपनी सब (आवश्यक) सामग्रीयों से तुम पर दया करता है ताकि तुम उसके आज्ञाकारी बन जाओ (81)

اور اللہ نے اپنی پیدا کی ہوئی چیزوں سے تمہارے لئے سائے بنائے اور پہاڑوں میں پناہ لینے کی جگہ بنادیں اور تمہارے لئے لباس مہیا کردیا. جو تم کو گرمی سردی سے بچاتا ہے اور (آہنی) لباس دیا جو تم کو ہتھیاروں کی ضرب سے بچاتا ہے (دیکھو) اس طرح اللہ اپنی تمام (ضروری) نعمتوں سے تمہیں نوازتا ہے تا کہ تم اس کے فرمانبردار بن جاؤ (۸۱)

अब यदि वह लोग मुख मोड़ते हैं तो ऐ नबी तुम पर स्पष्ट संदेश सत्य पहुंचा देने के सिवा और कोई उत्तर दायित्व नही है (82)

اب اگر وہ لوگ منہ موڑتے ہیں تو اے نبی تم پر صاف صاف پیغام حق پہنچا دینے کے سوا اور کوئی ذمہ داری نہیں ہے (۸۲)

वह लोग ईश्वर की सुख सामग्री से (अच्छी प्रकार) अवगत है फिर भी उससे इनकार करते है, और उनमें अधिकांश ऐसे ही है जो सच्चाई से इनकार करते है (83)

وہ لوگ اللہ کی نعمتوں سے (اچھی طرح) واقف ہیں پھر بھی اس سے انکار کرتے ہیں اور ان میں زیادہ ایسے ہی ہیں جو سچائی سے انکار کرتے ہیں (۸۳)

और जिस दिन अर्थात प्रलय के दिन हम हर समुदाय में से आदर्श (अर्थात ईशदूत) खड़ा करेंगे तो न तो नास्तिक को बोलने की आज्ञा होगी, और न उनकी आपत्ति स्वीकार की जाएगी (84)

اور جس دن یعنی قیامت کے دن ہم ہر امت میں سے نمونہ (یعنی رسول) کھڑا کریں گے تو نہ تو کفار کو بولنے کی اجازت ہوگی اور نہ ان کے عذر قبول کئے جائیں گے (۸۴)

और जब अत्याचारी कष्ट देख लेंगे तो फिर न तो उनके कष्ट ही में कमी की जाएगी और न उनको छूट ही दी जाएगी (85)
और जब अनेकेश्वर वादी अपने साझीयों को देखेंगे तो कहेंगे कि ईश्वर यह वही हमारे साझी हैं जिन को हम तेरे सिवा पुकारा करते थे तो वह (उनके कथन को निरस्त कर देंगे) उनसे कहेंगे कि तुमतो झूटे हो (86)
और उस दिन ईश्वर के सामने नतमस्तक हो जाएंगे और जो झूट वह बांधा करते थे सब उनसे जाता रहेगा (87)
जिन लोगों ने नास्तिकता का मार्ग अपनाया और लोगों को ईश्वर के मार्ग से रोका हम उनको कष्ट देंगे इस लिए कि वह उपद्रव किया करते थे (88)
और (उस दिन को याद करो) जिस दिन हम हर समुदाय में से स्वंय उन पर एक आदर्श (अर्थात रसूल) खड़ा करेंगे (और ऐ मुहम्मद स0) तुमको उन लोगों पर आदर्श लाएंगे (अर्थात साक्षी) और हमने तुम पर ऐसी पुस्तक प्रेषित की है कि (इसमें) हर वस्तु का वर्णन (विस्तार) है और आस्तिकों के लिए पथ प्रदर्शन और अनुकम्पा और शुभ सूचना है (89) {12:111, 15:1, 27:1 25:33, 17:12}

اور جب ظالم عذاب دیکھ لیں گے تو پھر نہ تو ان کے عذاب ہی میں کمی کی جائے گی اور نہ ان کو مہلت دی جائے گی (۸۵)
اور جب مشرک اپنے شریکوں کو دیکھیں گے تو کہیں گے کہ رب یہ وہی ہمارے شریک ہیں جن کو ہم تیرے سوا پکارا کرتے تھے تو وہ ان کے اس قول کو مسترد کردیں گے ان سے کہیں گے کہ تم تو جھوٹے ہو (۸۶)
اور اس دن اللہ کے سامنے سرنگوں ہو جائیں گے اور جو جھوٹ وہ باندھا کرتے تھے سب ان سے جاتا رہے گا (۸۷)
جن لوگوں نے کفر کی راہ اختیار کی اور لوگوں کو اللہ کی راہ سے روکا ہم ان کو عذاب پر عذاب دیں گے اس لئے کہ وہ شرارت سے فساد کیا کرتے تھے (۸۸)
اور (اس دن کو یاد کرو) جس دن ہم ہر امت میں سے خود ان پر ایک نمونہ (یعنی رسول) کھڑا کریں گے (اور اے محمدؐ) تم کو ان لوگوں پر نمونہ لائیں گے (یعنی گواہ) اور ہم نے تم پر (ایسی) کتاب نازل کی ہے کہ (اس میں) ہر چیز کا بیان (مفصل) ہے اور مسلمانوں کے لئے ہدایت اور رحمت اور بشارت ہے (۸۹) [۱۲:۱۱۱:۱۵:۱:۲۷:۱:۲۵:۳۳:۱۷:۱۲]

ईश्वर तुमको न्याय और उपकार करने और नाते दारों को (व्यय से सहायता) देने का आदेश देता है, निर्लज्जता और अशुभ कर्मों से और अवज्ञा से मना करता है (और) तुम्हें शिक्षा देता है ताकि तुम याद रखो (90)
और जब तुम किसी से वचन करो तो (यह समझों कि) तुमने ईश्वर से वचन किया है उसे पूरा करो, और जब तुम पक्की शपथें खाओ तो उसे पूरा करो, मत तोड़ो कि तुम ईश्वर को साक्षी बना चुके हो जो कुछ तुम करते हो ईश्वर उसे जानता है (91) {66:2, 18:23,24;17:34}
और (देखो!) उस स्त्री की भांति न हो जाना जिसने महनत करके सूत काता फिर उस को तोड़ कर टुकड़े टुकड़े कर दिया (इस लिए तुम अपने वचन को पूरा करो सूत की उपमा इस लिए ही दी है कि तुम्हारी शपथें कच्चा धागा न हो जाए कि सूत की भांति सरलता से टूट जाएं अपितु उनकी रक्षा करो और समझ कर वचन करो क्या तुम भी उस स्त्री की भांति अपनी शपथों को तोड़ दोगे? तुम आपस में अपनी शपथों को (छल कपट अशान्ति का) साधन बनाते हो इसलिए कि एक दल किसी दूसरे दल से शक्ति में अधिक है (परन्तु इसे न भूलों कि) इस प्रसंग में ईश्वर (तुम्हारी सच्चाई की) परिक्षा करता है (कि तुम अपने वचन को पूरा करते हो या नहीं) और जिन बातों में तुम मत भेद करते हो प्रलय के दिन ईश्वर उसकी वास्तविक्ता प्रकट कर देगा (बता देगा) (92)

اللہ تم کو انصاف اور احسان کرنے اور رشتہ داروں کو (خرچ سے مدد) دینے کا حکم دیتا ہے اور بے حیائی اور نامعقول کاموں سے اور سرکشی سے منع کرتا ہے (اور) تمہیں نصیحت کرتا ہے تا کہ تم یاد رکھو (۹۰)
اور جب تم کسی سے عہد کرو تو (یہ سمجھو کہ) تم نے اللہ سے عہد کیا ہے اسے پورا کرو اور جب تم پکی قسمیں کھاؤ تو اسے پورا کرو، مت توڑو کہ تم اللہ کو ضامن بنا چکے ہو جو کچھ تم کرتے ہو اللہ سے جانتا ہے (۹۱) [۶۶:۲:۱۸:۲۳،۲۴:۱۷:۳۴]
اور (دیکھو) اس عورت کی طرح نہ ہو جانا جس نے محنت سے سوت کاتا پھر اس کو توڑ کر ٹکڑے ٹکڑے کر دیا (اس لئے تم اپنے عہد کو پورا کرو سوت کی مثال اس لئے ہی دی ہے کہ تمہاری قسمیں کچا دھاگا نہ ہو جائیں کہ سوت کی طرح آسانی سے ٹوٹ جائیں بلکہ ان کی حفاظت کرو اور سمجھ کر عہد کرو کیا تم بھی اس عورت کی طرح اپنی قسموں کو توڑ دو گے؟) تم آپس کے معاملہ میں اپنی قسموں کو (مکر وفریب وفساد کا) ذریعہ بناتے ہو۔ اس لئے کہ ایک گروہ کسی دوسرے گروہ سے طاقت میں زیادہ ہے (لیکن اسے نہ بھولو کہ) اس معاملہ میں اللہ (تمہاری سچائی کی) آزمائش کرتا ہے (کہ تم اپنے عہد کا پاس کرتے ہو یا نہیں) اور جن باتوں میں تم اختلاف کرتے ہو قیامت کے روز اللہ اس کی حقیقت ظاہر کر دے گا (بتا دے گا) (۹۲)

(लोगों!) यदि ईश्वर चाहता (उसमें ऐसी शक्ति है) तो तुम सब को एक ही दल बना देता (परन्तु उसने कर्म की स्वतन्त्रता दी है) अतः जो चाहता है अपने शुभ कर्म से ईश्वर का नियम उसे पथ प्रदर्शन देता

(لوگو!) اگر اللہ چاہتا (اس میں ایسی قدرت ہے) تو تم سب کو ایک ہی جماعت بنا دیتا (لیکن اس نے عمل کی آزادی دی ہے) اس لئے جو چاہتا ہے اپنے نیک عمل

है, और जो चाहता है अपने बुरे कर्म से ईश्वर का नियम उसे पथ भ्रष्ट करता है और जो कर्म तुम करते हो (प्रलय के दिन) उनके विषय में तुम से अवश्य पूछा जाएगा (93)

(ऐ आस्तिकों!) तुम अपनी शपथों (वचनों) को आपस में एक दूसरे को धोखा देने का साधन न बनाओ (अर्थात वचन तोड़ कर विश्वास घात का मार्ग मत निकालो अपने इस कर्म से मुसलमानों को बदनाम न करो उस कर्म को देख कर) कही ऐसा न हो कि इस गतिविधि को देख कर कोई समुदाय जमने के बाद उखड़ जाए अर्थात लोग इस्लाम छोड़ दें और गैर मुस्लिम समुदाय इस्लाम में प्रविष्ट होने से रुकने लगें, और तुम इस अपराध के दण्ड में जो तुमने लोगों को ईश्वर के मार्ग से रोका बुरा परिणाम देखो और कष्ट का स्वाद चखना पड़े (94)

(अतः) और तुमने ईश्वर से जो वचन किया है (अर्थात उसकी पुस्तक पर व्यवहार करने का) उसे दुनिया के थोड़े लाभ के लिए न बेचो (क्योंकि वचन को पूरा करने का) जो फल ईश्वर की ओर से निश्चित है वह तुम्हारे लिए अच्छा है यदि तुम समझो (95)

जो कुछ तुम्हारे पास (दुनिया का धन) है वह समाप्त हो जाएगा परन्तु जो ईश्वर के पास है वह सदैव शेष रहेगा तो जो लोग धैर्य करते रहे हम उन्हें उनके सत्कर्मों का अच्छा फल देंगे (96)

जो व्यक्ति सत्कर्म करेगा नर हो या नारी और वह आस्तिक भी हो तो हम उसको पवित्र और आराम के जीवन से जीवित रखेंगे और परलोक में उनके कर्मों का अत्यन्त अच्छा फल देंगे (97) {7:32}

और जब तुम कुरआन पढ़ने लगे तो शैतान पतित से ईश्वर की शरण मांग लिया करो (शैतान के वसवसों से बचने के लिए) (98)

विश्वास करो जो आस्तिक हैं और अपने ईश्वर पर भरोसा रखते हैं उन पर शैतान का बल नहीं चलता (99)

उसका बल तो उन्ही लोगों पर चलता है जो उससे अर्थात ईश्वर से मुख मोड़ते हैं और जो उस शैतान को ईश्वर का साझी मानते हैं (100)

और जब हम (स्थिति के आधीन कर्म करने के लिए) अपने एक आदेश को विलम्बित करके उसके स्थान दूसरा आदेश देंगे (जैसे पहले आदेश था निर्बलता को देख कर कि युद्ध से अपने हाथ रोके रहो, परन्तु बाद में निर्बलता दूर हो गई और एक स्थान राज्य स्थापित हो गया तब आदेश दिया कि अब युद्ध करो, परन्तु याद रहे कि पहला आदेश बदला नही अपितु आवश्यकता के आधीन लंबित कर दिया है) और ईश्वर ही अच्छा जानता है कि (किस स्थिति में) वह कौन सा आदेश अवतरित करता है तो मक्का के नास्तिक कहते हैं तुम तो (इस प्रकार के आदेश) अपने मन से बना लिया करते हो, (अपितु बात यह है कि) उनमें अधिकांश लोग ज्ञान नही रखते (परन्तु याद रहे कि जो नियम धर्म विधान है उनमें कोई परिवर्तन नही होता अटल है) (101)

(ऐ रसूल!) तुम (उन आपत्ति करने वालो से) कहदो (यह कुरआन मैंने अपने जी से नही बनाया) इसको

سے اللہ کا قانون اسے ہدایت دیتا ہے اور جو چاہتا ہے اپنے بُرے عمل سے اللہ کا قانون اسے گمراہ کرتا ہے اور جو عمل تم کرتے ہو (قیامت کے دن) ان کے بارے میں تم سے ضرور پوچھا جائے گا (۹۳)

(اے مسلمانو!) تم اپنی قسموں (عہدوں) کو آپس میں ایک دوسرے کو دھوکا دینے کا ذریعہ نہ بناؤ (یعنی عہد شکنی کرکے بدعہدی کی راہ مت نکالو اپنے اس عمل سے مسلمانوں کو بدنام نہ کرو اس عمل کو دیکھ کر) کہیں ایسا نہ ہو کہ اس روش کو دیکھ کر کوئی قوم جمنے کے بعد اکھڑ جائے یعنی لوگ اسلام چھوڑ دیں اور غیر مسلم قومیں اسلام میں داخل ہونے سے رکنے لگیں اور تم اس جرم کی پاداش میں جو تم نے لوگوں کو اللہ کی راہ سے روکا بُرا نتیجہ دیکھو اور عقوبت کا مزا چکھنا پڑے (۹۴)

(اس لئے) اور تم نے اللہ سے جو عہد کیا ہے (یعنی اس کی کتاب پر عمل کا) اسے دنیا کے تھوڑے فائدے کے لئے نہ بیچو (کیونکہ عہد کو پورا کرنے کا) جو بدلہ اللہ کی طرف سے مقرر ہے وہ تمہارے لئے بہتر ہے اگر تم سمجھو (۹۵)

جو کچھ تمہارے پاس (دنیوی دولت) ہے وہ ختم ہو جائے گی لیکن جو اللہ کے پاس ہے وہ ہمیشہ باقی رہے گا تو جو لوگ صبر کرتے رہے ہم انہیں ان کی نیکیوں کا اچھا بدلہ دیں گے (۹۶)

جو شخص نیک اعمال کرے گا مرد ہو یا عورت اور وہ مومن بھی ہو تو ہم اس کو پاک اور آرام کی زندگی سے زندہ رکھیں گے اور آخرت میں ان کے اعمال کا نہایت اچھا بدلہ دیں گے (۹۷) [۷:۳۲]

اور جب تم قرآن پڑھنے لگو تو شیطان مردود سے اللہ کی پناہ مانگ لیا کرو (شیطان کے وسوسوں سے بچنے کے لئے) (۹۸)

یقین کرو جو مومن ہیں اور اپنے رب پر بھروسا رکھتے ہیں ان پر شیطان کا زور نہیں چلتا (۹۹)

اس کا زور تو انہیں لوگوں پر چلتا ہے جو اس سے یعنی اللہ سے منہ موڑتے ہیں اور جو اس شیطان کو اللہ کا شریک مانتے ہیں (۱۰۰)

اور جب ہم (حالات کے تحت عمل کرنے کے لئے) اپنے ایک حکم کو موخر کرکے اس کی جگہ دوسرا حکم دیں گے (جیسے پہلے حکم تھا کمزوری کو دیکھ کر کہ جنگ سے اپنے ہاتھ روکے رہو مگر بعد میں کمزوری دور ہو گئی اور ایک جگہ حکومت قائم ہو گئی تب حکم دیا کہ اب جنگ کرو لیکن یاد رہے کہ پہلا حکم بدلہ نہیں بلکہ مصلحت کے تحت موخر کر دیا ہے) اور اللہ ہی بہتر جانتا ہے کہ (کس حالت میں) وہ کونسا حکم نازل کرتا ہے تو کفار مکہ کہتے ہیں تم تو (اس طرح کے احکام) اپنے جی سے بنا لیا کرتے ہو (بلکہ بات یہ ہے کہ) ان میں زیادہ تر لوگ خبر نہیں رکھتے (مگر یاد رہے کہ جو قانون شریعت ہیں ان میں کوئی تبدیلی نہیں ہوتی وہ اٹل ہیں) (۱۰۱)

(اے رسول!) تم (ان اعتراض کرنے والوں سے) کہدو (یہ قرآن میں نے اپنے جی سے نہیں بنایا) اس کو

तुम्हारे ईश्वर की ओर से पवित्र आत्मा फरिश्ता सच्चाई के साथ लेकर अवतरित हुआ है (इसके प्रेषण का उद्देश्य यह है कि) धर्म वाले के हृदय (सत्य मार्ग में) जमा दे और आज्ञाकारी बन्दो के लिए मार्ग दर्शन और शुभ सूचना हो (102)

تمہارے رب کی طرف سے روح القدس فرشتہ سچائی کے ساتھ لے کر نازل ہوا ہے (اس کے نزول کا مقصد یہ ہے کہ) ایمان والوں کے دل (راہ حق میں) جما دے اور فرمانبردار بندوں کے لئے رہنمائی اور خوشخبری ہو (۱۰۲)

और हमें ज्ञात है कि (कुरआन के बारे में अनेकेश्वर वादियों का क्या विचार है) वह लोग कहते है कि (मुहम्मद स०) को एक व्यक्ति कुरआन सिखाता है (वह लोग कितने मुर्ख है उनकी समझ में यह बात नही आती कि) उस व्यक्ति की भाषा जिसे वह लोग सिखाने वाला समझ रहे है अजमी है और कुरआन की भाषा स्पष्ट और शुद्ध अरबी है (फिर जो व्यक्ति अरबी जानता ही नही वह अरबी की शिक्षा कैसे दी सकता है?) (103)

اور ہمیں تو معلوم ہے کہ (قرآن کے متعلق مشرکین کا کیا خیال ہے) وہ لوگ کہتے ہیں کہ (محمدؐ) کو ایک شخص قرآن سکھاتا ہے (وہ لوگ کتنے بے وقوف ہیں ان کی سمجھ میں یہ بات نہیں آتی کہ) اس شخص کی زبان جسے وہ لوگ سکھانے والا سمجھ رہے ہیں عجمی ہے اور قرآن کی زبان صاف اور واضح عربی ہے (پھر جو شخص عربی جانتا ہی نہیں وہ عربی کی تعلیم کیسے دے سکتا ہے؟) (۱۰۳)

जो लोग ईश्वर की धाराओं पर विश्वास नही रखते ईश्वर का नियम उन्हें सत्य मार्ग नही दिखाता और उनके लिए पीड़ा देने वाला कष्ट है (104)

جو لوگ اللہ کی آیتوں پر ایمان نہیں رکھتے اللہ کا قانون انہیں راہ حق نہیں دکھاتا اور ان کے لئے دردناک عذاب ہے (۱۰۴)

अपने जी से झूट बनाना (ईशदूत का कार्य नही है यह) उन्ही लोगों का कार्य है जो ईश्वर की धाराओं पर विश्वास नही लाते वह लोग झूटे है (105)

اپنے جی سے جھوٹ بنانا (رسول کا کام نہیں ہے یہ) انہیں لوگوں کا کام ہے جو اللہ کی آیتوں پر ایمان نہیں لاتے وہ لوگ جھوٹے ہیں (۱۰۵)

जो व्यक्ति आस्था लाने के बाद ईश्वर से विरोधी हुआ और उसका हृदय विरोध पर सहमत हुआ ऐसे लोगों पर ईश्वर का क्रोध है और उनके लिए बहुत बड़ा कष्ट है, परन्तु जो कोई इनकार पर विवश किया जाए और वह विवशता में इनकार की बात कह दे इस स्थिति में कि उसका हृदय धर्म पर सन्तुष्ट हो (ऐसे लोगों पर कोई आरोप नही)(106)

جو آدمی ایمان لانے کے بعد اللہ سے منکر ہوا اور اس کا دل کفر پر راضی ہوا ایسے لوگوں پر اللہ کا غضب ہے اور ان کے لئے بہت بڑا عذاب ہے لیکن جو کوئی کفر پر مجبور کیا جائے اور وہ مجبوری میں کفر کی بات کہہ دے اس حال میں کہ اس کا دل ایمان پر مطمئن ہو (ایسے لوگوں پر کوئی الزام نہیں) (۱۰۶)

(नास्तिकों को जो दण्ड दिया जाएगा) वह इसलिए कि उन्होंने प्रलोक को छोड़कर दुनिया के जीवन को प्रिय रखा और ईश्वर (का नियम यह है कि वह) नास्तिकों पर (सफलता और सौभाग्य का) मार्ग नही खोलता (107)

(کافروں کو جو عذاب دیا جائے گا) وہ اس لئے کہ انہوں نے آخرت کو چھوڑ کر دنیا کی زندگی کو عزیز رکھا اور اللہ (کا قانون یہ ہے کہ وہ) کافروں پر (فلاح وسعادت کی) راہ نہیں کھولتا (۱۰۷)

वही वह लोग है जिनके हृदय पर और कानों पर और आंखों पर ईश्वर के नियम ने मोहर लगा दी है, और वही वह लोग है जो अचेतना में पड़े है (108)

وہی وہ لوگ ہیں جن کے دلوں پر اور کانوں پر اور آنکھوں پر اللہ کے قانون نے مہر لگا دی ہے اور وہی وہ لوگ ہیں جو غفلت میں پڑے ہوئے ہیں (۱۰۸)

कुछ शंका नही कि वही लोग प्रलोक में हानी उठाने वाले है (109)

کچھ شک نہیں کہ وہی لوگ آخرت میں نقصان اٹھانے والے ہیں (۱۰۹)

फिर जिन लोगों ने (इस्लाम के मार्ग में) कष्ट उठाने के बाद देश त्याग किया फिर धर्म युद्ध और परिश्रम किया और धैर्य वान रहे तो उनको उन परिश्रमों के बाद ईश्वर निःसंदेह क्षमा करने वाला दया करने वाला है (110)

پھر جن لوگوں نے (اسلام کی راہ میں) مصیبتیں اٹھانے کے بعد ہجرت کی پھر جہاد کیا اور ثابت قدم رہے تو ان کو ان آزمائشوں کے بعد تیرا رب یقیناً بخشنے والا رحمت فرمانے والا ہے (۱۱۰)

(उन सब का निर्णय उस दिन होगा) जब कि हर व्यक्ति अपने ही बचाओं की चिन्ता में लगा हुआ होगा, और हर एक को उसके कर्मों का फल पूरा पूरा दिया जाएगा और किसी पर कण भर अन्याय न होने पाएगा (111)

<u>(ان سب کا فیصلہ اس دن ہوگا) جب کہ ہر شخص اپنے ہی بچاؤ کی فکر میں لگا ہوا ہوگا اور ہر ایک کو اس کے کئے کا بدلہ پورا پورا دیا جائے گا اور کسی پر ذرہ بھر ظلم نہ ہونے پائے گا (۱۱۱)</u>

ईश्वर (एक नगरी की उपमा देता है कि हर प्रकार) चैन व शान्ति से रहती थी हर ओर से जीविका बड़ी मात्रा में चली आती थी परन्तु उन लोगों ने ईश्वर की सुख सामग्रीयों की कृतघ्नता की (और

اللہ ایک بستی کی مثال بیان کرتا ہے کہ (ہر طرح) امن چین سے بستی تھی ہر طرف سے رزق بافراغت چلا آتا تھا مگر ان لوگوں نے اللہ کی نعمتوں کی ناشکری (اور کاروبار

कारोबार में धोका दिया दुर्व्यवहार किया) तो अपने नियामानुसार ईश्वर ने उनके कर्मों के कारण उनको भूख और भय का वस्त्र पहना कर स्वाद चखाया (और वह अपनी जीविका के लिए दूर जाने लगे पहले वहां पर आती थी) (112) {6:145-146, 16:118, 34:19}

میں دھوکا دیا بداخلاقی سے پیش آئے) کی تو اپنے قانون کے مطابق اللہ نے ان کے اعمال کے سبب ان کو بھوک اور خوف کا لباس پہنا کر مزہ چکھایا (اور وہ اپنی روزی کے لئے دور جانے لگے پہلے وہاں پر آتی تھی) (۱۱۲) [۶:۱۴۵،۱۴۶؛ ۱۶:۱۱۸؛ ۳۴:۱۹]

और उनके पास उन्ही में से एक रसूल आया तो उन्होंने उसको झुठलाया सो उनको कष्ट ने आ पकड़ा और वह अत्याचारि थे (113)

اور ان کے پاس انہی میں سے ایک رسول آیا تو انہوں نے اس کو جھٹلایا سو ان کو عذاب نے آ پکڑا اور وہ ظالم تھے (۱۱۳)

पस ईश्वर ने जो तुमको वैध पवित्र जीविका दी है उसे खाओ और ईश्वर के प्रसादो का धन्यवाद करो यदि उसी की पूजा करते हो (114)

پس اللہ نے جو تم کو حلال طیب رزق دیا ہے اسے کھاؤ اور اللہ کی نعمتوں کا شکر کرو اگر اسی کی عبادت کرتے ہو (۱۱۴)

उसने तुमपर मृतक और रक्त और सुअर का मास अवैध कर दिया है और जिस वस्तु पर ईश्वर के सिवा किसी और का नाम लिया जाए (उसको भी) हां यदि कोई विवश हो जाए और पाप करने वाला न हो और न सीमा से निकलने वाला हो तो ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (115) {5:3}

اس نے تم پر مردار اور لہو اور سور کا گوشت حرام کر دیا ہے اور جس چیز پر اللہ کے سوا کسی اور کا نام لیا جائے (اس کو بھی) ہاں اگر کوئی ناچار ہو جائے اور گناہ کرنے والا نہ ہو اور نہ حد سے نکلنے والا ہو تو اللہ بخشنے والا مہربان ہے (۱۱۵) [۵:۳]

तुम्हारे मुखो पर जो झूठी बात आजाए उसे बे धड़क न कह दिया करो कि यह वैध है और यह अवैध, यह तो ईश्वर के नाम प झूठी बात करन है (किसी वस्तु का वैधाया अवैध करने का अधिकार केवल ईश्वर को है, अतः यदि कोई व्यक्ति किसी वस्तु को वैध या अवैध करता है तो वह ईश्वर पर झूठा दोषा रोषण करता है) जो लोग ईश्वर पर झूठा दोषा रोपण करते है वह कभी सफल न होंगे (116)

تمہاری زبانوں پر جو جھوٹی بات آجائے اسے بے دھڑک نہ کہدیا کرو کہ یہ حلال ہے اور یہ حرام، یہ تو اللہ کے نام پر جھوٹی بات کہنا ہے (کسی چیز کا حلال یا حرام کرنے کا حق صرف اللہ کو ہے اس لئے اگر کوئی انسان کسی چیز کو حلال یا حرام کرتا ہے تو وہ اللہ پر جھوٹ بہتان باندھتا ہے) جو لوگ اللہ پر جھوٹ بہتان باندھتے ہیں وہ کبھی کامیاب نہ ہوں گے (۱۱۶)

झूट का लाभ तो थोड़ा सा है परन्तु उसके बदले में उनको कष्ट देने वाला दण्ड है (117)

جھوٹ کا فائدہ تو تھوڑا سا ہے مگر اس کے بدلے میں ان کو دردناک عذاب ہے (۱۱۷)

(ऐ रसूल!) हमने यहूदियों पर वह वस्तुएं जिनका हमने तुम से पहले उल्लेख किया है से वंचित कर दिया था (और यह वंचित होना उनकी अवज्ञा के आधार पर था) हमने उन पर अत्याचार नही किया था अपितु वह (आप अपने ऊपर आत्याचार कर रहे थे) (118) {6:145,146, 16:112,113, 34:19}

(اے رسول!) ہم نے یہودیوں پر وہ چیزیں جن کا ہم نے تم سے پہلے ذکر کیا ہے سے محروم کر دیا تھا (اور یہ محرومیت ان کی نافرمانی کی بنا پر تھی) ہم نے ان پر زیادتی نہیں کی تھی بلکہ وہ خود اپنے اوپر ظلم کر رہے تھے (۱۱۸) [۶:۱۴۵، ۱۴۶؛ ۱۶:۱۱۲، ۱۱۳؛ ۳۴:۱۹]

फिर जो लोग अज्ञानतः से बुराई में पड़ गए फिर उसके बाद तोबा कर ली और सदाचारि हो गए तो इसके बाद तुम्हारा रब निःसंदेह क्षमा करने वाला (और) दया करने वाला है (अर्थात अवज्ञा के कारण निर्धनता आने पर जिन पवित्र वस्तुओ से वंचित हो गए थे सदाचारि बनने पर ईश्वर ने उनपर कृपा की और सम्पन्नता आने पर वह बंधन समाप्त हो गई) (119)

پھر جو لوگ نادانی سے برائی میں پڑ گئے پھر اس کے بعد توبہ کر لی اور نیک ہو گئے تو اس کے بعد تمہارا رب یقیناً بخشنے والا (اور) رحمت کرنے والا ہے (یعنی نافرمانی کی وجہ سے محتاجی آنے پر جن پاک چیزوں سے محروم ہو گئے تھے نیک بننے پر اللہ نے ان پر رحمت کی اور خوشحالی آنے پر وہ محرومیت ختم ہو گئی) (۱۱۹)

निःसंदेह इब्राहीम अपनी जात में पूरी उम्मत और (इमाम) थे लोगों के ईश्वर के आज्ञाकारी थे सीधे मार्ग पर, वह अनेकेश्वर वादियों में से न थे (120) {53:37}

بے شک ابراہیم اپنی ذات میں ایک پوری امت اور امام تھے لوگوں کے۔ اللہ کے فرمانبردار تھے سیدھی راہ پر، وہ مشرکوں میں سے نہ تھے (۱۲۰) [۵۳:۳۷]

उसकी निधियों का धन्य वाद करने वाले थे ईश्वर ने उनको चुन लिया और सीधा मार्ग दिखाया(121)

اس کی نعمتوں کے شکر گزار تھے اللہ نے ان کو چن لیا اور سیدھا راستہ دکھایا (۱۲۱)

हमने उनको दुनिया में भी भलाई दी थी और वह प्रलोक में भी सदाचारियों में से होंगे (122)

ہم نے ان کو دنیا میں بھی بھلائی دی تھی اور وہ آخرت میں بھی نیک لوگوں میں سے ہوں گے (۱۲۲)

फिर हमने आपकी ओर संकेत किया कि इब्राहीम के धर्म का अनुकरण स्वीकार करो जो सबसे कट कर एक ईश्वर के हो रहे थे, और वह अनेकेश्वर वादियों में से न थे (123) {6:80, 22:78}

پھر ہم نے آپ کی طرف وحی کی کہ دین ابراہیم کی پیروی اختیار کرو جو سب سے کٹ کر ایک اللہ کے ہو رہے تھے اور وہ شرکوں میں سے نہ تھے (۱۲۳)[۶:۸۰:۲۲:۷۸]

सब्त का सम्मान तो उन लोग पर अनिवार्य किया था परन्तु उन्होंने ने उसमें मत भेद किया, निःसंदेह आपका रब प्रलय के दिन उनमें आपस में निर्णय कर देगा जिन बातों में वह मत भेद किया करते थे (124)

سبت کی تعلیم تو ان لوگوں پر لازم کی تھی مگر انہوں نے اس میں اختلاف کیا بے شک آپ کا رب قیامت کے دن اُن میں باہم فیصلہ کر دے گا جن باتوں میں وہ اختلاف کیا کرتے تھے (۱۲۴)

ऐ नबी स0 अपने रब के मार्ग की ओर निमंत्रण दो युक्ति और अच्छी शिक्षा के साथ और लोगों से बात ऐसे ढंग पर करो जो अच्छा हो, तुम्हारा रब ही अधिक अच्छा जानता है कि कौन उससे भटका हुआ है और कौन सत्य मार्ग पर (125)

اے نبیؐ اپنے رب کے راستے کی طرف دعوت دو حکمت اور عمدہ نصیحت کے ساتھ اور لوگوں سے بات ایسے طریقے پر کرو جو بہترین ہو تمہارا رب ہی زیادہ اچھا جانتا ہے کہ کون اس سے بھٹکا ہوا ہے اور کون راہ راست پر ہے (۱۲۵)

और यदि बदला लो भी बस उतना ही लो जितना तुम पर अत्यचार हुआ है, और यदि धैर्य करो और क्षमा कर दो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है (126)

اور اگر تم بدلہ لو تو بس اسی قدر لے لو جس قدر تم پر زیادتی کی گئی ہو اور اگر صبر کرو اور معاف کر دو تو یہ تمہارے لئے بہتر ہے (۱۲۶)

और ऐ नबी धैर्य से कार्य किए जाओ और तुम्हारा यह धैर्य ईश्वर ही की क्षमता से है उनकी करतूतो पर दुख न करो और न उनकी चालो पर हृदय तंग हो (127)

اور اے نبی صبر سے کام کئے جاؤ اور تمہارا یہ صبر اللہ ہی کی توفیق سے ہے ان کی حرکات پر رنج نہ کرو اور نہ ان کی چال بازیوں پر دل تنگ ہو (۱۲۷)

निःसंदेह ईश्वर साथ है उन लोगों के जो सदाचारी है और जो शुभ कार्य करने वाले है (128)

بے شک اللہ ساتھ ہے ان لوگوں کے جو پرہیز گار ہیں اور جو نیک ہیں (۱۲۸)

सुबहानल्लजी – पारह (15)

बनीइसराईल (17) मक्की

سبحان الذی ۔ پارہ (۱۵)

سورۃ بنی اسرائیل (۱۷) مکی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

पवित्र है वह अस्तित्व जो ले गया एक रात्री अपने बन्दे को सम्मान वाली मस्जिद से दूर की मस्जिद अर्थात मस्जिदे अकसा तक जिसके वातावरण को हमने सम्पन्नता दी है, ताकि उसे अपने कुछ चिन्ह दिखाए निःसंदेह वह सुनने वाला देखने वाला है (1) {17:60:, 53:18}

پاک ہے وہ ذات جو لے گیا ایک رات اپنے بندے کو مسجد حرام سے دور کی مسجد یعنی مسجد اقصیٰ تک جس کے ماحول کو ہم نے برکت دی ہے تا کہ اسے اپنی کچھ نشانیاں دکھائیں بے شک وہ سننے والا دیکھنے والا ہے (۱)[۱۷:۶۰:۵۳:۱۸]

नोट– मस्जिदे अकसा को अनुवादों में बेतुलमुकद्दस लिखा गया है जो योरोशलम में है, यदि बेतुलमुकद्दस ही माना जाए तो मुहम्मद स0 का जाना केवल बेतुलमुकद्दस तक ही रहता है, आगे को नही परन्तु कुरआन मस्जिदे अकसा तक ही कहता है इस लिए मस्जिदे अकसा बेतुलमुकद्दस कदापि नही है जो योरो शलम में है वह बेतुलमुकद्दस जिसका नाम मस्जिदे अकसा रखा गया है वह तो फिलिस्तीन के नगर योरो शलम में स्थित है वहां पर पूजा घर ईशदूतों ने बनवाए थे जो बाद को अन्यायी राजाओं ने नष्ट कर दिये,

कथनों में है कि मेराज की रात्रि को मुहम्मद स0 ने बेतुलमुकद्द अर्थात मस्जिद अकसा में सब नबीयों को नमाज़ पढ़ाई और फिर ऊपर आकाश को गए परन्तु वह मस्जिद जिसमें नमाज पढ़ना लिखा है उस समय उपस्थित ही न थी और न आज है, आज जिस मस्जिद को मस्जिदे अकसा कहते है वह तो श्री मान उमर र0 ने अपने काल में बनवाई थी जिसका नाम पहले मस्जिदे ऊमर था और बाद को मस्जिदे अकसा हुआ,

उल्लेख यह किया जाता है कि जब योरो शलम को विज्य किया गया तो उस समय वहां के पादरी ने कहा कि हम नगर की

نوٹ :۔ مسجد اقصیٰ کو ترجموں میں بیت المقدس لکھا گیا ہے جو یروشلم میں ہے اگر بیت المقدس ہی مانا جائے تو محمدؐ کا جانا صرف بیت المقدس تک ہی رہتا ہے آگے کو نہیں مگر قرآن مسجد اقصیٰ تک ہی کہتا ہے اس لئے مسجد اقصیٰ بیت المقدس ہرگز نہیں ہے جو یروشلم میں ہے وہ بیت المقدس جس کا نام مسجد اقصیٰ رکھا گیا ہے وہ تو فلسطین کے شہر یروشلم میں واقع ہے۔ وہاں پر عبادت گاہیں نبیوں نے بنوائیں تھیں جو بعد کو ظالم بادشاہوں نے برباد کر دیں۔

روایت میں ہے کہ معراج کی رات کو محمدؐ نے بیت المقدس یعنی مسجد اقصیٰ میں سب نبیوں کو نماز پڑھائی اور پھر اوپر آسمان کو تشریف لے گئے۔ مگر وہ مسجد جس میں نماز پڑھانا لکھا ہے اس وقت موجود ہی نہ تھی اور نہ آج ہے آج جس مسجد کو مسجد اقصیٰ کہتے ہیں وہ تو حضرت عمرؓ نے اپنے زمانے میں بنوائی تھی جس کا نام پہلے مسجد عمر تھا اور بعد کو مسجد اقصیٰ ہوا۔

بیان یہ کیا جاتا ہے کہ جب یروشلم کو فتح کیا گیا تو اس وقت وہاں کے پادری نے کہا کہ ہم شہر کی چابی تمہارے امیر کے سپرد کریں گے تب حضرت عمرؓ

कुंजी तुम्हारे राजा को देंगे तब श्रीमान उमर र० वहां गए और नगर के अन्दर मुसलमान प्रविष्ट हुए जब नमाज का समय आया तो स्थान की खोज हुई पादरी ने कहा कि आप नमाज चर्च में पढ़ ले परन्तु उमर ने यह उचित न समझा और किसी रहित खाली स्थान की खोज की तो एक स्थान मिला जिस में कूड़ा आदि पड़ा था, चूंकि खाली स्थान पर ऐसा ही होता है, उमर ने उस स्थान को स्वच्छ करके वहां नमाज पढ़ी फिर बाद को उस स्थान पर एक मस्जिद बनाई गई जिस का नाम मस्जिदे उमर रखा गया और बाद को यही मस्जिद मस्जिद अकसा कहलाई यदि वही मस्जिद जिसको बेतुलमुकद्दस अर्थात मस्जिदे अकसा कहा जाता है यदि मेराज के समय उपस्थित थी तो उस की दिशा काबे को है, इससे सिद्ध हो रहा है कि मुहम्मद स० से पहले भी कुरआन के अनुसार मिल्लते इब्राहीम पर होने से हर नबी का किबला काबा ही था जो मक्के में है, अतः मुहम्मद स० ने भी आरम्भ से नमाज काबा दिशा ही पढ़ी है बेतुलमुद्दस की ओर को दिशा करके नही पढ़ी अतः इस बारे में जितने कथन है वह सब विचारणीय है इस दिशा के विषय में सूरत बकरा में विवेचना हो चुकी है विधमान मस्जिदे अकसा मेराज के समय उपस्थित नही थी वह स्थान खाली था बाद में कुरआन में मस्जिद अकसा शब्द देख कर मुसलमानों को वास्तविकता से दूर करने के लिए उस मस्जिद उमर का नाम मस्जिद अकसा रख कर मेराज से जोड़ दिया गया जिसको मुसलमानों ने बिना प्रमाण के मान लिया,

यदि मस्जिदे अकसा विधमान थी तो विज्य के समय नमाज पढ़ने के लिए किसी स्थान की खोज की आवश्यका नही थी मुसलमान तुरन्त उस मस्जिद में ही जा कर नमाज पढ़ते जिसमें मुहम्मद स० ने नमाज पढ़ाई थी, मेराज से लेकर विज्य योरोशलम तक न जाने कितने मुसलमानों ने उस स्थान को देख लिया होगा और उमर को भी ज्ञात था कि नबी ने योरोशलम की मस्जिद में नमाज पढ़ी है मस्जिद खोज का क्या अर्थ, परन्तु ऐसा कोई कथन पुस्तकों में अंकित नही अतः सिद्ध हुआ कि विज्य बेतुलमुकद्दस के समय वहां कोई मस्जिद नही थी और न ही मुहम्मद स० मेराज में वहां पर गए आपतो काबा से सीधे मस्जिदे अकसा सदरतुलमुनाहा गए वास्तव में मस्जिदे अकसा वह स्थान है जो बहुत दूर किनारा सुदर जहां ईश्वर मुहम्मद स० को ले गया, जिसका स्पष्टीकरण सुरत नजम में कर दिया गया है,

सूरत नजम (53) आयत (53:6) वह बड़ा शक्तिशाली है, वह सामने खड़ा हुआ (53:7) वह ऊपरी क्षितिज पर था (53:8) फिर निकट आया और ऊपर विलंबित हो गया (53:9) यहां तक कि वह दो कमानों के बराबर या उससे कुछ कम दूरी पर रह गया (53:10) तब उसने ईश्वर के बन्दे को वही पहुंचाई जो वही भी उसे पहुंचाई (53:11) मनने झूट न कहा जो देखा (53:12) क्या तुम उस वस्तु पर उससे झगड़ते हो जिसे वह आंखो से देखता है (53:13) और एक बार और उसने देखा (53:14) सदरतुल मुन्तहा अन्तिम सीमा आवरण के पास (53:15) जहां पास ही जन्नतुल मावा (53:16) उस समय सदरा पर छा रहा था जो कुछ छा रहा था अर्थात उस आवरण पर (53:17) दृष्टि न चुन्धाई न सीमा से आगे बढ़ी (53:18) और उसने अपने रब के बड़े-बड़े चिन्ह देखें सूरत नजम की इन धाराओ ने सूरत असरा की आयत (धारा 17:1) को स्पष्ट कर दिया कि मुहम्मद स० कहां गए थे अर्थात सदरतुलमनाहा तक सदरतुलमुनाहा क्या है वह यह कि अन्तिम सीमा पर वह आवरण जिस पर फूलो की झालर हो और मानव की अन्तिम सीमा और ईश्वर के तेज और आलोक से ढका हो इसका अर्थ बेरी वृक्ष लेना कुरआन की आयतों के विरुद्ध है यह वह स्थान है जहां ईश्वर ने मुहम्मद स० को

وہاں گئے اور شہر کے اندر مسلمان داخل ہوئے۔ جب نماز کا وقت آیا تو جگہ کی تلاش ہوئی. پادری نے کہا کہ آپ نماز چرچ میں ہی پڑھ لیں. مگر عمرؓ نے یہ مناسب نہ سمجھا اور کسی خالی جگہ کی تلاش کی تو ایک جگہ ملی جس میں کوڑا وغیرہ پڑا تھا. چونکہ خالی جگہ پر ایسا ہی ہوتا ہے. عمرؓ نے اس جگہ کو صاف کرا کے وہاں نماز پڑھی پھر بعد کو اس جگہ پر ایک مسجد بنائی گئی جس کا نام مسجد عمرؓ رکھا گیا. اور بعد کو یہی مسجد مسجد اقصیٰ کہلائی.

اگر وہی مسجد جس کو بیت المقدس یعنی مسجد اقصیٰ کہا جاتا ہے اگر معراج کے وقت موجود تھی تو اس کا رُخ کعبہ کو ہے اس سے ثابت ہو رہا ہے کہ محمدؐ سے پہلے بھی قرآن کے مطابق ملت ابراہیم پر ہونے سے ہر نبی کا قبلہ کعبہ ہی تھا جو مکہ میں ہے اس لئے محمدؐ نے بھی شروع سے نماز کعبہ رُخ ہی پڑھی ہے. بیت المقدس کی طرف کو رُخ کر کے نہیں پڑھی. اس لئے اس بارے میں جتنی روایات ہیں وہ سب محل نظر ہیں. اس رُخ کے بارے میں سورہ بقرہ میں بحث ہو چکی ہے موجودہ مسجد اقصیٰ معراج کے وقت موجود نہیں تھی وہ جگہ خالی تھی. بعد میں قرآن میں مسجد اقصیٰ لفظ دیکھ کر مسلمانوں کو حقیقت سے دور کرنے کے لئے اس مسجد عمرؓ کا نام مسجد اقصیٰ رکھ کر معراج سے جوڑ دیا گیا جس کو مسلمانوں نے بغیر تحقیق کے مان لیا.

اگر مسجد اقصیٰ موجود تھی تو فتح کے وقت نماز پڑھنے کے لئے کسی جگہ کی تلاش کی ضرورت نہیں تھی مسلمان فوراً اس مسجد میں ہی جا کر نماز پڑھتے جس میں محمدؐ نے نماز پڑھائی تھی. معراج سے لیکر فتح یروشلم تک نہ معلوم کتنے مسلمانوں نے اس جگہ کو دیکھ لیا ہوگا اور عمرؓ کو بھی معلوم تھا کہ نبی نے یروشلم کی مسجد میں نماز پڑھی ہے مسجد موجود ہے کہتے، چلو وہاں چل کر نماز پڑھیں گے تلاش کا کیا مطلب؟ لیکن ایسا کوئی قول کتابوں میں درج نہیں اس لئے ثابت ہوا کہ فتح بیت المقدس کے وقت وہاں کوئی مسجد نہیں تھی. اور نہ ہی محمدؐ معراج میں وہاں پر گئے. آپؐ تو کعبہ سے سیدھے مسجد اقصیٰ سدرۃ المنتہیٰ گئے.

حقیقت میں مسجد اقصیٰ وہ جگہ ہے جو بہت دور کنارا بعید جہاں اللہ محمدؐ کو لے گیا جس کی تشریح سورۃ نجم میں کر دی گئی ہے.

سورہ نجم (۵۳) آیت (۶:۵۳) وہ بڑا صاحب قوت ہے وہ سامنے کھڑا ہوا (۷:۵۳) وہ بالائی افق پر تھا (۸:۵۳) پھر قریب آیا اور اوپر معلق ہو گیا. (۹:۵۳) یہاں تک کہ وہ دو کمانوں کے برابر یا اس سے کچھ کم فاصلے پر رہ گیا. (۱۰:۵۳) تب اس نے اللہ کے بندے کو وحی پہنچائی جو وحی بھی اسے پہنچائی (۱۱:۵۳) دل نے جھوٹ نہ کہا جو دیکھا (۱۲:۵۳) کیا تم اس چیز پر اس سے جھگڑتے ہو جسے وہ آنکھوں سے دیکھتا ہے (۱۳:۵۳) اور ایک مرتبہ اور اترتے دیکھا (۱۴:۵۳) سدرۃ المنتہیٰ آخری حد پردے کے پاس (۱۵:۵۳) جہاں پاس ہی جنت الماویٰ ہے (۱۶:۵۳) اس وقت سدرہ پر چھا رہا تھا جو کچھ چھا رہا تھا یعنی پردے پر (۱۷:۵۳) نگاہ نہ چندھیائی نہ حد سے آگے بڑھی (۱۸:۵۳) اور اس نے اپنے رب کی بڑی بڑی نشانیاں دیکھیں.

سورہ نجم کی ان آیتوں نے سورت الاسریٰ کی آیت (۱:۱۷) کی تشریح کر دی کہ محمدؐ کہاں گئے تھے یعنی سدرہ المنتہیٰ تک سدرۃ المنتہیٰ کیا ہے وہ یہ کہ آخری حد پر وہ پردہ جس پر پھولوں کی جھالر ہو اور انسان کی آخری حد اور اللہ کے انوار اور تجلیات سے ڈھکا ہو. اس کا مطلب بیری کا درخت لینا سیاق وسباق کے

के तेज और आलोक से ढका हो इसका अर्थ बेरी का वृक्ष लेना कुरआन की आयतों के विरुद्ध है यह वह स्थान है जहां ईश्वर ने मुहम्मद स0 को अपने बड़े बड़े चिन्ह दिखाएं जैसे जन्नतुलमावा और महामन जिबराईल को मूल आकृति में इत्यादि, यह है वह सत्यता मेराज की जो काबे से सदरतुलमुनतहा तक हुई न कि काबा से बेतुलमुकद्दस तक.

दूसरी बात आपत्ति जनक (17:1) के अनुवाद में यह है कि किसी अनुवाद में सुबहानल्लजी का अर्थ वह व्यक्ति लिखा है और ईश्वर को व्यक्ति नही कहा जा सकता. तीसरी बात मेराज की घटना में यह लिखी है कि मुहम्मद को श्रीमान जिबराईल अपने साथ ले गए थे क्या यह लिखा आयतों के प्रकाश में ठीक है? आयात में तो स्पष्ट है कि ईश्वर अपने बन्दे को रात्री में ले गया. और सूरत नजम में स्पष्ट है कि मुहम्मद स0 ने श्रीमान जिबराईल को वहां उतरते हुए मूल आकृति में दूसरी बार देखा, देखिए कुरआन क्या बात रहा है.

मेराज के कथनों में लिखा है कि जब जिबराईल चौथे आकाश पर पहुंचे तो मुहम्मद स0 से कहा कि अब मैं ऊपर नही जा सकता क्योंकि ऊपर जाने में मेरे पंख जल जाएंगे. परन्तु आयत बता रही है जिबराईल को सदराहपर उतरते देखा.

कथनों में है कि मुहम्मद स0 ने सब ईशदूतों को बेतुलमुकद्दस में नमाज पढ़ाई और फिर ऊपर गए. लिखा गया है कि मुहम्मद स0 को सब से तीव्र सवारी दी गई थी इस गति का वाहन किसी को नही दिया गया. परन्तु आश्चर्य की बात है कि इमाम तो आकाश पर बाद में गये और मुकतदी पहले पहुंच गए और जब मुहम्मद स0 जाते हैं तो हर आकाश में नबियों से बात होती है तो वह किस वाहन से गए या मुहम्मद कहीं विश्राम करने लगे थे?

कुरआन कहता है कि मरने के बाद हर व्यक्ति की आत्मा आलमे बरजख में रहती है परन्तु यहां लिखा है कि नबी आकाश पर जिस्म के साथ है यह क्या प्रसंग है बताओ बातें तो और भी हैं परन्तु वह इस योग्य नही कि उन पर कुछ लिखा जाए पढ़ने वालों ने पढ़ा होगा परन्तु बात यह है कि आस्था के आवरण में विचार का साहस नही किया तो अब कर लेना वास्तविक्ता ज्ञात हो जाएगी वह अनुवाद भी लिख दूं जो प्रचलित है (17:1) पवित्र है वह अस्तित्व जो अपने बन्दे को रात्री में मस्जिदुल हराम से मस्जिदुल अकसा बेतुलमुकद्दस तक ले गया जो देश शाम में है. क्या यह बैतुलमुकद्दस वाला अनुवाद ठीक है? यदि हां तो मुहम्मद का जाना केवल बैतुलमुकद्दस (योरो शलम) तक हो जाता है. आगे जाने का इनकार क्या कभी इस बात पर विचार किया है? अतः प्रचलित अनुवाद में बैतुलमुकद्दस शब्द देश शाम में अनुचित है उचित वही है जो मैंने लिखा है. अर्थात मस्जिदे अकसा बहुत दूर सुदर किनारा सदरतुलमुनतहा.

इन सब बातों पर विचार करो और जाति को एक ऐसी साफ सुथरी बात दो जिसको यह जाति किसी दूसरी जाकि के सामने प्रस्तुत करे और वह उसको सत्य जान कर इस्लाम में सम्मिलित हो जाए न कि वह इस्लाम जो लिख रखा है और व्यवहार हो रहा है जिसको सुन कर वह मुसलमानों और इस्लाम का उपहास बनाते हुए इस्लाम से स्वयं भी रुके और दूसरो को रोके. और जोइस्लाम में है उनको भी भ्रमित कर इस्लाम से दूर कर दे अर्थात कुरआन प्रस्तुत करो मेराज मुहम्मद स0 को मस्जिदुल हराम से सदरतुल मुनतहा तक हुई मेराज के विषय में मेरी पुस्तक कानून इलाही या इन्सानी में देखो विस्तार है सदराह का अर्थ सूरत नजम में लिखा है.

خلاف ہے۔ یہ وہ جگہ ہے جہاں اللہ نے محمدؐ کو اپنی بڑی بڑی نشانیاں دکھائیں جیسے جنت الماویٰ اور حضرت جبرئیل کو اصلی شکل میں وغیرہ وغیرہ، یہ ہے حقیقت معراج کی جو خانہ کعبہ سے سدرۃ المنتہیٰ تک ہوئی نہ کہ کعبہ سے بیت المقدس تک۔

دوسری قابل اعتراض بات (۱:۱۷) کے ترجمہ میں یہ ہے کہ کسی ترجمہ میں سبحان الذی کا مطلب وہ شخص لکھا ہے جب کہ سبحان الذی سے مراد اللہ ہےاور اللہ کو شخص نہیں کہا جا سکتا۔ تیسری بات معراج کے واقعہ میں یہ لکھی ہے کہ محمدؐ کو حضرت جبرئیل اپنے ساتھ لے گئے تھے کیا یہ لکھا آیتوں کی روشنی میں ٹھیک ہے؟ آیت میں تو صاف ہے کہ اللہ اپنے بندے کو رات میں لے گیا۔ اور سورت نجم میں صاف ہے کہ محمدؐ نے حضرت جبرئیل کو وہاں اترتے ہوئے اصل شکل میں دوسری مرتبہ دیکھا۔ دیکھئے قرآن کیا بتا رہا ہے۔ مگر ہم قرآن کو اپنے باطل عقیدوں کے چکر میں جھٹلا رہے ہیں۔

معراج کی روایات میں لکھا ہے کہ جب جبرئیل چوتھے آسمان پر پہنچے تو محمدؐ سے کہا کہ اب میں اوپر نہیں جا سکتا کیونکہ اوپر جانے میں میرے پر جل جائیں گے لیکن آیت بتا رہی ہے کہ جبرئیل کو سدرہ پر اترتے دیکھا۔

روایات میں ہے کہ محمدؐ نے نبیوں کو بیت المقدس میں نماز پڑھائی اور پھر اوپر گئے لکھا گیا ہے کہ محمدؐ کو سب سے تیز سواری دی گئی تھی اس رفتار کی سواری کسی کو نہیں دی گئی مگر تعجب کی بات یہ ہے کہ امام تو آسمان پر بعد میں گئے اور مقتدی پہلے سے ہی آسمان میں پہنچ گئے اور جب محمدؐ جاتے ہیں تو ہر آسمان میں نبیوں سے بات ہوتی ہے تو وہ کس سواری سے گئے یا محمدؐ کہیں آرام کرنے لگے تھے؟

قرآن کہتا ہے کہ مرنے کے بعد ہر آدمی کی روح عالم برزخ میں رہتی ہیں مگر یہاں لکھا ہے کہ نبی آسمان پر جسم کے ساتھ ہیں یہ کیا معاملہ ہے بتاؤ باتیں تو اور بھی ہیں مگر وہ اس لائق نہیں کہ ان پر کچھ لکھا جائے پڑھنے والوں نے پڑھا ہوگا لیکن بات یہ ہے کہ عقیدت کے پردے میں غور کرنے کی ہمت نہیں کی تو اب کر لینا حقیقت معلوم ہو جائے گی وہ ترجمہ بھی لکھ دوں جو رائج ہے (۱:۱۷) پاک ہے وہ ذات جو اپنے بندے کو رات میں مسجد الحرام سے مسجد اقصیٰ بیت المقدس تک لے گیا جو ملک شام میں ہے کیا یہ بیت المقدس والا ترجمہ ٹھیک ہے؟ اگر ہاں تو محمدؐ کا جانا صرف بیت المقدس (یروشلم) تک ہی ہو جاتا ہے آگے جانے کا انکار ہے کیا کبھی اس بات پر غور کیا ہے؟ اس لئے رائج الوقت ترجمے میں بیت المقدس لفظ ملک شام میں غلط ہے صحیح وہی ہے جو میں نے لکھا ہے۔ یعنی مسجد اقصیٰ بہت دور انتہائی کنارہ سدرۃ المنتہیٰ۔

ان سب باتوں پر غور کرو اور قوم کو ایک ایسی صاف ستھری بات دو جس کو یہ قوم کسی دوسری قوم کے سامنے پیش کرے اور وہ اس کو حقیقت جان کر اسلام میں شامل ہو جائے۔ نہ کہ وہ اسلام جو لکھ رکھا ہے اور عمل ہو رہا ہے جس کو سن کر وہ مسلمانوں اور اسلام کا مذاق بناتے ہوئے اسلام سے خود بھی رکے اور دوسروں کو روکے اور جو اسلام میں ہیں ان کو بھی ورغلا کر اسلام سے دور کر دے یعنی قرآن پیش کرو۔

معراج محمدؐ کو مسجد الحرام سے سدرۃ المنتہیٰ تک ہوئی معراج کے بارے میں میری کتاب قانون الٰہی یا انسانی میں دیکھو تفصیل ہے۔ سدرہ کا مطلب سورت نجم میں لکھا ہے۔

और हमने मूसा को पुस्तक दी थी और उसको बनी इसराईल को लिए मार्ग दर्शक नियुक्त किया था (जिसका मोलिक आदेश यह था कि) मेरे अतिरिक्त किसी को सहायक न बनाना (2)

اور ہم نے موسیٰ کو کتاب دی تھی اور اس کو بنی اسرائیل کے لئے رہنما مقرر کیا تھا (جس کا بنیادی حکم یہ تھا کہ) میرے سوا کسی کو کارساز نہ بنانا (۲)

तुम उन लोगों की सन्तान हो जिन्हें हमने नूह के साथ नाव में स्वार किया था और नूह एक आभारी भक्त था (3)

تم ان لوگوں کی اولاد ہو جنہیں ہم نے نوح کے ساتھ کشتی میں سوار کیا تھا اور نوح ایک شکرگزار بندہ تھا (۳)

और हमने पुस्तक (अर्थात बनी इसराईल के लिखित पृष्ठों) में (आपसे पहले प्रस्तुत होने वाली घटनाओ की) सूचना दे दी थी कि तुम देश में दो बार निःसंदेह विकार फैलाओगे और बड़ी कठोर उद्दण्डता करोगे (4)

اور ہم نے کتاب (یعنی بنی اسرائیل کے صحیفوں) میں (آپ سے پہلے پیش آنے والے حادثوں کی) خبر دے دی تھی کہ تم ملک میں دو مرتبہ یقیناً خرابی پھیلاؤ گے۔ اور بڑی سخت سرکشی کرو گے (۴)

पस जब पहली (घटना) का समय आ गया तो हमने अपने प्रचण्ड युद्ध करने वाले बन्दे तुम पर नियुक्त कर दिए तो वह तुम्हारी बस्तियों में फैल गए और वह वचन पूरा होना ही था (5)

پس جب پہلے (حادثہ) کا وقت آ گیا تو ہم نے اپنے سخت لڑائی لڑنے والے بندے تم پر مسلط کر دیے تو وہ تمہاری بستیوں میں پھیل گئے اور وہ وعدہ پورا ہونا ہی تھا (۵)

फिर हमने तुमको उन पर अधिकार दिया और धन और सन्तान की अधिकता से तुम्हारी सहायता की और तुम्हें बड़ा दल वाला बना दिया (6)

پھر ہم نے تم کو ان پر غلبہ دیا اور مال اور اولاد کی کثرت سے تمہاری مدد کی اور تمہیں بڑا جتھے والا بنا دیا (۶)

(और हमने बता दिया था कि) यदि भलाई के कार्य करोगे तो अपने ही लिए करोगे और यदि बुराई करोगे तो उसका कष्ट तुम्हारी जानों पर होगा फिर जब दूसरे वचन का समय आया तो हमने फिर अपने बन्दे भेजे ताकि तुम्हारे मुखो को बिगाड़ दे और जिस प्रकार पहली बार मस्जिद में प्रविष्ट हो गए थे उसी प्रकार फिर उसमें प्रविष्ट हो जाएं और जो कुछ पाएं उसे तोड़ फोड़ कर नष्ट कर दे (और ऐसा ही हुआ) (7)

(اور ہم نے بتا دیا تھا کہ) اگر بھلائی کے کام کرو گے تو اپنے ہی لئے کرو گے اور اگر برائی کرو گے تو اس کا وبال تمہاری جانوں پر ہوگا پھر جب دوسرے وعدہ کا وقت آیا تو ہم نے پھر اپنے بندے بھیجے تاکہ تمہارے چہروں کو بگاڑ دیں۔ اور جس طرح پہلی دفعہ مسجد میں داخل ہو گئے تھے اُسی طرح پھر اس میں داخل ہو جائیں اور جو کچھ پائیں اسے توڑ پھوڑ کر برباد کر دیں (۷) [اور ایسا ہی ہوا]

आशा है कि तुम्हारा रब तुम पर दया करे और यदि तुम फिर वही (कार्य) करोगे तो हम भी वही (पहला सलूक) करेंगे और हमने नर्क को नास्तिकों के लिए बन्दी गृह बना रखा है (8)

امید ہے کہ تمہارا رب تم پر رحم کرے اور اگر تم پھر وہی (حرکتیں) کرو گے تو ہم بھی وہی (پہلا سلوک) کریں گے اور ہم نے جہنم کو کافروں کے لئے قید خانہ بنا رکھا ہے (۸)

निःसंदेह यह कुरआन (इन्सान को) वह मार्ग दिखाता है जो निःसंदेह सीधा मार्ग है और आस्तिकों को जो सत्कर्म करते है शुभ सूचना देता है कि उनके लिए बड़ा फल है (9)

بے شک یہ قرآن (انسان کو) وہ راستہ دکھاتا ہے جو یقیناً سیدھا راستہ ہے اور مومنوں کو جو نیک عمل کرتے ہیں بشارت دیتا ہے کہ ان کے لئے اجر عظیم ہے (۹)

और (यह कुरआन इस बात की भी घोषणा करता है कि) जो लोग परलोक पर विश्वास नही रखते उनके लिए हमने दुख देने वाला कष्ट तैयार कर रखा है (10)

اور (یہ قرآن اس بات کا بھی اعلان کرتا ہے کہ) جو لوگ آخرت پر ایمان نہیں رکھتے ان کے لئے ہم نے دکھ دینے والا عذاب تیار کر رکھا ہے (۱۰)

(मानव जब बुराई करता है और उसके परिणाम में उसको हानी पहुंचती है तो क्रोध में आकर) मानव दुष्टता इस प्रकार मांगने लगता है जिस प्रकार अच्छे कर्म करके मंगल मांगना चाहिए परन्तु इन्सान बड़ा ही जल्द बाज सिद्ध हुआ है (11)

(انسان جب بُرائی کرتا ہے اور اس کے نتیجے میں اس کو نقصان پہنچتا ہے تو غصہ میں آ کر) انسان شر اس طرح مانگنے لگتا ہے جس طرح اچھے عمل کر کے خیر مانگنی چاہیے مگر انسان بڑا ہی جلد باز ثابت ہوا ہے (۱۱)

और हमने रात और दिन को (अपनी शक्ति के) दो चिन्ह बनाए है रात्री के चिन्ह को मिटा हुआ अर्थात अंधेरा रखा और दिन का चिन्ह यह है कि वह उज्ज्वल है ताकि तुम (दिन के प्रकाश में) अपने ईश्वर का कृपा दया खोजो (अर्थात अपनी जीविका खोजो) और सालो का हिसाब और गणना जानो और हमने (इस कुरआन में) हर वस्तु को (अर्थात अनिवार्य आदेशों को) पूरे विस्तार से वर्णन कर दिया है (12) {6:96, 10:5, 15:1, 25:23, 27:1, 12:111}

اور ہم نے رات اور دن کو (اپنی قدرت کی) دو نشانیاں بنایا ہے رات کو مٹا ہوا یعنی اندھیرا رکھا اور دن کی نشانی یہ ہے کہ وہ روشن ہے تاکہ تم (دن کی روشنی میں) اپنے رب کا فضل تلاش کرو (یعنی اپنی روزی تلاش کرو) اور برسوں کا حساب اور شمار جانو اور ہم نے (اس قرآن میں) ہر چیز کو (یعنی ضروری احکام کو) پوری تفصیل سے بیان کر دیا ہے (۱۲) [۶:۹۶؛۱۰:۵؛۱۵:۱؛۲۵:۲۳؛۲۷:۱؛۱۲:۱۱۱]

और हमने हर व्यक्ति का कर्म पत्र उसकी गर्दन में लटका दिया है और प्रलय के दिन उसके लिए एक

اور ہم نے ہر انسان کا نامہ اعمال اس کی گردن میں لٹکا دیا ہے اور قیامت کے دن اس کے لئے ایک کتاب نکال کر پیش

पुस्तक निकाल कर प्रस्तुत करेंगे जिसे वह अपने सामने खुली हुई पुस्तक देख लेगा (13) {7:7,8,9; 75:17से19; 27:82; 99:3}

کریں گے جسے وہ اپنے سامنے کھلی ہوئی کتاب دیکھ لے گا (۱۳) [۷:۷،۸،۹: ۷۵:۱۷تا۱۹: ۲۷:۸۲: ۹۹:۳]

(आदेश होगा) ले अपनी पुस्तक पढ़ले आज तू स्वयं ही (अपनी अच्छाईयों और बुराईयों का) लेखा करने को काफ़ी है (14) {7:7,8,9;75:17से19}

(حکم ہوگا) لے اپنی کتاب پڑھ لے آج تو خود ہی (اپنی اچھائیوں اور برائیوں کا) حساب کرنے کو کافی ہے (۱۴) [۷:۷،۸،۹: ۷۵:۱۷تا۱۹]

और जो व्यक्ति (जीवन के) सीधे मार्ग पर चलेगा तो अपने ही (लाभ के) लिए चलेगा (किसी दूसरे को कुछ न देगा) और जो व्यक्ति मिथ्या मार्ग पर चलेगा तो उसका दण्ड उसी को भोगना पड़ेगा और कोई भार उठाने वाला किसी दूसरे का भार न उठाने का (अर्थात न कोई अपना प्रतिदान दूसरे को दे सकता है और न दूसरे का कष्ट ले सकता है) और हम जब तक (किसी समुदाय में) ईशदूतों को नही भेजते (और उसे अवज्ञा के फल से अवगत नही कर देते) उस पर यातना अवतरित नही करते (15)

اور جو شخص (زندگی کے) سیدھے راستے پر چلے گا تو اپنے ہی (فائدے کے) لئے چلے گا (کسی دوسرے کو کچھ نہ دے گا) اور جو شخص غلط راستے پر چلے گا تو اس کا عذاب اسی کو بھگتنا پڑے گا اور کوئی بوجھ اٹھانے والا کسی دوسرے کا بوجھ نہ اٹھائے گا (یعنی نہ کوئی اپنا اجر دوسرے کو دے سکتا ہے اور نہ دوسرے کا عذاب لے سکتا ہے) اور ہم جب تک (کسی قوم میں) رسول نہیں بھیجتے (اور اسے نافرمانی کے نتائج سے آگاہ نہیں کردیتے) اس پر عذاب نازل نہیں کرتے (۱۵)

और जब हमारा नियम किसी बस्ती को (उसके निवासियों की अवज्ञा के आधार पर) वध करना चाहे तो क्या हम स्वयं ही वहां के सम्पन्न लोगों को आदेश देते हैं कि हमारी अवज्ञा करो? (परन्तु हमारा आदेश तो यह है कि हमारी अवज्ञा से बचो) परन्तु वह अवज्ञा से नही रूकते पस उन पर यातना का आदेश सिद्ध हो जाता है, और हमारा नियम उन्हे (उनके पापों के दण्ड में) यही हमारा आदेश है नष्ट विनष्ट कर देता है यही हमारा आदेश है (16) {18:59}

اور جب ہمارا قانون کسی بستی کو (اس کے باشندوں کی نافرمانی کی بنا پر) ہلاک کرنا چاہے تو کیا ہم خود ہی وہاں کے خوشحال لوگوں کو حکم دیتے ہیں کہ ہماری نافرمانی کرو؟ (لیکن ہمارا حکم تو یہ ہے کہ ہماری نافرمانی سے بچو) لیکن وہ نافرمانی سے باز نہیں آتے پس ان پر عذاب کا حکم ثابت ہوجاتا ہے اور ہمارا قانون انہیں (ان کے جرموں کی سزا میں) تباہ و برباد کردیتا ہے (۱۶) (۵۹:۱۸) یہی ہمارا امر ہے

और नूह के बाद कितनी ही जातिया हो चुकी है जिन्हे हमारे नियम ने (उनकके पापों के दण्ड में) वध कर डाला और आप का रब अर्थात मैं ईश्वर अपने बन्दों के पापों की सूचना रखने और देखने के लिए काफ़ी हूं (17)

اور نوح کے بعد کتنی ہی قومیں ہوچکی ہیں جنہیں ہمارے قانون نے (ان کے گناہوں کی سزا میں) ہلاک کرڈالا اور آپ کا رب یعنی میں اللہ اپنے بندوں کے گناہوں کی خبر رکھنے اور دیکھنے کے لئے کافی ہوں (۱۷)

जो व्यक्ति दुनिया की सम्पन्नता का शीघ्र इच्छुक हो तो हम जिस किसी को देना चाहते है और जितना देना चाहते है दे देते है, फिर (ऐसे दुनिया दार के लिए) हमने नर्क तैयार कर रखी है उसमें प्रविष्ट होगा घृणा के साथ ठुकराया हुआ (18)

جو شخص دنیا کی خوشحالی کا جلد خواہش مند ہو تو ہم جس کسی کو دینا چاہتے ہیں اور جتنا دینا چاہتے ہیں دے دیتے ہیں پھر (ایسے دنیا دار کے لئے) ہم نے دوزخ تیار کررکھی ہے اس میں داخل ہوگا حقارت کے ساتھ ٹھکرایا ہوا (۱۸)

और जो व्यक्ति प्रलोक की इच्छा रखता हो और उसके लिए उतना प्रयत्न करेगा जितना कर सकता है और वह आस्तिक भी हो तो (उसके लिए दोनों लोक में सफलता होगी) ऐसे ही लोग है जिनके प्रयत्न सफल होंगे (19)

اور جو شخص آخرت کی خواہش رکھتا ہو اور اس کے لئے اتنی کوشش کرے گا جتنی کرسکتا ہے اور وہ مومن بھی ہو تو (اس کے لئے دونوں جہاں میں کامیابی ہوگی) ایسے ہی لوگ ہیں جن کی کوشش کامیاب ہوگی (۱۹)

दुनिया के इच्छुको को भी और प्रलोक के इच्छुको को भी अर्थात दोनों पक्षो को हम (दुनिया में) जीवन सामग्री दिए जा रहें है, यह आपके रब का दान है, और आपके रब के दान को रोकने वाला कोई नही (20)

دنیا کے طلب گاروں کو بھی اور آخرت کے طلب گاروں کو بھی یعنی دونوں فریقوں کو ہم (دنیا میں) سامان زیست دیئے جارہے ہیں یہ آپ کے رب کا عطیہ ہے اور آپ کے رب کے عطیہ کو روکنے والا کوئی نہیں (۲۰)

देखो! हमने (इस दुनिया में किस प्रकार) कतिपय लोगों को कतिपय पर उच्चता दी है (कोई निर्धन है कोई धनी, किसी के पद कम है किसी के अधिक) परन्तु प्रलोक के पद सबसे बढ़कर और सबसे उच्चतर है (21)

دیکھو! ہم نے (اس دنیا میں کس طرح) بعض لوگوں کو بعض پر برتری دی ہے (کوئی غریب ہے کوئی امیر، کسی کے درجے کم ہیں کسی کے زیادہ لیکن) آخرت کے درجے سب سے بڑھ کر اور سب سے برتر ہیں (۲۱)

(सुनो!) और ईश्वर के साथ कोई और पूज्य न

(سنو!) اور اللہ کے ساتھ کوئی اور معبود نہ بناؤ کہ ملامت

बनाओ कि धिक्कारे हुए और असहाय होकर बैठे रह जाओगे (22)

(ऐ मुहम्मद स0! (ईश्वर) तुम्हारे द्वारा लोगों को आदेश देता है) और तुम्हारे रब ने लोगों को आदेश दिया कि उसके सिवा किसी की पूजा न करो और माता पिता के साथ भलाई करते रहो यदि उनमें से एक या दोनों तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उनको उफ तक न कहना और न उन्हें झिड़कना और उनसे बात सम्मान से करना (23) {13:31, 15:46}

زدہ اور بے بس ہو کر بیٹھے رہ جاؤ گے (۲۲)

(اے محمدؐ اللہ تمہارے ذریعہ لوگوں کو ارشاد فرماتا ہے) اور تمہارے رب نے لوگوں کو ارشاد فرمایا کہ اس کے سوا کسی کی عبادت نہ کرو اور ماں باپ کے ساتھ بھلائی کرتے رہو اگر ان میں سے ایک یا دونوں تمہارے سامنے بڑھاپے کو پہنچ جائیں تو ان کو اُف تک نہ کہنا اور نہ انہیں جھڑکنا اور ان سے بات ادب سے کرنا (۲۳) [۱۳:۳۱، ۱۵:۴۶]

और उनके आगे प्रेम और ममता के साथ नम्रता से सिर झुकाए रखना और उनके लिए सदैव दुआ किया करो कि ऐ रब! जिस प्रकार उन्होंने मुझे बचपन में पाला पोसा और बड़ा किया इसी प्रकार तू भी उन पर दया कर (24) {2:233, 46:15}

اور ان کے آگے محبت اور مہربانی کے ساتھ عاجزی سے سر جھکائے رکھنا اور ان کے لئے ہمیشہ دعا کیا کرو کہ اے رب! جس طرح انہوں نے مجھے بچپن میں پالا پوسا اور بڑا کیا اسی طرح تو بھی ان پر رحم کر (۲۴) [۲:۲۳۳، ۴۶:۱۵]

(माता पिता के साथ यह अच्छा बरताओ दिखावे के लिए न हो अपितु वास्तविक हो) सो जान लो जो कुछ तुम्हारे मनों में है (माता पिता के लिए अच्छा या बुरा) उससे तुम्हारा रब अच्छी प्रकार अवगत है यदि तुम नेक होंगे तो वह तौबा करने वालों को क्षमा कर देने वाला है (25)

(ماں باپ کے ساتھ یہ اچھا سلوک دکھاوے کے لئے نہ ہو بلکہ حقیقی ہو) سو جان لو جو کچھ تمہارے دلوں میں ہے (والدین کے لئے اچھا یا بُرا) اس سے تمہارا رب اچھی طرح واقف ہے اگر تم نیک ہو گے تو وہ توبہ کرنے والوں کو بخش دینے والا ہے (۲۵)

और नाते दारों और निर्धनों और यात्रीयों को उनका अधिकार दो और अपव्यय से माल न उड़ाओ (26) कि अपव्यय करने वाले तो शैतान के भाई हैं, और शैतान अपने रब (की निधियों का) कृतघ्न है (27) और यदि तुम अपने ईश्वर की दया का मार्ग देख रहे हो (अर्थात निर्धनता की स्थिति में सम्पन्नता की) और तुम उनकी सहायता न कर सको तो उन्हें नम्रता से समझा दो (28) और अपना हाथ न तो इतना सकेड़ लो कि गर्दन में बान्ध लो (और किसी को कुछ दो ही नहीं) और न बिलकुल ही फैला दो (कि सब कुछे दे डालो) दोनों स्थितियों का फल यह निकलेगा कि हर ओर से धिक्कार पड़े और विवश होकर रह जाओ (29)

اور رشتہ داروں اور محتاجوں اور مسافروں کو ان کا حق ادا کرو اور فضول خرچی سے مال نہ اڑاؤ (۲۶)

کہ فضول خرچ تو شیطان کے بھائی ہیں اور شیطان اپنے رب (کی نعمتوں کا) ناشکرا ہے (۲۷)

اور اگر تم اپنے رب کی مہربانی کی راہ دیکھ رہے ہو (یعنی تنگ دستی کی حالت میں فراخ دستی کی) اور تم ان کی مدد نہ کر سکو تو انہیں نرمی سے سمجھاؤ (۲۸)

اور اپنا ہاتھ نہ تو اتنا سکیڑ لو کہ گردن میں باندھ لو (اور کسی کو کچھ دو ہی نہیں) اور نہ بالکل ہی پھیلا دو (کہ سب کچھ دے ڈالو) دونوں صورتوں کا نتیجہ یہ نکلے گا کہ ہر طرف سے ملامت پڑے اور درماندہ ہو کر رہ جاؤ (۲۹)

निःसंदेह आपके रब ने (जीविका कमाने के नियम बना दिए हैं तो जो उन नियमों पर व्यवहार करता है) ईश्वर उसकी जीविका विस्तृत कर देता है, और जो उनके अनुसार व्यवहार नहीं करता उनकी जीविका तंग कर देता है (यह सब कुछ इन्सान के अपने व्यवहार से है) वह अपने बन्दों की सूचना रखने वाला और सब कुछ जानने वाला है (30) {30:37, 34:34-39}

بے شک آپ کے رب نے (روزی کمانے کے قانون بنا دئے ہیں تو جو ان قانون پر عمل کرتا ہے) اللہ اس کی روزی فراخ کر دیتا ہے اور جو ان کے مطابق عمل نہیں کرتا ان کی روزی تنگ کر دیتا ہے (یہ سب کچھ انسان کے اپنے عمل سے ہے) وہ اپنے بندوں کی خبر رکھنے والا اور سب کچھ جاننے والا ہے (۳۰) [۳۰:۳۷، ۳۴:۳۴-۳۹]

और (देखो) निर्धनता के भय से अपनी सन्तान को वध न करो (क्योंकि उनकी जीविका का भार हम पर है तुम पर नहीं) हम ही उन्हें भी जीविका देते हैं और तुम्हें भी, याद रखो सन्तान का वध करना कठोर पाप है (31) {6:151, 7:33}

اور (دیکھو) افلاس کے ڈر سے اپنی اولاد کو قتل نہ کرو (کیونکہ ان کی روزی کی ذمہ داری ہم پر ہے تم پر نہیں) ہم ہی انہیں بھی روزی دیتے ہیں اور تمہیں بھی۔ یاد رکھو اولاد کا قتل کرنا سخت گناہ ہے (۳۱) [۶:۱۵۱، ۷:۳۳]

और व्याभिचार के निकट भी न जाना वह निर्लज्जता और बहुत बुरा चलन है (32) {24:2}

اور زنا کے قریب بھی نہ جانا وہ بے حیائی اور بہت بُرا چلن ہے (۳۲) [۲۴:۲]

और जिस जीवधारी को वध करना ईश्वर ने अवैध किया है उसे वध न करना परन्तु उचित ढंग से (नियामानुसार न्यायलय में वधक को वध का दण्ड

اور جس جاندار کو قتل کرنا اللہ نے حرام کیا ہے اسے قتل نہ کرنا مگر جائز طریقہ سے (قانون کے مطابق عدالت میں

दिया जाएगा) और जो कोई अत्याचार से मारा जाए तो हमने उसके उत्तराधिकारी को हत्या दण्ड की मांग का अधिकार दिया है पस वह वध में अधिकता न करे (अर्थात वधक के अतिरिक्त परिवार के किसी व्यक्ति को वध न करे और न सताए) उस की सफलता इसी में है (कि वह बदला लेने में सीमा से आगे न बढ़े) बेशक उसकी सहायता की जाएगी (33) {5:32}

قاتل کو قتل کی سزا دی جائے گی) اور جو کوئی ظلم سے مارا جائے تو ہم نے اس کے وارث کو قصاص کے مطالبہ کا اختیار دیا ہے پس وہ قتل میں زیادتی نہ کرے (یعنی قاتل کے علاوہ خاندان کے کسی فرد کو قتل نہ کرے اور نہ ستائے) اس کی کامیابی اسی میں ہے (کہ وہ بدلہ لینے میں حد سے آگے نہ بڑھے) بے شک اس کی مدد کی جائے گی (۳۳) [۳۲:۵]

और अनाथ के धन के निकट भी न जाना (अर्थात उसके धन में से एक पैसा भी अपने ऊपर व्यय न करना) परन्तु हां ऐसे ढंग से जो उचित हो (अर्थात अनाथ की शिक्षा व प्रशिक्षण पर उचित ढंग से उस का धन व्यय किया जा सकता है) यहां तक कि वह व्यस्क हो जाए (उस समय उसकी धरोहर उसके हवाले कर दो) और वचन को पूरा करो यदि वचन करो, वचन के बारे में प्रश्न होगा (34) {16:91, 4:6से10, 66:2}

اور یتیم کے مال کے قریب بھی نہ جانا (یعنی اس کے مال میں سے ایک پیسہ بھی اپنے اوپر خرچ نہ کرنا) مگر ہاں ایسے طریقے سے جو بہتر ہو (یعنی یتیم کی تعلیم و تربیت پر بہتر طریقہ سے اس کا پیسہ خرچ کیا جا سکتا ہے) یہاں تک کہ وہ جوانی کو پہنچ جائے (اس وقت اس کی امانت اس کے حوالے کر دو) اور عہد کو پورا کرو اگر عہد کرو، عہد کے بارے میں سوال ہوگا (۳۴) [۱۶:۹۱، ۴:۶سے۱۰، ۶۶:۲]

जब कोई वस्तु नाप कर दो तो पैमाना पूरा भरा करो और जब तोल कर दो तो उचित और सीधा तुला से तोलो (अर्थात डन्डी न मारो) यह उत्तम बात है और परिणाम की दृष्टि से बहुत अच्छी है (35) {83:1से3}

جب کوئی چیز ناپ کر دو تو پیمانہ پورا بھرا کرو اور جب تول کر دو تو درست اور سیدھی ترازو سے تولو (یعنی ڈنڈی نہ مارو) یہ بہتر بات ہے اور انجام کے لحاظ سے بھی بہت اچھی ہے (۳۵)

(ऐ मानव!) और जिस बात का तुझे ज्ञान नही उस के पीछे न पड़, कि कान और आंख और हृदय उन सबसे अवश्य प्रश्न होगा (36)

(اے انسان!) اور جس بات کا تجھے علم نہیں اس کے پیچھے نہ پڑ کہ کان اور آنکھ اور دل ان سب سے ضرور باز پرس ہوگی (۳۶)

और (ऐ मानव सुन) पृथ्वी पर अकड़ कर न चल कि तू इतनी भी शक्ति नही रखता कि धरती को फाड़ डाले और लम्बा होकर पर्वतों की चोटी तक पहुंच जाए (37)

اور (اے انسان سن) زمین پر اکڑ کر مت چل کہ تو اتنی بھی طاقت نہیں رکھتا کہ زمین کو پھاڑ ڈالے اور لمبا ہو کر پہاڑوں کی چوٹی تک پہنچ جائے (۳۷)

इन सब कर्मों का बुरा पार्श्व तेरे रब के निकट अप्रिय है (38)

ان سب کاموں کا بُرا پہلو تیرے رب کے نزدیک ناپسندیدہ ہے (۳۸)

यह वह युक्ति की बाते है जो तेरे रब ने आप पर वही की है, (इन सबको मानवों को सुना दो उनसे कहो) और देखो ईश्वर के साथ कोई दूसरा पूज्य न बनाना अन्यथा तुम नर्क में डाल दिए जाओगे धिक्कारे और हर भलाई से वंचित होकर (39) {2:269}

یہ وہ حکمت کی باتیں ہیں جو تیرے رب نے آپ پر وحی کی ہیں (ان سب کو انسانوں کو بتا دو ان سے کہو) اور دیکھو اللہ کے ساتھ کوئی دوسرا معبود نہ بنانا ورنہ تم جہنم میں ڈال دیے جاؤ گے ملامت زدہ اور ہر بھلائی سے محروم ہو کر (۳۹) [۲:۲۶۹]

(अनेकेश्वर वादीयों!) क्या तुम्हारे स्वामी ने तुमको तो पुत्र दिए और स्वंय फरिशतो को पुत्रीयां बनाया? कुछ शंका नही कि तुम बड़ी अनिष्ट बात कहते हो (40)

(مشرکو!) کیا تمہارے پروردگار نے تم کو لڑکے دیے اور خود فرشتوں کو بیٹیاں بنایا؟ کچھ شک نہیں کہ تم بڑی نامعقول بات کہتے ہو (۴۰)

और हमने इस कुरआन में भांति भांति से (अपने आदेश) वर्णन किए हैं ताकि लोग (आसानी से) समझ सकें (और शिक्षा पकड़े) परन्तु उन पर इसका कोई प्रभाव नही पड़ा सिवाए इसके कि उनकी घृणा और अधिक बढ़ गई (41)

اور ہم نے اس قرآن میں طرح طرح سے (اپنے احکام) بیان کئے ہیں تاکہ لوگ (آسانی سے) سمجھ سکیں (اور نصیحت پکڑیں) لیکن ان پر اس کا کوئی اثر نہیں پڑا، سوائے اس کے ان کی نفرت اور زیادہ بڑھ گئی (۴۱)

कह दो यदि ईश्वर के साथ और बहुत से ईश्वर होते जैसा कि उनका कथन है तो अवश्य जगत स्वामी ईश्वर तक (युद्ध) का मार्ग निकाल लेते (और संसार युद्ध का क्षेत्र बन जाता) (42)

کہہ دو اگر اللہ کے ساتھ اور بہت سے معبود ہوتے جیسا کہ ان کا قول ہے تو ضرور مالک عرش اللہ تک (لڑائی) کی راہ نکال لیتے (اور دنیا لڑائی کا اکھاڑا بن جاتی) (۴۲)

इन सारी (व्यर्थ) बातों से जो वह लोग कह रहे है

ان ساری (فضول) باتوں سے جو وہ لوگ کہہ رہے ہیں

उससे उसका पद बहुत उच्च है (43)

اُس سے (اُس کا مرتبہ بہت بلند ہے) (۴۳)

सातों आकाशो और पृथ्वी और जो कोई उनमें है सब उसकी पवित्रता (आज्ञाकारी) करते है यहां कोई वस्तु ऐसी नहीं परन्तु उसकी प्रशन्सा के साथ पवित्रता (आज्ञाकारी) करती है, परन्तु तुम उनके इस कार्य पवित्रता व आज्ञाकारी को नही समझ सकते (परन्तु मनन से समझ लोगों) निःसंदेह वह सहन शील और बड़ा ही क्षमा करने वाला है (44)

ساتوں آسمانوں اور زمین اور جو کوئی اُن میں ہے سب اس کی تسبیح (فرمانبرداری) کرتے ہیں یہاں کوئی چیز ایسی نہیں مگر اس کی تعریف کے ساتھ تسبیح (فرمانبرداری) کرتی ہے لیکن تم ان کے اس عمل تسبیح وفرمانبرداری کو نہیں سمجھ سکتے (لیکن غور وفکر سے سمجھ لو گے) بے شک وہ بردبار اور بڑا ہی بخشنے والا ہے (۴۴)

(ऐ रसूल!) जब तुम (लोगों के सामने) कुरआन पढ़ते हो तो हमारा नियम आप में और उनमें जो परलोक पर विश्वास नही रखते एक मुर्खता का (अहंकारी) आवरण बाधक कर देता है (इसलिए कि वह लोग सुनने के बाद भी सुनना नही चाहते)(45)

(اے رسول!) جب تم (لوگوں کے سامنے) قرآن پڑھتے ہو تو ہمارا قانون آپ میں اور ان میں جو آخرت پر یقین نہیں رکھتے ایک بے عقلی کا نفسیاتی پردہ حائل کردیتا ہے (اس لئے کہ وہ لوگ سننے کے بعد بھی سننا نہیں چاہتے) (۴۵)

और हमारा नियम उनके हृदयों पर एक आवरण डाल देता है कि वह लोग (किसी प्रकार) समझना ही नही चाहते और उनके कानो में भार उत्पन्न कर देता है, और जब तुम कुरआन में अपने रब अकेले का वर्णन करते हो तो वह बिदक जाते हैं और पीठ फेर कर चल देते हैं (46)

اور ہمارا قانون ان کے دلوں پر ایک غلاف ڈال دیتا ہے کہ وہ لوگ (کسی طرح) سمجھنا ہی نہیں چاہتے اور ان کے کانوں میں ثقل پیدا کردیتا ہے اور جب تم قرآن میں اپنے رب اکیلے کا ذکر کرتے ہو تو وہ بدک جاتے ہیں اور پیٹھ پھیر کر چل دیتے ہیں (۴۶)

(ऐ रसूल!) जब वह लोग तुम्हारी ओर सुनने के लिए कान लगाते हैं तो वह जिस प्रकार (तुम्हारा कलाम) सुनते हैं उसे हम भलि भांति जानते हैं और जब वह अन्यायी (तुम्हारे विरुद्ध) आपस में गुप्त बातऐं करते हैं तो कहते हैं कि तुम जिस व्यक्ति का अनुकरण करते हो निःसंदेह उस पर जादू किया गया है (47)

(اے رسول!) جب وہ لوگ تمہاری طرف سننے کے لئے کان لگاتے ہیں تو وہ جس طرح (تمہارا کلام) سنتے ہیں اسے ہم خوب جانتے ہیں اور جب وہ ظالم (تمہارے خلاف) آپس میں سرگوشیاں کرتے ہیں تو کہتے ہیں کہ تم جس آدمی کی پیروی کرتے ہو یقیناً اس پر جادو کیا گیا ہے (۴۷)

विचार करो उन लोगों ने तुम्हारे संबन्ध में कैसी कैसी बाते बनाई हैं जिसके कारण वह पथ भ्रष्ट हो गए है, अब मार्ग नही पा सकते (48)

غور کرو ان لوگوں نے تمہاری نسبت کیسی کیسی باتیں بنائی ہیں جس کی وجہ سے وہ گمراہی میں پڑ گئے ہیں اب راستہ نہیں پا سکتے (۴۸)

नोट- इस आयत से ज्ञात हुआ कि मुहम्मद स0 को जादू से प्रभावित कहने वाला पथ भ्रष्ट है परन्तु आलिम कहते है कि हमारे नबी पर जादू करा दिया था और आप काफ़ी दिनों तक जादू के प्रभाव से रोगी रहे थे मौलाना मोदूदी मरहूम ने जादू के प्रभाव को विस्तार से लिखा है परन्तु कुरआन कहता है कि जो व्यक्ति ईश्वर के रसूल को जादू से प्रभावित कहे वह पथ भ्रष्ट है वह सत्य मार्ग पा ही नही सकता आयत (25:8-9) में भी यही कहा है कि मुहम्मद स0 को जादू से प्रभावित कहने वाला पथ भ्रष्ट है अब मुसलमान स्वंय निर्णय करें कि हम क्या है, इस का विवरण मेरी पुस्तक नामूस-ए-रसूल में अंकित है,

نوٹ:۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ محمدؐ کو جادوزدہ کہنے والا گمراہ ہے مگر علماء کہتے ہیں کہ ہمارے نبی پر جادو کرادیا تھا اور آپ کافی دنوں تک جادو کے اثر سے بیمار رہے تھے مولانا مودودی مرحوم نے جادو کے اثر کو تفصیل سے لکھا ہے لیکن قرآن کہتا ہے کہ جو شخص اللہ کے رسول کو جادوزدہ کہے وہ گمراہ ہے وہ راہ حق پا ہی نہیں سکتا۔آیت (۲۵:۸،۹) میں بھی یہی کہا گیا ہے کہ محمدؐ کو جادوزدہ کہنے والا گمراہ ہے اب مسلمان خود فیصلہ کریں کہ ہم کیا ہیں؟ اس کی تفصیل میری کتاب ناموس رسول میں درج ہے

और कहते हैं कि जब हम (मर कर जीर्ण) हड्डियां और चूर चूर हो जाऐंगे तो क्या पुनः उत्पन्न होकर उठेंगे? (49)

اور کہتے ہیں کہ جب ہم (مر کر بوسیدہ) ہڈیاں اور چور چور ہو جائیں گے تو کیا از سر نو پیدا ہو کر اٹھیں گے؟ (۴۹)

कहदो कि (चाहे तुम) पत्थर हो जाओ या लोहा (हर स्थिति में उठेगें) (50)

کہدو کہ (خواہ تم) پتھر ہو جاؤ یا لوہا (ہر حالت میں اٹھو گے) (۵۰)

या कोई और वस्तु हो जाओ जो तुम्हारे विचार में (पत्थर और लोहे से भी) अधिक कठोर हो (ईश्वर तुम्हे फिर जीवित करके रहेगा) यह सुन कर झट कहेंगे (अच्छा यह बताओ) हमे दोबारा कौन जीवित करेगा? कहदो कि वही जिसने पहेली बार तुमको उत्पन्न किया (इस उत्तर पर आश्चर्य से) लोग तुम्हारे आगे सिर हिलाएंगे और कहेंगे कि ऐसा कब

یا کوئی اور چیز ہو جاؤ جو تمہارے خیال میں (پتھر اور لوہے سے بھی) زیادہ سخت ہو (اللہ تمہیں پھر بھی زندہ کر کے رہے گا) یہ سن کر جھٹ کہیں گے (اچھا یہ بتاؤ) ہمیں دوبارہ کون زندہ کرے گا؟ کہدو کہ وہی جس نے پہلی مرتبہ تم کو پیدا کیا (اس جواب پر تعجب سے) لوگ تمہارے

होगा? कहदो आशा है कि शीघ्र ही होगा (51)

آگے سر ہلائیں گے اور کہیں گے کہ ایسا کب ہوگا؟ کہہ دو امید ہے جلد ہی ہوگا (۵۱)

वह वह दिन होगा जब वह तुम्हे पुकारेगा तो तुम उसकी प्रशन्सा करते हुए उसकी पुकार का उत्तर दोगे और विचार करोगे कि तुम (यमलोक में) बहुत ही कम समय रहे हो (52)

وہ وہ دن ہوگا جب وہ تمہیں پکارے گا تو تم اس کی تعریف کرتے ہوئے اس کی پکار کا جواب دو گے۔ اور خیال کرو گے کہ تم (عالم برزخ میں) بہت ہی کم مدت رہے ہو (۵۲)

(ऐ नबी स0!) मेरे आस्तिक बन्दों से कह दो कि (विरोधियों से बात करते हुए) अच्छी वार्तालाप करें (क्योंकि) शैतान (कठोर बात से) आपस में अशान्ति करा देता है इसमें शंका नही कि शैतान इन्सान का खुला शत्रु है (53) {15:49, 39:53, 36:60}

(اے نبیؐ!) میرے مومن بندوں سے کہہ دو کہ (مخالفوں سے بات کرتے ہوئے) اچھی گفتگو کریں (کیونکہ) شیطان (سخت بات سے) آپس میں فساد ڈال دیتا ہے۔ اس میں شک نہیں کہ شیطان انسان کا کھلا دشمن ہے (۵۳) [۱۵:۴۹، ۳۹:۵۳، ۳۶:۶۰]

तुम्हारा रब तुमको जानता है, यदि चाहे तो तुम पर दया करे या यदि चाहे तो तुम्हे दण्ड दे और ऐ नबी हमने आपको उन पर रक्षक बना कर नही भेजा (54)

تمہارا رب تم کو جانتا ہے اگر چاہے تو تم پر رحم کرے یا اگر چاہے تو تمہیں عذاب دے۔ اور اے نبی ہم نے تم کو ان پر داروغہ بنا کر نہیں بھیجا (۵۴)

जो लोग आकाशों और पृथ्वी में हैं तेरा रब उन सब से भली भांति अवगत है (सब की स्थिति एक सी नही है चुनांचे) हमने कतिपय ईशदूतों को (उन की क्षमता साहस के अनुसार) कतिपय पर सम्मान दिया है (परन्तु यह ईश्वर का प्रबन्ध है इन्सानों को यह अधिकार नही कि ईशदूतों में अन्तर करें) और हमने दाऊद को ज़बूर दी थी, (55) {2:252}

جو لوگ آسمانوں اور زمین میں ہیں تیرا رب ان سب سے اچھی طرح واقف ہے (سب کے حالات ایک سے نہیں ہیں چنانچہ) ہم نے بعض رسولوں کو (ان کی صلاحیت ہمت کے مطابق) بعض پر برتری بخشی ہے (مگر یہ اللہ کا انتظام) ہے انسانوں کو یہ حق نہیں کہ رسولوں میں فرق کرے) اور ہم نے داود کو زبور دی تھی (۵۵) [۲:۲۵۲]

कहो (कि अनेकेश्वर वादियों!) जिन लोगों के बारे में तुम्हें (ईश्वर होने का) गुमान है उनको पुकार देखो वह तुमसे कष्ट के दूर करने या उसके बदलने का कुछ भी अधिकार नही रखते (56)

کہو (کہ مشرکو!) جن لوگوں کی نسبت تمہیں (معبود ہونے کا) گمان ہے ان کو پکار دیکھو وہ تم سے تکلیف کے دور کرنے یا اس کو بدل دینے کا کچھ بھی اختیار نہیں رکھتے (۵۶)

वह लोग जिन अस्तित्वों को पुकारते हैं (और ईश्वर के समक्ष उन्हें निकटता का माध्यम समझते हैं) वह तो स्वंय इस प्रकार विवश है कि उनमें से ईश्वर के निकटवर्ती भक्त भी अपने रब की प्रसन्नता प्राप्त करने का लिए माध्यम खोजते रहते हैं (और वह माध्यम यह है कि) उसकी कृपा के हर समय आशावान रहते हैं (अपने शुभ कर्म करके) और उसके दण्ड से हर समय भय भीत रहते हैं (तो फिर वह संकट मोचन कैसे बन सकते हैं) और आपके रब का कष्ट वह वस्तु है जिससे डरने के अतिरिक्त कोई चारा नही (57) {5:35, 9:99} (और वसीला अच्छे कर्म ही हैं)

وہ لوگ جن ہستیوں کو پکارتے ہیں (اور اللہ کے حضور انہیں وسیلہ تقرب سمجھتے ہیں) وہ تو خود اس قدر محتاج ہیں کہ ان میں سے اللہ کے مقرب ترین بندے بھی اپنے رب کی رضا حاصل کرنے کے لئے ذریعہ ڈھونڈتے رہتے ہیں (اور وہ وسیلہ یہ ہے کہ) اس کی رحمت کے ہر دم امیدوار رہتے ہیں (اپنے نیک عمل کر کے) اور اس کی سزا سے ہر وقت خوف زدہ رہتے ہیں (تو پھر وہ مشکل کشا کیسے بن سکتے ہیں) اور تیرے رب کا عذاب وہ چیز ہے جس سے ڈرنے کے سوا کوئی چارہ نہیں (۵۷) [۵:۳۵، ۹:۹۹] (اور وسیلہ نیک عمل ہی ہیں)

और (संसार में अवज्ञाकारी जातियों की) कोई नगरी ऐसी नही है जिसे हम प्रलय के दिन से पहले वध न कर दें या उस पर कठोर दण्ड न करें यह आदेश (ईश्वर के नियम भाग्य की) पुस्तक में लिखा जा चुका है (नियम यही है) (58)

اور (دنیا میں نافرمان قوموں کی) کوئی بستی ایسی نہیں ہے جسے ہم قیامت کے دن سے پہلے ہلاک نہ کر دیں یا اس پر سخت عذاب نہ کریں۔ یہ حکم (قانون الٰہی تقدیر کی) کتاب میں لکھا جا چکا ہے (قانون یہی ہے) (۵۸)

(मुहम्मद स0 के काल में) किसी वस्तु ने हमें चिन्ह (अर्थात चमत्कार) भेजने से नही रोका परन्तु इस बात ने कि अगली जातियों ने (जिन के पास चिन्ह अर्थात चमत्कार भेजे गए थे) उनको झुठलाया (और उनसे उन्हें कोई लाभ नही पहुंचा) हमने जाति समूद को ऊंटनी दी एक खुला चिन्ह तो उन्होंने (शिक्षा प्राप्त करने के स्थान पर) उस पर अत्याचार किया (और उसे वध कर डाला) और हम चिन्ह केवल इसलिए प्रेषित करते हैं कि लोग पाप करने से डरें (59)

(دور محمدؐ میں) کسی چیز نے ہمیں نشانیاں (یعنی معجزے) بھیجنے سے نہیں روکا مگر اس بات نے کہ اگلی قوموں نے (جن کے پاس نشانیاں یعنی معجزے بھیجے گئے تھے) ان کو جھٹلایا (اور ان سے انہیں کوئی فائدہ نہیں پہنچا) ہم نے قوم ثمود کو اونٹنی دی ایک کھلی نشانی تو انہوں نے (عبرت حاصل کرنے کے بجائے) اس پر ظلم کیا (اور اسے ہلاک کر ڈالا) اور ہم نشانیاں صرف اس لئے بھیجتے ہیں کہ لوگ گناہ کرنے سے ڈریں (۵۹)

जब हमने आप से कहा कि आपका ईश्वर लोगों को घेरे हुए है और जो कुछ अभी हमने आप को दिखाया उसको लोगों के लिए परिक्षा किया है, और इसी प्रकार शजरा परिक्षा है जिस पर कुरआन में धिक्कार की गई है हम उन्हें डराते है परन्तु उन पर कोई प्रभाव नही पड़ता और उनकी अवज्ञा बढ़ती ही जाती है (60) {17:1, 53:18, 7:44, 4:65}

جب ہم نے تم سے کہا کہ آپ کا رب لوگوں کو احاطہ کے ہوئے ہے اور جو کچھ ابھی ہم نے تمہیں دکھایا اس کو لوگوں کے لئے آزمائش کیا ہے اور اسی طرح شجرہ آزمائش ہے جس پر قرآن میں لعنت کی گئی ہے ہم انہیں ڈراتے ہیں لیکن ان پر کوئی اثر نہیں پڑتا اور ان کی سرکشی بڑھتی ہی جاتی ہے (۶۰) [۱۷:۱، ۵۳:۱۸، ۷:۴۴، ۴:۶۵]

नोट- आयात में शब्द शजरा है, कि वह शजरा जिस पर कुरआन में धिक्कार की गई है, इस शब्द शजरा का अनुवाद हर एक ने वृक्ष किया है कि वह वृक्ष जिस पर कुरआन में धिक्कार की गई है, यदि यहां पर शजरा से तात्पर्य वृक्ष है तो वृक्ष ने ऐसी क्या अवज्ञा की या निर्लज्जता का काम किया जिस पर धिक्कार की गई हो, कुरआन में जिन कार्यों पर धिक्कार है वह तो स्पष्ट लिखे है, अर्थात हर वह काम जो ईश्वर की अवज्ञा में किया जाए और अवज्ञा या आज्ञाकारी तो वह करता है जिसको यह करने का अधिकार हो परन्तु वृक्ष के अन्दर ऐसा कोई अधिकार नही कि वह ईश्वर की अवज्ञा करें, और न ही किसी ने देखा होगा कि वृक्ष ने झूट बोला, चोरी की बलात कार किया इत्यादि, जब यह कर्म किए ही नही तो फिर धिक्कार कैसी?

نوٹ:۔ آیت میں لفظ شجرہ ہے کہ وہ شجرہ جس پر قرآن میں لعنت کی گئی ہے اس لفظ شجرہ کا ترجمہ ہر ایک نے درخت کیا ہے کہ وہ درخت جس پر قرآن میں لعنت کی گئی ہے اگر یہاں پر شجر سے مراد درخت ہے تو درخت نے ایسی کیا نافرمانی کی یا بے حیائی کا کام کیا جس پر لعنت کی گئی ہو قرآن میں جن کاموں پر لعنت ہے وہ تو صاف لکھے ہیں یعنی ہر وہ کام جو اللہ کی نافرمانی میں کیا جائے اور نافرمانی یا فرمانبرداری تو وہ کرتا ہے جس کو یہ کرنے کا اختیار ہو مگر درخت کے اندر ایسا کوئی اختیار نہیں کہ وہ اللہ کی نافرمانی کرے۔ اور نہ ہی کسی نے دیکھا ہوگا کہ درخت نے جھوٹ بولا، چوری کی، زنا کیا وغیرہ جب یہ کام کئے ہی نہیں تو پھر لعنت کیسی؟

अतः इस आयात में शब्द शजरा का अर्थ वृक्ष नही है शजरा का क्या अर्थ है देखा जाए सूरत निसा आयात 65

اس لئے اس آیت میں لفظ شجرہ کا مطلب درخت نہیں ہے شجرہ کا کیا مطلب ہے دیکھا جائے سورت نساء آیت ۶۵

ऐ मुहम्मद स0 आपका रब शाक्षी है कि वह कभी आस्तिक नही हो सकते जब तक कि अपने आपसी मत भेद (शजरा बेना हुम) में अपको न्याय करने वाला न मान ले और जो न्याय आप कर दे उसको सहर्ष स्वीकार न करें,

اے محمدؐ آپ کا رب شاہد ہے کہ وہ کبھی مومن نہیں ہو سکتے جب تک کہ اپنے باہمی اختلافات (شجرہ بینہم) میں تم کو فیصلہ کرنے والا نہ مان لیں۔ اور جو فیصلہ آپ کر دیں اس کو خوشی سے تسلیم نہ کرلیں۔

इस आयात (17:60) में भी शब्द शजरा का अर्थ विवाद द्वन्द इत्यादि है, और यह कार्य ईश्वर की अवज्ञा है, ईश्वर ने आदेश दिया है कि एकता से रहो यदि कोई विवाद करता है तो वह ईश्वर की अवज्ञा करता है, और अवज्ञा पर ही धिक्कार है अतः इस धारा में शजरा का अर्थ विवाद मत भेद इत्यादि है वृक्ष नही और स्थान पर इसका अर्थ वृक्ष हो सकता है, यहां नही,

اس آیت (۱۷:۶۰) میں بھی لفظ شجرہ کا مطلب اختلاف جھگڑا وغیرہ ہے اور یہ کام اللہ کی نافرمانی ہے اللہ نے حکم دیا ہے کہ اتحاد سے رہو اگر کوئی اختلاف کرتا ہے تو وہ اللہ کی نافرمانی کرتا ہے اور نافرمانی پر ہی لعنت ہے اس لئے اس آیت میں شجرہ کا مطلب تنازعہ وغیرہ ہے درخت نہیں۔ اور جگہ اس کا مطلب درخت ہوسکتا ہے یہاں نہیں۔

(वह समय याद करो जिस कारण से) जब हमने फरिश्तो को आदेश दिया कि आदम के आगे झुक जाओ (अर्थात उच्चतर स्वीकार कर लो बुद्धि मान) तो सब झुक गए आदर किया, परन्तु इब्लीस (नहीं झुका और उसने कहा) क्या मैं ऐसे इन्सान के आगे झुकूं जिसे तू ने मिट्टी से बनाया है (61)

(وہ وقت یاد کرو جس وجہ سے) جب ہم نے فرشتوں کو حکم دیا کہ آدم کے آگے جھک جاؤ (یعنی برتر تسلیم کرلو عقل مند) تو سب جھک گئے احترام کیا مگر ابلیس (نہیں جھکا اور اس نے کہا) کیا میں ایسے انسان کے آگے جھکوں جسے تو نے مٹی سے بنایا ہے (۶۱)

और उसने कहा देखिऐ तो सही क्या आपने उसी (हीन) इन्सान को मुझ पर श्रेष्ठा दी है? यदि तू मुझको प्रलय तक के लिए छूट दे तो मैं थोड़े से व्यक्तियों के अतिरिक्त उसकी पूरी सन्तान को जड़ से उखाड़ दूं (62)

اور اس نے کہا دیکھئے تو سہی کیا آپ نے اُسی (ذلیل) انسان کو مجھ پر فضیلت دی ہے؟ اگر تو مجھے قیامت تک کے لئے مہلت دے تو میں تھوڑے سے افراد کے علاوہ اس کی پوری نسل کو جڑ سے اکھاڑ دوں (۶۲)

ईश्वर ने कहा जा (तुझे ज्ञात होने चाहिए कि मेरे नियामानुसार तुझे प्रलय तक छूट है और यहां से भी निकल जा परन्तु याद रख) उनमें से जो भी तेरा अनुकरण करेगा तो उस के लिए और तेरे लिए नर्क की पूरी यातना है (63)

اللہ نے فرمایا جا (تجھے معلوم ہونا چاہیے کہ میرے قانون کے مطابق تجھے قیامت تک مہلت ہے اور یہاں سے بھی نکل جا لیکن یاد رکھ) اُن میں سے جو بھی تیری پیروی کرے گا تو اس کے لئے اور تیرے لئے جہنم کی پوری سزا ہے (۶۳)

उनमें से जिसको चाहे अपनी ध्वनी सुना कर बहकाने का प्रयत्न करना अपनी सैना के स्वारो और पैदलो से उन पर आक्रमण करना और उनके

اُن میں سے جس کو چاہے اپنی آواز سنا کر بہکانے کی کوشش کرنا اپنے لشکر کے سواروں اور پیادوں سے اُن پر

धन व सन्तान में साझी हो जाना और उनसे (भांति भांति के झूटे) वचन करके बहकाते रहना और शैतान जो वचन करता है सब धोका है (64)

حملہ کرنا اور انکے مال واولاد میں شریک ہو جانا اور اُن سے (طرح طرح کے جھوٹے) وعدے کر کے بہکاتے رہنا. اور شیطان جو وعدے کرتا ہے سب دھوکا ہے (۶۴)

जो मेरे विश्वास पात्र भक्त है उन पर तेरा कुछ बल नही और (ऐ शैतान!) मैं जो तेरा रब भी हूं तेरे छल से अपने विश्वास पात्र भक्तों को बचाने के लिए सहायक हूं (65)

جو میرے مخلص بندے ہیں ان پر تیرا کچھ زور نہیں اور (اے شیطان!) میں جو تیرا رب بھی ہوں تیرے فریب سے اپنے مخلص بندوں کو بچانے کے لئے مددگار ہوں (۶۵)

तुम्हारा रब (अर्थात मैं ईश्वर) तो वह है जो तुम्हारे लिए दरया में नाव चलाता है (नियामानुसार) ताकि तुम उसकी कृपा से जीविका खोजो निःसंदेह वह तुम पर कृपालु है (66)

تمہارا رب (یعنی میں اللہ) تو وہ ہے جو تمہارے لئے دریا میں کشتیاں چلاتا ہے (قانون کے مطابق) تا کہ تم اس کے فضل سے روزی تلاش کرو بے شک وہ تم پر مہربان ہے (۶۶)

और जब तुम समुन्द्र में होते हो और डूबने का भय उत्पन्न हो जाता है तो वह सब अस्तित्व जिन्हें तुम (शान्ति की स्थिति में सहायता के लिए पुकारा करते थे) तुमसे गुम हो जाते हैं (उस समय) केवल एक ईश्वर की याद शेष रहती है (और तुम उसी को पुकराते हो) परन्तु जब वह (डूबने के) भय से निकाल कर तुम्हें थल पर पहुंचा देता है तो तुम उससे मुख मोड़ लेते हो (जैसे उसे कभी पुकारा ही न था) सत्य यह है कि मानव है ही कृतघ्न (67)

اور جب تم سمندر میں ہوتے ہو اور ڈوبنے کا خطرہ پیدا ہو جاتا ہے تو وہ تمام ہستیاں جنہیں تم (امن کی حالت میں مدد کے لئے پکارا کرتے تھے) تم سے گم ہو جاتی ہیں (اس وقت) صرف ایک اللہ کی یاد باقی رہتی ہے (اور تم اسی کو پکارتے ہو) لیکن جب وہ (ڈوبنے کے) خطرے سے نکال کر تمہیں خشکی پر پہنچا دیتا ہے تو تم اس سے منہ موڑ لیتے ہو (جیسے اسے کبھی پکارا ہی نہ تھا) حقیقت یہ ہے کہ انسان ہے ہی ناشکرا (۶۷)

(यदि तुम समुन्द्र की आशंका से मुक्ति पा गए तो) क्या तुम्हें उससे शान्ति मिल गई कि वह तुम्हें थल में किसी एकान्त की ओर ले जाकर धरती में धंसा दे या तुम पर पत्थर बरसाने वाली आन्धी चला दे और उस समय तुम किसी को अपना सहायक न पाओ (68)

(اگر تم سمندر کے خطرات سے نجات پا گئے تو) کیا تمہیں اس سے امن مل گیا کہ وہ تمہیں خشکی کے کسی گوشے کی طرف (لے جا کر زمین میں) دھنسا دے یا تم پر پتھر برسانے والی آندھی چلا دے اور اس وقت تم کسی کو اپنا مددگار نہ پاؤ؟ (۶۸)

या तुम इस बात से बेखोफ हो गए हो कि ईश्वर तुमको फिर समुन्द्र की ओर ले जाए (अर्थात अपने काम से जाओ) और तुम पर एक प्रचण्ड तुफान भेज दे और तुम्हारी अवज्ञा के दण्ड में तुम्हें तल्लीन कर दे फिर तुम इस तल्लीन करने पर कोई ऐसा न पाओ कि (हम से बदले के लिए) हमारा पीछा करे (69)

یا تم اس بات سے بے خوف ہو گئے ہو کہ اللہ تم کو پھر سمندر کی طرف لے جائے (یعنی اپنے کام سے جاؤ) اور تم پر ایک سخت طوفان بھیج دے اور تمہاری نافرمانی کی سزا میں تمہیں غرق کر دے پھر تم اس غرق کرنے پر کوئی ایسا نہ پاؤ کہ (ہم سے بدلے کے لئے) ہمارا پیچھا کرے (۶۹)

यह सत्य है कि हमने बनी आदम को सम्मान दिय और थल और जल की सारी शक्तियों को उसके काम में लगा दिया बिना पारिश्रमिक के बैगारी और श्रेष्ट और पवित्र प्रसाद उसकी जीविका के लिए प्रस्तुत कर दिये और अपनी अधिकांश रचना पर उसको श्रेष्ठता दी (70)

یہ حقیقت ہے کہ ہم نے بنی آدم کو عزت دی اور خشکی اور تری کی ساری قوتوں کو اس کے کام میں لگا دیا بنا اجرت کے بیگاری اور عمدہ اور پاکیزہ نعمتیں اس کی روزی کے لئے مہیا کر دیں اور اپنی اکثر مخلوقات پر اس کو فضیلت دی (۷۰)

नोट- इससे यह सिद्ध हुआ कि संसार में ऐसी रचना भी है जो मानव से अधिक सम्मनित व उच्च है, अतः मानव अधिकांश रचनाओं से उच्च है सबसे नही मानव के लिए शब्द अशरफुल मखलुकात कहना अनुचित है,

نوٹ:۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ کائنات میں ایسی مخلوق بھی ہیں جو انسان سے زیادہ افضل وبرتر ہیں. لہٰذا انسان اکثر مخلوق سے برتر ہے سب سے نہیں. انسان کے لئے لفظ اشرف المخلوقات کہنا غلط ہے.

जिस दिन हम सम्पूर्ण समुदायों को नेताओ के साथ बुलाएंगे (और अपने सामने संग्रह करेंगे) तो जिनका कर्म पत्र उनके दाहिने हाथ में होगा वह उसको पढ़कर (प्रसन्न होंगे) और उन पर राई बराबर अन्याय न होगा (71)

جس دن ہم تمام قوموں کو ان کے پیشواؤں کے ساتھ بلائیں گے (اور اپنے سامنے جمع کریں گے) تو جن کا نامہ اعمال ان کے داہنے ہاتھ میں ہوگا وہ اس کو پڑھ کر (خوش ہوں گے) اور ان پر رائی برابر بھی ظلم نہ ہوگا (۷۱)

परन्तु जो व्यक्ति दुनिया में अन्धा रहा (अर्थात जिस ने सत्य की ओर से आंखे बन्द कर ली और ईश्वर के दिए हुए ज्ञान चेतना से काम नही लिया) वह प्रलोक में भी अन्धा ही रहेगा, और मुक्ति के मार्ग से दूर जा पड़ेगा (72)

لیکن جو شخص اس دنیا میں اندھا رہا (یعنی جس نے حقیقت کی طرف سے آنکھیں بند کر لیں اور اللہ کے دئے ہوئے ہوش وحواس سے کام نہیں لیا) وہ آخرت میں بھی اندھا ہی رہے گا اور نجات کے راستے سے دور جا پڑے گا (۷۲)

(ऐ रसूल!) उन लोगों ने इस बात में कोई कमी नही उठा रखी थी कि आपको छल देकर उस कार्य (के प्रचार) से जो हमने आप पर अवतरित किया है रोक रखे ताकि आप हमारे नाम पर झूठी बाते कहे और वह लोग (झूठी बाते सुनकर प्रसन्न हो जाएं और) आपको मित्र बना ले (72) {11:12}

(اے رسول!) اُن لوگوں نے اس بات میں کوئی کسر نہیں اٹھا رکھی تھی کہ آپ کو فریب دے کر اس کام (کی تبلیغ) سے جو ہم نے آپ پر نازل کیا ہے باز رکھیں تاکہ آپ ہمارے نام پر جھوٹی باتیں کہیں اور وہ لوگ (جھوٹی باتیں سن کر خوش ہو جائیں اور) آپ کو دوست بنالیں (۷۳) [۱۲:۱۱]

और यदि हमने (सत्य मार्ग में) आपको दृढ़ पग न रखा होता तो आप उनकी ओर किसी कदर झुक ही जाते (74) {68:8,9;10:15;41:26}

اور اگر ہم نے (راہِ حق میں) آپ کو ثابت قدم نہ رکھا ہوتا تو آپ ان کی طرف کسی قدر مائل ہو ہی جاتے (۷۴) [۶۸:۸،۹:۱۰:۱۵:۴۱:۲۶]

(यदि ऐसा हो जाता तो) इस स्थिति में हम आपको जीवन का भी दोहरा दण्ड देते और मृत्यू पर भी दूना स्वाद चखाते फिर आप हमारे सामने किसी को अपना सहायक न पाते (75)

(اگر ایسا ہو جاتا تو) اس صورت میں ہم آپ کو زندگی کا بھی دہرا عذاب چکھاتے اور مرنے پر بھی دونا مزہ چکھاتے پھر آپ ہمارے مقابلہ میں کسی کو اپنا مددگار نہ پاتے (۷۵)

और निकट था कि वह आपको धरती (मक्काह) से फुसला दें ताकि आपको वहां से निर्वासित कर दें और उस समय आपके बाद वह भी वहां चैन से न रह पाऐंगे परन्तु कम समय (76)

اور قریب تھا کہ وہ لوگ آپ کو زمین (مکہ) سے پھسلا دیں تاکہ آپ کو وہاں سے جلاوطن کر دیں اور اس وقت آپ کے بعد وہ بھی وہاں اطمینان سے نہ رہ پائیں گے مگر کم وقت (۷۶)

हम आपसे पहले जितने रसूल भेज चुके है उनके विषय में भी हमारी यही प्रथा रही है (अर्थात जब उनकी जाति ने उन्हे अपने देश से निकाला तो वह भी वहां न रह सके, और ईश्वर की यातना ने उन्हे नष्ट कर दिया) और आप हमारी प्रथा में परिवर्तन न पाओगे (जो अगले रसूलों के शत्रुओं के साथ हुआ है वही उनके साथ होगा) (77)

ہم آپ سے پہلے جتنے رسول بھیج چکے ہیں ان کے معاملے میں بھی ہمارا یہی دستور رہا ہے (یعنی جب ان کی قوم نے انہیں اپنی سرزمین سے نکالا تو وہ بھی وہاں نہ رہ سکے، اور عذابِ الٰہی نے انہیں برباد کر دیا) اور آپ ہمارے دستور میں تبدیلی نہ پاؤ گے (جو اگلے رسولوں کے دشمنوں کے ساتھ ہوا ہے وہی ان کے ساتھ ہوگا) (۷۷)

नमाज़ स्थापित करो सूर्य की अवनती से लेकर रात्री के आरम्भिक अन्धाकार तक और पढ़ फजर क्योंकि नमाज़ फजर अपस्थिति का समय है अर्थात जमात में उपस्थित होना. (78) {17:106}

<u>نماز قائم کرو زوالِ آفتاب سے لے کر رات کے ابتدائی اندھیرے تک اور پڑھ فجر۔ کیوں کہ نماز فجر حاضری کا وقت ہے یعنی جماعت میں حاضر ہونا (۷۸) [۱۷:۱۰۶]</u>

और रात्री को तहज्जुद पढ़ो यह आपके लिए अधिक्ता (मजीद नाफ्ला) है और आशा रखो कि आपका ईश्वर आपको प्रशंसित उठाएगा (अर्थात एक विशाल समुदाय के मुख पर आपका स्तुति गान होगा, और ईश्वरके समीप भी आपकी चेष्टा प्रशंसित व कृतज्ञ होगी) (98) {21:72}

اور رات کو تہجد پڑھو یہ آپ کے لئے اضافہ (مزید نافلہ) ہے اور امید رکھو کہ آپ کو آپ کا رب محمود اٹھائے گا (یعنی ایک عظیم امت کی زبان پر آپ کا ترانہ حمد ہوگا اور اللہ کے نزدیک بھی آپ کی مساعی محمود و مشکور ہوگی (۷۹) [۲۱:۷۲]

(17:78) में नमाज के समय का उल्लेख है दुलूकिश्शमस दुलूक का अर्थ अवनति का है सूर्य की अवनति की तीन श्रेणी है एक वह जब वह सिमते रास अर्थात सिर से ढलता है, दूसरा जब वह मराउल ऐन अर्थात तीसरा पहर से नीचे की ओर चमकता है, तीसरा वह जब क्षितिज से लुप्त होता है यह तीनो समय जोहर अस्त के पहले अर्थात असर व अस्त के बाद अर्थात मगरिब के है रात्री का अन्धाकार इशा और कुरआनल फजर का अर्थ है और फजर की नमाज भी पढ़िए इस आयत में नमाज के पांच समय आ गए वैसे नमाज के समय के लिए और कई आयते है जिनमें स्पष्ट है कि नमाज के पांच समय है तीन नही जो तीन मानता है वह पथ भ्रष्ट है नमाज के समय के बारे में आयते लिखी जा रही है.

نوٹ:۔ (۱۷:۷۸) میں نماز کے اوقات کا ذکر ہے [دلوک الشمس) دلوک کا مطلب زوال کا ہے سورج کے زوال کے تین درجے ہیں ایک وہ جب وہ سمت راس سے ڈھلتا ہے دوسرا جب وہ مرئ العین سے نیچے کی طرف چمکتا ہے تیسرا وہ جب افق سے غائب ہوتا ہے۔ یہ تینوں اوقات ظہر قبل الغروب یعنی عصر و بعد الغروب یعنی مغرب کے ہیں رات کا اندھیرا عشاء اور قرآن الفجر کا مطلب ہے اور فجر کی نماز بھی پڑھئے۔ اس آیت میں نماز کے پانچ اوقات آگئے۔ ویسے نماز کے وقتوں کے لئے اور بھی کئی آیتیں ہیں جن میں صاف ہے کہ نماز کے پانچ وقت ہیں تین نہیں۔ جو تین مانتا ہے وہ گمراہ ہے نماز کے اوقات کے بارے میں آیتیں لکھی جارہی ہیں۔

(11:114) नमाज स्थापित कर दिनके दोनों किनारों पर और कुछ रात व्यतीत होने पर फजर सूर्य अस्त से पहले अर्थात असर और इशा.

(۱۱:۱۱۴) نماز قائم کر دن کے دونوں کناروں پر اور کچھ رات گزرنے پر۔ فجر قبل الغروب یعنی عصر اور عشاء۔

(20:130) उसकी पवित्रता करो सूर्य निकलने से पहले और अस्त होने

(۲۰:۱۳۰) اس کی تسبیح کرو سورج نکلنے سے پہلے اور غروب ہونے سے پہلے اور

से पहले और रात के समय में और दिन के किनारों पर फजर असर मगरिब और ईशा.

(30:17-18) पस पवित्रता का वर्णन करो ईश्वर की जबकि तुम शाम करते हो और जब प्रातः करते हो आकाशों और पृथ्वी में उसी के लिए प्रशंसा है और तीसरे पहर और जब कि तुम पर जोहर का समय होता आता है फजर मगरिब असर जोहर और फजर (24:58) ऐ लोगों! जो विश्वास लाए हो अनिवार्य है कि तुम्हारे कर्म चारी और तुम्हारे वह बच्चे जो अभी बुद्धि की सीमा तक नही पहुंचे है तीन समय में आज्ञा लेकर तुम्हारे पास आया करें प्रातः की नमाज से पहले और दो पहर को जब तुम कपड़े उतार कर रख देते हो और इशा की नमाज के बाद यह तीन समय तुम्हारे लिए आवरण के समय है, फजर और इशा के समय.

(40:55) पस ऐ नबी धैर्य करो ईश्वर का वचन सत्य है अपने प्रति दिन के कार्यों में भूल से होने वाली कमियों पर ईश्वर से क्षमा मांगो और प्रातः और सांय अपने ईश्वर की प्रशंसा के साथ पवित्रता वर्णन करते रहो, नमाज फजर और अस्त से पूर्व अर्थात असर और प्रातः और सांय का जाप भी उद्देश्य है.

(50:39-40) पस ऐ नबी जो बाते वह लोग बनाते है उन पर धैर्य करो, और अपने ईश्वर की प्रशंसा के साथ उस की पवित्रता का वर्णन करते रहो सूर्य उदेय और अस्त से पहले और रात्री के समय फिर उसकी पवित्रता का वर्णन करो नमाज के बाद भी फजर इशा और असर की नमाज आ गई.

उपरोक्त आयात में बड़ी स्पष्टता के साथ नमाज के समय की संख्या आ गई जो पांच है और (17:79) में एक नमाज तहज्जुद का आदेश है जो बहुत ही महत्व पूर्ण है इस नमाज से ही व्यक्ति की सहन शीलता और मान बढ़ता है, क्योंकि पांच नमाज तोहर स्थिति में ईश्वर के आदेशानुसार पूरा करना है यह व्यक्ति के कर्तव्य में शामिल है अधिक लेने के लिए तहज्जुद है इस पर व्यवहार करना बहुत श्रेष्ठ है.

इन आयात को पढ़ने के बाद भी यह कहा जाना कि कुरआन में नमाज के समय नही यातीन है अनुचित है उचित यह है कि नमाज के समय पांच है और अधिक तहज्जुद

और प्रार्थना किया करें (रसूल भी और सामान्य आदमी भी) कि ऐ मेरे स्वामी मुझे जहां ले जा अच्छी प्रकार ले जा और जहां से निकाल अच्छी प्रकार निकाल और मेरे लिए अपने पास से अधिकार और सहायता दे (ताकि मैं शत्रुओं का सामना कर सकूं और वह प्रभुत्व मेरा सहायक हो) (80)

और आप (लोगों के सामने) घोषणा करो कि सत्य आ गया और मिथ्या नष्ट हो (81)

और हम कुरआन में ऐसे (नियम) अवतरित करते है जो विश्वास वालों (की आत्मा के रोगों) के लिए आरोग्य और दया है और अत्यचारियों के लिए हानि के सिवा और किसी वस्तु में अधिकता नहीं होती (82)

और जब हम मानव पर उपकार करते है तो वह हमसे मुख फैर लेता है और विमुख होता है और जब उसे दुख पहुंचाता है तो निराश होकर रह जाता है (83)

कह दो हर मानव अपनी विधि के अनुसार कर्म करता है, पस (आपके रब का विधान ही जानता है) अपका रब ही जानता है कि कौन सीधे मार्ग पर है (और उसका विधान कुरआन है हर व्यक्ति देख ले

رات کے اوقات میں اور دن کے کناروں پر فجر عصر مغرب اور عشاء۔

(۳۰: ۱۷، ۱۸) پس تسبیح کرو اللہ کی جب کہ تم شام کرتے ہو اور جب صبح کرتے ہو آسمانوں اور زمین میں اسی کے لئے حمد ہے اور تیسرے پہر اور جب کہ تم پر ظہر کا وقت آتا ہے۔ فجر مغرب عصر ظہر اور فجر۔

(۲۴: ۵۸) اے لوگو! جو ایمان لائے ہو لازم ہے کہ تمہارے ملازم اور تمہارے وہ بچے جو ابھی عقل کی حد تک نہیں پہنچے ہیں تین اوقات میں اجازت لے کر تمہارے پاس آیا کریں۔ صبح کی نماز سے پہلے اور دوپہر کو جب کہ تم کپڑے اتار کر رکھ دیتے ہو اور عشاء کی نماز کے بعد یہ تین وقت تمہارے لئے پردے کے وقت ہیں فجر اور عشاء کے وقت۔

(۴۰: ۵۵) پس اے نبی صبر کرو اللہ کا وعدہ حق ہے اپنے روزمرہ کے کاموں میں بھول سے ہونے والی کمیوں پر اللہ سے معافی چاہو اور صبح و شام اپنے رب کی حمد کے ساتھ تسبیح کرتے رہو نماز فجر اور قبل الغروب یعنی عصر اور صبح و شام کا ذکر بھی مراد ہے۔

(۵۰: ۳۹، ۴۰) پس اے نبی جو باتیں وہ لوگ بناتے ہیں ان پر صبر کرو اور اپنے رب کی حمد کے ساتھ اس کی تسبیح کرتے رہو طلوع آفتاب اور غروب آفتاب سے پہلے اور رات کے وقت پھر اس کی تسبیح کرو نماز کے بعد بھی فجر عشاء اور عصر کی نماز آ گئیں۔

بالا آیات میں بڑی وضاحت کے ساتھ نماز کے وقتوں کی تعداد آ گئی جو پانچ ہیں اور ۱۷: ۷۹ میں ایک نماز تہجد کا حکم ہے جو بہت ہی اہم ہے اس نماز سے ہی آدمی کی بردباری اور درجہ بڑھتا ہے کیونکہ پانچ نماز تو ہر حال میں اللہ کے حکم کے مطابق پورا کرنا ہے یہ آدمی کے فرائض میں شامل ہے مزید لینے کے لئے تہجد ہی ہے اس پر عمل کرنا بہت افضل ہے۔

ان آیات کو پڑھنے کے بعد بھی یہ کہا جانا کہ قرآن میں نماز کے اوقات نہیں یا تین ہیں غلط ہے درست یہ ہے کہ نماز کے وقت پانچ ہیں اور مزید تہجد۔

اور دعا کیا کریں (رسول بھی اور عام آدمی بھی) کہ اے میرے پروردگار مجھے جہاں لے جا اچھی طرح لے جا اور جہاں سے نکال اچھی طرح سے نکال اور میرے لئے اپنے پاس سے غلبہ اور امداد مقرر فرما دے (تا کہ میں دشمنوں کا مقابلہ کر سکوں اور وہ غلبہ میرا مددگار رہو (۸۰)

اور آپ (لوگوں کے سامنے) اعلان کرو کہ حق آ گیا اور باطل نابود ہو گیا اور باطل اسی لئے ہے کہ تباہ و برباد ہو (۸۱)

اور ہم قرآن میں ایسے (احکام) نازل کرتے ہیں جو ایمان والوں (کی روح کی بیماریوں) کے لئے شفا اور رحمت ہیں اور ظالموں کے لئے خسارے کے سوا اور کسی چیز میں زیادتی نہیں ہوتی (۸۲)

اور جب ہم انسان پر احسان کرتے ہیں تو وہ منہ پھیر لیتا ہے اور پہلو تہی کرتا ہے اور جب اسے دکھ پہنچتا ہے تو مایوس ہو کر رہ جاتا ہے (۸۳)

کہہ دو ہر انسان اپنے طریقے کے مطابق عمل کرتا ہے پس (آپ کے رب کا قانون ہی جانتا ہے) آپ کا رب ہی

جانتا ہے کہ کون سیدھے راستے پر ہے (اوراس کا قانون قرآن ہے ہرآدمی دیکھ لے کون قرآن کے مطابق عمل کر رہا ہے پس وہی سیدھے راستے پر ہے یہ ایک بڑی کسوٹی ہے اس کی پرکھ غلط نہیں ہو سکتی) (۸۴)

कौन कुरआन के अनुसार कर्म कर रहा है) आप का रब ही जानता है कि कौन सीधे मार्ग पर है (और उसका विधान कुरआन है हर व्यक्ति देख ले कौन कुरआन के अनुसार कर्म कर रहा है बस वही सीधे मार्ग पर है यह एक बड़ी कसौटी है इसकी परख मिथ्या नहीं हो सकती) (84)

(اے رسول!) وہ لوگ آپ سے سوال کریں گے کہ روح (وحی) کیا ہے؟ تو آپ جواب دینا یہ میرے رب کے حکم قانون سے ہے (یہ نہیں بتایا جا سکتا کہ یہ خود کیا ہے) تم کو بہت کم علم دیا گیا ہے (۸۵)

(ऐ रसूल!) वह लोग आपसे प्रश्न करेंगे कि रूह "वही" क्या है? तो आप उत्तर देना यह मेरे ईश्वर के आदेश नियम में से है (यह नहीं बताया जा सकता कि यह स्वंय क्या है) तुमको बहुत कम ज्ञान दिया गया है(85)

[جو روح کو اور کائنات کے اربوں اسرار و رموز کو سمجھنے کے لئے ناکافی ہے انسان جس کو سمجھ ہی نہیں سکتا اس کے سمجھنے کی کوشش کیوں کرے؟ اندھا روشنی اور تاریکی کی کیفیت کو نہیں جان سکتا سرخ وسفید اور ہرے پیلے میں فرق نہیں کرسکتا]

[۱۲:۸۷، ۱۳:۴۰، ۱۵:۲۹، ۱۶:۲]

(जो रूह को और संसार के अरबो रहस्यों व संकेतों को समझने के लिए अपर्याप्त है मानव जिसको जान ही नही सकता उसके समझने का प्रयत्न क्यों करे? अन्धा प्रकाश और अन्धकार की अवस्था नही जान सकता लाल व सफेद और हरे पिले में अन्तर नही कर सकता)

{12:87, 13:40, 15:29, 16:2}

اور اگر ہم چاہیں تو جو (کتاب) ہم تمہاری طرف وحی سے بھیجتے ہیں اسے (دلوں سے) نکال دیں یعنی واپس لے لیں پھر تم اس کے (روکنے کے لئے) ہمارے مقابلہ میں کسی کو مددگار نہ پاؤ (۸۶)

और यदि हम चाहे तो जो (पुस्तक) हम तुम्हारी ओर वही से भेजते है उसे (मनो से) निकाल दें अर्थात वापस ले ले फिर तुम उसके (रोकने के लिए) हमारे सम्मुख किसी को सहायक न पाओ (86)

مگر یہ آپ کے رب کی رحمت ہے (کہ وہ ایسا نہ کرے گا اس لئے کہ) آپ پر اس کا بڑا فضل ہے (کہ اس نے آپ کو رسول بنایا اور قرآن جیسی بابرکت کتاب نازل کی) (۸۷)

परन्तु यह आपके ईश्वर की दया है (कि वह ऐसा न करेगा इस लिए कि) आप पर उस की बड़ी दया है (कि उसने आपको रसूल बनाया और कुरआन जैसी सम्पन्नता वाली पुस्तक अवतरित की) (87)

کہہ دو کہ اگر تمام انسان اور جن اکٹھے ہو کر پوری کوشش کریں کہ اس قرآن جیسا بنا لائیں تو کبھی ایسا نہ کرسکیں اگرچہ وہ ایک دوسرے کے مددگار ہوں (۸۸)

نوٹ:۔اس آیت ۸۸ پر بحث تفصیل سے سورہ بقرہ آیت ۲۳ پر درج ہے [۲:۲۳، ۶:۹۴]

कह दो कि यदि सम्पूर्ण मानव और जिन्न ऐकत्र हो कर पूरा प्रयत्न करें कि इस कुरआन जैसा बना लाएं तो कभी ऐसा न कर सकें यद्यपि वह एक दूसरे के सहायक हो (88)

नोट- इस आयत 88 पर विवेचना विस्तार से सूरत बकरा आयत 23 पर अंकित है (2:23, 6:94)

اور یہ حقیقت ہے کہ ہم نے اس قرآن میں (لوگوں کو سمجھانے کے لئے) طرح طرح کی مثالیں بار بار بیان کی ہیں لیکن زیادہ تر لوگوں نے کفران نعمت کر کے قبول کرنے سے انکار کر دیا (۸۹)

और यह वास्तिविक्ता है कि हमने इस कुरआन में (लोगों को समझाने के लिए) भांति भांति की उपमाएं बार बार वर्णन की है परन्तु अधिकांश लोगों ने कृतघ्नता करके स्वीकार करने से इनकार कर दिया (89)

اور کہنے لگے ہم تجھ پر اس وقت تک ایمان نہ لائیں گے جب تک (تم اپنی رسالت کے ثبوت میں) ہمیں عجیب و غریب باتیں نہ دکھا دو (مثلاً ایسا ہو کہ) تم ہمارے لئے زمین سے چشمہ جاری کر دو (۹۰)

और कहने लगे हम तुझ पर उस समय तक विश्वास नही लाएंगे जब तक (तुम अपने ईशदौत्य के प्रमाण में हमें आश्चर्य पूर्ण बाते न दिखा दो (उदाहरणतः ऐसा हो कि) तुम हमारे लिए पृथ्वी से स्रोत जारी कर दो (90)

یا آپ کا کھجوروں اور انگوروں کا کوئی باغ ہو اور اس کے بیچ میں نہریں بہا نکالو (۹۱)

یا جیسا آپ کہا کرتے ہو ہم پر آسمان کے ٹکڑے لا گراؤ یا اللہ اور فرشتوں کو ہمارے سامنے لے آؤ (۹۲)

یا آپ کا سونے کا گھر ہو یا آپ آسمان پر چڑھ جاؤ اور ہم آپ کے چڑھنے کو بھی نہیں مانیں گے جب تک کہ کوئی کتاب نہ لاؤ جسے ہم پڑھ بھی لیں کہہ دو میرا رب پاک ہے میں تو صرف ایک انسان ہوں جو رسول بنایا گیا ہوں (۹۳)

(انسان کا عجب عالم ہے) کہ جب کبھی اللہ کی ہدایت (دنیا میں) آئی تو صرف اس بات نے لوگوں کو ایمان لانے

या आपका खजूरो और अंगूरो का कोई उपवन हो और उसके बीच में नहरें बहा निकालो (91)

या जैसा आप कहा करते हो हम पर आकाश के टुकड़े ला गिराओ या ईश्वर और फरिश्तों को हमारे सामने ले आओ (92)

या आप का सोने का घर हो या आकाश पर चढ़ जाओ और हम आप के चढ़ने को भी नही मानेंगे जब तक कि कोई पुस्तक न लाओ जिसे हम पढ़ले कह दो मेरा रब पवित्र है मैं तो केवल एक इन्सान हूं जो रसूल बनाया गया हूं (93)

(इन्सान की विचित्र दशा है) जब कभी ईश्वर की शिक्षा (दुनिया में) आई तो केवल इस बात ने लोगों को विश्वास लाने से रोक दिया कि (चकित होकर)

बोले क्या ईश्वर ने (हमारी ही भाँति का) एक व्यक्ति रसूल बनाकर (हमारे पास) भेजा है (94)

سے روک دیا کہ (حیرت زدہ ہوکر) بولے کیا اللہ نے (ہماری ہی طرح کا) ایک انسان رسول بنا کر (ہمارے پاس) بھیجا ہے (۹۴)

कह दो यदि पृथ्वी पर (इन्सानों के स्थान पर) फरिश्ते बसे होते और चैन से (मानव की भाँति इधर उधर) चलते फिरते तो हम निःसंदेह आकाश से एक फरिश्ता रसूल बनाकर उतार देते (95) {2:102}

کہدو اگر زمین پر (انسان کے بجائے) فرشتے بسے ہوتے اور اطمینان سے (انسانوں کی طرح ادھر اُدھر) چلتے پھرتے تو ہم یقیناً آسمان سے ایک فرشتہ رسول بنا کر اتار دیتے (۹۵) [۱۰۲:۲]

(यदि वह लोग अब भी नही मानते तो) कह दो मेरे और तुम्हारे मध्य ईश्वर ही शाक्षी काफी है, वह अपने बन्दों की दशा से अवगत है, और सब कुछ देख रहा है (96)

(اگر وہ لوگ اب بھی نہیں مانتے تو) کہدو میرے اور تمہارے درمیان اللہ ہی گواہ کافی ہے وہ اپنے بندوں کے حال سے واقف ہے اور سب کچھ دیکھ رہا ہے (۹۶)

और जिस व्यक्ति को ईश्वर का नियम पथ प्रदर्शन दे वही पथ प्रदर्शन पाने वाला है और जिसको ईश्वर का नियम भ्रष्ट करे तो तुम ईश्वर के सिवा उनके मित्र नही पावगे और हम उनको प्रलय के दिन ओंधे मुख अन्धे गुंगे और बहरे (बना कर) उठाएंगे और उनका ठिकाना नर्क है जब (उसकी आग) बुझने को होगी तो हम उनको (कष्ट देने के लिए) और भड़का देंगे (97)

اور جس شخص کو اللہ کا قانون ہدایت دے وہی ہدایت یاب ہے اور جس کو اللہ کا قانون گمراہ کرے تو تم اللہ کے سوا ان کے رفیق نہیں پاؤ گے اور ہم ان کو قیامت کے دن اوندھے منہ اندھے گونگے اور بہرے (بنا کر) اٹھائیں گے اور ان کا ٹھکانا دوزخ ہے جب (اس کی آگ) بجھنے کو ہوگی تو ہم ان کو (عذاب دینے کے لئے) اور بھڑکا دیں گے (۹۷)

(पथ प्रदर्शन और पथ भ्रष्टता व्यक्ति के अपने कर्म पर है व्यक्ति अच्छे कर्म करता है उसको पथ प्रदर्शन मिलता है और बुरे कर्म करता है वह पथ भ्रष्ट होता है)

(ہدایت اور گمراہی انسان کے اپنے عمل پر ہے انسان اچھے عمل کرتا ہے اس کو ہدایت ملتی ہے اور بُرے عمل کرتا ہے وہ گمراہ ہوتا ہے)

यह है उनका दण्ड इस लिए कि वह हमारी आयतों से इनकार करते थे, भला जब हम (मरने के बाद गल सड़कर) जीर्ण हड्डियां और कण कण हो जाएंगे तो क्या यह सम्भव है कि हम पुनः उत्पन्न करके उठाएंगे जाएंगे? (98)

یہ ہے ان کی سزا اس لئے کہ وہ ہماری آیتوں سے انکار کرتے تھے اور کہتے تھے بھلا جب ہم (مرنے کے بعد گل سڑ کر) بوسیدہ ہڈیاں اور ریزہ ریزہ ہو جائیں گے تو کیا یہ ممکن ہے کہ ہم از سر نو پیدا کر کے اٹھائیں جائیں گے؟ (۹۸)

क्या उनको यह न सूझा कि जिस ईश्वर ने पृथ्वी और आकाशों को उत्पन्न किया है वह उन जैसे को उत्पन्न करने की अवश्य शक्ति रखता है, उसने उनके संग्रह के लिए एक समय निश्चित कर रखा है जिसका आना निश्चित है, परन्तु अत्याचारियों को हठ है कि वह उसका इनकार ही करेंगे. (99)

کیا ان کو یہ نہ سوجھا کہ جس اللہ نے زمین اور آسمانوں کو پیدا کیا ہے وہ ان جیسوں کو پیدا کرنے کی قدرت رکھتا ہے اس نے ان کے حشر کے لئے ایک وقت مقرر کر رکھا ہے جس کا آنا یقینی ہے، مگر ظالموں کو اصرار ہے کہ وہ اس کا انکار ہی کریں گے (۹۹)

ऐ नबी स0, उनसे कहो यदि कहीं मेरे रब की दया के कोष तुम्हारे अधिकार में होते तो तुम अवश्य व्यय होने की शंका से उनको रोक रखते (परन्तु ईश्वर के कोष व्यय करने से समाप्त होने वाले नही वह व्यय कर रहा है) और मानव हृदय का बड़ा तंग है (उसे ईश्वर की अनुकम्पा की विशालता का अनुमान ही नही) (100)

اے نبیؐ ان سے کہو اگر کہیں میرے رب کی رحمت کے خزانے تمہارے قبضے میں ہوتے تو تم ضرور خرچ ہونے کے اندیشے سے ان کو روک رکھتے (مگر اللہ کے خزانے خرچ کرنے سے ختم ہونے والے نہیں وہ خرچ کر رہا ہے) اور انسان دل کا بڑا تنگ ہے (اسے رحمت الٰہی کی وسعت کا اندازہ ہی نہیں) (۱۰۰)

और यह सत्य है कि हमने मूसा अ0 को नो स्पष्ट चिन्ह (चमत्कार) दिए तो बनी इस्राईल से ज्ञात कर लो, जब वह उनके पास आया तो फिरऔन ने उस से कहा ऐ मूसा! मैं विचार करता हूं कि अवश्य किसी ने तुझ पर जादू कर दिया है (101) {7:123, 2:60, 20:18-22,26:63,27:10-11-12}

اور یہ حقیقت ہے کہ ہم نے موسیٰ کو نو کھلی نشانیاں (معجزے) دیئے تو بنی اسرائیل سے دریافت کر لو جب وہ ان کے پاس آیا تو فرعون نے اس سے کہا اے موسیٰ! میں خیال کرتا ہوں کہ ضرور کسی نے تجھ پر جادو کر دیا ہے (۱۰۱) [۱۲۳:۷، ۶۰:۲، ۱۸:۲۰-۲۲، ۶۳:۲۶، ۱۰:۲۷-۱۱-۱۲]

(यह सुन कर) मूसा ने कहा तू अच्छी प्रकार जानता है कि यह चमत्कार मुझ पर किसी और ने नही उतारे अपितु (उसने उतारे जो आकाशों और पृथ्वी का रब है, ताकि तुम्हें अन्तर्दृष्टि प्राप्त हो

(یہ سن کر) موسیٰ نے کہا تو اچھی طرح جانتا ہے کہ یہ معجزے مجھ پر کسی اور نے نہیں اتارے بلکہ (اس نے اتارے جو آسمانوں اور زمین کا رب ہے تا کہ تمہیں

(और तुम सत्यता को जान सको) ऐ फ़िरऔन मैं समझता हूं तेरी बरबादी का समय आ गया (102)

بصیرت حاصل ہو (اور تم حقیقت کو سمجھ سکو) اے فرعون میں سمجھتا ہوں تیری ہلاکت کے دن آ گئے (۱۰۲)

तो फ़िरऔन ने चाहा कि बनी इसराईल को मिस्र देश से निकाल दे तो हमने उसको और उन सबको जो उसके साथ थे (समुन्दर) में तल्लीन कर दिया (103)

توفرعون نے چاہا کہ بنی اسرائیل کو سرزمین مصر سے نکال دے تو ہم نے اس کو اور ان سب کو جو اس کے ساتھ تھے (سمندر) میں غرق کر دیا (۱۰۳)

इसके बाद हमने बनी इसराईल से कहा तुम इस देश में रहो सहो, फिर जब परलोक के वचन का समय आ जाएगा तो हम तुम सबको अपने समक्ष ऐकत्र कर लेंगे (104)

اس کے بعد ہم نے بنی اسرائیل سے کہا تم اس ملک میں رہو سہو پھر جب آخرت کے وعدے کا وقت آجائے گا تو ہم تم سب کو اپنے سامنے اکٹھا کر لیں گے (۱۰۴)

हमने इस कुरआन को सच्चाई के साथ प्रेषित किया और यह सच्चाई के साथ अवतरित हुआ है और ऐ रसूल हमने आपको केवल शुभ सूचना देने वाला और सावधान करने वाला बना कर भेजा है (105)

ہم نے اس قرآن کو سچائی کے ساتھ نازل کیا اور یہ سچائی کے ساتھ نازل ہوا ہے اور اے رسول ہم نے آپ کو صرف خوش خبری دینے والا اور خبردار کرنے والا بنا کر بھیجا ہے (۱۰۵)

और हमने कुरआन को पृथक भागों में अंश अंश करके अवतरित किया है ताकि तुम लोगों को ठेहर ठेहर कर सुनाओ (और यही कारण है कि हमने सारा कुरआन एक साथ नही उतारा अपितु) थोड़ा थोड़ा प्रेषित किया (अतः कुरआन को समझ कर पढ़ो) (106)

اور ہم نے قرآن کو الگ الگ حصوں میں جز و جز و کر کے نازل کیا ہے تا کہ تم لوگوں کو ٹھہر ٹھہر کر سناؤ (اور یہی سبب ہے کہ ہم نے سارا قرآن ایک ساتھ نہیں اتارا بلکہ) تھوڑا تھوڑا نازل کیا (لہٰذا قرآن کو سمجھ کر پڑھو) (۱۰۶)

(ऐ रसूल! तुम मक्का के नास्तिकों से) कहो तुम इस कुरआन को मानों या न मानों (इस कुरआन की सत्यता पर कोई प्रभाव नही पड़ता) किन्तु जिन लोगों को इससे पहले पुस्तक का ज्ञान दिया गया था, उन्हें यह कलाम जब पढ़कर सुनाया जाता है तो वह ठोडी के बल सजदे में गिर पड़ता है अर्थात इस कुरआन को मान कर अन्तिम नबी मुहम्मद स0 पर विश्वास ले आते हैं) (107)

(اے رسول! تم کفار مکہ سے) کہو تم اس قرآن کو مانو یا نہ مانو (اس قرآن کی صداقت پر کوئی اثر نہیں پڑتا) لیکن جن لوگوں کو اس سے پہلے کتاب کا علم دیا گیا تھا انہیں جب یہ کلام پڑھ کر سنایا جاتا ہے تو وہ ٹھوڑی کے بل سجدے میں گر پڑتے ہیں (یعنی اس قرآن کو مان کر آخری نبی محمدؐ پر ایمان لے آتے ہیں) (۱۰۷)

और कहते हैं कि हमारा रब पवित्र है निःसंदेह हमारे रब का वचन पूरा हो कर रहने वाला है (108)

اور کہتے ہیں کہ ہمارا رب پاک ہے بے شک ہمارے رب کا وعدہ پورا ہو کر رہنے والا ہی ہے (۱۰۸)

और वह ठोडियों के बल गिर पड़ते हैं और रोते जाते हैं, और उससे उनमें और अधिक नम्रता उत्पन्न हो जाती है (अर्थात आज्ञाकारी होते हैं) (109)

اور وہ ٹھوڑیوں کے بل گر پڑتے ہیں اور روتے جاتے ہیں اور اس سے ان میں اور زیادہ عاجزی پیدا ہو جاتی ہے (یعنی فرمانبردار ہوتے ہیں) (۱۰۹)

(ऐ रसूल!) उनसे कहो तुम उसे ईश्वर कह कर पुकारो महा कृपालू के नाम से याद करो जिस नाम से (चाहो उसे) पुकारो उसके सारे नाम अच्छे हैं और ऐ रसूल (और सब मुसलमानों!) नमाज में (कुरआन) न तो बहुत ऊंची ध्वनी से पढ़ो और न बहुत ही शनैः शनैः अपितु मध्यवर्ती ध्वनी से पढ़ो (मध्यवर्ती मार्ग स्वीकार करो) (110) {7:205, 20:7}

(اے رسول!) ان سے کہو تم اسے اللہ کہہ کر پکارو یا رحمٰن کے نام سے یاد کرو جس نام سے (چاہو اسے) پکارو اس کے سارے نام اچھے ہیں. اور اے رسول (اور سب مسلمانو!) نماز میں (قرآن) نہ تو بہت بلند آواز سے پڑھو اور نہ بہت ہی آہستہ آہستہ بلکہ درمیانی لے آواز سے پڑھو (درمیانی راہ اختیار کرو) (۱۱۰) [۷:۲۰۵:۲۰:۷]

नोट- आयत के अनुसार आज हमारी कोई नमाज़ नही है, दो नमाज जोहर और असर तो बिलकुल ही चुपके चुपके हैं और शेष तीन भी कुछ ध्वनी से और कुछ चुपके यह विधि ईश्वर के आदेश के विपरीत है जो निःसंदेह हानी का कारण है, अतः हमको अपनी नमाज कुरआन के अनुसार कर लेनी चाहिए

نوٹ:۔ آیت کے مطابق آج ہماری کوئی نماز نہیں ہے دو نماز ظہر اور عصر تو بالکل ہی چپکے چپکے ہیں اور باقی تین نمازیں بھی کچھ آواز سے اور کچھ چپکے چپکے یہ طریقہ اللہ کے حکم کے خلاف ہے جو یقیناً نقصان کا سبب ہے اس لئے ہم کو اپنی نماز قرآن کے مطابق کر لینی چاہیے۔

परन्तु कुरआन के अनुसार करने में एक बहुत बड़ी रूकावट सामने आती है वह यह कि सब ने लगभग मान लिया है कि नमाज पढ़ने की विधि और रकआत की संख्या कुरआन में नही है परन्तु यह विश्वास मिथ्या है कुरआन में नमाज़ के समय भी हैं और रकआत और पढ़ने की विधि भी है, और जो अनिवार्य है इसका तो कोई उपाए नही कि जो विधि प्रचलित है उसको कुरआन में खोज करें तो निःसंदेह यह विधि

لیکن قرآن کے مطابق کرنے میں ایک بہت بڑی رکاوٹ سامنے آتی ہے وہ یہ کہ سب نے تقریباً یہ مان لیا ہے کہ نماز پڑھنے کا طریقہ اور رکعت کی تعداد قرآن میں نہیں ہیں مگر یہ عقیدہ بالکل غلط ہے قرآن میں نماز کے وقت بھی ہیں اور رکعت اور پڑھنے کا طریقہ بھی ہے جو فرض ہے اس کا کوئی علاج نہیں کہ جو

लगभग कुरआन में नही है यह तो कुरआन के अन्दर विधमान है और कथन भी नमाज को मध्यवर्ती ध्वनी से बता रहा है, अवलोकन हो.

सही बुखारी अरबी उरदू पेज 834 कथन नं0 1833 सईदबिन जुबैर ने श्री इब्ने अब्बास र0 से आदेश ईश्वर, और अपनी नमाज न बहुत ध्वनी से पढ़े न बिलकुल अहिस्ता और इन दोनों के मध्य में मार्ग खोजो आयत 110 के विषय में, वर्णन किया उन्होंने कहा यह आयत उस समय अवतरित हुई जब आप स0 मक्का मुकर्रमा में ही विराजमान थे और अपने अस्हाब को नमाज पढ़ाते समय ऊंची ध्वनी से कुरआन करीम पढ़ा करते तो उसे सुनकर अनेकेश्वर वादी ईश्वर की वाणी को गालियां दिया करते और जिसने उसे प्रेषित किया और जो लेकर आया जिस पर अवतरित हुआ उन सबको बुरा भला कहते इस पर ईश्वर ने अपने नबी को आदेश दिया कि अपनी नमाजों में कुरआन करीम का वाचन इतनी ध्वनि से ना करो कि उसे सुनकर अनेकेश्वर वादि कुरआन के प्रति बदकलामी करें और न इतनी कम ध्वनी से पढ़ना कि तुम्हारे साथी भी न सुन सकें इन दोनों का मध्यवर्ती मार्ग ग्रहण करो.

इस आयत के विस्तार में मौलाना मोददी साहब ने लिखा है जब वह हालात मक्का वाले न रहें और हालात ठीक हों तो फिर ऊंची ध्वनी से पढ़े यह रही हदीस इस आयत के बारे में जब मैंने अपनी बस्ती के एक व्यक्ति से ज्ञात किया कि इस आयत के अनुसार नमाज क्यों नही तो उन्होंने बड़े जोर दार शब्दों में कहा कि इस आयत को तवातुर (लगातार कार्य) ने मनसूख कर दिया यह उत्तर सुन कर मुझे काफी दुख हुआ क्योंकि उस व्यक्ति को बस्ती वाले ज्ञानी जानते हैं, परन्तु ज्ञानी का यह उत्तर? नाम उनका नही लिख रहा.

यदि हम अपनी भलाई चाहते हैं तो कुरआन के अनुसार अपनी नमाज कर ले तब ही अच्छा है यह न देखें कि अब तक हम कैसे पढ़ रहे थे और हमारे पहले पूर्वज क्या कर रहे थे उनका क्या होगा तो भाईयों! उनका लेखा उनसे होगा और हमारा हम से न उनका उत्तर दायित्व हम पर है और न उन पर हमारा अपना अपना है.

नमाज की रकआत (4:100-103) तक से चार आती हैं और कई हदीस हैं नमाज की विधि विस्तार से मेरी पुस्तक कानून इलाही या इन्सानी में अंकित है किन्तु यहां भी सक्षिप्त में लिख रहा हूं नमाज पढ़ने की विधि जो कुरआन में अंकित है.

(4:43, 5:6) स्नान वजू और तयम्मुम करने का आदेश है और ज्ञान चेतना में नमाज पढ़ने को कहा गया है.

(7:31) में नमाज के समय वस्त्र ग्रहण करने का आदेश (5:58, 62:9) में अजान का आदेश (37:164-165-166) में पंक्ति और पवित्रता वर्णन करने का आदेश है (7:29) में दिशा सीधा रखना और निःस्वार्थता को बताया है.

(2:149-150) में मुख काबा को करने का आदेश है (4:100-103) में रकआत की संख्या और कसर का तरीका और खड़े होने की विधि बताई है (2:238-239) में नमाज में खड़े होने की विधि नमाज की रक्षा और भय के समय नमाज पढ़ने की विधि है.

(15:98-99, 26:217-220) इनमें सजदे का आदेश आया है (16:57) में कुरआन पढ़ने से पहले शैतान पतित से ईश्वर की शरण मांगना.

(15:87) नमाज में अलहमद और कुरआन पढ़ने का आदेश हदीस में

طریقہ رائج ہے اس کو قرآن میں تلاش کریں تو یقیناً یہ طریقہ تقریباً قرآن میں نہیں ہے یہ تو قرآن کے خلاف رائج کیا ہے۔

صحیح طریقہ قرآن کے اندر موجود ہے اور روایت بھی نماز کو درمیانی آواز سے بتا رہی ہیں۔ ملاحظہ ہو۔

صحیح بخاری عربی اردو ۸۳۴ حدیث ۱۸۳۳

(۱۸۳۳) سعید بن جبیر نے حضرت ابن عباسؓ سے ارشاد باری تعالیٰ اور اپنی نماز نہ بہت آواز سے پڑھو نہ بالکل آہستہ اور ان دونوں کے بیچ میں راستہ تلاش کرو آیت (۱۱۰) کے بارے میں روایت کی انہوں نے فرمایا۔ یہ آیت اس وقت نازل ہوئی جب آپ مکہ مکرمہ میں ہی جلوہ افروز تھے اور اپنے اصحاب کو نماز پڑھاتے وقت بلند آواز سے قرآن کریم پڑھا کرتے تو اُسے سن کر مشرکین کلام الٰہی کو گالیاں دیا کرتے اور جس نے اسے نازل کیا اور جو لے کر آیا جس پر نازل ہوا ان سب کو بُرا بھلا کہتے اس پر اللہ نے اپنے نبی کو حکم دیا کہ اپنی نمازوں میں قرآن کریم کی تلاوت اتنی آواز سے نہ کرو کہ اسے سن کر مشرکین قرآن کریم کے متعلق بدکلامی کریں اور نہ اتنی آہستہ آواز سے پڑھنا کہ تمہارے ساتھی بھی نہ سن سکیں۔ ان دونوں کا درمیانی راستہ اختیار کرو۔

اس آیت کی تفسیر میں مولانا مودودی صاحب نے لکھا ہے جب وہ حالات مکہ والے نہ رہیں اور حالات ٹھیک ہوں تو پھر بلند آواز سے پڑھو۔ یہ رہی حدیث اس آیت کے بارے میں جب میں نے اپنی بستی کے ایک آدمی سے معلوم کیا کہ اس آیت کے مطابق نماز کیوں نہیں تو انہوں نے بڑے زوردار الفاظ میں کہا کہ اس آیت کو تواتر نے منسوخ کر دیا یہ جواب سن کر مجھے کافی افسوس ہوا کیونکہ اس آدمی کو بستی والے عالم سمجھتے ہیں مگر عالم کا یہ جواب؟ نام ان کا نہیں لکھ رہا۔

اگر ہم اپنی خیر چاہتے ہیں تو قرآن کے مطابق اپنی نماز کر لیں تب ہی اچھا ہے یہ نہ دیکھیں کہ اب تک ہم کیسے پڑھ رہے تھے اور ہمارے پہلے بزرگ کیا کر رہے تھے ان کا کیا ہوگا تو بھائیو! ان کا حساب ان سے ہوگا اور ہمارا ہم سے۔ نہ ان کی ذمہ داری ہم پر ہے اور نہ ان پر ہماری، اپنا اپنا ہے۔

نماز کی رکعت (۱۰۳:۱۰۰:۴) تک سے چار آتی ہیں اور کئی حدیث ہیں نماز کا طریقہ تفصیل سے میری کتاب قانون الٰہی یا انسان میں درج ہے مگر یہاں بھی مختصر لکھ رہا ہوں۔ نماز پڑھنے کا طریقہ جو قرآن میں درج ہے۔

(۴۳:۴) اور (۶:۵) میں غسل وضو اور تیمم کرنے کا حکم ہے اور ہوش وحواس میں نماز پڑھنے کو کہا گیا ہے۔

(۳۱:۷) میں نماز کے وقت لباس اختیار کرنے کا حکم (۵۸:۵، ۹:۶۲) میں اذان کا حکم (۱۶۴:۳۷، ۱۶۵، ۱۶۶) میں صف اور پاکی بیان کرنے کا حکم ہے (۲۹:۷) میں رُخ سیدھا رکھنا اور اخلاص کو بتایا ہے۔

(۱۴۹:۲، ۱۵۰) میں منہ کعبہ کو کرنے کا حکم ہے (۱۰۰:۴، ۱۰۳) میں رکعت کی تعداد اور قصر کا طریقہ اور کھڑے ہونے کا طریقہ بتایا ہے (۲۳۸:۲، ۲۳۹) میں نماز میں کھڑے ہونے کا طریقہ نماز کی حفاظت اور خوف کے وقت نماز پڑھنے کا طریقہ ہے۔

(۹۸:۱۵، ۹۹، ۲۱۷:۲۶ تا ۲۲۰) ان میں سجدہ کا حکم آیا ہے (۹۷:۱۶) میں قرآن پڑھنے سے پہلے شیطان رجیم سے اللہ کی پناہ مانگنا۔

(۸۷:۱۵) نماز میں الحمد اور قرآن پڑھنے کا حکم حدیث میں قرآن پڑھنے کا حکم

कुरआन पढ़ने का आदेश बुखारी जिल्द प्रथम पारा 3 किताबुस्सलात पेज, 207 हदीस संख्या 211-721

(17:110) में नमाज मध्यवर्ती ध्वनी से पढ़ना (7:204) कुरआन जब पढ़ा जाए तो चुप रहकर सुनो पढ़ने का आदेश है,

(25:64-65, 2:125, 3:43) इनमें रूकू सजदा और एतकाफ आ गया सूरत वाकिआ में रूकू की "तसबीह सब्बिह इस्मी रब्बिकल अज़ीम सजदेह की तसबीह सब्बिह इसमी रब्बिकल आला सजदा वसजुद वकतरिब) अलक सूरत अहजाब में दरूदव सलाम का आदेश,

(59:22-23-24) नमाज में ईश्वर की पवित्रता वर्णन करना,

कुरआन में नमाज के विषय में और भी आयात है कुरआन पढ़ने वाले पढ़ सकते है, इन आयात में नमाज की विधि अंकित है और उनमें से कुछ को नमाज में पढ़ते भी है परन्तु दुख इतने पर भी हम यह कह रहें है कि कुरआन में नमाज का केवल आदेश है, परन्तु मैंने इन सब बातों को कुरआन से लिख दिया है, देखलो दान के बारे में भी यही कहा जाता है कि कुरआन में दान के विषय में भी नही कि कितनी दें परन्तु मैंने कुरआन से दान के विषय में भी लिख दिया है कि कितनी है,

परन्तु यह सब बाते कुरआन में हमको तब ही दिखाई देंगी जब हम कुरआन को चेतना में आकर चिन्तन के साथ पढ़े परन्तु हम तो कुरआन को केवल लेख की सीमा तक ही फल के लिए पढ़ रहे हैं और लेख को पढ़ने में इतना परिश्रम कर रहे हैं सम्भावतः दूसरी जातियां इतना परिश्रम साईन्स की खोज में नही कर रही हर वर्ष किरआत के मुकाबले में देखा जा सकता है,

बخاری جلد اوّل پارہ ۳ کتاب الصلوٰۃ ۷۲۱ حدیث ۲۱۱،۷۲۱۔

(۱۷:۱۱۰) نماز درمیانی آواز سے پڑھنا

(۷:۲۰۴) قرآن جب پڑھا جائے تو خاموش رہ کر سنو (۷۲:۱۷، ۱۹) ان آیات میں قیام اور قرآن پڑھنے کا حکم ہے۔

(۲۵:۶۴،۶۵:۲:۱۲۵:۳:۴۳) ان میں رکوع سجدہ اور اعتکاف آگیا سورہ واقعہ میں رکوع کی تسبیح باسمہ ربک (۵۶:۷۴) العظیم واقعہ سجدہ کی سبّح اسم ربک الاعلیٰ۔ سجدہ واسجد واقترب) علق۔ سورت احزاب میں درود وسلام کا حکم۔

(۵۹:۲۲،۲۳،۲۴) نماز میں اللہ کی پاکی بیان کرنا۔

قرآن میں نماز کے بارے میں اور بھی آیات ہیں قرآن پڑھنے والے پڑھ سکتے ہیں ان آیات میں نماز کا طریقہ درج ہے اور ان میں سے کچھ کو نماز میں ادا بھی کرتے ہیں لیکن افسوس اتنے پر بھی ہم یہ کہہ رہے ہیں کہ قرآن میں نماز کا صرف حکم ہے۔ پڑھنے کا طریقہ اور رکعت کی تعداد اور اوقات نہیں ہیں۔ لیکن میں نے ان سب باتوں کو قرآن سے لکھ دیا ہے۔ دیکھو لو زکوٰۃ کے بارے میں بھی یہی کہا جاتا ہے کہ قرآن میں زکوٰۃ کے بارے میں بھی نہیں کہ کتنی دیں۔ لیکن میں نے قرآن سے زکوٰۃ کے بارے میں بھی لکھ دیا ہے کہ کتنی ہے۔

مگر یہ سب باتیں قرآن میں ہم کو تب ہی نظر آئیں گی جب ہم قرآن کو ہوش میں آکر تدبر کے ساتھ پڑھیں۔ مگر ہم تو قرآن کو صرف رسم الخط کی حد تک ہی ثواب کے لئے پڑھ رہے ہیں اور رسم الخط کو پڑھنے میں اتنی محنت کر رہے ہیں غالباً دوسری قومیں اتنی محنت سائنس کی تحقیق میں نہیں کر رہیں ہر سال قرآت کے مقابلہ میں دیکھا جا سکتا ہے۔

और कहो हर प्रकार की प्रशंसा ईश्वर ही के लिए है जो न तो सन्तान रखता है और न उसके राज्य में उसका कोई साझी है कि उसको उसकी किसी सहायता की आवश्यक्ता हो (वह हर प्रकार की अपेक्षाओं से ललसा रहित है) और उसकी बड़ाई पूरी पूरी करते रहो अर्थात जो आदेश ईश्वर ने कुरआन में अवतरित किए है उनका पालन पूरी शक्ति से करो (111)

اور کہو ہر طرح کی تعریف اللہ ہی کے لئے ہے جو نہ تو اولاد رکھتا ہے اور نہ اس کی حکومت میں اس کا کوئی شریک ہے اور نہ وہ عاجز و ناتواں ہے کہ اس کو کسی مدد کی ضرورت ہو (وہ ہر طرح کی حاجتوں سے بے نیاز ہے) اور اس کی بڑائی پوری پوری کرتے رہو یعنی جو حکم اللہ نے قرآن میں نازل کئے ہیں ان کی پابندی پوری طاقت سے کرو (۱۱۱)

सूरतुलकहफ मक्की - 18

سورت الکہف (۱۸) مکی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

सब प्रशंसा ईश्वर ही को है जिसने अपने बन्दे (मुहम्मद स0) पर यह पुस्तक (अर्थात कुरआन) अवतरित किया और इसमें किसी प्रकार की वक्रता न रखी (1)

سب تعریف اللہ ہی کو ہے جس نے اپنے بندے (محمدؐ) پر یہ کتاب (یعنی قرآن) نازل کیا اور اس میں کسی طرح کی کجی نہ رکھی (۱)

सीधा और सरल (लेख उतारा है जिसे कम ज्ञान वाला व्यक्ति भी समझ ले यह पुस्तक इसलिए प्रेषित की है) कि लोगों को सूचित कर दे कि ईश्वर की ओर से (उन पर) एक कठोर कष्ट आने वाला है और उन आस्था वालों को जो भलाई के कार्य करते है, शुभ सूचना सुना दे कि उनके लिए (उनके शुभ कर्मों) का बहुत अच्छा बदला है (2)

سیدھی اور سلیس (عبارت اتاری ہے جسے معمولی علم کا آدمی بھی سمجھ لے یہ کتاب اس لئے نازل کی گئی ہے کہ) لوگوں کو خبردار کرے کہ اللہ کی طرف سے (ان پر) ایک سخت عذاب آنے والا ہے اور ان ایمان والوں کو جو بھلائی کے کام کرتے ہیں خوشخبری سنادے کہ ان کے لئے (ان کے نیک) کاموں کا بہت اچھا اجر ہے (۲)

जिसमें वह सदैव रहेंगे (3)

جس میں وہ ہمیشہ رہیں گے (۳)

और (प्रेषण कुरआन का एक उद्देश्य यह भी है कि) उन लोगों को सावधान करे जो कहते है ईश्वर भी सन्तान रखता है (4)

اور نزول قرآن کا ایک مقصد یہ بھی ہے کہ) ان لوگوں کو متنبہ کرے جو کہتے ہیں اللہ بھی اولاد رکھتا ہے (۴)

इस विषय में उन्हें कोई ज्ञान नही और न उनके बाप दादा ही को था, कैसी कठोर बात है जो उनके मुख से निकल रही है? वह जो कुछ कहते है वह झूट बक रहे है (5)
(ऐ रसूल!) इस शोक में कि वह लोग इस कथन (अर्थात कुरआन) पर विश्वास नही लाते कही आप अपनी जान ही न दे दो (6) {5:3-67, 4:87, 11:12, 39:23, 45:6, 52:34, 52:34, 53:59,}

اس بارے میں انہیں کوئی علم نہیں اور نہ ان کے باپ دادا ہی کو تھا کیسی سخت بات ہے جو ان کے منہ سے نکل رہی ہے؟ وہ جو کچھ کہتے ہیں وہ جھوٹ بک رہے ہیں (۵)
(اے رسولؐ!) اس غم میں کہ وہ لوگ اس کلام (یعنی قرآن) پر ایمان نہیں لاتے کہیں تم اپنی جان ہی نہ دے دو (۶) [۵:۳-۶۷، ۴:۸۷، ۱۱:۱۲، ۳۹:۲۳، ۴۵:۶، ۵۲:۳۴، ۵۲:۳۴، ۵۳:۵۹]

धरती पर जो वस्तुएं है उन्हें हमने पृथ्वी के लिए श्रंगार बनाया है ताकि लोगों की परिक्षा करें कि उनमें कौन अच्छे कार्य करता है (अर्थात देखें कि हमारी सुसज्जित पृथ्वी को कौन और अधिक सुसज्जित करता है और कौन इसकी सम्पन्नता को नष्ट करता है) (7) {67:2}

زمین پر جو چیزیں ہیں انہیں ہم نے زمین کے لئے آرائش بنایا ہے تاکہ لوگوں کو آزمائیں کہ ان میں کون اچھے کام کرتا ہے (یعنی دیکھیں کہ ہماری اس آراستہ زمین کو کون اور زیادہ آراستہ کرتا ہے اور کون اس کی خوشحالی کو برباد کرتا ہے) (۷) [۶۷:۲]

(परन्तु याद रहे कि) जो वस्तुएं पृथ्वी पर है (वह सदैव रहने वाली नही है) हम उन्हें (नष्ट करके) बन्जर मैदान कर देंगे (8)

(لیکن یاد رہے کہ) جو چیزیں زمین پر ہیں (وہ ہمیشہ رہنے والی نہیں ہیں) ہم انہیں (نابود کر کے) بنجر زمین کردیں گے (۸)

(ऐ रसूल!) क्या आप विचार करते हो कि गुफा और रकीम वाले हमारे चिन्हों में से एक विचित्र चिन्ह थे? (9)
जब वह कुछ युवक गुफा में शरणार्थी हुए थे तो उन्होंने प्रार्थना की ऐ रब हम पर अपनी ओर से अनुकम्पा अवतरित कर और हमारे विषय को ठीक कर दे (10)
तो हमने गुफा में कई वर्षों तक उनके कानो पर (निद्रा का) आवरण डाले रखा (अर्थात वह बाहर के समाचारों से बिलकुल अचेत रहें) (11)

(اے رسول!) کیا آپ خیال کرتے ہو کہ غار اور رقیم والے ہماری نشانیوں میں سے ایک عجیب نشانی تھے؟ (۹)
جب وہ چند نوجوان غار میں پناہ گزیں ہوئے تھے تو انہوں نے دعا مانگی تھی اے رب! ہم پر اپنی طرف سے رحمت نازل فرما اور ہمارے معاملات کو درست کردے (۱۰)
تو ہم نے غار میں کئی سالوں تک ان کے کانوں پر (نیند کا) پردہ ڈالے رکھا (یعنی وہ باہر کے حالات سے بالکل بے خبر رہے) (۱۱)

फिर उनको जगा उठाया ताकि ज्ञात करें कि दोनों दलों में से कौन बीते हुए काल का अधिक अच्छे ढंग पर अनुमान कर सकता है (12)

پھر ان کو جگا اٹھایا تاکہ معلوم کریں کہ دونوں جماعتوں میں سے کون گزری ہوئی مدت کا زیادہ بہتر طریقے پر اندازہ کرسکتا ہے (۱۲)

हम उनके मूल समाचार आपसे वर्णन करते है वह कई युवक थे जो अपने ईश्वर पर विश्वास लाए थे और हम ने उनको और अधिक पथ प्रदर्शन दिया था (13)
और हमने उनके हृदयों पर (धैर्य व दृढ़ता की) गांठ लगा दी (अर्थात पुष्ट कर दिया था कि जब राजा ने नास्तिकता पर विवश किया) तो उठ खड़े हुए और निसंकोच) कहने लगे हमारा ईश्वर तो बस सारे आकाशों व पृथ्वी का स्वामी है हम तो उसके अतिरिक्त किसी देवता की कदापि पूजा न करेंगे, यदि हम ऐसा करें तो यह बड़ी ही अनुचित बात होगी (14)

ہم ان کے اصل حالات آپ سے بیان کرتے ہیں وہ کئی جوان تھے جو اپنے رب پر ایمان لائے تھے اور ہم نے ان کو اور زیادہ ہدایت دی تھی (۱۳)
اور ہم نے ان کے دلوں پر (صبر و استقلال کی) گرہ لگادی تھی (یعنی مضبوط کردیا تھا کہ جب بادشاہ نے کفر پر مجبور کیا) تو اٹھ کھڑے ہوئے (اور بے تامل) کہنے لگے ہمارا پروردگار تو بس سارے آسمانوں و زمین کا مالک ہے ہم تو اس کے سوا کسی معبود کی ہرگز عبادت نہ کریں گے اگر ہم ایسا کریں تو یہ بڑی ہی بےجا بات ہوگی (۱۴)

उन हमारी जाति के लोगों ने उसके अतिरिक्त और देवता बना रखे है भला वह उन (के देवता होने) पर कोई खुला तर्क क्यों नहीं लाते तो उससे अधिक कौन अन्यायी है जो ईश्वर पर झूट मिथ्या रोप करें (15)

ان ہماری قوم کے لوگوں نے اس کے سوا اور معبود بنا رکھے ہیں بھلا وہ ان (کے معبود ہونے) پر کوئی کھلی دلیل کیوں نہیں لاتے تو اس سے زیادہ کون ظالم ہے جو اللہ پر جھوٹ افترا کرے (۱۵)

(फिर परामर्श के बाद) उन्होंने आपस में कहा, अब जब कि हम उन लोगों से और उनके देवताओं से जिन्हें वह लोग ईश्वर के सिवा पूजते है पृथकता

(پھر مشورے کے بعد) انہوں نے آپس میں کہا اب جب کہ ہم ان لوگوں سے اور ان کے معبودوں سے جنہیں

وہ لوگ اللہ کے سوا پوجتے ہیں کنارہ کشی اختیار کر چکے ہیں تو کیوں نہ غار میں پناہ گزیں ہو جائیں جہاں ہمارا رب ہم پر اپنی رحمت کا سایہ پھیلائے گا اور تمہارے کاموں میں آسانی مہیا کرے گا (۱۶)

स्वीकार कर चुके है तो क्यों न गुफा में शरण ले लें, वहां हमारा रब हम पर अपनी कृपा का साया फैलाएगा, और तुम्हारे कामों में आसानी प्रस्तुत करेगा. (16)

(اس غار کا محل وقوع اس طرح تھا کہ) جب سورج نکلتا تو تم دیکھو گے کہ ان کے غار سے داہنے جانب ہٹا ہوا رہتا اور جب ڈوبتا تو بائیں جانب کترا کر نکل جاتا ہے (یعنی کسی وقت بھی دھوپ اندر نہیں پہنچتی) اور وہ لوگ اس کے اندر ایک کشادہ جگہ میں پڑے تھے ان کی یہ (حالت) اللہ کی نشانیوں میں سے ہے (کہ انہوں نے راہ حق میں دنیا کے عیش کو ہمیشہ کے لئے خیرباد کہہ دیا سچ ہے) ہدایت وہی پاتا ہے جسے (اس کے نیک عمل پر) اللہ یعنی قانون ہدایت دیتا ہے اور جسے اللہ (اس کی بداعمالیوں کی بنا پر) گمراہ کر دے تو آپ ان کے لئے کوئی کارساز رہنما نہ پاؤ گے (۱۷)

(उस गुफा का स्थान इस प्रकार था कि) जब सूर्य निकलता तो तुम देखो तो कि उनकी गुफा से दाहिनी ओर हटा हुआ रहता, और जब डूबता तो बाईं ओर कतरा कर निकल जाता है (अर्थात किसी समय भी धूप अन्दर नही पहुंचती) और वह लोग उसके अन्दर एक खुली जगह में पड़े थे, उनकी यह (स्थिति) ईश्वर के चिन्हों में से है (कि उन्होंने सत्य मार्ग में दुनिया के सुख को सदैव के लिए छोड़ दिया सत्य है) पथ प्रदर्शन वही पाता है जिसे (उस के सत्कार्मों पर) ईश्वर अर्थात नियम पथ प्रदर्शन देता है और जिसे ईश्वर (उसके दुष कर्मों के आधार पर) पथ भ्रष्ट कद दे तो आप उनके लिए कोई सहायक मार्ग दर्शक न पाओगे (17)

اور تم ان کو خیال کرو کہ جاگ رہے ہیں حالانکہ وہ سوتے تھے اور ہم ان کو دائیں اور بائیں کروٹ بدلاتے تھے اور ان کا کتا چوکھٹ پر دونوں ہاتھ پھیلائے ہوئے تھا اگر تم ان کو جھانک کر دیکھتے اور قریب ہونے کی کوشش کرتے تو ان سے بھاگ جاتے اور ان سے دہشت میں آجاتے (۱۸)

और तुम उनको देखो कि जाग रहें हैं यद्यपि वह सोते थे और हम उनको दाऐं और बाऐं करवट बदलाते थे और उनका कुत्ता चोखट पर दोनों हाथ फैलाए हुए था, यदि तुम उनको झांक कर देखते और निकट होने का प्रयत्न करते तो उनसे भाग जाते और उनसे भय में आ जाते (18)

اور ہم نے انہیں پھر اٹھا کھڑا کیا کہ آپس میں ایک دوسرے سے پوچھ گچھ کریں اُن میں سے ایک کہنے والے نے کہا ہم یہاں کتنی دیر رہے ہوں گے؟ دوسرے نے کہا شاید ایک دن یا اس سے کم رہے ہوں گے پھر بولے ہمارا رب ہی بہتر جانتا ہے کہ کتنی دیر تک ہم یہاں پڑے رہے اچھا اپنے میں سے ایک آدمی کو یہ سکہ دے کر شہر میں بھیجو وہ جاکر دیکھے کس کے یہاں اچھا پاک کھانا ملتا ہے۔ وہاں سے کھانا لے آئے اور ہاں بہت احتیاط اور چپکے سے لائے کسی کو تمہاری خبر نہ ہونے پائے (۱۹)

और हमने उन्हें फिर उठा खड़ा किया कि आपस में एक दूसरे से पूछ-गछ करें उनमें एक कहने वाले ने कहा, हम यहां कितनी देर रहें होंगे? दूसरे ने कहा शायद एक दिन या उससे कम रहे हो, फिर बोले हमारा रब ही अच्छा जानता है कि कितनी देर तक हम यहां पड़े रहे, अच्छा अपने में से एक आदमी को यह सिक्का देकर नगर में भेजो वह जाकर देखे किस के यहां अच्छा पवित्र भोजन मिलता है, वहां से भोजन ले आए और हां बहुत सावधानी और चुपके से लाए किसी को तुम्हारी सूचना न होने पाए (19)

اگر ہماری خبر لگنے پر وہ تم پر غلبہ پالیں گے تو تمہیں سنگسار کر دیں گے یا پھر اپنے مذہب میں داخل کر لیں گے اگر ایسا ہوا تو تم کبھی فلاح نہ پاؤ گے (۲۰)

यदि हमारी सूचना लगने पर वह तुम पर अधिकार पा लेंगे तो तुम्हें पत्थर मारकर वध कर देंगे या फिर अपने धर्म में प्रविष्ट कर लेंगे, यदि ऐसा हुआ तो तुम कभी सफलता न पाओगे (20)

اور اسی طرح ہم نے لوگوں کو ان کے حال سے خبردار کر دیا تاکہ وہ جانیں کہ اللہ کا وعدہ سچا ہے اور یہ کہ قیامت (جس کا وعدہ کیا جاتا ہے وہ آئے گی سب کو دوبارہ زندہ ہونا ہے) اُس میں کچھ شک نہیں اس وقت لوگ ان کے بارے میں جھگڑنے لگے کہ ان کے (غار پر) عمارت بنا دو ان کا رب اُن (کے حال) سے خوب واقف ہے جو لوگ ان کے معاملے میں غلبہ رکھتے وہ کہنے لگے کہ ہم ان (کے غار) پر مسجد بنائیں گے (۲۱)

और इस प्रकार हमने लोगों को उनकी स्थिति से सूचित कर दिया ताकि वह जाने कि ईश्वर का वचन सच्चा है और यह कि क्यामत (जिसका वचन किया जाता है वह आएगी सबको पुनः जीवित होना है) उसमें कुछ शंका नही उस समय लोग उनके विषय में झगड़ने लगें कि उनकी (गुफा पर) भवन बना दो उनका रब उनकी स्थिति से अच्छा अवगत है जो लोग उनके विषय में अधिपत्य रखते वह कहने लगे कि हम उन (की गुफा) पर मस्जिद बनाएंगे (21)

کچھ لوگ کہیں گے (غار والے) وہ تین تھے چوتھا ان کا کتا تھا کچھ دوسرے کہیں گے (نہیں) وہ پانچ تھے چھٹا ان کا کتا تھا وہ سب اندھیرے میں تیر چلائیں گے بعض کہیں

कुछ लोग कहेंगे (गुफा वाले)वह तीन थे चौथा उनका कुत्ता था कुछ दूसरे कहेंगे (नही) वह पांच थे छटा उनका कुत्ता था, वह सब अन्धकार मं वाण चालाएंगे कतिपय कहेंगे सात थे आठवा उनका कुत्ता

था (ऐ रसूल!) कह दो उनकी मूल संख्या तो मेरा ईश्वर ही जानता है क्योंकि उनका हाल बहुत कम लोग जानते हैं, अतः लोगों से उनके विषय में थोड़ी बातों के अतिरिक्त अधिक बात न करना और न उनके विषय में उनमें से किसी से कुछ ज्ञात करना (22)

گے سات تھے آٹھواں ان کا کتا تھا (اے رسول) کہدو ان کی تعداد تو میرا رب ہی جانتا ہے کیونکہ ان کا حال بہت کم لوگ جانتے ہیں لہٰذا لوگوں سے ان کے بارے میں سرسری باتوں کے علاوہ زیادہ بات نہ کرنا اور نہ ان کے بارے میں ان میں سے کسی سے کچھ معلوم کرنا (۲۲)

(ऐ मुहम्मद स० बुद्धि की बातों में से एक यह भी है कि जो कार्य महत्वपूर्ण हो उसको तुरन्त समय पर करो) उसके लिए यह न कहो कि इसको कल करूंगा (या किसी बात के बारे में जानकारी न हो तो उसके लिए भी न कहो कि कल करूंगा या आज)(23)

(اے محمد حکمت کی باتوں میں سے ایک یہ بھی ہے کہ جو کام اہم ہو اس کو فوراً وقت پر کرو) اس کے لئے یہ نہ کہو کہ اس کو کل کروں گا (یا کسی بات کے بارے میں جان کاری نہ ہو تو اس کے لئے بھی نہ کہو کہ کل کروں گا یا آج) (۲۳)

निःसंदेह ईश्वर यही चाहता है कि आज का कार्य आज करो समय पर (अचेतना न करो) और ईश्वर को याद रखो, या यदि कोई विवशता हो या भूल जाओ (और उस कार्य में कोई कमी हो जाए तो याद आने पर कहो) आशा है मेरा ईश्वर मुझे इससे भी अधिक बुद्धि व पथ प्रदर्शन की बाते बताएगा और मेरा रब इस विषय में संमार्ग (सुपथ) से निकट बात की ओर मेरा मार्ग दर्शन करेगा (24)

और एक कहावत प्रसिद्ध है,

कल करे सो आज कर, आज करे सो अब,
पल में परलय होयगी बहुरि करेगा कब

یقیناً اللہ یہی چاہتا ہے کہ آج کا کام آج کرو وقت پر (غفلت نہ کرو) اور اللہ کو یاد رکھو یا اگر کوئی مجبوری ہو یا بھول جاؤ (اور اس کام میں کوئی کمی ہو جائے تو) تو یاد آنے پر کہو امید ہے میرا رب مجھے اس سے بھی زیادہ حکمت وہدایت کی باتیں بتائے گا اور میرا رب اس معاملہ میں رشد سے قریب تر بات کی طرف میری رہنمائی کرے گا (۲۴) اور ایک مثل مشہور ہے۔

جو کل کرنا ہے وہ کر آج اور جو آج کرنا ہے وہ کر اب
ہاتھ کا چوکا پھر مارے۔ بات کا چوکا سر مارے

और समय व्यतीत हुआ उन पर अपनी गुफा में तीन सो वर्ष और उनके ऊपर नो (25)

اور مدت گزری ان پر اپنی کھوہ میں تین سو برس اور ان کے اوپر نو (۲۵)

कहदो क्यों झगड़ते हो क्या उस काल को ईश्वर नही जानेगा? जो उसने बता दिया है अर्थात तीन सौ नौ वर्ष उसी को आकाशों और पृथ्वी की छुपी बाते ज्ञात है वह क्या अच्छा देखने और सुनने वाला है उस के अतिरिक्त उनका कोई सहायक नही और न वह अपने कार्य आदेश में किसी को साझी करता है (26)

کہدو کیوں جھگڑتے ہو کیا اس مدت کو اللہ نہیں جانے گا؟ وہ جانے گا جو اس نے بتا دیا ہے یعنی تین سو نو سال اسی کو آسمانوں اور زمین کی پوشیدہ باتیں معلوم ہیں وہ کیا خوب دیکھنے اور سننے والا ہے اس کے سوا ان کا کوئی کارساز نہیں اور نہ وہ اپنے حکم میں کسی کو شریک کرتا ہے (۲۶)

और अपने ईश्वर की पुस्तक को जो आपके पास प्रेषित की जाती है, पढ़ते रहा करो उसकी बातों को कोई बदलने वाला नही है (और यदि अनेकेश्वर वादियों के कहने से किसी ने इसको बदलने का निश्चय किया तो) कदापि उसके अतिरिक्त कही शरण नही पाएगा (27)

اور اپنے رب کی کتاب کو جو آپ کے پاس بھیجی جاتی ہے پڑھتے رہا کرو اس کی باتوں کو کوئی بدلنے والا نہیں ہے (اور اگر مشرکوں کے کہنے سے کسی نے اس کو بدلنے کا ارادہ کیا تو) ہرگز اس کے سوا کہیں پناہ بھی نہیں پائے گا (۲۷)

और अपने हृदय को उन लोगों की संगति पर सन्तुष्ट करो जो अपने ईश्वर की इच्छा के इच्छुक बन कर प्रातः व सांय उसे पुकराते हैं) और उनसे कदापि दृष्टि न फैरों क्या तुम दुनिया की सज्जा की अभिरूचि करते हो? किसी ऐसे व्यक्ति का कहा ना मानना जिसके हृदय को उसकी अवज्ञा और हमारे नियम ने हमारी याद से अचेत कर दिया है, और जिसने अपने जी की इच्छा का अनुकरण स्वीकार कर लिया है और उसका कार्य सीमा से बढ़ गया है (28) {33:1, 76:24, 74:22, 6:52-55, 11:28-33, 26:111:114, 41:34-36}

اور اپنے دل کو ان لوگوں کی معیت پر مطمئن کرو جو اپنے رب کی رضا کے طلب گار بن کر صبح وشام اسے پکارتے ہیں اور ان سے ہرگز نگاہ نہ پھیرو کیا تم دنیا کی زینت پسند کرتے ہو؟ کسی ایسے شخص کی اطاعت نہ کرنا جس کے دل کو اس کی نافرمانی اور ہمارے قانون نے ہماری یاد سے غافل کردیا ہے اور جس نے اپنی خواہش نفس کی پیروی اختیار کرلی ہے اور اس کا کام حد سے بڑھ گیا ہے (۲۸) [۳۳:۱؛ ۷۶:۲۴؛ ۷۴:۲۲؛ ۶:۵۲،۵۵؛ ۱۱:۲۸،۳۳؛ ۲۶:۱۱۱،۱۱۴؛ ۴۱:۳۴،۳۶]

और कह दो कि (लोगों) यह कुरआन तुम्हारे रब की ओर से सत्य है तो जो चाहे विश्वास लाए और जो चाहे नास्तिक रहे (कर्म के लिए स्वतंत्रता है हमारी कोई जबरदस्ती नही है) हमने अन्यायीयों के लिए नर्क की आग तैयार कर रखी है जिसके

اور کہدو کہ (لوگو!) یہ قرآن تمہارے رب کی طرف سے برحق ہے تو جو چاہے ایمان لائے اور جو چاہے کافر رہے (عمل کے لئے آزادی ہے ہماری کوئی زبردستی نہیں ہے) ہم نے ظالموں کے لئے دوزخ کی آگ تیار کر رکھی ہے

आवरण उनको घेर रहें होंगे, और यदि वह याचना करेंगे तो ऐसे खोलते हुए पानी से उनकी सहायता की जाएगी जो पिगले हुए तांबे की भांति गर्म होगा और जो मुखों को भून डालेगा उनके पीने का पानी भी बुरा और विश्रामालय भी बुरा (29)

جس کی قناتیں ان کو گھیر رہی ہوں گی اور اگر فریاد کریں گے تو ایسے کھولتے ہوئے پانی سے ان کی دادرسی کی جائے گی جو پگھلے ہوئے تانبے کی طرح گرم ہوگا اور جو مونہوں کو بھون ڈالے گا ان کے پینے کا پانی بھی بُرا اور آرام گاہ بھی بُری (۲۹)

और जो विश्वास लाए और कर्म भी अच्छे करते रहे तो हम सत्कर्म करने वालो का फल नष्ट नही करते (30)

(اور) جو ایمان لائے اور کام بھی نیک کرتے رہے تو ہم نیک کام کرنے والوں کا اجر ضائع نہیں کرتے (۳۰)

ऐसे लोगों के लिए सदेव रहने के उपवन है जिनमें उनके (भवनों के) नीचे नहरें वह रही होंगी उनको वहां सोने के कंगन पहनाए जाएगें और वह बारीक दीबा और अतलस के हरे कपड़े पहना करेंगे और सिंहासनों पर तकिया लगा कर बैठा करेंगे और क्या अच्छा फल और क्या उत्तम विश्राम गृह है (31)

ایسے لوگوں کے لئے ہمیشہ رہنے کے باغ ہیں جن میں ان کے (محلوں کے) نیچے نہریں بہ رہی ہوں گی ان کو وہاں سونے کے کنگن پہنائے جائیں گے اور وہ باریک دیبا اور اطلس کے سبز کپڑے پہنا کریں گے اور تختوں پر تکیہ لگا کر بیٹھا کریں گے کیا خوب بدلہ اور کیا خوب آرام گاہ ہے (۳۱)

उनको समझाने के लिए एक उपमा वर्णन करो दो व्यक्ति थे, उनमें से एक के लिए हमने दो उपवन प्रस्तुत किए थे और उनके चारो ओर खजूरो के वृक्षों की वाड़ थी बीच की भूमि में खेती होती थी (32)

ان کو سمجھانے کے لئے ایک مثال بیان کرو دو آدمی تھے ان میں سے ایک کے لئے ہم نے دو باغ مہیا کئے تھے اور ان کے گرداگرد کھجوروں کے درختوں کی باڑ تھی بیچ کی زمین میں کھیتی بھی ہوتی تھی (۳۲)

दोनों उपवन (अधिकता से) फल लाते और उसकी उपज में किसी प्रकार की कमी न होती और दोनों में हमने एक नहर जारी कर रखी थी (33)

دونوں باغ (کثرت سے) پھل لاتے اور اس کی پیداوار میں کسی طرح کی کمی نہ ہوتی اور دونوں میں ہم نے ایک نہر بھی جاری کر رکھی تھی (۳۳)

और इसी प्रकार उसको उनकी उपज मिलती रहती थी तो एक दिन जब कि वह अपने मित्र से बाते कर रहा था कहने लगा कि मैं तुमसे धन दौलत में भी अधिक हूं और जत्थे (और दल) की दृष्टि से भी अधिक हूं (34)

اور اسی طرح اس کو ان کی پیداوار ملتی رہتی تھی تو ایک دن جب کہ وہ اپنے دوست سے باتیں کر رہا تھا کہنے لگا کہ میں تم سے مال دولت میں بھی زیادہ ہوں اور جتھے (اور جماعت) کے لحاظ سے بھی زیادہ عزت والا ہوں (۳۴)

और (ऐसी घमण्ड की बातों से) अपने लिए अत्याचार करता हुआ अपने उपवन में प्रविष्ट हुआ कहने लगा कि मैं नही सोचता कि यह उपवन कभी नष्ट हो (35)

اور (ایسی گھمنڈ کی باتوں سے) اپنے حق میں ظلم کرتا ہوا اپنے باغ میں داخل ہوا کہنے لگا کہ میں نہیں خیال کرتا کہ یہ باغ کبھی تباہ ہوں (۳۵)

और मुझे विश्वास नही कि महा प्रलय की घड़ी कभी आएगी (फिर मज़ाक से कहने लगा) तथापि यदि कभी मुझे अपने रब की ओर लोटाया गया तो वहां मुझे इससे भी अधिक उत्तम स्थान मिलेगा(36)

اور مجھے یقین نہیں ہے کہ قیامت کی گھڑی کبھی آئے گی (پھر مذاق سے کہنے لگا) تاہم اگر کبھی مجھے اپنے رب کی طرف لوٹایا گیا تو وہاں مجھے اس سے بھی زیادہ بہتر جگہ ملے گی (۳۶)

तो उसका मित्र जो उससे बात कर रहा था कहने लाभ कि क्या तुम उस ईश्वर से इनकार करते हो, जिसने तुम्हारे पिता आदम के मिट्टी से उत्पन्न किया फिर उसकी सन्तान तुमको वीर्य से फिर यही पूरा मानव बना (37)

تو اس کا دوست جو اس سے بات کر رہا تھا کہنے لگا کہ کیا تم اس اللہ سے کفر کرتے ہو جس نے تمہارے باپ آدم کو مٹی سے پیدا کیا پھر اس کی اولاد تم کو نطفے سے پھر یہی پورا مرد بنایا (۳۷)

परन्तु मैं अपने रब के साथ किसी के साझी नही करता (38)

مگر میں تو یہ کہتا ہوں کہ اللہ ہی میرا رب ہے اور میں اپنے رب کے ساتھ کسی کو شریک نہیں کرتا (۳۸)

फिर जब तुम अपने उपवन में आए और उन को हरा भरा देखा तो क्यों नही कहा कि वही होता है जो ईश्वर चाहता है (ईश्वर का नियम) उसकी सहायता के बिना कोई कुछ नही कर सकता और यह जो तुमने समझ लिया है कि मैं धन और सन्तान में कम हूं (तो इस बात पर घमण्ड मत करो) (39)

پھر جب تم اپنے باغ میں آئے (اور ان کی شادابی دیکھی) تو کیوں نہیں کہا کہ وہی ہوتا ہے جو اللہ (کا قانون) چاہتا ہے اس کی مدد کے بغیر کوئی کچھ نہیں کر سکتا اور یہ جو تم خیال کرتے ہو کہ میں مال اور اولاد میں کمتر ہوں (تو اس بات پر گھمنڈ مت کرو) (۳۹)

नोट- ईश्वर की सहायता और जो ईश्वर चाहता है का अर्थ यह है कि ईश्वर ने जिस कार्य को करने का जो नियम बताया है उसके अनुसार जो करता है तो वह सफल होता है और जो उसके विरुद्ध करता है वह

نوٹ:۔ اللہ کی مدد اور جو اللہ چاہتا ہے کا مطلب یہ ہے کہ اللہ نے جس کام کو کرنے کا جو قانون بتایا ہے اس کے مطابق جو کرتا ہے تو وہ کامیاب ہوتا ہے اور جو

اس کے خلاف کرنا ہے وہ ناکام ہوتا ہے بس یہی اس کے قانون کے مطابق کرنا اس کی مدد آنا ہے اور اس کی چاہت ہے۔

असफल होता है बस यही उसके नियमानुसार करना उसकी सहायता आना है और उसकी इच्छा है)

(تو سنو!) تو عجب نہیں کہ میرا رب مجھے تمہارے باغ سے اچھا باغ دے دے۔ اور اس تمہارے باغ پر آسمان سے کوئی آفت بھیج دے تو وہ صاف میدان ہو جائے (۴۰)

(तो सुनो!) तो विचित्र नहीं कि मेरा रब मुझे तुम्हारे उपवनो से अच्छा उपवन दे दे और इन तुम्हारे उपवन पर ऊपर से कोई विपत्ति भेज दे तो वह स्पष्ट मैदान हो जाए (40)

یا پھر اس کا پانی نیچے اتر جائے اور تم کسی طرح اس کو نہ نکال سکو (۴۱)

या फिर उसका पानी नीचे उतर जाए और तुम किसी प्रकार उसको न निकाल सको (41)

اور اس کے میووں کو عذاب نے آگھیرا اور وہ اپنی ٹٹیوں پر گر کر رہ گیا تو جو مال اس نے اس پر خرچ کیا تھا اس پر ہاتھ ملتا رہ گیا اور کہنے لگا کہ کاش میں اپنے رب کے ساتھ کسی کو شریک نہ کرتا (۴۲)

और उसके मेवों को विपत्ति ने आ घेरा और वह अपनी टट्टियों पर गिरकर रह गया तो जो धन उसने उस पर व्यय किया था उससे हाथ मलता रह गया और कहने लगा कि यदि मैं अपने रब के साथ किसी को साझी न करता (42)

اور اس کے پاس کوئی جماعت نہ تھی (ان میں سے جن کو اللہ کا شریک بنا رکھا تھا) کہ اللہ کے سامنے اس کی مدد کرتی اور نہ وہ ہی بدلہ لینے کے قابل تھا (۴۳)

और उसके पास कोई दल न था (उनमें से जिनको ईश्वर का साझी बना रखा था) कि ईश्वर के सामने उसकी सहायता करता और न वह बदला ही लेने के योग्य था (43)

اس قصے سے یہ بات ثابت ہوگئی کہ کارسازی کا سارا اختیار اللہ برحق کے لئے ہے وہی بہتر ثواب دینے والا ہے اور بہتر انجام اسی کے ہاتھ میں ہے (۴۴)

इस कथा से यह बात सिद्ध हो गई कि सहायता का सारा अधिकार ईश्वर के लिए है वही अच्छा बदला देने वाला है और उत्तम अन्त उसी के हाथ में है (44)

اے رسول! (ان کو سمجھانے کے لئے) ان کے سامنے دنیا کی زندگی کی مثال بیان کرو (مثلاً) ہم نے آسمان سے پانی برسایا اور زمین سے گھنے پودے نکل آئے (اور ہریالی ہوگئی) پھر ایک دن وہی نباتات سوکھ کر بھس ہوگئی اور ہواؤں کے جھونکے اسے اڑاتے پھرتے ہیں (سچ ہے) اللہ ہر چیز کے اندازے بنانے والا ہے (یعنی اس کا قانون) ہر چیز پر قدرت رکھتا ہے (۴۵)

(ऐ रसूल! उनको समझाने के लिए) उनके सामने दुनिया के जीवन की उपमा वर्णन करो (उदाहरणतः) हमने आकाश से पानी बरसाया और जमीन से घने पौधे निकल आए (और हरयाली हो गई) फिर एक दिन वही वनस्पति सूखकर भुस हो गई और हवाओं के झोंके उसे उड़ाते फिरते हैं (सत्य है) ईश्वर हर वस्तु के अन्दाजे बनाने वाला है (अर्थात उसका नियम) हर वस्तु पर प्रभुत्व रखता है (45)

مال و دولت اور اولاد دنیا کی (چند روزہ) زندگی کی آرائش ہے اور نیکیاں جو باقی رہنے والی ہیں وہ ثواب کے لحاظ سے تمہارے پروردگار کے یہاں بہت اچھی اور امید کے لحاظ سے بہت بہتر ہیں (۴۶)

धन सम्पत्ति और सन्तान दुनिया के (कुछ दिन) जीवन की सज्जा है, और सत्कर्म जो शेष रहने वाले हैं, वह फल की दृष्टि से तुम्हारे स्वामी के यहां बहुत अच्छे और आशा की दृष्टि से बहुत सर्वोत्तम है (46)

اور اس دن (کی فکر کرو) جب ہمارا قانون پہاڑوں کو (زمین سے اکھاڑ کر بادل کی طرح) چلائے گا اور زمین کو کھلے میدان کی حالت میں دیکھو گے اس وقت ہم تمام انسانوں کو اپنے حضور اس طرح اکٹھے کریں گے کہ ایک بھی نہ چھوٹے گا (۴۷)

और उस दिन (की चिन्ता करो) जब हमारा नियम पर्वतों को (धरती से उखाड़ कर बादल की भांति) चलाएगा और पृथ्वी को खुले मैदान की दशा में देखोगे उस समय हम सम्पूर्ण इन्सानों को अपने सम्मुख इस प्रकार संग्रह करेंगे कि एक भी न छुटेगा (47)

اور سب کے سب آپ کے رب یعنی میرے سامنے صفیں بنائے ہوئے حاضر ہوں گے (ارشاد ہوگا دیکھو آج) تم ہمارے پاس اسی حالت میں آئے جس حالت میں ہم نے تم کو پہلی بار پیدا کیا تھا مگر تم نے تو یہ سمجھ رکھا تھا کہ ہم نے تمہارے لئے (دوبارہ اٹھائے جانے کا) کوئی وقت مقرر ہی نہیں کیا تھا (۴۸) [۱۹:۴۹]

और सबके सब आपके रब अर्थात मेरे सामने पंक्ति बनाए हुए उपस्थित होंगे (आदेश होगा देखो आज) तुम हमारे पास उसी दशा में आए जिस दशा में हमने तुम को पहली बार उत्पन्न किया था परन्तु तुमने तो यह समझ रखा था कि हमने तुम्हारे लिए (पुनः उठाए जाने का) कोई समय निश्चित ही नहीं किया था (48) {29:19}

(اور اس روز ہر ایک کے سامنے) نامہ اعمال پیش کیا جائے گا اس وقت تم دیکھو گے کہ جو کچھ اس میں لکھا ہوا ہے اس سے مجرم ڈر رہے ہوں گے اور کہہ رہے ہوں گے

(और उस दिन हर एक के सामने) कर्म पत्र प्रस्तुत किया जाएगा उस समय तुम देखोगे कि जो कुछ उसमें लिखा हुआ है उससे पापी डर रहे होंगे और कह रहे होंगे हाय हमारी कोई बात छोटी बड़ी ऐसी

ہائے ہماری شامت یہ کیسی کتاب ہے ہماری کوئی بات چھوٹی بڑی ایسی نہیں جو اس میں درج نہ ہو اور جو کچھ انہوں نے (دنیا میں) کیا تھا سب اپنے سامنے موجود پائیں گے اور اس دن آپ کا رب یعنی میں اللہ کسی پر ظلم نہ کروں گا (۴۹)[۷:۷،۸،۹، ۷۵:۱۶تا۱۹، ۵۱:۵۹]

नही जो इसमें अंकित न हो और जो कुछ उन्होंने (दुनिया में) किया था सब अपने सामने उपस्थित पाएंगे और उस दिन आपका रब अर्थात मैं ईश्वर किसी पर अत्याचार न करूंगा (49) {7:7-8-9, 75:16से19, 51:59}

(ہم نے آدم کے بنانے کے بارے میں کبھی کچھ کہا تھا) اس وجہ سے جب ہم نے فرشتوں کو حکم دیا تھا کہ آدم کو برتر تسلیم کرتے ہوئے عاجزی کرو (اس کے لئے کام میں لگ جاؤ) تو سب نے حکم کو مانا مگر ابلیس نے (نہ مانا) وہ جنوں میں سے تھا (اس لئے اس نے اپنے آپ کو آدم سے بڑا سمجھا اور) اپنے رب کے حکم سے باہر ہو گیا (اللہ نے) پھر کہا (اے انسانو!) تم مجھے چھوڑ کر اس کو اور اس کی نسل کو کارساز بناتے ہو حالانکہ وہ تمہارے دشمن ہیں (یاد رکھو) یہ بہت ہی بری تبدیلی ہے جو ظلم کرنے والے اختیار کر رہے ہیں (۵۰)

(हमने आदम के बनाने के विषय में कभी कुछ कहा था) इस कारण जब हमने फ़रिश्तों को आदेश दिया था कि आदम को श्रेष्ठ स्वीकार करते हुए नम्रता करो (इस के लिए कार्य में लग जाओ) तो सब ने आदेश को माना परन्तु इबलीस ने (न माना) वह जिन्नों में से था (इस लिए उसने अपने आपको आदम से बड़ा समझा और) रब के आदेश से बाहर हो गया (ईश्वर ने) फिर कहा (ऐ इन्सानों!) तुम मुझे छोड़कर उसको और उसके वंश को सहायक बनाते हो यद्यपि वह तुम्हारे शत्रु हैं (याद रखो) यह बहुत ही बुरा परिवर्तन है जो अत्यचार करने वाले गृहण कर रहे हैं (50)

آسمانوں و زمین کی پیدائش کے وقت میں نے انہیں اپنے پاس (ہاتھ بٹانے کے لئے) نہیں بلایا تھا اور نہ اس وقت انہیں شریک کیا جب خود انہیں پیدا کیا میں ایسا نہ تھا کہ گمراہ کرنے والوں کو اپنا دست بازو بناتا یا کسی کو بھی (۵۱)

आकाशों व पृथ्वी की उत्पत्ति के समय मैंने उन्हें अपने पास (हाथ बटाने के लिए) नही बुलाया था, और न उस समय उन्हें साझी किया जब स्वंय उन्हें उत्पन्न किया मैं ऐसा न था कि भ्रष्ट करने वालों को अपना सहायक बनाता या किसी को भी (51)

اس روز (پروردگار عالم مشرکوں سے) کہے گا، بلاؤ ان ہستیوں کو جنہیں تم سمجھتے تھے کہ میرے شریک ہیں پس وہ ان کو پکاریں گے لیکن کوئی جواب نہ پائیں گے اور ہم ان کے درمیان ایک ہی ہلاکت کا گڑھا مشترک کر دیں گے (۵۲)

उस दिन (संसार का स्वामी अनेकेश्वर वादियों से) कहेगा, बुलाओ उन अस्तित्वों को जिन्हें तुम समझते थे कि मेरे साझी हैं पस वह उनको पुकारेंगें और हम उनके मध्य एक ही विनाश का गढ़ा संयुक्त कर देंगे (52)

اور مجرم دیکھیں گے کہ آگ (بھڑک رہی ہے) پس وہ سمجھ جائیں گے کہ اب انہیں اس میں گرنا ہے اور اس سے بچنے کے لئے کوئی بھاگنے کی راہ نہ پائیں گے (۵۳)

और पापी देखेंगे कि अग्नि (भड़क रही है) पस वह समझ जाएंगे कि अब उन्हें उसमें गिरना है, और उससे बचने के लिए कोई भागने का मार्ग न पाएंगे (53)

ہم نے اس قرآن میں لوگوں کو سمجھانے کے لئے طرح طرح کی مثالوں کو بیان کیا لیکن انسان بڑا ہی جھگڑالو واقع ہوا ہے (سمجھنا ہی نہیں چاہتا) (۵۴)

हमने इस कुरआन में लोगों को समझाने के लिए भांति भांति की उपमाओ को वर्णन किया है, परन्तु इन्सान बड़ा ही झगड़ालू सिद्ध हुआ है (समझना ही नही चाहता) (54)

جب لوگوں کے سامنے ہدایت آگئی تو انہیں ایمان لانے اور اپنے رب کے حضور توبہ کرنے سے کس چیز نے روکا؟ یہی کہ وہ اس بات کے منتظر ہیں کہ ان کے ساتھ بھی وہی سلوک کیا جائے جو اگلی قوموں کے ساتھ کیا گیا ہے یا وہ عذاب کو سامنے آتا دیکھ لیں (۵۵)

जब लोगों के सामने पथ प्रदर्शन आ गई तो उन्हें विश्वास लाने और अपने रब के समक्ष पश्चाताप करने से किस वस्तु ने रोका? यही कि वह इस बात के प्रतिक्षक हैं कि उनके साथ भी वही सलूक किया जाए जो अगली कौमों के साथ किया गया है, या वह कष्ट को सामने आता देख लें (55)

ہم نے رسولوں کو اس لئے بھیجا ہے کہ وہ (نیکی کرنے والوں کو کامیابی کی) بشارت دیدیں اور (بدکاروں کو برے نتائج سے) خبردار کریں لیکن جن لوگوں نے کفر کی راہ اختیار کی ہے وہ جھوٹی باتوں کا سہارا لے کر جھگڑا کرتے ہیں تاکہ سچائی کو دبا دیں انہوں نے ہماری آیتوں کو اور ان باتوں کو جن سے انہیں ڈرایا گیا ہے مذاق اور دل لگی بنا لیا (۵۶)

हमने रसूलों को इस लिए भेजा है कि वह (सत्कर्म करने वालों को सफलता की) शुभ सूचना दे दें और (दुष्कर्मों के बुरे फल से) सावधान कर दें, परन्तु जिन लोगों ने इनकार का मार्ग गृहण किया है वह झूटी बातों का सहारा लेकर झगड़ा करते हैं ताकि सच्चाई को दबा दें उन्होंने हमारी आयतों को और उन बातों को जिन से उनको डराया गया है उपहास और परिहास बना लिया (56)

اور اس شخص سے بڑھ کر ظالم کون ہو سکتا ہے جسے اس کے

और उस व्यक्ति से बढ़ कर अत्याचारी कौन हो

सकते है जिसे उसके रब की आयतों से शिक्षा की जाए और वह उन से मुख फेर ले और जो बुराई उसके हाथों ने करके आगे भेज दी है उसके परिणाम को भूल जाए ऐसे ही लोग है (जिनके दुषकर्मों के आधार पर) हमारे नियम ने उनके हृदयों पर आवरण डाल दिए है कि (कुरआन) समझ ही नही सकते और उनके कानों में भी भार उत्पन्न हो गया है, (कि सत्य ध्वनी सुन ही नही सकते) आपने उन्हें मार्ग पर लाने की कितनी ही कोशिश कर ली (परन्तु वह बुराई करते करते इस स्थान पर पहुंच गए है कि उपदेश को स्वीकार नही करेंगे) वह सत्य मार्ग पर महाप्रलय तक नही आ सकते (57)

رب کی آیتوں سے نصیحت کی جائے اور وہ ان سے منہ پھیر لے اور جو بُرائی اس کے ہاتھوں نے کر کے آگے بھیج دی ہے اس کے نتائج کو بھول جائے ایسے ہی لوگ ہیں (جن کی بداعمالیوں کی بنا پر) ہمارے قانون نے ان کے دلوں پر پردے ڈال دیئے ہیں کہ (قرآن) سمجھ ہی نہیں سکتے اور ان کے کانوں میں بھی گرانی پیدا ہوگئی ہے (کہ صدائے حق سن ہی نہیں سکتے) آپ نے انہیں راہ پر لانے کی کتنی ہی کوشش کر لی (مگر وہ بُرائی کرتے کرتے اس مقام پر پہنچ گئے ہیں کہ ہدایت کو قبول نہیں کریں گے) وہ راہ حق پر قیامت تک نہیں آسکتے (۵۷)

और आपका स्वामी क्षमा करने वाला कृपा वाला है, यदि वह उनके बुरे कर्मों पर उनको शीघ्र पकड़ने लगे तो उन पर झट दण्ड भेज दे परन्तु उनके लिए एक समय (निश्चित कर रखा है) है कि उसके कष्ट से कोई शरण का स्थान नही (58)

اور آپ کا رب بخشنے والا صاحب رحمت ہے اگر وہ ان کے بُرے کاموں پر ان کو جلد پکڑنے لگے تو ان پر جھٹ عذاب بھیج دے مگر ان کے لئے ایک وقت (مقرر کر رکھا) ہے کہ اس کے عذاب سے کوئی پناہ کی جگہ نہیں ہے (۵۸)

और यह बस्तियां (जो ध्वस्त पड़ी हैं) जब उनके निवासीयों ने अत्याचार किया तो हमने उन्हें वध कर दिया और हमने उनके विनाश के लिए एक समय निश्चित कर रखा था (59) {17:16}

اور یہ بستیاں (جو ویران پڑی ہیں) جب ان کے باشندوں نے ظلم کیا تو ہم نے انہیں ہلاک کر دیا اور ہم نے ان کی ہلاکت کے لئے ایک وقت مقرر کر رکھا تھا (۵۹) [۱۷:۱۶]

और जब मूसा ने अपने युवक साथी से कहा था कि अपने प्रयत्न से उस समय तक न हटूंगा जब तक उस स्थान न पहुंच जाऊं जहां दोनों समुन्द्र मिलते हैं चाहे मुझे वर्षों चलना पड़े (60)

اور جب موسیٰ نے اپنے جوان ساتھی سے کہا تھا کہ اپنی کوشش سے اس وقت تک نہ ہٹوں گا جب تک اس جگہ نہ پہنچ جاؤں جہاں دونوں سمندر ملتے ہیں چاہے مجھے برسوں چلنا پڑے (۶۰)

जब वह दोनों समुन्द्र के मिलने के स्थान पहुंचे तो अपनी मछली उन्हें याद नही रही तो उसने समुन्द्र में जाने के लिए सुरंग की भांति एक राह निकाली (61)

جب وہ دونوں سمندر کے ملنے کی جگہ پہنچے تو اپنی مچھلی کا انہیں خیال نہ رہا تو اس نے سمندر میں جانے کے لئے سرنگ کی طرح ایک راہ نکالی (۶۱)

जब वह दोनों आगे बढ़े तो मूसा ने अपने युवक से कहा आज की यात्रा ने हमें बहुत थका दिया है लाओ हमारा जलपान कि भूके न रहें (62)

جب وہ دونوں آگے بڑھے تو موسیٰ نے اپنے جوان سے کہا آج کے سفر نے ہمیں بہت تھکا دیا ہے لاؤ ہمارا ناشتہ (تاکہ بھوکے نہ رہیں) (۶۲)

उसने कहा क्या आपने नही देखा कि जब हम (समुन्द्र के किनारे) चट्टान के पास ठेहरे हुए थे तो मुझे मीन बिलकुल याद नही रही और उसने विचित्र विधि से समुन्द्र में जाने का मार्ग निकाला और शैतान ने मुझे ऐसा अचेत कर दिया कि मैं आपसे उसका वर्णन करना भूल गया (63)

اس نے کہا کیا آپ نے نہیں دیکھا کہ جب ہم (سمندر کے کنارے) چٹان کے پاس ٹھہرے ہوئے تھے تو مجھے مچھلی بالکل یاد نہیں رہی اور اس نے عجیب طریقے سے سمندر میں جانے کی راہ نکالی اور شیطان نے مجھے ایسا غافل کر دیا کہ میں آپ سے اس کا ذکر کرنا بھول گیا (۶۳)

मूसा ने कहा यही वह स्थान है जिसे हम खोज रहें हैं, पस वह दोनों अपने पगों के चिन्हों पर वापस हुए (64)

موسیٰ نے کہا یہی وہ مقام ہے جسے ہم تلاش کرتے ہیں پس وہ دونوں اپنے قدموں کے نشان پر واپس ہوئے (۶۴)

फिर (जब दोनों चट्टान के पास पहुंचे तो) वहां उन्हें हमारे बन्दों में से एक बन्दा मिला जिस पर हमने अपनी अनुकम्पा से दया की थी और उसे अपनी ओर से एक मुख्य ज्ञान प्रदान किया था (65)

پھر (جب دونوں چٹان کے پاس پہنچے تو) وہاں انہیں ہمارے بندوں میں سے ایک بندہ ملا جسے ہم نے اپنی رحمت سے نوازا تھا اور اسے اپنی طرف سے ایک خاص علم عطا کیا تھا (۶۵)

मुसा ने उससे कहा क्या मैं आपके साथ रह सकता हूं ताकि आप मुझे उस ज्ञान में से कुछ भलाई (की बातें) सिखाएं जो आप को सिखाया गया है (66)

موسیٰ نے اس سے کہا کیا میں آپ کے ساتھ رہ سکتا ہوں تاکہ آپ مجھے اس علم سے کچھ بھلائی (کی باتیں) سکھائیں جو آپ کو سکھایا گیا ہے (۶۶)

उसने उत्तर दिया (हां परन्तु) तुम मेरे साथ रह कर

اس نے جواب دیا (ہاں مگر) تم میرے ساتھ رہ کر صبر نہ

धैर्य न कर सकोगे (67)

کر سکو گے(۶۷)

और जिस बात की तुम्हें जानकारी नही उस पर धैर्य कर भी क्यों कर सकते हो (68)

اور جس بات کی تمہیں خبر ہی نہیں اس پر صبر کر بھی کیوں کر سکتے ہو(۶۸)

मूसा ने कहा आप मुझे धैर्य करने वाला पाएंगे क्योंकि ईश्वर यही चाहता है कि वचन पूरा किया जाए और आपके किसी आदेश की अवहेलना न करूंगा (69)

موسیٰ نے کہا آپ مجھے صبر کرنے والا پائیں گے کیونکہ اللہ یہی چاہتا ہے کہ وعدہ پورا کیا جائے اور میں آپ کے کسی حکم کی خلاف ورزی نہ کروں گا(۶۹)

उस ने कहा यदि तुम्हें मेरे साथ रहना है तो (इस बात का वचन करो कि) जब तक मैं स्वंय तुमसे कुछ न कहूं तुम मुझसे कुछ न पूछोगे (70)

اس نے کہا اگر تمہیں میرے ساتھ رہنا ہے تو (اس بات کا وعدہ کرو کہ) جب تک میں خود تم سے کچھ نہ کہوں تم مجھ سے کچھ نہ پوچھو گے(۷۰)

तो दोनों चल पड़े यहां तककि (समुन्द्र के किनारे पहुंचे और) जब नाव में स्वार हो गए तो ईश्वरके मुख्य बन्दे ने उस नाव में दरार डाल दी मूसा ने कहा आप ने इसमें दरार डाल दी ताकि नाव वाले डूब जाएं? आपने क्या भयानक कार्य किया? (71)

تو دونوں چل پڑے یہاں تک کہ (سمندر کے کنارے پہنچے اور) جب کشتی میں سوار ہو گئے تو اللہ کے خاص بندے نے اس کشتی میں شگاف ڈال دیا موسیٰ نے کہا آپ نے اس میں شگاف ڈال دیا تا کہ اہل کشتی ڈوب جائیں؟ آپ نے کیسا خطرناک کام کیا؟(۷۱)

उसने कहा मैंने नही कहा था कि तुम मेरे साथ धैर्य न कर सकोगे (72)

اس نے کہا میں نے نہیں کہا تھا کہ تم میرے ساتھ صبر نہ کر سکو گے(۷۲)

मूसा ने कहा मुझ से भूल हुई इस पर कठोरता से पकड़ न कीजिए मेरी इस त्रुटि पर आप कठोरता से काम न लें (73)

موسیٰ نے کہا مجھ سے جو بھول ہوئی اس پر سختی سے پکڑ نہ کیجئے میری اس غلطی پر آپ سختی سے کام نہ لیں (۷۳)

फिर दोनों चले यहां तक कि उनको एक लड़का मिला तो उस ईश्वर के मुख्या बन्दे ने उसे बध कर डाला उस पर मूसा (से न रहा गया और उस) ने कहा आपने एक निर्दोष (बच्चे) की जान लेली अकारण यद्यपि उसने किसी का बध नही किया था, यह तो आपने बहुत ही बुरा कार्य किया (74)

پھر دونوں چلے یہاں تک کہ ان کو ایک لڑکا ملا تو اس اللہ کے خاص بندے نے اسے قتل کر ڈالا اس پر موسیٰ (سے نہ رہا گیا اور اس) نے کہا آپ نے ایک معصوم (بچے) کی جان لے لی ناحق حالانکہ اس نے کسی کا خون نہیں کیا تھا یہ تو آپ نے بہت ہی بُرا کام کیا(۷۴)

काला अलम (पारा 16)

(قال الم)(پارہ۱۶)

उसने कहा क्या मैंने तुमसे (पहले ही) नही कहा था कि तुम मेरे साथ रह कर धैर्य न कर सकेंगे (75)

اس نے کہا کیا میں نے تم سے (پہلے ہی) نہیں کہا تھا کہ تم میرے ساتھ رہ کر صبر نہ کر سکو گے(۷۵)

मूसा अ० ने कहा (अच्छा) यदि इसके बाद मैं आप से कुछ ज्ञात करूं तो आप मुझे अपने साथ न रखिएगा आप की सेवा में यह मेरी अन्तिम क्षमा है (76)

موسیٰ نے کہا (اچھا) اگر اس کے بعد میں آپ سے کچھ پوچھوں تو آپ مجھے اپنے ساتھ نہ رکھیے گا آپ کی خدمت میں میرا آخری عذر ہے(۷۶)

फिर वह दोनों और आगे बढ़े यहां तक कि एक गांव में पहुंचे (और) गांव वालों से भोजन मांगा उन्होंने अतिथि सत्कार करने से इनकार कर दिया, फिर उन दोनों ने वहां एक पुरानी दीवार देखी जो गीरा चाहती थी मूसा के उस साथी ने उस दीवार को ठीक कर दिया इस पर (मूसा से न रहा गया और) बोल उठे यदि आप चाहते तो इस परिश्रम का बदला उन लोगों से ले सकते थे (77)

پھر وہ دونوں اور آگے بڑھے یہاں تک کہ ایک گاؤں میں پہنچے (اور) گاؤں والوں سے کھانا مانگا انہوں نے مہمان نوازی سے انکار کر دیا پھر ان دونوں نے وہاں ایک (پرانی) دیوار دیکھی جو گرا چاہتی تھی موسیٰ کے اس ساتھی نے اس دیوار کو درست کر دیا اس پر (موسیٰ سے نہ رہا گیا) بول اٹھا اگر آپ چاہتے تو اس محنت کا معاوضہ ان لوگوں سے لے سکتے تھے(۷۷)

नोट- प्रश्न यह है कि मूसा के साथी जिन्होंने नाव को त्रुटि दार किया बच्चे को बध किया और गिरती दीवार को ठीक किया कौन थे? क्या वह कोई मानव थे जो ईश्वर के गुप्त रहस्यों से अवगत थे और रसूलों से ऊंचा स्थान रखते थे कि महामना मूसा जैसे उच्च पद ईशदूत का मार्ग दर्शन करते रहे? हर मुख्य व सामान्य उनको हजरत खिजर रसूल स्वीकार करते है, अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि वह ईशदूत थे तो उनका नाम कुरआन में क्यों अंकित नही? जबकि वह एक ऐसे ईशदूत

نوٹ:۔سوال یہ ہے کہ موسیٰ کے ساتھی جنہوں نے کشتی کو عیب دار کیا، بچے کو قتل کیا اور گرتی ہوئی دیوار کو درست کیا کون تھے؟ کیا وہ کوئی انسان تھے جو اللہ کے راز ہائے بستہ سے واقف تھے اور پیغمبری سے اونچا مقام رکھتے تھے کہ حضرت موسیٰ جیسے بلند مرتبہ رسول کی رہنمائی کرتے رہے؟ ہر خاص و عام ان کو حضرت خضر رسول تسلیم کرتے ہیں اب سوال پیدا ہوتا ہے کہ اگر وہ رسول تھے تو ان کا نام قرآن

सिद्ध हो रहे हैं जो मूसा जैसे रसूल से उच्च हैं जो उनको शिक्षा दे रहे हैं, ऐसे उच्च कोटि वाले ईशदूत का नाम कुरआन में अवश्य होना था, और जैसे मूसा को पुस्तक मिली उनको भी पुस्तक मिलनी थी किन्तु नही मिली? तो इससे सिद्ध हुआ कि वह कोई मानव रसूल नही थे अपितु वह एक उच्च कोटि ईशदूत के गुरू के पद से सामने आ रहे हैं कुरआन उनको ऐसा ही बता रहा है न कि मूसा से कम या सहायक साथी.

میں کیوں درج نہیں جب کہ وہ ایک ایسے رسول ثابت ہو رہے ہیں جو موسیٰ جیسے رسول سے اعلیٰ ہیں جو ان کو تعلیم دے رہے ہیں ایسے بلند مرتبہ والے رسول کا نام قرآن میں ضرور ہونا تھا اور جیسے موسیٰ کو کتاب ملی ان کو بھی کتاب ملنی تھی لیکن نہیں ملی تو اس سے ثابت ہوا کہ وہ کوئی انسان رسول نہیں تھے بلکہ وہ ایک بلند مرتبہ رسول کے استاد کی حیثیت سے سامنے آرہے ہیں قرآن ان کو ایسا ہی بتا رہا ہے نہ کہ موسیٰ سے کم درجے کا یا مددگار ساتھی۔

इन बातों से यह ही सिद्ध हो रहा है कि वह इन्सान नही थे, ईश्वर ने एक फरिश्ते को इन्सान की रूप रेखा में दुनिया में भेजा ताकि श्रीमान मूसा को और उनके द्वारा तमाम इन्सानों को उस यथार्त से अवगत किया जाए कि संसार में जगत के स्वामी की इच्छा से बहुत से कार्य ऐसे होते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से अनुचित ज्ञात होते हैं परन्तु इस प्रत्यक्ष बुराई में ईश्वर की विधि गुप्त होती है और इन्सान उसको अन्याय समझता है परन्तु वास्तव में वह ईश्वर की अनुकम्पा होती है

ان باتوں سے یہ ہی ثابت ہو رہا ہے کہ وہ انسان نہیں تھے اللہ نے ایک فرشتے کو انسان کی شکل میں دنیا میں بھیجا تا کہ حضرت موسیٰ کو اور ان کے ذریعہ تمام انسانوں کو اس حقیقت سے آگاہ کیا جائے کہ کائنات میں پروردگار عالم کی مشیت سے بہت سے کام ایسے ہوتے ہیں جو بظاہر برے معلوم ہوتے ہیں لیکن اس ظاہری برائی میں اللہ کی مصلحت پوشیدہ ہوتی ہے اور انسان اس کو ظلم سمجھتا ہے لیکن حقیقت میں وہ اللہ کی رحمت ہوتی ہے۔

शायद खिज़ा से फसल ऊंचा हो बहार की,
कुछ मसलहत इसी में हो परवर दिगार की

شاید خزاں سے فصل عیاں ہو بہار کی   کچھ مصلحت اسی میں ہو پروردگار کی

(यह सुन कर उस बन्दे ने कहा) कहा अब मेरे और तुम्हारे वियोग का समय आ गया (परन्तु पृथक होने से पहले) तुम्हें उन बातों का यथार्त बताए देता हूं जिस पर तुम धैर्य न कर सके (78)

(یہ سن کر اس بندے نے کہا) کہا اب میری اور تمہاری جدائی کا وقت آگیا (لیکن جدا ہونے سے پہلے) تمہیں ان باتوں کی حقیقت بتائے دیتا ہوں جن پر تم صبر نہ کر سکے (۷۸)

नाव का विषय यह रहा कि वह कुछ निर्धनों की थी जो दरया में (नाव चला कर) निर्वाह करते थे वह जिस ओर जा रहे थे वहां एक अन्यायी राजा है, जिसकी नाव अच्छी देखता है छीन लेता है (इस लिए) मैंने चाहा कि उस नाव को त्रुटि वाली बना दूं (ताकि राजा उसे न ले और निर्धन लोग बड़ी हानि से बच जाएं (79)

کشتی کا معاملہ یہ ہے کہ وہ چند مسکینوں کی تھی جو دریا میں (کشتی چلا کر) گزارا کرتے تھے وہ جس طرف جا رہے تھے وہاں ایک ظالم بادشاہ ہے، جس کی کشتی اچھی دیکھتا ہے چھین لیتا ہے (اس لئے) میں نے چاہا کہ اس کشتی کو عیب دار بنا دوں (تا کہ بادشاہ اسے نہ لے اور غریب لوگ بڑے نقصان سے بچ جائیں) (۷۹)

रहा लड़के का विषय तो वह यूं है कि उसके माता पिता आस्तिक हैं (और उस लड़के का चलन अच्छा नही है) हमें शंका हुई की वह उनको (अपनी भांति) अवज्ञा और नास्तिकता में न फंसा दे (80)

رہا لڑکے کا معاملہ تو وہ یوں ہے کہ اس کے ماں باپ مومن ہیں (اور اس لڑکے کے تیور اچھے نہیں ہیں) ہمیں اندیشہ ہوا کہ کہیں وہ ان کو (اپنی طرح) سرکشی اور کفر میں نہ پھنسا دے (۸۰)

अतः हमने चाहा कि उनका रब उस लड़के के बदले उन्हें ऐसा पुत्र दे जो चरित्र में अच्छा हो और स्नेह करने में उससे उत्तम हो (81) [19:13]

لہٰذا ہم نے چاہا کہ ان کا رب اس لڑکے کے بدلے انہیں ایسا بیٹا دے جو اخلاق میں اچھا ہو اور محبت کرنے میں اس سے بہتر ہو (۸۱) [۱۹:۱۳]

रहा दीवार का विषय तो वह नगर के दो अनाथ लड़को की है जिसके नीचे उनका कोष गढ़ा हुआ है उनका पिता एक सदचारी व्यक्ति था अतः तुम्हारे रब ने चाहा कि दोनों लड़के विवेक चेतना को पहुंचे व्यस्क हों और अपना कोष (दीवार के नीचे से) निकाल लें (इसलिए दीवार की रक्षा की गई कि कोष सुरक्षित रहे) यह उन लड़को पर तुम्हारे रब की अनुकम्पा थी और यह (सारे कार्य) मैंने अपनी इच्छा से नही किए यह है यथार्थ कि उन बातों का जिन पर तुम धैर्य न कर सके (82)

رہا دیوار کا معاملہ تو وہ شہر کے دو یتیم لڑکوں کی ہے جس کے نیچے ان کا خزانہ دفن ہے ان کا باپ ایک نیک آدمی تھا اس لئے تمہارے رب نے چاہا کہ دونوں لڑکے سن شعور کو پہنچیں اور اپنا خزانہ (دیوار کے نیچے سے) نکال لیں (اس لئے دیوار کی حفاظت کی گئی کہ خزانہ محفوظ رہے) یہ ان لڑکوں پر تمہارے رب کی رحمت تھی اور یہ (سارے کام) میں نے اپنی مرضی سے نہیں کئے یہ ہے حقیقت ان باتوں کی جن پر تم صبر نہ کر سکے (۸۲)

नोट- यह कार्य मैंने अपनी इच्छा से नही किए तो स्पष्ट है यह काम ईश्वर के आदेश से किए जो ईश्वर ने जानकारी दी थी, ईश्वर ने अपने ईशदूतों से कभी सीधे आवरण के पीछे से बाते की और अपने आदेश दिए और कभी अपने फरिश्ते जिबराईल के द्वारा वही के द्वारा अपने

نوٹ:۔ یہ کام میں نے اپنی مرضی سے نہیں کئے تو ظاہر ہے یہ کام اللہ کے حکم سے کئے جو اللہ نے علم دیا تھا اللہ نے اپنے نبیوں سے کبھی براہ راست پردے کے پیچھے سے بات کی اور اپنے حکم دئے اور کبھی اپنے فرشتے جبرئیل کے ذریعہ وحی کے

आदेश दिए प्रत्यक्ष आदेश लेने वालों में महामना मूसा का नाम भी सम्मिलित है, परन्तु यह विषय ईश्वर और मूसा का सीधे का नही है अपितु उस बन्दे के माध्यम से है कि यह कार्य मैंने अपनी इच्छा से नही किए तो सिद्ध हुआ वह बन्दा कोई मानव न था अपितु वह वही था जिसके द्वारा ईश्वर अपने आदेश अपने ईशदूतों के पास प्रेषित करता था, अर्थात जिबराईल फरिश्ते के द्वारा इसलिए वह बन्दा खिजर नही था यदि खिजर कोई थे तो उनका नाम कुरआन में अंकित होना था उनके पद मान की दृष्टि से परन्तु कुरआन में नाम नही तो वह बन्दा खिजर नही था जिबराईल थे,

ذریعہ اپنے احکام دئے. براہ راست احکام لینے والوں میں حضرت موسیٰ کا نام بھی شامل ہے لیکن یہ معاملہ اللہ اور موسیٰ کا براہ راست کا نہیں ہے بلکہ اس بندے کے واسطے سے ہے جو آیات میں ظاہر ہے اور اس نے کہا ہے کہ یہ کام میں نے اپنی مرضی سے نہیں کئے تو ثابت ہوا وہ بندہ کوئی انسان نہ تھا بلکہ وہ وہی تھا جس کے ذریعہ اللہ اپنے احکام اپنے نبیوں کے پاس بھیجا کرتا تھا یعنی جبرئیل فرشتے کے ذریعہ اس لئے وہ بندہ خضر نہیں تھا اگر خضر کوئی نبی تھے تو ان کا نام قرآن میں درج ہونا تھا ان کے مرتبہ کے لحاظ سے لیکن قرآن میں نام نہیں تو وہ بندہ خضر نہیں تھا جبرئیل تھے.

(ऐ मुहम्मद!) लोग आपसे ज़ुलकर नैन के विषय में भी प्रश्न करेंगे तो आप कहना मैं उसकी सूचना कुछ तुम्हें पढ़कर सुनाता हूं (83)

(اے محمدؐ) لوگ آپ سے ذوالقرنین کے بارے میں بھی معلوم کریں گے آپ کہنا میں اس کا حال کسی قدر تمہیں پڑھ کر بتا تا ہوں (۸۳)

हमने उसको पृथ्वी में सत्ता दी थी और उसके लिए हर प्रकार की सामग्री प्रस्तुत की थी (84)

हम ने اس کو زمین میں اقتدار بخشا تھا اور اس کے لئے ہر طرح کا ساز و سامان مہیا کر دیا تھا (۸۴)

वह एक मार्ग के पीछे लगा अर्थात एक अभियान का सामान किया (85)

وہ ایک راہ کے پیچھے لگا یعنی ایک مہم کا سامان کیا (۸۵)

यहां तक कि वह सूर्य डूबने के स्थान पहुंच गया (अर्थात पश्चिमि देश विज्य लिए) वहां उसे सूर्य ऐसा दिखाई दिया जैसे एक काली दल दल की झील में डूब रहा है, और उसके निकट एक जाति को आबाद पाया हमने कहा ऐ ज़ुलकर नैन (अब यह लोग तेरे अधिकार में हैं ईश्वर के नियामानुसार) तू उन्हें दण्ड भी दे सकता है और उनके साथ अच्छा व्यवहार भी कर के अपना बना सकता है (86)

یہاں تک کہ وہ سورج ڈوبنے کی جگہ پہنچ گیا (یعنی مغربی ممالک فتح کئے) وہاں اسے سورج ایسا دکھائی دیا جیسے ایک سیاہ دلدل کی جھیل میں ڈوب رہا ہے اور اس کے قریب ایک قوم کو آباد پایا ہم نے کہا اے ذوالقرنین (اب یہ لوگ تیرے اختیار میں ہیں قانون الٰہی کے مطابق) تو انہیں سزا بھی دے سکتا ہے اور ان کے ساتھ اچھا سلوک کر کے اپنا بنا سکتا ہے (۸۶) حطیۃ

ज़ुलकर नैन ने कहा (हम किसी पर अन्याय न करेंगे हां ईश्वर के नियामानुसार) जो अवज्ञा करेगा उसे अवश्य दण्ड देंगे फिर वह अपने रब की ओर लौटेगा फिर वह ईश्वर उसे कठोर यातना में ग्रस्त करेगा (87)

ذوالقرنین نے کہا (ہم کسی پر زیادتی نہ کریں گے ہاں قانون الٰہی کے مطابق) جو سرکشی کرے گا اسے ضرور سزا دیں گے پھر وہ اپنے پروردگار کی طرف لوٹے گا اور پروردگار اسے سخت عذاب میں مبتلا کرے گا (۸۷)

परन्तु जो विश्वास लाया और उसने अच्छे कार्य भी किए तो उसके बदले उसे भलाई मिलेगी और हम उसे ऐसी बातों का आदेश देंगे जिनमें आसानी हो (88)

لیکن جو ایمان لایا اور اس نے اچھے کام بھی کئے تو اس کے بدلے اسے بھلائی ملے گی اور ہم اسے ایسی باتوں کا حکم دیں گے جن میں آسانی ہو (۸۸)

फिर उसने एक दूसरे अभियान की तैयारी की (89)

پھر اس نے ایک دوسری مہم کی تیاری کی (۸۹)

यहां तक कि सूर्य निकलने की अन्तिम सीमा तक पहुंच गया (अर्थात उसको ऐसा लगा कि सूर्य यहां से ही निकलता है अर्थात उससे आगे वह नही जा सकता था मानों आगे समुन्द्र था और समुन्द्र के किनारे खड़े हो कर देखने से ऐसा लगता है कि निकट ही समुन्द्र में से ही सूर्य उदेय हो रहा है) उसने सूर्य को एक ऐसे समुदाय पर उदय होते देखा जिनके लिए हमने सूर्य के इधर कोई आड़ नही रखी (अर्थात कोई वृक्ष या भवन इत्यादि न था अर्थात अभी उनमें इतनी चेतना नही आई थी कि वह धूप वर्षा इत्यादि से बचने के लिए कोई भवन साया इत्यादि बनाते और न ही उस क्षेत्र में वृक्ष इत्यादि उगे थे) (90)

یہاں تک کہ سورج نکلنے کی آخری حد تک پہنچ گیا (یعنی اس کو ایسا لگا کہ سورج یہاں سے ہی نکلتا ہے یعنی اس سے آگے وہ نہیں جا سکتا تھا گویا آگے سمندر تھا اور سمندر کے کنارے کھڑے ہو کر دیکھنے سے ایسا لگتا ہے کہ قریب ہی سمندر میں سے ہی سورج طلوع ہو رہا ہے) اس نے آفتاب کو ایک ایسی قوم پر طلوع ہوتے دیکھا جن کے لئے ہم نے آفتاب کے ادھر کوئی آڑ نہیں رکھی (یعنی کوئی درخت یا مکان وغیرہ نہ تھا یعنی ابھی ان میں اتنی عقل نہیں آئی تھی کہ وہ دھوپ بارش وغیرہ سے بچنے کے لئے کوئی مکان سایہ وغیرہ بناتے اور نہ ہی اس علاقے میں درخت وغیرہ اُگے تھے) (۹۰)

उनकी दशा ऐसी ही थी और जो कुछ ज़ुलकर नैन के पास था उसकी हमें पूरी सूचना थी (91)

ان کی حالت ایسی ہی تھی اور جو کچھ ذوالقرنین کے پاس تھا اس کی ہمیں پوری خبر تھی (۹۱)

नोट- अर्थ यह हो सकता है कि उस जाति ने अभी तक धर्म की बातों को नही समझा था कदाचित उनके पास कोई ईशदूत नही पहुंचा था किन्तु जैसा कि ऊपर वाली आयात में आलिमों ने लिखा है कि वह कोई बात नही समझते थे तो फिर नीचे वाली आयत में यह क्या है कि उन्होंने कहा यदि दोनों की भाषाएं पृथक थी तो फिर ज़ुलकर नैन ने उनकी बात कैसे समझ ली? अर्थ यह है कि पृथक है कि पृथक क्षेत्र होने से भाषा अलग थी और बात समझाने के लिए संकेत करना पड़ते थे या कुछ ऐसे शब्द थे जो दोनों में प्रचलित थे और उनके द्वारा बात होती थी.

नोट- सूरत कहफ की आयात 93 से 99 तक ज्ञानीयों ने याजूज माजूज के विषय में जो लिखा है उसमें मतभेद दीखता है कतिपय उनको तातारी या मंगोल तुर्क चंगेजी रूसी या चीनी जातियां लिखते है और उनको ही याजूज माजूज मानते है कतिपय का कहना है कि मुस्लिम के कथन में है कि याजूज माजूज का प्रकट होना श्रीमान ईसा अ0 के अवतर्ण के बाद होगा, परन्तु इस मतभेद के होते हुए सब उनको मानव जाति ही मानते है और बड़े भयंकार लिखते है कि उनको ज़ुलकरनैन ने एक दीवार बनाकर बन्द कर दिया और वह ईसा अ0 के काल में निकलेंगे और बड़ा फिसाद फैलाऐंगे.

प्रश्न उत्पन्न होता है कि जब वह बड़े फिसादी है तो ज़ुलकरनैन ने उनको समाप्त क्यों न किया जबकि वह ज़ुलकर नैन से कमज़ोर थे यदि ज़ुलकर नैन से शक्ति शाली थे तो उन्होंने वह दीवार क्यों बनाने दी वह उस दिवार को न बनने देते और ज़ुलकरनैन को मार भगाते और कहा यह जाता है कि याजूज माजूज उस दिवार पर न चढ़ सकेंगे और न छेद कर सकेंगे? जब वह मानव जैसी रचना है तो उस दिवार पर क्यों नही चढ़ सकते जबकि आज हम देख रहे है कि यह मानव हर दिवार, पर्वत, यहां तक कि आकाश में भी चढ़ रहा है, तो फिर वह क्यों नही चढ़ सकते और क्यों छेद नही कर सकते, दूसरी बात यह कि जब उनको एक मुख्य स्थान पर बन्द कर दिया है तो उस जगह में तो चलते फिरते होंगे तो आज तक किसी खोज करने वाले ने उनको खोजा क्यों नही या जिस जाति के कहने पर ज़ुलकरनैन ने वह दिवार बनाई थी आज तक उन्होंने भी किसी पर्यटक से न बताया कि देखो जिनको हमारे पूर्वजों के कहने से ज़ुलकरनैन ने बन्द किया था वह जाति वह है जो इस क्षेत्रों में बन्द है और अपने क्षेत्र में ही अनाज उत्पन्न करके खाते पीते है, क्या किसी ने यह बताया है? नही बताया तो सामने यह वास्तिविक्ता आई कि याजूज माजूज कोई जीती जागती चलती फिरती रचना नही जिसके हाथ, पैर, आंख, कान, मुख हो.

रहा प्रश्न चीनी तातारी, रूसी जाति को बताना तो क्या अब तक भी हमको सूझ न आई कि जिस जाति याजूज माजूज को हम कयामत का चिन्ह बता रहे है वह तो और मानव की भांति जीवन व्यतीत कर रहें है, और वह दिवार पर चढ़ रहें है, पहाड़ों में सुराख कर रहे है आकाश में उड़ान कर रहे है दूसरे देशों के रहने वालों से मिलते जुलते है, इन सब बातों को देख कर ही ज्ञानी अपने अनुवाद और तफ़्सीर को बदल लेते, परन्तु नही बदला और पहली बात को ही उचित बता रहे है क्या यह उचित गतिविधि है? वास्तिविक्ता कुछ और नज़र आ रही है.

ज्ञानीयों ने याजूज माजूज का स्थान बताने की भी कोशिश की है परन्तु आयात के बताए के अनुसार ठीक सिद्ध नही होती, आयात में है कि ज़ुलकर नैन ने तीन सफ़र किए एक यात्रा में उस स्थान पहुंचा जहां सूर्य कीचड़ में अस्त हो रहा है दूसरी यात्रा करते करते वह

نوٹ:۔مطلب یہ ہوسکتا ہے کہ اس قوم نے ابھی تک دین کی باتوں کونہیں سمجھا تھا شاید ان کے پاس کوئی نبی نہیں پہنچا تھا مگر جیسا کہ اوپر والی آیت میں عالموں نے لکھا ہے کہ وہ کوئی بات نہیں سمجھتی تھی تو پھر نیچے والی آیت میں یہ کیا ہے کہ انہوں نے کہا اگر دونوں کی زبان الگ تھیں تو پھر ذوالقرنین نے ان کی بات کیسے سمجھ لی؟ مطلب یہ ہے کہ الگ علاقہ ہونے سے زبان الگ تھی اور بات سمجھنے کے لئے اشارہ کرنا پڑتا تھا یا کچھ ایسے الفاظ تھے جو دونوں میں مشترک تھے اور ان کے ذریعہ بات ہوتی تھی۔

نوٹ:۔سورت کہف کی آیات ۹۲ سے ۹۹ تک عالموں نے یاجوج وماجوج کے بارے میں جولکھا ہے اس میں اختلاف نظر آتا ہے بعض ان کو تاتاری یا منگول ترک چنگیزی، روسی یا چینی قومیں لکھتے ہیں اور ان کو ہی یاجوج ماجوج مانتے ہیں بعض کا کہنا ہے کہ مسلم کی روایت میں ہے کہ یاجوج ماجوج کا ظہور حضرت عیسیٰؑ کے نزول کے بعد ہوگا لیکن اس اختلاف کے ہوتے ہوئے سب ان کو انسانی قوم ہی مانتے ہیں اور بڑے خونخوار لکھتے ہیں کہ ان کو ذوالقرنین نے ایک دیوار بنا کر بند کردیا اور وہ عیسیٰ کے زمانے میں نکلیں گے اور بڑا فساد پھیلائیں گے۔

سوال پیدا ہوتا ہے کہ جب وہ بڑے فسادی ہیں تو ذوالقرنین نے ان کوختم کیوں نہ کیا جب کہ وہ ذوالقرنین سے کمزور تھے اگر ذوالقرنین سے طاقت ور تھے تو انہوں نے وہ دیوار کیوں بنانے دی وہ اس دیوار کو نہ بننے دیتے اور ذوالقرنین کو مار بھگاتے اور کہا یہ جاتا ہے کہ یاجوج ماجوج اس دیوار پر نہ چڑھ سکیں گے اور نہ سوراخ کرسکیں گے؟ جب وہ انسان جیسی مخلوق ہیں تو اس دیوار پر کیوں نہیں چڑھ سکتے جب کہ آج ہم دیکھ رہے ہیں کہ یہ انسان ہر دیوار پہاڑ یہاں تک کہ آسمان میں بھی چڑھ رہا ہے تو پھر وہ کیوں نہیں چڑھ سکتے اور کیوں سوراخ نہیں کرسکتے دوسری بات یہ کہ جب ان کو ایک خاص مقام پر بند کردیا ہے تو اس جگہ میں تو چلتے پھرتے ہوں گے تو آج تک کسی تلاش کرنے والے نے ان کو تلاش کیوں نہ کیا یا جس قوم کے کہنے پر ذوالقرنین نے وہ دیوار بنائی تھی آج تک انہوں نے بھی کسی سیاح سے نہ بتایا کہ دیکھو جن کو ہمارے بزرگوں کے کہنے سے ذوالقرنین نے بند کیا تھا وہ قوم وہ ہے جو اس علاقے میں بند ہے اور اپنے علاقے میں ہی غلہ پیدا کرکے کھاتے پیتے ہیں کیا کسی نے یہ بتایا ہے؟ نہیں بتایا تو سامنے یہ حقیقت آئی کہ یاجوج ماجوج کوئی جیتی جاگتی چلتی پھرتی مخلوق نہیں جس کے ہاتھ پیر آنکھ کان منہ ہوں۔

رہا سوال چینی تاتاری، روسی قوم کو بتانا تو کیا اب تک بھی ہم کو عقل نہ آئی کہ جس قوم یاجوج ماجوج کو ہم قیامت کی نشانی بتارہے ہیں وہ تو اور انسانوں کی طرح زندگی بسر کررہے ہیں اور وہ دیوار پر چڑھ رہے ہیں پہاڑوں میں سوراخ کررہے ہیں آسمان میں پرواز کررہے ہیں دوسرے ملکوں کے رہنے والوں سے ملتے جلتے ہیں ان سب باتوں کو دیکھ کر ہی علماء کرام اپنے ترجمے اور تفاسیر کو بدل لیتے مگر نہیں بدلا اور پہلی بات کو ہی صحیح بتارہے ہیں کیا یہ درست رویہ ہے؟ حقیقت کچھ اور نظر آرہی ہے۔

مفسروں نے یاجوج ماجوج کی جگہ بتانے کی بھی کوشش کی ہے مگر آیات کے بتائے کے مطابق درست ثابت نہیں ہوتی آیات میں ہے کہ ذوالقرنین نے تین سفر کئے ایک سفر میں وہ اس جگہ پہنچے جہاں سورج کیچڑ میں

उस स्थान पर पहुंचे जहां सूर्य निकल रहा था अर्थात उन स्थानों के आगे पानी था तो ज़ुलकर नैन का चलना फिरना ख़ुशक पृथ्वी में रहा, पानी में वह इसलिए नही गए क्योंकि उनके पास पानी में यात्रा करने के साधन न थे फिर उसने तीसरी यात्रा (मुहिम) का इरादा किया और जब वहां पहुंचे तो वहां के रहने वालों ने उनसे एक प्रार्थना की तो इस यात्रा से भी सिद्ध हो रहा है कि यह मुहिम (यात्रा) भी ख़ुशकी में थी और जिन क्षेत्रों में उन्होंने यात्रा की वह सब आपस में मिले थे अलग-अलग नही थे, और जहां उन्होंने दिवार बनाई वह भी उस शुष्क पृथ्वी से मिला क्षेत्र है फिर आज तक उस शुषकी से मिले किसी क्षेत्र में वह जाति क्यों न मिली? अब देखा जाए क़ुरआन क्या बताता है पहले प्रचलित अनुवाद पढ़ा जाए

सूरत कहफ आयत 92 वह फिर एक यात्रा के सामान में लगा,

(93) यहां तक कि जब दो दीवारों के दर मियान पहुंचा उन दोनों के परें उसने एक ऐसी जाति पाई जो बात समझाने के निकट भी न थी,

(94) उन्होंने कहा ऐ ज़ुलकर नैन याजूज माजूज इस देश में (बड़े) भारी उपद्रेवी है तो क्या हम आपके लिए कुछ व्यय का प्रबन्ध कर दें आप हमारे और उनके दरमियान एक दीवार बना दे

(95) उसने उत्तर दिया कि मेरे अधिकार में मेरे ईश्वर ने जो दे रखा है वही उत्तम है, तुम केवल शक्ति से मेरी सहायता करो,

(96) मैं तुममें और उनमें शक्ति शाली आड़ बना देता हूं मुझे लोहे की चादरे ला दो यहां तक कि जब उन दोनों पहाड़ो के बीच में दीवार बराबर कर दी तो आदेश दिया कि आग तेज़ जलाओ तो उन्होंने आग जलाई और उन चादरों को बिल्कुल आग कर दिया तो कहा मेरे पास लाओ इस पर पिघला हुआ तांबा डाल दूं

(97) पस तो उनमें उस दीवार के ऊपर चढ़ने की शक्ति न थी और न उसमें कोई छेद कर सकते थे

(98) कहा यह केवल मेरे रब की कृपा है हां जब मेरे रब का वचन आएगा तो उसे ध्वस्त कर देगा, निःसंदेह मेरे रब का वचन सच्चा और हक़ है,

आयत में स्पष्ट है कि उनमें उस (पर्वत) पर चढ़ने और सुराख़ करने की क्षमता नही थी यदि वह मानव जैसी रचना होती जैसे ज्ञानियों ने लिखा है तो और मानव की भांति वह अवश्य उस दीवार पर चढ़ने और सुराख़ करने की कोशिश करते और चढ़ जाते जैसे और मानव करते हैं मानव हर स्थान पहुंच रहा है परन्तु ईश्वर कहता है वह नही चढ़ सकते और ईश्वर की बात सच है तो सिद्ध हुआ वह मानव जैसी रचना नही है क्या है क़ुरआन से उत्तर लिया जाए आयत में शब्द याजूज माजूज है पहले इसका माद्दह (रूट) और अर्थ देखा जाए इसका रूट अजज है और इसका अर्थ बहुत कड़वा और गर्म पानी है इसके अतिरिक्त और भी कई अर्थ हैं अतः अर्थ हुआ कड़वा और बहुत तेज़ गर्म पानी की लहरें जिनको मोज भी कहा जा सकता है मोज पर मोज याजूज माजूज का अर्थ सामने आने के बाद जो आयात का अर्थ बनता है अवलोकन हो इससे पहेल कि इन आयात का अर्थ लिखा जाए सूरत अंबिया की आयात 95-96 और सूरत अलअनफ़तार की आयत 3 का भाव अवलोकन हो,

अलअनफ़तार आयत 3 और जब दरया उबल पड़ेंगे अर्थात खोल कर अपनी सीमा से बाहर हो जाएंगे यही उबलना है

غروب ہورہا ہے دوسرا سفر کرتے کرتے وہ اس مقام پر پہنچے جہاں سورج طلوع ہورہا تھا یعنی ان مقاموں کے آگے پانی تھا تو ذوالقرنین کا چلنا پھرنا خشک زمین میں رہا، پانی میں وہ اس لئے نہیں گئے کیوں کہ ان کے پاس پانی میں سفر کرنے کے ذرائع نہ تھے پھر اس نے تیسری مہم کا ارادہ کیا اور جب وہاں پہنچے تو وہاں کے رہنے والوں نے اُن سے ایک درخواست کی تو اس سفر سے بھی ثابت ہورہا ہے کہ یہ مہم بھی خشکی میں تھی اور جن علاقوں میں انہوں نے سفر کیا وہ سب آپس میں ملے تھے الگ الگ نہیں تھے اور جہاں انہوں نے دیوار بنائی وہ بھی اس خشک زمین سے ملا علاقہ ہے پھر آج تک اس خشکی سے ملے کسی علاقے میں وہ قوم کیوں نہ ملی؟ اب دیکھا جائے قرآن کیا بتاتا ہے پہلے رائج الوقت ترجمہ پڑھا جائے

سورت الکہف آیت (۹۲) وہ پھر ایک سفر کے سامان میں لگا۔

(۹۳) یہاں تک کہ جب دو دیواروں کے درمیان پہنچا ان دونوں کے پرے اس نے ایک ایسی قوم پائی جو بات سمجھنے کے قریب بھی نہ تھی۔

(۹۴) انہوں نے کہا اے ذوالقرنین یاجوج ماجوج اس ملک میں (بڑے) بھاری فسادی ہیں تو کیا ہم آپ کے لئے کچھ خرچ کا انتظام کردیں آپ ہمارے اور ان کے درمیان ایک دیوار بنادیں۔

(۹۵) اس نے جواب دیا کہ میرے اختیار میں میرے پروردگار نے جو دے رکھا ہے وہی بہتر ہے تم صرف قوت سے میری مدد کرو۔

(۹۶) میں تم میں اور ان میں مضبوط حجاب بنادیتا ہوں مجھے لوہے کی چادریں لادو یہاں تک کہ جب ان دونوں پہاڑوں کے درمیان دیوار برابر کردی تو حکم دیا کہ آگ تیز جلاؤ تو انہوں نے آگ جلائی اور لوہے کی ان چادروں کو بالکل آگ کردیا تو فرمایا میرے پاس لاؤ اس پر پگھلا ہوا تانبہ ڈال دوں۔

(۹۷) پس تو ان میں اس دیوار کے اوپر چڑھنے کی طاقت نہ تھی اور نہ اس میں کوئی سوراخ کرسکتے تھے۔

(۹۸) کہا یہ صرف میرے رب کی مہربانی ہے ہاں جب میرے رب کا وعدہ آئے گا تو اسے زمین بوس کردے گا بے شک میرے رب کا وعدہ سچا اور حق ہے۔

آیت میں صاف ہے کہ ان میں اس (پہاڑ) پر چڑھنے اور سوراخ کرنے کی طاقت نہیں تھی۔ اگر وہ انسان نما مخلوق ہوتی جیسی عالموں نے لکھی ہے تو اور انسانوں کی طرح وہ ضرور اس دیوار پر چڑھنے اور سوراخ کرنے کی کوشش کرتے اور چڑھ جاتے جیسے اور انسان کرتے ہیں انسان ہر جگہ پہنچ رہا ہے لیکن اللہ کہتا ہے وہ نہیں چڑھ سکتے اور اللہ کی بات سچ ہے تو ثابت ہوا وہ انسان نما مخلوق نہیں ہے کیا ہے قرآن سے جواب لیا جائے۔ آیت میں لفظ یاجوج ماجوج ہے پہلے اس کا مادہ اور مطلب دیکھا جائے اس کا مادہ (اَجَ جَ) (اَجَ) ہے اور اس کا مطلب بہت کڑوا اور سخت گرم پانی ہے اس کے علاوہ اور بھی کئی معنی ہیں اس لئے مطلب ہوا بہت کڑوا اور سخت تیز گرم پانی کی لہریں جن کو موج بھی کہا جاسکتا ہے موج در موج یا جوج ماجوج کا معنی سامنے آنے کے بعد جو آیات کا مطلب بنتا ہے وہ ملاحظہ ہو۔ اس سے پہلے کہ ان آیات کا مطلب لکھا جائے سورت انبیاء کی آیت (۹۵،۹۶،۹۷) اور سورت الانفطار کی آیت (۳) کا مفہوم ملاحظہ ہو۔

الانفطار، آیت ۳/ اور جب دریا ابل پڑیں گے یعنی دریا کھول کر اپنی حدود سے باہر ہوجائیں گے یہی ابلنا ہے

सूरत अंबिया आयत 95 और जिस बस्ती को हमारे नियम ने नष्ट कर दिया उस पर रोक लगी है यह कि वहां के लोग पलट कर नही आएंगे.
(96) यहां तक कि जब याजूज और माजूज अर्थात बहुत कड़वे और बहुत तेज गर्म पानी की लहरें खोल दी जाएंगी अर्थात दरया उबल पड़ेंगे तब वह नष्ट हुए मानव हर ऊंचाई से दोड़ते हुए आएंगे.
(97) और सच्चा वचन निकट आजाए तो अचानक नास्तिकों की आंखे खुली की खुली रह जाएं और कहें हमारी शामत हम इससे अचेतना में रहे अपितु हम अत्याचारी थे. इनके बाद अब अलकहफ की आयत 92 से 98 तक का भाव लिखा जा रहा है.

फिर वह एक और सामान के पीछे लगा (92)

यहां तक कि दो पहाड़ों के बीच पहुंचा तो देखा कि उन पर्वतों की घाटियों में इस ओर कुछ लोग है और यह बात को भली भांति समझने के योग्य न थे (93)

उन लोगों ने कहा कि ज़ुलकर नैन बहुत कड़वा और बहुत तेज गर्म पानी की लहरे जो बड़ी फ़िसादी है (याजूज माजूज जो ज्वार भाटा से उठती है) हमारे क्षेत्र में आकर बहुत फ़िसाद फैला देती है (अर्थात वह हमारे मीठे पानी में मिलकर उसको भी कड़वा और गर्म कर देती है हम बहुत व्याकूल है) क्या हम आपके लिए खर्च का प्रबंध कर दें कि आप हमारे और उनके बीच एक दीवार बना दें (94)

उसने कहा जिस पर मुझे मेरे रब ने अधिकार दिया है वह उत्तम है. पस तुम मेरी सहायता करो शक्ति से में बना दूंगा तुम्हारे और उन (लहरों) के बीच शक्तिशाली आड़ (95)

मुझे लोहे के तख्ते ला दो यहां तक कि जब उसने बराबर? कर दिया दोनों पहाड़ों के बीच उसने कहा अब धोंको यहां तक कि जब धोंक कर उसे आग कर दिया उसने कहा मेरे पास लाओ में इस पर पिघला हुआ तांबा डालू (96)

फिर वह (बहुत कड़वे और बहुत तेज गर्म पानी की लहरें अर्थात याजूज माजूज) उसपर न चढ़ सकेंगी और न उसमें छेद कर सकेंगे (अर्थात वह दीवार इतनी ऊंची हो गई कि पानी की लहरें उस ऊंचाई तक न पहुंच सकेंगी और न ही उसमें छेद हो सकता है (97)

उसने कहा यह मेरे रब की दया है पस जब मेरे रब का वचन आएगा उसको समतल कर देगा और मेरे रब का वचन सच्चा है (98) {19:75}

नोट- यह है याजूज माजूज का भावार्थ अर्थात बहुत कड़वा और बहुत तेज गर्म पानी की लहरें जो ज्वार भाटा से उठकर शुष्की में आजाती थी जिनको ज़ुलकरनैन ने बन्द बनाकर बन्द कर दिया और वह लहरें फिर उबल पड़ेंगी जब क्यामत का समय आएगा. उन लहरों में उस बन्द के बाद यह क्षमता न रही कि उस दीवार या पर्वत पर चढ़ सकती वह लहरें ऐसी ही शक्ति से उठती थी जैसी अभी 26 दिसम्बर 2004 को सुनामी लहरें उठी और लाखों आदमियों को समाप्त कर गई यह ईश्वर के चिन्ह है जिनको वह प्रकट करता रहता है इसलिए कि मानव उनसे शिक्षा प्राप्त करे और कुरआन को सच मान कर विश्वास लाए और कर्म

سورت انبیاء، آیت ۹۵/ اور جس بستی کو ہمارے قانون نے ہلاک کردیا اس پر روک لگی ہے یہ کہ وہاں کے لوگ پلٹ کر نہیں آئیں گے.
(۹۶) یہاں تک کہ جب یاجوج اور ماجوج یعنی بہت کڑوے اور سخت تیز گرم پانی کی لہریں کھول دی جائیں گی یعنی دریا ابل پڑیں گے تب وہ ہلاک شدہ انسان ہر بلندی سے دوڑتے ہوئے آئیں گے.
(۹۷) اور سچا وعدہ قریب آجائے تو اچانک کافروں کی آنکھیں کھلی کی کھلی رہ جائیں اور کہیں ہائے شامت ہم اس سے غفلت میں رہے بلکہ ہم ظالم تھے. ان کے بعد اب الکہف کی آیت (۹۲ سے ۹۸) تک کا مفہوم لکھا جا رہا ہے.

پھر وہ ایک اور سامان کے پیچھے لگا (۹۲)

یہاں تک کہ دو پہاڑوں کے درمیان پہنچا تو دیکھا کہ ان پہاڑوں کی وادیوں میں اس طرف کچھ لوگ ہیں اور وہ بات کو اچھی طرح سمجھنے کے قابل نہ تھے (۹۳)

ان لوگوں نے کہا کہ ذوالقرنین بہت کڑوا اور سخت تیز گرم پانی کی لہریں جو بڑی فسادی (یاجوج ماجوج جو مدوجزر سے اٹھتی ہیں) ہمارے علاقے میں آکر بہت فساد پھیلا دیتی ہیں (یعنی وہ ہمارے میٹھے پانی میں مل کر اس کو بھی کڑوا اور گرم کردیتی ہیں ہم بہت پریشان ہیں) کیا ہم آپ کے لئے خرچ کا انتظام کردیں کہ آپ ہمارے اور ان کے درمیان ایک دیوار بنادیں (۹۴)

اس نے کہا جس پر مجھے میرے رب نے قدرت دی ہے وہ بہتر ہے بس تم میری مدد کرو قوت سے میں بنادوں گا تمہارے اور ان (لہروں) کے درمیان مضبوط آڑ (۹۵)

مجھے لوہے کے تختے لادو، یہاں تک کہ جب اس نے برابر کردیا دونوں پہاڑوں کے درمیان اس نے کہا اب دھونکو یہاں تک کہ جب دھونک کر اسے آگ کردیا اس نے کہا میرے پاس لاؤ میں اس پر پگھلا ہوا تانبہ ڈالوں (۹۶)

پھر وہ (بہت کڑوے اور سخت تیز گرم پانی کی لہریں یعنی یاجوج ماجوج) اس پر نہ چڑھ سکیں گی اور نہ اس میں نقب لگا سکیں گی (یعنی وہ دیوار اتنی اونچی ہوگئی کہ پانی کی لہریں اس اونچائی تک نہ پہنچ سکیں گی اور نہ ہی اس میں سوراخ ہوسکتا ہے (۹۷)

اس نے کہا یہ میرے رب کی رحمت ہے پس جب میرے رب کا وعدہ آئے گا اس کو ہموار کردے گا اور میرے رب کا وعدہ سچا ہے (۹۸) [۱۹:۷۵]

نوٹ:۔ یہ ہے یاجوج ماجوج کا مفہوم یعنی بہت کڑوا اور سخت تیز گرم پانی کی لہریں جو مدوجزر سے اٹھ کر خشکی میں آجاتی تھیں جن کو ذوالقرنین نے بند بنا کر بند کردیا اور وہ لہریں پھر ابل پڑیں گے جب قیامت کا وقت آئے گا ان لہروں میں اس بند کے بعد یہ طاقت نہ رہی کہ اس دیوار یا پہاڑ پر چڑھ سکتیں وہ لہریں ایسی ہی طاقت سے اٹھتی تھیں جیسے ابھی ۲۶ ردسمبر ۲۰۰۴ء کو سونامی لہریں اٹھیں اور لاکھوں آدمیوں کو ختم کر گئیں، یہ اللہ کی نشانیاں ہیں جن کو وہ ظاہر کرتا رہتا ہے اس لئے کہ انسان ان سے عبرت حاصل کرے اور قرآن کو سچ مان کر ایمان

करें जिसके लिए ईश्वर ने सूरत हामीम सजदा 41 आयात 53 में कहा, हम जल्द अपनी आयात उन्हें विश्व में और (स्वंय) उनके अस्तित्व में दिखा देंगे यहां तक कि उन पर प्रकट हो जाएगा कि वह कुरआन सत्य है क्या आपके रब के लिए काफी नही कि वह हर वस्तु का देखने वाला है,

لائے اور عمل کرے جس کے لئے اللہ نے سورت حٰمٓ السجدہ ۴۱، آیت ۵۳ میں کہا. ہم جلد اپنی آیات انہیں اطراف عالم میں اور (خود) ان کی ذات میں دکھا دیں گے یہاں تک کہ ان پر ظاہر ہو جائے گا کہ وہ قرآن حق ہے کیا آپ کے رب کے لئے کافی نہیں کہ وہ ہر شے کا شاہد ہے.

यह है याजूज माजूज का भाव आज भी ज्वार भाटा को मानव देखते है और सबसे बड़ा ज्वार भाटा सुनामी की आकृति में सबने देख लिया और देखते रहेंगे, इन सब वास्तविकताओं को देख कर हम बुद्धि से काम लें और कुरआन के भाव को जो उचित हो दुनिया के सामने लाएं

یہ ہے یاجوج ماجوج کا مفہوم آج بھی مدوجزر یعنی جوار بھاٹا کو انسان دیکھتے ہیں اور سب سے بڑا جوار بھاٹا سونامی کی شکل میں سب نے دیکھ لیا اور دیکھتے رہیں گے ان سب حقیقتوں کو دیکھ کر ہم عقل سے کام لیں اور قرآن کے مفہوم کو جو صحیح ہو دنیا کے سامنے لائیں.

एक प्रश्न और रहता है वह यह कि वह आड़ कहां है तो उत्तर यह है कि उसको ईश्वर के नियम के अनुसार उड़ने वाली धूल और झाड़ झंकारों ने छुपा लिया है कि नजर नही आता और कुरआन का पढ़ने वाला हर व्यक्ति जानता है कि समुन्द्र में कड़वा पानी भी है और गर्म भी और अवश्य वह आड़ क्यामत तक ही छुपी रहे.

ایک سوال اور رہتا ہے وہ یہ کہ وہ آڑ کہاں ہے تو جواب یہ ہے کہ اس کو اللہ کے قانون کے مطابق اڑنے والے گرد وغبار اور جھاڑ جھنکاروں نے چھپا لیا ہے جو نظر نہیں آتا اور قرآن کا پڑھنے والا ہر آدمی جانتا ہے کہ سمندر میں کڑوا پانی بھی ہے اور گرم بھی اور یقیناً وہ آڑ قیامت تک ہی چھپی رہے.

उस दिन (अर्थात महा प्रलय के दिन) हम उन लहरों याजूज माजूज को छोड़ देंगे की मोज दर मोज लहरों की भांति एक दूसरे से गुथ जाएंगी और सूर फूंक दिया जाएगा और हम सम्पूर्ण मानव को संग्रह करेंगे (99)

اس روز (یعنی قیامت کے دن) ہم اُن لہروں یاجوج ماجوج کو چھوڑ دیں گے کہ موج در موج لہروں کی طرح ایک دوسرے سے گتھ جائیں گی اور صور پھونک دیا جائے گا اور ہم تمام لوگوں کو جمع کریں گے (۹۹)

और उस दिन नर्क को नास्तिकों के सामने लाएंगे दिखाएंगे (100)

اور اس روز جہنم کو کافروں کے سامنے لائیں گے دکھائیں گے (۱۰۰)

यह वह लोग होंगे जो मेरी शिक्षा की ओर से अन्धे बने हुए थे और (सत्य ध्वनी) सुनने के लिए बिलकुल तैयार न थे (101)

یہ وہ لوگ ہوں گے جو میری نصیحت کی طرف سے اندھے بنے ہوئے تھے اور (صدائے حق) سننے کے لئے بالکل تیار نہ تھے (۱۰۱)

जिन लोगों ने नास्तिक्ता का मार्ग ग्रहण कर रखा है, क्या वह यह समझ रहे है कि हमें छोड़कर हमारे बन्दों को अपना सहायक बनाएंगे? (और हम रूष्ट न हों और हमारे दण्ड से बच जाएंगे?) ऐसा कदापि न होगा, उनको समझ लेना चाहिए कि हमने ऐसे नास्तिको के लिए नर्क (अग्नि) तैयार कर रखा है (102)

جن لوگوں نے کفر کی راہ اختیار کر رکھی ہے کیا وہ یہ سمجھ رہے ہیں کہ ہمیں چھوڑ کر ہمارے بندوں کو اپنا کارساز بنائیں گے؟ (اور ہم ناراض نہ ہوں اور ہمارے عذاب سے بچ جائیں گے؟) ایسا ہرگز نہ ہوگا ان کو سمجھ لینا چاہیے کہ ہم نے ایسے کافروں کے لئے دوزخ (آگ) تیار کر رکھی ہے (۱۰۲)

कह दो क्या हम तुम्हें बताएं कि सब से हानी में कर्मों की दृष्टि से कौन लोग है (103)

کہہ دو کیا ہم تمہیں بتائیں کہ سب سے نقصان میں عملوں کے لحاظ سے کون لوگ ہیں (۱۰۳)

यह वह लोग है जिनका परिश्रम दुनिया के जीवन में नष्ट हो गया और वह यह समझे हुए है कि अच्छे कर्म कर रहे है (104)

یہ وہ لوگ ہیں جن کی محنت دنیا کی زندگی میں برباد ہو گئی اور وہ یہ سمجھے ہوئے ہیں کہ اچھے کام کر رہے ہیں (۱۰۴)

वही वह लोग है जिन्होंने अपने ईश्वर की आयतों और उसके सामने जाने से इनकार किया तो उनके कर्म नष्ट हो गए और हम महाप्रलय के दिन उनके लिए कुछ भी भार स्थापित न करेंगे (105)

وہی وہ لوگ ہیں جنہوں نے اپنے رب کی آیتوں اور اس کے سامنے جانے سے انکار کیا تو ان کے اعمال ضائع ہو گئے اور ہم قیامت کے دن ان کے لئے کچھ بھی وزن قائم نہ کریں گے (۱۰۵)

चूंकि उन्होंने नास्तिकता का मार्ग स्वीकार कर रखा था और हमारी धाराओ और हमारे ईशदूतों का उपहास उड़ाया था इसलिए दण्ड यह है कि उनको नर्क में झोंक दिया जाए (106)

چونکہ انہوں نے کفر کی راہ اختیار کر رکھی تھی اور ہماری آیتوں اور ہمارے رسولوں کی ہنسی اڑائی تھی اس لئے سزا یہ ہے کہ ان کو جہنم میں جھونک دیا جائے (۱۰۶)

परन्तु जो लोग विश्वास लाए और अच्छे कर्म किए

لیکن جو لوگ ایمان لائے اور اچھے کام کئے ان کی ضیافت

उनके सत्कार के लिए स्वर्ग के उपवन होंगे (107)

वह सदैव उनमें रहेंगे और कभी न चाहेंगे कि अपनी जगह बदलें (108)

घोषणा कर दो यदि मेरे रब की बातें लिखने के लिए दुनिया के सब समुन्द्र स्याही बन जाएं तो समुन्द्र का पानी समाप्त हो जाएगा परन्तु मेरे रब की बाते समाप्त न होंगी यदि वैसा ही समुन्द्र उसकी सहायता को और ले आएं (109)

ऐ मुहम्मद स0 कह दो (मैं मानव तो हूं) परन्तु तुम्हारे जैसा मानव नही हूं (अन्तर यह है कि) मेरी ओर वही आती है (तुम्हारी ओर नहीं ईश्वर ने मुझे ईशदौत्य के लिए चुन लिया है और उसने वही से मुझे सूचना दी है) कि तुम्हारा पूज्य (वही) एक ईश्वर है, तो जो व्यक्ति अपने ईश्वर से मिलने की आशा रखे उसे चाहिए कि सत्कर्म करे और अपने स्वामी की पूजा में किसी को साझी न बनाए (110) {20:13,41:6,12:109,14:11,16:43;22:52}

सूरत मरयम मक्की 19

ऐ मुहम्मद स0 (1)

तेरे रब अर्थात मुझ ईश्वर ने अपने बन्दें जकरिया पर जो कृपा की थी यह उस का उल्लेख है (2)

जब उन्होंने अपने रब से चुपके चुपके प्रार्थना की थी (3)

और कहा ऐ मेरे ईश्वर मेरी हड्डियां बुढ़ापे के कारण निर्बल हो गई हैं और मेरे सिर के बाल बुढ़ापे से बिलकुल सफेद हो गए हैं और ऐ मेरे रब मैं तुझ से मांग कर कभी वंचित नही रहा (4)

और मैं डरता हूं कि मेरी मृत्यू के बाद मेरे भाई बन्द अनुचित (मार्ग ग्रहण कर लें) और मेरी पत्नी बांझ है (इसलिए सन्तान की आशा नही) पस तू अपनी मुख्य कृपा से मुझे एक उत्तराधिकारी काम उठाने वाला प्रदान कर (5)

जो मेरी और याकूब की सन्तान की दाय का उत्तराधिकारी हो और ऐ रब उसको अच्छे स्वभाव वाला बनाना (6)

(ध्वनि आई) ऐ जकरिया हम तुझे एक पुत्र की (उत्पत्ति) की शुभ सूचना देते हैं जिसका नाम याहयां होगा, हमने इस नाम का कोई व्यक्ति इससे पहले उत्पन्न नही किया (7)

उन्होंने ने कहा रब मेरे यहां किस प्रकार पुत्र होगा मेरी पत्नी बांझ है और मैं बुढ़ापे की चरम को पहुंच चुका हूं (8)

आदेश हुआ ऐसा ही होगा (चूंकि यह निर्णय मेरे यहां पहले ही से निर्णीत है कि जकरिया के पुत्र होगा बुढ़ापे में केवल समय का आना था अब वह समय आ गया) तेरा रब अर्थात मैं ईश्वर कहता है मेरे लिए ऐसा करना कोई कठिन कार्य नही और मैं

کے لئے فردوس کے باغ ہوں گے (۱۰۷)

وہ ہمیشہ ان میں رہیں گے اور کبھی نہ چاہیں گے کہ اپنی جگہ بدلیں (۱۰۸)

اعلان کر دو اگر میرے رب کی باتیں لکھنے کے لئے دنیا کے تمام سمندر سیاہی بن جائیں تو سمندر کا پانی ختم ہو جائے گا مگر میرے رب کی باتیں ختم نہ ہوں اگر چہ ویسا ہی سمندر اس کی مدد کو اور لے آئیں (۱۰۹)

اے محمد کہہ دو (میں بشر تو ہوں) مگر تمہارے جیسا بشر نہیں ہوں (فرق یہ ہے کہ) میری طرف وحی آتی ہے (تمہاری طرف نہیں اللہ نے مجھے نبوت کے لئے چن لیا ہے اور اس نے وحی سے مجھے خبر دی ہے) کہ تمہارا معبود (وہی) ایک معبود ہے تو جو شخص اپنے رب سے ملنے کی امید رکھے اسے چاہیے، کہ نیک عمل کرے اور اپنے پروردگار کی عبادت میں کسی کو شریک نہ بنائے (۱۱۰) [۲۰:۱۳؛ ۴۱:۶؛ ۱۲:۱۰۹؛ ۱۴:۱۱؛ ۱۶:۴۳؛ ۲۲:۵۲]

سورت مریم مکی (۱۹)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اے محمدؐ (۱) تیرے رب یعنی مجھ اللہ نے اپنے بندے زکریا پر جو مہربانی کی تھی یہ اس کا ذکر ہے (۲)

جب انہوں نے اپنے رب سے چپکے چپکے دعا کی تھی (۳)

اور کہا کہ اے میرے رب میری ہڈیاں بڑھاپے کے سبب کمزور ہو گئی ہیں اور میرے سر کے بال بڑھاپے سے بالکل سفید ہو گئے ہیں اور اے میرے رب میں تجھ سے مانگ کر کبھی محروم نہیں رہا (۴)

اور میں ڈرتا ہوں کہ میرے مرنے کے بعد میرے بھائی بند غلط (روش اختیار کریں) اور میری بیوی بانجھ ہے (اس لئے اولاد کی امید نہیں) پس تو اپنے خاص فضل سے مجھے ایک وارث کام اٹھانے والا عطا فرما (۵)

جو میری اور اولاد یعقوب کی میراث کا وارث ہو اور اے رب اس کو خوش اطوار بنانا (۶)

(ندا آئی) اے زکریا! ہم تجھے ایک لڑکے کی (پیدائش) کی بشارت دیتے ہیں جس کا نام یحیٰ ہوگا. ہم نے اس نام کا کوئی آدمی اس سے پہلے پیدا نہیں کیا (۷)

انہوں نے کہا رب میرے یہاں کس طرح لڑکا ہوگا میری بیوی بانجھ ہے اور میں بڑھاپے کی انتہا کو پہنچ چکا ہوں (۸)

حکم ہوا ایسا ہی ہوگا (چونکہ یہ فیصلہ میرے یہاں پہلے ہی سے طے ہے کہ زکریا کے لڑکا ہوگا بڑھاپے میں صرف وقت کا آنا تھا اب وہ وقت آ گیا) تیرا رب یعنی میں اللہ

(इससे पहले) तुम्हें भी तो उत्पन्न कर चुका हूं जब तुम्हारा कोई अस्तित्व ही न था (9)

فرماتا ہے میرے لئے ایسا کرنا کوئی مشکل کام نہیں اور میں (اس سے پہلے) تمہیں بھی تو پیدا کر چکا ہوں جب تمہارا کوئی وجود ہی نہ تھا (۹)

कहा कि स्वामी मेरे लिए कोई चिन्ह निश्चित कर कहा चिन्ह यह है कि तुम ठीक होते हुए भी तीन रात्री (दिन) लोगों से बात न कर सकोगे (10)

کہا کہ پروردگار میرے لئے کوئی نشانی مقرر فرما. فرمایا نشانی یہ ہے کہ تم صحیح و سالم ہو کر تین رات (دن) لوگوں سے بات نہ کر سکو گے (۱۰)

नोट- महामना जकरिया को ज्ञात था कि मुझ पर बुढ़ापा आ गया और मेरी पत्नी बांझ है ऐसे में मेरे यहां पुत्र नही हो सकता, इसलिए ईश्वर से किसी ऐसे उत्तराधिकारी की प्रार्थना की थी जो उनके धार्मिक कार्य को आगे बढ़ा सके, परन्तु ईश्वर ने अपने निर्णय के अनुसार जिसको भाग्य भी कह सकते हैं जकरिया के यहां ही पुत्र प्रदान करने की बात की तब श्रीमान ने आश्चर्य से कहा था, यदि पुत्र की प्रार्थना करते तो आश्चर्य न करते अधिकांश ने लिखा है कि जकरिया ने पुत्र की प्रार्थना की थी परन्तु यह बात विचारणीय है.

نوٹ:۔ حضرت زکریا کو معلوم تھا کہ مجھ پر بڑھاپا آ گیا اور میری بیوی بانجھ ہے ایسے میں میرے یہاں لڑکا نہیں ہو سکتا. اس لئے اللہ سے کسی ایسے وارث کی دعا مانگی تھی جو ان کے دینی کام کو آگے بڑھا سکے. لیکن اللہ نے اپنے فیصلہ کے مطابق جس کو تقدیر بھی کہہ سکتے ہیں زکریا کے یہاں ہی لڑکا عطا کرنے کی بات کی تب حضرت نے تعجب سے کہا تھا اگر لڑکے کی دعا کرتے تو تعجب نہ کرتے. اکثر نے لکھا ہے کہ زکریا نے لڑکے کی دعا کی تھی لیکن یہ بات محل نظر ہے.

फिर जब वह उपासना कोष्ठ से निकल कर अपनी जाति के पास आए तो उनसे संकेत से कहा कि प्रातः सांय ईश्वर को याद करो (11)

پھر وہ حجرے سے نکل کر اپنی قوم کے پاس آئے تو ان سے اشارے سے کہا کہ صبح و شام اللہ کو یاد کرو (۱۱)

(जकरिया के यहां याहया उत्पन्न होकर बड़े होने लगे, और ईशदौत्य भी मिल गई तब ईश्वर ने कहा) ऐ याह्या पुस्तक पर (ईश्वर के आदेशों पर) दृढ़ता से कार्यरत रहो और हमने उसको बचपन ही में युक्ति व ज्ञान दिया था (12)

(زکریا کے یہاں یحیٰ پیدا ہو کر بڑے ہوتے گئے اور نبوت بھی مل گئی تب اللہ نے کہا) اے یحیٰ کتاب (الٰہی کے احکام پر) پر مضبوطی سے کاربند رہو اور ہم نے اس کو بچپن ہی میں حکمت و دانائی سے نوازا تھا (۱۲)

और अपने पास से ममता और निर्मलता (दी थी) और वह सदाचारी थे (13) {18:81, 9:5 जकात}

اور اپنے پاس سے شفقت اور پاکیزگی (دی تھی) اور وہ پرہیزگار تھے (۱۳) [۱۸:۸۱،۹:۵] (زکوٰۃ)

और माता पिता का सेवक था उद्दण्ड और अवज्ञाकारी न था (14) {19:32}

اور ماں باپ کا خدمت گزار تھا سرکش اور نافرمان نہ تھا (۱۴) [۱۹:۳۲]

और जिस दिन वह उत्पन्न हुए और जिस दिन जीवित करके उठाए जाएंगे उन पर कल्याण और कृपा है (15)

اور جس دن وہ پیدا ہوئے اور جس دن زندہ کر کے اٹھائے جائیں گے ان پر سلام اور رحمت (۱۵)

और इस पुस्तक कुरआन में मरयम का भी वर्णन करो (अर्थात पढ़कर कर सुनाओ) जब वह अपने लोगों से पृथक होकर एक पुर्वीय भवन में चली गई (16)

اور اس کتاب قرآن میں مریم کا بھی ذکر کرو (یعنی پڑھ کر سناؤ) جب وہ اپنے لوگوں سے الگ ہو کر ایک مشرقی مکان میں چلی گئیں (۱۶)

तो उन्होंने उन लोगों की ओर से आवरण कर लिया था या आवरण में हो गई थी उस समय हमने उस की ओर अपना एक फरिश्ता भेजा वह उसके सामने अच्छे खासे आदमी की आकृति में खड़ा हुआ (17)

تو انہوں نے ان لوگوں کی طرف سے پردہ کر لیا تھا یا پردے میں ہو گئیں تھی اس وقت ہم نے اس کی طرف اپنا ایک فرشتہ بھیجا وہ اس کے سامنے اچھے خاصے آدمی کی شکل میں کھڑا ہوا (۱۷)

मरयम (इस स्थिति में एक नर को अपने पास देखकर भयभीत हो गई और) बोली यदि तू ईश्वर से डरने वाला है तो मैं ईश्वर के नाम से तुझसे शरण मांगती हूं (18)

مریم (اس حالت میں ایک مرد کو اپنے پاس دیکھ کر گھبرا گئی اور) بولی اگر تو اللہ سے ڈرنے والا ہے تو میں اللہ کے نام سے تجھ سے پناہ مانگتی ہوں (۱۸)

उसने कहा मैं (मानव नही हूं अपितु) ईश्वर का भेजा हुआ (फरिश्ता) हूं (और इस लिए आया हूं कि ईश्वर के आदेशानुसार) एक पवित्र पुत्र की शुभ सूचना दूं (19)

اس نے کہا میں (انسان نہیں ہوں بلکہ) اللہ کا بھیجا ہوا (فرشتہ) ہوں (اور اس لئے آیا ہوں کہ اللہ کے حکم کے مطابق) ایک پاکیزہ بیٹے کی بشارت دوں (۱۹)

मरयम बोली यह कैसे हो सकता है कि मेरे पुत्र हो जबकि किसी व्यक्ति ने मुझे (आज तक) छुआ तक नही और मैं बद चलन भी नही हूं (20)

مریم بولی یہ کیسے ہو سکتا ہے کہ میرے لڑکا ہو جب کہ کسی مرد نے مجھے (آج تک) چھوا ہی نہیں اور میں بد چلن بھی نہیں ہوں (۲۰)

फरिश्ते ने कहा (कुछ भी हो) होगा ऐसे ही तेरे ईश्वर ने कहा है कि यह कार्य मेरे लिए सरल है

فرشتے نے کہا (کچھ بھی ہو) ہوگا ایسے ہی تیرے رب نے

(इससे हमारी इच्छा यह है कि) हम उस (लड़के) को सब मानव के लिए (अपनी प्रभुत्ता का) एक चिन्ह बना दें और (उस के पवित्र स्वभाव के द्वारा) हमारी अनुकम्पा प्रकट हो और यह कार्य हर दशा में होकर रहेगा निर्णीत है (21)

فرمایا ہے کہ یہ کام میرے لئے آسان ہے (اس سے ہماری غرض یہ ہے کہ) ہم اس (لڑکے) کو تمام انسانوں کے لئے (اپنی قدرت کی) ایک نشانی بنادیں اور (اس کی پاک فطرت کے ذریعہ) ہماری رحمت کا ظہور ہو اور یہ کام ہر حال میں ہو کر رہے گا طے شدہ ہے (۲۱)

पस मरयम गर्भवती हो गई और उस दशा में लोगों से अलग होकर दूसरे स्थान पर चली गई (22)

پس مریم حاملہ ہوگئی اور اس حالت میں لوگوں سے الگ ہوکر دوسرے مقام پر چلی گئی (۲۲)

फिर उसे प्रसव पीड़ा (का कष्ट) खजूर के एक वृक्ष के नीचे ले गया (और बदनामी के भय से) कहने लगी यदि मैं अब से पहले मर चुकी होती और भूली बिसरी हो गई होती (23)

پھر اسے دروزہ (کی تکلیف) کھجور کے ایک درخت کے نیچے لے گئی (اور بدنامی کے خیال سے) کہنے لگی کہ کاش میں اب سے پہلے مرچکی ہوتی اور بھولی بسری ہوگئی ہوتی (۲۳)

उस समय (एक फरिश्ते ने) उसे नीचे से (अर्थात नखलिस्तान की गहराई से) पुकारा (ऐ मरयम शोक न करो देख) तेरे ईश्वर ने तेरे नीचे एक स्रोत चला दिया है (24)

اس وقت (ایک فرشتے نے) اسے نیچے سے (یعنی نخلستان کے نشیب سے) پکارا (اے مریم! غم نہ کر دیکھ) تیرے رب نے تیرے نیچے ایک چشمہ جاری کردیا ہے (۲۴)

और खजूर के तने को पकड़ कर अपनी ओर हिलाओ तुम पर प्रफुल्ल प्रफुल्ल खजूरे गिर पड़ेंगी (25)

اور کھجور کے تنے کو پکڑ کر اپنی طرف ہلاؤ تم پر تازہ تازہ کھجوریں گر پڑیں گی (۲۵)

उल्लास से खा और पी और (अपने बच्चे के अबोध मुख को देख कर) अपनी आंख ठंडी कर फिर यदि किसी व्यक्ति को देखो (और तुझ से उलटे सीधे प्रश्न करे) तो (संकेत से) कह देना कि मैंने ईश्वर के लिए व्रत की विनय मानी है तो आज मैं किसी व्यक्ति से कदापि बात नहीं करूंगी (26)

شوق سے کھا اور پی اور (اپنے بچے کے معصوم چہرے کو دیکھ کر) اپنی آنکھ ٹھنڈی کر۔ پھر اگر کسی آدمی کو دیکھو (اور تجھ سے الٹے سیدھے سوال کرے) تو (اشارے سے) کہہ دینا کہ میں نے اللہ کے لئے روزے کی منت مانی ہے تو آج میں کسی آدمی سے ہرگز بات نہیں کروں گی (۲۶)

फिर वह पुत्र को गोद में लिए हुए अपनी जाति के पास आई वह लोग (देखते ही) कहने लगे ऐ मरयम! तू ने बुरा कार्य किया (27)

پھر وہ لڑکے کو گود میں لئے ہوئے اپنی قوم کے پاس آئی وہ لوگ (دیکھتے ہی) کہنے لگے اے مریم! تو نے بُرا کام کیا (۲۷)

ऐ हारून की बहन! न तो तेरा पिता ही बद चलन था और न तेरी माता ही बदचलन थी (फिर तुने यह क्या किया) (28)

اے ہارون کی بہن! نہ تو تیرا باپ ہی بُرا آدمی تھا اور نہ تیری ماں ہی بدچلن تھی (پھر تو نے یہ کیا کیا) (۲۸)

तो मरयम ने उस पुत्र की ओर संकेत किया, वह बोले कि हम इससे? कि गोद का बच्चा है क्यों कर बात करें (29)

تو مریم نے اس لڑکے کی طرف اشارہ کیا وہ بولے کہ ہم اس سے؟ کہ گود کا بچہ ہے کیونکر بات کریں (۲۹)

बच्चे ने कहा कि मैं ईश्वर का बन्दा हूं निःसंदेह ईश्वरीय निर्णय ही में मेरे लिए यह निर्णय है कि वह मुझे पुस्तक और ईशदौत्य देगा (30)

بچے نے کہا کہ میں اللہ کا بندہ ہوں بے شک اس کی قضا وقدر ہی میں میرے لئے یہ فیصلہ ہے کہ وہ مجھے کتاب اور نبوت سے نوازے گا (۳۰)

और मैं जहां कहीं हूं मुझे सम्पन्नता वाला बनाया गया है और मुझे आदेश दिया कि मैं जब तक जीवित रहूं नमाज का पेलन करूं और दान देता रहूं (31)

اور میں جہاں کہیں ہوں مجھے بابرکت بنایا ہے اور مجھے حکم دیا کہ میں جب تک زندہ رہوں نماز کی پابندی کروں اور زکوٰۃ ادا کرتا رہوں (۳۱) (یعنی سلامتی کے ساتھ پاکیزہ رہوں)

(अर्थात शान्ति के साथ पवित्र रहूं) और मुझे अपनी माता के साथ शुभ व्यवहार करने वाला बनाया है, और उद्दण्ड व दुर्भाग्य वाला नहीं बनाया (32) {19:14}

اور مجھے اپنی ماں کے ساتھ نیک سلوک کرنے والا بنایا ہے اور سرکش وبد بخت نہیں بنایا (۳۲) [۱۴:۱۹]

नोट- आयत में केवल माता के साथ शुभ व्यवहार करने का उल्लेख है अतः सिद्ध हुआ कि श्री ईसा अ० के पिता नहीं थे यदि पिता होते तो महामना याहया अ० की भांति कहा जाता कि मैं अपने माता-पिता के साथ सत्कर्म करने वाला हूं, परन्तु केवल माता का उल्लेख आने से यही बात सामने आती है कि ईसा के पिता नहीं थे, आप बिना पिता के ईश्वर की प्रभुता से महामना आदम की भांति जो बिना माता-पिता के उत्पन्न हुए थे पैदा हुए

نوٹ:۔ آیت میں صرف ماں کے ساتھ نیک سلوک کرنے کا ذکر ہے اس لئے ثابت ہوا کہ حضرت عیسیٰ کے باپ نہیں تھا اگر باپ ہوتا تو حضرت یحییٰ کی طرح کہا جاتا کہ میں اپنے ماں باپ کے ساتھ نیکی کرنے والا ہوں لیکن صرف ماں کا ذکر آنے سے یہی بات سامنے آتی ہے کہ عیسیٰ کے والد نہیں تھے آپ بغیر باپ کے اللہ کی قدرت سے حضرت آدم کی طرح جو بنا ماں باپ کے پیدا ہوئے تھے پیدا ہوئے۔

दूसरी बात यह कि ईसा को आदेश हुआ कि जब तक जीवित रहो नमाज अदा करते रहो और दान दो यदि ईसा अ0 अब जीवित है तो कहां नमाज अदा कर रहे हैं और कहां पर व्यवसाय करके दान दे रहे हैं और किसको? क्या यमलोक में?

دوسری بات یہ کہ عیسیٰ کو حکم ہوا کہ جب تک زندہ رہو نماز ادا کرو اور زکوۃ دو اگر عیسیٰ اب زندہ ہیں تو وہ کہاں نماز ادا کر رہے ہیں اور کہاں پر کاروبار کر کے زکوۃ دے رہے ہیں اور کس کو؟ کیا عالم برزخ میں؟

इससे सिद्ध हुआ ईसा अ0 की मृत्यु हो चुकी है जो लोग उनको जीवित मानकर आकाश पर उठाए जाने का विश्वास रखते हैं वह यथार्थ और प्रकृति के विपरीत है.

اس سے ثابت ہوا عیسیٰ کی موت ہو چکی ہے جو لوگ ان کو زندہ مان کر آسمان پر اٹھائے جانے کا عقیدہ رکھتے ہیں وہ حقیقت اور فطرت کے خلاف ہے۔

महामना ईसा को पालने में पुस्तक नहीं दी गई थी अपितु भविष्य में जो कार्य विश्वास के साथ होना होता है उसको कभी भूतकाल के साथ कहा जाता है अर्थ भविष्य होता है अतः ईसा ने कहा कि ईश्वर का निर्णय यही है कि मुझे निःसन्देह पुस्तक दी जाएगी और नबी बनाया जाऊंगा.

حضرت عیسیٰ کو گہوارے میں کتاب نہیں دی گئی تھی بلکہ مستقبل میں جو کام یقینی ہونا ہے اس کو کبھی ماضی کے صیغہ کے ساتھ کہا جاتا ہے مراد مستقبل ہوتا ہے اس لئے عیسیٰ نے کہا کہ اللہ کا فیصلہ یہی ہے کہ مجھے یقیناً کتاب دی جائے گی اور نبی بنایا جاؤں گا۔

और मुझ पर (ईश्वर की ओर से हर दशा में) शान्ति है, उस दिन भी जब मैं उत्पन्न हुआ और उस दिन भी जब मैं मृतक हूंगा और उस दिन भी जब मैं (पुनः) जीवित करके उठाया जाऊंगा (33)

اور مجھ پر (اللہ کی طرف سے ہر حال میں) سلامتی ہے اس روز بھی جب میں پیدا ہوا اور اس روز بھی جب میں مروں گا اور اس روز بھی جب میں (دوبارہ) زندہ کر کے اٹھایا جاؤں گا (۳۳)

वह है मरयम के पुत्र ईसा अ0 की बात (और यह) सत्य बात है जिसमें लोग शंका कर रहे हैं (34)
ईश्वर को इसकी आवश्यकता नहीं है कि वह किसी को पुत्र बनाए वह (इससे) पवित्र है कि (नाशवान रचना में से) किसी को अपना पुत्र बनाए (और फिर वह किसी को अपना पुत्र क्यों बनाए) उसकी महिमा यह है कि जो कुछ महाप्रलय तक होने वाला है उसके ज्ञान में पहले से है और तैयार है अन्तर केवल यह है कि जो किसी को ज्ञात नहीं) जब किसी कार्य के होने का समय आ जाता है जो निश्चित है तो उस समय केवल इतना कहता है कि हो जा और वह हो जाता है (35)

یہ ہے مریم کے بیٹے عیسیٰ کی بات (اور یہ) سچی بات ہے جس میں لوگ شک کر رہے ہیں (۳۴)
<u>اللہ کو اس کی ضرورت نہیں ہے کہ وہ کسی کو بیٹا بنائے وہ (اس سے) پاک ہے کہ (فانی مخلوق میں سے) کسی کو اپنا بیٹا بنائے (اور پھر وہ کسی کو اپنا بیٹا کیوں بنائے اس کی شان یہ ہے کہ جو کچھ قیامت تک ہونے والا ہے اس کے علم میں پہلے سے ہے اور تیار ہے فرق یہ ہے جو کسی کو معلوم نہیں) جب کسی کام کے ہونے کا وقت آ جاتا ہے جو مقرر ہے تو اس وقت صرف اتنا کہتا ہے کہ ہو جا اور وہ ہو جاتا ہے (۳۵)</u>

और निःसन्देह ईश्वर ही मेरा और तुम्हारा रब है तो उसकी पूजा करो यही सीधा मार्ग है (36)

اور بے شک اللہ ہی میرا اور تمہارا رب ہے تو اس کی عبادت کرو یہی سیدھا رستہ ہے (۳۶)

फिर (पुस्तक वाले) दलों ने आपस में मतभेद किया सो जो लोग नास्तिक हुए हैं उनको बड़े दिन (अर्थात महाप्रलय के दिन) उपस्थित होने से विकार है (37)

پھر (اہل کتاب کے) فرقوں نے باہم اختلاف کیا سو جو لوگ کافر ہوتے ہیں ان کو بڑے دن (یعنی قیامت کے روز) کا فر ہونے سے خرابی ہے (۳۷)

वह जिस दिन हमारे सामने आएंगे कैसे सुनने वाले और कैसे देखने वाले होंगे परन्तु अन्यायी आज खुली पथ भ्रष्टता में हैं (38)

وہ جس دن ہمارے سامنے آئیں گے کیسے سننے والے اور کیسے دیکھنے والے ہوں گے مگر ظالم آج صریح گمراہی میں ہیں (۳۸)

(ऐ रसूल स0!) उन लोगों को उस दिन से डराओ जो संताप (व खेद) का दिन होगा और सारी बातों का निर्णय कर दिया जाएगा (खेद उनकी दशा पर कि) वह अचेतना में पड़े हुए हैं और विश्वास नहीं करते (कि वह दिन आने वाला है) (39)

(اے رسولؐ!) ان لوگوں کو اس دن سے ڈراؤ جو حسرت (اور افسوس) کا دن ہوگا اور ساری باتوں کا فیصلہ کر دیا جائے گا (افسوس ان کی حالت پر کہ) وہ غفلت میں پڑے ہوئے ہیں اور یقین نہیں کرتے (کہ وہ دن آنے والا ہے) (۳۹)

(उनको समझ लेना चाहिए कि) हम ही पृथ्वी के उत्तराधिकारी हैं और उन सब लोगों के भी जो पृथ्वी पर बसे हुए हैं और हमारी ही ओर सब को लोट कर आना है (40)

(ان کو سمجھ لینا چاہیے کہ) ہم ہی زمین کے وارث ہیں اور ان تمام لوگوں کے بھی جو زمین پر بسے ہوئے ہیں اور ہماری ہی طرف سب کو لوٹ کر آنا ہے (۴۰)

ईश्वर की पुस्तक (कुरआन) में इब्राहीम को याद करो अर्थात पढ़कर सुनाओ निःसंदेह वह हमारे अत्यंत सच्चे ईशदूत थे (41)
जब उन्होंने अपने पिता से कहा था पिता जी! आप ऐसी वस्तुओं की पूजा क्यों करते हैं जो न सुने

اللہ کی کتاب (قرآن) میں ابراہیم کو یاد کرو یعنی پڑھ کر سناؤ بے شک وہ ہمارے نہایت سچے رسول تھے (۴۱)
جب انہوں نے اپنے باپ سے کہا تھا ابا جان آپ ایسی چیزوں کی پوجا کیوں کرتے ہیں جو نہ سنیں اور نہ دیکھیں اور

और न देखें और न आपके कुछ काम आ सके (42)
पिता जी मुझे ऐसा ज्ञान मिला है जो आपको नही मिला तो मेरा कहा मानों मैं आपको सीधा मार्ग दिखाऊंगा (43)
पिता जी शैतान की पूजा न करो निःसन्देह शैतान ईश्वर का अवज्ञाकारी है (44)
पिता मुझे भय लगता है कि आपको ईश्वर का कष्ट आ पकड़े तो आप शैतान के साथी हो जाऐं (45)
(पुत्र की बातें सुनकर पिता को क्रोध आया) और उसने कहा इब्राहीम क्या तू मेरे देवताओं से फिर गया है? (याद रख) यदि तू इन बातों से न रुका तो मैं तुझे पत्थर मारकर वध कर दूंगा, अतः तू सदैव के लिए मुझ से दूर हो जा (46)
इब्राहीम ने कहा (अच्छा) मेरा सलाम (मैं पृथक हुआ जाता हूं और कहा) परन्तु मैं आपके लिए अपने रब से क्षमा की प्रार्थना करूंगा निःसन्देह वह मुझ पर बड़ा दयालु है (47)
और मैं आप लोगों से और जिनको आप ईश्वर के अतिरिक्त पुकारा करते है उनसे किनारा करता हूं और अपने रब ही को पुकारूंगा आशा है कि मैं अपने रब को पुकार कर वंचित नही रहूंगा (48)
फिर जब इब्राहीम उन लोगों से और जिनकी वह ईश्वर के सिवा पूजा करते थे अलग हो गए तो हमने उनको इस्हाक और याकूब दिए और सबको नबी बनाया (49) {6:84}
और उनको अपनी कृपा से बहुत दिया और रखा हमने उनके लिए उच्चतर मान का जय मंगल (50)
और इस पुस्तक में से मूसा का उल्लेख भी पढ़ें निःसंदेह वह हमारे सर्व श्रेष्ठ भक्त और रसूल नबी थे (51)
और हमने उनको तूर पर्वत की दाहिनी ओर से पुकारा और बाते करने के लिए निकट बुलाया (52)
और अपनी कृपा से उनको उनका भाई हारून रसूल प्रदान किया (और सहायक बनाया) (53)
और पुस्तक कुरआन में इस्माईल का भी उल्लेख पढ़ें निःसंदेह वह वचन का सच्चा और ईश्वर का भेजा हुआ नबी था (54)
वह अपने घर वालों को नमाज और दान (अर्थात शान्ति और पवित्रता का आदेश देता था और अपने रब के निकट रोचक था) (55)
और पुस्तक में इदरीस का उल्लेख भी पढ़ें वह भी अत्यन्त सच्चे नबी थे (56)
और हमने उसे उच्च स्थान सम्मान प्रदान किया था (57)
वह वह लोग है जिन पर ईश्वर ने पुरस्कार किया ईशदूतों पर आदम की सन्तान में उन लोगों की सन्तान से जिनको हमने नूह के साथ नाव में सवार किया था, और इब्राहीम और इसराईल की सन्तान में से और उन लोगों में से

نہ آپ کے کچھ کام آ سکیں (۴۲)
ابا مجھے ایسا علم ملا ہے جو آپ کو نہیں ملا تو میرا کہا مانئے میں آپ کو سیدھی راہ دکھاؤں گا (۴۳)
ابا جان شیطان کی پوجا نہ کیجئے بے شک شیطان اللہ کا نافرمان ہے ابا مجھے ڈر لگتا ہے کہ آپ کو اللہ کا عذاب آ پکڑے تو آپ شیطان کے ساتھی ہو جائیں (۴۵)
(بیٹے کی باتیں سن کر باپ کو سخت غصہ آیا) اور اس نے کہا ابراہیم! کیا تو میرے معبودوں سے پھر گیا ہے؟ (یاد رکھ) اگر تو ان باتوں سے باز نہ آیا تو میں تجھے سنگسار کر دوں گا اس لئے تو ہمیشہ کے لئے مجھ سے دور ہو جا (۴۶)
ابراہیم نے کہا (اچھا) میرا سلام (میں الگ ہوا جاتا ہوں اور کہا) لیکن میں آپ کے لئے اپنے رب سے بخشش کی دعا کروں گا بے شک وہ مجھ پر بڑا مہربان ہے (۴۷)
اور میں آپ لوگوں سے اور جن کو آپ اللہ کے سوا پکارا کرتے ہیں ان سے کنارہ کرتا ہوں اور اپنے رب ہی کو پکاروں گا امید ہے کہ میں اپنے رب کو پکار کر محروم نہیں رہوں گا (۴۸)
پھر جب ابراہیم ان لوگوں سے اور جن کو وہ اللہ کے سوا پوجا کرتے تھے الگ ہو گئے تو ہم نے ان کو اسحاق اور یعقوب دئے اور سب کو نبی بنایا (۴۹) [۸۴:۶]
اور ان کو اپنی رحمت سے بہت دیا اور رکھا ہم نے ان کے لئے اعلیٰ درجہ کا ذکر خیر (۵۰)
اور اس کتاب میں سے موسیٰ کا ذکر بھی پڑھو بے شک وہ ہمارے چنے ہوئے بندے اور رسول نبی تھے (۵۱)
اور ہم نے ان کو کوہ طور کی داہنی جانب سے پکارا اور باتیں کرنے کے لئے نزدیک بلایا (۵۲)
اور اپنی مہربانی سے ان کو ان کا بھائی ہارون رسول دیا (اور مددگار بنایا) (۵۳)
اور کتاب قرآن میں اسماعیل کا بھی ذکر پڑھو بے شک وہ وعدے کا سچا اور اللہ کا بھیجا ہوا نبی تھا (۵۴)
وہ اپنے گھر والوں کو نماز اور زکوٰۃ (یعنی سلامتی اور پاکیزگی کا حکم دیتا تھا اور اپنے رب کے نزدیک پسندیدہ تھے (۵۵)
اور کتاب میں ادریس کا ذکر بھی پڑھو وہ بھی نہایت سچے نبی تھے (۵۶)
اور ہم نے اسے بلند مقام مرتبہ عطا کیا تھا (۵۷)
وہ وہ لوگ ہیں جن پر اللہ نے انعام کیا رسولوں پر آدم کی اولاد میں ان لوگوں کی نسل سے جن کو ہم نے نوح کے ساتھ کشتی میں سوار کیا تھا اور ابراہیم اور اسرائیل کی

जिनको हमने पथ प्रदर्शन दी और श्रेष्ठ किया वह वह लोग है जब उनके सामने हमारी आयात पढ़ी जाती है तो सजदे में गिर पड़ते है और रोते रहते है अर्थात जो धाराओ में आदेश है उनको मान लेते है और अमल करते है (58) {3:93}

नोट- उपरोक्त आयत (19:58) के पढ़ने से यह प्रकट होता है कि इब्राहीम अ० और इसराईल अ० दोनों अलग-अलग है, परन्तु हमारे यहा महामना याकूब अ० को ही इसराईल लिखा गया है, और यही सही माना गया है और यहूदी भी इसराईल याकूब अ० को ही मानते है, इसलिए यहूदियों ने अपने को इब्राहीम की संतान में माना है, उनके लिखे को ही मुसलमानों ने स्वीकार किया है, क्या यह वास्तविकता है इस पर भी विचार कर लिया जाए

सूरत बकरा आयत 135 कहते है कि यहूद व नसारा बन जाओ तो हिदायत पाओगे तुम कहो अपितु सत्य मार्ग पर मिल्लते इब्राहीमी वाले है और इब्राहीम खालिस ईश्वर के पुजारी थे और अनेकेश्वर वादी न थे,

आयत 140- क्या तुम कहते हो इब्राहीम अ० और इस्माईल अ० और इस्हाक अ० और याकूब अ० और उनकी संतान यहूदी या नसरानी थे? कहदो क्या तुम अधिक जानते हो, या ईश्वर? ईश्वर के पास साक्ष्य छुपाने वाले से अधिक जालिम और कौन है? और ईश्वर तुम्हारे कर्मो से अनजान नही,

सूरत आले इमरान आयत 65- ऐ पुस्तक वालो! तुम इब्राहीम के बारे में क्यों झगड़ते हो, यद्यपि तौरात व इन्जील तो उनके बहुत बाद अवतरित की गई, क्या तुम फिर भी नही समझते? (और फिर भी यही कहते हो कि इब्राहीम व उनकी सन्तान यहूदी थे)

आयत 67- इब्राहीम न तो यहूदी थे न नसरानी थे अपितु वह तो यकतरफा (खालिस) मुस्लिम थे वह अनेकेश्वर वादी भी न थे,

सूरत निसा आयत 54- क्या वह (यहूदी) लोगों से ईर्ष्या करते है इस पर जो ईश्वर ने अपने कृपा दया से उन्हें दिया है पस हमने तो आले इब्राहीम को पुस्तक जो युक्ति है भी दी है और बड़ा राज्य भी दिया है,

आयत 55 फिर उनमें से कतिपय ने तो उस पुस्तक को माना और कतिपय उससे रुक गए और नर्क का जलाना प्रयाप्त है,

आयत 19:58- के अतिरिक्त इसराईल अ० का नाम आयत 3:93 में भी आया है, परन्तु इस आयत में इसराईल के स्थान पर ज्ञानियों ने याकूब लिखा है मानों ईश्वर की भूल को आलिमों ने ठीक किया (नऊज़ु) अर्थात आयत में इसराईल नही है याकूब है जिसको आलिमों ने ठीक कर दिया, परन्तु यह इसराईल के स्थान पर याकूब लिखना एक बहुत बड़ा अन्याय है, क्या ईश्वर इसराईल के स्थान पर याकूब नही लिख सकता था? अवश्य लिख सकता था, परन्तु तब ही तो जब याकूब नाम होता, नाम इसराईल है, अतः ईश्वर ने इसराईल बताया जो कुरआन में अंकित है, परन्तु आलिमों ने यहूद्यों की बात को सत्य मानते हुए याकूब लिख दिया जो अनुचित है,

आयात बाला में पढ़ने के बाद यह सिद्ध होता है कि इसराईल याकूब नही है, यदि याकूब ही इसराईल होते तो आयत 19:58 में ईश्वर सन्तान इब्राहीम व इसराईल न कहता क्योंकि याकूब तो सन्तान इब्राहीम है, जब याकूब सन्तान इब्राहीम है तो पृथक का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता, किन्तु सन्तान इब्राहीम से इसराईल को

اولاد میں سے اور ان لوگوں میں سے جن کو ہم نے ہدایت دی اور برگزیدہ کیا وہ وہ لوگ ہیں جب ان کے سامنے ہماری آیتیں پڑھی جاتی تھیں تو سجدے میں گر پڑتے تھے اور روتے تھے یعنی جو آیات میں حکم ہوتا ہے اس کو مان لیتے ہیں اور عمل کرتے ہیں (۵۸) [۳:۹۳]

نوٹ:۔ آیت بالا (۱۹:۵۸) کے پڑھنے سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ ابراہیمؑ اور اسرائیل دونوں الگ الگ ہیں مگر ہمارے یہاں حضرت یعقوبؑ کو ہی اسرائیل لکھا گیا ہے اور یہی صحیح مانا گیا ہے اور یہودی بھی اسرائیل یعقوب کو ہی مانتے ہیں اس لئے یہودیوں نے اپنے کو ابراہیمؑ کی ذریت میں مانا ہے ان کے لکھے کو ہی مسلمانوں نے تسلیم کیا ہے۔ کیا یہ حقیقت ہے؟ اس پر غور کر لیا جائے

سورت بقرہ آیت ۱۳۵/ کہتے ہیں کہ یہود و نصاریٰ بن جاؤ تو ہدایت پاؤ گے تم کہو بلکہ صحیح راہ پر ملت ابراہیمی والے ہیں اور ابراہیم خالص اللہ کے پرستار تھے اور مشرک نہ تھے۔

آیت ۱۴۰/ کیا تم کہتے ہو ابراہیمؑ اور اسماعیلؑ اور اسحاقؑ اور یعقوبؑ اور ان کی اولاد یہودی یا نصرانی تھے؟ کہہ دو کیا تم زیادہ جانتے ہو، یا اللہ؟ اللہ کے پاس شہادت چھپانے والے سے زیادہ ظالم اور کون ہے؟ اور اللہ تمہارے کاموں سے غافل نہیں۔

سورت آل عمران، آیت ۶۵/ اے اہل کتاب تم ابراہیم کی بابت کیوں جھگڑتے ہو حالانکہ تورات و انجیل تو ان کے بہت بعد نازل کی گئیں کیا تم پھر بھی نہیں سمجھتے؟ اور پھر بھی یہی کہتے ہو کہ ابراہیم و ان کی اولاد یہودی تھے۔

آیت ۶۷/ ابراہیم نہ تو یہودی تھے نہ نصرانی تھے بلکہ وہ تو یک طرفہ (خالص) مسلم تھے وہ مشرک بھی نہ تھے۔

سورت نساء آیت ۵۴/ کیا وہ (یہودی) لوگوں سے حسد کرتے ہیں اس پر جو اللہ نے اپنے فضل سے انہیں دیا ہے پس ہم نے تو آل ابراہیم کو کتاب جو حکمت ہے بھی دی ہے اور بڑی سلطنت بھی دی ہے۔

آیت (۵۵) پھر ان میں سے بعض نے تو اس کتاب کو مانا اور بعض اس سے رُک گئے اور جہنم کا جلانا کافی ہے۔

آیت (۱۹:۵۸) کے علاوہ اسرائیل کا نام آیت (۳:۹۳) میں بھی آیا ہے۔ لیکن اس آیت میں اسرائیل کی جگہ عالموں نے یعقوب لکھا ہے گویا اللہ کی بھول کو عالموں نے درست کیا (نعوذ) یعنی آیت میں اسرائیل نہیں ہے یعقوب ہے جس کو عالموں نے درست کر دیا مگر یہ اسرائیل کی جگہ پر یعقوب لکھنا ایک بہت بڑا ظلم ہے کیا اللہ اسرائیل کی جگہ یعقوب نہیں لکھ سکتا تھا؟ ضرور لکھ سکتا تھا مگر تب ہی تو جب یعقوب نام ہوتا۔ نام اسرائیل ہے اس لئے اللہ نے اسرائیل بتایا۔ جو قرآن میں درج ہے۔ مگر عالموں نے یہودیوں کی بات کو سچ مانتے ہوئے یعقوب لکھ دیا جو غلط ہے۔

آیات بالا کے پڑھنے کے بعد یہ ثابت ہوتا ہے کہ اسرائیل یعقوب نہیں ہیں۔ اگر یعقوب ہی اسرائیل ہوتے تو آیت (۱۹:۵۸) میں اللہ اولاد ابراہیم و اسرائیل نہ فرماتا کیوں کہ یعقوب تو اولاد ابراہیم ہیں۔ جب یعقوب اولاد ابراہیم ہیں تو الگ کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا مگر اولاد ابراہیم سے اسرائیل کو

पृथक करके लिखना और बताना यह सिद्ध करता है कि इसराईल और इब्राहीम दोनों अलग-अलग हैं और इसराईल भी कोई नबी है.

कुरआन में यहूदियों के लिए बनी इसराईल शब्द आया है यदि यहूदी याकूब अ० की सन्तान होते तो कहीं एक स्थान तो उनके लिए बनी याकूब आ जाता, क्या ईश्वर के लिए बनी याकूब बताना कठिन कार्य था? कदापि नहीं, ईश्वर की हर बात सत्य है, अतः बनी इसराईल शब्द से सम्बोधन करना यह सिद्ध करता है कि यहूदी याकूब की सन्तान नहीं इसराईल की सन्तान है.

इतना स्पष्ट साक्ष्य होने के बावजूद भी हमने यहूदियों को सन्तान इब्राहीम अर्थात सन्तान याकूब क्यों स्वीकार कर लिया? इसका कारण यह है कि हमने यहूदियों की रवायात को आंख बन्द करके स्वीकार किया और इस कारण से ही याकूब अ० को इसराईल लिख दिया जैसा कि यहूदियों ने अपने को सन्तान इब्राहीम स्वीकार कराने के लिए याकूब अ० को इसराईल लिखा जबकि याकूब इसराईल नहीं है यदि हम वास्तविकता को स्वीकार कर लें तो यहूदी इब्राहीम की सन्तान से पृथक होकर सन्तान इसराईल हो जाते हैं जो सत्य है, परन्तु लम्बे समय से यहूदियों की कथाओं से प्रभावित होकर हमने याकूब अ० को ही इसराईल मान लिया है और इस अनुचित मानने से ही यहूदियों को सन्तान इब्राहीम होने का प्रमाण पत्र प्रदान कर दिया है जो अनुचित है, किन्तु दीर्घकाल की त्रुटि को यदि कोई यह चाहे कि यह कुछ लाईने ठीक कर देंगी तो एक अनहोनी बात होगी, परन्तु चेतनाशील व्यक्ति इस तथ्य पर विचार करके अवश्य सत्य को स्वीकार करेंगे और आने वाला समय यह सिद्ध कर देगा कि यहूदी जाति सन्तान इब्राहीम अर्थात सन्तान याकूब नहीं है, मिल्लते इब्राहीम तो हो सकते थे परन्तु अब मिल्लते इब्राहीम भी नहीं है.

वास्तविकता कैसे बदलती है यह भी अवलोकन हो मेरे आपके सामने ही कुछ से कुछ हो गया अर्थात श्रीमति इन्दिरा गांधी जनाब ज्वाहर लाल नेहरू की पुत्री है श्रीमान महात्मा गांधी से उनका कोई खानदानी सम्बन्ध नहीं है, परन्तु आज श्रीमति इन्दिरा गांधी और उनकी सन्तान को गांधी उपाधि से पुकारा जा रहा है और किसी को भी कोई आपत्ति नहीं, परन्तु वास्तविकता कुछ और है, ऐसे ही समय ने अनुचित रवायत कथन को सत्य मानकर इसराईल को याकूब बना दिया और बनी इसराईल को बनी याकूब बना दिया, जिस शब्द बनी याकूब को इसराईल के लिए यदि तलाश करो कुरआन में तो नहीं मिलेगा, हां अनुवादों और हदीसों में अवश्य है, ईश्वर से प्रार्थना है कि हम सत्य को स्वीकार कर लें.

परन्तु उनके बाद ऐसे अयोग्य उनके उत्तराधिकारी हुए जिन्होंने नमाज (की आत्मा इस्लामी शिक्षा को) को नष्ट कर दिया और काम इच्छाओं के पीछे पड़ गए सो निकट ही उनकी पथ भ्रष्टता का दण्ड मिलेगा (59) {11:87; 23:1 से 5; 70:23 से 35; 9:5}

हां जो लोग पश्चाताप करलें आस्था ले आएं और सत्कर्म करने लगें तो वह स्वर्ग में प्रविष्ट होंगे और उन पर कण बराबर भी अत्याचार न होगा (60)

उनके लिए सदैव रहने वाला स्वर्ग है जिसका ईश्वर ने अपने भक्तों से वचन किया है (जो उनकी आंखों से) गुप्त है उसका यह वचन पूरा होकर रहता है (61)

वहां स्वर्ग में वह लोग कोई अशिष्ट बात न सुनेंगे

الگ کر کے لکھنا اور بتانا یہ ثابت کرتا ہے کہ اسرائیل اور ابراہیم دونوں الگ الگ ہیں اور اسرائیل بھی کوئی نبی ہیں۔

قرآن میں یہودیوں کے لئے بنی اسرائیل لفظ آیا ہے اگر یہودی یعقوبؑ کی اولاد ہوتے تو کہیں ایک جگہ تو ان کے لئے بنی یعقوب آجاتا کیا اللہ کے لئے بنی یعقوب بتانا مشکل کام تھا؟ ہرگز نہیں اللہ کی ہر بات سچی ہے اس لئے بنی اسرائیل لفظ سے خطاب کرنا یہ ثابت کرتا ہے کہ یہودی یعقوب کی اولاد نہیں اسرائیل کی اولاد ہیں۔

اتنی صاف شہادت ہونے کے باوجود بھی ہم نے یہودیوں کو اولاد ابراہیم یعنی اولاد یعقوب کیوں تسلیم کرلیا؟ اس کی وجہ یہ ہے کہ ہم نے یہودیوں کی روایات کو آنکھ بند کر کے تسلیم کیا اور اس وجہ سے ہی یعقوبؑ کو اسرائیل لکھ دیا جیسا کہ یہودیوں نے اپنے کو اولاد ابراہیم تسلیم کرانے کے لئے یعقوبؑ کو اسرائیل لکھا جب کہ یعقوب اسرائیل نہیں ہیں اگر ہم حقیقت کو تسلیم کرلیں تو یہودی ابراہیم کی ذریت سے الگ ہو کر ذریت اسرائیل ہو جاتے ہیں جو حقیقت ہے مگر عرصہ دراز سے یہودیوں کی روایات سے متاثر ہو کر ہم نے یعقوبؑ کو ہی اسرائیل مان لیا ہے اور اس غلط ماننے سے ہی یہودیوں کو اولاد ابراہیم ہونے کی سند عطا کردی ہے جو غلط ہے مگر عرصہ درازی کی غلطی کو اگر کوئی یہ چاہے کہ یہ چند لائنیں درست کردیں گی تو ایک ان ہونی بات ہوگی مگر ہوشمند انسان اس حقیقت پر غور کر کے ضرور حقیقت کو تسلیم کریں گے اور آنے والا وقت یہ ثابت کردیگا کہ یہودی قوم ذریت ابراہیم یعنی ذریت یعقوب نہیں ہیں ملت ابراہیم تو ہوسکتے تھے مگر اب ملت ابراہیم بھی نہیں ہیں۔

حقیقت کیسے بدلتی ہیں یہ بھی ملاحظہ ہو میرے آپ کے سامنے ہی کچھ سے کچھ ہوگیا یعنی محترمہ اندرا گاندھی جناب جواہر لال نہرو کی لڑکی ہے جناب مہاتما گاندھی سے ان کا کوئی خاندانی تعلق نہیں ہے مگر آج محترمہ اندرا گاندھی اور ان کی اولاد کو گاندھی لقب سے پکارا جارہا ہے اور کسی کو بھی کوئی اعتراض نہیں مگر حقیقت کچھ اور ہے ایسے ہی زمانے نے غلط روایات کو صحیح مان کر اسرائیل کو یعقوب بنادیا اور بنی اسرائیل کو بنی یعقوب بنادیا جس لفظ بنی یعقوب کو اسرائیل کے لئے اگر تلاش کرو قرآن میں تو نہیں ملے گا۔ ہاں ترجموں اور حدیثوں میں ضرور ہے اللہ سے دعا ہے کہ ہم حقیقت کو تسلیم کرلیں۔

لیکن ان کے بعد ایسے ناخلف ان کے جانشین ہوئے جنہوں نے نماز (کی روح اسلامی تعلیمات کو) کو ضائع کردیا اور نفسانی خواہشوں کے پیچھے پڑ گئے۔ سوعن قریب ان کی گمراہی کی سزا ملے گی (۵۹) [۱۱:۸۷؛ ۲۳:۱تا۵؛ ۷۰:۲۳تا۳۵؛ ۹:۵]

ہاں جو لوگ توبہ کرلیں ایمان لے آئیں اور اچھے کام کرنے لگیں تو وہ جنت میں داخل ہوں گے اور ان پر ذرہ برابر بھی ظلم نہ ہوگا (۶۰)

ان کے لئے ہمیشہ رہنے والی جنت ہے جس کا اللہ نے اپنے بندوں سے وعدہ کیا ہے (جو ان کی آنکھوں سے) پوشیدہ ہے اس کا یہ وعدہ پورا ہوکر رہنا ہے (۶۱)

وہاں جنت میں وہ لوگ کوئی بےہودہ بات نہ سنیں گے ان

उनकी हर बात शान्ति की होगी, वहां प्रातः व सायं उनकी जीविका उनको मिलती रहेगी (62)
वह वह स्वर्ग है जिसका उत्तराधिकारी हम अपने बन्दों में से उसको बनाऐंगे जो सदाचारी होगा संयमी (63)
(फरिश्तों ने कहा) हम जो अवतरित होते हैं निःसन्देह तेरे ईश्वर के आदेश से आते हैं और जो कुछ (प्रकट कर्म) हम अपने हाथों से लिखते हैं या हमसे गुप्त रहता है उसको हम नही जान सकते, उन दोनों के मध्य जो है उसको ईश्वर जानता है और आपका ईश्वर भूलने वाला नहीं है (64)

کی ہر بات سلامتی کی ہوگی وہاں صبح وشام ان کا رزق ان کو ملتا رہے گا (۶۲)
وہ وہ جنت ہے جس کا وارث ہم اپنے بندوں میں سے اس کو بنائیں گے جو متقی ہوگا (۶۳)
(فرشتوں نے کہا) ہم جو نازل ہوتے ہیں یقیناً تیرے رب کے حکم سے آتے ہیں اور جو کچھ (ظاہر عمل) ہم اپنے ہاتھوں سے لکھتے ہیں یا ہم سے پوشیدہ رہتا ہے (اس کو ہم نہیں جان سکتے) ان دونوں کے درمیان جو ہے اس کو رب جانتا ہے اور آپ کا رب بھولنے والا نہیں ہے (۶۴)

वह रब है आकाशों और पृथ्वी का और उन सारी वस्तुओं का जो उन दोनों के मध्य हैं अतः आप उसी की पूजा पर दृढ़ पग रहो इन्सानों क्या है कोई अस्तित्व तुम्हारी जानकारी में उस जैसा (65)

وہ رب ہے آسمانوں اور زمین کا اور ان ساری چیزوں کا جو ان دونوں کے درمیان ہیں پس آپ اسی کی بندگی پر ثابت قدم رہو انسانو! کیا ہے کوئی ہستی تمہارے علم میں اس جیسی (۶۵)

और (मूर्ख) इन्सान कहता है कि जब मैं मर जाऊंगा तो क्या जीवित करके उठाया जाऊंगा?(66)
क्या इन्सान को याद नही आता कि हम पहले उस को (अपनी शक्ति से) उत्पन्न कर चुके हैं जबकि वह कुछ न था? (67)

اور (ناسمجھ) انسان کہتا ہے کہ جب میں مر جاؤں گا تو کیا زندہ کر کے اٹھایا جاؤں گا؟ (۶۶)
کیا انسان کو یاد نہیں آتا کہ ہم پہلے اس کو (اپنی قدرت سے) پیدا کر چکے ہیں جب کہ وہ کچھ نہ تھا؟ (۶۷)

नोट- मानव को पहली बार ईश्वर ने मिट्टी से पैदा किया और फिर उसकी सन्तान को वीर्य से पैदा कर रहा है, इसको ही कहा है कि मानव जो कहता है कि क्या मैं मरने के बाद दोबाराह जीवित किया जाऊंगा तो ईश्वर ने उसे याद दिलाया कि हां जब तुमको अर्थात तेरे पिता आदम को पहली बार पैदा किया तो तू कुछ भी न था अर्थात काई वृक्ष पौदा बन्दर इत्यादि कुछ न था और बाद को जो आदम के वंश की उत्पत्ति हो रही है वह भी ऐसे ही अर्थात वीर्य की बुन्द से उस गर्भ से पहले क्या मानव वानर इत्यादि होता है? यही बात ईश्वर ने इस आयत और दूसरी बहुत सी आयात में मानव को बताई है कि अपनी उत्पत्ति को देख मनन कर परन्तु इतने पर भी डारवन के चैले जिनमें अहले कुरआन भी सम्मिलित हैं मानव की रचना का दूसरा फार्मूला लाते हैं जो कुरआन के प्रकाश में मिथ्या है मानव की उत्पत्ति के विषय में सूरत निसा की आयत एक पर विस्तार से लिखा गया है अवलोकन हो,

और मैं अहले कुरआन समुदाय से कहता हूं कि वह अपने को अहले कुरआन कहते हैं परन्तु अपना विश्वास और पूजा इत्यादि कुरआन के विपरीत बना रखी है क्यों? अतः कुरआन के सम्बन्ध से वह लोग अपनी आस्था और नमाज कुरआन के अनुसार कर लें,

نوٹ:۔ انسان کو پہلی بار اللہ نے مٹی سے پیدا کیا اور پھر اس کی نسل کو نطفہ سے پیدا کر رہا ہے اس کو ہی کہا ہے کہ انسان جو کہتا ہے کہ کیا میں مرنے کے بعد دوبارہ زندہ کیا جاؤں گا تو اللہ نے اسے یاد دلایا کہ ہاں جب تجھ کو یعنی تیرے باپ آدم کو پہلی بار پیدا کیا تو تو کچھ بھی نہ تھا یعنی کائی، پیڑ، پودا، بندر وغیرہ کچھ نہ تھا اور بعد کو جو آدم کی نسل کی پیدائش ہو رہی ہے وہ بھی ایسے ہی یعنی نطفہ کے قطرے سے اس حمل سے پہلے کیا انسان بندر وغیرہ ہوتا ہے؟ یہی بات اللہ نے اس آیت اور دوسری بہت سی آیات میں انسان کو بتائی ہے کہ اپنی پیدائش کو دیکھ غور کر مگر اتنے پر بھی ڈارون کے چیلے جن میں اہل قرآن بھی شامل ہیں انسان کی پیدائش کا دوسرا فارمولا لاتے ہیں جو قرآن کی روشنی میں غلط ہے انسان کی پیدائش کے بارے میں سورت نساء کی آیت ۱ پر تفصیل سے لکھا گیا ہے ملاحظہ ہو۔

اور میں اہل قرآن فرقے سے کہتا ہوں کہ وہ اپنے کو اہل قرآن کہتے ہیں مگر اپنا عقیدہ اور عبادت وغیرہ قرآن کے خلاف بنا رکھی ہے کیوں؟ اس لئے قرآن کی مناسبت سے وہ لوگ اپنے عقیدے اور نماز قرآن کے مطابق کر لیں۔

तेरा रब, मैं ईश्वर शाक्ष्य देता हूं कि हम उन सब को और उनके साथ शैतानों को भी संग्रह करेंगे (जो इन्हें बहकाते रहते हैं) फिर उन्हें नर्क के किनारे लाकर घुटनों के बल खड़ा कर देंगे गिरा देंगे (68)

تیرا رب میں اللہ شہادت دیتا ہوں کہ ہم ان سب کو اور ان کے ساتھ شیطانوں کو بھی اکٹھا کریں گے (جو انہیں بہکاتے رہتے ہیں) پھر انہیں دوزخ کے کنارے لا کر گھٹنوں کے بل کھڑا کر دیں گے گرادینگے (۶۸)

फिर हर दल में से उन लोगों को अलग कर लेंगे जो (अपने जीवन में) ईश्वर की कठोर अवज्ञा करते थे (69)
और हम उन लोगों से भलि भांति अवगत है कि कौन नर्क में डाले जाने का सबसे अधिक अधिकारी है (70)
और ऐ पापियों! तुममें से हर एक वहां नर्क में प्रविष्ट होने वाला है और दुनिया में तो हर एक

پھر ہر جماعت میں سے ان لوگوں کو الگ کر لیں گے جو (اپنی زندگی میں) اللہ سے سخت سرکشی کرتے تھے (۶۹)
اور ہم ان لوگوں سے خوب واقف ہیں کہ کون جہنم میں ڈالے جانے کا سب سے زیادہ حق دار ہے (۷۰)
اور اے ظالمو! تم میں سے ہر ایک وہاں دوزخ میں ضرور وارد ہونے والا ہے اور دنیا میں تو ہر ایک آزمائش سے گزرتا ہے

परिक्षा से गुजरता है ऐसा होना तुम्हारे ईश्वर का बनाया हुआ नियम है जो अवश्य होना है अनिवार्य है यह एक निर्णीत निर्णय है (71) {19:85-86, 71:101-102-103, 26:90-91, 29:54, 39:19}

नोट- यदि देखा जाए तो इस दुनिया में जीवन व्यतीत करना बड़ा कठिन कार्य है हर मोड़ व हर निम्न व उच्च पर शैतान अपनी सैना के साथ उपस्थित है उसने इस दुनिया में पाप कराने के लिए ऐसा रोचक जाल बिछा रखा है कि हर आदमी के उसमें फंसने की सम्भावना है, उस जाल से वही बचता है जो सदाचारी होता है, और जो पापी होता है उसको ईश्वर याद नही रहता जो अपनी सलात को नष्ट कर देता है तो वह उसकी मोहकता में फंस जाता है,

उसको ही कहा है कि इस दुनिया में सब ही रहते हैं और सबके लिए सम्भाव है कि वह पाप करके नर्क में गिर जाए परन्तु जिस पर ईश्वर की दया होती है अर्थात ईश्वर के आदेश पर व्यवहार करके अच्छे कार्य करता है बुराईयों से बचता है, और जो ईश्वर को भूलकर शैतान को मित्र बनाता है और पाप करता है, उसमें पड़ा रहता है गिर जाता है यही पुल सिरात है आदमी के जीवन में लेखा जोखा के बाद नही,

हर व्यक्ति नर्क में नही जाएगा नर्क में केवल पापी जाएंगे नर्क में जाने के बाद वहां से निकलने का प्रश्न ही नही जो यह आस्था है कि नर्क में दण्ड भुगतने के बाद निकल आएंगे मिथ्या है, जन्नती तो नर्क की ध्वनी तक नही सुनेंगे आयत प्रस्तुत है,

(21:98से103) (अनेकेश्वर वादियों!) तुम और वह सब जिन्हें तुम ईश्वर को छोड़कर पूजते रहे हो नर्क का इन्धन हो तुम्हें वहां हर स्थिति में जाना है यदि वह ईश्वर होते तो कभी नर्क में न जाते यद्यपि सब को उसी में सदैव रहना है, वहां उनकी दुख दर्द की चीत्कारें होंगी और कान पड़ी ध्वनि न सुनाई देगी,

परन्तु जिन लोगों के लिए हमने पहले से भलाई का आदेश दे रखा है (अर्थात सदाचारी लोग) वह निःसंदेह नर्क से दूर रहेंगे वह (नर्क से इतने दूर होंगे कि) वहां की (चित्कार की) भनक भी उनके कानों में न पड़ेगी और वह अपनी रोचक प्रसादों के मध्य सदैव मगन रहेंगे उन्हें (महाप्रलय के दिन की) बड़ी से बड़ी भयावह भी हतोत्साह न कर सकेगी और फरिश्ते आगे बढ़ कर उनको हाथों हाथ लेंगे (और उन्हें शुभ सूचना देंगे कि) यह है तुम्हारा वह दिन जिसका (ईश्वर की पुस्तक में) तुमसे वचन किया था (103) {19:85,86,24:21,26:90,91, 29:54,39:19}

उपरोक्त जो आयात लिखी गई है उनमें नर्क के आगमन का विस्तार के साथ उल्लेख है उनमें कही नही कि पहले हर व्यक्ति को नर्क में जाना है इनमें स्पष्ट है कि सदाचारी व्यक्ति उसकी ध्वनी तक न सुनेंगे अतः यही बात उचित है जो कुरआन बता रहा है और जो हमारे यहां एक विश्वास बना रखा है कि नर्क में जाने के बाद भी निकल आएंगे मिथ्या है, और इस मिथ्या आस्था ने ही मुसलमानों की दशा जीण कर रखी है क्योंकि वह इस मिथ्या आस्था को सच मान कर पाप कर रहा है क्षमा की आशा पर परन्तु इन पापों से ईश्वर रूष्ट होता है अतः पापी की सहायता का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता,

कुरआन से यह भी प्रकट होता है कि शैतान को प्रलय तक इन्सानों को बहकाने के लिए छूट मिली है यदि शैतानी छल न होता तो इन्सानों का पता कैसे चलता कि कौन सदाचारी है और कौन दुराचारी इस परिक्षा में ही पता चलता है अतः शैतान का होना अनिवार्य है, और शैतान अपने छल में ला कर ही मानव से पाप कराता है जिसने कर लिया उसका गमन नर्क पर हुआ और जो बच गया उस का गमन नर्क पर न हुआ,

ایسا ہونا تمہارے پروردگار کا بنایا ہوا قانون ہے جو ضرور ہونا ہے لازم ہے یہ ایک طے شدہ فیصلہ ہے(۷۱) [۱۹:۸۵،۸۶:۲۱:۱۰۱،۱۰۲،۱۰۳:۲۶:۹۰،۹۱:۲۹:۵۴:۳۹:۱۹]

نوٹ:۔اگر دیکھا جائے تو اس دنیا میں زندگی گزارنا بڑا مشکل کام ہے ہر موڑ و ہر نشیب وفراز پر شیطان اپنی فوج کے ساتھ موجود ہے اس نے اس دنیا میں گناہ کرانے کے لئے ایسا دلچسپ جال بچھا رکھا ہے کہ ہر آدمی کا اس میں پھنسنے کا امکان ہے اس جال سے وہی بچتا ہے جو متقی ہوتا ہے اور جو ظالم ہوتا ہے اس کو اللہ یاد نہیں رہتا جو اپنی صلوٰۃ کو ضائع کر دیتا ہے تو وہ اس کی دل فریبیوں میں پھنس جاتا ہے۔

اس کو ہی کہا ہے کہ اس دنیا میں سب ہی رہتے ہیں۔اور سب کے لئے امکان ہے کہ وہ گناہ کر کے دوزخ میں گر جائے مگر جس پر اللہ کا کرم ہوتا ہے یعنی اللہ کے احکام پر عمل کر کے اچھے کام کرتا ہے برائیوں سے بچتا ہے وہ دوزخ میں گرنے سے بچتا ہے اور جو اللہ کو بھول کر شیطان کو دوست بناتا ہے اور گناہ کرتا ہے وہ اس میں پڑا رہتا ہے گر جاتا ہے یہی پل صراط ہے آدمی کی زندگی میں حساب کتاب کے بعد نہیں۔

ہر آدمی دوزخ میں نہیں جائے گا دوزخ میں صرف گناہگار جائیں گے دوزخ میں جانے کے بعد وہاں سے نکلنے کا سوال ہی نہیں جو یہ عقیدہ ہے کہ دوزخ میں سزا بھگتنے کے بعد نکل آئیں گے غلط ہے جنتی تو دوزخ کی آواز تک نہیں سنیں گے آیت پیش ہے

(۲۱:۹۸ تا ۱۰۳)(مشرکو!) تم اور وہ سب جنہیں تم اللہ کو چھوڑ کر پوجتے رہے ہو دوزخ کا ایندھن ہیں تمہیں وہاں ہر حال میں جانا ہے اگر وہ اللہ ہوتے تو کبھی دوزخ میں نہ جاتے حالانکہ سب کو اسی میں ہمیشہ رہنا ہے وہاں ان کی دکھ درد کی چیخیں ہوں گی اور کان پڑی آواز نہ سنائی دے گی۔

لیکن جن لوگوں کے لئے ہم نے پہلے سے بھلائی کا حکم دے رکھا ہے (یعنی نیک کردار لوگ) وہ یقیناً دوزخ سے دور رہیں گے وہ (دوزخ سے اتنے دور ہوں گے) وہاں کی (چیخ پکار کی) بھنک بھی ان کے کانوں میں نہ پڑے گی اور وہ اپنی پسندیدہ نعمتوں کے درمیان ہمیشہ مگن رہیں گے۔انہیں (قیامت کے دن کی) بڑی سے بڑی ہولناکی بھی ہراساں نہ کر سکے گی۔اور فرشتے آگے بڑھ کر ان کو ہاتھوں ہاتھ لیں گے (اور انہیں خوشخبری دیں گے کہ) یہ ہے تمہارا وہ دن جس کا (اللہ کی کتاب میں) تم سے وعدہ کیا گیا تھا۔۱۰۳ [۱۹:۸۵،۸۶:۲۴:۲۱:۲۶:۹۰،۹۱:۲۹:۵۴:۳۹:۱۹]

اوپر جو آیات لکھیں گئیں ہیں ان میں جہنم کے ورود کا تفصیل کے ساتھ ذکر ہے ان میں کہیں نہیں کہ پہلے ہر آدمی کو دوزخ میں جانا ہے ان میں صاف ہے کہ نیک آدمی اس کی آواز تک نہ سنیں گے اس لئے یہی بات صحیح ہے جو قرآن بتا رہا ہے اور جو ہمارے یہاں ایک عقیدہ بنا رکھا ہے کہ دوزخ میں جانے کے بعد بھی نکل آئیں گے غلط ہے اور اس غلط عقیدے نے ہی مسلمانوں کی حالت خراب کر رکھی ہے کیوں کہ وہ اس غلط عقیدے کو سچ مان کر گناہ کر رہا ہے بخشش کی امید پر لیکن ان گناہوں سے اللہ ناراض ہوتا ہے اس لئے گناہگار کی مدد کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔

قرآن سے یہ بھی ظاہر ہوتا ہے کہ شیطان کو قیامت تک انسانوں کو بہکانے کے لئے مہلت ملی ہے اگر شیطانی دھوکا نہ ہوتا تو انسانوں کا پتہ کیسے چلتا کہ کون نیک ہے اور کون بد۔اس امتحان میں ہی پتہ چلتا ہے اس لئے شیطان کا ہونا ضروری ہے اور شیطان اپنے فریب میں لا کر ہی انسان سے گناہ کراتا ہے جس نے کر لیا اس کا ورود دوزخ پر ہوا اور جو بچ گیا اس کا ورود دوزخ پر نہ ہوا۔

(वह कैसे फिर हमारा कानून जिसमें है कि जो सदाचारी है वह जन्नती और जो बद है वह नर्की इसके आधीन) फिर हम सदाचारीयों को मुक्ति देंगे (प्रलय के मैदान में) और जालिमों को (जो कि अपने जीवन में पाप करके उसमें पड़े रहे) उसमें घुटनों के बल पड़ा हुआ छोड़ देंगे (अर्थात यह हशर में होगा कि जो पाप करता रहा जीवन में वह नर्क में जाएगा) (72)

(وہ کیسے پھر ہمارا قانون جس میں ہے کہ جو نیک ہے وہ جنتی اور جو بد ہے وہ دوزخی اس کے تحت) پھر ہم پرہیزگاروں کو نجات دیں گے (حشر کے میدان میں) اور ظالموں کو (جو کہ اپنی زندگی میں گناہ کر کے اس میں پڑے رہے) اس میں گھٹنوں کے بل پڑا ہوا چھوڑ دیں گے (یعنی یہ حشر میں ہوگا کہ جو گناہ کرتا رہا زندگی میں وہ دوزخ میں جائے گا) (۷۲)

(वह इसलिए कि) और जब उन लोगों के सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं तो जो नास्तिक हैं वह आस्तिकों से कहते हैं कि दोनों दलों में से भवन किस के अच्छे और सभाएं किस की उत्तम हैं?(73)

(وہ اس لئے کہ) اور جب ان لوگوں کے سامنے ہماری آیتیں پڑھی جاتی ہیں تو جو کافر ہیں وہ مومنوں سے کہتے ہیں کہ دونوں فریق میں سے مکان کس کے اچھے اور مجلس کس کی بہتر ہیں؟ (۷۳)

(परन्तु वह लोग यह नहीं जानते कि) उन से पहले हम कितने ही समुदायों को वध कर चुकें हैं जो उनसे पहले कहीं अच्छी सामग्री रखते थे और प्रकट गौरव व वैभव में उनसे कहीं बढ़ कर थी (74)

(مگر وہ لوگ یہ نہیں جانتے کہ) ان سے پہلے ہم کتنی ہی قوموں کو ہلاک کر چکے ہیں جو ان سے پہلے کہیں بہتر سازوسامان رکھتی تھیں اور ظاہری شان وشوکت میں ان سے کہیں بڑھ کر تھیں (۷۴)

कह दो कि जो व्यक्ति भ्रष्टता में पड़ा हुआ है ईश्वर उसको शनैः शनैः छूट दिये जाता है यहां तक कि जब उस वस्तु को देख लेगा जिसका वचन उनसे किया जाता है चाहे दुनिया का दण्ड हो या प्रलय का तो उस समय जान लेंगे कि भवन किसका बुरा है और सैना किस की निर्बल है (75) {18:98}

کہہ دو کہ جو شخص گمراہی میں پڑا ہوا ہے اللہ اس کو آہستہ آہستہ مہلت دئے جاتا ہے یہاں تک کہ جب اس چیز کو دیکھ لے گا جس کا وعدہ ان سے کیا جاتا ہے خواہ دنیا کا عذاب ہو یا قیامت کا تو اس وقت جان لیں گے کہ مکان کس کا بُرا ہے اور لشکر کس کا کمزور ہے (۷۵) [۹۸:۱۸]

(इससे विपरीत) जो लोग सत्य मार्गग्रहण करते हैं ईश्वर उन्हें पथ प्रदर्शन (और सफलता की क्षमता) प्रदान करता है और तेरे रब के निकट तो शेष रहने वाले उपकार ही उत्तम हैं बदले की दृष्टि से भी और अन्त की दृष्टि से भी (76)

(اس کے برعکس) جو لوگ راہ راست اختیار کرتے ہیں اللہ انہیں ہدایت (اور فلاح کی توفیق) عطا فرماتا ہے اور تیرے رب کے نزدیک تو باقی رہنے والی نیکیاں ہی بہتر ہیں ثواب کے اعتبار سے بھی اور انجام کے لحاظ سے بھی (۷۶)

भला आपने उस व्यक्ति को देखा जिसने हमारी आयतों से इनकार किया और कहने लगा कि (यदि मैं पुनः जीवित हुआ भी) तो ऐसा ही धन दौलत मुझे मिलेगा (77)

بھلا آپ نے اس شخص کو دیکھا جس نے ہماری آیتوں سے کفر کیا اور کہنے لگا کہ (اگر میں دوبارہ زندہ ہوا بھی تو) ایسا ہی مال ودولت مجھے ملے گا (۷۷)

क्या उसने परोक्ष की सूचना पाली है या ईश्वर के यहां से वचन ले लिया है? (कि जो मैं कह रहा हूं वही होगा) (78)

کیا اس نے غیب کی خبر پالی ہے یا اللہ کے یہاں سے عہد لے لیا ہے؟ (کہ جو میں کہہ رہا ہوں وہی ہوگا) (۷۸)

तो सुनो! जो कुछ वह कहता है हम उस लिखते जा रहे हैं (अर्थात हमारे फरिश्ते और हम) और उसे के कष्ट को बढ़ाते जा रह हैं (79)

تو سنو! جو کچھ وہ کہتا ہے ہم اسے لکھتے جارہے ہیں (یعنی ہمارے فرشتے اور ہم) اور اس کے عذاب کو بڑھاتے جارہے ہیں (۷۹)

और जिस धन व सन्तान (की अधिकता पर वह फूला हुआ है वह हमारे ही अधिकार में आएगा और वह अकेला हमारे सामने उपस्थित होगा) (80)

اور جس مال واولاد (کی کثرت) پر وہ پھولا ہوا ہے وہ ہمارے ہی قبضہ میں آئے گا اور وہ اکیلا ہمارے سامنے حاضر ہوگا (۸۰)

उन लोगों ने ईश्वर को छोड़ कर औरो को देवता बना रखा है ताकि उनके सहायक हो (81)

ان لوگوں نے اللہ کو چھوڑ کر اوروں کو معبود بنا رکھا ہے تا کہ ان کے مددگار ہوں (۸۱)

तो सुनो! ऐसा नहीं होगा वह उनकी पूजा से इनकार कर जाएंगे और उलटे उनके विरोधी हो जाएंगे (82) {25:17-19}

تو سنو! ایسا نہیں ہوگا وہ ان کی بندگی سے انکار کر جائیں گے اور الٹے ان کے مخالف ہو جائیں گے (۸۲) [۲۵:۱۷-۱۹]

(ऐ मुहम्मद स० और इन्सानो!) क्या तुमने कुरआन में नहीं पढ़ा कि हमारे नियम में शैतानों को यह छूट है कि वह दुष्कर्म करने वालों के मित्र बनें वह उन्हें बराबर (आपके विरोध पर) उकसाते रहते हैं (83)

(اے محمدؐ اور انسانو!) کیا تم نے قرآن میں نہیں پڑھا کہ ہمارے قانون میں شیطانوں کو یہ چھوٹ ہے کہ وہ بدکاری کرنے والوں کے دوست بنیں وہ انہیں برابر (آپ کی مخالفت پر) اکساتے رہتے ہیں (۸۳)

तो आप उन पर (कष्ट अवतरित के लिए) जल्दी

تو آپ ان پر (نزول عذاب کے لئے) جلدی نہ کریں (دیر

न करना (देर केवल इस लिए है कि वह पश्चाताप करे) यदि नही तो हम उनके दिन गिन रहे हैं (जब दिन पूरे हो जाएंगे तो कोई शक्ति उन्हें कष्ट से न बचा सकेगी) (84)

صرف اس لئے ہے کہ وہ توبہ کریں) اگر نہیں تو ہم ان کے دن گن رہے ہیں (جب دن پورے ہو جائیں گے تو کوئی طاقت انہیں عذاب سے نا بچا سکے گی) (٨٤)

वह वह दिन होगा जब हम सदाचारी और संयमी लोगों को अतिथियों की भांति अपने समक्ष बुलाएंगे (85)

وہ وہ دن ہوگا جب ہم متقی اور پرہیز گاروں کو مہمانوں کی طرح اپنے حضور بلائیں گے (٨٥)

और अपराधियों को नर्क की ओर प्यासे हांक ले जाएंगे (86) {19:71,24:21,29:90,91;36:16}

اور مجرموں کو دوزخ کی طرف پیاسے ہانک لے جائیں گے (٨٦) [١٩:٧١، ٢٤:٢١، ٢٩:٩٠، ٩١؛ ٣٦:١٦]

उस दिन कोई किसी की अनुशंसा न कर सकेगा, हां जिस किसी ने ईश्वर से आज्ञा प्राप्त की हो (परन्तु आज्ञा है नही तो अनुशंसा का प्रश्न ही नही है) (87)

اس روز کوئی کسی کی شفاعت نہ کر سکے گا ہاں جس کسی نے اللہ کی بارگاہ سے اجازت حاصل کی ہو (لیکن اجازت ہے نہیں تو شفاعت کا سوال ہی نہیں ہے) (٨٧)

नोट- आयत 71 का स्पष्टीकरण आयत 87 तक है जो बड़ा स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि नर्क में कौन पड़ा रहेगा और कौन उससे बचेगा, दुनिया के जीवन में हर व्यक्ति का गमन नर्क स्वर्ग पर होता है जो सदाचारी होते हैं वह इस परीक्षा में सफल हो जाते हैं और स्वर्ग में जाएंगे और जो भ्रष्ट होते हैं वह अनुचित कर्म करके नर्क में गिर जाते हैं और इस कर्म से ही प्रलोक में नर्क में जाएंगे, नर्क व स्वर्ग पर वरुद (गमन) दुनिया में है हशर में नही हिसाब किताब के बाद तो स्वर्ग नर्क में प्रविष्ट होना है और सदैव वहां रहना है (11:107, 108; 90:10से20) इत्यादि

نوٹ:۔ آیت ٧١ کی وضاحت آیت ٨٧ تک ہے جو بڑی صاف نظر آ رہی ہے کہ دوزخ میں کون پڑا رہے گا اور کون اس سے بچے گا دنیا کی زندگی میں ہر آدمی کا گزر دوزخ جنت پر ہوتا ہے جو نیک ہوتے ہیں وہ اس امتحان میں کامیاب ہو جاتے ہیں اور جنت میں جائیں گے اور جو بد ہوتے ہیں وہ غلط کام کر کے دوزخ میں گر جاتے ہیں اور اس عمل سے ہی آخرت میں دوزخ میں جائیں گے دوزخ جنت پر ورود دنیا میں ہے حشر میں نہیں۔ حشر کے بعد تو جنت دوزخ میں داخل ہونا ہے اور ہمیشہ وہاں رہنا ہے [١١:١٠٧، ١٠٨؛ ٩٠:١٠ سے ٢٠ وغیرہ]

उनका कथन यह है कि ईश्वर ने अपना पुत्र बना रखा है (88)

बड़ी कठोर बात है जो लोग घढ़ लाए है (89)

निकट है कि आकाश फट पड़े और पृथ्वी (का सीना) चाक हो जाए और पर्वत गिर जाए (इस झूट पर) (90)

इस बात पर कि लोग ईश्वर के लिए पुत्र होने का वाद कर रहे है (91) (ऐसी बात बड़ी ज्यादती की है ईश्वर अपना पुत्र बनाए) और रहमान ऐसी ज्यादती वाली बात नही करेगा कि वह किसी को अपना पुत्र बनाए (यह उसकी महिमा के विपरीत हैं) (92)

ان کا قول تو یہ ہے کہ اللہ نے اپنا بیٹا بنا رکھا ہے (٨٨)

بڑی ہی سخت بات ہے جو لوگ گڑھ لائے ہیں (٨٩)

قریب ہے کہ آسمان پھٹ پڑے اور زمین (کا سینہ) چاک ہو جائے اور پہاڑ گر جائیں (اس جھوٹ پر) (٩٠)

اس بات پر کہ لوگ اللہ کے لئے بیٹا ہونے کا دعویٰ کر رہے ہیں (٩١)

(ایسی بات بڑی زیادتی کی ہے کہ اللہ اپنا بیٹا بنائے) اور رحمٰن ایسی زیادتی والی بات نہیں کرے گا کہ وہ کسی کو اپنا بیٹا بنائے (یہ اس کی شان کے خلاف ہے) (٩٢)

नोट- महिमा (दर्प) के विपरीत इसलिए है कि उसको किसी सेवा की आवश्यकता ही नही न वह रोगी होता है न बूढ़ा होगा कि कोई उसकी लाठी पकड़ कर उसे चलाए न वह निर्धन होगा, उसका गौरव अनोखा है अतः उसे किसी पुत्र या सहायक की आवश्यकता नही वह किसी का आश्रित नही सब उसके आश्रित है जब नियम यह है तो वह स्वयं क्यों इस नियम का विरोध करने लगा है?

نوٹ:۔ شان کے خلاف اس لئے ہے کہ اس کو کسی خدمت کی ضرورت ہی نہیں نہ وہ بیمار رہتا ہے نہ وہ بوڑھا ہوگا کہ کوئی اس کی لاٹھی پکڑ کرا سے چلائے نہ وہ غریب ہوگا اس کی شان نرالی ہے اس لئے اسے کسی بیٹے یا مددگار کی ضرورت نہیں وہ کسی کا محتاج نہیں سب اس کے محتاج ہیں جب قاعدہ یہ ہے تو وہ خود کیوں اس قانون کی مخالفت کرنے لگا ہے؟

आकाश व पृथ्वी में जो कोई भी है वह इसीलिए है कि उस ईश्वर के आगे बन्दगी आज्ञाकारी का सिर झुकाए उपस्थित हो (93)

उसने (अपनी शक्ति से) उन्हें घेर रखा है और (अपने ज्ञान से) एक एक को गिन रखा है (94)

آسمان و زمین میں کوئی بھی ہے وہ اسی لئے ہے کہ اس اللہ کے آگے بندگی فرمانبرداری کا سر جھکائے حاضر ہو (٩٣)

اس نے (اپنی قدرت سے) انہیں گھیر رکھا ہے اور (اپنے علم سے) ایک ایک کو گن رکھا ہے (٩٤)

और सब महाप्रलय के दिन उसके सामने अकेले उपस्थित होंगे (95)

اور سب قیامت کے دن اس کے سامنے اکیلے اکیلے حاضر ہوں گے (٩٥)

जो लोग विश्वास लाए और शुभ कार्य किए तो ईश्वर उन लोगों के हृदयों में उनके लिए प्रेम उत्पन्न कर देगा (सच है इन्सान की नेकी लोगों को अपनी ओर खीचती है) (96)

جو لوگ ایمان لائے اور نیک اعمال کئے تو اللہ ان لوگوں کے دلوں میں ان کے لئے محبت پیدا کر دے گا (سچ ہے انسان کی نیکی لوگوں کو اپنی طرف کھینچتی ہے) (٩٦)

(ऐ मुहम्मद स0) हमने यह कुरआन तुम्हारी भाषा अरबी में सरल (अवतरित किया है ताकि तुम इससे सदाचारियों को शुभ सूचना पहुंचा दो और झगड़ा करने वालों को डर सुनादो (97)

उन नास्तिकों से पहले जातियों के कितने चरण गमन हो चुके हैं जिन्हें हमारे नियम ने (उनके दुराचार के आधार पर) वध कर दिया, क्या उनमें से किसी का अस्तित्व अनुभूत करते हो या उनकी भनक भी सुनाई देती है (यही दशा इन अवज्ञाकारों की भी होनी है) (98)

नोट- यह कुरआन ईश्वर के कहने के अनुसार सरल है और इसे हर व्यक्ति जो समझना चाहता है इसको समझ सकता है इसलिए ही अरब जो बिल्कुल जड़ थे उन्होंने इसको समझ लिया था, किसी को कोई आपत्ति नहीं हुई थी, अतः उलमा का यह कहना कि कुरआन कठिन है इसको हदीस कथन के बिना नहीं समझा जा सकता बिल्कुल मिथ्या और स्वयं कुरआन के वाद के विपरीत है, कुरआन को प्रेषित करने का उद्देश्य ही यह है कि लोग इसको समझकर इस पर व्यवहार करें,

और अनिवार्य है कि दूसरे समुदाय भी समझें तो उनके लिए उनकी भाषा में कुरआन का अनुवाद होना अनिवार्य है जो कुरआन के अरबी लेख के अनुसार हो, परन्तु दुख आज जो अनुवाद हैं वह बहुत स्थान पर अरबी लेख से हट गए हैं, जिन पर अपने और पराए आपत्ति करते हैं अतः अनुवाद एक सही दुनिया के सामने आना चाहिए हर भाषा में,

उदाहरण के लिए सूरत अनफाल की धारा एक यस अलूनाका अनिल अनफाल का अनुवाद किया गया है, यह लोग आपसे लूट के माल का आदेश ज्ञात करते हैं, यह अनुवाद अरबी लेख और रसूल व आस्तिकों की महिमा के विपरीत है, क्या मुहम्मद लुटेरे थे और बाद को उनके मानने वाले भी लुटेरे हुए (शरण) अतः यह अनुवाद मिथ्या है, सही अनुवाद यह है- ऐ मुहम्मद स0 लोग आपसे अधिक आय के बारे में प्रश्न करेंगे, इस का स्पष्टीकरण मैंने सूरत अनफाल के भाव में किया है अवलोकन हो,

सूरत ता हा मक्की (20)

ऐ मुहम्मद स0 (1) हमने आप पर यह कुरआन इसलिए नहीं प्रेषित किया कि कष्ट (कलेश व श्रम) में पड़ जाएं (2)

(यह तो इसलिए प्रेषित किया है कि) जिस व्यक्ति के हृदय में ईश्वर का भय विद्यमान हो वह इससे शिक्षा प्राप्त करे (जिन लोगों के हृदयों में ईश्वर का भय नहीं है वह कदापि विश्वास न लाएंगे तो आप उन पर दुख क्यों करो (3)

यह कुरआन उस अस्तित्व का (अर्थात मुझ ईश्वर का) प्रेषित किया हुआ है जिसने पृथ्वी को और ऊंचे ऊंचे आकाशों को उत्पन्न किया है (4)

वह मैं रहमान हूं जो संसार के शासन के सिंहासन पर शोभामान हूं (5)

जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है और जो इन दोनों के मध्य है और जो कुछ पृथ्वी के नीचे है सब उसी का है और उसी के लिए है (6)

तुम चाहे अपनी बात पुकार कर कहो वह तो चुपके से कही हुई बात अपितु उससे गुप्त बात भी जानता है (7)

(ऐ मुहम्मद कह दो) वही तो ईश्वर है (क्या लोग

(اے محمدؐ!) ہم نے یہ قرآن تمہاری زبان عربی میں آسان (نازل) کیا ہے تاکہ تم اس سے پرہیزگاروں کو خوشخبری پہنچادو اور جھگڑا کرنے والوں کو ڈر سنادو (۹۷)

ان منکروں سے پہلے قوموں کے کتنے ہی دور گزر چکے ہیں جنہیں ہمارے قانون نے (ان کی بداعمالیوں کی بناپر) ہلاک کردیا کیا ان میں سے کسی کا وجود محسوس کرتے ہو یا ان کی بھنک بھی سنائی دیتی ہے (یہی حال ان نافرمانوں کا بھی ہونا ہے) (۹۸)

نوٹ:۔ یہ قرآن اللہ کے کہنے کے مطابق آسان ہے اور اسے ہر وہ آدمی جو سمجھنا چاہتا ہے اس کو سمجھ سکتا ہے اس لئے ہی عرب جو بالکل جاہل تھے انہوں نے اس کو سمجھ لیا تھا کسی کو کوئی شکایت نہیں ہوئی تھی لہٰذا علماء کا یہ کہنا کہ قرآن مشکل ہے اس کو حدیث کے بغیر نہیں سمجھا جاسکتا بالکل غلط اور خود قرآن کے دعویٰ کے خلاف ہے قرآن کو نازل کرنے کا مقصد ہی یہ ہے کہ لوگ اس کو سمجھ کر اس پر عمل کریں۔

اور ضروری ہے کہ دوسری قومیں بھی سمجھیں تو ان کے لئے ان کی زبان میں قرآن کا ترجمہ ہونا ضروری ہے جو قرآن کے عربی متن کے مطابق ہو لیکن افسوس آج جو ترجمے ہیں وہ بہت جگہ عربی متن سے ہٹ گئے ہیں۔ جن پر اپنے اور غیر اعتراض کرتے ہیں اس لئے ترجمہ ایک صحیح دنیا کے سامنے آنا چاہیے ہر زبان میں۔

مثال کے طور پر سورت انفال کی آیت ایک یسئلونک عن الانفال کا ترجمہ کیا گیا ہے یہ لوگ آپ سے لوٹ کے مال کا حکم پوچھتے ہیں۔ یہ ترجمہ عربی متن اور رسول و مومنوں کی شان کے خلاف ہے کیا محمدؐ لٹیرے تھے اور بعد کو ان کے ماننے والے بھی لٹیرے ہوئے (نعوذ) اس لئے یہ ترجمہ غلط ہے صحیح ترجمہ یہ ہے اے محمدؐ لوگ آپ سے مزید آمدنی کے بارے میں سوال کریں گے۔ اس کی وضاحت میں نے انفال کے مفہوم میں کی ہے ملاحظہ ہو۔

سورت طٰہٰ مکی (۲۰)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اے محمدؐ (۱) ہم نے آپ پر یہ قرآن اس لئے نہیں نازل کیا کہ آپ مشقت (رنج و محنت) میں پڑ جاؤ (۲)

(یہ تو اس لئے نازل ہوا ہے کہ) جس شخص کے دل میں اللہ کا خوف موجود ہو وہ اس سے نصیحت حاصل کرے (جن لوگوں کے دلوں میں اللہ کا خوف نہیں ہے وہ ہرگز ایمان نہ لائیں گے تو تم ان پر افسوس کیوں کرو) (۳)

یہ قرآن اس ذات کا (یعنی مجھ اللہ کا) اتارا ہوا ہے جس نے زمین کو اور اونچے اونچے آسمانوں کو پیدا کیا ہے (۴)

وہ میں رحمان ہوں جو کائنات کی فرمانروائی کے تخت پر جلوہ فرما ہوں (۵)

جو کچھ آسمانوں اور زمین میں ہے اور جو ان دونوں کے درمیان ہے اور جو کچھ زمین کے نیچے ہے سب اس کا ہے اور اسی کے لئے ہے (۶)

تم چاہے اپنی بات پکار کر کہو، وہ تو چپکے سے کہی ہوئی بات بلکہ اس سے مخفی بات بھی جانتا ہے (۷)

(اے محمدؐ کہہ دو) وہی تو اللہ ہے (کیا لوگ انکار کرتے ہیں

इंकार करते हैं कि इलाह नहीं है निःसन्देह ईश्वर है उसके सारे नाम अच्छे हैं (8)

(ऐ रसूल) और क्या आपको मूसा (के समाचारों की) सूचना मिली है (9)

जब उसने (सीना में) अग्नि देखी तो अपने घर के लोगों से कहा ठहरो मुझे आग दिखाई दे रही है (मैं जाता हूँ) हो सकता है कि मैं तुम्हारे (तापने) के लिए अंगारा लेता आऊं या अलाव पर कोई मार्ग दर्शन करने वाला ही मिल जाए (10)

फिर जब वहां पहुंचे तो परोक्ष से ध्वनि आई ऐ मूसा (11)

मैं ही तो तेरा रब ईश्वर हूँ पस आप अपनी जूतियां उतार दो तुम यहां तूवा की पवित्र घाटी में हो अर्थात शांति से बैठकर बात सुनो, जैसे किसी आने वाले आदमी से कहते हैं कि जूता उतार दो बैठकर बात सुन (12)

मैंने तुझे (अपनी रिसालत के लिए) चुन लिया है तो जो कुछ तुझे आदेश दिया जाए उसको ध्यान से सुन (13) (18:110)

निःसन्देह मैं ईश्वर हूँ (कौन कहता है) कि इलाह नहीं, निःसन्देह मैं ईश्वर हूं, पस मेरी पूजा कर और मेरी याद के लिए नमाज स्थापित कर (14)

निःसन्देह महाप्रलय आने वाली है मैं चाहता हूं कि उसका समय गुप्त रखूं ताकि हर व्यक्ति जो प्रयत्न करे उसका बदला पूरा पाए (15)

पस ऐसा न हो कि जो लोग उसके होने का विश्वास न रखते हो और अपनी इच्छा के बन्दे हो वह आप को भी उसके विश्वास से न रोक दे तो उस स्थिति में आप वध हो जाओगे (16)

और मूसा यह तुम्हारे दाहिने हाथ में क्या है? (17)

मूसा ने कहा यह मेरी लाठी है इस पर मैं सहारा लगाता हूं और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूं और मेरे लिए इसमें और भी बहुत से लाभ और सहारे हैं (18)

ईश्वर ने कहा मूसा इसे डाल दो (19)

मूसा ने उसे डाल दिया और देखता क्या है कि एक सांप है जो दौड़ रहा है (20)

आदेश हुआ इसे पकड़ लो और भय न करना हम अभी इसको पहली स्थिति में कर देंगे (21)

फिर आदेश हुआ अपना हाथ अपनी बगल में दबा वह किसी दोष के बिना सफेद निकलेगा यह दूसरा चिन्ह है (22) {53:13}

(और यह दो चिन्ह) इसलिए (दिए गए हैं) कि भविष्य में तुझे अपनी महिमा के बड़े बड़े चिन्ह दिखाएं (23)

(इनको लेकर) तुम फ़िरऔन के पास जाओ वह बड़ा उद्दण्ड हो रहा है (24)

मूसा ने (फ़िरऔन के पास जाने से पहले) प्रार्थना

کہ) الہٰ نہیں ہے یقیناً اللہ ہے اس کے سارے نام اچھے ہیں (۸)

(اے رسولؐ!) اور کیا آپ کو موسیٰ (کے حال کی) خبر ملی ہے (۹)

جب اس نے (سینا میں) آگ دیکھی تو اپنے گھر کے لوگوں سے کہا ٹھہرو، مجھے آگ دکھائی دے رہی ہے (میں جاتا ہوں) ہوسکتا ہے کہ میں تمہارے (تاپنے) کے لئے انگارا لیتا آؤں یا الاؤ پر کوئی رستہ بتانے والا ہی مل جائے (۱۰)

پھر جب وہاں پہنچے تو غیب سے آواز آئی اے موسیٰ (۱۱)

<u>میں ہی تو تیرا رب اللہ ہوں پس تم اپنی جوتیاں اتار دو یہاں طویٰ کی مقدس وادی میں ہو یعنی اطمینان سے بیٹھ کر بات سنو جیسے کسی آنے والے آدمی سے کہتے ہیں کہ جوتا اتار دے بیٹھ کر بات سن (۱۲)</u>

میں نے تجھے (اپنی رسالت کے لئے) چن لیا ہے تو جو کچھ تجھے حکم دیا جائے اس کو غور سے سن (۱۳) [۱۸:۱۱۰]

<u>بے شک میں اللہ ہوں (کون کہتا ہے) کہ الہٰ نہیں یقیناً میں اللہ ہوں پس میری ہی بندگی کر اور میری یاد کے لئے نماز قائم کر (۱۴)</u>

بے شک قیامت آنے والی ہے میں چاہتا ہوں کہ اس کا وقت پوشیدہ رکھوں تا کہ ہر شخص جو کوشش کرے اس کا بدلہ پائے (۱۵)

پس ایسا نہ ہو کہ جو لوگ اس کے ہونے کا یقین نہ رکھتے ہوں اور اپنی خواہش کے بندے ہوں وہ آپ کو بھی اس کے یقین سے نہ روک دے تو اس صورت میں آپ ہلاک ہو جاؤ گے (۱۶)

اور موسیٰ یہ تمہارے داہنے ہاتھ میں کیا ہے؟ (۱۷)

موسیٰ نے کہا یہ میری لاٹھی ہے اس پر میں سہارا لگاتا ہوں اور اس سے اپنی بکریوں کے لئے پتے جھاڑتا ہوں اور میرے لئے اس میں اور بھی بہت سے فائدے اور سہارے ہیں (۱۸)

اللہ نے کہا موسیٰ اسے ڈال دو (۱۹)

موسیٰ نے اسے ڈال دیا اور دیکھتا کیا ہے کہ ایک سانپ ہے جو دوڑ رہا ہے (۲۰)

حکم ہوا اسے پکڑ لو اور خوف نہ کرنا ہم اس کو ابھی اس کی پہلی حالت پر لوٹا دیں گے (۲۱)

پھر حکم ہوا اپنا ہاتھ اپنی بغل میں دبا وہ کسی عیب کے بغیر سفید نکلے گا یہ دوسری نشانی ہے (۲۲) [۱۳:۵۳]

(اور یہ دو نشانیاں) اس لئے (دی گئی ہیں) کہ آئندہ تجھے اپنی قدرت کی بڑی بڑی نشانیاں دکھائیں (۲۳)

(ان کو لے کر) تم فرعون کے پاس جاؤ وہ بڑا سرکشی ہو رہا ہے (۲۴)

موسیٰ نے (فرعون کے پاس جانے سے پہلے) دعا مانگی اے

नोट- इन आयात में सीना (वक्ष) खोलने की बात ऐ रब मेरा वक्ष खोल दे (25) {6:125, 39:22, 96:1}
कही गई है तो जैसे वक्ष खोला गया ऐसे ही जबान भी खोली गई जो आयत 27 में है परन्तु इस आयत के अवतरित होने के विषय में विचित्र बात कही गई है जिसका सत्यता से कोई सम्बन्ध नही है और
मेरा काम सरल कर दे (26)
(वह ऐसे कि) मेरी भाषा में बात कहने का वह प्रभाव उत्पन्न कर दे (कि लोग सुनकर धर्म को स्वीकार कर ले (27)
ताकि वह मेरी बात समझ ले (और वह मेरी बात जब ही समझ सकेंगे कि जब मैं अच्छी बात कहूं वह तेरी कृपा से हो सकता है) (28)
और मेरे घर वालों में से (एक को) मेरा सहायक भार बटाने वाला बना दे (29)
(अर्थात) मेरे भाई हारून को (30)
उससे मेरी शक्ति को बलवान कर (31)
और उसे मेरे कार्य में साझी कर (32)
ताकि हम तेरी पवित्रता अधिकता से वर्णन करे (33)
और तुझे अधिकता से याद करे (34)
निःसन्देह तू हमको हर दशा में देख रहा है (और किसी दशा में हमारी और से अचेत नही है) तू हमारे हर कार्य को जानता है (35)
ईश्वर ने कहा ऐ मूसा तेरी प्रार्थना स्वीकार की गई (36)
और हमने तुम पर एक बार और भी उपकार किया है (37) {20:22, 53:13}
यह वह समय था जब हमने तेरी माता को संकेत द्वारा आदेश दिया था वह बताते है (38)
(वह यह था) कि बच्चे को (अर्थात मूसा को) पेटी में रख फिर उस (पेटी) को नदी में बहा दे नदी उसको किनारे से लगा देगी फिर उसे वह व्यक्ति जो मेरा और उसका (अर्थात ईश्वर का और मूसा का) शत्रु है उठा लेगा (और उसके भवन में बच्चे का पालन पोषण होगा हमने अपनी मुख्य कृपा से तुम पर स्नेह का छाया डाल दिया था (कि अपरिचित भी परिचित बन गए) और यह जो कुछ हुआ वह इसलिए कि हम चाहते थे कि तू हमारी देख-रेख में पालन पोषण पाए (चूंकि तुझे फिरऔन से सामना करना था, यह उस समय हो सकता था जब तू आरम्भ से ही ऐसे वातावरण में पालन पोषण पाए जिससे तू राजाओं से बात करने योग्य हो जाए यदि माता-पिता के पास बनी इस्राईल के बच्चों की भांति पालन पोषण होता तो तू निडर होकर बोलने वाला नही हो सकता था तो यह हमारी कृपा तुझ पर विशेष थी) (39)
(और यह भी हमारी कृपा थी कि) जब तेरी बहन फिरऔन के यहां गई और कहने लगी कि मैं तुम्हें ऐसी स्त्री बताऊं जो इस बच्चे को पाले पोसे? इस प्रकार हमने तुझे फिर तेरी माता की गोद में डाल दिया ताकि (तुझे देखकर) उसकी आंखें ठंडी रहे और शोक न करे और वह भी उपकार है जब तुमने (मिस्र में) एक व्यक्ति को मार डाला था तो हमने

رب میرا سینہ کھول دے(۲۵)[۶:۱۲۵:۳۹:۲۲:۹۴:۱]
نوٹ:ان آیات میں سینہ کھولنے کی بات کہی گئی ہے تو جیسے سینہ کھولا گیا ایسے ہی زبان بھی کھولی گئی جو آیت ۲۷ میں ہے لیکن اس آیت کی شان نزول عجیب لکھی گئی ہے جس کا حقیقت سے کوئی تعلق نہیں ہے.
اور میرا کام آسان کر دے(۲۶)
(وہ ایسے کہ)میری زبان میں بات کہنے کی وہ تاثیر پیدا کر دے کہ لوگ سن کر دین کو قبول کر لیں(۲۷)
تا کہ وہ میری بات سمجھ لیں (وہ میری بات جب ہی سمجھ سکیں گے کہ جب میں اچھی بات کہوں اور وہ تیری مہربانی سے ہو سکتا ہے)(۲۸)
اور میرے گھر والوں میں سے (ایک کو) میرا مددگار بوجھ بٹانے والا بنا دے(۲۹)
(یعنی) میرے بھائی ہارون کو(۳۰)
اس سے میری قوت کو مضبوط کر(۳۱)
اور اسے میرے کام میں شریک کر(۳۲)
تا کہ ہم تیری پاکی کثرت سے بیان کریں(۳۳)
اور تجھے کثرت سے یاد کریں(۳۴)
بے شک تو ہم کو ہر حال میں دیکھ رہا ہے(اور کسی حالت میں ہماری طرف سے غافل نہیں ہے تو ہمارے ہر کام کو جانتا ہے(۳۵)
اللہ نے کہا اے موسیٰ تیری دعا قبول کی گئی(۳۶)
اور ہم نے تم پر ایک بار اور بھی احسان کیا ہے(۳۷)
[۲۰:۲۲:۵۳:۱۳]
یہ وہ وقت تھا جب ہم نے تیری ماں کو وحی کے ذریعہ حکم دیا تھا وہ بتاتے ہیں(۳۸)
(وہ یہ تھا) کہ بچے کو(یعنی موسیٰ کو) صندوق میں رکھ پھر اس (صندوق) کو دریا میں بہا دے دریا اس کو کنارے سے لگا دے گا پھر اسے وہ شخص جو میرا اور اس کا(یعنی اللہ کا اور موسیٰ کا) دشمن ہے اٹھا لے گا (اور اس کے محل میں بچے کی پرورش ہوگی ہم نے اپنی خاص مہربانی سے تجھ پر محبت کا سایہ ڈال دیا تھا (کہ غیر بھی اپنے بن گئے) اور یہ جو کچھ ہوا وہ اس لئے کہ ہم چاہتے تھے کہ تو ہماری نگرانی میں پرورش پائے(چونکہ تجھے فرعون سے مقابلہ کرنا تھا یہ اس وقت ہو سکتا تھا جب تو شروع سے ہی ایسے ماحول میں پرورش پائے جس سے تو شاہوں سے بات کرنے لائق ہو جائے اگر ماں باپ کے پاس بنی اسرائیل کے بچوں کی طرح پرورش ہوتی تو بے خوف بولنے والا نہیں ہو سکتا تھا تو یہ ہماری مہربانی تجھ پر خاص تھی)(۳۹)
(اور یہ بھی ہمارا فضل تھا کہ) جب تیری بہن فرعون کے یہاں گئی اور کہنے لگی کہ میں تمہیں ایسی عورت بتاؤں جو اس بچے کو پالے پوسے؟ اس طرح ہم نے تجھے پھر تیری ماں کی گود میں ڈال دیا تا کہ (تجھے دیکھ کر) اس کی آنکھیں ٹھنڈی رہیں. اور وہ رنج نہ کرے اور وہ بھی احسان ہے جب تم نے (مصر میں) ایک آدمی کو مار ڈالا تھا تو ہم نے تم

तुम को चिन्ता से मुक्ति दी थी और तुझे भांति भांति की परीक्षाओं में डालकर परीक्षा ली, इसके बाद तू कई वर्ष तक मदयन के लोगों में रहा फिर ऐ मूसा (वह समय आ गया) जब तू ऐसे अनुमान पर पहुंच गया (कि ईशदूत बना दिया जाए) अर्थात ईश्वर के भाग्य के निर्णय का समय आ गया (40)

کو غم سے نجات دی تھی اور تجھے طرح طرح کی آزمائشوں میں ڈال کر آزمایا اس کے بعد تو کئی برس تک مدین کے لوگوں میں رہا پھر اے موسیٰ (وہ وقت آ گیا) جب تو ایسے اندازے پر پہنچ گیا کہ رسول بنا دیا جائے) یعنی تقدیر الٰہی کے فیصلے کا وقت آ گیا (۴۰)

और (ध्यान से सुन) मैंने तुझे अपने लिए (अर्थात अपने एक मुख्य काम के लिए) चुन लिया है (तू उसके लिए तैयार हो जा) (41)

اور (غور سے سن) میں نے تجھے اپنے لئے (یعنی اپنے ایک خاص کام کے لئے) چن لیا (تو اس کے لئے تیار ہو جا) (۴۱)

अब तू और तेरा भाई मेरी स्मृत्तियां लेकर रवाना हो जाओ और देखो मेरी याद (और मेरे आदेश) के पालन से सुस्ती न करना (42)

اب تو اور تیرا بھائی میری نشانیاں لے کر روانہ ہو جاؤ اور دیکھو میری یاد (اور میرے حکم) کی تعمیل میں سستی نہ کرنا (۴۲)

तो आदेश हुआ) तुम दोनों फिरऔन के पास जाओ वह बड़ा उद्दण्ड हो रहा है (43)

(تو حکم ہوا) تم دونوں فرعون کے پاس جاؤ وہ بڑا سرکش ہو رہا ہے (۴۳)

फिर (जब उसके पास पहुंचो तो) उससे नम्रता से बात करना हो सकता है कि ध्यान करे डर जाए (शिक्षा स्वीकार कर ले) (44)

اس سے نرمی سے بات کرنا ہو سکتا ہے کہ غور کرے ڈر جائے (نصیحت قبول کر لے) (۴۴)

(दोनों कहने लगे कि हमारे रब हमें डर है कि वह हम पर अत्यचार न करे या और अधिक उद्दण्डता पर तत्पर हो जाए) (45)

دونوں کہنے لگے کہ ہمارے رب ہمیں اندیشہ ہے کہ وہ ہم پر زیادتی نہ کرے یا اور زیادہ سرکشی پر آمادہ ہو جائے (۴۵)

ईश्वर ने कहा (बिलकुल) चिन्ता न करना मैं तुम्हारे साथ हूं सब कुछ सुन रहा हूं और सब कुछ देख रहा हूं (वह तुम्हारा कुछ नही बिगाड़ सकता यदि उसने हानी पहुंचा दी तो फिर मेरी रक्षा कैसी? इस लिए तुम निश्चित रहो मेरे रसूलों को कोई हानी नही पहुंचा सकता) (46)

اللہ نے کہا (بالکل) اندیشہ نہ کرنا میں تمہارے ساتھ ہوں سب کچھ سن رہا ہوں اور سب کچھ دیکھ رہا ہوں (وہ تمہارا کچھ نہیں بگاڑ سکتا اگر اس نے نقصان پہنچا دیا تو پھر میری حفاظت کیسی؟ اس لئے تم بے فکر رہو میرے رسولوں کو کوئی نقصان نہیں پہنچا سکتا) (۴۶)

तुम उसके पास निश्चिंत जाओ और कहो कि हम दोनों तेरे रब के भेजे हुए आए हैं तु बनी इसराईल को हमारे साथ जाने की आज्ञा दे और उन पर कष्ट न कर और हम तेरे पास तेरे रब के चिन्ह लेकर आए हैं और (याद रख) शान्ति उस पर है जो सीधा मार्ग ग्रहण करे (47)

تم اس کے پاس بے خوف جاؤ اور کہو کہ ہم دونوں تیرے رب کے بھیجے ہوئے آئے ہیں تو بنی اسرائیل کو ہمارے ساتھ جانے کی اجازت دے اور ان پر عذاب نہ کر اور ہم تیرے پاس تیرے رب کی نشانی لے کر آئے ہیں اور (یاد رکھ) سلامتی اسی پر ہے جو سیدھی راہ اختیار کرے (۴۷)

निःसंदेह हमारी ओर वही आ चुकी है कि जो झुटलाए और मुख फेरे उसके लिए कष्ट तैयार है (48)

بے شک ہماری طرف وحی آ چکی ہے کہ جو جھٹلائے اور منہ پھیرے اس کے لئے عذاب تیار ہے (۴۸)

(चुनांचे दोनों फिरऔन के पास पहुंचे और उस तक ईश्वर का सन्देश पहुंचा दिया तो) उसने प्रश्न किया ऐ मूसा! (बताओ) तुम्हारा रब कौन है? (49)

(چنانچہ دونوں فرعون کے پاس پہنچے اور اس تک اللہ کا پیغام پہنچا دیا تو) اس نے سوال کیا اے موسیٰ (بتاؤ) تمہارا رب کون ہے (۴۹)

मूसा ने कहा हमारा रब वह है जिसने हर वस्तु को उसका मुख और रूप दिया फिर उस पर कर्म का मार्ग खोल दिया (50)

موسیٰ نے کہا ہمارا رب وہ ہے جس نے ہر چیز کو اس کی شکل وصورت دی پھر اس پر عمل کی راہ کھول دی (۵۰)

(यह सुनकर) कहा तो पहले दलों का क्या समाचार है जो पिछले कालों मे गमन हो चुके हैं (51)

(یہ سن کر) کہا تو پہلی جماعتوں کا کیا حال ہے؟ جو پچھلے زمانوں میں گزر چکے ہیں (۵۱)

मूसा ने कहा इसका ज्ञान मेरे रब को है जो (उसके ज्ञान की) पुस्तक में लिखा हुआ है मेरा रब न चूकता है न भूलता है (जैसा जिसने किया होगा वैसा ही बदला पाएगा हमें इसकी चिन्ता क्यों हो?) (52)

موسیٰ نے کہا اس کا علم تیرے رب کو ہے جو (اس کے علم کی) کتاب میں لکھا ہوا ہے میرا رب نہ چوکتا ہے نہ بھولتا ہے) جیسا جس نے کیا ہوگا ویسا ہی بدلہ پائے گا ہمیں اس کی فکر کیوں ہو؟) (۵۲)

(मेरा स्वामी तो वह है) जिसने तुम्हारे लिए धरती को बिछौना किया और तुम्हारे चलने के लिए उसमें मार्ग निकाल दिए और बादल से पानी बरसाया और उसकी सीचाई से अनेक प्रकार प्रकार के पौदे उत्पन्न कर दिए (53)

(میرا رب تو وہ ہے) جس نے تمہارے لئے زمین کو بچھونا کیا اور تمہارے چلنے کے لئے اس میں راستے نکال دئے اور بادل سے پانی برسایا اور اس کی آب پاشی سے مختلف اقسام کے نباتات پیدا کر دئے (۵۳)

ताकि स्वंय भी खाओ और अपने पशुओं को भी चराओ बुद्धि वालों के लिए इसमें स्पष्ट चिन्ह हैं (54)

उसी पृथ्वी की मिट्टी से हमने (तुम्हारे माता पिता आदम व हवा को) तुमको पैदा किया और इसी में तुमको लोटा देते हैं उसी मिट्टी से तुमको दोबारा जीवित करके निकालेंगे (55)

और हमने फ़िरऔन को सारे चिन्ह दिखाए परन्तु उसने सबको झुटला दिया और स्पष्ट नकार कर गया (56)

और कहने लगा ऐ मूसा! क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि अपने जादू के बल से हमें हमारे देश से बाहर कर दे (57)

(अच्छा जैसा जादू तूने हमें दिखाया है) हम भी तुझे उस प्रकार का जादू दिखाएँगे बस हमारे और अपने मध्य मुकाबिले का एक दिन निश्चित कर दे न हम उससे फिरें और न तू (और यह मुकाबिला) किसी समतल मैदान में हो (ताकि सब देख लें) (58)

मूसा ने कहा मुकाबिले के लिए उत्सव का दिन निश्चित हो गया दिन चढ़े लोग एकत्र हो जाएं (59)

पस फ़िरऔन गया और अपने सामान करके फिर आया (60)

मूसा ने उन (जादूगरों) से कहा कि हाय तुम्हारा दुर्भाग्य ईश्वर पर झूटा दोषारोपण न करो कि वह तुम्हें दण्ड से नष्ट कर देगा (याद रखो) जिसने झूट घड़ा वह असफल रहा (61)

(यह सुनकर वह आपस में अपने विषय में झगड़ने लगे और चुपके चुपके गुप्त वार्ता करने लगे (62)

कहने लगे यह दोनों जादूगर हैं और चाहते हैं कि अपने जादू (के बल) से तुमको तुम्हारे देश से निकाल दें और तुम्हारी आदर्श व्यवस्था को नष्ट कर दें (63) {23:17; 28:58; 72:11}

अतः अपनी सारी चालें (जादू का सामान) एकत्र कर लो और पंक्तियां ठीक करके डट जाओ जो आज प्रभुत्वशाली रहा वही सफल हुआ (64)

बोले कि मूसा या तो तुम (अपनी) वस्तु डालो या हम अपनी वस्तु डालते हैं (65)

मूसा ने कहा नहीं तुम ही पहले डालो (चुनांचे उन्होंने अपने जादू की प्रदर्शनी की) तो अकस्मात उनकी रस्सीयां और लाठियां मूसा के मन में ऐसी आने लगी कि वह (मैदान में इधर उधर) दौड़ रही हैं (66)

उस समय मूसा ने अपने मन में भय अनुभूत किया (67)

हमने कहा भय न करो निःसन्देह तुम ही अधिपति रहोगे (68)

और जो वस्तु (अर्थात लाठी) तुम्हारे दाहिने हाथ में है उसे डाल दो कि जो कुछ उन्होंने बनाया है उसको निगल जाएगी और जो कुछ उन्होंने बनाया

تاکہ خود بھی کھاؤ اور اپنے مویشیوں کو بھی چراؤ عقل والوں کے لئے اس میں (کھلی) نشانیاں ہیں (۵۴)

اسی زمین کی مٹی سے ہمنے (تمہارے ماں باپ آدم وحوا کو) تم کو پیدا کیا اور اسی میں تمہیں لوٹا دیتے ہیں اسی مٹی سے تم کو دوبارہ زندہ کر کے نکالیں گے (۵۵)

اور ہم نے فرعون کو ساری نشانیاں دکھائیں مگر اس نے سب کو جھٹلا دیا اور صاف انکار کر گیا (۵۶)

اور کہنے لگا اے موسیٰ! کیا تو ہمارے پاس اس لئے آیا ہے کہ اپنے جادو کے زور سے ہمیں ہمارے ملک سے باہر کر دے (۵۷)

(اچھا جیسا جادو تو نے ہمیں دکھایا ہے) ہم بھی تجھے اسی طرح کا جادو دکھائیں گے بس ہمارے اور اپنے درمیان مقابلہ کا ایک دن مقرر کر دے نہ ہم اس سے پھریں اور نہ تو (اور یہ مقابلہ) کسی ہموار میدان میں ہو (تاکہ سب دیکھ لیں) (۵۸)

موسیٰ نے کہا مقابلہ کے لئے جشن کا دن طے ہو گیا دن چڑھے لوگ جمع ہو جائیں (۵۹)

پس فرعون لوٹ گیا اور اپنے سامان کر کے پھر آیا (۶۰)

موسیٰ نے ان (جادوگروں) سے کہا کہ ہائے تمہاری کمبختی اللہ پر جھوٹی تہمت نہ لگاؤ کہ وہ تمہیں عذاب سے فنا کر دے گا (یاد رکھو) جس نے جھوٹ گھڑا وہ نامراد رہا (۶۱)

(یہ سن کر) وہ آپس میں اپنے معاملہ میں جھگڑنے لگے اور چپکے چپکے سرگوشی کرنے لگے (۶۲)

کہنے لگے یہ دونوں جادوگر ہیں اور چاہتے ہیں کہ اپنے جادو (کے زور) سے تم کو تمہارے ملک سے نکال دیں اور تمہارے مثالی طریقے کو نابود کر دیں (۶۳) [۲۳:۱۷؛ ۲۸:۵۸؛ ۷۲:۱۱]

لہٰذا اپنی ساری تدبیریں (جادو کا سامان) جمع کر لو اور صفیں درست کر کے ڈٹ جاؤ جو آج غالب رہا وہی کامیاب ہوا (۶۴)

بولے کہ موسیٰ یا تو تم (اپنی) چیز ڈالو یا ہم اپنی چیز پہلے ڈالتے ہیں (۶۵)

موسیٰ نے کہا نہیں تم ہی پہلے ڈالو (چنانچہ انہوں نے اپنے جادو کی نمائش کی) تو ناگہاں ان کی رسیاں اور لاٹھیاں موسیٰ کے خیال میں ایسی آنے لگیں کہ وہ (میدان میں ادھر ادھر) دوڑ رہی ہیں (۶۶)

اس وقت موسیٰ نے اپنے دل میں خوف معلوم کیا (۶۷)

ہم نے کہا خوف نہ کرو بلاشبہ تم ہی غالب رہو گے (۶۸)

اور جو چیز (یعنی لاٹھی) تمہارے داہنے ہاتھ میں ہے اسے ڈال دو کہ جو کچھ انہوں نے بنایا ہے اس کو نگل جائے گی جو کچھ

है (वह तो) जादूगरों के हथकण्डे हैं और जादूगर जहां कहीं से कैसे ही आए सफलता नहीं पायेगा (69)

انہوں نے بنایا ہے (یہ تو) جادوگروں کے ہتھکنڈے ہیں اور جادوگر جہاں کہیں سے کیسے ہی آئے فلاح نہیں پائے گا (۶۹)

(हुआ यह कि मूसा की लाठी ने जादूगरों के सब सांपों को निगल लिया यह देखकर) जादूगर सजदे में गिर पड़े (और) कहने लगे कि हम मूसा और हारून के रब पर विश्वास लाए (70)

(ہوا یہ کہ موسیٰ کی لاٹھی نے جادوگروں کے سب سانپوں کو نگل لیا یہ دیکھ کر) جادوگر سجدے میں گر پڑے (اور کہنے لگے کہ ہم موسیٰ اور ہارون کے رب پر ایمان لائے (۷۰)

फ़िरऔन ने कहा तुम मेरी आज्ञा के बिना ही उस पर विश्वास ले आए निःसन्देह वह तुम्हारा बड़ा (अर्थात गुरू है) जिसने तुम को जादू सिखाया है सो मैं तुम्हारे हाथ और पैर उल्टे सीधे कटवा दूंगा और खजूर के तनों पर सूली चढ़वा दूंगा (उस समय) तुम को ज्ञात होगा कि हम में से किसका कष्ट कठोर और दीर्घकाल है (71)

فرعون نے کہا تم میری اجازت کے بغیر ہی اُس پر ایمان لے آئے بے شک وہ تمہارا بڑا (یعنی استاذ ہے) جس نے تم کو جادو سکھایا ہے سو میں تمہارے ہاتھ اور پیر الٹے سیدھے کٹوا دوں گا اور کھجور کے تنو پر سولی چڑھوا دونگا (اس وقت) تم کو معلوم ہوگا کی ہم میں سے کس کا عذاب سخت اور دیر پا ہے (۷۱) [۱۲۳:۷]

उन्होंने उत्तर दिया कि जो प्रमाण हमारे पास आ गए हैं उस पर और जिसने हम को पैदा किया है उस पर हम तुझे कदापि प्रमुखता न देंगे तो तुझे जो आदेश देना हो दे दो और जो आदेश दे सकता है वह केवल इसी दुनिया के जीवन में (दे सकता है) (72)

انہوں نے جواب دیا کہ جو دلائل ہمارے پاس آ گئے ہیں اس پر اور جس نے ہم کو پیدا کیا ہے اس پر ہم تجھے ہرگز ترجیح نہ دیں گے تو تجھے جو حکم دینا ہو دے دے اور جو حکم دے سکتا ہے وہ صرف اسی دنیا کی زندگی میں (دے سکتا ہے) (۷۲)

हम अपने ईश्वर पर विश्वास ले आए ताकि वह हमारे पापों को क्षमा कर दे और (उसे भी) जो तूने हमसे बल से जादू कराया और ईश्वर उत्तम और शेष रहने वाला है (73)

ہم اپنے رب پر ایمان لے آئے تا کہ وہ ہمارے گناہوں کو معاف کر دے اور (اسے بھی) جو تو نے ہم سے زبردستی جادو کرایا اور اللہ بہتر اور باقی رہنے والا ہے (۷۳)

जो व्यक्ति अपने रब के पास पापी होकर आएगा तो उसके लिए नर्क है जिसमें न मरेगा न जियेगा (74)

جو شخص اپنے رب کے پاس گناہگار ہو کر آئے گا تو اس کے لئے جہنم ہے جس میں نہ مرے گا نہ جئے گا (۷۴)

और जो उसके समक्ष आस्तिक होकर आएगा और कर्म भी शुभ किए हों तो ऐसे लोगों के लिए ऊंचे पद हैं (75)

اور جو اس کے روبرو مومن ہو کر آئے گا اور عمل بھی نیک کئے ہوں تو ایسے لوگوں کے لئے اونچے درجے ہیں (۷۵)

(अर्थात) सदैव रहने के उपवन जिनके नीचे नहरें बह रही हैं सदैव उनमें रहेंगे और यह उस व्यक्ति का बदला है जो पवित्र हुआ (76)

(یعنی) ہمیشہ رہنے کے باغ جن کے نیچے نہریں بہ رہی ہیں ہمیشہ ان میں رہیں گے اور یہ اس شخص کا بدلہ ہے جو پاک ہوا (۷۶)

और हमने मूसा की ओर वही भेजी कि हमारे बन्दों को रातो रात निकाल ले जाओ फिर उनके लिए नदी में चल कर उनके लिए शुष्की का मार्ग बना लेना फिर तुमको न तो (फ़िरऔन के) आ पकड़ने का भय होगा और न (डूबने का) भय (77)

اور ہم نے موسیٰ کی طرف وحی بھیجی کہ ہمارے بندوں کو راتوں رات نکال لے جاؤ پھر ان کے لئے دریا میں چل کر ان کے لئے خشکی کی راہ بنا لینا پھر تم کو نہ تو (فرعون کے) آ پکڑنے کا خوف ہوگا اور نہ (غرق ہونے کا) ڈر (۷۷)

फिर फ़िरऔन ने अपनी सेना के साथ उनका पीछा किया तो नदी की (मौजों) ने उन पर चढ़कर उन्हें ढांक लिया (अर्थात डुबो दिया) (78)

پھر فرعون نے اپنے لشکر کے ساتھ ان کا تعاقب کیا تو دریا (کی موجوں) نے ان پر چڑھ کر انہیں ڈھانک لیا (یعنی ڈبو دیا) (۷۸)

और अपनी जाति को फ़िरऔन ने पथ भ्रष्ट कर दिया और सीधा मार्ग न बताया (79)

اور اپنی قوم کو فرعون نے گمراہ کر دیا اور سیدھا رستہ نہ بتایا (۷۹)

ऐ बनी इसराईल हमने तुम को तुम्हारे शत्रु से मुक्ति दी और (तौरात के मूल आदेश देने के लिए) तूर के दाऐं दिशा तुम्हारी (अर्थात मूसा के साथ) उपस्थिति का समय निर्धारित किया और (मरूस्थल सिना में) तुम्हारे लिए मन सलवा प्रस्तुत कर दिया (80)

اے بنی اسرائیل ہم نے تم کو تمہارے دشمن سے نجات دی اور (تورات کے بنیادی احکام دینے کے لئے) طور کے دائیں جانب تمہاری (یعنی موسیٰ کے ساتھ) حاضری کا وقت مقرر کیا اور (صحرائے سینا میں) تمہارے لئے من سلوٰی مہیا کر دیا (۸۰)

और आदेश दिया कि जो पवित्र जीविका हमने तुम

اور حکم دیا کہ جو پاکیزہ رزق ہم نے تم کو دیا ہے اس کو کھاؤ

को दी है उसको खाओ और उसमें सीमा से न निकलना अन्यथा तुम पर मेरा प्रकोप अवतीर्ण होगा और जिस पर मेरा प्रकोप अवतीर्ण होता है निःसन्देह वह कामवासना का अनुकरण करके पथ भ्रष्ट हो जाता है (भ्रष्टों पर ही तो मेरा प्रकोप अवतरित होता है) (८१)

اور اس میں حد سے نہ نکلنا ورنہ تم پر میرا غضب نازل ہوگا اور جس پر میرا غضب نازل ہوتا ہے بےشک وہ خواہش نفس کی اتباع کرکے گمراہ ہوجاتا ہے (گمراہوں پر ہی تو میرا غضب نازل ہوتا ہے)(۸۱)

(किन्तु इसके प्रतिकूल यह) और जो पश्चाताप करें और विश्वास लाए और शुभ कर्म करे फिर सीधा मार्ग चले उसको मैं क्षमा कर दिया करता हूं (क्योंकि वह मेरा आज्ञाकारी है अपने जी का अनुकरण नहीं करता) (८२)

(مگر اس کی ضد یہ) اور جو توبہ کرلے اور ایمان لائے اور عمل نیک کرلے پھر سیدھے رستے پر چلے اس کو میں بخش دینے والا ہوں (کیوں کہ وہ میری اتباع کرتا ہے اپنے نفس کی نہیں)(۸۲)

ऐ मूसा! तू ने अपनी जाति को छोड़कर मेरे पास आने में जलदी क्यौंकि (८३)

اے موسیٰ! تو نے اپنی قوم کو چھوڑ کر میرے پاس آنے میں جلدی کیوں کی (۸۳)

कहा वह मेरे पीछे मेरे पद चिन्हों पर चल रही है ऐ मेरे रब मैंने तेरी ओर (आने में) जल्दी इसलिए की कि तू मुझ से प्रसन्न हो जाए (८४)

کہا وہ میرے پیچھے میرے نقش قدم پر چل رہی ہے اے میرے رب میں نے تیری طرف (آنے میں) جلدی اس لئے کی کہ تو مجھ سے خوش ہوجائے (۸۴)

ईश्वर ने कहा तुम्हारी जाति की अवज्ञा के कारण हमारे नियामानुसार परिक्षा में असफलता के कारण तुम्हारी जाति विपत्ति ग्रस्त हो गई है और उनको सामरी ने बहका दिया है (८५)

<u>اللہ نے فرمایا تمہاری قوم کی نافرمانی کی وجہ سے ہمارے قانون کے مطابق ہمارے امتحان میں ناکامی کی وجہ سے تمہاری قوم فتنے میں مبتلا ہوگئی ہے اور ان کو سامری نے بہکا دیا ہے(۸۵)</u>

मूसा प्रचण्ड क्रोध की स्थिति में खेद करता हुआ अपनी जाति की ओर लौटा उसने कहा ऐ मेरी जाति के लोगों! (तुम ने यह क्या किया?) क्या तुमसे मेरे रब ने अच्छा वचन नही किया था फिर क्या वचन पूरा होने में तुम पर बड़ा समय बीत गया (कि तुम धैर्य न कर सके) या तुमने यह चाहा कि तुम्हारे रब का क्रोध तुम पर अवतरित हो अतः तुमने मुझसे जो वचन (किया था उसके) विपरीत किया (८६)

موسیٰ سخت غصہ کی حالت میں افسوس کرتا ہوا اپنی قوم کی طرف لوٹا اس نے کہا اے میری قوم کے لوگو! (تم نے یہ کیا کیا؟) کیا تم سے میرے رب نے اچھا وعدہ نہیں کیا تھا؟ پھر کیا وعدہ پورا ہونے میں تم پر بڑی مدت گزر گئی (کہ تم صبر نہ کرسکے) یا تم نے چاہا کہ تمہارے رب کا غضب تم پر نازل ہو اس لئے تم نے مجھ سے جو وعدہ (کیا تھا اس کے) خلاف کیا(۸۶)

(जाति ने कहा) हमने वचन का विरोध कुछ अपनी इच्छा से नही किया विषय यह हुआ कि अपने लोगों के आभूषण के भार से हम लद गए थे और हम ने उनको फेंक दिया था फिर इस प्रकार सामरी ने भी कुछ डाला (८७)

<u>(قوم نے کہا) ہم نے وعدہ خلافی کچھ اپنے اختیار سے نہیں کی معاملہ یہ ہوا کہ اپنے لوگوں کے زیورات کے بوجھ سے ہم لد گئے تھے اور ہم نے ان کو پھینک دیا تھا پھر اسی طرح سامری نے بھی کچھ ڈالا (۸۷)</u>

नोट- अधिकांश अनुवादों और व्याख्याओ में यह लिखा है कि वह आभूषण बनी इसराईल के नही थे अपितु कबती जाति के थे उल्लेख यह किया जाता है कि जब बनी इसराईल को पलायन का आदेश हुआ तो उन्होंने अपने पड़ोस में रहने वाले कबतियों से उनके आभूषण मांग लिए थे यह कह कर कि हमको नाते दारी में जाना है उन्होंने दे दिए और आभूषण लेकर बनी इसराईल रात्री में फरार हो गए, जिनके भार से वह लोग व्याकूल हो गए थे उनको फेंक दिया सामारी ने उनसे बछड़ा बना दिया परन्तु यह कथन मिथ्या है कारण? क्या बनी इसराईल लुटेरे थे धोके बाज़ थे? क्या कबती जाति उनकी शत्रु नही थी फिर आभूषण कैसे दे दिए, नही दिए

نوٹ:۔اکثر ترجموں اور تفسیروں میں یہ لکھا ہے کہ وہ زیور بنی اسرائیل کے نہیں تھے بلکہ قبطی قوم کے تھے بیان یہ کیا جاتا ہے کہ جب بنی اسرائیل کو ہجرت کا حکم ہوا تو انہوں نے اپنے پڑوس میں رہنے والے قبطیوں سے ان کے زیور مانگ لئے تھے یہ کہہ کر کہ ہم کو رشتہ داری میں جانا ہے انہوں نے دے دئے اور زیور لے کر بنی اسرائیل رات میں فرار ہوگئے جن کے وزن سے وہ لوگ پریشان ہوگئے تھے ان کو پھینک دیا سامری نے ان سے بچھڑا بنا دیا لیکن یہ قول غلط ہے۔وجہ؟ کیا بنی اسرائیل لٹیرے تھے دھوکے باز تھے؟ کیا قوم قبطی ان کی دشمن نہیں تھی پھر زیور کیسے دے دئے، نہیں دئے

इसलिए आभूषण कबती जाति के नही थे अपितु स्वंय बनी इसराईल के थे आभूषणों के साथ कुछ सामान और भी था.

اس لئے زیور قوم قبط کے نہیں تھے بلکہ خود بنی اسرائیل کے تھے زیوروں کے ساتھ کچھ سامان اور بھی تھا.

बनी इसराईल तब ही दासता से निकल रहे थे जब सदाचारी हो गए थे, यह अलग बात है कि बनी इसराईल पग पग पर अवज्ञा करने के अभ्यस्त थे और है, यदि उस समय सदाचारी न होते तो फिरऔन अवश्य पकड़ लेता, परन्तु ईश्वर ने उनके सत्कर्मों के कारण बचा लिया परन्तु बचने के बाद फिर अवज्ञा की.

بنی اسرائیل تب ہی غلامی سے نکل رہے تھے جب نیک ہوگئے تھے یہ الگ بات ہے کہ قوم بنی اسرائیل قدم قدم پر نافرمانی کرنے کی عادی تھی اور ہے اگر اس وقت نیک نہ ہوتی تو فرعون ضرور پکڑ لیتا لیکن اللہ نے ان کی نیکی کی وجہ سے بچا لیا لیکن بچنے کے بعد پھر نافرمانی کی.

सामान था आभूषण फेंक देने में दो बाते सामने आती है (1) या तो वह किसी आशंका से भयभीत थे कि इस सामग्री से मुक्त हो कर हल्के फुल्के रहना चाहते थे जिससे चलने में व्याकूलता न हो (2) या स्वंय बछड़े के प्रेम से विवश हो कर सामरी से प्रार्थना की हो और अपने आभूषण दे दिए हो जिसका उसने उनके लिए उनका देवता बछड़ा बना दिया हो.

سامان یا زیور پھینک دینے میں دو باتیں سامنے آتی ہیں (۱) یا تو وہ خطرے سے خوف زدہ تھے کہ اس سامان سے آزاد ہو کر ہلکے پھلکے رہنا چاہتے تھے جس سے چلنے میں پریشانی نہ ہو (۲) یا خود بچھڑے کی محبت سے مجبور ہو کر سامری سے درخواست کی ہو اور اپنے زیور دیدیئے ہوں جس کا اس نے ان کے لئے ان کا معبود بچھڑا بنا دیا ہو۔

और उनके लिए एक बछड़े की आकृति बनाकर निकाल लाया जिसमें से बैल की सी ध्वनी निकलती थी लोग और सामरी पुकार उठे यही है तुम्हारा रब और मूसा का रब पस वह भूल गए (88)

اوران کے لئے ایک بچھڑے کی سورت بنا کر نکال لایا جس میں سے بیل کی سی آواز نکلتی تھی لوگ اور سامری پکار اٹھے یہی ہے تمہارا رب اور موسیٰ کا رب پس وہ بھول گئے (۸۸)

नोट- सामरी भी यह भूल गया कि जो मैंने बछड़ा बनाकर उन लोगों को पथ भ्रष्ट किया है इसकी पोल मूसा के आने पर खुल जाएगी और सामरी ने लोगों से यह भी कहा हो कि मूसा रब की खोज में तूर पर गए है, और वापस आकर वह भी इसी की पूजा करेंगे परन्तु मूसा नही भूले थे सामरी ही भूल गया था कि पोल खुल जाएगी.

نوٹ:۔(سامری بھی یہ بھول گیا کہ جو میں نے بچھڑا بنا کر ان لوگوں کو گمراہ کیا ہے اس کی پول موسیٰ کے آنے پر کھل جائے گی) اور سامری نے لوگوں سے یہ بھی کہا ہو کہ موسیٰ رب کی تلاش میں طور پر گئے ہیں مگر رب تو یہی ہے وہ بھول گئے اور واپس آکر وہ بھی اسی کی پوجا کریں گے مگر موسیٰ نہیں بھولے تھے سامری ہی بھول گیا تھا کہ پول کھل جائے گی۔

(उन की समझ पर आश्चर्य होता है) कि उन्हें इतनी सामान्य सी बात भी नही दिखाई दी कि (बछड़े के मुख से ध्वनी तो निकलती है किन्तु) वह उनकी किसी बात का उत्तर नही देता (यही नही अपितु) न तो उन्हें हानि पहुंचा सकता है न लाभ (89)

(ان کی سمجھ پر حیرت ہوتی ہے) کہ انہیں اتنی معمولی سی بات بھی نہیں دکھائی دی کہ (بچھڑے کے منہ سے آواز تو نکلتی ہے لیکن) وہ ان کی کسی بات کا جواب نہیں دیتا (یہی نہیں بلکہ) نہ تو انہیں نقصان پہنچا سکتا ہے نہ نفع (۸۹)

और हारून ने उनसे पहले ही कह दिया था कि लोगो! इससे केवल तुम्हारी परिक्षा की गई है, और तुम्हारा रब तो रहमान है तो मेरा अनुकरण करो और मेरा कहा मानों (90)

اور ہارون نے ان سے پہلے ہی کہدیا تھا کہ لوگو! اس سے صرف تمہاری آزمائش کی گئی ہے اور تمہارا رب تو رحمان ہے تو میری پیروی کرو اور میرا کہا مانو (۹۰)

वह कहने लगे कि जब तक मूसा हमारे पास वापस न आएंगे हम तो इस (की पूजा) पर स्थापित रहेंगे (91)

وہ کہنے لگے کہ جب تک موسیٰ ہمارے پاس واپس نہ آئیں ہم تو اس (کی پوجا) پر قائم رہیں گے (۹۱)

(फिर वापस आकर मूसा ने हारून से) कहा कि हारून जब तुमने उनको देखा था कि गुमराह हो गए है तो तुमको किस वस्तु ने रोका (92)

(پھر واپس آکر موسیٰ نے ہارون سے کہا) کہ ہارون جب تم نے ان کو دیکھا تھا کہ گمراہ ہو گئے ہیں تو تم کو کس چیز نے روکا (۹۲)

(अर्थात) इस बात से कि तुम मेरा अनुकरण करो भला तुमने मेरे आदेश का विरोध क्यों किया (93)

(یعنی) اس بات سے کہ تم میری پیروی کرو بھلا تم نے میرے حکم کی خلاف ورزی کیوں کی؟ (۹۳)

(मूसा ने हारून के बाल पकड़ लिए) हारून ने कहा ऐ मेरे मां जाए (भाई!) मेरी दाढ़ी और सिर के बाल न पकड़ (मैंने कठोरता इस लिए न की) कि मैं तो इससे डरा कि आप यह न कहें कि तुमने बनी इसराईल में फूट डाल दी और बात याद न रखी (94) {2:150}

(موسیٰ نے ہارون کے بال پکڑ لئے) ہارون نے کہا اے میرے ماں جائے (بھائی!) میری داڑھی اور سر کے بال نہ پکڑ (میں نے سختی اس لئے نہ کی) کہ میں تو اس سے ڈرا کہ آپ یہ نہ کہیں کہ تم نے بنی اسرائیل میں تفرقہ ڈال دیا اور میری بات یاد نہ رکھی (۹۴) [۷:۱۵۰]

(हारून के इस उत्तर से संतुष्ट होकर) मूसा ने सामरी से कहा तेरा क्या कथन है अर्थात तू ने धर्म को क्यों छोड़ा? (95) {53:33-34}

(ہارون کے اس جواب سے مطمئن ہو کر) موسیٰ نے سامری سے کہا تیرا کیا بیان ہے یعنی تو دین سے منحرف کیوں ہوا؟ (۹۵) [۵۳:۳۳-۳۴]

उसने कहा मैंने वह बात देख ली जो औरों ने नही देखी इस लिए ईश्वर के ईशदूत के अनुकरण में मैंने भी कपटियों की भांति कुछ भाग लिया था, अर्थात तेरा मार्ग पकड़ा (परन्तु विचार करने पर) फिर उसे छोड़ दिया (अर्थात मैं ईशदूत के आदेशों से विमुख हो गया)

اس نے کہا میں نے وہ بات دیکھ لی جو اوروں نے نہیں دیکھی اس لئے اللہ کے رسول کی پیروی میں میں نے بھی منافقانہ طور پر کچھ حصہ لیا تھا یعنی تیری راہ پکڑی (مگر غور کرنے پر) پھر اسے چھوڑ دیا (یعنی میں رسول کے احکام سے منحرف ہو گیا) مجھے

मुझे मेरे हृदय ने उस काम को अच्छा बताया अर्थात गाय की पूजा को (96) {53:33-34}

नोट- इस आयत में रसूल से क्या तात्पर्य है? सामान्य टीका कहते है कि ईशदूत से तात्पर्य जिबराईल फरिशता है और इस आयत का अर्थ यह वर्णन करते है कि सामरी ने अपने पाप का कारण प्रस्तुत करते हुए मूसा अ0 से कहा मैंने फरिशते के पद चिन्ह से मिट्टी की एक मुट्ठी भर ली उसको बछड़े के ढांचे में डाल दिया और मुझे मेरे जी ने इस कार्य को अच्छा बताया मौलाना मरहूम मोदूदी कहते है कि-

स्सूल से तात्पर्य सम्भाव है जिबराईल ही हो जैसा कि प्राचीन टीकाकारों ने समझा है परन्तु यदि यह मान लिया जाए कि उसने स्सूल का शब्द स्वंय महामना मूसा के लिए प्रयोग किया था तो यह उसकी एक और धुर्त्तता थी वह इस प्रकार श्री मूसा को मानसिक घूस देना चाहता था ताकि वह उसे अपने पद चिन्ह की मिट्टी का चमत्कार समझ कर फूल जाएं और अपने और चमत्कारों का विज्ञापन देने के लिए सामरी की सेवाए स्थायी तौर पर प्राप्त कर लें तफहीमुल कुरआन जिल्द 3 पेज 120

मौलाना का यह मत उचित नही है मोदूदी साहब कहते है स्सूल अल्लाह से तात्पर्य सम्भाव है जिबरईल ही हों परन्तु मोलाना को विचार करना चाहिए था, कि सामरी जैसे धुर्त्त जादूगर ने जिबराईल जैसी रूहानी हस्ती को जिसे ईशदूतों ने भी मूल आकृति में कुछ बार ही देखा होगा सहाबा कराम न देख सके कैसे देख लिया? क्या उसकी अशुद्ध आंखे जिबराईल के रूहानी पग को देख सकती थी? जैसे हम न बना रखा है कि अमुक पीर का पग अमुक स्थान पत्थर पर बना हुआ है क्या इस प्रकार ही जिबराईल के पदों के चिन्ह पृथ्वी पर शेष रहते थे जिन्हें सामरी ने देख लिया था? और क्या फरिशते पृथ्वी पर इन्सानों की भांति चलते फिरते है? और उनके पगों के चिन्ह भूमि पर पड़ते है जिनकी मिट्टी उठाई जा सके?.

किसी नबी से तो यह कार्य हो न सका जो सामरी की ओर सम्बन्धित कर दिया है क्या कभी मनन किया है? फिर सामरी जैसा चालाक आदमी मूसा को इसप्रकार का अर्थहीन उत्तर कैसे दे सकता था

अतः ईशदूत से तात्पर्य महामना मूसा से है सामरी के वाक्य का सीधा सा भाव यही ज्ञात होता है कि मैं श्रीमान मूसा पर कपटियों की भांति आस्था ले आया था और कुछ दिनों उसपर स्थपित रहा, परन्तु विचार करने के बाद मुझे मूर्ती पूजा ही, अच्छी लगी अतः मैंने मूसा का धर्म छोड़कर मूर्ती पूजा स्वीकार कर ली, वास्तविक्ता यह है कि यह आयत मुताशाबाहात (अनुरूप) में से है इसलिए इसका अनुवाद लिखने से पहले तसरीफ आयात पर दृष्टि होनी चाहिए तो भाव स्पष्ट हो जाता है, और यह विश्वास होना चाहिए कि यह भी ईश्वर की ओर से है,

मूसा ने (उसका कपट पूर्ण उत्तर सुनकर) कहा जा दूर हो अब जीवन भर तुझे यही पुकारते रहना है कि मुझे न छूना (कुछ ऐसा हो गया था कि जब कोई व्यक्ति उसको छूता था तो उसे पीड़ा होती थी जो अधिक व्याकूल करती थी अतः वह पहले ही कह देता था कि मुझे न छूना और वह स्वंय ही दूर भागता फिरता था) और (यही नही अपितु) तेरे लिए (प्रतिप्रश्न का) एक समय निश्चित है जो कदापि न टलेगा, और देख जिस की पूजा पर तू जम कर बैठ रहा था हम उसे जलाकर राख कर देंगे और फिर उस राख को समुन्द्र में बहा देंगे (97)

میرے دل نے اس کام کو اچھا بتایا یعنی گائے کی پوجا کو (۹۶) [۵۳:۳۳،۳۴]

نوٹ:۔ اس آیت میں رسول سے کیا مراد ہے؟ عام مفسرین کہتے ہیں کہ رسول سے مراد جبرائیل فرشتہ ہے اور اس آیت کا مطلب یہ بیان کرتے ہیں کہ سامری نے اپنے جرم کا عذر پیش کرتے ہوئے موسیٰ سے کہا میں نے فرشتے کے نقش پا سے مٹی کی ایک مٹھی بھر لی پھر اس کو بچھڑے کے قالب میں ڈال دیا۔ اور مجھے میرے جی نے اس کام کو اچھا بتایا مولانا مرحوم مودودی فرماتے ہیں کہ۔

رسول سے مراد ممکن ہے جبرئیل ہی ہوں جیسا کہ قدیم مفسرین نے سمجھا ہے لیکن اگر یہ مان لیا جائے کہ اس نے رسول کا لفظ خود حضرت موسیٰ کے لئے استعمال کیا تھا تو یہ اس کی ایک اور مکاری تھی وہ اس طرح حضرت موسیٰ کو ذہنی رشوت دینا چاہتا تھا تاکہ وہ اسے اپنے نقش قدم کی مٹی کا کرشمہ سمجھ کر پھول جائیں اور اپنی مزید کرامتوں کا اشتہار دینے کے لئے سامری کی خدمات مستقل طور پر حاصل کر لیں (تفہیم القرآن ج ۳ ص ۱۲۰)

مولانا کی رائے صحیح نہیں ہے مودودی صاحب فرماتے ہیں رسول اللہ سے مراد ممکن ہے جبرئیل ہی ہوں مگر مولانا کو غور کرنا چاہیے تھا کہ سامری جیسے مکار جادوگر نے جبرئیل جیسی روحانی ہستی کو جسے رسولوں نے بھی اصل شکل میں چند بار ہی دیکھا ہوگا صحابہ کرام نہ دیکھ سکے کیسے دیکھ لیا؟ کیا اس کی ناپاک آنکھیں جبرئیل کے روحانی قدم کو دیکھ سکتی تھیں؟ جیسے ہم نے بنا رکھا ہے کہ فلاں پیر کا قدم فلاں جگہ پتھر پر بنا ہوا ہے کیا اس طرح ہی جبرئیل کے قدموں کے نشان زمین پر باقی رہتے تھے جنہیں سامری نے دیکھ لیا تھا؟ اور کیا فرشتے زمین پر انسان کی طرح چلتے پھرتے ہیں؟ اور ان کے پیروں کے نشان زمین پر پڑتے ہیں جن کی مٹی اٹھائی جا سکے؟

کسی نبی سے تو یہ کام ہو نہ سکا جو سامری کی طرف منسوب کر دیا ہے کیا کبھی غور کیا ہے پھر سامری جیسا چالاک آدمی موسیٰ کو اس طرح کا مہمل جواب کیسے دے سکتا تھا؟

اس لئے رسول اللہ سے مراد حضرت موسیٰ سے ہے سامری کے جملے کا سیدھا سا مفہوم یہی معلوم ہوتا ہے کہ میں حضرت موسیٰ پر منافقانہ طور سے ایمان لے آیا تھا اور کچھ دنوں اس پر قائم رہا۔ لیکن غور کرنے کے بعد مجھے بت پرستی ہی اچھی لگی اس لئے میں نے موسیٰ کا دین چھوڑ کر بت پرستی اختیار کر لی۔ حقیقت یہ ہے کہ یہ آیت متشابہات میں سے ہے اس لئے اس کا ترجمہ لکھنے سے پہلے تصریف آیات پر نظر ہونی چاہیے، تو مفہوم صاف ہو جاتا ہے اور یہ ایمان ہونا چاہیے کہ یہ بھی اللہ کی طرف سے ہے

موسیٰ نے (اس کا پُر فریب جواب سن کر) کہا جا دور ہو اب زندگی بھر تجھے یہی پکارتے رہنا ہے کہ مجھے نہ چھونا (کچھ ایسا ہو گیا تھا کہ جب کوئی آدمی اس کو چھوتا تھا تو اسے تکلیف ہوتی تھی جو زیادہ پریشان کرتی تھی اس لئے وہ پہلے ہی کہہ دیتا تھا کہ مجھے نہ چھونا اور وہ خود ہی دور بھاگتا پھرتا تھا) اور یہی نہیں (بلکہ) تیرے لئے (بازپرس کا) ایک وقت مقرر ہے جو ہرگز نہ ٹلے گا اور دیکھ جس کی پوجا پر تو جم کر بیٹھ رہا تھا ہم اسے جلا کر راکھ کر دیں گے اور پھر اس راکھ کو سمندر میں بہا دیں گے (۹۷)

निःसंदेह तुम्हारा ईश्वर वह अस्तित्व है जिस इलाहा का इनकार नही निःसंदेह वह ईश्वर है संसार की कोई वस्तु उसके ज्ञान से बाहर नही (वह सब पर प्रभुत्व शाली है) (98)

ऐ रसूल! इस प्रकार हम तुमसे वह घटनाएं वर्णन करते है जो गमन हो चुकी है और हमने तुम्हें अपने पास से शिक्षा की पुस्तक (कुरआन) प्रदान की है (99)

जो व्यक्ति इस (कुरआन) से मुख फैरेगा वह महाप्रलय के दिन (पाप) का भार उठाएगा (100)

(ऐसे लोग) सदैव उस (कष्ट) में (ग्रस्त) रहेंगे और वह भार प्रलय के दिन उनके लिए बुरा होगा (101)

जिस दिन सूर फूंका जाएगा और हम पापीयों को एकत्र करेंगे और उनकी आंखे नीली नीली (प्रकाश) रहित होंगी (102)

वह आपस में धीरे धीरे कहेंगे कि तुम (दुनिया में) केवल दस दिन रहे होंगे (103)

जो बाते वह करेंगे हम अच्छा जानते है उस समय उनमें सबसे अच्छे मार्ग वाला (अर्थात ज्ञानी) कहेगा कि (नही अपितु) केवल एक ही दिन ठेहरे हो(104)

और आपसे पर्वतो के बारे में प्रश्न करेंगे कह देना कि ईश्वर उनको धूल बनाकर उड़ा देगा (105)

और पृथ्वी को समतल कर देगा (106) {84:3}

जिसमें आप न कजी (और निम्नता) देखोगे न टीला (और न बुलन्दी) (107)

उस दिन सम्पूर्ण लोग एक पुकारने वाले के पीछे चल पड़ेंगे और उसके अनुकरण से विमुखता न कर सकेंगे और ईश्वर रहमान के आगे सब की ध्वनी निम्न हो जाएगी एक सर सराहट के अतिरिक्त कोई ध्वनी न होगी (108)

उस दिन (किसी की) अनुशंसा कुछ काम न देगी परन्तु हां यदि ईश्वर ने किसी को अनुशंसा करने की अनुमति दी हो और उसकी बात पसन्द करे (परन्तु कुरआन की किसी आयत से अनुमति की सूचना) नही अतः अनुशंसा भी नही ईश्वर हर बात को जानता है और हर व्यक्ति का कर्म पत्र तैयार हो रहा है ईश्वर न्यायशील है फिर अनुशंसा कैसी? (109) {20:71}

जो कुछ लोगों ने कर्म अपने हाथों से प्रकट किए जो फरिश्तों ने अपने हाथों से लिख लिए या जो कुछ गुप्त किए मन में जिनको फरिश्ते नोट न कर सके परन्तु ईश्वर सब कुछ जानता है परन्तु मानव अपने ज्ञान से ईश्वर के ज्ञान को नही जान सकता (110)

(जब यह कर्म पत्र प्रस्तुत होगा) उस दिन उस जीवित व स्थापित ईश्वर के सामने लोगों के सिर झुक जाएंगे और जो व्यक्ति (पापों के) अत्याचार के भार से लदा होगा वह असफल होगा (111)

और जो शुभ कर्म करेगा और आस्तिक होगा तो

بے شک تمہارا اللہ وہ ذات ہے جس الہٰ کا انکار نہیں یقیناً وہ اللہ ہے کائنات کی کوئی شئی اس کے علم سے باہر نہیں (وہ سب پر حاوی ہے)(۹۸)

اے رسول! اس طرح ہم تم سے وہ واقعات بیان کرتے ہیں جو گزر چکے ہیں اور ہم نے تمہیں اپنے پاس سے نصیحت کی کتاب (قرآن) عطا کی ہے(۹۹)

جو شخص اس (قرآن) سے منہ پھیرے گا وہ قیامت کے دن (گناہ) کا بوجھ اٹھائے گا(۱۰۰)

(ایسے لوگ) ہمیشہ اس (عذاب) میں (مبتلا) رہیں گے اور وہ بوجھ قیامت کے روز ان کے لئے بُرا ہوگا(۱۰۱)

جس روز صور پھونکا جائے گا اور ہم گنہگاروں کو اکٹھا کریں گے اور ان کی آنکھیں نیلی نیلی (بے نور) ہوں گی(۱۰۲)

وہ آپس میں آہستہ آہستہ کہیں گے کہ تم (دنیا میں) صرف دس دن ہی رہے ہو گے(۱۰۳)

جو باتیں وہ کریں گے ہم خوب جانتے ہیں اس وقت ان میں سب سے اچھی راہ والا (یعنی عاقل) کہے گا کہ (نہیں بلکہ) صرف ایک ہی روز ٹھہرے ہو(۱۰۴)

اور آپ سے پہاڑوں کے بارے میں دریافت کریں گے کہہ دینا کہ اللہ ان کو دھول بنا کر اڑا دے گا(۱۰۵)

اور زمین کو ہموار میدان کر دے گا(۱۰۶)[۳:۸۴]

جس میں نہ آپ کجی (اور پستی) دیکھو گے نہ ٹیلا (اور نہ بلندی)(۱۰۷)

اس روز تمام لوگ ایک پکارنے والے کے پیچھے چل پڑیں گے اور اس کی پیروی سے انحراف نہ کر سکیں گے اور اللہ رحمٰن کے آگے سب کی آواز پست ہو جائے گی ایک سرسراہٹ کے علاوہ کوئی آواز نہ ہوگی(۱۰۸)

اس روز (کسی کی) شفاعت کچھ فائدہ نہ دے گی مگر ہاں اگر اللہ نے کسی کو شفاعت کرنے کی اجازت دی ہو اور اس کی بات پسند کرے (لیکن قرآن کی کسی آیت سے اجازت کی خبر نہیں اس لئے شفاعت بھی نہیں۔ اللہ ہر بات کو جانتا ہے اور ہر آدمی کا اعمال نامہ تیار ہو رہا ہے اللہ عادل ہے پھر شفاعت کیسی؟(۱۰۹)[۲۰:۷۱]

جو کچھ لوگوں نے عمل اپنے ہاتھوں سے ظاہر کئے جو فرشتوں نے اپنے ہاتھوں سے لکھ لئے یا جو کچھ چھپے کئے من میں جن کو فرشتے نوٹ نہ کر سکے مگر اللہ سب کچھ جانتا ہے مگر انسان اپنے علم سے اللہ کے علم کا احاطہ نہیں کر سکتا(۱۱۰)

(جب یہ اعمال نامہ پیش ہوگا) اس روز اس زندہ و قائم اللہ کے سامنے لوگوں کے سر جھک جائیں گے اور جو شخص (گناہوں کے) ظلم کے بوجھ سے لدا ہوگا وہ نامراد ہوگا(۱۱۱)

اور جو نیک کام کرے گا اور مومن بھی ہوگا تو اس کو نہ ظلم کا

उसको न अत्याचार का भय होगा और न हानी का (112)

और हमने इसको इसी प्रकार का कुरआन अरबी प्रेषित किया है और इस में भांति भांति से चेतावनी रखी है ताकि लोग सदाचारी बने या ईश्वर उनके लिए उपदेश शिक्षा उत्पन्न कर दे (113)

पस उच्च उत्तम है ईश्वर शासक वास्तविक्ता (इस कुरआन की पूर्ती का एक समय निश्चित है) आप लोगों के खंडन व स्वीकार से लालसा रहित होकर जिस क्रम से यह अवतरित हो रहा है लोगों को सुनाते रहो (इसके पूर्ण होने के लिए ईश्वर ने जो समय निश्चित कर रखा है वह उसकी युक्ति और नीति से अच्छी प्रकार अवगत है) अतः इसके पूर्ण होने से पहले आप इस कुरआन के प्रेषित होने के विषय में जल्दी न करें निःसंदेह इसकी वही आप पर ही पूर्ण होगी और प्रार्थना करो ऐ रब मुझे अधिक ज्ञान प्रदान कर (114)

नोट- इस आयत के साथ (25:32-33) को देख लिया जाए तो अर्थ स्पष्ट हो जाता है.

(25:32) नास्तिक कहते हैं इस व्यक्ति पर सारा कुरआन एक ही समय में क्यों न उतार दिया गया, हां थोड़ा थोड़ा इस लिए उतारा जा रहा है कि इससे आपका हृदय बलवान करें और हमने इसको ठहर ठहरकर पढ़ सुनाया (25:33) और वह लोग इस पुस्तक के समान तुम्हारे पास न लाएंगे (यदि कोई बात लाएंगे तो वह व्यर्थ होगी) और उसका अच्छा उत्तर हम देंगे निःसंदेह हम ही हैं जो आपके पास अपना सत्य कुरआन भी लाते हैं और उसका उत्तम विवरण भी लाते हैं अर्थात तसरीफे आयात से (और यह कुरआन मजीद प्रकृति पुस्तक का विवरण है. (3:3, 16:3)

(17:105) इस कुरआन को हमने सत्य के साथ अवतरित किया और सत्य के साथ यह अवतरित हुआ और ऐ रसूल तुम्हें हमने इसके सिवा और किसी कार्य के लिए नहीं भेजा कि (जो मान ले उसे) शुभ सूचना दे दो और (जो न माने उसे) सावधान कर दो

(17:106) और इस कुरआन को हमने थोड़ा थोड़ा करके प्रेषित किया है ताकि तुम ठेहर ठेहर कर उसे लोगों को सुनाओ और उसे हमने थोड़ा थोड़ा अवतरित किया है.

(68:48) अच्छा अपने रब के निर्णय होने तक (अर्थात जब तक किसी कार्य के लिए ईश्वर का आदेश न आजाए) धैर्य करो और मछली वाले (युनुस) की भांति (त्रुटि करने वाले) न हो जाओ (फिर) जब उस ने (त्रुटि का अनुभूत करके) पुकारा था और वह संताप को पिए हुए था.

(76:23) ऐ नबी हमने ही तुम पर यह कुरआन थोड़ा थोड़ा करके अवतरित किया है (76:24) अतः तुम अपने ईश्वर के आदेश पर धैर्य करो और उनमें से किसी दुराचारी या नास्तिक की बात न मानों (अर्थात वह जो आपत्ति कर रहें हैं करने दो तुम इस कुरआन को इस प्रकार लेते रहो जैसे ईश्वर प्रेषित कर रहा है जल्दी न करो) आयात बाला से बात स्पष्ट हो गई नास्तिक कहते थे कि यह कुरआन एक साथ ही पूरा क्यों अवतरित न हुआ? हो सकता था महम्मद स0 को इस आपत्ति से कुछ व्याकूलता होती कि क्या उत्तर दे परन्तु ईश्वर ने कुरआन के प्रेषित हाने का एक नियम (20:114) में बता दिया की आप इस कुरआन के शीघ्र अवतरित होने की इच्छा न करना यह अपने समय पर अर्थात आपकी नबुवत के जीवन में जो निर्धारित है उस समय तक थोड़ा थोड़ा अवतरित होगा और आप पर ही अतः जैसे हो रहा है बस वैसे ही लेते रहो और व्यवहार करते रहो और जाति को बताते रहो नास्तिक बकते हैं बकने दो बस आप प्रार्थना करते रहो कि ईश्वर मुझे और ज्ञान दो और जब तक किसी विषय में पूरी जानकारी

خوف ہوگا اور نہ نقصان کا (۱۱۲)

اور ہم نے اس کو اسی طرح کا قرآن عربی نازل کیا ہے اور اس میں طرح طرح سے تنبیہات رکھی ہیں تا کہ لوگ پرہیز گار بنیں یا اللہ ان کے لئے نصیحت پیدا کر دے (۱۱۳)

پس بالا و برتر ہے اللہ بادشاہ حقیقی (اس قرآن کی تکمیل کا ایک وقت مقرر ہے) آپ لوگوں کے رد و قبول سے بے نیاز ہو کر جس ترتیب سے یہ اتر رہا ہے لوگوں کو سناتے رہو (اس کی تکمیل کے لئے اللہ نے جو مدت مقرر کر رکھی ہے وہ اس کی حکمت اور مصلحت سے اچھی طرح واقف ہے) اس لئے اس کے پورا ہونے سے پہلے آپ اس قرآن کے نازل ہونے کے بارے میں جلدی نہ کریں یقیناً اس کی وحی آپ پر ہی پوری ہوگی اور دعا کرو اے رب مجھے مزید علم عطا کر (۱۱۴)

نوٹ:۔ اس آیت کے ساتھ (۲۵:۳۲،۳۳) کو دیکھ لیا جائے تو مطلب صاف ہو جاتا ہے

(۲۵:۳۲) منکرین کہتے ہیں اس شخص پر سارا قرآن ایک ہی وقت میں کیوں نہ اتار دیا گیا ہاں تھوڑا تھوڑا اس لئے اتارا جا رہا ہے کہ اس سے آپ کا دل مضبوط کریں اور ہم نے اس کو ٹھہر ٹھہر کر پڑھ سنایا.

(۲۵:۳۳) اور وہ لوگ اس کتاب کی مثل تمہارے پاس نہ لائیں گے (اگر کوئی بات لائیں گے تو وہ بیکار ہوگی) یقیناً ہم ہی ہیں جو آپ کے پاس اپنا حق (قرآن بھی لاتے ہیں اور اس کی احسن تفسیر بھی لاتے ہیں یعنی تعریف آیات سے (اور یہ قرآن مجید صحیفہ فطرت کی تفسیر ہے) (۳:۳،۱۶:۳)

(۱۷:۱۰۵) اس قرآن کو ہم نے حق کے ساتھ نازل کیا اور حق کے ساتھ یہ نازل ہوا اور اے نبی تمہیں ہم نے اس کے سوا اور کسی کام کے لئے نہیں بھیجا کہ (جو مان لے اسے) خوشخبری دے دو اور (جو نہ مانے اسے) متنبہ کر دو.

(۱۷:۱۰۶) اور اس قرآن کو ہم نے تھوڑا تھوڑا کر کے نازل کیا ہے تا کہ تم ٹھہر ٹھہر کر اسے لوگوں کو سناؤ اور اسے ہم نے بتدریج اتارا ہے.

(۶۸:۴۸) اچھا اپنے رب کا فیصلہ صادر ہونے تک (یعنی جب تک کسی کام کے لئے اللہ کا حکم نہ آجائے) صبر کرو اور مچھلی والے (یونس) کی طرح (جلدی کرنے والے) نہ ہو جاؤ (پھر) جب اس نے (غلطی کا احساس کر کے) پکارا تھا اور وہ غم کو پیئے ہوئے تھا.

(۷۶:۲۳) اے نبی ہم نے ہی تم پر یہ قرآن تھوڑا تھوڑا کر کے نازل کیا ہے

(۷۶:۲۴) لہٰذا تم اپنے رب کے حکم پر صبر کرو اور ان میں سے کسی بدعمل یا منکر حق کی بات نہ مانو (یعنی وہ جو اعتراض کر رہے ہیں کرنے دو تم اس قرآن کو اس طرح لیتے رہو جیسے اللہ نازل کر رہا ہے جلدی نہ کرو)

آیات بالا سے بات صاف ہوگئی منکر حق کہتے تھے کہ یہ قرآن ایک ساتھ ہی پورا کیوں نازل نہ ہوا؟ ہوسکتا تھا محمدؐ کو اس اعتراض سے کچھ پریشانی ہوتی کہ کیا جواب دیں لیکن اللہ نے قرآن کے نازل ہونے کا ایک قانون (۲۰:۱۱۴) میں بتا دیا ہے کہ آپ اس قرآن کے جلدی نازل ہونے کی خواہش نہ کرنا یہ اپنے وقت پر یعنی آپ کی نبوت کی زندگی جو مقرر ہے اس وقت تک بتدریج نازل ہوگا اور آپ ہی پر. اس لئے جیسے ہو رہا ہے بس ویسے ہی لیتے رہو اور عمل

वही से न मिल जाए उसको निर्णय करने में जल्दी न करना जैसे श्रीमन यूनुस अ० ने जल्दी करके व्याकूलता उठाई अपितु वही की प्रतीक्षा करना जिसमें वह जानकारी हो जब वही से ज्ञान हो जाए तब पग उठाओ.

और यह भी याद रखो आपको हम किसी व्याकूलता में ग्रस्त नही होने देंगे हम यह जानते है कि नास्तिकों की आपत्ति आएंगी आपको उनका क्या उत्तर देना है अतः उनके उत्तर देने के लिए आपको पहले से ही उन आपत्तियों का उत्तर बता देंगे, क्योंकि हमको ज्ञात है उनकी आपत्ति से आपको व्याकूलता हो सकती है अतः आपको हर मूल्य पर हर उस महत्वपूर्ण समस्या का ज्ञान दे देंगे जिसकी आपको आवश्यक्ता पड़ेगी परन्तु प्रतिबद्धा यह है कि आप किसी भी कार्य के लिए शीघ्रता न करना यदि जल्दी करोगे तो परिणाम तुम्हारे सामने है कि यूनुस अ० के साथ क्या हुआ था.

यह है तथ्य (20:114) और दूसरी आयात का परन्तु हमारे यहां कुछ अवतर्ण की महिमा इस प्रकार लिखी मिलती है कि उससे आपत्ति करने का अवसर मिलता है अतः जो अवतर्ण महिमा इस आयात के विषय में लिखी है वह विचारणीय है.

कुरआन किसी अवतर्ण महिमा का आश्रित नही है, वह अपनी बात आयात को बार बार ला कर स्पष्ट करता चला जाता है और मुहम्मद स० ने इस पर व्यवहार (कर्म) करके बता दिया जिस अमल (कर्म) को बहुत से व्यक्तियों ने देखा और किया जो कुरआन के अनुसार था आज भी कुरआन हमारे पास मूल दशा में विद्यमान है और सरल है परन्तु प्रतिबद्धा यह है कि हम इसको शुद्ध मन से देखें.

परन्तु हम इसको न देखते हुए दूसरे भंडारो लेखो को देखते है और उनसे कुरआन का अर्थ निर्धारित करते है जो एक अनुचित बात है, होना यह चाहिए कि दूसरे लेखों को कुरआन से देखें कुरआन हर वस्तु पर हर भंडार पर निर्णायक है कुरआन पर कोई न्यायाधिकारी नही है यह ईश्वर की वाणी है भला ईश्वर की वाणी पर कोई न्यायधीश निर्णायक हो सकता है? ईश्वर हमें समझ बुद्धि दे (तकब्बल) {87:6-7} इस क्रम में सूरत क्यामा के विषय में भी लिख दिया जाए उलमाएकराम क्या कहते है जो लिखने जा रहा हूं इसके लिखने का कोई इरादा भी न था परन्तु मेरे पास अल्लामा हमदुद्दीन फराही र० साहब की तालीफ तफसीर निजामुल कुरआन अनुवाद अमीन अहसन इसलाही साहब आ गई और साथ ही मबादी तदब्बुर कुरआन भी उनको पढ़ और पढ़कर अपने भावार्थ में बढ़ोतरी करने का निर्णय किया, जो लिख रहा हूं उन श्रीमानों का वाद है कि कुरआन को कुरआन से समझो वाद तो वास्तविक्ता पर आधारित है परन्तु व्यवहार क्या है वह खेद जनक है आशा के विपरीत अवलोकन हो अल्लामा अमीन अहसन इसलाही साहब ने जो अनुवाद किया है जिसकी तालीफ हमीदुद्दीन फराही साहब ने की है.

सूरत क्यामा आयात 14से19 नंबर नजूल 31 अपितु इन्सान अपने लिए आप सूझ है, यद्यपि अपने बहाने प्रस्तुत करे, न चला इसके पढ़ने पर अपना मुख कि जल्दी सीख ले हमारा दायित्व है उसको जमा करना और उसको सुनाना, पस जब हम उसको सूना दें तो उस का अनुकरण कर फिर हमारे जिम्मे है उसका विस्तार.

यह रहा अनुवाद उनके साथ लगभग सब ही उलमा कराम लिखते है कि जब वही अवतरित होती थी तो मुहम्मद स० उसको याद करने के लिए अपने मुख को जल्दी जल्दी चलाते थे जिससे उस वही को याद कर लें, मुहम्मद स० को यह भय था ऐसा न हो कि कुरआन

کرتے رہو اور قوم کو بتاتے رہو۔ کفار بکتے ہیں بکنے دو۔ بس آپ دعا کرتے رہو کہ اللہ مجھے اور علم دو۔ اور جب تک کسی معاملہ میں مکمل ہدایت وحی سے نہ مل جائے اس کو طے کرنے میں جلدی نہ کرنا جیسے حضرت یونسؑ نے جلدی کر کے پریشانی اٹھائی بلکہ وحی کا انتظار کرنا جس میں وہ ہدایت ہو جب وحی سے علم ہو جائے تب قدم اٹھاؤ

اور یہ بھی یاد رکھو آپ کو ہم کسی پریشانی میں مبتلا نہیں ہونے دیں گے ہم یہ جانتے ہیں کہ منکروں کے اعتراض آئیں گے آپ کو ان کا کیا جواب دینا ہے اس لئے ان کے جواب دینے کے لئے آپ کو پہلے سے ہی ان اعتراضات کا جواب بتا دیں گے کیونکہ ہم کو معلوم ہے ان کے اعتراض سے آپ کو پریشانی ہو سکتی ہے، اس لئے آپ کو ہر قیمت پر ہر اس اہم مسئلہ کا علم دے دیں گے جس کی آپ کو ضرورت پڑے گی۔ مگر شرط یہ ہے کہ آپ کسی بھی کام کے لئے جلدی نہ کرنا اگر جلدی کرو گے تو انجام آپ کے سامنے ہے کہ یونسؑ کے ساتھ کیا ہوا تھا۔

یہ ہے حقیقت (۲۰:۱۱۴) اور دوسری آیات کی مگر ہمارے یہاں کچھ شان نزول اس طرح لکھا ملتا ہے کہ اس سے اعتراض کرنے کا موقع ملتا ہے اس لئے جو شان نزول اس آیت کے بارے میں لکھا ہے وہ محل نظر ہے۔

قرآن کسی شان نزول کا محتاج نہیں ہے وہ اپنی بات تصریف آیات سے صاف کرتا چلا جاتا ہے اور محمدؐ نے اس پر عمل کر کے بتا دیا۔ جس عمل کو بہت سے آدمیوں نے دیکھا اور کیا جو قرآن کے مطابق تھا آج بھی قرآن ہمارے پاس اصل حالت میں موجود ہے اور آسان ہے مگر شرط یہ ہے کہ ہم اس کو صاف دماغ سے دیکھیں

مگر ہم اس کو نہ دیکھتے ہوئے دوسرے ذخیروں کو دیکھتے ہیں اور ان سے قرآن کا مطلب مقرر کرتے ہیں جو ایک غلط بات ہے ہونا یہ چاہیے کہ دوسرے ذخیروں کو قرآن سے دیکھیں قرآن ہر چیز پر قاضی ہے قرآن پر کوئی قاضی نہیں ہے یہ اللہ کا کلام ہے بھلا اللہ کے کلام پر کوئی قاضی ہو سکتا ہے؟ اللہ ہمیں سمجھ دے تقبل (۸۷:۶،۷)

اس سلسلے میں سورت قیامہ کے بارے میں بھی لکھ دیا جائے علماء کرام کیا کہتے ہیں جو لکھنے جا رہا ہوں اس کے لکھنے کا کوئی ارادہ بھی نہ تھا مگر میرے پاس علامہ حمید الدین فراہیؒ صاحب کی تالیف تفسیر نظام القرآن ترجمہ امین احسن اصلاحی صاحب آ گئی اور ساتھ ہی مبادی تدبر قرآن بھی ان کو پڑھا اور پڑھ کر اپنے مفہوم میں اضافہ کرنے کا فیصلہ کیا، جو لکھ رہا ہوں۔ ان حضرات کا دعویٰ ہے کہ قرآن کو قرآن سے سمجھو، دعویٰ تو حقیقت پر مبنی ہے مگر عمل کیا ہے وہ افسوسناک ہے امید کے خلاف ملاحظہ ہو۔ علامہ امین احسن اصلاحی صاحب نے جو ترجمہ کیا ہے جس کی تالیف حمید الدین فراہی صاحب نے کی ہے۔

سورت قیامہ آیت ۱۴ تا ۱۹، نمبر نزول ۳۱، بلکہ انسان اپنے لئے آپ سوجھ ہے، اگر چہ اپنے بہانے پیش کرے نہ چلا اس کے پڑھنے پر اپنی زبان کو کہ جلدی سیکھ لے۔ ہمارا ذمہ ہے اس کو جمع کرنا اور اس کو سنانا، پس جب ہم اس کو سنا دیں تو اس کی پیروی کر، پھر ہمارے ذمہ ہے اس کی تفصیل۔

یہ رہا ترجمہ بشمول ان کے تقریباً سب ہی علماء کرام لکھتے ہیں کہ جب وحی نازل ہوتی تھی تو محمدؐ اس کو یاد کرنے کے لئے اپنی زبان کو جلدی جلدی حرکت دیتے تھے جس سے اس وحی کو یاد کر لیں محمدؐ کو یہ اندیشہ تھا مبادا قرآن کی کوئی بات

की कोई बात नष्ट हो जाए और वही की अधिकता की भी तमन्ना थी कि शायद आपकी जाति उसके किसी भाग की बरकत से मार्ग पा लें,

सूरत कलम नम्बर नजूल 2 आयत 48 में कहा गया है कि आप मीन वाले की भांति जल्दी न करना जब जिस कार्य के लिए आदेश आ जाए तब करना,

(20:114) नम्बर नजूल 45, में भी आलिमों ने यही अनुवाद किया है कि वही अवतरित होते समय उसको याद करने में जल्दी न करना अपितु पहले उसको सुनना यह अनुवाद भी अनुचित है, उचित यह है कि ऐ मुहम्मद स0 इस कुरआन की वही अपने समय पर आप पर ही पूरी होगी जिस प्रकार यह अवतरित हो रहा है बस ऐसे ही लेते रहो, जल्दी की तमन्ना न करना,

(20:115) को अवतरित करके ईश्वर ने यह भी बता दिया था कि हमने आदम से वचन लिया था और बता दिया था परन्तु वह भूल गया, परन्तु वह उस भूल पर साबित पग न रहा और क्षमा मांगी,

फुरकान नम्बर नजूल 42, आयत 25:32

सूरत दहर नम्बर नजूल 98 आयत 23,24

ऐ नबी स0 हमने ही तुम पर यह कुरआन थोड़ा थोड़ा करके अवतरित किया है,... अतः तुम अपने ईश्वर के आदेश पर धैर्य करो और उनमें से किसी दुराचारी पर सत्य के विरोधी की बात न मानो,

ऐसे ही बनी इसराईल की आयत 105,106 में कहा गया है कि ऐ नबी यह कुरआन हमने ही थोड़ा थोड़ा करके उतारा है और तुम शुभ सूचना और भय सुना दो,

सूरत हिजर, नम्बर नजूल 54 आयत 9, रहा यह जिकर तो इसको हमने अवतरित किया है और हम स्वयं इसके रखवाले है,

सूरतुलआला 87 नम्बर नजूल 8, आयत 87:6से8

हम तुम्हें अभी पढ़वा देंगे फिर तुम नही भूलोगे बिल्कुल ऐसा ही है ईश्वर का नियम यही है वह प्रकट को भी जानता है और जो कुछ छुपा है उसको भी और हम तुम्हें सरल मार्ग की सहूलत देते है,

(1) ईश्वर ने सूरत कलम जिसका नम्बर नजूल 2 है में कहा गया है कि आप जल्दी न करना मछली वाले की भांति वही अपने समय पर ही पूरी होगी,

(2) सूरतुलआला जिसका नम्बर नजूल 8 है इसमें कहा गया है कि हम अभी पढ़वा देंगे सो आप नही भूलेंगे पूरा विश्वास दिला दिया, और 17:86 में विश्वास दिला दिया कि यदि हम चाहें तो वही को दिलों से निकाल लें परन्तु नही निकालेंगे,

(3) फुरकान नम्बर नजूल 42, इसमें नास्तिकों की आपत्ति का उत्तर दिया है, वह कहते थे कि यह कुरआन सब एक साथ क्यों न उतारा गया तो ईश्वर ने कहा कि इसको थोड़ा थोड़ा ही उतारा गया है

सूरत क्यामा, 75 नम्बर नजूल 31, आयत 20, इस आयत में यह कहा गया है कि आप कुरआन की वही लेते समय अपना मुख न चलाएं पहले सुन ले, हम याद करा देंगे, जबकि यह अनुवाद मिथ्या है, यदि इसको ठीक मान लिया जाये तो मुहम्मद स0 किस स्थान पर खड़े नजर आते है,

अर्थात ईश्वर मुहम्मद स0 को बार-बार समझाता है परन्तु मुहम्मद ईश्वर की बात को नही मानते और फिर ईश्वर सूरत ताहा नम्बर नजूल 45 में मना करता है कि अपने मुख को जल्दी न चला क्या मुहम्मद स0 को ईश्वर की शिक्षा याद नही रहती थी क्या कभी विचार किया है, अतः सूरत क्यामा का जो अनुवाद आलिमों ने किया है वह अनुचित है, उचित भावार्थ अपने स्थान पर मैंने लिखा है, और अबूबकर अलकफ्फाल रहमतुल्ला अलेह और मौलाना शब्बीर अहमद अजहर मेरठी र0 ने भी यही लिखा है जो मैंने लिखा है विचार अनिवार्य है,

अल्लामा हमीदुद्दीन फराही साहब और अमीन अहसन

ضائع ہوجائے اوروحی کی زیادتی کی بھی تمنا تھی کہ شاید آپ کی قوم اس کے کسی حصہ کی برکت سے راہیاب ہوجائے

سورت قلم نمبرنزول۲، آیت ۴۸، میں کہا گیا ہے کہ آپ مچھلی والے کی طرح جلدی نہ کرنا جب جس کام کے لئے حکم آجائے تب کرنا۔

(۲۰:۱۱۴) نمبرنزول ۴۵، اس میں بھی عالموں نے یہی ترجمہ کیا ہے کہ وحی نازل ہوتے وقت اس کو یاد کرنے میں جلدی نہ کرنا بلکہ پہلے اس کو سننا یہ ترجمہ بھی غلط ہے، صحیح یہ ہے کہ اے محمدؐ اس قرآن کی وحی اپنے وقت پر آپ پر ہی پوری ہوگی۔ جس طرح یہ نازل ہو رہا ہے بس ایسے ہی لیتے رہو۔ جلدی کی تمنا نہ کرنا۔

(۲۰:۱۱۵) کو نازل کرکے اللہ نے یہ بھی بتادیا کہ ہم نے آدم سے عہد لیا تھا اور بتادیا تھا مگر وہ اسے بھول گیا مگر وہ اس بھول پر ثابت قدم نہ رہا اور معافی مانگی۔

فرقان نمبرنزول۴۲، آیت ۲۵:۳۲

سورت دہر نمبرنزول ۹۸، آیت ۲۳، ۲۴

اے نبیؐ ہم نے ہی تم پر یہ قرآن تھوڑا تھوڑا کرکے نازل کیا ہے لہٰذا تم اپنے رب کے حکم پر صبر کرو، اور ان میں سے کسی بدعمل یا منکر حق کی بات نہ مانو۔

ایسے ہی بنی اسرائیل کی آیت ۱۰۵، ۱۰۶ میں کہا ہے کہ اے نبی یہ قرآن ہم نے ہی تھوڑا تھوڑا کرکے اتارا ہے اور تم خوشخبری اور ڈر سنادو۔

سورت حجر، نمبرنزول۵۴، آیت ۹، رہا یہ ذکر تو اس کو ہم نے نازل کیا ہے اور ہم خود اس کے نگہبان ہیں۔

سورت الاعلیٰ (۸۷) نمبرنزول ۸ آیت ۶ سے ۸، ہم تمہیں ابھی پڑھوادیں گے پھر تم نہیں بھولو گے بالکل ایسا ہی ہے اللہ کا قانون مشیت یہی ہے وہ ظاہر کو بھی جانتا ہے اور جو کچھ پوشیدہ ہے اس کو بھی اور ہم تمہیں آسان طریقے کی سہولت دیتے ہیں۔

(۱) اللہ نے سورت قلم جس کا نمبرنزول ۲ ہے میں کہا گیا ہے کہ آپ جلدی نہ کرنا مچھلی والے کی طرح، وحی اپنے وقت پر ہی پوری ہوگی۔

(۲) سورت الاعلیٰ، جس کا نمبرنزول ۸ ہے اس میں کہا کہ ہم ابھی پڑھوادیں گے سو آپ نہیں بھولیں گے پورا یقین دلادیا، اور (۱۷:۸۶) میں کہا ہے کہ اگر ہم چاہیں تو وحی کو دلوں سے نکال لیں۔ مگر نہیں نکالیں گے۔

(۳) فرقان نمبرنزول۴۲، اس میں کافروں کے اعتراض کا جواب دیا ہے وہ یہ کہتے تھے کہ یہ قرآن سب ایک ساتھ کیوں نہ اتارا گیا تو اللہ نے کہا کہ اس کو تھوڑا تھوڑا ہی اتارا گیا ہے۔

سورت قیامہ (۷۵) نمبرنزول ۳۱، آیت ۲۰، اس آیت میں یہ کہا گیا ہے کہ آپ قرآن کی وحی لیتے وقت اپنی زبان نہ چلائیں پہلے سن لیں، ہم یاد کرادیں گے۔ جب کہ یہ ترجمہ غلط ہے اگر اس کو صحیح مان لیا جائے تو محمدؐ کس مقام پر کھڑے نظر آتے ہیں۔ یعنی اللہ محمدؐ کو بار بار سمجھاتا ہے مگر محمدؐ اللہ کی بات کو نہیں مانتے۔ اور پھر اللہ سورت طٰہٰ نمبرنزول ۴۵، میں منع کرتا ہے کہ اپنی زبان کو جلدی نہ چلا کیا محمدؐ کو اللہ کی نصیحت یاد نہیں رہتی تھی۔ کیا کبھی غور کیا ہے اس لئے سورت قیامہ کا جو ترجمہ عالموں نے کیا ہے وہ غلط ہے صحیح مفہوم اپنی جگہ پر میں نے لکھا ہے۔ اور ابوبکر القفال رحمۃ اللہ علیہ اور مولانا شبیر احمد ازہر میرٹھیؒ نے بھی یہی لکھا ہے جو میں نے لکھا ہے غور ضروری ہے۔

علامہ حمید الدین فراحی صاحب اور امین احسن اصلاحی صاحب کہتے

इसलाही साहब कहते हैं, कुरआन समझने के लिए जिन बातों की आवश्यक्ता है उनमें से यह भी है अर्थात कुरआन अवतरित होने के समय अरब और खास तौर से मक्का व मदीना और निकट की क्या स्थिति समाचार थे लेखकों और कवियों ने अपने लेखों में क्या शब्द प्रयोग किए उनका क्या अर्थ है, अरबी ज्ञान और नज़मे कुरआन भी, परन्तु इन बातों पर स्वंय उन लोगों ने विचार नही किया यदि नज़मे कुरआन पर विचार करते तब भी वह श्रीमान मुहम्मद स0 के स्थान को दृष्टि में रखते और ऐसे स्थान पर खड़ा न करते जो नबी का स्थान नही है क्या यह सम्भव है कि ईश्वर के बताने के बाद मुहम्मद स0 अपने मुख को बार बार चलाएं? यह सम्भव ही नही अतः अरबी लेख जिसमें व्यावस्था है और मकामे मुहम्मद को देखकर सूरत क्यामा और दूसरी आयात का अनुवाद ठीक करते.

दूसरे जो अनुचित कार्य उस क्षेत्र और उस समय में हो रहे थे वह लगभग हर क्षेत्र में थे और आज भी वैसे ही हो रहे हैं यदि उस समय उस क्षेत्र के कुछ और थे आज नही तो फिर जो समाचार स्थिति आज है जिस क्षेत्र के उसके आधीन दूसरा कुरआन किसी दूसरे नबी पर अवतरित होना अनिवार्य है (नऊज़ बिल्ला)

परन्तु जो स्थिति उस समय उस क्षेत्र में थी लगभग वह हर क्षेत्र और हर काल में कम व बेश रहेंगे, अतः वही कुरआन जो मुहम्मद स0 पर अवतरित हुआ था प्रयाप्त है इसको समझने के लिए ज्ञान व बुद्धि और ईश्वर के भय की जरूरत है जिस ज्ञान और विवेक बुद्धि से कुरआन में जो नज़्म है उसको स्थापित किया जाए और नबी स0 का स्थान दृष्टि में हो तो ईश्वर के कृपा दया से हर आयत का भावार्थ स्पष्ट हो जाएगा और यदि स्वंय ही अपने नियमों को तोड़ कर कुरआन की तफ्सीर की जाएगी जैसा कि सामने है और स्वंय उन दोनों श्रीमानों ने भी किया है जो औरों ने किया है तो कुरआन का ठीक मफ्हूम आवर्ण में रहेगा मौलाना प्रशंसित ने लिखा है कि मुहम्मद स0 को यह भय रहता था कि ऐसा न हो कुरआन की कोई बात नष्ट हो जाए (नऊज़) ईश्वर ने जब कुरआन की रक्षा का भार ले लिया और मुहम्मद स0 को विश्वास दिला दिया कि कुरआन मेरी सुरक्षा में है और आपको पक्का याद कराना भी मेरा काम है तो फिर ईश्वर के विश्वास दिलाने पर मुहम्मद स0 को विश्वास नही आया था? और आपको भय रहता था कि ऐसा न हो कोई बात नष्ट हो जाए क्या ऐसा आरोप मुहम्मद स0 पर लगाना उचित है?

फिर लिखा जा रहा है कि सूरत क्यामा की आयात का या दूसरी आयात का अनुवाद जो अधिकांश आलिमों ने किया है जो पढ़ने में आ रहा है वह स्याक व सबाक और नज़्मे कुरआन से पृथक होकर किया है नज़्म कुरआन, स्याक व सबाक कुछ और बता रहा है जो सूरत क्यामा के मफ्हूम या दूसरी आयत में अंकित है अवलोकन हो.

वैसे हमको यह भी याद रखना चाहिए कि ईश्वर ने मुहम्मद स0 को जिन जिन बातों की आवश्यकता थी उनकी जानकारी समय आने से पहले ही दे दी थी, ऐसा नही कि बिना जानकारी के ही मुहम्मद स0 को मैदान में उतार दिया हो या बड़े समुन्द्र में डाल दिया हो कि तैरना आता नही और आप समुन्द्र में कूद पड़े हो, इसलिए जो आवश्यक जानकारी थी वह ईश्वर ने पहले ही आपको दे दी थी और ईश्वर अपने रसूलों को चुनकर ही बनाता है जो इसका योग्य होता है, इसलिए रसूल ईश्वर की अवज्ञा नही करते, यह है नबी का मकाम ईश्वर की हर बात को याद रखते हैं और व्यवहार करते हैं, परन्तु यह भी याद रहे कि ईशदूतों का अमल ईश्वर के आदेश के बाद होता है पहले नही और वैसा ही किया जैसा आयात में अंकित है.

सूरत क्यामा की आयात का भावार्थ

(75:14) अपितु व्यक्ति स्वंय ही अपनी दशा पर पूरी दृष्टि रखता है (जो किया है वह उसको ज्ञात है)

ہیں، قرآن سمجھنے کے لئے جن باتوں کی ضرورت ہے ان میں سے یہ بھی ہیں یعنی قرآن نازل ہونے کے وقت عرب اور خاص طور سے مکہ و مدینہ اور قرب وجوار کے کیا حالات تھے، ادیبوں اور شاعروں نے اپنی تصانیف میں کیا لفظ استعمال کئے ان کا کیا مطلب ہے عربی علم اور نظم قرآن بھی، لیکن ان باتوں پر خود ان لوگوں نے غور نہیں کیا اگر نظم قرآن پر غور کرتے تب بھی وہ حضرات محمدؐ کے مقام کو نظر میں رکھتے اور ایسے مقام پر کھڑا نہ کرتے جو نبی کا مقام نہیں ہے۔ کیا یہ ممکن ہے کہ اللہ کے بتانے کے بعد محمدؐ اپنی زبان کو بار بار چلائیں؟ یہ ممکن ہی نہیں، اس لئے عربی متن جس میں نظم ہے اور مقام محمدؐ کو دیکھ کر سورت قیامہ اور دوسری آیات کا ترجمہ ٹھیک کرتے دوسرے جو خرافات اس علاقے اور اس زمانے میں ہو رہے تھے وہ تقریباً ہر علاقے میں تھے اور آج بھی ویسے ہی ہو رہے ہیں، اگر اس وقت اس علاقے کے کچھ اور تھے آج نہیں تو پھر جو حالات آج ہیں جس علاقے کے اس کے تحت دوسرا قرآن کسی دوسرے نبی پر نازل ہونا ضروری ہے (نعوذ باللہ)

مگر جو حالات اس وقت اس علاقے میں تھے تقریباً وہ ہر علاقے اور ہر زمانے میں کم و بیش رہیں گے۔ اس لئے وہی قرآن جو محمدؐ پر نازل ہوا تھا کافی ہے۔ اس کو سمجھنے کے لئے علم وعقل اور اللہ کے خوف کی ضرورت ہے۔ جس علم عقل سے قرآن میں جو نظم ہے اس کو قائم کیا جائے اور نبیؐ کا مقام نظر میں ہو تو اللہ کے کرم وفضل سے ہر آیت کا مفہوم صاف ہو جائے گا۔ اور اگر خود ہی اپنے اصولوں کو توڑ کر قرآن کی تفسیر کی جائے گی جیسا کہ سامنے ہے اور خود ان دونوں بزرگوں نے بھی کیا ہے جو اوروں نے کیا ہے تو قرآن کا صحیح مفہوم پردے میں رہےگا۔

مولانا موصوف نے لکھا ہے کہ محمدؐ کو یہ اندیشہ رہتا تھا کہ مبادا قرآن کی کوئی بات ضائع ہو جائے (نعوذ) اللہ نے جب قرآن کی حفاظت کا ذمہ لے لیا اور محمدؐ کو یقین دلا دیا کہ قرآن میری حفاظت میں ہے اور آپ کو پختہ یاد کرانا بھی میرا کام ہے تو پھر اللہ کے یقین دلانے پر محمدؐ کو یقین نہیں آیا تھا؟ اور آپ کو اندیشہ رہتا تھا کہ مبادا کوئی بات ضائع ہو جائے کیا ایسا الزام محمدؐ پر لگانا درست ہے؟

پھر لکھا جا رہا ہے کہ سورت قیامہ کی آیات کا یا دوسری آیات کا ترجمہ جو اکثر عالموں نے کیا ہے جو پڑھنے میں آ رہا ہے وہ سیاق وسباق اور نظم قرآن سے الگ ہو کر کیا ہے نظم قرآن وسیاق وسباق کچھ اور بتا رہا ہے جو سورہ قیامہ کے مفہوم یا دوسری آیات میں درج ہے ملاحظہ ہو۔

ویسے ہم کو یہ بھی یاد رکھنا چاہیے کہ اللہ نے محمدؐ کو جن جن باتوں کی ضرورت تھی ان کی معلومات وقت آنے سے پہلے ہی دے دی تھی۔ ایسا نہیں کہ بنا علم کے ہی محمدؐ کو میدان میں اتار دیا ہو یا بڑے سمندر میں ڈال دیا ہو کہ تیرنا آتا نہیں اور آپ سمندر میں کود پڑے ہوں اس لئے جو ضروری معلومات تھیں وہ اللہ نے پہلے ہی آپ کو دے دی تھیں، اور اللہ اپنے رسولوں کو چن کر ہی بناتا ہے جو اس کا اہل ہوتا ہے اس لئے رسول اللہ کی نافرمانی نہیں کرتے یہ ہے نبی کا مقام اللہ کی ہر بات کو یاد رکھتے ہیں اور عمل کرتے ہیں، مگر یہ بھی یاد رہے کہ نبیوں کا عمل اللہ کے حکم کے بعد ہوتا ہے پہلے نہیں اور ویسا ہی کیا جیسا آیات میں درج ہے۔

سورت قیامہ کی آیات کا مفہوم۔

(۷۵:۱۴) بلکہ آدمی خود ہی اپنے حال پر پوری نگاہ رکھتا ہے (جو کیا ہے وہ اس کو معلوم ہے)

(75:15) और उसके पास जितने बहाने हो सब ला डाले जब भी न सुना जाएगा (चाहे कितनी ही जबान दराजी करले)

(۷۵:۱۵)اور اس کے پاس جتنے بہانے ہوں سب لا ڈالے جب بھی نہ سنا جائے گا (چاہے کتنی ہی زبان درازی کر لے)

(75:16) (तो सुन) अब अपनी जबान दराजी न कर अर्थात मुख न चला और जल्दी न कर (51:59; 20:51,52; 18:49)

(۷۵:۱۶)(تو سن) اب اپنی زبان درازی نہ کر یعنی زبان نہ چلا اور جلدی نہ کر۔ [۵۱:۵۹؛ ۲۰:۵۱،۵۲؛ ۱۸:۴۹]

(75:17) (और ऐ मानव कान खोलकर सुनले अब दुनिया के जीवन में अवसर है अच्छे कर्म कर ले या बुरे) निःसन्देह जो हम तेरे ऊपर (कर्म पत्र जमा कर रहे हैं उसको हम पढ़वा देंगे (17:13,14; 7:7,8,9)

(۷۵:۱۷)(اور اے انسان کان کھول کر سن لے اب دنیا کی زندگی میں موقع ہے اچھے عمل کر لے یا بُرے) یقیناً جو ہم تیرے اوپر نامہ اعمال جمع کر رہے ہیں اس کو ہم پڑھوا دیں گے [۱۷:۱۳،۱۴؛ ۷:۷،۸،۹]

(75:18) और जब तेरे सामने पढ़ने को प्रस्तुत होगा तो तू उसको स्वीकार करने पर विवश होगा तू उसका अनुकरण करेगा.

(۷۵:۱۸)اور جب تیرے سامنے پڑھنے کو پیش ہوگا تو تو اس کو تسلیم کرنے پر مجبور ہوگا تو اس کی اتباع کرے گا۔

(75:19) (यह भी एक सत्य है) कि उस कर्म पत्र का खोल खोलकर बयान कर देना तेरे ऊपर हमारा काम है.

(۷۵:۱۹)(یہ بھی ایک حقیقت ہے) کہ اس نامہ اعمال کا کھول کھول کر بیان کر دینا تیرے اوپر ہمارا کام ہے

(75:20) तो सुनो तुम यह चाहते हो कि वह जल्दी आ जाए अर्थात क्यामत. यह रहा इन आयात का भावार्थ विचार करो.

(۷۵:۲۰)تو سنو تم یہ چاہتے ہو کہ وہ جلدی آجائے یعنی قیامت۔ یہ رہا ان آیات کا مفہوم غور کرو۔

और यह सत्य है कि हमने आदम से वचन लिया था और बता दिया था परन्तु वह उसे भूल गया (और भूल से) वचन की अवहेलना कर गया परन्तु हमने उसमें (इस अवज्ञा पर) स्थिर रहने वाला धैर्य न देखा (115)

اور یہ حقیقت ہے کہ ہم نے آدم سے عہد لیا تھا اور بتا دیا تھا مگر وہ اسے بھول گیا (اور بھول سے) وعدہ خلافی کر گیا مگر ہم نے اس میں (اس نافرمانی) پر صبر و ثبات نہ دیکھا (۱۱۵)

{और यह सत्य है कि बनी आदम पाप करने के बाद सदाचारी भी बन जाता है पापों पर स्थिर नही रहता पश्चाताप कर लेता है ऐसे ही आदम ने पश्चाताप किया था वह अपनी त्रुटि पर स्थिर नही रहे थे, तो ऐ मुहम्मद आप भी हमारे आदेश मिलने पर ही कोई कार्य करना जल्दी न करना कभी भूल कर जल्दी कर जाओ और ऐ बनी आदम यदि शैतान के चक्कर में त्रुटि हो जाए तो उस पर स्थिर न रहना पश्चाताप कर लेना जैसे तुम्हारे पिता आदम ने की थी}

[(اور یہ حقیقت ہے کہ بنی آدم گناہ کرنے کے بعد نیک بھی بن جاتا ہے گناہوں پر ثابت نہیں رہتا توبہ کر لیتا ہے ایسے ہی آدم نے توبہ کی تھی وہ اپنی غلطی پر قائم نہیں رہے تھے تو اے محمدؐ آپ بھی ہمارے احکام ملنے پر ہی کوئی کام کرنا جلدی نہ کرنا۔ کبھی بھول کر جلدی کر جاؤ اور اے بنی آدم اگر شیطان کے چکر میں غلطی ہو جائے تو اس پر قائم نہ رہنا توبہ کر لینا جیسے تمہارے باپ آدم نے کی تھی)

और जब हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को उच्च स्वीकार करो तो सबने आदेश माना और श्रेष्ठ स्वीकार किया परन्तु इब्लीस ने इन्कार कर दिया (116) अतः हमने आदम से कहा यह तुम्हारा और तुम्हारी पत्नी का शत्रु है तो यह कहीं तुम दोनों को स्वर्ग से न निकलवा दे फिर तुम कष्ट में पड़ जाओ (117) यहां तुम को यह सुगमता है कि न भूके रहोगे और न नंगे (अर्थात लज्जावाले रहोगे निर्लज्ज होकर नंगे नही बनोगे (118) {और बनी आदम भी सुन ले कि अवज्ञा करने में नंगा भूका रहेगा (20:125)

اور جب ہم نے فرشتوں سے کہا کہ آدم کو برتر تسلیم کرو تو سب نے حکم مان لیا اور برتر تسلیم کیا مگر ابلیس نے انکار کر دیا (۱۱۶) پس ہم نے آدم سے کہا یہ تمہارا اور تمہاری بیوی کا دشمن ہے تو یہ کہیں تم دونوں کو جنت سے نہ نکلوا دے پھر تم تکلیف میں پڑ جاؤ (۱۱۷) یہاں تم کو یہ سہولت ہے کہ نہ بھوکے رہو گے اور نہ ننگے (یعنی شرم دار رہو گے بے شرم ہو کر ننگے نہیں بنو گے (۱۱۸) [اور بنی آدم بھی سن لے نافرمانی کرنے میں ننگا بھوکا رہے گا دنیا میں (۲۰:۱۲۵)]

और वह कि न प्यासे रहो और न धूप लगे (119) तो शैतान ने उनके मन में संदेह डाला और कहा कि ऐ आदम मैं तुझे ऐसे शजर का पता बता दूं जिसमें तुझे अनन्त जीवन और अविनाशी राज्य मिल जाए (120)

اور یہ کہ نہ پیاسے رہو اور نہ دھوپ لگے (۱۱۹) تو شیطان نے ان کے دل میں وسوسہ ڈالا اور کہا کہ اے آدم میں تجھے ایسے شجر کا پتہ بتا دوں جس سے تجھے ابدی زندگی اور لازوال سلطنت مل جائے (۱۲۰)

तो दोनों ने उस शजर का स्वाद चख लिया तो उन पर उनकी गुप्त क्षमताऐं प्रकट हो गईं और अब उनको ज्ञान हो गया कि हम नंगे हैं तो वह शरीर को उपवन के पत्तों से छुपाने लगे, तात्पर्य कि आदम ने भूल से अपने रब की अवज्ञा की और वह भूल गया (परन्तु इस त्रुटि पर स्थिर न रहा पश्चाताप किया) (121)

تو دونوں نے اس شجر کا مزہ چکھ لیا تو ان پر ان کی چھپی صلاحیتیں ظاہر ہو گئیں اور اب ان کو علم ہو گیا کہ ہم تو ننگے ہیں تو وہ جسم کو باغ کے پتوں سے چھپانے لگے غرض کہ آدم نے بھول سے اپنے رب کی نافرمانی کی اور راہ بھٹک گیا (مگر اس غلطی پر قائم نہ رہا توبہ کی) (۱۲۱)

तो फिर (आदम ने क्षमा मांगी जो मानव में एक

تو پھر (آدم نے معافی مانگی جو انسان میں ایک صفت

गुण है) उसके ईश्वर ने उस पर कृपा की तो उन पर दया से आकृष्ट हुआ और सीधा मार्ग बताया (122)

ہے)اس کے رب نے اسے نوازا تو ان پر مہربانی سے توجہ فرمائی اور سیدھی راہ بتائی (۱۲۲)

और ईश्वर ने कहा तुम दोनों पक्ष (अर्थात मानव और शैतान) यहां से निकल जाओ तुम में कतिपय के कतिपय शत्रु रहेंगे फिर यदि मेरी ओर से तुम्हारे पास कोई संदेश शिक्षा आये तो जो कोई मेरी शिक्षा का अनुकरण करेगा वह न पथ भ्रष्ट होगा और न पीड़ा में पड़ेगा (123)

اور اللہ نے کہا تم دونوں فریق (یعنی انسان اور شیطان) یہاں سے نکل جاؤ تم میں بعض بعض کے دشمن رہیں گے پھر اگر میری طرف سے تمہارے پاس کوئی پیام ہدایت آئے تو جو کوئی میری ہدایت کی پیروی کرے گا وہ نہ گمراہ ہوگا اور نہ تکلیف میں پڑے گا (۱۲۳)

और जो कोई मेरी शिक्षा से विमुख होगा उसका जीवन तंग हो जाएगा (और दुनिया में भूका और नंगा रहेगा व्याकुल रहेगा (20:118) और महा प्रलय के दिन उसे हम अन्धा उठाएंगे (यह है पथ प्रदर्शन और पथ भ्रष्टता का अटल नियम इसके अलावा नही (124)

اور جو کوئی میری نصیحت سے منہ پھیرے گا اس کی زندگی تنگ ہو جائے گی (اور دنیا میں بھوکا اور ننگا رہے گا پریشان رہے گا (۲۰:۱۱۸) اور قیامت کے روز اسے ہم اندھا اٹھائیں گے (یہ ہے ہدایت اور گمراہی کا اٹل قانون اس کے علاوہ نہیں) (۱۲۴)

वह कहेगा मेरे रब तूने मुझे अन्धा करके क्यों उठाया मैं तो देखता भालता था (25)

وہ کہے گا میرے رب تو نے مجھے اندھا کر کے کیوں اٹھایا میں تو دیکھتا بھالتا تھا (۱۲۵)

आदेश होगा (तुझे) ऐसा ही होना था हमारी आयत तेरे पास आई परन्तु तूने उन्हें भुला दिया आज तू भी उसी प्रकार भुला दिया गया (126)

ارشاد ہوگا (تجھے) ایسا ہی ہونا تھا ہماری آیتیں تیرے پاس آئیں مگر تو نے انہیں بھلا دیا آج تو بھی اسی طرح بھلا دیا گیا (۱۲۶)

इसी प्रकार जो व्यक्ति सीमा से निकल जाए और अपने रब की आयतों पर विश्वास न लाए हम उसको ऐसा ही बदला देते है और परलोक का कष्ट बहुत कठोर और देर तक रहने वाला है (127)

اسی طرح جو شخص حد سے نکل جائے اور اپنے رب کی آیتوں پر ایمان نہ لائے ہم اس کو ایسا ہی بدلہ دیتے ہیں اور آخرت کا عذاب بہت سخت اور دیر تک رہنے والا ہے (۱۲۷)

क्या उन लोगों को इस बात से भी शिक्षा नही मिली कि उनसे पहले कितनी ही जातियों को हम नष्ट कर चुके है जिनकी (नष्ट विनष्ट) बस्तियों में वह चलते फिरते है (उनके खण्डर उनकी आंखों के सामने हैं) जो लोग बुद्धिमान है उनके लिए इसी एक बात में बहुत ही चिन्ह है (128)

کیا ان لوگوں کو اس بات سے بھی ہدایت نہیں ملی کہ ان سے پہلے کتنی ہی قوموں کو ہم ہلاک کر چکے ہیں جن کی (برباد شدہ) بستیوں میں وہ چلتے پھرتے ہیں (ان کے کھنڈر ان کی نگاہوں کے سامنے ہیں) جو لوگ عقل مند ہیں ان کے لئے اسی ایک بات میں بہت ہی نشانیاں ہیں (۱۲۸)

ऐ रसूल! यदि पहले से आपके रब की ओर से एक बात निर्णित न होती और छूट की सीमा निश्चित न कर दी गई होती तो उन जालिमों पर कष्ट अनिवार्य हो जाता (129)

(اے رسول! اگر پہلے سے آپ کے رب کی طرف سے ایک بات طے نہ ہوتی اور مہلت کی مدت مقرر نہ ہوتی تو ان ظالموں پر عذاب لازم ہو جاتا (۱۲۹)

अतः जो कुछ वह बकवास करते है उस पर धैर्य करो और सूर्य निकलने से पहले और उसके अस्त होने से पूर्व अपने रब की पवित्रता व प्रशंसा वर्णन किया करो और रात्रि के समय में भी उसकी पवित्रता का वर्णन किया करो और दिन के किनारों में हो सकता है कि आप प्रसन्न हो जाओ (130) {5:3,67; 11:12; 18:6}

پس جو کچھ وہ بکواس کرتے ہیں اس پر صبر کرو اور سورج نکلنے سے پہلے اور اس کے غروب ہونے سے پہلے اپنے رب کی تسبیح و حمد اور پاکی بیان کیا کرو اور رات کے اوقات میں بھی اس کی تسبیح کیا کرو اور دن کے کناروں میں ہو سکتا ہے کہ تم خوش ہو جاؤ (۱۳۰) [۵:۳،۶۷؛ ۱۱:۱۲؛ ۱۸:۶؛ ۱۸:۶؛ ۱۱:۱۲]

और यह जो हमने कई प्रकार के लोगों को दुनिया के जीवन में सज्जा की वस्तुओं से लाभान्वित किया है उन्हें आंख उठाकर भी न देखो बात यह है कि हमने उन्हें (यह वस्तुऐं देकर) परीक्षा में डाल दिया है और आपके रब की दी हुई जीविका बहुत अच्छी और शेष रहने वाली है (चाहे वह कम ही हो) (131) {15:88,90}

اور یہ جو ہم نے کئی طرح کے لوگوں کو دنیا کی زندگی میں آرائش کی چیزوں سے بہرہ مند کیا ہے انہیں آنکھ اٹھا کر بھی نہ دیکھو۔ بات یہ ہے کہ ہم نے انہیں (یہ چیزیں دے کر) آزمائش میں ڈال دیا ہے اور تیرے رب کی عطا کی ہوئی روزی بہت اچھی اور باقی رہنے والی ہے (چاہے وہ کم ہی ہو) (۱۳۱) [۱۵:۸۸،۹۰]

अपने घर वालों (अर्थात सम्पूर्ण आस्तिकों को) नमाज का आदेश करो और स्वयं भी उसके पाबन्द रहो हम तुम से जीविका नही मांगते जीविका तो

اپنے گھر والوں (یعنی تمام مومنوں کو) نماز کا حکم کرو اور خود بھی اس کے پابند رہو ہم تم سے روزی نہیں مانگتے روزی تو

हम ही तुम्हें दे रहे हैं और अच्छा फल तो(परिणाम) सदाचारियों का है (132)

ہم ہی تمہیں دے رہے ہیں اور نیک انجام تو (اہل) تقویٰ کا ہے (۱۳۲)

और लोग कहते है कि यह रसूल अपने रब की ओर से हमारे पास कोई चिन्ह क्यों नही लाते? क्या उनके पास पहली पुस्तकों की स्पष्ट स्मृतियां नही पहुंची (पुस्तके तो पढ़ी होंगी) (133)

اور لوگ کہتے ہیں کہ یہ رسول اپنے رب کی طرف سے ہمارے پاس کوئی نشانی کیوں نہیں لاتے؟ کیا ان کے پاس پہلی کتابوں کی واضح نشانی نہیں پہنچیں (کتابیں تو پڑھی ہوں گی) (۱۳۳)

(यदि उनकी इच्छानुसार उनको चमत्कार दिखा दिया जाता और वह विश्वास न लाते तो वध कर दिए जाते परन्तु) यदि हम (अवतर्ण कुरआन से पहले यातना करके उन्हें वध कर डालते तो लोग कहते ऐ हमारे रब तू ने हमारे पास कोई रसूल क्यों न भेजा कि हम तिरस्कृत वह अपमानित होने से पहले तेरे आदेश का अनुकरण करते (134)

(اگر ان کی خواہش کے مطابق ان کو معجزہ دکھا دیا جاتا اور وہ ایمان نہ لاتے تو ہلاک کر دیے جاتے لیکن) اگر ہم (نزول قرآن سے پہلے) عذاب کر کے انہیں ہلاک کر ڈالتے تو لوگ کہتے اے ہمارے رب تو نے ہمارے پاس کوئی رسول کیوں نہ بھیجا کہ ہم ذلیل ورسوا ہونے سے پہلے تیرے کلام کی پیروی کرتے (۱۳۴)

कह दो कि सब परिणाम के प्रतीक्षक है सो तुम भी प्रतीक्षक रहो सो अभि तुमको ज्ञात हो जाएगा कि सीधे मार्ग पर चलने वाले कौन है और कौन सफलता को पहुंचने वाले है (135)

کہہ دو کہ سب (نتائج کے) منتظر ہیں سو تم بھی منتظر رہو سو ابھی تم کو معلوم ہو جائے گا کہ سیدھے راستے پر چلنے والے کون ہیں اور کون منزل پر پہنچنے والے ہیں (۱۳۵)

पाराह (17) इकतरा बालिन्नास

सुरतुल अम्बिया 21 मक्की

پارہ (۱۷) اقترب للناس

سورت الانبیاء (۲۱) مکی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

लोगों के लेखा (का समय) निकट आ गया है और वह अचेतना में (पड़े उससे) मुख फैर रहे है (1)

لوگوں کے حساب (کا وقت) قریب آ گیا ہے اور وہ غفلت میں (پڑے اس سے) منہ پھیر رہے ہیں (۱)

उनके पास जो नवीन शिक्षा भी उनके रब की ओर से आती है निःसंदेह वह उसको खेलते हुए सुनते है अर्थात ध्यान नही देते. (2)

ان کے پاس جو تازہ نصیحت بھی ان کے رب کی طرف سے آتی ہے یقیناً وہ اس کو کھیلتے ہوئے سنتے ہیں یعنی توجہ نہیں دیتے (۲)

उनके हृदय अचेतना मे डूबे हुए है और चुपके चुपके परामर्श करते है जो अत्याचारी है और कहते है कि यह क्या है निःसंदेह तुम्हारे जैसा आदमी है (फिर हम इसे रसूल कैसे मान ले लोगों पर इसकी बातों का प्रभाव इस लिए होता है कि यह व्यक्ति जादूगर है) तो क्या तुम जान बूझ कर इसके जादू की लपेट में आ जाओगे? (3)

ان کے دل غفلت میں ڈوبے ہوئے ہیں اور چپکے چپکے مشورہ کرتے ہیں جو ظالم ہیں اور کہتے ہیں کہ یہ کیا ہے؟ بس یقیناً تمہارے جیسا آدمی ہے (پھر ہم اسے رسول کیسے مان لیں لوگوں پر اس کی باتوں کا اثر اس لئے ہوتا ہے کہ یہ شخص جادوگر ہے) تو کیا تم جان بوجھ کر اس کے جادو (کی لپیٹ) میں آ جاؤ گے؟ (۳)

ईशदूत ने कहा जो बात भी आकाश व पृथ्वी में कही जाती है (चाहे वह गुप्त कही जाए या स्पष्टत) मेरा रब उसे जानता है वह बहुत बड़ा सुनने वाला और सब कुछ जानने वाला है (4)

رسول نے کہا جو بات بھی آسمان وزمین میں کہی جاتی ہے (چاہے وہ پوشیدہ کہی جائے یا علانیہ) میرا رب اسے جانتا ہے وہ بہت بڑا سننے والا اور سب کچھ جاننے والا ہے (۴)

नोट- फिर उसके सम्मुख अनुशंसा करने वाले क्या कहेंगे क्या एक अपराधी के लिए यह कह देंगे कि ईश्वर हम साक्ष्य देते है यह सदाचारी है इसको क्षमा कर दो तो क्या ईश्वर के सामने उन लोगों के पाप नही है जो ईश्वर ने देखे है जो लिखे जा रहे है इसके अतिरिक्त क्या उनकी अनुशंसा सुकर्म और सत्य होगी और क्या ईश्वर इस झूट पर प्रसन्न होगा? और सुनना पसन्द करेगा? और क्या कोई नेक आदमी ईश्वर के देखने और लिखे हुए के विरुद्ध अनुशंसा का साहस कर सकेगा? यदि करेगा तो क्या ईश्वर उससे भी रूष्ट न होगा? अतः ईश्वर के सामने अनुशंसा करने का प्रश्न ही नही.

نوٹ:۔ پھر اس کے سامنے شفاعت کرنے والے کیا کہیں گے؟ کیا ایک گناہ گار کے لئے یہ کہہ دیں گے کہ اللہ ہم شہادت دیتے ہیں یہ نیک ہے اس کو بخش دے تو کیا اللہ کے سامنے ان لوگوں کے گناہ نہیں جو اللہ نے دیکھے ہیں جو لکھے جا رہے ہیں اس کے باوجود کیا ان کی شفارش معروف اور حق ہوگی اور کیا اللہ اس جھوٹ پر راضی ہوگا؟ اور سننا پسند کرے گا؟ اور کیا کوئی نیک آدمی اللہ کے دیکھے اور لکھے ہوئے کے خلاف شفارش کرنے کی ہمت کر سکے گا؟ اگر کرے گا تو کیا اللہ اس سے بھی ناراض نہ ہوگا؟ اس لئے اللہ کے سامنے شفاعت کرنے کا سوال ہی نہیں۔

अपितु उन (ज़ालिमों) ने यह भी कहा कि यह कुरआन अस्त व्यस्त स्वप्न व कल्पना की बाते है अपितु यह इसकी मन घड़त है, अपितु यह व्यक्ति कवि है (और कुरआन इसकी कविता है) यदि ऐसा

بلکہ ان (ظالموں) نے یہ بھی کہا کہ یہ قرآن پراگندہ خواب وخیال کی باتیں ہیں بلکہ یہ اس کی من گھڑت ہے بلکہ یہ شخص شاعر ہے (اور قرآن اس کی شاعری ہے) اگر ایسا

नही है (अपितु यह रसूल है) तो लाए कोई चिन्ह जिस प्रकार पुराने काल में रसूल चमत्कारों के साथ भेजे गए? (5)

نہیں ہے (بلکہ یہ رسول ہے) تو لائے کوئی نشانی جس طرح پُرانے زمانے کے رسول معجزوں کے ساتھ بھیجے گئے تھے؟ (۵)

(ऐ मुहम्मद स0!) उनसे पहले जिन नगरों को हमारे नियम ने नष्ट कर दिया उनमें से कोई (जाति चमत्कार देखकर) विश्वास नही लाई थी तो क्या वह (चमत्कार देखकर) विश्वास ले आऐंगे?(6)

(اے محمدؐ!) اُن سے پہلے جن بستیوں کو ہمارے قانون نے ہلاک کر دیا ان میں سے کوئی (قوم معجزہ دیکھ کر ایمان نہیں لائی تھی تو کیا وہ (معجزہ دیکھ کر) ایمان لے آئیں گے؟ (۶)

(ऐ मुहम्मद स0!) हमने आपसे पहले जितने ईशदूत भेजे सब के सब पुरुष थे उन पर हमारी वही अवतरित होती थी (तो ए नास्तिको) यदि तुम यह बात नही जानते तो अहले किताब से पूछ लो (जिन्हें इसका ज्ञान है) (7)

(اے محمدؐ!) ہم نے آپ سے پہلے جتنے رسول بھیجے سب کے سب مرد تھے ان پر ہماری وحی نازل ہوتی تھی (تو اے منکرو) اگر تم یہ بات نہیں جانتے تو اہل کتاب سے پوچھ لو (جنہیں اس کا علم ہے) (۷)

और हमने उन (ईशदूतों) के शरीर को ऐसा नही बनाया था कि वह भोजन न खाते हो (अर्थात उनके जिस्म को स्थिर रखने के लिए भोजन की आवश्यकता थी) और न ही वह सदैव जीवित रहने वाले थे (8) {21:34,35}

اور ہم نے ان (رسولوں) کے جسم کو ایسا نہیں بنایا تھا کہ وہ کھانا نہ کھاتے ہوں (یعنی ان کے جسم کو قائم رکھنے کے لئے غذا کی ضرورت تھی) اور نہ ہی وہ ہمیشہ زندہ رہنے والے تھے (۸)
[۲۱:۳۴،۳۵]

फिर हमने उनके विषय में (अपना) वचन सफलता सत्य कर दिया तो उनको और जिसको चाहा (सफलता) मुक्ति दी और सीमा से निकल जाने वालों को नष्ट कर दिया (9)

پھر ہم نے ان کے بارے میں (اپنا) وعدہ کامیابی سچا کر دیا تو اُن کو اور جس کو چاہا (کامیابی) نجات دی اور حد سے نکل جانے والوں کو ہلاک کر دیا (۹)

(ऐ लोगो! चमत्कार के स्थान पर) हमने तुम्हारी ओर एक ऐसी पुस्तक प्रेषित कर दी है जिसमें तुम्हारा ही तो उल्लेख है (इसे समझो सब कुछ मिल जाएगा) क्या तुम समझते नही (10) {21:24; 23:78; 43:43,44}

(اے لوگو! معجزہ کے بجائے) ہم نے تمہاری طرف ایک ایسی کتاب نازل کر دی ہے جس میں تمہارا ہی تو ذکر ہے (اسے سمجھو سب کچھ مل جائے گا) کیا تم سمجھتے نہیں (۱۰) [۲۱:۲۴؛ ۲۳:۷۸؛ ۴۳:۴۳،۴۴]

नोट- कुरआन में विदित पहली जातियों का उल्लेख समझकर आज मुस्लिम समुदाय अपने से अचेत हो गया है और यह जान लिया है कि ईश्वर ने हमको क्षमा कर दिया है, क्योंकि हम मुहम्मद के अनुयायी है नर्क में नही जाऐंगे और गए भी तो नबी क्षमा करा देंगे इस भ्रान्ति ने आज इस समुदाय की दशा जीर्ण कर रखी है। हर दिशा तुच्छ व अपमानित हो रही है इस कुरआन में हमारी महानता और सम्मान का रहस्य है यदि बुद्धि से काम लेकर देखा जाए परन्तु बुद्धि से काम लेने को तैयार नही, यदि बुद्धि से काम लें तो पता चल जाए कि जो उल्लेख हम पहली जातियों का समझ रहे है वास्तव में वह हमारा ही है और हम से ही सम्बोधन है,

अर्थात जैसा उन्होंने किया यदि हम भी ऐसा करेंगे तो हम पर भी हीनता व दरिद्रता छा जाएगी और वह हो गई, इसलिए इस दशा को बदलने के लिए कुरआन पर मनन करें और अपना ही उल्लेख समझकर व्यवहार करें स्वर्ग और दुनिया व नर्क कर्म से मिलेगी और वह सत्कर्म कुरआन के अनुसार मुहम्मद स0 की विधि पर हो यदि कर्म मुहम्मद स0 की विधि पर न हुए तो भले ही कोई मुख से कहता रहे कि मैं मुहम्मद स0 का अनुयायी हूं तोइस मौखिक वाद पर स्वर्ग नही मिलेगा, इसलिए कुरआन को समझकर कर्म करना अनिवार्य है,

तेरे जमीर पर जब तक न हो नजूले किताब
ग्राह कुशा है राजी न साहिबे क्श्शाफ   (इक़बाल)

نوٹ:۔ قرآن میں بظاہر پہلی قوموں کا ذکر سمجھ کر آج امت مسلمہ اپنے سے غافل ہو گئی ہے اور یہ جان لیا ہے کہ اللہ نے ہم کو بخش دیا ہے کیوں کہ ہم امت محمد ہیں. دوزخ میں نہیں جائیں گے اور گئے بھی تو نبی بخشوا لیں گے. اس غلط فہمی نے آج اس امت کا حال خراب کر رکھا ہے ہر طرف ذلیل وخوار ہو رہی ہے اس قرآن میں ہماری عظمت اور شرف کا راز ہے اگر عقل سے کام لے کر دیکھا جائے مگر عقل سے کام لینے کو تیار نہیں اگر عقل سے کام لیں تو پتہ چل جائے کہ جو تذکرہ ہم پہلی قوموں کا سمجھ رہے ہیں حقیقت میں وہ ہمارا ہی ہے اور ہم سے ہی خطاب ہے

یعنی جیسا انہوں نے کیا اگر ہم بھی ایسا کریں گے تو ہم پر بھی ذلت ومسکنت طاری ہو گی اور وہ ہو گئی اس لئے اس حالت کو بدلنے کے لئے قرآن پر غور کریں اور اپنا ہی ذکر سمجھ کر عمل کریں جنت اور دنیا و دوزخ عمل سے ملے گی اور وہ نیک عمل قرآن کے مطابق محمدؐ کے طریقے پر ہوں. اگر عمل نیک محمد کے طریقے پر نہ ہوئے تو بھلے ہی کوئی زبانی کہتا رہے کہ میں محمد کی امت ہوں تو اس زبانی دعوے پر جنت نہیں ملے گی اس لئے قرآن کو سمجھ کر عمل کرنا ضروری ہے.

تیرے ضمیر پہ جب تک نہ ہو نزول کتاب
گرہ کشا ہے رازی نہ صاحب کشاف   (اقبال)

(विचार करो) कितनी ही जालिम बस्तियां है जिन्हें हमने पीसकर रख दिया उनके बाद दूसरी जातियों को उठाया (यदि अत्याचार से न रुके तो यही दशा तुम्हारी भी होगी) (11)

(غور کرو) کتنی ہی ظالم بستیاں ہیں جنہیں ہم نے پیس کر رکھ دیا ان کے بعد دوسری کسی قوم کو اٹھایا (اگر ظلم سے نہ رکے تو تمہارا بھی یہی حال ہوگا) (۱۱)

जब उनको हमारा कष्ट अनुभूत हुआ तो लगे वहां

جب ان کو ہمارا عذاب محسوس ہوا تو لگے وہاں سے

से भागने (12)
(हम ने कहा) भागते कहां हो? जाओ अपने उन्ही घरो और विलास के सामानों में (जिन्होंने तुम्हें उन्मत्त बना रखा था) जिनमें तुम चैन की बंसी बजा रहे थे हो सकता है (वहां तुम्हारे परामर्श की आवश्यकता हो और) तुम से कुछ पूछा जाए (13) {7:182; 16:26}

بھاگنے (۱۲)
(ہم نے کہا) بھاگتے کہاں ہو؟ جاؤ اپنے انہیں گھروں اور عیش کے سامانوں میں (جنہوں نے تمہیں مدہوش بنا رکھا تھا) جن میں تم چین کی بنسی بجا رہے تھے ہو سکتا ہے (وہاں تمہارے مشورے کی ضرورت ہو اور) تم سے کچھ پوچھا جائے (۱۳)
[۷:۱۸۲؛۱۶:۲۶]

(उस समय उनको चेतना आई) कहने लगे अनुताप हम पर निःसंदेह हम अन्यायी थे (14)
और वह यही पुकारते रहे यहां तक कि हमने उन्हें इस भांति नष्ट किया जैसे कटा हुआ खेत और बुझे हुए अंगारे (15)

(اس وقت ان کو ہوش آیا) کہنے لگے افسوس ہم پر، بے شک ہم ظالم تھے (۱۴)
اور وہ یہی پکارتے رہے یہاں تک کہ ہم نے انہیں اس طرح برباد کیا جیسے کٹا ہوا کھیت اور بجھے ہوئے انگارے (۱۵)

नोट- (21:10) में जो कहा गया है वह बिलकुल ठीक है और स्पष्ट है कि तुम्हारा ही उल्लेख है इस से अगली आयतों में वह उल्लेख बताया है आज वही मुस्लिम जाति के साथ हो रहा है हर जगह इसका नर संहार हो रहा है चारों ओर शरण के लिए भागे फिर रहे हैं आज दुनिया में शरण की खोज में जितने मुसलमान हैं उतने और नही दूसरी जातियों को तो अच्छी शरण मिल जाती है और उनके साथ सहानुभूति भी की जाती है परन्तु इस मुसलमान समुदाय से सहानुभूति भी नही और अत्याचारी जातियों को उनके नरसंहार के लिए काफी समय भी दिया जाता है, जब भलि भांति बरबादी हो जाती है तब कही संयुक्त राष्ट्र आगे आकर मगरमछ के आंसू बहाती है.

यदि कही एक पक्षी मार दिया जाता है तो उसके वधक को दण्ड दिया जाता है परन्तु मुसलमानों के नरसंहार सार्वजनिक हत्या पर भी किसी को कोई दण्ड नही अपितु और पुरूस्कार दिया जाता है.

इतने पर भी यह मुसलमान अपनी त्रुटियों से पश्चाताप नही करता और जैसे पहले समुदाय अपने पापी होने का अंगीकार तो करते थे परन्तु पाप करने से नही रूकते थे जिसका दण्ड उनको मिला ऐसे ही आज मुस्लिम जाति आयत करीमा का जप तो बहुत करती है परन्तु अपने पाप को छोड़ कर कुरआन के अनुसार अपना जीवन नही बनाती. और जब तक यह कुरआन के मुताबिक अपना जीवन नही बनाएगी उस समय तक ईश्वर की सहायता नही आएगी (21:15) की भांति खलयान होता रहेगा (21:24) में भी यही है जैसा पहलो ने किया ऐसा ही तुम कर रहे हो (21:49-50)

نوٹ:۔(۲۱:۱۰) میں جو کہا گیا ہے وہ بالکل ٹھیک ہے اور صاف ہے کہ تمہارا ہی ذکر ہے اس سے اگلی آیتوں میں وہ ذکر بتایا ہے آج وہی مسلمان قوم کے ساتھ ہو رہا ہے ہر جگہ اس کا قتل عام ہو رہا ہے چاروں طرف پناہ کے لئے بھاگے پھر رہے ہیں آج دنیا میں پناہ کی تلاش میں جتنے مسلمان ہیں اتنے اور نہیں. دوسری قوموں کو تو اچھی پناہ مل جاتی ہے اور ان کے ساتھ ہمدردی بھی کی جاتی ہے. مگر اس مسلمان قوم سے ہمدردی بھی نہیں اور ظالم قوموں کو ان کے قتل عام کے لئے کافی وقت بھی دیا جاتا ہے. جب اچھی طرح بربادی ہو جاتی ہے تب کہیں اقوام متحدہ آگے آ کر مگر مچھ کے آنسو بہاتی ہے.

اگر کہیں ایک پرندہ مار دیا جاتا ہے تو اس کے قاتل کو سزا دی جاتی ہے مگر مسلمانوں کے قتل عام پر بھی کسی کو کوئی سزا نہیں بلکہ اور انعام دیا جاتا ہے.

اتنے پر بھی یہ مسلمان اپنی خطاؤں سے توبہ نہیں کرتے اور جیسے پہلی قومیں اپنے خطا کار ہونے کا اقرار تو کرتی تھیں مگر گناہ کرنے سے نہیں رکتی تھیں جس کی سزا ان کو ملی. ایسے ہی آج مسلم قوم آیت کریمہ کا ورد تو خوب کرتی ہے مگر اپنے گناہ کو چھوڑ کر قرآن کے مطابق اپنی زندگی نہیں بناتی. اور جب تک یہ قرآن کے مطابق اپنی زندگی نہیں بنائے گی اس وقت تک اللہ کی مدد نہیں آئے گی (۲۱:۱۵) کی طرح کھلیان ہوتا رہے گا (۲۱:۲۴) میں بھی یہی ہے. جیسا پہلوں نے کیا ایسا ہی تم کر رہے ہو (۲۱:۴۹،۵۰)

हमने आकाश और पृथ्वी को और जो कुछ इन दोनों के बीच है कुछ खेल और प्रदर्शन करते हुए या खेल और प्रदर्शन के लिए नही बनाया (अपितु किसी मुख्य उद्देश्य और औचित्य से बनाया है)(16)
यदि हमें खेल और प्रदर्शन ही बनाना उद्देश्य होता तो (हमें इस कार्य से कौन रोक सकता था) हम अपनी ओर से ऐसा ही बना देते (17)
अपितु (यहां एक और ही नियम कार्यरत है) हम सत्य से मिथ्या पर चोट करते है तो वह उसका सिर तोड़ देता है और मिथ्या उसी समय मिट जाता है खेद (तुम इस सत्य को भूल कर) कैसी कैसी बातें बनाते हो उनसे तुम्हारा ही विकार है (18)
जो लोग आकाशों और पृथ्वी में है सब उसी के (उत्पन्न किए हुए) है और जो उसके पास है (अर्थात सदाचारी बन्दे है) वह कभी घमण्ड में आकर उसकी बन्दगी आज्ञाकारी से नकार नही करते और

ہم نے آسمان اور زمین کو اور جو کچھ ان کے درمیان ہے کچھ کھیل اور تماشا کرتے ہوئے یا کھیل تماشے کے لئے نہیں بنایا (بلکہ کسی خاص مقصد اور مصلحت سے بنایا ہے)(۱۶)
اگر ہمیں کھیل اور تماشا ہی بنانا منظور ہوتا تو ہمیں اس کام سے کون روک سکتا تھا ہم اسے اپنی طرف سے ایسا ہی بنا دیتے (۱۷)
بلکہ (یہاں ایک اور ہی قانون کام کر رہا ہے) ہم حق سے باطل پر ضرب لگاتے ہیں تو وہ اس کا سر کچل ڈالتا ہے اور باطل اسی وقت مٹ جاتا ہے. افسوس (تم اس حقیقت کو بھول کر) کیسی کیسی باتیں بناتے ہو ان سے تمہاری ہی خرابی ہے (۱۸)
اور جو کچھ آسمانوں اور زمین میں ہے سب اسی کے (پیدا کئے ہوئے) ہیں اور جو اس کے پاس ہیں (یعنی نیک بندے ہیں) وہ کبھی گھمنڈ میں آ کر اس کی بندگی فرمانبرداری

न कभी काहिली करते है (19)

سے سرتابی نہیں کرتے اور نہ کبھی کاہلی کرتے ہیں(۱۹)

रात दिन उसी की पूजा और आज्ञाकारी में व्यतीत करते हैं और कभी थकावट अनुभूत नही करते (अर्थात ईश्वर के आदेशानुसार अपना जीवन व्यतीत करते है (20)

رات دن اسی کی عبادت و فرمانبرداری میں گزارتے ہیں اور کبھی تھکاوٹ محسوس نہیں کرتے (یعنی اللہ کے حکم کے مطابق اپنی زندگی گزارتے ہیں(۲۰)

भला लोगों ने जो पृथ्वी की वस्तुओं से (कतिपय को) पूज्य बना लिया है (क्या) वह उनको (मरने के बाद) उठा खड़ा करेंगे (21)

यदि आकाश और पृथ्वी में ईश्वर के सिवा और पूज्य होते तो पृथ्वी व आकाश का प्रबन्ध बिगड़ जाता जो बातें लोग बनाते हैं ईश्वर राज्य का स्वामी उनसे पवित्र है (22)

जो कुछ वह करता है उसके विषय में उससे कोई पूछने वाला नही और वह जो कुछ करते है उनसे प्रश्न किया जाएगा (23)

بھلا لوگوں نے جو زمین کی چیزوں سے (بعض کو) معبود بنالیا ہے (کیا) وہ ان کو (مرنے کے بعد) اٹھا کھڑا کریں گے(۲۱)

اگر آسمان اور زمین میں اللہ کے سوا اور معبود ہوتے تو زمین و آسمان کا نظام درہم برہم ہو جاتا۔ جو باتیں لوگ بناتے ہیں اللہ مالک عرش ان سے پاک ہے(۲۲)

جو کچھ وہ کرتا ہے اس کے بارے میں اس سے کوئی پوچھنے والا نہیں اور وہ جو کچھ کرتے ہیں ان سے پوچھا جائے گا(۲۳)

क्या उन लोगों ने ईश्वर को छोड़कर और पूज्य बना लिए हैं? उनसे कहो यदि तुम्हारा ऐसा ही विचार है तो) अपना प्रमाण प्रस्तुत करो (देखो एक तो) यह पुस्तक प्रमाण है जो मेरे और मेरे साथियों के हाथ में है (अर्थात कुरआन दूसरी) वह पुस्तकें है जो मुझ से पहले रसूलों पर अवतरित हो चुकी है (उनमें भी यह नही है कि और ईश्वर है) बात यह है कि उनमें से अधिकांश सत्य से अनजान है अतः इससे मुख मोड़े हुए है (24) {43:45}

کیا ان لوگوں نے اللہ کو چھوڑ کر اور معبود بنائے ہیں؟ ان سے کہو اگر تمہارا ایسا ہی خیال ہے تو) اپنی دلیل پیش کرو (دیکھو ایک تو) یہ کتاب دلیل ہے جو میرے اور میرے ساتھیوں کے ہاتھ میں ہے (یعنی قرآن دوسری) وہ کتابیں ہیں جو مجھ سے پہلے رسولوں پر نازل ہو چکی ہیں (ان میں بھی یہ نہیں ہے کہ اور اللہ ہے) بات یہ ہے کہ ان میں سے اکثر حقیقت سے بے خبر ہیں اس لئے اس سے منہ موڑے ہوئے ہیں(۲۴)[۴۳:۴۵]

और जो रसूल हमने तुम से पहले भेजे उनकी ओर यही वही भेजी कि निःसन्देह वह है परन्तु नास्तिक कहते है कि ईश्वर नही है परन्तु सुनो निःसन्देह मैं ईश्वर हूं अतः मेरी पूजा करो अर्थात आज्ञाकारी बनो (25)

اور جو رسول ہم نے تم سے پہلے بھیجے ان کی طرف یہی وحی بھیجی کہ بے شک وہ ہے مگر کافر کہتے ہیں کوئی اللہ نہیں سنو بے شک میں اللہ ہوں پس میری ہی عبادت کرو یعنی فرمانبرداری(۲۵)

वह लोग कहते है कि ईश्वर ने अपने लिए सन्तान बनाई है वह पवित्र है इस बात से अपितु (जिनको वह लोग उसके पुत्र पुत्रियां समझते है) वह उसके सम्मान वाले बन्दे है (26)

وہ لوگ کہتے ہیں کہ اللہ نے اپنے لئے اولاد بنائی ہے وہ پاک ہے اس بات سے بلکہ (جن کو وہ لوگ اس کے بیٹے بیٹیاں سمجھتے ہیں) وہ اس کے عزت والے بندے ہیں(۲۶)

उसके आगे बढ़कर बोल नही सकते और उसके आदेश पर कर्म करते है (27) {11:105}

जो कुछ प्रकट उनके हाथों के मध्य है और जो कुछ उनसे गुप्त है वह सब कुछ जानता है वह किसी की अनुशंसा भी नहीं कर सकते परन्तु उसकी जिसकी अनुशंसा के लिए ईश्वर प्रसन्न हो वह लोग तो स्वयं ही ईश्वर के भय से डरते है (28) {78:38}

اس کے آگے بڑھ کر بول نہیں سکتے اور اس کے حکم پر عمل کرتے ہیں(۲۷)[۱۱:۱۰۵]

<u>جو کچھ ظاہر ان کے ہاتھوں کے درمیان ہے اور جو کچھ ان سے چھپا ہے وہ سب کچھ جانتا ہے وہ کسی کی شفارش بھی نہیں کر سکتے مگر اس کی جس کی شفارش کے لئے اللہ راضی ہو وہ لوگ تو خود ہی اللہ کے خوف سے ڈرتے ہیں</u>(۲۸)[۷۸:۳۸]

और जो उनमें से यह कह दे कि ईश्वर के सिवा मैं भी पूज्य हूं तो उसे हम नर्क का दण्ड देंगे और जालिमों को हम ऐसी ही यातना देते है (29)

اور جو ان میں سے یہ کہہ دے کہ اللہ کے سوا میں بھی معبود ہوں تو اسے ہم دوزخ کی سزا دیں گے اور ظالموں کو ہم ایسی ہی سزا دیتے ہیں(۲۹)

क्या नास्तिकों ने नही देखा (विचार नही किया) कि आकाश और पृथ्वी दोनों मिले हुए थे फिर हमने उनको पृथक किया और हर जीवधारी वस्तु स्थिर है पानी से जिसमें जी है फिर वह लोग विश्वास क्यों नही लाते (30) {24:43}

<u>کیا کافروں نے نہیں دیکھا (غور نہیں کیا) کہ آسمان اور زمین دونوں ملے ہوئے تھے پھر ہم نے ان کو جدا کیا اور ہر جاندار چیز قائم ہے پانی سے جس میں جان ہے پھر وہ لوگ ایمان کیوں نہیں لاتے</u>(۳۰)[۲۴:۴۳]

और हमने पृथ्वी में पर्वत बनाए ताकि लोगों को

<u>اور ہم نے زمین میں پہاڑ بنائے تاکہ لوگوں کو لے کر زمین</u>

लेकर पृथ्वी घूमती रहे और उसका संतुलन न बिगड़े और उसमें विस्तृत मार्ग बनाए ताकि लोग उन पर चलें (31)

گھومتی رہے اور اس کا توازن نہ بگڑے اور اس میں کشادہ رستے بنائے تا کہ لوگ ان پر چلیں (٣١)

और हमने आकाश को एक सुरक्षित छत की भांति बनाया परन्तु वह लोग हमारी स्मृतियों से मुख फेर रहे हैं (32)

اور ہم نے آسمان کو ایک محفوظ چھت کی طرح بنایا مگر وہ لوگ ہماری نشانیوں سے منہ پھیر رہے ہیں (٣٢)

नोट- और उस छत को Ozone कहते हैं जिसका कार्य यह है कि सूर्य से निकलने वाली उन किरणों को जो जीव धारियों को हानि देती हैं उनको रोकती है इसके अतिरिक्त ऊपर से और कचरा भी पृथ्वी की ओर आता है उसको भी रोकती है और नीचे से जो वाष्प उठते हैं जिससे वर्षा होती है उसको ऊपर जाने से रोकती है.

نوٹ:۔اور اس چھت کو Ozone کہتے ہیں جس کا کام یہ ہے کہ سورج سے نکلنے والی ان شعاعوں کو جو جانداروں کو نقصان دیتی ہیں ان کو روکتی ہیں اس کے علاوہ اوپر سے اور کچرا بھی زمین کی طرف آتا ہے اس کو بھی روکتی ہے اور نیچے سے جو بخارات اٹھتے ہیں جس سے بارش ہوتی ہے اس کو اوپر جانے سے روکتی ہے)

और वह ईश्वर ही तो है जिसने रात और दिन बनाए और सूर्य और चन्द्रमा बनाए यह सब अपने आधार पर तैर रहे हैं (33) {21:8; 36:40; 14:33}

اور وہ اللہ ہی تو ہے جس نے رات اور دن بنائے اور سورج اور چاند پیدا کئے یہ سب اپنے مدار پر گردش کر رہے ہیں (٣٣)[٢١:٨؛٣٦:٤٠؛١٤:٣٣]

और (ऐ मुहम्मद स0) हमने तुम से पहले किसी इन्सान को सदैवका जीवन नही प्रदान किया (और न तुम्हें सदैव रहना है) फिर यदि आपको मौत आ जाए तो क्या वह सदैव जीवित रहेंगे? (34)

اور (اے محمدؐ) ہم نے تم سے پہلے کسی انسان کو ہمیشہ کی زندگی نہیں بخشی (اور نہ تمہیں ہمیشہ رہنا ہے) پھر اگر تمہیں موت آ جائے تو کیا وہ ہمیشہ زندہ رہیں گے؟ (٣٤)

हर जानदार को मृत्यु का स्वाद चखना है और हम तुम्हें अच्छी और बुरी हालतों में डालकर तुम्हारी परीक्षा करते हैं और तुम हमारी ओर ही लौटकर आवगे (35)

ہر جاندار کو موت کا مزہ چکھنا ہے اور ہم تمہیں اچھی اور بُری حالتوں میں ڈال کر تمہاری آزمائش کرتے ہیں اور تم ہماری طرف ہی لوٹ کر آؤ گے (٣٥)

और नास्तिक आपको देखते हैं तो आपका उपहास उड़ाने लगते हैं (और आपस में कहते हैं) क्या यही वह व्यक्ति है जो तुम्हारे देवताओं का वर्णन (बुरे ढंग से) करता है यद्यपि वह स्वयं रहमान के नाम के विरोधी हैं (36)

اور جب کافر آپ کو دیکھتے ہیں تو آپ کا مذاق اڑانے لگتے ہیں (اور آپس میں کہتے ہیں) کیا یہی وہ شخص ہے جو تمہارے معبودوں کا ذکر (برے طریقے سے) کرتا ہے. حالانکہ وہ خود رحمٰن کے نام سے منکر ہیں (٣٦)

मानव कुछ शीघ्रता करने वाला पैदा किया गया है (और कष्ट के लिए भी जल्दी मचा रहा है) इतनी जल्दी न करो हम अभी जल्दी ही तुम्हें अपनी शक्ति के चिन्ह दिखाएंगे (घबराते क्यों हो यातना आकर रहेगी) (37)

انسان کچھ جلد باز پیدا کیا گیا ہے (اور عذاب کے لئے بھی جلدی مچا رہا ہے) اتنی جلدی نہ کرو ہم ابھی جلدی ہی تمہیں اپنی قدرت کی نشانیاں دکھائیں گے (گھبراتے کیوں ہو عذاب آ کے رہے گا) (٣٧)

वह लोग कहेंगे यदि तुम सच्चे हो अपने वाद में तो बताओ जिस यातना की धमकी दे रहे हो वह कब आएगी (38)

وہ لوگ کہیں گے اگر تم سچے ہو اپنے دعوے میں تو بتاؤ جس عذاب کی دھمکی دے رہے ہو وہ کب آئے گا (٣٨)

यदि नास्तिक उस समय को जाने जब वह अपने मुखों पर से (नर्क की) आग को रोक न सकेंगे और न अपनी पीठों पर से और न उनका कोई सहायक होगा (39)

اگر کافر اس وقت کو جانیں جب وہ اپنے مونہوں پر سے (دوزخ کی) آگ کو روک نہ سکیں گے اور نہ اپنی پیٹھوں پر سے اور نہ ان کا کوئی مددگار ہوگا (٣٩)

अपितु महाप्रलय उन पर अचानक आजाएगी और उनकी चेतना खोदेगी फिर न तो वह उसको हटा सकेंगे और न उनको छूट दी जाएगी (40)

بلکہ قیامت ان پر اچانک آ جائے گی اور ان کے ہوش کھو دے گی پھر نہ تو وہ اس کو ہٹا سکیں گے اور نہ ان کو مہلت دی جائے گی (٤٠)

और आपसे पहले भी रसूलों का उपहास उड़ाया गया है तो जो लोग उनमें से उपहास किया करते थे उनको उसी (कष्ट) ने जिसका उपहास उड़ाते थे आ घेरा (41)

اور آپ سے پہلے بھی رسولوں کا مذاق اڑایا گیا ہے تو جو لوگ ان میں سے مذاق کیا کرتے تھے ان کو اسی (عذاب) نے جس کی ہنسی اڑاتے تھے آ گھیرا (٤١)

उनसे पूछो कि रात और दिन में (यदि ईश्वर तुम्हें कष्ट देना चाहे तो) है कोई तुम्हें रहमान के कष्ट से बचा सके बात यह है कि वह अपने रब के

ان سے پوچھو کہ رات اور دن میں (اگر اللہ تمہیں عذاب دنیا چاہے تو) ہے کوئی تمہیں رحمٰن کے عذاب سے بچا سکے بات یہ ہے کہ وہ اپنے رب کی کتاب کے احکام سے منہ

आदेशों से मुख मोड़े हुए है (42)
क्या उनके लिए ऐसे देवता है जो हमसे उन्हें बचा सके (वह क्या बचाऐंगे) वह न तो अपनी ही सहायता कर सकते है और न हमसे बचाने के लिए साथी सहायक पाऐंगे (43)
बात यह है कि हम उन्हें और उनके पूर्वजों को जीवन के लाभों से) जीवन का सामान दिए चले गए (यहां तक कि जीवन की सम्पन्नता में) उनकी लम्बी आयु व्यतीत हो गई (और वह अचेतना में पड़ गए) क्या उन लोगों को दिखाई नही दे रहा कि हम पृथ्वी को चारों ओर से घटाते चले आ रहे है (ऐसी स्थिति में) वह अधिपति आ सकते है (44) {13:41}
कह दो कि मैं तुमको ईश्वर के आदेश के अनुसार उपदेश करता हूं और बेहरों को जब आदेश किया जाता है तो वह पुकार को सुनते ही नही जबकि उन्हें सावधान किया जाए (45)
यदि उन पर आपके रब का थोड़ा सा कष्ट आ भी पहुंचे तो (सारी उत्पात भूल जाएं) कहने लगें कि हाय अफ़सोस! निःसन्देह हम अत्याचार करने वाले थे (46)
और हम महाप्लय के दिन न्याय की तुला खड़ी करेंगे तो किसी व्यक्ति पर रज भर भी अन्याय न किया जाएगा और यदि राई के दाने के बराबर भी कर्म होगा तो हम उसको उपस्थित कर देंगे और हम लेखा जोखा करने को प्रयाप्त है (47){31:16}
और यह सत्य है कि हमने मूसा और हारून को फ़ुरकान (अर्थात सत्य और मिथ्या में अन्तर करने वाली पुस्तक) दी और (वह थी) प्रकाश और उपदेश सदाचारीयों के लिए (48)
उन लोगों के लिए जो बिन देखे अपने रब से डरते हैं और महा प्रलय का भी भय रखते है (49)
और यह जप (कुरआन) भी सम्पन्नता वाला है जिसे हमने अवतरित किया है तो क्या तुम इससे इनकार करते हो (50)
इससे भी पहले हमने इब्राहीम को उसको सत्य मार्ग पथ प्रदर्शन प्रदान किया था और हम उनसे अवगत थे (51)
जब उसने अपने पिता और अपनी जाति के लोगों से कहा था यह कैसी मूर्तियां है जिनकी पूजा पर तुम जमे बैठे हो (52)
वह कहने लगे हमने अपने बाप-दादा को उनकी पूजा करते हुए देखा है (53)
इब्राहीम ने कहा विश्वास करो तुम स्वयं भी और तुम्हारे बाप-दादा भी खुली गुमराही में पड़े रहे (54)
वह बोले क्या तुम हमारे पास सत्य लाए हो या हमसे खेल की बातें करते हो (55)
इब्राहीम ने कहा (इसे उपहास न समझो) तुम्हारा रब आकाश व पृथ्वी का स्वामी है उसी ने उनको उत्पन्न किया है और मैं तुम्हारे सामने इस बात

موڑے ہوئے ہیں(۴۲)
کیاان کے لئے ایسے معبود ہیں جو ہم سے انہیں بچا سکیں (وہ کیا بچائیں گے)وہ نہ تو اپنی ہی مدد کر سکتے ہیں اور نہ ہم سے بچانے کے لئے ساتھی مددگار پائیں گے(۴۳)
بات یہ ہے کہ ہم انہیں اور اُن کے آباؤ اجداد کو (زندگی کے فائدوں سے)زندگی کا سامان دیئے چلے گئے(یہاں تک کہ زندگی کی خوشحالیوں میں)ان کی لمبی عمریں گزر گئیں(اور وہ غفلت میں پڑ گئے)کیاان لوگوں کو دکھائی نہیں دے رہا کہ ہم زمین کو چاروں طرف سے گھٹاتے چلے آرہے ہیں (ایسی حالت میں)وہ غالب آ سکتے ہیں(۴۴)[۱۳:۴۱:۲۱:۱۳]
کہہ دو کہ میں تم کو اللہ کے حکم کے مطابق نصیحت کرتا ہوں اور بہروں کو جب نصیحت کی جائے تو وہ پکار کو سنتے ہی نہیں جب کہ انہیں آگاہ کیا جائے(۴۵)
اگر ان پر آپ کے رب کا تھوڑا سا عذاب بھی پہنچے تو (ساری شرارت بھول جائیں)کہنے لگیں کہ ہائے افسوس! بےشک ہم ظلم کرنے والے تھے(۴۶)
اور ہم قیامت کے دن انصاف کی ترازو کھڑی کریں گے تو کسی شخص کی ذرا بھر بھی حق تلفی نہ کی جائے گی اور اگر رائی کے دانے کے برابر بھی عمل ہوگا تو ہم اس کو لا موجود کریں گے اور ہم حساب کرنے کو کافی ہیں(۴۷)[۳۱:۱۶]
اور یہ حقیقت ہے کہ ہم نے موسیٰ اور ہارون کو فرقان (یعنی حق و باطل میں فرق کرنے والی کتاب دی اور (وہ تھی) روشنی اور نصیحت پرہیزگاروں کے لئے(۴۸)
ان لوگوں کے لئے جو بن دیکھے اپنے رب سے ڈرتے ہیں اور قیامت کا بھی خوف رکھتے ہیں(۴۹)
اور یہ ذکر (قرآن) بھی برکت والا ہے جسے ہم نے نازل کیا ہے تو کیا تم اس سے انکار کرتے ہو؟(۵۰)
اس سے بھی پہلے ہم نے ابراہیم کو اس کی نیک راہ ہدایت بخشی تھی اور ہم ان سے واقف تھے(۵۱)
جب اس نے اپنے باپ اور اپنی قوم کے لوگوں سے کہا تھا یہ کیسی مورتیاں ہیں جن کی پوجا پر تم جمے بیٹھے ہو(۵۲)
وہ کہنے لگے ہم نے اپنے باپ دادا کو ان کی پوجا کرتے ہوئے دیکھا ہے(۵۳)
ابراہیم نے کہا یقین کرو تم خود بھی اور تمہارے باپ دادا بھی کھلی گمراہی میں پڑے رہے(۵۴)
وہ بولے کیا تم ہمارے پاس حق لائے ہو یا ہم سے کھیل کی باتیں کرتے ہو(۵۵)
ابراہیم نے کہا (اسے مذاق نہ سمجھو) تمہارا رب آسمان و زمین کا پروردگار ہے اسی نے ان کو پیدا کیا ہے اور میں

का साक्ष्य देता हूं (56)

ईश्वर की शपथ जब तुम यहां से पीठ फेर कर चले जाओगे तो मैं तुम्हारे इन देवताओं की गत बनाऊंगा (अतः जब वह लोग चले गए और बुत खाना खाली हो गया तो) इब्राहीम ने मूर्तियों को तोड़कर टुकड़े टुकड़े कर दिया केवल उनके बड़े बुत को छोड़ दिया ताकि उसकी ओर प्रत्यागमन करें (58)

(फिर जब वह लौटकर आए और बुतों की यह गत देखी तो) कहने लगे हमारे देवताओं के साथ किसने यह कर्म किया है? जिसने किया है वह बड़ा ही जालिम है (59)

लोगों ने कहा हमने एक युवक को उनका वर्णन करते हुए सुना है उसे इब्राहीम अ० कहते हैं (60)

लोगों ने कहा उसे यहां सब व्यक्तियों के सामने ले आओ ताकि वह लोग देखें (61)

जब इब्राहीम अ० आए तो बुत परस्तों ने कहा कि इब्राहीम भला यह कार्य हमारे देवताओं के साथ तूने किया है (62)

इब्राहीम ने (कटाक्ष करते हुए) कहा (नहीं! भला एक व्यक्ति इतने शक्ति शाली देवताओं को तोड़ सकता है) वह जो सबसे बड़ा है उसी ने तोड़ा होगा (यदि मेरी बात का विश्वास नहीं तो) इन मूर्तियों से ज्ञात कर लो यह तो बोला करते हैं (63)

यह सुनकर वह अपनी आत्मा की ओर पलटे और कहने लगे वास्तव में तुम स्वयं ही अत्याचारी हो (64)

تمہارے سامنے اس بات کی گواہی دیتا ہوں (۵۶)

اللہ کی قسم جب تم یہاں سے پیٹھ پھیر کر چلے جاؤ گے تو میں تمہارے ان معبودوں کی گت بنادوں گا (۵۷)

(چنانچہ جب وہ لوگ چلے گئے اور بت خانہ خالی ہو گیا تو) ابراہیم نے بتوں کو توڑ کر ٹکڑے ٹکڑے کر دیا صرف ان کے بڑے بت کو چھوڑ دیا تا کہ اس کی طرف رجوع کریں (۵۸)

(پھر جب وہ لوٹ کر آئے اور بتوں کی یہ گت دیکھی تو) کہنے لگے ہمارے معبودوں کے ساتھ کس نے یہ حرکت کی ہے؟ جس نے کی ہے وہ بڑا ہی ظالم ہے (۵۹)

لوگوں نے کہا ہم نے ایک جوان کو ان کا ذکر کرتے ہوئے سنا ہے اسے ابراہیمؑ کہتے ہیں (۶۰)

لوگوں نے کہا اسے یہاں تمام آدمیوں کے سامنے لے آؤ تا کہ وہ لوگ دیکھیں (۶۱)

(جب ابراہیمؑ آئے تو بت پرستوں نے) کہا کہ ابراہیم بھلا یہ کام ہمارے معبودوں کے ساتھ تو نے کیا ہے؟ (۶۲)

ابراہیمؑ نے (بطور طنز) کہا (نہیں بھلا ایک انسان اتنے طاقتور بتوں کو کیسے توڑ سکتا ہے) یہ جو سب سے بڑا بت ہے اسی نے توڑا ہوگا (اگر میری بات کا یقین نہیں تو) ان بتوں سے معلوم کرلو یہ تو بولا کرتے ہیں (۶۳)

یہ سن کر وہ اپنے ضمیر کی طرف پلٹے اور کہنے لگے واقعی تم خود ہی ظالم ہو (۶۴)

नोट-बुखारी हदीस की पुस्तक में एक रवायत है कि इब्राहीम ने तीन बार झूठ बोला उनमें से एक यह है कि बुत मैंने नहीं तोड़े, इसके अतिरिक्त दो झूट और बताते हैं यह तो रवायत की बात रही, कुरआन क्या कहता है वह भी अवलोकन हो, (19:41) में ईश्वर महामना इब्राहीम को सच्चा बता रहा है और वास्तव में हर नबी सच्चा होता है, (19:14) और इस पुस्तक में इब्राहीम की कथा पढ़कर सुनाओ, निःसन्देह वह एक सच्चा नबी था, यह है ईश्वर का प्रमाण, अब निर्णय किया जाएकि कौन सच्चा है और कौन झूटा, क्या इब्राहीम अ० झूटे थे या रावी? जिन्होंने इब्राहीम अ० को झूटा लिखा है, वास्तव में ईश्वर सच्चा है, इसलिए इब्राहीम भी सच्चे थे, परन्तु दुख है हमारे यहां बुखारी को ही प्रमुखता दी जाती है जो अनुचित है,

महामना इब्राहीम ने यह कहा कि इन बुतों से ज्ञात कर लो यदि यह बोलते हैं तो उत्तर देंगे तोड़ने से इनकार नहीं किया अपितु एक तर्क स्थापित किया, यदि ऐसा उत्तर न देते तो वह लोग कदापि स्वीकार न करते जो उन्होंने (21:64) में किया कि वास्तव में हम स्वयं ही अन्यायी हैं और जालिमों की यह अनुभूति ही प्रयाप्त है, जब अपनी त्रुटि की अनुभूति हो जाती है तो कभी न कभी व्यक्ति ठीक मार्ग पर आ जाता है यदि त्रुटि की अनुभूति न हो तो सत्य को स्वीकार करना कठिन है यह प्रचार की एक विधि है आयत के शब्द स्वयं बता रहे हैं कि इब्राहीम अ० के उत्तर पर उन्होंने अपने देवताओं का मिथ्या और विवश होने को स्वीकार कर लिया, ऐसे अवसर पर हर एक व्यक्ति विवेचना के लिए जो घटना के विपरीत बात कहता है उसको झूट नहीं कहा जा सकता क्योंकि न वह स्वयं झूट की इच्छा से ऐसी बात कहता

نوٹ:۔ بخاری حدیث کی کتاب میں ایک روایت ہے کہ ابراہیم نے تین بار جھوٹ بولا ان میں سے ایک یہ ہے کہ بت میں نے نہیں توڑے اس کے علاوہ دو جھوٹ اور بتاتے ہیں۔ یہ تو روایت کی بات رہی قرآن کیا کہتا ہے وہ بھی ملاحظہ ہو۔ (۱۹:۴۱) میں اللہ حضرت ابراہیم کو صدیق بتا رہا ہے اور حقیقت میں ہر نبی سچا ہوتا ہے۔

(۱۹:۴۱) اور اس کتاب میں ابراہیم کا واقعہ پڑھ کر سناؤ۔ بے شک وہ ایک سچا نبی تھا۔ یہ ہے اللہ کی شہادت اب فیصلہ کیا جائے کہ کون سچا اور کون جھوٹا کیا ابراہیمؑ جھوٹے تھے یا راوی؟ جنہوں نے ابراہیمؑ کو جھوٹا لکھا ہے حقیقت میں اللہ سچا ہے اس لئے ابراہیم بھی سچے تھے

مگر افسوس ہمارے یہاں بخاری کو ہی ترجیح دی جاتی ہے جو غلط ہے۔

حضرت ابراہیمؑ نے یہ کہا کہ ان بتوں سے معلوم کرلو اگر یہ بولتے ہیں تو جواب دیں گے توڑنے سے انکار نہیں کیا بلکہ ایک حجت قائم کی اگر ایسا جواب نہ دیتے تو وہ لوگ ہرگز اقرار نہ کرتے جو انہوں (۲۱:۶۴) میں کیا کہ حقیقت میں ہم ہی ظالم ہیں اور ظالموں کا یہ احساس ہی کافی ہے جب انہیں غلطی کا احساس نہ ہو تو حق کو قبول کرنا مشکل ہے یہ تبلیغ کا ایک طریقہ ہے آیت کے الفاظ خود بتا رہے ہیں کہ ابراہیمؑ کے جواب پر انہوں نے اپنے معبودوں کا باطل اور بے بس ہونے کا اقرار کرلیا ایسے موقع پر ہر ایک شخص استدلال کی خاطر خلاف واقعہ بات کہتا ہے اس کو جھوٹ قرار نہیں دیا جا سکتا، کیونکہ نہ وہ خود جھوٹ کی نیت سے ایسی بات کہتا

है और न उसके विरोधी ही उसे झूट समझते हैं, कहने वाला उसे तर्क स्थापित करने के लिए कहता है और सुनने वाला भी उसे उसी अर्थ में लेता है, दूसरा झूट बुखारी की रवायत यह बताती है कि उन्होंने अपनी पत्नी को बहन बताया, यह भी मिथ्या बात है, तीसरा झूट यह बताया जाता है कि मैं रोगी हूं कहा, यह भी अनुचित आरोप है,

ہےاور نہ اس کے مخالف ہی اسے جھوٹ سمجھتے ہیں کہنے والا اسے حجت قائم کرنے کے لئے کہتا ہےاور سننے والا بھی اسے اسی معنیٰ میں لیتا ہے۔دوسرا جھوٹ بخاری کی روایت یہ بتاتی ہے کہ انہوں نے اپنی بیوی کو بہن بتایا یہ بھی غلط بات ہے۔تیسرا جھوٹ یہ بتایا جاتا ہے کہ میں بیمار ہوں کہا یہ بھی غلط الزام ہے۔

फिर (लज्जित होकर) सिर नीचा कर लिया (इस पर भी इब्राहीम से कहने लगे कि) तुम जानते हो यह बोलते नहीं इब्राहीम अ० ने कहा कि फिर तुम ईश्वर को छोड़कर क्यों ऐसी वस्तुओं को पूजते हो जो न तुम्हें कुछ लाभ दे सकें और न हानि पहुंचा सके (66)

پھر (شرمندہ ہوکر) سرنیچا کرلیا (اس پر بھی ابراہیم سے کہنے لگے کہ) تم جانتے ہو یہ بولتے نہیں (۶۵) ابراہیم نے کہا کہ پھر تم اللہ کو چھوڑ کر کیوں ایسی چیزوں کو پوجتے ہو جو نہ تمہیں کچھ فائدہ دے سکیں اور نہ نقصان پہنچا سکیں (۶۶)

धिक्कार है तुम पर और जिनको तुम ईश्वर के अतिरिक्त पूजते हो उन पर क्या तुम विवेक नही रखते (67)

لعنت ہو تم پر اور جن کو تم اللہ کے سوا پوجتے ہو تم عقل نہیں رکھتے (۶۷)

(यह सुनकर वह) कहने लगे कि यदि तुम्हें (इससे अपने देवताओं का बदला लेना है और) कुछ करना है तो इसको जला डालो और अपने देवताओं की सहायता करो (68)

(یہ سن کر وہ) کہنے لگے کہ اگر تمہیں (اس سے اپنے معبودوں کا بدلا لینا اور) کچھ کرنا ہے تو اس کو جلا ڈالو اور اپنے معبودوں کی مدد کرو (۶۸)

(अतः इब्राहीम को उन्होंने आग में डाल दिया तब) हमारा आदेश आया ऐ आग शीतल हो जा और इब्राहीम पर शान्ति बन जा (69)

(چنانچہ انہوں نے ابراہیمؑ کو آگ میں ڈال دیا تب) ہمارا حکم آیا اے آگ سرد ہو جا اور ابراہیم پر سلامتی بن جا (۶۹)

उन्होंने (इब्राहीम को वध करने के लिए) एक चाल चली थी परन्तु हम ने इब्राहीम अ० को बचाकर उन्हें ही असफल कर दिया (70)

انہوں نے (ابراہیم کو ہلاک کرنے کے لئے) ایک چال چلی تھی مگر ہم نے (ابراہیم کو بچا کر) انہیں ہی ناکام کردیا (۷۰)

फिर हमने इब्राहीम और लूत को (शत्रुओं से) बचाकर ऐसे देश में पहुंचा दिया जिसमें हमने संसार वालों के लिए सम्पन्नता रखी थी (71)

پھر ہم نے ابراہیم اور لوط کو (دشمنوں سے) نجات دے کر ایسے ملک میں پہنچا دیا جس میں ہم نے اہل عالم کے لئے برکت رکھی تھی (۷۱)

फिर हमने इब्राहीम को इस्हाक प्रदान किया और अधिक (नाफ्ला) याकूब और सबको सदाचारी बनाया था (72) {2:124; 17:79; 29:27; 57:26}

پھر ہم نے ابراہیم کو اسحاق عطا کیا اور مزید نافلہ یعقوب اور سب کو نیک کیا (۷۲) [۲:۱۲۴؛ ۱۷:۷۹؛ ۲۹:۲۷؛ ۵۷:۲۶]

और हमने उन्हें इन्सानों का नेता (नायक) बनाया था कि हमारे आदेश से उपदेश करते थे और उनको सत्कर्म करने और नमाज पढ़ने और दान देने का आदेश भेजा और वह हमारी पूजा किया करते थे (73) {46:12; 11:17;}

اور ہم نے انہیں انسانوں کا پیشوا (امام) بنایا تھا کہ ہمارے حکم سے ہدایت کرتے تھے اور ان کو نیک کام کرنے اور نماز پڑھنے اور زکوٰۃ دینے کا حکم بھیجا اور وہ ہماری عبادت کیا کرتے تھے (۷۳) [۴۶:۱۲؛ ۱۱:۱۷]

और लूत (की कथा याद करो जब उन) को हमने हुक्म और ज्ञान (अर्थात ईशदौत्य) प्रदान किया और उस बस्ती से जहां के लोग गन्दे कर्म किया करते थे बचा निकाला, निःसन्देह वह लोग बुरे और भ्रष्टाचारी थे (74)

اور لوط (کا قصہ یاد کرو جب ان) کو ہم نے حکم اور علم (یعنی نبوت) بخشا اور اس بستی سے جہاں کے لوگ گندے کام کیا کرتے تھے بچا نکالا۔ بے شک وہ لوگ بُرے اور بدکردار تھے (۷۴)

और हमने लूत को अपनी कृपा की शरण में ले लिया, निःसन्देह वह सदाचारी इन्सानों में था (75)

اور ہم نے لوطؑ کو اپنی رحمت کی پناہ میں لے لیا۔ یقیناً وہ نیک کردار انسانوں میں تھا (۷۵)

इसी प्रकार हमने नूह अ० को भी मुक्ति प्रदान की चुनांचे जब उसने उन (रसूलों) से पहले हमें पुकारा तो हमने उसकी पुकार सुन ली और उसको और उसके घर वालों को कठोर पीड़ा से मुक्ति दी (76) {37:89; 21:83} (उनके साथियों को)

اسی طرح ہم نے نوحؑ کو بھی نجات بخشی چنانچہ جب اس نے ان (رسولوں) سے پہلے ہمیں پکارا تو ہم نے اس کی پکار سن لی اور اس کو اور اس کے گھر والوں کو سخت تکلیف سے نجات دی (۷۶) [۳۷:۸۹؛ ۲۱:۸۳] (ان کے ساتھیوں کو)

और उस जाति की तुलना में जो हमारी आयतों को झुठला रही थी नूह की सहायता की सत्य यह है कि वह बहुत ही बुरी जाति थी पस हमने उन सब

اور اس قوم کے مقابلہ میں جو ہماری آیتوں کو جھٹلا رہی تھی نوح کی مدد کی حقیقت یہ ہے کہ وہ بہت ہی بُری قوم تھی پس

को प्लावन कर दिया (77)

ہم نے ان سب کو غرق کردیا (۷۷)

और दाऊद अ० और सुलेमान अ० (का हाल भी सुन लो कि) जब वह एक खेत के वाद का निर्णय कर रहे थे जिसमें रात के समय लोगों की बकरियां चर गई (और खेत वालों की अधिक हानि हुई थी) और हम उनके निर्णय को देख रहे थे (78)

اور داؤدؑ اور سلیمانؑ (کا حال بھی سن لو کہ) جب وہ ایک کھیت کا مقدمہ فیصل کررہے تھے جس میں رات کے وقت لوگوں کی بکریاں چر گئیں (اور کھیت والوں کا کافی نقصان ہوا تھا) اور ہم ان کے فیصلے کو دیکھ رہے تھے (۷۸)

तो हमारे नियमानुसार जो निर्णय था वह सुलेमान की समझ में आ गया (और उन्होंने ठीक निर्णय कर दिया जिसको दाऊद ने भी उचित माना) यद्यपि हमने दोनों को ईशदौत्य का ज्ञान प्रदान किया था, और हमने पर्वतों और पक्षियों को दाऊद के लिए अर्जित कर दिया था और वह सब अपनी प्रकृति के अनुसार जो ईश्वर ने उनको दी है उसके साथ कार्य करते थे इसके लिए बैगारी थी, और यह कार्य हमारे ही आदेश से होता था (79)

تو ہمارے قانون کے مطابق جو فیصلہ تھا وہ سلیمان کی سمجھ میں آگیا (اور انہوں نے ٹھیک فیصلہ کردیا جس کو داؤد نے بھی صحیح مانا) حالانکہ ہم نے دونوں کو نبوت کا علم بخشا تھا اور ہم نے پہاڑوں اور پرندوں کو داؤد کے لئے فراہم کردیا تھا اور وہ سب اپنی فطرت کے مطابق جو اللہ نے ان کو دی ہے اس کے ساتھ کام کرتے تھے اس کے لئے بیگاری تھے اور یہ کام ہمارے ہی حکم سے ہوتا تھا (۷۹)

और हमारे नियम ने दाऊद को एक प्रकार का वस्त्र बनाना भी सिखा दिया था ताकि तुम को युद्ध (की हानि) से बचाए पस तुमको ईश्वर का आज्ञाकारी होना चाहिए (80)

اور ہمارے قانون نے داؤد کو ایک طرح کا لباس بنانا بھی سکھادیا تھا تاکہ تم کو لڑائی (کے نقصان) سے بچائے پس تم کو اللہ کا فرمانبردار ہونا چاہیے (۸۰)

{महामना दाऊद ने कवच और शस्त्र बनाने के उद्योग को बहुत उन्नति दी थी}

[حضرت داؤد نے زرہ بکتر اور ہتھیار بنانے کی صنعت کو بہت فروغ دیا تھا]

और सुलेमान के लिए हमने तीव्र वायु को उसकी बैगार में लगा दिया था जो उसकी बनाई मशीनों को नियमानुसार उस देश की ओर चलती थी जिसमें हमने सम्पन्नता रखी है हम हर वस्तु का ज्ञान रखने वाले हैं (81) {27:16;34:12}

اور سلیمان کے لئے ہم نے تیز ہوا کو اس کی بیگار میں لگادیا تھا جو اس کی بنائی مشینوں کو قانون کے ذریعہ اس سرزمین کی طرف چلتی تھی جس میں ہم نے برکت رکھی ہے ہم ہر چیز کا علم رکھنے والے ہیں (۸۱) [۱۲:۳۴؛۱۶:۲۷]

नोट- वायु का आदेश से चलने का अर्थ हुआ कि महामना ने ऐसे यंत्र बना रखे थे या आविष्कार किया था कि जिनकी सहायता से पोत यान इत्यादि को वायु उधर ले जाती जिधर सुलेमान जाना चाहते थे चाहे वह विपरीत दिशा ही क्यों न हो, इसलिए समुद्र में पोत दौड़े फिरते थे और भी बहुत से कार्य वायु से होते हैं उनमें से भी बहुत से महामना वायु से लेते थे जैसे आज हवा से काम लिया जा रहा है और वायु बैगारी की भांति कार्य कर रही है इसी प्रकार सुलेमान ने साईन्स से काम लिया, और यह सब उस ज्ञान की उपलब्धी थी जो ईश्वर ने दिया था उनके लिए और भी बहुत रचना उपलब्ध थी, यह कब हुआ जब सुलेमान ने ईश्वर के दिए हुए ज्ञान और बुद्धि से काम लिया, ऐसे ही मुसलमान ईश्वर की दी हुई कुरआन और बुद्धि से काम लेकर दुनिया वालों के लिए एक आदर्श बनें (52:78; 33:21) तब ही तो बेहिसाब जीविका मिलेगी जिसको ईश्वर ने बार-बार कहा है इस पर हमने कभी विचार नही किया, बस इन आयात को झूम-झूमकर पढ़ रहे है, इस प्रकार झूम-झूमकर पढ़ने से काम नही चलता अपितु इन पर कार्य व्यवहार करने से काम चलता है परन्तु खेद वह तो रवायात में खो गया,

सो न सका जो घने साए में क्यों वह कड़ी धूप में सो गया
था जिसे शौके तजस्सुस क्यों वह रवायात में खो गया

نوٹ:۔ ہوا کا حکم سے چلنے کا مطلب ہوا کہ حضرت نے ایسے آلات بنا رکھے تھے یا ایجاد کئے تھے جن کی مدد سے جہاز وغیرہ کو ہوا ادھر لے جاتی تھی جدھر سلیمان جانا چاہتے تھے چاہے وہ مخالف سمت ہی کیوں نہ ہو اس لئے سمندر میں جہاز دوڑے پھرتے تھے اور بھی بہت سے کام ہوا سے ہوتے ہیں ان میں سے بھی بہت سے حضرت ہوا سے کام لیتے تھے جیسے آج ہوا سے کام لیا جارہا ہے اور ہوا بیگاری کی طرح کام کررہی ہے۔اسی طرح سلیمان نے سائنس سے کام لیا تھا۔اور یہ سب اس علم کی دین تھی جو اللہ نے دیا تھا ان کے لئے اور بھی بہت مخلوق فراہم تھی یہ کب ہوا جب سلیمان نے اللہ کے دیے ہوئے علم اور عقل سے کام لیا ایسے ہی مسلمان اللہ کی دی ہوئی قرآن اور عقل سے کام لے کر دنیا والوں کے لئے ایک نمونہ بنیں (۵۲:۷۸؛ ۳۳:۲۱) تب ہی تو بے حساب رزق ملے گا۔جس کو اللہ نے بار بار کہا ہے اس پر ہم نے کبھی غور نہیں کیا بس ان آیات کو جھوم جھوم کر پڑھ رہے ہیں اس طرح جھوم جھوم کر پڑھنے سے کام نہیں چلتا بلکہ ان پر عمل کرنے سے کام چلتا ہے مگر افسوس یہ تو روایات میں کھوگیا۔

سو نہ سکا جو گھنے سائے میں کیوں وہ کڑی دھوپ میں سوگیا
تھا جسے شوق تجسس کیوں وہ روایات میں کھوگیا

और पिशाचों (के दलों को भी उनके लिए अर्जित कर दिया था कि उन) में से कतिपय उनके लिए डुबकी मारते थे और इसके अतिरिक्त और कार्य भी करते थे और हम उनके रक्षक थे (82)

اور شیاطین (کی جماعت کو بھی ان کے لئے فراہم کردیا تھا کہ ان) میں سے بعض ان کے لئے غوطے مارتے تھے اور اس کے سوا اور کام بھی کرتے تھے اور ہم ان کے نگہبان تھے (۸۲)

और अय्यूब अ० (को याद करो) जब उन्होंने अपने रब से प्रार्थना की कि मुझे कष्ट हो रहा है और तू

اور ایوبؑ (کو یاد کرو) جب انہوں نے اپنے رب سے دعا کی کہ مجھے دکھ ہورہا ہے اور تو سب سے بڑھ کر رحم کرنے

सबसे बढ़कर दया करने वाला है (83)
तो हमने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली और जो उनको कष्ट था वह दूर कर दिया और उनको बाल बच्चे भी मिल गए और जो अनुयायी थे वह भी मिल गए और उनके साथ उतने ही और उन सब लोगों के लिए शिक्षा है जो ईश्वर के आदेश को याद रखते हैं (84)
और इस्माईल और इदरीस और ज़ुलकिफ्ल को (भी प्रसाद दिए थे) वह सब (सत्य मार्ग में) धैर्य करने वाले अर्थात साहस से काम करने वाले थे (85)
और हमने उन्हें अपनी अनुकम्पा के साये में ले लिया निःसंदेह वह सदाचारी बन्दों में से थे (86)
और मीन वाले पर भी हमने कृपा की थी याद करो जबकि वह क्रोध की स्थिति में चला गया और समझा था कि मेरा कार्य प्रचार पूरा हो गया, और हम इस पलायन पर पकड़ न करेंगे (परन्तु उसने जल्दी की थी और इस जल्दी को वह समझ गए कि मुझे जल्दी न आना था, ईश्वर के आदेश की प्रतीक्षा करनी थी, यह जान कर उन्होंने अपने रब को पुकारा) अर्थात फिर उसने कठिन दुख में पुकारा यह कि तेरे अतिरिक्त कोई ईश्वर नही है तू पवित्र है निःसंदेह समय से पहले कार्य करने वालों में से हूं (मुझे क्षमा कर दे) (87) {20:114, 37:139, 68:48}

नोट- महामना यूनुस को ईश्वरने एक जाति में प्रचार करने के लिए नियुक्त किया था, अतः जब तक वहां से पलायन का आदेश न होता उनका वहां से हटना ठीक न था परन्तु जाति की ओर से कुछ ऐसे निराश हो गए और यह समझ लिया कि यह मानने वाले नही मेरा कार्य पूर्ण हो गया यह अनुमान करके सोचा कि अब मैं पलायन कर जाऊं और पलायन कर गए परन्तु आप नबी थे आपको अपनी त्रुटि का अनुभूति हो गया, यह अनुभूति होते ही आपने अपने को अन्धकार में जाना तब उस अन्धकार या कठिनाई से निकलने के लिए आपने ईश्वर से क्षमा मांगी और ईश्वर ने क्षमा कर दिया और वापस उसी क्षेत्र में रवाना कर दिया, यह है वास्तविकता परन्तु ज्ञात नही इस बात पर इधर उधर की कहानी लिखी गई है इस घटना पर विस्तार मेरी पुस्तक जिकरे अंबिया में देखो,

तब हमने प्रार्थना स्वीकार की और संताप से मुक्ति दी और इस प्रकार हम आस्तिकों को बचा लिया करते हैं (88)
(इसी प्रकार हमने जकरिया पर भी अपनी कृपा की थी) और जकरिया जब उन्होंने अपने रब को पुकारा कि ईश्वर मुझे अकेला न छोड़ और तू सब से उत्तम उत्तराधिकारी है (89)
तो हमने उनकी पुकार सुन ली और उनको याहया दिया और उनकी पत्नी को सन्तान के योग्य बना दिया वह लोग लपक लपक कर शुभ कर्म करते और हमें आशा और भय से पुकारते थे और हमारे आगे नम्रता करते थे (90)
और इसी प्रकार हमने उस स्त्री पर भी कृपा की जिसने अपने सतीत्व को सुरक्षित रखा (अर्थात मरयम ने) फिर उसको और उनके पुत्र को संसार

والا ہے(۸۳)
توہم نے ان کی دعا قبول کرلی اور جوان کوتکلیف تھی وہ دورکردی اوران کوبال بچے بھی مل گئے اور جوامتی تھے وہ بھی مل گئے اوران کے ساتھ اتنے ہی اوراُن تمام لوگوں کے لئے نصیحت ہے جواللہ کے حکم کویاد رکھتے ہیں(۸۴)
اوراسماعیل اورادریس اور ذوالکفل کو (بھی نعمتوں سے نوازا)وہ سب (راہ حق میں) صبر کرنے والے یعنی ہمت سے کام کرنے والے تھے(۸۵)
اورہم نے انہیں اپنی رحمت کے سائے میں لے لیا یقیناوہ نیک بندوں میں سے تھے(۸۶)
اورمچھلی والے کوبھی ہم نے نوازا یادکروجب کہ وہ غصہ کی حالت میں چلاگیااورسمجھا تھا کہ میراکام تبلیغ پوراہوگیا اورہم اس ہجرت پر پکڑ نہ کریں گے (مگراس نے جلدی کی تھی اوراس جلدی کووہ سمجھ گئے کہ مجھے جلدی نہ آنا تھا اللہ کے حکم کاانتظارکرنا تھا۔یہ جان کرانہوں نے اپنے رب کوپکارا)یعنی پھراس نے مشکلات غم میں پکارایہ کہ تیرے علاوہ کوئی اللہ نہیں ہے توپاک ہے بے شک میں وقت سے پہلے کام کرنے والوں میں سے ہوں (مجھے معاف کردے) (۸۷) [۴۸:۶۸،۱۳۹:۳۷،۱۱۴:۲۰]

نوٹ:۔حضرت یونسؑ کواللہ نے ایک قوم میں تبلیغ کرنے کے لئے مقررکیاتھااس لئے جب تک وہاں سے ہجرت کاحکم نہ ہوتاان کاوہاں سے ہٹناٹھیک نہ تھامگرقوم کی طرف سے کچھ ایسے مایوس ہوگئے اوریہ سمجھ لیاکہ اب یہ ماننے والے نہیں میرا کام پوراہوگیا۔یہ اندازہ کرکے سوچاکہ اب میں ہجرت کرجاؤں۔اورہجرت کرگئے مگرآپ نبی تھے آپ کواپنی غلطی کااحساس ہوگیا،یہ احساس ہوتے ہی آپ نے اپنے کوتاریکی میں جانا تب اس تاریکی یامشکلات سے نکلنے کے لئے آپ نے اللہ سے معافی مانگی اوراللہ نے معاف کردیااورواپس اسی علاقے میں روانہ کردیا یہ ہے حقیقت مگرنہ معلوم اس بات پرادھراُدھرکی کہانی لکھی گئی ہے اس واقعہ پرتفصیل میری کتاب ذکرانبیاء میں دیکھو۔

تب ہم نے اس کی دعاقبول کی اورغم سے نجات دی اوراسی طرح ہم مومنوں کوبچالیاکرتے ہیں(۸۸)
(اسی طرح ہم نے زکریاپربھی اپنی مہربانی کی تھی)اور زکریاجب انہوں نے اپنے رب کوپکاراکہ پروردگارمجھے اکیلانہ چھوڑاورتوسب سے بہتروارث ہے(۸۹)
توہم نے ان کی پکارسن لی اوران کویحیٰی دیااوران کی بیوی کواولادکے قابل بنادیا۔وہ لوگ لپک لپک کرنیکیاں کرتے اورہمیں امیداورخوف سے پکارتے اورہمارے آگے عاجزی کرتے تھے(۹۰)
اوراسی طرح ہم نے اس عورت کوبھی نوازاجس نے اپنی عصمت کومحفوظ رکھا(یعنی مریم نے)پھراس کوہمارے حکم سے حمل ہوگیااوران کواوران کے بیٹے کواہل عالم کے لئے

वालों के लिए चिन्ह बना दिया (91)

نشانی بنا دیا (۹۱)

यह तुम्हारा दल एक ही समुदाय है (मत भेद न करना) और मैं तुम्हारा रब हूं तो मेरी पूजा करना (92)

یہ تمہاری جماعت ایک ہی امت ہے (اختلاف نہ کرنا) اور میں تمہارا رب ہوں تو میری عبادت کرنا (۹۲)

परन्तु उन्होंने (हमारे आदेश को न माना और) आपस में विरोध करके अपने धर्म को टुकड़े टुकड़े कर डाला परन्तु सबको एक दिन लौट कर हमारे पास आना है (तब उस मत भेद का परिणाम देख लेंगे) (93)

مگر انہوں نے (ہمارے حکم کو نہ مانا اور) آپس میں اختلاف کرکے اپنے دین کو ٹکڑے ٹکڑے کر ڈالا مگر سب کو ایک دن لوٹ کر ہمارے پاس آنا ہے (تب اس اختلاف کا انجام دیکھ لیں گے) (۹۳)

जो सत्कर्म करेगा और वह आस्तिक भी होगा तो उसका प्रयत्न बेकार न जाएगा और हम सब लिख रहे हैं (94)

جو نیک کام کرے گا اور وہ مومن بھی ہوگا تو اس کی کوشش بیکار نہ جائے گی اور ہم سب لکھ رہے ہیں (۹۴)

और हम जिन बस्तियों का नाश कर चुके हैं उनके लिए यह बात असम्भव अर्थात वर्जित है कि वह फिर लौटकर आएं महाप्रलय से पहले (95)

اور ہم جن بستیوں کو فنا کر چکے ہیں ان کے لئے یہ بات ناممکن یعنی حرام ہے کہ وہ پھر لوٹ کر آئیں قیامت سے پہلے (۹۵)

यहां तक कि जब याजूज माजूज अर्थात बहुत कड़वे और बहुत तेज गर्म पानी की लहरें खोल दी जाएंगी अर्थात दरया उबल पड़ेंगे महाप्रलय में तब वह नष्ट किए मानव हर ऊंचाई से दौड़ते हुए आएंगे (96) {18:92 से 98}

یہاں تک کہ جب یاجوج ماجوج یعنی کڑوے اور سخت تیز گرم پانی کی لہریں کھول دی جائیں گی یعنی دریا ابل پڑیں گے قیامت میں تب وہ ہلاک شدہ انسان ہر بلندی سے دوڑتے ہوئے آئیں گے (۹۶) [۱۸:۹۲ سے ۹۸]

और महाप्रलय का सच्चा वचन निकट आजाएगा, तो अचानक नास्तिकों की आंखे खुली की खुली रह जाएंगी (और कहेंगे) हाए विपत्ति हम इससे अचेत रहे अपितु हम (अपने प्रति) अत्याचारी थे (97)

اور قیامت کا سچا وعدہ قریب آجائے گا تو ناگاہ کافروں کی آنکھیں کھلی کی کھلی رہ جائیں (اور کہیں گے) ہائے شامت ہم اس سے غفلت میں رہے بلکہ ہم (اپنے حق میں) ظالم تھے (۹۷)

(अवज्ञाकारों! उस दिन) तुम और जिनकी तुम ईश्वर को छोड़ कर पूजा करते थे (और वह भी उस पूजा पर सहमत हों) तो सब नर्क का इन्धन बनेंगे तुम सब उस में प्रविष्ट होकर रहोगे (98)

(نافرمانو! اس روز) تم اور جن کی تم اللہ کو چھوڑ کر عبادت کرتے تھے (اور وہ بھی اس عبادت پر خود راضی ہوں) تو سب دوزخ کا ایندھن بنیں گے تم سب اس میں داخل ہو کر رہو گے (۹۸)

यदि वह वास्तव में ईश्वर होते तो उसमें प्रविष्ट न होते, सब उसमें सदैव जलते रहेंगे (99)

اگر وہ حقیقت میں معبود ہوتے تو اس میں داخل نہ ہوتے سب اس میں ہمیشہ جلتے رہیں گے (۹۹)

वहां उनकी दुख दर्द की चित्कार होंगी और कान पड़ी ध्वनी न सुनाई देगी (100) {19:71, 29:90-91, 29:54, 24:21, 39:19}

وہاں ان کی دکھ درد کی چیخیں ہوں گی اور کان پڑی آواز نہ سنائی دے گی (۱۰۰) [۱۹:۷۱؛ ۲۶:۹۰،۹۱؛ ۲۹:۵۴؛ ۲۴:۲۱؛ ۳۹:۱۹]

निःसंदेह जो लोग सत्य मार्ग में चलने में परिश्रम करेंगे उनके लिए अच्छाईयां हैं और वह नर्क से दूर रखें जाएंगे जो पहले से निर्धारित है (101) {57:21}

بے شک جو لوگ نیک راستے میں چلنے میں سبقت کریں گے ان کے لئے اچھائیاں ہیں اور وہ دوزخ سے دور رکھے جائیں جو پہلے سے طے ہے (۱۰۱) [۵۷:۲۱]

(वह नर्क से इतने दूर होंगे कि) वहां कि (चित्कारों की) भनक भी नही सुनेंगे वह अपने रोचक प्रसादों के मध्य सदैव मगन रहेंगे (102)

(وہ دوزخ سے اتنے دور ہوں گے کہ) وہاں کی (چیخ وپکار کی) بھنک بھی نہیں سنیں گے وہ اپنی پسندیدہ نعمتوں کے درمیان ہمیشہ مگن رہیں گے (۱۰۲)

उन्हें (प्रलय के दिन की) बड़ी से बड़ी होलनाकी भी भयातुर न कर सकेगी और फरिश्ते आगे बढ़कर हाथों हाथ लेंगे और कहेंगे यही तुम्हारा वह दिन है जिसका तुम से वचन था (103)

انہیں (قیامت کے دن کی) بڑی سے بڑی ہولناکی بھی ہراساں نہ کر سکے گی۔ اور فرشتے آگے بڑھ کر ہاتھوں ہاتھ لیں گے اور کہیں گے یہی تمہارا وہ دن ہے جس کا تم سے وعدہ تھا (۱۰۳)

जिस दिन हम आकाश को इस प्रकार लपेट लेंगे जैसे तूमार में पत्र लपेट दिए जाते हैं जिस प्रकार पहले हमने रचना का आरम्भ किया था उसी भांति

جس دن ہم آسمان کو اس طرح لپیٹ لیں گے جیسے طومار میں ورق لپیٹ دیے جاتے ہیں جس طرح پہلے ہم نے

हम फिर उसको उत्पन्न कर देंगे यह एक वचन है हमारे ऊपर और यह कार्य हम अवश्य करेंगे (104) {6:2, 4:1, 29:19, 18:48, 13:5}

تخلیق کی ابتدا کی تھی اسی طرح ہم پھر اس کو پیدا کردیں گے یہ ایک وعدہ ہے ہمارے ذمے اور یہ کام ہم ضرور کریں گے(۱۰۴) [۶:۲، ۴:۱، ۲۹:۱۹، ۱۸:۴۸، ۱۳:۵]

और सत्य यह है कि हमने जबूर (और सब आस्मानी पुस्तकों में) यह लिख दिया है कि जो भी मेरे जप अर्थात पुस्तक पर व्यवहार करेगा इस कर्म के बाद मेरे सदाचारी बन्दे देश के उत्तराधिकारी होंगे (105)

اور حقیقت یہ ہے کہ ہم نے زبور (اور سب آسمانی کتابوں میں) یہ لکھ دیا ہے کہ جو بھی میرے ذکر یعنی کتاب پر عمل کرے گا اس عمل کے بعد میرے نیک بندے ملک کے وارث ہوں گے(۱۰۵)

निःसंदेह इस जप में वह बाते है जो सफलता तक पहुंचा देती हैं पूजा करने वालों को (अर्थात आज्ञाकारी करने वालों को) (106)

بے شک اس ذکر میں وہ باتیں ہیں جو کامیابی تک پہنچادیتی ہیں عبادت کرنے والوں کو(یعنی فرماں برداروں کو(۱۰۶)

और (ऐ मुहम्मद स0) हमने आपको सारे संसार के लिए अनुकम्पा बना कर भेजा है (107)

اور (اے محمدؐ) ہم نے آپ کو تمام جہاں کے لئے رحمت بنا کر بھیجا ہے(۱۰۷)

कहदो मुझ पर ईश्वरीयवाणी आई है उसमें यह है कि तुम्हारा स्वामी केवल एक ईश्वर है (अब बताओ) उसके आगे मस्तक झुकाते हो या नही? (108)

کہدو مجھ پر وحی آئی ہے اس میں یہ ہے کہ تمہارا معبود صرف ایک اللہ ہے (اب بتاؤ) اس کے آگے سر جھکاتے ہو یا نہیں؟(۱۰۸)

फिर यदि वह (इससे) मुख मोड़े तो कहदो कि मैंने (इनकार के परिणाम से) यकसां तौर पर सावधान कर दिया है परन्तु मैं नही जानता कि जिस बात का तुमसे वचन किया गया है उसका समय निकट आलगा है या अभी दूर है (109)

پھر اگر وہ (اس سے) منہ پھیریں تو کہدو کہ میں نے (انکار کے نتائج سے) یکساں طور پر خبردار کردیا ہے لیکن میں نہیں جانتا کہ جس بات کا تم سے وعدہ کیا گیا ہے اس کا وقت قریب آلگا یا ابھی دور ہے(۱۰۹)

जो बात ऊंची ध्वनी से कही जाए उसे भी वह जानता है और उसे भी जो तुम मनो में छुपाते हो (110)

جو بات بلند آواز سے کہی جائے اسے بھی جانتا ہے اور اسے بھی جو تم دلوں میں چھپاتے ہو(۱۱۰)

और मैं क्या जानू? हो सकता है कि (देर) इसलिए हो रही हो कि इस में तुम्हारे लिए परिक्षा हो और तुम्हे एक मुख्य समय तक के लिए (जीवन के प्रसादों से) लाभ उठाने का अवसर दिया जा रहा हो (111)

اور میں کیا جانو؟ ہوسکتا ہے کہ (دیر) اس لئے ہورہی ہے کہ اس میں تمہارے لئے آزمائش ہو اور تمہیں ایک خاص وقت تک کے لئے (زندگی کی نعمتوں سے) فائدہ اٹھانے کا موقع دیا جارہا ہو(۱۱۱)

(अन्ततः रसूल ने) प्रार्थना की ऐ ईश्वर सत्य के साथ निर्णय कर दे और लोगों! तुम जो बाते बनाते हो उनके मुकाबले में हमारा रब रहमान ही हमारे लिए सहायता का सहारा है (112)

(آخر کار رسول نے) دعا کی اے اللہ حق کے ساتھ فیصلہ کردے اور لوگو! تم جو باتیں بناتے ہو ان کے مقابلے میں ہمارا رب رحمان ہی ہمارے لئے مدد کا سہارا ہے(۱۱۲)

सूरतुल हज मदनी 22

سورت الحج (۲۲) مدنی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

लोगों! अपने रब से डरो कि महा प्रलय का भुकंप एक बड़ी घटना है (1)

لوگو! اپنے رب سے ڈرو کہ قیامت کا زلزلہ ایک حادثہ عظیم ہے(۱)

जिस दिन तुम उसे देखोगे (उस दिन यह दशा होगी) कि सम्पूर्ण दूध पिलाने वाली स्त्रीया अपने दूध पीते बच्चो को भूल जाएगी और गर्भवती स्त्रीयो के गर्भ गिर पड़ेगे और लोग तुम को मतवाले दिखेंगे परन्तु वह मतवाले न होंगे अपितु ईश्वर का कष्ट ऐसा कठोर होगा (कि लोग) ज्ञान चेतना खो बैठेंगे (2) {4:43, 15:72 सुकारा}

جس روز تم اسے دیکھو گے (اس دن یہ حال ہوگا) کہ تمام دودھ پلانے والی عورتیں اپنے دودھ پیتے بچوں کو بھول جائیں گی اور حاملہ عورتوں کے حمل گر پڑیں گے اور لوگ تم کو متوالے نظر آئیں گے مگر وہ متوالے نہ ہوں گے بلکہ اللہ کا عذاب ایسا سخت ہوگا (کہ لوگ ہوش وحواس کھو بیٹھیں گے) (۲) [۴:۴۳، ۱۵:۷۲] سکرٰی

और कतिपय लोग ऐसे हैं ईश्वर की महिमा में झगड़ते है बिना ज्ञान के और हर अवज्ञाकारी शैतान का अनुकरण करते हैं (3)

اور بعض لوگ ایسے ہیں اللہ کی شان میں جھگڑتے ہیں بغیر علم کے اور ہر سرکش شیطان کی پیروی کرتے ہیں (۳)

जिस के बारे में लिख दिया गया है कि जो उसे मित्र बनाएगा तो वह उसको पथ भ्रष्ट कर देगा

جس کے بارے میں لکھ دیا گیا ہے کہ جو اسے دوست بنائے گا تو وہ اس کو گمراہ کردے گا اور دوزخ کے عذاب کا

और नर्क के कष्ट का मार्ग दिखाएगा (4) (भाग्य)

راستہ دکھائے گا (۴) [تقدیر]

लोगो! यदि तुम को (मरने के बाद) जी उठने में कुछ शंका हो तो हमने (पहली बार भी तो) तुमको पैदा किया था (अर्थात आरम्भ में) मिट्टी से फिर उससे वीर्य बनाया फिर उस वीर्य से रक्त का लोथड़ा अर्थात जोंक की आकृति बनाकर फिर उससे बोटी बनाकर जिसकी बनावट आकृति वाली भी होती है और आकृति वाली नही भी ताकि तुम को खोलकर सुना दें और हम जिसको चाहते हैं एक निश्चित समय तक ठहराए रखते हैं फिर तुमको बच्चे की आकृति में बाहर निकाल लाते हैं फिर पालन पोषण पाकर तुम जवानी को पहुंचते हो फिर तुम में से कोई ऐसा होता है जो (बुढ़ापे से पहले ही मर जाता है और कोई ऐसा होता है जो बुढ़ापे तक पहुंचता है) और निकृष्टतम आयु की ओर लौटा दिया जाता है कि सब कुछ जानने के बाद बिल्कुल ज्ञान रहित हो जाता है और तुम देखते हो कि धरती सूखी पड़ी है फिर हम जब उस पर पानी बरसा देते हैं तो अचानक लेहलहा उठती है और उभरने लगती है और हर प्रकार की सुन्दर वनस्पति उग आती है (5)

لوگو! اگر تم کو (مرنے کے بعد) جی اٹھنے میں کچھ شک ہو تو ہم نے (پہلی بار بھی تو) تم کو پیدا کیا تھا (یعنی ابتدا میں) مٹی سے پھر اس سے نطفہ بنایا پھر اس نطفہ سے خون کا لوتھڑا یعنی جونک کی شکل بنا کر پھر اس سے بوٹی بنا کر جس کی بناوٹ شکل والی بھی ہوتی ہے اور شکل والی نہیں بھی تاکہ تم کو کھول کر سنا دیں اور ہم جس کو چاہتے ہیں ایک مقررہ وقت تک ٹھہرائے رکھتے ہیں پھر تم کو بچے کی صورت میں باہر نکال لاتے ہیں پھر پرورش پاکر تم جوانی کو پہنچتے ہو پھر تم میں سے کوئی ایسا ہوتا ہے جو (بڑھاپے سے پہلے ہی) مر جاتا ہے اور کوئی ایسا ہوتا ہے جو (بڑھاپے تک پہنچتا ہے) اور بدترین عمر کی طرف لوٹا دیا جاتا ہے کہ سب کچھ جاننے کے بعد بالکل بے علم ہو جاتا ہے اور تم دیکھتے ہو کہ زمین سوکھی پڑی ہے پھر جب ہم اس پر پانی برسا دیتے ہیں تو یکا یک لہلہا اٹھتی ہے اور ابھرنے لگتی ہے اور ہر قسم کی خوشنما نباتات اُگ آتی ہے (۵)

यह इस बात का प्रमाण है कि ईश्वर का अस्तित्व एक यथार्थ है और इसमें कोई शंका नही कि वह मृतकों को जीवित कर देगा और निःसन्देह वह हर वस्तु के अनुमान माप निर्धारित करने वाला है (6)

یہ اس بات کی دلیل ہے کہ اللہ کی ہستی ایک حقیقت ہے اور اس میں کوئی شبہ نہیں کہ وہ مردوں کو زندہ کر دے گا اور یقیناً وہ ہر چیز کے اندازے مقرر کرنے والا ہے (۶)

इससे यह बात भी सिद्ध होती है कि (महाप्रलय की) घड़ी आने वाली है इसमें किसी प्रकार का भ्रम नही और यह कि ईश्वर उन लोगों को अवश्य जीवित करेगा जो समाधियों में दफ्न किए जा चुके हैं (और चाहे दफ्न न भी हो जैसे जल जाना, पानी में डूब जाना या कही मर कर सड़ जाना) (7)

اور اس سے یہ بات بھی ثابت ہوتی ہے کہ (قیامت کی) گھڑی آنے والی ہے اس میں کسی طرح کا شبہ نہیں اور یہ کہ اللہ ان لوگوں کو ضرور زندہ کرے گا جو قبروں میں دفن کئے جا چکے ہیں (اور چاہے دفن نہ بھی ہوئے ہوں جیسے جل جانا پانی میں ڈوب جانا یا کہیں مر کر سڑ جانا) (۷)

और लोगों में कोई ऐसा भी है जो ईश्वर के विषय में बिना ज्ञान के और बिना शिक्षा और बिना उज्ज्वल पुस्तक के झगड़ता है (8)

اور لوگوں میں کوئی ایسا بھی ہے جو اللہ کے بارے میں بغیر علم کے اور بغیر ہدایت اور بغیر کتاب روشن کے جھگڑتا ہے (۸)

(और घमण्ड से) गर्दन मोड़ लेता है ताकि लोगों को ईश्वर के मार्ग से भ्रष्ट कर दे उसके लिए दुनिया में हीनता है और महाप्रलय के दिन हम उसे अग्नि के कष्ट का स्वाद चखाएँगे (9)

(اور تکبر سے) گردن موڑ لیتا ہے تاکہ لوگوں کو اللہ کے رستے سے گمراہ کر دے اُس کے لئے دنیا میں ذلت ہے اور قیامت کے دن ہم اسے عذابِ آتش کا مزہ چکھائیں گے (۹)

यह है तेरा वह भविष्य जो मेरे अपने हाथों ने तैयार करके आगे भेजा है (कर्म पत्र) अन्यथा ईश्वर तो अपने बन्दों पर अन्याय करने वाला नही (10)

یہ ہے تیرا وہ مستقبل جو تیرے اپنے ہاتھوں نے تیار کر کے آگے بھیجا ہے (نامہ اعمال) ورنہ اللہ تو اپنے بندوں پر ظلم کرنے والا نہیں (۱۰)

कतिपय लोग ऐसे हैं जो (हानि से बचते हुए) किनारे पर रह कर ईश्वर की बन्दगी करते हैं यदि लाभ पहुंचा तो सन्तुष्ट हो गए और यदि परीक्षा में पड़ गए तो उल्टे पग अपनी (नास्तिकता की) दशा में लौट पड़े वह दुनिया में भी हानि उठाते हैं और प्रलोक में भी स्पष्ट बरबादी (11)

بعض لوگ ایسے ہیں جو (نقصان سے بچتے ہوئے) کنارے پر رہ کر اللہ کی بندگی کرتے ہیں اگر فائدہ پہنچا تو مطمئن ہو گئے اور اگر آزمائش میں پڑ گئے تو الٹے پاؤں اپنی (کفر کی) حالت میں لوٹ پڑے وہ دنیا میں بھی نقصان اٹھاتے ہیں اور آخرت میں بھی یہ ہے کھلی بربادی (۱۱)

वह ईश्वर के सिवा ऐसों को (सहायता के लिए) पुकारते हैं जो न उन्हें हानि पहुंचा सकते हैं न लाभ यह परले दर्जे की भ्रष्टता है (12)

وہ اللہ کے سوا ایسوں کو (مدد کے لئے) پکارتے ہیں جو نہ انہیں نقصان پہنچا سکتے ہیں نہ نفع۔ یہ پرلے درجے کی گمراہی ہے (۱۲)

(अपितु) ऐसे को पुकारते हैं जिससे लाभ तो नही होता परन्तु हानि निकट हो जाती है अर्थात हानि होती है तो ऐसा मित्र भी बुरा और ऐसा सहचर भी

(بلکہ) ایسے کو پکارتے ہیں جس سے نفع تو نہیں ہوتا مگر نقصان قریب ہو جاتا ہے یعنی نقصان ہوتا ہے تو ایسا

बुरा (13)

دوست بھی بُرا اور ایسا ہم صحبت بھی بُرا (۱۳)

निःसन्देह जो लोग विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे ईश्वर उनको स्वर्ग में प्रविष्ट करेगा जिनके नीचे नहरे चल रही है निःसन्देह ईश्वर जो चाहता है वह करता है (अर्थात उसका नियम यही है कि सदाचारी को स्वर्ग में प्रविष्ट करे और दुराचारी को नर्क में प्रविष्ट करे) (14)

بے شک جو لوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے اللہ ان کو جنت میں داخل کرے گا جن کے نیچے نہریں چل رہی ہیں بے شک اللہ جو چاہتا ہے وہ کرتا ہے (یعنی اس کا قانون یہی ہے کہ نیک آدمی کو جنت میں داخل کرے اور بدوں کو دوزخ میں (داخل کرے) (۱۴)

जो विरोधी यह विचार करे कि ईश्वर उसकी (अर्थात सदाचारी आदमी की) सहायता नही करेगा दुनिया और प्रलोक में तो (सोचने से काम नही चलेगा अपितु उसके लिए क्रियात्मक प्रयास करना पड़ेगा और वह यह कि) आकाश को एक रस्सी ताने और उसके सहारे जाकर फिर उस सहायता को काट दे फिर देखे कि उसका यह दांव कुछ ले गया उस बात को जिसकी उसे जलन है (अर्थात वह सहायता रोक दी) (15)

جو منکر یہ خیال کرے کہ اللہ اس کی (یعنی نیک آدمی کی) مدد نہیں کرے گا دنیا اور آخرت میں تو خیال کرنے سے کام نہیں چلے گا بلکہ اس کے لئے عملی قدم بڑھائے اور وہ یہ کہ) آسمان کو ایک رسی تانے اور اس کے سہارے جا کر پھر اس مدد کو کاٹ دے پھر دیکھے کہ اس کا یہ داؤں کچھ لے گیا اس بات کو جس کی اسے جلن ہے (یعنی وہ مدد رد کر دی؟) (۱۵)

और इसी प्रकार हमने (कुरआन) को प्रेषित किया है जिसके सब आदेश स्पष्ट है और यह याद रखो ईश्वर (इसके द्वारा सीधा मार्ग दिखा देता है उसको जो चाहता है (16)

اور اسی طرح ہم نے اس (قرآن) کو نازل کیا ہے جس کے تمام احکام واضح ہیں اور یہ یاد رکھو اللہ (اس کے ذریعہ) سیدھی راہ دکھا دیتا ہے اس کو جو چاہتا ہے (۱۶)

जो लोग आस्तिक (विश्वास लाए मुहम्मद पर) और जो यहूदी है, ग्रह पूजक है ईसाई है और मजूसी और वह लोग जो अनेकेश्वरवादी हैं ईश्वर उन सबमें महाप्रलय के दिन निर्णय कर देगा निःसन्देह ईश्वर हर वस्तु से अवगत है (वह क्या करते है) (17)

جو لوگ مؤمن (ایمان لائے محمدؐ پر) اور جو یہودی ہیں، ستارہ پرست ہیں، عیسائی ہیں او مجوسی اور وہ لوگ جو شرک ہیں اللہ ان سب میں قیامت کے دن فیصلہ کر دے گا بے شک اللہ ہر چیز سے باخبر ہے (وہ کیا کرتے ہیں) (۱۷)

क्या आपने नही देखा कि जो आकाशों में है और पृथ्वी में है और सूर्य, चन्द्रमा, सितारे, पर्वत, वृक्ष और जानवर सब ईश्वर के आगे नतमस्तक अर्थात उसकी आज्ञाकारी कर रहे है परन्तु बहुत से व्यक्ति ऐसे भी है जो (ईश्वर की आज्ञाकारी नही करते अतः) दण्ड के अधिकारी है और जिसे ईश्वर का नियम ही अपमानित व हीन करे उसको सम्मान देने वाला कोई नही, ईश्वर जो चाहता है करता है (18)

کیا تم نے نہیں دیکھا کہ جو آسمانوں میں ہے اور جو زمین میں ہے اور سورج، چاند، ستارے پہاڑ درخت اور جانور سب اللہ کے آگے سر بسجود یعنی اس کی فرماں برداری کر رہے ہیں لیکن بہت سے انسان ایسے بھی ہیں جو (اللہ کی فرمانبرداری نہیں کرتے اس لئے) عذاب کے مستحق ہیں اور جسے اللہ کا قانون ہی ذلیل وخوار کرے اس کو عزت دینے والا کوئی نہیں اللہ جو چاہتا ہے کرتا ہے (۱۸)

दुनिया में दो पक्ष है यह दोनों एक दूसरे के शत्रु है अपने रब के बारे में झगड़ते है तो जो नास्तिक है उनके लिए अग्नि के वस्त्र काटे जा चुके है उनके सिरों पर खोलता हुआ पानी डाला जाएगा (19)

دنیا میں دو مخالف فریق ہیں یہ دونوں ایک دوسرے کے دشمن ہیں اپنے پروردگار کے بارے میں جھگڑتے ہیں تو جو کافر ہیں ان کے لئے آگ کے کپڑے کاٹے جا چکے ہیں ان کے سروں پر کھولتا ہوا پانی ڈالا جائے گا (۱۹)

जिससे उनके पेट के अन्दर की वस्तुऐं और खालें गल जाएँगी (20)

جس سے ان کے پیٹ کے اندر کی چیزیں اور کھالیں گل جائیں گی (۲۰)

और उनको (दण्ड देने) के लिए लोहे के हथोड़े होंगे (21)

اور ان کو (سزا دینے) کے لئے لوہے کے گرز ہوں گے (۲۱)

जब कभी वह घबराकर नर्क से निकलने का प्रयत्न करेंगे तो फिर उसी में धकेल दिए जाएँगे कि चखो अब जलने का दण्ड का स्वाद (22)

جب کبھی وہ گھبرا کر جہنم سے نکلنے کی کوشش کریں گے تو پھر اسی میں دھکیل دئے جائیں گے کہ چکھو اب جلنے کی سزا کا مزہ (۲۲)

परन्तु जो दल विश्वास लाया और उसने भलाई के कार्य किए उनको ईश्वर स्वर्ग में प्रविष्ट करेगा जिसके नीचे नहरे बह रही होंगी उन्हें सोने के कंगन और मोतियों के हार पहनाए जाएँगे और

لیکن جو گروہ ایمان لایا اور اس نے بھلائی کے کام کئے ان کو اللہ جنت میں داخل کرے گا جس کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی انہیں وہاں سونے کے کنگن اور موتیوں کے ہار

उनके वस्त्र रेशम के होंगे (23)
और उन्हें पथ प्रदर्शन किया गया पवित्र मार्ग की ओर कथन से और उनको उसके मार्ग की ओर निर्देशित किया गया जो प्रशंसा के योग्य है (24)
जिन लोगों ने कुफ्र किया और जो (आज) ईश्वर के मार्ग से रोक रहे हैं और सम्मान वाली मस्जिद के तीर्थ में बाधक है जिसे हमने सब लोगों के लिए बनाया है जिसमें स्थानीय निवासियों और बाहर से आने वालों के अधिकार बराबर हैं इस (सम्मान वाली मस्जिद) में जो भी सत्यता से हटकर जुल्म का मार्ग ग्रहण करेगा उसे हम पीड़ा देने वाला कष्ट का स्वाद चखायेंगे (25)
और (वह समय याद करो) जब हमने इब्राहीम अ० को काबा का स्थान बता दिया (और आदेश दिया था) कि मेरे साथ किसी को साझी न करना (निर्मल मेरी पूजा करना) और मेरे घर (अर्थात काबा) को परिक्रमा करने वालों और विश्राम (अर्थात पूजा में खड़े होने वालों) और सजदा करने वालों के लिए पवित्र शुद्ध रखना (26)
और लोगों में हज के लिए घोषणा कर दो कि तुम्हारी ओर पैदल और हारे थके ऊंटों पर जो दूर मार्गों से चले आते होंगे (सवार होकर) चले आऐं (27)
ताकि वह लाभ देखें जो उनके लिए यहां रखे गए हैं और कुछ निश्चित दिनों में उन जानवरों पर ईश्वर का नाम लें जो उसने उन्हें प्रदान किए हैं स्वयं भी खाऐं और निर्धनों को भी दें (28)
फिर चाहिए कि जो थकान उन पर अधिपति आ गई है और जो अहराम के दिनों में जो धूल लग गई है (हज के काम मुकम्मल करके में) उसको दूर करें और अपनी भेंट पूरी करें और प्राचीन गृह (ईश्वर के भवन) की परिक्रमा करें (29)
यह है (काबा निर्माण का अर्थ) और जो कोई ईश्वर की स्थापित की हुई मर्यादा का सम्मान करे तो यह उसके रब के निकट स्वयं उसी के लिए उत्तम है और तुम्हारे लिए मवेशी जानवर वैध किये गये सिवा उन वस्तुओं के जो तुमको कुरआन में सुना दिया गया है, अतः बुतों की अशुद्धता से बचो झूठी बातों से बचो (30)
केवल एक ईश्वर के होके रहो और उसके साथ किसी को साझी न करो और जो व्यक्ति (किसी को) ईश्वर के साथ साझी करे तो वह मानो ऐसा है जैसे आकाश से गिर पड़े (अर्थात अपने उच्च स्थान से गिर जाए) फिर उसको पक्षी उचक ले जाऐं या वायु उसे किसी दूर स्थान उड़ाकर फेंक दे (अर्थात शैतान की सेना उसे अपने अनेकेश्वर वाद के जाल में फंस ले और वह नर्क में जाने वाला हो जाए) (31)
यह हमारा आदेश है और जो व्यक्ति सम्मान की वस्तुओं की जो ईश्वर ने नियुक्त की है महानता रखे तो यह काम हृदयों की सदाचारिता में से है (32)

پہنائے جائیں گے اوران کے لباس ریشم کے ہوں گے (۲۳)
اورانہیں ہدایت کی گئی پاکیزہ راہ کی طرف بات سے اوران کو اس کے رستہ کی ہدایت ہوگئی تھی جو لائق حمد ہے (۲۴)
<u>جن لوگوں نے کفر کیا اور جو آج اللہ کے رستے سے روک رہے ہیں اور مسجد حرام کی زیارت میں مانع ہیں جسے ہم نے سب لوگوں کے لئے بنایا ہے جس میں مقامی باشندوں اور باہر سے آنے والوں کے حقوق برابر ہیں اس (مسجد حرام) میں جو بھی راستی سے ہٹ کر ظلم کا طریقہ اختیار کرے گا اسے ہم دردناک عذاب کا مزا چکھائیں گے (۲۵)</u>
اور (وہ وقت یاد کرو) جب ہم نے ابراہیمؑ کو خانہ کعبہ کی جگہ بتادی (اور حکم دیا تھا) کہ میرے ساتھ کسی کو شریک نہ کرنا (خالص میری عبادت کرنا) اور میرے گھر (یعنی کعبہ) کو طواف کرنے والوں اور قیام وسجدہ کرنے والوں کے لئے پاک صاف رکھنا (۲۶)
اور لوگوں میں حج کے لئے اعلان کردو کہ تمہاری طرف پیدل اور ہارے تھکے اونٹوں پر جو دور رستوں سے چلے آتے ہوں گے (سوار ہوکر) چلے آئیں (۲۷)
تاکہ وہ فائدے دیکھیں جو ان کے لئے یہاں رکھے گئے ہیں اور چند مقرر دنوں میں ان جانوروں پر اللہ کا نام لیں جو اس نے انہیں بخشے ہیں خود بھی کھائیں اور تنگ دست محتاج کو بھی دیں (۲۸)
<u>پھر چاہیے کہ جو تھکاوٹ ان پر غالب آ گئی ہے اور جو احرام کے دنوں میں گردوغبار لگ گیا ہے (ارکان حج ادا کرنے میں) اس کو دور کریں اور اپنی نذریں پوری کریں اور خانہ قدیم (بیت اللہ) کا طواف کریں (۲۹)</u>
یہ ہے (تعمیر کعبہ کا مقصد) اور جو کوئی اللہ کی قائم کردہ حرمتوں کا احترام کرے تو یہ اس کے رب کے نزدیک خود اسی کے لئے بہتر ہے اور تمہارے لئے مویشی جانور حلال کئے گئے سوا ان چیزوں کے جو تم کو قرآن میں سنا دیا گیا ہے پس بتوں کی گندگی سے بچو جھوٹی باتوں سے پرہیز کرو (۳۰)
صرف ایک اللہ کے ہوکے رہو اور اس کے ساتھ کسی کو شریک نہ کرو اور جو شخص (کسی کو) اللہ کے ساتھ شریک کرے تو وہ گویا ایسا ہے جیسے آسمان سے گر پڑے (یعنی اپنے بلند مقام سے گر جائے) پھر اس کو پرندے اچک لے جائیں یا ہوا اسے کسی دور جگہ اڑا کر پھینک دے (یعنی شیطان کی فوج اسے اپنے شرک کے جال میں پھنسا لے اور وہ دوزخ میں جانے والا ہو جائے) (۳۱)
یہ ہمارا حکم ہے اور جو شخص ادب کی چیزوں کو جو اللہ نے مقرر کی ہیں عظمت رکھے تو یہ کام دلوں کی پرہیزگاری میں سے ہے (۳۲)

तुम्हें उन जानवरों से एक समय निश्चित तक लाभ उठाने का अधिकार है फिर उनके बलिदान करने का स्थान उस प्राचीन घर के पास है (33)

تمہیں ان جانوروں سے ایک وقت مقررہ تک فائدہ اٹھانے کا حق ہے پھران کے قربان کرنے کی جگہ اس قدیم گھر کے پاس ہے(۳۳)

नोट– प्राचीन कर अर्थात सबसे पुराना घर जो सब घरों से पहले बना था इसका अर्थ यह हुआ कि दुनिया में सबसे पहले आबादी मक्का में ही थी. आज के वैज्ञानिक यह वाद कर रहे है कि सबसे पहले इन्सान अफ्रीका के देश जम्बिया में आबाद था. कुरआन के प्रकाश में यह मिथ्या सिद्ध हो रहा है सत्य यह है कि सबसे पहले इन्सान मक्का में आबाद हुआ था जिसको उम्मुल कुरा बैतुल अतीक भी कहते है और घर मानव के लिए बनता है.

نوٹ:۔قدیم گھر یعنی سب سے پرانا گھر جو سب گھروں سے پہلے بنا تھا اس کا مطلب یہ ہوا کہ دنیا میں سب سے پہلے آبادی مکہ میں ہی تھی آج کے سائنس داں یہ دعویٰ کررہے ہیں کہ سب سے پہلے انسان افریقہ کے ملک زمبیا میں بسا تھا. قرآن کی روشنی میں یہ غلط ثابت ہورہا ہے صحیح بات یہ ہے کہ سب سے پہلے انسان مکہ میں آباد ہوا تھا جس کو امّ القریٰ بیت العتیق بھی کہتے ہیں اور گھر آدمی کے لئے بنتا ہے.

परन्तु दुख तो इस बात पर है कि आज मुसलमान अपने सत्य मार्ग से हट गया है जो दूसरे वैज्ञानिक बता देते है उस पर यह उपस्थित हूं कहता है यद्यपि इस स्थान पर मुसलमान को होना चाहिए

لیکن افسوس تو اس بات پر ہے کہ آج مسلمان اپنے صحیح راستے سے ہٹ گیا ہے جو دوسرے سائنس داں بتادیتے ہیں اس پر یہ لبیک کہتا ہے.

मुहम्मद स० तुम्हारे लिए आदर्श है और तुम दुनिया के लिए आदर्श बनो. परन्तु आज हम तो कुरआन के बहुत आदेशों का विरोध कर रहे है जो स्पष्ट दिख रहा है.

حالانکہ اس مقام پر مسلمان کو ہونا چاہیے محمدؐ تمہارے لئے نمونہ ہیں اور تم دنیا کے لئے نمونہ بنو. مگر آج ہم تو قرآن کے بہت احکام کی خلاف ورزی کررہے ہیں جو صاف نظر آرہی ہے.

(यह बलिदान की विधि या आदेश उम्मत मुहम्मद स० पर ही नही अपितु हर उम्मत पर यही आदेश है) हर समुदाय के लिए हमने बलिदान का एक ही नियम निर्धारित कर दिया है (जो मुहम्मद के समुदाय पर नियुक्त किया है) ताकि इस समुदाय के लोग जानवरों पर ईश्वर का नाम लें जो उसने उनको प्रदान किए है. अतः तुम्हारा ईश्वर एक ही ईश्वर है और उसके तुम आज्ञाकारी बनो और नम्रता करने वालों को शुभ सूचना सुना दो (34)

(یہ قربانی کا طریقہ یا حکم امت محمدؐ پر ہی نہیں بلکہ ہر امت پر یہی حکم ہے) ہر امت کے لئے ہم نے قربانی کا ایک ہی قاعدہ مقرر کردیا ہے (جو امت محمدؐ پر مقرر کیا ہے) تاکہ اس امت کے لوگ جانوروں پر اللہ کا نام لیں جو اس نے ان کے لئے بخشے ہیں. پس تمہارا اللہ ایک ہی اللہ ہے اور اس کے تم فرمانبردار بنو اور عاجزی کرنے والوں کو خوشخبری سنادو(۳۴)

नोट– कुरआन में आदेश दे दिया है कि अब केवल धर्म इस्लाम ही चलेगा जो प्राचीन है अतः बलिदान की विधि भी यही चलेगी अनेक नही जो लोगों ने अपने तरीके बना रखे है वह कुरआन के विरुद्ध है (52:66; 6:162; 22:67)

نوٹ:۔قرآن میں حکم دے دیا ہے کہ اب صرف دین اسلام ہی چلے گا جو قدیم ہے اس لئے قربانی کا طریقہ بھی یہی چلے گا مختلف نہیں جو لوگوں نے اپنے طریقے بنا رکھے ہیں (۵۲:۶۶؛ ۶:۱۶۲؛ ۲۲:۶۷) وہ قرآن کے خلاف ہیں.

और वह वह लोग है जिनका समाचार यह है कि जब ईश्वर का जप सुनते है तो उनके हृदय कांप उठते है और जो कष्ट पड़ता है तो धैर्य करते है और नमाज़ शिष्टता से पढ़ते है अर्थात स्थापित करते हैं और जो धन हमने उनको दिया है उसमें से व्यय करते हैं (35)

اور وہ وہ لوگ ہیں جن کا حال یہ ہے کہ جب اللہ کا ذکر سنتے ہیں تو ان کے دل لرز اٹھتے ہیں اور جو مصیبت پڑتی ہے تو صبر کرتے ہیں اور نماز ادب سے پڑھتے ہیں یعنی قائم کرتے ہیں اور جو مال ہم نے ان کو دیا ہے اس میں سے خرچ کرتے ہیں(۳۵)

और बलिदान के ऊंटों को हमने तुम्हारे लिए ईश्वर की स्मृत्तियां नियुक्त किया है, तुम्हारे लिए उनमें भलाई है अतः चाहिए कि उन्हें खड़ा करके उन पर ईश्वर का नाम लो और जब (बलिदान के बाद) उनकी पीठें धरती पर टिक जाए तो उनमें से स्वयं भी खाओ और उनको भी खिलाओ जो सन्तोष किए बैठे है और उनको भी जो अपनी अपेक्षा प्रस्तुत करें. इसी प्रकार हमने उनको तुम्हारे अधिनस्थ (अर्जित) कर दिया है ताकि तुम आज्ञाकारी बनो (36)

اور قربانی کے اونٹوں کو ہم نے تمہارے لئے اللہ کی نشانیاں مقرر کیا ہے تمہارے لئے ان میں بھلائی ہے پس چاہیے کہ انہیں کھڑا کرکے ان پر اللہ کا نام لو اور جب (قربانی کے بعد) ان کی پیٹھیں زمین پر ٹک جائیں تو ان میں سے خود بھی کھاؤ اور ان کو بھی کھلاؤ جو قناعت کئے بیٹھے ہیں اور ان کو بھی جو اپنی حاجت پیش کریں اس طرح ہم نے ان کو تمہارے زیرفرمان (فراہم) کردیا ہے تا کہ فرماں بردار بنو(۳۶)

ईश्वर तक न उनका मांस पहुंचता है और न रक्त अपितु उस तक तुम्हारी सदाचारिता पहुंचती है इस प्रकार ईश्वर ने उनको तुम्हारा अधिनस्थ कर दिया है कि ईश्वर के मार्ग दर्शन पर उसकी श्रेष्ठता वर्णन करो और सदाचारी लोगों को शुभ सूचना दे दो (37)

اللہ تک نہ ان کا گوشت پہنچتا ہے اور نہ خون بلکہ اس تک تمہاری پرہیزگاری پہنچتی ہے اسی طرح اللہ نے ان کو تمہارا بیگاری بنادیا ہے کہ اللہ کی رہنمائی پر اس کی بڑائی بیان کرو اور نیک لوگوں کو خوشخبری سنادو(۳۷)

ईश्वर तो आस्तिकों से उनके शत्रुओं को हटाता

اللہ تو مومنوں سے ان کے دشمنوں کو ہٹاتا رہتا ہے بے

रहता है निःसन्देह ईश्वर किसी कपट करने वाले और प्रसादों की कृतघ्नता करने वालों को मित्र नही रखता (38)

شک اللہ کسی خیانت کرنے والے اور کفران نعمت کو دوست نہیں رکھتا (۳۸)

और जिन मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध जारी है (और वह मुसलमानों को मिटाने की फ़िक्र में हैं) उन मुसलमानों को युद्ध की अनुमति दी जाती है क्योंकि उन पर अन्याय किया जा रहा है और विश्वास करो ईश्वर उनकी सहायता की शक्ति रखता है (39)

اور جن مسلمانوں کے خلاف جنگ جاری ہے (اور وہ مسلمانوں کو مٹانے کی فکر میں ہیں) ان مسلمانوں کو جنگ کی اجازت دی جاتی ہے کیونکہ ان پر ظلم کیا جا رہا ہے اور یقین کرو اللہ ان کی مدد کی طاقت رکھتا ہے (۳۹)

वह उत्पीड़ित जिनको निकाला गया उनके घरों से अनुचित अत्याचार से इस दोष पर कि वह कहते है कि हमारा रब ईश्वर है और यदि ईश्वर लोगों द्वारा एक दूसरे को न हटाता रहता तो ढाए जाते तकिए और पाठ शालाऐं और पूजा घर और मस्जिदें जिनमें नाम पढ़ा जाता है ईश्वर का बहुत, निःसन्देह ईश्वर उन लोगों की सहायता करता है जो (अन्याय को मिटाने के लिए) उसके धर्म की सहायता करेंगे निःसन्देह ईश्वर बड़ी शक्ति वाला है और सब पर प्रभुत्व शाली है (40)

وہ مظلوم جن کو نکالا گیا ان کے گھروں سے ناحق ظلم سے اس قصور پر کہ وہ کہتے ہیں کہ ہمارا رب اللہ ہے اور اگر اللہ لوگوں کے ذریعہ ایک دوسرے کو نہ ہٹاتا رہتا تو ڈھائے جاتے تکیے اور مدرسے اور عبادت خانے اور مسجدیں جن میں نام پڑھا جاتا ہے اللہ کا بہت. یقیناً اللہ ان لوگوں کی مدد کرتا ہے جو (ظلم کو مٹانے کے لئے) اس کے دین کی مدد کریں گے بے شک اللہ بڑی طاقت والا ہے اور سب پر غالب ہے (۴۰)

वह वह लोग है जिन्हें हम यदि पृथ्वी में सत्ता देंगे तो वह नमाज स्थापित करेंगे दान देंगे सत्कर्मों का आदेश देंगे और बुराई से रोकेंगे सब कामों का अधिकार (ईश्वर को है) (41)

وہ وہ لوگ ہیں جنہیں ہم اگر زمین میں اقتدار دیں گے تو وہ نماز قائم کریں گے زکوٰۃ دیں گے نیکی کا حکم دیں گے اور بُرائی سے روکیں گیں تمام کاموں کا اختیار اللہ کو ہے (۴۱)

नोट- तो स्पष्ट हुआ यह कार्य वह है जिनको ईश्वर कराना चाहता है यह वह नमाज़ नही है जो मस्जिद में पढ़ी जाती है यह वह नमाज़ है जो मस्जिद में नमाज़ पढ़ने पर जो सत्ता मिलेगी उस समय उस राज्य में ईश्वर के नियम प्रचलित करेंगे अतः सलात स्थापित करने का अर्थ हुआ ईश्वर का आज्ञाकारी होकर दूसरों को लाभ देना, सलात की मूल परिभाषा सूरत अल मूमिनून की आयात 1 से 10 तक और सूरत अलमआरिज की आयत 22 से 35 तक, में देखी जाए इनमें दो सलात है एक मस्जिद वाली और दूसरी पूर्ण ईश्वर की आज्ञाकारी, अपनी पूरी जिन्दगी के कार्यों में ईश्वर के आदेशों को प्रचलित करें, व्यवहार के साथ यह है वह सलात, मस्जिद और व्यवहार की, नमाज दोनों अनिवार्य है.

نوٹ:۔ تو ظاہر ہوا یہ کام وہ ہیں جن کو اللہ کرانا چاہتا ہے یہ وہ نماز نہیں ہے جو مسجد میں پڑھی جاتی یہ وہ نماز ہے جو مسجد میں نماز پڑھنے پر حکومت ملے گی اس وقت اس حکومت میں اللہ کے قانون نافذ کریں گے اس لئے صلوٰۃ قائم کرنے کا مطلب ہوا اللہ کا فرمانبردار ہو کر دوسروں کو فائدہ دینا. صلوٰۃ کی اصل تعریف سورت المومنوں کی آیات ا سے ۱۰ تک اور سورت المعارج کی آیت ۲۲ سے ۳۵ تک میں دیکھی جائے ان میں دو صلوٰۃ ہیں ایک مسجد والی اور دوسری کامل اللہ کی فرمانبرداری اپنی پوری زندگی کے کاموں میں اللہ کے حکموں کو نافذ کریں عمل کے ساتھ یہ ہے وہ صلوٰۃ، مسجد اور عمل کی نماز دونوں ضروری ہیں.

(ऐ रसूल!) यदि वह लोग तुमको झुटलाते है तो उनसे पहले नूह की जाति और आद और समूद भी (अपने रसूलों को) झुटला चुके है (42)

(اے رسولؐ!) اگر وہ لوگ تم کو جھٹلاتے ہیں تو اُن سے پہلے نوح کی قوم اور عاد اور ثمود بھی (اپنے رسولوں کو) جھٹلا چکے ہیں (۴۲)

और जाति इब्राहीम और जातिलूत भी और मदयन के रहने वाले भी अपने अपने रसूलों को झुटला चुके है और मूसा अ० भी झुटलाए जा चुके है परन्तु मैं नास्तिकों को छूट देता रहा (कि वह नास्तिकता छोड़ दें परन्तु न छोड़ी तो) फिर उनको पकड़ लिया तो देख लो मेरा दण्ड उनके प्रति कैसा कठोर था (44)

اور قوم ابراہیم اور قوم لوط بھی (۴۳)

اور مدین کے رہنے والے بھی اپنے اپنے رسولوں کو جھٹلا چکے ہیں اور موسیٰ بھی جھٹلائے جا چکے ہیں لیکن میں کافروں کو مہلت دیتا رہا (کہ وہ کفر چھوڑ دیں مگر نہ چھوڑا تو) پھر ان کو پکڑ لیا تو دیکھ لو میرا عذاب ان کے حق میں کیسا سخت تھا (۴۴)

फिर (देखो) कितनी ही बस्तियां है कि हमने उनको नष्ट कर डाला कि वह अवज्ञाकारी थी सो वह आज अपनी छतो पर उल्टी पड़ी है कूप बेकार हो गए और भवन ध्वस्त पड़े है क्या उन लोगों ने देश में भ्रमण नही किया ताकि उनके हृदय ऐसे होते कि उनसे समझ सकते और कान ऐसे होते कि उनसे सुन सकते बात यह है कि आंखे अन्धी नही होती

پھر (دیکھو) کتنی ہی بستیاں ہیں کہ ہم نے ان کو تباہ کر ڈالا کہ وہ نافرمان تھیں سو وہ آج اپنی چھتوں پر اُلٹی پڑیں ہیں کنویں بے کار ہو گئے اور محل ویران پڑے ہیں (۴۵)

کیا ان لوگوں نے ملک میں سیر نہیں کی تا کہ ان کے دل (ایسے) ہوتے کہ ان سے سمجھ سکتے اور کان ایسے ہوتے

अपितु हृदय जो वृक्षों में है वह अन्धे होते है (46) {11:21, 14:37, 33:4}

(ऐ मुहम्मद स0!) और (वह लोग) आप से कष्ट के लिए जल्दी मचा रहे है (और कहते है कि यह यातना कब आएगी, जिसकी धमकी दी जा रही है? जब से कहो जकड़ जाएगी) ईश्वर कदापि अपने के वचन विपरीत न करेगा, तुम्हारे ईश्वर के यहां एक दिन की मात्रा तुम्हारे हिसाब से हजार वर्षों के बराबर है (प्रतीक्षा करो) (47){70:4, 32:5}

और बहुत सी बस्तियां है कि मै उनको छूट देता रहा और वह अवज्ञा करती थी फिर मैने उनको पकड़ लिया और मेरी ही ओर लौट कर आना है (48)

(ऐ मुहम्मद स0!) कहदो कि लोगों! मैं तुमको खुल्लम खुल्ला उपदेश करने वाला हूं (49)

तो जो लोग विश्वास लाए और कर्म अच्छे किए उनके लिए क्षमा और सम्मान की जीविका है (50)

और जिन लोगों ने हमारी धाराओं (के विरोध) में हमें विवश करने का प्रयत्न किया वह नर्क में जाने वाले है (51)

और ऐ नबी आपसे पहले हमने न कोई ऐसा रसूल भेजा है और न नबी (जिसके साथ यह प्रसंग प्रस्तुत न आया हो कि) जब उसने धर्म प्रचार किया और उसने वह इच्छा कामना की कि लोग इस धर्म को स्वीकार कर लें तो शैतान उस कार्य में (लोगों के मनों में) व वसवसे डाल कर बाधक हो गया, इस प्रकार शैतान जो कुछ बाधकता करता है ईश्वर उनको मिटा देता है, और अपनी आयात जो नबी ने लोगों को सुनाई है उनके हृदयों में पक्की कर देता है, ईश्वर ज्ञानी जानने वाला और नीतिज्ञ है (52) {6:34,112,114,141, 7:20, 23:97,98, 16:63, 45:31,34, 26:210,211,221, 41:42, 44:24, 43:7}

नोट- नबी की अभिलाषा और इच्छा यह होती थी कि सारे इन्सान ईश्वर के धर्म को स्वीकार कर लें और यही कार्य नबी का होता है, परन्तु जब ईशदूत ईश्वर के धर्म को लोगों को सुनाते थे तो शैतान उन लोगों जिनको नबी ने सम्बोधित किया था के मनों में भांति भांति के विचार भ्रम डालता था और कहता था कि यह नबी नही है और न ईश्वर ने इस पर वही की है अपितु यह स्वयं ही बना बनाकर कहता है कल तो यह तुम्हारे साथ कारोबार करता था न इसके पास कोई चिन्ह है बस तुम अपने पूर्वजों के मार्ग पर चलते रहो, यह कार्य तो शैतान का हुआ, इसके विपरीत जब ईशदूत लोगों पर परिश्रम करते थे तो उन लोगों के मन से शनैः शनैः शैतानी वसवसे भ्रम निकल जाते थे और ईशदूत की शिक्षा लोगों के हृदयों में ईश्वर का धर्म या आयात पक्की हो जाती थी,

अर्थ यह हुआ कि ईश्वर अपने रसूल को सांत्वना देता है कि हमने आपसे पहले कोइ रसूल कोई नबी ऐसा नही भेजा जिसके साथ यह प्रसंग न हुआ कि जब उसने अपने उद्देश्य बलपैकार लाने चाहे तो शैतान ने उसके संकल्पों के मार्ग में रुकावट डाली, अतः ईश्वर उस वस्तु को मिटा देता है जो शैतान डालता है और अपनी आयात को स्थिरता प्रदान करता है,

کہ ان سے سن سکتے بات یہ ہے کہ آنکھیں اندھی نہیں ہوتیں بلکہ دل جو سینوں میں ہیں وہ اندھے ہوتے ہیں (۴۶)[۱۱:۲۰؛۱۴:۳۷؛۳۳:۴]

(اے محمدؐ!) اور (وہ لوگ) آپ سے عذاب کے لئے جلدی مچا رہے ہیں (اور کہتے ہیں آخر وہ عذاب کب آئے گا جس کی دھمکی دی جا رہی ہے؟ ان سے کہو ضرور آئے گا) اللہ ہرگز اپنے وعدے کے خلاف نہ کرے گا۔ تمہارے رب کے یہاں ایک یوم کی مقدار تمہارے حساب سے ہزار برس کے برابر ہے انتظار کرو (۴۷)[۷۰:۴؛۳۲:۵]

اور بہت سی بستیاں ہیں کہ میں ان کو مہلت دیتا رہا اور وہ نافرمان تھیں پھر میں نے ان کو پکڑ لیا اور میری ہی طرف لوٹ کر آنا ہے (۴۸)

(اے محمدؐ!) کہدو کہ لوگو! میں تم کو کھلم کھلا نصیحت کرنے والا ہوں (۴۹)

تو جو لوگ ایمان لائے اور کام نیک کئے ان کے لئے بخشش اور آبرو کی روزی ہے (۵۰)

اور جن لوگوں نے ہماری آیتوں (کی مخالفت) میں ہمیں عاجز کرنے کی کوشش کی وہ دوزخ میں جانے والے ہیں (۵۱)

اور اے نبی تم سے پہلے ہم نے نہ کوئی رسول ایسا بھیجا ہے اور نہ نبی (جس کے ساتھ یہ معاملہ پیش نہ آیا ہو کہ) جب اس نے تبلیغ دین کی اور اس نے یہ تمنا کی کہ لوگ اس دین کو قبول کرلیں تو شیطان اس کام میں (لوگوں کے دلوں میں) وسوسے ڈال کر خلل انداز ہوگیا اس طرح شیطان جو کچھ خلل اندازیاں کرتا ہے اللہ ان کو مٹا دیتا ہے اور اپنی آیات جو نبی نے لوگوں کو سنائیں ہیں ان کے دلوں میں پختہ کر دیتا ہے اللہ علیم ہے اور حکیم ہے (۵۲)[۶:۳۴،۱۱۲،۱۱۴،۱۴۱؛ ۷:۲۰؛ ۲۳:۹۷،۹۸؛ ۱۶:۶۳؛ ۴۵:۳۱،۳۴؛ ۲۶:۲۱۰،۲۱۱،۲۲۱؛ ۴۱:۴۲؛ ۴۴:۲۴؛ ۴۳:۷]

نوٹ:۔ نبی کی تمنا آرزو اور خواہش یہ ہوتی تھی کہ سارے انسان اللہ کے دین کو قبول کرلیں اور یہی کام نبی کا ہوتا ہے مگر جب نبی اللہ کے دین کو لوگوں کو سناتے تھے تو شیطان ان لوگوں کو جن کو نبی نے خطاب کیا تھا کہ دلوں میں طرح طرح کے خیالات وسوسے ڈالتا تھا اور کہتا تھا کہ یہ نبی نہیں ہے۔ اور نہ اللہ نے اس پر وحی کی ہے بلکہ یہ خود ہی بنا بنا کر کہتا ہے۔ کل تو یہ تمہارے ساتھ کاروبار کرتا تھا۔ نہ اس کے پاس کوئی نشانی ہے بس تم اپنے بزرگوں کے رستے پر چلتے رہو یہ کام تو شیطان کا ہوا جو لوگوں کے دلوں میں وسوسے ڈالتا ہے۔ اس کے برعکس جب نبی لوگوں پر محنت کرتے تھے تو ان لوگوں کے دلوں سے رفتہ رفتہ شیطانی وسوسے نکل جاتے تھے اور نبی کی تعلیم لوگوں کے دلوں میں اللہ کا دین یا آیات پختہ ہو جاتی تھیں۔

مطلب یہ ہوا کہ اللہ اپنے رسول کو دلاسہ دیتا ہے کہ ہم نے آپ سے پہلے کوئی رسول کوئی نبی ایسا نہیں بھیجا جس کے ساتھ یہ معاملہ نہ ہوا کہ جب اس نے اپنے مقاصد بروئے کار لانے چاہے تو شیطان نے اس کے عزائم کی راہ میں رکاوٹ ڈالی۔ پس اللہ اس چیز کو مٹا دیتا ہے جو شیطان ڈالتا ہے اور اپنی آیات کو ثبات بخشتا ہے۔

संसार के इतिहास में अवतरण कुरआन से बढ़कर कोई घटना नहीं और आह्वान मुहम्मद स0 से महाविराट कोई आन्दोलन नहीं इसलिए इस आन्दोलन की तुलना में जो आन्दोलन उठे वह भी शक्तिशाली होना चाहिए तब ही तो आस्तिकों की परीक्षा होगी, अब चूंकि कोई नबी आने वाला नहीं और कुरआन पवित्र की आकृति में मुसलमानों का नबी हर समय विद्यमान है, अतः तहकीम आयात बिल्लाह और तनसीख मा युलक्श शैतान का कार्य आस्तिकों के द्वारा जो संमार्ग व पथ प्रदर्शन के वादी होते हैं पूरा होता रहा है होता रहेगा जो भांति भांति के पाखण्ड तथाकथित मुसलमान बनाकर लाते हैं वह आस्तिकों के द्वारा नष्ट होते रहते हैं इस घटना का विवरण मेरी पुस्तक नामूस रसूल में अवलोकन हो, इस आयत की तफसीर में आलिमों ने वह कुछ लिखा है जो कुरआन को शक के घेरे में लाता है अतः उनका लिखना अनुचित है,

اہل عالم کی تاریخ میں نزول قرآن سے بڑھ کر کوئی واقعہ نہیں اور دعوت محمدیہ سے عظیم تر کوئی تحریک نہیں. اس لئے اس تحریک کے مقابلہ میں جو تحریکیں اٹھیں وہ بھی طاقت ور ہونی چاہیے. تب ہی تو مومنوں کی آزمائش ہوگی. اب چونکہ کوئی نبی آنے والا نہیں اور قرآن مجید کی صورت میں مسلمانوں کا نبی ہر وقت موجود ہے لہٰذا تحکیم آیات باللہ اور تنسیخ مایلقی الشیطان کا کام مومنوں کے ذریعہ جو رشد و ہدایت کے دعوے دار ہوتے ہیں پورا ہوتا رہا ہے ہوتا رہے گا جو طرح طرح کی بدعات نام نہاد مسلمان بنا کر لاتے ہیں وہ مومنوں کے ذریعہ ختم ہوتی رہتی ہیں اس واقعہ کی تفصیل میری کتاب ناموس رسول میں ملاحظہ ہو اس آیت کی تفسیر میں عالموں نے وہ کچھ لکھ رکھا ہے جو قرآن کو شک کے گھیرے میں لاتا ہے اس لئے ان کا لکھا غلط ہے.

इसमें ईश्वर की नीति यह रही है कि शैतान का डाला भ्रम उन लोगों की परिक्षा का साधन हो जाए जिन के मनों में (कपट का) रोग लगा हुआ है, और जिनके हृदय (सच्चाई की ओर से) कठोर हो गए हैं निःसंदेह वह अन्यायी बड़े गहरे विरोध में पड़े हैं (53)

اس میں اللہ کی مصلحت یہ رہی ہے کہ شیطان کی وسوسہ اندازی ان لوگوں کی آزمائش کا ذریعہ ہو جائے جن کے دلوں میں (نفاق کا) روگ لگا ہوا ہے. اور جن کے دل (سچائی کی طرف سے) سخت ہو گئے ہیں. بے شک وہ ظالم بڑی گہری مخالفت میں پڑے ہیں (۵۳)

और इसमें यह भी उद्देश्य है कि ज्ञान वाले जान ले कि यह प्रसंग वास्तव में तेरे रब ही की ओर से है (जिससे आस्तिक और नास्तिक का पता चलता रहे) इस प्रकार (इस वही पर) इस पर विश्वास ले आएं और उनके हृदय नम्रता करें और जो लोग विश्वास लाएं हैं ईश्वर उनको सीधे मार्ग पर चलाने वाला है (54)

اور اس میں یہ بھی مصلحت ہے کہ اہل علم جان لیں کہ یہ معاملہ درحقیقت تیرے رب ہی کی طرف سے ہے (جس سے مومن اور کافر کا پتہ چلتا رہے) اس طرح (اس وحی پر) اس پر ایمان لے آئیں اور ان کے دل عاجزی کریں اور جو لوگ ایمان لاتے ہیں اللہ ان کو سیدھی راہ پر چلانے والا ہے (۵۴)

और इनकार करने वाले तो इसकी ओर से शंका करते ही रहेंगे यहां तक कि महाप्रलय की घड़ी अचानक उनके सिरों पर आ जाए या किसी मन्हूस दिन का कष्ट उन पर अवतरित हो जाए (55)

اور انکار کرنے والے تو اس کی طرف سے شک کرتے ہی رہیں گے یہاں تک کہ قیامت کی گھڑی اچانک ان کے سروں پر آجائے یا کسی منحوس دن کا عذاب ان پر نازل ہو جائے (۵۵)

और उस दिन राज्य ईश्वर ही का होगा और वह उनमें निर्णय कर देगा तो जो लोग विश्वास लाए और कर्म शुभ करते रहे वह प्रसादों के उपवनों में होंगे (56)

اور اس روز بادشاہی اللہ ہی کی ہوگی اور وہ ان میں فیصلہ کر دے گا تو جو لوگ ایمان لائے اور عمل نیک کرتے رہے وہ نعمت کے باغوں میں ہوں گے (۵۶)

नोट- आयत 52 का स्पष्टि करण आयात 53 से 56 तक बड़ी अच्छी प्रकार हो गया और हर व्यक्ति जान लेगा कि शैतान के भ्रम किन लोगों के मनों मे डाले जाते हैं नबी या इन्सानों के दिलों में, आयात में है कि वह विकार सामान्य व्यक्तियों के हृदय में डालता है न कि ईशदूत के हृदय में परन्तु दुख है कि आयत 52 की अवतर्ण महिमा में कुछ ऐसा लिखा है कि वह विकार ईशदूत के मन में डाला जाता था, और बड़े-बड़े आलिमों ने लिखा है जो बिलकुल मिथ्या और कालपनिक है और इस अवतर्ण महिमा को लेकर मुसतशरकीन ईशदूत की प्रतिष्ठा मे अशिष्टता करते हैं और इस काल में एक इस्लाम और रसूल के शत्रु सलमान रुश्दी ने भी अपनी पुस्तक "शैतानी आयात" में इस अवतर्ण महिमा का सहारा लेकर दोषारोपण किया है, और ऐसा कुछ लिखा है जिसको एक समझदार व्यक्ति नही लिख सकता परन्तु क्या किया जाए जब व्यक्ति पर शैतान अपना अधिकार कर लेता है तो उसकी बुद्धि नष्ट हो जाती है, और वह ऐसे कार्य करता है जिनसे उसका पथ भ्रष्ट होना अनिवार्य हो जाता है जिसके लिए ईश्वर ने कहा है कि उनके दिलों पर ताले लग जाते हैं

نوٹ:۔ آیت ۵۲ کی وضاحت آیات ۵۳ سے ۵۶ تک بڑی اچھی طرح سے ہو گئی اور ہر آدمی یہ جان لے گا کہ شیطان کے وسوسے کن لوگوں کے دلوں میں ڈالے جاتے ہیں نبی یا انسانوں کے دلوں میں، آیات میں ہے کہ وہ خلل عام انسانوں کے دلوں میں ڈالتا ہے نہ کہ نبی کے دل میں. لیکن افسوس ہے کہ آیت ۵۲ کے شان نزول میں کچھ ایسا لکھا ہے کہ وہ خلل نبی کے دل میں ڈالا جاتا تھا اور بڑے بڑے عالموں نے لکھا ہے جو بالکل غلط اور فرضی ہے اور اس شان نزول کو لے کر مستشرقین نبی کی شان میں گستاخی کرتے ہیں اور اس زمانے میں ایک دشمن اسلام و رسول سلمان رشدی نے بھی اپنی کتاب شیطانی آیات میں اس شان نزول کا سہارا لے کر الزام تراشی کی ہے. اور ایسا کچھ لکھا ہے جس کو ایک سمجھدار انسان نہیں لکھ سکتا مگر کیا کیا جائے جب انسان پر شیطان اپنا قبضہ کر لیتا ہے تو اس کی عقل خراب ہو جاتی ہے اور وہ ایسے کام کرتا ہے جن سے اس کا گمراہ ہونا یقینی ہو جاتا ہے جس کے لئے اللہ نے کہا ہے کہ ان کے دلوں پر تالے لگ جاتے ہیں.

और जो नास्तिक होंगे और हमारी आयात को झुठलाऐंगे उनके लिए अपमानित करने वाला कष्ट होगा (57)

اور جو کافر ہوں گے اور ہماری آیات کو جھٹلائیں گے ان کے لئے ذلیل کرنے والا عذاب ہوگا(۵۷)

और जिन लोगों ने ईश्वर के मार्ग में पलायन किया फिर मारे गए या मर गए उनको ईश्वर अच्छी जीविका देगा निःसन्देह ईश्वर सबसे अच्छा जीविका देने वाला है (58) {2:154}

اور جن لوگوں نے اللہ کی راہ میں ہجرت کی پھر مارے گئے یا مر گئے ان کو اللہ اچھی روزی دے گا بے شک اللہ سب سے اچھا رزق دینے والا ہے(۵۸)[۲:۱۵۴]

वह उनको ऐसे स्थान में प्रविष्ट करेगा जिसे वह पसन्द करेंगे और ईश्वर तो जानने वाला सहनशील है (59)

وہ ان کو ایسے مقام میں داخل کرے گا جسے وہ پسند کریں گے اور اللہ تو جاننے والا بردبار ہے(۵۹)

यह तो है उनका फल और जो कोई बदला ले वैसा ही जैसा उसके साथ किया गया और फिर उस पर अत्याचार भी किया गया हो तो ईश्वर उसकी सहायता अवश्य करेगा ईश्वर क्षमा करने वाला है (60)

یہ تو ہے ان کا انجام اور جو کوئی بدلا لے ویسا ہی جیسا اس کے ساتھ کیا گیا. اور پھر اس پر زیادتی بھی کی گئی ہو تو اللہ اس کی مدد ضرور کرے گا اللہ معاف کرنے والا اور درگزر کرنے والا ہے(۶۰)

और (प्रतिशोध की आज्ञा इसलिए दी गई है कि अन्याय के स्थान न्याय की स्थापना हो जिस प्रकार) ईश्वर रात्रि को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात्रि में (इसी प्रकार वह अन्याय को मिटाकर न्याय स्थिर करता है और जालिम न्याय को मिटाकर अन्याय करना चाहते हैं) और ईश्वर सुनने वाला जानने वाला है (61)

اور یہ (انتقامی کارروائی کی اجازت اس لئے دی گئی ہے کہ ظلم کی جگہ عدل کا قیام ہو جس طرح) اللہ رات کو دن میں داخل کرتا ہے اور دن کو رات میں (اسی طرح وہ ظلم کو مٹا کر عدل قائم کرتا ہے اور ظالم عدل کو مٹا کر ظلم کرنا چاہتے ہیں) اور اللہ سننے والا جاننے والا ہے(۶۱)

यह (स्थिति) इसलिए होती है कि सत्य केवल ईश्वर का अस्तित्व है और ईश्वर को छोड़कर जिन अस्तित्वों को (सत्य के विरोधी) पुकारते हैं वह असत्य है (और ईश्वर सत्य को शेष रखता है और असत्य को मिटाता रहता है अतः) ईश्वर प्रतिष्ठावान और बड़ाई का मालिक है (62)

یہ (صورت حال) اس لئے ہوتی ہے کہ حق صرف اللہ کی ہستی ہے اور اللہ کو چھوڑ کر جن ہستیوں کو (منکرین حق) پکارتے ہیں وہ باطل ہیں (اور اللہ حق کو باقی رکھتا ہے اور باطل کو مٹاتا رہتا ہے اس لئے کہ) اللہ عالی مرتبہ والا اور بڑائی کا مالک ہے(۶۲)

क्या आपने यह (दृश्य) नहीं देखा कि ईश्वर ऊपर से पानी बरसाता है और (सूखी) पृथ्वी हरित होकर लेहलहाने लगती है (इसी प्रकार ईश्वर ज़ुल्म के स्थान पर न्याय स्थिर करता है परन्तु न्याय को स्थिर करने के लिए सदाचारी मनुष्य ही आगे आते हैं ईश्वर उनकी सहायता करता है तब न्याय स्थापित होता है) निःसन्देह ईश्वर कृपालु और अवगत है (63)

کیا آپ نے یہ (منظر) نہیں دیکھا کہ اللہ اوپر سے پانی برساتا ہے اور (سوکھی) زمین سرسبز ہو کر لہلہانے لگتی ہے (اس طرح اللہ ظلم کی جگہ عدل قائم کرتا ہے لیکن عدل کو قائم کرنے کے لئے نیک آدمی ہی آگے آتے ہیں اللہ ان کی مدد کرتا ہے تب عدل قائم ہوتا ہے) بے شک اللہ مہربان اور خبردار ہے(۶۳)

जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है सब उसी का बनाया हुआ उसी के लिए है (परन्तु ईश्वर को उनकी बिल्कुल आवश्यकता नहीं) निःसन्देह ईश्वर निष्काम और प्रशंसा योग्य है (64)

جو کچھ آسمانوں میں ہے اور جو کچھ زمین میں ہے سب اسی کا بنایا ہوا اسی کے لئے ہے. (مگر اللہ کو ان کی بالکل ضرورت نہیں) بے شک اللہ بے نیاز اور تعریف کے لائق ہے(۶۴)

क्या आपने नही देखा कि जितनी वस्तुऐं पृथ्वी में हैं सब ईश्वर ने तुम्हारे लिए अर्जित की हैं (अर्थात तुम्हारे काम में लगा रखी हैं) और नावें भी जो उसके नियम से दरया में चलती हैं और वह आकाश को थामे रहता है कि पृथ्वी पर न गिर पड़े (अर्थात हर वस्तु उसके नियम की आबद्ध है) निःसन्देह यह उसके नियम से है निःसन्देह ईश्वर लोगों पर अत्यन्त ममता करने वाला है कृपालु है (65)

کیا آپ نے نہیں دیکھا کہ جتنی چیزیں زمین میں ہیں سب اللہ نے تمہارے لئے فراہم کی ہیں (یعنی تمہارے کام میں لگا رکھی ہیں) اور کشتیاں بھی جو اس کے قانون سے دریا میں چلتی ہیں اور وہ آسمان کو تھامے رہتا ہے کہ زمین پر نہ گر پڑے (یعنی ہر چیز اس کے قانون کی پابند ہے) یقیناً یہ اس کے قانون سے ہے بے شک اللہ لوگوں پر نہایت شفقت کرنے والا مہربان ہے(۶۵)

और वही तो है जिसने तुमको जीवन दियाफिर तुम को मारता है फिर तुम्हें जीवित करेगा और इन्सान तो बड़ा अवज्ञाकारी है (66)

اور وہی تو ہے جس نے تم کو حیات بخشی پھر تم کو مارتا ہے پھر تمہیں زندہ کرے گا اور انسان تو بڑا نافرمان ہے(۶۶)

हर समुदाय के लिए हमने पूजा (बध आदि की) की एक ही रीति निश्चित की है तो उसका अनुकरण

ہر امت کے لئے ہم نے عبادت (ذبح وغیرہ کا) کا ایک ہی طریقہ مقرر کیا ہے تو اس کی پیروی کریں پس اے نبی وہ

करें अतः ऐ नबी वह इस विषयमें तुम से झगड़ा न करें तुम अपने रब के धर्म की ओर निमंत्रण दो निःसन्देह आप सीधे मार्ग पर हो (67) {52:34; 42:13,17; 52:67}

नोट- सब ईशदूतों को यही धर्म विधान दिया था जो मुहम्मद स0 को दिया गया है अतः हर विधि चाहे वह वध की हो या पूजा की या और कोई नियम हो यही था जो कुरआन में अंकित है परन्तु दूसरी जातियों ने हठ में आकर विधि बदल रखी है अतः ऐ मुहम्मद स0 आपकी विधि पर वह लोग झगड़ा करेंगे परन्तु आप अपने कुरआन के अनुसार व्यवहार करते रहो यही सीधा मार्ग है.

दूसरे समुदाय तो अपने स्थान पर रहे उन्होंने विधि बदल दी परन्तु आज मुस्लिम जाति ने भी अपने अपने तरीके फिकाह धर्म विधान पृथक पृथक कर लिए है और हर एक अपने को सत्य पर बता रहा है दूसरे को नास्तिक परन्तु ईश्वर मतभेद करने वालों को अनेकेश्वर वादी बता रहा है (30:32-33)

اس معاملے میں تم سے جھگڑا نہ کریں تم اپنے رب کے دین کی طرف دعوت دو یقیناً تم سیدھے رستے پر ہو (۶۷) [۵۲:۳۴؛ ۴۲:۱۳،۱۷؛ ۵۲:۶۷]

نوٹ:۔ سب نبیوں کو یہی شریعت دی تھی جو محمدؐ کو دی گئی اس لئے ہر طریقہ چاہے وہ ذبح کا ہو یا عبادت کا یا اور کوئی قانون ہو یہی تھا جو آج قرآن میں درج ہے لیکن دوسری قوموں نے ضد میں آکر طریقے بدل رکھے ہیں۔ اس لئے اے محمدؐ تمہارے طریقے پر وہ لوگ جھگڑا کریں گے مگر آپ اپنے قرآن کے مطابق عمل کرتے رہو یہی سیدھا رستہ ہے

دوسری قومیں تو اپنی جگہ پر رہیں انہوں نے طریقے بدل لئے مگر آج مسلم قوم نے بھی اپنے اپنے طریقے فقہ الگ الگ کر لئے ہیں اور ہر ایک اپنے کو حق پر بتا رہا ہے دوسرے کو کافر مگر اللہ اختلاف کرنے والوں کو مشرک بتا رہا ہے (۳۰:۳۲،۳۳)

और यदि आपसे झगड़ा करे तो कहदो कि जो कर्म तुम करते हो ईश्वर उनसे भली भांति अवगत है (68)

اور اگر لوگ آپ سے جھگڑا کریں تو کہدو کہ جو عمل تم کرتے ہو اللہ ان سے خوب واقف ہے (۶۸)

जिन बातों में तुम मत भेद करते हो ईश्वर तुम में महाप्रलय के दिन और उनमें निर्णय कर देगा (69)

جن باتوں میں تم اختلاف کرتے ہو اللہ تم میں قیامت کے دن اور ان میں فیصلہ کردے گا (۶۹)

क्या आप नही जानते कि आकाश और पृथ्वी की हर वस्तु ईश्वर के ज्ञान में है (यही नही अपितु) यह सारी बातें एक पुस्तक (ईश्वर के ज्ञान की पुस्तक) में अंकित है (जो वह बता रहा है उसको) ऐसा करना ईश्वर को कोई कठिन कार्य नहीं है (70)

کیا آپ نہیں جانتے کہ آسمان اور زمین کی ہر چیز اللہ کے علم میں ہے (یہی نہیں بلکہ) یہ ساری باتیں ایک کتاب (اللہ کے علم کی کتاب) میں درج ہیں (جو وہ بتا رہا ہے اس کو) ایسا کرنا اللہ کو کوئی مشکل کام نہیں ہے (۷۰)

और वह लोग ईश्वर को छोड़कर उन वस्तुओं की पूजा करते हैं जिनके लिए ईश्वर ने न तो कोई प्रमाण अवतरित किया है और न उनके पास इसके विषय में कोई जानकारी है और ऐसे जालियों का कोई सहायक नही है (71)

اور وہ لوگ اللہ کو چھوڑ کر ان چیزوں کی بندگی کرتے ہیں جن کے لئے اللہ نے نہ تو کوئی سند نازل کی ہے اور نہ ان کے پاس اس کے بارے میں کوئی علم ہے اور ایسے ظالموں کا کوئی مددگار نہیں ہے (۷۱)

और जब उनको हमारी स्पष्ट आयतें पढ़कर सुनाई जाती है तो तुम देखते हो कि सत्य के विरोधियों के मुख बिगड़ने लगते है और ऐसा अनुभूत होता है कि अभी वह उन लोगों पर टूट पड़ेंगे जो उन्हें हमारी आयात सुनाते है उनसे कहो यदि तुमको हमारी आयात बुरी लगती है तो सुनो! मैं बताऊं तुम्हें कि जो जीर्ण स्थिति तुम्हारी इस कुरआन को सुन कर हो रही है इससे भी बुरा कष्ट तुम्हारे लिए क्या है वह (नर्क की) अग्नि है जिसका ईश्वर ने नास्तिकों से वचन किया है और वह बुरा स्थान है (72)

اور جب ان کو ہماری صاف آیتیں پڑھ کر سنائی جاتی ہیں تو تم دیکھتے ہو کہ منکرین حق کے چہرے بگڑنے لگتے ہیں اور ایسا محسوس ہوتا ہے کہ ابھی وہ ان لوگوں پر ٹوٹ پڑیں گے جو انہیں ہماری آیات سناتے ہیں ان سے کہو اگر تم کو ہماری آیات بُری لگتی ہیں تو سنو! میں بتاؤں تمہیں کہ جو خراب حالت تمہاری اس قرآن کو سن کر ہو رہی ہے اس سے بھی بدتر تکلیف تمہارے حق میں کیا ہے وہ (دوزخ کی) آگ ہے جس کا اللہ نے کافروں سے وعدہ کیا ہے اور وہ بُرا ٹھکانا ہے (۷۲)

लोगों! एक उपमा वर्णन की जाति है ध्यान से सुनो कि जिनको तुम ईश्वर के अतिरिक्त पुकारते रहे हो वह एक मक्खि भी नही बना सकते यद्यपि उसके लिए सब एकत्र हो जाए और यदि उनसे मक्खि कोई वस्तु छीन ले जाए तो उसे छुड़ा नही सकते इच्छुक और इच्छित दोनों विवश है (73)

لوگو! ایک مثال بیان کی جاتی ہے غور سے سنو کہ جن کو تم اللہ کے علاوہ پکارتے رہے ہو وہ ایک مکھی بھی نہیں بنا سکتے اگر چہ اس کے لئے سب جمع ہو جائیں اور اگر ان سے مکھی کوئی چیز چھین لے جائے تو اسے چھڑا نہیں سکتے طالب و مطلوب دونوں بے بس ہیں (۷۳)

उन लोगों ने ईश्वर का आदर जैसा करना था नही किया निःसंदेह ईश्वर शक्तिशाली और अधिकार प्राप्त है (अर्थात उसकी आज्ञाकारी नही की) (74)

ان لوگوں نے اللہ کی قدر جیسی کرنی تھی نہیں کی بے شک اللہ زبردست اور غالب ہے (۷۴) [یعنی اس کی

فرمانبرداری نہیں کی]

ईश्वर फरिश्तों में से और इन्सानों में से संदेश पहुंचाने के लिए चुन लेता है निःसंदेह ईश्वर ही सुनने वाला और देखने वाला है (75) {18:110, 20:13, 35:32}

اللہ فرشتوں میں سے اور انسانوں میں سے پیغام پہنچانے کے لئے چھانٹ لیتا ہے بے شک اللہ ہی سننے والا اور دیکھنے والا ہے(۷۵)[۱۸:۱۱۰،۲۰:۱۳،۳۵:۳۲]

और ईश्वर जानता है जो उनके हाथो ने प्रकट किया है और गुप्त किया वह उससे अवगत है (और लिखा भी जा रहा है) और सब कर्मों का प्रत्यागमन ईश्वर ही की ओर है (76)

اور اللہ جانتا ہے جو ان کے ہاتھوں نے ظاہر کیا اور جو چھپا کر کیا وہ اس سے واقف ہے(اور لکھا بھی جا رہا ہے) اور سب کاموں کا رجوع اللہ ہی کی طرف ہے(۷۶)

आस्तिकों! नम्रता करते रहो और उसकी आज्ञाकारी करो और अपने ईश्वर की पूजा करो और सत्कर्म करो ताकि सफल हो (77)

مومنو! عاجزی کرتے رہو اور اس کی فرمانبرداری کرو اور اپنے رب کی عبادت کرو اور نیک کام کرو تاکہ کامیاب ہو(۷۷)

ईश्वर के मार्ग में धर्म युद्ध करो (अर्थात हर सत्कर्म में प्रयास परिश्रम करो) जैसा कि प्रयास करना उचित है उसने तुम्हें अपने काम के लिए चुन लिया है और धर्म में तुम पर कोई तंगी (अर्थात शक्ति से अधिक भार) नही रखा स्थिर हो जाओ अपने पिता इब्राहीम के धर्म पर ईश्वर ने पहले भी तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा था और इस कुरआन में भी मुस्लिम ताकि रसूल तुम्हारे लिए आदर्श हो और तुम लोगों के लिए आदर्श बनो अतः नमाज स्थापित करो और दान दो और ईश्वर से सम्बद्ध हो जाओ वह है तुम्हारा स्वामी और बहुत ही अच्छा स्वामी और बहुत ही अच्छा सहायक (78)

اللہ کی راہ میں جہاد کرو(یعنی ہر نیک کام میں جد وجہد محنت کرو) جیسا کہ جد وجہد کرنے کا حق ہے اس نے تمہیں اپنے کام کے لئے چن لیا ہے اور دین میں تم پر کوئی تنگی (یعنی طاقت سے زیادہ بوجھ) نہیں رکھی قائم ہو جاؤ اپنے باپ ابراہیم کی ملت پر اللہ نے پہلے بھی تمہارا نام مسلم رکھا تھا اور اس قرآن میں بھی مسلم تاکہ رسول تمہارے لئے نمونہ اور تم لوگوں کے لئے نمونہ بنو۔ پس نماز قائم کرو اور زکوۃ دو اور اللہ سے وابستہ ہو جاؤ وہ ہے تمہارا مولیٰ بہت ہی اچھا مولیٰ اور بہت ہی اچھا مددگار(۷۸)

पाराह कद अफ्लाहा 18

पارہ قد افلح (۱۸)

सूरत अल मूमिनून 23 मक्की

سورت المومنون (۲۳) مکی

बिसमिल्लाह इर्रहमानुर रहीम

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

निःसंदेह विश्वास करने वालों ने सफलता प्राप्त कर ली (1)

یقیناً ایمان لانے والوں نے کامیابی حاصل کر لی(۱)

जो अपनी सलात को ईश्वर के आदेश के अनुसार नम्रता से चुकता करते हैं (2) {19:59}

جو اپنی صلوٰۃ کو اللہ کے حکم کے مطابق عاجزی سے ادا کرتے ہیں(۲)[۱۹:۵۹]

(वह नम्रता वाली सलात और ईवर का आदेश क्या है? वह यह है) जो अशिष्ट बातो से मुख मोड़े रहते हैं (3)

(وہ عاجزی والی صلوٰۃ اور اللہ کا حکم کیا ہے؟ وہ یہ ہے) جو بےہودہ باتوں سے منہ موڑے رہتے ہیں(۳)

जो दान देने वाले (अर्थात) जो अपना शुद्धिकरण करते रहते हैं (4)

جو زکوۃ ادا کرنے والے یعنی جو اپنا تزکیہ کرتے رہتے ہیں(۴)

जो अपने गुप्तांगो की रक्षा करते हैं (5)

جو اپنی شرم گاہوں کی حفاظت کرتے ہیں(۵)

परन्तु अपनी पत्नियों से (और कुलीन पत्नी न होने पर जो उन स्त्रीयों से विवाह करें) जो मामलाकत ऐमान हैं उनसे मैथुन करने से उन्हे मर्त्सना नही (6)

مگر اپنی بیویوں سے (اور خاندانی بیوی نہ ہونے پر جو ان عورتوں سے نکاح کر لے) جو ملکت ایمان ہیں ان سے مباشرت کرنے میں انہیں ملامت نہیں(۶)

परन्तु जो उनके अतिरिक्त ओरो के इच्छुक हो वह सीमा से निकल जाने वाले हैं (7) {70:29-30}

لیکن جو ان کے علاوہ اوروں کے طالب ہوں وہ حد سے نکل جانے والے ہیں(۷)[۷۰:۲۹،۳۰]

नोट :- प्रश्न उत्पन्न होता है कि मामलाकत ऐमान कौन हैं? उनको कनीज़ (अनुचरी) माना है और मुसलमानों ने मान रखा है कि अनुचरी से मैथुन बिना विवाह के वैद्य है और मुहम्मद स0 के लिए कई कनीज़ (अनुचरी) मान रखी है कि उन के अन्तः पुरी में भी कनीज़ थी जिनसे मैथुन का सम्बद्ध था (नऊज़) परन्तु कुरआन कहता है कि बिना विवाह के मैथुन वैद्य नही {4:3-24-25} अतः मुहम्मद स0 के यहां

نوٹ:۔ سوال پیدا ہوتا ہے کہ ماملکت ایمان کون ہیں؟ ان کو کنیز مانا ہے اور مسلمانوں نے مان رکھا ہے کہ کنیز سے مباشرت بغیر نکاح کے جائز ہے اور محمدؐ کے لئے بھی کنیز مان رکھی ہیں کہ ان کے حرم میں بھی کنیزیں تھیں جن سے مباشرت کا تعلق تھا (نعوذ) لیکن قرآن کہتا ہے کہ بغیر نکاح کے مباشرت جائز نہیں (۴:۳،۲۴،۲۵) اس لئے محمدؐ کے یہاں ایسی کوئی کنیز نہیں تھی جس سے بغیر نکاح

کے مباشرت کرتے ہوں. کیا یہ امید کی جا سکتی ہے کہ محمدؐ قرآن کی خلاف ورزی کرتے تھے؟ ہرگز نہیں.

ماملکت ایمان کون ہیں اس پر بھی غور ضروری ہے. سورہ محمد آیت ۴/ تو جب کافروں سے تمہارا سامنا ہو تو گردنیں مارنا ہے. یہاں تک کہ جب انہیں خوب قتل کرلو تو مضبوط باندھو پھر اس کے بعد چاہے احسان کر کے چھوڑ دو چاہے فدیہ لے لو. یہاں تک کہ جنگ اپنے ہتھیار رکھ دے یعنی ختم ہو جائے (اور امن ہو جائے)

آیت میں حکم ہے کہ ان قیدیوں کو فدیہ لے کر چھوڑ دو یا ان پر رقم نہیں ہے تو احسان کر کے چھوڑ دو. مطلب یہ ہوا کہ ہر حالت میں چھوڑنا ہے.

یہ بھی ہو سکتا ہے کہ قیدیوں کے بدلے میں چھوڑ دیا جائے اس لئے آیت نے صاف بتا دیا کہ کسی آدمی عورت کو غلام کنیز بنانے کا کوئی جواز نہیں تو پھر محمدؐ اس آیت کی خلاف ورزی کیسے کر سکتے تھے اس لئے محمدؐ کے یہاں کوئی ایسی کنیز کا سوال نہیں جس سے مباشرت کی حد تک تعلق ہو اور نہ ہی کسی مسلمان کو جائز ہے. ہاں یہ ہو سکتا ہے کہ محمدؐ کے یہاں کوئی عورت کام کرنے والی ملازم ہو ایسے ہی مسلمان بھی کسی عورت کو ملازم رکھ سکتے ہیں لیکن مباشرت نہیں کر سکتے.

تو ماملکت ایمان کون ہیں؟ یہ وہ ہیں جو مسلم حکومت میں رہنا چاہیں جب مسلمان ان قیدیوں کو چھوڑتے ہیں جن کو جنگ میں گرفتار کیا تھا اور جب ان کو آزاد کیا جائے گا تو ہو سکتا ہے بہت سے مرد اور عورت ایسے ہوں جن کا اب ان کے اصل ملک میں کوئی عزیز باقی نہ رہا ہو. یا وہ قید میں رہتے ہوئے اسلام سے متاثر ہو گئے ہوں اور اسلام قبول کر لیا ہو. اور وہ لوگ واپس نہ جانا چاہتے ہوں اسلامی مملکت میں ہی رہنا چاہتے ہوں تو حکومت کا فرض ہو جاتا ہے کہ ایسے مرد عورتوں کو اپنی تحویل میں لے کر اپنی حفاظت میں رکھیں اور ان کی دیکھ بھال کریں اگر وہ اپنے طریقے سے مملکت میں رہتے ہیں تو اس حالت میں ان کا کوئی سہارا نہ ہوگا اور اوباش قسم کے آدمی ان کا استحصال کریں گے. اس لئے ضروری ہے کہ ان کی دیکھ بھال حکومت کرے. اور حکومت کی حفاظت میں آنے پر ہی ان کو ماملکت ایمان کہا گیا. یعنی جو تمہارے عہد میں ہیں داہنے ہاتھ میں. تو ان کو غلام کنیز نہیں کہا جائے گا وہ آزاد ہیں. اور وہ آپس میں بھی نکاح کر سکتے ہیں یا وہ مرد عورتیں اصل باشندوں میں سے بھی اس حاکم کی منظوری سے جو اس محکمہ کا حاکم ہو نکاح کر سکتے ہیں قانون کے مطابق بغیر نکاح کے مباشرت نہیں ہو سکتی یہ ہے ماملکت ایمانکم نہ کہ کنیز (۴:۲۵)

کنیز غلام کا تو اسلام میں سوال ہی نہیں اور جو ایسی عورتوں کے ساتھ بغیر نکاح کے مباشرت کرنے کو کہتے ہیں یا کرتے ہیں تو ان کو اسلامی قانون کے مطابق سزا دی جائے اور وہ توبہ بھی کریں اور آج تک جو رٹ لگائے جا رہے ہیں کہ محمدؐ کے حرم میں بھی بغیر نکاحی کنیزیں تھیں اور آپ نے ان سے مباشرت کے تعلق رکھے ہوئے تھے وہ تہمت کے مرتکب ہو رہے ہیں ان کو بھی تہمت کے تحت سزا دینی چاہیے اور توبہ کریں.

ماملکت ایمان کی ایک قسم اور یہ ہے جو گھروں میں یا کارخانوں میں ملازمت کرتے ہیں.

ایک قسم یہ بھی ہے جو اسلام سے پہلے سے غلام اور کنیزیں تھیں ان کو

ऐसी कोई कनीज़ नही थी जिससे बिना विवाह के मैथुन करते हो, क्या यह आशा की जा सकती है कि मुहम्मद स0 कुरआन की अवहेलना करते थे? कदापि नही.

मा मलाकत ऐमान कौन है इस पर भी विचार अनिवार्य है सूरत मुहम्मद स0 आयत 4 तो जब नास्तिकों से तुम्हारा सामना हो तो गर्दनों का मारना है यहां तक कि जब उन्हें भलि भांति वध करलो तो सुदृढ़ बान्धों फिर इसके बाद चाहे उपकार करके छोड़ दो चाहे प्राण मूल्य लेलो यहां तक कि युद्ध अपने शस्त्र रखदे अर्थात समाप्त हो जाए (और शान्ति हो जाए) आयत में आदेश है कि उन बन्दियों को प्राण मूल्य लेकर छोड़ दो या उन पर धन नही है तो उपकार करके छोड़ दो, अर्थ यह हुआ कि हर स्थिति मे छोड़ना है.

यह भी हो सकता है कि बन्दियों के बदले छोड़ दिया जाए अतः आयत ने स्पष्ट बता दिया कि किसी नर-नारी को दास (कनीज़) बनाने का कोई औचित्य नही तो फिर मुहम्मद स0 इस आयत का विरोध कैसे कर सकते थे अतः मुहम्मद स0 के यहां कोई ऐसी कनीज़ का प्रश्न ही नही जिससे मैथुन की सीमा तक सम्बन्ध हो और न ही किसी मुसलमान को वैध है, हां, यह हो सकता है कि मुहम्मद स0 के यहां कोई स्त्री काम करने वाली कर्मचारी हो ऐसे ही मुसलमान भी किसी स्त्री को कर्मचारी मुलाजिम रख सकते है परन्तु मैथुन नही कर सकते.

तो मामलाकत ऐमान कौन है? यह वह है जो मुस्लिम राज्य में रहना चाहें जब मुसलमान उन बन्दियों को छोड़ते है जिन को युद्ध में बन्दी बनाया था और जब उनको स्वतंत्र किया जाएगा तो हो सकता है बहुत से नर और नारी ऐसे हो जिनका उनके मूल देश में कोई प्रिय शेष न रहा हो या वह बन्दी रहते हुए इस्लाम से प्रभावित हो गए हों और इस्लाम स्वीकार कर लिया हो और वह लोग वापस न जाना चाहते हो, इस्लामी राज्य में ही रहना चाहते हो तो राज्य का कर्तव्य हो जाता है कि ऐसे पुरुष स्त्री को अपने अधिकार में लेकर अपनी सुरक्षा में रखेंगे और उनकी देखभाल करेंगे यदि वह अपने ढंग से राज्य में रहते है तो इस स्थिति में उनका कोई सहारा न होगा और दुराचारी प्रकृति के आदमी उनका शोषण करेंगे, अतः अनिवार्य है कि उनकी देखभाल शासन करे और शासन की सुरक्षा में आने पर ही उनको मामलाकत ऐमानाकुम कहा गया है अर्थात जो तुम्हारे वचन में है दाहिने हाथ में तो उनको दास अनुचरी नही कहा जाएगा वह स्वतंत्र है और वह आपस में भी विवाह कर सकते है या वह मर्द स्त्रियां मूल निवासियों में से भी उस अधिकारी की अनुमति से जो उस विभाग का अधिकारी हो विवाह कर सकते है, नियमानुसार बिना विवाह के मैथुन नही हो सकता यह है मामलाकत ऐमानाकुम न कि कनीज (4:25)

कनीज दास का तो इस्लाम में प्रश्न ही नही और जो ऐसी स्त्रियों के साथ बिना विवाह के मैथुन करने को कहते है या करते है तो उनको इस्लामी नियमानुसार दण्ड दिया जाए और वह पश्चाताप भी करे और आज तक जो रट लगा रखी है कि मुहम्मद स0 के अन्तःपुरी में भी बिना विवाह के कनीजें थी और आपने उनसे मैथुन के सम्बन्ध रखे हुए थे वह मिथ्या रोपण के अभियुक्त हो रहे है उनको भी मिथ्या रोपण के आधीन दण्ड देना चाहिए और पश्चाताप करें.

मामलाकत की एक प्रकार और यह है जो घरों में या कारखानों में कार्य करते है.

एक प्रकार यह भी है जो इस्लाम से पहले से दास और

بھی مامِلکت ایمان کہا گیا ہے لیکن اسلام نے ان کو آزاد کرنے کا حکم دیا ہے کفارہ وغیرہ میں، ان میں سے بہت ایسے تھے جو اپنے مالکوں سے ایسے مانوس ہو گئے تھے جیسے خاندان کے لوگ ہوتے ہیں وہ آزاد ہونے پر بھی نہ گئے تھے اور اپنی پوری زندگی وہاں پر ہی گزار دی اور اس مالک نے بھی ان کے ساتھ اپنے خاندان جیسا سلوک کیا اسلام نے غلامی کو ختم کرنے کا اعلان کیا مگر اسلام والے اس کے خلاف اسی کے حامی نظر آئے بہت دنوں تک اور آج بھی یہی کہتے ہیں جو افسوس ناک امر ہے۔

कनीजें थी उनको भी मामलाकत ऐमान कहा गया है परन्तु इस्लाम ने उनको स्वतंत्र करने का आदेश दिया और कफ्फ़ारा इत्यादि में उनमें से बहुत ऐसे थे जो अपने स्वामियों से ऐसे परिचित हो गये थे जैसे परिवार के लोग होते हैं वह स्वतंत्र होने पर भी न गए थे और अपनी पूरी जिन्दगी वहां पर ही व्यतीत कर दी और उस स्वामी ने भी उनके साथ अपने परिवार जैसा बरताओ किया, इस्लाम ने दासता को समाप्त करने की घोषणा की परन्तु इस्लाम वाले इसके विपरीत इसके समर्थक नजर आए बहुत दिनों तक और आज भी यही कहते हैं जो अफसोस नाक है,

(اور وہ ایمان لانے والے بھی کامیاب ہو گئے) جو اپنی امانتوں اور عہد و پیمان کا خیال رکھتے ہیں (۸)

(और वह विश्वास लाने वाले भी सफल हो गए) जो अपनी धरोहारों और वचनों का ध्यान रखते हैं (8)

اور جو اپنی نماز کی حفاظت کرتے ہیں (اللہ کے حکم کی خلاف ورزی نہیں کرتے) (۹)

और जो अपनी नमाज की रक्षा करते हैं (ईश्वर के आदेश का विरोध नही करते) (9)

یہی وہ لوگ ہیں جو میراث حاصل کرنے والے ہیں (۱۰)

यही वह लोग हैं जो दाय प्राप्त करने वाले हैं (10)

جو میراث میں فردوس پائیں گے اور وہ اس میں ہمیشہ رہیں گے (۱۱) [۲۲:۵]

जो दाय में वैकुण्ठ पाऐंगे और वह उसमें सदैव रहेंगे (11) {22:5}

ہم نے انسان کو مٹی کے ست سے بنایا (۱۲) [۷۷:۲۰،۲۳؛ ۵۵:۱۴،۱۵]

हमने मानव को मिट्टी के सत से बनाया (12) {77:20,23; 58:15,14}

پھر اسے ایک محفوظ جگہ میں نطفہ بنا کر رکھا (۱۳)

फिर उसे एक सुरक्षित स्थान में वीर्य बनाकर रखा (13)

پھر اس کو لوتھڑے جونک کی شکل دی. پھر لوتھڑے کو بوٹی بنایا پھر بوٹی کی ہڈیاں بنائی پھر ہڈیوں پر گوشت چڑھایا پھر اس کو ایک دوسری مخلوق بنا کھڑا کیا. پس بڑا ہی بابرکت ہے اللہ سب کاریگروں سے اچھا کاریگر ہے (۱۴) [۲۲:۵،۶،۷]

फिर उसको लोथड़े जोंक की आकृति दी फिर लोथड़े को बोटी बनाया फिर बोटी की हड्डियां बनाई फिर हड्डियों पर मांस चढ़ाया फिर उसको एक दूसरी रचना बना खड़ा किया, पस बड़ा ही सम्पन्नतावान है ईश्वर सब कारिगरों से अच्छा कारिगीर है (14) {22:5,6,7}

پھر اس کے بعد تم کو ضرور مرنا ہے (۱۵)

फिर इसके बाद तुम को अवश्य मरना है (15)

پھر قیامت کے دن یقیناً تم اٹھائے جاؤ گے (۱۶)

फिर प्रलय के दिन निःसन्देह तुम उठाए जाओगे (16)

<u>اور یقیناً تمہاری پیدائش میں ہم نے تمہارے اوپر سات طریقوں سے کام کیا (یعنی اس حالت تک سات مراحل سے گزر کر آئے ہو) تخلیق کے کام سے ہم نابلد نہیں ہیں (۱۷) [۲۰:۶۳؛ ۲۸:۴۵،۵۸،۸؛ ۷۱:۱۴؛ ۷۲:۱۱]</u>

और निःसन्देह तुम्हारी उत्पत्ति में हमने तुम्हारे ऊपर सात प्रकार से कार्य किया (अर्थात इस दशा तक सात चरणों से गमन कर आऐ हो) रचना के कार्य से हम अनजान नही हैं (17) {20:63; 28:45,58,8; 71:14; 72:11}

نوٹ:۔ آیت ۱۲،۱۳،۱۴ میں اللہ نے انسان کی پیدائش کا فلسفہ بتایا ہے کہ تم ان سات مراحل سے گزرے ہو جن سات مراحل کو آیتوں میں بتایا ہے مگر افسوس تو یہ ہے کہ اتنی صاف بات بھی ہم نہ سمجھ پائے. اور آیت ۱۷ کا ترجمہ یہ کر دیا جو غلط ہے یعنی (اور تمہارے اوپر ہم نے سات راستے بنائے یعنی آسمان میں) ان آیتوں کو دیکھو اور غور کرو.

नोट- आयत 12,13,14 में ईश्वर ने मानव की उत्पत्ति का दर्शन शास्त्र बताया है कि तुम इन सात चरणों से गुजरे हो जिन सात चरणों को आयतों में बताया है परन्तु दुख तो यह है कि इतनी स्पष्ट बात भी हम न समझ पाए और आयत 17 का अनुवाद यह कर दिया जो मिथ्या है अर्थात (और तुम्हारे ऊपर हमने सात मार्ग बनाए अर्थात आकाश में) इन आयतों को देखो और मनन करो,

اور ہم ہی نے آسمان سے ایک اندازے کے ساتھ پانی نازل کیا. پھر اس کو زمین میں ٹھہرا دیا اور اس کو نابود کر دینے پر بھی قادر ہیں (۱۸)

और हम ही ने आकाश से एक अनुमान के साथ पानी अवतरित किया फिर उसको भूमि में ठेहरा दिया और उसको नष्ट कर देने पर भी प्रभुत्व शाली हैं (18)

پھر ہم نے اس پانی سے تمہارے لئے کھجوروں اور انگوروں کے باغ بنائے ان میں تمہارے لئے بہت سے میوے پیدا ہوتے ہیں. اور ان میں سے تم کھاتے ہو (۱۹)

फिर हमने उस पानी से तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के उपवन बनाए उनमें तुम्हारे लिए बहुत से मैवे उत्पन्न होते हैं और उनमें से तुम खाते हो (19)

और उस वृक्ष को (भी हमने उत्पन्न किया) जो तूर सीना में चिकनाई लिए हुए उगताहै (अर्थात जेतून का वृक्ष) और खाने वालों के लिए अच्छा सालन भाजी है (20)

اور اس درخت کو (بھی ہم نے پیدا کیا) جو طور سینا میں چکنائی لئے ہوئے اُگتا ہے (یعنی زیتون کا درخت) اور کھانے والوں کے لئے اچھا سالن ہے (۲۰)

और तुम्हारे लिए चारपायों में भी शिक्षा (और चिन्ह) है कि जो उनके पेटों में है उससे हम तुम्हें दूध पिलाते हैं और तुम्हारे लिए उनमें और भी बहुत लाभ हैं और कतिपय को तुम खाते हो (21) {16:66}

اور تمہارے لئے چارپایوں میں بھی عبرت (اور نشانی) ہے کہ جو ان کے پیٹوں میں ہے اس سے ہم تمہیں دودھ پلاتے ہیں اور تمہارے لئے ان میں اور بھی بہت فائدے ہیں اور بعض کو تم کھاتے ہو (۲۱) [۱۶:۶۶]

और उन पर और नावों पर तुम सवार होते हो (22)

और हमने नूह को उनकी जाति की ओर भेजा तो उन्होंने उनसे कहा कि ऐ जाति ईश्वर ही की पूजा करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूज्य नही, क्या डरते नही (23)

तो उनकी जाति के सरदार जो नास्तिक थे कहने लगे कि यह तो तुम ही जैसा व्यक्ति है तो तुम पर बड़ाई प्राप्त करना चाहता है, और यदि ईश्वर चाहता तो फरिश्ते उतार देता हमने अपने अगले बाप दादा के समय में तो यह बात नही सुनी(24)

कुछ नही वह व्यक्ति पागल हो गया है (उसकी बातों पर कान न धरो) कुछ दिनों तक और देख लो शायद स्वास्थ्य हो जए (25)

(नूह ने) कहा कि स्वामी उन्होंने मुझे झुटलाया है तू मेरी मदद कर (26)

اور ان پر اور کشتیوں پر تم سوار ہوتے ہو (۲۲)

اور ہم نے نوح کو اُن کی قوم کی طرف بھیجا تو انہوں نے ان سے کہا کہ اے قوم اللہ ہی کی عبادت کرو اس کے سوا تمہارا کوئی معبود نہیں کیا تم ڈرتے نہیں (۲۳)

تو ان کی قوم کے سردار جو کافر تھے کہنے لگے کہ یہ تو تم ہی جیسا آدمی ہے تم پر بڑائی حاصل کرنا چاہتا ہے اور اگر اللہ چاہتا تو فرشتے اتار دیتا ہم نے اپنے اگلے باپ دادا کے زمانہ میں تو یہ بات کبھی نہیں سنی (۲۴)

کچھ نہیں وہ شخص پاگل ہو گیا ہے (اس کی باتوں پر کان نہ دھرو) کچھ دنوں تک اور دیکھ لو (شاید آرام ہو جائے) (۲۵)

(نوح نے) کہا کہ پروردگار انہوں نے مجھے جھٹلایا ہے تو میری مدد کر (۲۶)

अतः हमने नूह की ओर वही भेजी कि हमारी देख-रेख में और हमारे नियमानुसार एक नाव तैयार कर फिर जब हमारा आदेश आ जाएऔर वह तनूर उबल पड़े तो नाव में हर प्रकार के जानवरों में से एक-एक जोड़ा लेकर सवार हो जाना और अपने घर वालों (अर्थात जो आपके साथ जो विश्वास लाकर आपके घर में प्रविष्ट हैं) को भी साथ लो, सिवाए उनके जिनके विरुद्ध (नियमानुसार) पहले निर्णय हो चुका है और जालिमों के बारे में मुझसे कुछ न कहना वह अब तल्लीन होने वाले हैं (27)

پس ہم نے نوح کی طرف وحی بھیجی کہ ہماری نگرانی میں اور ہمارے قانون کے مطابق ایک کشتی تیار کر پھر جب ہمارا حکم آجائے اور وہ تنور ابل پڑے تو کشتی میں ہر قسم کے جانوروں میں سے ایک ایک جوڑا لے کر سوار ہو جانا، اور اپنے گھر والوں (یعنی جو آپ کے ساتھ جو ایمان لا کر آپ کے گھر میں اہل میں داخل ہیں) کو بھی ساتھ لو سوائے ان کے جن کے خلاف (قانون کے مطابق) پہلے فیصلہ ہو چکا ہے اور ظالموں کے بارے میں مجھ سے کچھ نہ کہنا وہ اب غرق ہونے والے ہیں (۲۷)

और जब आप और आपके साथी नाव में सवार हो जाओ तो कहना कि सब प्रशंसा ईश्वर ही के लिए है जिसने हमको अत्याचारी लोगों से मुक्ति दी (28)

और कहना स्वामी मुझको सम्पन्नता वाले स्थान पर उतार और तू उत्तम स्थान देने वाला है (29)

निःसन्देह इस घटना में (समझने वालों के लिए) बड़ी ही स्मृतियां हैं और (यह दुनिया है यहां) हम लोगों को प्रकट करने के लिए परीक्षा में डालते ही हैं (क्योंकि अच्छा या बुरा परीक्षा से ही सामने आता है) (30)

اور جب آپ اور آپ کے ساتھی کشتی میں سوار ہو جاؤ تو کہنا کہ سب تعریف اللہ ہی کے لئے ہے جس نے ہم کو ظالم لوگوں سے نجات بخشی (۲۸)

اور کہنا پروردگار مجھ کو برکت والی جگہ اتار اور تو بہترین جگہ دینے والا ہے (۲۹)

بلاشبہ اس واقعہ میں (سمجھنے والوں کے لئے) بڑی ہی نشانیاں ہیں اور (یہ دنیا ہے یہاں) ہم لوگوں کو ظاہر کرنے کے لئے آزمائش میں ڈالتے ہی ہیں (کیونکہ اچھا یا برا آزمائش سے ہی سامنے آتا ہے) (۳۰)

उनके बाद हमने दूसरे चरण की जाति उठाई (31)

फिर उनमें उन्ही की जाति का एक रसूल भेजा (जिसने निमंत्रण दिया) कि ईश्वर की बन्दगी करो तुम्हारे लिए उसके अतिरिक्त कोई और पूज्य नही है क्या डरते नही हो? (32)

ان کے بعد ہم نے دوسرے دور کی قوم اٹھائی (۳۱)

پھر ان میں انہیں کی قوم کا ایک رسول بھیجا (جس نے انہیں دعوت دی) کہ اللہ کی بندگی کرو تمہارے لئے اس کے سوا کوئی اور معبود نہیں ہے کیا ڈرتے نہیں ہو؟ (۳۲)

तो उनकी जाति के नेता जो नास्तिक थे और परलोक के प्रस्तुत होने से इनकार करते थे और दुनिया के जीवन में हमने उनको सम्पन्नता दे रखी थी कहने लगे कि यह तो तुम ही जैसा आदमी है जिस प्रकार का खाना तुम खाते हो उसी प्रकार का यह भी खाता है और जो पानी तुम पीते हो उसी प्रकार का यह भी पीता है (33)

और यदि तुमने अपने ही जैसे आदमी का कहा मान लिया तो घाटे में पड़ गए (34)

कहा यह तुम से यह कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी हो जाओगे और हड्डियों के सिवा कुछ न रहेगा तो तुम धरती से निकाले जाओगे? (35)

कैसी अनहोनी बात है जिसका तुम से वचन किया जा रहा है यह तो बहुत दूर है (36)

जीवन तो यही हमारी दुनिया की जिन्दगी है कि (इसी में) हम मरते और जीते हैं और हम फिर नही उठाए जाएंगे (37)

यह तो एक ऐसा व्यक्ति है जिसने ईश्वर पर मिथ्या रोपण किया है और हम इस को मानने वाले नही हैं (38)

(ईशदूत ने) कहा ऐ रब उन्होंने मुझे झूठा समझा है तू मेरी सहायता कर (39)

आदेश हुआ शीघ्र ही ऐसा होने वाला है कि वह अपने किए पर पछताएंगे (40)

तो उनको नियम और सच्चे वचन के अनुसार एक भयावह ध्वनी ने आ पकड़ा और हमने उन्हें कुचल कर कचरा बना दिया तो (देखो) अन्यायी जाति के लिए ईश्वर की कृपा से निराशा है (41)

फिर हमने उनके बाद दूसरे समुदाय उठाए (42)

कोई दल अपने समय से न आगे जा सकता है न पीछे रह सकता है (43)

फिर हमने एक के बाद एक अपने ईशदूत भेजे, जिस जाति के पास भी उसका रसूल आया उसने उसे झुठलाया और हमने एक के बाद एक जाति को नष्ट किया यहां तक कि उनको गल्प ही बनाकर छोड़ा धिक्कार उन लोगों पर जो विश्वास नहीं लाते (44)

फिर हमने मूसा और उनके भाई हारून को अपनी निशानियां और स्पष्ट तुर्क देकर भेजा (45)

(अर्थात) फिरऔन और उसके दल की ओर भेजा तो उन्होंने घमण्ड किया और वह अवज्ञाकारी थे (46)

कहने लगे कि क्या हम इन अपने जैसे दो व्यक्तियों पर विश्वास ले आएं? और उनकी जाति के लोग हमारे सेवक हैं (47)

तो उन लोगों ने उन दोनों को झुठलाया सो इस अपराध में नष्ट कर दिए गए (48)

और यह सत्य है कि हमने (इस घटना के बाद)

تو ان کی قوم کے سردار جو کافر تھے اور آخرت کے پیش آنے کے منکر تھے اور دنیا کی زندگی میں ہم نے ان کو آسودگی دے رکھی تھی کہنے لگے کہ یہ تو تم ہی جیسا آدمی ہے جس قسم کا کھانا تم کھاتے ہو اسی طرح کا یہ بھی کھاتا ہے اور جو پانی تم پیتے ہو اسی قسم کا یہ بھی پیتا ہے (۳۳)

اور اگر تم نے اپنے ہی جیسے آدمی کا کہا مان لیا تو گھاٹے میں پڑ گئے (۳۴)

کہا یہ تم سے یہ کہتا ہے کہ جب تم مر جاؤ گے اور مٹی ہو جاؤ گے اور ہڈیوں کے سوا کچھ نہ رہے گا تو تم زمین سے نکالے جاؤ گے؟ (۳۵)

کیسی انہونی بات ہے جس کا تم سے وعدہ کیا جا رہا ہے (یہ تو بہت دور ہے) (۳۶)

زندگی تو یہی ہماری دنیا کی زندگی ہے کہ (اسی میں) ہم مرتے اور جیتے ہیں اور ہم پھر نہیں اٹھائے جائیں گے (۳۷)

یہ تو ایک ایسا آدمی ہے جس نے اللہ پر جھوٹ افترا کیا ہے اور ہم اس کو ماننے والے نہیں (۳۸)

(رسول نے) کہا اے رب انہوں نے مجھے جھوٹا سمجھا ہے تو میری مدد کر (۳۹)

حکم ہوا جلد ہی ایسا ہونے والا ہے کہ وہ اپنے کئے پر پچھتائیں گے (۴۰)

تو ان کو قانون اور سچے وعدے کے مطابق ایک ہولناک آواز نے آ پکڑا اور ہم نے انہیں کچل کر کچرا بنا دیا تو (دیکھو) ظالم قوم کے لئے اللہ کی رحمت سے محرومی ہے (۴۱)

پھر ہم نے ان کے بعد دوسری قومیں اٹھائیں (۴۲)

کوئی جماعت اپنے وقت سے نہ آگے جا سکتی ہے نہ پیچھے رہ سکتی ہے (۴۳)

پھر ہم نے پے در پے اپنے رسول بھیجے جس قوم کے پاس بھی اس کا رسول آیا اس نے اسے جھٹلایا اور ہم ایک کے بعد ایک قوم کو ہلاک کرتے چلے گئے، حتیٰ کہ ان کو بس افسانہ ہی بنا کر چھوڑا۔ پھٹکار ان لوگوں پر جو ایمان نہیں لاتے (۴۴)

پھر ہم نے موسیٰ اور ان کے بھائی ہارون کو اپنی نشانیاں اور دلیل ظاہر دے کر بھیجا (۴۵)

(یعنی) فرعون اور اس کی جماعت کی طرف بھیجا تو انہوں نے تکبر کیا اور وہ سرکش لوگ تھے (۴۶)

کہنے لگے کہ کیا ہم ان اپنے جیسے دو آدمیوں پر ایمان لے آئیں اور ان کی قوم کے لوگ ہمارے خدمت گار ہیں (۴۷)

تو ان لوگوں نے ان دونوں کو جھٹلایا سو جھٹلانے کے بدلے ہلاک کر دئے گئے (۴۸)

اور یہ حقیقت ہے کہ ہم نے (اس واقعہ کے بعد) موسیٰ کو

मूसा को पुस्तक (तौरात) दी ताकि लोग मार्ग दर्शन प्राप्त करें (49)
और हमने मरयम के पुत्र (ईसा) और उनकी माता को अपना चिन्ह बनाया था और उनके एक उपजाऊ सम्पन्नता वाली अच्छी धरती पर रखा जो शंतोष का स्थान था (जहां पालन पोषण अच्छा होता था) और चश्मे जारी थे (50)
ऐ रसूल! पवित्र वस्तुएं खाओ और सत्कर्म करो जो कर्म तुम करते हो मैं उनसे अवगत हूं (51)
और निःसंदेह यह तुम्हारा धर्म उम्मत एक ही धर्म इस्लाम और उम्मत है और मैं तुम्हारा रब हूं तो मेरी अवज्ञा से बचते रहो (52)
परन्तु उन्होंने अपने अमर (धर्म) को आपस में टुकड़े टुकड़े कर लिया हर दल के पास जो कुछ है उसी में मगन है (53) {30:31-32, 6:16}
अच्छा तो उन्हें छोड़ो डूबे रहें अपनी अचेतना में एक समय मुख्य तक (54) {2:27-8, 15:3, 11:19}
क्या वह लोग यह विचार कर रहे हैं कि हम जो दुनिया में उनकी सहायता धन और सन्तान से कर रहें हैं (55)
तो मानों हम उन्हें भलाईयां देने में संचेष्ट हैं (अपितु ऐसा नहीं है) अपितु मूल प्रसंग का उन्हें विवेक नहीं (56)
(परन्तु सत्य यह है) जो लोग अपने रब के भय से डरने वाले होते हैं (57)
और जो लोग अपने ईश्वर के मंत्रों पर विश्वास रखते हैं (58)
और जो अपने ईश्वर के साथ किसी को साझी नहीं करते (59)
और जिनकी स्थिति यह है कि देते हैं जो कुछ भी देते हैं, और हृदय उनके इस विचार से कांपते रहते हैं कि हमें अपने रब की ओर पलटना है (60)
वही लोग सत्कर्मों की ओर दौड़ने वाले और वही अग्रसरता करके पा लेने वाले हैं (61)
हम किसी व्यक्ति पर उसकी शक्ति से अधिक कष्ट नहीं देते और हमारे पास एक पुस्तक है जो (हर एक का समाचार जो कुछ उसने किया है) ठीक ठीक बता देने वाली है, और उन लोगों पर अन्याय नहीं किया जाएगा (62) {75:16-17-18, 27:82}
परन्तु उन लोगों के हृदय इस सत्य से अनजान हैं और उनके और भी (बुरे) कर्म हैं जो वह करते रहते हैं (63)
यहां तक कि जब हम उनके जालिम अपराधियों को पकड़ लेंगे तो फिर वह चित्कार करना आरम्भ कर देंगे (64)
(उनसे कहा जाएगा) आज मत चित्कार करो तुमको हमसे कोई सहायता न मिलेगी (65)
सहायता इस लिए नहीं मिलेगी कि जब हमारी आयतें तुमको पढ़कर सुनाई जाती थी और तुम सुनते ही उलटे पांव भाग जाते थे (66)

کتاب (توریت) دی تاکہ لوگ رہنمائی حاصل کریں (۴۹)
اور ہم نے مریم کے بیٹے (عیسیٰ) اور ان کی ماں کو اپنی نشانی بنایا تھا اور ان کو ایک زرخیز برکت والی اچھی زمین پر رکھا جو اطمینان کی جگہ تھی (جہاں پرورش اچھی ہوتی تھی) اور چشمے اس میں جاری تھے (۵۰)
اے رسول! پاکیزہ چیزیں کھاؤ اور عمل نیک کرو۔ جو عمل تم کرتے ہو میں ان سے واقف ہوں (۵۱)
اور بے شک یہ تمہارا دین امت ایک ہی دین اسلام اور امت ہے اور میں تمہارا رب ہوں، تو میری نافرمانی سے بچتے رہو (۵۲)
مگر پھر انہوں نے اپنے امر (دین) کو آپس میں ٹکڑے ٹکڑے کر لیا ہر گروہ کے پاس جو کچھ ہے اسی میں مگن ہے (۵۳) [۳۰:۳۱-۳۲، ۶:۱۶۰]
اچھا تو انہیں چھوڑو ڈوبے رہیں اپنی غفلت میں ایک وقت خاص تک (۵۴) [۲:۲۷-۸، ۱۵:۳، ۱۱:۱۹]
کیا وہ لوگ یہ خیال کر رہے ہیں کہ ہم جو دنیا میں ان کی مدد مال اور اولاد سے کر رہے ہیں (۵۵)
تو گویا ہم انہیں بھلائیاں دینے میں سرگرم ہیں (بلکہ ایسا نہیں ہے) بلکہ اصل معاملہ کا انہیں شعور نہیں (۵۶)
(مگر حقیقت یہ ہے) جو لوگ اپنے رب کے خوف سے ڈرنے والے ہوتے ہیں (۵۷)
اور جو لوگ اپنے رب کی آیتوں پر ایمان رکھتے ہیں (۵۸)
اور جو اپنے رب کے ساتھ کسی کو شریک نہیں کرتے (۵۹)
اور جن کا حال یہ ہے کہ دیتے ہیں جو کچھ بھی دیتے ہیں اور دل ان کے اس خیال سے کانپتے رہتے ہیں کہ ہمیں اپنے رب کی طرف پلٹنا ہے (۶۰)
وہی لوگ بھلائیوں کی طرف دوڑنے والے اور وہی سبقت کر کے پا لینے والے ہیں (۶۱)
ہم کسی انسان پر اس کی طاقت سے زیادہ تکلیف نہیں دیتے اور ہمارے پاس ایک کتاب ہے جو (ہر ایک کا حال جو کچھ اس نے کیا ہے) ٹھیک ٹھیک بتا دینے والی ہے اور ان لوگوں پر ظلم نہیں کیا جائے گا (۶۲) [۷۵:۱۶، ۱۷، ۱۸، ۲۷:۸۲]
مگر ان لوگوں کے دل اس حقیقت سے بے خبر ہیں اور ان کے اور بھی (برے) اعمال ہیں جو وہ کرتے رہتے ہیں (۶۳)
یہاں تک کہ جب ہم ان کے ظالم گناہ گاروں کو پکڑ لیں گے تو پھر وہ ڈکرانا شروع کر دیں گے (۶۴)
(ان سے کہا جائے گا) آج مت ڈکراؤ تم کو ہم سے کوئی مدد نہ ملے گی (۶۵)
(مدد اس لئے نہیں ملے گی) کہ جب ہماری آیتیں تم کو پڑھ کر سنائی جاتی تھیں اور تم سنتے ہی الٹے پاؤں بھاگ جاتے تھے (۶۶)

अपने घमण्ड में उन आयात से इनकार करते थे और अपनी सभाओं की कथाओं में उनका उपहास उड़ाते थे और बकवास किया करते थे (67)

اور اپنے گھمنڈ میں ان آیات سے انکار کرتے تھے اور اپنی مجلسوں کی کہانیوں میں ان کا مذاق اڑاتے تھے اور بکواس کیا کرتے تھے (۶۷)

तो क्या कभी इस वाणी पर विचार नही किया? या वह कोई ऐसी बात लाया है जो कभी उनके पुर्खों के पास न आई थी (68)

تو کیا انہوں نے کبھی اس کلام پر غور نہیں کیا؟ یا وہ کوئی ایسی بات لایا ہے جو کبھی ان کے اسلاف کے پاس نہ آئی تھی (۶۸)

या वह अपने रसूल से कभी के परिचित न थे कि (अनजाना व्यक्ति होने के कारण) उस का इनकार करते हैं (69)

یا وہ اپنے رسول سے کبھی کے واقف نہ تھے کہ (ان جانا آدمی ہونے کی وجہ سے) اس کا انکار کرتے ہیں (۶۹)

या फिर वह लोग (अपनी हट धर्मों के कारण से) यह कहते हैं कि इसको अन्याय है? नही अपितु वह सत्य लाया है और उनमें से अधिकांश को ना पसन्द करते हैं (70)

یا پھر وہ لوگ (اپنی ہٹ دھرمی کی وجہ سے) یہ کہتے ہیں کہ اس کو سودا ہے؟ نہیں بلکہ وہ حق لایا ہے اور ان میں سے اکثر حق کو ناپسند کرتے ہیں (۷۰)

और यदि प्राकृतिक नियम उनकी इच्छाओं के पीछे चलता तो पृथ्वी व आकाश का और उनकी सार आबादी का प्रबन्ध अस्त वस्त हो जाता नही अपितु हम उनका अपना ही वर्णन अर्थात सफलता की विधि उनके पास लाए हैं और वह अपने उल्लेख से मुख मोड़े रहे हैं (71) {21:10}

اور اگر قانون فطرت ان کی خواہش کے پیچھے چلتا تو زمین وآسمان کا اور ان کی ساری آبادی کا نظام درہم برہم ہو جاتا نہیں بلکہ ہم ان کا اپنا ہی ذکر یعنی ان کی کامیابی کا نسخہ ان کے پاس لائے ہیں اور وہ اپنے ذکر سے منہ موڑ رہے ہیں (۷۱) [۲۱:۱۰]

(ऐ रसूल!) क्या (वह लोग आप की बात इस लिए नही सुनते कि) आप उनसे धन दौलात के इच्छुक हैं? आप के लिए तो आपके रब का दिया हुआ माल बहुत अच्छा है वह सब से अच्छी जीविका देने वाला है (72)

(اے رسول!) کیا (وہ لوگ تمہاری بات اس لئے نہیں سنتے کہ) آپ ان سے مال ودولت کے طالب ہیں؟ آپ کے لئے تو آپ کے رب کا دیا ہوا مال بہت اچھا ہے وہ سب سے اچھا روزی دینے والا ہے (۷۲)

और निःसंदेह आप तो उनको सीधे मार्ग की ओर बुला रहें हो (73)

اور بے شک آپ تو ان کو سیدھے رستے کی طرف بلا رہے ہو (۷۳)

और जो लोग परलोक पर विश्वास नहीं लाते निःसंदेह वह सत्य मार्ग से हटे हुए हैं (74)

اور جو لوگ آخرت پر ایمان نہیں لاتے بے شک وہ راہ حق سے ہٹے ہوئے ہیں (۷۴)

यदि हम उन पर दया करें और जिस कष्ट में वह ग्रस्त हैं उसे दूर भी कर दें तब भी वह अपनी अवज्ञा में भटकते हुए और भी बहक जाएंगे (73)

اگر ہم ان پر رحم کریں اور جس تکلیف میں وہ مبتلا ہیں اسے دور بھی کر دیں تب بھی وہ اپنی سرکشی میں بھٹکتے ہوئے اور بھی بہک جائیں گے (۷۵)

और हमने उनको कष्ट में भी पकड़ा तो भी उन्होंने ईश्वर के आगे नम्रता न की और वह नम्रता करते ही नही (76)

اور ہم نے اُن کو عذاب میں بھی پکڑا تو بھی انہوں نے اللہ کے آگے عاجزی نہ کی اور وہ عاجزی کرتے ہی نہیں (۷۶)

यहां तक कि जब हम उन पर कठोर कष्ट का द्वार खोल देंगे तो उस समय बिलकुल चकित रह जाएंगे (77)

یہاں تک کہ جب ہم ان پر سخت عذاب کا دروازہ کھول دیں گے تو اس وقت بالکل حیرت زدہ رہ جائیں گے (۷۷)

और वही तो है जिसने तुम्हारे कान और आंखे और हृदय बनाए (परन्तु तुम कम ही आज्ञाकारी करते हो (78)

اور وہی تو ہے جس نے تمہارے کان اور آنکھیں اور دل بنائے (لیکن تم کم ہی فرمانبرداری کرتے ہو) (۷۸)

वह ईश्वर ही तो है जिसने तुम्हें पैदा करके पृथ्वी में फैलाया और उसी की ओर तुम सिमेट जाओगे (79)

وہ اللہ ہی تو ہے جس نے تمہیں پیدا کر کے زمین میں پھیلا دیا اور اس کی طرف تم سمیٹے جاؤ گے (۷۹)

वही तो है जो जिलाता और मरता है दिन रात का चक्र उसी के अधिकार में है क्या तुम समझते नही हो? (80)

وہی تو ہے جو جلاتا اور مارتا ہے گردش لیل ونہار اسی کے قبضہ قدرت میں ہے کیا تم سمجھتے نہیں ہو؟ (۸۰)

अपितु उन लोगों ने भी वैसी ही बात कही जैसी उनसे अगले लोग कह चुके हैं (81)

بلکہ ان لوگوں نے بھی ویسی ہی بات کہی جیسی ان سے اگلے لوگ کہہ چکے ہیں (۸۱)

उन्होंने कहा जब हम मर कर मिट्टी हो जाएंगे और हड्डीयों का ढ़ंचा हो जाएंगे तो क्या हम फिर उठाए जाएंगे? (82)

انہوں نے کہا جب ہم مر کر مٹی ہو جائیں گے اور ہڈیوں کا ڈھانچہ ہو جائیں گے تو کیا ہم پھر اٹھائے جائیں گے؟ (۸۲)

यह वचन हम से और हमसे पहले हमारे बाप दादा से भी होता चला आया है (अजी) यह तो केवल अगले लोगों की कथाएं हैं (83)

یہ وعدہ ہم سے اور ہم سے پہلے ہمارے باپ دادا سے بھی ہوتا چلا آیا ہے (اجی) یہ تو صرف اگلے لوگوں کی کہانیاں ہیں (۸۳)

उनसे पूछो अच्छा यदि तुम जानते हो तो बताओ पृथ्वी और वह सब रचनाएं जो इस में हैं किसके लिए हैं (84)

तुरन्त बोल उठेंगे कि ईश्वर का कहो कि फिर तुम सोचते क्यों नहीं (85)

उनसे पुछो कि सात आकाशों का और महान सिंहासन का स्वामी कौन है (86)

वह तुरन्त कह देंगे (यह वस्तुऐं) ईश्वर ही की हैं कहो कि फिर तुम डरते क्यों नहीं (87)

उनसे (एक और) प्रश्न करो यदि तुम जानते हो तो बताओ वह कौन है जिस के अधिकार में सब वस्तुओं का राज्य है वह सब को शरण देता है और उसके सामने कोई किसी को शरण नहीं दे सकता (88)

वह जरूर कहेंगे कि यह बात तो ईश्वर ही के लिए है कहो फिर कहा से तुम को धोका लगता है (89)

सत्य यह है कि हम उनके सामने सत्य ले आए हैं परन्तु वह लोग (हठ धर्मी के कारण) झूट बोल रहे हैं (90)

ईश्वर ने न तो किसी को (अपना) पुत्र बनाया है और न उसके साथ कोई और ईश्वर है यदि ऐसा होता तो हर ईश्वर अपनी अपनी रचना को लेकर चल देता और एक ईश्वर दूसरे ईश्वर पर चढ़ाई कर देता. वह लोग जो इसके बारे में वर्णन करते हैं ईश्वर उनसे पवित्र है (91)

वह गुप्त और प्रकट को जानता है और (अनेकेश्वर वादी) जो उसके साथ साझी बनाते हैं वह इससे उच्च है (92)

ऐ नबी प्रार्थना करो कि रब जिस कष्ट का उनसे वचन किया जा रहा है यदि वह मेरी उपस्थिति में आए (93)

तो ऐ नबी मुझे उन दुष्ट लोगों में सम्मिलित न करना मुझे उससे सुरक्षित रखना (94)

और जो वचन हम उनसे कर रहें हैं हम आपको दिखा कर उन पर प्रेषित करने पर प्रभुत्व शाली हैं (95)

और बुरी बात के उत्तर में ऐसी बात कहो जो अत्यन्त अच्छी हो और वह जो कुछ वर्णन करते हैं हमें भली भांति ज्ञान है (96)

और प्रर्थना करो ऐ नबी मैं शैतानों के वसवसों से तेरी शरण मांगता हूं (97)

ऐ रब मैं उससे तेरी शरण मांगता हूं कि वह तेरे पास आएं (98)

(वह लोग इसी प्रकार अचेतना में रहेंगे) यहां तक कि जब उन में से किसी के पास मौत आजाएगी तो कहेगा कि ऐ रब मुझे फिर दुनिया में वापस कर दें (99)

(उस दुनिया में) जिसे मैं छोड़ आया हूं कदाचित

ان سے پوچھو اچھا اگر تم جانتے ہو تو بتاؤ زمین اور وہ تمام مخلوقات جو اس میں ہے کس کے لئے ہے؟ (۸۴)

فوراً بول اٹھیں گے کہ اللہ کا کہو کہ پھر تم سوچتے کیوں نہیں (۸۵)

ان سے پوچھو کہ سات آسمانوں کا اور عرش عظیم کا مالک کون ہے؟ (۸۶)

وہ فوراً کہدیں گے (یہ چیزیں) اللہ ہی کی ہیں کہو کہ پھر تم ڈرتے کیوں نہیں (۸۷)

ان سے (ایک اور) سوال کرو اگر تم جانتے ہو تو بتاؤ وہ کون ہے جس کے قبضہ میں تمام چیزوں کی بادشاہت ہے وہ سب کو پناہ دیتا ہے اور اس کے مقابلہ میں کوئی کسی کو پناہ نہیں دے سکتا (۸۸)

وہ ضرور کہیں گے کہ یہ بات تو اللہ ہی کے لئے ہے کہو پھر کہاں سے تم کو دھوکہ لگتا ہے (۸۹)

حقیقت یہ ہے کہ ہم اُن کے سامنے حق لے آئے ہیں مگر وہ لوگ (ہٹ دھرمی کی وجہ سے) جھوٹ بول رہے ہیں (۹۰)

اللہ نے نہ تو کسی کو (اپنا) بیٹا بنایا ہے اور نہ اس کے ساتھ کوئی اور معبود ہے اگر ایسا ہوتا تو ہر معبود اپنی اپنی مخلوق کو لے کر چل دیتا اور ایک معبود دوسرے معبود پر چڑھائی کر دیتا. وہ لوگ جو اس کے بارے میں بیان کرتے ہیں اللہ ان سے پاک ہے (۹۱)

وہ پوشیدہ اور ظاہر کو جانتا ہے اور (مشرک) جو اس کے ساتھ شریک بناتے ہیں وہ اس سے بلند ہے (۹۲)

اے نبی دعا کرو کہ رب جس عذاب کا ان سے وعدہ کیا جا رہا ہے اگر وہ میری موجودگی میں آئے (۹۳)

تو اے رب مجھے ان ظالم لوگوں میں شامل نہ کرنا مجھے اس سے محفوظ رکھنا (۹۴)

اور جو وعدہ ہم ان سے کر رہے ہیں ہم آپ کو دکھا کر ان پر نازل کرنے پر قادر ہیں (۹۵)

اور بُری بات کے جواب میں ایسی بات کہو جو نہایت اچھی ہو اور وہ جو کچھ بیان کرتے ہیں ہمیں خوب معلوم ہے (۹۶) [۴۰:۴۲]

اور دعا کرو اے رب میں شیطانوں کے وسوسوں سے تیری پناہ مانگتا ہوں (۹۷)

اور اے رب میں اس سے تیری پناہ مانگتا ہوں کہ وہ میرے پاس آئیں (۹۸)

(وہ لوگ اسی طرح غفلت میں رہیں گے) یہاں تک کہ جب ان میں سے کسی کے پاس موت آجائے گی تو کہے گا کہ اے رب مجھے پھر دنیا میں واپس کر دے (۹۹)

(اس دنیا میں) جسے میں چھوڑ آیا ہوں شائد (اس مرتبہ)

(इस बार) मैं सत्कर्म करूं आदेश होगा कदापि नहीं यह तो एक बात है जो वह बक रहा है, वह कदापि वापस न होगा, अब उन सब (मरने वालो के) पीछे एक आड़ (बरज़ख़) है पुनः उठाए जाने के दिन तक (100)

फिर ज्यूंही कि सूर फूंक दिया जाएगा उनके बीच फिर कोई सम्बन्ध न रहेगा और न वह एक दूसरे को पूछेंगे (101)

तो जिनके (कर्मों के) भार भारी होंगे वह सफलता पाने वाले हैं (102)

और जिन के भार हल्के होंगे वह लोग हैं जिन्होंने अपने को हानी में डाला वह सदैव नर्क में रहेंगे (103)

आग उनके चेहरों को झुलस देगी और उसमें उनके मुख बिगड़े होंगे (104)

उस दिन कहा जाएगा क्या ऐसा नहीं था कि मेरी आयतें तुम्हारे सामने पढ़ी जाती थी और तुम उन्हें झुटलाया करते थे (105)

ऐ हमारे रब हमारा दुर्भाग्य हम पर छा गया था हम वास्तव में पथ भ्रष्ट लोग थे (106)

ऐ रब हमको इसमें से निकाल दे यदि हम फिर (ऐसे कर्म) करें तो दुष्ट होंगे (107)

(ईश्वर) कहेगा इसमें अपमान के साथ पड़े रहो और मुझसे बात न करो (108)

मेरे भक्तों में एक दल था जो प्रार्थना किया करता था कि ऐ रब हमारे हम विश्वास लाए तो तू हमको क्षमा कर दे और तू सबसे अच्छा दया करने वाला है (109)

तो तुम उनका उपहास उड़ाया करते थे यहां तककि उनके विरोध ने तुम्हें यह भी भुला दिया कि मेरी पुस्तक भी कोई वस्तु है और तुम उन लोगों की बातों पर हंसा करते थे (110)

(देखो) आज हमने उनके धैर्य का बदला कैसा अच्छा दिया वही सफल है (111)

फिर ईश्वर उनसे पूछेगा बताओ तुम पृथ्वी में कितने दिन रहे (112)

वह कहेंगे कि हम एक दिन या एक दिन से भी कम रहें थे गणना करने वालों से ज्ञात कीजिए (113)

आदेश होगा हां तुम धरती में बहुत ही कम समय तक रहे कदाचित तुमने बात जान ली होती (114)

क्या तुमने यह समझ रखा था कि हमने तुम्हें व्यर्थ पैदा किया है और तुम हमारी ओर लोटकर न आओगे (115)

ईश्वर जो राजा सत्य है उसका अस्तित्व इससे कहीं उच्च है (कि वह व्यर्थ कार्य करे) क्या नास्तिक कहते हैं कोई ईश्वर नहीं निःसंदेह वह सम्मान वाले सिंहासन का स्वामी ईश्वर है (116)

और जो कोई ईश्वर के साथ किसी और ईश्वर को

میں نیک کام کروں۔حکم ہوگا ہرگز نہیں یہ تو ایک بات ہے جو وہ بک رہا ہے وہ ہرگز واپس نہ ہوگا۔اب ان سب (مرنے والوں کے) پیچھے ایک آڑ (برزخ) ہے دوبارہ اٹھائے جانے کے دن تک (۱۰۰)

پھر جونہی کہ صور پھونک دیا جائے گا ان کے درمیان پھر کوئی رشتہ نہ رہے گا اور نہ وہ ایک دوسرے کو پوچھیں گے (۱۰۱)

تو جن کے (عملوں کے) بوجھ بھاری ہوں گے وہ فلاح پانے والے ہیں (۱۰۲)

اور جن کے بوجھ ہلکے ہوں گے وہ لوگ ہیں جنہوں نے اپنے کو خسارے میں ڈالا وہ ہمیشہ (دوزخ میں رہیں گے) (۱۰۳)

آگ ان کے چہروں کو جھلس دے گی اور اس میں ان کے منہ بگڑے ہوں گے (۱۰۴)

(اس دن کہا جائے گا) کیا ایسا نہیں تھا کہ میری آیتیں تمہارے سامنے پڑھی جاتی تھیں اور تم انہیں جھٹلایا کرتے تھے (۱۰۵)

اے ہمارے رب ہماری بدبختی ہم پر چھا گئی تھی وقعی ہم گمراہ لوگ تھے (۱۰۶)

اے رب ہم کو اس میں سے نکال دے اگر ہم پھر (ایسے کام) کریں تو ظالم ہوں گے (۱۰۷)

(اللہ) فرمائے گا اسی میں ذلت کے ساتھ پڑے رہو اور مجھ سے بات نہ کرو (۱۰۸)

میرے بندوں میں ایک گروہ تھا جو دعا کیا کرتا تھا کہ اے رب ہمارے ہم ایمان لائے تو تو ہم کو بخش دے اور ہم پر رحم کر اور تو سب سے اچھا رحم کرنے والا ہے (۱۰۹)

تو تم ان کا مذاق اڑایا کرتے تھے یہاں تک کہ ان کی مخالفت نے تمہیں یہ بھی بھلا دیا کہ میری کتاب بھی کوئی چیز ہے اور تم ان لوگوں کی باتوں پر ہنسا کرتے تھے (۱۱۰)

(دیکھو) آج ہم نے ان کے صبر کا بدلہ کیسا اچھا دیا وہی کامیاب ہیں (۱۱۱)

پھر اللہ ان سے پوچھے گا بتاؤ تم زمین میں کتنے دن رہے (۱۱۲)

وہ کہیں گے کہ ہم ایک روز یا ایک روز سے بھی کم رہے تھے شمار کرنے والوں سے پوچھ لیجئے (۱۱۳)

ارشاد ہوگا ہاں تم زمین میں بہت ہی کم مدت تک رہے کاش تم نے یہ بات جان لی ہوتی (۱۱۴)

کیا تم نے یہ سمجھ رکھا تھا کہ ہم نے تمہیں بیکار پیدا کیا ہے اور تم ہماری طرف لوٹ کر نہ آؤ گے (۱۱۵)

اللہ جو بادشاہ حقیقی ہے اس کی ذات اس سے کہیں بلند ہے (کہ وہ بیکار کام کرے) کیا کافر کہتے ہیں کوئی الہٰ نہیں یقیناً وہ عزت والے عرش کا مالک اللہ ہے (۱۱۶)

اور جو کوئی اللہ کے ساتھ کسی اور معبود کو پکارے گا جس کے

पुकारेगा जिसके लिए उसके पास कोई तर्क नही है तो (एक दिन) उसके रब के पास उसका लेखा जोखा है ऐसा नास्तिक कभी सफलता न पाएंगे (117)

لئے اس کے پاس کوئی دلیل نہیں ہے تو (ایک دن) اس کے رب کے پاس اس کا حساب ہونا ہے ایسے کافر کبھی فلاح نہ پائیں گے (۱۱۷)

और ईश्वर से प्रार्थना करो कि मेरे रब मुझे क्षमा कर दे और (मुझ पर) दया कर और तू सबसे अच्छा दया करने वाला है (118)

اور اللہ سے دعا کرو کہ میرے رب مجھے بخش دے اور (مجھ پر) رحم کر اور تو سب سے بہتر رحم کرنے والا ہے (۱۱۸)

सूरत नूर 24 मदनी

سورت النور (۲۴) مدنی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

यह एक सूरत है जिसको हम ने अवतरति किया है और इसे हमने अनिवार्य किया (कि इसके आदेशों का पालन किया जाए) और इसमें हमने स्पष्ट मार्ग दर्शन अवतरित किए हैं कदाचित तुम शिक्षालो (1) {28:85}

یہ ایک سورت ہے جس کو ہم نے نازل کیا ہے اور اسے ہم نے فرض کیا (کہ اس کے احکام کی پابندی کی جائے) اور اس میں ہم نے صاف صاف ہدایات نازل کی ہیں شاید کہ تم سبق لو (۱) [۲۸:۸۵]

व्यभिचारिणी और व्यभिचारी मर्द दोनों में से हर एक को सो कोड़े मारो और उनपर करुण करने का भाव ईश्वर के धर्म (नियम) के विषय में तुम्हारे हाथ न पकड़ ले अर्थात उन पर दया न आए यदि तुम ईश्वर और प्रलोक पर विश्वास रखते हो और उनको दण्ड देते समय आस्तिकों का एक दल उपस्थित रहे (2) {4:15-25, 17:32, 33:30}

زانیہ عورت اور زانی مرد دونوں میں سے ہر ایک کو سو (۱۰۰) کوڑے مارو اور ان پر ترس کھانے کا جذبہ اللہ کے دین (قانون) کے معاملے میں تمہارے ہاتھ نہ پکڑ لے یعنی ان پر ترس نہ آئے اگر تم اللہ اور روز آخر پر ایمان رکھتے ہو اور ان کو سزا دیتے وقت اہل ایمان کا ایک گروہ موجود رہے (۲) [۴:۱۵،۲۵؛ ۱۷:۳۲؛ ۳۳:۳۰]

व्यभिचारी पुरूष तो व्यभिचारी या अनेकेश्वरवादी स्त्री के सिवा विवाह नही करता और व्यभिचारी स्त्री भी व्यभिचारी या मुशरिक पुरूष केसिवा और से विवाह नही करता और से आस्तिको पर अवैद्य है (3)

بدکار مرد تو بدکار یا مشرک عورت کے سوا نکاح نہیں کرتا اور بدکار عورت بھی بدکار یا مشرک مرد کے سوا اور سے نکاح نہیں کرتی اور یہ مومنوں پر حرام ہے (۳)

नोट- इस प्रसंग पर लिखने से पहले {4:25, 33:30, 4:25} लिखी जा रही है.

{4:25} और जो व्यक्ति तुम में से इतनी धन सम्पन्नता न रखता हो कि पवित्र स्वतंत्र (परिवारिक) मुसलमान स्त्रीयों से विवाह कर सके तो उसे चाहिए कि तुम्हारी उन आस्तिक युवक विवाह के योग्य स्त्रीयों से विवाह कर लें जो तुम्हारी मामलाकत ऐमान (सुरक्षा) में हो और आस्तिक हो ईश्वर तुम्हारे ईमानो का हाल जानता है, तुम सब एक ही दल के लोग हो अतः उनके अभिभावक (अधिकारी) की अनुमति से उनके साथ विवह कर लो और परिचित ढंग से उनको मेहर चुकता कर दो ताकि वह विवाह के बन्धन से सुरक्षित (मुहसिनात) होकर रहें स्वतंत्र वासना करती न फिरे और न चोरी छुपे मित्रता करें फिर जब वह विवह के बन्धन में सुरक्षित (मुहसिनात) हो जाए और उस के बाद व्यभिचार की अपराधी हो तो उनपर उस दण्ड की (अज़ाब) तुलना में आधी सजा है जो स्वतंत्र विवाहित (मुहसिनात) स्त्रीयों के लिए नियुक्त है यह सरलता तुममें से उन लोगो के लिए उपलब्ध की गई है जिनको विवाह न करने से सन्यम का बन्धन टूटने का भय हो, परन्तु यदि तुम धैर्य करो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है और ईश्वर क्षमा करने वाला दयालु है.

{33:30} रसूल की पत्नियों! तुममें से जो किसी स्पष्ट कुकर्म का व्यवहार करेगी तो उसे दोहरा दण्ड दिया जाएगा, ईश्वर के लिए यह बहुत सरल है.

{17:32} और व्यभिचार (ज़िना) के निकट न जाओ निःसंदेह वह निर्लज्जता (फ़हश) और बूरा मार्ग है, सूरत नूर की आयत 2 में दुराचारी ज़ानी मर्द और स्त्री की सज़ा ईश्वर ने सौ कोड़े बताई है आयत में यह कोई प्रतिबन्धा नही है कि स्त्री और पुरूष विवाहित है या

نوٹ:۔ اس مسئلہ پر لکھنے سے پہلے (۴:۲۵؛ ۳۳:۳۰؛ ۱۷:۳۲) لکھی جا رہی ہیں.

(۴:۲۵) اور جو شخص تم میں اتنی مالی وسعت نہ رکھتا ہو کہ پاک عفیفہ آزاد (خاندانی) مسلمان عورتوں سے نکاح کر سکے تو اسے چاہیے کہ تمہاری ان مومنہ نوجوان نکاح کے لائق عورتوں سے نکاح کرلے جو تمہاری مملکات ایمان (حفاظت) میں ہوں اور مومنہ ہوں اللہ تمہارے ایمانوں کا حال جانتا ہے تم سب ایک ہی گروہ کے لوگ ہو لہٰذا ان کے سرپرست (حاکم) کی اجازت سے ان کے ساتھ نکاح کرلو اور معروف طریقے سے ان کو مہر ادا کر دو تاکہ وہ حصار نکاح میں محفوظ (محصنات) ہو کر رہیں آزاد شہوت رانی نہ کرتی پھریں اور نہ چوری چھپے آشنائیاں کریں پھر جب وہ حصار نکاح میں محفوظ (محصنات) ہو جائیں اور اس کے بعد بدچلنی کی مرتکب ہوں تو ان پر اس سزا کی (عذاب) نسبت آدھی سزا ہے جو آزاد شادی شدہ (محصنات) عورتوں کے لئے مقرر ہے یہ سہولت تم میں سے ان لوگوں کے لئے پیدا کی گئی ہے جن کو شادی نہ کرنے سے بند تقویٰ کے ٹوٹنے کا اندیشہ ہو لیکن اگر تم صبر کرو تو یہ تمہارے لئے بہتر ہے. اور اللہ بخشنے والا رحم فرمانے والا ہے.

(۳۳:۳۰) نبی کی بیویو! تم میں سے جو کسی صریح فحش حرکت کا ارتکاب کرے گی تو اسے دوہرا عذاب دیا جائے گا اللہ کے لئے یہ بہت آسان ہے.

(۱۷:۳۲) اور زنا کے قریب نہ جاؤ بے شک وہ بے حیائی (فحش) اور بری راہ ہے سورت نور کی آیت ۲ میں زانی مرد اور عورت کی سزا اللہ نے سو (۱۰۰) کوڑے بتائی ہے. آیت میں یہ کوئی قید نہیں ہے کہ عورت اور آدمی شادی شدہ ہیں یا نہیں

नही केवल एक बात व्यभिचार बताई है यदि यह दण्ड अविवाहित का होता तो ईश्वर अवश्य आयत में स्पष्टिकरण करता कि यह दण्ड विवाह रहित का है और विवाहित की संग सारी है, परन्तु आयत में कोई प्रतिबन्धा नही केवल जानी की सजा है और वास्तव में विवाहित और विवहरहित की यही सो कोड़े की सज़ा है परन्तु हमारे यहा ईश्वर के अनिवार्य किए हुए नियम को यह कह कर बदल दिया कि मुहम्मद स0 ने विवाहित का दण्ड संगसार बताया है,किस नियम से बताया है? वह यह कि एक आयत आयत अवतरित हुई थी जिसमें विवाहित का दण्ड संगसार है और वह आयत पढ़ने में निरस्त हो गई आदेश शेष है, और इस आयत का अर्थ बताया जाता है बूढ़ी स्त्री या बूढ़ा आदमी (अश्शेखु वश्शेखतुन) जिना करे तो उसको संगसार (पत्थर मार कर वद्य) कर दो और मार दो, बुखारी में महामना उमर र0 के मुख से कहलाया गा है कि मुझे भय है कि लम्बा समय व्यतीत होने के बाद उम्मत के लोग यह कहकर पथ भ्रष्ट न हो जाए कि हम संगसार वाली (आयत रजम) आयत कुरआन में नही पाते जबकि यह आयत मुहम्मद स0 पर अवतरित हुई थी आप ने उसपर व्यवहार किया और हमने उसको याद किया और व्यवहार किया,

विचारणीय बात यह है कि श्रीमान उमर र0 यह स्वीकार कर रहे है कि आयत रजम अवतरित हुई थी और जब कुरआन में नही है तो कुरआन में लिखी क्यों नही? जबकि उमर र0 के कहने पर ही अबुबकर र0 के अदेश से कुरआन संग्रह होकर लिखा गया एक रिवायत में यह है कि उसमान र0 ने कुरआन को संग्रह किया और एक रिवायत यह है कि मुहम्मद स0 के सामने ही कुरआन संग्रह हो चुका था और वह चार सहाबी थे जिन्होंने लिखा था,

परन्तु सत्य यह है कि कुरआन मुहम्मद स0 के जीवन में ही लिखा जा चुका था और हर जगह जिल्दे जा चुकी थी न अबुबकर ने संग्रह किया न उसमान ने यह सब रिवायत घड़ी हुई है, न ही आयत रजम अवतरित हुई न उस पर किसी ने व्यवहार किया न ही कोई आयत कुरआन में निरस्त है न निरसक,

अब देखा यह जाए कि कुरआन के प्रकाश में जानी की सज़ा सो कोड़े है या संग सार करके मार देना {4:25} में विवाहित मा मलाकत ऐमान का दण्ड जिना करने पर आधा बताया गया है और {33:30} में विवाहित का दण्ड जिना पर जिस में फहश का शब्द आया है जो {17:30} में जिना के लिए प्रयोग हुआ है ऐसे ही अज़ाब का शब्द जो {24:1-2} में कोड़ो की सज़ा के लिए प्रयोग हुआ है यही शब्द अज़ाब {33:30} में आया है जिसमें अज़ाब दो गुना बताया है अर्थात दो सो कोड़े,

अब पात्रता से निर्णय होना है कि दण्ड कौन सा है यदि विवाहित का दण्ड रजम स्वीकार किया जाए तो रजम में आधी और दो गुनी कैसे होगी? दो गुनी आधी या चौथाई तो उस संख्या की हो सकती है जिसकी संख्या ज्ञात हो और जिसकी संख्या ज्ञात न हो तो उसकी आधी दो गुनी कैसे हो सकती है? जबकि संग सार में जानी को पत्थर मारते मारते ही समाप्त कर दिया जाता है वह पहले पत्थर में भी मर सकता है और दो सो पत्थरो के बाद भी जीवत रह सकता है पत्थरों का वज़न भी भिन्न हो सकता है, ऐसी स्थिति में पत्थरों का दण्ड दो गुना और आधा कैसे होगा जब कि {4:25} में आधा और {33:30} में दो गुना है विवाहिता का,

इससे सिद्ध हुआ कि संग सारी का कोई आस्तित्व नही है, केवल सो कोड़ो का दण्ड है चाहे जानी विवाहित हो या विवाह रहित,

कथनों में कहा गया है कि रजम के दण्ड की आयत तोरेत में है और मुहम्मद स0 ने उस को देख कर ही जानी को यह दण्ड

صرف ایک بات زانی بتائی ہے اگر یہ سزا غیر شادی شدہ کی ہوتی تو اللہ ضرور آیت میں وضاحت کرتا کہ یہ سزا غیر شادی شدہ کی ہے اور شادی شدہ کی سنگ ساری ہے مگر آیت میں کوئی قید نہیں صرف زانی کی سزا ہے اور حقیقت میں شادی شدہ اور غیر شادی شدہ کی یہی سو (۱۰۰) کوڑے کی سزا ہے مگر ہمارے یہاں اللہ کے فرض کئے ہوئے قانون کو یہ کہہ کر بدل دیا کہ محمدؐ نے شادی شدہ کی سزا سنگ سار بتائی ہے کس قانون سے بتائی ہے؟ وہ یہ کہ ایک آیت نازل ہوئی تھی جس میں شادی شدہ کی سزا سنگ سار ہے اور وہ آیت تلاوت مین منسوخ ہو گئی حکم باقی ہے اور اس آیت کا مطلب بتایا جاتا ہے کہ بوڑھی عورت یا بوڑھا آدمی (اشیخ والشیخۃ) زنا کرے تو اس کو سنگ سار کر دو اور ماردو. بخاری میں حضرت عمرؓ کی زبانی کہلایا گیا ہے کہ مجھے خوف ہے کے لوگ یہ کہہ کر گمراہ نہ ہو جائیں کہ ہم سنگ ساروالی (آیت رجم) آیت قرآن میں نہیں پاتے جب کہ یہ آیت محمدؐ پر نازل ہوئی تھی آپ نے اُس پر عمل کیا اور ہم نے اس کو یاد کیا اور عمل کیا.

غور طلب بات یہ ہے کہ حضرت عمرؓ یہ اقرار کر رہے ہیں کہ آیت رجم نازل ہوئی تھی اور اب قرآن میں نہیں ہے تو قرآن میں لکھی کیوں نہیں؟ جب کہ عمرؓ کے کہنے پر ہی ابوبکرؓ کے حکم سے قرآن جمع ہو کر لکھا گیا. ایک روایت یہ ہے کہ عثمانؓ نے قرآن کو جمع کیا. اور ایک روایت یہ ہے کہ محمدؐ کے سامنے ہی قرآن جمع ہو چکا تھا اور وہ چار صحابی تھے جنہوں نے لکھا تھا.

مگر حقیقت یہ ہے کہ قرآن محمدؐ کی زندگی میں ہی لکھا جا چکا تھا اور ہر جگہ جلدیں جا چکی تھیں نہ ابوبکر نے جمع کیا نہ عثمان نے یہ سب روایتیں موضوع ہیں نہ ہی آیت رجم نازل ہوئی نہ اس پر کسی نے عمل کیا نہ ہی کوئی آیت قرآن میں منسوخ ہے نہ ناسخ.

اب دیکھا یہ جائے کہ قرآن کی روشنی میں زانی کی سزا سو کوڑے ہے یا سنگ سار کر کے مار دینا (۴:۲۵) میں شادی شدہ ماملکت ایمان کی سزا زنا کرنے پر آدھی بتائی گئی ہے اور (۳۳:۳۰) میں شادی شدہ کی سزا زنا پر جس میں فحش کا لفظ آیا ہے جو (۱۷:۳۰) میں زنا کے لئے استعمال ہوا ہے. ایسے ہی عذاب کا لفظ جو (۲۴:۱:۲) میں کوڑوں کی سزا کے لئے استعمال ہوا ہے یہی لفظ عذاب (۳۳:۳۰) میں آیا ہے جس میں عذاب دوگنا بتایا ہے یعنی دو سو کوڑے.

اب ایمان داری سے فیصلہ ہونا ہے کہ سزا کون سی ہے اگر شادی شدہ کی سزا رجم تسلیم کی جائے تو رجم میں آدھی اور دوگنی کیسے ہوگی؟ دوگنی آدھی یا چوتھائی تو اس عدد کی ہو سکتی ہے جس کی تعداد معلوم ہو. اور جس کی تعداد معلوم نہ ہو تو اس کی آدھی دوگنی کیسے ہو سکتی ہے؟ جب کہ سنگ ساری میں زانی کو پتھر مارتے مارتے ہی ختم کر دیا جاتا ہے. وہ پہلے پتھر میں بھی مر سکتا ہے اور دو سو پتھروں کے بعد بھی زندہ رہ سکتا ہے پتھروں کا وزن بھی مختلف ہو سکتا ہے ایسی حالت میں پتھروں کی سزا دوگنی اور آدھی کیسے ہوگی. جب کہ (۴:۲۵) میں آدھی اور (۳۳:۳۰) میں دوگنی ہے شادی شدہ کی.

اس سے ثابت ہوا کہ رجم کی سزا کا کوئی وجود نہیں ہے صرف اور صرف سو کوڑوں کی سزا ہے چاہے زانی شادی شدہ ہو یا غیر شادی شدہ

روایات میں کہا گیا ہے کہ رجم کی سزا کی آیت توریت میں ہے اور محمدؐ نے اس کو دیکھ کر ہی زانی کو یہ سزا دی اور مقرر کی اور کہا جاتا ہے کہ اس سزا کو دینے

दिया और निश्चित किया और कहा जाता है कि इस दण्ड को देने के बाद मुहम्मद स0 ने कहा कि ऐ ईश्वर तेरे आदेश को जीवित किया जब कि वह उसे मिटा चुके थे.

क्या तोरेत में आज यह आयत है? यदि है याथी तो कुरआन में क्यों नही जबकि कुरआन से सिद्ध है कि जो धर्म शास्त्र पहले रसूलों का था वही मुहम्मद स0 का है {42:13, 2:130, 132,135, 2:136, 3:95} यह आयात कुरआन में है और हम पढ़ते भी है फिर भी हम विचार नही करते? बात यह है कि आयत रजम तोरेत में भी नही थी तोरेत में भी सो कोड़े थे यदि कोई किसी तोरेत की प्रति लाकर बताए कि इसमें रजम लिखा है तो परिवर्तित तोरेत होगी अतिरिक्त इसके मुहम्मद और मुहम्मद के समुदाय को ईश्वर का यह आदेश है कि आप लोग जो भी निर्णय करो उसको कुरआन के अनुसार करो जो ईश्वर ने अवतरित किया है यदि इसके अनुसार निर्णय और व्यवहार नही करोगे तो तुम्हारी गणना नास्तिकों दुराचारियों और दुष्टों में होगी तो इस आदेश के होते हुए मुहम्मद स0 तोरेत की ओर को क्यो देखने लगे थे फिर भी जो उस तोरेत में था जो मूल थी और वह कुरआन में आ गया तो कुरआन ही तो मूल हुआ.

जो कुछ हम पढ़ते चले आ रहे है जिसके लिए यह कहा जाता है कि यही उचित है यदि कोई इसको सत्य स्वीकार नही करता तो वह सुन्नत को नही मानता और सुन्नत को न मानने वाला इस्लाम से निस्कासित होता है अतः इस भय के कारण किसी में यह साहस नही हो पाता कि इस लिखे को चुनौती दे यदि कभी किसी ने साहस किया भी है तो उसका जीवन दुभरकर दिया, इसलिए वह भी चुप हो गया और गाड़ी अपने उसी मार्ग पर चलती रही जिस पर चला दी है, जिससे वह उचित स्थान पर नही पहुंचती और जाति बरबाद हो रही है, उचित बात कुरआन में है और वही वास्तविक सुन्नत है मिथ्या सुन्नत को स्वीकार करने का अर्थ यह हुआ कि मुहम्मद स0 और सहाबा पर एक मिथ्या दोषारोपण हो रहा है यह एक मिथ्या रोप है और मिथ्या रोप लगाने वालो पर अस्सी कोड़े लगने चाहिए हर उस व्यक्ति को जो इस आरोप लगाने में सम्मिलित है, मुहम्मद स0 ने वह कर्म किया और कहा जो उन पर वही आती थी इसके विपरीत न व्यवहार किया और न कहा ऐसे ही सहाबा ने वह कर्म किया जो मुहम्मद स0 ने बताया और वह कुरआन में सुरक्षित है मौलाना अमीन अहसन इस्लाही मरहूम साहब ने भी तदब्बुर कुरआन जिल्द पांच पेज 366 पर रिवायत रजम और संग सार को मिथ्या बताया है तफसीर इब्ने कसीर में भी संग सार के दण्ड को मिथ्या बताया है, उन्होंने भी कोड़ो वाली सजा को कहा है जो कुरआन में है.

जिस वाक्य को आयत रजम के नाम से सम्बन्धित किया गया है जिससे विवाहित का दण्ड रजम बताया जाता है उसमें कोई शब्द ऐसा नही जिसका अर्थ विवाहित होता हो काल्पनिक वाक्य में शब्द अश्शेखु वश्शेखतुन है इसका अर्थ बूढ़ा और बूढ़ी है और वह भी अधिक व्योवृद्ध तो क्या बहुत अधिक व्योवृद्ध आदमी स्त्री जिना कर सकते हैं? थोड़ा विचार तो करो जिना तो उस आयु तक होता है जब तक मनुष्य में शक्ति होती है और बूढ़े में तो यह शक्ति रहती ही नही होगी फिर शब्द विवाहित तो होता.

आयत 3 में है कि जानी पुरूष जानी स्त्री से विवाह करता है और जानी स्त्री जानी पुरूष से अर्थात जो जैसा होता है वैसे को ही पसन्द करता है तो प्रश्न उत्पन्न होता है कि जानी पुरूष और स्त्री विवाह तो जब ही करेंगे जब जीवित रह जाएं और संग सार में तो जीवित रहते ही नही, फिर वह विवाह कैसे करेंगे? क्या समाधी में विवाह करेंगे.

जीवित रहने की सम्भावना कोड़ो में है अतः सिद्ध हुआ कि

کے بعد محمدؐ نے کہا کہ اے اللہ تیرے حکم کو زندہ کیا جب کہ وہ اسے مٹا چکے تھے.

کیا توریت میں آج یہ آیت ہے؟ اگر ہے یا تھی تو قرآن میں کیوں نہیں جب کہ قرآن سے ثابت ہے کہ جو شریعت پہلے رسولوں کی تھی وہی محمدؐ کی ہے (۴۲:۱۳، ۲:۱۳۰،۱۳۲،۱۳۵: ۲:۱۳۶، ۳:۹۵) یہ آیات قرآن میں ہیں اور ہم پڑھتے بھی ہیں پھر ہم غور کیوں نہیں کرتے؟ بات یہ ہے کہ آیت رجم توریت میں بھی نہیں تھی توریت میں بھی سو کوڑے تھے اگر کوئی کسی توریت کا نسخہ لا کر بتائے کہ اس میں سنگ سار لکھا ہے تو وہ تحریف شدہ توریت ہوگی علاوہ ازیں محمدؐ اور محمدؐ کی امت کو اللہ کا یہ حکم ہے کہ آپ لوگ جو بھی فیصلہ کرو اس قرآن کے مطابق کرو جو اللہ نے نازل کیا ہے اگر اس کے مطابق فیصلہ اور عمل نہیں کرو گے تو تمہارا شمار کافروں فاسقوں اور ظالموں میں ہوگا تو اس حکم کے ہوتے ہوئے محمدؐ توریت کی طرف کو کیوں دیکھ رہے تھے؟ پھر بھی جو اس توریت میں تھا جو اصل تھی اور وہ قرآن میں آ گیا تو قرآن ہی تو اصل ہوا.

جو کچھ ہم پڑھتے چلے آرہے ہیں جس کے لئے یہ کہا جا رہا ہے کہ یہی درست ہے اگر کوئی اس کو درست تسلیم نہیں کرتا تو وہ سنت کو نہیں مانتا اور سنت کو نہ ماننے والا اسلام سے خارج ہوتا ہے. اس لئے اس ڈر کی وجہ سے کسی میں یہ ہمت نہیں ہو پاتی کہ اس لکھے کو چیلنج کردے اگر کبھی کسی نے ہمت کی بھی ہے تو اس کا جینا بھاری کر دیا. اس لئے وہ بھی خاموش ہو گیا اور گاڑی اپنے اس راستے پر چلتی رہی جس پر چلا دی ہے جس سے وہ صحیح مقام پر نہیں پہنچتی اور قوم برباد ہو رہی ہے. درست بات قرآن میں ہے اور وہی حقیقی سنت ہے.

غلط سنت کو تسلیم کرنے کا مطلب یہ ہوا کہ محمدؐ اور صحابہ پر ایک غلط الزام لگ رہا ہے یہ ایک تہمت ہے اور تہمت لگانے والوں پر اسی کوڑے لگنے چاہیں ہر اس آدمی کو جو اس الزام لگانے میں شامل ہیں محمدؐ نے وہ عمل کیا اور فرمایا جو ان پر وحی آتی تھی اس کے خلاف نہ عمل کیا اور نہ فرمایا ایسے ہی صحابہ نے وہ عمل کیا جو محمدؐ نے بتایا اور وہ قرآن میں محفوظ ہے.

مولانا امین احسن اصلاحی مرحوم صاحب نے بھی تدبر قرآن جلد پانچ ۳۶۶ ص پر روایت رجم اور سنگ سار کو غلط بتایا ہے تفسیر ابن کثیر میں بھی سنگ ساری سزا کو غلط بتایا ہے انہوں نے بھی کوڑوں والی سزا کو کہا ہے جو قرآن میں ہے.

جس جملہ کو آیت رجم کے نام سے منسوب کیا گیا ہے جس سے شادی شدہ کی سزا رجم بتائی جاتی ہے اس میں کوئی لفظ ایسا نہیں جس کا مطلب شادی شدہ ہوتا ہو مفروضہ جملے میں لفظ الشیخ والشیخۃ ہے اس کا مطلب بوڑھا اور بوڑھی ہے اور وہ بھی بہت زیادہ عمر رسیدہ تو کیا بہت زیادہ عمر رسیدہ آدمی عورت زنا کر سکتے ہیں؟ ذرا غور تو کرو زنا تو اس عمر تک ہوتا ہے جب تک آدمی میں طاقت ہوتی ہے اور بوڑھے میں تو یہ طاقت ہی نہیں رہتی ہوگی پھر لفظ شادی شدہ تو ہوتا.

آیت ۳ میں ہے کہ زانی مرد زانی عورت سے نکاح کرتا ہے اور زانی عورت زانی مرد سے یعنی جو جیسا ہوتا ہے ویسے کو ہی پسند کرتا ہے تو سوال پیدا ہوتا ہے کہ زانی مرد اور عورت نکاح تو جب ہی کریں گے جب زندہ رہ جائیں اور سنگ ساری میں تو زندہ رہتے ہی نہیں پھر وہ نکاح کیسے کریں گے؟ کیا قبر میں نکاح کریں گے؟

زندہ رہنے کا امکان کوڑوں میں ہے اس لئے ثابت ہوا کہ زانی کی

سزا کوڑے ہیں پتھر نہیں، چاہے وہ شادی شدہ ہیں یا کنوارے۔

آخر میں یہ اور پڑھ لو کہ مرحوم مولانا مودودی قرآن میں شادی شدہ کی سزا کا ہی انکار کرتے ہیں ملاحظہ ہو۔ ''حد رجم سنت سے ثابت شدہ متفق علیہ حکم یہ امر کہ زنا بعد احصان کی کیا سزا ہے قرآن مجید نہیں بتاتا از سید ابوالاعلیٰ مودودی، حوالہ کتاب حد رجم ناشر مکتبہ ذکری رامپور یو پی ۱۹ اس کتاب میں رجم کو ثابت کیا ہے غلام محمد منصوری نے انہوں نے تقریر کی ہے ریڈیو کویت سے ۹/اگست ۱۹۸۱ء جب کہ قرآن میں سورت نساء کی آیت ۲۵/اور سورت احزاب کی آیت ۳۰ سے شادی شدہ کی سزا صاف الفاظ میں درج ہے قرآن میں پارہ پانچ کا نام **والمحصنات** ہے اور یہ سورت نساء کی آیت ۲۴ کا شروع کا لفظ ہے ملاحظہ ہو۔

''وَالمحصنٰت من النساء'' اور حرام کی گئیں ہیں شوہر والی عورتیں۔

آیت ۲۵/دیکھئے۔ اور دو ان کو مہران کے معروف طریقے سے قید نکاح (محصنٰت) میں رہنے والیاں نہ پانی بہانے والیاں اور نہ پکڑنے والیاں چھپے یار، پھر جب وہ نکاح کر لیں (احصن) تو پھر اگر آئیں ساتھ بے حیائی کے تو اوپر ان کے آدھی سزا جو اوپر محصنٰت کے ہے یعنی شادی شدہ خاندانی عورت کی سزا سے آدھی ہے۔

آیت میں لفظ محصنٰت احصن ہے اس لفظ محصنٰت کو شادی شدہ نہیں مانا ان نہ ماننے والوں میں غلام محمد منصوری اور مودودی صاحب بھی ہیں۔ اگر محصنٰت کا مطلب غیر شادی شدہ ہے تو پارے کے شروع میں لفظ محصنٰت ہے اس کا مطلب بھی غیر شادی شدہ ہونا چاہیے اس لئے کسی بھی غیر شادی شدہ سے شادی کرنا حرام ہے عالموں کے ترجموں کے مطابق جو انہوں نے ترجمہ کیا ہے غیر شادی شدہ اس لئے جو آدمی محصنٰت کا مطلب آیت ۲۵ میں غیر شادی شدہ مان رہے ہیں وہ دیکھیں کہ ان کے نکاح میں کیسی عورتیں ہیں کن سے نکاح کیا ہے اگر غیر شادی شدہ سے کیا ہے تو وہ حرام نکاح ہوا وہ گناہ کے مرتکب ہو رہے ہیں اگر شادی شدہ سے کر رہے ہیں تو بقول ان حضرات کے ان کے لئے تو شاید جائز ہو جائے مگر اللہ کا قانون شادی شدہ سے نکاح حرام کر رہا ہے (والمحصنٰت من النساء) اب خود ہی غور کریں کہ محصنٰت کا مطلب شادی شدہ ہے یا نہیں ہاں کہیں آزاد عفیفہ خاندانی عورت بھی ہے لیکن ہر جگہ نہیں۔

(اور سنو) اور جو لوگ پاک دامن عورتوں پر تہمت لگائیں گے اور پھر (ثبوت میں) چار گواہ نہ لائیں تو انہیں اسی کوڑے مارنا اور کبھی ان کی گواہی قبول نہ کرنا اور وہی کے فاسق ہیں (۴)

ہاں جو اس جرم کے بعد توبہ کر لیں اور (اپنی حالت) سنوار لیں تو اللہ بخشنے والا مہربان ہے (۵)

اور جو لوگ اپنی عورتوں پر بدکاری کا الزام لگائیں اور خود ان کے سوا ان کے گواہ نہ ہوں تو ہر ایک کی شہادت یہ ہے کہ پہلے چار بار اللہ کی قسم کھائے کہ بے شک وہ سچا ہے (۶)

اور پانچویں بار یہ کہے گا کہ اگر میں جھوٹا ہوں تو مجھ پر اللہ کی لعنت ہو (۷)

जानी का दण्ड कोड़े है पत्थर नही चाहे वह विवाहित है या कुंवारे .

अन्त में यह और पढ़लो कि मरहूम मौलाना अबुल आला मोदूदी कुरआन में विवाहित के दण्ड का ही इनकार करते है, अवलोकन हो हद्दे रजम सुन्नत से साबित शुदा मुत्तफिक़ अलेह हुकम यह अमर कि ज़िना (बादे इहसान की क्या सज़ा है कुरआन मजीद नही बताता अज़ सय्यद मौलाना मौदूदी) हवाला किताब हद रजम नाशिर मकतबा जिकरा रामपुर यू0पी0 पेज ।9 इस पुस्तक में रजम को सिद्ध किया गया है गुलाम मुहम्मद मन्सूरी ने उन्होंने भाषण किया है, रेडियो कुवैत से 9 अगस्त ।98। ई0

जबकि कुरआन में सूरत निसा की आयत 25 और सूरत अहज़ाब की आयत 30 से विवाहित का दण्ड स्पष्ट शब्दों में अंकित है कुरआन में पारा पांच का नाम वलमुहसिनात है और यह सूरत निसा की आयत 24का आरम्भ का शब्द है अवलोकन हो,

वलमुहसिलनाते मिनन्निसा, और अवैध की गई है पति वाली स्त्रीयां,

आयत 25 देखिए और दो उनको मेहर उन के परिचित ढंग से विवाह के बन्धन (मुहसिनात) में रहने वालियां न पानी बहाने वालियां और न पकड़ने वालियां छुपे यार फिर जब वह विवाह कर ले (उहसिन्ना) तो फिर यदि आए साथ निर्लज्जता के तो ऊपर उनके आधी सज़ा है जो ऊपर मुहसिनात के है अर्थात विवाहित परिवारिक स्त्री के दण्ड से आधी है,

आयत में शब्द मुहसिनात उहसिन्ना है इस शब्द मुहसिनात को विवाहित नही माना उन न मानने वालो में गुलाम मुहम्मद मंसूरी और मोदूदी साहब भी है यदि मुहसिनात अर्थ अविवाहित है तो पारे के आरम्भ में शब्द मुहसिनात है उसका अर्थ भी अविवाहित होना चाहिए इस लिए किसी भी अविवाहिता से विवाह करना अवैध है आलिमों के अनुसार जो वह अनुवाद कर रहे हैं अविवाहित अतः जो व्यक्ति मुहसिनात का अर्थ आयत 25 में अविवाहित मान रहे है वह देखें कि उनके विवाह में कैसी स्त्रीयां है किन से विवाह किया है यदि अविवाहिता से किया है तो वह अवैध विवाह हुआ वह पाप के कर्ता हो रहे है, यदि विवाहिता से कर रहें है तो बकोल उन हज़रात के उनके लिए तो, कदाचित वैध हो जाए परन्तु ईश्वर की पुस्तक विवाहिता से विवाह अवैध कर रही है वलमुहसिनात मिनन्निसा विवाहिता अब स्वयं ही विचार करें कि मुहसिनात का अर्थ विवाहिता है या नही हां कही स्वतंत्र पवित्र परिवारिक स्त्री भी है परन्तु हर स्थान पर नही

(और सुनो) और जो लोग पवित्र स्त्रीयों पर दोष लगायेंगे और फिर (प्रमाण में) चार साक्षी न लाए तो उन्हें अस्सी कोड़े मारना और कभी उनकी साक्ष्य स्वीकार न करना और वही पक्के दुरा चारी है (4)

हां जो इस अपराधके बाद पश्चाताप कर लें और (अपनी दशा) संवार लें तो ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालू है (5)

और जो लोग अपनी स्त्रीयों पर भ्रष्टाचार का आरोप लगाएं और स्वयं उनके अतिरिक्त उनके साक्षी न हो तो हर एक का साक्ष्य यह है कि पहले चार बार ईश्वर की शपथ खाए कि निःसंदेह वह सच्चा है (6)

और पांचवी बार यह कहेगा कि यदि मैं झूठा हूं तो मुझ पर ईश्वर की धिक्कार हो (7)

और स्त्री से इस प्रकार सजा टल सकती है कि वह (पति के शपथ खाने के बाद) पहले चार बार ईश्वर को साक्षी बना कर शपथ खाए कि यह व्यक्ति (अपने आरोप में) झूठा है (8)

اورعورت سے اس طرح سزا ٹل سکتی ہے کہ وہ (شوہر کے قسم کھانے کے بعد) پہلے چار مرتبہ اللہ کو گواہ ٹھہرا کر قسم کھائے کہ یہ شخص (اپنے الزام میں) جھوٹا ہے (۸)

और पांचवी बार कहे यदि यह व्यक्ति (अपने आरोप में) सच्चा हो तो मुझ पर ईश्वर का क्रोध टूटे (9)

اور پانچویں مرتبہ کہے اگر یہ شخص (اپنے الزام میں) سچا ہوتو مجھ پر اللہ کا غضب ٹوٹے (۹)

और यदि न होती ईश्वर की कृपा तुम पर और उसकी अनुकम्पा और यह कि ईश्वर बहुत ही पश्चाताप स्वीकार करने वाला है और युक्ति वाला है तो तुम्हें ऐसे नियम और सिद्धांत कहां मिलते अतः इस प्रसाद पर ईश्वर की आज्ञाकारी करो (10)

اور اگر نہ ہوتا اللہ کا فضل تم پر اور اس کی رحمت اور یہ کہ اللہ بہت ہی توبہ قبول کرنے والا ہے اور حکمت والا ہے تو تمہیں ایسے اصول اور ضابطے کہاں ملتے پس اس نعمت پر اللہ کی فرمانبرداری کرو (۱۰)

नोट- सूरत नूर के आरम्भ से ही ईश्वर ने ऐसे नियम बताए कि उन पर कार्य करने से आदमी व्याकूलता से बच जाएगा और समाज में बिगाड़ न आएगा, और जो इन की अवहेलना करेगा तो बिगाड़ उत्पन्न हो जाएगा, इन नियमों को देकर ईश्वर ने कहा है कि यह जो कुछ नियम दिए है यह केवल हमारी अनुकम्पा ही तो है, यदि हम न देते तो तुम अन्धेरे में रहते और तुम्हारा जीवन कठिन हो जाता अतः इन पर व्यवहार करो और ईश्वर का धन्य वद्ध करो अर्थात इनका पालन करो पालन करना ही धन्यवाद करना है परन्तु आज धन्यवाद करने का भी एक सरल ढंग हमने बना लिया, अर्थात केवल मुख से धन्यवाद कह देना जबकि इसका असिल अर्थ है आज्ञाकारी करना ईश्वर की और यदि विषय व्यक्ति से व्यक्ति का हो तो एक दूसरे का मंगल चाहना, ऊपर की आयात में ईश्वर ने जो चेतावनीयां प्रेषित करके आस्तिकों को यह बताया कि उनका प्रेषण हमारी ओर से तुम पर एक अनुकम्पा है अतः इन पर क्रिया करके अपने जीवन को ठीक करलो और यदि इससे शिक्ष प्राप्त न करोगे तो समझ लो वह यह कि,

نوٹ:۔ سورت نور کے شروع سے ہی اللہ نے ایسے قانون بتائے کہ ان پر عمل کرنے سے آدمی پریشانی سے بچ جائے گا اور اس سماج میں بگاڑ نہ آئے گا۔ اور جو ان کی خلاف ورزی کرے گا تو بگاڑ پیدا ہو جائے گا ان قانونوں کو دے کر اللہ نے کہا ہے کہ یہ جو کچھ قانون دئے ہیں یہ صرف ہماری رحمت ہی تو ہے اگر ہم نہ دیتے تو تم اندھیرے میں رہتے اور تمہاری زندگی مشکل ہو جاتی۔ اس لئے ان پر عمل کرو اور اللہ کا شکر ادا کرو یعنی ان کی پابندی کرو پابندی کرنا ہی شکر ادا کرنا ہے لیکن آج شکر ادا کرنے کا بھی ایک آسان طریقہ ہم نے بنالیا۔ یعنی صرف زبان سے شکریہ کہہ دینا جب کہ اس کا اصل مطلب ہے فرمانبرداری کرنا اللہ کی اور اگر معاملہ آدمی سے آدمی کا ہوتو ایک دوسرے کی بھلائی چاہنا اوپر کی آیات میں اللہ نے جو تنبیہات نازل کر کے مومنوں کو یہ بتایا کہ ان کا نزول ہماری طرف سے تم پر ایک رحمت ہے اس لئے ان پر عمل کر کے اپنی زندگی کو درست کرلو اور اگر اس سے عبرت حاصل نہ کرو گے تو سمجھ لو وہ یہ کہ۔

जो लोग दोषारोपण करेंगे वह तुममें से ही एक दल है जो कपटि है (जो तुममें रह रहे है) परन्तु उनके दोषारोपण को अपने लिए बुरा न समझना अपितु वह तुम्हारे लिए अच्छा सद्धि होगा (वह इस लिए कि जब तुम अपने विरुद्ध मिथ्या) बातें सुनोगे तो उनका उपाए ईश्वर की आयात के प्रकाश में खोजोगे और तुम को यह ज्ञान हो जाएगा कि कौन कपटि है और कौन आस्तिक जो कपटि छुपे हुए है वह प्रकट हो जाऐंगे और तुम उनसे सावधान हो जाओगे और यह समझ लो कि तुम्हारी कोई हानि नहीं लाभ ही लाभ है हानि उन कपटियों की है वह ऐसे कि जो इस प्रकार के दोषारोपण में जितना भाग लेगा उसके लिए उतना ही बवाल होगा और उनमें से जो कोई बड़े हंगामे में अधिक भाग लेगा उसके लिए उतना ही बड़ा कष्ट होगा (11) {33:58}

جو لوگ بہتان باندھیں گے وہ تم میں سے ہی ایک جماعت ہیں جو منافق ہیں (جو تم میں رہ رہے ہیں) مگر ان کے بہتان باندھنے کو اپنے حق میں بُرا نہ سمجھنا بلکہ وہ تمہارے لئے اچھا ثابت ہوگا (وہ اس لئے کہ جب تم اپنے خلاف غلط باتیں سنو گے تو ان کا علاج اللہ کی آیات کی روشنی میں تلاش کرو گے اور تم کو یہ علم ہو جائے گا کہ کون منافق ہے اور کون مومن۔ جو منافق چھپے ہوئے ہیں وہ ظاہر ہو جائیں گے اور تم ان سے ہوشیار ہو جاؤ گے اور یہ سمجھ لو کہ تمہارا کوئی نقصان نہیں فائدہ ہی فائدہ ہے نقصان ان منافقین کا ہے (وہ ایسے کہ) جو اس طرح کے بہتان میں جتنا حصہ لے گا اس کے لئے اتنا ہی وبال ہوگا اور ان میں سے جو کوئی بڑے ہنگامے میں زیادہ حصہ لے گا اس کے لئے اتنا ہی بڑا عذاب ہوگا (۱۱) [۵۸:۳۳]

(परन्तु ईश्वर की चेतावनी के बाद भी कपटि नहीं मानेंगे और अवश्य अवज्ञा करेंगे अतः सावधान हो जाओ शैतान लगा हुआ है जो बुरा शत्रु है) {33:58-60}

[مگر اللہ کی تنبیہ کے بعد بھی منافق باز نہیں آئیں گے اور ضرور شرارت کریں گے اس لئے ہوشیار ہو جاؤ شیطان لگا ہوا ہے جو بُرا دشمن ہے] [۳۳:۵۸،۶۰]

और यदि जब तुम ऐसी अनुचित बात सुनो तो आस्तिक पुरुष और आस्तक स्त्रीयों को अपने मन में यह अच्छा विचार करना चाहिए कि यह तो स्पष्ट मिथ्या रोपण है (12)

اور اگر جب تم ایسی غلط بات سنو تو مومن مرد اور مومن عورتوں کو اپنے دل میں یہ اچھا خیال کرنا چاہیے کہ یہ تو صریح بہتان ہے (۱۲)

(जब कपटि दोष लगाएं) तो उनको चाहिए कि वह अपनी पुष्टि के लिए चार साक्षी लाएं यदि वह साक्षी न लाए तो समझ लेना कि वह ही ईश्वर के निकट झूटे है (13)

(جب منافق بہتان لگائیں) تو ان کو چاہیے کہ وہ اپنی تصدیق کے لئے چار گواہ لائیں اگر وہ گواہ نہ لائیں تو سمجھ لینا کہ وہ ہی اللہ کے نزدیک جھوٹے ہیں (۱۳)

(मुसमानों!) यदि दुनिया और प्रलोक में तुम पर ईश्वर की कृपा और उसकी अनुकम्पा न होती तो तुम जिस कार्य में लगे थे (अर्थात धर्म से अचेतना) इस कारण तुम पर बड़ा (कठोर) कष्ट होता (14) {3:164}

(مسلمانو!) اگر دنیا اور آخرت میں تم پر اللہ کا فضل اور اس کی رحمت نہ ہوتی تو جس شغل میں تم منہمک تھے (یعنی شریعت سے بے خبری) اس کی وجہ سے تم پر بڑا (سخت) عذاب ہوتا (۱۴) [۱۶۴:۳]

(विचार करो यह तुम्हारी कितनी बड़ी भूल होगी) जब तुम बे सोचे समझे जो कुछ तुम्हारी जबानों पर आ जाएगा एक दूसरे से कहते चले जाओगे और ऐसी बात कहोगे जिसके विषय में तुम्हें कोई ज्ञान नही, क्या तुम उसको एक हलकी बात सतझते हो यद्यपि ईश्वर के निकट वह एक बड़ी ही कठोर बात है (15) {49:6}

(غور کرو یہ تمہاری کتنی زبردست غلطی ہوگی) جب تم بے سوچے سمجھے جو کچھ تمہاری زبانوں پر آجائے گا ایک دوسرے سے کہتے چلے جاؤ گے اور ایسی بات کہو گے جس کے بارے میں تمہیں کوئی علم نہیں کیا تم اس کو ایک ہلکی بات سمجھتے ہو حالانکہ اللہ کے نزدیک وہ ایک بڑی ہی سخت بات ہے (۱۵) [۶:۴۹]

और यदि तुम ने ऐसी बात सुनी भी है तो क्यों न कह दिया गया कि हमें यह अच्छा नही कि ऐसी बात मुख से निकाले ईश्वर के लिए ही पवित्रता है यह तो बड़ा ही कठोर दोषारोपण है (16)

اور اگر تم نے ایسی بات سنی بھی ہے تو کیوں نہ کہہ دیا گیا کہ ہمیں یہ اچھا نہیں کہ ایسی بات منہ سے نکالیں اللہ کے لئے ہی پاکی ہے یہ تو بڑا ہی سخت بہتان ہے (۱۶)

मुसलमानों ईश्वर तुम्हें उपदेश करता है कि यदि आस्तिक हो तो कभी ऐसा न करना (17)

مسلمانو! اللہ تمہیں نصیحت کرتا ہے کہ اگر مومن ہو تو کبھی ایسا نہ کرنا (۱۷)

(और फिर सुन लो) और ईश्वर तुम्हारे (समझाने के) लिए अपनी आयते खोल खोल कर वर्णन करता है और ईश्वर जानने वाला और युक्ति वाला है(18)

(اور پھر سن لو) اور اللہ تمہارے (سمجھانے کے) لئے اپنی آیتیں کھول کھول کر بیان کرتا ہے اور اللہ جاننے والا اور حکمت والا ہے (۱۸)

(इतनी चेतावनी के बाद भी) जो लोग इस बात को पसन्द करें कि आस्तिकों मे निर्लज्जता (की झूटी खबरें) फैले उनको दुनिया और परलोक में दुख देने वाला कष्ट होगा और ईश्वर जानता है तुम नही जानते (19)

(اتنی تنبیہ کے بعد بھی) جو لوگ اس بات کو پسند کریں کہ مومنوں میں بے حیائی (کی جھوٹی خبر) پھیلے ان کو دنیا اور آخرت میں دکھ دینے والا عذاب ہوگا اور اللہ جانتا ہے اور تم نہیں جانتے (۱۹)

(ऐ मुसलमानों फिर विचार करो) यदि ईश्वर की कृपा और उसकी अनुकम्पा (अवतरण धर्म की आकृति में) तुम पर न होती (तो तुम्हारा क्या होता अर्थात अन्धकार में रहते और एक दूसरे के विरुद्ध बे सोचे समझे आरोप लगाते पहले की भांति) और यह कि ईश्वर अत्यन्त कृपालू और दयालू है (उसने अपनी पुस्तक दे दी है) (20)

(اے مسلمانو! پھر غور کرو) اگر اللہ کا فضل اور اس کی رحمت (نزول شریعت کی شکل میں) تم پر نہ ہوتی (تو تمہارا کیا ہوتا یعنی اندھیرے میں رہتے اور ایک دوسرے کے خلاف بے سوچے سمجھے الزام تراشی کرتے پہلے کی طرح) اور یہ کہ اللہ نہایت مہربان اور رحیم ہے (اس نے اپنی کتاب دے دی ہے) (۲۰)

आस्तिकों! शैतान के पगो पर न चलना और जो व्यक्ति शैतान के पगों पर चलेगा तो शैतान तो निर्लज्जता और बुरे कर्मों ही को बताएगा और यदि तुम पर ईश्वर की दया और कृपा न होती तो एक व्यक्ति भी तुममें पवित्र न हो सकता (और ईश्वर पवित्र है) परन्तु ईश्वर का नियम यह है कि जो चाहता है उसको पवित्र कर देता है और ईश्वर सुनने वाला और जानने वाला है (21) {19:90, 71, 29:54, 39:19}

مومنو! شیطان کے قدموں پر نہ چلنا اور جو شخص شیطان کے قدموں پر چلے گا تو شیطان تو بے حیائی اور بُرے کام ہی بتائے گا اور اگر تم پر اللہ کا فضل اور اس کی مہربانی نہ ہوتی تو ایک شخص بھی تم میں پاک نہ ہوسکتا (اور اللہ پاک ہے) مگر اللہ کا قانون یہ ہے کہ جو چاہتا ہے اس کو پاک کر دیتا ہے اور اللہ سننے والا اور جاننے والا ہے (۲۱) [۷۱:۱۹؛ ۹۰:۱۹:۳۹؛۵۴:۲۹]

और तुममें से आवश्यक्ता से अधिक धन वाले और समाई वाले अल्पता न करे नाते दारों और निर्धनों और ईश्वर के मार्ग में पलायन कर आने वालों को आर्थिक सहायता देने में और उत्तम वस्तु दें और (यदि कोई भूल करे तो इस भूल पर) क्षमा से काम ले क्या तुम पसन्द नही करते कि ईश्वर तुम को क्षमा दे? और ईश्वर तो क्षमा करने वाला महरबान है (22)

اور تم میں سے حاجت سے زائد مال والے اور گنجائش والے کوتاہی نہ کریں رشتہ داروں اور غریبوں اور اللہ کی راہ میں ہجرت کر آنے والوں کو مالی امداد دینے میں اور عمدہ چیز دیں اور (اگر کوئی غلطی کرے تو اس غلطی پر) درگزر سے کام لیں کیا تم پسند نہیں کرتے کہ اللہ تم کو بخش دے؟ اور اللہ تو بخشنے والا مہربان ہے (۲۲)

जो लोग पवित्र आत्मा वाली स्त्रीयों पर जो ऐसी गन्दी बातों से अनजान है और ईश्वर पर विश्वास रखती हैं (बदकारी का) दोषारोपण करेगें उनपर दुनिया और परलोक में धिक्कार की गई है उनके लिए प्रचण्ड कष्ट है। (23)

उस दिन जब उनके विरूद्ध स्वयं उनके मुख उनके हाथ और उनके पथ साक्ष्य देगें कि वह लोग दुनिया में क्या कर्म करते रहे है (24)

उस दिन ईश्वर उन्हें उनका ठीक ठीक बदला पूरी प्रकार दे देगा और जान लेगें कि वह ईश्वर ही सत्य को प्रकट करने वाला है (25)

अशुद्ध कर्म अशुद्ध इन्सानों के लिए है और अशुद्ध आदमियों से अशुद्ध कार्य ही होते है और अच्छे कर्म और अच्छी बातें अच्छे लोगो के लिए है और अच्छे लोग अच्छे कर्म ही करते है वह कभी बुरी बातो के पास नही जाते और आस्तिको का दामन पवित्र है उन बातो से जो बनाने वाले बनाते है और सम्मान की जीविका है (26) {64:10,11}

नोट :- सूरत नूर की आयत 26 का अनुवाद यह किया गया है कि पतित स्त्रीयां पतित पुरूषों के लिए है और पतित पुरूष पतित स्त्रीयों के लिए है या पवित्र स्त्रीयां पवित्र पुरूषों के लिए है और पवित्र पुरूष पवित्र स्त्रीयों के लिए है यदि इस अनुवाद को उचित मान लिया जाय जबकि यह अनुवाद मिथ्या है तो महामना लूत अ0 की पत्नी बुरी थी और फिरऔन की पत्नी सदाचारी आस्तिक थी एक दुष्ट और एक आस्तिक और दोनो में से दुष्ट स्त्री सदाचारी नबी की पत्नी और आस्तिक सदाचारी स्त्री एक नास्तिक फिरऔन की पत्नी थी, इस प्रकार आयत का अनुवाद पतित पुरूष और पतित स्त्री वाला अनुचित है उचित भाव यह है जो मैने लिखा है,

इसकी पुष्टि स्वयं आयत (24:23) और (24:26) कर रही है (24:23) में भी सीगा (विभाग) बहुवचन है और (24:23) में भी सीगा बहुवचन है और न ही आयात में किसी एक स्त्री का नाम है जिनमें कहा गया है कि बुरी बातों से आस्तिक पुरूष और आस्तिक स्त्री पवित्र है जो यह कपटि लोग बना रहे है,

अब देखा जाए कि यह मिथ्या अनुवाद क्यों किया गया? यह इसलिए कि कथनों की पुस्तकों में एक काल्पनिक कथा अंकित है जिसमें श्रीमती आयशा र0 पर दोषारोपण किया गया है, इस दोषारोपण की मुक्ति (24:26) में कर दी गई है यह तो सत्य है कि (24:26) में दोषारोपण बुरी बातों का खण्डन किया गया है परन्तु क्या अनुवाद उचित किया गया है और श्रीमती आयशा र0 पर आरोप ठीक है? न तो अनुवाद ही पतित स्त्री पुरूष वाला उचित है और न ही आयशा र0 पर आरोप ठीक है पुरी सूरत में किसी स्थान पर भी न आयशा का नाम है और न ही जमीर एक वचन की है, अपितु सीगा बहुवचन है अतः यह घटना इफ्क आयशा वाली बिल्कुल मिथ्या है, जिसका विस्तार मैंने अपनी पुस्तक 'नामूस रसूल' में किया है अवलोकन हो,

वास्तव में कपटियों ने मुसलमानों में मतभेद और झगड़ा कराने के लिए कुछ ऐसे आरोप आस्तिक पुरूषों और स्त्रियों पर लगाए या लगाऐंगे जो मिथ्या होंगे सादा सरल मुसलमान उनकी पुष्टि न करते हुए आपस में चर्चा करने लगे इस अनुचित और आशंका पूर्ण बात से बचाने के लिए ईश्वर ने मुसलमानों को यह बताया कि ऐ मुसलमानों

جولوگ پاک دامن عورتوں پر جوایسی گندی باتوں سے بے خبر ہیں اوراللہ پرایمان رکھتی ہیں (بدکاری کی) تہمت لگائیں گےان پر دنیا اورآخرت میں لعنت کی گئی ہےان کے لئےسخت عذاب ہے(۲۳)

اس روز جب ان کے خلاف خودان کی زبانیں ان کے ہاتھ اوران کے پاؤں گواہی دیں گے کہ وہ لوگ دنیا میں کیا عمل کرتے رہے ہیں(۲۴)

اس دن اللہ انہیں ان کاٹھیک ٹھیک بدلہ پوری طرح دے دےگا اورجان لیں گے کہ وہ اللہ ہی حق کوظاہر کرنے والا ہے(۲۵)

ناپاک کام ناپاک انسانوں کے لئے ہیں اور ناپاک آدمیوں سے ناپاک کام ہی ہوتے ہیں. اوراچھے کام اوراچھی باتیں اچھے لوگوں کے لئے ہیں اوراچھے لوگ اچھے کام ہی کرتے ہیں وہ کبھی بُری باتوں کے پاس نہیں جاتے.اورمومنوں کادامن پاک ہےان باتوں سے جوبنانے والے بناتے ہیں اور رزق کریم ہے(۲۶) [۶۴:۱۰،۱۱]

نوٹ :۔سورت نورکی آیت ۲۶/کااکثرترجمہ یہ کیاگیا ہے کہ خبیث عورتیں خبیث مردوں کے لئے ہیں اورخبیث مردخبیث عورتوں کے لئے ہیں. پاکیزہ عورتیں پاکیزہ مردوں کے لئے اورپاکیزہ مردپاکیزہ عورتوں کے لئے ہیں.اگراس ترجمے کوصحیح مان لیاجائے جب کہ یہ ترجمہ غلط ہےتوحضرت لوطؑ کی بیوی بُری تھی اور فرعون کی بیوی نیک مومن تھی ایک بداورایک مومن،اوردونوں میں سے بدعورت نیک نبی کی بیوی اورمومن نیک عورت ایک کافرفرعون کی بیوی تھی.اس طرح آیت کاترجمہ خبیث مرداورخبیث عورت والاغلط ہےصحیح مفہوم وہ ہےجومیں نےلکھا ہے.

اس کی تصدیق خودآیت (۲۳:۲۴ اور۲۶:۲۴) کررہی ہے. (۲۳:۲۴) میں بھی صیغہ جمع ہےاور(۲۶:۲۴) میں بھی صیغہ جمع ہےاورنہ ہی آیات میں کسی ایک عورت کانام ہےجن میں کہاگیا ہے کہ بُری باتوں سےمومن مرداورمومن عورتیں پاک ہیں جو یہ منافق لوگ بنارہے ہیں.

اب دیکھاجائے کہ یہ غلط ترجمہ کیوں کیاگیا ہے؟ یہ اس لئے کہ روایات کی کتابوں میں ایک فرضی قصہ درج ہےجس میں حضرت عائشہؓ پرتہمت لگائی گئی ہےاوراس تہمت کی برات (۲۶:۲۴) میں کردی گئی ہے یہ توصحیح ہے کہ (۲۶:۲۴) میں تہمت بُری باتوں کی تردید کی گئی ہےمگرکیاترجمہ صحیح کیاگیا ہے. اورحضرت عائشہ پرالزام ٹھیک ہے؟ نہ توترجمہ ہی خبیث عورت آدمی والاصحیح ہے اورنہ ہی عائشہؓ پرالزام صحیح ہےسیاق وسباق میں کسی جگہ بھی نہ عائشہ کانام ہےاور نہ ہی ضمیرواحدمونث کی ہےبلکہ صیغہ جمع کاہے.اس لئے یہ واقعہ افک عائشہ والا بالکل غلط ہےجس کی تفصیل میں نےاپنی کتاب ناموس رسول میں کی ہےملاحظہ ہو.

حقیقت میں منافقین نےمسلمانوں میں اختلاف اور جھگڑاکرانے کے لئے کچھ ایسےالزام مومن مردوں اورعورتوں پرلگائے یالگائیں گے جوغلط ہوں گےسادہ مسلمان ان کی تصدیق نہ کرتے ہوئےآپس میں چرچہ کرنےلگیں اس غلط اورخطرناک بات سے بچانے کے لئے اللہ نےمسلمانوں کو یہ بتایا کہ اےمسلمانوں ایسےحالات میں ایساعمل نہ کرنا یہ ٹھیک نہیں ہےبلکہ کرنا یہ ہے کہ

اگر کوئی غلط بات سنو تو اس کو اپنے بڑوں کے پاس لے جاؤ وہ اس کی تحقیق کریں گے اور حقیقت کو پالیں گے اور تہمت لگانے والوں سے کہیں گے کہ تم اپنے چار گواہ لاؤ یہ طریقہ بتایا ہے۔ جس کو اللہ نے اپنا فضل اور رحمت کہا ہے اور سورت نور کا نام ہی نور اس لئے ہے کہ اس میں سب باتیں وہ ہیں جن پر عمل کرنے سے ایک بہترین نورانی معاشرہ وجود میں آجاتا ہے اور نور ہی نور ہو جاتا ہے۔

پوری سورت میں کسی بھی لفظ سے یہ ظاہر نہیں ہو رہا کہ یہ الزام عائشہ پر تھا۔ جو ایک جنگ سے واپسی پر گھڑا گیا۔ اس الزام کی زد میں تو منافقوں کی طرف سے پورے مومن آتے تھے۔ جس کی تردید (۲۴:۲۶) میں کر دی گئی ہے اور بڑے صاف الفاظ میں کہا گیا کہ مومن جو ہوگا وہ کبھی غلط کام نہیں کرے گا وہ ہمیشہ صحیح کام کرے گا اس لئے ان کی طرف یہ الزام غلط ہے۔

افک سے متعلق جو روایات بیان کی جاتی ہیں ان پر غور کرنے سے یہ واقعہ بالکل غلط ثابت ہوتا ہے مثلاً غزوہ سے واپسی پر لشکر رات میں قیام کر رہا تھا۔ عائشہ حوائج ضروریہ سے فراغت کے لئے لشکر سے باہر گئیں اُسی دوران لشکر نے کوچ کر دیا عائشہؓ چھوٹ گئیں اور بعد میں ایک صحابی ان کو لے کر دوپہر کے وقت لشکر میں آئے۔

قابل غور بات یہ ہے کیا لشکر میں صرف عائشہؓ ہی تنہا عورت تھیں اور نہ تھیں؟ جب کہ اور بھی ضرور ہوں گی۔ ایسی حالت میں عائشہ عورتوں کے ساتھ جاتی جیسا عورتوں کا قاعدہ ہے۔ اگر مان لیا جائے صرف وہی تھیں تو محمدؐ سے بتا کر جانا تھا یا محمدؐ ان کے ساتھ جاتے یا محمدؐ ان کا انتظار کرتے۔ اگر یہ بھی ممکن نہیں تو فراغت کے لئے لشکر سے دور نہ جاتیں کہیں پاس میں ہی بیٹھ جاتیں۔ رات ہی تو تھی۔ اور جب لشکر چلتا تو آجاتیں۔ ایسا تو نہیں تھا کہ لشکر میں نہ تو کچھ سامان تھا اور آدمی بھی تھوڑے تھے اور بغیر کسی آہٹ کے چل دئے عائشہؓ کو خبر نہ ہوئی؟ ایسا نہیں ہے بلکہ پورا لشکر تھا اور اونٹ گھوڑے خچر وغیرہ ساتھ تھے ان پر ساز باندھ کر سامان لادھنا تھا۔ ایسی حالت میں گھوڑے ہنہناتے اونٹ بلبلاتے آدمی چلتے پھرتے آواز دیتے ایک دوسرے کو تو عائشہؓ کو خبر ہو جاتی اور وہ آ جاتی۔

سب باتوں کو چھوڑو صرف ایک رکھو کہ چلتے وقت محمدؐ تو ضرور ہی عائشہؓ کو دیکھتے؟ علاوہ ازیں ڈولی اٹھانے والے بھی اندازہ نہ کر سکے کہ ڈولی خالی ہے یا بھری۔ کیا محمدؐ (نعوذ) ایسے بے خبر تھے کہ اپنی زوجہ کو بھی معلوم نہ کر سکے اور چل دئے۔ اور دوپہر تک خبر نہ ملی۔ ارے راستے میں کہیں تو نماز فجر پڑھی ہوگی وہاں دیکھتے مگر یہ کچھ نہ ہوا اور لشکر چلتا رہا اللہ عقل دے۔

مگر بھائیو! یہ کچھ نہیں ہوا اس لئے یہ واقعہ بالکل غلط ہے الزام تراشی ہے اور آگے سنو منافقین نے عائشہ کو ایک صحابی کے ساتھ تنہا آتے دیکھ کر الزام تراشی شروع کر دی الزام لگانے والے جانے پہچانے تھے محمدؐ نے اللہ کے بتائے قانون کے مطابق ان سے چار گواہ طلب نہیں کئے اور تقریباً ایک ماہ تک یہ باتیں ایسے ہی گردش کرتی رہیں۔ تب کہیں جا کر محمدؐ نے مسجد میں مسلمانوں سے کہا کہ میری مدد کرو اس تحقیق کے وقت انصار کے دو قبیلوں میں جھگڑا ہوا۔ ان جھگڑا کرنے والوں میں ایک نام سعد بن معاذ کا بھی ہے کہ اس نے کھڑے ہو کر کہا کہ اے اللہ کے رسول گر الزام لگانے والا میرے قبیلہ کا آدمی ہے تو میں اسے قتل کر دوں۔ مگر کیا سعد بن معاذ اس وقت زندہ تھے؟ وہ تو تقریباً دس گیارہ ماہ پہلے

ऐसे अवसरों पर ऐसा व्यवहार न करना यह ठीक नही है अपितु करना यह है कि यदि कोई अनुचित बातें सुनो तो उसको अपने बड़ों के पास ले जाओ वह उसकी छान-बीन करेंगे और यथार्थ को पा लेंगे और आरोप लगाने वालों से कहेंगे कि तुम अपने चार साक्षी लाओ यह विधि बताई है जिसको ईश्वर ने अपनी कृपा और अनुकम्पा कहा है और सूरत नूर का नाम ही नूर इसलिए है कि इसमें सब बातें वह है जिन पर व्यवहार करने से एक उत्तम प्रकाश युक्त समाज अस्तित्व में आ जाता है और प्रकाश ही प्रकाश हो जाता है (नूर)

पूरी सूरत में किसी भी शब्द से यह प्रकट नही हो रहा कि यह आरोप आयशा पर था जो एक युद्ध से वापसी पर घड़ा गया, इस आरोप के प्रभाव में तो कपटियों की ओर से पूरे आस्तिक आते थे जिसका खण्डन (24:26) में कर दिया गया है और बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा गया कि आस्तिक जो होगा वह कभी अनुचित कार्य नही करेगा, वह सदैव उचित कार्य करेगा। अतः उनकी ओर यह आरोप मिथ्या है,

इफ्क से सम्बन्धित जो कथन वर्णन किए जाते हैं उन पर विचार करने से यह घटना बिल्कुल मिथ्या सिद्ध होती है उदाहरणतः धर्म युद्ध से वापसी पर सैना रात्रि में विश्राम कर रही थी आयशा शौच करने के लिए सैना से बाहर गई, उसी समय सैना चल दी आयशा र० छूट गई और बाद में एक सहाबी उनको लेकर दोपहर के समय सेना में आए

विचारणीय बात यह है कि सेना में केवल आयशा र० ही एक स्त्री थी और न थी? जबकि और भी अवश्य होंगी, ऐसी दशा में आयशा स्त्रियों के साथ जाती जैसा स्त्रियों का नियम है यदि मान लिया जाये केवल वही थी तो मुहम्मद स० से बताकर जाना था या मुहम्मद स० उनके साथ जाते या मुहम्मद स० उनकी प्रतीक्षा करते, यदि यह भी सम्भव नही तो शौच के लिए सेना से दूर न जाती कही पास में ही बैठ जाती, रात्रि ही तो थी और जब सेना चलती तो आ जाती ऐसा तो नही था कि सेना में न तो कुछ सामान था और आदमी भी थोड़े थे और बिना किसी आहट के चल दिए आयशा को सूचना न हुई? ऐसा नही है अपितु पूरी सेना थी और ऊंट, घोड़े, खच्चर इत्यादि साथ थे उन पर साज बान्ध कर सामान लादना था, ऐसी दशा में घोड़े हिनहिनाते, ऊंट बिलबिलाते, आदमी चलते फिरते ध्वनी देते एक दूसरे को तो आयशा को सूचना हो जाती और वह आ जाती,

सब बातों को छोड़ों केवल एक रखो कि चलते समय मुहम्मद स० तो अवश्य ही आयशा को देखते इसके अतिरिक्त डोली उठाने वाले भी अनुमान न कर सके कि डोली खाली है या भरी, क्या मुहम्मद स० (नाऊज़ु) ऐसे अनजान थे कि अपनी पत्नी को भी ज्ञात न कर सके और चल दिए और दोपहर तक समाचार न लिया, अरे मार्ग में कहीं तो फज्र की नमाज़ पढ़ी होगी वहां देखते, परन्तु यह कुछ न हुआ और सेना चलती रही ईश्वर बुद्धि दे

परन्तु भाईयो! यह कुछ नही हुआ अतः यह कथा बिल्कुल मिथ्या है दोषारोपण है, और आगे सुनो कपटियों ने आयशा को एक साहबी के साथ अकेले आते देखकर दोषारोपण आरम्भ कर दिया, आरोप लगाने वाले जाने पहचाने थे, मुहम्मद स० ने ईश्वर के बताए नियमानुसार उनसे चार साक्षी नही मांगे और लगभग एक माह तक यह बातें ऐसे ही भ्रमण करती रही, तब जाकर कहीं मुहम्मद स० ने मस्जिद में मुसलानों से कहा कि मेरी सहायता करो, इस छान-बीन के समय अन्सार के दो परिवारों में झगड़ा हुआ उन झगड़ा करने वालों में एक नाम साद बिन मआज़ का भी है, कि उसने खड़े होकर कहा कि ऐ ईश्वर के रसूल यदि आरोप लगाने वाला मेरे परिवार का व्यक्ति है तो मैं उसे वध कर दूं, परन्तु क्या साद बिन मआज़ उस समय जीवित

थे? वह तो लगभग दस-ग्यारह माह पहले एक युद्ध में घायल होकर मृतक हो गए थे, फिर वह कहां से आ गए? इसलिए भी इफ्क की कथा मिथ्या है, इस झगड़े को मुहम्मद स0 ने समझाकर समाप्त किया और छान-बीन पूरी न हो सकी, और जब मस्जिद में कहा था तो मुहम्मद स0 ने पूरे विश्वास के साथ कहा था कि आयशा निर्दोष है,

फिर श्रीमान अली से ज्ञात किया तो उन्होंने कहा आयशा को छोड़ दो उनके सिवा और बहुत स्त्रियां हैं उनसे विवाह कर लो, उसामा बिन ज़ैद से ज्ञात किया श्रीमती ज़ैनब बिनते जहश से ज्ञात किया उन्होंने प्रशंसा की, फिर आपने बुरेरा सेविका से ज्ञात किया उन्होंने भी कुछ कमी के साथ प्रशंसा की, परन्तु बुरेरा सेविका उस समय आपके पास नहीं थी फिर ज्ञात कहां और किससे किया?

आयशा से भी प्रश्न किया उन्होंने क्या प्रश्न किया हर व्यक्ति जानता है पुस्तकों में लिखा है, यह प्रसंग लगभग एक माह तक चलता रहा, इस चक्र में वही भी न आई, जब मुहम्मद स0 अधिक व्याकुल हो गए तो ईश्वर ने आयत 26 अवतरित करके आयशा को निर्दोष होने की घोषणा की और सबको बड़ा हर्ष हुआ क्या आयत में आयशा का नाम है?

विचित्र बात है यह प्रसंग काफ़ी दिनों तक चलता रहा और ईश्वर के नियमानुसार कुछ न हुआ? इन सब बातों पर विचार करने से यह बात सामने आती है कि यह कथा मिथ्या है अतः हमें तुरन्त अपनी पुस्तकों से इसको निकाल देना चाहिए अन्यथा जो आरोप किसी ने घड़ा था वह चलता रहेगा और आरोप रसूल स0, सहाबा और अजवाज सब पर है अतः अब यह समाप्त होना चाहिए

ایک جنگ میں زخمی ہوکر انتقال کر گئے تھے پھر وہ کہاں سے آ گئے؟ اس لئے بھی افک کا قصہ غلط ہے اس جھگڑے کو محمدؐ نے سمجھا کر ختم کیا اور تحقیق پوری نہ ہو سکی اور جب مسجد میں کہا تھا تو محمدؐ نے پورے یقین کے ساتھ کہا تھا کہ عائشہؓ بے قصور ہے۔

پھر حضرت علیؓ سے معلوم کیا تو انہوں نے کہا عائشہؓ کو چھوڑ دو ان کے سوا اور بہت عورتیں ہیں ان سے نکاح کر لو اسامہ بن زید سے معلوم کیا حضرت زینب بنت جحش سے معلوم کیا انہوں نے تعریف کی. پھر آپ نے بریرہ خادمہ سے معلوم کیا اس نے بھی کچھ کمی کے ساتھ تعریف کی مگر بریرہ خادمہ اس وقت آپ کے پاس نہیں تھی. پھر معلوم کہاں اور کس سے کیا؟

عائشہؓ سے بھی سوال کیا انہوں نے کیا سوال کیا ہر آدمی جانتا ہے کتابوں میں لکھا ہے یہ معاملہ تقریباً ایک ماہ تک چلتا رہا اس دوران وحی بھی نہ آئی. جب محمدؐ زیادہ پریشان ہو گئے تو اللہ نے آیت (۲۶) نازل کر کے عائشہ کی برات کا اعلان کیا اور سب کو بڑی خوشی حاصل ہو گئی کیا آیت میں عائشہ کا نام ہے؟

عجیب بات ہے یہ قصہ کافی دنوں تک چلتا رہا اور اللہ کے قانون کے مطابق کچھ نہ ہوا؟ ان سب باتوں پر غور کرنے سے یہ بات سامنے آتی ہے کہ یہ قصہ غلط اور جھوٹ ہے اس لئے ہمیں فوراً اپنی کتابوں سے اس کو نکال دینا چاہیے. ورنہ جو الزام کسی نے گھڑا تھا وہ چلتا رہے گا. اور یہ الزام رسول صحابہ، ازواج سب پر ہے اس لئے اب یہ ختم ہونا چاہیے.

आस्तिको! अपने घरों के सिवा दूसरे के घरों में घर वालों से आज्ञा लिए बिना और उनको सलाम किये बिना प्रविष्ट न होना यह तुम्हारे लिए उत्तम है यह उपदेश इसलिए किया जा रहा है कदाचित तुम याद रखो (27)

مومنو! اپنے گھروں کے سوا دوسروں کے گھروں میں گھر والوں سے اجازت لئے بنا اور ان کو سلام کئے بغیر داخل نہ ہونا یہ تمہارے حق میں بہتر ہے یہ نصیحت اس لئے کی جا رہی ہے شائد تم یاد رکھو (۲۷)

यदि तुम घर में किसी को उपस्थित न पाओ तो जब तक तुमको अनुमति न दी जाए उसमें प्रविष्ट न होना और यदि कहा जाए कि (इस समय) लौट जाओ तो लौट जाना यह तुम्हारे लिए बड़ी पवित्रता की बात है और जो कार्य तुम करते हो ईश्वर सब जानता है (28)

اگر تم گھر میں کسی کو موجود نہ پاؤ تو جب تک تم کو اجازت نہ دی جائے اس میں داخل مت ہونا. اور اگر کہا جائے کہ (اس وقت) لوٹ جاؤ تو لوٹ جانا، یہ تمہارے لئے بڑی پاکیزگی کی بات ہے اور جو کام تم کرتے ہو اللہ سب جانتا ہے (۲۸)

हां, यदि कोई भवन में नहीं रहता और उसमें तुम्हारे लाभ (या काम) की वस्तु हो तो उसमें जाने में कोई हानि नहीं, तुम जो कुछ प्रकट करते हो और जो छुपाकर करते हो ईश्वर को सबकी सूचना है (29)

ہاں اگر کوئی مکان غیر آباد ہو اور اس میں تمہارے فائدے (یا کام) کی چیز ہو تو اس میں جانے میں کوئی حرج نہیں تم جو کچھ ظاہر کرتے ہو اور جو چھپا کر کرتے ہو اللہ کو سب کی خبر ہے (۲۹)

आस्तिक पुरुषों से कह दो कि अपनी दृष्टि नीची रखा करें (अर्थात अपनी दृष्टि को स्वतंत्र न होने दें) और अपने गुप्तांगों की रक्षा किया करें यह उनके लिए पवित्रता की बात है और जो वह करते हैं ईश्वर उससे अवगत है (30)

مومن مردوں سے کہدو کہ اپنی نظریں نیچی رکھا کریں (یعنی اپنی نظروں کو بے باک نہ ہونے دیں) اور اپنی شرم گاہوں کی حفاظت کیا کریں یہ ان کے لئے پاکیزگی کی بات ہے اور جو وہ کرتے ہیں اللہ اس سے خبردار ہے (۳۰)

और आस्तिक स्त्रियों से भी कह दो कि वह भी अपनी दृष्टि नीची रखा करें (अर्थात अपनी आंखों को स्वतंत्र न होने दें) और अपने गुप्तांगों की रक्षा किया करें और अपनी शोभा को प्रकट न होने दें परन्तु जो उसमें से खुला रहता हो, और अपने वक्षों पर ओढ़नियां ओढ़े रहा करें और अपने पति और पिता और पति के पिता और पुत्रों और पति के पुत्रों और भाईयों और भतीजों और भानजों और

اور مومن عورتوں سے بھی کہدو کہ وہ بھی اپنی نگاہیں نیچی رکھا کریں (یعنی اپنی آنکھوں کو بے باک نہ ہونے دیں) اور اپنی شرم گاہوں کی حفاظت کیا کریں اور اپنی زینت کو ظاہر نہ ہونے دیں. مگر جو اس میں سے کھلا رہتا ہو اور اپنے سینوں پر اوڑھنیاں اوڑھے رہا کریں. اور اپنے خاوند اور باپ اور خسر اور بیٹوں اور خاوند کے بیٹوں اور بھائیوں اور

अपनी (ही प्रकार की) स्त्रियों और जो तुम्हारी सुरक्षा में हो या कर्मचारी नर (जो किसी और प्रकार की इच्छा न रखे या ऐसे लड़कों के जो स्त्रियों के परदे की वस्तुओं से अवगत न हो, इनके अतिरिक्त किसी और पर अपनी शोभा और आवरण के स्थान को प्रकट न होने दे और अपने पांव जोर से न मारें कि उनका गुप्त आभूषण ज्ञात हो जाए और आस्तिकों सब ईश्वर के आगे पश्चाताप करो कि सफलता पाव (31)

بھتیجوں اور بھانجوں اور اپنی (ہی قسم کی) عورتوں اور جو تمہاری حفاظت میں ہوں یا ملازم مرد (جو کسی اور قسم کی غرض نہ رکھیں یا ایسے لڑکوں کے جو عورتوں کے پردے کی چیزوں سے واقف نہ ہوں.ان کے علاوہ کسی اور پر اپنی زینت اور پردے کی جگہ کو ظاہر نہ ہونے دیں.اور اپنے پاؤں (زور سے نہ ماریں) کہ ان کا پوشیدہ زیور معلوم ہو جائے اور مومنوں سب اللہ کے آگے توبہ کرو تا کہ فلاح پاؤ (۳۱)

और अपनी जाति के पुरुष स्त्रियों के विवाह कर दिया करो (जो इस योग्य हों) और जो तुम्हारे कर्म चारियों में से सदाचारी पुरुष स्त्री हों उनके भी, यदि वह निर्धन होंगे तो ईश्वर उनको अपनी कृपा से सम्पन्न कर देगा और ईश्वर सम्पन्नता वाला सब कुछ जानने वाला है (32)

اور اپنی قوم کے مرد عورتوں کے نکاح کر دیا کرو (جو اس لائق ہوں) اور جو تمہارے ملازموں میں سے نیک مرد عورت ہوں ان کے بھی اگر وہ مفلس ہوں گے تو اللہ ان کو اپنے فضل سے خوشحال کر دے گا.اور اللہ وسعت والا سب کچھ جاننے والا ہے (۳۲)

और जिनको विवाह की क्षमता न हो वह पवित्रता ग्रहण किये रहें यहां तक कि ईश्वर उनको अपनी कृपा से सम्पन्न कर दे और जो मा मलाकत ऐमान तुम से मकातिब बराबरी चाहे अर्थात अब वह तुम्हारे देश में अपना प्रबंध स्वयं कर सके और तुम उनमें सदाचारिता और क्षमता पाव तो उनसे मकातिब कर लो अर्थात बराबरी नागरिकता का परवाना दो और अपने समान अधिकार दो (और यही नहीं अपितु) ईश्वर ने जो धन तुमको दिया है उसमें से उनको भी दो (जिससे वह अपना) व्यवसाय करके आत्मनिर्भर हो जाए) और उन नव युवतियों को जो विवाह के योग्य हो उन्हें विवाह से न रोको जबकि वह विवाह करके पवित्रता के साथ रहना चाहती है, क्या तुम दुनिया के जीवन में लाभ प्राप्त करने के लिए उनको विवाह से रोक कर दुष्कर्म करने पर विवश करना चाहते हो? और जो उनको विवश करेगा तो उनके विवश किये जाने केबाद ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है, (33)

اور جن کو نکاح کا مقدور نہ ہو وہ پاک دامنی کو اختیار کئے رہیں یہاں تک کہ اللہ ان کو اپنے فضل سے غنی کر دے اور جو ماملکت ایمان تم سے .کاتیب برابری چاہیں یعنی اب وہ تمہارے ملک میں اپنا انتظام خود کر سکیں اور تم ان میں نیکی اور صلاحیت پاؤ تو ان سے .کاتب کر لو یعنی شہری برابری کا پروانہ دو اور اپنے برابر حقوق دو (اور یہی نہیں بلکہ) اللہ نے جو مال تم کو دیا ہے اس میں سے ان کو بھی دو (جس سے وہ اپنا کاروبار کر کے خود کفیل ہو جائیں) اور ان نوجوان عورتوں کو جو نکاح کے لائق ہوں انہیں نکاح سے نہ روکو جب کہ وہ نکاح کر کے پاک دامن رہنا چاہتی ہیں.کیا تم دنیوی زندگی کے فوائد حاصل کرنے کے لئے ان کو نکاح سے روک کر بدکاری کرنے پر مجبور کرنا چاہتے ہو؟ اور جو ان کو مجبور کرے گا تو ان کے مجبور کئے جانے کے بعد اللہ بخشنے والا مہربان ہے (۳۳)

(मुसलमानो!) विश्वास करो हमने तुम्हारी ओर (नबी के द्वारा) उज्ज्वल आयतें (और स्पष्ट आदेश प्रकाश) प्रेषण कर दिए और तुम से पहले जो लोग हो चुके हैं उनकी उपमाएँ वर्णन कर दी है जिससे संयमी लोग शिक्षा प्राप्त कर सकते है (अतः कुरआन पर व्यवहार करो) (34)

(مسلمانو!) یقین کرو کہ ہم نے تمہاری طرف (نبی کے ذریعہ) روشن آیتیں (اور واضح احکام نور) نازل کر دئے اور تم سے پہلے جو لوگ گزر چکے ہیں ان کی مثالیں بیان کر دی ہیں جس سے پرہیز گار لوگ نصیحت حاصل کر سکتے ہیں (لہٰذا قرآن پر عمل کرو) (۳۴)

ईश्वर आकाश और पृथ्वी को प्रकाशित करने वाला है (जिस प्रकाश से वह प्रकाशित करता है) उस प्रकाश की उपमा ऐसी है कि मानो एक ताक है जिसमें दीपक है और दीपक एक पात्र में है और पात्र (ऐसी साफ है) मानो मोती जैसा चमकता हुआ तारा है उसमें एक शुभ वृक्ष का तैल जलाया जाता है (अर्थात) जैतून कि न पूर्व की ओर न पश्चिम की ओर (ऐसा प्रतीत होता है कि) उसका तैल चाहे आग उसे न भी छुए जलने को तैयार है प्रकाश पर प्रकाश हो रहा है ईश्वर उससे मानव को जो चाहता है अपने प्रकाश की ओर ले आता है और लोगों को समझाने के लिए भांति-भांति की उपमा वर्णन करता है और ईश्वर के ज्ञान से कोई वस्तु बाहर नहीं है (35) {9:32,33}

اللہ آسمان اور زمین کو منور کرنے والا ہے (جس نور سے وہ روشن کرتا ہے) اس نور کی مثال ایسی ہے کہ گویا ایک طاق ہے جس میں چراغ ہے اور چراغ ایک قندیل میں ہے اور قندیل (ایسی صاف ہے) گویا موتی جیسا چمکتا ہوا تارا ہے اس میں ایک مبارک درخت کا تیل جلایا جاتا ہے (یعنی) زیتون کہ نہ شرق کی طرف نہ مغرب کی طرف (ایسا معلوم ہوتا ہے کہ) اس کا تیل خواہ آگ اسے نہ بھی چھوئے جلنے کو تیار ہے روشنی پر روشنی ہو رہی ہے اللہ اس سے انسان کو جو چاہتا ہے اپنی روشنی کی طرف لے آتا ہے اور اللہ لوگوں کو سمجھانے کے لئے طرح طرح کی مثالیں بیان کرتا ہے اور اللہ کے علم سے کوئی شئی باہر نہیں ہے (۳۵) [۳۲،۳۳:۹]

नोट- यह प्रकाश तेज कुरआन और धर्म इस्लाम है यह अपनी रोशनी स्वयं फैलाता है दरया की भांति जारी है अर्थात मानव इसकी ओर को भाग भाग कर आते है {9:32,33; 24:35; 61:8; 64:8; 7:157}

نوٹ :۔ یہ نور قرآن اور دین اسلام ہے یہ اپنی روشنی خود ہی پھیلاتا ہے دریا کی طرح رواں ہے یعنی آدمی اس کی طرف کو بھاگ بھاگ کر آتے ہیں (۳۲:۹، ۳۳؛ ۳۵:۲۴؛ ۸:۶۱؛ ۸:۶۴؛ ۱۵۷:۷)

(उसके प्रकाश की ओर मार्ग दर्शन पाने वाले) उन घरों में पाए जाते है जिन्हें ऊंचा करने का और जिनमें अपने नाम के जप का ईश्वर ने आदेश दिया है उनमें प्रातः और सायं उनकी तसबीह करते है (36) {3:55}

(اس کے نور کی طرف ہدایت پانے والے) ان گھروں میں پائے جاتے ہیں جنہیں بلند کرنے کا اور جن میں اپنے نام کی یاد کا اللہ نے حکم دیا ہے ان میں صبح اور شام اس کی تسبیح کرتے ہیں (۳۶) [۳:۵۵]

(अर्थात ऐसे) लोग जिनको ईश्वर के जप और नमाज़ पढ़ने और दान देने से न व्यापार अचेत करता है न क्रय विक्रय वह उस दिन से डरते है जब हृदय (भय और घबराहट के कारण) उलट जाएंगे और आंखे पत्थरा जाएंगी (37)

(یعنی ایسے) لوگ جن کو اللہ کے ذکر اور نماز پڑھنے اور زکوٰۃ دینے سے نہ سوداگری غافل کرتی ہے نہ خرید فروخت وہ اس دن سے ڈرتے ہیں جب دل (خوف اور گھبراہٹ کے سبب) الٹ جائیں گے اور آنکھیں پتھرا جائیں گی (۳۷)

ताकि ईश्वर उनको उनके कर्मों का बहुत अच्छा बदला दे और अपने कृपा दया से अधिक भी प्रदान करे और ईश्वर बेहिसाब जीविका देता है जो उसके नियमानुसार कर्म करना चाहता है (38)

تاکہ اللہ ان کو ان کے عملوں کا بہت اچھا بدلہ دے۔ اور اپنے فضل سے زیادہ بھی عطا کرے اور اللہ بے حساب روزی دیتا ہے جو اس کے قانون کے مطابق عمل کر کے چاہتا ہے (۳۸)

और जिन लोगों ने कुफ्र किया उनके कर्मों (की उपमा ऐसी है) जैसे मैदान में रेत को, प्यासा उसे पानी समझे यहां तक कि जब उसके पास आए तो उसे कुछ भी न पाए और ईश्वर ही की प्रभुत्ता अपने पास देखे तो वह उसे उसका लेखा पूरा पूरा चुका देगा और ईश्वर शीघ्र लेखा लेने वाला है (39)

اور جن لوگوں نے کفر کیا ان کے اعمال (کی مثال ایسی ہے) جیسے میدان میں ریت کو پیاسا اسے پانی سمجھے۔ یہاں تک کہ جب اس کے پاس آئے تو اسے کچھ بھی نہ پائے اور اللہ ہی کی قدرت اپنے پاس دیکھے تو وہ اسے اس کا حساب پورا پورا چکا دے اور اللہ جلد حساب لینے والا ہے (۳۹)

या फिर (ऐसे नास्तिकों की उपमा ऐसी है) जैसे एक गहरे समुन्द्र में अन्धेरा हो जिसमें प्रचण्ड वायू की लेहरे मौजे मारती चढ़ी आ रही हो और लहर के ऊपर दूसरी लहर छा जाए और उस पर बादल छाया हुआ हो अन्धकार पर अन्धकार छाया हुआ हो (ऐसा अन्धकार कि) यदि आदमी अपना हाथ सामने लाए तो उसे भी न देख सके, और ईश्वर का नियम ही जिसे प्रकाश से वंचित कर दे तो उसके लिए प्रकाश नही मिल सकता (40)

یا پھر (ایسے کافروں کی مثال ایسی ہے) جیسے ایک گہرے سمندر میں اندھیرا ہو جس میں طوفانی لہریں موجیں مارتی چڑھتی آ رہی ہوں۔ اور لہر کے اوپر دوسری لہر چھا جائے اور اس پر بادل چھایا ہوا ہو تاریکیوں پر تاریکیاں چھائی ہوئی ہوں (ایسا اندھیرا کہ) اگر آدمی اپنا ہاتھ سامنے لائے تو اسے بھی نہ دیکھ سکے۔ اور اللہ کا قانون ہی جسے روشنی سے محروم کر دے تو اس کے لئے روشنی نہیں مل سکتی (۴۰)

क्या तुमने देखा नही कि ईश्वर के लिए अपना कर्तव्य चुकता कर रहें है वह सब जो आकाशों और पृथ्वी में है और वह पक्षी जो पर फैलाए उड़ रहे है हर एक अपनी व्यवस्था सलात और कर्तव्य की विधि जानता है और यह सब जो कुछ करते है ईश्वर उससे अवगत है (41)

کیا تم نے دیکھا نہیں کہ اللہ کے لئے اپنا فریضہ ادا کر رہے ہیں وہ سب جو آسمانوں اور زمین میں ہیں اور وہ پرندے جو پر پھیلائے اڑ رہے ہیں ہر ایک اپنے نظم صلوٰۃ اور فریضہ (تسبیح) کا طریقہ جانتے ہیں۔ اور یہ سب جو کچھ کرتے ہیں اللہ اس سے باخبر ہے (۴۱)

और आकाश और पृथ्वी का राज्य ईश्वर के लिए है और ईश्वर ही की ओर लोट कर जाना है, (42)

اور آسمان اور زمین کی بادشاہی اللہ کے لئے ہے اور اللہ ہی کی طرف لوٹ کر جانا ہے (۴۲)

क्या तुमने नही देखा कि ईश्वर ही बादलों को चलाता है फिर उनको आपस में मिला देता है फिर उन को तह बतह कर देता है फिर तुम देखते हो कि बादल में से पानी निकल रहा है और आकाश में जो औलों के पर्वत है उनसे औले प्रेषण करता है, तो जिस पर चाहता है उस पर बरसा देता है और जिससे चाहता है हटा देता है और बादल में

کیا تم نے نہیں دیکھا کہ اللہ ہی بادلوں کو چلاتا ہے پھر ان کو آپس میں ملا دیتا ہے پھر ان کو تہ بتہ کر دیتا ہے پھر تم دیکھتے ہو کہ بادل میں سے پانی نکل رہا ہے اور آسمان میں جو اولوں کے پہاڑ ہیں ان سے اولے نازل کرتا ہے تو جس پر چاہتا ہے اس پر برسا دیتا ہے اور جس سے چاہتا ہے ہٹا

जो बिजली होती है उसकी चमक की यह दशा होती है मानों दृष्टि उचक ले जाएगी (43) {21:30}

رکھتا ہے اور بادل میں جو بجلی ہوتی ہے اس کی چمک کا یہ عالم ہوتا ہے گویا بینائی اچک لے جائے گی (۴۳) [۲۱:۳۰]

(और सुनो) ईश्वर का नियम ही रात्री और दिन को बदलता रहता है दृष्टि वालो के लिए इसमें बड़े चिन्ह है (44)

(اور سنو!) اللہ کا قانون ہی رات اور دن کو بدلتا رہتا ہے اہل بصارت کے لئے اس میں بڑی نشانیاں ہیں (۴۴)

(और ऐ इन्सान यह भी सुनले और जान ले) कि तेरे माता पिता आदम व हव्वा को छोड़कर ईश्वर ने हर जानदार को जो चलता है पानी से पैदा किया है (और बाद में वीर्य वह भी पानी होता है) तो उन में से कतिपय ऐसे है कि पैट के बल चलते है और कतिपय ऐसे है जो दो पांव पर चलते है और कतिपय ऐसे है जो चार पांव पर चलते है ईश्वर जो चाहता उत्पन्न करता है निःसंदेह ईश्वर हर वस्तु की क्षमता रखता है (45)

(اور اے انسان یہ بھی سن لے اور جان لے) کہ تیرے ماں باپ آدم وحوا کو چھوڑ کر اللہ نے ہر جاندار کو جو چلتا ہے پانی سے پیدا کیا ہے (اور بعد میں نطفہ وہ بھی پانی ہوتا ہے) تو ان میں سے بعض ایسے ہیں کہ پیٹ کے بل چلتے ہیں اور بعض ایسے ہیں جو دو پاؤں پر چلتے ہیں اور بعض ایسے ہیں جو چار پاؤں پر چلتے ہیں اللہ جو چاہتا ہے پیدا کرتا ہے بے شک اللہ ہر چیز کی قدرت رکھتا ہے (۴۵)

यह सत्य है कि हमने स्पष्ट आयतें अवतरित की है (ताकि लोग उन्हें समझें और जीवन के सीधे मार्ग पर चलें) और ईश्वर उसको सीधे मार्ग पर चला देता है जो अपने कर्म से स्वयं चाहता है (46)

یہ حقیقت ہے کہ ہم نے واضح آیتیں نازل کی ہیں (تاکہ لوگ انہیں سمجھیں اور زندگی کے سیدھے راستے پر چلیں) اور اللہ اس کو سیدھے رستے پر چلا دیتا ہے جو اپنے عمل سے خود چاہتا ہے (۴۶)

और वह लोग कहेंगे कि हम ईश्वर पर और रसूल पर विश्वास लाए और हमने उसका आदेश मान लिया परन्तु इसके बाद उनमें से एक दल (अज्ञापालन से) मुख मोड़ जाएगा ऐसे लोग कदापि आस्तिक नही है (47)

اور وہ لوگ کہیں گے کہ ہم اللہ پر اور رسول پر ایمان لائے اور ہم نے ان کا حکم مان لیا مگر اس کے بعد ان میں سے ایک گروہ (اطاعت سے) منہ موڑ جائے گا ایسے لوگ ہرگز مومن نہیں ہیں (۴۷)

और जब उनको ईश्वर और रसूल की ओर बुलाया जाएगा ताकि रसूल (ईश्वरके नियम के द्वारा) उनके मध्य निर्णय करे तो देखो उन में से एक दल मुख फैर लेगा (48) {4:63-65}

اور جب ان کو اللہ اور رسول کی طرف بلایا جائے گا تاکہ رسول (اللہ کے قانون کے ذریعہ) ان کے درمیان فیصلہ کرے تو دیکھو ان میں سے ایک گروہ منہ پھیر لے گا (۴۸) [۴:۶۳،۶۵]

(कारण यह है कि उन्हें आपके निर्णय में दुनिया की हानी दीखती है इसलिए मुख फैरते है) और यदि उनको यह विश्वास हो कि निर्णय उनके लिए होगा तो रसूल की ओर आएं नतमस्तक हो कर (49)

(وجہ یہ ہے کہ انہیں آپ کے فیصلہ میں دنیوی نقصان نظر آتا ہے اس لئے منہ پھیرتے ہیں) اور اگر ان کو یہ یقین ہو کہ فیصلہ ان کے حق میں ہوگا تو رسول کی طرف آئیں سر تسلیم خم کئے ہوئے (۴۹)

क्या उनके मनों में (कष्ट का) रोग लग गया है क्या वह (रसूल के निर्णय के बारे में) शंका में पड़े हुए है या उन्हें शंका है कि ईश्वर और उसका रसूल उनके विषय में जबरदस्ती करेंगे? (कदापि नही वह स्वयं ही अन्याय करने वाले है) (50)

کیا ان کے دلوں میں (نفاق کا) روگ لگ گیا ہے کیا وہ (رسول کے فیصلہ کے بارے میں) شک میں پڑے ہوئے ہیں یا انہیں اندیشہ ہے کہ اللہ اور اس کا رسول ان کے بارے میں زیادتی کریں گے؟ ہرگز نہیں وہ خود ہی ظلم کرنے والے ہیں (۵۰)

आस्था वालो की महिमा तो यह है कि जब ईश्वर और उसके रसूल की ओर बुलाए जाएं ताकि रसूल उनके वाद का निर्णय कर दे तो वह (स्वीकार करे और) कहें हमने आदेश सुना और स्वीकार किया वही लोग है जो सफल होने वाले है (51) {4:65, 33:36}

ایمان والوں کی شان تو یہ ہے کہ جب اللہ اور اس کے رسول کی طرف بلائے جائیں تاکہ رسول ان کے مقدمہ کا فیصلہ کردے تو وہ (تسلیم کریں اور) کہیں ہم نے حکم سنا اور قبول کیا وہی لوگ ہیں جو کامیاب ہونے والے ہیں (۵۱) [۴:۶۵، ۳۳:۳۶]

नोट- प्रश्न उत्पन्न होता है क्या इस प्रकार की आयात में रसूल से तात्पर्य मुहम्मद स0 से है? यदि है तो आज या उनकी मृत्यू के बाद वह तो दुनिया में नही है फिर किस को रसूल कहा गया है? जबकि कुरआन महाप्रलय तक स्थिर और शेष रहना है? अतः सिद्ध यह हो रहा है रसूल की मृत्यू के बाद रसूल से तात्पर्य यह कुरआन है जो हर समय विद्यमान है तो कुरआन ही का निर्णय माना जाएगा {43:45}

نوٹ:۔ سوال پیدا ہوتا ہے کہ کیا اس طرح کی آیات میں رسول سے مراد محمدؐ سے ہے؟ اگر ہے تو آج یا ان کی وفات کے بعد وہ تو دنیا میں نہیں ہیں پھر کس کو رسول کہا گیا ہے؟ جب کہ قرآن قیامت تک قائم باقی رہنا ہے اس لئے یہ ثابت ہو رہا ہے رسول کی وفات کے بعد رسول سے مراد یہ قرآن ہے۔ جو ہر وقت موجود ہے تو قرآن ہی کا فیصلہ مانا جائے گا (۴۳:۴۵)

और जो व्यक्ति ईश्वर और उसके रसूल काअनुकरण करेगा और ईश्वर (के कानूने मकाफात) से डरेगा और संयमी की राह चलेगा तो ऐसे ही लोग सफल

اور جو شخص اللہ اور اس کے رسول کی اطاعت کرے گا اور اللہ (کے قانون مکافات) سے ڈرے گا اور پرہیزگاری

होने वाले हैं (52)

और ईश्वर की कठोर कठोर शपथें खा कर कहते हैं कि यदि आप आदेश करें तो हम (सब घरों से) निकल खड़े हों उनसे कहो शपथें मत खाओ वह तो पहचानी हुई आज्ञाकारी है निःसंदेह ईश्वर सब जानता है उसे जो तुम करते हो (53)

कहदो ईश्वर की आज्ञाकारी करो और रसूल का अनुकरण करो यदि मुख मोड़ोगे तो रसूल पर वह (उस वस्तु का चुकता करना है) जो उनका कर्तव्य है और तुम पर (उस कार्य का चुकता करना है) जो तुम्हारे जिम्मे है और यदि तुम उनके आदेश पर चलोगे तो सीधामार्ग पालोगे और रसूल का दायित्व तो स्पष्ट (ईश्वर के आदेश का) पहुंचा देना है (54)

और जो लोग तुम में से विश्वास लाए और शुभ कर्म करते रहे उनसे ईश्वर का वचन है कि उनको देश का स्वामी बना देगा जैसा उनसे पहले लोगों को शासक बनाया था और उनके धर्म को जिसे उसने उनके लिए पसन्द किया है सुदृढ़ व स्थिर करेगा और भय के बाद उनको शान्ति प्रदान करेगा वह मेरी पूजा करेंगे और मेरे साथ किसी को साझी न बनाएंगे, और जो इसके बाद कुफ्र करेगा तो ऐसे लोग दुष्ट चरित्र हैं (55) {30:32}

(आस्तकों!) और नमाज़ स्थापित करते रहो और दान देते रहो और रसूल के आदेश पर चलते रहो ताकि तुम पर कृपा की जाए (56)

और ऐसा विचार न करना कि काफिर लोग हमको पृथ्वी में परास्त कर देंगे (वह जा ही कहां सकते हैं) उनका ठिकाना नर्क है और वह बहुत बुरा स्थान है (57)

अस्तिको! तुम्हारे कर्मचारी और जो बच्चे तुममें से व्यष्क नही हुए हैं तीन समय में तुमसे अनुमति लिया करें एक तो नमाज़ फज्र से पहले और दूसरे दोपहर को जब तुम कपड़े उमार देते हो और तीसरे इशां की नमाज़ के बाद यह तीन समय तुम्हारे आवरण के हैं इनके अतिरिक्त दूसरे समय में न तो तुम पर कुछ पाप है और न उन पर कि एक दूसरे के पास आते जाते हो इस प्रकार ईश्वर अपनी आयतें खोल खालेकर वर्णन करता है और ईश्वर बड़ा ज्ञान वाला और युक्ति वाला है (58)

और जब तुम्हारे बच्चे व्यष्क हो जाएं तो उनको भी उसी प्रकार अनुमति लेनी चाहिए जिस भांति उनसे अगले (अर्थात बड़े आदमी) अनुमति प्राप्त करते हैं इस प्रकार ईश्वर तुम से अपनी आयतें खोल खोलकर बयान करता है और ईश्वर जानने वाला और युक्ति वला है (59)

और बूढ़ी स्त्रियां जिन्हें विवाह की आशा नही रही यदि वह अपनी चादर उतार दे तो कोई पाप नही यदि शोभा का प्रर्दशन करने की इच्छा न हो और यदि इससे बचेतो उनके लिए उत्तम है और ईश्वर

کی راہ چلے گا تو ایسے ہی لوگ کامیاب ہونے والے ہیں (۵۲)

اور وہ اللہ کی سخت سخت قسمیں کھا کر کہتے ہیں کہ اگر آپ حکم کریں تو ہم (سب گھروں سے) نکل کھڑے ہوں. ان سے کہو قسمیں مت کھاؤ وہ تو پہچانی ہوئی فرمانبرداری ہے. بے شک اللہ سب جانتا ہے جو تم کرتے ہو (۵۳)

کہہ دو اللہ کی فرمانبرداری کرو اور رسول کی اطاعت کرو اگر منہ موڑو گے تو رسول پر وہ (اس چیز کا ادا کرنا) ہے جو ان کا ذمہ ہے اور تم پر (اس چیز کا ادا کرنا) ہے جو تمہارے ذمے ہے اور اگر تم ان کے فرمان پر چلو گے تو سیدھا راستہ پا لو گے اور رسول کے ذمہ تو صاف صاف (احکامِ الٰہی کا) پہنچا دینا ہے (۵۴)

جو لوگ تم میں سے ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے ان سے اللہ کا وعدہ ہے کہ ان کو ملک کا حاکم بنا دے گا جیسا ان سے پہلے لوگوں کو حاکم بنایا تھا اور ان کے دین کو جسے اس نے ان کے لئے پسند کیا ہے مستحکم و پائدار کرے گا اور خوف کے بعد ان کو امن بخشے گا وہ میری عبادت کریں گے اور میرے ساتھ کسی کو شریک نہ بنائیں گے اور جو اس کے بعد کفر کرے گا تو ایسے لوگ بدکردار ہیں (۵۵) [۳۲:۳۰]

(مومنو!) اور نماز قائم کرتے رہو اور زکوٰۃ دیتے رہو اور رسول کے فرمان پر چلتے رہو تاکہ تم پر رحمت کی جائے (۵۶)

(اور) ایسا خیال نہ کرنا کہ کافر لوگ ہم کو زمین میں مغلوب کر دیں گے (وہ جا ہی کہاں سکتے ہیں) ان کا ٹھکانا دوزخ ہے اور وہ بہت بُرا ٹھکانا ہے (۵۷)

مومنو! تمہارے ملازم اور جو بچے تم میں سے بلوغ کو نہیں پہنچے تین اوقات میں تم سے اجازت لیا کریں ایک تو نماز فجر سے پہلے اور دوسرے دوپہر کو جب تم کپڑے اتار دیتے ہو اور تیسرے عشا کی نماز کے بعد یہ تین وقت تمہارے پردے کے ہیں ان کے علاوہ دوسرے وقتوں میں نہ تو تم پر کچھ گناہ ہے اور نہ ان پر کہ ایک دوسرے کے پاس آتے جاتے ہو اس طرح اللہ اپنی آیتیں کھول کھول کر بیان فرماتا ہے اور اللہ بڑا علم والا اور حکمت والا ہے (۵۸)

اور جب تمہارے بچے بالغ ہو جائیں تو ان کو بھی اس طرح اجازت لینی چاہیے جس طرح ان سے اگلے (یعنی بڑے آدمی) اجازت حاصل کرتے ہیں. اس طرح اللہ تم سے اپنی آیتیں کھول کھول کر بیان فرماتا ہے اور اللہ جاننے والا اور حکمت والا ہے (۵۹)

اور بوڑھی عورتیں جنہیں نکاح کی امید نہیں رہی اگر وہ اپنی چادریں اتار دیں تو کوئی گناہ نہیں بشرطیکہ زینت کی نمائش منظور نہ ہو. اور اگر اس سے بچیں تو یہ ان کے حق میں بہتر

ہے اور اللہ سنتا جانتا ہے (۶۰)

सुनता जानता है (60)

نہ اندھے پر کچھ گناہ ہے اور نہ لنگڑے پر اور نہ بیمار پر اور نہ خود تم پر کہ اپنے گھروں سے کھانا کھاؤ یا اپنے باپوں کے گھروں سے یا اپنی ماؤں کے گھروں سے یا بھائیوں کے گھروں سے یا اپنی بہنوں کے گھروں سے یا اپنے چچاؤں کے گھروں سے یا اپنی پھوپھیوں کے گھروں سے یا اپنے ماموؤں کے گھروں سے یا اپنی خالاؤں کے گھروں سے یا اس گھر سے جس کی کنجیاں تمہارے ہاتھ میں ہوں. یا اپنے دوستوں کے گھروں سے اور اس پر بھی تم پر کچھ گناہ نہیں کہ سب مل کر کھانا کھاؤ یا جدا جدا اور جب تم گھروں میں جایا کرو تو اپنے گھر والوں کو سلام کیا کرو یہ اللہ کی طرف سے مبارک اور پاکیزہ تحفہ ہے اس طرح اللہ اپنی آیتیں کھول کھول کر بیان کرتا ہے تاکہ تم سمجھو (۶۱)

न अन्धे पर कुछ पाप है और न लंगड़े पर और न रोगी पर और न स्वयं तुम पर कि अपने घरों से भोजन खाओ या अपने बापों के घरों से या अपनी माताओं के घरों से या भाईयों के घरों से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चचाओं के घरों से या अपने मामुओं के घरों से या अपनी खालाओं (मोसियों) के घरों से या उस घर से जिसकी कुन्जियां तुम्हारे हाथ में हो या अपने मित्रों के घरों से और इस पर भी तुम पर कुछ पाप नही कि सब मिलकर भोजन खाओ या पृथक पृथक और जब तुम घरों में जाया करो तो अपने घर वालों को सलाम किया करो यह ईश्वर की ओर से शुभ और पवित्र उपहार है इस प्रकार ईश्वर अपनी आयतें खोल खोलकर वर्णन करता है ताकि तुम समझो (61)

مومن تو وہ ہیں جو اللہ پر اور اس کے رسول پر دل سے ایمان لاتے ہیں اور لاتے رہیں گے اور جب کسی اجتماعی کام کے موقع پر اللہ کے رسول کے ساتھ ہوتے ہیں تو اس کی اجازت کے بغیر کبھی اُٹھ کر نہیں جاتے اے رسول جو لوگ ایسے موقع پر آپ سے اجازت مانگیں گے وہی اللہ اور اس کے رسول کے سچے ماننے والے ہیں پس جب وہ اپنے کسی (ضروری) کام کے لئے اجازت مانگیں تو جسے مناسب سمجھو اجازت دے دیا کرو اور ایسے لوگوں کے لئے دعائے مغفرت کیا کرو اللہ بڑا ہی بخشنے والا بڑی رحمت والا ہے (۶۲) [۹:۴۳؛ ۴۷:۳۰]

आस्तिक तो वह है जो ईश्वर पर और उसके रसूल पर हृदय से विश्वास लाते हैं और लाते रहेंगे और जब किसी सामूहिक कार्य के अवसर पर ईश्वर के रसूल के साथ होते हो तो उसकी अनुमति के बिना कभी उठकर नही जाते. ऐ रसूल जो लोग ऐसे अवसर पर आप से अनुमति मांगेगे वही ईश्वर और उसके रसूल के सच्चे मानने वाले है पस जब वह अपने किसी (अनिवार्य) कार्य के लिए अनुमति मांगे तो जिसे उचित समझो अनुमति दे दिया करो और ऐसे लोगों के लिए क्षमा की प्रार्थना किया करो. ईश्वर बड़ा क्षमा करने वाला बड़ी दया वाला है (62) {9:43;47:30}

مومنو! رسول کے بلانے کو ایسا خیال نہ کرنا جیسا تم آپس میں ایک دوسرے کو بلاتے ہو بے شک اللہ کو وہ لوگ معلوم ہیں جو تم میں سے آنکھ بچا کر چل دیں گے تو جو لوگ اُن کے حکم کی مخالفت کریں گے اُن کو ڈرنا چاہیے کہ (ایسا نہ ہو کہ) ان پر کوئی آفت پڑ جائے یا تکلیف دینے والا عذاب نازل ہو (۶۳)

आस्तिको! रसूल के बुलावे को ऐसा विचार न करना जैसा तुम आपसमें एक दूसरे को बुलाते हो. निःसन्देह ईश्वर को वह लोग ज्ञात है जो तुम में से आंख बचाकर चल देंगे. तो जो लोग उनके आदेश का विरोध करेंगे उनको डरना चाहिए या कष्ट देने वाला दण्ड अवरित हो (63)

دیکھو جو کچھ آسمانوں اور زمین میں ہے سب اللہ ہی کا ہے جس روش پر تم ہو وہ اسے خوب جانتا ہے اور جس روز لوگ اس کی طرف لوٹائے جائیں گے تو جو عمل وہ کرتے رہے ہیں وہ اُن کو بتادے گا اور اللہ ہر چیز سے واقف ہے (۶۴)

देखो जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है सब ईश्वर ही का है जिस गतिविधि पर तुम हो वह उसे भलीभांति जानता है और जिस दिन लोग उसकी ओर लौटाए जाऐंगे तो जो कर्म वह करते रहे है वह उनको बता देगा और ईश्वर हर वस्तु से अवगत है (64)

نوٹ:۔(۱) ہاں تو پھر رسول کا سوال آیا آج رسول محمدؐ ہمارے پاس نہیں ہیں تو کیا ہو؟ اس لئے آج ہم کو اپنے امیر کی اطاعت کرنی چاہیے جیسے اللہ نے حکم دیا ہے۔

(۲) سورت نور میں اللہ نے انسان کے لئے ہر چیز کھول کھول کر بیان کی جو اس کے اپنی روز کی زندگی میں کام آتی ہیں جو نور ہیں. لیکن اس کے باوجود علماء کہتے ہیں کہ قرآن میں نماز زکوٰۃ حج وغیرہ کی تفصیل نہیں کیا یہ ہو سکتا ہے؟ قرآن میں ان کی تفصیل ہے مگر ہم نے قرآن کو تدبر کے ساتھ پڑھا نہیں.

नोट-(1) हां तो फिर रसूल का प्रश्न आया आज रसूल मुहम्मद स0 हमारे पास नही है तो क्या हो? अतः आज हम को अपने नेता का अनुकरण करना चाहिए जैसे ईश्वर ने आदेश दिया है.

(2) सूरत नूर में ईश्वर ने इन्सान के लिए हर बात खोल खोलकर कर वर्णन की जो उसके अपने प्रतिदिन के जीवन में काम आती है जो प्रकाश है. परन्तु इसके अतिरिक्त उलमा कहते है कि कुरआन में नमाज़, रोज़ा, हज इत्यादि का विवरण नहीं, क्या यह हो सकता है? कुरआन में इसका विवरण है परन्तु हमने कुरआन ध्यान के साथ पढ़ा नहीं.

सूरत अलफुरकान 25 मक्की

वह अस्तित्व बहुत ही सम्पन्नता वाला है जिसने अपने भक्त पर फुरकान (कुरान) अवतरित किया ताकि संसार वाले पथ प्रदर्शन मार्ग दर्शन प्राप्त करे (1) (वही ईश्वर श्रेष्ठ है) जिसके लिए आकाशों और पृथ्वी का राज्य है और जिसने (किसी को) पुत्र नही बनाया और जिसके राज्य में कोई साझी नही और जिसने हर वस्तु को पैदा किया फिर इस संसार की हर वस्तु का भाग्य अनुमान बनाया (अर्थात हर वस्तु के बनने बिगड़ने उन्नति व पतन, मरने जीने का एक नियम बनाया (2) {87:3}

नोट- भाग्य का अर्थः- इस आयत से ज्ञात हुआ कि मानव ही भाग्य से सम्बद्ध नही है अपितु ईश्वर ने संसार के एक एक कण का भाग्य बनाया है हर वस्तु अपने भाग्य से सम्बद्ध है उदाहरणतः पानी का भाग्य यह है अर्थात पानी के लिए भी प्रकृतिक नियम यह है जैसा औरों के लिए है कि पानी गर्म होतो भाप बन कर उड़ जाए शीत हो तो बर्फ की आकृति हो जाएं बीच की स्थिति हो तो बहने लगे पानी के लिए नियम है कि वह नीचे की ओर बहने लगता है परन्तु जब बांध बनाकर रोका जाता है तो ऊपर को उठने लगता है बिजली की शक्ति के द्वारा बहुत ऊंचाई पर पहुंच जाता है.

इसी प्रकार हवा का भाग्य यह है कि गर्म होतो फैले और हल्की हो तो ऊपर को उठे ठंडी हो तो सुकड़ जाए और भारी होकर नीचे की ओर आए विष का भाग्य यह है कि मृत्यू दे और विषनिवारक का भाग्य यह है कि विष के प्रभाव को समाप्त कर दे परन्तु जब किसी विधि से विष को औषधि बना लिया जाता है तो वह भी विषनिवारक हो जाता है परन्तु यह भी नियम के आधीन हो होता है.

इसी प्रकार मिट्टी, पत्थर, पौदे, फूल गैस और बिजली मानों हर वस्तु का भाग्य ईश्वर ने बनाया है अर्थात जिस नियम के आधीन जो वस्तु कार्य करती है वह उसका भाग्य है इस लिए यह विचार करना कि मानव ही भाग्य के जाल में फंसा हुआ है मिथ्या है सत्य यह है कि ईश्वर के निर्णय उसके निश्चित किये नियमानुसार होते है उसके प्रतिकूल नही होता.

परन्तु भाग्य का अर्थ यह नही है कि मानव विवश है अपनी इच्छा से कुछ नही कर सकता जो कुछ करता है वह ईश्वर का निश्चित किए भाग्य के अनुसार विवश हो कर करता है जैसा कि मीर की कविता है.

नाहक हम मजबूरों पर यह तोहमत है मुखतारी की
चाहते है सो आप करते है हमको अबस बदनाम किया

भाग्य के आबद्ध लोगों के निकट इन्सान जो कुछ करता है वह पहले से लिखा जा चुका है वह उसके विपरीत कुछ नही कर सकता चोरी करता है तो ईश्वर के आदेश से वध करता है तो उसी की इच्छा से यह मत उचित नही है इन्सान भाग्य नियम का आबद्ध होने के अतिरिक्त अपने कर्म के परिधि क्षेत्र में स्वतंत्र भी है

यदि स्वतंत्र नही है और हर कार्य ईश्वर करता है तो फिर स्वर्ग नर्क क्यों? ईश्वर लेखा क्यों लेगा वध चोरी ईश्वर ने ही तो कराई और हर अच्छा बुरा कार्य उसकी इच्छा से होता है इन्सान का क्या दोष फिर लेखा कैसा? विचार करो यदि इन्सान के इन बुरे कार्यों के बदले नर्क मिलता है तो यह एक अन्याय हुआ या अच्छे कार्य ईश्वर ने कराये इसमें इन्सान का क्या गुण यदि इस के बदले स्वर्ग मिलता है क्यों? यदि ऐसा होता है तो यह ईश्वर का न्याय की व्यवस्था पर

سورت الفرقان (۲۵) مکی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

وہ ذات بہت بابرکت ہے جس نے اپنے بندے پر فرقان (قرآن) نازل فرمایا تاکہ اہل عالم ہدایت حاصل کریں (۱) (وہی اللہ برتر ہے) جس کے لئے آسمانوں اور زمین کی بادشاہی ہے اور جس نے (کسی کو) بیٹا نہیں بنایا اور جس کی بادشاہی میں کوئی شریک نہیں اور جس نے ہر چیز کو پیدا کیا پھر اس کائنات کی ہر شئی کی تقدیر بنائی (یعنی ہر چیز کے بننے بگڑنے، عروج وزوال، مرنے جینے کا ایک قانون بنایا) (۲) [۸۷:۳]

نوٹ:۔ تقدیر کا مفہوم:۔ اس آیت سے معلوم ہوا کہ انسان ہی تقدیر سے وابستہ نہیں ہے بلکہ اللہ نے کائنات کے ایک ایک ذرہ کی تقدیر بنائی ہے ہر شئی اپنی تقدیر سے وابستہ ہے مثلاً پانی کی تقدیر یہ ہے یعنی پانی کے لئے قانون الٰہی یہ ہے جیسا اوروں کے لئے بھی ہے کہ پانی گرم ہوتو بھاپ بن کر اڑجائے سرد ہوتو برف کی صورت ہو جائے درمیانی حالت ہو تو بہنے لگے پانی کے لئے قانون ہے کہ وہ نیچے کی اور کو بہتا ہے مگر جب باندھ بنا کر روکا جاتا ہے تو اوپر کو اٹھنے لگتا ہے بجلی کے ذریعہ سے بہت اونچائی پر پہنچ جاتا ہے۔

اسی طرح ہوا کی تقدیر یہ ہے کہ گرم ہو تو پھیلے اور ہلکی ہو تو اوپر کو اٹھے ٹھنڈی ہو تو سکڑ جائے اور بھاری ہو کر نیچے کی طرف آئے زہر کی تقدیر یہ ہے کہ موت دے اور تریاق کی تقدیر یہ ہے کہ زہر کے اثر کو ختم کردے، مگر جب کسی طریقے سے زہر کو دوا بنا لیا جاتا ہے تو وہ بھی تریاق ہو جاتا ہے مگر یہ بھی قانون کے تحت ہی ہوتا ہے۔

اسی طرح مٹی، پتھر، پودے، پھول، گیس اور بجلی غرض کے ہر شئی کی تقدیر اللہ نے بنائی ہے یعنی جس قانون کے تحت جو چیز کام کرتی ہے وہ اس کی تقدیر ہے اس لئے یہ خیال کرنا کہ انسان ہی تقدیر کے جال میں پھنسا ہوا ہے غلط ہے حقیقت یہ ہے کہ اللہ کے فیصلے اس کے مقرر کردہ قانون کے مطابق ہوتے ہیں اس کے خلاف کچھ نہیں ہوتا۔

لیکن تقدیر کا مطلب یہ نہیں ہے کہ انسان مجبور محض ہے، اپنی مرضی سے کچھ نہیں کرسکتا۔ جو کچھ کرتا ہے وہ اللہ کی مقرر کردہ تقدیر کے مطابق مجبور ہو کر کرتا ہے، جیسا کہ میر کی شاعری ہے۔

ناحق ہم مجبوروں پر یہ تہمت ہے مختاری کی
چاہتے ہیں سو آپ کرتے ہیں ہم کو عبث بدنام کیا

تقدیر کے پابند حضرات کے نزدیک انسان جو کچھ کرتا ہے وہ پہلے سے لکھا جا چکا ہے وہ اس کے خلاف کچھ نہیں کرسکتا۔ چوری کرتا ہے تو اللہ کے حکم سے قتل کرتا ہے تو اسی کی منشا سے یہ رائے درست نہیں ہے۔ انسان تقدیر قانون کا پابند ہونے کے باوجود اپنے عمل کے دائرے میں آزاد بھی ہے۔

اگر آزاد نہیں ہے اور ہر کام اللہ کراتا ہے تو پھر جنت دوزخ کیوں؟ اللہ حساب کیوں لے گا قتل چوری اللہ نے ہی تو کرائی ہے اور ہر اچھا برا کام اس کی مرضی سے ہوتا ہے۔ انسان کی کیا خطا پھر حساب کیسا؟ غور کرو اگر انسان کو ان برے کاموں کے بدلے دوزخ ملتی ہے تو یہ ایک ظلم ہوا۔ یا اچھے کام اللہ نے کرائے اس میں انسان کی کیا خوبی اگر اس کے بدلے جنت ملتی ہے کیوں؟ اگر ایسا ہوتا ہے تو یہ اللہ کا نظام عدل مجروح ہوتا ہے؟ مگر اللہ عادل ہے۔ اس لئے کسی

चोट होती है? परन्तु ईश्वर न्याय शील है अतः किसी को विवश करके ईश्वर चोरी वध नही कराता इन्सान स्वयं ही अपने अधिकार से करता है जो ईश्वर ने उसको दिया है, अच्छा और बुरा मार्ग बता दिया है उसका फल भी

भाग्य का अर्थ ईश्वर का नियम या प्रकृति नियम है ईश्वर ने हर वस्तु के बनने बिगड़ने का एक नियम बनाया है, उसी नियम के अनुसार कोई वस्तु बनती या बिगड़ती है, जिस खेत को पानी न मिले उसका भाग्य यह है कि वह सूख जाए जिस गांव में बाढ़ आजाए उसका भाग्य यह है कि नष्ट हो जाए परन्तु इसके विपरीत यदि खेत को समय पर पानी मिले देख भाल ठीक होतो खेत में उपज अच्छी होगी उसका भाग्य बदल गया, ऐसे ही उस बाढ़ से हानी उठाने के बाद प्राकृतिक नियमानुसार बाढ़ से बचने के लिए बांध बना दिया जाए तो बाढ़ हानी नही पहुंचाएगी और गांव बच जाएगा मानों फिर उसका भाग्य बदल गया हर वस्तु के लिए यही नियम है अर्थात भाग्य,

इसी प्रकार व्यक्ति का भी एक भाग्य है उसकी उन्नति और पतन उसका जीवन और मृत्यू उसका लाभ हानी सम्मान अपमान सब ईश्वर के नियम से सम्बद्ध है उदाहरणतः उसके जीवित रहने के लिए हवा पानी भोजन इत्यादि की आवश्यक्ता है, वायू न मिले तो कुछ मिनट में ही मर जाए ऐसे ही पानी न मिलने पर होगा,

पक्षियों का भाग्य यह है कि वायू में उड़े जीवित रहें उनके पर समाप्त कर दिए जाएं तो उड़ नही सकते क्योंकि उड़ने का यह एक नियम है अर्थात भाग्य और मीन का भाग्य यह है कि थल में मर जाए और पानी में जीवित रहे (फलन तजिदु लिसुन्नतिल्लाही तब दीला फातिर 43) तुम ईश्वर के नियम में कोई परिवर्तन नही पा सकते,

इसी प्रकार इन्सान के आचार गुण और सोच व कर्मों का भी भाग्य है ईश्वर ने सत्कर्म और दुष कर्म का भी नियम बनाया है, बुरा कर्म करने वाला बुराई की ओर बढ़ता जाएगा, जो व्यक्ति आरम्भ में छोटी छोटी चोरी करेगा आगे चल कर डाकू या बड़ा चोर बन जाएगा यह उसका भाग्य है इसी प्रकार सत्कर्म करने वाला सत्कर्म की ओर बढ़ता जाएगा उसकी पहली नेकी उसको दूसरे सत्कर्म के लिए तैयार कर देगा मानों ईश्वर सदाचारीयों को उनके सत्कर्मों के कारण अपनी ओर खींचता रहता है जो लोग प्रयास करके हमारी ओर आना चाहेंगे (उनका अधिकार है कि हम उन्हें अपनी ओर आने का मार्ग दिखा देंगे, अनकबूत 69) अर्थात भाग्य ईश्वर यह है कि उपकार की ओर बढ़ने वाले को ईश्वर और अधिक उपकार करने की शक्ति देता है अर्थात वह व्यक्ति करता)

ईश्वर ने मानव को सावधान करने के लिए कुरआन की आकृति में एक नियम विधान दे दिया इसमें हर प्रकार से इन्सान को समझाया है जो इस नियम से नेक बनना चाहता है वह सदाचारी बन जाता है और जो दुराचारी बनना चाहता है वह दुराचारी बन जाता है यह प्रकृतिक विधान अर्थात भाग्य है,

सारांश यह है कि भाग्य का दूसरा नाम प्रकृतिक नियम है जो बोने वाला जौ काटेगा, गेंहू बोने वाला गेंहू काटेगा जो सहानुभूति करेगा उसकी सहानुभूति की जाएगी जो हृदय दुखाएगा उसका हृदय दुखाया जाएगा जो दया करेगा वह दया का अधिकारी होगा जो अन्याय करेगा वह अन्याय का बदला पाएगा प्रकृतिक नियम में एक मुख्य प्रकार की लचक है, अर्थात यदि मानव अपनी बुराई की अन्तिम सीमा

کو مجبور کر کے اللہ چوری قتل نہیں کراتا۔ انسان خود ہی اپنے اختیار سے کرتا ہے جو اللہ نے اس کو دیا ہے، اچھا اور بُرا راستہ بتا دیا ہے اس کا انجام بھی۔

تقدیر کا مفہوم قانون الٰہی یا قانون فطرت ہے۔ اللہ نے ہر چیز کے بننے بگڑنے کا ایک قانون بنایا ہے اسی قانون کے مطابق کوئی چیز بنتی یا بگڑتی ہے جس کھیت کو پانی نہ ملے اس کی تقدیر یہ ہے کہ وہ سوکھ جائے جس گاؤں میں سیلاب آجائے اس کی تقدیر یہ ہے کہ برباد ہو جائے مگر اس کے خلاف اگر کھیت کو وقت پر پانی ملے دیکھ بھال ٹھیک ہو تو کھیت میں پیداوار اچھی ہوگی اس کی تقدیر بدل گئی ایسے ہی اس سیلاب سے نقصان اٹھانے کے بعد قانون فطرت کے مطابق سیلاب سے بچنے کے لئے باندھ بنا دیا جائے تو سیلاب نقصان نہیں پہنچائے گا اور گاؤں بچ جائے گا گویا پھر اُس کی تقدیر بدل گئی ہر چیز کے لئے یہی قانون ہے یعنی تقدیر۔

اسی طرح انسان کی بھی ایک تقدیر ہے اس کا عروج و زوال اس کی زندگی اور موت اس کا نفع نقصان عزت ذلت سب قانون الٰہی سے وابستہ ہے مثلاً اس کے زندہ رہنے کے لئے ہوا پانی غذا وغیرہ کی ضرورت ہے ہوا نہ ملے تو کچھ منٹ میں ہی مر جائے گا۔ اور کھانا نہ ملے تو کچھ دنوں میں مر جائے ایسے ہی پانی نہ ملنے پر ہوگا۔

پرندوں کی تقدیر یہ ہے کہ ہوا میں اڑے زندہ رہیں ان کے پر ختم کر دیے جائیں تو وہ اڑ نہیں سکتے کیوں کہ اڑنے کا یہ ایک قانون ہے یعنی تقدیر اور مچھلی کی تقدیر یہ ہے کہ خشکی میں مر جائے اور پانی میں زندہ رہے (فلن تجدلسنت اللہ تبدیلا) (فاطر ۴۳) تم اللہ کی سنت یعنی قانون فطرت میں کوئی تبدیلی نہیں پا سکتے۔

اسی طرح انسان کے اخلاق و عادات اور افکار و اعمال کی بھی تقدیر ہے اللہ نے نیکی اور بدی، اچھائی اور بُرائی کا بھی قانون بنایا ہے۔ بُرا کام کرنے والا بُرائی کی طرف بڑھتا جائے گا۔ جو شخص ابتداء میں چھوٹی چھوٹی چوری کرے گا آگے چل کر ڈاکو یا بڑا چور بن جائے گا یہ اس کی تقدیر ہے اسی طرح نیک کام کرنے والا نیکی کی طرف بڑھتا جائے گا اس کی پہلی نیکی اس کو دوسری نیکی کے لئے تیار کر دے گی۔ گویا اللہ نیک آدمیوں کو ان کی نیکی کی وجہ سے اپنی طرف کھینچتا رہتا ہے۔ جو لوگ کوشش کر کے ہماری طرف آنا چاہیں گے (ان کا حق ہے کہ) ہم انہیں اپنی طرف آنے کا راستہ دکھا دیں گے عنکبوت۔ (۶۹) یعنی تقدیر الٰہی یہ ہے کہ نیکی کی طرف بڑھنے والے کو اللہ اور زیادہ نیکی کرنے کی توفیق دیتا ہے یعنی وہ آدمی کرتا ہے)

اللہ نے انسان کو خبردار کرنے کے لئے قرآن کی شکل میں ایک قانون ضابطہ دے دیا اس میں ہر طرح سے انسان کو سمجھایا ہے جو اس قانون سے نیک بننا چاہتا ہے وہ نیک بن جاتا ہے اور جو بد بننا چاہتا ہے وہ بد بن جاتا ہے یہ قانون فطرت یعنی تقدیر ہے۔

خلاصہ یہ ہے کہ تقدیر الٰہی کا دوسرا نام قانون فطرت ہے۔ جو بونے والا جو کاٹے گا۔ گیہوں بونے والا گیہوں کاٹے گا جو دل جوئی کرے گا اس کی دل جوئی کی جائے گی۔ جو دل دکھائے گا اس کا دل دکھایا جائے گا۔ جو رحم کرے گا وہ رحم کا مستحق ہوگا۔ جو ظلم کرے گا وہ ظلم کا بدلہ پائے گا۔ قانون فطرت میں ایک خاص قسم کی لچک ہے یعنی اگر انسان اپنی بُرائی کی آخری حد تک پہنچنے سے پہلے اپنے عمل میں

तक पहुंचने से पहले अपने व्यवहार में परिवर्तन उत्पन्न कर ले और बुराई को छोड़ कर अच्छाई की ओर आकृष्ट हो जाए तो पहले दुष्कर्मों के परिणाम से बच सकता है.

महामना यूनुस अ0 की जाति जिस बुराई की ओर जा रही थी उसका फल यही होता कि उन पर यातना आजाए यूनुस अ0 ने अपनी जाति को सावधान कर दिया था कि शीघ्र ही तुम पर यातना आने वाली है उनकी जाति ने जब यातना की धमकी सुनी और अन्जाम पर विचार किया तो सबने पश्चाताप कर लिया और अपने आचरण को संवार लिया, फल यह निकला कि आने वाला कष्ट टल गया दूसरे शब्दों में भाग्य बदल गया जो नियम के अनुसार है इन्सान यदि चाहे तो अपना भाग्य बदल सकता है.

अबस है शिकवा तकदीर यज़दां। तू खुद तकदीरे यज़दां क्यों नही है।।

खुदी को कर बुलन्द इतना कि हर तकदीर से पहले
खुदा बन्दे से खुद पूछे बता तेरी रज़ा क्या है.

मुसलमानों का भाग्य यह है कि वह उच्च व श्रेष्ठ हो, दुनिया में ईश्वर की इच्छा से उत्तराधिकारी हो, (नूर 55) ईश्वर की पृथ्वी में उत्तराधिकारी हो, ईश्वर के नियमानुसार राज्य करे अपने जीवन को ईश्वर के नियमानुसार चलाए "व अन्तुमुलआलोना इन कुन्तुम मुमिनीन" तुम यदि सच्चे मोमिन होगे तो (दुनिया में) सब से ऊंचे रहोगे आले (इमरान 139)

कोई अन्दाज़ा कर सकता है उसके ज़ोरे बाज़ू का निगाहे मर्दे मोमिन से बदल जाती है तकदीर (इकबाल) परन्तु जब मुसलमान मुसलमान न रहा तो उसका भाग्य बदल गया, तारिक मरदे मोमिन था उस को उन्दलूस के उपवन मिले उसके उत्तराधिकारी नाच गाने और दुष्कर्मों पर मोहित हो गए अर्थात ईश्वर के भाग्य का विरोध अवहेलना की तो उसको वध किया गया निस्कासित किया गया धर्म से निस्कासित किया गया जैसे दो और दो चार होते है तीन या पांच नही.

कोई यह कहे कि यह कोई नई बात होती है ऐसा नही है अपितु ईश्वर को ज्ञात है कि कौन कब तक स्थिर रहना है और उसके मिटने के लिए वह क्या करेगा कैसे कर्म करेगा जब उसका समय आता है तो वह ईश्वर के नियम की अवहेलना करके उस परिणाम को सामने लाता है जो पहले से अंकित है, अर्थात अच्छाई का बदला अच्छाई और बुराई का बदला बुराई परन्तु सब मानव के अपने अधिकार से होता है जो ईश्वर ने उस को दिया है.

{87:3} जिसने भाग्य (अर्थात नियम) बनाया फिर मार्ग दिखाया अर्थात इन्सान के अच्छे और बुरे कर्म ही ईश्वर के निर्णय को सामने लाते है.

मैं तुमझ को बताता हूं तकदीरे उमम क्या है शमशीर व सना अव्वल ताऊस व रबाब आखिर, यही तकदीरे इलाही अर्थात कानून है.

और (लोग) ईश्वर को छोड़कर ऐसे पूज्य बनाते है जो कोई वस्तु भी पैदा नही कर सकते और स्वयं पैदा किए गए है और न अपने लाभ हानी का अधिकार रखते हैं और न मरना उनके अधिकार में है और न जीना और न (मरकर) उठ खड़े होना (3)

जिन लोगों ने नास्तिकता का मार्ग स्वीकार कर रखा है वह कहते है कि यह (कुरआन) मन घड़त बातें है जो उस व्यक्ति ने अपनी ओर से लिख ली है और कुछ दूसरे लोग इस काम में उसकी सहायता कर रहें है (देखो किस प्रकार) वह लोग अत्याचार और झूट पर उतर आएं है (4)

और कहते है कि यह पहले लोगों की कहानियां है जिनको इसने लिख रखा है, और वह प्रातः व सांय

تبدیلی پیدا کر لے اور بُرائی کو چھوڑ کر اچھائی کی طرف مائل ہو جائے تو پہلی بُرائیوں کے نتیجے سے بچ سکتا ہے۔

حضرت یونسؑ کی قوم جس بُرائی کی طرف جا رہی تھی اس کا انجام یہی ہوتا کہ ان پر عذاب آ جائے یونسؑ نے اپنی قوم کو آگاہ کر دیا تھا کہ جلد ہی تم پر عذاب آنے والا ہے ان کی قوم نے جب عذاب کی دھمکی سنی اور انجام پر غور کیا تو سب نے توبہ کر لی اور اپنے اعمال کو سنوار لیا نتیجہ یہ نکلا کہ آنے والا عذاب ٹل گیا. بالفاظ دیگر تقدیر بدل گئی جو قانون کے مطابق ہے انسان اگر چاہے تو اپنی تقدیر بدل سکتا ہے۔

عبث ہے شکوہ تقدیر یزداں تو خود تقدیر یزداں کیوں نہیں ہے
خودی کو کر بلند اتنا کہ ہر تقدیر سے پہلے خدا بندے سے خود پوچھے بتا تیری رضا کیا ہے

مسلمانوں کی تقدیر یہ ہے کہ وہ بلند و بالا ہو، دنیا میں اللہ کی مرضی سے خلیفہ ہو، (النور ۵۵) اللہ کی زمین کا وارث ہو، اللہ کے قانون کے مطابق حکومت کرے اپنی زندگی کو اللہ کے قانون کے مطابق چلائے "وانتم الاعلون ان کنتم مومنین" اگر تم سچے مومن ہو گے تو (دنیا میں) سب سے اونچے رہو گے آل عمران (۱۳۹)

کوئی اندازہ کر سکتا ہے اس کے زور بازو کا
نگاہ مرد مومن سے بدل جاتی ہیں تقدیریں (اقبال)

لیکن جب مسلمان مسلمان نہ رہا تو اس کی تقدیر بدل گئی. طارق مرد مومن تھا اس کو اندلس کا باغ ملا اس کے جانشین ناچ گانے اور بدکاری پر فریفتہ ہو گئے یعنی تقدیر الٰہی کی خلاف ورزی کی تو اس کو قتل کیا گیا جلاوطن کیا گیا ایمان سے خارج کیا گیا جیسے دو اور دو چار ہوتے ہیں تین یا پانچ نہیں۔

کوئی یہ کہے کہ یہ کوئی نئی بات ہوتی ہے ایسا نہیں ہے بلکہ اللہ کو معلوم ہے کہ کون کب تک قائم رہنا ہے اور اس کے مٹنے کے لئے وہ کیا کرے گا. کیسے عمل کرے گا جب اس کا وقت آتا ہے تو وہ قانون الٰہی کی خلاف ورزی کر کے اس تقدیر کو سامنے لاتا ہے جو پہلے سے درج ہے یعنی اچھائی کا بدلہ اچھائی اور برائی کا بدلہ برائی. مگر یہ سب انسان کے اپنے اختیار سے ہوتا ہے جو اللہ نے اس کو دیا ہے.

(۸۷:۳) جس نے تقدیر (یعنی قانون) بنائی پھر راہ دکھائی یعنی انسان کے اچھے اور بُرے عمل ہی اللہ کی تقدیر کو سامنے لاتے ہیں۔

میں تجھ کو بتاتا ہوں تقدیر امم کیا ہے شمشیر و سناں اول طاؤس و رباب آخر، یہی تقدیر الٰہی یعنی قانون ہے۔

اور (لوگ) اللہ کو چھوڑ کر ایسے معبود بناتے ہیں جو کوئی چیز بھی پیدا نہیں کر سکتے اور خود پیدا کئے گئے ہیں اور نہ اپنے نقصان اور نفع کا کچھ اختیار رکھتے ہیں اور نہ مرنا ان کے اختیار میں ہے اور نہ جینا اور نہ (مرکر) اٹھ کھڑے ہونا (۳)

جن لوگوں نے کفر کی راہ اختیار کر رکھی ہے وہ کہتے ہیں کہ یہ (قرآن) من گھڑت باتیں ہیں جو اس شخص نے اپنی طرف سے لکھ لی ہیں اور کچھ دوسرے لوگ اس کام میں اس کی مدد کر رہے ہیں (دیکھو کس طرح) وہ لوگ ظلم اور جھوٹ پر اتر آئے ہیں (۴)

اور کہتے ہیں کہ یہ پہلے لوگوں کی کہانیاں ہیں جن کو اس نے لکھ رکھا ہے اور وہ صبح و شام اس کے یہاں املا کرائی جاتی

इसके यहां इमला कराई जाती है अर्थात लिखाई जाती है (5)
कह दो कि इसको उसने उतारा है जो आकाशों और पृथ्वी की गुप्त बातो को जानता है निःसंदेह वह क्षमा करने वाला कृपालू है (6)
और कहते है यह कैसा रसूल है कि खाना खाता है और बाजारो में चलता फिरता है इस पर कोई फरिश्ता क्यों अवतरित्र नही किया गया कि इस के साथ डराने को रहता (7)
या उसकी ओर आकाशों से कोष उतारा जाता या इसके लिए कोई उपवन होता कि उसमें से खाया करता और दुष्ट कहते है कि तुम तो एक जादू से प्रभावित व्यक्ति का अनुकरण करते हो (8)
(ऐ रसूल) देखो तो यह तुम्हारे विषय में किस किस प्रकार की बाते करते हैं तो पथ भ्रष्ट हो गए और मार्ग नही पा सकते (9) {17:48}

ہیں یعنی لکھائی جاتی ہیں (۵)
کہدو کہ اس کو اس نے اتارا ہے جو آسمانوں اور زمین کی پوشیدہ باتوں کو جانتا ہے بے شک وہ بخشنے والا مہربان ہے (۶)
اور کہتے ہیں یہ کیسا رسول ہے کہ کھانا کھاتا ہے اور بازاروں میں چلتا پھرتا ہے اس پر کوئی فرشتہ کیوں نازل نہیں کیا گیا کہ اس کے ساتھ ڈرانے کو رہتا (۷)
یا اس کی طرف آسمان سے خزانہ اتارا جاتا یا اس کے لئے کوئی باغ ہوتا کہ اس میں سے کھایا کرتا اور ظالم کہتے ہیں کہ تم تو ایک جادو زدہ شخص کی پیروی کرتے ہو (۸)
(اے رسول) دیکھو تو وہ تمہارے بارے میں کس کس طرح کی باتیں کرتے ہیں سو گمراہ ہو گئے اور رستہ نہیں پا سکتے (۹) [۴۸:۱۷؛۴۸:۱۷]

ईश्वर अधिक सम्पन्नता वाला है जो यदि चाहे तो तुम्हारे लिए इससे उत्तम वस्तुएं बना दे अर्थात उपवन जिनके नीचे नहरे बह रही हो और तुम्हारे लिए भवन बना दे (10)
अपितु वह तो महा प्रलय ही को झुटलाते है और हमने प्रलय के झुटलाने वालों के लिए नर्क तैयार कर रखा है (11)
जिस समय वह उनको दूर से देखेगी तो क्रोधित हो रही होंगी और वह उसके आवेश और चित्कार को सुनेगे (12)
और जब वह लोग नर्क की किसी तंग जगह में (जन्जीरो नियम में) जकड़ कर डाले जाएंगे तो मृत्यू को पुकारेंगे (13)
(कहा जाएगा) आज एक मृत्यू को न पुकारो बहुत सी मोतो को पुकारो (14)
(ऐ रसूल! उनसे) पूछो (भड़कती आग) उत्तम है या अनन्त स्वर्ग जिसका सदाचारीयों से वचन किया जा चुका है, यह उनके शुभ कर्मो का फल और रहने का (आखरी) स्थान होगा (15)
वहां जो चाहेंगे उनके लिए होगा सदैव उसमें रहेंगे यह वचन ईश्वर को पूरा करना अवश्य है और इस योग्य है कि मांग लिया जाए (अर्थात कामना करनी चाहिए) (16)

اللہ بہت بابرکت ہے جو اگر چاہے تو تمہارے لئے اس سے بہتر چیزیں بنا دے یعنی باغات جس کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں اور تمہارے لئے محل بنا دے (۱۰)
بلکہ وہ تو قیامت ہی کو جھٹلاتے ہیں اور ہم نے قیامت کے جھٹلانے والوں کے لئے دوزخ تیار کر رکھی ہے (۱۱)
جس وقت وہ ان کو دور سے دیکھے گی تو غضبناک ہو رہی ہوگی اور وہ اس کے جوش اور چلانے کو سنیں گے (۱۲)
اور جب وہ لوگ دوزخ کی کسی تنگ جگہ میں (زنجیروں قانون میں) جکڑ کر ڈالے جائیں گے تو موت کو پکاریں گے (۱۳)
(کہا جائے گا) آج ایک موت کو نہ پکارو بہت سی موتوں کو پکارو (۱۴)
(اے رسول! ان سے) پوچھو (بھڑکتی آگ) بہتر ہے یا ابدی جنت جس کا پرہیزگاروں سے وعدہ کیا جا چکا ہے یہ ان کے نیک کاموں کا بدلہ اور رہنے کا (آخری) ٹھکانا ہوگا (۱۵)
وہاں جو چاہیں گے ان کے لئے ہوگا. ہمیشہ اس میں رہیں گے یہ وعدہ اللہ کو پورا کرنا ضرور ہے اور اس لائق ہے کہ مانگ لیا جائے (یعنی آرزو کرنی چاہیے) (۱۶)

और जिस दिन ईश्वर उन (अनेकेश्वर वादीयों) को और उनके देवताओं को जिन्हें वह ईश्वर के सिवा पूजते है (अपने सामने) एकत्र करेगा तो उनसे पूछेगा क्या तुमने मेरे बन्दों को पथ भ्रष्ट किया (और उनसे अपनी पूजा कराई थी?) (17)

اور جس روز اللہ ان (مشرکوں) کو اور ان کے معبودوں کو جنہیں وہ اللہ کے سوا پوجتے ہیں (اپنے سامنے) جمع کرے گا تو ان سے پوچھے گا کیا تم نے میرے بندوں کو گمراہ کیا تھا (اور ان سے اپنی پوجا کرائی تھی؟) یا وہ خود راہ راست سے بھٹک گئے تھے؟ (۱۷)

वह कहेंगे पवित्र है हमारा यह साहस न था कि तेरा विरोध करके तेरे अतिरिक्त औरों को मित्र बनाते परन्तु तू ने ही उनको और उनके बड़ो को प्रयोग करने को सुख सामग्री दी यहां तक कि वह तेरी पुस्तक को भूल गए और वह नष्ट होने वाले लोग थे (18)

وہ کہیں گے تو پاک ہے ہماری یہ مجال نہ تھی کہ تیری نافرمانی کر کے تیرے سوا اوروں کو دوست بناتے لیکن تو نے ہی اُن کو اور اُن کے بڑوں کو برتنے کو نعمتیں دیں یہاں تک کہ وہ تیری کتاب کو بھول گئے اور وہ ہلاک ہونے والے لوگ تھے (۱۸)

तो (नास्तिकों) उन्होंने तो तुमको तुम्हारी बात में झुठला दिया, पस (अब) तुम (दण्ड को) न फैर सकते हो न किसी से सहायता ले सकते हो और जो व्यक्ति तुममें से अन्याय करता था हम उसको बड़ी यातना का स्वाद चखाएंगे (19)

تو (کافروں) انہوں نے تو تم کو تمہاری بات میں جھٹلا دیا. پس (اب) تم (عذاب کو) نہ پھیر سکتے ہو نہ کسی سے مدد لے سکتے ہو. اور جو شخص تم میں سے ظلم کرتا تھا ہم اس کو بڑے عذاب کا مزہ چکھائیں گے (۱۹)

(ऐ रसूल!) और हमने तुमसे पहले जितने रसूल भेजे हैं सब खाना खाते थे और बाजारों में चलते फिरते थे बात यह है कि हमने तुम्हें (दोनों पक्षों को) एक दूसरे की परिक्षा का साधन बनाया है (अर्थात हम देख रहें हैं कि उन नास्तिकों का बरताओ तुम्हारे साथ कैसा है और आप उनके अत्यचार को कहां तक सहन कर सकते हो) तो चाहिए कि आप लोग धैर्य करो (रहे धर्म के शत्रु तो) तेरा रब उनकी हरकतों को देख रहा है (दण्ड पाएंगे) (20)

(تو اے رسول!) اور ہم نے تم سے پہلے جتنے رسول بھیجے ہیں سب کھانا کھاتے تھے اور بازاروں میں چلتے پھرتے تھے بات یہ ہے کہ ہم نے تمہیں (دونوں فریقوں کو) ایک دوسرے کی آزمائش کا ذریعہ بنایا ہے (یعنی ہم دیکھ رہے ہیں کہ ان کافروں کا سلوک تمہارے ساتھ کیسا ہے اور آپ اُن کے ظلم کو کہاں تک برداشت کر سکتے ہو) تو چاہیے کہ آپ لوگ صبر کرو (رہے دشمنان دین تو) تیرا رب ان کی حرکتوں کو دیکھ رہا ہے (سزا پائیں گے) (۲۰)

(पारा-19) वकालल्लज़ीना

پارہ (۱۹)۔ وَقَالَ الَّذِینَ

और जो लोग हमसे मिलने की आशा नही रखते कहेंगे कि हम पर फरिश्ते क्यों अवतरित न किए गए या हम आंख से अपने रब को देख लें वह अपने विचार में बड़ाई रखते हैं (और इसी आधार पर) बड़े उद्दण्ड हो रहे हैं (21)

اور جو لوگ ہم سے ملنے کی امید نہیں رکھتے کہیں گے کہ ہم پر فرشتے کیوں نازل نہ کئے گئے. یا ہم آنکھ سے اپنے رب کو دیکھ لیں وہ اپنے خیال میں بڑائی رکھتے ہیں اور (اسی بنا پر) بڑے سرکش ہو رہے ہیں (۲۱)

जिस दिन देखेंगें फरिश्तो को कुछ शुभ सूचना न होगी उस दिन पापियों को और कहेंगे रोकी जाए कोई ओट ईश्वर की शरण है शरण है (अर्थात फरिश्ते हमारे पास न आने पाऐं) (22)

جس دن دیکھیں گے فرشتوں کو کچھ خوش خبری نہ ہوگی اس دن گنہگاروں کو اور کہیں گے کہیں روکی جائے کوئی اوٹ اللہ کی پناہ ہے پناہ ہے (یعنی فرشتے ہمارے پاس نہ آنے پائیں) (۲۲)

और जो उन्होंने कर्म किए होंगे हम उनकी ओर आकृष्ट होंगे तो उन कर्मों को उड़ती धूल कर देंगे (23)

اور جو انہوں نے عمل کئے ہوں گے ہم ان کی طرف متوجہ ہوں گے تو اُن اعمالوں کو اڑتی خاک کر دیں گے (۲۳)

उस दिन स्वर्ग वालों का स्थान भी उत्तम होगा और विश्राम का स्थान भी उत्तम होगा (24)

اس دن اہل جنت کا ٹھکانا بھی بہتر ہوگا اور آرام کا مقام بھی بہتر ہوگا (۲۴)

और जिस दिन फट जाएगा आकाश बदली से और फरिश्तों के दल के दल उतारे जाएंगे (25) {43:61, 6:8, 54:1}

اور جس دن پھٹ جائے آسمان بدلی سے اور فرشتوں کے پرے کے پرے اتار دئے جائیں گے (۲۵) [۶۱:۴۳؛ ۸:۶؛ ۱:۵۴]

उस दिन सच्चा राज्य ईश्वर ही का होगा और वह दिन नास्तिकों पर कठिन होगा यह वह दिन होगा जब अन्यायी (दुख व क्रोध में) अपना हाथ चबाएगा और कहेगा यदि मैं ने रसूल के साथ मार्ग स्वीकार किया होता (27) {39:71, 42:13, 44:13, 68:8}

اس دن سچی بادشاہی اللہ ہی کی ہوگی اور وہ دن کافروں پر مشکل ہوگا (۲۶)
یہ وہ دن ہوگا جب ظالم (غم وغصہ میں) اپنا ہاتھ چبائے گا اور کہے گا کاش میں نے رسول کے ساتھ رستہ اختیار کیا ہوتا (۲۷) [۷۱:۳۹؛ ۱۳:۴۲؛ ۱۳:۴۴؛ ۸:۶۸]

हाय दुर्भाग्य यदि मैंने अमुक व्यक्ति को मित्र न बनाया होता (28)

ہائے کم بختی کاش میں نے فلاں شخص کو دوست نہ بنایا ہوتا (۲۸)

उसने मुझे पुस्तक मेरे पास आने के बाद बहका दिया और शैतान इन्सान को समय पर विश्वासघात करने वाला है (29)

اس نے مجھے کتاب میرے پاس آنے کے بعد بہکا دیا اور شیطان انسان کو وقت پر دغا دینے والا ہے (۲۹)

उस रोज रसूल कहेंगे कि ऐ रब मेरी जाति ने इस कुरआन को अपने मिथ्या विश्वासों का पाबन्द बना रखा था छोड़ रखा था और एक प्रकार से झाड़फूक का मंतर बना रखा था (30)

اس روز رسول کہیں گے کہ اے رب میری قوم نے اس قرآن کو اپنے غلط عقیدوں کا پابند بنا رکھا تھا چھوڑ رکھا تھا اور ایک طرح سے جھاڑ پھونک کا منتر بنا رکھا تھا (۳۰)

नोट- कुरआन को छोड़ने का अर्थ यह है कि कुरआन को समझ कर

نوٹ:۔ قرآن کو چھوڑنے کا مطلب یہ ہے کہ قرآن کو سمجھ کر نہ پڑھنا اور اگر سمجھا تو

न पढ़ना और यदि समझा तो उस पर कर्म न करना, आज कल मुसलमानों ने लगभग कुरआन को छोड़ दिया है, कुरआन को चूमते है लपेट कर वेष्टन में रखते है अच्छी ध्वनी स्वर के साथ झूम झाम कर पढ़ते है, परन्तु किसी के मन में यह बात नही उतरती कि कुरआन में क्या है इस पर व्यवहार करें, कुरआन पर व्यवहार न करने से ही मुसलमानों में दल है इन दलों के कारण से इनका प्रमुत्व समाप्त हो गया और अपमानित हो गया,

اس پر عمل نہ کرنا. آج کل مسلمانوں نے قرآن کو تقریباً چھوڑ دیا ہے. قرآن کو چومتے ہیں لپیٹ کر جز دان میں رکھتے ہیں قرآت کے ساتھ جھوم جھوم کر پڑھتے ہیں لیکن کسی کے دل میں یہ بات نہیں اترتی کہ قرآن میں کیا ہے اس پر عمل کریں. قرآن پر عمل نہ کرنے سے ہی مسلمانوں میں فرقے ہیں ان فرقوں کی وجہ سے ان کی ہوا اکھڑ گئی اور ذلیل ہو گیا.

और इसी प्रकार हमारे नियम ने दुराचारीयों में से हर रसूल का शत्रु बना दिया (जिस प्रकार यह तुम्हारे शत्रु हैं) और तुम्हारा रब मार्ग दर्शन देने और सहायता करने को प्रयाप्त है (31)

اور اسی طرح ہمارے قانون نے گنہگاروں میں سے ہر رسول کا دشمن بنا دیا (جس طرح یہ تمہارے دشمن ہیں) اور تمہارا رب ہدایت دینے اور مدد کرنے کو کافی ہے (۳۱)

और नास्तिक कहते है कि इस पर कुरआन एक बार सारा क्यों नही उतारा गय (वह लोग क्या जाने कि हमने इसे शनैः शनैः क्यों उतारा?) इसलिए कि इससे तुम्हारे ह्रदय को स्थिर रखे अर्थात इसके लेखों को आप याद करते रहें और इस कारण से हम इसको थोड़ा थोड़ा ठेहर ठेहर कर उतारते है (पढ़ते हैं) (32) {20:114}

اور کافر کہتے ہیں کہ اس پر قرآن ایک ہی دفعہ سارا کیوں نہیں اتارا گیا (وہ لوگ کیا جانیں کہ ہم نے اسے آہستہ آہستہ کیوں اتارا؟) اس لئے کہ اس سے تمہارے دل کو قائم رکھیں یعنی اس کے مضامین کو آپ ذہن نشین کرتے رہیں اور اس وجہ سے ہم اس کو تھوڑا تھوڑا ٹھہر ٹھہر کر اتارتے ہیں (پڑھتے ہیں) (۳۲) [۲۰:۱۱۴؛۷۵:۱۶؛۷۳:۴؛۲۰:۱۱۴]

और लोग आपके पास इस पुस्तक के समान नही लाएंगे, निःसंदेह हम ही है जो आपके पास अपना सत्य (कुरआन भी) लाते है और इसकी अच्छी व्याख्या भी लाते है (और यह कुरआन सम्मान वाला प्रकृतिक पुस्तक की व्याख्या है) (33) {3:3, 16:3}

<u>اور لوگ آپ کے پاس اس کتاب کی مثل نہیں لائیں گے یقیناً ہم ہی ہیں جو آپ کے پاس اپنا حق (قرآن بھی) لاتے ہیں اور اس کی احسن تفسیر بھی لاتے ہیں (اور یہ قرآن مجید صحیفہ فطرت کی تفسیر ہے) (۳۳) [۳:۳؛۱۶:۳]</u>

जो लोग अपने मुखों के बल नर्क की ओर एकत्र किए जाएंगे उनका ठिकाना भी बुरा है और वह मार्ग से भी भटके हुए है (34)

جو لوگ اپنے مونہوں کے بل دوزخ کی طرف جمع کئے جائیں گے ان کا ٹھکانا بھی بُرا ہے اور وہ رستے سے بھی بھٹکے ہوئے ہیں (۳۴)

और हमने मूसा को पुस्तक दी और उनके भाई हारून को सहायक बना कर उनके साथ मिला दिया (35)

اور ہم نے موسیٰ کو کتاب دی اور ان کے بھائی ہارون کو مدد گار بنا کر ان کے ساتھ ملا دیا (۳۵)

कि हमने उन दोनों से कहा उस जाति की ओर जाओ जिसने हमारी आयातों को झुट्लाया है (परन्तु उस जाति ने उनकी बात न मानी) तो हमारे नियम ने उन्हें नष्ट कर दिया (36)

پھر ہم نے ان دونوں سے کہا اس قوم کی طرف جاؤ جس نے ہماری آیتوں کو جھٹلایا ہے (لیکن اس قوم نے ان کی بات نہ مانی) تو ہمارے قانون نے انہیں تباہ برباد کر دیا (۳۶)

और नूह की जाति ने भी जब रसूलों को झुट्लाया तो हमने उन्हें तल्लीन कर दिया और लोगों के लिए चिन्ह बना दिया और अत्याचारीयों के लिए हम ने दुख देने वाला कष्ट तैयार कर रखा है(37)

اور نوح کی قوم نے بھی جب رسولوں کو جھٹلایا تو ہم نے انہیں غرق کر دیا اور لوگوں کے لئے نشانی بنا دیا. اور ظالموں کے لئے ہم نے دکھ دینے والا عذاب تیار کر رکھا ہے (۳۷)

और इसी प्रकार हमने जाति आद व समूद और वन वालों और बीच के काल के बहुत से दलों को भी वध कर डाला (38)

اور اسی طرح ہم نے قوم عاد و ثمود اور اصحاب الرس اور درمیانی زمانے کی بہت سی جماعتوں کو بھی ہلاک کر ڈالا (۳۸)

और सबके समझाने के लिए हमने उपमाएं वर्णन की और (न मानने पर) सबको नष्ट कर दिया(39)

اور سب کے سمجھانے کے لئے ہم نے مثالیں بیان کیں اور (نہ ماننے پر) سب کو برباد کر دیا (۳۹)

और उस बस्ती पर तो वह नास्तिक चलते ही रहते जिन पर निकृष्टतम वर्षा बरसाई गई थी क्या वह उस को देखते न होंगे अपितु उनको तो (मरने के बाद) जी उठने की आशा ही नही (40)

اور اس بستی پر تو وہ کافر گزرتے ہی رہتے ہیں جن پر بدترین مینہ برسایا گیا تھا کیا وہ اس کو دیکھتے نہ ہوں گے بلکہ ان کو تو (مرنے کے بعد) جی اٹھنے کی امید ہی نہیں (۴۰)

(ऐ मुहम्मद स0!) वह लोग तुम्हें देखते है तो आपका उपहास उड़ाते है (और कहते हैं) क्या यही व व्यक्ति है जिसे ईश्वर ने रसूल बना कर भेजा है (41)

(اے محمدؐ!) وہ لوگ تمہیں جب دیکھتے ہیں تو آپ کا مذاق اڑاتے ہیں (اور کہتے ہیں) کیا یہی وہ شخص ہے جسے اللہ نے رسول بنا کر بھیجا ہے (۴۱)

यदि हम अपने देवताओ की पूजा पर जमे न रहते

اگر ہم اپنے معبودوں کی پوجا پر جمے نہ رہتے تو اس نے تو

तो इसने तो हमें पथ भ्रष्ट करके महका दिया होता और उन से फैर देता, और वह निकट ही देख लेंगे जब कष्ट देखेंगे कि सीधे मार्ग से कौन भटका हुआ था (42)

ہمیں گمراہ کر کے بہکا دیا ہوتا اور ان سے پھیر دیتا اور وہ عن قریب معلوم کر لیں گے جب عذاب دیکھیں گے کہ سیدھے رستے سے کون بھٹکا ہوا تھا (۴۲)

क्या आपने उस व्यक्ति को देखा जिसने अपनी इच्छा को देवता बना रखा है तो क्या आप उस पर रक्षक हो सकते हैं? (43)

کیا آپ نے اس شخص کو دیکھا جس نے خواہش نفس کو معبود بنا رکھا ہے تو کیا آپ اس پر نگہبان ہو سکتے ہیں؟ (۴۳)

या आप यह विचार करते हो कि उनमें से अधिकांश सुनेंगे या समझेंगे (तो सुनो) वह तो चौपायों की भांति हैं अपितु उनसे भी अधिक मूर्ख (44)

یا آپ یہ خیال کرتے ہو کہ ان میں سے اکثر سنیں گے یا سمجھیں گے (تو سنو) وہ تو چوپاؤں کی طرح کے ہیں بلکہ ان سے بھی زیادہ بے عقل (۴۴)

क्या आपने इस बात पर विचार नहीं किया कि आपका रब किस प्रकार पृथ्वी पर साया फैला देता है यदि वह चाहता तो उसे (एक ही स्थिति में) ठहराए रखता (और सदैव रात या दिन और वह भी ऐसा कि सूरज एक स्थान पर ही रहता परन्तु यह उसकी दया है कि) वह सूर्य को (धूप और साया का) मार्ग दर्शक बना देता है (45)

کیا آپ نے اس بات پر غور نہیں کیا کہ آپ کا رب کس طرح زمین پر سایہ پھیلا دیتا ہے اگر وہ چاہتا تو اسے (ایک ہی حالت میں) ٹھہرائے رکھتا (اور ہمیشہ رات یا دن اور وہ بھی ایسا کہ سورج ایک جگہ ہی رہتا لیکن یہ اس کا کرم ہے کہ) وہ سورج کو (دھوپ اور سایہ کا) رہنما بنا دیتا ہے (۴۵)

फिर हम उसको शनैः शनैः अपने नियमानुसार अपनी ओर समेट लेते हैं (46)

پھر ہم اس کو آہستہ آہستہ اپنے قانون کے مطابق اپنی طرف سمیٹ لیتے ہیں (۴۶)

और वही तो है जिसने रात को तुम्हारे लिए आवरण और निद्रा को विश्राम बनाया और दिन को उठ खड़े होने का समय बनाया (47)

اور وہی تو ہے جس نے رات کو تمہارے لئے پردہ اور نیند کو آرام بنایا اور دن کو اٹھ کھڑے ہونے کا وقت بنایا (۴۷)

और वही तो है जो अपनी कृपा की वर्षा के आगे हवाओं को शुभ सूचना बनाकर भेजता है और हम आकाश से पानी बरसाते हैं (48)

اور وہی تو ہے جو اپنی رحمت کے مینہ کے آگے ہواؤں کو خوشخبری بنا کر بھیجتا ہے اور ہم آسمان سے پاک پانی برساتے ہیں (۴۸)

ताकि उसके द्वारा मृत नगर (अर्थात भूमि को) को जीवित कर दें और फिर हम उसे बहुत से चौपायों और आदमियों को जो हमने पैदा किए हैं पिलाते हैं (49)

تاکہ اس کے ذریعہ سے مردہ شہر (یعنی زمین کو) کو زندہ کر دیں اور پھر ہم اسے بہت سے چوپاؤں اور آدمیوں کو جو ہم نے پیدا کیے ہیں پلاتے ہیں (۴۹)

और हमने इस (कुरआन की आयतों) को भांति भांति से लोगों में वर्णन किया ताकि शिक्षा प्राप्त करें परन्तु बहुत से लोगों ने इसे स्वीकार न किया (50)

اور ہم نے اس (قرآن کی آیتوں) کو طرح طرح سے لوگوں میں بیان کیا تاکہ نصیحت پکڑیں مگر بہت سے لوگوں نے اسے قبول نہ کیا (۵۰)

और यदि हम चाहते तो हर बस्ती में डराने वाला रसूल भेज देते (परन्तु वह तब भी विश्वास न लाते) (51)

اور اگر ہم چاہتے تو ہر بستی میں ڈرانے والا رسول بھیج دیتے (مگر وہ تب بھی ایمان نہ لاتے) (۵۱)

और तुम उन नास्तिकों की बात कदापि न मानो और इस कुरआन के द्वारा पूरी शक्ति से उनका सामना करो (अर्थात प्रयास करो) (52)

اور تم ان کافروں کی بات ہرگز نہ مانو اور اس قرآن کے ذریعہ پوری قوت سے ان کا مقابلہ کرو یعنی جدوجہد کرو (۵۲)

और वही तो है जिसने दो दरयाओं को मिला दिया एक (का पानी) मीठा तृप्ति देने वाला दूसरे का (का पानी) खारी कटु और दोनों के मध्य एक ओट बाधक है एक ऐसी ओट जो एक दूसरे को मिलने नहीं देती (53) {20:22; 27:61; 55:19; 25:23}

اور وہی تو ہے جس نے دو دریاؤں کو ملا دیا ایک (کا پانی) شیریں تسکین بخش دوسرے (کا پانی) کا کھاری تلخ اور دونوں کے درمیان ایک پردہ حائل ہے ایک ایسی اوٹ جو ایک دوسرے کو ملنے نہیں دیتی (۵۳) [۲۰:۲۲؛ ۲۷:۶۱؛ ۵۵:۱۹؛ ۲۵:۲۳]

और वही तो है जिसने पानी वीर्य से व्यक्ति को उत्पन्न किया फिर उससे दो अलग क्रम चलाए अर्थात गोत्र और सुसराली नातों वाला कर दिया, आपका रब बड़ा ही शक्ति वाला है (54)

اور وہی تو ہے جس نے پانی نطفہ سے آدمی کو پیدا کیا پھر اس سے دو الگ سلسلے چلائے یعنی نسب والا اور سسرالی رشتوں والا کر دیا آپ کا رب بڑا ہی قدرت والا ہے (۵۴)

और वह लोग ईश्वर को छोड़कर ऐसी वस्तु की पूजा करते हैं कि जो न उनको लाभ पहुंचा सके और न हानि और नास्तिक अपने रब के विरोध में बड़ा बल लगाते हैं (55)

اور وہ لوگ اللہ کو چھوڑ کر ایسی چیز کی پوجا کرتے ہیں کہ جو نہ ان کو فائدہ پہنچا سکے اور نہ نقصان اور کافر اپنے رب کی مخالفت میں بڑا زور مارتا ہے (۵۵)

और हमने (ऐ मुहम्मद स0) आपको केवल हर्ष और कष्ट की सूचना सुनाने को भेजा है (56)

اور ہم نے (اے محمدؐ) آپ کو صرف خوشی اور عذاب کی خبر سنانے کو بھیجا ہے(۵۶)

इनसे कह दो कि मैं इस कार्य पर तुम से कोई पारिश्रमिक नहीं मांगता (यदि इसका कोई पारिश्रमिक है तो बस यह है कि) जिस व्यक्ति का जी चाहे (कुरआन के द्वारा) अपने स्वामी तक पहुंचने का मार्ग गृहण करले (57) {42:23}

ان سے کہدو میں اس کام پر تم سے کوئی اجرت نہیں مانگتا (اگر اس کی کوئی اجرت ہے تو بس یہ ہے کہ) جس شخص کا جی چاہے (قرآن کے ذریعہ) اپنے رب تک پہنچنے کا راستہ اختیار کر لے(۵۷) [۴۲:۲۳]

(ऐ मुहम्मद स0) उस ईश्वर पर (अर्थात मुझ पर) भरोसा रखो जो सदैव जीवित रहने वाला है और कभी मरने वाला नहीं और उसकी स्तुति व सराहना के साथ उसकी पवित्रता वर्णन करो और वह अपने बन्दों के पापों से सूचना रखने को प्रयाप्त है (58)

(اے محمدؐ) اس اللہ پر (یعنی مجھ پر) بھروسہ رکھو جو ہمیشہ زندہ رہنے والا ہے اور کبھی مرنے والا نہیں اور اس کی حمد وثنا کے ساتھ اس کی پاکی بیان کرو اور وہ اپنے بندوں کے گناہوں کی خبر رکھنے کو کافی ہے(۵۸)

कहो (वह ईश्वर) जिसने आकाशों और पृथ्वी को और जो कुछ इन दोनों के मध्य है छ दिनों (अर्थात छ चरणों) में पैदा किया फिर सिंहासन पर जा ठहरा (अर्थात राज्य उसी का है) वह सबसे बड़ा दया करने वाला है उसकी महिमा किसी जानने वाले व्यक्ति से पूछो (59)

کہو (وہ اللہ) جس نے آسمانوں اور زمین کو اور جو کچھ ان دونوں کے درمیان ہے چھ دنوں (یعنی چھ دوروں) میں پیدا کیا پھر عرش پر جا ٹھہرا (یعنی بادشاہی اس کی ہے) وہ سب سے بڑا رحم کرنے والا ہے اس کی شان کسی باخبر آدمی سے پوچھو(۵۹)

और जब उन (नास्तिकों) से कहा जाता है कि रहमान को सजदा करो (अर्थात उसके आज्ञाकारी रहो) तो कहते हैं रहमान है क्या? क्या जिसके लिए तुम हमसे कहते हो हम उसके आगे सजदा करें (अर्थात उसकी मान लें) इस उपदेश से वह और अधिक घृणक हो गए (60)

اور جب ان (کفار) سے کہا جاتا ہے کہ رحمٰن کو سجدہ کرو (یعنی اس کے فرمانبردار رہو) تو کہتے ہیں رحمان ہے کیا؟ کیا جس کے لئے تم ہم سے کہتے ہو ہم اس کے آگے سجدہ کریں (یعنی اس کی مان لیں) اس نصیحت سے وہ اور زیادہ متنفر ہو گئے(۶۰)

और ईश्वर बड़ी सम्पन्नता वाला है जिसने आकाशों में चमकते नक्षत्र बनाए और उसी में (सूर्य दीप्त) दीपक और चमकता हुआ चन्द्रमा भी बनाया (61)

اور اللہ بڑی برکت والا ہے جس نے آسمانوں میں چمکتے ستارے بنائے اور اسی میں (آفتاب روشن) چراغ اور چمکتا ہوا چاند بھی بنایا(۶۱)

और यह भी कहो वही तो है जिसने रात्रि और दिन को एक दूसरे का उत्तराधिकारी बनाया (यह बातें उसी व्यक्ति को लाभ पहुंचा सकती हैं) जो इनमें विचार करन चाहे या आज्ञाकारी बनने का विचार हो (62)

اور یہ بھی کہو وہی تو ہے جس نے رات اور دن کو ایک دوسرے کا جانشین بنایا (یہ باتیں اسی شخص کو فائدہ پہنچا سکتی ہیں) جو ان میں غور کرنا چاہے یا فرمانبردار بننے کا ارادہ ہو(۶۲)

और रहमान के बन्दे तो वह हैं जो धरती पर नम्र चाल चलते हैं और जब मूर्ख लोग उनसे (मूर्खता की) बात करते हैं तो वह यह (विवाद नहीं करते उनसे) कहते हैं तुमको हमारा सलाम (63)

اور رحمٰن کے بندے تو وہ ہیں جو زمین پر نرم چال چلتے ہیں اور جب جاہل لوگ ان سے (جاہلانہ) بات کرتے ہیں تو وہ یہ (بحث نہیں کرتے ان سے) کہتے ہیں تم کو ہمارا سلام(۶۳)

और जो अपने ईश्वर के आगे सजदे और खड़े होकर रातें निर्वाह करते हैं (64)

اور جو اپنے پروردگار کے آگے سجدے اور قیام میں راتیں بسر کرتے ہیں(۶۴)

जो प्रार्थना करते रहते हैं कि ऐ रब नर्क के कष्ट को हमसे दूर रख कि उसका कष्ट तो बड़ी पीड़ा की वस्तु है (65)

اور جو دعا مانگتے رہتے ہیں کہ اے رب دوزخ کے عذاب کو ہم سے دور رکھ کہ اس کا عذاب تو بڑی تکلیف کی چیز ہے(۶۵)

और वह ठहरने और रहने की बहुत बुरी जगह है (66)

اور وہ ٹھہرنے اور رہنے کو بہت بُری جگہ ہے(۶۶)

और वह जब व्यय करते हैं तो न अनुचित उड़ाएंगे और न तंगी करेंगे अपितु संतुलन से दोनों के मध्य काम लेते हैं (67)

اور وہ جب خرچ کریں گے تو نہ بیجا اڑائیں گے اور نہ تنگی کریں گے بلکہ اعتدال سے دونوں کے درمیان کام لیتے ہیں(۶۷)

और जो ईश्वर के साथ किसी और पूज्य को नहीं पुकारेंगे और जिस जीव को मार डालना उसने अवैध किया है उसको वध नहीं करते परन्तु (धर्म शास्त्र के आदेशानुसार) वैध विधि से और वह जिना (दुष्कर्म) नहीं करते और जो व्यक्ति यह कर्म करेगा कठोर पाप में ग्रस्त होगा (68)

اور جو اللہ کے ساتھ کسی اور معبود کو نہیں پکاریں گے اور جس جاندار کو مار ڈالنا اس نے حرام کیا ہے اس کو قتل نہیں کرتے مگر (شریعت کے حکم کے مطابق) جائز طریقے سے اور وہ زنا (بدکاری) نہیں کرتے اور جو شخص یہ کام کرے گا سخت گناہ میں مبتلا ہوگا(۶۸)

महा प्रलय के दिन उसको दूना कष्ट होगा और हीनता और अपमान से सदैव उसमें रहेगा (69)

قیامت کے دن اس کو دونا عذاب ہوگا اور ذلت وخواری سے ہمیشہ اس میں رہےگا(۶۹)

परन्तु हां जिसने पश्चाताप किया और विश्वास लाया अच्छे कर्म किये तो ऐसे लोगों के पापों को ईश्वर सत्कर्मों से बदल देगा और ईश्वर तो क्षमा करने वाला कृपालु है (70)

مگر ہاں جس نے توبہ کی اور ایمان لایا اوراچھے کام کیے تو ایسے لوگوں کے گناہوں کو اللہ نیکیوں سے بدل دے گا اور اللہ تو بخشنے والا مہربان ہے(۷۰)

और जो व्यक्ति पाप करने से पश्चाताप कर लेता है और शुभ कर्म करने लगता है तो वह ईश्वर की ओर वास्तव में पलट आता है (71)

اور جو شخص گناہ کرنے سے توبہ کر لیتا ہے اور نیک کام کرنے لگتا ہے تو وہ اللہ کی طرف حقیقت میں پلٹ آتا ہے(۷۱)

और (ईश्वर के सदाचारी बन्दे वह हैं) जो झूठी साक्ष्य नही देते और जब व्यर्थ और अशिष्ट बातों पर उनका गमन होता है तो (उधर से) शिष्टाचार से चले जाते हैं (72)

اور (اللہ کے نیک بندے وہ ہیں) جو جھوٹی گواہی نہیں دیں گے اور جب لغو اور بےہودہ باتوں پر ان کا گزرہوتا ہےتو (اُدھر سے) شریفانہ انداز سے گزرجاتے ہیں(۷۲)

और उन्हें जब उनके ईश्वर के आदेश सुनाए जाते हैं तो उन पर बहरे अन्धे होकर नही गिरते अपितु ध्यान से सुनते हैं (73)

اورانہیں جب ان کے رب کے احکام سنائے جاتے ہیں تو ان پر بہرے اندھے ہوکر نہیں گرتے بلکہ غور سے سنتے ہیں(۷۳)

(ईश्वर के सदाचारी बन्दे तो वह हैं) जो प्रार्थना करते हैं ऐ हमारे रब! हमको हमारी पत्नीयों की ओर से (हृदय का चैन) और सन्तान की ओर से आंख की ठंडक प्रदान कर और हमें सदाचारियों का पेशवा बना (74)

(اللہ کے نیک بندےتو وہ ہیں) جو دعائیں مانگا کرتے ہیں اے ہمارے رب! ہم کو ہماری بیویوں کی طرف سے (دل کا چین اور اولاد کی طرف سے آنکھ کی ٹھنڈک عطا فرما اورہمیں پرہیزگاروں کا امام بنا(۷۴)

वही लोग है जिनको उनके धैर्य के बदले ऊंचे और भव्य भवन दिए जाऐंगे और वहां फरिश्ते दुआ और सलाम से उनका स्वागत करेंगे (75)

وہی لوگ ہیں جن کو ان کے صبر کے بدلے اونچے اور شاندار محل دیے جائیں گے اور وہاں فرشتے دعا اور سلام سے ان کا استقبال کریں گے(۷۵)

वहां वह सदैव रहेंगे क्या ही अच्छा है वह रहने का स्थान और कितना उत्तम है वह स्थान (76)

وہاں وہ ہمیشہ رہیں گے کیا ہی اچھی ہے وہ قیام گاہ اور کتنی عمدہ ہے وہ جگہ(۷۶)

(ऐ मुहम्मद स० उनसे कहो) यदि तुम (औरों के पीछे पड़कर मेरे ईश्वर को नही पुकारते तो उसे भी तुम्हारी चिन्ता नही, जब कि तुम उसे झुटला चुके हो तो उसका दण्ड भी ऐसा ही पाओगे कि उससे छुटकारा न पा सकोगे (77)

(اے محمدؐ ان سے کہو) اگر تم (اوروں کے پیچھے پڑکر) میرے پروردگار کو نہیں پکارتے تو اسے بھی تمہاری پروا نہیں جب کہ تم اسے جھٹلا چکے ہو تو اس کی سزا بھی ایسی پاؤ گے کہ اس سے چھٹکارا نہ پا سکو گے(۷۷)

सूरतुश्शोरा (26) मक्की

سورت الشعراء (۲۶) مکی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

तासीम मीम, ऐ मुहम्मद स० (1) यह पुस्तक उज्ज्वल की आयतें हैं (इन्हें हर आदमी समझ सकता है) (2)

طٰسٓمٓ اے محمدؐ(۱) یہ کتاب روشن کی آیتیں ہیں (انہیں ہر آدمی سمجھ سکتا ہے)(۲)

(ऐ मुहम्मद स0) कदाचित आप इस शोक में अपनी जान खो दोगे कि वह लोग विश्वास नही लाते (3)

(اے محمدؐ) شاید آپ اس غم میں اپنی جان کھودو گے کہ وہ لوگ ایمان نہیں لاتے(۳)

यदि हम चाहें तो उन पर आकाश से ऐसा चमत्कार उतार दें कि उनकी गर्दनें उसके आगे झुक जाऐं (परन्तु यह अन्याय हुआ हम अत्याचार नही करते सबको स्वतंत्रता है) (4)

اگر ہم چاہیں تو ان پر آسمان سے ایسا معجزہ اتار دیں کہ ان کی گردنیں اس کے آگے جھک جائیں (لیکن یہ زبردستی ہوئی ہم زبردستی نہیں کرتے سب کو آزادی ہے)(۴)

(उनकी हठधर्मि की यह दशा है कि) उनके पास ईश्वर की ओर से जो भी नई शिक्षा आती है निःसन्देह वह उससे मुख फेर लेते है (5)

(ان کی ہٹ دھرمی کا یہ عالم ہے کہ)ان کے پاس اللہ کی طرف سے جو بھی نئی نصیحت آتی ہے یقیناً وہ اس سے منہ پھیر لیتے ہیں(۵)

अब जबकि वह झुटला चुके है (अतः) अब उनको उस वस्तु की वास्तविकता ज्ञात हो जाएगी जिसका वह उपहास उड़ाते थे (6)

اب جب کہ وہ جھٹلا چکے ہیں(اس لئے)اب ان کو اس چیز کی حقیقت معلوم ہو جائے گی جس کی وہ ہنسی اُڑاتے تھے(۶)

क्या उन्होंने पृथ्वी की ओर नही देखा कि हमने उसमें हर प्रकार के रूचिकर जोड़े उगाए हैं (7)
निःसन्देह इसमें (ईश्वर की प्रभुता का) चिन्ह है परन्तु वह अधिकांश विश्वास लाने वाले नही हैं (8)
और तुम्हारा ईश्वर प्रभुत्वशाली और कृपालु है (9)
और जब तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा कि अन्यायी जाति के पास जा (10)
(अर्थात) फ़िरऔन की जाति के पास क्या वह डरते नही (11)
मूसा अ0 ने कहा कि मेरे रब मैं डरता हूं कि वह मुझे झुठला दें (12)
(और मैं समझता हूँ) और मेरा हृदय घबराता है और मेरे भाषण में मुझे कम प्रभाव जान पड़ता है (अतः) तू हारून को आदेश भेज (कि वह मेरे साथ चले) (13)
और उन लोगों की ओर से मुझ पर एक जुर्म (का आदेश) है मुझे भय है कही वह मुझे मार न डाले (14)
(ईश्वर ने कहा ऐसा कदापि नही हो सकता तुम दोनों हमारे चिन्ह लेकर जाओ हम तुम्हारे साथ सुनने वाले देखने वाले और रक्षक हैं (15)
तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो कि हम सम्पूर्ण संसार के स्वामी के भेजे हुए हैं (16)
(और इसलिए आए हैं) कि तू बनी इसराईल को हमारे साथ जाने की अनुमति दे (17)
(फ़िरऔन ने मूसा से) कहा क्या हमने तुम को पालन पोषण नही किया जब तुम बच्चे थे और तुमने बरसों हमारे यहां आयू का निर्वाह नहीं किया (18)
और तुमने एक और काम किया था जो क्या तुम अवज्ञाकारी ज्ञात होते हो (19)
मूसा ने कहा (हां) वह कर्म मुझ से अचानक हो गया था और वह मेरी भूल थी (20) {28:15}
फिर मैं तुम्हारे पास से तुम्हारे भय के कारण भाग निकला फिर मेरे स्वामी ने मुझे आदेश (अर्थात ईशदौत्य) का पद प्रदान किया और रसूलों में सम्मिलित कर लिया (21)
और क्या तेरा यही उपकार है जो तू मुझ पर रख रहा है कि तूने बनी इसराईल को दास बना रखा है? (22)
फ़िरऔन ने कहा कि सम्पूर्ण संसार का स्वामी कौन है? (23)
मूसा ने कहा (वही जो) आकाशों और पृथ्वी का स्वामी है और उन सम्पूर्ण वस्तुओं का स्वामी है जो उनके मध्य है यदि तुम विश्वास करो (24)
फ़िरऔन ने अपने पास वाले लोगों से कहा कि क्या तुम सुनते नही (25)
मूसा ने कहा (और) तेरा और तेरे पूर्वजों का (भी

کیا انہوں نے زمین کی طرف نہیں دیکھا کہ ہم نے اس میں ہر قسم کے نفیس جوڑے اگائے ہیں (۷)
بے شک اس میں (اللہ کی قدرت کی) نشانی ہے مگر وہ اکثر ایمان لانے والے نہیں ہیں (۸)
اور تمہارا پروردگار غالب اور مہربان ہے (۹)
اور جب تمہارے رب نے موسیٰ کو پکارا کہ ظالم قوم کے پاس جا (۱۰)
(یعنی) فرعون کی قوم کے پاس کیا وہ ڈرتے نہیں (۱۱)
موسیٰ نے کہا کہ میرے رب میں ڈرتا ہوں کہ وہ مجھے جھٹلا دیں (۱۲)
(اور میں سمجھتا ہوں) اور میرا دل گھبراتا ہے اور میری تقریر میں مجھے کم اثر معلوم ہوتا ہے (اس لئے) تو ہارون کو حکم بھیج (کہ میرے ساتھ چلیں) (۱۳)
اور ان لوگوں کی طرف سے مجھ پر ایک جرم (کا الزام) ہے مجھے ڈر ہے کہیں وہ لوگ مجھے مار نہ ڈالیں (۱۴)
اللہ نے فرمایا ایسا ہرگز نہیں ہوسکتا تم دونوں ہماری نشانیاں لے کر جاؤ ہم تمہارے ساتھ سننے والے دیکھنے والے اور محافظ ہیں (۱۵)
تم دونوں فرعون کے پاس جاؤ اور کہو کہ ہم تمام جہان کے مالک کے بھیجے ہوئے ہیں (۱۶)
(اور اس لئے آئے ہیں) کہ تو بنی اسرائیل کو ہمارے ساتھ جانے کی اجازت دے (۱۷)
(فرعون نے موسیٰ سے) کہا کیا ہم نے تم کو پرورش نہیں کیا جب تم بچے تھے اور تم نے برسوں ہمارے یہاں عمر بسر نہیں کی (۱۸)
اور تم نے ایک اور کام کیا تھا جو کیا تم ناشکرے معلوم ہوتے ہو (۱۹)
موسیٰ نے کہا (ہاں) وہ حرکت مجھ سے اچانک ہوگئی تھی اور وہ میری بھول تھی (۲۰) [۲۸:۱۵]
پھر میں تمہارے پاس سے تمہارے خوف کی وجہ سے بھاگ نکلا پھر میرے رب نے مجھے حکم (یعنی نبوت) کا منصب عطا کیا اور رسولوں میں شامل کرلیا (۲۱)
اور کیا تیرا یہی احسان ہے جو تو مجھ پر رکھ رہا ہے کہ تو نے بنی اسرائیل کو غلام بنا رکھا ہے؟ (۲۲)
فرعون نے کہا کہ تمام جہاں کا مالک کون ہے؟ (۲۳)
موسیٰ نے کہا (وہی جو) آسمانوں اور زمین کا مالک ہے اور ان تمام چیزوں کا مالک ہے جو ان کے درمیان ہے اگر تم یقین کرو (۲۴)
فرعون نے اپنے گردوپیش کے لوگوں سے کہا کہ کیا تم سنتے نہیں (۲۵)
موسیٰ نے کہا (اور) تیرا اور تیرے آباؤاجداد کا (بھی وہی)

वही) स्वामी है (26)
(फ़िरऔन ने) कहा कि यह रसूल जो तुम्हारी ओर भेजा गया है बावला है (27)
मूसा ने कहा (यही नही अपितु) पूर्व व पश्चिम और जो कुछ उन दोनों के मध्य है सबका स्वामी है यदि तुम को समझ हो (28)
फ़िरऔन ने (क्रोध में आकर) कहा यदि तूने मेरे अतिरिक्त किसी और को देवता माना तो तुझे बन्दी कर दूंगा (29) यही मेरा नियम है {26:49}
मूसा ने कहा यदि मैं (अपनी सच्चाई का) खुला चिन्ह प्रस्तुत करूं (तब भी) (30)
फ़िरऔन ने कहा यदि सच्चा है तो लाओ दिखाओ (31)
(यह सुनकर) मूसा ने अपनी लाठी (पृथ्वी पर) डाल दी वह देखते ही देखते पूरा अजगर बन गई (32)
फिर अपना हाथ निकाला तो वह देखने वालों के सामने सफ़ेद चमक रहा था (33)
फ़िरऔन ने अपने पास के सरदारों से कहा यह तो बड़ा ज्ञाता जादूगर है (34)
यह चाहता है कि तुम को अपने जादू के बल से तुम्हारे देश से निकाल दे तो तुम्हारा क्या विचार है? (35)
सरदारों ने कहा इसे और इसके भाई को रोक लो और नगरों में हरकारे भेज दो (36)
ताकि दक्ष जादूगरों को आपके पास ले आएं (37)
फिर एक निश्चित दिन के वचन पर सब दक्ष जादूगर संग्रह किये गये (38)
और लोगों में घोषणा कर दी कि सब लोग सभा में एकत्र हो जाएं (39)
ताकि यदि जादूगर अधिपति रहें तो हम उनका अनुकरण करें (40)
जब जादूगर आ गए तो फ़िरऔन से कहने लगे यदि हम अधिपति रहे तो हमें पुरस्कार भी मिलेगा (41)
फ़िरऔन ने कहा हां और तुम मुख्य दरबारियों में प्रविष्ट कर लिए जाओगे (42)
मूसा ने कहा उनसे जो वस्तु डालनी चाहते हो डालो (43)
तो उन्होंने अपनी रस्सीयां और लाठियां फैंकी और बोले फ़िरऔन के प्रताप से हम निःसन्देह अधिपति रहेंगे (44)
फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो वह उन वस्तुओं को जो जादूगरों ने बनाई थी निगलने लगी (45)
यह देखते ही जादूगर सजदे में गिर गए (46)
और उन्होंने कहा कि हम तो ईश्वर संसार के रब का विश्वास लाए (47)
जो मूसा और हारून का रब है (48)

مالک ہے(۲۶)
(فرعون نے) کہا کہ یہ رسول جو تمہاری طرف بھیجا گیا ہے باؤلا ہے(۲۷)
موسیٰ نے کہا(یہی نہیں بلکہ) مشرق ومغرب اور جو کچھ ان دونوں کے درمیان میں ہے سب کا مالک ہے اگر تم کو سمجھ ہو(۲۸)
فرعون نے (غصہ میں آکر) کہا اگر تو نے میرے سوا کسی اور کو معبود مانا تو تجھے قید کردوں گا(۲۹) یہی میرا قانون ہے[۲۶:۴۹]
موسیٰ نے کہا اگر میں (اپنی صداقت کی) کھلی نشانی پیش کروں (تب بھی)(۳۰)
فرعون نے کہا اگر سچا ہے تو لاؤ دکھاؤ(۳۱)
(یہ سن کر) موسیٰ نے اپنا عصا (زمین پر) ڈال دیا وہ دیکھتے ہی دیکھتے پورا اژدہا بن گیا(۳۲)
(پھر اپنا ہاتھ نکالا تو وہ دیکھنے والوں کے سامنے سفید چمک رہا تھا(۳۳)
فرعون نے اپنے گرد کے سرداروں سے کہا یہ تو بڑا ماہر جادوگر ہے(۳۴)
یہ چاہتا ہے کہ تم کو اپنے جادو کے زور سے تمہارے ملک سے نکال دے تو تمہاری کیا رائے ہے؟(۳۵)
سرداروں نے کہا اسے اور اس کے بھائی کو روک لیجئے اور شہروں میں ہرکارے بھیج دیجئے(۳۶)
تا کہ تمام ماہر جادوگروں کو آپ کے پاس لے آئیں(۳۷)
پھر ایک مقرر دن کے وعدے پر تمام جادوگر جمع کئے گئے(۳۸)
اور لوگوں میں اعلان کردیا کہ تمام لوگ اجتماع میں جمع ہو جائیں(۳۹)
تا کہ اگر جادوگر غالب رہیں تو ہم ان کے پیرو ہو جائیں(۴۰)
جب جادوگر آگئے تو فرعون سے کہنے لگے اگر ہم غالب رہے تو ہمیں انعام بھی عطا ہوگا(۴۱)
فرعون نے کہا ہاں اور تم خاص درباریوں میں داخل کر لئے جاؤ گے(۴۲)
موسیٰ نے کہا ان سے جو چیز ڈالنی چاہتے ہو ڈالو(۴۳)
تو انہوں نے اپنی رسیاں اور لاٹھیاں پھینکیں اور بولے فرعون کے اقبال سے ہم یقیناً غالب رہیں گے(۴۴)
پھر موسیٰ نے اپنی لاٹھی ڈالی تو وہ ان چیزوں کو جو جادوگروں نے بنائی تھی نگلنے لگی(۴۵)
یہ دیکھتے ہی جادوگر سجدے میں گر گئے(۴۶)
اور انہوں نے صاف کہا کہ ہم تو اللہ رب العالمین پر ایمان لائے(۴۷)
جو موسیٰ اور ہارون کا رب ہے(۴۸)

फ़िरऔन ने कहा इससे पहले कि मैं तुम्हें अनुमति दूं तुम मूसा पर विश्वास ले आए (निःसन्देह) यह तुम्हारा बड़ा (गुरू) है जिसने तुम्हें जादू सिखाया है अच्छा शीघ्र ही तुम को (इसका परिणाम) ज्ञात हो जाएगा कि मैं तुम्हारे हाथ और पांव विपरीत दिशा से काट दूंगा और सबको सूली पर चढ़ा दूंगा (49) {26:29}

उन्होंने कहा हमें इसकी कुछ चिन्ता नहीं हम अपने रब की ओर लौट जाने वाले हैं (50)

हमें आशा है कि हमारा रब हमारे पाप क्षमा कर देगा इसलिएकि हम प्रथम विश्वास लाने वाले हैं (51)

और हमने मूसा की ओर ईश्वरीय संकेत भेजा कि हमारे बन्दों को रात्रि को ले निकलो कि (फ़िरऔन की ओर से) तुम्हारा पीछा किया जाएगा (52)

तो फ़िरऔन ने नगरों में हाकारे प्रेषित किए (53)

और कहा कि यह लोग थोड़ा सा दल है (54)

और यह हमें क्रोध दिला रहे हैं (55)

और हमारा दल सामग्री से तैयार है (56)

तो हमने उनको उपवनों और झरनों से निकाल दिया (57)

और कोषों और उत्तम भवनों से (58)

उनके साथ हमने ऐसा किया (इस प्रकार ही होता आया है) उन वस्तुओं का उत्तराधिकारी बनी इसराईल को कर दिया (59)

तो उन्होंने प्रातः होते ही बनी इसराईल का पीछा किया (60)

जब दोनों दल आमने सामने हुए तो मूसा के साथी कहने लगे कि हम तो पकड़े गए (61)

मूसा ने कहा सुनो! ऐसा न होगा मेरा रब मेरे साथ है वह निःसन्देह मुझे मार्ग देगा (62)

उस समय हमने मूसा की ओर ईश्वरीय संकेत भेजा कि अपनी लाठी दरया पर मारो तो दरिया फट गया और हर एक टुकड़ा (यूं) हो गया मानो बड़ा पर्वत है (63) (बर्फ की भांति जमकर) {20:27;44:24}

दूसरे दल (फ़िरऔन और उसके साथियों को हमारा नियम) को नियम वहां ले आया (64)

(और वह भी समुन्द्र के मार्ग पर उतर आए) तो मूसा और उनके साथियों को तो बचा लिया (65)

और दूसरों (अर्थात फ़िरऔनियों को) तल्लीन कर दिया (66)

निःसन्देह इस (कथा) में चिन्ह हैं परन्तु वह अधिकांश विश्वास लाने वाले नहीं (67)

और निःसन्देह आपका रब तो प्रभुत्वशाली और कृपालु है (68)

और उनको इब्राहीम का समाचार पढ़कर सुनाओ (69)

जब उन्होंने अपने पिता और अपनी जाति के लोगों

فرعون نے کہا اس سے پہلے کہ میں تمہیں اجازت دوں تم موسیٰ پر ایمان لے آئے (یقیناً) یہ تمہارا بڑا (استاد) ہے جس نے تمہیں جادو سکھایا ہے اچھا جلد ہی تم کو (اس کا انجام) معلوم ہو جائے گا کہ میں تمہارے ہاتھ اور پاؤں مخالف سمت سے کاٹ دوں گا اور تم سب کو سولی پر چڑھا دوں گا (۴۹) [۲۶:۲۹]

انہوں نے کہا ہمیں اس کی کچھ پروانہیں ہم اپنے رب کی طرف لوٹ جانے والے ہیں (۵۰)

ہمیں امید ہے کہ ہمارا رب ہمارے گناہ بخش دے گا اس لئے کہ ہم اوّل ایمان لانے والے ہیں (۵۱)

اور ہم نے موسیٰ کی طرف وحی بھیجی کہ ہمارے بندوں کو رات کو لے نکلو کہ (فرعون کی طرف سے) تمہارا تعاقب کیا جائے گا (۵۲)

تو فرعون نے شہروں میں نقیب روانہ کئے (۵۳)

اور کہا کہ یہ لوگ تھوڑی سی جماعت ہے (۵۴)

اور یہ ہمیں غصہ دلا رہے ہیں (۵۵)

اور ہماری جماعت ساز وسامان سے تیار ہے (۵۶)

تو ہم نے ان کو باغوں اور چشموں سے نکال دیا (۵۷)

اور خزانوں اور نفیس مکانوں سے (۵۸)

ان کے ساتھ ہم نے ایسا کیا (اس طرح ہی ہوتا آیا ہے) ان چیزوں کا وارث بنی اسرائیل کو کر دیا (۵۹)

تو انہوں نے صبح ہوتے ہی بنی اسرائیل کا تعاقب کیا (۶۰)

جب دونوں جماعتیں آمنے سامنے ہوئیں تو موسیٰ کے ساتھی کہنے لگے کہ ہم تو پکڑے گئے (۶۱)

موسیٰ نے کہا سنو! ایسا نہ ہوگا میرا رب میرے ساتھ ہے وہ یقیناً ابھی مجھے راستہ دے گا (۶۲)

اس وقت ہم نے موسیٰ کی طرف وحی بھیجی کہ اپنی لاٹھی دریا پر مارو تو دریا پھٹ گیا اور ہر ایک ٹکڑا (یوں) ہو گیا گویا بڑا پہاڑ ہے (۶۳) (برف کی طرح جم کر) [۲۰:۷۷;۴۴:۲۴]

دوسرے گروہ (فرعون اور اس کے ساتھیوں کو ہمارا قانون) کو قانون وہاں لے آیا (۶۴)

(اور وہ بھی سمندر کے راستہ پر اتر آئے) تو موسیٰ اور ان کے ساتھیوں کو تو بچا لیا (۶۵)

اور دوسروں (یعنی فرعونیوں کو) غرق کر دیا (۶۶)

بے شک اس (قصے) میں نشانی ہے لیکن وہ اکثر ایمان لانے والے نہیں (۶۷)

اور بے شک آپ کا رب تو غالب اور مہربان ہے (۶۸)

اور ان کو ابراہیم کا حال پڑھ کر سناؤ (۶۹)

جب انہوں نے اپنے باپ اور اپنی قوم کے لوگوں سے کہا

से कहा कि तुम किस वस्तुओं को पूजते हो? (70)
वह कहने लगे कि हम बुतों को पूजते हैं और उनकी पूजा पर स्थिर हैं (71)
(इब्राहीम ने) कहा कि जब तुम उनको पुकारते हो तो क्या वह तुम्हारी ध्वनि सुनते हैं (72)
या तुम्हें कुछ लाभ या हानि दे सकते हैं (73)
उन्होंने कहा अपितु हमने अपने बाप दादा को इसी प्रकार करते देखा है (74)
(इब्राहीम ने कहा भला तुमने कभी इस बात पर भी विचार किया है कि जिनकी तुम पूजा करते हो (75)
तुम भी और तुम्हारे अगले बाप दादा भी (76)
निःसन्देह वह सब मेरे शत्रु हैं मेरा मित्र तो सारे संसार को पालने वाला है (77)
जिसने मुझे भी उत्पन्न किया है और वही (जीवन के पुर पेच मार्गों में) मेरा मार्ग दर्शन करता है (78)
और वही मुझे खिलाता और पिलाता है (79)
और जब मैं रोगी होता हूं तो मुझे आरोग्य देता है (80)
और वही मुझे मार डालेगा फिर जीवित करेगा (81)
और जिससे मैं आशा रखता हूं कि प्रलय के दिन मेरे पाप क्षमा करेगा (82)
ऐ ईश्वर मुझे ज्ञान व बुद्धि (निर्णयकी क्षमता) प्रदान कर और सदाचारियों में सम्मिलित कर (83)
और आने वाले वंशों में मेरा शुभ नाम जारी कर (84)
मुझे प्रसादों के उपवनों का उत्तराधिकारी बना (85)
और मेरे पिता को क्षमा कर दे कि वह पथ भ्रष्टों में से है (86)
और जिस दिन कि लोग पुनः जिलाए जाऐं मुझे अपमानित न करना (87)
जिस दिन न धन ही कुछ लाभ दे सकेगा और न पुत्र (88)
हां, लाभ में वह व्यक्ति रहेगा जो ईश्वर के पास शुद्ध हृदय लेकर जाएगा (89)
और उस दिन जन्नत सदाचारियों के निकट कर दी जाएगी (90) {24:21; 19:71,85,86; 26:90, 91; 29:54; 36:19;21:101,103}
और नर्क पथ भ्रष्टों के सामने लाई जाएगी (91)
और उनसे कहा जाएगा कि जिन को तुम पूजते थे वह कहां हैं (92)
(जिन की बन्दगी के आवेश में) ईश्वर को भूले हुए थे (अच्छा बताओ) क्या वह तुम्हारी सहायता कर सकते हैं या स्वयं अपना बचाओ कर सकते हैं (93)
पस उल्टे डाले जाएंगे बीच उसके वह और सब पथ भ्रष्ट (94)
और इबलीस की सम्पूर्ण सेना भी वहां (95)
वहां वह आपस में झगड़ेंगे और कहेंगे (96)

کہ تم کس چیز کو پوجتے ہو؟(۷۰)
وہ کہنے لگے کہ ہم بتوں کو پوجتے ہیں اور ان کی پوجا پر قائم ہیں(۷۱)
(ابراہیم نے) کہا کہ جب تم ان کو پکارتے ہو تو کیا وہ تمہاری (آواز) سنتے ہیں(۷۲)
یا تمہیں کچھ فائدہ یا نقصان دے سکتے ہیں(۷۳)
انہوں نے کہا بلکہ ہم نے اپنے باپ دادا کو اسی طرح کرتے دیکھا ہے(۷۴)
ابراہیم نے کہا بھلا تم نے کبھی اس بات پر بھی غور کیا ہے کہ جن کی تم پوجا کرتے ہو(۷۵)
اور تمہارے اگلے باپ دادا بھی(۷۶)
بے شک وہ سب میرے دشمن ہیں میرا دوست تو سارے جہاں کو پالنے والا ہے(۷۷)
جس نے مجھے بھی پیدا کیا ہے اور وہی (زندگی کی پر پیچ راہوں میں) میری رہنمائی کرتا ہے(۷۸)
اور وہی مجھے کھلاتا اور پلاتا ہے(۷۹)
اور جب میں بیمار پڑتا ہوں تو مجھے شفا دیتا ہے(۸۰)
اور وہی مجھے مار ڈالے گا پھر زندہ کرے گا(۸۱)
اور وہ جس سے میں امید رکھتا ہوں کہ قیامت کے دن میرے گناہ بخشے گا(۸۲)
اے پروردگار مجھے علم و دانش (قوت فیصلہ) عطا فرما اور نیکو کاروں میں شامل کر(۸۳)
اور آنے والی نسلوں میں میرا ذکر خیر جاری فرما(۸۴)
مجھے نعمت کے باغوں کا وارث بنا(۸۵)
اور میرے باپ کو بخش دے کہ وہ گمراہوں میں سے ہے(۸۶)
اور جس دن کہ لوگ دوبارہ جلائے جائیں گے رسوا نہ کرنا(۸۷)
جس دن نہ مال ہی کچھ فائدہ دے سکے گا اور نہ بیٹے(۸۸)
ہاں فائدے میں وہ شخص رہے گا جو اللہ کے پاس پاک دل لے کر جائے گا(۸۹)
اور (اس روز) جنت پرہیز گاروں کے قریب کر دی جائے گی(۹۰) [۲۴:۲۱؛۱۹:۷۱،۸۵،۸۶؛۲۶:۹۰،۹۱؛۲۹:۵۴؛۳۶:۱۹؛۲۱:۱۰۱،۱۰۳]
اور دوزخ گمراہوں کے سامنے لائی جائے گی(۹۱)
اور ان سے کہا جائے گا کہ جس کو تم پوجتے تھے وہ کہاں ہیں(۹۲)
(جن کی بندگی کے جوش میں) اللہ کو بھولے ہوئے تھے (اچھا بتاؤ) کیا وہ تمہاری مدد کر سکتے ہیں یا خود اپنا بچاؤ کر سکتے ہیں(۹۳)
پس لٹے ڈالے جاویں گے بیچ اس کے وہ اور سب گمراہ(۹۴)
اور ابلیس کے تمام لشکر بھی وہاں(۹۵)
وہاں وہ آپس میں جھگڑیں گے اور کہیں گے(۹۶)

कि ईश्वर साक्षी है कि हम तो खुली पथ भ्रष्टता में थे (97)
जबकि तुम्हें संसार के स्वामी के बराबर समझ बैठे थे (98)
और (यही वह) अपराधी थे जिन्होंने हमें पथ भ्रष्ट किया था (99)
अब तो हमारा कोई अनुशंसा करने वाला भी नही है (100)
और न कोई मित्र प्रेम करने वाला (101)
यदि हमें (दुनिया में) पुनः जाना हो ले हम आस्तिके में हो जाएं (102)
निःसंदेह इसमें चिन्ह हैं परन्तु उनमें अधिकांश विश्वास लाने वाले नही (103)
और निःसंदेह तुम्हारा ईश्वर तो प्रभुत्व शाली और कृपालु है (104)
नूह की जाति ने भी रसूलों को झुटलाया (105)
इस झुटलाने पर जब उनसे उनके भाई नूह ने कहा कि तुम डरते क्यों नही (106)
मैं तो तुम्हारा विश्वासनीय रसूल हूं (107)
पस तुम ईश्वर की अवज्ञा करने से डरो और मेरा कहा मानों (108)
और मैं इस कार्य पर तुमसे प्रतिदान नही मांगता मेरा प्रतिदान तो विश्व पालक पर है (109)
तो ईश्वर की अवज्ञा करने से डरो और मेरा कहा मानों (110)
जाति ने उत्तर दिया क्या हम तुझको रसूल मान लें? जब कि तेरा अनुकरण करने वाले हीन लोग हैं (111) {80:102}
नूह ने कहा मुझे क्या ज्ञात कि वह पहले क्या करते रहे (112)
उनके कर्मों का लेखा तो मेरे रब का दायित्व है यदि तुम समझने का प्रयत्न करो (113)
और मैं आस्तिकों को धक्के देकर निकाल देने वाला नही हूं (114)
मैं तो केवल खोल खोल कर ईश्वर की अवज्ञा करने से डराने वाला हूं (115)
(जाति ने) कहा कि नूह तुम अपने काम से नही रुके अतः हम तुमको संगसार करेंगे (116)
नूह ने कहा ईश्वर मेरी जाति ने तो मुझे झुटला दिया (117)
अब तू मेरे और उनके मध्य निश्चित निर्णय कर दे और मुझे और मेरे साथ जो लोग विश्वास लाए हैं उन्हें (कष्ट) से बचा ले (118)
(हम ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की) पस हम उसको और उन लोगो को जो उसके साथ भरी हुई नाव में सवार थे बचा लिया (119)
फिर इसके बाद शेष लोगो को डुबा दिया (120)
निःसंदेह इस घटना में बड़ी निशानी है परन्तु उनमें अधिकांश विश्वास लाने वाले नही थे (121)
निःसंदेह आपका ईश्वर प्रभुत्व शाली और कृपालु है (122)
आदियों ने भी रसूलो को झुटलाया (123)

کہ قسم اللہ کی! یقیناً ہم تو کھلی غلطی پر تھے (۹۷)
جب کہ تمہیں رب العالمین کے برابر سمجھ بیٹھے ہیں (۹۸)
اور (یہی وہ) مجرم تھے جنہوں نے ہمیں گمراہ کیا تھا (۹۹)
اب تو ہمارا کوئی سفارش کرنے والا بھی نہیں ہے (۱۰۰)
اور نہ کوئی دوست محبت کرنے والا (۱۰۱)
کاش ہمیں (دنیا میں) پھر جانا ہوتو ہم مومنوں میں ہو جائیں (۱۰۲)
بے شک اس میں نشانی ہے لیکن ان میں سے اکثر ایمان لانے والے نہیں (۱۰۳)
اور بے شک تمہارا رب تو غالب اور مہربان ہے (۱۰۴)
نوح کی قوم نے بھی رسولوں کو جھٹلایا (۱۰۵)
اس جھٹلانے پر جب ان سے ان کے بھائی نوح نے کہا کہ تم ڈرتے کیوں نہیں (۱۰۶)
میں تو تمہارا امانت دار رسول ہوں (۱۰۷)
پس تم اللہ کی نافرمانی کرنے سے ڈرو اور میرا کہا مانو (۱۰۸)
اور میں اس کام پر تم سے اجرت نہیں مانگتا میرا اجر تو رب العالمین پر ہے (۱۰۹)
تو اللہ کی نافرمانی کرنے سے ڈرو اور میرا کہا مانو (۱۱۰)
قوم نے جواب دیا کیا ہم تجھ کو رسول مان لیں؟ جب کہ تیری پیروی کرنے والے رذیل لوگ ہیں (۱۱۱) [۸۰:۱۰۲]
نوح نے کہا مجھے کیا خبر کہ وہ پہلے کیا کرتے رہے (۱۱۲)
ان کے اعمال کا حساب تو میرے رب کے ذمہ ہے اگر تمہیں شعور ہوتو (۱۱۳)
اور میں ایمان والوں کو دھکے دے کر نکال دینے والا نہیں ہوں (۱۱۴)
میں تو صرف کھول کھول کر اللہ کی نافرمانی کرنے سے ڈرانے والا ہوں (۱۱۵)
(قوم نے) کہا کہ نوح تم اپنے کام سے نہیں رکے اس لئے ہم تم کو سنگسار کریں گے (۱۱۶)
نوح نے کہا پروردگار میری قوم نے تو مجھے جھٹلا دیا (۱۱۷)
اب تو میرے اور ان کے درمیان قطعی فیصلہ کر دے اور مجھے اور میرے ساتھ جو لوگ ایمان لائے ہیں انہیں (عذاب) سے بچا لے (۱۱۸)
(ہم نے اس کی دعا قبول کی) پس ہم اس کو اور ان لوگوں کو جو اس کے ساتھ بھری ہوئی کشتی میں سوار تھے بچا لیا (۱۱۹)
پھر اس کے بعد باقی لوگوں کو ڈبو دیا (۱۲۰)
بے شک اس واقعہ میں بڑی نشانی ہے لیکن اُن میں اکثر ایمان لانے والے نہیں تھے (۱۲۱)
اور بے شک آپ کا رب غالب اور مہربان ہے (۱۲۲)
عادیوں نے بھی رسولوں کو جھٹلایا (۱۲۳)

जब उनसे उनके भाई हूद ने कहा क्या तुम डरते नही? (124)
मैं तुम्हारा विश्वासनीय रसूल हूँ (125)
तो ईश्वर की अवज्ञा करने से डरो और मेरा कहा मानो (126)
और मैं तुम से इसका कुछ बदला नही मांगता मेरा प्रतिदान तो विश्व पालक का दायित्व है (127)
यह क्या है कि तुम (अपनी प्रतिष्ठा जताने के लिए) हर ऊँचे स्थान पर बड़े बड़े भवन बनाते हो (128)
और बड़े बड़े भवन बनाते हो और मानो तुम सदैव रहोगें (129)
और जब किसी को पकड़ते हो तो उस के साथ बड़ी बेदर्दी का व्यवहार करते हो (130)
अतः ईश्वर से डरो और मेरा अनुकरण करो (131)
और उससे डरो जिसने तुम को उन वस्तुओं से सहायता दी जिनको तुम जानते हो (132)
उसने तुम्हारी सहायता की धन से और सन्तान से (133)
और उपवनो और झरनो से (134)
मुझको तुम्हारे बारे में बड़े दिन के कष्ट का भय है (135)
वह कहने लगे चाहे तुम हमें उपदेश करो या न करो हमारे लिए बराबर है (136)
इसी प्रकार की बाते अगले लोगो से होती चली आती है (137)
और हम पर कोई कष्ट न आएगा (138)
तो उन्होने हूद को झुटलाया सो हमने उनको नष्ट कर डाला निःसंदेह इसमें चिन्ह है, परन्तु उनमें अधिकांश विश्वास लाने वाले नही थे (139)
और निःसंदेह आपका रब तो प्रभुत्व शाली और कृपालु है (140)
और समूद की जाति ने भी रसूलो को झुटलाया है (141)
जब उनसे उनके भाई सालेह ने कहा कि तुम ईश्वर की अवज्ञा करने से डरते क्यों नही (142)
मैं तो तुम्हारा विश्वासनीय रसूल हु (143)
तो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो (144)
और मैं इसका तुम से प्रतिदान नही मांगता मेरा बदला तो विश्वपालक का दायित्व है (145)
क्या जो वस्तुएं तुम्हें यहां मिली हुई है उनमें तुम निश्चिन्त छोड़ दिए जाओगें (146)
अर्थात इन उपवनो और झरनो में (147)
और खेतियों और नखालिस्तानो में जिनके खोशे रसभरे होते है (148)
और तुम पर्वत काटकर गर्व से उनमें भवन बनाते हो (149)
तो ईश्वर से डरो और मेरे कहने पर चलो (150)

جب ان سے ان کے بھائی ہود نے کہا کیا تم ڈرتے نہیں؟(۱۲۴)
میں تمہارا امانت دار رسول ہوں (۱۲۵)
تو اللہ کی نافرمانی کرنے سے ڈرو اور میرا کہا مانو (۱۲۶)
اور میں تم سے اس کا کچھ بدلہ نہیں مانگتا میری اجرت تو رب العالمین کے ذمہ ہے (۱۲۷)
یہ کیا ہے کہ تم (اپنی شان وشوکت جتانے کے لئے) ہر اونچے مقام پر (بڑی بڑی) عمارتیں بناتے ہو (۱۲۸)
اور بڑے بڑے محل بناتے ہو گویا تم ہمیشہ رہو گے (۱۲۹)
اور جب کسی کو پکڑتے ہو تو اس کے ساتھ بڑی بے دردی کا سلوک کرتے ہو (۱۳۰)
لہٰذا اللہ سے ڈرو اور میری اطاعت کرو (۱۳۱)
اور اس سے ڈرو جس نے تم کو ان چیزوں سے مدد دی جن کو تم جانتے ہو (۱۳۲)
اس نے تمہاری مدد کی مال سے اور اولاد سے (۱۳۳)
اور باغوں اور چشموں سے (۱۳۴)
مجھ کو تمہارے بارے میں بڑے دن کے عذاب کا خوف ہے (۱۳۵)
وہ کہنے لگے چاہے تم ہمیں نصیحت کرو یا نہ کرو ہمارے لئے برابر ہے (۱۳۶)
اسی طرح کی باتیں اگلے لوگوں سے ہوتی چلی آتی ہیں (۱۳۷)
اور ہم پر کوئی عذاب نہ آئے گا (۱۳۸)
تو انہوں نے ہود کو جھٹلایا سو ہم نے ان کو ہلاک کر ڈالا بے شک اس میں نشانی ہے مگر ان میں اکثر ایمان لانے والے نہیں تھے (۱۳۹)
اور بے شک آپ کا رب تو غالب اور مہربان ہے (۱۴۰)
اور قوم ثمود نے بھی رسولوں کو جھٹلایا (۱۴۱)
جب ان سے ان کے بھائی صالح نے کہا کہ تم اللہ کی نافرمانی کرنے سے ڈرتے کیوں نہیں؟ (۱۴۲)
میں تو تمہارا امانت دار رسول ہوں (۱۴۳)
تو اللہ سے ڈرو اور میرا کہا مانو (۱۴۴)
اور میں اس کا تم سے اجر نہیں مانگتا میرا بدلہ رب العالمین کے ذمہ ہے (۱۴۵)
کیا جو چیزیں تمہیں یہاں ملی ہوئی ہیں ان میں تم بے خوف چھوڑ دئے جاؤ گے (۱۴۶)
یعنی ان باغوں اور چشموں میں (۱۴۷)
اور کھیتیوں اور نخلستانوں میں جن کے خوشے رس بھرے ہوتے ہیں (۱۴۸)
اور تم پہاڑ تراش کر فخر سے ان میں عمارتیں بناتے ہو (۱۴۹)
تو اللہ سے ڈرو اور میرے کہنے پر چلو (۱۵۰)

और सीमा से निकलने वालो की बात न मानो (151)
जो देश में अशान्ति फैला रहे है और सुधार नही करते (152)
वह कहने लगे कि तुम तो जादू के मारे हो (153)
तुम और कुछ नही हमारी ही भांति के व्यक्ति हो यदि सच्चे हो तो कोई चिन्ह प्रस्तुत करो (154)
(सालेह ने) कहा (देखो) यह ऊंटनी है (एक दिन) इसके पानी पीने की बारी है और एक निश्चित दिन तुम्हारी (155)
सावधान इसे किसी प्राकर की हानी न पहुंचाना अन्यथा एक बड़े (कठोर) दिन का कष्ट तुम्हे आ पकड़ेगा (156)
फिर भी उन्होने उसकी कूचे काट डाली फिर वह लज्जित हुए (157)
सो उनको कष्ट ने आ पकड़ा निः संदेह इसमें भी चिन्ह है परन्तु उनमें अधिक विश्वास लाने वाले न थे (158)
और आप का रब तो प्रभुत्वशाली और कृपालु है (159)
और लूत की जाति ने भी रसूलो को झूटलाया (160)
जब उनसे उनके भाई लूत ने कहा कि तुम डरते क्यो नही (161)
मैं तो तुम्हारा विश्वासनीय रसूल हूं (162)
तो ईश्वर से डरो और मेरा अनुकरण करो (163)
और मैं इस पर तुम से प्रतिदान नही मांगता मेरा प्रतिदान तो विश्वपालक का दायित्व है (164)
क्या तुम्हारी वासना पूरी करने के लिए केवल लड़के रह गए है (165) {27:55}
और तुम्हारी जिन स्त्रीयों को ईश्वर ने तुम्हारा जोड़ा बनाया है उनको छोड़ देते हो, अपितु तुम हो ही सीमा से निकल जाने वाले (166)
वह कहने लगे कि लूत हम ने तुम से मना किया था परन्तु तुम नही रूके अतः नगर से निकाल दिए जाओगे (167)
लूत अ0 ने कहा कि मैं तुम्हारे कर्म से अधिक अप्रसन्न हूं (168)
ऐ मेरे रब मुझको और मेरे घर वालो को उनके कर्मो के बवाल से मुक्ति दे (169)
अतः हमने उनको और उनके सब घर वाले (जो सदाचारी थे) को मुक्ति दी (170)
परन्तु एक बुढ़्या न बची वह पीछे रह गई (171)
फिर हमने दूसरो को बध कर दिया (172)
फिर हमने उन पर एक मुख्य प्रकार की बरसा बरसाई, पस बहुत ही बुरी वर्षा थी जो डराए गए लोगो पर बरसी (173){11:82,83}
निःसंदेह इस बात में भी चिन्ह है (बुद्धि वालो के लिए) परन्तु उनमें से अधिक विश्वास लाने वाले न थे (174)
निःसंदेह आपका रब वही है प्रभुत्वशाली और दयालु (175)

اور حد سے نکلنے والوں کی بات نہ مانو (۱۵۱)
جو ملک میں فساد پھیلا رہے ہیں اور اصلاح نہیں کرتے (۱۵۲)
وہ کہنے لگے کہ تم تو جادو کے مارے ہو (۱۵۳)
تم اور کچھ نہیں ہماری ہی طرح کے آدمی ہو اگر سچے ہو تو کوئی نشانی پیش کرو (۱۵۴)
(صالح نے) کہا (دیکھو) یہ اونٹنی ہے (ایک دن) اس کے پانی پینے کی باری ہے اور ایک مقررہ دن تمہاری (۱۵۵)
خبردار اسے کسی طرح کا نقصان نہ پہنچانا ورنہ ایک بڑے (سخت) دن کا عذاب تمہیں آ پکڑے گا (۱۵۶)
پھر بھی انہوں نے اس کی کونچیں کاٹ ڈالیں پھر وہ نادم ہوئے (۱۵۷)
سو ان کو عذاب نے آ پکڑا بےشک اس میں بھی نشانی ہے مگر ان میں اکثر ایمان لانے والے نہیں (۱۵۸)
اور آپ کا رب تو غالب اور مہربان ہے (۱۵۹)
اور قوم لوط نے بھی رسولوں کو جھٹلایا (۱۶۰)
جب ان سے اُن کے بھائی لوط نے کہا کہ تم ڈرتے کیوں نہیں (۱۶۱)
میں تو تمہارا امانتدار رسول ہوں (۱۶۲)
تو اللہ سے ڈرو اور میری اطاعت کرو (۱۶۳)
اور میں اس پر تم سے اجر نہیں مانگتا میرا اجر تو رب العالمین کے ذمہ ہے (۱۶۴)
کیا تمہاری خواہشات نفسانی پوری کرنے کے لئے صرف لڑکے رہ گئے ہیں (۱۶۵) [۲۷:۵۵]
اور تمہاری جن عورتوں کو اللہ نے تمہارا جوڑا بنایا ہے ان کو چھوڑ دیتے ہو بلکہ تم ہو ہی حد سے نکل جانے والے (۱۶۶)
وہ کہنے لگے کہ لوط ہم نے تم سے منع کیا تھا مگر تم نہیں رُکے اس لئے شہر بدر کر دئے جاؤ گے (۱۶۷)
لوطؑ نے کہا کہ میں تمہارے کام سے سخت بیزار ہوں (۱۶۸)
اے میرے رب مجھ کو اور میرے گھر والوں کو ان کے کاموں کے (وبال سے) نجات دے (۱۶۹)
پس ہم نے ان کو اور ان کے سب گھر والوں (جو ایمان دار تھے) کو نجات دی (۱۷۰)
مگر ایک بڑھیا نہ بچی وہ پیچھے رہ گئی (۱۷۱)
پھر ہم نے دوسروں کو ہلاک کر دیا (۱۷۲)
اور ہم نے ان پر ایک خاص قسم کا مینہ برسایا، پس بہت ہی بُرا مینہ تھا جو ڈرائے گئے لوگوں پر برسا (۱۷۳) [۱۱:۸۲،۸۳]
بےشک اس بات میں بھی نشانی ہے (عقل والوں کے لئے) مگر ان میں سے اکثر ایمان لانے والے نہ تھے (۱۷۴)
بےشک آپ کا پروردگار وہی ہے غلبہ والا اور مہربان (۱۷۵)

और बनके रहने वालो ने भी रसूलो को झुटलाया (176)
(उनके कर्मों को देखकर) जब उनसे शुऐब ने कहा तुम डरते क्यो नही (177)
मैं तो तुम्हारे लिए विश्वासनीय रसूल हूं (178)
तो ईश्वर से डरो और मेरा अनुकरण करो (179)
मैं इस पर तुमसे कोई प्रतिदान नही चाहता मेरा बदला तो विश्वपालक का दायित्व है (180)
देखो माप पूरा पूरा करो और हानी न करो (181)
और तुला ठीक सीधी रख कर तोला करो (182)
और लोगों को उनकी वस्तुएं कम न दिया करो और देश में अशान्ति न करते फिरो और ईश्वर की अवज्ञा न करो उससे डरो जिसने तुमको और पहली रचनाओ को उत्पन्न किया (184)
वह कहने लगे कि तुम उनमें से हो जिस पर जादूकर दिया गया है (185)
और तू है किया निःसंदेह हमारे जैसा ही व्यक्ति है और हमारा विचार है कि तुम झूटे हो (186)
(अच्छा) यदि तुम सच्चे हो तो हम पर आकाश से (यातना का) कोई टुकड़ा ला गिराओ (187)
शुऐब ने कहा जो कर्म करते हो मेरा रब उससे अवगत है (188)
तात्पर्य यह कि उन लोगों न शुऐब को झुटलाया पस (बादलों के) मण्डप की आकृति में उन पर कष्ट अवतरित हुआ और वह बड़े ही (भयानक) दिन का कष्ट था (189)
उसमें निःसंदेह चिन्ह है परन्तु उनमें अधिक आस्था वाले न थे (190)
और आपका रब तो प्रभुत्व शाली और कृपालु है (191)
और यह कुरआन विश्वपालक का प्रेषित किया हुआ है (192)
इसको विश्वासनीय फरिश्ता लेकर उतरा है (193)
(अर्थात उस फरिश्ते ने) आपके हृदय पर (अवतरित किया है) कि आप (दूसरे ईशदूतों की भांति संसार वालों को इनकार व दुषकर्मों के परिणाम से) डराएं (194)
(और अवतरित भी) सुभाषी अरबी भाषा में किया है (195)
और यह कुरआन अगली पुस्तकों में लिखा हुआ है परन्तु वहां सुरक्षित न रहा (196)
क्या उनके लिए यह चमत्कार नही है कि उलमा बनी इसराईल इस बात को जानते है (कि वही कुरआन उनकी पुस्तकों में है) (197) {87:18-19, 87:19-18}
और यदि हम इसको किसी अजमी व्यक्ति पर अवतरित करते (198)
और वह इसे उनको पढ़कर सुनाते तो वह इसे कभी न मानते (199)
और इसी प्रकार हमारे नियम ने इनकार को

اور بن کے رہنے والوں نے بھی رسولوں کو جھٹلایا (۱۷۶)
(ان کی حرکتوں کو دیکھ کر) جب ان سے شعیب نے کہا تم ڈرتے کیوں نہیں (۱۷۷)
میں تو تمہارے لئے امانتدار رسول ہوں (۱۷۸)
تو اللہ سے ڈرو اور میری اطاعت کرو (۱۷۹)
میں اس پر تم سے کوئی اجرت نہیں چاہتا میرا بدلہ تو رب العالمین کے ذمے ہے (۱۸۰)
دیکھو پیمانہ پورا بھرا کرو اور نقصان نہ کرو (۱۸۱)
اور ترازو صحیح سیدھی رکھ کر تولا کرو (۱۸۲)
اور لوگوں کو ان کی چیزیں کم نہ دیا کرو اور ملک میں فساد نہ کرتے پھرو (۱۸۳)
اور اللہ کی نافرمانی نہ کرو اس سے ڈرو جس نے تم کو اور پہلی خلقت کو پیدا کیا (۱۸۴)
وہ کہنے لگے کہ تم ان میں سے ہو جس پر جادو کر دیا گیا ہے (۱۸۵)
اور تو کیا ہے یقیناً ہمارے جیسا ہی آدمی ہے اور ہمارا خیال ہے کہ تم جھوٹے ہو (۱۸۶)
(اچھا) اگر تم سچے ہو تو ہم پر آسمان سے (عذاب کا) کوئی ٹکڑا لا گراؤ (۱۸۷)
(شعیب نے) کہا جو کام تم کرتے ہو میرا رب اس سے واقف ہے (۱۸۸)
غرض کہ ان لوگوں نے شعیب کو جھٹلایا پس (بادلوں کے) سائبان کی شکل میں ان پر عذاب نازل ہوا اور وہ بڑے ہی (خوفناک) دن کا عذاب تھا (۱۸۹)
اس میں یقیناً نشانی ہے لیکن ان میں اکثر ایمان لانے والے نہ تھے (۱۹۰)
اور تمہارا رب تو غالب اور مہربان ہے (۱۹۱)
اور یہ قرآن رب العالمین کا اتارا ہوا ہے (۱۹۲)
اس کو امانت دار فرشتہ لے کر اترا ہے (۱۹۳)
(یعنی اس فرشتے نے) آپ کے دل پر (القا کیا ہے) تاکہ آپ (دوسرے رسولوں کی طرح اہل عالم کو انکار و بدعملی کے نتائج سے) ڈرائیں (۱۹۴)
(اور القا بھی) صاف عربی زبان میں کیا ہے (۱۹۵)
اور یہ قرآن اگلی کتابوں میں لکھا ہوا ہے (مگر ان میں محفوظ نہ رہا) (۱۹۶)
کیا ان کے لئے یہ معجزہ نہیں ہے کہ علماء بنی اسرائیل اس بات کو جانتے ہیں (کہ یہی قرآن ان کی کتابوں میں ہے) (۱۹۷) [۸۷:۱۸، ۱۹]
اور اگر ہم اس کو کسی عجمی شخص پر نازل کرتے (۱۹۸)
اور وہ اسے ان کو پڑھ کر سناتا تو وہ اسے کبھی نہ مانتے (۱۹۹)
اور اسی طرح ہمارے قانون نے انکار کو گناہ گاروں کے

पापीयों के हृदयों में प्रविष्ट कर दिया है (200)

دلوں میں داخل کردیا ہے(۲۰۰)

वह जब तक पीड़ा देने वाला कष्ट न देखें इस को नही मानेंगे (201)

وہ جب تک درد دینے والا عذاب نہ دیکھیں اس کو نہیں مانیں گے(۲۰۱)

परन्तु वह कष्ट उनपर अचानक आ जाएगा और उनको सूचना भी न होगी (202)

لیکن وہ عذاب اُن پر اچانک آجائے گا اوران کو خبر بھی نہ ہوگی(۲۰۲)

उस समय कहेंगे क्या हमें कुछ छूट मिलेगी (203)

اس وقت کہیں گے کیا ہمیں کچھ مہلت ملے گی(۲۰۳)

तो क्या वह हमारे कष्ट को शीघ्र मांग रहें हैं (204)

تو کیا وہ ہمارے عذاب کو جلدی طلب کر رہے ہیں(۲۰۴)

क्या आपने इस बात पर विचार किया यदि हम उनको दो चार साल छूट दे भी दें (205)

کیا آپ نے اس بات پر غور کیا اگر ہم ان کو دو چار سال مہلت دے بھی دیں(۲۰۵)

और फिर वही कष्ट उन पर आ जाए जिससे उन्हें डराया जा रहा है (206)

اور پھر وہی عذاب ان پر آجائے جس سے انہیں ڈرایا جارہا ہے(۲۰۶)

तो वह जीवन की सामग्री जो उनको प्राप्त है उनके किस काम आएगी? (207)

تو وہ سامان زندگی جو ان کو حاصل ہے ان کے کس کام آئے گا؟(۲۰۷)

और हमने नगरों में से जो भी नष्ट किया निःसंदेह इस से पहले हमने रसूल भेजे तब नष्ट किए (208)

اور ہم نے بستیوں میں سے جو بھی ہلاک کی یقیناً اس سے پہلے ہم نے رسول بھیجے تب ہلاک کیں(۲۰۸)

(ईशदूत इस लिए भेजे कि) उनको उपदेश कर दे और हम अत्याचारी नही है (209)

(رسول اس لئے بھیجے کہ) ان کو نصیحت کردیں اور ہم ظالم نہیں ہیں(۲۰۹)

और इस कुरआन को शैतान लेकर अवतरित नही होते (210) (अर्थात शैतान इस के साथ नही आए और नही यह कहानत की पुस्तक है) (और हम जो बता रहे हैं) वह शैतान नही करेंगे इसके विरुद्ध और न वह विरोध करने की शक्ति रखते है (यह सत्य है) (211) {22:52; 15:17,18;37:8;67:5}

اور اس قرآن کو شیطان لے کر نازل نہیں ہوئے(۲۱۰)[یعنی شیطان اس کے ساتھ نہیں آئے اور نہ ہی یہ کہانت کی کتاب ہے؟] (اور جو ہم بتارہے ہیں) وہ شیطان نہیں کریں گے اس کے خلاف اور نہ وہ مخالفت کرنے کی طاقت رکھتے ہیں (یہ حقیقت ہے)(۲۱۱) [۵:۶۷؛۸:۳۷؛۱۸،۱۷:۱۵؛۵۲:۲۲]

अपितु वह शैतान अपने इनकार के कारण इसके सुनने से भी वंचित हो गए है (212)

بلکہ وہ شیطان اپنے انکار کی وجہ سے اس کے سننے سے بھی محروم ہوگئے ہیں(۲۱۲)

तो ईश्वर के अतिरिक्त किसी और को न पुकारना अन्यथा तुमको कष्ट दिया जाएगा (213)

تو اللہ کے سوا کسی اور معبود کو نہ پکارنا ورنہ تم کو عذاب دیا جائے گا(۲۱۳)

और अपने निकट वर्तीयों के निकट रहने वालों को डर सुना दो (214)

اور اپنے قریب ترین آس پاس رہنے والوں کو ڈرسنا دو(۲۱۴)

नोट- इस आयत का अर्थ यह लिखा गया है कि ऐ नबी अपने नाते दारो परिवार वालों को डर सुना दो अर्थात उनको डरा दो अर्थात उन पर धर्म का प्रचार करो, तो प्रश्न उत्पन्न होता है क्या नबी केवल परिवार वालों के लिए ही ईश्वर ने प्रेषित (उठाए) किए थे? जब कि ईश्वर का परिवार सम्पूर्ण मानव है और मुहम्मद स0 के लिए कहा गया है कि आप 'रहमतुल्लिल आलमीन' अर्थात सम्पूर्ण संसारो के लिए अनुकम्पा है तो मानो मुहम्मद के निकट वर्ती सारे संसार के मानव है और उस समय आपके आस पास के व्यक्तियों से ही तात्पर्य है अर्थात जहां तक आप सुगमता से जा सकें न कि केवल परिवार, इस आयत को परिवार तक सीमित कर देना एक अनुचित बात है मुहम्मद स0 की ओर को ऐसी बात मन्सूब करना ठीक नही है इस शब्द का अशीर का अर्थ निकटवर्ती निकट भी तो है इतने पर भी नबी के परिवार में सम्पूर्ण मानव होते है अतः पूरे इन्सानों को डराना है.

نوٹ:۔ اس آیت کا مطلب یہ لکھا گیا ہے کہ اے نبی اپنے رشتہ داروں خاندان والوں کو ڈرادو یعنی ان کو دین کی تبلیغ کرو تو سوال پیدا ہوتا ہے کیا نبی صرف رشتہ داروں کے لئے ہی اللہ نے معبوث کئے تھے؟ جب کہ نبی کا خاندان پوری نبی نوع انسان ہیں اور محمدؐ کے لئے کہا گیا ہے کہ آپ رحمت اللعالمین ہیں تو گویا محمد کے قریبی سارے جہاں کے انسان ہیں اور اس وقت آپ کے قرب وجوار کے آدمیوں سے ہی مراد ہے یعنی جہاں تک آپ آسانی سے جاسکیں نہ کہ صرف خاندان۔ اس آیت کو خاندان تک خاص کردینا ایک غلط بات ہے محمدؐ کی طرف کو ایسی بات منسوب کرنا ٹھیک نہیں ہے اس لفظ عشیر کا مطلب قریبی قریب بھی تو ہے تاہم نبی کے قبیلہ میں پورے انسان ہوتے ہیں اس لئے پورے انسانوں کو ڈرانا ہے۔

और जो व्यक्ति आस्था लाकर आपके अनुयायी हो गए है उनके साथ नम्रता का व्यवहार करो (215) {15:88}

اور جو آدمی ایمان لاکر آپ کے پیرو ہوگئے ہیں ان سے تواضع سے پیش آؤ(۲۱۵)[۸۸:۱۵]

फिर यदि लोग आपकी अवज्ञा करे तो कह दो कि मैं तुम्हारे कर्मो से दूर हूं (216)

پھر اگر لوگ آپ کی نافرمانی کریں تو کہہ دو کہ میں تمہارے اعمال سے بے تعلق ہوں(۲۱۶)

और ईश्वर प्रभत्वशाली और कृपालु पर भरोसा रखो (217)
जो आपको उस समय भी देखता है जब आप खड़े होते है (218)
और सजदा अर्थात आज्ञाकारी करने वालो में आपके फिरने को भी (219)

اوراللہ غالب اورمہربان پربھروسہ رکھو(۲۱۷)
جوآپ کواس وقت بھی دیکھتا ہےجب آپ کھڑے ہوتے ہیں(۲۱۸)
اورسجدہ یعنی فرمانبرداری کرنے والوں میں آپ کے پھرنے کوبھی (۲۱۹)

निःसंदेह वह सुनने वाला है और जानने वाला है (220)
(अच्छा) क्या मैं तुम्हें बताओ कि शैतान किस पर उतरते है (221) {22:52}

بےشک وہ سننے والااورجاننے والا ہے(۲۲۰)
(اچھا) کیا میں تمہیں بتاؤں کہ شیطان کس پراترتے ہیں (۲۲۱) [۲۲:۵۲]

हर झूटे पापी पर उतरते है (222)
जो सुनी सुनाई बातो को कानो में फूंकते रहते है और उनमें से अधिक झूटे होते है (223)

ہرجھوٹے گنہگارپراترتے ہیں(۲۲۲)
جوسنی سنائی باتوں کوکانوں میں پھونکتے رہتے ہیں اوران میں سے اکثرجھوٹے ہیں(۲۲۳)

और कवियों का अनुकरण वह करते है जो भटके हुए हो (224)
क्या आप ने नही देखा कि कवि हर वादी में सिर मारते फिरते है (225)

اورشاعروں کی پیروی وہ کرتے ہیں جوبھٹکے ہوئے ہوں(۲۲۴)
کیا آپ نےنہیں دیکھا کہ شاعرہر وادی میں سرمارتے پھرتے ہیں(۲۲۵)

और ऐसी बाते कहते है जो करते नही (226)
(परन्तु वह कवि इससे प्रथक है) परन्तु जो इमान लाए और सत्कर्म किये और ईश्वर को बहुत याद करते रहे और अपने ऊपर अन्याय होने के बाद प्रतिशोध लेते है और अन्यायी शीध्र जान लेगें कि कौन से स्थान लौट कर जाते है (227)

اورایسی باتیں کہتے ہیں جوکرتےنہیں(۲۲۶)
(مگروہ شاعراس سےالگ ہیں) مگر جوایمان لائےاور نیک کام کئےاوراللہ کوبہت یادکرتےرہےاوراپنےاوپر ظلم ہونےکےبعدانتقام لیتےہیں اورظالم جلد جان لیں گےکہ کون سی جگہ لوٹ کرجاتےہیں(۲۲۷)

सूरत नमल (27) मक्की

سورت نمل(۲۷) مکی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ऐ मुहम्मद स0! यह आयत कुरआन की है जो उज्ज्वल पुस्तक है (1)
पथ प्रदर्शन और शुभ सूचना है आस्तिको के लिए (2)
वह मोमिन जो नमाज स्थापित करते है (ईश्वर का हर आदेश मानकर व्यवहार करते है) और दान देते है अर्थात शुद्ध रहते है और दूसरो को भी शुद्ध करते है और परलोक का विश्वास रखते है कि एक दिन ईश्वर के सम्मुख उपस्थित होना है (3)

اےمحمدؐ! یہ آیات قرآن کی ہیں جوروشن کتاب ہے(۱)
ہدایت اورخوش خبری مومنوں کےلئے ہے(۲)
وہ مومن جونماز قائم کرتے ہیں (اللہ کا ہرحکم مان کرعمل کرتے ہیں) اورزکوٰۃ دیتے ہیں (یعنی پاک رہتے ہیں اوردوسروں کوبھی پاک کرتے ہیں) اورآخرت کا یقین رکھتے ہیں کہ ایک دن اللہ کےسامنےحاضرہونا ہے(۳)

जो लोग परलोक पर विश्वास नही रखते हमारे नियम ने उनके कर्म उनके किए सुसज्जित कर दिए है (अर्थात वही अनुचित कर्म उनको अच्छे लग रहे है) और भटको फिर रहे है (4)

جولوگ آخرت پرایمان نہیں رکھتے ہمارےقانون نےان کےاعمال ان کےلئےآراستہ کردئےہیں (یعنی وہی غلط کام ان کواچھےلگ رہےہیں) اوربھٹکتے پھررہےہیں(۴)

वही वह लोग है जिनके लिए बड़ा कष्ट है और परलोक में भी बहुत हानि उठाने वाले है (5)
और ऐ ईशदूत! यह कुरआन तुमको मुक्ति वाले और सब कुछ जानने वाले ईश्वर की ओर से दिया जा रहा है (6)
(वह समय याद करो यात्रा करते हुए) जब मुसा ने अपने घर वालो से कहा कि मैं ने आग देखी है (तुम यहां रूको) मैं वहा से (मार्ग का) पता लाता हूं या सिलगता हुआ अंगारा तुम्हारे पास लाता हूं ताकि तुम तापो (7)

وہی وہ لوگ ہیں جن کےلئےبڑاعذاب ہےاوروہ آخرت میں بھی بہت نقصان اٹھانےوالےہیں(۵)
اوراےرسول! یہ قرآن تم کوحکمت والےاورسب کچھ جاننےوالےاللہ کی طرف سےدیا جارہا ہے(۶)
(وہ وقت یادکروسفرکرتےہوئے) جب موسیٰ نےاپنے گھروالوں سےکہا کہ میں نےآگ دیکھی ہے(تم یہاں رُکو) میں وہاں سے(رستےکا) پتہ لاتا ہوں یا سلگتا ہوا انگاراتمہارےپاس لاتا ہوں تاکہ تم تاپو(۷)

जब मूसा उसके पास आए तो ध्वनी आई कि वह जो आग की खोज में है ओर जो उसके आस पास है उनपर सम्पन्नता हो ओर ईश्वर जो सम्पूर्ण

جب موسیٰ اس کےپاس آئےتوندا آئی کہ وہ جوآگ کی تلاش میں ہےاورجواس کےآس پاس ہیں ان پربرکت

संसार का रब है पवित्र है (8)
ऐ मूसा सुन मैं ही ईश्वर प्रभुत्वशाली और ज्ञानी हूं (9)
और अपनी लाठी डाल दो जब उसको देखा तो वह सांप की भांति बल खा रही है मानो वह सांप है तो पीठ फेरकर भागे और पीछे मुड़कर न देखा (आदेश हुआ कि) मूसा डरो मत हमारे पास ईशदूत डरा नही करते (10) {53:11,12}
निःसंदेह उसको भी भय नही है जिसने अन्याय करने के बाद पश्चाताप करके सत्कर्म में बदल लिया तो मैं क्षमा करने वाला कृपालु हूं (11)
और अपना हाथ अपने ग्रीवा में डाल निर्दोष निकलेगा (यह दोनो चिन्ह) नौ चिन्हो में से हैं इनको लेकर फिरऔन और उसकी जाति के पास जाओ कि वह भ्रष्ट लोग हैं (12)
अतः जब उनके पास आंखे खोल देने वाले चिन्ह पहुंचे तो वह कहने लगे यह तो खुला जादू है (13)
उन्होने इन्कार कर दिया यद्यपि उनके हृदय विश्वास कर चुके थे केवल अन्याय और घमण्ड के आधार पर, अतः देख लो कि अशान्ति फैलाने वालो का अन्त कैसा हुआ (14)
यह सत्य है कि हमने दाऊद और सूलेमान दोनो को ज्ञान प्रदान किया था दोनो ने कहा धन्यवाद है उस ईश्वर का जिसने हमें अपने बहुत से सदाचारी भक्तो पर श्रेष्ठता दी (15)
और दाऊद के उत्तराधिकारी सुलेमान हुए और कहने लगे कि लोगो! हमें ईश्वर की ओर से जानवरो के गुण बताए गए हैं और उड्डयन का वास्तविक ज्ञान भी और हर वस्तु प्रदान की गई है निःसंदेह यह उसकी खुली कृपा है (16)
एक दिन सुलेमान के (निरिक्षण के) लिए जिन्नो इन्सानो और पक्षियों की सेना संग्रह किए गए ओर हर प्रकार के कौमी दल अपनी अपनी पंक्तियों में क्रम से खड़े हो गए (17)
यहां तक कि जब वह सब नमल घाटी फुरतीले वीर व्यक्तियों की घाटी में पहुंचे तो वीर व्यक्तियों की रानी ने कहा ऐ वीरो अपनी बारको भवनों में चले जाओ कहीं ऐसा न हो कि सुलेमान और उसकी सेना तुम्हे कुचल दे और तुम्हे सूचना भी न हो (18)

ہواور اللہ جو تمام عالم کا رب ہے پاک ہے (۸)
اے موسیٰ سن میں ہی اللہ غالب اور دانا ہوں (۹)
اور اپنی لاٹھی ڈال دو جب اس کو دیکھا تو وہ سانپ کی طرح بل کھا رہی ہے گویا وہ سانپ ہے تو پیٹھ پھیر کر بھاگے اور پیچھے مڑ کر نہ دیکھا (حکم ہوا کہ) موسیٰ ڈرومت ہمارے پاس رسول ڈرا نہیں کرتے (۱۰) [۵۳:۱۱،۱۲]
یقیناً اس کو بھی ڈر نہیں ہے جس نے ظلم کرنے کے بعد توبہ کر کے نیکی میں بدل لیا تو میں بخشنے والا مہربان ہوں (۱۱)
اور اپنا ہاتھ گریبان میں ڈال بے عیب سفید نکلے گا (یہ دونوں نشانیاں) نو نشانیوں میں سے ہیں ان کو لے کر فرعون اور اس کی قوم کے پاس جاؤ کہ وہ بدکردار لوگ ہیں (۱۲)
پس جب ان کے پاس آنکھیں کھول دینے والی نشانیاں پہنچیں تو وہ کہنے لگے یہ تو کھلا جادو ہے (۱۳)
انہوں نے انکار کر دیا حالانکہ ان کے دل یقین کر چکے تھے صرف ظلم اور تکبر کی بنا پر پس دیکھ لو کہ فساد کرنے والوں کا انجام کیسا ہوا (۱۴)
یہ حقیقت ہے کہ ہم نے داؤد اور سلیمان دونوں کو علم بخشا تھا۔ دونوں نے کہا شکر ہے اس اللہ کا جس نے ہمیں اپنے بہت سے مومن بندوں پر فضیلت بخشی (۱۵)
اور داؤد کے وارث سلیمان ہوئے اور کہنے لگے کہ لوگو! ہمیں (اللہ کی طرف سے) جانوروں کے صفات بتائے گئے ہیں اور پرواز کا حقیقی علم بھی اور ہر چیز عنایت کی گئی ہے بے شک یہ اس کا کھلا فضل ہے (۱۶)
ایک روز سلیمان کے (معائنہ کے) لئے جنوں انسانوں اور پرندوں کے لشکر جمع کئے گئے اور (مختلف قسم کے قومی دستے) اپنی اپنی صفوں میں ترتیب وار کھڑے ہو گئے (۱۷)
یہاں تک کہ جب وہ سب وادی نمل (پھرتیلے بہادر آدمیوں کی وادی) میں پہنچے تو بہادر آدمیوں کی ملکہ نے کہا اے بہادرو اپنی بارکوں (مسکن) میں چلے جاؤ کہیں ایسا نہ ہو کہ سلیمان اور اس کا لشکر تمہیں کچل دے اور انہیں خبر بھی نہ ہو (۱۸)

नोट- घाटी नमल से तात्पर्य कोई मुख्य घाटी भी हो सकती है जो इस नाम से प्रसिद्ध होइस सत्य से सम्भावतः इन्कार का स्थान नही है घाटी नमल मुख्य वादी थी जिसमें बड़े वीर व्यक्ति रहते थे जिनको नमल के नाम से जाना जाता था जो बड़े वीर फुरतीले इन्सान थे चीटियों की भांति फुरतीले-उत्साही वीर, उस समय उन पर शासक एक स्त्री थी जिसको स्त्रीलिंग होने की दृष्टि से नमलतुन कहा लिखा गया है उसने युद्ध से बचने के लिए अपनी सेना से कहा था कि अपने बेरको में चले जाओ, कहीं ऐसा न हो कि तुम अपनी शक्ती और वीरता के उन्माद में सुलेमान की सेना से भिड़ जाओ और कुचले जाओ क्योंकि वह ईश्वर के रसूल है और उनकी सेना भी अधिक और शक्तिशाली है यद्यपि तुम

نوٹ:۔ وادی نمل سے مراد کوئی خاص وادی بھی ہو سکتی ہے جو اس نام سے معروف ہو۔ اس حقیقت سے غالباً انکار کی گنجائش نہیں۔ وادی نمل خاص وادی تھی جس میں بڑے بہادر انسان رہتے تھے جن کو نمل کے نام سے جانا جاتا تھا۔ جو بہادر پھرتیلے انسان تھے۔ چیونٹیوں کی طرح پھرتیلے حوصلا مند بہادر۔ اس وقت ان پر حکمراں ایک عورت تھی جس کو مؤنث کے اعتبار سے نملۃ کہا لکھا گیا ہے۔ اس نے جنگ سے بچنے کے لئے اپنے لشکر سے کہا تھا کہ اپنے بیرکوں میں چلے جاؤ۔ کہیں ایسا نہ ہو کہ تم اپنی طاقت اور بہادری کے نشے میں سلیمان کی فوج سے بھڑ جاؤ اور کچلے جاؤ کیونکہ وہ اللہ کے رسول ہیں اور ان کی فوج بھی زیادہ اور

एक वीर जाति हो, परन्तु एक ईशदूत की सेना से सामना सम्भव नही,

और तुम अनजाने में उनके अग्रगामी दल से युद्ध करने लगे और वह अग्रगामी टुकड़ी तुमको कुचल दे और सुलेमान को सूचना भी बाद में हो परन्तु सुलेमान निकट ही उसकी बाते सुन रहे थे सुनकर हंसने लगे,

طاقتور ہے حالانکہ تم ایک بہادر قوم ہو مگر ایک رسول کی فوج سے مقابلہ ممکن نہیں۔

اور تم ان جانے میں ان کے ہراول دستے سے لڑنے لگو اور وہ ہراول دستہ ہی تم کو کچل دے اور سلیمان کو خبر بھی بعد میں ہو لیکن سلیمان پاس میں ہی اس کی باتیں سن رہے تھے سن کر ہنسنے لگے۔

सुलेमान उसकी बात पर मुस्कुराते हुए हंस पड़ा और बोला ऐ मेरे रब मुझे वश में रख मैं घमण्डी न हो जाऊं और मैं तेरे उस उपकार का धन्यवाद करता रहूं जो तूने मुझ पर और मेरे पूर्वजो पर किया है, और ऐसा सत्कर्म करूं जो तुझे पसन्द आए और अपनी अनुकम्पा से मुझे अपने सदाचारी भक्तो में प्रविष्ट कर (19)

سلیمان اس کی بات پر مسکراتے ہوئے ہنس پڑا اور بولا اے میرے رب مجھے قابو میں رکھ میں مغرور نہ ہو جاؤں اور میں تیرے اس احسان کا شکر ادا کرتا رہوں۔ جو تو نے مجھ پر اور میرے والدین پر کیا ہے۔ اور ایسا عمل صالح کروں جو تجھے پسند آئے اور اپنی رحمت سے مجھے اپنے صالح بندوں میں داخل کر (۱۹)

नोट- आयत 18 में नमल का अनुवाद चींयूटी न लिखते हुए आदमी लिखा है इस अनुवाद की पुष्टि आयत 19 ने कर दी है अर्थात सुलेमान ने उसकी बात सुनी और हंस पड़े अतः वह नमल जाति वीर व्यक्ति थे जब ही तो बोलते थे और समझने योग्य बोलते थे वैसे नमल का अर्थ वीर फुर्तीलो के साथ चींयूटी भी है,

نوٹ:۔ آیت ۱۸/ میں نمل کا ترجمہ چیونٹی نہ لکھتے ہوئے آدمی لکھا ہے۔ اس ترجمہ کی تصدیق آیت ۱۹/ نے کر دی ہے یعنی سلیمان نے اس کی بات سنی اور ہنس پڑے۔ اس لئے وہ نمل قوم بہادر انسان تھے۔ جب ہی تو بولتی تھی اور قابل فہم بولتی تھی۔ ویسے نمل کا مطلب بہادر پھرتیلے کے ساتھ چیونٹی بھی ہے۔

और जब उसने वैमानिकों उड़ने वालो का अवलोकन किया तो कहने लगे क्या कारण है कि हुद हुद दिखाई नही देता क्या कही अनुपस्थित हो गया है? (20)

اور جب اس نے ہوا بازوں اڑنے والوں کا جائزہ لیا تو کہنے لگے کیا سبب ہے کہ ہد ہد نظر نہیں آتا کیا کہیں غائب ہو گیا ہے؟ (۲۰)

इस दोष पर मैं उसे कठोर दण्ड दूंगा या वध कर दूंगा या मेरे सामने कोई प्रमाण प्रस्तुत करे (अनुपस्थिति का) (21)

अभी थोड़ी ही देर हुई थी कि हुद हुद उपस्थित हुआ और कहने लगा मुझे एक ऐसी बात ज्ञात हुई है जिसकी आपको सूचना नही मैं नगर सबा से आपके पास एक सत्य सूचना लेकर आया हूं (22)

मैंने एक स्त्री देखी है जो वहां के लोगों पर राज्य करती है और उसको आवश्यक्ता की सामग्री उपलब्ध है और उसका सिंहासन बड़ा है (23)

اس قصور پر میں اسے سخت سزا دوں گا یا ذبح کر ڈالوں گا یا میرے سامنے کوئی دلیل پیش کرے (غیر حاضری کی) (۲۱)

ابھی تھوڑی ہی دیر ہوئی تھی کہ ہد ہد آموجود ہوا اور کہنے لگا مجھے ایک ایسی بات معلوم ہوئی ہے جس کی آپ کو خبر نہیں میں شہر سبا سے آپ کے پاس ایک یقینی خبر لے کر آیا ہوں (۲۲)

میں نے ایک عورت دیکھی ہے جو وہاں کے لوگوں پر حکمرانی کرتی ہے اور اس کو ضرورت کا ساز وسامان میسر ہے اور اس کا تخت بڑا ہے (۲۳)

मैंने देखा कि वह और उसकी जाति ईश्वर को छोड़ कर सूर्य को सजदा कर रही है, और शैतान ने उनके बुरे कर्म उनके लिए अच्छे बना दिए है, और उनको शैतान ने सीधे मार्ग पर आने से रोक रखा है अतः वह सीधे मार्ग पर नही आ रहे है (24)

میں نے دیکھا کہ وہ اور اس کی قوم اللہ کو چھوڑ کر سورج کو سجدہ کر رہی ہے اور شیطان نے ان کے اعمال ان کے لئے اچھے بنا دیئے ہیں اور ان کو شیطان نے سیدھے راستہ پر آنے سے روک رکھا ہے اس لئے وہ سیدھے رستے پر نہیں آ رہے ہیں (۲۴)

और (नही समझते कि उस) ईश्वर के आगे क्यों न सजदा करें जो आकाशों और पृथ्वी की छुपी हुई वस्तु को निकालता है, और जो कुछ तुम छुपाते हो और प्रकट करते हो उन सब को जानता है (25)

वही ईश्वर है कौन कहता है कि ईश्वर नही है तो सुनो निःसंदेह वह ईश्वर है वह बड़े सिंहासन का स्वामी है (26)

اور (نہیں سمجھتے کہ اس) اللہ کے آگے کیوں سجدہ نہ کریں جو آسمانوں اور زمین کی چھپی ہوئی چیزوں کو نکالتا ہے اور جو کچھ تم چھپاتے ہو اور ظاہر کرتے ہو ان سب کو جانتا ہے (۲۵)

وہی اللہ ہے (کون کہتا ہے کہ) اللہ نہیں ہے سنو یقیناً وہ اللہ ہے وہ عرش عظیم کا مالک ہے (۲۶)

यह सुनकर सुलेमान ने कहा अच्छा हम देखेंगे तूने सच कहा है या तू झूठा है (27)

(یہ سن کر سلیمان نے کہا اچھا) ہم دیکھیں گے تو نے سچ کہا ہے یا تو جھوٹا ہے (۲۷)

यह मेरा पत्र लेजा और इसे उनकी ओर डाल दे अर्थात दे दे कि उनसे अलग हट कर देख कि क्या वह अपने मत से लोटने का निश्चय करते हैं अर्थात क्या उत्तर देते है (28)

یہ میرا خط لے جا اور اسے ان کی طرف ڈال دے یعنی دے دے پھر ان سے الگ ہٹ کر دیکھ کہ کیا وہ اپنے عقیدے سے لوٹتے ہیں یعنی کیا جواب دیتے ہیں (۲۸)

(हुद हुद ने पत्र रानी तक पहुचा दिया) पत्र को

(ہد ہد نے وہ خط ملکہ تک پہنچا دیا) خط کو دیکھ کر ملکہ نے کہا

देख कर रानी ने कहा कि सभा वालो! मेरी ओर एक आदरणीय पत्र प्रेषित किया गया है (29)

کہ درباروالو! میری طرف ایک قابل احترام خط بھیجا گیا ہے(۲۹)

वह (मेरे नाम) सुलेमान की ओर से है और (जिसका विषय यह है) आरम्भ ईश्वर के नाम से जो बड़ा कृपालु और अत्यन्त दया वाला है (30)

وہ (میرے نام) سلیمان کی طرف سے ہے اور (جس کا مضمون یہ ہے) ابتدا اللہ کے نام سے جو بڑا مہربان نہایت رحم والا ہے(۳۰)

(इसके बाद लिखा है) कि तुम मेरे आदेश का विरोध न करो और ईश्वर का शासन स्वीकार करके मेरी सेवा में उपस्थिति होजा व आज्ञाकारी होकर पृथ्वी में विकार न करो (31)

(اس کے بعد لکھا ہے) کہ تم میرے حکم کی خلاف ورزی نہ کرو اور اللہ کی فرمانبروائی قبول کرکے میری خدمت میں حاضر ہو جاؤ فرمانبردار ہوکر زمین میں فساد نہ کرو(۳۱)

(वह पत्र सुना कर) कहने लगी कि ऐ राज्य सभा वालो मेरे इस प्रसंग में मुझे परामर्श दो मैं किसी बात का अन्तिम निर्णय नही करती जब तक कि तुम मेरे पास उपस्थित न हो (32)

(وہ خط سنا کر) کہنے لگی کہ اے اہل دربار میرے اس معاملے میں مجھے مشورہ دو میں کسی بات کا قطعی فیصلہ نہیں کرتی جب تک کہ تم میرے پاس حاضر نہ ہو(۳۲)

वह बोले कि (भय की कोई बात नही) हम बड़े लड़ाका और बड़े शक्तिशाली हैं आगे आपको अधिकार है (परन्तु) निर्णय करने से पहले अच्छी प्रकार विचार कर लीजिएगा (33)

وہ بولے کہ (ڈرنے کی کوئی بات نہیں) ہم بڑے جنگ جو اور بڑے طاقتور ہیں آگے آپ کو اختیار ہے (لیکن) فیصلہ کرنے سے پہلے اچھی طرح غور کر لیجئے گا(۳۳)

उसने कहा कि राजा जब किसी नगर में प्रविष्ट होते हैं तो उसको नष्ट कर देते हैं और वहां के सम्मान वालों को अपमानित कर दिया करते है उसकी भांति वह भी करेंगे (34)

اس نے کہا کہ بادشاہ جب کسی شہر میں داخل ہوتے ہیں تو اس کو تباہ کردیتے ہیں اور وہاں کے عزت والوں کو ذلیل کردیا کرتے ہیں اسی طرح وہ بھی کریں گے(۳۴)

और मैं उनकी ओर कुछ उपहार भेजती हूं और देखती हूं कि पत्रवाहक क्या उत्तर लाते हैं (35)

اور میں ان کی طرف کچھ تحفہ بھیجتی ہوں اور دیکھتی ہوں کہ قاصد کیا جواب لاتے ہیں(۳۵)

जब पत्रवाहक सुलेमान के पास पहुंचा तो (सुलेमान ने) कहा क्या मुझे धन से सहायता देना चाहते हो जो कुछ ईश्वर ने मुझे दिया है वह इससे उत्तम है जो उन्हें दिया है सत्य यह है कि अपने उपहारों से तुम ही प्रसन्न रहो (36)

جب قاصد سلیمان کے پاس پہنچا تو (سلیمان نے) کہا کیا مجھے مال سے مدد دینا چاہتے ہو جو کچھ اللہ نے مجھے دیا ہے وہ اس سے بہتر ہے جو تمہیں دیا ہے حقیقت یہ ہے کہ اپنے تحفے سے تم ہی خوش رہو(۳۶)

अतः अपने भेजने वालों की ओर जाओ हम उन पर ऐसी सैनासे आक्रमण कर देंगे जिनका सामना करने की शक्ति न होगी, और उनको वहां से अपमानित करके निकाल देंगे तो वह हीन और अपमानित हो कर रह जाएंगे आक्रमण इसलिए होगा कि वह विकार कर रहें हैं (37)

لہٰذا اپنے بھیجنے والوں کی طرف جاؤ ہم ان پر ایسے لشکر سے حملہ کردیں گے جن کے مقابلہ کی ان میں طاقت نہ ہوگی۔ اور ان کو وہاں سے بےعزت کرکے نکال دیں گے تو وہ ذلیل وخوار ہوکر رہ جائیں گے حملہ اس لئے ہوگا کہ زمین میں فساد کر رہے ہیں(۳۷)

सुलेमान ने कहा ऐ राज्य सभा वालों इससे पहले कि वह लोग आज्ञाकारी होकर मेरे पास आएं तुमसे कौन रानी का सिंहासन मेरे पास ला सकता है? (38)

سلیمان نے کہا اے اہل دربار! اس سے پہلے کہ وہ لوگ فرمانبردار ہوکر میرے پاس آئیں تم میں سے کون ملکہ کا تخت میرے پاس لاسکتا ہے؟(۳۸)

जिन्नात में से एक शक्तिशाली जिन्न ने कहा इससे पहले कि आप अपने स्थान से उठें मैं उसे आपकी सेवा में उपस्थित कर दूंगा मैं इस की शक्ति रखता हूं और विश्वासनीय भी हूं (39)

جنات میں سے ایک قوی ہیکل جن نے کہا اس سے پہلے کہ آپ اپنی جگہ سے اٹھیں میں اسے آپ کی خدمت میں حاضر کردوں گا میں اس کی طاقت رکھتا ہوں اور امانتدار بھی ہوں(۳۹)

एक और जिसके पास पुस्तक का ज्ञान था (सम्भवतः वह फरिशता था जो रसूलों के पास आते जाते थे और उस समय आया होगा) बोला मैं आपकी आंख झपकने से पहले उसे आपकी सेवा में उपस्थित किए देता हूं उसका यह कहना था कि सिंहासन उपस्थित हो गया, जब सुलेमान ने वह

ایک اور جس کے پاس کتاب کا علم تھا (غالباً وہ فرشتہ تھا جو رسولوں کے پاس آتے جاتے تھے اور اس وقت آیا ہوگا) بولا میں آپ کی آنکھ جھپکنے سے پہلے اسے آپ کی خدمت میں حاضر کئے دیتا ہوں اس کا یہ کہنا تھا کہ تخت موجود ہوگیا جب سلیمان نے وہ تخت اپنے پاس رکھا دیکھا تو بول اٹھا یہ

सिंहासन अपने पास रखा देखा तो बोल उठा यह मेरे रब की कृपा है ताकि मेरी परिक्षा करे कि मैं आज्ञाकारी करता हूं या अवज्ञा और जो आज्ञाकारी करता है तो अपने ही लाभ के लिए आज्ञाकारी करता है और जो अवज्ञा करता है तो मेरा रब निश्चिन्त और दया करने वाला है (40)

میرے رب کا فضل ہے تا کہ مجھے آزمائے کہ میں فرمانبرداری کرتا ہوں یا نافرمانی۔اور جوفرمانبرداری کرتا ہے تو اپنے ہی فائدے کے لئے فرمانبرداری کرتا ہےاور جونافرمانی کرتا ہے تو میرا رب بے پروا کرم کرنے والا ہے (۴۰)

नोट- वह ज्ञान जो उसके पास था सुलेमान की सैना में और किसी को न था या सुलेमान ने पुस्तक का ज्ञान अर्थात अपने धर्म शास्त्र का ज्ञान किसी को नही दिया था? ऐसा नही है सुलमान पर जो पुस्तक का ज्ञान था वह उनकी पूरी उम्मत और सैना को बताया जा चुका था अतः पहले जिन्न को भी उस पुस्तक का ज्ञान था जो सुलेमान अ० को मिली थी, परन्तु इसके अतिरिक्त जो मुख्य रूप से कहा गया है कि उसको पुस्तकीय ज्ञान था तो वह कोई फरिश्ता था और हो सकता है कि जिबराईल हो उस समय वही लेकर आए हों और महामना सुलेमान की सहायता करनी हो.

نوٹ:۔وہ علم جواس کے پاس تھا سلیمان کے لشکر میں اور کسی کو نہ تھا یا سلیمان نے کتاب کا علم یعنی اپنی شریعت کا علم کسی کو نہیں دیا تھا؟ ایسا نہیں ہے سلیمان پر جو کتابی علم تھا وہ ان کی پوری امت اور لشکر کو بتایا جا چکا تھا۔اس لئے پہلے جن کو بھی اس کتاب کا علم تھا۔جو سلیمانؑ کو ملی تھی۔مگر اس کے باوجود جو خاص طور سے کہا گیا ہے کہ اس کو کتابی علم تھا تو وہ کوئی فرشتہ تھا اور ہو سکتا ہے کہ جبرئیل ہوں اس وقت وحی لے کر آئے ہوں اور حضرت سلیمان کی مدد کرنی ہو.

सुलेमान ने आदेश दिया कि (रानी की परिक्षा के लिए) उसके सिंहासन की आकृति बदल दो देखें वह बात की जड़ तक पहुंचती है या उन लोगों में है जो वास्तिविकता तक नही पहुंचते (41)

سلیمان نے حکم دیا کہ (ملکہ کی آزمائش کے لئے) اس کے تخت کی صورت بدل دو دیکھیں وہ بات کی تہہ تک پہنچتی ہے یا ان لوگوں میں ہے جو حقیقت تک نہیں پہنچتے (۴۱)

फिर जब वह आई तो उससे ज्ञात किया गया क्या आपका सिंहासन भी इसी प्रकार का है? उसने कहा (अरे) यह तो मानों तदानुरूप वही है और हम तो पहले ही जान चुके थे और हमने आपका अनुकरण स्वीकार कर लिया (42)

پھر جب وہ آئی تو اس سے پوچھا گیا کیا آپ کا تخت بھی اسی طرح کا ہے؟ اس نے کہا (ارے) یہ تو گویا ہو بہو وہی ہے اور ہم تو پہلے ہی جان چکے تھے اور ہم نے آپ کی اطاعت قبول کر لی (۴۲)

और उसको ईश्वर के अतिरिक्त की पूजा ने रोक रखा था और निःसंदेह वह नास्तिक जाति में की थी (43)

اور اس کو غیر اللہ کی عبادت نے روک رکھا تھا اور بے شک وہ کافر قوم میں کی تھی (۴۳)

{27:44} उससे कहा गया कि भवन में चली चलो, पस उसने उसको देख कर गहरा लहरों वाला पानी समझा और उसने रहस्य उद्घाटन प्रकट किया अर्थात उस ने जाना कि प्रसंग विषय बड़ा कठिन और विचित्र है कैसे पार हुआ जाएगा उससे कहा गया कि यह तो शीशे से मंढा हुआ भवन है, तब वह कहने लगी मेरे ईश्वर! मैंने अपने ऊपर बड़ा अत्याचार किया है अब मैं सुलेमान के साथ ईश्वर विश्वपालक की आज्ञाकारी बनती हूं (44)

اس سے کہا گیا کہ محل میں چلی چلو پس اس نے اس کو دیکھ کر گہرا لہروں والا پانی سمجھا اور اس نے انکشاف ظاہر کیا یعنی اس نے جانا کہ معاملہ بڑا سخت اور عجیب ہے کیسے پار ہوا جائے گا تب اس سے کہا گیا کہ یہ تو شیشے سے منڈھی ہوئی عمارت ہے تب کہنے لگی میرے پروردگار میں نے اپنے اوپر ظلم کیا ہے اب میں سلیمان کے ساتھ اللہ رب العالمین کی فرمانبردار بنتی ہوں (۴۴)

और हमने समूद की ओर उनके भाई सालेह को भेजा कि ईश्वर की पूजा करो तो वह दो पक्ष होकर आपस में झगड़ने लगे (45)

اور ہم نے ثمود کی طرف ان کے بھائی صالح کو بھیجا کہ اللہ کی عبادت کرو تو وہ دو فریق ہو کر آپس میں جھگڑنے لگے (۴۵)

(सालेह ने कहा) ऐ मेरी जाति के लोगों! भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचा रहे हो? ईश्वर से क्षमा क्यों नही मांगते ताकि तुम पर दया की जाए (46)

(صالح نے کہا) اے میری قوم کے لوگو! بھلائی سے پہلے بُرائی کے لئے کیوں جلدی مچا رہے ہو؟ اللہ سے بخشش کیوں نہیں مانگتے تا کہ تم پر رحم کیا جائے (۴۶)

उन लोगों ने कहा (ऐ सालेह) हमने तुझको और तेरे साथियो को अपने लिए बड़ा ही अनिष्ट पाया है सालेह ने उत्तर दिया तुम्हारा अनिष्ट (कुकर्मों के कारण से) ईश्वर की ओर से है, अपितु तुम ऐसे लोग हो कि तुम्हारी परिक्षा हो रही है (47) {7:131, 36:18-19}

ان لوگوں نے کہا (اے صالح) ہم نے تجھ کو اور تیرے ساتھیوں کو اپنے لئے بڑا ہی منحوس پایا ہے صالح نے جواب دیا تمہاری نحوست (بداعمالیوں کی وجہ سے) اللہ کی طرف سے ہے بلکہ تم ایسے لوگ ہو کہ تمہاری آزمائش ہو رہی ہے (۴۷) [۷:۱۳۱، ۳۶:۱۸-۱۹]

और उस नगर में (काफिरो के) नौ नेता थे जो देश में अशान्ति फैलाते थे और किसी प्रकार का सुधार न होने देते थे (48)

اور اُس شہر میں (کافروں کے) نو سردار تھے جو ملک میں فساد پھیلاتے تھے اور کسی طرح اصلاح نہ ہونے دیتے تھے (۴۸)

(उन्होंने सालेह के वध करने का षड़यंत्र किया) और

(انہوں نے صالح کے قتل کرنے کی سازش کی) اور کہا اللہ

कहा ईश्वर की शपथ खा कर प्रतिज्ञा करो कि हम आज रात को सालेह और उसके घर वालों को वध कर देंगे फिर उसके वारिसों से कह देंगे कि हम तो उसके और उसके घर वालों के मारे जाने के समय उपस्थित ही न थे, और हम बिलकुल सच कहते है (49)
और उन्होंने एक उपाए किया और हमने भी एक उपाए किया और उनको कुछ सूचना न हुई (50)
तो देखो उनके उपाए का परिणाम क्या हुआ हमने उनको और उनकी जाति को वध कर डाला (51)
अब उन घरो को देखो जो उनकी अवज्ञा के कारण खाली और विरान पड़े है, इस घटना में समझ दार लोगों के लिए शिक्षा का एक चिन्ह है (52)
परन्तु जो लोग विश्वास लाए थे और (ईश्वर की अवज्ञा से) डरते थे उन्हें हमने बचा लिया (53)
(ऐ रसूल! उनको) लूत की घटना याद दिलाओ जब उन्होंने अपनी जाति से कहा था यह क्या है कि तुम स्पष्ट तय निर्लज्जता के कार्य करते हो? और तुम देखते हो (54)
यह क्या बात है कि तुम स्त्रीयों को छोड़कर पुरुषों के पास वासना के लिए आते हो सत्य यह है कि तुम मुर्ख लोग हो (55) {26:165}
जाति का उत्तर इस इस कहने के अतिरिक्त और कुछ न था कि लूत और लूत के परिवार को अपने नगर से निकाल दो वह तो बड़े पवित्र बन रहे है (56)
तो हमने लूत को और उनके घर वालो को मुक्ति दी परन्तु उनकी पत्नी कि उसके विषय में हमारे नियम ने निश्चित कर रखा था (कि वह अपने पापो के कारण) पीछे रहने वालो में होगी (57)
(और उनके पापो के कारण से) हमारे नियम ने लूत की जाति पर पत्थरो की वर्षा बरसाई और वह वर्षा बहुत ही बुरी थी जो उन लोगो पर बरसाई गई जो (कष्ट) से डराए जा चुके थे (58)
ऐ मुहम्मद स0! कहो सारी प्रशंसा ईश्वर के लिए है और शान्ति उसके उन भक्तो के लिए जिन्हें उसने सम्मानित बनाया (और कष्ट उनके लिए है जिन्होंने कुफ्र का मार्ग ग्रहण किया उनसे पूछो) ईश्वर अच्छा है या वह देवता जिन्हे वह लोग उसका साझी बनाते है (59)

पारा अम्मन खलाका (20)

भला किसने आकाशो और पृथ्वी को रचा और (किसने) तुम्हारे लिए आकाश से पानी बरसाया (हमने) फिर हमने उससे हरित उपवन उगाए तुम्हारा काम तो न था कि तुम उनके वृक्षों को उगाते तो क्या ईश्वर के साथ कोई और भी पूज्य है? कदापि नही अपितु वह लोग मार्ग से अलग हो रहे है भटक रहे है (60)
अच्छा बताओ वह कौन है जिसने पृथ्वी को (मानव और जानवरो के) ठहरने का स्थान बनाया और उसमें नहरे बनाई और उसके लिए पर्वत बनाए और

کی قسم کھا کر عہد کرو کہ ہم آج رات کو صالح اور اس کے گھر والوں کو قتل کر دیں گے پھر اس کے وارثوں سے کہدیں گے کہ ہم تو اس کے اور اس کے گھر والوں کے مارے جانے کے وقت موجود ہی نہ تھے۔اور ہم بالکل سچ کہتے ہیں (۴۹)
اور انہوں نے ایک تدبیر کی اور ہم نے بھی ایک تدبیر کی اور ان کو کچھ خبر نہ ہوئی (۵۰)
تو دیکھو ان کی تدبیر کا انجام کیا ہوا ہم نے اُن کو اور اُن کی قوم کو ہلاک کر ڈالا (۵۱)
اب ان کے گھروں کو دیکھو جو ان کی نافرمانی کی وجہ سے خالی اور ویران پڑے ہیں اس واقعہ میں سمجھ دار لوگوں کے لئے عبرت کی ایک نشانی ہے (۵۲)
لیکن جو لوگ ایمان لائے تھے اور (اللہ کی نافرمانی سے) ڈرتے تھے انہیں ہم نے بچا لیا (۵۳)
(اے رسول! ان کو) لوط کا واقعہ یاد دلاؤ جب انہوں نے اپنی قوم سے کہا تھا یہ کیا ہے کہ تم کھلے بندوں بے حیائی کے کام کرتے ہو؟ اور تم دیکھتے ہو (۵۴)
یہ کیا بات ہے کہ تم عورتوں کو چھوڑ کر مردوں کے پاس شہوت کے لئے آتے ہو حقیقت یہ ہے کہ تم جاہل لوگ ہو (۵۵) [۲۶:۱۶۵]
قوم کا جواب اس کہنے کے علاوہ اور کچھ نہ تھا کہ لوط اور لوط کے خاندان کو اپنے شہر سے نکال دو وہ تو بڑے پاک بن رہے ہیں (۵۶)
تو ہم نے لوط کو اور اُن کے گھر والوں کو نجات دی مگر ان کی بیوی کہ اس کی نسبت ہمارے قانون نے مقرر کر رکھا تھا (کہ وہ اپنے گناہوں کی وجہ سے) پیچھے رہنے والوں میں ہوگی (۵۷)
(اور ان کے گناہوں کی وجہ سے) ہمارے قانون نے لوط کی قوم پر پتھروں کی بارش برسائی اور وہ بارش بہت ہی بُری تھی جو ان لوگوں پر برسائی گئی جو (عذاب) سے ڈرائے جا چکے تھے (۵۸)
اے محمدؐ! کہو ساری تعریف اللہ کے لئے ہے اور سلامتی اس کے ان بندوں کے لئے جنہیں اس نے برگزیدہ بنایا (اور ہلاکت ان کے لئے ہے جنہوں نے کفر کی راہ اختیار کی ان سے پوچھو) اللہ بہتر ہے یا وہ معبود جنہیں وہ لوگ اس کا شریک بناتے ہیں (۵۹)

پارہ امن خلق (۲۰)

بھلا کس نے آسمانوں اور زمین کو پیدا کیا اور (کس نے) تمہارے لئے آسمان سے پانی برسایا (ہم نے) پھر ہم نے اس سے سرسبز باغ اُگائے تمہارا کام تو نہ تھا کہ تم ان کے درختوں کو اُگاتے تو کیا اللہ کے ساتھ کوئی اور بھی معبود ہے؟ ہرگز نہیں بلکہ وہ لوگ رستہ سے الگ ہو رہے ہیں بھٹک رہے ہیں (۶۰)
اچھا بتاؤ وہ کون ہے جس نے زمین کو (انسانوں اور جانداروں کے) ٹھہرنے کی جگہ بنایا اور اس میں نہریں

किसने दो दरियाओ के बीच ओट बनाई (यह सब कुछ ईश्वर ने बनाया) तो क्या ईश्वर के साथ कोई और पूज्य भी है? (कदापि नही) अपितु उनमें अधिक ज्ञान नही रखते (61) {50:7;55:20;25:53}

कौन है जो व्याकुल आदमी की प्रार्थना सुनता है जबकि वह उसे पुकारे और कौन है जो उसकी पीड़ा को दूर करता है? और कौन है जो तुम्हे पृथ्वी का उत्तराधिकारी बनाता है? क्या ईश्वर के साथ कोई और भी यह कर्म कर सकता है? परन्तु तुम लोग कम ही सोचते हो (62)

नोट- इस आयत में ईश्वर बता रहा है कि एक समुदाय को हटाकर दूसरे समुदाय को उसका उत्तराधिकारी बनाता है अर्थ यह है कि उस संसार में यह जो कुछ हो रहा है जो देखते है एक जाति मिटती है और दूसरी जाति उसका स्थान लेती है तो यह अचानक घटनाएं नही है, और न ही इस परिवर्तन करने पर ईश्वर के अतिरिक्त कोई दूसरा शक्तिमान है, यद्यपि जब तक समुदाय ईश्वर का आज्ञाकार रहता है वह शासक रहता है और जब वह अवज्ञाकारी हो जाता है तो उसको हटा दिया जाता, और किसी दूसरे आज्ञाकारी समुदाय को उसके स्थान उसका उत्तराधिकारी खलीफा बनाया जाता है फिर उसकी परिक्षा आरम्भ होती है कि वह कैसे कर्म करता है,

बस यही दौर चलता रहेगा समुदाय चिन्ह मिटते रहेंगे और बनते रहेंगे, वैसे भी और उससे अच्छे भी और कुछ को याद रखा जाएगा जिसको इतिहास ने सुरक्षित कर दिया है और कुछ ऐसे मिटे कि उनका कोई नाम तक नही जानता कि कौन थे, बुद्धि से भुला दिए गए है यही नासिख व मनसूख (निरस्क व निरस्त) है न कि कुरआन की आयते,

यदि कुरआन की आयतो में नासिख व मनसूख माना जाए या अवतर्ण महिमा को माना जाए तो फिर यह कुरआन मखलूक रचना में शूमार होगा जो एक अनुचित बात है कुरआन रचना नही है जिस पर अब्बासी राज्य में काफी विवेचनाएं हो चुकी है सम्भवतः जो लोग कुरआन के रचना होने को मानने लगे थे उन्होने इस बात को मान कर ही रचना माना था एक और बात है जिसने रचना के मत को जीवित किया था वह यह कि महामना ईसा को कलमितुललाह और जीवित मान लेना है {2:106}

आयत के पहले भाग में व्यक्तिगत विषय है कि जब व्यक्ति व्याकुल होकर उसको पुकारता है तो वह मानव की सुनता है परन्तु फिर भूल जाता है मानव भूल जाने वाला है

भला कौन तुमको थल और जल के अन्धेरों में मार्ग दर्शन करता है और जो अपनी करूणा (शक्ति) से पहले ही शुभ सूचना देने वाली वायू चलाता है (यह सब ईश्वर करता है) तो क्या ईश्वर के साथ कोई और पूज्य है? (कदापि नही) वह लोग जो अनेकेश्वरवाद करते है ईश्वर उससे श्रेष्ठ है (63)

क्या वह जो रचना को पहली बार उत्पन्न करता है फिर उसे लोटाएगा और तुम्हे आकाश और पृथ्वी से जीविका दे रहा है क्या ईश्वर के साथ कोई और भी पूज्य है? कह दिजिए कि यदि सच्चे हो तो अपना तर्क लाओ (64)

कह दो जो कि जो लोग पृथ्वी और आकाश में है परोक्ष नही जानते परन्तु ईश्वर जानता है और न

بنائیں اوراس کے لئے پہاڑ بنائے اور کس نے دو دریاؤں کے بیچ اوٹ بنائی (یہ سب کچھ اللہ نے بنایا) تو کیا اللہ کے ساتھ کوئی اور معبود بھی ہے؟ (ہرگز نہیں) بلکہ ان میں اکثر علم نہیں رکھتے (۶۱) [۵۰:۷:۵۵:۲۰:۲۵:۵۳]

کون ہے جو بے قرار آدمی کی دعا سنتا ہے جب کہ وہ اسے پکارے اور کون ہے جو اس کی تکلیف کو دور کرتا ہے؟ اور کون ہے جو تمہیں زمین کا وارث بناتا ہے؟ کیا اللہ کے ساتھ کوئی اور بھی یہ کام کرسکتا ہے؟ مگر تم لوگ کم ہی سوچتے ہو (۶۲)

نوٹ:۔ اس آیت میں اللہ بتا رہا ہے کہ قوم کو ہٹا کر دوسری قوم کو اس کا جانشین بناتا ہے مطلب یہ ہے کہ اس دنیا میں یہ جو کچھ دیکھتے ہیں ایک قوم مٹتی ہے اور دوسری قوم اس کی جگہ لیتی ہے تو یہ اتفاقی واقعات نہیں ہیں اور نہ ہی اس ردوبدل کرنے پر اللہ کے علاوہ کوئی دوسرا قادر ہے حالانکہ جب تک قوم اللہ کی فرمانبردار رہتی ہے وہ حاکم رہتی ہے اور جب وہ نافرمان ہو جاتی ہے تو اس کو ہٹا دیا جاتا ہے اور کسی دوسری فرمانبردار قوم کو اس کی جگہ اس کا جانشین خلیفہ بنایا جاتا ہے پھر اس کا امتحان شروع ہوتا ہے کہ وہ کیسے کام کرتی ہے بس یہی دور چلتا رہے گا قومیں نشان مٹتے رہیں گے اور بنتے رہیں. ویسے بھی اور اس سے اچھے بھی اور کچھ کو یاد رکھا جائے گا جس کو تاریخ نے محفوظ کر دیا ہے اور کچھ ایسے مٹے کہ ان کا کوئی نام تک نہیں جانتا کہ کون تھے ذہنوں سے بھلا دئے گئے ہیں یہی ناسخ ومنسوخ ہے نہ کہ قرآن کی آیتیں.

اگر قرآن کی آیتوں میں ناسخ ومنسوخ مانا جائے یا شان نزول کو مانا جائے تو پھر یہ قرآن مخلوق میں شمار ہوگا جو ایک غلط بات ہے قرآن مخلوق نہیں ہے جس پر عباسی دور میں کافی بحثیں ہو چکی ہیں غالباً جو لوگ قرآن کے مخلوق ہونے کو ماننے لگے تھے انہوں نے اس بات کو مان کر ہی مخلوق مانا تھا ایک اور بات ہے جس نے مخلوق کے نظریہ کو زندہ کیا تھا وہ یہ کہ حضرت عیسیٰؑ کو کلمۃ اللہ اور زندہ مان لینا ہے (۲:۱۰۶)

آیت کے پہلے حصہ سے انفرادی معاملہ ہے کہ جب انسان بے قرار ہو کر اس کو پکارتا ہے تو وہ انسان کی سنتا ہے مگر پھر بھول جاتا ہے انسان بھول جانے والا ہے.

بھلا کون تم کو خشکی اور تری کی تاریکیوں میں راہ دکھاتا ہے اور جو اپنی رحمت (طاقت) سے پہلے ہی خوشخبری دینے والی ہوائیں چلاتا ہے (یہ سب اللہ کرتا ہے) تو کیا اللہ کے ساتھ کوئی اور معبود بھی ہے؟ (ہرگز نہیں) وہ لوگ جو شرک کرتے ہیں اللہ اس سے بلند ہے (۶۳)

کیا وہ جو مخلوق کی اوّل دفعہ پیدائش کرتا ہے پھر اسے لوٹائے گا اور جو تمہیں آسمان اور زمین سے روزیاں دے رہا ہے کیا اللہ کے ساتھ کوئی اور بھی معبود ہے؟ کہہ دیجئے کہ اگر سچے ہو تو اپنی دلیل لاؤ (۶۴)

کہہ دو کہ جو لوگ زمین اور آسمان میں ہیں غیب نہیں جانتے مگر اللہ جانتا ہے اور نہ یہ جانتے ہیں کہ کب (زندہ

वह जानते है कि कब (जीवित करके) उठाए जाएगें (65)
महाप्रलय के विषय में तो उनका ज्ञान न होने के बराबर है और वह लोग उसकी ओर से शंका में है अपितु वह जान बूझ कर अन्धे हो रहे है (66)
और जो लोग काफिर है कहते है कि जब हम और हमारे पूर्वज मिट्टी हो जाएगें तो क्या हम फिर (समाधियों से) निकाले जाएगें? (67)
ऐसे वचन तो हमसे और हमारे बाप दादाओं से पहले से होते चले आ रहे है (यह सम्भाव ही नही कि मिट्टी हो जाने के बाद कोई व्यक्ति पुनः जीवित हो जाए) यह तो केवल अगले लोगों की कहानियां है (68)
कह दो कि देश में चलो फिरो फिर देखो पापीयों का अन्त कैसा हुआ (69)
आप उनके विषय में शोक न करे और न उनके छल फरेब से दिल तंग होना (70)
और कहते है यदि सच्चे हो तो बताओ यह वचन कब पूरा होगा? (71)
(ऐ मुहम्मद स0) उनसे कह दो कि जिस कष्ट के लिए तुम जल्दी मचा रहे हो हो सकता है कि उसका एक अंश निकट ही आ लगा हो (72)
और तुम्हारा रब तो लोगो पर कृपा करने वाला है (इसलिए छूट देता है) परन्तु उनमें से अधिक आज्ञाकारी नही करेगें (73)
और जो बाते उनके वक्षो में गुप्त होती है और जो काम वह प्रकट करते है तुम्हारा रब उन सब को जानता है (74)
और आकाशो और पृथ्वी की कोई गुप्त वस्तु ऐसी नही है जो ईश्वर की स्पष्ट पुस्तक में लिखी न हो (75)
निःसंदेह यह कुरआन बनी इसराईल के सामने अधिक बाते जिनमें वह मत भेद करते है वर्णन कर देता है (76)
और निः संदेह कुरआन आस्तिको के लिए पथ प्रदर्शन और अनुकम्पा है (77)
आपका रब उनके बीच अपने आदेश से निर्णय कर देगा और वह प्रभुत्व शाली और ज्ञानी है (78)
और आप ईश्वर पर भरोसा रखो विश्वास करो आप स्पष्ट सत्य पर हो (79)
ऐ मुहम्मद स0! यदि नास्तिक आपकी बात नही सुनते तो कोई आश्चर्य नही वह मृतक है और आप मृतकों को अपनी बात नही सुना सकते ओर न बहरो को अपनी बात पहुंचा सकते हो जो पीठ फैर कर भागे जा रहे है (80) {30:52, 35:22}
और इसी प्रकार न अन्धो को गुमराही से निकाल कर मार्ग दिखा सकते हो आप तो उन्ही को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर विश्वास लाते है और आज्ञाकारी हो जाते है (81)
और जब उनके विषय में कथन (वचन) पूरा हो

کر کے) اٹھائے جائیں گے (۶۵)
آخرت کے بارے میں تو ان کا علم نہ ہونے کے برابر ہے اور وہ لوگ اس کی طرف سے شک میں ہیں بلکہ وہ جان بوجھ کر اندھے ہو رہے ہیں (۶۶)
اور جو لوگ کافر ہیں کہتے ہیں کہ جب ہم اور ہمارے باپ دادا مٹی ہو جائیں گے تو کیا ہم پھر (قبروں سے) نکالے جائیں گے؟ (۶۷)
ایسے وعدے تو ہم سے اور ہمارے باپ داداؤں سے پہلے سے ہوتے چلے آئے ہیں (یہ ممکن ہی نہیں کہ مٹی ہو جانے کے بعد کوئی شخص دوبارہ زندہ ہو جائے) یہ تو محض اگلے لوگوں کی کہانیاں ہیں (۶۸)
کہدو کہ ملک میں چلو پھرو پھر دیکھو گنہگاروں کا انجام کیا ہوا (۶۹)
آپ ان کے بارے میں غم نہ کریں اور نہ ان کے داؤں گھات سے دل تنگ ہونا (۷۰)
اور کہتے ہیں اگر سچے ہو تو بتاؤ یہ وعدہ کب پورا ہوگا؟ (۷۱)
(اے محمدؐ) ان سے کہدو جس عذاب کے لئے تم جلدی مچا رہے ہو ہو سکتا ہے کہ اس کا ایک حصہ قریب ہی آ لگا ہو (۷۲)
اور تمہارا رب تو لوگوں پر فضل کرنے والا ہے (اس لئے چھوٹ دیتا ہے) لیکن ان میں کے اکثر فرمانبرداری نہیں کریں گے (۷۳)
اور جو باتیں ان کے سینوں میں پوشیدہ ہوتی ہیں اور جو کام وہ ظاہر کرتے ہیں تمہارا رب ان سب کو جانتا ہے (۷۴)
اور آسمانوں اور زمین کی کوئی پوشیدہ چیز ایسی نہیں ہے جو اللہ کی واضح کتاب میں لکھی نہ ہو (۷۵)
یقیناً یہ قرآن بنی اسرائیل کے سامنے اکثر باتیں جن میں وہ اختلاف کرتے ہیں بیان کر دیتا ہے (۷۶)
اور بے شک قرآن مومنوں کے لئے ہدایت اور رحمت ہے (۷۷)
آپ کا رب اُن کے درمیان اپنے حکم سے فیصلہ کر دے گا اور وہ غالب اور علم والا ہے (۷۸)
اور آپ اللہ پر بھروسہ رکھو یقین کرو آپ صریح حق پر ہو (۷۹)
اے محمدؐ اگر منکرین حق تمہاری بات نہیں سنتے تو کوئی تعجب نہیں وہ مردے ہیں) اور آپ مردوں کو اپنی بات نہیں سنا سکتے اور نہ بہروں تک اپنی بات پہنچا سکتے ہو جو پیٹھ پھیر کر بھاگے جا رہے ہیں (۸۰) [۳۰:۵۲، ۳۵:۲۲]
اور اسی طرح نہ اندھوں کو گمراہی سے نکال کر رستہ دکھا سکتے ہو آپ تو انہی کو سنا سکتے ہو جو ہماری آیتوں پر ایمان لاتے ہیں اور فرمانبردار ہو جاتے ہیں (۸۱)
اور جب ان کے بارے میں قول (وعدہ) پورا ہو جائے گا

जाएगा (अर्थात महाप्रलय आज्ञाकारी) तो हम उनके लिए धरती से एक दाब्बाह निकालेंगे जो उनसे वर्णन कर देगा निःसंदेह लोग हमारी आयतों पर विश्वास नही लाते (82) {99:3, 17:13, 27:85; 27:85, 23:62, 7:7-8-9, 25:17से19, 45:29} नोट- (यह दाब्बाह कर्म पत्र भी हो सकता है ईश्वर को ज्ञान है)

और वह दिन होगा जब हर समुदाय में से उस दल को भी एकत्र करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाते थे फिर उनकी दल बन्दी की जाएगी (83)

जब सबके सब आ पहुंचेंगे तो ईश्वर कहेगा कि तुमने मेरी आयतों को अतिरिक्त इसके तुम उनको अपने ज्ञान के क्षेत्र में भी नहीं लाए थे क्यों झुठलाया और यह भी बताओ कि तुम क्या कुछ करते रहे (84)

और उनके अन्याय के कारण उनके लिए वचन (कष्ट) पूरा होकर रहेगा तो वह बोल भी न सकोगे (85) {27:82}

क्या उन्होंने इस बात में विचार नही किया कि हम ने रात को (इस लिए) बनाया है कि इसमें विश्राम करें और दिन को उज्जवल (बनाया है कि उसमें कार्य करें) निःसंदेह इसमें आस्तिकों के लिए चिन्ह हैं (86)

वह (कैसा भयावह) दिन होगा जब सूर फूंका जाएगा तो जो कुछ आकाशों में होंगे और जितने पृथ्वी में होंगे सब घबरा उठेंगे सिवाए उसके जिसे ईश्वर उस भय से बचाना चाहे और सब नम्रता के साथ उसके सामने उपस्थित होंगे (87)

और आप पर्वतों को देख कर विचार करते हो कि (अपने स्थान पर) खड़े हैं परन्तु वह (उस दिन) इस प्रकार उड़ते फिरेंगे जैसे बादल (वह) ईश्वर की कला है जिसने हर वस्तु को पुष्ट बनाया है, निःसंदेह वह तुम्हारे कर्मों से अवगत है (88)

जो व्यक्ति सत्कर्म लेकर आएगा वह उस से उत्तम पुरुस्कार पाएगा, ऐसे लोग उस दिन भयावह से सुरक्षित रहेंगे (89)

और जो बुराई लेकर आएंगे तो ऐसे लोग औंधे मुह नर्क में डाल दिए जाएंगे (उनसे कहा जाएगा) तुम को उन्ही कर्मों का तो बदला मिल रहा है जो तुम (दुनिया में) करते रहे हो (90)

मुझे केवल यही आदेश दिया गया है कि मैं इस नगर मक्का के रब की पूजा करूं जिसने इसे सम्मान मर्यादा वाला बनाया है जिसके अधिकार में हर वस्तु है और यह भी आदेश हुआ है कि उसी का आज्ञाकारी हूं (91)

और यह भी आदेश दिया गया है कि मैं कुरआन पढ़कर सुनाऊं (तो ऐ लोगो! अच्छी प्रकार सुन लो) जो सत्य मार्ग स्वीकार करेगा वह अपने लाभ के लिए स्वीकार करेगा और जो भ्रष्ट होगा तो उससे कहदो मैं तो केवल उपदेश करने वाला हूं (मेरा कार्य समझाने का है समझा रहा हूं (92)

(یعنی قیامت آجائے گی) تو ہم ان کے لئے زمین سے ایک دابہ نکالیں گے جوان سے بیان کردے گا بےشک لوگ ہماری آیتوں پر ایمان نہیں لاتے (۸۲) [۹۹:۳، ۱۷:۱۳، ۲۷:۸۵، ۲۳:۶۲، ۷:۷،۸،۹، ۲۵:۱۷تا۱۹، ۴۵:۲۹] (نوٹ:۔ یہ دابہ نامہ اعمال بھی ہوسکتا ہے واللہ اعلم)

اور وہ دن ہوگا جب ہر امت میں سے اس گروہ کو بھی جمع کریں گے جو ہماری آیتوں کو جھٹلاتے تھے پھر ان کی گروہ بندی کی جائے گی (۸۳)

جب سب کے سب آ پہنچیں گے تو اللہ فرمائے گا کہ تم نے میری آیتوں کو باوجودیکہ تم ان کو اپنے احاطہ علم میں بھی نہیں لائے تھے کیوں جھٹلایا۔ اور یہ بھی بتاؤ کہ تم کیا کچھ کرتے رہے (۸۴)

اور ان کے ظلم کے سبب ان کے حق میں وعدہ (عذاب) پورا ہوکر رہے گا تو وہ بول بھی نہ سکیں گے (۸۵) [۲۷:۸۲]

کیا انہوں نے اس بات میں غور نہیں کیا کہ ہم نے رات کو (اس لئے) بنایا ہے کہ اس میں آرام کریں اور دن کو روشن (بنایا ہے کہ اس میں کام کریں) بےشک اس میں مومن لوگوں کے لئے نشانیاں ہیں (۸۶)

وہ (کیا ہولناک) دن ہوگا جب صور پھونکا جائے گا تو جو کچھ آسمانوں میں ہوں گے اور جتنے زمین میں ہوں گے سب گھبرا اٹھیں گے سوائے ان کے جسے اللہ اس ہول سے بچانا چاہے اور سب عاجزی کے ساتھ اس کے سامنے حاضر ہوں گے (۸۷)

اور آپ پہاڑوں کو دیکھ کر خیال کرتے ہو کہ (اپنی جگہ پر) کھڑے ہیں مگر وہ (اس روز) اس طرح اڑتے پھریں گے جیسے بادل (یہ) اللہ کی کاریگری ہے جس نے ہر چیز کو مضبوط بنایا ہے بےشک وہ تمہارے افعال سے باخبر ہے (۸۸)

جو شخص نیکی لے کر آئے گا وہ اس سے بہتر انعام پائے گا ایسے لوگ اس روز ہولناکی سے محفوظ رہیں گے (۸۹)

اور جو برائی لے کر آئیں گے تو ایسے لوگ اوندھے منہ دوزخ میں ڈال دیے جائیں گے (ان سے کہا جائے گا) تم کو انہیں اعمال کا تو بدلہ مل رہا ہے جو تم (دنیا میں) کرتے رہے ہو (۹۰)

مجھے صرف یہی حکم دیا گیا ہے کہ میں اس شہر مکہ کے رب کی عبادت کروں جس نے اسے حرمت والا بنایا ہے جس کی ملکیت میں ہر چیز ہے اور یہ بھی حکم ہوا ہے کہ اسی کا فرمانبردار رہوں (۹۱)

اور یہ بھی حکم دیا گیا ہے کہ میں قرآن پڑھ کر سناؤں (تو اے لوگو! اچھی طرح سن لو) جو راہ راست اختیار کرے گا وہ اپنے فائدے کے لئے اختیار کرے گا اور جو گمراہ ہوگا تو اس سے کہدو کہ میں تو صرف نصیحت کرنے والا ہوں (میرا کام سمجھانے کا ہے سمجھا رہا ہوں) (۹۲)

कहदो कि सम्पूर्ण प्रशस्ाएं ईश्वर के लिए है वह अभी तुम को अपने चिन्ह दिखाएगा तो तुम उनको पहचान लोगे और जो कार्य तुम करते हो तुम्हारा ईश्वर उनसे अनजान नही है (93)

کہدو کہ تمام تعریفیں اللہ کے لئے ہیں وہ ابھی تم کو اپنی نشانیاں دکھائے گا تو تم ان کو پہچان لوگے اور جو کام تم کرتے ہو تمہارا رب ان سے بےخبر نہیں ہے(۹۳)

सूरतुलकसस मक्की 28

سورۃ القصص (۲۸) مکی

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

तासीम मीमः- ऐ मुहम्मद स0 (1)यह स्पष्ट पुस्तक की आयतें है (2)

طٰسٓمٓ ۔اے محمدؐ(۱) یہ واضح کتاب کی آیتیں ہیں (۲)

(ऐ मुहम्मद स0) हम आपको मूसा और फिरऔन के कुछ समाचार ठीक ठीक सुनाते है (उन लोगों को सुनाने के लिए) जो विश्वास लाएंगे (3)

(اے محمدؐ) ہم آپ کو موسیٰ اور فرعون کے کچھ حالات ٹھیک ٹھیک سناتے ہیں (ان لوگوں کو سنانے کے لئے) جو ایمان لائیں گے (۳)

इसमें शंका नही कि फिरऔन ने देश में सिर उठा रखा था और वहां के निवासियों में (फूट डाल कर) दल-दल बना रखा था एक दल तो इतना निर्बल कर दिया था कि (उन्हें उभरने का अवसर ही न मिलता था) वह उनके पुत्रों को वध कर डालता था और उनकी लड़कियों को जीवित रहने देता था, सत्य यह है कि वह बड़ा दुष्ट था (4)

اس میں شک نہیں کہ فرعون نے ملک میں سر اٹھا رکھا تھا اور وہاں کے باشندوں میں (پھوٹ ڈالکر) گروہ گروہ بنا رکھا تھا ایک گروہ تو اتنا کمزور کردیا تھا کہ (انہیں ابھرنے کا موقع ہی نہ ملتا تھا) وہ ان کے لڑکوں کو قتل کرڈالتا تھا اور ان کی لڑکیوں کو زندہ رہنے دیتا تھا۔حقیقت یہ ہے کہ وہ بڑا مفسد تھا (۴)

और हमारा निर्णय यह था कि जो जाति देश में सबसे अधिक निर्बल समझी जाती थी उस पर उपकार करें और (उस जाति के) लोगों को सरदारी (और राज्य) दें और उन्हें (राज्य का) उत्तराधिकारी बनाएं (5)

اور ہمارا فیصلہ یہ تھا کہ جو قوم ملک میں سب سے زیادہ کمزور سمجھی جاتی تھی اس پر احسان کریں اور (اس قوم کے) لوگوں کو سرداری (اور ریاست) دیں اور انہیں (سلطنت کا) وارث بنائیں (۵)

और देश में (बनी इस्राईल को) उनको सत्ता दें और फिरऔन हामान और उनकी सैना को वह वस्तु (अर्थात बनी इसराईल का विद्रोह और स्वतंत्रता) दिखा दे जिसका उन्हें भय लगा रहता था (6)

اور ملک میں (بنی اسرائیل کو) ان کو اقتدار دیں اور فرعون اور ہامان اور ان کے لشکر کو وہ چیز (یعنی بنی اسرائیل کی بغاوت اور آزادی) دکھادیں جس کا انہیں ڈر لگا رہتا تھا (۶)

और हमने मूसा की माता के मन में यह बात डाल दी कि इस बच्चे को दूध पिलाए और जब तुझे इसकी जान का भय अनुभूत हो तो इसे दरया में डाल देना न किसी प्रकार का भय करना और न शोक (बच्चा सुरक्षित रहेगा) हम इसको तेरे पास वापस ले आएंगे और इसको रसूल बनाएंगे (7)

اور ہم نے موسیٰ کی ماں کے دل میں یہ بات ڈال دی کہ اس بچے کو دودھ پلائے اور جب تجھے اس کی جان کا خطرہ محسوس ہو تو اسے دریا میں ڈالدینا نہ کسی طرح کا خوف کرنا اور نہ رنج (بچہ سلامت رہے گا) ہم اس کو تیرے پاس واپس لے آئیں گے اور اس کو رسول بنائیں گے (۷)

फिरऔन के लोगों ने उसे (दरया से) निकाल लिया (और उसका पालन पोषण किया) ताकि (आगे चलकर) वह उनका शत्रु और उनके लिए पीड़ा का कारण बने निःसंदेह फिरऔन और हामान और उनकी सैना से चूक हो गई (8)

پھر فرعون کے لوگوں نے اسے (دریا سے) نکال لیا (اور اس کی پرورش کی) تاکہ (آگے چل کر) وہ ان کا دشمن اور ان کے لئے دردسر بنے۔ بےشک فرعون اور ہامان اور ان کے لشکر سے چوک ہوگئی (۸)

फिरऔन की पत्नी ने फिरऔन से कहा वह मेरी और तुम्हारी दोनों की आंखो की ठंडक है इसे वध न करो हो सकता है कि हमें इससे लाभ पहुंचे या हम उसे पुत्र ही बना लें और वह परिणाम से अनजान थे (9)

فرعون کی بیوی نے فرعون سے کہا یہ میری اور تمہاری دونوں کی آنکھوں کی ٹھنڈک ہے اسے قتل نہ کرو ہوسکتا ہے کہ ہمیں اس سے فائدہ پہنچے یا ہم اسے بیٹا ہی بنالیں۔اور وہ انجام سے بےخبر تھے (۹)

और मूसा की माता का हृदय व्याकुल हो गया यदि हम उनके हृदय को स्थिर न कर देते तो निकट था कि वह इस दुख के कारण भेद को प्रकट कर दें परन्तु तात्पर्य यह था कि वह विश्वास करने वालो में रहें (10)

اور موسیٰ کی ماں کا دل بےقرار ہوگیا۔اگر ہم ان کے دل کو مضبوط نہ کردیتے تو قریب تھا کہ وہ اس غم کی وجہ سے راز کو ظاہر کردیں لیکن مقصد یہ تھا کہ وہ یقین کرنے والوں میں رہیں (۱۰)

मूसा की माता ने उसकी बहन से कहा कि तू

موسیٰ کی ماں نے اس کی بہن سے کہا کہ تو اس کے پیچھے

उसके पीछे पीछे चली जा तो वह उसे दूर से देखती रही और उनको कुछ सूचना न हुई (11)

پیچھے چلی جا تو وہ اسے دور سے دیکھتی رہی اور ان کو کچھ خبر نہ ہوئی (۱۱)

और हमने पहले ही से उसपर दाईयो के दूध पर रोक लगा दी थी तो मूसा की बहन ने कहा कि मैं तुम्हें ऐसे घर का पता बता दूं कि तुम्हारे लिए इस बच्चे को पाले और इस का सहानुभूति से पालन पोषण करे (12) {6:146}

اور ہم نے پہلے ہی سے اس پر دائیوں کے دودھ پر روک لگا دی تھی تو موسیٰ کی بہن نے کہا کہ میں تمہیں ایسے گھر کا پتہ بتا دوں کہ تمہارے لئے اس بچے کو پالیں اور اس کی خیر خواہی سے پرورش کریں (۱۲) [۱۴۶:۶]

(यह सुनकर वह लोग बहुत प्रसन्न हुए) इस प्रकार हमने मूसा को उसकी माता के पास पहुंचा दिया ताकि उसकी आंखे ठंडी रहें और उसका हृदय न दुखे और विश्वास कर ले कि ईश्वर का वचन सत्य था, परन्तु अधिक लोग नही जानते (कि ईश्वर का वचन सदैव सत्य होता है (13)

(یہ سن کر وہ لوگ بہت خوش ہوئے) اس طرح ہم نے موسیٰ کو اس کی ماں کے پاس پہنچا دیا تاکہ اس کی آنکھیں ٹھنڈی رہیں اور اس کا دل نہ دکھے اور یقین کر لے کہ اللہ کا وعدہ سچا تھا مگر اکثر لوگ نہیں جانتے (کہ اللہ کا وعدہ ہمیشہ سچا ہوتا ہے) (۱۳)

और जब मूसा अपनी जवानी को पहुंचा और असकी क्षमताएं पूर्ण हो गई तो हमने उनको युक्ति और ज्ञान (अर्थात ईशदौत्य) प्रदान किया और हम सदाचारियों को ऐसा ही फल दिया करते हैं (14)

اور جب موسیٰ اپنی جوانی کو پہنچا اور اس کی صلاحیتیں مکمل ہوگئیں تو ہم نے ان کو حکمت اور علم (یعنی نبوت) عطا کی اور ہم نیکوکاروں کو ایسا ہی بدلہ دیا کرتے ہیں (۱۴)

और (एक दिन) मूसा नगर में ऐसे समय प्रविष्ट हुए जब नगर वाले अचेत सो रहे थे (और नगर में सन्नाटा था) वहा उसने देखा कि दो व्यक्ति लड़ रहे हैं यह एक तो उसकी अपनी जाति से था और दूसरा उसकी शत्रु जाति से सम्बन्ध रखता था उसकी जाति के आदमी उस व्यक्ति के मुकाबले में जो उसके शत्रुओं में से था मूसा से सहायता मांगी, मूसा ने उसके एक घूंसा मारा और उसका अन्त कर दिया (परन्तु तुरन्त मूसा को अपनी त्रुटि का अनुभूत हुआ और) उसने कहा यह कर्म शैतान के मर्म से हुआ निः संदेह वह (मानव का) शत्रु और खुल कर बहकाने वाला है (15)

(اور ایک روز) موسیٰ شہر میں ایسے وقت داخل ہوئے جب شہر والے بے خبر سو رہے تھے (اور شہر میں سناٹا تھا) وہاں اس نے دیکھا کہ دو آدمی لڑ رہے ہیں یہ ایک تو اس کی اپنی قوم سے تھا اور یہ دوسرا اس کی دشمن قوم سے تعلق رکھتا تھا اس کی قوم کے آدمی نے اس شخص کے مقابلہ میں جو اس کے دشمنوں میں سے تھا موسیٰ سے مدد مانگی. موسیٰ نے اس کے ایک گھونسا مارا اور اس کا کام تمام کر دیا (مگر فوراً موسیٰ کو اپنی غلطی کا احساس ہوا اور) اس نے کہا یہ کام شیطان کے وسوسے سے ہوا بے شک وہ (انسان کا) دشمن اور کھل کر بہکانے والا ہے (۱۵)

मूसा ने प्रार्थना की ऐ ईश्वर! मैंने (एक व्यक्ति को वध करके) अपने ऊपर अत्याचार किया तू मुझे क्षमा कर दे, ईश्वर ने उनको क्षमा कर दिया निःसंदेह वह कृपालू और दयालू है (16)

موسیٰ نے التجا کی اے پروردگار! میں نے (ایک شخص کو قتل کر کے) اپنے اوپر ظلم کیا تو مجھے بخش دے اللہ نے ان کو بخش دیا بے شک وہ غفورالرحیم ہے (۱۶)

नोट- ईश्वर ने महामना मूसा को उस वध पर क्षमा कर दिया, फिर मूसा दोषी कैसे रहे जो हशर वाली रिवायत में लिखा है कि श्रीमान मूसा से जब व्यक्ति अनुशंसा के लिए ईश्वर के सामने जाने की प्रार्थना करेंगे तो वह कह देंगे कि मैं जाने से लज्जाता हूं क्योंकि मुझ से एक वध हो गया था, परन्तु जब ईश्वर ने क्षमा कर दिया तो मूसा यह शब्द कैसे कह सकते हैं? यद्यपि पहले तो यह रिवायत ही विचार्णीय है

نوٹ:۔ اللہ نے حضرت موسیٰؑ کو اس قتل پر معاف کر دیا پھر موسیٰ خطاکار کیسے رہے. جو حشر والی روایت میں لکھا ہے کہ حضرت موسیٰؑ سے جب انسان شفاعت کے لئے اللہ کے سامنے جانے کی درخواست کریں گے تو وہ کہہ دیں گے کہ میں جانے سے شرماتا ہوں کیونکہ مجھ سے ایک قتل ہو گیا تھا لیکن جب اللہ نے معاف کر دیا تو موسیٰ یہ الفاظ کیسے کہہ سکتے ہیں؟ حالانکہ پہلے تو یہ روایت ہی محل نظر ہے

(इसके बाद) मूसा ने (हमसे कहा) वचन किया ऐ मेरे ईश्वर! तूने जो मुझ पर दया की है इसके बाद में अपराधियों का कभी सहायक न बनूंगा (17)

(اس کے بعد) موسیٰ نے (ہم سے کہا) عہد کیا اے میرے پروردگار! تو نے جو مجھ پر رحم کیا ہے اس کے بعد میں مجرموں کا کبھی مددگار نہ بنوں گا (۱۷)

(दूसरे दिन) प्रातः को सावधानी से चिन्ता की स्थिति में नगर में प्रविष्ट हुआ कि देखूं (क्या होता है) तो अचानक वही व्यक्ति जिसने कल उससे सहायता मांगी थी फिर उसको पूकार रहा था मूसा ने उससे कहा तू बड़ा ही भ्रष्ट व्यक्ति है (18)

(دوسرے روز) صبح کو احتیاط سے اندیشہ کی حالت میں شہر میں داخل ہوا کہ دیکھوں (کیا ہوتا ہے) تو اچانک وہی آدمی جس نے کل اس سے مدد مانگی تھی پھر اس کو پکار رہا تھا موسیٰ نے اس سے کہا تو بڑا ہی گمراہ آدمی ہے (۱۸)

अतः जब मूसा ने उसको पकड़ने को हाथ बढ़ाया कि उसको आक्रमण करने से रोके उस पर जो उन दोनो का शत्रु था (अर्थात बनी इस्राईल को आक्रमण

پس جب موسیٰ نے اس کو پکڑنے کو ہاتھ بڑھایا کہ اس کو حملہ کرنے سے روکے اس پر جو ان دونوں کا دشمن تھا (یعنی

करने से रोके) तो उसने कहा ऐ मूसा क्या तू आज मुझको उसी प्रकार (बनी इस्राईल ने कहा) वध करना चाहता है जिस प्रकार तूने कल एक व्यक्ति को मार डाला था तू तो यही चाहता है कि देश में अत्याचार करता फिरे और नही चाहता कि देश में सुधार हो (19)

بنی اسرائیل کوحملہ کرنے سے روکے) تو اس نے کہا اے موسیٰ کیا تو آج مجھ کو اسی طرح (بنی اسرائیل نے کہا) قتل کرنا چاہتا ہے جس طرح تو نے کل ایک آدمی کو مار ڈالا تھا تو تو یہی چاہتا ہے کہ ملک میں ظلم کرتا پھرے اور نہیں چاہتا کہ ملک میں اصلاح ہو (۱۹)

नोट- आयत के अनवाद में लगभग सब ही अनुवादो से यह स्पष्ट हो रहा है कि आज भी मूसा ने शत्रु जाति के व्यक्ति पर आक्रमण करने का निश्चय कि तो प्रश्न उत्पन्न होता है जब एक दिन पहले मूसा से जो वध हो गया था उसपर उन्होने ईश्वर से क्षमा मांगी ईश्वर ने उनको क्षमा कर दिया और मूसा ने प्रण किया था कि ऐ ईश्वर भविष्य में ऐसा कर्म न करूंगा, इस प्रण के बाद फिर मूसा ऐसा ही कर्म करने को कैसे तैयार हो जाते कदापि नही मूल बात यह है कि जब मूसा ने देखा कि जो व्यक्ति कल लड़ रहा था वही आज लड़ रहा है और फिर सहायता के लिए मूसा अ0 को उसके विरूद्ध पुकार रहा है जो उन दोनो का शत्रु था अर्थात कबती के विरूद्ध तो मूसा अ0 ने यह समझ कर बनी इस्राईल का हाथ पकड़ना चाहा जिससे यह झगड़ा न हो, और वह कबती आदमी बच जाए परन्तु बनी इस्राईल यह समझा कि आज मूसा मुझे मारना चाहता है आयत 18 में मूसा ने जो कहा उसको सुनकर इस लिए बनी इस्राईल ने कोलाहल मचा दिया कि आज तू मुझे मारना चाहता है जैसे कल एक व्यक्ति को मार दिया था,यह है यथार्थ आयत का न कि वह जो हमारे उलमा ने लिखा है कि मूसा फिर उसी कबती (मिस्री) को मारने को तत्पर हो गए भला यह कैसे हो सकता है? क्या एक ईशदूत अपने पश्चाताप को याद नही रखता?

نوٹ:۔ آیت کے ترجمے میں تقریباً سب ہی ترجموں سے یہ ظاہر ہو رہا ہے کہ آج بھی موسیٰ نے دشمن قوم کے آدمی پر حملہ کرنے کا ارادہ کیا تو سوال پیدا ہوتا ہے جب ایک دن پہلے موسیٰ سے جو قتل ہو گیا تھا اس پر انہوں نے اللہ سے معافی مانگی اللہ نے ان کو معاف کر دیا.اور موسیٰ نے عہد کیا تھا کہ اے اللہ آئندہ ایسی حرکت نہ کروں گا اس عہد کے بعد پھر موسیٰ ایسا ہی کام کرنے کو کیسے تیار ہو جاتے. ہرگز نہیں. اصل بات یہ ہے کہ جب موسیٰ نے دیکھا کہ جو آدمی کل لڑ رہا تھا وہی آج لڑ رہا ہے اور پھر وہ مدد کے لئے موسیٰ کو اس کے خلاف پکار رہا ہے جو ان دونوں کا دشمن تھا یعنی قبطی کے خلاف تو موسیٰ نے یہ سمجھ کر بنی اسرائیل کا ہاتھ پکڑنا چاہا جس سے یہ جھگڑا نہ ہو.اور وہ قبطی آدمی بچ جائے مگر بنی اسرائیل یہ سمجھا کہ آج موسیٰ مجھے مارنا چاہتا ہے آیت ۱۸/ میں موسیٰ نے جو کہا اس کو سن کر اس لئے بنی اسرائیل نے شور مچا دیا کہ آج تو مجھے مارنا چاہتا ہے جیسے کل ایک آدمی کو مار دیا تھا. یہ ہے حقیقت آیت کی نہ کہ وہ جو ہمارے علماء نے لکھی ہے کہ موسیٰ پھر اسی قبطی کو مارنے کو تیار ہو گئے بھلا یہ کیسے ہو سکتا ہے کیا ایک نبی اپنی توبہ کو یاد نہیں رکھتا؟

(यह सुनकर वह मिस्री व्यक्ति तुरन्त फिरऔन के पास गया और कहा कि कल जो व्यक्ति मारा गया था वह मूसा ने मारा था यह सुनकर फिरऔन ने मूसा को बन्दी बनाने की तैयारी की परन्तु उसकी राजसभा में एक आस्तिक था वह तुरन्त वहा से भाग कर मूसा के पास पहुंचा और कहा) एक व्यक्ति नगर के किनारे से दौड़ता हुआ आया और बोला कि मूसा (नगर के) नायक तुम्हारे विषय में वध के परामर्श कर रहें है कि तुमको वध कर दें सो तुम यहां से निकल जाओ मैं यह बात तेरी भलाई के लिए कह रहा हूं (20)

(یہ سن کر وہ مصری آدمی فوراً فرعون کے پاس گیا اور کہا کہ کل جو آدمی مارا گیا تھا وہ موسیٰ نے مارا تھا یہ سن کر فرعون نے موسیٰ کو گرفتار کرنے کی تیاری کی لیکن اس کے دربار میں ایک مومن تھا وہ فوراً وہاں سے بھاگ کر موسیٰ کے پاس آیا اور کہا) ایک شخص شہر کے کنارے سے دوڑتا ہوا آیا اور بولا کہ موسیٰ (شہر کے) رئیس تمہارے بارے میں قتل کے مشورے کر رہے ہیں کہ تم کو قتل کر دیں سو تم یہاں سے نکل جاؤ میں یہ بات تیری بھلائی کے لئے کہہ رہا ہوں (۲۰)

(यह बात सुनकर) मूसा वहा से सावधानी और भय के साथ झपटता हुआ निकल खड़ा हुआ और प्रार्थना करने लगे कि ऐ ईश्वर मुझे अन्यायी लोगो से मुक्ति दें (21)

(یہ بات سن کر) موسیٰ وہاں سے احتیاطاً اور ڈر کے ساتھ جھپٹتا ہوا نکل کھڑا ہوا اور دعا کرنے لگے کہ اے پروردگار مجھے ظالم لوگوں سے نجات دے (۲۱)

फिर जब मूसा अ0 (मिस्र से निकल कर) मद्यन की ओर रवाना हुआ तो उसने कहा मुझे आशा है कि मेरा रब मुझे सीधा मार्ग बताएगा (22)

پھر جب موسیٰ (مصر سے نکل کر) مدین کی طرف روانہ ہوا تو اس نے کہا مجھے امید ہے کہ میرا رب مجھے سیدھا راستہ بتائے گا (۲۲)

और जब मद्यन के कूप पर पहुंचा तो उसने देखा कि बहुत से लोग अपने चौपायों को पानी पिला रहे हैं और उनके एक ओर दो स्त्रीयां (अपनी बकरियों को) रोके खड़ी हैं मूसा ने उनसे कहा तुम्हारा क्या कार्य है तुम क्यों खड़ी हो, वह बोली कि जब तक चरवाहे (अपने चौपायों को) ले न जाएं हम पानी नही पिला सकते और हमारे पिता बड़ी आयू के बूढ़े हैं (23)

اور جب مدین کے کنویں پر پہنچا تو اس نے دیکھا کہ بہت سے لوگ اپنے چوپایوں کو پانی پلا رہے ہیں اور ان کے ایک طرف دو عورتیں (اپنی بکریوں کو) روکے کھڑی ہیں موسیٰ نے ان سے کہا تمہارا کیا کام ہے تم کیوں کھڑی ہو. وہ بولیں کہ جب تک چرواہے (اپنے چارپایوں کو) لے نہ جائیں ہم پانی نہیں پلا سکتے اور ہمارے والد بڑی عمر کے بوڑھے ہیں (۲۳)

(यह सुनकर) मूसा ने (उनकी बकरीयों को) पानी पिला दिया (और स्त्रीयां चली गई) और मूसा एक (वृक्ष के) साये में जा बैठ, और प्रार्थना की ऐ ईश्वर मैं इसका आश्रित हूं कि तू मुझ पर अपना

(یہ سن کر) موسیٰ نے (ان بکریوں کو) پانی پلا دیا (اور وہ عورتیں چلی گئیں) اور موسیٰ ایک (درخت کے) سایہ میں جا بیٹھا اور دعا مانگی اے اللہ میں اس کا محتاج ہوں کہ تو مجھ پر

प्रसाद अवतरित करे (24)

اپنی نعمت نازل کرے(۲۴)

(थोड़ी देर के बाद) उनमें से एक स्त्री जो शर्माती और लजाती मूसा के पास आई और कहने लगी, मेरे पिता आप को बुला रहे हैं ताकि आपने जो (हमारी बकरियों को) पानी पिलाया है उसका आपको पारिश्रमिक दें (मूसा उसके साथ गए) जब वहा पहुंचा और उनसे सारी आत्म कथा सुनाई तो उसने कहा कुछ भय न करो तुम दुष्ट लोगो से बच आए हो (25)

(تھوڑی دیر کے بعد) ان میں سے ایک عورت جو شرماتی اور لجاتی موسیٰ کے پاس آئی اور کہنے لگی میرے والد آپ کو بلا رہے ہیں تا کہ آپ نے جو (ہماری بکریوں کو) پانی پلایا ہے اس کا آپ کو اجر دیں (موسیٰ اس کے ساتھ گئے) جب وہاں پہنچا اور ان سے سارا ماجرا بیان کیا تو اس نے کہا کچھ خوف نہ کرو تم ظالم لوگوں سے بچ آئے ہو(۲۵)

एक लड़की बोली कि पिताजी उनको नौकर रख लिजिए क्योंकि अच्छा नौकर जो आप रखे वह है जो बलिष्ट और विश्वासनीय हो (26)

ایک لڑکی بولی کہ ابا جان ان کو نوکر رکھ لیجئے کیونکہ اچھا نوکر جو آپ رکھیں وہ ہے جو مضبوط اور امانتدار ہو(۲۶)

तब उसके पिता ने मूसा से कहा मैं चाहता हूं कि अपनी इन दोनो पुत्रीयों में से एक का तुम्हारे साथ विवाह कर दूं इस प्रतिबद्धा पर कि तुम आठ वर्ष तक मेरे यहां सेवा करो और यदि दस साल पूरे कर दो तो यह तुम्हारी ओर से उपकार है और मैं तुम पर अत्याचार करना नही चाहता तुम मुझे ईश्वर के आदेशानुसार वचन पूरा करने वाला पाओगे, ईश्वर यही चाहता है कि वचन पूरा किया जाए (27)

تب اس کے باپ نے موسیٰ سے کہا میں چاہتا ہوں کہ اپنی ان دونوں بیٹیوں میں سے ایک کا تمہارے ساتھ نکاح کر دوں اس شرط پر کہ تم آٹھ برس تک میرے یہاں ملازمت کرو. اور اگر دس سال پورے کر دو تو یہ تمہاری طرف سے احسان ہے اور میں تم پر سختی کرنا نہیں چاہتا. تم مجھے اللہ کے حکم کے مطابق وعدہ پورا کرنے والا پاؤ گے اللہ یہی چاہتا ہے کہ وعدہ پورا کیا جائے(۲۷)

मूसा ने कहा मेरे और आपके मध्य यह बात निश्चित हो गई इन दोनो कालो में से जो भी मैं पूरी कर दूं (उसके बाद मुझे यहां से चले जाने का अधिकार होगा) और मुझ पर कोई अन्याय न होगा, और जो प्रतिज्ञा हम कर रहे हैं ईश्वर उसका साक्षी है (28)

موسیٰ نے کہا میرے اور آپ کے درمیان یہ بات طے ہو گئی ان دونوں مدتوں میں سے جو بھی میں پوری کر دوں (اس کے بعد مجھے یہاں سے چلے جانے کا حق ہوگا) اور مجھ پر کوئی زیادتی نہ ہوگی. اور جو قول و قرار ہم کر رہے ہیں اللہ اس کا گواہ ہے(۲۸)

जब महामना मूसा ने समय पूरा कर दिया और अपने घर वालो को लेकर चले तो तूर पर्वत की ओर आग देखी, अपनी पत्नी से कहने लगे ठेहरो! मैंने आग देखी है, कदाचित मैं वहा से कुछ पता लाऊं या आग का अंगारा ले आऊं ताकि तुम तापो (29)

جب حضرت موسیٰ نے مدت پوری کر دی اور اپنے گھر والوں کو لے کر چلے تو کوہ طور کی طرف آگ دیکھی اپنی بیوی سے کہنے لگے ٹھہرو میں نے آگ دیکھی ہے شائد میں وہاں سے کچھ پتہ لاؤں یا آگ کا انگارہ لے آؤں تا کہ تم تاپو(۲۹)

जब उसके पास पहुंचे तो मैदान के दाएं किनारे से एक शुभ स्थान में एक ध्वनी आई और ऐसा लगा मानो वह ध्वनि वृक्ष में से आ रही है कि मूसा मैं तो ईश्वर विश्वपालक हूं (30)

جب اس کے پاس پہنچے تو میدان کے دائیں کنارے سے ایک مبارک جگہ میں ایک آواز آئی اور ایسا لگا گویا آواز درخت میں سے آرہی ہے کہ موسیٰ میں تو اللہ رب العالمین ہوں(۳۰)

(कहा) और यह कि अपनी लाठी डाल दो जब देखा कि वह हरकत कर रही है मानो सांप है तो उससे बचाव के लिए पीठ फेर कर चल दिए और पीछे मुड़ कर भी न देखा (हमने कहा कि) मूसा आगे आओ और मत डरो तुम शान्ति पाने वालो में हो (31)

(کہا) اور یہ کہ اپنی لاٹھی ڈال دو جب دیکھا کہ وہ حرکت کر رہی ہے مانو سانپ ہے تو اس سے بچاؤ کے لئے پیٹھ پھیر کر چل دیے اور پیچھے مڑ کر بھی نہ دیکھا (ہم نے کہا کہ) موسیٰ آگے آؤ اور مت ڈرو تم امن پانے والوں میں ہو(۳۱)

अपना हाथ ग्रीवा में डाल तो बिना किसी दोष के सफेद निकल आएगा और सुनो! किसी बुराई या किसी भय के समय उसका मुकाबला करने के लिए अपने हाथो को सुकेड़कर अपने सामने ले आना और साहस के साथ सावधान रहना भय के समय अपने दल की रक्षा कर चेतना स्थिर रखना बुराई

اپنا ہاتھ گریبان میں ڈال لو بغیر کسی عیب کے سفید نکل آئے گا اور سنو! کسی برائی یا کسی خطرے کے وقت اس کا مقابلہ کرنے کے لئے اپنے ہاتھوں کو پکڑ کر اپنے سامنے لے آنا اور ہمت کے ساتھ ہوشیار رہنا خطرے کے وقت اپنی جماعت کی حفاظت کرنا حواس قائم رکھنا برائی کے لئے

اپنے ہاتھ دراز نہ کرنا اور لوگوں سے نرمی سے بات کرنا یہ دو دلیلیں (اور حکمت کی باتیں) تمہارے رب کی طرف سے ہیں (ان کے ساتھ) فرعون اور اس کے درباریوں کے پاس جاؤ کہ وہ نافرمان لوگ ہیں (۳۲)

نوٹ:۔ اللہ نے موسیٰ کو اپنی نشانیوں کے ساتھ یہ بات بھی بتائی کہ اے موسیٰ تم نے جو ایک قتل کیا تھا اب ایسا نہ کرنا اور موسیٰ نے بھی اس قتل کے بعد آگے ایسی حرکت نہ کرنے کا عہد کیا تھا (۲۸:۱۷) بلکہ اگر ایسا کبھی وقت آجائے تو اپنے ہاتھ سکیڑ لینا یعنی اس بُرائی سے بچ جانا یا اگر کوئی اچانک خطرہ محسوس ہو تو فوراً اپنے ہاتھوں کو سکیڑ کر اپنے سینے کے سامنے لے آنا۔ یعنی اس خطرے کا مقابلہ کرنے کو تیار ہو جانا ایسے وقت پر ہر آدمی کے ہاتھ سینے کے سامنے آجاتے ہیں اور دل مضبوط ہوتا ہے خطرے کا مقابلہ ٹھیک ہوتا ہے۔

اور لوگوں سے نرمی سے بات کرنا ہاتھ باندھ لینا نہیں ہے بلکہ ہاتھوں کو فوراً سکیڑ کر مقابلہ کے لئے تیار ہو جانا ہے یہ ہے آیت کا مفہوم۔

موسیٰ نے کہا اے میرے رب میں نے ان کا ایک آدمی قتل کر دیا تھا ڈرتا ہوں کہیں وہ مجھے قتل نہ کر دیں (۳۳)

اور ہارون میرا بھائی اس کی زبان مجھ سے زیادہ فصیح ہے تو اس کو میرے ساتھ بھیج مددگار بنا کر کہ میری تصدیق کرے مجھے خوف ہے کہ وہ لوگ مجھے جھٹلائیں گے (۳۴)

ارشاد ہوا ہم تیرے بھائی کے ذریعہ تیرا ہاتھ ابھی مضبوط کریں گے اور تم دونوں کو ایسی طاقت دیں گے کہ وہ لوگ تمہارا کچھ بھی نہ بگاڑ سکیں گے اور ہماری نشانیوں کے اثر سے تم دونوں اور تمہارے پیرو غالب رہیں گے (۳۵)

پھر جب موسیٰ ان کے پاس کھلی اور واضح نشانیاں لے کر آیا تو انہوں نے کہا یہ کچھ نہیں صرف بناوٹی جادو ہے ہم نے تو ایسی باتیں اپنے باپ دادا کے زمانے میں کبھی نہیں سنیں (۳۶)

موسیٰ نے جواب دیا (اے لوگو! مجھے جھٹلانے میں اتنی جلدی نہ کرو) اللہ خوب جانتا ہے کہ کون شخص اس کی طرف سے سچائی لے کر آیا ہے اور کس کے لئے آخرت کی کامیابی ہے یقین کرو کہ اللہ کبھی ان لوگوں کو فلاح نہیں دیتا جو ناحق زیادتی کرتے ہیں (۳۷)

اور فرعون نے کہا کہ اے اہل دربار میں تمہارے لئے اپنے سوا کسی کو رب نہیں جانتا ہامان تو میرے لئے گارے کی اینٹیں پکا کر ایک اونچا محل بنا دے تاکہ میں موسیٰ کے اللہ کی طرف چڑھ جاؤں اور میں تو اسے جھوٹا سمجھتا ہوں (۳۸)

اس نے اور اس کے لشکر نے ملک میں ناحق تکبر کیا اور خیال کرتے تھے کہ وہ ہماری طرف لوٹ کر نہیں آئیں گے (۳۹)

تو ہم نے یعنی ہمارے قانون نے اس کو اور اس کے لشکر کو پکڑ لیا اور دریا میں غرق کر دیا سو دیکھو کہ ظالموں کا کیسا انجام ہوا (۴۰)

اور ہم نے انہیں پیشوا بنایا یعنی حکومت دی مگر وہ اس

के समय अपने हाथ न बढ़ाना और लोगो से नम्रता से बात करना, यह दो प्रमाण (और युक्ति की बातें) तुम्हारे ईश्वर की ओर से है (इनके साथ) फिरऔन और उसके दरबारियों के पास जाओ कि वह अवज्ञाकार लोग हैं (32)

नोट- ईश्वर ने मूसा अ0 को अपने चिन्हो के साथ यह बात भी बताई कि ऐ मूसा तुमने जो एक वध कर दिया था अब ऐसा न करना और मूसा ने भी उस वध के बाद आगे ऐसा कर्म न करने का वचन किया था {28:17} अपितु यदि ऐसा कभी समय आ जाए तो अपने हाथ सुकेड़ लेना अर्थात उस बुराई से बच जाना या यदि कोई अचानक भय अनुभूत हो तो तुरन्त अपने हाथो को सुकेड़ कर अपने सीने के सामने ले आना, अर्थात उस भय का सामना करने को तैयार हो जाना, ऐसे समय पर हर व्यक्ति के हाथ सीने के सामने आ जाते हैं और हृदय स्थिर होता है भय का मुकाबला ठीक होता है,

और लोगो से नम्रता से बात करना हाथ बान्ध लेना नही है अपितु हाथो को सुकेड़कर मुकाबले के लिए तैयार हो जाना है यह है आयत का भाव,

मूसा ने कहा ऐ मेरे रब मैंने उनका एक व्यक्ति वध कर दिया था डरता हूं कही वह मुझे वध न कर दें (33)

और हारून मेरा भाई उसकी भाषा मुझ से अधिक स्पष्ट है तो उसको मेरे साथ भेज सहायक बनाकर मेरी पुष्टि करे मुझे भय है कि वह लोग मुझे झुटलाऐंगे (34)

आदेश हुआ हम तेरे भाई के द्वारा तेरा हाथ अभी पुष्ट करेंगें और तुम दोनो को ऐसी शक्ति देंगें कि वह लोग तुम्हारा कुछ भी न बिगाड़ सकेंगें और हमारे चिन्हों के प्रभाव से तुम दोनो और तुम्हारे अनुयायी प्रभुत्व शाली रहेंगें (35)

फिर जब मूसा उनके पास खुले और स्पष्ट चिन्ह लेकर आया तो उन्होने कहा यह कुछ नही केवल बनावटी जादू है, हमने तो ऐसी बाते अपने बाप दादा के काल में कभी नही सुनी (36)

मूसा ने उत्तर दिया (ऐ लोगो! मुझे झुटलाने में इतनी शीघ्रता न करो) ईश्वर अच्छा जानता है कि कौन व्यक्ति असकी ओर से सच्चाई लेकर आया है और किसके लिए प्रलोक की सफलता है विश्वास करो कि ईश्वर कभी उन लोगो को सफलता नही देता जो अनुचित करते हैं (37)

और फिरऔन ने कहा कि सभा वालो मैं तुम्हारे लिए अपने अतिरिक्त किसी को रब नही जानता, हामान तू मेरे लिए गारे की ईंटे पकाकर एक ऊंचा भवन बना दे ताकि मैं मूसा के ईश्वर की ओर चढ़ जाऊं और मैं तो उसे झूटा समझता हूं (38)

असने और उसकी सैना ने देश में अनुचित घमण्ड किया और विचार करते थे कि वह हमारी ओर लौट कर नही आऐंगें (39)

तो हमने अर्थात हमारे नियम ने उसको और उसकी सेना को पकड़ लिया और दरया में तल्लीन (डुबो) कर दिया सो देखो कि दुष्टो का कैसा अन्त हुआ? (40)

और हमने उन्हे नेता बनाया अर्थात राज्य दिया

परन्तु वह इस उपकार के बदले लोगो को नर्क की ओर बुलाते थे और प्रलय के दिन उन्हे कही से सहायता न मिलेगी (41)

احسان کے بدلے لوگوں کو جہنم کی طرف بلاتے تھے اور قیامت کے دن انہیں کہیں سے مدد نہ ملے گی (۴۱)

और इस दुनिया में (भी) हमने उनके पीछे धिक्कार लगा दी (कि उनका उल्लेख सदैव बुराई के साथ किया जाता है) और प्रलय में भी दुर्गत ग्रस्तो में सम्मिलित होंगे (42) [प्रातः व सायं का यही दण्ड है]

اور اس دنیا میں (بھی) ہم نے ان کے پیچھے لعنت لگا دی (کہ ان کا ذکر ہمیشہ بُرائی کے ساتھ کیا جاتا ہے) اور قیامت میں بھی بدحال لوگوں میں شامل ہوں گے (۴۲)
[صبح شام کا یہی عذاب ہے]

और यह सत्य है कि इमने पिछली उम्मतो को वध करने के बाद मूसा को पुस्तक (तौरेत) दी जो लोगो के लिए शिक्षा पथ प्रदर्शन और करूणा का स्रोत था ताकि लोग उससे शिक्षा प्राप्त करें (43)

اور یہ حقیقت ہے کہ ہم نے پچھلی امتوں کو ہلاک کرنے کے بعد موسیٰ کو کتاب (تورات) دی جو لوگوں کے لئے بصیرت ہدایت اور رحمت کا سرچشمہ تھی تا کہ لوگ اس سے نصیحت حاصل کریں (۴۳)

और जब हमने मूसा की ओर आदेश भेजा तो आप (तूर के) पश्चिम की ओर नही थे और न उस घटना को देखने वालो में थे (44)

اور جب ہم نے موسیٰ کی طرف حکم بھیجا تو تم (طور کی) غرب کی طرف نہیں تھے اور نہ اس واقع کو دیکھنے والوں میں تھے (۴۴)

अपितु मूसा के बाद हमने बहुत सी जातियों को उत्पन्न किया फिर उन पर बहुत समय व्यतीत हो गया (इसी प्रकार) आप मद्यन वालो के साथ रहने वालो में से भी न थे कि उनको हमारी आयाते पढ़कर सुनाते होते (कि सत्य के विरोधीयों को शंका होती) अपितु उस समय की सारी घटनाएं हम भेजने वाले है (और हम ही ईशदूत भेजने वाले हैं) (45)

بلکہ موسیٰ کے بعد ہم نے بہت سی امتوں کو پیدا کیا پھر ان پر مدتیں گزر گئیں (اسی طرح) آپ اہل مدین کے ساتھ رہنے والوں میں سے بھی نہ تھے کہ ان کو ہماری آیتیں پڑھ کر سناتے ہوتے (کہ منکرین حق کو شبہ ہوتا) بلکہ اس وقت کے سارے واقعات ہم ہی بھیجنے والے ہیں (اور ہم ہی رسول بھیجنے والے ہیں) (۴۵)

और न आप उस समय जब कि हमने मूसा को पुकारा तूर के किनारे थे (अपितु आपको भेजा जाना और आपको नबी बनाया जाना) आपके रब की कृपा है ताकि आप उन लोगो को जिनके पास आप से पहले कोई मार्ग दर्शन करने वाला नही आया उपदेश करो कदाचित वह शिक्षा प्राप्त करें (46)

اور نہ تم اس وقت جب کہ ہم نے موسیٰ کو آواز دی طور کے کنارے تھے (بلکہ تمہارا بھیجا جانا اور تم کو نبی بنایا جانا) تمہارے پروردگار کی رحمت ہے تا کہ تم ان لوگوں کو جن کے پاس آپ سے پہلے کوئی ہدایت کرنے والا نہیں آیا ہدایت کرو شائد وہ نصیحت حاصل کریں (۴۶)

(और आपको रसूल बनाकर भेजने का एक कारण यह भी कि) ऐसा न हो कि उनके दुष्कर्मो के कारण जो वह अपने हाथो से करके आगे भेजते रहे है उन पर कोई आपत्ति आ जाए तो वह कहने लगें ऐ रब तूने हमारी ओर कोई रसूल क्यों नही भेजा कि हम उन का अनुकरण करते और हम (भी) आस्था वालो में सम्मिलित होते (47)

(اور آپ کو رسول بنا کر بھیجنے کا ایک سبب یہ بھی ہے کہ) ایسا نہ ہو کہ ان کی بداعمالیوں کی وجہ سے جو وہ اپنے ہاتھوں سے کر کے آگے بھیجتے رہے ہیں ان پر کوئی مصیبت آجائے تو وہ کہنے لگیں اے رب تو نے ہماری طرف کوئی رسول کیوں نہیں بھیجا کہ ہم ان کی پیروی کرتے اور ہم (بھی) ایمان والوں میں شامل ہوتے (۴۷)

फिर जब उन (मक्के वालो) के पास हमारी ओर से सत्य (अर्थात कुरआन) आ गया तो कहने लगे मूसा को जैसे चमत्कार दिए गए थे वैसे इसको क्यों नही दिए गए? (ऐ रसूल उनसे पूछो) जो चमत्कार मूसा को पहले दिए गए थे क्या उन लोगो ने उनका इन्कार नही कर दिया था? और कह दिया था कि यह दोनो जादूगर है जो एक दूसरे की सहायता करते रहे है यद्यपि उन लोगो ने कह दिया हम किसी को नही मानते (48)

پھر جب ان (اہل مکہ) کے پاس ہماری طرف سے حق (یعنی قرآن) آ گیا تو کہنے لگے موسیٰ کو جیسے معجزے دئے گئے تھے ویسے اس کو کیوں نہیں دئے گئے؟ (اے رسول اُن سے پوچھو) جو معجزے موسیٰ کو پہلے دئے گئے تھے کیا اُن لوگوں نے اُن کا انکار نہیں کر دیا تھا؟ اور یہ کہہ دیا تھا کہ یہ دونوں جادوگر ہیں جو ایک دوسرے کی مدد کرتے رہے ہیں چنانچہ اُن لوگوں نے کہہ دیا ہم کسی کو نہیں مانتے (۴۸)

कह दो कि यदि सच्चे हो तो ईश्वर के पास से कोई और पुस्तक ले आओ जो इन दोनो से बढ़कर शिक्षा देने वाली हो ताकि मैं भी उसका

کہہ دو کہ اگر سچے ہو تو تم اللہ کے پاس سے کوئی اور کتاب لے آؤ جو ان دونوں سے بڑھ کر ہدایت کرنے والی

अनुकरण करूं (49)

फिर यदि वह आपकी बात स्वीकार न करें तो जान लो कि वह केवल अपनी इच्छाओं का अनुकरण करते हैं और उससे अधिक कौन भ्रष्ट होगा जो ईश्वर की शिक्षा को छोड़कर अपनी इच्छाओं के पीछे चले, निःसंदेह ईश्वर का नियम अत्याचारियों को मार्ग दर्शन नही करता (50)

और हम लगातार उन लोगो के लिए अपनी वाणी भेजते रहे ताकि वह शिक्षा प्राप्त करें (51)

जिन लोगो को हमने पहले पुस्तक दी थी उनमें के सदाचारी धर्म वादी इस पर भी विश्वास ले आते हैं (52)

और जब यह कुरआन उनको सुनाया जाता है तो कहते हैं हम इस पर विश्वास ले आए निःसंदेह यह हमारे रब की ओर से सत्य है और हम तो पहले ही से मुसलिम हैं उन लोगों को दोगुना फल दिया जाएगा क्योंकि वह धैर्य करते रहे हैं और बुराई को भलाई से दूर करते रहें हैं और जो माल हमने उनको दिया है उसमें से व्यय करते हैं (54)

और जब अनुचित बात कान में पड़ती है तो उससे मुख फैर लेते हैं और कहते हैं कि हम को हमारे कर्म और तुमको तुम्हारे कर्म तुमको प्रणाम हम मुर्खों का मार्ग ग्रहण नही करते (55)

(ऐ मुहम्मद स0!) यह आपका कार्य नही है कि आप जिसे चाहे सीधे मार्ग पर चला दो, ईश्वर का नियम जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर चला देता है (पथ प्रदर्शन उसे मिलता है जो उसके योग्य हो) और ईश्वर ही जानता है कि कौन लोग हैं जो पथ प्रदर्शन पाने के अधिकारी हैं (56)

कहते हैं यदि हम आपके साथ कुरआन का अनुकरण करने लगे तो हम अपनी धरती से उचक लिए जाएं (उनको सोचना चाहिए) क्या हमने उनको सम्मानित स्थान में जो शान्ति का स्थान है धाम नही दिया? जहां हर प्रकार के मैवे हमारी ओर से उनकी जीविका के लिए पहुंचते रहते हैं परन्तु उनमें से अधिक नही जानते (57)

और कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हमने इसलिए वध कर डाला कि उनके निवासी अपनी सम्पन्नता पर घमण्डी हो गए थे सो देख लो वह उनके उजड़े हुए भवन पड़े हुए हैं, जिनमें उनके बाद कम ही कोई बसा है अन्ततः हम ही उत्तराधिकारी हो कर रहे (58)

आपका रब (अर्थात मैं ईश्वर) जब तक बस्तियां को नष्ट नही किया करता जब तक उनके बड़े नगरो में ईशदूत न भेज ले जो उनको हमारी आयतें पढ़कर सुनाए और हम बस्तियां को नष्ट नही किया करते परन्तु इस स्थिति में कि वहां के निवासी दुराचारी हो (59)

(लोगों!) तुम्हें जो कुछ दिया गया है वह दुनिया के

ہوتا کہ میں بھی اس کی پیروی کروں (۴۹)

پھر اگر وہ آپ کی بات کو قبول نہ کریں تو جان لو کہ وہ صرف اپنی خواہشوں کی پیروی کرتے ہیں اور اُس سے زیادہ کون گمراہ ہوگا جو اللہ کی ہدایت کو چھوڑ کر اپنی خواہش کے پیچھے چلے بیشک اللہ کا قانون ظالموں کو ہدایت نہیں کرتا (۵۰)

اور ہم پے در پے ان لوگوں کے لئے اپنا کلام بھیجتے رہے تاکہ وہ نصیحت حاصل کریں (۵۱)

جن لوگوں کو ہم نے پہلے کتاب دی تھی ان میں کے ایمان دار اس پر بھی ایمان لے آتے ہیں (۵۲)

اور جب یہ قرآن ان کو سنایا جاتا ہے تو کہتے ہیں ہم اس پر ایمان لے آئے بے شک یہ ہمارے رب کی طرف سے حق ہے اور ہم تو پہلے ہی سے مسلم ہیں (۵۳)

اُن لوگوں کو دگنا بدلہ دیا جائے گا کیونکہ وہ صبر کرتے رہے ہیں اور بُرائی کو بھلائی سے دور کرتے رہے ہیں اور جو مال ہم نے ان کو دیا ہے اس میں سے خرچ کرتے ہیں (۵۴)

اور جب بے ہودہ بات کان میں پڑتی ہے تو اس سے منہ پھیر لیتے ہیں اور کہتے ہیں کہ ہم کو ہمارے اعمال اور تم کو تمہارے اعمال تم کو سلام ہم جاہلوں کا راستہ اختیار نہیں کرتے (۵۵)

(اے محمدؐ!) یہ تمہارا کام نہیں ہے کہ آپ جسے چاہیں سیدھے رستہ پر چلا دو اللہ کا قانون جسے چاہتا ہے سیدھے رستہ چلا دیتا ہے (ہدایت اسے ملتی ہے جو اس کا اہل ہو) اور اللہ ہی جانتا ہے کہ کون لوگ ہیں جو ہدایت پانے کے مستحق ہیں (۵۶)

کہتے ہیں اگر ہم آپ کے ساتھ قرآن کی پیروی کرنے لگیں تو ہم اپنی زمین سے اچک لئے جائیں (ان کو سوچنا چاہیے) کیا ہم نے ان کو حرم میں جو امن کا مقام ہے جگہ نہیں دی؟ جہاں ہر قسم کے میوے ہماری طرف سے ان کی روزی کے لئے پہنچتے رہتے ہیں لیکن ان میں سے اکثر نہیں جانتے (۵۷)

اور کتنی ہی بستیاں ہیں جنہیں ہم نے اس لئے ہلاک کر ڈالا کہ ان کے باشندے اپنی خوش حالی پر اترا گئے تھے سو دیکھ لو وہ ان کے اجڑے ہوئے مکان پڑے ہوئے ہیں جن میں ان کے بعد کم ہی کوئی بسا ہے آخر کار ہم ہی وارث ہو کر رہے ہیں (۵۸)

آپ کا رب (یعنی میں اللہ) جب تک بستیوں کو ہلاک نہیں کیا کرتا جب تک ان کے بڑے شہروں میں رسول نہ بھیج لے جو ان کو ہماری آیتیں پڑھ کر سنائے اور ہم بستیوں کو ہلاک نہیں کیا کرتے مگر اس حالت میں کہ وہاں کے باشندے ظالم ہوں (۵۹)

(لوگو!) تمہیں جو کچھ دیا گیا ہے وہ دنیا کی (چند روزہ)

(कुछ दिनों) जीवन की सामग्री और उसकी शोभा है, परन्तु जो कुछ ईश्वर के पास है वह (इससे) अधिक उत्तम और शेष रहने वाला है क्या तुम समझते नही (60)

زندگی کا سامان اور اس کی زینت ہے لیکن جو کچھ اللہ کے پاس ہے وہ (اس سے) زیادہ بہتر اور باقی رہنے والا ہے کیا تم سمجھتے نہیں (۶۰)

भला वह व्यक्ति जिस से हमने अच्छा वचन किया हो और वह उसे पाने वाला हो कभी उस व्यक्ति की भाँति हो सकता है जिसे हमने केवल दुनिया के जीवन की सामग्री दे दी हो फिर वह प्रलय के दिन दण्ड के लिए हमारे सम्मुख प्रस्तुत किया जाने वाला हो (61)

بھلا وہ شخص جس سے ہم نے اچھا وعدہ کیا ہو اور وہ اسے پانے والا ہو کبھی اس شخص کی طرح ہو سکتا ہے جسے ہم نے صرف حیات دنیا کا سامان دے دیا ہو پھر وہ قیامت کے روز سزا کے لئے ہمارے سامنے پیش کیا جانے والا ہو (۶۱)

और जिस दिन ईश्वर उनको पुकारेगा कि तुम जिन्हें अपने गुमान में मेरा साझी ठहरा रहे थे कहां हैं (62)

اور جس دن اللہ ان کو پکارے گا کہ تم جنہیں اپنے گمان میں میرا شریک ٹھہرا رہے تھے کہاں ہیں (۶۲)

(तो) जिन लोगों पर (यातना का) आदेश सिद्ध हो चुक होगा वह कहेंगे कि हमारे रब यह वह लोग हैं जिनको हमने पथ भ्रष्ट किया था, और जिस प्रकार हम स्वयं भ्रष्ट हो गए थे उसी भांति उनको पथ भ्रष्ट किया था, अब हम तेरी ओर (आकृष्ट होकर) उनसे रूष्ट होते हैं वह हमें नही पूजते थे (63)

(تو) جن لوگوں پر (عذاب کا) حکم ثابت ہو چکا ہوگا وہ کہیں گے کہ ہمارے رب یہ وہ لوگ ہیں جن کو ہم نے گمراہ کیا تھا اور جس طرح ہم خود گمراہ ہو گئے تھے اسی طرح ان کو گمراہ کیا تھا، اب ہم تیری طرف (متوجہ ہو کر) ان سے بیزار ہوتے ہیں وہ ہمیں نہیں پوجتے تھے (۶۳)

और कहा जाएगा अपने देवताओ को बुलाओ तो वह उनको पुकारेंगे और (जब) कष्ट को देख लेंगे (तो अभिलाशा करेंगे कि) यदि वह सदाचारी होते (64)

اور کہا جائے گا اپنے شریکوں کو بلاؤ تو وہ ان کو پکاریں گے اور وہ ان کو جواب نہ دے سکیں گے اور (جب) عذاب کو دیکھ لیں گے (تو تمنا کریں گے کہ) کاش وہ ہدایت یاب ہوتے (۶۴)

उसदिन उन्हें बुलाकर ईश्वर उनसे पूछेगा और कहेगा कि तुमने रसूलो को क्या उत्तर दिया था (65)

اس روز انہیں بلا کر اللہ ان سے پوچھے گا اور کہے گا کہ تم نے رسولوں کو کیا جواب دیا تھا (۶۵)

उस दिन उनको कोई उत्तर न सूझेगा सब तर्क गुम हो जाएंगे और ना वह आपस में ही एक दूसरे से कुछ पूछ सकेंगे (66)

اس روز ان کو کوئی جواب نہ سوجھے گا سب دلیلیں گم ہو جائیں گی اور نہ آپس میں ایک دوسرے سے کچھ پوچھ ہی سکیں گے (۶۶)

परन्तु जिसने इस दुनिया में पश्चाताप किया विश्वास लाया और सत्कर्म किया तो आशा है वह मुक्ति पाने वालों में हो (67)

لیکن جس نے اس دنیا میں توبہ کی اور ایمان لایا اور عمل نیک کئے تو امید ہے کہ وہ نجات پانے والوں میں ہو (۶۷)

और आपका ईश्वर जो चाहता है उत्पन्न करता है और जिसे चाहता है अपने काम के लिए चुन लेता है उनको इस कार्य का अधिकार नही है वह जो अनेकेश्वर वाद करते है ईश्वर उससे पवित्र और श्रेष्ठ है (68)

اور آپ کا رب جو چاہتا ہے پیدا کرتا ہے اور جسے چاہتا ہے اپنے کام کے لئے چن لیتا ہے ان کو اس کام کا اختیار نہیں ہے وہ جو شرک کرتے ہیں اللہ اس سے پاک اور بالاتر ہے (۶۸)

और उनके वक्ष जो कुछ छुपाते है और जो कुछ प्रकट करते है आपका रब उस को जानता है (69)

اور ان کے سینے جو کچھ چھپاتے ہیں اور جو کچھ وہ ظاہر کرتے ہیں آپ کا رب اس کو جانتا ہے (۶۹)

जानलो वह ईश्वर है (कौन कहता है) ईश्वर नही है निःसंदेह वह ईश्वर है दुनिया और परलोक में उसी की प्रशन्सा है और उसी का आदेश है और उसी की ओर तुम लोटाए जाओगे (70)

جان لو وہ اللہ ہے (کون کہتا ہے) الہٰ نہیں ہے یقیناً وہ اللہ ہے دنیا اور آخرت میں اسی کی تعریف ہے اور اسی کا حکم ہے اور اسی کی طرف تم لوٹائے جاؤ گے (۷۰)

कहो भला देखो तो यदि ईश्वर तुम पर सदैव क्यामत के दिन तक रात किए रहें तो ईश्वर के सिवा कौन पूज्य है जो तुमको प्रकाश ला दे तो क्या तुम सुनते नही (71)

کہو بھلا دیکھو تو اگر اللہ تم پر ہمیشہ قیامت کے دن تک رات کئے رہے تو اللہ کے سوا کون معبود ہے جو تم کو روشنی لا دے تو کیا تم سنتے نہیں (۷۱)

और उनसे यह भी पूछो भला विचार करो यदि ईश्वर तुम पर सदैव क्यामत तक दिन किए रहे तो ईश्वर के सिवा कौन पूज्य है कि तुमको रात ला दे

اور ان سے یہ بھی پوچھو بھلا غور کرو اگر اللہ تم پر ہمیشہ قیامت تک دن کئے رہے تو اللہ کے سوا کون معبود ہے

जिसमें तुम विश्राम करो तो क्या तुम देखते नही (72)

और उसने अपनी कृपा से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाया ताकि तुम रात में विश्राम करो और दिन में उसकी दया खोजो और ताकि आज्ञापालन करो (73)

और जिस दिन वह उनको पुकारेगा और कहेगा कि मेरे वह साझी जिनका तुम्हें वाद था कहा है जो तुमने बना रखे थे (74)

और हम हर समुदाय में से साक्षी निकाल लेंगे फिर कहेंगे कि अपना तर्क प्रस्तुत करो तो वह जान लेंगे कि सत्य बात ईश्वर की है, और जो कुछ वह मिथ्या रोपण किया करते थे उनसे जाता रहेगा (75)

सत्य यह है कि कारून मूसा की जाति का एक व्यक्ति था (परन्तु धन के घमण्ड ने) उसको जाति के विरूद्ध विद्रोह पर तत्पर कर दिया था, और हमने उसको इतने कोष दे रखे थे कि उनकी कुनजीयां एक शक्तिशाली पट्ठा पहलवान कठिनता से उठा सकता था, उसकी जाति के लोगों ने उससे कहा इतना न इतरा, विश्वास करो कि ईश्वर इतराने वालों को पसन्द नही करता (76)

और ईश्वर ने जो माल तुम को दिया है उससे परलोक का घर बनाने की चिन्ता कर और दुनिया से भी अपना अंश न भुला और जिस प्रकार ईश्वर ने तुझ पर उपकार किया है तू भी ईश्वर के बन्दों पर उपकार कर और पृथ्वी में अशान्ति न चाह निःसंदेह ईश्वर अशान्ति करने वालें को मित्र नही रखता (77)

बोला कि यह धन मुझे मेरे ज्ञान के बल से मिला है क्या उस को ज्ञात नही कि ईश्वर ने उससे पहले बहुत सी जातियां जो उससे शक्ति में बढ़ कर और दल में उससे अधिक थी वध कर डाली है, और पापीयों से उनको पापों के बारे में पूछा नही जाएगा (वह तो लिखे जा रहे हैं) (78)

एक दिन कारून अपनी जाति के सामने बड़े ठाट बाट से निकला जो लोग दुनिया के इच्छुक थे वह उसे देख कर कहने लगे यदि हमें भी वही धन मिलता जो कारून को मिला है वह बड़ा भाग्य शाली है (79)

परन्तु जिन लोगों को ज्ञान दिया गया था वह बोले दुख तुम्हारी दशा पर (क्या तुम नही जानते कि) आस्तिको और सत्कर्म करने वालों के लिए ईश्वर के यहां जो फल है वह उससे कही उत्तम है और वह केवल धैर्य करने वालों को ही मिलेगा (80)

अतः हमारे नियम ने कारून को और उसके भवन को धरती में धंसा दिया तो उसके सहायको में कोई ऐसा न था जो ईश्वर के मुकाबले में उसकी सहायता को आता और न वह स्वयं ही अपनी सहायता कर सकता (81)

और जो लोग कामना कर रहे थे प्रातः को कहने लगे हाए विपत्ति ईश्वर ही तो है जो अपने भक्तों में उसकी जीविका विशाल कर देता है जो शुभ कर्म

کہ تم کو رات لادے جس میں تم آرام کرو تو کیا تم دیکھتے نہیں (۷۲)

اور اس نے اپنی رحمت سے تمہارے لئے رات اور دن کو بنایا تا کہ تم رات میں آرام کرو اور دن میں اس کا فضل تلاش کرو اور تا کہ فرمانبرداری کرو (۷۳)

اور جس دن وہ ان کو پکارے گا اور کہے گا کہ میرے وہ شریک جن کا تمہیں دعویٰ تھا کہاں ہیں جو تم نے بنائے تھے (۷۴)

اور ہم ہر ایک امت میں سے گواہ نکال لیں گے پھر کہیں گے کہ اپنی دلیل پیش کرو تو وہ جان لیں گے کہ سچ بات اللہ کی ہے اور جو کچھ وہ افترا کیا کرتے تھے ان سے جاتا رہے گا (۷۵)

واقعہ یہ ہے کہ قارون موسیٰ کی قوم کا ایک فرد تھا (لیکن دولت کے غرور نے) اس کو قوم کے خلاف بغاوت پر آمادہ کر دیا تھا اور ہم نے اس کو اتنے خزانے دے رکھے تھے کہ ان کی کنجیاں ایک طاقت ور پٹھا پہلوان مشکل سے اٹھا سکتا تھا اس کی قوم کے لوگوں نے اس سے کہا اتنا نہ اترا، یقین کرو کہ اللہ اترانے والوں کو پسند نہیں کرتا (۷۶)

اور اللہ نے جو مال تجھ کو دیا ہے اس سے آخرت کا گھر بنانے کی فکر کر اور دنیا سے بھی اپنا حصہ نہ بھلا اور جس طرح اللہ نے تجھ پر احسان کیا ہے تو بھی اللہ کے بندوں پر احسان کر اور ملک میں فساد نہ چاہ بے شک اللہ فساد کرنے والوں کو دوست نہیں رکھتا (۷۷)

بولا کہ یہ مال مجھے میرے علم کے زور سے ملا ہے کیا اس کو معلوم نہیں کہ اللہ نے اس سے پہلے بہت سی امتیں جو اس سے قوت میں بڑھ کر اور جمعیت میں اس سے زیادہ تھیں ہلاک کر ڈالی ہیں اور گنہگاروں سے ان کے گناہوں کے بارے میں پوچھا نہیں جائے گا (وہ تو لکھے جا رہے ہیں) (۷۸)

ایک روز قارون اپنی قوم کے سامنے بڑے ٹھاٹھ باٹ سے نکلا جو لوگ دنیا کے طالب تھے وہ اسے دیکھ کر کہنے لگے کاش ہمیں بھی وہی مال ملتا جو قارون کو ملا ہے وہ بڑا خوش نصیب ہے (۷۹)

لیکن جن لوگوں کو علم دیا گیا تھا وہ بولے افسوس تمہارے حال پر (کیا تم نہیں جانتے کہ) مومنوں اور نیک کام کرنے والوں کے لئے اللہ کے یہاں جو ثواب ہے وہ اس سے کہیں بہتر ہے اور وہ صرف صبر کرنے والوں کو ہی ملے گا (۸۰)

پس ہمارے قانون نے قارون کو اور اس کے محل کو زمین میں دھنسا دیا تو اس کے مددگاروں میں کوئی ایسا نہ تھا جو اللہ کے مقابلہ میں اس کی مدد کو آتا اور نہ وہ خود ہی اپنی مدد کر سکا (۸۱)

اور وہ لوگ جو کل اس کے مرتبہ پر پہنچنے کی آرزو کر رہے تھے صبح کو کہنے لگے ہائے شامت اللہ ہی تو ہے جو اپنے بندوں

میں سے اس کا رزق کشادہ کر دیتا ہے جو نیک عمل کر کے خود چاہتا ہے اور جو اپنے بُرے عمل سے چاہتا ہے اس کا تنگ کر دیتا ہے (جیسے قارون کا ہو گیا) اگر اللہ ہم پر احسان نہ کرتا تو ہمیں بھی دھنسا دیتا کیا دیکھتے نہیں کہ نافرمانوں کو کبھی کامیابی نہیں ملتی (۸۲)

करके स्वयं चाहता है और जो अपने बुरे कर्म से चाहता है उसका तंग कर देता है (जैसे कारून का हो गया) यदि ईश्वर हम पर उपकार न करता तो हमें भी धंसा देता, क्या देखते नही कि अवज्ञाकारो को कभी सफलता नही मिलती (82)

آخرت کا یہ بھلا گھر ہم ان ہی کے لئے مقرر کر دیتے ہیں جو زمین میں او نچائی بڑائی اور فخر نہیں کرتے نہ فساد کی چاہت رکھتے ہیں اور نیک انجام تو پرہیز گاروں ہی کا ہے (۸۳)

परलोक का यह अच्छा घर हम उन ही के लिए निश्चित करते है जो पृथ्वी में ऊंचाई और बड़ाई घमण्ड नही करते न अशान्ति की इच्छा रखते है और अच्छा अन्त तो सदाचारीयों ही का है (83)

جو کوئی بھلائی لے کر آئے گا اس کے لئے اس سے بہتر بھلائی ہے اور جو کوئی بُرائی لے کر آئے گا تو (وہ سمجھ لے کہ) بُرائی کرنے والوں کو ویسا ہی بدلہ ملے گا جیسے وہ کام کرتے تھے (۸۴)

जो कोई भलाई लेकर आएगा उस के लिए उससे अच्छी भलाई है और जो कोई बुराई लेकर आएगा तो (वह समझ ले कि) बुराई करने वालों को वैसा ही बदला मिलेगा जैसे वह कार्य करते थे (84)

بےشک جس نے آپ پر قرآن فرض کیا ہے وہ تمہیں پھیر لے جائے گا جہاں آپ جانا چاہتے ہو کامیابی کی جگہ پر تو آپ فرماؤ میرا رب خوب جانتا ہے اسے جو ہدایت لایا اور جو کھلی گمراہی میں ہے (۸۵)

निःसंदेह जिसने आप पर कुरआन अनिवार्य किया है वह आपको फैर ले जाएगा जहां आप जाना चाहते हो सफलता के स्थान पर तो आप कह दो मेरा रब भलि भांति जानता है उसे जो आस्था लाया और जो भ्रष्ट है (85)

آپ کو تو کبھی اس کا خیال بھی نہ گزرا تھا کہ آپ کی طرف کتاب نازل فرمائی جائے گی لیکن یہ آپ کے رب کی مہربانی سے نازل ہوئی تو آپ ہرگز کافروں کے مددگار نہ ہونا (۸۶)

आपको तो कभी इसकी कल्पना भी न आई थी कि आपकी ओर पुस्तक प्रेषित की जाएगी, परन्तु यह आपके रब की कृपा से अवतरित हुई, तो आप कदापि नास्तिकों के सहायक न होना (86)

اور ایسا کبھی نہ ہونے پائے کہ اللہ کی آیات جب آپ پر نازل ہوں تو کفار آپ کو ان کی تبلیغ سے روک دیں اپنے رب کے دین کی طرف دعوت دو اور مشرکوں میں ہرگز شامل نہ ہونا (۸۷)

और ऐसा कभी न होने पाए कि ईश्वर की आयात जब आप पर अवतरित हों तो नास्तिक आप को उन के प्रचार से रोक दें अपने ईश्वर के धर्म की ओर निमंत्रण दो और अनेकेश्वर वादीयों में कदापि सम्मिलित न होना (87)

اور اللہ کے ساتھ کسی اور معبود کو نہ پکارنا (جیسے کافر کہتے ہیں) کوئی الٰہ نہیں تو سنو یقیناً اللہ ہے اور اس کی ذات کے سوا ہر چیز فنا ہونے والی ہے اسی کا حکم ہے اور اسی کی طرف تم لوٹ کر جاؤ گے (۸۸)

और ईश्वर के साथ और पूज्य को न पुकारना (जैसे नास्तिक कहते है) कोई ईश्वर नही (तो सुनो) निःसंदेह ईश्वर है और उसके अस्तित्व के अतिरिक्त हर वस्तु नष्ट होने वाली है, उसी का आदेश है और उसी की ओर तुम लोट कर जाओगे (88)

سورت عنکبوت (۲۹) مکی

सूरत अनकबूत मक्की 29

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الٓمٓ اے محمدؐ (۱) کیا لوگوں نے یہ سمجھ لیا ہے کہ صرف اس دعوے پر کہ ہم ایمان لے آئے ہیں وہ چھوڑ دیئے جائیں گے اور ان کی آزمائش نہ ہوگی (۲)

अलिफ लाम मीम, ऐ मुहम्मद स0 (1) क्या लोगों ने यह समझ लिया है कि केवल इस वाद पर कि हम विश्वास ले आए है वह छोड़ दिए जाएंगे और उनकी परिक्षा न होगी (2)

اور جو لوگ ان سے پہلے ہو چکے ہیں ہم نے ان کو بھی (مصیبت میں مبتلا کر کے) آزمایا تھا (اور اُن کو بھی آزمائیں گے) سو اللہ ان کو ضرور ظاہر کرے گا جو سچے ہیں اور اُن کو بھی جو جھوٹے ہیں (۳)

और जो लोग उनसे पहले हो चुके है हमने उनको भी (संकट में गृस्त करके) परिक्षा की थी (और उनकी भी परिक्षा करेंगे,) सो ईश्वर उनको अवश्य प्रकट करेगा जो सच्चे है और उनको भी जो झूटे है (3)

کیا وہ لوگ جو بُرے کام کرتے ہیں یہ سمجھے ہوئے ہیں کہ وہ ہمارے قابو سے نکل جائیں گے کیسا غلط فیصلہ ہے جو وہ کر رہے ہیں (۴)

क्या वह लोग जो बुरे कर्म करते है यह समझे हुए हैं कि वह हमारे वश से निकल जाएंगे कैसा अनुचित निर्णय है जो वह कर रहे है (4)

जो व्यक्ति ईश्वर से मिलने की आस रखता हो तो (समझ ले कि) ईश्वर का निश्चित किया हुआ समय अवश्य आने वाला है (दुनिया और परलोक में) और वह सुनने वाला जानने वाला है (5)

جوشخص اللہ کی ملاقات کی امید رکھتا ہوتو (سمجھ لے کہ) اللہ کا مقرر کیا ہوا وقت ضرور آنے والا ہے (دنیا اور آخرت میں) اور وہ سننے والا جاننے والا ہے (۵)

और हर एक प्रयत्न करने वाला अपने ही भले की चेष्टा करता है और ईश्वर तो सारे संसार से निश्चिंत है (6)

اور ہر ایک کوشش کرنے والا اپنے ہی بھلے کی کوشش کرتا ہے اور اللہ تو سارے جہان سے بے پروا ہے (۶)

और जो लोग विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे, हम उनसे उनकी दुर्दशा को दूर कर देंगे और उन को उनके कर्मों का बहुत अच्छा फल देंगे (7)

اور جو لوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے ہم ان سے ان کی بدحالیوں کو دور کردیں گے اور اُن کو اُن کے اعمال کا بہت اچھا بدلہ دیں گے (۷)

हमने इन्सान को आदेश दिया है कि वह अपने माता पिता के साथ अच्छा व्यवहार करें परन्तु यदि वह तुझ पर दबाओ डाले कि तू मेरे साथ किसी ऐसे पूज्य को साझी कर ले जिसके विषय में तू नही जानता तो उनका कहना मत मानना (याद रखो) तुम सब को मेरी ही ओर लौटकर आना है, उस समय मैं तुमको बता दूंगा कि (दुनिया में) क्या करते रहे हो (8)

ہم نے انسان کو حکم دیا ہے کہ وہ اپنے والدین کے ساتھ اچھا سلوک کرے لیکن اگر وہ تجھ پر دباؤ ڈالیں کہ تو میرے ساتھ کسی ایسے معبود کو شریک کرے جس کے بارے میں تو نہیں جانتا تو ان کا کہنا مت ماننا (یاد رکھو) تم سب کو میری ہی طرف لوٹ کر آنا ہے اس وقت میں تم کو بتا دوں گا کہ تم (دنیا میں) کیا کرتے رہے ہو (۸)

जो धर्म वाले ऐसे होंगे जिन्होंने दुनिया में सत्कर्म किए हों उनको हम सदाचारी (भक्तों के साथ स्वर्ग) में प्रविष्ट करेंगे (9)

جو ایمان والے ایسے ہوں گے جنہوں نے دنیا میں نیک کام کئے ہوں ان کو ہم صالح (بندوں کے ساتھ جنت) میں داخل کریں گے (۹)

कुछ लोग ऐसे भी है जो (मुख से तो) कहेंगे हम ईश्वर पर विश्वास रखते है परन्तु जब उनको ईश्वर के मार्ग में सताया जाता है तो वह उस परिक्षा और सख़्ती को जो शत्रुओ की ओर से उन पर डाली जाएगी ईश्वर का भेजा हुआ कष्ट समझने लगेंगे और जब आप के ईश्वर की ओर से सहायता आ जाती है तो कहने लगेंगे हम तो तुम्हारे साथ ही है (इस प्रकार वह लोग अपना कपट छुपा नही सकते) क्या दुनिया वालों के हृदयों की स्थिति ईश्वर नही जानता? (10)

کچھ لوگ ایسے بھی ہیں جو (زبان سے تو) کہیں گے ہم اللہ پر ایمان رکھتے ہیں لیکن جب ان کو اللہ کی راہ میں ستایا جاتا ہے تو وہ اس آزمائش اور سختی کو جو دشمنوں کی طرف سے ان پر ڈالی جائے گی اللہ کا بھیجا ہوا عذاب سمجھنے لگیں گے اور جب آپ کے رب کی طرف سے مدد آجاتی ہے تو کہنے لگیں گے ہم تو تمہارے ساتھ ہی ہیں (اس طرح وہ لوگ اپنا نفاق چھپا نہیں سکتے) کیا دنیا والوں کے دلوں کا حال اللہ نہیں جانتا؟ (۱۰)

और निःसंदेह ईश्वर उनको भी प्रकट कर देगा जो धर्म वाले है और उन्हें भी जो कपटि है (उनके कर्मों से) (11)

اور یقیناً اللہ ان کو بھی ظاہر کردے گا جو ایمان والے ہیں اور انہیں بھی جو منافق ہیں (ان کے عملوں سے) (۱۱)

जो लोग काफ़िर है वह इमान वालो से कहते है हमारे ढंग धर्म का अनुकरण करो (यदि तुम उसे पाप समझते हो तो उसकी चिन्ता न करो) हम तुम्हारे पापों का भार उठा लेंगे यद्यपि उनके पापों में से कुछ भी वह अपने ऊपर नही ले सकते वह निःसंदेह झूटे है कोई किसी का भार नही उठा सकता (12)

جو لوگ کافر ہیں وہ ایمان والوں سے کہتے ہیں ہمارے طریقے مذہب کی پیروی کرو (اگر تم اسے گناہ سمجھتے ہو تو اس کی پروا نہ کرو ہم تمہارے گناہوں کا بوجھ اٹھالیں گے حالانکہ ان کے گناہوں میں سے کچھ بھی وہ اپنے اوپر نہیں لے سکتے. وہ یقیناً جھوٹے ہیں کوئی کسی کا بوجھ نہیں اٹھا سکتے (۱۲)

हां वह लोग अपने पापों का भार अवश्य उठाएंगे और अपने भार के साथ और भी भार उठाएंगे और महप्रलय के दिन उनसे उन दोषारोपण के विषय में पूछा जाएगा जो वह बढ़ाते रहे थे (13)

ہاں وہ اپنے گناہوں کا بوجھ ضرور اٹھائیں گے اور اپنے بوجھ کے ساتھ اور بھی بوجھ اٹھائیں گے اور قیامت کے دن ان سے ان بہتانوں کے بارے میں پوچھا جائے گا جو وہ باندھتے رہے تھے (۱۳)

और यह सत्य है कि हम ने नूह को उनकी जाति की ओर भेजा और पचास कम एक हजार साल उनमे रहा (फिर भी जाति उन पर विश्वास नही लाई) अन्ततः उनको तूफ़ान ने आ पकड़ा क्योंकि वह दुष्ट थे (14)

اور یہ حقیقت ہے کہ ہم نے نوح کو ان کی قوم کی طرف بھیجا اور پچاس کم ایک ہزار برس ان میں رہا (پھر بھی قوم ایمان نہیں لائی) آخر کار ان کو طوفان نے آ پکڑا کیونکہ وہ ظالم تھے (۱۴)

फिर हमने नूह को और उन लोगों को जो उसके साथ नाव में सवार थे बचा लिया और उसे (अर्थात नाव को) संसार वालों के लिए शिक्षा बना कर छोड़ा (15)

پھر ہم نے نوح کو اور ان لوگوں کو جو اس کے ساتھ کشتی میں سوار تھے بچا لیا اور اسے (یعنی کشتی کو) اہل عالم کے لئے عبرت بنا کر چھوڑا (۱۵)

और इब्राहीम की घटना याद करो जब उन्होंने अपनी जाति से कहा कि ईश्वर की पूजा करो और उससे डरो यदि तुम समझ रखते हो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है (16)

اور ابراہیم کا واقعہ یاد کرو جب انہوں نے اپنی قوم سے کہا کہ اللہ کی عبادت کرو اور اس سے ڈرو اگر تم سمجھ رکھتے ہو تو یہ تمہارے حق میں بہتر ہے (۱۶)

तो तुम ईश्वर को छोड़कर मूर्तियों को पूजते हो और झूट बाधते हो तो जिन लोगों को तुम ईश्वर के सिवा पूजते हो वह तुम को जीविका देने का अधिकार नही रखते, अतः ईश्वर के यहां से जीविका मांगों और उसी की पूजा करो और उसी के आज्ञाकारी बनो उसी की ओर तुम लोट कर जाओगे (17)

تم تو اللہ کو چھوڑ کر بتوں کو پوجتے ہو اور جھوٹ باندھتے ہو تو جن لوگوں کو تم اللہ کے سوا پوجتے ہو وہ تم کو رزق دینے کا اختیار نہیں رکھتے پس اللہ کے یہاں سے رزق طلب کرو اور اسی کی عبادت کرو اور اسی کی فرمانبرداری کرو اسی کی طرف تم لوٹ کر جاؤ گے (۱۷)

और यदि तुम (मुझे) झुटलाओ तो तुमसे पहले भी समुदाय झुटला चुके है और ईशदूत का दायित्व खोल कर सुना देने के सिवा और कुछ नही (18)

اور اگر تم (مجھے) جھٹلاؤ تو تم سے پہلے بھی امتیں جھٹلا چکی ہیں اور رسول کے ذمہ کھول کر سنا دینے کے سوا اور کچھ نہیں (۱۸)

क्या उन्होंने नही देखा कि ईश्वर किस प्रकार पहली बार रचना को उत्पन्न करता है और फिर सब को महाप्रलय में पुनः उत्पन्न करेगा यह ईश्वर को सरल है (19) {13:5, 18:48, 21:24;30:11,27}

کیا انہوں نے نہیں دیکھا کہ اللہ کس طرح پہلی بار خلقت کو پیدا کرتا ہے اور پھر سب کو حشر میں دوبارہ پیدا کرے گا یہ اللہ کو آسان ہے (۱۹) [۱۳:۵؛ ۱۸:۴۸؛ ۲۱:۲۴؛ ۳۰:۱۱؛ ۳۰:۲۷]

कहदो कि देश में चलो फिरो और देखो कि उसने किस प्रकार रचना को पहली बार उत्पन्न किया है, फिर ईश्वर ही दूसरी बार उत्पन्न करेगा, निःसंदेह ईश्वर हर वस्तु के अनुमान निर्धारित करने वाला है (20)

کہہ دو کہ ملک میں چلو پھرو اور دیکھو کہ اس نے کس طرح خلقت کو پہلی بار پیدا کیا ہے پھر اللہ ہی دوسری بار پیدا کرے گا۔ بے شک اللہ ہر چیز کے اندازے مقرر کرنے والا ہے (۲۰)

वह दण्ड उसको देगा जो अपने बुरे कर्मों से स्वयं चाहेगा, और दया उस पर करेगा जो अपने सत्कर्मों से स्वयं चाहेगा, और उसकी ओर तुम लोटाए जाओगे (21)

وہ عذاب اس کو دے گا جو اپنے بُرے عملوں سے خود چاہے گا اور رحم اس پر کرے گا جو اپنے نیک عملوں سے خود چاہے گا اور اسی کی طرف تم لوٹائے جاؤ گے (۲۱)

और तुम (अपनी चालाकियों से) ईश्वर को न तो पृथ्वी में विवश कर सकते हो और न आकाश में (याद रखो) ईश्वर के सिवा न तो तुम्हारा कोई मित्र हे और न सहायक (22)

اور تم (اپنی چالاکیوں سے) اللہ کو نہ تو زمین میں عاجز کر سکتے ہو اور نہ آسمانوں میں (یاد رکھو) اللہ کے سوا نہ تو تمہارا کوئی ولی ہے اور نہ مددگار (۲۲)

और जो लोग ईश्वर की आयतों से और प्रलय के दिन उसके सामने उपस्थित होने से इनकार कर रहे है, वह वही लोग है जो मेरी करूणा से निराश हो चुके है, और वही है जिन को पीड़ा देने वाला कष्ट होगा (23)

اور جو لوگ اللہ کی آیتوں سے اور (قیامت کے روز) اس کے سامنے حاضر ہونے سے انکار کر رہے ہیں وہ وہی لوگ ہیں جو میری رحمت سے مایوس ہو چکے ہیں اور وہی ہیں جن کو دردناک عذاب ہوگا (۲۳)

तो इब्राहीम की जाति का उत्तर इसके अतिरिक्त कुछ न था कि कहने लगे इसको मार डालो या जला डालो (अतः उन्होंने इब्राहीम को आग में डाल दिया) परन्तु ईश्वर ने उसको आग से बचा लिया इस (घटना) में उन लोगों के लिए बड़े चिन्ह है जो विश्वास रखते है (24)

تو ابراہیم کی قوم کا جواب اس کے سوا کچھ نہ تھا کہ کہنے لگے اس کو مار ڈالو یا جلا ڈالو (چنانچہ انہوں نے ابراہیم کو آگ میں ڈال دیا) لیکن اللہ نے اس کو آگ سے بچا لیا اس (واقعہ) میں ان لوگوں کے لئے نشانیاں ہیں جو ایمان رکھتے ہیں (۲۴)

और इब्राहीम ने कहा कि तुम जो ईश्वर को छोड़ कर मूर्तियों को ले बेठे हो तो दुनिया के जीवन में आपस की मित्रता के लिए (परन्तु) फिर क्यामत के दिन एक दूसरे (की मित्रता) से इनकार कर दोगे और तुम्हारा स्थान नर्क होगा और कोई तुम्हारा

اور ابراہیم نے کہا کہ تم جو اللہ کو چھوڑ کر بتوں کو لے بیٹھے ہو تو دنیا کی زندگی میں آپس کی دوستی کے لئے (مگر) پھر قیامت کے دن ایک دوسرے (کی دوستی) سے انکار کر دو گے اور ایک دوسرے پر لعنت بھیجو گے اور تمہارا ٹھکانا

सहायक न होगा (25)

دوزخ ہوگا اور کوئی تمہارا مددگار نہ ہوگا (۲۵)

अतः उन पर लूत विश्वास लाए और इब्राहीम ने (उस देश को छोड़ते समय) कहा मैं अपने रब की ओर पलायन कर रहा हूं (अर्थात उसके आदेशानुसार) वह सब पर प्रमुत्व शाली और युक्ति वाला है (26)

پس ان پر لوط ایمان لائے اور ابراہیم نے (اس سرزمین کو چھوڑتے وقت) کہا میں اپنے رب کی طرف ہجرت کر رہا ہوں (یعنی اس کے حکم کے مطابق) وہ سب پر غالب ہے اور حکمت والا ہے (۲۶)

और हमने उनको इस्हाक और याकूब प्रदान किए और उनकी सन्तान में ईशदौत्य और पुस्तक (का क्रम) जारी कर दिया और उनको दुनिया में भी उनके सत्कर्मों का फल दिया और वह परलोक में भी निःसंदेह सदाचारीयों में होंगे (27) {2:124, 21:72, 57:26, 11:71}

اور ہم نے ان کو اسحاق اور یعقوب عطا فرمائے اور ان کی اولاد میں رسالت اور کتاب (کا سلسلہ) جاری کر دیا اور ان کو دنیا میں بھی ان کی نیکیوں کا صلہ دیا اور وہ آخرت میں بھی یقیناً نیک لوگوں میں ہوں گے (۲۷) [۲:۱۲۴؛ ۲۱:۷۲؛ ۵۷:۲۶؛ ۱۱:۷۱]

और लूत को (उसकी जाति की ओर भेजा) जब उसने उन लोगों से कहा तुम कैसी निर्लज्जता में पड़े हो? (विचार करो) तुमसे पहले दुनिया वालों में से किसी (जाति ने ऐसा अनुचित) कर्म नहीं किया (28)

اور لوط کو (اس کی قوم کی طرف بھیجا) جب اس نے ان لوگوں سے کہا تم کیسی بے حیائی میں پڑے ہو؟ (غور کرو) تم سے پہلے دنیا والوں میں سے کسی (قوم نے ایسی غلط) حرکت نہیں کی (۲۸)

अतः तुम्हें क्या हो गया है कि (स्त्रीयों को छोड़कर) लड़कों की ओर आकृष्ट होते हो और यात्रियों को लूट लेते हो और अपनी सभाओं में अनुचित कर्म करते हो (शिक्षा स्वीकार करने के स्थान) उस की जाति के पास यदि कोई उत्तर था तो यह कि उन्होंने कहा (ऐ लूत) यदि तुम सच्चे हो तो हम पर ईश्वर की यातना ले आओ (29)

آخر تمہیں کیا ہو گیا ہے (عورتوں کو چھوڑ کر) لڑکوں کی طرف مائل ہوتے ہو اور مسافروں کو لوٹ لیتے ہو اور اپنی مجلسوں میں ناپسندیدہ کام کرتے ہو (نصیحت قبول کرنے کے بجائے) اس کی قوم کے پاس اگر کوئی جواب تھا تو یہ کہ انہوں نے کہا (اے لوط) اگر تم سچے ہو تو ہم پر اللہ کا عذاب لے آؤ (۲۹)

लूत ने (जब समुदाय की अवज्ञा का यह हाल देखा तो) तो प्रार्थना की ऐ ईश्वर इन दुष्टों के सम्मुख (मुकाबले में) मेरी सहायता कर (30)

لوط نے (جب قوم کی سرکشی کا یہ حال دیکھا تو) تو دعا مانگی اے اللہ ان مفسدوں کے مقابلہ میں میری مدد کر (۳۰)

और जब हमारे फरिश्ते इब्राहीम के पास पुत्रों की शुभ सूचना लेकर आए उसके पश्चात कहने लगे कि हम इस नगरी के लोगों को वध कर देने वाले हैं (31)

اور جب ہمارے فرشتے ابراہیم کے پاس بیٹوں کی خوشخبری لے کر آئے اس کے بعد کہنے لگے کہ ہم اس بستی کے لوگوں کو ہلاک کر دینے والے ہیں کہ یہاں کے رہنے والے نافرمان ہیں (۳۱)

इब्राहीम ने कहा इस (बस्ती) में तो लूत भी है, फरिश्तों ने उत्तर दिया हम जानते हैं कि वहां कौन है (लूत पर कोई आंच न आएगी) हम उसे और उसके घर वालों को बचा लेंगे (परन्तु) उस की पत्नी (न बच सकेगी) वह पीछे रह जाने वालों में होगी (32)

ابراہیم نے کہا اس (بستی) میں تو لوط بھی ہیں فرشتوں نے جواب دیا ہم جانتے ہیں کہ وہاں کون کون ہے (لوط پر کوئی آنچ نہ آئے گی) ہم اسے اور اس کے گھر والوں کو بچا لیں گے (مگر) اس کی بیوی (نہ بچ سکے گی) وہ پیچھے رہ جانے والوں میں ہوگی (۳۲)

(इस वार्ता के पश्चात) जब हमारे फरिश्ते लूत के पास पहुंचे तो वह (उन्हें देख कर) अधिक व्याकूल और तंग हृदय हुआ तो फरिश्तों ने कहा न डरो और न शोक करो हम तुम्हें और तुम्हारे घर वालों को बचा लेंगे परन्तु तुम्हारी पत्नी न बच सकेगी वह पीछे रह जाने वालों में होगी (33)

(اس گفتگو کے بعد) جب ہمارے فرشتے لوط کے پاس پہنچے تو وہ (انہیں دیکھ کر) سخت پریشان اور تنگ دل ہوا تو فرشتوں نے کہا نہ ڈرو اور نہ رنج کرو ہم تمہیں اور تمہارے گھر والوں کو بچا لیں گے مگر تمہاری بیوی نہ بچ سکے گی وہ پیچھے رہ جانے والوں میں ہوگی (۳۳)

हम उस नगरी के रहने वालों पर आकाश से कष्ट अवतरित करन वाले हैं क्योंकि यह दुराचार करते रहे हैं (34)

ہم اس بستی کے رہنے والوں پر آسمان سے عذاب نازل کرنے والے ہیں کیونکہ یہ بدکرداری کرتے رہے ہیں (۳۴)

और हम ने बुद्धि वालों के लिए इस नगरी के नष्ट हुए चिन्हों से एक स्पष्ट चिन्ह छोड़ा है (35)

اور ہم نے عقل والوں کے لئے اس بستی کے تباہ شدہ نشانیوں سے ایک کھلی نشانی چھوڑی ہے (۳۵)

और मद्यन की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा तो उन्होंने कहा ऐ जाति ईश्वर की पूजा करो और क़्यामत के दिन के आने की आशा रखो और देश में अशान्ति करते न फिरो (36)

اور مدین کی طرف ان کے بھائی شعیب کو بھیجا تو انہوں نے کہا اے قوم اللہ کی عبادت کرو اور قیامت کے دن کے آنے کی امید رکھو اور ملک میں فساد نہ مچاؤ (۳۶)

परन्तु उन्होंने उनको झूठा समझा सो उनको भूचाल ने आ पकड़ा और वह प्रातः को अपने घरो में औंधे पड़े रह जाए (37)

مگر انہوں نے ان کو جھوٹا سمجھا سو ان کو زلزلے نے آ پکڑا اور وہ صبح کو اپنے گھروں میں اوندھے پڑے رہ گئے (۳۷)

और (इसी प्रकार रसूलों को झुठलाने के अपराध में हम ने) आद और समूद को (वध कर दिया) और उनके (ध्वस्त) घर तुम्हारी आंखो के सामने है (वह वह लोग हैं कि) शैतान ने उनके कर्मों को उनकी दृष्टि में सुसज्जित कर दिया था और (इस प्रकार) उन्हें (जीवन के) सीधे मार्ग से रोक दिया था यद्यपि (रसूलों का बताया हुआ सीधा मार्ग) उनकी दृष्टि के सामने था वह देख रहे थे (38)

اور (اسی طرح رسولوں کو جھٹلانے کے جرم میں ہم نے) عاد اور ثمود کو (ہلاک کر دیا) اور ان کے (ویران) گھر تمہاری آنکھوں کے سامنے ہیں (وہ وہ لوگ ہیں کہ) شیطان نے ان کے اعمال کو ان کی نظر میں آراستہ کر دیا تھا اور (اس طرح) انہیں (زندگی کے) سیدھے رستے سے روک دیا تھا حالانکہ (رسولوں کا بتایا ہوا سیدھا رستہ) ان کی نظروں کے سامنے تھا وہ دیکھ رہے تھے (۳۸)

और (इसी प्रकार हमारे नियम ने) कारून फ़िरऔन और हामान को भी (नष्ट कर दिया) उनके पास मूसा स्पष्ट चिन्ह लेकर आया था, परन्तु वह लोग देश में घमण्डी हो गए थे और वह हमारे वश से निकल जाने वाले न थे (39)

اور (اسی طرح ہمارے قانون نے) قارون، فرعون اور ہامان کو بھی (ہلاک کر دیا) ان کے پاس موسیٰ کھلی نشانیاں لے کر آیا تھا لیکن وہ لوگ ملک میں مغرور ہو گئے تھے اور وہ ہمارے قابو سے نکل جانے والے نہ تھے (۳۹)

तो हमने सबको उनके पापों के कारण पकड़ लिया सो उनमें कुछ तो ऐसे थे जिन पर हमने पत्थरो की वर्षा की और कुछ ऐसे थे जिन को चिंघाड़ ने आ पकड़ा और कुछ ऐसे थे जिन को हम ने धरती में धंसा दिया और कुछ ऐसे थे जिन को तल्लीन कर दिया और ईश्वर ऐसा न है कि उन पर अन्याय करता परन्तु वही अपने आप पर अन्याय करते थे (40)

تو ہم نے سب کو ان کے گناہوں کے سبب پکڑ لیا سو ان میں کچھ تو ایسے تھے جن پر ہم نے پتھروں کا مینہ برسایا اور کچھ ایسے تھے جن کو چنگھاڑ نے آ پکڑا اور کچھ ایسے تھے جن کو ہم نے زمین میں دھنسا دیا اور کچھ ایسے تھے جن کو غرق کر دیا اور اللہ ایسا نہ ہے کہ ان پر ظلم کرتا لیکن وہی اپنے آپ پر ظلم کرتے تھے (۴۰)

जिन लोगों ने ईश्वर के सिवा (औरों को) सहायक बना रखा है उनकी उपमा मकड़ी जैसी है कि वह भी एक (प्रकार का) घर बनाती है और कुछ शंका नही कि सब घरों में से निर्बल घर मकड़ी का होता है, यदि उन लोगों को ज्ञात होता (कि उनके मित्र ऐसे निर्बल हैं जैसे मकड़ी का जाला) (41)

جن لوگوں نے اللہ کے سوا (اوروں کو) اولیا بنا رکھا ہے ان کی مثال مکڑی کی سی ہے کہ وہ بھی ایک (طرح کا) گھر بناتی ہے اور کچھ شک نہیں کہ تمام گھروں میں سے کمزور گھر مکڑی کا ہوتا ہے کاش ان لوگوں کو معلوم ہوتا (کہ ان کے دوست ایسے کمزور ہیں جیسے مکڑی کا جالا) (۴۱)

वह जिस वस्तु को ईश्वर के अतिरिक्त पुकारते हैं वह कुछ ही हो ईश्वर उसे जानता है और वह प्रभुत्वशाली और युक्ति वाला है (42)

وہ جس چیز کو اللہ کے سوا پکارتے ہیں وہ کچھ ہی ہو اللہ اسے جانتا ہے اور وہ غالب حکمت والا ہے (۴۲)

और यह उपमाएं हम लोगों को समझाने के लिए वर्णन करते हैं, परन्तु इन को वही लोग समझते हैं जो बुद्धि से काम लेते हैं (43)

اور یہ مثالیں ہم لوگوں کو سمجھانے کے لئے بیان کرتے ہیں مگر ان کو وہی لوگ سمجھتے ہیں جو عقل سے کام لیتے ہیں (۴۳)

ईश्वर ने आकाशों और पृथ्वी को युक्ति के साथ रचा है कुछ शंका नही कि विश्वास वालों के लिए इसमें चिन्ह है (44)

اللہ نے آسمانوں اور زمین کو حکمت کے ساتھ پیدا کیا ہے کچھ شک نہیں کہ ایمان والوں کے لئے اس میں نشانی ہے (۴۴)

पारा (21) उतलु माऊहिया

پارہ (۲۱) اتل ما اوحی

(ऐ मुहम्मद स0!) पढ़ो उस वाणी को जो तुम्हारी ओर पुस्तक से प्रेषित की गई है और नमाज़ स्थापित करो निःसंदेह नमाज (ईश्वर का जप है) निर्लज्जता और दुष्कर्मों से रोकती है, और निःसंदेह ईश्वर का जप नमाज बड़ी वस्तु है ईश्वर जानता है जो तुम करते हो,

(اے محمدؐ!) تلاوت کرو اس وحی کی جو تمہاری طرف الکتاب سے بھیجی گئی ہے اور نماز قائم کرو یقیناً نماز (اللہ کا ذکر ہے) بے حیائی اور برے کاموں سے روکتی ہے اور یقیناً اللہ کا ذکر نماز بڑی چیز ہے اللہ جانتا ہے کہ جو کچھ تم کرتے ہو (۴۵)

नोट- नमाज पढ़ना भी है और स्थापित करना भी नमाज मस्जिद में

نوٹ:۔ نماز پڑھنا بھی ہے اور قائم کرنا بھی۔ نماز مسجد میں پڑھی جاتی ہے جو دن

میں پانچ وقت ہے نماز قائم کرنے کا مطلب یہ ہے کہ جو مسجد میں نماز پڑھتے وقت قرآن سے پڑھا اس کو مسجد سے باہر آ کر اپنے کاروبار میں اخلاق رہن سہن اور فرض منصبی میں عمل کرنا ہر بُرائی سے بچنا اللہ کے ہر حکم کی پابندی کرنا. مثلاً نماز میں پڑھا کہ ناپ تول میں کمی بیشی نہ کرو تو باہر آ کر اپنی دکان پر تول پوری دیں اگر پورا دیا تو نماز قائم ہوگئی اور کمی بیشی کی تو نماز قائم نہ کی اسی طرح ہر کام میں اللہ کے حکم کے مطابق کرنا ہی نماز قائم کرنا ہے (۲۳:۱تا۱۰؛ ۷۰:۲۲تا۳۵)

पढ़ी जाती है जो दिन में पांच समय है, नमाज स्थापित करने का अर्थ यह है कि जो मस्जिद में नमाज पढ़ते समय कुरआन से पढ़ा उसको मस्जिद से बाहर आकर अपने कारो बार में अपने चरित्र में रहन सहन और मुख्य कर्तव्य में व्यवहार करें हर बुराई से बचना ईश्वर के हर आदेश का पालन करना, उदाहरणतः नमाज में पढ़ा कि नाप तौल में कमि बैशी न करो तो बाहर आ कर अपनी दुकान पर तौल पूरी दें यदि पूरा दिया तो नमाज स्थापित हो गई और कमि बैशी की तो नमाज स्थापित न की इसी प्रकार हर कार्य में ईश्वर के आदेशानुसार करना ही नमाज स्थापित करना है {23:1से10, 70:22से35}

اور اہل کتاب سے بحث نہ کرو مگر ایسے طریقے سے کہ نہایت اچھا ہو ہاں جو اُن میں سے بے انصافی کریں ان کے ساتھ اسی طرح بات کرو (جیسا اللہ نے بتایا ہے) اور کہہ دو کہ جو (کتاب) ہم پر اتری ہے اور جو (کتابیں) تم پر اتری ہیں ہم سب پر ایمان رکھتے ہیں اور ہمارا اور تمہارا معبود ایک ہی ہے اور ہم اس کے فرمانبردار ہیں (۴۶)

और पुस्तक वालों से वितर्क न करो परन्तु ऐसे ढंग से कि अति अच्छा हो, हां जो उनमें से अन्याय करे तो उनके साथ उसी प्रकार बात करो (जैसा ईश्वर ने बताया है) और कह दो कि जो (पुस्तक) हम पर उतरी है और जो (पुस्तकें) तुम पर उतरी है हम सब पर विश्वास रखते है और हमारा और तुम्हारा ईश्वर एक ही है और हम उसके आज्ञाकारी है (46)

اور اسی طرح ہم نے آپ کی طرف یہ کتاب نازل کی ہے اس لئے وہ لوگ جنہیں ہم نے (اس سے پہلے) کتاب دی تھی وہ اس کتاب (یعنی قرآن پر) ایمان لے آتے ہیں اور ان (مشرکین) میں سے بھی بعض لوگ (جو سمجھدار ہیں) اس کتاب پر ایمان لے آتے ہیں اور ہماری آیتوں سے صرف وہی لوگ انکار کرتے ہیں جن کے دلوں کو کفر رچ گیا ہے (۴۷)

और इसी प्रकार हमने आपकी ओर यह पुस्तक अवतरित की है, अतः वह लोग जिन्हें हमने (इससे पहले) पुस्तक दी थी वह इस पुस्तक (अर्थात कुरआन पर) विश्वास ले आते हैं और उन (अनेकेश्वर वादियों) में से भी कतिपय लोग (जो समझदार हैं) इस पुस्तक पर विश्वास ले आते हैं और हमारी आयतों से केवल वही लोग इनकार करते हैं जिनके मनों को कुफ्र रच गया है (47)

اور تم اس سے پہلے کوئی کتاب نہیں پڑھتے تھے اور نہ لکھتے تھے اپنے ہاتھ سے اگر ایسا ہوتا تو اہل باطل ضرور شک کرتے (مگر نبوت ملنے کے بعد پڑھتے اور لکھتے ہو) (۴۸)

और आप इससे पहले कोई पुस्तक नही पढ़ते थे और न लिखते थे अपने हाथ से यदि ऐसा होता तो मिथ्या रोपी अवश्य शंका करते (परन्तु नबुवत मिलने के बाद पढ़ते लिखते हो) (48)

نوٹ:۔ اس آیت نے محمدؐ کو پڑھا لکھا ثابت کر دیا یعنی آپ نبوت ملنے سے پہلے کوئی کتاب دینی یا دنیوی نہ پڑھتے تھے اور نہ ان کے مضامین پڑھتے تھے جو مشہور کر رکھا ہے کہ محمدؐ اَن پڑھ تھے غلط ہے اس کی بحث پہلے ہو چکی ہے.

नोट- इस आयत ने मुहम्मद स0 को लिखा पढ़ा सिद्ध कर दिया अर्थात आप ईशदौत्य मिलने से पहले कोई पुस्तक धार्मिक या दुनियावी न पढ़ते थे और न उनके लेख लिखते थे, परन्तु ईशदौत्य मिलने के बाद लिखते पढ़ते थे, जो प्रसिद्ध है कि मुहम्मद स0 अनपढ़ थे मिथ्या है इसकी विवेचना पहले हो चुकी है,

بلکہ یہ واضح اور روشن آیتیں ہیں ان لوگوں کے سینوں میں محفوظ ہیں جنہیں علم بخشا گیا ہے مگر ہماری آیتوں سے وہی لوگ انکار کرتے ہیں جو ظالم ہیں (۴۹)

अपितु यह स्पष्ट और उज्जवल आयतें है उन लोगों के वक्षों में सुरक्षित है जिन्हें ज्ञान प्रदान किया गया है, परन्तु हमारी धाराओ से वही लोग इनकार करते है जो अत्याचारी है (49)

اور کافر کہتے ہیں کہ اس پر اس کے پروردگار کی طرف سے نشانیاں کیوں نازل نہیں ہوئیں کہہ دو کہ معجزے تو اللہ ہی کے پاس ہیں اور میں تو کھلم کھلا خبردار کرنے والا ہوں (۵۰)

और काफिर कहते है कि इस पर इसके ईश्वर की ओर से चमत्कार क्यों अवतरित नही हुए कह दो कि चमत्कार तो ईश्वर ही के पास है और मैं तो खुल्लम खुल्ला सावधान करने वाला हूं (50)

کیا ان لوگوں کے لئے یہ کافی نہیں ہے کہ ہم نے آپ پر کتاب قرآن نازل کی جو اُن کو پڑھ کر سنائی جاتی ہے (یہ بہت بڑا معجزہ ہے) بے شک اس میں ان لوگوں کے لئے جن کے دلوں میں ایمان ہے رحمت اور نصیحت ہے (۵۱) [۳۹:۳۶]

क्या उन लोगों के लिए यह प्रयाप्त नही है कि हमने आप पर पुस्तक कुरआन प्रेषित की जो उनको पढ़ कर सुनाई जाती है (यह बहुत बड़ा चमत्कार है) निःसंदेह इसमें उन लोगों के लिए जिनके मनों में ईमान है अनुकम्पा है और शिक्षा है (51) {39:36}

(اگر وہ اب بھی نہیں مانتے تو) کہہ دو میرے اور تمہارے درمیان (فیصلہ کرنے کے لئے) اللہ ہی گواہ کافی ہے جو کچھ آسمانوں اور زمین میں ہے وہ سب کچھ جانتا ہے لیکن جو لوگ باطل کو مانتے ہیں اور اللہ سے انکار کرتے ہیں وہی نقصان اٹھانے والے ہیں (۵۲)

(यदि वह अब भी नही मानते तो) कहदो मेरे और तुम्हारे मध्य (निर्णय करने के लिए) ईश्वर ही साक्षी प्रयाप्त है वह सब कुछ जानता है, परन्तु जो लोग मिथ्या को मानते है और ईश्वर से इनकार करते है हानी उठाने वाले है (52)

और वह लोग आपसे यातना के लिए जल्दी कर रहें हैं यदि एक समय निश्चित न होता तो उन पर कष्ट आ भी गया होता और वह उन पर अचानक आ कर रहेगा और उनको ज्ञात भी न होगा (53)

اور وہ لوگ تم سے عذاب کے لئے جلدی کر رہے ہیں اگر ایک وقت مقرر نہ ہوتا تو ان پر عذاب آ بھی گیا ہوتا اور وہ ان پر ضرور اچانک آ کر رہے گا اور ان کو علوم بھی نہ ہوگا (۵۳)

नास्तिक लोग आपसे यातना के लिए जल्दी कर रहें हैं और नर्क तो नास्तिकों को घेर लेने वाला है (54) {26:90-91, 24:21, 39:19; 19:70}

کافر لوگ آپ سے عذاب کے لئے جلدی کر رہے ہیں اور دوزخ تو کافروں کو گھیر لینے والی ہے (۵۴) [۱۹:۷۰؛ ۲۶:۹۰-۹۱، ۲۴:۲۱، ۳۹:۱۹]

जिस दिन उनको कष्ट उनके ऊपर से और नीचे से ढंक लेगा और ईश्वर कहेगा कि जो कर्म तुम किया करते थे अब उनका स्वाद चखो (55) {5:2}

جس دن ان کو عذاب ان کے اوپر سے اور نیچے سے ڈھانک لے گا اور اللہ فرمائے گا کہ جو کام تم کیا کرتے تھے اب اُن کا مزہ چکھو (۵۵) [۵:۲]

ऐ मेरे बन्दों! जो मुझ पर विश्वास लाए हो यह मेरी पृथ्वी विशाल है मेरी ही पूजा करो (56)

اے میرے بندو! جو مجھ پر ایمان لائے ہو یہ میری زمین وسیع ہے میری ہی بندگی کرو (۵۶)

हर जीव को मृत्यू का स्वाद चखना है फिर मेरी ही ओर लौट कर आओगे (57)

ہر جان کو موت کا مزہ چکھنا ہے پھر تم سب میری ہی طرف لوٹ کر آؤ گے (۵۷)

और जो लोग विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे उनको हम स्वर्ग के ऊंचे ऊंचे भवनों में स्थान देंगे जिनके नीचे नहरें बहती होंगी वह उनमें सदेव रहेंगे, सत्कर्म करने वालो का कैसा अच्छा फल है (58)

اور جو لوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے ان کو ہم جنت کے اونچے اونچے محلوں میں جگہ دیں گے جن کے نیچے نہریں بہتی ہوں گی وہ ان میں ہمیشہ رہیں گے نیک عمل کرنے والوں کا کیسا اچھا بدلہ ہے (۵۸)

जो धैर्य करते हैं और अपने ईश्वर प भरोसा रखते हैं (59)

جو صبر کرتے ہیں اور اپنے رب پر بھروسہ رکھتے رہے (۵۹)

(मुसलमानों! यह ना सोचो कि यदि हम घर बार छोड़ कर किसी और देश में चले जाएं तो क्या खाएंगे) तो सुनों और बहुत से जानवर दाब्बाह है जो अपनी जीविका उठाए नही फिरते ईश्वर ही उनको जीविका देता है, और तुमको भी देता है और वह सुनने वाला जानने वाला है (60)

(مسلمانو! یہ نہ سوچو کہ اگر ہم گھر بار چھوڑ کر کسی اور ملک میں چلے جائیں تو کیا کھائیں گے) تو سنو اور بہت سے جانور دابہ ہیں جو اپنا رزق اٹھائے نہیں پھرتے اللہ ہی ان کو رزق دیتا ہے اور تم کو بھی دیتا ہے اور وہ سننے والا جاننے والا ہے (۶۰)

और यदि उनसे पूछो कि आकाशों और पृथ्वी को किसने उत्पन्न किया और सूर्य और चन्द्रमा को किसने तुम्हारे लिए अर्जित किया अर्थात तुम्हारी बेगार में लगा दिया है तो कह देंगे ईश्वर ने तो फिर वह कहां उल्टे जा रहे हैं (61)

اور اگر ان سے پوچھو کہ آسمانوں اور زمین کو کس نے پیدا کیا اور سورج اور چاند کو کس نے تمہارے لئے فراہم کیا یعنی تمہاری بیگار میں لگا دیا ہے تو کہہ دیں گے اللہ نے تو پھر وہ کہاں الٹے جا رہے ہیں (۶۱)

और ईश्वर ही अपने नियमानुसार जो अपने सत्कर्म से चाहता है उसकी जीविका विस्तृत कर देता है और जो अपने बुरे कर्मों से चाहता है उसकी जीविका तंग कर देता हे निःसन्देह ईश्वर हर वस्तु से अवगत है (62)

اور اللہ ہی اپنے قانون کے مطابق جو اپنے نیک عمل سے چاہتا ہے اس کی روزی فراخ کر دیتا ہے اور جو اپنے بُرے عملوں سے چاہتا ہے اس کی روزی تنگ کر دیتا ہے بے شک اللہ ہر چیز سے واقف ہے (۶۲)

और यदि आप उनसे पूछो कि आकाश से पानी किसने बरसाया फिर उससे धरती को उसके मारने के बाद जीवित किया तो कह देंगे कि ईश्वर ने (परन्तु फिर नकार करते हैं ईश्वर का) कह दो कि सब प्रशंसा ईश्वर के लिए है परन्तु उनमें अधिक नही समझते (63) {2:154}

اور اگر آپ ان سے پوچھو کہ آسمان سے پانی کس نے برسایا پھر اس سے زمین کو اس کے مرنے کے بعد زندہ کیا تو کہہ دیں گے کہ اللہ نے (مگر پھر انکار کرتے ہیں اللہ کا) کہہ دو کہ سب تعریف اللہ کے لئے ہے لیکن ان میں اکثر نہیں سمجھتے (۶۳) [۲:۱۵۴]

और यह दुनिया का जीवन तो केवल खेल और दर्शन है और मूल जीवन का घर तो परलोक का घर है यदि लोग समझते (64)

اور یہ دنیا کی زندگی تو صرف کھیل اور تماشا ہے اور اصل زندگی کا گھر تو آخرت کا گھر ہے کاش لوگ سمجھتے (۶۴)

फिर जब वह लोग नाव में स्वार होते हैं तो ईश्वर को पुकारते (और) निर्मल उसी की पूजा करते है उस समय परन्तु जब वह उनको मुक्ति दे कर थल

پھر جب وہ لوگ کشتی میں سوار ہوتے ہیں تو اللہ کو پکارتے (اور) خالص اسی کی عبادت کرتے ہیں اس وقت لیکن

पर पहुंचा देता है तो झट अनेकेश्वरवाद करने लगते है (65)

ताकि ईश्वर की दी हुई मुक्ति पर कुफ्र करें और दुनिया के प्रसादों के स्वाद लें अच्छा तो शीघ्र ही ज्ञात हो जाएगा (66)

क्या उन्होंने नही देखा कि हमने सम्मानित स्थान मक्काह को शान्ति का स्थान बनाया (इसलिए यहां के रहने वालों को कोई कुछ नही कहता) और लोग उनके चारो ओर से उचक लिए जाते है क्या वह लोग मिथ्या पर विश्वास रखते है और ईश्वर के प्रसादों का इनकार करते है (67)

और उससे बड़ा दुष्ट कौन जो ईश्वर पर झूट मिथ्या रोपण करें या जब सत्य बात उसके पास आए तो उसको झुटलाएं क्या नास्तिकों का स्थान नर्क नही है (68)

और जो लोग हमारे मार्ग में प्रयास करेंगे (और हमारी ओर आने की चेष्ट करेंगे) हम निःसंदेह उन्हें अपने मार्ग पर चलने की शक्ति देंगे और निःसंदेह ईश्वर सदाचारियों के साथ है (69)

جب وہ اُن کونجات دے کرخشکی پر پہنچا دیتا ہے تو جھٹ شرک کرنے لگتے ہیں (۶۵)

تا کہ اللہ کی بخشی ہوئی نجات پر کفر کریں اور دنیا کی نعمتوں کے مزے لوٹیں اچھا تو جلد ہی ان کو معلوم ہو جائے گا (۶۶)

کیا انہوں نے نہیں دیکھا کہ ہم نے حرم کو مقام امن بنایا (اس لئے یہاں کے رہنے والوں کو کوئی کچھ نہیں کہتا) اور لوگ ان کے گردونواح سے اچک لئے جاتے ہیں کیا وہ لوگ باطل پر اعتقاد رکھتے ہیں اور اللہ کی نعمتوں کا انکار کرتے ہیں (۶۷)

اور اس سے بڑا ظالم کون جو اللہ پر جھوٹ بہتان باندھے یا جب حق بات اس کے پاس آئے تو اس کو جھٹلائے کیا کافروں کا ٹھکانا جہنم میں نہیں ہے (۶۸)

اور جو لوگ ہماری راہ میں جدو جہد کریں گے (اور ہماری طرف آنے کی کوشش کریں گے) ہم یقیناً انہیں اپنے رستے پر چلنے کی توفیق دیں گے، اور یقیناً اللہ نیکوکاروں کے ساتھ ہے (۶۹)

सूरत रूम (30-मक्की)

सूरत रूम का पहले वह अनुवाद लिखा जा रहा है जो भूतकाल में आलिमों ने किया है,

अलिफ लाम मीम-(1) ऐ मुहम्मद स0 (अहले) रूम परास्त हो गए (2)

निकट के देश में और वह परास्त होने के बाद अन करीब अधिपति आ जाएंगे (3)

कुछ ही वर्षों में पहले भी और पीछे भी ईश्वर ही का आदेश है और उस दिन आस्तिक प्रसन्न हो जाएंगे (4)

अर्थात ईश्वर की सहायता से वह जिसे चाहता है सहायता देता और वह अधिपति और कृपालु है (5)

(यह ईश्वर का वचन है) ईश्वर अपने वचन के विरूद्ध नही करता, परन्तु अधिकांश लोग नही जानते (6)

नोट- इन आयात पर जो तफ्सीर आलिमों ने अंकित की है वह भी अंकित है विचार मनन के लिए रिसालत के काल में दो बड़ी शक्तियां थी एक फारिस ईरान की दूसरी रूम की पृथम राज्य अग्निपूजक और दूसरी ईसाई अर्थात अहले किताब थी, अनेकेश्वर (वादी मक्काह) की सहानुभूतियां फारिस के साथ थी, क्योंकि दोनों गेर ईश्वर के पूजारी थे, जबकि मुसलामानों की सहानुभूतियां रूम की ईसाई राज्य के साथ थी, इसलिए कि ईसाई भी मुसलमानों की भांति अहले किताब थे और वही व रिसालत पर विश्वास रखते थे, उनकी आपस में ठनी रहती थी, नबी स0 के प्रेषण के कुछ साल बाद ऐसा हुआ कि फारिस का राज्य ईसाई राज्य पर गालिब आ गया जिस पर अनेकेश्वर वादियों को प्रसन्नता और मुसलामानों को दुख हुआ, इस अवसर पर कुरआन करीम की यह आयात अवतरित हुई, जिनमें यह भविष्यवाणी की गई कि बिज़इ सिनीन के अन्दर रूमी फिर अधिपति आ जाएंगे, और गालिब मगलूब और मगलूब गालिब हो जाएंगे बज़ाहिर कारण यह भविष्य वाणी असम्भव दिखाई देती थी, ताहम मुसलमानों को ईश्वर के इस आदेश के कारण से विश्वास था कि ऐसा अवश्य होकर रहेगा अतः श्री अबुबकर सिद्दीक र0 ने अबु जहल से यह शर्त बांध ली कि रूमी पांच साल के अन्दर पुनः अधिपति आ जाएंगे, नबी स0 के ज्ञान में यह बात आई तो कहा

سورۃ الروم (۳۰۔مکی)

سورت روم کا پہلے وہ ترجمہ لکھا جارہا ہے جو سابق علماء نے کیا ہے

الم۔اے محمدؐ (۱) (اہل) روم مغلوب ہو گئے (۲)

نزدیک کے ملک میں اور وہ مغلوب ہونے کے بعد عنقریب غالب آجائیں گے (۳)

چند ہی سال میں پہلے بھی اور پیچھے بھی اللہ ہی کا حکم ہے اور اس دن مومن خوش ہو جائیں گے (۴)

(یعنی) اللہ کی مدد سے وہ جسے چاہتا ہے مدد دیتا ہے اور وہ غالب اور مہربان ہے (۵)

(یہ) اللہ کا وعدہ (ہے) اللہ اپنے وعدے کے خلاف نہیں کرتا لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے (۶)

نوٹ:۔ان آیات پر جو تفسیر عالموں نے درج کی ہے وہ بھی درج ہے غور وفکر کے لئے عہد رسالت میں دو بڑی طاقتیں تھیں ایک فارس (ایران) کی دوسری روم کی اوّل الذکر حکومت آتش پرست اور دوسری عیسائی یعنی اہل کتاب تھی۔ مشرکین مکہ کی ہمدردیاں فارس کے ساتھ تھیں کیونکہ دونوں غیر اللہ کے پجاری تھے۔ جب کہ مسلمانوں کی ہمدردیاں روم کی عیسائی حکومت کے ساتھ تھیں اس لئے کہ عیسائی بھی مسلمانوں کی طرح اہل کتاب تھے اور وحی ورسالت پر یقین رکھتے تھے ان کی آپس میں ٹھنی رہتی تھی۔ نبی کی بعثت کے چند سال بعد ایسا ہوا کہ فارس کی حکومت عیسائی حکومت پر غالب آ گئی جس پر مشرکوں کو خوشی اور مسلمانوں کو غم ہوا، اس موقعہ پر قرآن کریم کی یہ آیات نازل ہوئیں۔ جن میں یہ پیش گوئی کی گئی کہ بضع سنین کے اندر رومی پھر غالب آجائیں گے اور غالب، مغلوب اور مغلوب غالب ہو جائیں گے۔ بظاہر اسباب یہ پیش گوئی ناممکن العمل نظر آتی تھی تاہم مسلمانوں کو اللہ کے اس فرمان کی وجہ سے یقین تھا کہ ایسا ضرور ہو کر رہے گا اس لئے حضرت ابو بکر صدیقؓ نے ابو جہل سے یہ شرط باندھ لی کہ رومی پانچ سال کے اندر دوبارہ غالب آجائیں گے۔ نبیؐ کے علم میں یہ بات آئی تو فرمایا کہ بضع کا لفظ

कि बिजड़ का शब्द तीन से दस तक के अदद के लिए प्रयोग होता है तुमने पांच साल का समय कम रखा है इसमें बढ़ोतरी कर लो, चुनांचे आप स0 की हिदायत के अनुसार श्री अबुबकर ने बढ़ोतरी करवा ली, और फिर ऐसा ही हुआ कि रूमी नौ साल के समय के अन्दर अन्दर अर्थात सातवें साल दोबारा फारिस पर गालिब आ गए जिससे निःसंदेह मुसलमानों को बड़ी प्रसन्नता हुई (तिरमिजी तफसीर सूरत रूम) कतिपय कहते हैं कि रूमियों को यह विजय उस समय हुई जब बदर में मुसलमानों को काफिरों पर गल्बा प्राप्त हुआ और मुसलमान अपनी विज्य पर प्रसन्न हुए रूमियों की यह विजय कुरआन करीम की सत्यता की एक बहुत बड़ी दलील है? निकट की धरती से तात्पर्य अरब की जमीन के निकट के क्षेत्र हैं, अर्थात शाम व फिलिस्तीन इत्यादि जहां ईसाईयों का राज्य था,

अर्थात ऐ मुहम्मद स0 हम आपको जो सूचना दे रहें हैं कि निकट ही रूमी फारिस पर पुनः गालिब आजाएंगे यह ईश्वर का सच्चा वचन है जो निश्चित अवधि के अन्दर निःसंदेह पूरा होकर रहेगा (तफसीर मौलाना जूनागढ़ी पेज 1123, 1124)

आलिमों का अनुवाद और तफसीर लिखा गया जो पढ़ लिया अब कुरआन की आयात लिखी जा रही हैं इसलिए कि ईश्वर ने जालिमों के बारे में क्या कहा है और ईश्वर की सहायाता किस के साथ है किस प्रतिबद्धा पर ईसाईयों के बारे में कुरआन ने क्या सूचना दी है क्या ईसाई मुसलमानों के मित्र हैं या शत्रु और क्या ईसाई आस्तिक हैं?

सूरत इब्राहीम आयत {14:9}....... जब उनके पास रसूल चिन्ह लेकर आए तो उन्होंने अपने हाथ उनके मुखो पर रख दिए अर्थात बल से उनको चुप करना चाहा और कहने लगे कि हम तो तुम्हारे ईशदौत्य को स्वीकार नही करते और जिस वस्तु की ओर तुम हमें बुलाते हो हम उससे बड़े भ्रम में हैं,

{14:16} और रसूलों ने (ईश्वर से अपनी) विजय (अर्थात निर्णय) चाहा तो हर सरकश जिद्दी असफल हो गया सूरत अनफाल आयत {8:33} और ईश्वर ऐसा न है कि जब तक तुम उनमें थे उन्हें दण्ड देता और न ऐसा है कि वह क्षमा मांगे और उन्हें दण्ड दें

{8:34} और अब उनके लिए कौन-सा कारण है कि वह उन्हें दण्ड न दे जबकि वह सम्मान वाली मस्जिद (में नमाज पढ़ने) से रोकते हैं और वह उस मस्जिद के प्रबद्धक भी नही हैं उसके प्रबद्धक तो केवल सदाचारी हैं परन्तु उनमें अधिकांश नही जानते सूरत नहल आयत {16:61} और यदि ईश्वर लोगों को उनके अत्याचार के कारण पकड़ने लगे तो एक जीवधारी को पृथ्वी पर न छोड़ो परन्तु उनको एक निश्चित समय तक छूट दिए जाता है, जब वह समय आ जाता है तो एक घड़ी न पीछे रह सकते है न आगे बढ़ सकते हैं सूरत मोमिन आयत {40:5} उनसे पहले नूह की जाति और उनके बाद और जाति ने भी अपने रसूलों के बारे में यही संकल्प किया कि इसको पकड़लें और बेहूदा (भ्रम से) झगड़ते रहे कि उससे सत्य को नष्ट कर दें तो मैंने उनको पकड़ लिया सो (देखलो) मेरा दण्ड कैसा हुआ,

{40:25} तात्पर्य यह कि जब वह उनके पास हमारी ओर से सत्य लेकर पहुंचे तो कहने लगे कि जो लोग उस के साथ (ईश्वर पर) विश्वास लाए हैं उनके पुत्रों को बध कर दो और पुत्रीयों को रहने दो और नास्तिकों की चालें बे ठिकाना होती हैं,

{40:7} तो (ऐ रसूल) धैर्य करो ईश्वर का वचन सत्य है (होकर रहेगा)..........

सूरत जुखरूफ 43 आयत {43:7} और कोई रसूल उनके पास नही आता था परन्तु वह उससे हंसी करते थे

تین سے دس تک کے عدد کے لئے استعمال ہوتا ہے تم نے ۵ سال کی مدت کم رکھی ہے اس میں اضافہ کرلو چنانچہ آپؐ کی ہدایت کے مطابق حضرت ابوبکرؓ نے اس مدت میں اضافہ کروالیا اور پھر ایسا ہی ہوا کہ رومی ۹ سال کی مدت کے اندر اندر یعنی ساتویں سال دوبارہ فارس پر غالب آ گئے جس سے یقیناً مسلمانوں کو بڑی خوشی ہوئی (ترمذی تفسیر سورۃ الروم) بعض کہتے ہیں کہ رومیوں کو یہ فتح اس وقت ہوئی جب بدر میں مسلمانوں کو کافروں پر غلبہ حاصل ہوا اور مسلمان اپنی فتح پر خوش ہوئے رومیوں کی یہ فتح قرآن کریم کی صداقت کی ایک بہت بڑی دلیل ہے؟ نزدیک کی زمین سے مراد عرب کی زمین کے قریب کے علاقے ہیں، یعنی شام وفلسطین وغیرہ جہاں عیسائیوں کی حکومت تھی۔

یعنی اے محمدؐ ہم آپ کو جو خبر دے رہے ہیں کہ عنقریب رومی فارس پر دوبارہ غالب آجائیں گے یہ اللہ کا سچا وعدہ ہے جو مدت موعود کے اندر یقیناً پورا ہوکر رہے گا۔ (تفسیر مولانا محمد جوناگڑھی) ص ۱۱۲۳،۱۱۲۴

عالموں کا ترجمہ اور تفسیر لکھا گیا جو پڑھ لیا اب قرآن کی آیات لکھی جارہی ہیں اس لئے کہ اللہ نے ظالموں کے بارے میں کیا کہا ہے اور اللہ کی مدد کس کے ساتھ ہے کس شرط پر۔ عیسائیوں کے بارے میں قرآن نے کیا خبر دی ہے کیا عیسائی مسلمانوں کے دوست ہیں یا دشمن اور کیا عیسائی مومن ہیں؟

سورت ابراہیم، آیت ۹:۱۴..... جب ان کے پاس رسول نشانیاں لےکر آئے تو انہوں نے اپنے ہاتھ ان کے مونہوں پر رکھ دئے یعنی زبردستی ان کو خاموش کرنا چاہا اور کہنے لگے کہ ہم تو تمہاری رسالت کو تسلیم نہیں کرتے اور جس چیز کی طرف تم ہمیں بلاتے ہو ہم اس سے قوی شک میں ہیں۔

(۱۴:۱۶) اور رسولوں نے (اللہ سے اپنی) فتح (یعنی فیصلہ) چاہی تو ہر سرکش ضدی نامراد ہوگیا سورت انفال آیت (۸:۳۳) اور اللہ ایسا نہ ہے کہ جب تک تم ان میں تھے انہیں عذاب دیتا اور نہ ایسا ہے کہ وہ بخشش مانگیں اور انہیں عذاب دے۔

(۸:۳۴) اور اب ان کے لئے کون سی وجہ ہے کہ وہ انہیں عذاب نہ دے جب کہ وہ مسجد محترم (میں نماز پڑھنے) سے روکتے ہیں اور وہ اس مسجد کے متولی بھی نہیں ہیں اس کے متولی تو صرف پرہیز گار ہیں لیکن ان میں کے اکثر نہیں جانتے سورت النحل آیت (۱۶:۶۱) اور اگر اللہ لوگوں کو ان کے ظلم کے سبب پکڑنے لگے تو ایک جاندار کو زمین پر نہ چھوڑے لیکن ان کو ایک وقت مقرر تک مہلت دئے جاتا ہے جب وہ وقت آجاتا ہے تو ایک گھڑی نہ پیچھے رہ سکتے ہیں نہ آگے بڑھ سکتے ہیں۔

سورت المومن آیت (۴۰:۵) ان سے پہلے نوح کی قوم اور ان کے بعد اور امتوں نے بھی (رسولوں کی) تکذیب کی اور ہر امت نے اپنے رسول کے بارے میں یہی قصد کیا کہ اس کو پکڑلیں اور بےہودہ (شبہات سے) جھگڑتے رہے کہ اس سے حق کو زائل کردیں تو میں نے ان کو پکڑلیا سو (دیکھ لو) میرا عذاب کیسا ہوا۔

(۴۰:۲۵) غرض جب وہ ان کے پاس ہماری طرف سے حق لےکر پہنچے تو کہنے لگے کہ جو لوگ اس کے ساتھ (اللہ پر) ایمان لائے ہیں ان کے بیٹوں کو قتل کردو اور بیٹیوں کو رہنے دو اور کافروں کی تدبیریں بے ٹھکانا ہوتی ہیں۔

(۴۰:۷۷) تو (اے رسول) صبر کرو اللہ کا وعدہ سچا ہے (ہوکر رہے گا)....

سورت الزخرف ۴۳ آیت (۴۳:۷) اور کوئی رسول ان کے پاس نہیں آتا تھا مگر وہ اس سے تمسخر کرتے تھے

{43:8} तो जो उनमें सख़त बल वाले थे उनको हमने बध कर दिया और अगले लोगों की उपमा गुज़र गई

सूरत फ़तेह 48 आयत {48:28} वही तो है जिसने अपने रसूल को हिदायत (की पुस्तक) जो सत्य धर्म है देकर भेजा ताकि उसको सम्पूर्ण (बनावटी) पंथो पर अधिपति करें, और सत्य प्रकट करने के लिए ईश्वर ही प्रयाप्त है,

सूरत अहकाफ 46 आयत {46:35} पस (ऐ रसूल) तुम ऐसा धैर्य करो जैसा धैर्य साहसी रसूलों ने किया और उनके लिए (दण्ड तलब करने में) जल्दी न करो.........

सूरत काफ आयत {50:39} तो जो कुछ वह (नास्तिक) बकते है उस पर धैर्य करो और सूर्य के निकलने से पहले और उसके अस्त होने से पहले अपने रब की प्रशन्सा के साथ पवित्रता बयान करते रहो,

सूरत कमर 54 आयत {54:10} तो उन्होंने अपने रब से प्रार्थना की कि ईश्वर मैं उनके सामने निर्बल हूं तू मेरी सहायता कर,

{54:11} पस हमने भीषण वर्षा से आकाश के द्वार खोल दिए

{54:12} और भूमी से स्रोतों को जारी कर दिया पस इस काम के लिए जो निश्चित किया गया था (दोनों) पानी जमा हो गए

{54:14} जो हमारी आंखो के सामने चल रही थी उसकी ओर से जिसका इनकार किया गया था इसी सूरत की आयत 26 तक देखो,

{54:44} या वह कहते है कि हम गलबा पाने वाला दल अर्थात बड़ा दल है,

{54:45} अभि वह दल परास्त कर दिया जाएगा और पीठ देकर भागेगा

सूरत मुजादला 58 आयत {58:20} निःसंदेह ईश्वर की और उसके रसूल की जो विरोध करते है वही लोग सब से अधिक हीनों में है,

{58:21} ईश्वर लिख चुका है कि निःसंदेह मैं और मेरे रसूल अधिपति रहेंगे, निःसंदेह ईश्वर बल वाला और अधिपति है,

सूरत सफ 61-आयत {61:13} और तुम्हें एक दूसरा (प्रसाद) भी देगा जिसे तुम चाहते हो वह ईश्वर की सहायता और शीघ्र विज्य है, ईमान वालों को शुभ सूचना दे दो, आयत 14 भी देखो सूरत तारिक 86 आयत {86:15} अपितु नास्तिक दाओ घात में है,

{86:16} और मैं भी एक दाओ कर रहा हूं,

{86:17} तो नास्तिकों को ढ़ील दो ढ़ील दो उनको थोड़े दिनों सूरत जुहा 93 आयत {93:3} ऐ मुहम्मद स0 आपके ईश्वर ने न तो आपको छोड़ा और न आप से रूष्ट हुआ,

{93:4} निःसंदेह आपके लिए बाद का दौर पहले दौर से अच्छा है,

{93:5} और आपको आपका रब शीघ्र वह कुछ देगा कि आप प्रसन्न हो जाएंगे,

सूरत अलम नशराह 94 आयत {94:4} और हमने आपका ज़िक्र बुलन्द कर दिया,

सूरत कस्स 28 आयत {28:5} और हम चाहते थे कि जो लोग पृथ्वी में निर्बल कर दिए गए है, उन पर दया करें और उनको नेता बनाएं और उन्हें पृथ्वी का स्वामी बनाएं

(۴۳:۸) تو جوان میں سخت زوروالے تھے ان کو ہم نے ہلاک کر دیا اور اگلے لوگوں کی مثال گزر گئی

سورت الفتح ۴۸/آیت (۴۸:۲۸) وہی تو ہے جس نے اپنے رسول کو ہدایت (کی کتاب) جو دین حق ہے دے کر بھیجا تا کہ اس کو تمام (فرضی) دینوں پر غالب کرے اور حق ظاہر کرنے کے لئے اللہ ہی کافی ہے۔

سورت الاحقاف ۴۶/آیت (۴۶:۳۵) پس (اے رسول) تم ایسا صبر کرو جیسا صبر عالی ہمت رسولوں نے کیا اور ان کے لئے (عذاب طلب کرنے میں) جلدی نہ کرو.............

سورت ق ۵۰/(۵۰:۳۹) تو جو کچھ وہ (کفار) بکتے ہیں اس پر صبر کرو اور آفتاب کے طلوع ہونے سے پہلے اور اس کے غروب ہونے سے پہلے اپنے پروردگار کی تعریف کے ساتھ تسبیح کرتے رہو۔

سورت القمر (۵۴:۱۰) تو انہوں نے اپنے رب سے دعا کی کہ اللہ میں ان کے مقابلہ میں کمزور ہوں تو میری مدد کر۔

(۵۴:۱۱) پس ہم نے زور کے مینہ سے آسمان کے دہانے کھول دئے

(۵۴:۱۲) اور زمین سے چشموں کو جاری کر دیا پس اس کام کے لئے جو مقدر کیا گیا تھا (دونوں) پانی جمع ہو گئے۔

(۵۴:۱۴) جو ہماری آنکھوں کے سامنے چل رہی تھی بدلہ اس کی طرف سے جس کا کفر کیا گیا تھا اسی سورت کی آیت ۲۶/تک دیکھو

(۵۴:۴۴) یا وہ کہتے ہیں کہ ہم غلبہ پانے والی جماعت یعنی بڑی جماعت ہیں۔

(۵۴:۴۵) ابھی وہ جماعت شکست دی جائے گی اور پیٹھ دے کر بھاگے گی۔

سورت المجادلہ ۵۸/آیت (۵۸:۲۰) بے شک اللہ کی اور اس کے رسول کی جو لوگ مخالفت کرتے ہیں وہی لوگ سب سے زیادہ ذلیلوں میں ہیں۔

(۵۸:۲۱) اللہ لکھ چکا ہے کہ بے شک میں اور میرے رسول غالب رہیں گے یقیناً اللہ تعالیٰ زور آور اور غالب ہے

سورت الصف ۶۱/آیت (۶۱:۱۳) اور تمہیں ایک دوسری (نعمت) بھی دے گا جسے تم چاہتے ہو وہ اللہ کی مدد اور جلد فتح یابی ہے ایمان والوں کو خوشخبری دے دو۔ آیت ۱۴/بھی دیکھو

سورت طارق ۸۶/آیت (۸۶:۱۵) البتہ کافر داؤ گھات میں ہیں

(۸۶:۱۶) اور میں بھی ایک داؤ کر رہا ہوں

(۸۶:۱۷) تو کافروں کو ڈھیل دو ڈھیل دو ان کو تھوڑے دنوں

سورت الضحیٰ ۹۳/آیت (۹۳:۳) اے محمدؐ آپ کے پروردگار نے نہ تو تم کو چھوڑا اور نہ تم سے ناراض ہوا

(۹۳:۴) یقیناً تمہارے لئے بعد کا دور پہلے دور سے بہتر ہے

(۹۳:۵) اور آپ کو آپ کا رب عنقریب وہ کچھ عطا کرے گا کہ آپ خوش ہو جائیں گے

سورت الم نشرح ۹۴/آیت (۹۴:۴) اور ہم نے آپ کا ذکر بلند کر دیا

سورت القصص ۲۸/آیت (۲۸:۵) اور ہم چاہتے تھے کہ جو لوگ زمین میں کمزور کردئے گئے ہیں ان پر احسان کریں اور ان کو پیشوا بنائیں اور انہیں زمین کا وارث بنائیں۔

{28:26} और पृथ्वी में उनको शक्ति दें और फिरऔन और हामान और उनकी सैना को वह वस्तु दिखा दें जिससे वह डरते थे.

सूरत साफ्फात 37 आयत {37:171} और अपितु हमारा वचन पहले ही अपने रसूलों के लिए पारित हो चुका है,

{37:172} कि निःसंदेह वही सहायता किए जाएंगे,

{37:173} और हमारी ही सैना अधिपति उच्च रहेगी,

{37:174} अब आप कुछ दिनों तक उनसे मुख फेर लें,

{37:175} और उन्हें देखते रहो और वह भी आगे चल के देख लेंगे,

{37:176} क्या वह हमारे दण्ड की जल्दी मचा रहे हैं,

{37:177} सुनो! जब हमारा दण्ड उनके मैदान में उतरेगा, उस समय उनकी जिनको चेताया गया था बड़ी बुरी सुबाह होगी,

{37:178} आप कुछ समय तक उनका विचार छोड़ दो,

{37:179} और देखते रहो वह भी देख लेंगे,

सूरत बकरा 2 आयत {2:120} आपसे यहूद व नसारा कदापि प्रसन्न न होंगे जब तक आप उनके धर्म को स्वीकार न कर लें,

सूरत मायदा 5 आयत {5:14} और जो अपने आप को नसारा कहते हैं हमने उनसे भी वचन लिया उन्होंने भी उसका बड़ा भाग भुला दिया जो उन्हें शिक्षा की गई थी तो हमने भी अर्थात हमारे नियम ने उनके आपस में द्वेष व वैर डाल दी जो क्यामत तक रहेगी,

सूरत फ़तह 48 आयत {48:1} निःसन्देह (ऐ नबी) हमने आपको एक खुल्लम खुल्ला विजय दी, क्या विजय थी वह सूरत के भावार्थ में अवलोकन हो दूसरे स्थान ईश्वर ने नसारा की दशा बताई है कि जब उनके सामने ईश्वर की आयात सुनाई जाती है तो वह रोते हुए सजदे में गिर जाते हैं और कहते हैं कि ऐ ईश्वर हम इन पर विश्वास ले आए हम तो पहले ही मुसलमान थे तू हमारा नाम ईमान वालों में लिख ले

सूरत नूर 24 आयत {24:55} जो लोग तुम में से विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे उनसे ईश्वर का वचन है कि उनको पृथ्वी का शासक बना देगा और जैसा उनसे पहले लोगों को शासक बनाया था और उनके धर्म को जिसे उसने उनके लिए पसन्द किया है सुदृढ़ कर देगा और भय के बाद उनको शान्ति प्रदान करेगा

दुनिया में दो दल हैं आस्तिक और नास्तिक (22:20)

सूरत मायदा 5 आयत (5:72) निःसन्देह वह लोग काफिर हो गए जिनका कथन है कि मसीह इब्न मरयम ही ईश्वर है

(5:73) वह लोग भी निश्चित काफिर हो गए जिन्होंने कहा ईश्वर तीन में का तीसरा है.........

उपरोक्त कुरआनी आयात लिखी गई अब हदीस लिखी जा रही है यह वास्तविकता इस हदीस में पूरी चमक दमक से स्पष्ट होती है जो हाकिम ने जाबिर से रवायत की है जब रसूल और मुसलमानों को मक्काह में तंग और परास्त कर दिया गया था उस समय मुसलमानों पर बहुत अत्याचार हो रहे थे उस समय मुहम्मद स0 ने उस युक्ति से जो ईश्वर ने उनको दी उसके आधीन नीति ग्रहण की, रसूल ने कहा कि "रसूलुल्लाह मौकफ (अर्थात मिना) में अपने आपको यह कहते हुए प्रस्तुत किया कि कोई व्यक्ति है जो मुझे अपनी जाति की ओर उठा ले

(۲۶:۲۸)اور زمین میں ان کو قدرت دیں اور فرعون اور ہامان اور ان کے لشکر کو وہ چیز دکھا دیں جس سے وہ ڈرتے تھے

سورت الصفت ۳۷/آیت (۳۷:۱۷۱)اور البتہ ہمارا وعدہ پہلے ہی اپنے رسولوں کے لئے صادر ہو چکا ہے

(۳۷:۱۷۲) کہ یقیناً وہی مدد کئے جائیں گے

(۳۷:۱۷۳)اور ہمارا ہی لشکر غالب اور برتر رہے گا

(۳۷:۱۷۴)اب آپ کچھ دنوں تک ان سے منہ پھیر لیجئے

(۳۷:۱۷۵)اور انہیں دیکھتے رہئے اور وہ بھی آگے چل کر دیکھ لیں گے

(۳۷:۱۷۶) کیا وہ ہمارے عذاب کی جلدی مچا رہے ہیں

(۳۷:۱۷۷)سنو! جب ہمارا عذاب ان کے میدان میں اترے گا اس وقت اُن کی جن کو متنبہ کر دیا گیا تھا بڑی بُری صبح ہوگی

(۳۷:۱۷۸) آپ کچھ وقت تک ان کا خیال چھوڑ دیجئے

(۳۷:۱۷۹)اور دیکھتے رہئے وہ بھی جلد دیکھ لیں گے

سورت بقرہ ۲/آیت (۲:۱۲۰) آپ سے یہود و نصاریٰ ہرگز راضی نہ ہوں گے جب تک کہ آپ ان کے مذہب کے تابع نہ بن جائیں.........

سورت المائدہ ۵/آیت (۵:۱۴)اور جو اپنے آپ کو نصاریٰ کہتے ہیں ہم نے ان سے بھی عہد و پیمان لیا انہوں نے بھی اس کا بڑا حصہ فراموش کر دیا جو انہیں نصیحت کی گئی تھی تو ہم نے بھی یعنی ہمارے قانون نے ان کے آپس میں بغض و عداوت ڈال دی جو تا قیامت رہے گی

سورت الفتح ۴۸/آیت (۴۸:۱) بے شک (اے نبی) ہم نے آپ کو ایک کھلم کھلا فتح دی کیا فتح تھی وہ سورت کے مفہم میں ملاحظہ ہو

دوسری جگہ اللہ نے نصاریٰ کی حالت بتائی ہے کہ جب ان کے سامنے اللہ کی آیات سنائی جاتی ہیں تو وہ روتے ہوئے سجدے میں گر جاتے ہیں اور کہتے ہیں کہ اے اللہ ہم ان پر ایمان لے آئے ہم تو پہلے ہی مسلمان تھے تو ہمارا نام ایمان والوں میں لکھ لے

سورت النور ۲۴/آیت (۲۴:۵۵) جو لوگ تم میں سے ایمان لائے اور نیک کام کرتے رہے ان سے اللہ کا وعدہ ہے کہ ان کو زمین کا حاکم بنا دے گا جیسا ان سے پہلے لوگوں کو حاکم بنایا تھا اور ان کے دین کو جسے اس نے ان کے لئے پسند کیا ہے مستحکم و پائدار کرے گا اور خوف کے بعد ان کو امن بخشے گا...........

دنیا میں دو گروہ ہیں مومن اور کافر (۲۲:۲۰)

سورت المائدہ ۵/آیت (۵:۷۲) بے شک وہ لوگ کافر ہو گئے جن کا قول ہے کہ مسیح ابن مریم ہی اللہ ہے.........

(۵:۷۳)وہ لوگ بھی قطعاً کافر ہو گئے جنہوں نے کہا اللہ تین میں کا تیسرا ہے...

اوپر قرآنی آیات لکھی گئیں اب حدیث لکھی جا رہی ہے. یہ حقیقت اس حدیث میں پوری چمک دمک سے واضح ہوتی ہے. جو حاکم نے جابر سے روایت کی ہے جب رسول اور مسلمانوں کو مکہ میں تنگ اور مغلوب کر دیا گیا تھا اس وقت مسلمانوں پر بہت ظلم ہو رہے تھے اس وقت محمدؐ نے اس حکمت سے جو اللہ نے ان کو دی اس کے تحت حکمت عملی اختیار کی. رسول نے کہا کہ "رسول اللہ موتف (یعنی منیٰ) میں اپنے آپ کو یہ کہتے ہوئے پیش فرماتے کہ کیا کوئی شخص ہے جو مجھے اپنی

जाए क्योंकि कुरैश ने मुझे अपने रब का संदेश पहुंचाने से रोक दिया है? उसी बीच आपके पास बनी हमदान का एक व्यक्ति आया और कहा मैं तैयार हूं आपने कहा क्या तेरी जाति के पास रक्षा और सुरक्षा की शक्ति है? कहा हां, इस पर आपने उससे ज्ञात किया तुम कहां से हो? कहा मैं हमदान में से हूं फिर उस हमदानी व्यक्ति को भय लगा कि कहीं उसकी जाति उसके वचन को तोड़ न दे तो वह रसूल स0 के पास आया और कहा कि मैं अपनी जाति के पास जाऊंगा और उनसे यह सब कुछ बयान करूंगा, फिर मैं आपसे अगले वर्ष मिलूंगा, कहा हां" अलमस्तदरक अलस्सहीहैन लिलहाकिम 2/612-613 और कहा कि यह शेखैन की शर्त पर सही है,

इसी बीच मुहम्मद स0 ने मदीने के रहने वालों से सम्पर्क किया और उनसे भी यही कहा जो औरों से कहते थे तो मदीने वालों ने वचन किया और हर प्रकार से सहायता का भी वचन किया तो मुहम्मद स0 ने अपने समय पर मदीने को प्लायन किया,

माख़ूज़ हिजरत नबवी के असबाब ज़िन्दगी नौ अगस्त 2004 ई0 लेखक डाक्टर मुहम्मद खैर हैकल, अनुवाद व तबसरा सय्यद हामिद अब्दुर्रहमान अलकाफ-सूरत रूम में अंकित शब्द का अनुवाद भी तै कर लिया जाए क्या है, सूरत नजम 53

आयत {53:9} फकाना काबा कोसैन अव अदना तो दो कमानों के फासले पर या उससे भी कम

अतः सूरत रूम की आयत 3 में फी अदनलअर्ज़ का अर्थ हुआ कम ज़मीन में

आयात बाला में ईश्वर ने मुहम्मद स0 और मुसलमानों को यह बताया है कि जो नास्तिक लोग सत्य धर्म का विरोध करते हैं और आस्तिकों और रसूलों को सताते हैं वह निकट ही परास्त हो जाते हैं और जिन लोगों को वह दबाने का प्रयास करते हैं वह ईश्वर के कृपा दया और अपनी महनत व धैर्य से अधिपति आ जाते हैं और जब ईश्वर की सहायता आती है तो आस्तिक प्रसन्न होते हैं,

(61:13) में ईश्वर ने आस्तिकों को अपनी सहायता और शीघ्र फतेह की शुभ सूचना दी है तो क्या मोमिनों के लिए खुशी का अवसर नही है? जो इस खुशी को रूमियों की विजय से मंसूब किया गया जो गलत है,

ईश्वर ने विजय और पराजय का भी एक नियम निश्चित कर रखा है ईश्वर पर आस्था और कुरआन पर व्यवहार ऐकता और शक्ति इत्यादि

अतः आस्तिक होने के साथ संयुक्त रहना और शक्ति प्राप्त करना अनिवार्य है यदि संयुक्त न हुए और शक्ति प्राप्त न की तो मोमिन होने में शक है और ऐसे मोमिन को शक्तिशाली नास्तिक पराजय करके दास बना लेगा, दूसरे यह कि जब दो नास्तिक दल आपस में युद्ध करते हैं तो जो शक्तिशाली दल होता है जंगी नियमानुसार व्यवहार करता है वह सफल होता है दूसरा परास्त ऐसे ही जब ईरान और ईसाईयों का युद्ध हुआ तो ईरानी शक्तिशाली थे सफल हो गए और जब ईसाईयों ने शक्ति प्राप्त कर ली तो ईसाई सफल हो गए यह एक नियम है परन्तु ईरानी और ईसाई रूमी दोनों नास्तिक अनेकेश्वर वादी थे उनके साथ वह सहायता न थी जो आस्तिकों के साथ होती है, वह दूसरे नियम के अनुसार हारते और जीतते हैं परन्तु मोमिन जब संयुक्त होते हैं और नियम के साथ कार्य करते हैं तो कम शक्ति पर भी ईश्वर की सहायता से सफल होते हैं परन्तु शर्त मोमिन होना है और मोमिन मोमिन की हार पर दुखी होता है और आस्तिक की विजय पर प्रसन्न होता है,

ईश्वर ने अपने कुरआन ने आस्तिकों को बता दिया है कि ईसाई

قوم کی طرف اٹھالے جائے کیونکہ قریش نے مجھے اپنے رب کا پیغام پہنچانے سے منع کردیا ہے؟اسی دوران آپ کے پاس بنی ہمدان کا ایک شخص آیا اور کہا میں تیار ہوں آپ نے کہا کیا تیری قوم کے پاس دفاع اور حفاظت کی قوت ہے؟ کہا ہاں اس پر آپ نے اس سے دریافت فرمایا تم کہاں سے ہو؟ کہا میں ہمدان میں سے ہوں۔پھر اس ہمدانی شخص کو ڈر لگا کہ کہیں اس کی قوم اس کے عہدو پیمان کو توڑ نہ دے تو وہ رسولؐ کے پاس آیا اور کہا کہ میں اپنی قوم کے پاس جاؤں گا اور ان سے یہ سب کچھ بیان کروں گا پھر میں آپ سے اگلے سال ملوں گا فرمایا ہاں‘‘ المستدرک علی الصحیحین للحاکم ۲/۶۱۲-۶۱۳،اور کہا کہ یہ شیخین کی شرط پر صحیح ہے۔

اسی دوران محمدؐ نے مدینہ کے باشندوں سے ملاقات کی اور ان سے بھی یہی کہا جو اوروں سے کہتے تھے تو مدینہ والوں نے عہد کیا اور ہر طرح سے مدد کا بھی وعدہ کیا تو محمدؐ نے اپنے وقت پر مدینہ کو ہجرت کی۔

ماخوذ ہجرت نبوی کے اسباب زندگی نو اگست ۲۰۰۴ء مصنف: ڈاکٹر محمد خیر ہیکل ترجمہ وتبصرہ: سید حامد عبدالرحمٰن الکاف

سورت روم میں درج لفظ کا ترجمہ بھی طے کرلیا جائے کیا ہے سورت النجم ۵۳ آیت (۵۳:۹) فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنَىٰ

تو دو کمانوں کے فاصلے پر یا اس سے بھی کم

اس لئے سورت روم کی آیت ۳ میں فی ادنی الارض کا مطلب ہوا کم زمین میں

آیات بالا میں اللہ نے محمدؐ اور مسلمانوں کو یہ بتایا ہے کہ جو کافر لوگ دین حق کی مخالفت کرتے ہیں اور مومنوں اور رسولوں کو ستاتے ہیں وہ عن قریب مغلوب ہوجاتے ہیں اور جن لوگوں کو وہ دبانے کی کوشش کرتے ہیں وہ اللہ کے کرم وفضل اور اپنی محنت وصبر سے غالب آجاتے ہیں اور جب اللہ کی مدد آتی ہے تو مومن خوش ہوتے ہیں۔

(۶۱:۱۳) میں اللہ نے مومنوں کو اپنی مدد اور جلد فتح کی خوشخبری دی ہے تو کیا یہ مومنوں کے لئے خوشی کا موقع نہیں ہے جو اس خوشی کو رومیوں کی فتح سے منسوب کیا گیا ہے جو غلط ہے۔اللہ نے فتح اور شکست کا بھی ایک قانون مقرر کر رکھا ہے۔ ایمان باللہ اور عمل قرآن پر،اتحاد،اور طاقت وغیرہ

اس لئے مومن ہونے کے ساتھ متحد رہنا اور طاقت حاصل کرنا ضروری ہے اگر متحد نہ ہوئے اور طاقت حاصل نہ کی تو مومن ہونے میں شک ہے اور ایسے مومن کو طاقتور کافر شکست دے کر غلام بنا لے گا دوسرے یہ کہ جب دو کافر جماعت آپس میں جنگ کرتی ہیں تو جو طاقتور جماعت ہوتی ہے جنگی قانون کے مطابق عمل کرتی ہے وہ کامیاب ہوتی ہے دوسری مغلوب ایسے ہی جب ایران عیسائیوں کی جنگ ہوئی تو ایرانی طاقتور تھے کامیاب ہوگئے اور جب عیسائیوں نے طاقت حاصل کرلی تو عیسائی کامیاب ہوگئے یہ ایک قاعدہ ہے لیکن ایرانی اور عیسائی دونوں کافر اور مشرک تھے ان کے ساتھ وہ مدد نہ تھی جو مومنوں کے ساتھ ہوتی ہے وہ دوسرے قاعدے کے مطابق ہارتے اور جیتتے ہیں لیکن مومن جب متحد ہوتا ہے اور قاعدے کے ساتھ کام کرتا ہے تو کم طاقت پر بھی اللہ کی مدد سے کامیاب ہوتا ہے مگر شرط مومن ہونا ہے۔اور مومن مومن کی ہار پر غم زدہ ہوتا ہے اور مومن کی جیت پر خوش ہوتا ہے۔

اللہ نے اپنے قرآن میں مومنوں کو بتا دیا ہے کہ عیسائی مشرک ہیں وہ

تمہارے دشمن ہیں ان سے ہوشیار رہنا اور جو نصاریٰ ہیں وہ ایمان لے آتے ہیں تو پھر مسلمان عیسائیوں کی ہار پر غمزدہ کیوں ہوئے اور ان کی جیت پر خوش کیوں ہونا تھا یا کہیں کسی آیت میں ایسا حکم ہے کہ عیسائیوں کی جیت پر تم کو خوش ہونا ہے اور نہ ہی محمدؐ نے کبھی ایسا حکم دیا یا عمل کیا اس لئے سورت روم کی ابتدائی آیات کا جو ترجمہ اور تفسیر کیا ہے وہ محل نظر ہے غالب اور مغلوب مومن اور کافر کو ہونا ہے یا اللہ نے جو جنگی قانون مقرر کر دیا ہے اس کی خلاف ورزی پر مغلوب اور اس کی پابندی پر غالب ہونا ہے تو پھر ان آیات کا مفہوم کیا ہونا چاہیے. زندگی نو اگست ۲۰۰۴ء سے ایک حوالہ اور ''کہاں سارے ہی باطل ادیان پر چھا جانے کی بات اور کہاں وہ صورت حال جس میں یہ دعوت اپنے اس مرحلہ میں مکہ میں گھر گئی تھی؟ (فی ادنی الارض) اس پرخطر مرحلے میں داعی اول کی مشکلات میں اضافہ کا ایک سبب حضرت خدیجہؓ کی وفات تھی جو آپ کی معنوی سند تھیں. اس کے ساتھ ساتھ آپ کے چچا بھی اس اثنا میں چل بسے جو آپ کی اجتماعی سند تھے اور جو آپ کو قریش کے ظلم و ستم سے بچانے میں ڈھال کا (حمایتی کا) کام انجام دیا کرتے تھے'' ابن اسحاق نے کہا ہے کہ وہ پھر ایک ہی سال میں خدیجہؓ بنت خویلد اور ابو طالبؓ کا انتقال ہو گیا اس کے بعد رسول اللہ پر مصیبتوں کا سلسلہ ٹوٹ پڑا کیونکہ وہ رضی اللہ عنہا اسلام کے بارے میں آپ کی سچی وزیر تھیں جو آپ کی شکایتیں سن کر صحیح صلاح مشورہ دیا کرتی تھیں. رہے آپ کے چچا ابو طالبؓ تو وہ آپ کے حامی اور حمایتی تھے یہ آپ کی ہجرت سے کوئی تین سال پہلے ہوا. ابو طالبؓ چل بسے تو قریش نے آپ کو اتنی اذیت پہنچائیں جن کا وہ ان کی زندگی میں تصور بھی نہیں کر سکتے تھے'' سیرت ابن ہشام الروض الانف ۲/۱۶۶، الروض الانف دراصل سیرت ابن ہشام کی شرح ہے (الکاف) ص-۱۲

ان حالات سے یہ ظاہر ہو رہا ہے کہ حضورؐ اور مومنوں پر مکہ کی سرزمین میں بہت ظلم ہو رہا تھا جس سے نبیؐ اور مومن بہت زیادہ پریشان تھے مگر ناامید نہیں تھے تب اللہ نے محمدؐ کو خوشخبری دی کہ اے محمدؐ آپ کی خواہشات اور مشن کو کم زمین یعنی مکہ کے گرد و نوا میں مغلوب کر دینے کی کوشش ہو رہی ہے تو آپ غم زدہ نہ ہوں یہ کچھ دنوں چند سال کی بات ہے کافر سب مغلوب ہوں گے اور تم کو فتح نصیب ہوگی اللہ کی مدد سے اس دن مومن خوش ہوں گے مگر شرط یہ ہے کہ آپ اس فتح کو حاصل کرنے کے لئے جد و جہد کرو ہمت کے ساتھ یہ میرا قانون ہے کہ میں اور میرے نبی اور مومن ہی غالب رہتے ہیں. ان کے ساتھ دوسری آیات بھی نازل ہوئیں ان کو پڑھ کر محمدؐ نے حکمت اور فراست کے ساتھ کام کیا اور مختلف علاقوں کا سفر کیا ان میں ایک طائف بھی ہے اس میں محمدؐ کو بہت زیادہ پریشان کیا جس پریشانی کو محمدؐ زندگی بھر یاد رکھتے تھے یہاں تک کہ جب سیدہ عائشہؓ ایک دن مکہ کی فتح اور ایک مستحکم ریاست قائم ہو جانے کے بعد اور اس کے پھیل جانے کے بعد دریافت کرتی ہیں کہ کیا آپ پر احد کے دن سے زیادہ شدید کوئی اور دن گزرا ہے تو آپ فرماتے ہیں ''میں نے تمہاری قوم (یعنی قریش) سے جو تکلیف اٹھائی سو تو اٹھائی ہی (لیکن) شدید ترین مرحلہ وہ تھا جب میں نے اپنے آپ کو ابن عبد یالیل بن عبد کلال کے سامنے (بحیثیت نبی) پیش کیا اس حال میں کہ وہ طائف کے بڑے لوگوں میں سے تھا. اس نے میری اس بات کو تسلیم نہیں کیا جو میں نے اس سے کہی تھی. پھر میں (اس کے یہاں سے) چل پڑا اس حال میں کہ

अनेकेश्वर वादी हैं वह तुम्हारे शत्रु हैं उनसे सावधान रहना और जो नसारा हैं वह ईमान ले आते हैं तो फिर मुसलमान ईसाईयों की हार पर दुखी क्यों हुए और उनकी जीत पर प्रसन्न क्यों होना था या कहीं किसी आयत में ऐसा आदेश है कि ईसाईयों की जीत पर तुम को प्रसन्न होना है और न ही मुहम्मद स0 ने कभी ऐसा आदेश दिया या व्यवहार किया अतः सूरत रूम की प्रारम्भिक आयात का जो अनुवाद और तफसीर की है विचारणीय है अधिपति और परास्त आस्तिक और नास्तिक को होना है या ईश्वर ने जो जंगी नियम निर्धारित कर दिया है उसके विपरीत करने पर परास्त और उसका पालन करने पर अधिपति होना है, तो फिर इन आयात का भावार्थ क्या होना चाहिए जिन्दगी नौ अगस्त 2004 से एक हवाला और ''कहां सारे ही काल्पनिक पंथो पर छा जाने की बात और कहां वह दशा जिसमें यह आवाहन अपने इस चरण में मक्काह में घिर गई थी? (फ़ी अदनल अर्ज) इस पुरखतर चरण में प्रथम निमंत्रण दाता की कठिनाईयों में बढ़ोतरी का एक कारण श्रीमति खदीजा का देहान्त था जो आपकी मानवी प्रमाण थी इसके साथ-साथ आपके चचा भी इस समय में चल बसे जो आपके सामुहिक प्रमाण थे, और जो आपको कुरैश के अत्याचार से बचाने में ढाल का (सहायक का) काम अंजाम दिया करते थे'' इब्न इस्हाक ने कहा है कि ''फिर एक ही साल में खदीजा र0 बिनते खुवेलद और अबुतालिब र0 का देहान्त हो गया, इसके बाद रसूलुल्लाह पर आपत्तियों का क्रम टूट पड़ा क्योंकि वह रजिअल्लाह अन्हा इस्लाम के बारे में आपकी सच्ची मंत्री थी जो आप की आपत्ति सुनकर सही मशवरा दिया करती थी, रहे आपके चचा अबुतालिब र0 तो वह आपके सहायक और समर्थक थे, यह आपके पलायन से कोई तीन साल पहले हुआ अबुतालिब चल बसे तो कुरैश ने आप को इतनी पीड़ा पहुंचाई जिनका वह उनके जीवन में सोच भी नहीं सकते थे'' सीरत इब्ने हश्शाम अर्रौजुल अनफ {2:166} अर्रौजुल अनफ वास्तव में सीरत इब्ने हश्शाम की शरह है (अलकाफ) पेज 12

इन स्थितियों से यह प्रकट हो रहा है कि हुजूर और आस्तिकों पर मक्काह की सर जमीन में बहुत अत्यार हो रहा था जिससे नबी और मौमिन अधिक व्याकूल थे परन्तु निराश नहीं थे तब ईश्वर ने मुहम्मद स0 को शुभ सूचना दी कि ऐ मुहम्मद स0 आप की इच्छा और मिशन को कम धरती अर्थात मक्काह के आस-पास परास्त कर देने का प्रयत्न हो रहा है तो आप दुखी न हों यह कुछ दिनों चन्द साल की बात है नास्तिक सब परास्त होंगे और तुमको विज्य प्राप्त होगी, ईश्वर की सहायता से उस दिन मौमिन हर्षित होंगे परन्तु शर्त यह है कि आप उस विज्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास करो साहस के साथ यह मेरा नियम है कि मैं और मेरे नबी और आस्तिक ही अधिपति रहते हैं, इन के साथ दूसरी आयात भी अवतरित हुई उनको पढ़ कर मुहम्मद स0 ने युक्ति और विवेक के साथ कार्य किया और अनेक क्षेत्रों की यात्राएं की उनमें एक तायफ भी है उसमें मुहम्मद स0 को बहुत अधिक व्याकूल किया जिस व्याकूलता को मुहम्मद स0 जीवन भर याद रखते थे यहां तक कि जब सय्यदा आयशा र0 एक दिन मक्काह की विज्य और एक स्थिर राज्य स्थापित हो जाने के बाद और उसके फैल जाने के बाद ज्ञात करती हैं कि क्या आप पर ओहद के दिन से अधिक कठिन कोई और दिन बीता है आप स0 कहते हैं ''मैंने तुम्हारी जाति (अर्थात कुरैश) से जो पीड़ा उठाई सो तो उठाई ही (परन्तु) कठोरतम चरण वह था जब मैंने अपने आपको इब्न अब्द यालेल बिन अब्द कलाल के सामने (बहेसियत नबी) प्रस्तुत किया इस दशा में कि वह तायफ के बड़े लोगों में से था, उसने मेरी बात को स्वीकार नहीं किया मैंने उससे कही थी फिर मैं (उसके यहां से) चल पड़ा इस हाल में कि

में सरतापा हुम व गम में डूबा हुआ था (यह सोचते हुए कि इस आवहान का अब क्या बनेगा) यहां तक कि मुझे होश न रहा ताआंकि मैंने अपने आपको करन अस्सआलिब के स्थान पर पाया)" यह स्थान तायफ और मक्काह के मध्य एक दिन रात की दुरी पर स्थित है, और अहले नजद की मीकात है (अलहलबीया।/359) इसको करनुलमनाजिल भी कहते हैं, यह हदीस सही बुखारी में नम्बर 3231 के अन्तर्गत वारिद हुई है देखिये फतेहउलबारी (6/312-315) डाक्टर हेकल,

रसूल ने इतनी व्याकूलता उठाने के बाद भी तयफ वालों के लिए मंगल प्रार्थना की इस आशा के साथ कि इस धरती में इस्लाम का बाग लगेगा

रसूलुल्लाह स0 मक्काह इस यात्रा यातना से लोटे परन्तु उसमें प्रविष्ट नहीं हो सके यहां तक कि उसके अनेकेश्वर वादी सरदारों में से एक ने आपकी सहायता का बीड़ा उठाया उसका नाम अलमतआम बिन अदी था (5) जिन्दगी नो अगस्त 2004 पद पे0 13 और आपने हज के अवसर पर दूसरे परिवारों से भी सम्पर्क किया जो इतिहास और सीरत की पुस्तकों में अंकित हैं जिनमें एक का हवाला मैंने भी लिखा है चूंकि मुहम्मद स0 को आभास हो गया था कि बहुत जल्द प्लायन करना है प्लायन करने के बाद किस स्थान पर जाना है उसका अवलोकन कर रहे थे तो ईश्वर ने वह स्थान उपलब्ध कर दिया अर्थात मदीना, मदीने के रहने वालों ने मुहम्मद और मुसलमानों की हर प्रकार की सहायता करने और हर प्रकार का बलिदान देने का प्रण किया तब मुहम्मद स0 ने मुसलमानों को मदीना प्लायन करने की अनुमति दी और स्वयं भी वहां को प्लायन कर गए

मदीना पहुंचकर आप स0 ने एक राज्य स्थापित किया वहां के रहने वालों से अनुबन्ध किया और शांति के साथ रहने का वचन किया इसी दौरान मुसलमानों की शक्ति बढ़ती रही परन्तु मक्काह वाले भी चुप न बैठे और बदर के स्थान पर एक युद्ध हो गया जिसमें मुसलमनों को विज्य मिली जिसको ईश्वर ने यौमुल फुरकान कहा है {8:41} इसके बाद दूसरी जंगे हुई फिर आप उमरे के लिए मक्काह को चले परन्तु हुदेबिया के स्थान पर मक्काह वालों ने रोक लिया उमरा न करने दिया, परन्तु उस स्थान पर एक अनुबन्ध होगया और इस अनुबन्ध को ईश्वर ने खुली विज्य कहा है जो वास्तव में खुली विज्य थी, इस खुली विज्य ही का प्रभाव था कि कुछ ही दिनों के अन्दर मक्काह भी विज्य हो गया यह और भी बड़ी विज्य थी और जो भविष्य वाणी सूरत रूम में है वह पूरी हो गई और मुसलमान हर्षित हो गए जो वास्तव में खुशी थी, न कि रूमीयों की विज्य पर खुश होना और यह काम बिजइ-सिनीन में ही हो गए,

मुझे दुख है कि हमारे उल्माकराम की दृष्टि कुरआन की इन आयात पर नहीं गई जिनको मैंने लिखा है और इनके अतिरिक्त और बहुत आयात हैं और न ही मुहम्मद स0 और मुसलमानों के कार्यों को देखा, और अज्ञात किस मूल में आयात के भाव को ईसाईयों की विज्य और पराज्य से जोड़ दिया जो सियाक व सबाक और मुहम्मद स0 व आस्तिकों के पद के विपरित है ईश्वर हम को कुरआन समझने का उचित विवेक दे तकब्बल,

जिस विजय पराजय को रूमीयों से जोड़ा गया है उसके बारे में उलमाकराम यकीन के साथ यह भी निश्चित न कर सके कि वह क्षेत्र किस स्थान पर स्थिति है अवलोकन हो, क्या अनेक कथन सामने आते हैं,"अदनलअर्ज" (मिलते हुए देश या पास वाले देश) से मुराद "अजरूआत" "बसरा" के दरमियान का क्षेत्र है जो शाम की सीमा पर हिजाज,

यह है वह प्रमुत्व जिसके मिलने पर आस्तिक हर्षित होते हैं

میں سرتا پا ہم وغم میں ڈوبا ہوا تھا (یہ سوچتے ہوئے کہ اس دعوت کا اب کیا بنے گا) یہاں تک کہ مجھے ہوش نہ رہا تا آنکہ میں نے اپنے آپ کو قرن الثعالب کے مقام پایا'' یہ جگہ طائف اور مکہ کے درمیان ایک دن ورات کی مسافت پر واقع ہے اور اہل نجد کی میقات ہے (الحلبیہ ۱/ ۳۹۵) اس کو قرن المنازل بھی کہتے ہیں یہ حدیث صحیح بخاری میں نمبر ۳۲۳۱ کے تحت وارد ہوئی ہے دیکھئے فتح الباری (۳۱۵۔۳۱۲/۶) ڈاکٹر ہیکل

رسول نے اتنی تکلیف اٹھانے کے بعد بھی طائف والوں کے لئے دعاء خیر کی اس امید کے ساتھ کہ اس سرزمین میں اسلام کا باغ لگے گا۔

رسول اللہؐ مکہ اس سفر عذاب سے لوٹے لیکن اس میں داخل نہیں ہو سکے یہاں تک کہ اس کے مشرک سرداروں میں سے ایک نے آپ کی حمایت کا بیڑا اٹھایا اس کا نام المطعم بن عدی تھا۔(۵) زندگی نو اگست ۲۰۰۴ء ص۔۱۳، اور آپ نے حج کے موقع پر دوسرے قبائل سے بھی ملاقاتیں کیں جو تاریخ اور سیرت کی کتابوں میں درج ہیں جن میں ایک کا حوالہ میں نے بھی لکھا ہے چونکہ محمدؐ کو معلوم ہوگیا تھا کہ بہت جلد ہجرت کرنی ہے ہجرت کرنے کے بعد کس مقام پر جانا ہے اس کا جائزہ لے رہے تھے تو اللہ نے وہ مقام فراہم کردیا یعنی مدینہ، مدینہ کے رہنے والوں نے محمدؐ اور مسلمانوں کی ہر طرح کی مدد کرنے اور ہر طرح کی قربانی دینے کا وعدہ کیا تب محمدؐ نے مسلمانوں کو مدینہ ہجرت کرنے کی اجازت دی اور خود بھی وہاں کو ہجرت کر گئے۔

مدینہ پہنچ کر آپؐ نے ایک حکومت قائم کی وہاں کے باشندوں سے معاہدہ کیا اور امن کے ساتھ رہنے کا عہد و پیمان کیا اسی دوران مسلمانوں کی طاقت بڑھتی رہی لیکن مکہ والے بھی خاموش نہ بیٹھے اور بدر کے مقام پر ایک جنگ ہوگئی جس میں مسلمان جیت گئے جس کو اللہ نے یوم الفرقان کہا ہے اس کے بعد دوسری جنگ ہوئی پھر آپ عمرہ کے لئے مکہ کو چلے مگر حدیبیہ کے مقام پر مکہ والوں نے روک لیا عمرہ نہ کرنے دیا مگر اس جگہ ایک معاہدہ ہوگیا اور اس معاہدے کو اللہ نے فتح مبین سے تعبیر کیا جو حقیقت میں فتح مبین تھی اس فتح مبین ہی کا اثر تھا کہ کچھ ہی دنوں کے اندر مکہ بھی فتح ہوگیا یہ اور بھی بڑی فتح تھی اور جو پیشین گوئی سورت روم میں ہے وہ پوری ہوگئی اور مسلمان خوش ہو گئے جو حقیقت میں خوشی تھی نہ کہ رومیوں کی فتح پر خوش ہونا اور یہ کام بضع سنین میں ہی ہو گئے۔

مجھے افسوس ہے کہ ہمارے علماء کرام کی نظر قرآن کی ان آیات پر نہیں گئی جن کو میں نے لکھا ہے اور ان کے علاوہ اور بہت آیات ہیں اور نہ ہی محمدؐ اور مسلمانوں کے کارناموں کو دیکھا اور نہ معلوم کس بھول میں آیات کے مفہوم کو عیسائیوں کی فتح و شکست سے منسلک کردیا جو سیاق وسباق اور محمدؐ اور مومنین کے مقام کے خلاف ہے اللہ ہم کو قرآن فہمی کی صحیح صلاحیت دے تقبل۔

جس فتح وشکست کو رومیوں سے منسوب کیا گیا ہے اس کے بارے میں علماء کرام یقین کے ساتھ یہ بھی طے نہ کر پائے کہ وہ علاقہ کس جگہ واقع ہے ملاحظہ ہو کیا مختلف قول سامنے آتے ہیں ادنی الارض، (ملتے ہوئے ملک یا پاس والے ملک) سے مراد اذرعات' وبصریٰ' کے درمیان کا خطہ ہے جو شام کی سرحد پر حجاز۔

یہ ہے وہ غلبہ جس کے ملنے پر مومن خوش ہوتے ہیں نہ کہ اپنے

ने कि अपने शत्रुओं और अनेकेश्वर वादियों की विज्य पर खुशी होना.

रोम अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है मकसद मतलब कसद ख्वाहिश कस्द करना चाहना है.

इन आयात के सम्बन्ध में शुभ सूचना और कार्य करने की विधि सूरत अलकौसर में बताया गया है, इन दूसरी आयात के साथ उसको देखना अनिवार्य है, से मिलता हुआ मक्के के निकट स्थित हुआ है, या फिलिस्तीन" मुराद हो जो रूमीयों के देश से निकट था, या दीप उमर" जो फारिस से निकट है इब्न हजर ने पहले कथन की पुष्टि की है वल्लाह आलम तफसीर मौलाना शब्बीर अहमद साहब उस्मानी अनुवाद मोलाना मेहमूदल हसन साहब पे0 538, सूरत रूम.

कुरआन की सूरत रूम का अनुवाद व तफसीर करते समय आलिमों को यह भी ज्ञात न हो सका जो वास्तविकता हो अतः यह अनुवाद व तफसीर जो आलिमों ने किया है वह विचारणीय है. मैंने क्या समझा है वह सेवा में प्रस्तुत है अवलोकन हो.

دشمنوں اور مشرکوں کی فتح پر خوش ہونا.

روم عربی لفظ ہے جس کا معنی ہے مقصد مطلب قصد، خواہشات، قصد کرنا چاہنا ہے.

ان آیات کے بارے میں خوش خبری اور کام کرنے کا طریقہ سورت الکوثر میں بتایا گیا ہے ان دوسری آیات کے ساتھ اس کو دیکھنا ضروری ہے سے ملتا ہوا مکہ کے قریب واقع ہوا ہے، یا فلسطین" مراد ہو جو رومیوں کے ملک سے نزدیک تھا یا "جزیرہ عمر" جو فارس سے اقرب ہے ابن حجر نے پہلے قول کی تصحیح کی ہے واللہ اعلم، تفسیر مولانا شبیر احمد صاحب عثانی ترجمہ مولانا محمود الحسن صاحب ص ۵۳۸، سورت روم۔

قرآن کی سورت روم کے ترجمہ و تفسیر کرتے وقت عالموں کو یہ بھی معلوم نہ ہو سکا جو یقینی ہو اس لئے یہ ترجمہ و تفسیر جو عالموں نے کیا ہے وہ محل نظر ہے میں نے کیا سمجھا ہے وہ پیش خدمت ہے ملاحظہ ہو.

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

अलिफ लाम मीम ऐ मुहम्मद स0 (1) आपने जो चाहा है अर्थात जो आपकी इच्छा है उसको परास्त कर दिया निर्बल कर दिया (2) {53:1 से 4}

الم ۔ اے محمدؐ(۱) آپ نے جو چاہا ہے یعنی جو آپ کی خواہش ہے اس کو مغلوب کر دیا کمزور کر دیا (۲) [۵۳:۱ تا ۴]

कम धरती में अर्थात मक्काह और तायफ की धरती में घिर गई है परास्त हो गई है परन्तु घबराने की बात नही है शीघ्र ही परास्त होने के बाद अधिपति आ जाओगे (3)

کم زمین میں یعنی مکہ اور طائف کی زمین میں گھر گئی ہے مغلوب ہو گئی ہے لیکن گھبرانے کی بات نہیں ہے جلد ہی مغلوب ہونے کے بعد غالب آ جاؤ گے (۳)

कुछ ही साल में (बदर की विजय जिसको योमुल फुरकान कहा है संधि हुदेबिया जिसको खुली विजय कहा है और विजय मक्काह और मुसलमानों की एक आजाद हकूमत की स्थापना क्या यह प्रभुत्व नही है?) और पहले ईश्वर के आदेश से आस्तिक अधिपति हुए है और बाद में भी ईश्वर के आदेश से अधिपति होंगे और उस दिन मोमिन खुश हो जाऐंगे (4) {10:92; 5:3; 48:1,18से24}

چند ہی سال میں (بدر کی فتح جس کو یوم الفرقان کہا ہے صلح حدیبیہ جس کو فتح مبین کہا ہے اور فتح مکہ اور مسلمانوں کی ایک آزاد حکومت کا قیام کیا یہ غلبہ نہیں ہے؟) اور پہلے اللہ کے حکم سے مومن غالب ہوئے ہیں اور بعد میں بھی اللہ کے حکم سے غالب ہوں گے اور اس دن مومن خوش ہو جائیں گے (۴) [۱۰:۹۲، ۵:۳] دین مکمل ہو گیا [۴۸:۱، ۱۸ تا ۲۴]

अर्थात ईश्वर की सहायता से ईश्वर की सहायता आस्तिकों के साथ है उसके साथ जो अपने शुभ कर्मों से लेना चाहे ईश्वर उसको सहायता देता है और वह अधिपति और कृपालु है (5)

یعنی اللہ کی مدد سے اللہ کی مدد مومنوں کے ساتھ ہے اس کے ساتھ جو اپنے نیک عمل سے لینا چاہے اللہ اس کو مدد دیتا ہے اور وہ غالب اور مہربان ہے (۵)

यह ईश्वर का वचन है ईश्वर अपने वचन के विपरीत नहीं करता परन्तु अधिकांश लोग नही जानते (6)

یہ اللہ کا وعدہ ہے اللہ اپنے وعدے کے خلاف نہیں کرتا لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے (۶)

वह लोग तो दुनिया के विदित जीवन को जानते है और परलोक से अचेत है (7)

وہ لوگ تو دنیا کی ظاہری زندگی کو جانتے ہیں اور آخرت سے غافل ہیں (۷)

क्या उन लोगों ने अपने मन में विचार नही किया कि ईश्वर ने आकाशों और पृथ्वी को और जो कुछ उन दोनों के मध्य है उनको युक्ति से और एक निश्चित समय तक के लिए उत्पन्न किया है और बहुत से लोग अपने रब से मिलने के स्वीकारी नही है (8) {13:41; 21:44}

کیا ان لوگوں نے اپنے دل میں غور نہیں کیا کہ اللہ نے آسمانوں اور زمین کو اور جو کچھ ان دونوں کے درمیان ہے اُن کو حکمت سے اور ایک وقت مقررہ تک کے لئے پیدا کیا ہے اور بہت سے لوگ اپنے رب سے ملنے کے قائل نہیں ہیں (۸) [۱۳:۴۱، ۲۱:۴۴]

क्या उन लोगों ने (ईश्वर की) पृथ्वी में भ्रमण नही किया कि उन्हें उन समुदायों का परिणाम ज्ञात हो जाता, जो उनसे पहले हो चुके है वह लोग उनसे कही अधिक शक्तिशाली थे वह लोग भूमि को जोतते थे और जितना उन्होंने भूमि को आबाद

کیا ان لوگوں نے (اللہ کی) زمین میں سیر نہیں کی کہ انہیں ان قوموں کا انجام معلوم ہو جاتا جو ان سے پہلے ہو چکی ہیں وہ لوگ ان سے کہیں زیادہ طاقت ور تھے وہ لوگ زمین کو

किया है इससे अधिक उन लोगों ने आबाद किया था और उनके पास उनके ईशदूत चमत्कार लेकर आए थे (परन्तु वह अपनी गतिविधि से न रुके और वह नष्ट हो गए) ईश्वर ऐसा नहीं है कि उन पर अत्याचार करता वह स्वयं ही अपने ऊपर अन्याय कर रहे थे (9)

جوتتے تھےاور جس قدر انہوں نے زمین کوآباد کیا ہےاس سے زیادہ ان لوگوں نے آباد کیا تھا اور ان کے پاس ان کے رسول معجزے لےکر آئے تھے (مگر وہ اپنی روش سے باز نہ آئے اور وہ ہلاک ہوئے) اللہ ایسا نہیں ہے کہ اُن پر ظلم کرتا وہ خود ہی اپنے اوپر ظلم کرر ہے تھے (۹)

जिन लोगों ने बुराई की थी उनका अन्त भी बुरा हुआ इसलिए कि वह ईश्वर की आयतों को झुठलाते और उसका उपहास करते थे (10)

جن لوگوں نے بُرائی کی تھی ان کا انجام بھی بُرا ہوا اس لئے کہ وہ اللہ کی آیتوں کو جھٹلاتے اور اس کی ہنسی اُڑاتے تھے (۱۰)

ईश्वर ही रचना को पहली बार उत्पन्न करता है और उसको फिर पुनः महाप्रलय में उत्पन्न करेगा फिर तुम उसी की ओर लौटाए जाओगे (11) {13:5; 18:48; 21:44; 30:27}

اللہ ہی خلقت کو پہلی بار پیدا کرتا ہےاور اس کو پھر دوبارہ حشر میں پیدا کرے گا پھر تم اسی کی طرف لوٹائے جاؤ گے (۱۱) [۱۳:۵؛ ۱۸:۴۸؛ ۲۱:۴۴؛ ۳۰:۲۷]

और जिस दिन महाप्रलय होगी पापी निराश हो जाएंगे (12)

और उनके बनाए हुए साझियों में कोई भी उनका अनुशंसक न होगा और वह स्वयं भी अपने देवताओं से रुष्ट हो जाएंगे (13)

اور جس دن قیامت ہوگی گنہگار نا امید ہو جائیں گے (۱۲) اور ان کے بنائے ہوئے شریکوں میں کوئی بھی ان کا شفارشی نہ ہوگا اور وہ خود بھی اپنے شریکوں سے بیزار ہو جائیں گے (۱۳)

और जिस दिन महाप्रलय होगी उस दिन वह अलग अलग दल हो जाएंगे (14)

اور جس دن قیامت ہوگی اس دن وہ الگ الگ گروہ ہو جائیں گے (۱۴)

फिर जो आस्तिक होंगे और सत्कर्म करते रहे वह स्वर्ग के उपवन में प्रसन्न होंगे आओ भगत होगी (15)

और जिस दल ने कुफ्र किया होगा और हमारी आयतों और परलोक के आने को झुठलाया होगा वह कष्ट में डाला जाएगा (16)

अतः जब सन्ध्या का समय आए और जब प्रातः का समय आए ईश्वर की पाकी वर्णन करो (17)

پھر جو لوگ ایمان والے ہوں گے اور عمل نیک کرتے رہے وہ جنت کے باغ میں خوش ہوں گے آؤ بھگت ہوگی (۱۵) اور جس گروہ نے کفر کیا ہوگا اور ہماری آیتوں اور آخرت کے آنے کو جھٹلایا ہوگا وہ عذاب میں ڈالا جائے گا (۱۶) پس جب شام کا وقت آئے اور جب صبح کا وقت آئے اللہ کی پاکی بیان کرو (۱۷)

और आकाशों और पृथ्वी में उसी की प्रशंसा है और तीसरे पहर भी और जब दोपहर हो (उस समय भी नमाज पढ़ा करो) (18)

وہ जीवित को मृतक से निकालता है और मृतक को जीवित से निकालता है और वही धरती को उसके मरने के बाद जीवित करता है और उसी प्रकार तुम लोग क्यामत के दिन जीवित करके उठाए जाओगे (19)

اور آسمانوں اور زمین میں اسی کی تعریف ہےاور تیسرے پہر بھی اور جب دوپہر ہو (اس وقت بھی نماز پڑھا کرو) (۱۸) وہ زندے کو مردے سے نکالتا ہےاور مردے کو زندے سے نکالتا ہےاور وہی زمین کو اس کے مرنے کے بعد زندہ کرتا ہےاور اسی طرح تم لوگ قیامت کے دن زندہ کرکے اٹھائے جاؤ گے (۱۹)

उसकी प्रभुता के चिन्हों में से एक यह भी है कि उसने तुम को मिट्टी से पैदा किया तुम मानव होकर पृथ्वी में हर ओर फैले हुए हो (20) {4:1; 6:2; 21:104}

اس کی قدرت کی نشانیوں میں سے ایک یہ بھی ہے کہ اس نے تم کو مٹی سے پیدا کیا تم انسان ہوکر زمین میں ہر طرف پھیلے ہوئے ہو (۲۰) [۴:۱؛ ۶:۲؛ ۲۱:۱۰۴]

उसकी प्रभुता की स्मृत्तियों में से एक यह भी है कि उसने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही प्रकार की स्त्रियां उत्पन्न की ताकि तुम उनसे मिलकर शांति प्राप्त करो और तुम में प्रेम और दया पैदा कर दी जो लोग विचार करते हैं उनके लिए इन बातों में बहुत ही चिन्ह है (21) {25:57; 42:23}

اس کی قدرت کی نشانیوں میں سے ایک یہ بھی ہے کہ اس نے تمہارے لئے تمہاری ہی جنس کی عورتیں پیدا کیں تاکہ تم ان سے مل کر سکون حاصل کرو اور تم میں محبت اور مہربانی پیدا کردی جو لوگ غور کرتے ہیں ان کے لئے ان باتوں میں بہت سی نشانیاں ہیں (۲۱) [۲۵:۵۷؛ ۴۲:۲۳]

और ईश्वर की शक्ति के चिन्हों में से आकाशों और पृथ्वी की रचना है और तुम्हारी भाषा और रंगों का पृथक होना है बुद्धिवालों के लिए इन बातों में बहुत

اور اللہ کی قدرت کی نشانیوں میں سے آسمانوں اور زمین کا پیدا کرنا ہےاور تمہاری زبانوں اور رنگوں کا مختلف ہونا ہے عقل

से चिन्ह है (22)
और उसी की शक्ति के चिन्हों में से है तुम्हारा रात को सोना और दिन में उसका कृपा दया खोजना जो लोग सच्ची बातों को ध्यान से सुनते हैं उनके लिए इन बातों में बड़े चिन्ह हैं (23)
और उसी की सत्ता के चिन्हों में से है कि तुम को भय और आशा दिलाने के लिए बिजली दिखाता है और आकाश से पानी बरसाता है फिर पृथ्वी को उसके मर जाने के बाद जीवित कर देता है बुद्धि वालों के लिए इन बातों में बहुत चिन्ह हैं (24)
और उसकी सत्ता के चिन्हों में से एक यह भी है कि आकाश और पृथ्वी उसके आदेश विधान से स्थिर हैं (और तुम को मरने के बाद) फिर जब वह तुम्हें भूमि से (निकलने के लिए) पुकारेगा तो तुम तुरन्त निकल पड़ोगे (25)
और आकाशों और पृथ्वी में जो भी जीव धारी हैं सबके सब उसी के (बन्दे और दास) हैं और सब उसी के आज्ञाकारी हैं (26)
और वही है जो रचनाओं को पहली बार पैदा करता है फिर उसे पुनः महाप्रलय में पैदा करेगा और यह उसको बहुत सुगम है और आकाश और पृथ्वी में उसकी महिमा बहुत श्रेष्ठ है और वह प्रभुत्व शाली युक्ति वाला है (27)
वह तुम्हें समझाने के लिए स्वयं तुम्हारे अपने समाचार की एक उपमा वर्णन करता है कि भला जो कर्मचारी तुम्हारे पास कार्यरत हैं वह उस सम्पत्ति में जो हमने तुम को दिया है क्या वह तुम्हारे साझी हैं कि तुम सब बराबर हो जाओ और क्या तुम उनसे इस प्रकार डरते हो जिस प्रकार अपनों से डरते हो? (अर्थात अपने बराबर वालों से) इसी प्रकार हम बुद्धि वालों के लिए अपनी आयतें खोल खोलकर वर्णन करते हैं यह उपमा इसलिए है कि ईश्वर के अलावा किसी रचना को कारसाज न बनाओ (28)
परन्तु जो दुष्ट हैं वे समझे अपनी इच्छाओं के पीछे चलते हैं तो जिसको ईश्वर का नियम पथ भ्रष्ट करे उसको कौन पथ प्रदर्शन दे सकता है? और उनका कोई सहायक नही (29)
अतः (ऐ नबी और जो भी नबी का अनुयायी इस कुरआन को पढ़े) सब एकाग्रचित होकर अपना चित्त उस धर्म की दशा में जमा दो स्थिर हो जाओ उस प्रकृति पर (धर्म नियम पर) जिस पर ईश्वर ने इन्सान को पैदा किया है ईश्वर की बनाई हुई प्रकृति नियम बदली नही जाती यही बिल्कुल सीधा और उचित धर्म है परन्तु अधिक लोग नहीं जानते (30)
(और मूर्ख लोग प्रकृतिक धर्म को छोड़कर व्यक्ति के बनाए हुए पन्थों का अनुकरण करने लगते हैं जैसे आज पन्थों का अनुकरण हो रहा है इसी से रुकने के लिए ईश्वर ने कहा है) उसी ईश्वर के धर्म की ओर हृदय से आकृष्ट हो जाओ और ईश्वर की अवज्ञा करने से डरो और नमाज

والوں کے لئے ان باتوں میں بہت سی نشانیاں ہیں (۲۲)
اور اسی کو قدرت کی نشانیوں میں سے ہے تمہارا رات کو سونا اور دن میں اس کا فضل تلاش کرنا جو لوگ سچی باتوں کو غور سے سنتے ہیں ان کے لئے ان باتوں میں بڑی نشانیاں ہیں (۲۳)
اور اسی کی قدرت کی نشانیوں میں سے ہے کہ تم کو خوف اور امید دلانے کے لئے بجلی دکھاتا ہے پھر زمین کو اس کے مرجانے کے بعد زندہ کردیتا ہے عقل والوں کے لئے ان باتوں میں بہت نشان ہیں (۲۴)
اور اس کی قدرت کی نشانیوں میں سے ایک یہ بھی ہے کہ آسمان اور زمین اس کے حکم قانون سے قائم ہیں (اور تم کو مرنے کے بعد) پھر جب وہ تمہیں زمین سے (نکلنے کے لئے) آواز دے گا تو تم فوراً نکل پڑو گے (۲۵)
اور آسمانوں اور زمین میں جو بھی جاندار ہیں سب کے سب اسی کے (بندے اور مملوک) ہیں اور سب اس کے فرمانبردار ہیں (۲۶)
اور وہی ہے جو مخلوقات کو پہلی بار پیدا کرتا ہے پھر اسے دوبارہ حشر میں پیدا کرے گا اور یہ اس کو بہت آسان ہے اور آسمانوں اور زمین میں اس کی شان بہت بلند ہے اور وہ غالب حکمت والا ہے (۲۷)
<u>وہ تمہیں سمجھانے کے لئے خود تمہارے اپنے حالات کی ایک مثال بیان فرماتا ہے کہ بھلا جو ملازم تمہارے پاس کام کرتے ہیں وہ اس مال میں جو ہم نے تم کو دے رکھا ہے کیا وہ تمہارے شریک ہیں کہ تم سب برابر ہوجاؤ اور کیا تم ان سے اس طرح ڈرتے ہو جس طرح اپنوں سے ڈرتے ہو؟ (یعنی اپنے برابر والوں سے) اسی طرح ہم عقل والوں کے لئے اپنی آیتیں کھول کھول کر بیان کرتے ہیں (یہ مثال اس لئے ہے کہ اللہ کے علاوہ کسی مخلوق کو کارساز نہ بناؤ) (۲۸)</u>
مگر جو ظالم ہیں بے سمجھے اپنی خواہشوں کے پیچھے چلتے ہیں تو جس کو اللہ کا قانون گمراہ کرے اس کو کون ہدایت دے سکتا ہے؟ اور ان کا کوئی مددگار نہیں (۲۹)
<u>پس (اے نبی اور جو بھی نبی کا امتی اس قرآن کو پڑھے) سب یک سو ہو کر اپنا رُخ اس دین کی سمت میں جما دو قائم ہوجاؤ اس فطرت پر (دین قانون پر) جس پر اللہ نے انسان کو پیدا کیا ہے اللہ کی بنائی ہوئی فطرت قانون بدلی نہیں جاتی یہی بالکل سیدھا اور درست دین ہے مگر اکثر لوگ نہیں جانتے (۳۰)</u>
<u>(اور جاہل لوگ دین فطرت کو چھوڑ کر انسان کے بنائے ہوئے مذہبوں کی پیروی کرنے لگتے ہیں جیسے آج فرقوں کی پیروی ہو رہی ہے اسی سے رکنے کے لئے اللہ نے کہا ہے) اسی اللہ کے دین کی طرف دل سے متوجہ ہوجاؤ اور اللہ کی نافرمانی کرنے سے ڈرو اور نماز قائم کرو</u>

स्थापित करो और उन अनेकेश्वर वादियों में से न हो जाओ (31)

जिन्होंने अपना अपना धर्म पृथक पृथक बना लियाहै और दलों में बंट गए है हर एक दल के पास जो कुछ है उसी में मगन है (32) {2:213; 3:104; 6:159; 23:53; 42:21; 9:31; 24:55}

नोट- इस आयत से सम्बन्धित कुछ और आयतें लिख दी जाऐं तो बात स्पष्ट होगी और हम विचार मनन करके वास्तविकता पा लें तो अच्छा है

(2:213) सब व्यक्ति आरम्भ में एक ही रीति पर थे (एक रीति पर रखने के लिए) ईश्वर ने ईशदूतों को भेजा जो कि हर्ष सुनाते थे और डराते थे और उनके साथ पुस्तकें भी ठीक अवतरित की इस उद्देश्य से कि ईश्वर लोगों में उन मतभेदों में निर्णय कर दे और उनमें मतभेद और किसी ने नही किया परन्तु केवल उन लोगों ने जिनको पुस्तक विधान मिला था पश्चाता इसके कि उनके पास स्पष्ट तर्क पहुंच चुके थे आपस की हठ के कारण, फिर ईश्वर ने धर्म वालों को वह सत्य मार्ग जिसमें मतभेद किया करते थे अपने नियम कृपा दया से बता दिया और ईश्वर उसको जो चाहता है अपने कर्मों से सत्य मार्ग बता देता है,

(3:104) और तुम में एक दल ऐसा होना अनिवार्य है कि मंगल की ओर अर्थात सत्य धर्म की ओर बुलाए और शुभ कर्मों के करने को कहा करे और बुरे कर्मों से रोका करें और ऐसे लोग पूर्ण सफल होंगे,

(6:159) निःसन्देह जिन लोगों ने अपने धर्म को पृथक पृथक कर लिया और दल दल बन गए ऐ मुहम्मद आपको उनसे कोई सम्बन्ध नही अर्थात वह मुसलमान नही है अतः उनका प्रसंग ईश्वर को समर्पित है फिर उनको उनका किया हुआ बता देगा,

(9) उन्होंने ईश्वर को छोड़कर अपने उलमा और सन्तों को रब बना रखा है और मसीह इब्ने मरयम को भी यद्यपि उनको केवल यह आदेश किया गया है कि केवल एक ईश्वर की पूजा करें,

(24:55) तुम में जो लोग विश्वास लावे और सत्य कर्म करें उनसे ईश्वर वचन करता है कि उनको पृथ्वी में राज्य प्रदान करेगा जैसा उनसे पहले लोगों को राज्य दिया था और जिस धर्म को उनके लिए पसन्द किया है उससे उनके लिए शक्ति देगा और उनको भय के बाद शान्ति देगा यदि मेरी पूजा करते रहे मेरे साथ किसी प्रकार का अनेकेश्वर वाद न करे और जो व्यक्ति बाद इसके अवज्ञा करेंगे तो वह भ्रष्ट है,

(23:53) सो उन लोगों ने अपने धर्म में अपना पन्थ अलग अलग करके मतभेद उत्पन्न कर लिया हर दल के पास जो धर्म है वह उसी से प्रसन्न है,

(42:21) क्या उन लोगों के ऐसे साझी है जो उन लोगों के लिए धर्म के नियम बनाते हैं जिनकी अनुमति ईश्वर ने उन्हें नही दी है? यदि निर्णय (के दिन) का वचन पहले से निश्चित न कर दिया गया होता तो उनके मध्य (कभी का) निर्णय कर दिया गया होता उन दुष्टों को निःसन्देह पीड़ा देने वाला कष्ट होगा,

जिन आयात में ईश्वर ने मतभेद को बुरा अनेकेश्वर वाद बताकर मतभेद करने से मना किया है वह तो बहुत है जो हर वाचक कुरआन पढ़ते समय पढ़ता है परन्तु उनको यहां पर इसलिए नही लिखा जा रहा कि मेरा उद्देश्य अपनी बात को विस्तार देना नही है उन आयात में बताया गया है कि मतभेद करने वाले अनेकेश्वर वादी है और यह भी बताया है कि मतभेद करने वालों का मुहम्मद स० से कोई सम्बन्ध नही और यह भी बताया कि जब मनुष्य अच्छे कर्म करेगा

اوران مشرکوں میں سے نہ ہو جاؤ (۳۱)

جنہوں نے اپنا اپنا دین الگ الگ بنالیا ہے اور گروہوں میں بٹ گئے ہیں ہر ایک گروہ کے پاس جو کچھ ہے اسی میں مگن ہے (۳۲) [۲:۲۱۳؛ ۳:۱۰۴؛ ۶:۱۵۹؛ ۲۳:۵۳؛ ۴۲:۲۱؛ ۹:۳۱؛ ۲۴:۵۵]

نوٹ:۔ اس آیت سے متعلق کچھ اور آیتیں لکھ دیں جائیں تو بات اور صاف ہوگی اور ہم غور وفکر کر کے حقیقت پالیں تو اچھا ہے۔

(۲:۲۱۳) سب آدمی شروع میں ایک ہی طریقے پر تھے (ایک طریقے پر رکھنے کے لئے) اللہ نے رسولوں کو بھیجا جو کہ خوشی سناتے تھے اور ڈراتے تھے اور ان کے ساتھ کتابیں بھی ٹھیک طور پر نازل کیں۔ اس غرض سے کہ اللہ لوگوں میں اُن اختلافوں میں فیصلہ کر دے اور اس میں اختلاف اور کسی نے نہیں کیا مگر صرف ان لوگوں نے جن کو کتاب قانون ملا تھا۔ بعد اس کے کہ ان کے پاس دلائل واضح پہنچ چکے تھے آپس کی ضدا ضدی کی وجہ سے پھر اللہ نے ایمان والوں کو وہ امر حق جس میں اختلاف کیا کرتے تھے اپنے قانون فضل سے بتادیا اور اللہ اس کو جو چاہتا ہے اپنے عمل سے راہ راست بتادیتا ہے۔

(۳:۱۰۴) اور تم میں ایک جماعت ایسی ہونا ضرور ہے کہ خیر کی طرف یعنی دین حق کی طرف بلائے اور نیک کاموں کے کرنے کو کہا کرے۔ اور بُرے کاموں سے روکا کریں اور ایسے لوگ پورے کامیاب ہوں گے۔

(۶:۱۵۹) بے شک جن لوگوں نے اپنے دین کو جدا جدا کرلیا اور گروہ گروہ بن گئے اے محمدؐ آپ کا ان سے کوئی تعلق نہیں یعنی وہ مسلمان نہیں ہیں پس ان کا معاملہ اللہ کے حوالے ہے پھر ان کو ان کا کیا ہوا بتادے گا۔

(۹:۳۱) انہوں نے اللہ کو چھوڑ کر اپنے علماء اور مشائخ کو رب بنا رکھا ہے اور مسیحؑ ابن مریم کو بھی حالانکہ ان کو صرف یہ حکم کیا گیا ہے کہ فقط ایک اللہ کی عبادت کریں۔

(۲۴:۵۵) تم میں جو لوگ ایمان لاویں اور نیک عمل کریں ان سے اللہ وعدہ فرماتا ہے کہ ان کو زمین میں حکومت عطا کرے گا جیسا ان سے پہلے لوگوں کو حکومت دی تھی اور جس دین کو ان کے لئے پسند کیا ہے اس سے ان کے لئے قوت دے گا اور ان کو خوف کے بعد ان کو امن دے گا بشرطیکہ میری عبادت کرتے رہیں میرے ساتھ کسی قسم کا کا شرک نہ کریں اور جو شخص بعد اس کے کفر کرے گا تو وہ لوگ فاسق ہیں۔

(۲۳:۵۳) سو ان لوگوں نے اپنے دین میں اپنا طریقہ الگ الگ کر کے اختلاف پیدا کرلیا۔ ہر گروہ کے پاس جو دین ہے وہ اسی سے خوش ہے

(۴۲:۲۱) کیا ان لوگوں کے ایسے شرکاء ہیں جو ان لوگوں کے لئے دین کے ایسے قوانین بناتے ہیں جن کی اجازت اللہ نے انہیں نہیں دی ہے؟ اگر فیصلے (کے دن) کا وعدہ پہلے سے طے نہ کر دیا گیا ہوتا تو ان کے درمیان (کبھی کا) فیصلہ کر دیا گیا ہوتا۔ ان ظالموں کو یقیناً دردناک عذاب ہوگا۔

جن آیات میں اللہ نے اختلاف کو بڑا شرک بتا کر اختلاف کرنے سے منع کیا ہے وہ تو بہت ہیں جو ہر قاری قرآن پڑھتے وقت پڑھتا ہے لیکن ان کو یہاں پر اس لئے نہیں لکھا جا رہا کہ میرا مقصد اپنی بات کو طول دینا نہیں ہے ان آیات مین بتایا گیا ہے کہ اختلاف کرنے والے مشرک ہیں اور یہ بھی بتایا ہے کہ اختلاف کرنے والوں کا محمدؐ سے کوئی تعلق نہیں اور یہ بھی بتایا کہ جب آدمی اچھے

तो ईश्वर उसको पृथ्वी में राज्य देगा और यह भी बताया कि ईश्वर के मुकाबले में इन्सानों के बनाए नियम नही चलेंगे यदि उनको मानोगे तो वह अनेकेश्वर वाद होगा, हर आलिम और हर व्यक्ति कुरआन में उन आयात को पढ़ता है परन्तु दुख उनको पढ़ने के बाद अपने मतभेदों को समाप्त नही करते,

मुसलमानों ने हर आदेश को इस प्रकार तोड़ा कि आज धर्म प्रकृतिक की आकृति ही विकृत हो गई प्रकृतिक धर्म के स्थान पर इमामों और मौलवियों के बनाए हुए पंथों को स्वीकार कर लिया है आदेश दिया गया था कि धर्म को टुकड़े टुकड़े न करना अनेक दलों पंथों में विभाजित न हो जाना मुसलमानों ने इस आदेश का पालन इस प्रकार किया कि अनेक सम्प्रदाय बनाए जैसे शीआ, सुन्नी, मुअतजला और अशाअरा, फिर हर दल अनेक पथ्यों में बांट दिया गया, सुन्नियों ने निम्नलिखित पथ्य बनाए हनफी, मालकी, शाफई, हम्बली, एहले हदीस, एहले कुरआन (मुकल्लिद गैर मुकल्लिद) इसी प्रकार शीओं के बहुत पंथ बन गए

इस दौर में यह पंथ बने, देवबन्दी, बरेलवी, अहमदी,कादयानी और जमाअतों का तो पूछना ही क्या, तबलीगी जमात, जमाउत इस्लामी इत्यादि फिर लुत्फ यह कि उनमें से कतिपय दल और जमाअतें एक दूसरे को नास्तिक कह रही है ऊपर लिखी आयात के आदेशानुसार सारी दुनिया के मुसलमान एक जमाअत होने चाहिए कुरआन में ईश्वर ने कहा है ("हुवा सुम्माकुमुल मुस्लिमीन" हज) ईश्वर ने तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा फिर दर्जनों नाम मुसलमानों ने क्यों रखे, क्यों पचासों दल पंथ बन गए क्यों नही कहते कि हम सब एक मुस्लिम है और हमारा एक धर्म शास्त्र कुरआन है,

जो उलमा कुरआन से हटकर अपनी ओर से धर्म के नियम बनाते रहते है वह मानों ईश्वर के साझी हो गए और मानने वाले अनेकेश्वर वादी, आज नमाज जैसी पूजा जो दिन में पांच बार अनिवार्य है वह भी एक नही है और जो विधि नमाज की कुरआन में है उसके विपरीत नमाज पढ़ी जा रही है ऐसे ही दान भी कुरआन के विपरीत है बलात्कारी का दण्ड भी कुरआन के विरीत है, चोर के दण्ड में सहमत नही तलाक नान नफका के नियम कुरआन के विपरीत है और इन कुरआन के विपरीत पर ही व्यवहार हो रहा है तो फिर ईश्वर की सहायता कैसे आ सकती है विचार किया जाए

एक हो मुस्लिम हरम की पासबानी के लिए
नील के साहिल से लेकर ताबखाके कासग़र

और जब लोगों को कष्ट पहुंचता है तो अपने ईश्वर को पुकारते है और उसी की ओर आकृष्ट होते है फिर जब वह उनको अपनी कृपा का स्वाद चखाता है तो एक दल उनमें से अपने ईश्वर से अनेकेश्वर वाद करके नकार कर देता है (53)

ताकि वह उस वस्तु की कृतघ्नता करें जो हमने उन्हें दी है सो उठलो लाभ निकट ही तुम को ज्ञात हो जाएगा (34)

सुनो! हमने उन पर कोई प्रमाण अवतिरत नही किया जो उनके प्रति निर्देशित करता हो जिन्हें वह ईश्वर की शक्तियों में साझी बना रहे है (35)

और जब हम लोगों को अपनी करूणा का स्वाद चखाते है तो प्रसन्न हो जाते है और यदि उनके कर्मों के कारण जो उनके हाथों ने आगे प्रेषित किए

عمل کرے گا تو اللہ اس کو زمین میں حکومت دے گا اور یہ بھی بتایا کہ اللہ کے مقابلے مین انسانوں کے بنائے قانون نہیں چلیں گے اگر اُن کو مانو گے تو وہ شرک ہوگا اور وہ قانون بنانے والے ان کے معبود ہوں گے ہر عالم اور ہر آدمی قرآن میں ان آیات کو پڑھتا ہے مگر افسوس ان کو پڑھنے کے بعد اپنے اختلافات کو ختم نہیں کرتے

مسلمانوں نے ہر حکم کو اس طرح توڑا کہ آج دین فطرت کی شکل ہی مسخ ہو گئی دین فطرت کے بجائے اماموں اور عالموں کے بنائے ہوئے مذہب کو تسلیم کرلیا ہے۔ حکم دیا گیا تھا کہ دین کو ٹکڑے ٹکڑے نہ کرنا مختلف فرقوں میں تقسیم نہ ہو جانا. مسلمانوں نے اس حکم کی تعمیل اس طرح کی کہ مختلف فرقے بنائے جیسے شیعہ، سنی، معتزلہ اور اشاعرہ، پھر ہر فرقہ مختلف فرقوں میں تقسیم کیا گیا. سنیوں نے حسب ذیل فرقے بنائے۔ حنفی، مالکی، شافعی، حنبلی، اہل حدیث، اہل قرآن (مقلد غیر مقلد) اسی طرح شیعوں کے بہت فرقے بن گئے.

اس دور میں یہ فرقے بنے دیوبندی، بریلوی، احمدی، قادیانی اور جماعتوں کا تو پوچھنا ہی کیا تبلیغی جماعت، جماعت اسلامی وغیرہ. پھر لطف یہ کہ ان میں سے بعض فرقے اور جماعتیں ایک دوسرے کو کافر کہہ رہی ہیں مذکورہ بالا آیات کے حکم کے مطابق ساری دنیا کے مسلمان ایک جماعت ہونے چاہئیں. قرآن میں اللہ نے فرمایا ہے (''ھو سماکم المسلمین'' الحج) اللہ نے تمہارا نام مسلم رکھا پھر درجنوں نام مسلمانوں نے کیوں رکھے. کیوں پچاسوں فرقے بن گئے کیوں نہیں کہتے کہ ہم سب ایک مسلم ہیں اور ہمارا ایک فقہ قرآن ہے.

جو علماء قرآن سے الگ ہٹ کر اپنی طرف سے شریعت کے مسائل بناتے رہتے ہیں وہ گویا اللہ کے شریک ہو گئے اور ماننے والے مشرک آج نماز جیسی عبادت جو دن میں پانچ بار فرض ہے وہ بھی ایک نہیں ہے اور جو طریقہ نماز کا قرآن میں ہے اس کے خلاف نماز پڑھی جا رہی ہے ایسے ہی زکوٰۃ بھی قرآن کے خلاف ہے زانی کی سزا بھی قرآن کے خلاف ہے چور کی سزا میں متفق نہیں طلاق نان نفقہ کے قانون قرآن کے خلاف ہیں اور ان خلاف قرآن پر ہی عمل ہو رہا ہے تو پھر اللہ کی مدد کیسے آ سکتی ہے غور کیا جائے.

ایک ہوں مسلم حرم کی پاسبانی کے لئے
نیل کے ساحل سے لے کر تا بخاک کاشغر

اور جب لوگوں کو تکلیف پہنچتی ہے تو اپنے پروردگار کو پکارتے ہیں اور اسی کی طرف رجوع ہوتے ہیں پھر جب وہ ان کو اپنی رحمت کا مزا چکھاتا ہے تو ایک فریق ان میں سے اپنے پروردگار سے شرک کر کے انکار کر دیتا ہے (۳۳)

تاکہ وہ اس چیز کی ناشکری کریں جو ہم نے انہیں دی ہے سو اٹھالو فائدے عنقریب تم کو معلوم ہو جائے گا (۳۴)

سنو! ہم نے ان پر کوئی دلیل نازل نہیں کی جو ان کے حق میں دلالت کرتی ہو جنہیں وہ اللہ کی قوتوں میں شریک قرار دیتے ہیں (۳۵)

اور جب ہم لوگوں کو اپنی رحمت کا مزہ چکھاتے ہیں تو خوش ہو جاتے ہیں اور اگر ان کے عملوں کے سبب جو ان کے ہاتھوں نے آگے بھیجے ہیں کوئی تکلیف پہنچے تو ناامید ہو کر رہ

है कोई कष्ट पहुंचे तो निराश होकर रह जाते हैं (36)

جاتے ہیں(۳۶)

क्या उन लोगों ने इस बात पर विचार नहीं किया कि ईश्वर का नियम उसकी जीविका विस्तृत कर देता है जो अपने सत्कर्मों से ईश्वर के बनाए नियम से चाहता है और उस का तंगकर देता है जो अपने दुष्कर्मों से ईश्वर के नियम का विरोध करके स्वयं चाहता है इसमें उनके लिए चिन्ह हैं जो विश्वास रखते हैं (37) {34:34,39; 17:30}

کیاان لوگوں نے اس بات پر غورنہیں کیا کہ اللہ کا قانون اس کا رزق کشادہ کردیتا ہے جواپنے نیک عملوں سے اللہ کے بتائے ہوئے قانون سے چاہتا ہےاوراس کا تنگ کردیتا ہے جواپنے بدعملوں سے اللہ کے قانون کی مخالفت کرکے خود چاہتا ہے بےشک اس میں ان کے لئے نشانیاں ہیں جوایمان رکھتے ہیں(۳۷)[۳۴:۳۴،۳۹؛ ۱۷:۳۰]

तो सम्बन्धियों और मिसकीनों और यात्रियों को उनका अधिकार देते रहो, यह उन लोगों के लिए उत्तम है जो ईश्वर की इच्छा के इच्छुक हैं और वही लोग मुक्ति प्राप्त करने वाले हैं (38)

تواہل قرابت اور مسکینوں اور مسافروں کو ان کا حق دیتے رہو یہ ان لوگوں کے لئے بہتر ہے جواللہ کی رضا کے طالب ہیں اوروہی لوگ نجات حاصل کرنے والے ہیں(۳۸)

और जो सूद तुम लेते देते हो ताकि लोगों के माल में सम्मिलित होकर वह बढ़ जाए ईश्वर के निकट वह नहीं बढ़ता और जो दान तुम ईश्वर की प्रसन्नता के लिए देते हो उसी के देने वाले वास्तव में अपने माल बढ़ाते हैं (39) {2:275,281; 3:130}

اور جوسودتم لیتے دیتے ہوتا کہ لوگوں کے مال میں شامل ہوکروہ بڑھ جائے اللہ کے نزدیک وہ نہیں بڑھتا۔اور جو زکوٰۃ تم اللہ کی رضا کے لئے دیتے ہواسی کے دینے والے درحقیقت اپنے مال بڑھاتے ہیں(۳۹)[۲:۲۷۵،۲۸۱؛ ۳:۱۳۰]

ईश्वर वह है जिसने तुम को पैदा किया फिर तुम को जीविका दी फिर तुम्हें मारता है फिर जीवित करेगा, भला तुम्हारे साझियों में भी कोई ऐसा है जो इन कामों में से कुछ कर सके वह पवित्र है जो बहुत उच्च है उस अनेकेश्वरवाद से जो वह लोग कर रहे हैं (40)

اللہ وہ ہے جس نے تم کو پیدا کیا پھرتم کو رزق دیا پھر تمہیں مارتا ہے پھر زندہ کرے گا بھلاتمہارے شریکوں میں بھی کوئی ایسا ہے جوان کاموں میں سے کچھ کرسکے وہ پاک ہےاور بہت بالا ہےاس شرک سے جو وہ لوگ کررہے ہیں(۴۰)

थल और जल में लोगों के कर्मों के कारण अशान्ति फैल गई है इस कारण से ईश्वर उनको उनके कतिपय कर्मों का स्वाद चखाये कदाचित वह रुक जाए (41)

خشکی اورتری میں لوگوں کے اعمال کے سبب فساد پھیل گیا ہےاس وجہ سے اللہ اُن کو اُن کے بعض اعمال کا مزہ چکھائے شائدوہ باز آجائیں(۴۱)

कह दो देश में चलो फिरो और देखो कि जो लोग तुम में पहले हुए हैं उनका कैसा अन्त हुआ है उनमें अधिक अनेकेश्वर वादी थे (42)

کہدوکہ ملک میں چلوپھرواور دیکھوکہ جولوگ تم سے پہلے ہوئے ہیں ان کا کیساانجام ہوا ہےان میں زیادہ تر مشرک تھے(۴۲)

तो उस दिन से पहले जो ईश्वर की ओर से आकर रहेगा और रुक नहीं सकेगा धर्म के सीधे मार्ग की ओर दृढ़ता से अपना मुख किए रहो उस दिन सब एक दूसरे से पृथक हो जाएँगे (43)

تواس روز سے پہلے جواللہ کی طرف سے آکر رہے گا اور رُک نہیں سکے گا دین کے سیدھے رستہ کی طرف مضبوطی سے اپنا رُخ کئے رہواس روز سب ایک دوسرے سے جداہوجائیں گے(۴۳)

जिस व्यक्ति ने कुफ्र किया होगा तो उसके इनकार की हानि उसी को होगी और जिसने अच्छे किये तो ऐसे लोग अपनी सफलता का सामान कर रहे हैं (44)

جس شخص نے کفر کیا ہوگا تو اس کے کفر کا نقصان اسی کو ہوگا اورجس نے اچھے کام کئے تو ایسے لوگ اپنی فلاح کا سامان کررہے ہیں(۴۴)

ईश्वर अच्छा फल देगा अपनी कृपा से उन लोगों को जो विश्वास लाए और शुभ कर्म करते रहे, निःसन्देह वह नास्तिकों को मित्र नहीं रखता (45)

اللہ اچھابدلہ دے گا اپنے فضل سے ان لوگوں کو جوایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے بےشک وہ کافروں کو دوست نہیں رکھتا(۴۵)

और उसी के चिन्हों में से है कि वायु को भेजता है कि शुभ सूचना देती हैं ताकि तुम को अपनी अनुकम्पा का स्वाद चखाए और ताकि उसके नियमानुसार नाव चले और ताकि तुम उसके कृपा

اوراسی کی نشانیوں میں سے ہے کہ ہواؤں کو بھیجتا ہے کہ خوشخبری دیتی ہیں تاکہ تم کواپنی رحمت کے مزے چکھائے اورتاکہ اس کے قانون سے کشتیاں چلیں اورتاکہ تم اس

द्या नियम से जीविका प्राप्त करो कदाचित तुम आज्ञाकारी हो जाओ (46)

और हमने आपसे पहले ईशदूतों को उनकी जाति की ओर प्रेषित किया और वह उनके पास उज्ज्वल चिन्ह लेकर आए फिर उन्होंने अपराध किया तो उनसे हमने बदला लिया और हम पर यह अनिवार्य है कि हम आस्तिकों की सहायता करें (47)

ईश्वर वह है जो वायु को भेजता है और वह बादल उठाती है फिर वह उन बादलों को आकाश में टुकड़े टुकड़े कर देती है फिर तू देखता है कि वर्षा की बूंदें बादल से टपकने लगती है फिर जब वह अपने भक्तों में से जिस पर चाहता है उसे बरसा देता है तो प्रसन्न हो जाते है (48)

यद्यपि उसके प्रेषण से पहले उनमें से अधिक निराश हो रहे थे (49)

तो (ऐ देखने वाले) ईश्वर की कृपा के चिन्हों की ओर देख कि वह किस प्रकार पृथ्वी को उसके मरने के बाद जीवित करता है? विश्वास करो वह (इसी प्रकार) मृतकों को भी जीवित करने वाला है और वह हर वस्तु के अनुमान निर्धारित करने वाला है(50)

और यदि हम तीव्र गर्म वायु चला दें जिसके प्रभाव से वह अपनी खेती को देखे कि पीली अर्थात झुलस गई तो इसके बाद वह अवज्ञा करने लग जाए तो तुम अंतरात्मा के मृतकों को (बात) नही सुना सकते और न बहरों को जब वह पीठ फैरकर अपना बचाओ करें ध्वनि सुना सकते हो (52) {27:80; 35:22; 36:70}

और न बुद्धि के अन्धों को उनकी भ्रष्टता से निकालकर सत्य मार्ग पर ला सकते हो तुम तो उन्ही लोगों को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर विश्वास लाते है सो वही आज्ञाकारी है (53)

ईश्वर वह है जिसने आरम्भ में तुमको निर्बल उत्पन्न किया फिर वही है कि निर्बलता के बाद शक्ति देता है फिर शक्ति के बाद निर्बलता और बुढ़पा देता है, वह जो चाहता है पैदा करता है और वह ज्ञान वाला और शक्ति वाला है जिस दिन क्यामत स्थापित होगी तो पापी शपथ खाकर कहेंगे कि वह एक घड़ी से अधिक मृत्यु लोक में नही रहे थे इसी भांति वह दुनिया के जीवन में धोका खाते थे (55)

और जिन लोगों को ज्ञान और ईमान दिया गया है वह कहेंगे कि ईश्वर की पुस्तक के अनुसार तुम क्यामत तक रहे हो और यह क्यामत ही का दिन है परन्तु तुमको इसका विश्वास न था (56)

तो उस दिन अत्याचारी लोगों को उनकी क्षमा मागना कुछ लाभ न देगा और न उनसे तोबा और कर्म मांगा जाएगा (57)

کے فضل قانون سے روزی طلب کرو شائد تم فرمانبردار ہو جاؤ (۴۶)

اور ہم نے آپ سے پہلے رسولوں کو ان کی قوم کی طرف بھیجا اور وہ ان کے پاس روشن نشانیاں لے کر آئے پھر انہوں نے جرم کیا تو ان سے ہم نے بدلہ لیا اور ہم پر یہ لازم ہے کہ ہم مومنوں کی مدد کریں (۴۷)

اللہ وہ ہے جو ہواؤں کو بھیجتا ہے اور وہ بادل اٹھاتی ہیں، پھر وہ ان بادلوں کو آسمان میں ٹکڑے ٹکڑے کر دیتا ہے پھر تو دیکھتا ہے کہ بارش کے قطرے بادل سے ٹپکنے لگتے ہیں پھر جب وہ اپنے بندوں میں سے جس پر چاہتا ہے اسے برسا دیتا ہے تو خوش ہو جاتے ہیں (۴۸)

حالانکہ اس کے نزول سے پہلے ان میں سے بیشتر مایوس ہو رہے تھے (۴۹)

تو (اے دیکھنے والے) اللہ کی رحمت کی نشانیوں کی طرف دیکھ کہ وہ کس طرح زمین کو اس کے مرنے کے بعد زندہ کرتا ہے؟ یقین کرو وہ (اسی طرح) مردوں کو بھی زندہ کرنے والا ہے اور وہ ہر چیز کے اندازے مقرر کرنے والا ہے (۵۰)

اور اگر ہم تیز گرم ہوا چلا دیں جس کے اثر سے وہ اپنی کھیتی کو دیکھیں کہ زرد یعنی جھلس گئی تو اس کے بعد وہ کفر کرنے لگ جائیں (۵۱)

تو تم ضمیر کے مردوں کو (بات) نہیں سنا سکتے اور نہ بہروں کو جب وہ پیٹھ پھیر کر اپنا بچاؤ کریں آواز سنا سکتے ہو (۵۲) [۲۷:۸۰:۳۵:۲۲:۳۶:۷۰]

اور نہ عقل کے اندھوں کو ان کی گمراہی سے نکال کر راہ راست پر لا سکتے ہو تم تو انہی لوگوں کو سنا سکتے ہو جو ہماری آیتوں پر ایمان لاتے ہیں سو وہی فرمانبردار ہیں (۵۳)

اللہ وہ ہے جس نے ابتدا میں تم کو کمزور پیدا کیا، پھر وہی ہے کہ کمزوری کے بعد قوت دیتا ہے پھر طاقت کے بعد کمزوری اور بڑھاپا دیتا ہے وہ جو چاہتا ہے پیدا کرتا ہے اور وہ صاحب دانش اور قدرت والا ہے (۵۴)

جس روز قیامت قائم ہوگی تو مجرم قسمیں کھا کر کہیں گے کہ وہ ایک گھڑی سے زیادہ عالم برزخ میں نہیں ٹھہرے تھے اسی طرح وہ دنیا کی زندگی میں دھوکا کھاتے تھے (۵۵)

اور جن لوگوں کو علم اور ایمان دیا گیا ہے وہ کہیں گے کہ اللہ کی کتاب کے مطابق تم قیامت تک رہے ہو اور یہ قیامت ہی کا دن ہے لیکن تم کو اس کا یقین ہی نہ تھا (۵۶)

تو اس روز ظالم لوگوں کو ان کا عذر کچھ فائدہ نہ دے گا اور نہ ان سے توبہ اور عمل طلب کیا جائے گا (۵۷)

और हमने लोगों को समझाने के लिए इस कुरआन में हर प्रकार की उपमा वर्णन की है और यदि तुम उनके सामने कोई चिन्ह प्रस्तुत करो तो वह काफिर कह देंगे कि तुम झूटे हो (58)
इसी प्रकार ईश्वर का नियम उन लोगों के हृदयों पर जो समझ नहीं रखते मोहर लगा देता है (59)
पस ऐ नबी (और नबी का अनुकरण करने वालो!) धैर्य करो निःसन्देह ईश्वर का वचन सत्य है और कदापि हल्का न पाए तुम को वह लोग जो विश्वास नहीं रखते (60)

सूरत लुकमान मक्की 31

अलिफ लाम मीम ऐ मुहम्मद स0 (1) यह युक्ति भरी पुस्तक की आयात है (2)
और सदाचारीयों के लिए मार्ग दर्शन और करूणा है (3)
उन लोगों के लिए जो सलात का पालन करते है और दान पवित्रता देते है और परलोक का विश्वास रखते है अर्थात ईश्वर के हर आदेश का पालन करते है (4)
वही वह लोग है जो अपने स्वामी की ओर से पथ प्रदर्शन पर है और वही है जो मुक्ति पाने वाले है (5)
और लोगों में कतिपय ऐसे भी है जो व्यर्थ कथाए बाते क्रय कर के लाते है ताकि वे समझे लोगों को ईश्वर के मार्ग से भटकाए और उससे उपहास करें वह ऐसे लोग है जिन के लिए हीन करने वाला कष्ट है (6)
और जब उसको हमारी आयतों को सुनाया जाता है तो अकड़ कर उनसे मुख फैर लेता है मानों उसने उन्हें सुना ही नही मानों उसके कान बहरे है तो उसको पीड़ा देने वाले कष्ट की सूचना सुना दो (7)
निःसंदेह जो विश्वास लाए और कुरआन के अनुसार सत्कर्म करते रहे उनके लिए प्रसाद के उपवन है(8)
सदैव उनमें रहेंगे ईश्वर का वचन सत्य है और प्रभुत्वशाली युक्ति वाला है (9)
उसने आकाशों को जैसा कि तुम देखते हो बिना स्तंभों के रचा और पृथ्वी पर पर्वत रख दिए ताकि तुमको लेकर घूमती रहे हिला न दे (अर्थात पृथ्वी का संतुलन स्थिर रहे) और उसमें हर प्रकार के जीव धारी फैला दिए और हम ही ने आकाश से बादल से पानी प्रेषित किया फिर उससे उसमें हर प्रकार के उत्तम जोड़े पैदा किए (10)
यह तो ईश्वर की रचना है तो मुझे दिखाओ ईश्वर के अतिरिक्त जो है जिनको लोग अपना पूज्य जान रहें हैं उन्होंने क्या रचा? सत्य यह है कि अत्याचारी खुली पथ भ्रष्टता में है (11)
और हमने लुकमान को ज्ञान प्रदान किया ईश्वर की आज्ञाकारी करो और जो व्यक्ति आज्ञाकारी करता है तो अपने ही लाभ के लिए आज्ञाकारी करता है

اورہم نے لوگوں کو سمجھانے کے لئے اس قرآن میں ہر طرح کی مثال بیان کی ہے اور اگر تم ان کے سامنے کوئی نشانی پیش کروتو وہ کافر کہدیں گے کہ تم جھوٹے ہو(۵۸)
اسی طرح اللہ کا قانون ان لوگوں کے دلوں پر جو سمجھ نہیں رکھتے مہر لگادیتا ہے(۵۹)
پس اے نبی (اور نبی کے پیروی کرنے والو!) صبر کرو یقیناً اللہ کا وعدہ سچا ہےاور ہرگز ہلکا نہ پائیں تم کو وہ لوگ جو یقین نہیں رکھتے (۶۰)

سورہ لقمان (مکی) ۳۱

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

الٓمٓ ۔ اے محمدؐ (۱) یہ کتاب حکیم کی آیات ہیں (۲)
اور نیکوکاروں کے لئے رہبر اور رحمت ہیں (۳)
ان لوگوں کے لئے جو صلوٰۃ کی پابندی کرتے ہیں اور زکوٰۃ پاکی دیتے ہیں اور آخرت کا یقین رکھتے ہیں یعنی اللہ کے ہر حکم پر عمل کرتے ہیں (۴)
وہی وہ لوگ ہیں جو اپنے پروردگار کی طرف سے ہدایت پر ہیں اور وہی ہیں جو نجات پانے والے ہیں (۵)
اور لوگوں میں بعض ایسے بھی ہیں جو بیہودہ قصے کہانیاں خرید کر لاتے ہیں تاکہ بے سمجھے لوگوں کو اللہ کی راہ سے بھٹکائیں اور اس سے مذاق کریں وہ ایسے لوگ ہیں جن کے لئے ذلیل کرنے والا عذاب ہے(۶)
اور جب اس کو ہماری آیتیں سنائی جاتی ہیں تو اکڑ کر ان سے منہ پھیر لیتا ہے گویا اس نے انہیں سنا ہی نہیں گویا اس کے کان بہرے ہیں تو اس کو درد دینے والے عذاب کی خبر سنادو(۷)
بے شک جو ایمان لائے اور قرآن کے مطابق نیک کام کرتے رہے ان کے لئے نعمت کے باغ ہیں (۸)
ہمیشہ ان میں رہیں گے اللہ کا وعدہ سچا ہے اور وہ غالب حکمت والا ہے(۹)
اسی نے آسمانوں کو جیسا کہ تم دیکھتے ہو بغیر ستونوں کے پیدا کیا اور زمین پر پہاڑ رکھدئے تاکہ تم کو لے کر گھومتی رہے ہلا نہ دے (یعنی زمین کا توازن قائم رہے) اور اس میں ہر طرح کے جانور پھیلادئے اور ہم ہی نے آسمان سے بادل سے پانی نازل کیا پھر اس سے اس میں ہر قسم کے نفیس جوڑے پیدا کئے (۱۰)
یہ تو اللہ کی مخلوق ہے تو مجھے دکھاؤ اللہ کے سوا جو ہیں جن کو لوگ اپنا معبود جان رہے ہیں انہوں نے کیا پیدا کیا ہے؟ حقیقت یہ ہے کہ ظالم صریح گمراہی میں ہیں (۱۱)
اور ہم نے لقمان کو دانائی بخشی کہ اللہ کی فرمانبرداری کرو اور جو شخص فرمانبرداری کرتا ہے تو اپنے ہی فائدے کے لئے

और अवज्ञा करता है तो ईश्वर भी निश्चिन्त और प्रशव्सा के योग्य है (12)

فرمانبرداری کرتا ہےاور جونافرمانی کرتا ہےتو اللہ بھی بے پرواہ اور تعریف کے لائق ہے(۱۲)

और (उस समय को याद करो) जब लुकमान ने अपने पुत्र को उपदेश करते हुए कहा कि पुत्र ईश्वर के साथ अनेकेश्वरवाद न करना निःसंदेह अनेकेश्वर वाद बड़ा अन्याय है (13)

اور (اس وقت کو یاد کرو) جب لقمان نے اپنے بیٹے کو نصیحت کرتے ہوئے کہا کہ بیٹا اللہ کے ساتھ شرک نہ کرنا بےشک شرک تو بڑا ظلم ہے(۱۳)

हमने व्यक्ति को उसके माता पिता के विष्य में उपदेश किया है, उसकी माता ने दुख पर दुख उठा कर उसे गर्भ में रखा और उसको दो साल दूध पिलाती है कि तु मेरी और अपने माता पिता की आज्ञाकारी करो (तुम सबको) मेरी ओर ही लोट कर आना है (14) {2:233; 17:24; 46:15}

ہم نے انسان کو اس کے ماں باپ کے بارے میں نصیحت کی ہےاس کی ماں نے دکھ پر دکھ اٹھا کر اسے حمل میں رکھا اور اس کو دوسال دودھ پلاتی ہے کہ تو میری اور اپنے ماں باپ کی فرمانبرداری کر (تم سب کو) میری طرف ہی لوٹ کر آنا ہے(۱۴)[۲:۲۳۳؛۱۷:۲۴؛۴۶:۱۵]

परन्तु यदि वह तुझ पर दबाओ डाले कि मेरे साथ किसी और को साझी कर ले जिसके विष्य में ईश्वर ने तुझ को कोई जानकारी नही दी तो कदापि उनका कहना न मानना, हां दुनिया में उनके साथ अच्छा व्यवहार करना परन्तु अनुकरण उसी का करना जिसने मेरी ओर प्रत्यागमन किया हो, फिर तुम को मेरी ओर लोट कर आना है तो जो कार्य तुम करते रहे हो सबसे तुमको अवगत करूंगा(15)

لیکن اگر وہ تجھ پر دباؤ ڈالیں کہ میرے ساتھ کسی اور کو شریک کرلے جس کے بارے میں اللہ نے تجھ کو کوئی علم نہیں دیا تو ہرگز ان کا کہنا ماننا ہاں دنیا میں ان کے ساتھ اچھا برتاؤ کرنا مگر پیروی اسی کی کرنا جس نے میری طرف رجوع کیا ہو. پھر تم کو میری طرف لوٹ کر آنا ہے تو جو کام تم کرتے رہے ہو سب سے تم کو آگاہ کروں گا(۱۵)

(लुकमान ने यह भी कहा कि) पुत्र यदि कोई कर्म राई के दाने के बराबर भी हो और हो भी किसी पत्थर के अन्दर या आकाशों में या पृथ्वी में ईश्वर उसको क्यामत के दिन ला उपस्थित करेगा निःसंदेह ईश्वर बारीक से बारीक वस्तु को देखता है और हर वस्तु से अवगत है (16)

(لقمان نے یہ بھی کہا کہ) بیٹا اگر کوئی عمل رائی کے دانے کے برابر بھی ہو اور ہو بھی کسی پتھر کے اندر یا آسمانوں میں یا زمین میں اللہ اس کو قیامت کے دن لا موجود کرے گا بے شک اللہ باریک سے باریک چیز کو دیکھتا ہےاور ہر چیز سے باخبر ہے(۱۶)

पुत्र नमाज स्थापित कर सत्कर्म का आदेश कर बदी से रोक और जो कष्ट तुझ पर पड़े उस पर धैर्य कर निःसंदेह यह बड़े साहस के कार्य है (17)

بیٹا نماز قائم کر نیکی کا حکم کر بدی سے منع کر اور جو مصیبت تجھ پر پڑے اس پر صبر کر بے شک یہ بڑے حوصلے کے کام ہیں(۱۷)

और लोगों से मुख फैर कर बात न करना न पृथ्वी पर अकड़ कर चल ईश्वर किसी घमण्डी और अभिमान करने वाले व्यक्ति को अभिरूचि (पसन्द) नही करता (18)

اور لوگوں سے منہ پھیر کر بات نہ کرنا نہ زمین پر اکڑ کر چل. اللہ کسی گھمنڈی اور فخر کرنے والے شخص کو پسند نہیں کرتا (۱۸)

और अपनी ध्वनी नीची रख (गधे की भांति चिल्लाकर न बोल) इसमें शंका नही कि सबसे बुरी ध्वनी गधो की होती है (19)

اور اپنی چال میں میانہ روی اختیار کر اور اپنی آواز نیچی رکھ (گدھے کی طرح چلا کر نہ بول) اس میں شک نہیں کہ سب سے بُری آواز گدھوں کی ہوتی ہے(۱۹)

क्या तुमने इस पर विचार नही किया कि ईश्वर ने आकाश व पृथ्वी की हर वस्तु तुम्हारे लिए ही अर्जित कर दी है अर्थात तुम्हारी बेगार में लगा दी है, और तुम पर अपनी प्रकट और गुप्त सुख सामग्री पूरी कर दी है, परन्तु कतिपय लोग ऐसे है कि ईश्वर (ईश्वर के आदेशों) के विष्य में वितर्क करते है जबकि उनके पास न तो किसी प्रकार का ज्ञान होता है और न मार्ग दर्शन और न कोई उज्जवल पुस्तक (20)

کیا تم نے اس پر غور نہیں کیا کہ اللہ نے آسمان وزمین کی ہر شئی تمہارے لئے ہی فراہم کردی ہے یعنی تمہاری بیگار میں لگادی ہےاور تم پر اپنی ظاہری اور باطنی نعمتیں پوری کردی ہیں لیکن بعض لوگ ایسے ہیں کہ اللہ (کے احکام) کے بارے میں بحث کرتے ہیں جب کہ ان کے پاس نہ تو کسی طرح کا علم ہوتا ہےاور نہ ہدایت اور نہ کوئی روشن کتاب(۲۰)

और जब उनसे कहा जाता है कि जो पुस्तक ईश्वर ने अवतरित की है उसका अनुकरण करो तो कहते है कि हम तो उसी का अनुकरण करेंगे जिस पर अपने पूर्वजों को पाया, भला यदि शैतान उनको नर्क की यातना की ओर बुलाता हो (21)

اور جب ان سے کہا جاتا ہے کہ جو کتاب اللہ نے نازل کی ہےاس کی پیروی کرو تو کہتے ہیں کہ ہم تو اسی کی پیروی کریں گے جس پر اپنے باپ دادا کو پایا. بھلا اگر چہ شیطان ان کو دوزخ کے عذاب کی طرف بلاتا ہو(۲۱)

اور جو شخص اپنے کو اللہ کا فرمانبردار کر لے اور نیک بھی ہو تو اس نے ایک مضبوط سہارا پکڑ لیا اور ہر کام کا انجام اللہ ہی کے ہاتھ ہے (۲۲)

और जो व्यक्ति अपने को ईश्वर का आज्ञाकारी कर ले और सदाचारी भी हो तो उसने एक सुदृढ़ सहारा पकड़ लिया और हर कार्य का परिणाम ईश्वर ही के हाथ है (22)

اور جو شخص کفر کرے تو اس کا کفر تمہیں غمناک نہ کرے اس کو ہماری طرف لوٹ کر آنا ہے پھر جو کام وہ کیا کرتے تھے ہم ان کو جتا دیں گے بے شک اللہ دلوں کی باتوں سے واقف ہے (۲۳)

और जो व्यक्ति कुफ्र करे तो उसका कुफ्र तुम्हें शोक जनक न करें उसको हमारी ओर लोट कर आना है फिर जो काम वह किया करते थे हम उन को जता देंगे निःसंदेह ईश्वर हृदय की बातों से अवगत है (23)

ہمارا قانون انہیں دنیا سے تھوڑا سا فائدہ اٹھانے کا موقع دے رہا ہے پھر انہیں (بے بسی کے عالم میں) کھینچتے ہوئے سخت عذاب کی طرف لے جائے گا (۲۴)

हमारा नियम उन्हें दुनिया से थोड़ा लाभ उठाने का अवसर दे रहा है, फिर उन्हें (बेबसी की स्थिति में) खींचते हुए कठोर कष्ट की ओर ले जाएगा (24)

اگر تم ان سے پوچھو کہ آسمان اور زمین کو کس نے پیدا کیا تو وہ یقیناً یہی کہیں گے کہ اللہ نے، یہ سن کر تم کہنا کہ سب تعریف اللہ کے لئے ہے لیکن ان میں اکثر سمجھ نہیں رکھتے (۲۵)

यदि तुम उनसे पूछो कि आकाश और पृथ्वी को किसने उत्पन्न किया तो वह निःसंदेह यही कहेंगे कि ईश्वर ने, यह सुनकर तुम कहना कि सब प्रशन्सा ईश्वर के लिए है परन्तु उनमें अधिक समझ नही रखते (25)

سب اللہ کے لئے ہے جو کچھ آسمانوں اور زمین میں ہے بے شک اللہ بے پروا اور سب خوبیوں والا ہے (۲۶)

सब ईश्वर के लिए है जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है निःसंदेह ईश्वर निश्चिन्त और विशेषताओं वाला है (26)

زمین میں جتنے درخت ہیں اگر وہ سب کے سب قلم بن جائیں اور سمندر سیاہی بن جائے اور اس کے بعد سات سمندر اور سیاہی ہو جائیں تو اللہ کی باتیں یعنی اس کی صفتیں ختم نہ ہوں۔ بے شک اللہ غالب حکمت والا ہے (۲۷)

पृथ्वी में जितने वृक्ष है यदि वह सबके सब कलम बन जाएं और समुन्द्र स्याही बन जाए और इसके बाद सात समुन्द्र और स्याही हो जाएं तो ईश्वर की बाते अर्थात उसके गुण समाप्त न हो निःसंदेह ईश्वर प्रभुत्व शाली और युक्ति वाला है (27)

اللہ کو تمہارا پیدا کرنا اور جلا اٹھانا ایک جی کے جلا اٹھانے جیسا ہے بے شک اللہ سننے والا اور دیکھنے والا ہے وہ ہر بات کو دیکھ رہا ہے (۲۸)

ईश्वर को तुम्हारा पैदा करना और जिला उठाना एक जी के जिला उठाने जैसा है निःसन्देह ईश्वर सुनने वाला और देखने वाला है वह हर बात को देख रहा है (28)

کیا تم نے نہیں دیکھا کہ اللہ رات کو دن میں داخل کرتا ہے اور دن کو رات میں داخل کرتا ہے اور اسی نے سورج اور چاند کو تمہارے لئے فراہم کر رکھا ہے بیگار میں لگا رکھا ہے ہر ایک ایک وقت مقرر تک چل رہا ہے اور یہ کہ اللہ تمہارے سب اعمال سے خبردار ہے (۲۹) [۳۶:۴۰]

क्या तुमने देखा नही कि ईश्वर रात को दिन में प्रविष्ट करता है और दिन को रात में प्रविष्ट करता है और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा को तुम्हारे लिए अर्जित कर रखा है बैगार में लगा रखा है हर एक एक निश्चित समय तक चल रहा है, और यह कि ईश्वर तुम्हारे सब कर्मों से अवगत है(29){36:40}

یہ اس لئے ہے کہ اللہ ہی حق ہے اور جن کو وہ لوگ اللہ کے سوا پکارتے ہیں وہ بے کار ہیں اور یہ کہ اللہ ہی عالی مرتبہ اور بڑا ہے (۳۰)

यह इस लिए है कि ईश्वर ही सत्य है, और जिन को वह लोग ईश्वर के सिवा पुकरते है वह व्यर्थ है और यह कि ईश्वर ही उच्च मान वाला और बड़ा है (30)

کیا تم نے دیکھا نہیں کہ اللہ ہی کے قانون اور مہربانی سے کشتیاں دریا میں چلتی ہیں تا کہ وہ تم کو اپنی کچھ نشانیاں دکھائے بے شک اس میں ہر صبر کرنے والے اور فرمانبرداری کرنے والے کے لئے نشانیاں ہیں (۳۱)

क्या तुमने नही देखा कि ईश्वर ही के नियम और कृपा से नाव दराया में चलती है, ताकि वह तुमको अपने कुछ चिन्ह दिखाए निःसंदेह इसमें हर धैर्य करने वाले और आज्ञाकारी करने वाले के लिए चिन्ह है (31)

اور جب ان پر لہریں سائبانوں کی طرح چھا جاتی ہیں تو اللہ کو پکارنے لگتے ہیں اپنے دین کو اسی کے لئے خالص کر کے پھر جب وہ ان کو نجات دے کر خشکی پر پہنچا دیتا ہے تو ان میں سے کم ہی انصاف پر قائم رہتے ہیں اور ہماری نشانیوں سے وہی انکار کرتے ہیں جو بدعہد اور نافرمان ہوتے ہیں (۳۲)

और जब उन पर लहरें मण्डपों की भांति छा जाती है तो ईश्वर को पुकारने लगते है अपने धर्म को उसी के लिए निर्मल करके, फिर जब वह उनको मुक्ति दे कर थल पर पहुंचा देता है तो उनमें कम ही न्याय पर स्थिर रहते है, और हमारे चिन्हों से वही इनकार करते है जो विश्वासघाती और अवज्ञाकारी होते है (32)

लोगों अपने रब की अवज्ञा से डरो और उस दिन का भय करो कि न पिता अपने पुत्र के कुछ काम आए और न पुत्र पिता के कुछ काम आ सके निःसंदेह ईश्वर का वचन सत्य है, अतः दुनिया का जीवन तुमको धोके में न डाल दे और न छल करने वाला शैतान तुम्हें ईश्वर के विषय में किसी प्रकार का छल दे (33)
निःसंदेह ईश्वर ही के पास क्यामत का ज्ञान है वही वर्षा प्रेषित करता है और स्त्री के पैट में जो है उसे जानता है कोई भी नहीं जानता कि कल क्या करेगा? न किसी को यह जानकारी है कि किस धरती में मरेगा याद रखो ईश्वर ही पूरे ज्ञान वाला और उचित सूचना वाला है (34)

لوگو! اپنے رب کی نافرمانی سے ڈرو اور اس دن کا خوف کرو کہ نہ باپ اپنے بیٹے کے کچھ کام آئے اور نہ بیٹا باپ کے کچھ کام آسکے بے شک اللہ کا وعدہ سچا ہے پس دنیا کی زندگی تم کو دھوکے میں نہ ڈال دے اور نہ فریب دینے والا شیطان تمہیں اللہ کے بارے میں کسی طرح کا فریب دے (۳۳)
بے شک اللہ ہی کے پاس قیامت کا علم ہے وہی بارش نازل کرتا ہے اور عورت کے پیٹ میں جو ہے اسے جانتا ہے کوئی بھی نہیں جانتا کہ کل کیا کرے گا؟ نہ کسی کو یہ معلوم ہے کہ کس زمین میں مرے گا یاد رکھو اللہ ہی پورے علم والا اور صحیح خبر والا ہے (۳۴)

सूरतु स्सज्दा मक्की 32

سورت السجدہ (مکی) ۳۲

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

अलिफ लाम मीम ऐ मुहम्मद स0 (1) इसमें कुछ शंका नही कि इस पुस्तक को सम्पूर्ण संसार के ईश्वर अर्थात मुझ ईश्वर की ओर से प्रेषित किया जा रहा है (2)
क्या वह लोग यह कहेंगे कि रसूल ने इसको स्वयं बना लिया है (इसलिए वह इस पर विश्वास नही ला रहे हैं ऐसा नही है) अपितु यह तुम्हारे ईश्वर मुझ ईश्वर की ओर से सत्य है ताकि तुम उन लोगों को सावधान करो जिनके पास तुमसे पहले (बहुत समय से) कोई सावधान करने वाला नही आया कदाचित वह सीधा मार्ग पाले (3)

الٓمٓ۔ اے محمدؐ (۱) اس میں کچھ شک نہیں کہ اس کتاب کو تمام جہان کے رب یعنی مجھ اللہ کی طرف سے نازل کیا جا رہا ہے (۲)
کیا وہ لوگ یہ کہیں گے کہ رسول نے اس کو خود گھڑ لیا ہے (اس لئے وہ اس پر ایمان نہیں لا رہا ایسا نہیں ہے) بلکہ یہ تمہارے پروردگار مجھ اللہ کی طرف سے حق ہے تا کہ تم ان لوگوں کو خبردار کرو جس کے پاس تم سے پہلے (بہت عرصے سے) کوئی خبردار کرنے والا نہیں آیا شائد وہ سیدھا راستہ پالیں (۳)

ईश्वर वह है जिसने आकाशों और पृथ्वी और जो वस्तुएं इन दोनों के बीच में हैं सब को छ दिन (चरण) में पैदा किया फिर सिहांसन पर स्थिर हुआ उसके अतिरिक्त तुम्हारा न कोई मित्र है और न अनुशंसा करने वाला क्या तुम शिक्षा नही पकड़ोगे? (4)
वही आकाश से पृथ्वी तक के हर कार्य का प्रबन्ध करता है, हर कार्य उसी के समक्ष पहुंच जाएगा, एक ऐसे दिन में जिसकी मात्रा तुम्हारी गणना के अनुसार एक हजार वर्ष होगी (5) {22:47;70:4} (हर काम के बनने बिगड़ने में समय लगता है एक दम नही होता)

اللہ وہ ہے جس نے آسمانوں اور زمین کو اور جو چیزیں ان دونوں کے درمیان میں ہیں سب کو چھ دن (دور) میں پیدا کیا پھر عرش پر قائم ہوا اس کے سوا تمہارا نہ کوئی دوست ہے اور نہ شفارش کرنے والا کیا تم نصیحت نہیں پکڑو گے؟ (۴)
وہی آسمان سے زمین تک کے ہر کام کا انتظام کرتا ہے ہر امر اسی کے حضور پہنچ جائے گا ایک ایسے دن میں جس کی مقدار تمہارے شمار کے مطابق ایک ہزار سال ہوگی (۵) [۲۲:۴۷؛۷۰:۴] (ہر کام کے بننے بگڑنے میں وقت لگتا ہے ایک دم نہیں ہوتا)

वही तो गुप्त और प्रकट का जानने वाला है और प्रभुत्व शाली दया वाला है (6)
जिसने हर वस्तु को बहुत अच्छी प्रकार बनाया उसको उत्पन्न किया और इन्सान की उत्पत्ति को मिट्टी से आरम्भ किया (7)
फिर उसका वंश एक हीन पानी के निचोड़ सत से चलाया (8)
फिर उसको ठीक किया फिर उसमें अपनी ओर से ज्ञान फूंका अर्थात ज्ञान वाला बनाया और तुम्हारे कान और आंखे और हृदय बनाए परन्तु तुम बहुत कम आज्ञाकारी करते हो (9)
और कहते हैं जब हम पृथ्वी में रल मिल जाएंगे तो क्या पुनः उत्पन्न होंगे वास्तविक्ता यह है कि वह लोग अपने ईश्वर के समक्ष जाने ही के स्वीकारी नही (10)
कहदो कि तुम्हें मोत का फरिश्ता मृत्यू देगा जो तुम पर नियुक्त किया गया है फिर तुम सब अपने ईश्वर की ओर लोटाए जाओगे (11)

وہی تو پوشیدہ اور ظاہر کا جاننے والا ہے اور غالب رحم والا ہے (۶)
جس نے ہر چیز کو بہت اچھی طرح بنایا اس کو پیدا کیا اور انسان کی پیدائش کو مٹی سے شروع کیا (۷)
پھر اس کی نسل ایک حقیر پانی کے نچوڑ سے چلائی (۸)
پھر اس کو درست کیا پھر اس میں اپنی طرف سے علم پھونکا یعنی علم والا بنایا اور تمہارے کان اور آنکھیں اور دل بنائے مگر تم بہت کم فرمانبرداری کرتے ہو (۹)
اور کہتے ہیں جب ہم زمین میں رل مل جائیں گے تو کیا از سر نو پیدا ہوں گے حقیقت یہ ہے کہ وہ لوگ اپنے رب کے سامنے جانے ہی کے قائل نہیں (۱۰)
کہہ دو کہ تمہیں موت کا فرشتہ فوت کرے گا جو تم پر مقرر کیا گیا ہے پھر تم سب اپنے پروردگار کی طرف لوٹائے جاؤ گے (۱۱)

और जब तुम देखोगे कि पापी अपने रब के सामने सिर झुकाए होंगे (और कहेंगे कि) ऐ हमारे ईश्वर हमने देख लिया और सुन लिया तू हम को वापस भेज दे कि सत्कर्म करें निःसंदेह हम विश्वास करने वाले होंगे (12)

اور جب تم دیکھو گے کہ گنہگار اپنے رب کے سامنے سر جھکائے ہوں گے (اور کہیں گے کہ) اے ہمارے رب ہم نے دیکھ لیا اور سن لیا تو ہم کو واپس بھیج دے کہ نیک عمل کریں بے شک ہم یقین کرنے والے ہوں گے (۱۲)

यदि हम चाहते तो हर व्यक्ति को हिदायात दे देते (परन्तु यह अन्याय होता) परन्तु मेरी ओर से यह बात निर्णित हो चुकी है कि मैं नर्क को जिन्नों और इन्सानों से भर दूंगा (और यह तब ही हो सकता है जब लोग अपने अधिकार से जीवन व्यतीत करें अर्थात अच्छा या बुरा स्वयं समझ कर करें यही अन्याय) (13)

اگر ہم چاہتے تو ہر شخص کو ہدایت دے دیتے (لیکن یہ زبردستی ہوتی) لیکن میری طرف سے یہ بات طے پاچکی ہے کہ میں دوزخ کو جنوں اور انسانوں سے بھردوں گا (اور یہ تب ہی ہوسکتا ہے جب لوگ اپنے اختیار سے زندگی گزاریں یعنی اچھا یا برا خود سمجھ کر کریں یہی انصاف ہے) (۱۳)

सो (अब आग के) स्वाद चखो इस लिए कि तुमने इस दिन के आने को भुला रखा था (आज) हम भी तुम्हें भुला देंगे, और जो कर्म तुम करते थे उनके दण्ड में सदैव के कष्ट का स्वाद चखते रहो (14) {32:23}

سو (اب آگ کے) مزے چکھو اس لئے کہ تم نے اس دن کے آنے کو بھلا رکھا تھا (آج) ہم بھی تمہیں بھلا دیں گے اور جو کام تم کرتے تھے ان کی سزا میں ہمیشہ کے عذاب کے مزے چکھتے رہو (۱۴) [۳۲:۲۳]

हमारी आयात पर तो वह लोग विश्वास लाते हैं जिनको यह आयात सुनाकर जब शिक्षा की जाती है तो सजदे में गिर पड़ते हैं अर्थात आज्ञाकारी करते हैं नम्रता करते हैं और अपने रब की प्रशन्सा के साथ उसकी पवित्रा वर्णन करते हैं और घमण्ड नही करेंगे (15)

<u>ہماری آیات پر تو وہ لوگ ایمان لاتے ہیں جن کو یہ آیات سنا کر جب نصیحت کی جاتی ہے تو سجدے میں گر پڑتے ہیں یعنی فرمانبرداری کرتے ہیں عاجزی کرتے ہیں اور اپنے رب کی حمد کے ساتھ اس کی تسبیح کرتے ہیں اور تکبر نہیں کریں گے (۱۵)</u>

उनकी पीठ रात्री में बिछोनों से अलग रहती है और वह अपने रब को भय और आशा से पुकारते हैं और जो धन हमने उन्हें दिया है उस में से व्यय करते हैं (16)

ان کے پہلو رات میں بچھونوں سے الگ رہتے ہیں اور وہ اپنے پروردگار کو خوف اور امید سے پکارتے ہیں اور جو مال ہم نے ان کو دیا ہے اس میں سے خرچ کرتے ہیں (۱۶)

कोई जी नही जानता कि उनके लिए कैसी आंखो की ठंडक छुपा कर रखी गई है यह उन कर्मों का बदला होगा जो वह करते रहे हैं (17)

کوئی نفس نہیں جانتا کہ ان کے لئے کیسی آنکھوں کی ٹھنڈک چھپا کر رکھی گئی ہے یہ ان اعمال کا بدلہ ہوگا جو وہ کرتے رہے ہیں (۱۷)

भला वह जो आस्तिक हो वह उस व्यक्ति की भांति हो सकता है जो अवज्ञाकारी हो? दोनों बराबर नही हो सकते (18)

بھلا وہ جو مومن ہو وہ اس شخص کی طرح ہوسکتا ہے جو نافرمان ہو؟ دونوں برابر نہیں ہو سکتے (۱۸)

जो लोग विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे उनके लिए उपवन है यह अतिथि सत्कार उन कर्मों का बदला है जो वह करते रहे थे (19)

جو لوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے ان کے لئے باغ ہیں یہ مہمانی ان کاموں کی جزا ہے جو وہ کرتے رہے (۱۹)

और जिन्होंने अवज्ञा की उनके रहने के लिए नर्क है जब चाहेंगे कि उससे निकल जाएं तो उसमें लोटा दिए जाएगे और उनसे कहा जाएगा कि जिस नर्क के कष्ट को तुम झूट समझते थे उसका स्वाद चखो (20)

اور جنہوں نے نافرمانی کی ان کے رہنے کے لئے دوزخ ہے جب چاہیں گے کہ اس سے نکل جائیں تو اس میں لوٹا دیے جائیں گے اور ان سے کہا جائے گا کہ جس دوزخ کے عذاب کو تم جھوٹ سمجھتے تھے اس کے مزے چکھو (۲۰)

और हम उनको बड़े कष्ट के अतिरिक्त कम दुनिया के कष्ट का भी स्वाद चखाएंगे कदाचित वह आज्ञाकारी हो जाए (21)

اور ہم ان کو بڑے عذاب کے علاوہ کم عذاب دنیا کا بھی مزا چکھائیں گے شائد وہ فرمانبردار ہو جائیں (۲۱)

उससे बढ़कर अन्यायी कौन जिसको उसके ईश्वर की आयतों से उपदेश किया जाए तो वह उनसे मुख फैर ले हम पापीयों से अवश्य बदला लेने वाले हैं (22)

اس سے بڑھ کر ظالم کون جس کو اس کے پروردگار کی آیتوں سے نصیحت کی جائے تو وہ ان سے منہ پھیر لے ہم گنہگاروں سے ضرور بدلہ لینے والے ہیں (۲۲)

(ऐ रसूल और रसूल का अनुकरण करने वालों!) यह सत्य है कि हमने मूसा को पुस्तक (तौरात) दी थी (इसी प्रकार तुम पर कुरआन अवतरित कर रहे हैं) तो तुम लोग इस कुरआन के मिलने पर शंका

<u>(اے رسول! اور رسول کی پیروی کرنے والو!) یہ حقیقت ہے کہ ہم نے موسیٰ کو کتاب (توریت) دی تھی (اسی طرح تم پر قرآن نازل کررہے ہیں) تو تم لوگ اس قرآن کے ملنے</u>

न करना और जिस प्रकार हमने तौरात को बनी इस्राईल के लिए मार्ग दर्शन का साधन बनाया था (इसी प्रकार कुरआन को संसार वालों के लिए मार्ग दर्शन का साधन बनाया है) (23)

और उनमें से हमने नेता बनाए थे जो हमारे आदेश से मार्ग दर्शन करते थे जब वह धैर्य करते थे और वह हमारी आयतों पर विश्वास रखते थे (24)

निःसंदेह तुम्हारा रब उन बातों में क्यामत के दिन निर्णय कर देगा जिन बातों में वह मत भेद करते थे (25)

क्या उन लोगों को (उन ऐतिहासिक घटनाओ में) कोई मार्ग दर्शन नही मिला कि उनसे पहले कितनी ही जातियों को हम वध कर चुके है जिनके रहने के स्थानों में आज वह चलते फिरते है इसमें बड़े चिन्ह है क्या वह सुनते नही (26)

क्या उन्होंने नही देखा कि हम बंजर (धरती) की ओर पानी प्रेषित कर देते है फिर उससे कृषि उत्पन्न करते है जिसमे से उनके चौपाए भी खाते है और वह भी तो वह देखते क्यों नही (27)

और कहेंगे यह निर्णय कब होगा यदि सच्चे हो तो बताओ (28)

कह दो कि निर्णय के दिन नास्तिकों को उनका विश्वास लाना कुद भी लाभ न देगाउ और न उनको छूट दी जाएगा (29)

तो आप उन का विचार छोड़ दो और प्रतीक्षा करो और वह भी प्रतीक्षा कर रहे है (30)

सूरत अहजाब (मदनी) 33

ऐ नबी आस्तिकों से कहदो कि ईश्वर की अवज्ञा से डरते रहना और नास्तिकों और कपाटियों का कहना न मानना निःसंदेह ईश्वर जानने वाला युक्ति वाला है (1) {18:28; 76:28}

और यह भी कहदो कि जो पुस्तक तुमको तुम्हारे रब की ओर से वही की जाती है उसी का अनुकरण करना निःसंदेह ईश्वर तुम्हारे सब कर्मों से अवगत है (2)

और ईश्वर पर भरोसा रखना और ईश्वर ही पर्याप्त सहायक है (3)

ईश्वर ने किसी व्यक्ति के वक्ष में दो हृदय नही रखे (कि एक समय में आस्तिक भी हो और कपटि भी वह या तो ईश्वर का हो रहे या शैतान का इसी प्रकार ईश्वर ने) तुम्हारी स्त्रीयों को जिन्हें तुम (क्रोध में आकर) माता कह देते हो, तुम्हारी माता नही बनाया, और न तुम्हारे ले पालकों को तुम्हारे पुत्र बनाया यह सब तुम्हारे मुखों की बाते है, और वही सीधा मार्ग दिखाता है (4) {58:2}

आस्तिकों! लेपालकों को उन के बापो के नाम से पुकारा करो कि ईश्वर के निकट यही बात उचित है यदि तुम को उनके बापों के नाम ज्ञात न हों तो

<u>پر شک نہ کرنا اور جس طرح ہم نے توریت کو بنی اسرائیل کے لئے ہدایت کا ذریعہ بنایا تھا (اسی طرح قرآن کو اہل عالم کے لئے ہدایت کا سرچشمہ بنایا ہے (۲۳)</u>

<u>اور ان میں سے ہم نے پیشوا بنائے تھے جو ہمارے حکم سے ہدایت کرتے تھے جب وہ صبر کرتے تھے اور وہ ہماری آیتوں پر یقین رکھتے تھے (۲۴)</u>

بلا شبہ تمہارا رب ان باتوں میں قیامت کے دن فیصلہ کردے گا جن باتوں میں وہ اختلاف کرتے تھے (۲۵)

کیا ان لوگوں کو (ان تاریخی واقعات میں) کوئی ہدایت نہیں ملی کہ ان سے پہلے کتنی ہی قوموں کو ہم ہلاک کر چکے ہیں جن کے رہنے کی جگہوں میں آج وہ چلتے پھرتے ہیں اس میں بڑی نشانی ہے کیا وہ سنتے نہیں (۲۶)

کیا انہوں نے نہیں دیکھا کہ ہم بنجر زمین کی طرف پانی رواں کردیتے ہیں پھر اس سے کھیتی پیدا کرتے ہیں جس میں سے ان کے چوپائے بھی کھاتے ہیں اور وہ بھی تو وہ دیکھتے کیوں نہیں (۲۷)

اور کہیں گے یہ فیصلہ کب ہوگا اگر سچے ہو تو بتاؤ (۲۸)

کہدو کہ فیصلے کے دن کافروں کو ان کا ایمان لانا کچھ بھی فائدہ نہ دے گا اور نہ ان کو مہلت دی جائے گی (۲۹)

تو آپ ان کا خیال چھوڑ دو اور انتظار کرو اور وہ بھی انتظار کر رہے ہیں (۳۰)

سورت الاحزاب (مدنی) ۳۳

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اے نبی مومنوں سے کہدو کہ اللہ کی نافرمانی سے ڈرتے رہنا اور کافروں اور منافقوں کا کہنا نہ ماننا بے شک اللہ جاننے والا حکمت والا ہے (۱) [۱۸:۲۸؛ ۷۶:۲۸]

اور یہ بھی کہدو کہ جو کتاب تم کو تمہارے رب کی طرف سے وحی کی جاتی ہے اسی کی پیروی کرنا بے شک اللہ تمہارے سب عملوں سے خبردار ہے (۲)

اور اللہ پر بھروسہ رکھنا اور اللہ ہی کارساز کافی ہے (۳)

اللہ نے کسی آدمی کے پہلو میں دو دل نہیں رکھے (کہ بیک وقت مومن بھی ہو اور منافق بھی وہ یا تو اللہ کا ہو رہے یا شیطان کا اسی طرح اللہ نے) تمہاری عورتوں کو جنہیں تم (غصہ میں آکر) ماں کہہ دیتے ہو تمہاری ماں نہیں بنایا اور نہ تمہارے لے پالکوں کو تمہارے بیٹے بنایا یہ سب تمہارے منہ کی باتیں ہیں اور اللہ تو سچی بات بتاتا ہے اور وہی سیدھا رستہ دکھاتا ہے (۴) [۵۸:۲]

مومنو! لے پالکوں کو ان کے باپوں کے نام سے پکارا کرو کہ اللہ کے نزدیک یہی بات درست ہے اگر تم کو ان کے

धर्म में वह तुम्हारे भाई और मित्र है और जो बात तुमसे भूल से हो गई सो उसमें तुम पर कुछ पाप नही परन्तु उस बात पर अवश्य पकड़ होगी जिसे तुम हृदय के संकल्प से करो और ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (5)

باپوں کے نام معلوم نہ ہوں تو دین میں وہ تمہارے بھائی اور دوست ہیں اور جو بات تم سے غلطی سے ہو گئی سو اس میں تم پر کچھ گناہ نہیں لیکن اس بات پر ضرور گرفت ہوگی جسے تم دل کے ارادے سے کرو اور اللہ بخشنے والا مہربان ہے(۵)

ईश्वर का नबी आस्तिकों के लिए उनकी जानों से अधिक प्रमुख (और अधिकारी) है और उसकी पत्नीयां (सम्मान की दृष्टि से) उनकी माताएं है (परन्तु जहां तक उत्तराधिकारी का सम्बन्ध है) ईश्वर की पुस्तक के (आदेश के) अनुसार नातेदार सामान्य मुसलामनों और पलायन करने वालें से अधिक अधिकारी है परन्तु यह कि तुम अपने मित्रों के साथ उपकार करना चाहो (तो कर सकते हो) यह आदेश ईश्वर की पुस्तक (अर्थात कुरआन में) में लिख दिया गया है (6)

اللہ کا نبی ایمان والوں کے لئے ان کی جانوں سے زیادہ مقدم (اور حق دار) ہے اور اس کی بیویاں (احترام کے لحاظ سے) ان کی مائیں ہیں (لیکن جہاں تک وراثت کا تعلق ہے) اللہ کی کتاب کے (احکام کے) مطابق رشتہ دار عام مسلمانوں اور مہاجروں سے زیادہ حق دار ہیں مگر یہ کہ تم اپنے دوستوں کے ساتھ سلوک کرنا چاہو (تو کر سکتے ہو) یہ حکم اللہ کی کتاب (یعنی قرآن میں) میں لکھ دیا گیا ہے(۶)

और जब हमने रसूलों से वचन लिया और तुमसे और नूह से और इब्राहीम से और मूसा से और मरयम के पुत्र ईसा से और वचन भी पक्का लिया (7) {42:13}

اور جب ہم نے رسولوں سے عہد لیا اور تم سے اور نوح سے اور ابراہیم سے اور موسیٰ سے اور مریم کے بیٹے عیسیٰ سے اور عہد بھی اُن سے پکا لیا(۷)[۴۲:۱۳]

ताकि ईश्वर सच्चों से उनकी सच्चाई के विषय में ज्ञात करे और उसने नास्तिकों के लिए दुख देने वाला कष्ट तैयार कर रखा है (8)

تا کہ اللہ سچوں سے ان کی سچائی کے بارے میں دریافت کرے اور اس نے کافروں کے لئے دُکھ دینے والا عذاب تیار کر رکھا ہے(۸)

ऐ लोगों! जो विश्वास लाए हो याद करो ईश्वर के उपकार को जो (अभि अभि) उसने तुम पर किया है जब सैना तुम पर चढ़ आई तो हमने उन पर एक प्रचण्ड आंधी भेज दी और ऐसी सैना प्रेषित की जो तुम नही देखते थे ईश्वर वह सब कुछ देख रहा था जो तुम लोग उस समय कर रहे थे (9)

اے لوگو! جو ایمان لائے ہو یاد کرو اللہ کے احسان کو جو (ابھی ابھی) اس نے تم پر کیا ہے جب لشکر تم پر چڑھ آئے تو ہم نے ان پر ایک سخت آندھی بھیج دی اور ایسی فوجیں روانہ کیں جو تم نہیں دیکھتے تھے اللہ وہ سب کچھ دیکھ رہا تھا جو تم لوگ اس وقت کر رہے تھے(۹)

जब वह ऊपर और नीचे से तुम पर चढ़ आए और जब भय से (कायरो की) आंखे पथरा गई और कलेजे मूंह को आ गए और तुम (में से कतिपय) लोग ईश्वर के विषय में भांति भांति की दुर्भावना करने लगे (10)

جب وہ اوپر اور نیچے سے تم پر چڑھ آئے اور جب خوف سے (بزدلوں کی) آنکھیں پتھرا گئیں اور کلیجے منہ کو آ گئے اور تم (میں سے بعض) لوگ اللہ کے بارے میں طرح طرح کی بدگمانیاں کرنے لگے(۱۰)

उस समय आस्था वालों की कठिन परिक्षा की गई और बुरी प्रकार हिलाए गए (परन्तु आस्तिकों के लबो पर कोई अपवाद न आई तो ईश्वर की सहायता आ गई) (11)

اس وقت ایمان والوں کی سخت آزمائش کی گئی اور بُری طرح ہلائے گئے (مگر مومنوں کے لبوں پر کوئی شکایت نہ آئی تو اللہ کی مدد آ گئی)(۱۱)

(यह वह समय था) जब कपटि और वह लोग जिन के हृदयों में रोग था कहने लगे कि ईश्वर और उसके रसूल ने हमसे जो वचन किए थे वह छल के सिवा कुछ न थे (12) {12:110}

(یہ وہ وقت تھا) جب منافق اور وہ لوگ جن کے دلوں میں روگ تھا کہنے لگے کہ اللہ اور اس کے رسول نے ہم سے جو وعدے کئے تھے وہ فریب کے سوا کچھ نہ تھے(۱۲)[۱۲:۱۱۰]

और जब उनमें से एक दल कहता था कि ऐ यसरब वालो यहां तुम्हारे ठहरने का स्थान नही लोट चलो और एक दल उनमें से रसूल से अनुमति मांगने लगा कि हमारे घर खुले पड़े है यद्यपि वह खुले नही थे वह तो अवश्य भागना चाहते थे (13)

اور جب ان میں سے ایک جماعت کہتی تھی کہ اے اہل یثرب یہاں تمہارے ٹھہرنے کا مقام نہیں لوٹ چلو اور ایک گروہ ان میں سے رسول سے اجازت مانگنے اور کہنے لگا کہ ہمارے گھر کھلے پڑے ہیں حالانکہ وہ کھلے نہیں تھے وہ تو ضرور بھاگنا چاہتے تھے(۱۳)

और यदि नगर के बाहर से शत्रु उन पर घुस आएं और उस समय (शत्रुओं की ओर से) उन्हें फित्ने और उपद्रव का निमन्त्रण दिया जाए तो तुरन्त

اور اگر شہر کے اطراف سے دشمن ان پر گھس آئیں اور اس وقت (دشمنوں کی طرف سے) انہیں فتنے اور فساد کی دعوت

उसमें कूद पड़े और उसके लिए बहुत कम विलम्ब करेंगे (14)

دی جائے تو فوراً اس میں کود پڑیں اور اس کے لئے بہت کم تامل ہوگا (۱۴)

यद्यपि उससे पहले (कपटी लोग) ईश्वर से वचन कर चुके थे कि युद्ध से पीठ न फेरेंगे, अस्तु ईश्वर से जो वचन किया जाता है उसकी अवश्य पूछ होगी (15)

حالانکہ اس سے پہلے (منافق لوگ) اللہ سے عہد کر چکے تھے کہ جنگ سے پیٹھ نہ پھیریں گے بہر حال اللہ سے جو عہد کیا جاتا ہے اس کی ضرور پرسش ہوگی (۱۵)

कहदो यदि तुम मरने या मारे जाने से भागते हो तो भागना तुमको लाभ न देगा और उस समय तुम बहुत ही कम लाभ उठाओगे (16)

کہدو اگر تم مرنے یا مارے جانے سے بھاگتے ہو تو بھاگنا تم کو فائدہ نہ دے گا اور اس وقت تم بہت ہی کم فائدہ اٹھاؤ گے (۱۶)

कहदो कि यदि ईश्वर तुम्हारे साथ बुराई का संकल्प करें तो कौन तुम को उससे बचा सकता है, या यदि तुम पर कृपा करनी चाहे (तो कौन रोक सकता है) और वह लोग ईश्वर के अतिरिक्त किसी को न अपना मित्र पाएंगे और न सहायक (17)

کہدو اگر اللہ تمہارے ساتھ برائی کا ارادہ کرے تو کون تم کو اس سے بچا سکتا ہے یا اگر تم پر مہربانی کرنی چاہے (تو کون روک سکتا ہے) اور وہ لوگ اللہ کے سوا کسی کو نہ اپنا دوست پائیں گے اور نہ مددگار (۱۷)

और ईश्वर तुममें से उन लोगों को जानता है जो (लोगों से) मना करते है और अपने भाईयों से कहते है कि हमारे पास चले आओ, और युद्ध में नही आते मगर कम (18)

اور اللہ تم میں سے ان لوگوں کو بھی جانتا ہے جو (لوگوں سے) منع کرتے ہیں اور اپنے بھائیوں سے کہتے ہیں کہ ہمارے پاس چلے آؤ اور لڑائی میں نہیں آتے مگر کم (۱۸)

(यह इस लिए कि) तुम्हारे विषय में कृपणता करते है, फिर जब भय (का समय) आए तो तुम उन को देखोगे कि तुम्हारी ओर देख रहे है (और) उनकी आंखे (इस प्रकार) फिर रही है जैसे किसी को मृत्यू से मूर्छा आ रही हो, फिर जब भय जाता रहे तो वही लोग लाभों को लो लुप बनकर तीव्र मुखों के साथ तुम से कठोर और हृदय विदारक बातें करने लगते है, वह वह लोग है जो विश्वास नही लाए अतः ईश्वर ने उनके सारे कर्म नष्ट कर दिए और ऐसा करना ईश्वर के लिए बहुत सरल है (19)

(یہ اس لئے کہ) تمہارے بارے میں بخل کرتے ہیں پھر جب ڈر (کا وقت) آئے تو تم ان کو دیکھو گے کہ تمہاری طرف دیکھ رہے ہیں (اور) ان کی آنکھیں (اس طرح) پھر رہی ہیں جیسے کسی کو موت سے غشی آ رہی ہو۔ پھر جب خوف جاتا رہے تو وہی لوگ فائدوں کے حریص بن کر تیز زبانوں کے ساتھ تم سے سخت اور لخراش باتیں کرنے لگتے ہیں وہ وہ لوگ ہیں جو ایمان نہیں لائے اسی لئے اللہ نے ان کے سارے اعمال ضائع کردئے اور ایسا کرنا اللہ کے لئے آسان ہے (۱۹)

(भय के सबब) विचार करते है कि सैना नही गई, और यदि सैना आ जाए तो इच्छा करें कि यदि वह लोग बद्दवों में जा रहें और वहां से तुम्हारी सूचनाएं ज्ञात करें, और यदि तुम्हारे मध्य हों तो युद्ध न करें परन्तु कम (20)

(خوف کے سبب) خیال کرتے ہیں کہ فوجیں نہیں گئیں اور اگر لشکر آجائیں تو تمنا کریں کہ کاش وہ لوگ بدوؤں میں جا رہیں اور وہاں سے تمہاری خبریں پوچھا کریں اور اگر تمہارے درمیان ہوں تو لڑائی نہ کریں مگر کم (۲۰)

(मुसलमानों!) वास्तविक्ता यह है कि तुम लोगों के लिए ईश्वर के रसूल (के चरित्र व स्वभाव) में एक उत्तम आदर्श है हर उस व्यक्ति के लिए जो ईश्वर और महाप्रलय का आशा धारी हो और अधिक्ता से ईश्वर को याद करता हो (21)

(مسلمانو!) درحقیقت تم لوگوں کے لئے اللہ کے رسول (کے اخلاق وعادات) میں ایک بہترین نمونہ ہے ہر اس شخص کے لئے جو اللہ اور یوم آخر کا امیدوار ہو اور کثرت سے اللہ کو یاد کرتا ہو (۲۱)

(उस युद्ध के अवसर पर कपटियों के विपरीत) मुसलमानों के विश्वास की यह स्थिति थी कि जब उन्होंने (काफिरों के आक्रमणकारी) सैना को देखा तो बोल उठे यह वही है जिसका ईश्वर और उसके रसूल ने हमसे वचन किया था ईश्वर और उस के रसूल की बात सच्ची निकली, और (शत्रुओ के) उस आक्रमण ने उनके विश्वास और अनुकरण को और बढ़ा दिया (22) {4:65; 33:56} (तसलीमा)

(اس جنگ کے موقع پر منافقوں کے برعکس) مسلمانوں کے ایمان کا یہ حال تھا کہ جب انہوں نے (کافروں کے حملہ آور) لشکر کو دیکھا تو بول اٹھے یہ وہی ہے جس کا اللہ اور اس کے رسول نے ہم سے وعدہ کیا تھا۔ اللہ اور اس کے رسول کی بات سچی نکلی اور (دشمنوں کے) اس حملے نے ان کے ایمان اور اطاعت کو اور بڑھا دیا (۲۲) [۴:۶۵؛ ۳۳:۵۶] (تسلیما)

आस्तिकों में कितने ही ऐसे व्यक्ति है कि उन्होंने जो

مومنوں میں کتنے ہی ایسے شخص ہیں کہ انہوں نے جو اقرار

वचन ईश्वर से किया था उसको सच कर दिखाया जो अपनी भेंटे पूरी कर चुके है (अर्थात सत्य मार्ग में सिर कटा चुके है) और कतिपय ऐसे है कि प्रतीक्षा में है और उन्होंने अपने वचन को तनिक भी नही बदला (23)

اللہ سے کیا تھا اس کو سچ کر دکھایا جو اپنی نذریں پوری کر چکے ہیں (یعنی راہ حق میں سر کٹا چکے ہیں) اور بعض ایسے ہیں کہ انتظار میں تیار بیٹھے ہیں اور انہوں نے اپنے قول کو ذرا بھی نہیں بدلا (۲۳)

ताकि ईश्वर सच्चो को उनकी सच्चाई का बदला दे और कपटियों को चाहे दण्ड दे या चाहे तो उनके पश्चाताप करने पर उन पर कृपा करें निःसंदेह ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (24)

تاکہ اللہ سچوں کو ان کی سچائی کا بدلہ دے اور منافقوں کو چاہے تو عذاب دے یا چاہے تو ان کے توبہ کرنے پر ان پر مہربانی کرے بے شک اللہ بخشنے والا اور مہربان ہے (۲۴)

(तात्पर्य यह कि) ईश्वर ने (परिवेष्टन (घेराव) करने वाले) काफिरों का मुख फेर दिया और वह कोई लाभ प्राप्त किए बिना अपने दुख व क्रोध में जलते हुए वापस गए (और मदिने का वातावरण कुफ्र के बादल से निर्मल हो गया) और मुसलमानों के लिए धर्म युद्ध में ईश्वर की सहायता प्रयाप्त है और ईश्वर सबसे अधिक शक्तिशाली और सबपर दयालु है (25)

(غرض کے) اللہ نے (محاصرہ کرنے والے) کافروں کا منہ پھیر دیا اور وہ کوئی فائدہ حاصل کئے بغیر اپنے غم وغصہ میں جلتے ہوئے واپس گئے (اور مدینہ کی فضا کفر کے بادل سے صاف ہوگئی) اور مسلمانوں کے لئے جہاد میں اللہ کی مدد کافی ہے اور اللہ سب سے زیادہ طاقت ور اور سب پر مہربان ہے (۲۵)

और पुस्तक वालों में से जिन्होंने आक्रमण करने वालों की सहायता की थी ईश्वर ने उनको उनके दुर्गों से निकाल दिया और उनके मनों में भय डाल दिया तो कितनों को तुम वध कर रहे थे और कितनों को बन्दी बना रहे थे (26)

اور اہل کتاب میں سے جنہوں نے حملہ کرنے والوں کی مدد کی تھی اللہ نے ان کو اُن کے قلعوں سے نکال دیا اور ان کے دلوں میں دہشت ڈال دی تو کتنوں کو تم قتل کر رہے تھے اور کتنوں کو قید کر رہے تھے (۲۶)

और उसने तुम्हें उनकी भुमि का और उनके घरों और उनके माल का उत्तराधिकारी बना दिया और उस धरती का जिसमें तुमने पग भी न रखा था तुमको उत्तराधिकारी बना दिया और ईश्वर हर वस्तु के अनुमान नियम बनाने की शक्ति रखता है (27) [21:105]

اور اس نے تمہیں ان کی زمینوں کا اور ان کے گھروں اور ان کے مال کا وارث بنا دیا اور اس زمین کا جس میں تم نے قدم بھی نہ رکھا تھا تم کو وارث بنا دیا اور اللہ ہر چیز کے اندازے قانون بنانے کی قدرت رکھتا ہے (۲۷) [۲۱:۱۰۵]

ऐ ईशदूत अपनी पत्नीयों से ज्ञात कर लो कि यदि तुमको दुनिया के जीवन और उसकी सज्जाव अलंकार की इच्छा हो (जैसे औरों को धन में से मिल रहा है) तो आओ मैं तूमको धन दे दूं (परन्तु याद रखो कि उस धन को लेकर तुम मेरे पास नही रह सकती क्योंकि मैं उस धन को पसन्द नही करता जब मैं नही ले सकता तो आप लोगों को भी मेरी भांति ही रहना है यदि मेरी पत्नी बनी रहना चाहो तो मत लो यदि लेना है तो लो) और फिर मैं धन देकर भलि भांति ढंग से विदा कर दूं (28)

اے نبی اپنی بیویوں سے معلوم کرلو کہ اگر تم کو دنیا کی زندگی اور اس کی زینت وآرائش کی خواہش ہو (جیسے اوروں کو مال غنیمت میں سے مل رہا ہے) تو آؤ میں تم کو مال دے دوں (مگر یاد رکھو کہ اس مال کو لے کر تم میرے پاس نہیں رہ سکتیں کیونکہ میں اس مال کو پسند نہیں کرتا جب میں نہیں لے سکتا تو آپ لوگوں کو بھی میری طرح سے رہنا ہے اگر میری بیوی بنی رہنا چاہو تو مت لو اگر لینا ہے تو لو) اور پھر میں مال دے کر اچھی طرح سے رخصت کردوں (۲۸)

और यदि तुम ईश्वर और उसके रसूल और शान्ति के घर की (अर्थात स्वर्ग की) इच्छुक हो तो तुम में जो सत्कर्म करने वाली है उनके लिए ईश्वर ने बड़ा फल तैयार कर रखा है (29)

اور اگر تم اللہ اور اس کے رسول اور عافیت کے گھر کی (یعنی جنت کی) طلب گار ہو تو تم میں جو نیکوکاری کرنے والی ہیں ان کے لئے اللہ نے اجر عظیم تیار کر رکھا ہے (۲۹)

नोट- हदीस कथनों में कुछ और लिखा मिलता है जो अनुचित है,

نوٹ:۔ روایت میں کچھ اور لکھا ملتا ہے۔ جو غلط ہے۔

ऐ नबी की पत्नीयों तुम में से जो कोई स्पष्ट अशलील कर्म करेगी उसको दुना दण्ड दिया जाएगा और यह बात ईश्वर को सरल है (30)

اے نبی کی بیویو! تم میں سے جو کوئی صریح ناشائستہ حرکت کرے گی اس کو دونی سزا دی جائے گی اور یہ بات اللہ کو آسان ہے (۳۰)

खण्ड मंय्यकनुत 22

پارہ ومن یقنت (۲۲)

और जो तुममें से ईश्वर और उसके रसूल की आज्ञाकारी रहेगी सत्कर्म करेगी उसको हम दूना फल देंगे और उसके लिए हमने सम्मान की जीविका तैयार कर रखी है (31)

اور جو تم میں سے اللہ اور اس کے رسول کی فرمانبردار رہے گی اور عمل نیک کرے گی اس کو ہم دونا ثواب دیں گے اور اس کے لئے ہم نے عزت کی روزی تیار کر رکھی ہے (۳۱)

ऐ नबी की पत्नीयों! तुम और स्त्रीयों की भांति नही हो यदि ईश्वर से डरो तो बात में नम्रता न करो, हृदय का रोगी कुछ लालच करे हां अच्छी नीति की बात करो (32)

और अपने घरों में ठहरी रहो और बे परदा न रहो अगली मुर्खता की सज धज दिखाती न फिरो और नमाज स्थापित करो और दान दो और ईश्वर और उसके रसूल का आदेश मानों ईश्वर यही चाहता है कि ऐ अहले बैत (ऐ घर वालों!) ईश्वर तुम्हें हर प्रकार के आरोपों से पवित्र रखेगा और दृष्टि और हृदय की शुद्धता प्रदान करेगा (33)

समीक्षा– शब्द अहले बैत पर अधिक मत भेद है एक दल इससे केवल श्रीमान अली फात्मा हसन, और हुसैन और उनकी सन्तान को ही अहले बैत स्वीकार करता है, दूसरों को नही अतः कुरआन के प्रकाश में यह देखा जाए कि अहले बैत से अर्थ केवल यही चार और उनकी सन्तान है या इसकी परिधि में कोई और भी आता है हां एक दल का मानना है कि इसे तात्पर्य केवल नबी की पत्नीयां है, परन्तु आयत में ऐसे स्थान पर यह शब्द आया है जहां यह लगता है कि इससे नबी की पत्नीयां ही तात्पर्य है परन्तु यह मानना भी विचारणीय है क्योंकि जीमर जमा मुजक्कर हाजिर की "कुम" है एक दल ने तो पत्नीयों को अहले बैत से ही पृथक कर दिया जो आयत और कुरआन से हट कर है विचार यह किया जाए कि कुरआन से क्या सिद्ध है,

{33:6} ईश्वर का नबी धर्म वालो के लिए उनकी जानों से अधिक प्रमुख है (और अधिकारी) है और उसकी पत्नीयां (सम्मान की दृष्टि से) उनकी माताएं है,

{33:40} ऐ आस्तिकों! मुहम्मद स0 तुम्हारे मर्दों में से किसी के पिता नहीं, परन्तु वास्तव में आस्था वाले होने के कारण मुहम्मद स0 हर धर्म वाले के आध्यत्मिक पिता है सुलबी नही जिसका स्पष्टिकरण, {33:6} में नबी की पत्नीयों को मुसलमानों की माता बताया है जब पत्नीयों मां है तो नबी मुहम्मद स0 उनके पति है इस प्रकार मुहम्मद स0 भी क्यामत तक आने वाले हर आस्तिक के पिता है, इस प्रकार हर आस्तिक मुहम्मद स0 के अहले बैत में प्रविष्ट है जिसका समर्थन आयत {33:33} में आई जमीर कुम है अरबी नियमानुसार यदि नर नारी साथ हों तो जमीर मुजक्कर जमा से सम्बोधन किया जाता है यही नियम आयत मे है इस प्रकार हर नर नारी जो आस्तिक हो वह अहले बेत है श्रीमान अली इत्यादि ही नही, इसको देखने के लिए दूसरी आयात लिखी जा रही है,

{11:45-46} और नूह ने अपने रब को पुकारा प्रार्थना की ऐ मेरे और मेरा पुत्र भी मेरा घर वाला (अहली) है और निःसंदेह तेरा वचन सच्चा है और तू सबसे बड़ा आदेश वाला है, कहा ऐ नूह वह तेरे घर वालों में नही, निःसंदेह उसके कार्य अनुचित है, तू मुझसे वह बात न मांग जिसका तुझे ज्ञान नही, मैं तुझे उपदेश करता हूं कि मुर्ख न बन कितने स्पष्ट शब्दों में बता दिया कि अहले बैत कौन होते है, यदि पुत्र ही अहले बैत होते तो ईश्वर पुत्र के लिए मना न करता कि यह तेरा अहले बैत नही है,

(11:73) फरिश्तों ने कहा, क्या तुम ईश्वर के निर्णय पर आश्चर्य करती हो? ऐ अहले बेत तुम पर ईश्वर की करूणा और उसकी सम्पन्नता है,.. इस आयत में पत्नी को अहले बेत जमीर कुम से सम्बोधित किया,

{11:81} फरिश्ते बोले ऐ लूत हम तुम्हारे रब के भेजे हुए है वह तुम तक नही पहुंच सकते तू अपने घर वालों (अहलीका) को रातों रात ले

اے نبی کی بیویو! تم اور عورتوں کی طرح نہیں ہو اگر اللہ سے ڈرو تو بات میں نرمی نہ کرو دل کا روگی کچھ لالچ کرے ہاں اچھی قاعدے کی بات کرو (۳۲)

اور اپنے گھروں میں ٹھہری رہو اور بے پردہ نہ رہو اگلی جاہلیت کی سج دھج دکھاتی نہ پھرو اور نماز قائم رکھو اور زکوٰۃ دو اور اللہ اور اس کے رسول کا حکم مانو اللہ تو یہی چاہتا ہے کہ اے اہل بیت (اے گھر والو!) اللہ تمہیں ہر قسم کے الزامات سے پاک رکھے گا اور نظر و قلب کی پاکیزگی عطا کرے گا (۳۳)

تبصرہ:۔ لفظ اہل بیت پر کافی اختلاف ہے ایک فرقہ اس سے صرف حضرت علی فاطمہ حسن حسین اور ان کی اولاد کو ہی اہل بیت تسلیم کرتا ہے دوسروں کو نہیں اس لئے قرآن کی روشنی میں یہ دیکھا جائے کہ اہل بیت سے مراد صرف یہی چار اور ان کی اولاد ہیں یا اس کے دائرے میں کوئی اور بھی آتا ہے ہاں ایک فرقے کا ماننا ہے کہ اس سے مراد صرف نبی کی ازواج ہیں.

مگر آیت میں ایسی جگہ یہ لفظ آیا ہے جہاں یہ لگتا ہے کہ اس سے نبی کی ازواج ہی مراد ہے لیکن یہ ماننا بھی محل نظر ہے کیونکہ ضمیر جمع مذکر حاضر کی کُم ہے مگر ایک دَل نے تو ازواج کو اہل بیت سے ہی الگ کر دیا جو آیت اور قرآن سے ہٹ کر ہے غور یہ کیا جائے کہ قرآن سے کیا ثابت ہے.

(۶:۳۳) اللہ کا نبی ایمان والوں کے لئے ان کی جانوں سے زیادہ مقدم ہے (اور حقدار) ہے اور اس کی بیویاں (احترام کے لحاظ سے) ان کی مائیں ہیں.

(۴۰:۳۳) اے ایمان والو! محمدؐ تمہارے مردوں میں سے کسی کے باپ نہیں. لیکن حقیقت میں اہل ایمان ہونے کی وجہ سے محمدؐ ہر ایمان والے کے روحانی باپ ہیں صلبی نہیں جس کی وضاحت آیت (۶:۳۳) میں نبی کی ازواج کو مسلمانوں کی ماں بتایا ہے جب بیویاں ماں ہیں تو نبی محمدؐ ان کے شوہر ہیں اس طرح محمدؐ بھی قیامت تک آنے والے ہر مومن کے باپ ہیں. اس طرح ہر مومن محمدؐ کے اہل بیت میں داخل ہے جس کی تائید آیت (۳۳:۳۳) میں آئی ضمیر کُم ہے عربی قاعدے کے مطابق اگر مرد عورت ساتھ ہوں تو ضمیر مذکر جمع سے خطاب کیا جاتا ہے یہی قاعدہ آیت میں ہے اس طرح ہر مرد عورت جو مومن ہو وہ اہل بیت ہے حضرت علی وغیرہ ہی نہیں اس کو دیکھنے کے لئے دوسری آیات لکھی جا رہی ہیں.

(۱۱:۴۵،۴۶) اور نوح نے اپنے رب کو پکارا عرض کی اے میرے رب میرا بیٹا بھی تو میرا گھر والا (اہلی) ہے اور بے شک تیرا وعدہ سچا ہے اور تو سب سے بڑا حکم والا ہے فرمایا اے نوح وہ تیرے گھر والوں میں نہیں بے شک اس کے کام غیر صالح ہیں تو مجھ سے وہ بات نہ مانگ جس کا تجھے علم نہیں میں تجھ کو نصیحت کرتا ہوں کہ نادان نہ بن. کتنے صاف الفاظ میں بتا دیا کہ اہل بیت کون ہوتے ہیں اگر بیٹے ہی اہل بیت ہوتے تو اللہ لڑکے کے لئے منع نہ کرتا کہ یہ تیرا اہل بیت نہیں ہے.

(۱۱:۷۳) فرشتوں نے کہا، کیا تم اللہ کے فیصلہ پر تعجب کرتی ہو؟ اے اہل بیت تم پر اللہ کی رحمت اور اس کی برکتیں ہیں...اس آیت میں بیوی کو اہل بیت ضمیر کُم سے خطاب کیا.

(۱۱:۸۱) فرشتے بولے اے لوط ہم تمہارے رب کے بھیجے ہوئے ہیں وہ تم تک نہیں پہنچ سکتے تو اپنے گھر والوں (اھلک) کو راتوں رات لے جاؤ اور تم میں کوئی

जाओ और तुममें कोई पीठ फैर कर न देखे सिवाए तुम्हारी स्त्री के उसे भी वही पहुंचना है जो उन्हें पहुंचेगा, निःसंदेह उनका वचन प्रातः के समय है क्या प्रातः निकट नही?

इस आयत में पत्नी को अहले बैत से अलग किया जबकि पत्नी अहले बैत में होती है परन्तु अवज्ञाकारी होने के कारण से उसको बाहर किया और जो भी हजरत लूत के साथ थे उनको अहले बैत कहा स्पष्ट है लूत के साथ और भी अहले ईमान अवश्य थे {48:43} भी देखो {7:83;11:73; 15:65; 20:10; 21:76,84; 23:27; 28:29} {71:27-28} निःसंदेह यदि तू उन्हें रहने देगा तो तेरे भक्तों को भ्रष्ट कर देंगे और उनकी सन्तान होगी तो वह भी दुष्ट और अवज्ञाकारी होगी ऐ रब मेरे मुझे क्षमा कर दे और मेरे माता पिता को और उसे जो विश्वास के साथ मेरे घर में (बैती) प्रविष्ट हो और सब मुसलमान नर और मुसलमान नारी को, और काफिरों के न बढ़ा परन्तु तबाही.

इस आयत में कितना स्पष्ट किया कि जो मेरे घर (बैती) में प्रविष्ट हो, स्पष्ट है उनके साथ बहुत से व्यक्ति विश्वास लाकर उनके अहले बेत में प्रविष्ट थे आयतें और भी जैसे {12:25; 14:48; 18:78; 4:5} इत्यादि इन आयतों को पढ़कर विचार करो, और स्वयं ही निर्णय करो कि अहले बैत कौन है, क्या वही केवल चार व्यक्ति या मुहम्मद स0 की पत्नीयों के साथ क्यामत तक आने वाले पूरे धर्म वाले? वास्तव में उन चार और पूरे अहले ईमान के साथ मुहम्मद स0 की पत्नीयां भी मुहम्म स0 के अहले बैत है क्योंकि नबी हर उम्मती का आध्यात्मिक पिता होता है, जैसे कि पत्नीयों के माध्यम से {33:6} में बता दिया गया है यह है अहले बैत का प्रसंग.

इसके साथ एक बात और विचार योग्य है वह यह कि एक परिभाषा आले रसूल या आले नबी या फरजान्दाने रसूल इबने रसूल की प्रचलित है इससे तात्पर्य नबी की सन्तान पुत्र माना जाता है और हमारे यहां आले रसूल फरजान्दाने रसूल से तात्पर्य अली की सन्तान से लिया जाता है, और उनको ही फरजान्दाने रसूल इबने रसूल कहा जाता है, वैसे तो यह श्रीमान भी हर धर्म वाले आस्तिक उम्मती की भांति अहले बैत में सम्मिलित है परन्तु आले रसूल फरजान्दाने रसूल कहना विचार योग्य है? क्योंकि आल सदैव पुत्र से चलती है और मुहम्मद स0 के कोई पुत्र ऐसा नही हुआ जिससे भविष्य को वंश चलता, पुत्र पैदा हुए परन्तु वह बचपन ही में मर गए नबी के केवल पुत्रीयां थी जिनमें से एक सन्तान हसन हुसैन थे और आगे को उनकी सन्तान वैसे मुहम्म स0 के और भी पुत्रीयां थी, परन्तु उनको इतनी महत्व नही दी जाती यह भी एक आपत्ति जनक बात है.

सूरत अहजाब की आयत 40 में स्पष्ट है कि मुहम्म स0 तुम्हारे किसी नर के पिता नही है जब किसी नर के पिता नही है तो क्या हसन हुसैन नर नही है निःसंदेह वह नर है अतः वह मुहम्म स0 के फरजन्द इबन नही है क्योंकि सन्तान आल लड़के से चलती है, अतः सन्तान अली आले नबी इबने रसूल फरजान्दाने रसूल न होते हुए आले अली है, और आदरणीय है यदि वह आस्तिक रहते है.,

यदि आल लड़की से मानी जाए जैसे कहते है कि और की आल सन्तान लड़के से चलती है, परन्तु नबी मुहम्मद स0 की आल लड़की से मानी है, यदि थोड़ी देर के लिए मान लिया जाए तो फात्मा से केवल दो लड़के हसन व हुसैन है, बाद को तो हुसैन के घर में एक ईरानी लड़की शहरबनों जो युद्ध में बन्दी होकर आई थी वह थी और उस से ही सन्तान है, यह भी देखो और निर्णय करो तो क्या बाद की वह सन्तान आल शाह ईरान अर्थात आले यज्द गर्द मानी जाएगी और आज तक किसी की भी आल लड़की से नही मानी गई यदि मानी गई

پیٹھ پھیر کر نہ دیکھے سوائے تمہاری عورت کے اسے بھی وہی پہنچنا ہے جو انہیں پہنچے گا بے شک ان کا وعدہ صبح کے وقت ہے کیا صبح قریب نہیں؟

اس آیت میں بیوی کو اہل بیت سے الگ کیا جب کہ بیوی اہل بیت میں ہوتی ہے مگر نافرمان ہونے کی وجہ سے اس کو باہر کیا اور جو بھی حضرت لوط کے ساتھ تھے ان کو اہل بیت فرمایا ظاہر ہے لوط کے ساتھ اور بھی اہل ایمان ضرور تھے (۴۳:۴۸) بھی دیکھو [۸۳:۷؛ ۷۳:۱۱؛ ۶۵:۱۵؛ ۱۰:۲۰؛ ۷۶:۲۱، ۸۴؛ ۲۷:۲۳؛ ۲۹:۲۸؛ ۲۷:۷۱]

(۲۷:۷۱، ۲۸) بے شک اگر تو انہیں رہنے دے گا تو تیرے بندوں کو گمراہ کر دیں گے اور ان کی اولاد ہوگی تو وہ بھی بدکار اور نافرمان ہوگی اے میرے رب مجھے بخش دے اور میرے ماں باپ کو اور اسے جو ایمان کے ساتھ میرے گھر میں (بیتی) داخل ہو اور سب مسلمان مردوں اور مسلمان عورتوں کو، اور کافروں کو نہ بڑھا مگر تباہی

اس آیت میں کتنا صاف کیا کہ جو میرے گھر (بیتی) میں داخل ہو ظاہر ہے ان کے ساتھ بھی بہت سے آدمی ایمان لا کر ان کے اہل بیت میں داخل تھے آیتیں اور بھی ہیں مثلاً (۲۵:۱۲؛ ۴۸:۱۴؛ ۷۸:۱۸؛ ۵:۴) وغیرہ ان آیتوں کو پڑھ کر غور کرو اور خود ہی فیصلہ کرو کہ اہل بیت کون ہیں کیا وہی صرف چار آدمی یا محمدؐ کی ازواج کے ساتھ قیامت تک آنے والے پورے اہل ایمان؟ حقیقت میں اُن چار اور پورے اہل ایمان کے ساتھ محمدؐ کی ازواج بھی محمدؐ کے اہل بیت ہیں کیونکہ نبی ہر امتی کا روحانی باپ ہوتا ہے جیسے کی ازواج کے واسطے سے (۶:۳۳) میں فرما دیا گیا ہے یہ ہے اہل بیت کا مسئلہ۔

اس کے ساتھ ایک بات اور قابل غور ہے وہ یہ کہ ایک اصطلاح آل رسول یا آل نبی یا فرزندان رسول محمدؐ ابن رسول کی رائج ہے اس سے مراد نبی کی اولاد مانا جاتا ہے اور ہمارے یہاں آل رسول فرزندان رسول سے مراد علی کی اولاد سے لیا جاتا ہے اور ان کو ہی فرزندان رسول ابن رسول کہا جاتا ہے ویسے تو یہ حضرات بھی ہر ایمان دار مومن امتی کی طرح اہل بیت میں شامل ہیں مگر آل رسول فرزندان رسول کہنا محل نظر ہے؟ کیوں کہ آل ہمیشہ لڑکے سے چلتی ہے اور محمدؐ کے کوئی لڑکا ایسا نہیں ہوا جس سے آئندہ کو نسل چلتی لڑکے پیدا ہوئے مگر وہ بچپن ہی میں مر گئے۔ نبی کے صرف لڑکیاں تھیں جن میں سے ایک کی اولاد حسن حسین تھے اور آگے کو ان کی اولاد ویسے محمدؐ کے اور بھی لڑکیاں تھیں، مگر ان کو اتنی اہمیت نہیں دی جاتی یہ بھی ایک قابل اعتراض بات ہے۔

سورت احزاب کی آیت (۴۰) میں صاف ہے کہ محمد تمہارے کسی مرد کے باپ نہیں ہیں جب کسی مرد کے باپ نہیں ہیں تو کیا حسن حسین مرد نہیں ہیں؟ یقیناً وہ مرد ہیں اس لئے وہ محمدؐ کے فرزند ابن نہیں ہیں کیونکہ آل لڑکے سے چلتی ہے اس لئے اولاد علی آل نبی ابن رسول فرزندان رسول نہ ہوتے ہوئے آل علی ہیں اور قابل احترام ہیں اگر وہ مومن رہتے ہیں۔

اگر آل لڑکی سے مانا جائے جیسے کہتے ہیں کہ اور کی آل لڑکے سے چلتی ہے مگر نبی کی آل لڑکی سے مانی ہے اگر تھوڑی دیر کے لئے مان لیا جائے تو فاطمہ سے صرف دو لڑکے حسن و حسین ہیں بعد کو تو حسین کے گھر میں ایک ایرانی لڑکی شہر بانو جو جنگ میں گرفتار ہو کر آئی تھی وہ تھی اور اس سے ہی اولاد ہے یہ بھی دیکھو اور فیصلہ کرو تو کیا بعد کی وہ اولاد آل شاہ ایران یعنی آل یزدگرد مانی جائے گی؟ اور

तो प्रमाण चाहिए

यदि सन्तान अली को फरजान्दाने रसूल आले रसूल इब्ने रसूल मान लिया जाए जैसा की मनवाया जात है तो इस गुप्त विधि से शायद अली को नबी स्वीकार कराया जा रहा है (नऊज़) तो मानों अली नबी रसूल हुए? यह बाते बुद्धि में आने वाली नही, यदि कोई नियम किसी के पास स्वीकार योग्य हो तो बताए कि उनको आले नबी इब्ने रसूल स्वीकार करें मेरी भी भ्रान्ति दूर हो जाए

यदि देखा जाए तो हर व्यक्ति चाहे वह सदाचारी है या दुराचारी सब ही किसी न किसी प्रकार से रसूलों की सन्तान है, क्योंकि हजरत आदम नबी थे, या बाद को हजरत नूह जिनको आदम द्वितीय कहा गया है, इस नाते से हर व्यक्ति आले नबी है, और सम्भावतः और ईशदूतों की सन्तान भी दुनिया में अवश्य है,

चूंकि आले नबी और अहले बैत में अन्तर है अहले बैत केवल वही हो सकता है जो आस्तिक हो और आले नबी हर नेक व बद सब ही है जैसे ऊपर लिखा है,

आयत में एक शब्द रिजस आया है कि ऐ अहले बैत ईश्वर तुमसे गन्दगी दूर करके पवित्र करना चाहता है तो मुहम्मद स0 की पत्नीयां तो अशुद्धता से पवित्र ही थी, वह पृथक बात है कि मुसलामनों ने उन पर भांति भांति के आरोप लगा रखे है, और उनको आरोप लगाए है वह बिलकुल मिथ्या है वह पवित्र और शुद्ध थी,

गन्दगी को दूर करने का सम्बोधन भी पूरी उम्मत से है कि ऐ उम्मत मुहम्मद स0 तुम ईश्वर के आदेश का पालन करो तो निःसन्देह तुम से गन्दगी चाहे वह रूहानी हो या जिस्मानी सब दूर हो जाऐंगी और सम्बोधन में पत्नी भी शामिल है मुख्य तौर से परन्तु तात्पर्य पूरे आस्तिक नर और नारी है इसलिए ही जमीर जमा मुजक्कर आई है (कुम)

और वर्णन चर्चा करो दूसरों से उन बातों की जो तुम्हारे घरों में ईश्वर की आयात और युक्ति की बाते सुनाई जाती हैं निःसंदेह ईश्वर बारीक से बारीक बातों को जनता है, और हर बात की उस को सूचना है (34)

समीक्षा:- शब्द वर्णन के कई अर्थ हैं परन्तु इस आयत में वर्णन से तात्पर्य यह है कि ऐ नबी की पत्नीयों! ईश्वर का नबी जो युक्ति की बाते और ईश्वर की आयात तुमको सुनाते हैं उनको सुनकर स्वयं भी व्यवहार करो और दूसरी स्त्रीयों से भी उनका प्रचार करो जैसे नबी पुरुषों व स्त्रीयां दोनों में करते हैं तो तुम उनकी सहायता करो और अपनी जैसी स्त्रीयों में उनका प्रचार करो और यह तुम्हारा उत्तरदायित्व भी है चूंकि ईशदूत पर बहुत कार्य हैं अतः कुछ सहायता तुम करो और उन आयात को तुम भी याद करके व्यवहार करो और उनका जप वर्णन करो,

निःसंदेह जो पुरूष और जो स्त्रीयां मुस्लिम है आस्तिक है आज्ञा पालक है सत्य वादी है, धैर्य वान है ईश्वर के आगे झुकने वाले है, दान देने वाले है व्रत रखने वाले है अपने गुप्तागों की सुरक्षा करने वाले है और ईश्वर को अधिक याद करने वाले है ईश्वर ने उनके लिए मोक्ष और बड़ा प्रतिदान संपादित कर रखा है (35)

किसी आस्तिक पुरूष और किसी आस्तिक स्त्री को यह अधिकार नही कि जब ईश्वर और उसका रसूल

آج تک کسی کی بھی آل لڑکی سے نہیں مانی گئی اگر مانی گئی تو ثبوت درکار ہے۔

اگر اولاد علی کو فرزندان رسول آل رسول ابن رسول مان لیا جائے جیسا کہ باور کرایا جاتا ہے تو اس چھپے طریقے سے شائد علیؓ کو نبی تسلیم کرایا جا رہا ہے (نعوذ) تو گویا علی نبی رسول ہوئے؟ یہ باتیں عقل میں آنے والی نہیں۔اگر کوئی قاعدہ کسی کے پاس قابل قبول ہو تو بتائے کہ ان کو آل نبی ابن رسول تسلیم کریں میری بھی غلط فہمی دور ہو جائے

اگر دیکھا جائے تو ہر انسان چاہے وہ نیک ہے یا بد سب ہی کسی نہ کسی طرح سے نبیوں کی اولاد ہیں کیونکہ حضرت آدم نبی تھے یا بعد کو حضرت نوح جن کو آدم ثانی کہا گیا ہے اس رشتے سے ہر آدمی آل نبی ہے اور غالباً اور نبیوں کی اولاد بھی دنیا مین ضرور ہے

چونکہ آل نبی اور اہل بیت میں فرق ہے اہل بیت صرف وہی ہو سکتا ہے جو مومن ہو اور آل نبی ہر نیک بد سب ہی ہیں جیسے اوپر لکھا ہے۔

آیت میں ایک لفظ رجس آیا ہے کہ اے اہل بیت اللہ تم سے رجس دور کر کے طاہر کرنا چاہتا ہے تو محمدؐ کی ازواج تو رجس سے پاک ہی تھیں وہ الگ بات ہے کہ مسلمانوں نے ان پر طرح طرح کے الزام لگا رکھے ہیں اور ان کو بدنام کیا گیا ہے مگر ان کے اوپر جو الزام لگائے ہیں وہ بالکل غلط ہیں وہ پاک صاف تھیں۔

رجس کو دور کرنے کا خطاب بھی پوری امت سے ہے کہ اے امت محمد تم اللہ کے احکام کی پابندی کرو تو یقیناً تم سے گندگی چاہے وہ روحانی ہو یا جسمانی سب دور ہو جائے گی اور خطاب میں ازواج بھی شامل ہیں خاص طور سے لیکن مراد پورے مومن مرد اور عورت ہیں اس لئے ہی ضمیر جمع مذکر آئی ہے (کم)

<u>اور ذکر چرچہ کرو دوسروں سے تبلیغ کرو اُن باتوں کی جو تمہارے گھروں میں اللہ کی آیات اور حکمت کی باتیں سنائی جاتی ہیں بے شک اللہ باریک سے باریک باتوں کو جانتا ہے اور ہر بات کی اس کو خبر ہے (۳۴)</u>

نوٹ:۔لفظ ذکر کے کئی معنی ہیں لیکن اس آیت میں ذکر سے مراد یہ ہے کہ اے نبی کی بیویو! اللہ کا نبی جو حکمت کی باتیں اور اللہ کی آیات تم کو سناتے ہیں ان کو سن کر خود بھی عمل کرو اور دوسری عورتوں سے بھی ان کی تبلیغ کرو جیسے نبی مردوں وعورتوں دونوں میں کرتے ہیں تو تم ان کی مدد کرو اور اپنی ہم جنس عورتوں میں ان کی تبلیغ کرو اور یہ تمہاری ذمہ داری بھی ہے چونکہ نبی پر بہت کام ہیں اس لئے کچھ مدد تم کرو اور اُن آیات کو تم بھی یاد کر کے عمل کرو اور ان کا ذکر کرو۔

بے شک جو مرد اور جو عورتیں مسلم ہیں مومن ہیں مطیع فرمان ہیں راست باز ہیں صابر ہیں اللہ کے آگے جھکنے والے ہیں صدقہ دینے والے ہیں روزے رکھنے والے ہیں اپنی شرم گاہوں کی حفاظت کرنے والے ہیں اور اللہ کو کثرت سے یاد کرنے والے ہیں اللہ نے ان کے لئے مغفرت اور بڑا اجر مہیا کر رکھا ہے (۳۵)

کسی مومن مرد اور کسی مومن عورت کو یہ حق نہیں کہ جب

किसी विषय का निर्णय कर दे तो वह निर्णय में अपना भी कुछ अधिकार समझे (सच्चा आस्तिक वही है जो ईश्वर व रसूल के हर आदेश को बिना किसी आपत्ति के मान ले) और जो कोई ईश्वर व रसूल की अवज्ञा करेगा तो वह खुली धृष्टता में पड़ गया (36)

اللہ اور اس کا رسول کسی معاملہ کا فیصلہ کر دیں تو وہ اس فیصلہ میں اپنا بھی کچھ اختیار سمجھیں (سچا مومن وہی ہے جو اللہ و رسول کے ہر حکم کو بلا چوں و چراں مان لے) اور جو کوئی اللہ و رسول کی نافرمانی کرے گا تو وہ کھلی گمراہی میں پڑ گیا (۳۶)

नोट- परन्तु इस यथार्थ को अच्छी प्रकार समझ लिया जाए कि यह अनुकरण ईश्वर की व्यवस्था का अनुकरण है यद्यपि इस व्यवस्था का निर्णय ईश्वर की ओर से रसूल के द्वारा पारित होते है {3:79} इस विषय में ज़ैद की घटना एक स्पष्ट उपमा है इस रहस्य के स्पष्टि कर्ण के लिए वर्णन किया जाता है.

نوٹ:۔ لیکن اس حقیقت کو اچھی طرح سمجھ لیا جائے کہ یہ اطاعت نظام الٰہی کی اطاعت ہے اگر چہ اس نظام کے فیصلے اللہ کی طرف سے بذریعہ رسول صادر ہوتے ہیں اس سے رسول کی ذاتی اطاعت مقصود نہیں (۳:۷۸) اس بات میں زید کا واقعہ ایک بین مثال ہے اس نکتہ کی وضاحت کے لئے بیان کیا جاتا ہے۔

ज़ैद पर ईश्वर के भी बहुत उपकार है और ऐ रसूल आपके भी बहुत उपकार है जब आप उससे कह रहे थे कि अपनी पत्नी को अपने विवाह में रहने दो और ईश्वर के विधान ने तुम्हारा जो नाता स्थापित किया है उसकी रक्षा करो, उसको समाप्त करने से डरो यदि तुम्हें कोई छोटी आपत्ति हो तो उसे क्षमा करो, यदि कोई बड़ी आपत्ति हो तो बयान करो, छुपाने से लाभ नही यदि अब तुमने छुपाने का प्रयत्न किया तो तलाक देने की दशा में ईश्वर के विधान के अनुसार बताना पड़ेगा यूं ही घर में बैठ कर तलाक तो नही दी जाएगी, ऐ ज़ैद लागों से तू इस भय से न डर कि वह क्या कहेंगे, डरने का हक तो केवल ईश्वर के विधान से है कि ईश्वर के नियम के विरुद्ध कोई बात न हो परन्तु ज़ैद ने इस परामर्श को न माना और अपनी पत्नी से सम्बन्ध तोड़ लिया, इसके बाद तुमने नियमानुसार हमारे आदेश से ज़ैद की मुतल्लका से विवाह कर लिया (ताकि उसे इस दुर्घटना से जो मर्माघात पहुंचा था उसकी क्षति पूर्ती हो जाए) हमने इस विषय में स्पष्ट शिक्षा प्रेषित कर दी है जब कहा था कि मूंह बोला बेटा वास्तविक पुत्र नही बन जाता विवाह मूल पुत्र की पत्नी से अवैध है {4:23} लेपालक (दत्तक पुत्र) की तलाक दी हुई पत्नी से विवाह करने में कोई आपत्ति नही जबकि वह तलाक दे दे ईशदूत का यह व्यवहार ईश्वर के नियामानुसार है क्यों कि ईश्वर का आदेश तो व्यवहार में आना ही था (37)

زید پر اللہ کے بھی بہت احسان ہیں اور اے رسول آپ کے بھی بہت احسان ہیں جب آپ اس سے کہہ رہے تھے کہ اپنی زوجہ کو اپنے نکاح میں رہنے دو اور قانون الٰہی نے تمہارا رشتہ جو قائم کیا ہے اس کی حفاظت کرو اس کو ختم کرنے سے ڈرو اگر تمہیں کوئی معمولی شکایت ہو تو اس سے صرف نظر کرو اور اگر کوئی بڑی شکایت ہو تو بیان کرو چھپانے سے فائدہ نہیں اگر اب تم نے چھپانے کی کوشش بھی کی تو طلاق دینے کی صورت میں قانون الٰہی کے مطابق بتانا پڑے گا یونہی گھر میں بیٹھ کر طلاق تو نہیں دی جائے گی۔ اے زید لوگوں سے تو اس خوف سے نہ ڈر کہ وہ کیا کہیں گے۔ ڈرنے کا حق تو صرف قانون الٰہی سے ہے کہ اللہ کے قانون کے خلاف کوئی بات نہ ہو۔ لیکن زید نے اس مشورے کو نہ مانا اور اپنی زوجہ سے قطع تعلق کر لیا۔ اس کے بعد تم نے قانون کے مطابق ہمارے حکم سے زید کی مطلقہ سے نکاح کر لیا (تا کہ اسے اس حادثہ سے جو صدمہ پہنچا تھا اس کی تلافی ہو جائے) ہم نے اس باب میں واضح ہدایت نازل کر دی ہیں جب کہا تھا کہ منہ بولا بیٹا حقیقی بیٹا نہیں بن جاتا (۴:۳۳) نکاح حقیقی بیٹے کی بیوی سے ناجائز ہے (۴:۲۳) منہ بولے بیٹے کی مطلقہ سے نکاح کرنے میں کوئی حرج نہیں جب کہ وہ طلاق دے دے۔ رسول اللہ کا یہ عمل قانون الٰہی کے عین مطابق ہے کیونکہ اللہ کا حکم تو عمل میں آنا ہی تھا (۳۷)

जो बात ईश्वर के नियम ने वैध कर दी है उसके कर लेने में नबी के लिए कोई बाध नही होता यह नियम नबी अरबी के लिए विशेषता के साथ नही भेजा गया था अपितु ईश्वर का विधान आरम्भ से ऐसा ही है ईश्वर का नियम उसकी ईच्छानुसार निश्चित अनुमानों पैमानों के अनुसार होता है, तात्कालिक घटनाओ से प्रभावित होकर नही बनता अतः वह अपरिवर्तनीय और सर्वकालिक होता है (38) {66:1}

جو بات قانون الٰہی نے جائز کر دی ہے اس کے کر لینے میں نبی کے لئے کوئی حرج نہیں ہوتا یہ قانون نبی عربی کے لئے خصوصیت کے ساتھ نہیں بھیجا گیا تھا بلکہ قانون الٰہی شروع سے ایسا ہی ہے اللہ کا قانون اس کی مشیت کے مطابق مقرر شدہ پیمانوں کے مطابق ہوتا ہے ہنگامی حوادث سے متاثر ہو کر نہیں بنتا۔ اس لئے وہ غیر متبدل اور ابدی ہوتا ہے (۳۸) [۶۶:۱]

जो ईश्वर के संदेश पहुंचाते है और उससे डरते है और एक ईश्वर के सिवा किसी से नही डरते और लेखा परिक्षा करने के लिए बस ईश्वर प्रयाप्त है (39)

جو اللہ کے پیغامات پہنچاتے ہیں اور اسی اللہ سے ڈرتے ہیں اور ایک اللہ کے سوا کسی سے نہیں ڈرتے اور محاسبہ کے لئے بس اللہ ہی کافی ہے (۳۹)

(लोगों!) मुहम्मद स० तुम्हारे पुरूषों में से किसी के पिता नही है परन्तु वह ईश्वर के रसूल खातमन नबीयीन नबियों पर मोहर (अर्थात ईशदौत्य को समाप्त कर देने वाले है) और ईश्वर हर वस्तु का

(لوگو!) محمدؐ تمہارے مردوں میں سے کسی کے باپ نہیں ہیں مگر وہ اللہ کے رسول اور خاتم النبیین نبیون پر مہر (یعنی نبوت کو ختم کر دینے والے ہیں) ہیں اور اللہ ہر چیز کا علم

ज्ञान रखने वाला है (40) {66:1}

अतः जैद की तलाक दी हुई पत्नी से विवाह करने में आपत्ति न करो, चूंकि जैद मुहम्मद स0 का पुत्र नही है,

समीक्षाः- आयत 37,38,39,40 में कुछ बातों के विषय में ईश्वर ने बहुत ही स्पष्ट आदेश दिए है जिनसे हर बात स्पष्ट हो जाती है और उनके साथ ही सूरत तेहरीम की आयत 1 से 4 तक भी, परन्तु ज्ञात नही क्यों इन बातों के विषय में ऐसा लेख लिखा मिलता है जो आपत्ति जनक है और इस कारण से ही नबी व नबी की पत्नीयां और किसी सीमा तक सहाबा कराम पर भी आरोप आता है, उनके विषय में लिखा जा रहा है जो मैंने कुरआन के प्रकाश में समझा है प्रसंग श्रीमान जैद से सम्बन्धित है इन बातों के विषय में मेरी पुस्तक नामूस रसूल भी पढ़े श्रीमान जैद दास होकर मक्काह के बाजार में विक्रय होने को आए थे, नबुवत मिलने से पहले जैद क्रेय किए गए और वह मुहम्मद स0 की सेवा में आ गए आपने उनको अपने पास ही रख लिया बाद में जैद को स्वतंत्र करके अपना पुत्र बना लिया यह उस समय हुआ जब जैद को उसके पिता लेने को आए परन्तु जैद ने जाने से इन्कार कर दिया तब जैद के पिता ने ज्ञात किया तू क्यों अपने माता पिता के पास नही चलता यहां तेरा कौन है यह सुनकर जैद ने कहा कि मुझे जो प्रेम मुहम्मद स0 ने दिया है वह कही नही मिलेगा अतः मैं नही चलता तब मुहम्मद स0 ने उसको अपना पुत्र बना लिया और अपनी फूफीजाद बहन श्रीमति जैनब से उनका विवाह कर दिया यद्यपि अरब के वातावरण के अनुसार यह विवाह स्वीकार योग्य न था परन्तु कुरआन के अनुसार श्रीमति जैनब और उनके घर वालों ने इस नाते को स्वीकार कर लिया,

परन्तु यह विवाह सफल न हो सका कारण कुछ भी हो अस्तु आपस में द्वेष हो गया, मुहम्मद स0 ने जैद को समझाया परन्तु बात न बनी और तलाक हो गई {33:37}

इस तलाक होने पर जैनब और उनके घर वालों को और साथ में मुहम्मद स0 को भी अधिक दुख हुआ, इसको दूर करने का केवल एक ही उपाय था और वह था जैनब से स्वयं मुहम्मद स0 विवाह करते उनको सम्मान देते, परन्तु इस कार्य को करने में कुछ रूकावटें सामने आ रही थी यद्यपि वह मूल रूकावट न थी केवल मूर्खता की बातें थी जिनके कारण यह विवाह न हो सकता, क्योंकि सूरत निसा {4:23-24} में जिन स्त्रीयों से विवाह को मना किया है उनमें यह नाता नही आता, विवाह हो सकता है मुहम्मद स0 जानते थे

परन्तु मुर्खता के काल में लेपालक या मुंह बोले पुत्र के द्वारा तलाक दी हुई स्त्री या विधवा से विवाह नही करते थे, इस कारण से मुहम्मद स0 कुछ विचार मनन कर रहे थे और इस विषय में ही मुहम्मद स0 ने अपनी एक पत्नी से उल्लेख किया था कि मेरा संकल्प यह है और इस कार्य को करने से ही जैनब और उसके घर वालों का सम्मान बढ़ सकेगा और एक मिथ्या रीति भी समाप्त होगी और तुम अभी किसी से न कहना परन्तु उन्होंने दूसरी से वर्णन कर दिया,

जो लोगों को आपत्ति हो सकती थी ईश्वर ने आयत {33:37,40} के द्वारा दूर कर दी और घोषणा कर दी कि मुहम्मद स0 पुरूषों में से किसी के पिता नही है अतः मुहम्मद स0 बिना किसी संकोच के यह विवाह करें और आपने कर लिया इस विवाह से एक मिथ्या रीति भी समाप्त हो रही थी वह यह कि जो पहले मुंह बोले पुत्र की मुतल्लका या विधवा से विवाह नही करते थे यह अनुचित रीति तब ही समाप्त हो सकती थी जब किसी नबी के द्वारा इस अनुचित रीति को समाप्त कर दिया जाता और मुहम्मद स0 चूंकि अन्तिम नबी थे अतः यह अनुचित रीति मुहम्मद स0 के द्वारा ही समाप्त कर दी,

इन आयतों में डरने वाली बात है उसको भी मुहम्मद स0

رکھنے والا ہے (۴۰) [۶۶:۱]

اس لئے زید کی مطلقہ سے نکاح کرنے میں اعتراض نہ کرو چونکہ زید محمدؐ کا بیٹا نہیں ہے۔

نوٹ:۔ آیت (۳۷، ۳۸، ۳۹، ۴۰) میں کچھ باتوں کے بارے میں اللہ نے بہت ہی واضح احکام دئے ہیں جن سے ہر بات صاف ہو جاتی ہے اور ان کے ساتھ ہی سورت تحریم کی آیت ا سے ۴ تک بھی۔ لیکن نہ معلوم کیوں ان باتوں کے بارے میں ایسی عبارت لکھی ملتی ہے جو قابل اعتراض ہے اور اس وجہ سے ہی نبی وازواج نبیؐ اور کسی حد تک صحابہ کرام پر بھی الزام آتا ہے ان کے بارے میں لکھا جا رہا ہے جو میں نے قرآن کی روشنی میں سمجھا ہے معاملہ حضرت زید سے متعلق ہے ان باتوں کے بارے میں میری کتاب ناموس رسول بھی پڑھیں۔

حضرت زید غلام ہو کر مکہ کے بازار میں فروخت ہونے کو آئے تھے نبوت ملنے سے پہلے زید خریدے گئے اور وہ محمدؐ کی خدمت میں آ گئے آپ نے ان کو اپنے پاس ہی رکھ لیا بعد میں زید کو آزاد کر دیا اور اپنا بیٹا بنا لیا۔ یہ اس وقت ہوا جب زید کو اس کے والد لینے کو آئے مگر زید نے جانے سے انکار کر دیا تب زید کے والد نے معلوم کیا تو کیوں اپنے والدین کے پاس نہیں چلتا۔ یہاں تیرا کون ہے یہ سن کر زید نے کہا کہ مجھے جو پیار محمدؐ نے دیا ہے وہ کہیں نہیں ملے گا۔ اس لئے میں نہیں چلتا۔ تب محمدؐ نے اس کو اپنا بیٹا بنا لیا۔ اور اپنی پھوپھی زاد بہن حضرت زینب سے ان کا نکاح کر دیا۔ حالانکہ عرب کے ماحول کے مطابق یہ نکاح قابل قبول نہ تھا مگر قرآن کے مطابق حضرت زینب اور ان کے گھر والوں نے اس رشتہ کو تسلیم کر لیا لیکن یہ شادی کامیاب نہ ہو سکی وجہ کچھ بھی ہو بہر حال آپس میں کشیدگی ہو گئی محمدؐ نے زید کو سمجھایا مگر بات نہ بنی اور طلاق ہو گئی (۳۳:۳۷)

اس طلاق ہونے پر زینب اور ان کے گھر والوں کو اور ساتھ میں محمدؐ کو بھی کافی صدمہ ہوا۔ اس کو دور کرنے کا صرف ایک ہی طریقہ تھا اور وہ تھا زینب سے خود محمدؐ نکاح کرتے ان کو عزت دیتے۔ لیکن اس کام کو کرنے میں کچھ رکاوٹیں نظر آ رہی تھیں۔ حالانکہ وہ اصل رکاوٹ نہ تھیں صرف جہالت کی باتیں تھیں جن کی وجہ سے یہ نکاح نہ ہو سکتا ہو۔ کیونکہ سورت نساء (۴:۲۳، ۲۴) میں جن عورتوں سے نکاح کو منع کیا ہے ان مین یہ رشتہ نہیں آتا نکاح ہو سکتا ہے محمدؐ جانتے تھے

لیکن زمانہ جہالت میں لے پالک یا منہ بولے بیٹوں کی مطلقہ یا بیوہ سے نکاح نہیں کرتے تھے۔ اس وجہ سے محمدؐ کچھ غور و فکر کر رہے تھے اور اس بارے میں ہی محمدؐ نے اپنی ایک بیوی سے ذکر کیا تھا کہ میرا ارادہ یہ ہے اور اس کام کو کرنے سے ہی زینب اور اس کے گھر والوں کی عزت بڑھ سکے گی۔ اور ایک بد رسم بھی ختم ہو گی۔ اور تم ابھی کسی سے نہ کہنا مگر انہوں نے دوسری سے ذکر کر دیا۔

جو لوگوں کو اعتراض ہو سکتا تھا اللہ نے آیت (۳۳:۳۷، ۴۰) کے ذریعہ دور کر دیا۔ اور اعلان کر دیا کہ محمدؐ مردوں میں سے کسی کے باپ نہیں ہیں اس لئے محمد بلا کسی تردد کے یہ نکاح کریں۔ اور آپ نے کر لیا۔ اس نکاح سے ایک غلط رسم بھی ختم ہو رہی تھی وہ یہ کہ جو پہلے منہ بولے بیٹے کی مطلقہ یا بیوہ سے نکاح نہیں کرتے تھے یہ بد رسم تب ہی ختم ہو سکتی تھی جب کسی نبی کے ذریعہ اس رسم بد کو ختم کر دیا جاتا اور محمدؐ چونکہ آخری نبی تھے اس لئے یہ رسم بد محمدؐ کے ذریعہ ہی ختم کر دی۔

ان آیتوں میں ڈرنے والی بات ہے اس کو بھی محمدؐ کی طرف منسوب

की ओर संबंधित कर रखा है कि मुहम्मद स0 ने ज़ैद से कहा है कि तुम लोगों से न डरो अपितु ईश्वर से डरो और उसके नियम पर क्रिया करो सूरत अहज़ाब की इन आयतों से सम्बंधित सूरत तहरीम की आयतों को भी लिखा जा रहा है, जिनके विषय में आपत्ति जनक बातें ख़ायात तफ़सीर और इतिहास में लिखी मिलती है, पहले उनका वह अनुवाद लिखा जा रहा है जो अधिकांश अनुवादों में मिलता है.

सूरत तहरीम 66 आयत एक ऐ नबी तुमने क्यों उस वस्तु को अवैध किया जो ईश्वर ने तुम्हारे लिए वैध की है (क्या इस लिए कि) तुम अपनी पत्नीयों की प्रसन्नता चाहते हो, ईश्वर क्षमा करने वाला है और दया करने वाला है.

{66:2} ईश्वर ने तुम लोगों के लिए अपनी शपथों (यदि खाई हैं) के प्रतिबद्ध से निकलने का नियम भी निश्चित कर दिया है ईश्वर तुम्हारा स्वामी है वही ज्ञानी और युक्ति वाला है.

{66:3} ईशदूत ने एक बात अपनी एक पत्नी से रहस्य में कही थी फिर जब उस पत्नी ने वह रहस्य प्रकट कर दिया और ईश्वर ने नबी को सूचित कर दिया तो नबी ने उस पर किसी सीमा तक (उस पत्नी को) सूचित किया और किसी सीमा तक उसे न बताया, फिर जब नबी ने उसे यह बात बताई तो उसने पूछा आप को किसने इसकी सूचना दी नबी ने कहा मुझे उसने सूचना दी जो सब कुछ जानता और अवगत है.

{66:4} यदि तुम दोनों ईश्वर से पश्चाताप करती हो (तो अच्छा है) क्योंकि तुम्हारे ह्रदय सीधे मार्ग से हट गए हैं, और यदि नबी के मुकाबिलें में तुमने दल बन्दी की तो जान रखो कि ईश्वर उसका स्वामी है और उसके बाद जिबराईल और सम्पूर्ण आस्तिक और सब मलाइका उसके साथी और सहायक है.

{66:5} (मान लो!) यदि नबी तुम सब पत्नीयों को तलाक दे दें तो ईश्वर उसे ऐसी पत्नीयां तुम्हारे बदले में प्रदान करेगा जो तुमसे उत्तम सच्ची मुसलमान विश्वास वाली आज्ञाकारी पश्चाताप करने वालिया पूजा करने वालिया वृत रखने वालिया बिन पति वैवा और कुंवारियां.

सूरत तहरीम की आयत एक से पांच तक का वह अनुवाद लिखा गया जो आलिमों ने कर रखा है जिस पर आपत्ति होती है निम्न में वह भाव लिखा जा रहा है जो मूल लेख और ईशदूत की महिमा के अनुसार है.

{66:1} ऐ नबी किस लिए और क्यों आप अवैध करोगे उस वस्तु को जो ईश्वर ने आपके लिए वैध की है, निःसंदेह आप कदापि ईश्वर के वैध को अवैध नही कर सकते, आप इस लिए भी वैध को अवैध नही कर सकते कि आप अपनी पत्नीयों को प्रसन्न करो यद्यपि आपकी पत्नीयां भी ऐसा करने को न कहेंगे यदि वह ईश्वर पर विश्वास रखने वाली है, आप वैध अवैध ईश्वर का मानते हैं अपनी इच्छा से अवैध वैध नही करते.

(66:2) ईश्वर ने तुम्हारे लिए यह अनिवार्य किया है कि तुमने अपनी प्रतिज्ञा से ईश्वर के विधान के पालन की जो गांठ बाधी है उस गांठ का सम्मान व आदर करना उसको पूरा करना वैध करना (गांठ बन्धन खोलना है क्रिया) इस कार्य पर यदि कोई व्याकूलता आए तो ईश्वर तुम्हारा सहायक है और वह ज्ञानी और युक्ति वाला है और आस्तिक की प्रतिज्ञा यह है कि ईश्वर के वैध अवैध को माने, इसलिए भी आप ईश्वर के वैध को अवैध नही करोगे {10:59; 5:87-89; 16:116}

(66:4) यदि तुम रसूल की प्रसन्नता के लिए (किसी कमी पर) ईश्वर से पश्चाताप करो जिस प्रकार रसूल तुम्हारी अभिरूचि करते हैं (और यही बात तुम से प्रत्याशित है तुम्हारे मान के अनुसार हैं) क्योंकि

کررکھا ہے کہ محمد لوگوں سے ڈرر ہے تھے. بات یہ نہیں ہے بلکہ محمدؐ نے زید سے کہا ہے کہ تم لوگوں سے نہ ڈرو بلکہ اللہ سے ڈرو اور اس کے قانون پر عمل کرو.

سورت احزاب کی ان آیتوں سے متعلق سورت تحریم کی آیتوں کو بھی لکھا جا رہا ہے جن کے بارے میں قابل اعتراض باتیں روایات، تفاسیر اور تاریخ میں لکھی ملتی ہیں پہلے ان کا وہ ترجمہ لکھا جا رہا ہے جو اکثر ترجموں میں ملتا ہے.

سورت تحریم ۶۶ ر آیت ایک. اے نبی تم نے کیوں اس چیز کو حرام کیا جو اللہ نے تمہارے لئے حلال کی ہے (کیا اس لئے کہ) تم اپنی بیویوں کی خوشی چاہتے ہو اللہ معاف کرنے والا ہے اور رحم فرمانے والا ہے.

(۲:۶۶) اللہ نے تم لوگوں کے لئے اپنی قسموں (اگر کھائی ہیں) کی پابندی سے نکلنے کا طریقہ بھی مقرر کر دیا ہے اللہ تمہارا مولیٰ ہے اور وہی علیم اور حکیم ہے.

(۳:۶۶) نبی نے ایک بات اپنی ایک بیوی سے راز میں کہی تھی پھر جب اس بیوی نے وہ راز ظاہر کر دیا اور اللہ نے نبی کو خبر دار کر دیا تو نبی نے اس پر کسی حد تک (اس بیوی کو) خبر دار کیا اور کسی حد تک اس سے درگزر کیا پھر جب نبی نے اسے یہ بات بتائی تو اس نے پوچھا آپ کو کس نے اس کی خبر دی نبی نے کہا مجھے اس نے خبر دی جو سب کچھ جانتا اور خوب باخبر ہے.

(۴:۶۶) اگر تم دونوں اللہ سے توبہ کرتی ہو (تو بہتر ہے) کیونکہ تمہارے دل سیدھی راہ سے ہٹ گئے ہیں اور اگر نبی کے مقابلہ میں تم نے جتھہ بندی کی تو جان رکھو کہ اللہ اس کا مولیٰ ہے اور اس کے بعد جبرئیل اور تمام اہل ایمان اور سب ملائکہ اس کے ساتھی اور مددگار ہیں.

(۵:۶۶) (مان لو) اگر نبی تم سب بیویوں کو طلاق دے دیں تو اللہ اسے ایسی بیویاں تمہارے بدلے میں عطا کرے گا جو تم سے بہتر سچی مسلمان باایمان اطاعت گزار توبہ کرنے والیاں عبادت کرنے والیاں روزہ رکھنے والیاں بن شوہر بیوہ اور کنواریاں.

سورت تحریم کی آیت ایک سے پانچ تک کا وہ ترجمہ لکھا گیا جو عالموں نے کر رکھا ہے جس پر اعتراض ہوتا ہے ذیل میں وہ مفہوم لکھا جا رہا ہے جو متن اور نبی کی شان کے مطابق ہے.

(۱:۶۶) اے نبی کس لئے اور کیوں آپ حرام کرو گے اس چیز کو جو اللہ نے آپ کے لئے حلال کی ہے. یقیناً آپ ہرگز اللہ کے حلال کو حرام نہیں کر سکتے آپ اس لئے بھی حلال کو حرام نہیں کر سکتے کہ آپ اپنی بیویوں کو راضی کرو حالانکہ آپ کی بیویاں بھی ایسا کرنے کو نہ کہیں گی. اگر وہ اللہ پر ایمان رکھنے والی ہیں. آپ حرام حلال اللہ کا مانتے ہیں اپنی مرضی سے حرام حلال نہیں کرتے.

(۲:۶۶) اللہ نے تمہارے لئے یہ فرض کیا ہے کہ تم نے اپنے عہد سے اللہ کی شریعت کی پابندی کی جو گرہ باندھی ہے اس گرہ کی عظمت واحترام کرنا اس کو پورا کرنا، حلال کرنا (گرہ کھولنا ہے عمل کرنا) اس کام پر اگر کوئی پریشانی آئے تو اللہ تمہارا مددگار ہے اور وہ دانا حکمت والا ہے اور مومن کا عہد یہ ہے کہ اللہ کے حرام حلال کو مانے اس لئے بھی آپ اللہ کے حلال کو حرام نہیں کرو گے. (۱۰:۵۹؛ ۵:۸۷-۸۹؛ ۱۶:۱۱۶)

(۴:۶۶) اگر تم رسول کی رضا جوئی کے لئے (کسی کمی پر) اللہ سے توبہ کرو جس طرح رسول تمہاری دل داری کرتے ہیں (اور یہی بات تم سے متوقع ہے تمہاری

तुम्हारे हृदय तो रसूल और ईश्वर की ओर आकृष्ट ही हैं, इस बात के अतिरिक्त यदि तुम ने नबी का विरोध और दल बन्दी की तो जान लो `कि ईश्वर उसका स्वामी है और उसके बाद जिबरईल और सब धर्म वाले और सब मलाईका उसके साथी और सहायक है

(66:1) की व्याख्या में जो कथन है वह विचारणीय है श्रीमती आयशा रा0 कहती है कि रसूल स0 श्रीमती जैनब बिन्ते जहश के पास शहद पिया करते थे और बहुत समय ठहरते थे, इस पर मैंने और श्रीमती हफ्सा ने आपस में ठहराई कि हम में से जिसके पास मुहम्मद स0 पधारें तो वह अवश्य आपसे कहे कि आपने मगाफीर खाया है, क्योंकि मुझे आपसे मगाफीर की दुर्गन्ध आ रही है, (अतः मैंने यही कहा) तो आपने कहा कि नहीं अपितु मैंने तो जैनब के पास शहद पिया है अस्तु मैं अब यह भी नहीं पियूंगा और मैंने शपथ खाली है तुम इसका वर्णन न करना, बुखारी जिल्द दोम, किताबुत्तफसीर पेज 949 हदीस 2019

मुस्लिम ने दो सन्दों में लिखा है उरवा बिन जुबैर और उबैद बिन उमेर और दोनों में अन्तर है उरवा वाली रिवायत में है कि शहद हफ्सा के यहां पियाथा और आयशा ने सफिया और सोदा से कहा और उबैद बिन उमेर की रिवायत में है कि शहद जैनब के यहां पिया था और आयशा ने हफ्सा से कहा था कि यूं कहना, आपके मुख से मगाफीर की गन्ध आ रही है,

इस आयत की एक अवतर्ण महिमा और भी है वह यह कि सय्यदे आलम श्रीमती हफ्सा के भवन में शोभावान हुए वह मुहम्मद स0 की अनुमति से अपने पिता श्री उमर को देखने के लिए गई थी, मुहम्मद स0 ने श्रीमती मारया कबतिया को सेवा में सम्मानित किया, यह हफ्सा को अरुचिकर हुआ, मुहम्मद स0 ने उनकी सहानुभूति के लिए कहा कि मैंने मारया को अपने ऊपर वर्जित कर लिया है और मैं तुम्हें शुभ सूचना देता हूं कि मेरे बाद राज्य के कार्यों के स्वामी अबुबकर व उमर होंगे, वह इससे प्रसन्न हो गई और अत्यन्त हर्ष में उन्होंने यह सब बात-चीत श्रीमती आयशा को सुनाई, इस पर यह आयत अवतरित हुई और कहा गया कि जो वस्तु आपके लिए वैध अर्थात मारया आपने उन्हें अपने लिए क्यों अवैध किया, (अहमद रजा खां और फरमान अली साहब ने इस आयत की तफ्सीर में अंकित किया है)

एक ही आयत और एक ही नबी परन्तु रिवायत और तफ्सीर में अन्तर इन पर विचार किया जाए शहद वाली बात विविध शहद पीने पर पत्नीयों ने परामर्श करके शहद जो वैध है को अवैध कराने के लिए झूट बात बनाई (नऊजू) मुहम्मद स0 को न पीते समय मगाफीर की दुर्गन्ध आई और न किसी और को आई जिनसे आप शहद पीने के बाद मिले होंगे, आयशा के मिलने के पहले और जब आपने वह शहद पिया होगा तो पीने के बाद अवश्य कुल्ली भी की होगी क्योंकि मुहम्मद स0 को दुर्गन्ध से कठोर घृणा थी, ऐसी स्थिति में यह कैसे स्वीकार किया जा सकता है कि यह बात सच्ची है,

आज भी हम शहद खाते हैं किसी ने पीड़ा देने वाली दुर्गन्ध अनुभूत न की होगी कि शहद छोड़ने का कारण बने और क्या मुहम्मद स0 बिल्कुल ही दुर्गन्ध और सुगन्ध को अनुभूत नहीं करते थे? यह नबी पर और अजवाज पर दोषारोपण है,

क्या मुहम्मद स0 की पत्नीयां (नऊज) ऐसी थी कि मुहम्मद स0 के विरुद्ध षडयंत्र करती रहती थी? ईश्वर तो उनको पवित्र कहता है और हम उनको अपने लेखों से अशुद्ध सिद्ध कर रहे हैं ऐसा कदापि नहीं है पत्नीयां किसी षडयंत्र में सम्मिलित न थी और न ही कर

شان کے مطابق ہے) کیونکہ تمہارے دل تو رسول اور اللہ کی طرف مائل ہی ہیں اس بات کے علاوہ اگر تم نے نبی کی مخالفت اور جتھے بندی کی تو جان لو کہ اللہ اس کا مولیٰ ہے اور اس کے بعد جبرئیل اور تمام اہل ایمان اور سب ملائکہ اس کے ساتھی اور مددگار ہیں۔

(۱:۶۶) کی تفسیر میں جو روایات ہیں وہ قابل غور ہیں حضرت عائشہؓ فرماتی ہیں کہ رسولؐ حضرت زینب بنت جحش کے پاس شہد پیا کرتے تھے اور کافی دیر ٹھہرتے تھے اس پر میں نے اور حضرت حفصہ نے آپس میں ٹھہرائی کہ ہم میں سے جس کے پاس محمدؐ تشریف لائیں تو وہ ضرور آپ سے کہے کہ آپ نے مغافیر کھایا ہے کیونکہ مجھے آپ سے مغافیر کی بو آ رہی ہے (چنانچہ میں نے یہی کیا) تو آپ نے فرمایا کہ نہیں بلکہ میں نے تو زینب کے پاس شہد پیا ہے بہرحال میں اب یہ بھی نہیں پیوں گا اور میں نے قسم کھالی ہے تم اس کا کسی سے ذکر نہ کرنا۔ (بخاری جلد دوم۔ کتاب التفسیر ص۔۹۴۹، حدیث۔۲۰۱۹)

مسلم نے دو سندوں سے تحریر کیا ہے عروہ بن زبیر اور عبید بن عمیر اور دونوں میں فرق ہے عروہ والی روایت میں ہے کہ شہد حفصہ کے یہاں پیا تھا اور عائشہ نے صفیہ اور سودہ سے کہا اور عبید بن عمیر کی روایت میں ہے کہ شہد زینب کے یہاں پیا تھا اور عائشہ نے حفصہ سے کہا تھا کہ یوں کہنا۔ آپ کے منہ سے مغافیر کی بو آ رہی ہے۔

اس آیت کا ایک شان نزول اور بھی ہے وہ یہ کہ سید عالم حضرت حفصہ کے محل میں رونق افروز ہوئے وہ محمدؐ کی اجازت سے اپنے والد حضرت عمر کی عیادت کے لئے تشریف لے گئیں محمدؐ نے حضرت ماریہ قبطیہ کو سرفراز خدمت کیا۔ یہ حفصہ کو گراں گزرا محمدؐ نے ان کی دلجوئی کے لئے فرمایا کہ میں نے ماریہ کو اپنے اوپر حرام کرلیا ہے اور میں تمہیں خوش خبری دیتا ہوں کہ میرے بعد امور امت کے مالک ابوبکر و عمر ہوں گے وہ اس سے خوش ہو گئیں اور نہایت خوشی میں انہوں نے یہ تمام گفتگو حضرت عائشہ کو سنائی۔ اس پر یہ آیت نازل ہوئی اور ارشاد فرمایا گیا کہ جو چیز آپ کے لئے حلال یعنی ماریہ آپ نے انہیں اپنے لئے کیوں حرام کیا (احمد رضا خاں اور فرمان علی صاحب نے اس آیت کی تفسیر میں درج کیا ہے)

ایک ہی آیت اور ایک ہی نبی لیکن روایت و تفاسیر مختلف ان پر غور کیا جائے شہد والی بات مختلف۔ شہد پینے پر ازواج نے مشورہ کر کے شہد جو حلال ہے کو حرام کرانے کے لئے جھوٹ بات بنائی (نعوذ) محمدؐ کو نہ پیتے وقت مغافیر کی بو آئی اور نہ کسی اور کو آئی جن سے آپ شہد پینے کے بعد ملے ہوں گے عائشہ کے ملنے کے پہلے اور جب آپؐ نے وہ شہد پیا ہوگا تو پینے کے بعد ضرور کلی بھی کی ہوگی۔ کیونکہ محمدؐ کو بدبو سے سخت نفرت تھی۔ ایسی حالت میں یہ کیسے تسلیم کیا جا سکتا ہے کہ یہ بات سچی ہے۔

آج بھی ہم شہد کھاتے ہیں کسی نے تکلیف دینے والی بو محسوس نہ کی ہوگی کہ شہد چھوڑنے کا سبب بنے اور کیا محمدؐ بالکل ہی بدبو اور خوشبو کو محسوس نہیں کرتے تھے؟ یہ نبی پر اور ازواج پر بہتان ہے۔

کیا محمدؐ کی بیویاں (نعوذ) ایسی تھیں کہ محمدؐ کے خلاف سازش کرتی رہتی تھیں؟ اللہ تو ان کو طاہر فرماتا ہے اور ہم ان کو اپنی تحریروں سے غلط ثابت کر رہے ہیں ایسا ہرگز نہیں ہے ازواج کسی سازش میں نہ شریک تھیں اور نہ ہی

सकती थी.

दूसरी शाने नजूल मारया कबतिया के विषय में है यदि वास्तव में कोई मारया थी तो मारया को अनुचरी स्वीकार किया गया है और अनुचरी ही लिखा मिलता है पहले यह विचार किया जाए मारया क्या थी अनुचरी, दासी या कुछ और या कुछ भी नही.

हबशा के राजा ने उन मुसलमानों के हाथ जो मक्का से प्लायन करके हबशा चले गए थे उनकी वापसी पर बहुत मूल्यवान उपहार मुहम्मद स० की सेवा में प्रेषित किये थे उनमें मारया थी यह लिखा मिलता है जिसको हर पंडित टीकाकार इतिहास कार ने अनुचरी लिखा है, कि वह एक सुन्दर अनुचरी थी जो शाह हबशा के अन्तः पूरी में थी, राजा ने उसको अच्छी दासी जानकर मुहम्मद स० की सेवा में रवाना कर दिया जिसको मुहम्मद स० ने भी वह पद दिया जो उसका था अर्थात लौंडी का परन्तु यह बात विश्वास योग्य नही है कारण इसका यह है कि एक सम्मानित राजा जो एक छोटे क्षेत्र का स्वामी था और उसने यह जान लिया था कि मुहम्मद स० अन्तिम नबी है जो असीमित क्षेत्र के नेता राजा अर्थात जगत के नेता है की सेवा में एक ऐसी अनुचरी जो शाह हबशा की सेवा कर चुकी थी को सेवा में प्रेषित कर सकते थे? और क्या मुहम्मद स० का स्थान इस बात की अनुमति दे सकता था कि एक राजा की अनुचरी को अपनी अन्तःपुरी में स्थान दें और उसके साथ बिना विवाह के सम्बन्ध स्थापित करें? जिनको इस्लामी जगत की उत्तम से उत्तम और स्वतंत्र सम्मानित विश्वसनीय स्त्री मिल सकती थी? जिनकी परीक्षा हो चुकी हो, मुहम्मद स० कदापि नही कर सकते थे (60:10)

अतः न तो शाह हबशा ही इतना गिरा हुआ था कि वह एक जगत नेता का अपमान करे एक सेवा ली हुई अनुचरी को प्रेषित करें और न ही मुहम्मद स० ऐसे उपहार को स्वीकार कर सकते थे, वह अलग बात है कि किसी ऐसी दासी को जो युद्ध में बन्दी हो कर आए और स्वतंत्र होने पर भी अपने देश को वापस न जाए उसको कर्मचारी के स्थान पर रख ले परन्तु पत्नी उसको उस समय तक नही बनाया जा सकता जब तक उसकी परीक्षा न हो जाए और बिना निकाह के तो प्रश्न ही उत्पन्न नही होता (60:10)

तथ्य इसके अतिरिक्त है यदि कोई मारया है वह यह कि जब शाह हबशा को विश्वास हो गया था कि मुहम्मद स० अन्तिम नबी है जिनकी सूचना उनकी पुस्तकों में अंकित है और यह भी विश्वास हो गया कि वह या उनके अनुयायी एक दिन मेरे क्षेत्र को भी विजय कर लेंगे अतः शाह ने भविष्य के लिए मुहम्मद स० और मुसलमानों की दया दृष्टि प्राप्त करने के लिए और उपहारों के साथ एक उपहार रीति के अनुसार वह भी प्रेषित किया होगा जो मारया के नाम से सम्बन्धित है.

परन्तु मुहम्मद स० उपहार में न तो अनुचरी स्वीकार करने के समर्थक थे और न प्रेषित करने के और न ही कुरआन दासी दास बनाने की अनुमति देता है (47:4) और यह हबशा को प्लायन की घटना मक्के की है तो मक्का के जीवन में मुहम्मद स० के पास मारया नाम की कोई अनुचरी या पत्नी नही थी.

परन्तु उस समय में भी जब एक राजा किसी दूसरे राजा से मित्रता करने का निश्चय करता था तो उसकी सेवा में कोई उपहार किसी दासी की आकृति में नही भेजता था कि वह उसके अन्तःपूरी में सम्मिलित हो, अपितु किसी अपनी पुत्री या कोई राज्य परिवार की सम्मानित लड़की को रवाना करता था जो तथ्य है हां उस सम्मानित लड़की की सेवा के लिए दासी अवश्य प्रेषित करता था, यदि उपहार में मित्रता के लिए किसी दासी या अनुचरी को प्रेषित कर देता तो वह राजा इस व्यवहार को अपना अपमान समझता और उसको दण्ड देता, ऐसे ही शाह हबशा ने यदि उपहार में कोई लड़की भेजी होगी तो वह कोई राज्य परिवार की लड़की होगी और उसकी सेवा के लिए कोई

کر سکتی تھیں.

دوسری شان نزول ماریہ قبطیہ کے بارے میں ہے اگر حقیقت میں کوئی ماریہ تھی تو ماریہ کو کنیز تسلیم کیا گیا ہے اور کنیز ہی لکھا ملتا ہے پہلے یہ غور کیا جائے ماریہ کیا تھی کنیز لونڈی یا اور کچھ یا کچھ بھی نہیں.

شاہ حبشہ نے ان مسلمانوں کے ہاتھ جو مکہ سے ہجرت کر کے حبشہ چلے گئے تھے ان کی واپسی پر بہت قیمتی تحفے محمدؐ کی خدمت میں روانہ کئے تھے ان میں ماریہ تھی یہ لکھا ملتا ہے جس کو ہر محدث مفسر اور مورخ نے کنیز لکھا ہے کہ وہ ایک خوبصورت لونڈی تھی جو شاہ حبشہ کے حرم میں تھی شاہ نے اس کو اچھی لونڈی جان کر محمدؐ کی خدمت میں روانہ کر دیا جس کو محمدؐ نے بھی وہی درجہ دیا جو اس کا تھا یعنی لونڈی کا. مگر یہ بات قابل یقین نہیں ہے. وجہ اس کی یہ ہے کہ ایک باعزت شاہ جو ایک مختصر علاقہ کا مالک تھا اور اس نے یہ جان لیا تھا کہ محمدؐ آخری نبی ہیں جو لامحدود علاقہ کے سردار بادشاہ یعنی سرور عالم ہیں کی خدمت میں ایک ایسی کنیز جو شاہ حبشہ کی خدمت انجام دے چکی تھی کو خدمت اقدس میں روانہ کر سکتے تھے؟ اور کیا محمدؐ کا مقام اس بات کی اجازت دے سکتا تھا کہ ایک شاہی کنیز کو اپنے حرم میں جگہ دیں اور اس کے ساتھ بغیر نکاح کے تعلقات قائم کریں؟ جن کو عالم اسلام کی بہترین سے بہترین اور آزاد باعزت قابل اعتبار عورتیں مل سکتی تھیں؟ جن کا امتحان ہو چکا ہو محمدؐ ہرگز نہیں کر سکتے تھے. (۶۰:۱۰)

اس لئے نہ تو شاہ حبشہ ہی اتنا گرا ہوا تھا کہ وہ ایک سرور عالم کی بے عزتی کرے ایک خدمت لی ہوئی کنیز کو بھیج دیں اور نہ ہی محمدؐ ایسے تحفے کو قبول کر سکتے تھے وہ الگ بات ہے کہ کسی ایسی کنیز کو جو مال غنیمت میں آئے اور آزاد ہونے پر بھی اپنے ملک کو واپس نہ جائے اس کو ملازمہ کے طور پر رکھ لیں مگر بیوی اس کو اس وقت تک نہیں بنایا جا سکتا جب تک اس کا امتحان نہ ہو جائے اور بغیر نکاح کے تو سوال ہی پیدا نہیں ہوتا (۶۰:۱۰)

حقیقت اس کے علاوہ ہے اگر کوئی ماریہ ہے وہ یہ کہ جب شاہ حبشہ کو یقین ہو گیا تھا کہ محمدؐ آخری نبی ہیں جن کی خبر ان کی کتابوں میں درج ہے اور یہ بھی یقین ہو گیا کہ وہ یا ان کے پیروکار ایک دن میرے علاقے کو بھی فتح کر لیں گے اس لئے شاہ نے آئندہ کے لئے محمدؐ اور مسلمانوں کی نظر کرم حاصل کرنے کے لئے اور تحفوں کے ساتھ ایک تحفہ رواج کے مطابق یہ بھی روانہ کیا ہوگا جو ماریہ کے نام سے منسوب ہے.

لیکن محمدؐ تحفہ میں نہ تو کنیز قبول کرنے کے حق میں تھے اور نہ روانہ کرنے کے. اور نہ ہی قرآن کنیز غلام بنانے کی اجازت دیتا ہے (۴۷:۴) اور یہ حبشہ کو ہجرت کا واقعہ مکہ کا ہے تو مکہ کی زندگی میں محمدؐ کے پاس ماریہ نام کی کوئی کنیز یا بیوی نہیں تھی.

لیکن اس زمانہ میں بھی جب ایک شاہ کسی دوسرے شاہ سے دوستی کرنے کا ارادہ کرتا تھا تو اس کی خدمت میں کوئی تحفہ کسی لونڈی کی شکل میں نہیں بھیجتا تھا کہ وہ اس کے حرم میں شامل ہو. بلکہ کسی اپنی لڑکی یا کوئی شاہی خاندان کی باعزت لڑکی کو روانہ کرتا تھا جو حقیقت ہے ہاں اس باعزت لڑکی کی خدمت کے لئے کنیز ضرور روانہ کرتا تھا. اگر تحفہ میں دوستی کے لئے کسی لونڈی یا کنیز کو روانہ کر دیتا تو وہ شاہ اس عمل کو اپنی توہین سمجھتا اور اس کو سزا دیتا ایسے ہی شاہ حبشہ نے اگر تحفہ میں کوئی لڑکی بھیجی ہوگی تو وہ کوئی شاہی خاندان کی لڑکی ہوگی اور اس کی خدمت

मारया नाम की दासी हो सकती है,

परन्तु इस्लाम बिना विवाह के किसी स्त्री से मैथुन की अनुमति नही देता और न ही हंगामी स्थिति के अतिरिक्त एक विवाह से अधिक की आज्ञा देता है केवल तात्कालिक स्थिति में विधवा स्त्रियों और अनाथ बच्चों के पालन पोषण के लिए चार तक पत्नी रखने की अनुमति देता है और वह भी निकाह मेहर के साथ और जब कि यह कथा है उस समय मुहम्मद स0 की स्थिति ऐसी नही थी कि वह अपने यहां ऐसी पत्नी रखते बिना निकाही दासी का तो प्रश्न ही नही,

मदीना आने के बाद यदि कोई उपहार आया होगा तो उसको मुहम्मद स0 ने किसी दूसरे को दे दिया होगा और उसका निकाह किया होगा मुहम्मद दूसरे राजाओं की भांति रंगीन स्वभाव के व्यक्ति न थे और यदि कोई मारया को स्वीकार ही करता है तो वह कर्मचारी की भांति होगी, ऐसी अनुचरी जिससे मैथुन का सम्बन्ध हो बिना विवाह के तो वह किसी भी मूल्य पर मुहम्मद स0 के पद के अनुसार नही है और न ही इस्लाम अनुमति देता है,

अतः मारया से मैथुन करने का प्रश्न ही नही जब प्रश्न ही नही तो अवैध करने का क्या अर्थ? अतः यह मारया वाली कथा मिथ्या है और न ही मुहम्मद स0 जैसे व्यक्ति के लिए यह उचित है सुरक्षा की दृष्टि से वह अपने अन्तःपुरी में किसी अन्जान स्त्री को प्रविष्ट करें ऐसी स्त्री से हर समय भय हो सकता है और मुहम्मद स0 के बहुत शत्रु थे इसलिए भी मारया का रहना सम्भव नही है,

आयात (33:28) के प्रकाश में आगे को लिखा जा रहा है जब विजय का क्रम आरम्भ हुआ और मुसलमानों की माली दशा अच्छी होने लगी और जब कोई माल आता था तो मुहम्मद स0 उसको मुसलमानों में विभाजित कर देते थे, ऐसी स्थिति में हो सकता है कि नबी की पत्नीयों के मनों में भी माल की चाहत आए इसलिए नबी ने ईश्वर के आदेश से अपनी पत्नीयों से कहा कि कल को पत्नीयां कोई अनुताप न करें और अपने विषय में निर्णय करें,

(33:28) ऐ नबी अपनी पत्नीयों से कहो यदि तुम दुनिया और उसकी सज्जा चाहती हो तो आओ मैं तुम्हें धन दौलत दूं और अच्छे ढंग से विदा कर दूं (29) और यदि तुम ईश्वर और रसूल की प्रसन्नता और परलोक की इच्छुक हो तो जान लो कि तुम में से जो सदाचारिणी है ईश्वर ने उनके लिए बड़ा फल उपलब्ध कर रखा है,

इन आयात की अवतर्ण महिमा के विषय में लिखा मिलता है कि उन पत्नीयों ने निर्धनता की आपत्ति की थी जिस पर नबी ने ईश्वर के कहने पर यह कहा तो यह मिथ्या है बात यह है कि स्थिति को देखते हुए नबी ने अपनी पत्नीयों से ज्ञात किया था कि यदि वह चाहेंगी माल तो दे दूंगा परन्तु धन के लिए मेरे यहां स्थान नही तो धन देकर उन्हें विदा कर दूंगा, परन्तु उन स्त्रियों ने न तो धन की मांग की थी न वह चाहती थी उनको तो ईश्वर और रसूल की प्रसन्नता की इच्छा थी, अतः उन्होंने उत्तर दिया कि ऐ ईशदूत न तो हमने ऐसी मांग की न इच्छा है जैसे आप रहते हैं वैसे ही हमको रहना है इस दुनिया की सज्जा से हमारा कोई उद्देश्य नही, यह है तथ्य जिसको हमारे उलमा ने क्या से क्या बना रखा है ईश्वर दया करे यहां तक लिखा है कि पत्नीयों की मांग पर नबी ने अप्रसन्न होकर एक माह का इला भी कर लिया था (नऊज़)

दो गुना दण्ड और प्रतिदान की बात भी कहला दी जिससे अनुयायी मुहम्मद स0 को शिक्षा हो कि यदि नबी की पत्नी भी पाप करती तो उनको भी दण्ड मिलता और दूना, तो हमारी क्या शक्ति है, अतः सत्य मार्ग गृहण करें यद्यपि नबी की पत्नीयों के पाप करने का

کے لئے کوئی ماریہ نام کی کنیز ہوسکتی ہے۔

مگر اسلام بغیر نکاح کے کسی عورت سے مباشرت کی اجازت نہیں دیتا اور نہ ہی ہنگامی حالات کے علاوہ ایک نکاح سے زیادہ کی اجازت دیتا ہے صرف ہنگامی حالات میں بیوہ عورتوں اور یتیم بچوں کی پرورش کے لئے چار تک بیوی رکھنے کی اجازت دیتا ہے اور وہ بھی نکاح مہر کے ساتھ اور جب کا یہ قصہ ہے اس وقت محمدؐ کے حالات ایسے نہیں تھے کہ وہ اپنے یہاں ایسی بیوی رکھتے۔ بغیر نکاحی کنیز کا تو سوال ہی نہیں۔

مدینہ آنے کے بعد اگر کوئی تحفہ آیا ہوگا تو اس کو محمدؐ نے کسی دوسرے کو دیدیا ہوگا اور اس کا نکاح کیا ہوگا محمدؐ دوسرے شاہوں کی طرح رنگین مزاج آدمی نہیں تھے۔ اور اگر کوئی ماریہ کو تسلیم ہی کرتا ہے تو وہ ملازمہ کی شکل میں ہوگی۔ ایسی کنیز جس سے مباشرت کا تعلق ہو بغیر نکاح کے تو وہ کسی بھی قیمت پر محمدؐ کے مقام کے مطابق نہیں ہے اور نہ ہی اسلام اجازت دیتا ہے۔

اس لئے ماریہ سے مباشرت کرنے کا سوال ہی نہیں جب سوال ہی نہیں تو حرام کرنے کا کیا مطلب؟ اس لئے یہ ماریہ والا واقعہ غلط ہے اور نہ ہی محمدؐ جیسے آدمی کے لئے یہ مناسب ہے حفاظت کی نظر سے کہ وہ اپنے حرم میں کسی غیر عورت کو داخل کریں ایسی عورت سے ہر وقت خطرہ ہوسکتا ہے اور محمدؐ کے بہت دشمن تھے اس لئے بھی ماریہ کا رہنا ممکن نہیں ہے۔

آیت (۳۳:۲۸) کی روشنی میں آگے کو لکھا جا رہا ہے جب فتح کا سلسلہ شروع ہوا اور مسلمانوں کی مالی حالت اچھی ہونے لگی اور جب کوئی مال آتا تھا تو محمدؐ اس کو مسلمانوں میں تقسیم کردیتے تھے ایسی حالت میں ہوسکتا ہے کہ نبی کی بیویوں کے دلوں میں بھی مال کی چاہت آئے اس لئے نبی نے اللہ کے حکم سے اپنی بیویوں سے کہا کہ کل کو بیویاں کوئی افسوس نہ کریں اور اپنے بارے میں فیصلہ کریں۔

(۳۳:۲۸) اے نبی اپنی بیویوں سے کہو اگر تم دنیا اور اس کی زینت چاہتی ہو تو آؤ میں تمہیں مال و دولت دوں اور بھلے طریقے سے رخصت کردوں (۲۹) اور اگر تم اللہ اور رسول کی رضا اور آخرت کی طالب ہو تو جان لو کہ تم میں سے جو نیک کار ہیں اللہ نے ان کے لئے بڑا اجر مہیا کر رکھا ہے۔

ان آیات کی شان نزول کے بارے میں لکھا ملتا ہے کہ ان بیویوں نے غربت کی شکایت کی تھی جس پر نبی نے اللہ کے کہنے پر یہ فرمایا تو یہ غلط ہے بات یہ ہے کہ حالات کو دیکھتے ہوئے نبی نے اپنی بیویوں سے معلوم کیا تھا کہ اگر وہ چاہیں گی مال تو دے دوں گا مگر مال کے لئے میرے یہاں گنجائش نہیں تو مال دے کر انہیں رخصت کردوں گا لیکن ان عورتوں نے نہ تو مال کا تقاضہ کیا تھا نہ وہ چاہتی تھیں ان کو تو اللہ اور رسول کی رضا درکار تھی اس لئے انہوں نے جواب دیا کہ اے رسول نہ تو ہم نے ایسا مطالبہ کیا نہ خواہش ہے جیسے آپ رہتے ہیں ویسے ہی ہم کو رہنا ہے اس دنیا کی زینت سے ہمارا کوئی مطلب نہیں۔ یہ ہے حقیقت جس کو ہمارے علماء نے کیا سے کیا بنا رکھا ہے اللہ رحم کرے یہاں تک لکھا ہے کہ ازواج کے مطالبہ پر نبی نے ناراض ہوکر ایک ماہ کا ایلا بھی کرلیا تھا (نعوذ)

دوگنا عذاب و ثواب کی بات بھی کہلا دی جس سے امت محمدؐ کو عبرت ہو کہ اگر نبی کی ازواج بھی گناہ کرتیں تو ان کو بھی سزا ملتی اور دونی تو ہماری کیا حقیقت ہے اس لئے نیک راہ اختیار کریں حالانکہ ازواج نبی کے گناہ کرنے کا

प्रश्न ही नही होता, इसलिए समय का राजा और उसकी पत्नी को भी जान लेना चाहिए कि दण्ड से वह भी नही बचेंगे ईश्वर कहता है कि ऐ अहले बैत ऐ नबी की पत्नीयों! ईश्वर तुम से हर प्रकार की अशुद्धता दूर करना चाहता है, कुरआन में अधिकांश सम्बोधन मुहम्मद स0 और यहां पत्नीयों से हैं परन्तु उनके माध्यम से यह सम्बोधन उम्मत मुहम्मद स0 या पूरी मानवता से है मानव इसको सुनकर अपना भविष्य ठीक बना ले जिससे परलोक में हानि न हो, दोगुना दण्ड की बात इसलिए भी कही गई है जिससे जिना का दण्ड निर्धारित करने में सहायता मिले जो दण्ड हमारे यहां शादीशुदा की रजम बना ली है वह भी मिथ्या सिद्ध हो,

वह इस प्रकार की रजम का जो दण्ड है उसके अनुसार दोगुना नही हो सकता (4:25) के अनुसार आधा नही हो सकता, क्योंकि पत्थरों की कोई मात्रा निश्चित नही है, आधा या दोगुना उसी समय हो सकता है जब मात्रा निश्चित हो चूंकि कोड़ों की मात्रा निश्चित है अतः आधी दो गुनी हो सकती है सौ की पचास या दो सौ, अतः जिना का दण्ड सौ कोड़े है चाहे जानी कंवारा हो या शादीशुदा,

(33:32,33) का नोट- इस आयत में अज़वाज को बताया जा रहा है कि कपटि हर प्रकार से आस्तिकों के बीच दुर्भावना फैलाना चाहते हैं सहानुभूति के आवरण में (24:11,12) सामान्य स्त्रियों की तुलना में तुम्हारी त्रुटि के परिणाम बड़े गम्भीर होंगे, अतः कपटि स्त्रीयों से बात करने में सावधानी का मार्ग ग्रहण करो यदि वह तुम्हारे मनों में वसवसा डालने का प्रयत्न करें तो शील और सौजन्य से उनकी बात का उत्तर नम्रता से न दो चूंकि उनके मनों में ईश्वर व रसूल के विरुद्ध द्वेष व ईर्ष्या है तुम्हारी नम्रता से वह कोई अनुचित आशा कर बैठें अतः स्पष्ट सीधी बात करो कि वह अनुमान कर लें कि यहां दाल गलने वाली नही है जिस अशान्ति की वह आशा कर रहें है उसमें सफलता मिलने वाली नही तुम्हारी गति विधि समुदाय के लिए आदर्श होगी अतः तुम बहुत सावधानी रखो

कपटि स्त्रीयां ईशदूत की पवित्र पत्नीयों को भांति भांति का प्रलोभन दिखलाती थी कि यहां तो तुम कारावास जैसी स्थिति में हो देखो नेताओ की पत्नीयां किस भव्यता व वैभव से रहती हैं तुम भी उसी को ग्रहण करो यदि नबी तुम को तलाक देते हैं तो कोई चिन्ता नही बड़े-बड़े धनी तुम से विवाह के लिए तैयार होंगे, यह सब कपटियों की गतिविधि थी, ईशदूत की पत्नीयां इससे बिलकुल पवित्र थी तब भी शिक्षा की शैली में ईश्वर ने यह आयतें अवतरित की, सम्बोधन अजवाज से किया परन्तु वास्तव में यह कपटियों के लिए भय और आस्तिकों के लिए कर्म करने की प्रेरणा है कि इन बातों पर व्यवहार करें और कयामत तक के लिए आदर्श बने,

ऐ अहले बैत नबी तुम वह कार्य करो जो नबी और ईश्वर बता रहे हैं, अर्थात नमाज पढ़ो दान दो अच्छी बातों का प्रचार करो, बुरी बातों से रोको जिसको नबी और सहाबा बाहर लोगों में फैला रहे हैं तुम उसको घरों में स्त्रियों में फैलाओ, चर्चा करो प्रचार करो, ईश्वर तुम्हें किसी प्रतिबन्ध में जकड़ना नही चाहता, हां, विधान का प्रतिबन्ध अवश्य है ईश्वर यह चाहता है कि अहले बैत से हर मलीनता को दूर रखे और तुम्हारा उत्तम प्रशिक्षण करके दुनिया में अपने रसूल की साहचर्य के योग्य बनाऐ

इस आयत में अशुद्धता शब्द में राज पत्नियों की सज्जा सामग्री पर भी सावधान किया है कि यह सज्जा नही अपितु मलीनता

سوال ہی پیدا نہیں ہوتا. اس لئے امیر وقت اور اس کی بیوی کو بھی جان لینا چاہیے کہ سزا سے وہ بھی نہیں بچیں گے اللہ فرماتا ہے کہ اے اہل بیت اے ازواج نبی اللہ تم سے ہر طرح کا رجس دور کرنا چاہتا ہے قرآن میں زیادہ تر خطاب محمدؐ اور یہاں ازواج محمدؐ سے ہے مگر ان کے واسطے سے یہ خطاب امت محمدؐ یا پوری نبی نوع انسانی سے ہے انسان اس کو سن کر اپنا مستقبل ٹھیک بنا لے جس سے آخرت میں نقصان نہ ہو. دوگنا عذاب کی بات اس لئے بھی فرمائی گئی ہے جس سے زنا کی سزا مقرر کرنے میں مدد ملے جو سزا ہمارے یہاں شادی شدہ کی رجم بنالی ہے وہ بھی غلط ثابت ہو.

وہ اس طرح کہ رجم کی جو سزا ہے اس کے مطابق دوگنا نہیں ہو سکتی (۴:۲۵) کے مطابق آدھا نہیں ہو سکتی. کیونکہ پتھروں کی کوئی تعداد مقرر نہیں ہے. آدھا یا دوگنا اسی وقت ہو سکتا ہے جب تعداد مقرر ہو. چونکہ کوڑوں کی تعداد مقرر ہے اس لئے آدھی دوگنی ہو سکتی ہے سو کی پچاس یا دو سو. اس لئے زنا کی سزا سو کوڑے ہے چاہے زانی کوارہ ہو یا شادی شدہ.

(۳۳:۳۲،۳۳) کا نوٹ:۔ اس آیت میں ازواج کو بتایا جا رہا ہے کہ منافق ہر طرح سے مومنین کے اندر بدگمانی پھیلانا چاہتے ہیں ہمدردی کے پردے میں (۲۴:۱۱،۱۲) عام عورتوں کے مقابلہ میں تمہاری لغزش کے نتائج دوررس ہوں گے اس لئے منافقین عورتوں سے بات کرنے میں احتیاط کی روش اختیار کرو اگر وہ تمہارے دلوں میں وسوسہ ڈالنے کی کوشش کریں تو مروت و شرافت سے ان کی بات کا جواب نرمی و تواضع سے نہ دو. چونکہ ان کے دلوں میں اللہ اور رسول کے خلاف بغض و حسد ہے تمہاری نرمی سے وہ کوئی غلط توقع کر بیٹھیں. اس لئے صاف سیدھی بات کرو کہ وہ اندازہ کر لیں کہ یہاں دال گلنے والی نہیں ہے. جس فساد کا وہ ارادہ کر رہے ہیں اس میں کامیابی ملنے والی نہیں تمہاری ہر روش امت کے لئے نمونہ ہوگی اس لئے تم بہت احتیاط رکھو.

منافق عورتیں ازواج مطہرات کو طرح طرح کے سبز باغ دکھلاتی تھیں کہ یہاں تو تم قید جیسی حالت میں ہو دیکھو امرا کی بیویاں کس شان و شوکت سے رہتی ہیں تم بھی اس کو اختیار کرو اگر نبی تم کو طلاق دیتے ہیں تو کوئی فکر نہیں بڑے بڑے امیر تم سے شادی کے لئے تیار ہوں گے یہ سب منافقوں کا رویہ تھا. ازواج اس سے بالکل پاک تھیں تب بھی نصیحت کے انداز میں اللہ نے یہ آیتیں نازل کیں خطاب ازواج سے کیا مگر حقیقت میں یہ منافقین کے لئے انداز اور مومنین کے لئے عمل کرنے کی ترغیب ہے کہ ان باتوں پر عمل کریں اور قیامت تک کے لئے نمونہ بنیں.

اے اہل بیت نبی تم وہ کام کرو جو نبی اور اللہ بتا رہے ہیں یعنی نماز پڑھو زکوۃ دو اچھی باتوں کی تبلیغ کرو بری باتوں سے اجتناب جس کو نبی اور صحابہ باہر لوگوں میں پھیلا رہے ہیں تم اس کو گھروں میں عورتوں میں پھیلاؤ چرچہ کرو تبلیغ کرو اللہ تمہیں کسی قید و بند میں جکڑنا نہیں چاہتا. ہاں شریعت کی قید ضرور ہے اللہ یہ چاہتا ہے کہ اہل بیت سے ہر آلائش کو دور رکھے اور تمہاری اعلیٰ تربیت کر کے دنیا میں اپنے رسول کی رفاقت کے لائق بنائے.

اس آیت میں رجس لفظ میں بیگمات کے سامان زینت پر بھی تنبیہ ہے کہ یہ زینت نہیں بلکہ گندگی کا بوجھ ہے جس کو وہ لادے پھر رہی ہیں اللہ اپنے

का भार है जिसको वह लादे फिर रही है ईश्वर अपने रसूल की पत्नीयों को इस व्याकुल जीवन से पवित्र रखना चाहता है.

जैद के तलाक देने से चूंकि श्रीमती जैनब उनके घर वालों को दुख था, उसका निवारण केवल एक ही प्रकार हो सकता था कि मुहम्मद उनसे विवाह करें, बिना उस भय के कि विरोधी भी यह आपत्ति करें कि मुहम्मद स० ने अपने पुत्र की पत्नी से विवाह कर लिया, यह विवाह तो अवैध है, परन्तु ईश्वर ने कहा आपके लिए यह विवाह वैध है चूंकि जो विवाह वैध है उनमें यह नाता नही आता जब यह नाता अवैध विवाह की सूची में नही आता तो किसका साहस है कि जो वस्तु ईश्वर ने आपके लिए वैध कर दी है उसको अवैध कर सके और न आप ही ईश्व के वैध को अवैध कर सकते हैं आपसे तो यह आशा ही नही है (66:1) तो आप बिना भय व चिन्ता के विवाह करो, हमारे नियम ने यह आपके विवाह में दे दी, आप नरों में से किसी के पिता नही हैं (33:40) और न ही लेपालक उनके पुत्र होते हैं उनको उनके बापों के नाम से पुकारो (33:4,37)

यह विवाह तो मूर्ख लोगों ने अवैध कर रखा था ईश्वर के नियम में यह विवाह वैध है, रहा प्रश्न पत्नीयों की प्रसन्नता प्राप्त करने का तो यहां भी जिज्ञासा प्रश्न है ईश्वर यह कह रहा है कि क्या इस विवाह को आप इसलिए नही करेंगे ताकि आपकी पत्नीयां प्रसन्न हों परन्तु यह बात भी नही है, न तो आप अपनी पत्नीयों की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए इस वैध को अपने ऊपर अवैध करेंगे और न ही आपकी पत्नीयां इस वैध कार्य से आपको रोकेंगी, हां, यह हो सकता है कि कुछ इन्सानी निर्बलता से कुछ देर को वह भी सोचें कि यह विवाह कैसे होगा, जैद तो नबी का पुत्र है परन्तु आयत कुरआन से यह बात भी उनकी बुद्धि में आ जाऐगी क्योंकि जो वही आती है उसको वह भी पढ़ती और व्यवहार करती है.

एक प्रश्न भेद का भी है मुहम्मद स० ने एक भेद की बात अपनी एक पत्नी से बताई उसने दूसरी से बता दी वह यह कि महामना ने पत्नी से वर्णन कर दिया कि जैद ने जैनब को तलाक दे दी है, इस तलाक से वह और उसके सब परिवार वाले संतप्त है, इस शोक को दूर करने का केवल एक ही उपाय है कि इद्दत व्यतीत होने के बाद मैं जैनब से विवाह करूं मेरा इरादा यह है साथ में आपने यह भी कहा और किसी से न कहना, अर्थात दूसरी पत्नी से न कहना आयत में यह नही है कि तुम जैनब से भी न कहना परन्तु महामना का अभिप्राय यही था कि संकेत की भांति जैसे ईश्वर ने विवाह विधवा के बारे में कहा कि तुम विधवा से विवाह के विषय में स्पष्ट बात न करना परन्तु संकेत में कह दो और बात है जिससे उस स्त्री के कान में भी वह बात पहुंच जाए और पहले से तैयार हो जाए और उसका शोक भी कुछ कम हो जाए या यदि स्त्री पसन्द न करती हो तो इनकार सामने आ जाए

अतः यही विधि मुहम्मद स० ने अपनाई और अपनी पत्नी से यह कहा कि वर्णन न करना और किसी से अभी बात प्रकट नही होनी है रहस्य ही रहना है परन्तु वह पत्नी समझ गई कि श्रीमान ने जो बात कही है कि श्रीमती जैनब से विवाह करने की इच्छा रखते हैं और मुझसे केवल इसलिए कही है कि मैं जैनब से संकेतों में वर्णन कर दूं और उसकी इच्छा का ज्ञान हो जाए परन्तु थोड़ी सी भूल यह हो गई कि जैनब के साथ उसने किसी दूसरी पत्नी से भी वर्णन कर दिया जो अच्छी बात न थी (2:235)

इस रहस्य के विषय में एक दूसरे ढंग से विचार किया जाये, आज भी लगभग हर आदमी परामर्श के लिए अपनी बात अपनी पत्नी से कहता है, ऐसे ही मुहम्मद स० ने परामर्श के लिए और जैनब के

رسول کی ازواج کو اس پریشان زندگی سے پاک رکھنا چاہتا ہے۔

زید کی طلاق دینے سے چونکہ حضرت زینب ان کے گھر والوں کو غم تھا اس کا تدارک صرف ایک ہی طرح ہوسکتا تھا کہ محمدؐ ان سے نکاح کریں بغیر اس خوف کے کہ مخالفین بھی یہ اعتراض کریں کہ محمدؐ نے اپنے بیٹے کی بیوی سے نکاح کرلیا یہ نکاح تو حرام ہے مگر اللہ نے فرمایا کہ آپ کے لئے یہ نکاح حلال ہے چونکہ جو نکاح حرام ہیں ان میں یہ رشتہ نہیں آتا جب یہ رشتہ حرام نکاح کی فہرست میں نہیں آتا تو کس کی طاقت ہے کہ جو چیز اللہ نے آپ کے لئے حلال کردی ہے اس کو حرام کرسکے اور نہ آپ ہی اللہ کے حلال کو حرام کرسکتے ہیں آپ سے تو یہ امید ہی نہیں ہے (۶۶:۱) تو آپ بلا خوف وخطر زینب سے نکاح کرو ہمارے قانون نے یہ آپ کے نکاح میں دے دی آپ مردوں میں سے کسی کے باپ نہیں ہیں (۳۳:۴۰) اور نہ ہی لے پالک ان کے بیٹے ہوتے ہیں اُن کو اُن کے باپوں کے نام سے پکارو (۳۳:۴،۳۷)

یہ نکاح تو جاہل لوگوں نے حرام کر رکھا تھا اللہ کی شریعت میں یہ نکاح حلال ہے رہا سوال ازواج کی خوشنودی حاصل کرنے کا تو یہاں استفہام ہے۔ اللہ یہ فرمارہا ہے کہ کیا اس نکاح کو آپ اس لئے نہیں کریں گے تاکہ آپ کی بیوی خوش ہوں مگر یہ بات بھی نہیں ہے۔ نہ تو آپ اپنی ازواج کی خوشنودی حاصل کرنے کے لئے اس حلال کو اپنے اوپر حرام کریں گے اور نہ آپ کی ازواج ہی اس حلال کام سے آپ کو روکیں گی۔ ہاں یہ ہوسکتا ہے کہ کچھ انسانی کمزوری سے کچھ دیر کو وہ بھی سوچیں کہ یہ نکاح کیسے ہوگا۔ زید تو نبی کا بیٹا ہے مگر آیت قرآن سے یہ بات بھی ان کی عقل میں آجائے گی کیونکہ جو وحی آتی ہے اس کو وہ بھی پڑھتیں اور عمل کرتیں ہیں۔

ایک سوال راز کا بھی ہے محمدؐ نے ایک راز کی بات اپنی ایک بیوی سے بتائی اس نے دوسری سے بتادی وہ یہ کہ حضرت نے بیوی سے ذکر کردیا کہ زید نے زینب کو طلاق دے دی ہے۔ اس طلاق سے وہ اور اس کے سب قرابت والے غم زدہ ہیں اس غم کو دور کرنے کا صرف ایک ہی طریقہ ہے کہ عدت گزرنے کے بعد میں زینب سے نکاح کروں میرا ارادہ یہ ہے ساتھ میں آپ نے یہ بھی کہا اور کسی سے نہ کہنا یعنی دوسری ازواج سے نہ کہنا آیت میں یہ نہیں ہے کہ تم زینب سے بھی نہ کہنا۔ مگر حضرت کا منشاء یہی تھا کہ اشارۃً جیسے اللہ نے نکاح بیوہ کے بارے میں کہا ہے کہ تم بیوہ سے نکاح کے بارے میں صاف بات نہ کرنا مگر اشارے میں کہہ دو تو اور بات ہے۔ جس سے اس عورت کے کان میں بھی وہ بات پہنچ جائے اور پہلے سے تیار ہوجائے اور اس کا غم بھی کچھ کم ہوجائے یا اگر عورت پسند نہ کرتی ہو تو انکار سامنے آجائے۔

پس یہی طریقہ محمدؐ نے اختیار کیا اور اپنی زوجہ سے یہ کہا کہ ذکر نہ کرنا اور کسی سے ابھی یہ بات عام نہیں ہونی ہے راز میں ہی رہنی ہے۔ مگر وہ بیوی سمجھ گئی کہ حضرت نے جو بات کہی ہے کہ حضرت زینب سے نکاح کرنے کا ارادہ رکھتے ہیں اور مجھ سے صرف اس لئے کہی ہے کہ میں زینب سے اشارۃً ذکر کردوں اور اس کی منشاء کا علم ہوجائے مگر تھوڑی سی بھول یہ ہوگئی کہ زینب کے ساتھ اس نے کسی دوسری بیوی سے بھی ذکر کردیا جو اچھی بات نہ تھی (۲:۲۳۵)

اس راز کے بارے میں ایک دوسرے طریقے سے غور کیا جائے آج

कान में संदेश के लिए वर्णन किया, परन्तु उस पत्नी ने दूसरी पत्नी से वर्णन कर दिया जबकि दूसरी पत्नी से यह उल्लेख करना नियम के विरुद्ध था ईश्वर कहता है कि भेदों की रक्षा करो यहां भी समुदाय को उपदेश देना है,

इस रहस्य को प्रकट करने से जब मुहम्मद स0 ने अपनी पत्नी से ज्ञात किया तो पत्नी ने कहा कि यह आपको किसने बता दिया, उसने सोचा कि हो सकता है जिसको मैंने बताया है उसने ही आपसे बताया हो, उत्तर में मुहम्मद स0 ने कहा कि मुझको इसकी सूचना ज्ञानी व सूचना रखने वाले ने दी है यद्यपि कुरआन में कोई आयत नही कि ईश्वर ने बताया हो वही के द्वारा कि आपकी पत्नी ने रहस्य प्रकट कर दिया इस बात को ऐसे समझे कि जैद ने कोई बात बकर से कही और सावधान कर दिया कि किसी से वर्णन न करना और न ही बकर के अतिरिक्त जैद ने किसी और से कहा परन्तु वह बात हामिद को ज्ञात हो गई तो निःसन्देह जैद यही कहेगा और हर आदमी यही अनुमान करेगा कि यह भेद बकर ने ही प्रकट किया चूंकि जैद ने बकर के अतिरिक्त और किसी से नही कहा यह अनुमान करना इस प्रकार है कि ईश्वर ने हर व्यक्ति को बुद्धि दी है जिसको वही प्रकृतिक भी कहते हैं, इस बुद्धिका नोदन यही है कि तथ्य तक पहुंचा जाए तो जैद पहुंच गया, चूंकि मुहम्मद सबसे अधिक बुद्धिवान थे उनके अनुमान करने में तो कोई शंका होने का स्थान ही नही,

ईश्वर की दी हुई विवेक के अन्तर्गत अनुमान किया और उचित अनुमान किया तो उसको ईश्वर की ओर सम्बोधन किया गया ऐसे ही कुरआन में बहुत काम हैं जो करते तो व्यक्ति हैं परन्तु ईश्वर ने कहा कि तुमने तीर नही चलाया मैंने चलाया तुमने वध नही किया मैंने वध किया, यद्यपि वह कार्य इन्सानों ने किये, परन्तु किये ईश्वर के नियामानुसार बस यही बात यहां है,

तथापि ईश्वर ने फिर पत्नीयों को सावधान किया हो सकता है पत्नी इन्सानी निर्बलता के कारण से कोई त्रुटि कर जाए इससे पहले ही ईश्वर ने बता दिया कि ऐ नबी की पत्नीयों तुम नबी के विरुद्ध कोई जत्था बन्दी न करना और सत्य भी यही है कि तुम ऐसा नही कर सकती क्योंकि तुम्हारे हृदय तो नबी की ओर आकृष्ट ही हैं और न ही पत्नीयां किसी जत्थे बन्दी में लिप्त थी,

अब हर व्यक्ति स्वयं ही ईश्वर के दिए हुए विवेक से विचार करे कि तथ्य किया है? क्या ईशदूत की महिमा और अजवाज व सहाबा का मान ही आहत करने से इन आयात का भाव सामने आ सकता है या जो मैंने लिखा है वह सत्य है,

आयत (33:28से41) और (66:1से5) तक के बारे में हमारे यहां कुछ इस शैली में लिखा मिलता है जिससे मुहम्मद स0 और पवित्र पत्नीयों पर आरोप आ रहा है, जबकि आयात को ध्यान से देखने के बाद हर बात स्पष्ट हो रही है जो मैंने लिखी है हर व्यक्ति हट की ऐनक उतार कर और अन्धे अनुकरण से स्वतंत्र होकर पढ़ेगा तो निःसन्देह तथ्य सामने आ जाएगा और जो आरोप लगाए गए हैं वह भी दूर होंगे इन आयात में जो बात है वह श्रीमती जैनब की तलाक और मुहम्मद स0 के विवाह की बात है, विरोधियों की आपत्तियों का उत्तर मुहम्मद स0 से यह कहकर उत्तर दिलाया गया (66:1) ऐ मुहम्मद जो वस्तु आपके लिए ईश्वर ने वैध की है उसको आप या और कोई कैसे अवैध कर सकता है आप तो ऐसा कदम कदापि नही उठा सकते, आप अवैध कर ही नही सकते, विरोधी आपत्ति करते हैं करने दो (वाक्य प्रश्न

بھی تقریباً ہر آدمی مشورے کے لئے اپنی بات اپنی بیوی سے کہتا ہے ایسے ہی محمدؐ نے بطور مشورہ اور زینب کے کان میں پیغام کے لئے ذکر کیا. مگر اس بیوی نے دوسری زوجہ سے ذکر کر دیا جب کہ دوسری بیوی سے یہ ذکر کرنا خلاف قانون تھا. اللہ کہتا ہے کہ رازوں کی حفاظت کرو یہاں بھی امت کو تعلیم ہے.

اس راز کو ظاہر کرنے سے جب محمدؐ نے اپنی زوجہ سے معلوم کیا تو بیوی نے کہا کہ یہ آپ کو کس نے بتا دیا اس نے سوچا کہ ہو سکتا ہے جس کو میں نے بتایا ہے اس نے ہی آپ سے بتایا ہو. جواب میں محمدؐ نے فرمایا کہ مجھ کو اس کی خبر علیم وخبیر نے دے دی حالانکہ قرآن میں کوئی آیت ایسی نہیں کہ اللہ نے بتایا ہو وحی کے ذریعہ کہ آپ کی بیوی نے راز ظاہر کر دیا.

اس بات کو ایسے سمجھیں کہ زید نے کوئی بات بکر سے کہی اور تاکید کر دی کہ کسی سے ذکر نہ کرنا اور نہ ہی بکر کے علاوہ زید نے کسی اور سے کہا لیکن وہ بات حامد کو معلوم ہو گئی تو یقیناً زید یہی کہےگا اور ہر آدمی یہی اندازہ کرے گا کہ یہ راز بکر نے ہی ظاہر کیا چونکہ زید نے بکر کے علاوہ اور کسی سے نہیں کہا. یہ اندازہ کرنا اس طرح ہے کہ اللہ نے ہر انسان کو عقل دی ہے. جس کو وحی جبلی بھی کہتے ہیں اس عقل کا تقاضہ یہی ہے کہ حقیقت تک پہنچا جائے تو زید پہنچ گیا. چونکہ محمدؐ سب سے زیادہ عقل مند تھے ان کے اندازہ کرنے میں تو کوئی شک وہ شبہ ہونے کی گنجائش ہی نہیں.

اللہ کی دی ہوئی فراست کے تحت اندازہ کیا اور صحیح اندازہ کیا تو اس کو اللہ کی طرف منسوب کیا گیا ایسے ہی قرآن میں بہت کام ہیں جو کرتے تو انسان ہیں مگر اللہ نے کہا کہ تم نے تیر نہیں چلایا میں نے چلایا تم نے قتل نہیں کیا میں نے قتل کیا. حالانکہ وہ کام انسانوں نے کئے. مگر کئے اللہ کے قانون کے مطابق بس یہی بات یہاں ہے.

تاہم اللہ نے پھر ازواج کو متنبہ کیا ہو سکتا ہے ازواج انسانی کمزوری کی وجہ سے کوئی غلطی کر جائیں اس سے پہلے ہی اللہ نے بتا دیا کہ اے ازواج نبی تم نبی کے خلاف کوئی گروہ بندی نہ کرنا اور حقیقت بھی یہی ہے کہ تم ایسا نہیں کر سکتیں کیونکہ تمہارے دل تو نبی کی طرف مائل ہی ہیں اور نہ ہی ازواج نبی جتھے بندی میں ملوث تھیں.

اب ہر آدمی خود ہی اللہ کی دی ہوئی فہم سے غور کرے کہ حقیقت کیا ہے؟ کیا شان رسول اور ازواج وصحابہ کی عزت ہی مجروح کرنے سے ان آیات کا مفہوم سامنے آ سکتا ہے یا جو میں نے لکھا ہے وہ حقیقت ہے.

آیت (۳۳:۲۸ سے ۴۰) اور (۶۶:۱ سے ۵) تک کے بارے میں ہمارے یہاں کچھ اس انداز سے لکھا ملتا ہے جس سے محمدؐ اور ازواج مطہرات پر الزام آ رہا ہے جب کہ آیات کو غور سے دیکھنے کے بعد ہر بات صاف ہو رہی ہے جو میں نے لکھی ہے ہر آدمی ضد کا چشمہ اتار کر اور اندھی تقلید سے آزاد ہو کر پڑھے گا تو یقیناً حقیقت سامنے آ جائے گی. اور جو الزامات لگائے گئے ہیں وہ بھی دور ہوں گے ان آیات میں جو بات ہے وہ حضرت زینب کی طلاق اور محمدؐ سے نکاح کی بات ہے مخالفین کے اعتراضوں کا جواب محمدؐ سے یہ کہہ کر دلایا (۶۶:۱) کہ اے محمدؐ جو چیز آپ کے لئے اللہ نے حلال کی ہے اس کو آپ یا اور کوئی کیسے حرام کر سکتا ہے آپ تو ایسا قدم ہرگز نہیں اٹھا سکتے. آپ حرام کر ہی نہیں سکتے مخالفین

वाचक) (33:37,38,48) आप यह विवाह करें चूंकि वैध अवैध ईश्वर का चलेगा और यह विवाह आपके लिए वैध है अवैध वैध कौन करता है उसको जानने के लिए आयत (10:59; 5:87; 16:116) देखो (33:38) में भी यही कह दिया नबी पर किसी ऐसे काम को करने में कोई रुकावट नही जो ईश्वर ने उसके लिए निश्चित कर दिया अर्थात वैध कर दिया और यही रीति पहले से भी है कोई नबी ईश्वर के वैध अवैध मे हस्तक्षेप नही कर सकता न ही किसी ने किया है.

ऐ आस्तिको! ईश्वर का बहुत जप किया करो अर्थात जो पुस्तक उसने दी है उसको याद करो उसके विरोध से बचने के लिए (41)
और प्रातः और सायं उसकी पवित्रता का वर्णन करते रहो (42)
वही तो है जो तुम पर अनुकम्पा करता है (दरूद भेजता है) और उसके फरिश्ते भी तुम्हारे ऊपर अनुकम्पा प्रेषित करते हैं अर्थात सहायता और मंगल कामना करते है ताकि वह ईश्वर उस अनुकम्पा के द्वारा तुम्हें अन्धकार से प्रकाश में निकाल लाए वह आस्तिकों पर बहुत कृपालु है (43) {33:56; 97:1,5; 16:81; 6:151}

इस आयत के साथ (2:155,156,157) भी लिखी जा रही है.

(2:155) और अवश्य हम तुम्हारी परीक्षा करेंगे कुछ भय और भूक से और मालों जानों और फलों की कमी से और शुभ सूचना सुना दो उन धैर्य वालों को (9:103)

(2:156) कि जब उन पर कोई कष्ट पड़े तो कहें हम ईश्वर के लिए समर्पित हैं हम हर कष्ट में उसी के नियम की ओर लौटते हैं अर्थात उसकी आज्ञाकारी करते हैं

(2:157) यह वही लोग हैं जिन पर उनके रब की दरूदें (सलात) हैं और अनुकम्पा और वही लोग मार्ग पर है.

आयत (33:43; 2:155,156,157) में ईश्वर व मलाईका की सलात आस्तिकों पर है वह यह कि जब इन्सान ईश्वर की आज्ञाकारी करता है तो ईश्वर उसको अन्धकार से निकालकर प्रकाश में लाता है अर्थात धर्म से अचेतना अन्धकार है और धर्म की जानकारी प्रकाश है और प्रकाश से बन्दे की दुनिया और परलोक बनता है जिसके लिए ईश्वर ने अपनी अनुकम्पा कहा है और उनके मार्ग पर स्थिर करता है

(14:5) और निःसन्देह हमने मूसा को अपनी आयात अपना नियम देकर भेजा ताकि अपनी जाति को अन्धकार से निकालकर नूर की ओर लाओ.

तो सिद्ध हुआ कि ईश्वर की पुस्तक आस्तिकों के लिए अनुकम्पा प्रकाश और सलात है क्योंकि इस प्रकाश से मानव अन्धकार से निकल कर प्रकाश में आता है यह मानव पर ईश्वर की अनुकम्पा सलात है (75:9)

कुरआन में नबी की सलात आस्तिको पर

(9:103) ऐ प्रीतम उनके धन से दान लो जिससे तुम उन्हें सुथरा और पवित्र कर दो, और उनके लिए (सलात) मंगल कामना करो, निःसन्देह आपकी प्रशंसा (सलात) उनके हृदयों की शान्ति है.

इस आयत में नबी की सलात आस्तिकों पर यह बताई है कि आप उनसे धन प्राप्त करके उनकी प्रशंसा व उत्साहित करें और उनके लिए मंगल प्रार्थना करें, आस्तिकों का हृदय प्रसन्न हो? अर्थ यह है कि ईश्वर ने कुरआन में नबी से कहा कि उन कपटियों से दान न

اعتراض کرتے ہیں کرنے دو (جملہ استفہام) (۴۸،۳۸،۳۷:۳۳) آپ یہ نکاح کریں چونکہ حلال حرام اللہ کا چلے گا اور یہ نکاح آپ کے لئے حلال ہے. حرام حلال کون کرتا ہے اس کو جاننے کے لئے آیت (۵۹:۱۰؛ ۵:۸۷؛ ۱۶:۱۱۶) دیکھو (۳۸:۳۳) میں بھی یہی فرما دیا نبی پر کسی ایسے کام کو کرنے میں کوئی رکاوٹ نہیں جو اللہ نے اس کے لئے مقرر کر دیا یعنی حلال کر دیا اور یہی طریقہ پہلے سے بھی ہے کوئی نبی اللہ کے حلال حرام میں مداخلت نہیں کرسکتا نہ ہی کسی نے کیا ہے.

اے مومنو! اللہ کا بہت ذکر کیا کرو یعنی جو کتاب اسی نے دی ہے اس کو یاد رکھا کرو اس کی مخالفت سے بچنے کے لئے (۴۱)
اور صبح اور شام اس کی پاکی بیان کرتے رہو (۴۲)
وہی تو ہے جو تم پر رحمت فرماتا ہے (درود بھیجتا ہے) اور اس کے ملائکہ بھی تمہارے اوپر رحمت بھیجتے ہیں یعنی مدد اور دعائے خیر کرتے ہیں. تاکہ وہ اللہ اس رحمت کے ذریعہ تمہیں تاریکیوں سے روشنی میں نکال لائے وہ مومنوں پر بہت مہربان ہے (۴۳) [۳۳:۵۶؛ ۹۷:۱،۵؛ ۱۶:۸۱؛ ۶:۱۵۱]

نوٹ:۔ اس آیت کے ساتھ (۲:۱۵۵،۱۵۶،۱۵۷) بھی لکھی جا رہی ہیں.

(۲:۱۵۵) اور ضرور ہم تمہیں آزمائیں گے کچھ ڈر اور بھوک سے اور کچھ مالوں اور جانوں اور پھلوں کی کمی سے اور خوشخبری سنا دو ان صبر والوں کو (۹:۱۰۳)

(۲:۱۵۶) کہ جب ان پر کوئی مصیبت پڑے تو کہیں ہم اللہ کے لئے وقف ہیں اور ہم ہر مشکلات کا سامنا کرنے کے لئے اسی کے قانون کی طرف رجوع کرتے ہیں فرمانبرداری کرتے ہیں

(۲:۱۵۷) یہی وہ لوگ ہیں جن پر ان کے رب کی درودیں (صلوٰۃ) ہیں اور رحمت اور وہی لوگ راہ پر ہیں

آیت (۳۳:۴۳؛ ۲:۱۵۵،۱۵۶،۱۵۷) میں اللہ و ملائکہ کی صلوٰۃ مومنوں پر ہے وہ یہ کہ جب انسان اللہ کی فرمانبرداری کرتا ہے تو اللہ اس کو تاریکیوں سے نکال کر روشنی میں لاتا ہے یعنی دین سے غفلت تاریکی ہے اور دین کا علم روشنی ہے اور روشنی سے بندے کی دنیا و آخرت بنتی ہے جس کے لئے اللہ نے اپنی رحمت فرمایا ہے اور ان کو راہ پر قائم کرتا ہے

(۱۴:۵) اور بلاشبہ ہم نے موسیٰ کو اپنی آیات اپنا قانون دے کر بھیجا کہ اپنی قوم کو اندھیروں سے نکال کر نور کی طرف لاؤ

تو ثابت ہوا کہ اللہ کی کتاب مومنوں کے لئے رحمت نور اور صلوٰۃ ہے کیونکہ اس نور سے انسان اندھیرے سے نکل کر روشنی میں آتا ہے یہ انسان پر اللہ کی رحمت صلوٰۃ ہے (۹:۷۵)

قرآن میں نبی کی صلوٰۃ مومنوں پر.

(۹:۱۰۳) اے محبوب ان کے مال میں سے زکوٰۃ تحصیل کرو جس سے تم انہیں ستھرا اور پاکیزہ کر دو اور ان کے حق میں (صلوٰۃ) دعائے خیر کرو. بے شک آپ کی تحسین و تعریف (صلوٰۃ) ان کے دلوں کا چین ہے.

اس آیت میں نبی کی صلوٰۃ مومنوں پر یہ بتائی ہے کہ آپ ان سے مال وصول کر کے ان کی تعریف و تحسین کریں اور ان کے حق میں دعائے خیر کریں مومنوں کے دل خوش ہوں؟ مطلب یہ ہے کہ اللہ نے قرآن میں نبی سے کہا کہ

लेना तो मुहम्मद स० कपटि लोगों से दान नही लेते थे, अतः आप जिससे दान लेते थे वह जान लेता था कि मै कपटि नही हूं और वह प्रसन्न होता था यह है नबी की सलात आस्तिकों पर,

जिस प्रकार (33:43) में ईश्वर की सलात बन्दों पर यह है कि ईश्वर बन्दों को अन्धकार से निकाल कर प्रकाश में लाता है इस प्रकार (14:1) में नबी के विषय में कहा गया है

(14:1) अलिफ लाम रा, यह एक पुस्तक है कि हमने उतारी है तुम्हारी ओर तुम लोगों को अन्धेरों से निकाल कर प्रकाश में लाओ, उनके रब के आदेश से उसके मार्ग धर्म की ओर जो सम्मान वाला और अच्छाईयों वाला है,

(14:1) में नबी की सलात बन्दों पर यह है कि नबी भी ईश्वर के आदेश से पुस्तक के द्वारा बन्दों को अधर्म से निकालकर धर्म वाला बनाता है यह रही नबी की सलात अर्थात मुख से और कर्म की सलात की सहायता से क्या मिला,

(24:25) (ईश्वर ने अन्धकार से निकालकर प्रकाश में लाने के बाद कहा) ईश्वर ने वचन दिया उनको जो तुम में से आस्था लाया और अच्छे कर्म किये कि अवश्य उन्हें पृथ्वी में राज्य देगा जैसे उनसे पहलों को दिया और अवश्य जमा देगा उनका वह धर्म (नियम) जो उनके लिए पसन्द किया है और अवश्य उनके अगले भय को शान्ति में बदल देगा, वह मेरी ही पूजा करे मेरा साझी किसी को न ठेहराए और जो उसके बाद अवज्ञा करे तो वही अवज्ञा कार है (57:9)

कितनी अच्छी शैली में ईश्वर और रसूल और मलाईका की सलात सहायता खुलकर सामने आई अर्थात जो व्यक्ति अन्धेरों से निकल कर प्रकाश में आया उसके द्वारा से आस्तिक बने और पृथ्वी में सत्ता मिली, परलोक में भी सफलता मिलेगी इस प्रकार फरिश्तों की सलात दरूद भी प्रकट हो रही है कि फरिश्ते भी इन्सान की सहायता करते है ईश्वर के आदेश से और इन्सानों की रक्षा पर भी फरिश्ते ईश्वर ने नियुक्त कर रखे है यह व्यक्तियों पर फरिश्तों की सलात हुई (41:30,31) फरिश्तों की सलात आस्तिकों पर

(24:41) क्या तुम देखते नही हो कि ईश्वर के लिए पवित्रता का वर्णन (अपना कर्तव्य पूर्ण) कर रहे है वह सब जो आकाशों और पृथ्वी में है और वह पक्षी जो पर फैलाये उड़ रहे है हर एक अपनी सलात नमाज और व्यवस्था कर्तव्य जानता है और यह सब कुछ जो करते है ईश्वर उससे अवगत रहता है,

कुरआन कहता है कि आकाशों और पृथ्वी सबके सब जानदार ईश्वर की पवित्रता व सलात करते है और वह सब अपनी सलात को अच्छा जानते है अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि उनकी सलात क्या है विचारणीय है सूर्य की सलात यह है कि क्रमागत प्रकाश और गर्मी पहुंचा रहा है और फसलों को पका रहा है और उससे बिजली भी पैदा की जा रही है और बहुत कार्य लिए जा रहे है वर्ष का लेखा भी इससे चल रहा है वैज्ञानिक जानते है,

चाँद का जप और सलात यह है कि ठंडी रोशनी देता है वर्ष और महीनों का लेखा भी देता है और निश्चित पड़ाव के अनुसार क्रमागत अपने मदार पर चल रहा है हवाऐं बादलों को उठाकर लाती है और मैदानों पर बरसा देती है हवाओं से और बहुत कार्य लिए जाते है जो सबको ज्ञात है, पर्वत अपनी ऊंची चौटियों के बर्फ से मानसून को बर्फ बनाकर वर्षा करते है और वर्षा के पानी को संग्रह करके और धरती के तल के नीचे नहरे चलाकर हर स्थान पर जगत

ان منافقوں سے صدقات نہ لیتا تو محمدؐ منافق لوگوں سے زکوٰۃ خیرات وغیرہ نہیں لیتے تھے اس لئے آپ جس سے خیرات صدقات لیتے تھے وہ جان لیتا تھا کہ میں منافق نہیں ہوں اور وہ خوش ہوتا تھا یہ ہے نبی کی صلوٰۃ مومنوں پر جس طرح (۳۳:۴۳) میں اللہ کی صلوٰۃ بندوں پر یہ ہے کہ اللہ بندوں کو اندھیروں سے نکال کر روشنی میں لاتا ہے اس طرح (۱۴:۱) میں نبی کے بارے میں کہا گیا ہے۔

(۱۴:۱) الرا یہ ایک کتاب ہے کہ ہم نے اتاری ہے تمہاری طرف تم لوگوں کو اندھیروں سے نکال کر روشنی میں لاؤ ان کے رب کے حکم سے اس کی راہ دین کی طرف جو عزت والا اور سب خوبیوں والا ہے۔

(۱۴:۱) میں نبی کی صلوٰۃ بندوں پر یہ ہے کہ نبی بھی اللہ کے حکم سے کتاب کے ذریعہ بندوں کو بے دینی سے نکال کر دین دار بناتا ہے یہ رہی نبی کی صلوٰۃ یعنی زبانی وعملی صلوٰۃ کی مدد سے مومنوں کو کیا ملا۔

(۲۴:۵۵) (اللہ نے تاریکی سے نکال کر روشنی میں لانے کے بعد کہا) اللہ نے وعدہ دیا ان کو جو تم میں سے ایمان لایا اور اچھے کام کئے کہ ضرور انہیں زمین میں خلافت دے گا جیسی ان سے پہلوں کو دی اور ضرور ان کے اگلے خوف کو امن میں بدل دے گا۔ وہ میری ہی عبادت کریں میرا شریک کسی کو نہ ٹھہرائیں اور جو اس کے بعد نافرمانی کرے تو وہی بے حکم ہیں (۵۷:۹)

کتنے اچھے طریقے سے اللہ اور رسول اور ملائکہ کی صلوٰۃ مدد کھل کر سامنے آئی یعنی جو آدمی اندھیروں سے نکل کر روشنی میں آیا اس کام کو آیات الٰہی سے نبی نے کیا اس کے ذریعہ سے مومن بنے اور زمین میں اقتدار ملا۔ آخرت میں بھی کامیابی ملے گی اس طرح فرشتوں کی صلوٰۃ درود بھی ظاہر ہو رہی ہے کہ فرشتے بھی انسان کی مدد کرتے ہیں اللہ کے حکم سے اور انسانوں کی حفاظت پر بھی فرشتے اللہ نے مقرر کر رکھے ہیں۔ یہ انسانوں پر فرشتوں کی صلوٰۃ ہوئی (۴۱:۳۰،۳۱) فرشتوں کی صلوٰۃ مومنوں پر۔

(۲۴:۴۱) کیا تم دیکھتے نہیں ہو کہ اللہ کے لئے تسبیح (اپنا فریضہ ادا) کر رہے ہیں وہ سب جو آسمانوں اور زمین میں ہیں اور وہ پرندے جو پر پھیلائے اڑ رہے ہیں ہر ایک اپنی صلوٰۃ نماز اور تسبیح (نظم اور فریضہ) جانتا ہے اور یہ سب کچھ جو کرتے ہیں اللہ اس سے باخبر رہتا ہے۔

قرآن کہتا ہے کہ آسمانوں اور زمین کے سب کے سب جاندار اللہ کی تسبیح وصلوٰۃ کرتے ہیں اور وہ سب اپنی صلوٰۃ کو خوب جانتے ہیں۔ اب سوال پیدا ہوتا ہے کہ ان کی صلوٰۃ کیا ہے مقام غور ہے۔

سورج کی صلوٰۃ یہ ہے کہ وہ بدستور روشنی اور گرمی پہنچا رہا ہے اور فصلوں کو پکا رہا ہے اور اس سے بجلی بھی پیدا کی جا رہی ہے اور بھی بہت کام لئے جا رہے ہیں۔ سال کا حساب بھی اسی سے چل رہا ہے۔ سائنس داں جانتے ہیں۔

چاند کی تسبیح اور صلوٰۃ یہ ہے کہ وہ ٹھنڈی روشنی دیتا ہے سال اور مہینوں کا حساب بھی دیتا ہے اور مقرر کردہ منزلوں کے مطابق بدستور اپنے مدار پر چل رہا ہے۔ ہوائیں بادلوں کو اٹھا کر لاتیں ہیں اور میدانوں پر برسا دیتیں ہیں۔ ہواؤں سے اور بہت کام لئے جاتے ہیں۔ جو سب کو معلوم ہیں۔ پہاڑ اپنی اونچی چوٹیوں کے برف سے مانسون کو برف بنا کر بارش کرتے ہیں اور بارش کے پانی کو ذخیرہ کرکے اور سطح زمین کے نیچے نہریں چلا کر ہر جگہ اہل عالم کو پانی کی

वालों की आवश्यकता को पूरा करते है अर्थात वाटर वर्क्स का कार्य कर रहे है इत्यादि

पृथ्वी मानव का पालना है हर प्रकार का भोजन उपजा रही है, तैल, सोना, कोयला, लोहा इत्यादि सब निकल रहे है यह है बेजान का कर्तव्य सलात, जीवधारी की सलात क्या है?

गाए, भैंस की सलात है दूध की नहरें बहाना और मांस की आवश्यकता को पूरा करना और उनके बच्चे गाड़ी हल में चलते है घोड़े गधे की सलात दरूद यह है कि दूरी तैय करना और भार उठाकर कठिन स्थान पहुंचाना, ऊंट की सलात है रेगिस्तान में यात्रा करके अभीष्ट स्थान तक पहुंचाना, यह उनका दायित्व है जिन्हें कुरआन ने सलात कर्तव्य के नाम से बताकर इस बात का स्पष्टीकरण किया है कि सलात के कई अर्थों में से एक अर्थ मुख्य कर्तव्य का पूरा करना भी है

पक्षियों की सलात कर्तव्य सब देखते है कि कुछ पक्षी ऐसे भी होते है जो पंक्ति बद्ध होकर उड़ते है, उनका दृश्य देखने योग्य होता है अगली पंक्ति के बीच में एक पक्षी ऐसा होता है जिसके स्वर पर शेष सब पक्षी क्रिया करते है ऐसा प्रतीत होता है कि वह पक्षी दल का नेता है सब पक्षी उसकी ध्वनि पर चलते उड़ते और मुड़ते है,

कुरआन सामान्य जानदारों की सलात वर्णन करने के बाद पंक्ति बद्ध होकर उड़ने और दल के नेता के संकेतों पर चलने वाले पक्षियों की उपमा हमारे लिए मुख्य रूप से वर्णन करके उस वस्तु की सूचना देता है कि सलात का एक अर्थ यह भी है कि समुदाय का एक नेता हो और सम्पूर्ण समुदाय उसके पीछे चले अब नेता कौन होगा वह कुरआन की आयत (49:13) देखो,

(49:13) आस्था वालो! जो व्यक्ति तुम में से सबसे अधिक सदाचारी है ईश्वर के यहां सबसे अधिक सम्मानित है, दूसरी आयत में जिस्मानी और बुद्धि वाला होने की बात बताई है, तालूत व जालूत वाली आयत (2:247) में इन आयात के अन्तर्गत नेता के चुनाओं में भी कोई कठिनाई नही है, यहां तक सलात के चार प्रसंग समाप्त होते है हम देख चुके है कि सलात का अर्थ क्रमानुसार

(1) ईश्वर की अनुकम्पा कुरआन का प्रेषण अन्धकार से प्रकाश में लाना और पृथ्वी का राज्य प्रदान करना और परलोक की सफलता,

(2) ईश्वर के नियम का अनुकरण और उसका समर्थन व सहायता,

(3) प्रशंसा और शाबासी देना और मंगल प्रार्थना कामना करना,

(4) कर्तव्य उत्तरदायित्व को पूरा करना और नेता का अनुकरण, सलात और दरूद का अर्थ केवल मंगल कामना प्रार्थना करना ही नही अपितु जो कर्तव्य समर्पित किया गया है उसको पूर्ण करते हुए एक दूसरे की सहायता करना और ईश्वर अपने भक्तों पर अनुकम्पा अवतरित करता है और अपने फरिश्तों से उसकी सहायता करता है और सदाचारी बन्दों को पृथ्वी का राज्य प्रदान करता है अन्धकार से निकाल कर प्रकाश में लाता है और परलोक में सफलता देता है, अब प्रश्न पैदा होता है कि मुहम्मद स० पर आस्तिकों की दरूद व सलात क्या हो,

(33:56) निःसन्देह ईश्वर और उसके मलाईका नबी पर सलात दरूद भेजते है सहायता करते है ईमान वालों (नबी के लाए हुए नियम को) पूरी तरह स्वीकार करते हुए उस पर सलात और सलाम करो (मंगल प्रार्थना करो मुख्यतः धर्म की उन्नति में धर्म युद्ध करो) (4:65; 57:25)

ضرورت کو پورا کرتے ہیں یعنی واٹرورکس کا کام کر رہے ہیں وغیرہ۔

زمین آدمی کا گہوارہ ہے ہر طرح کی خوراک پیدا کر رہی ہے۔ تیل، سونا، کوئلہ، لوہا وغیرہ سب نکل رہے ہیں یہ ہے بے جان کی تسبیح اور صلوٰۃ جاندار کی صلوٰۃ کیا ہے؟

گائے بھینس کی صلوٰۃ ہے دودھ کی نہریں بہانا اور گوشت کی ضرورت کو پورا کرنا، اوران کے بچے گاڑی ہل میں چلتے ہیں گھوڑے گدھے کی صلوٰۃ درود یہ ہے کہ مسافت طے کرنا اور بوجھ اٹھا کر مشکل جگہ پہنچانا۔ اونٹ کی صلوٰۃ ہے ریگستان میں سفر کر کے منزل مقصود تک پہنچانا یہ ان کے فرائض منصبی ہیں جنہیں قرآن نے صلوٰۃ تسبیح کے نام سے بتا کر اس بات کی وضاحت کی ہے کہ صلوٰۃ کے متعدد معنوں میں سے ایک معنٰی فرض منصبی بھی ہے۔

پرندوں کی صلوٰۃ سب دیکھتے ہیں کہ کچھ پرندے ایسے بھی ہوتے ہیں جو قطار در قطار صفیں باندھ کر اڑتے ہیں ان کا منظر قابل دید ہوتا ہے اگلی قطار کے بیچ میں ایک پرندہ ایسا ہوتا ہے جس کی آواز پر باقی سب پرندے عمل کرتے ہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ وہ پرندہ قافلے کا سردار ہے تمام پرندے اس کی آواز پر چلتے اڑتے اور مڑتے ہیں۔

قرآن عام جانداروں کی صلوٰۃ بیان کرنے کے بعد صفیں باندھ کر اڑنے اور سالار قافلہ امیر جماعت کے اشاروں پر چلنے والے پرندوں کی مثال ہمارے لئے بطور خاص بیان کر کے اس چیز کی خبر دیتا ہے کہ صلوٰۃ کا ایک معنٰی یہ بھی ہے کہ ملت کا ایک امیر ہو اور ساری ملت اس کے پیچھے چلے اب امیر کون ہوگا وہ قرآن کی آیت (۴۹:۱۳) دیکھو

(۴۹:۱۳) ایمان والو! جو شخص تم میں سب سے زیادہ تقوٰی شعار ہے اللہ کے یہاں سب سے زیادہ مکرم ہے۔ دوسری آیت میں جسمانی طاقت اور عقل مند ہونے کی بات بتائی ہے تالوت وجالوت والی آیت میں (۲:۲۴۷) ان آیات کے تحت امیر منتخب کرنے میں بھی کوئی دقت نہیں ہے۔ یہاں تک صلوٰۃ کے چار عنوان ختم ہوئے۔ ہم دیکھ چکے ہیں کہ صلوٰۃ کے معنٰی بالترتیب۔

(۱) رحمت الٰہی بصورت نزول قرآن تاریکی سے روشنی میں لانا اور عطاء خلافت ارضی اور آخرت کی کامیابی۔

(۲) ضابطہ الٰہی کی اطاعت اور اس کی تائید ونصرت

(۳) تحسین وشاباشی دینا اور دعا خیر کرنا

(۴) فرض منصبی کی ادائیگی اور اطاعت امیر صلوٰۃ اور درود کا مطلب صرف دعائے خیر ہی نہیں بلکہ جو فرض سپرد کیا گیا ہے اس کو پورا کرتے ہوئے ایک دوسرے کی مدد کرنا۔ اور اللہ اپنے بندوں پر رحمت نازل کرتا ہے اور اپنے فرشتوں سے اس کی مدد کرتا ہے۔ اور نیک بندوں کو خلافت ارضی عطا کرتا ہے تاریکی سے نکال کر روشنی میں لاتا ہے اور آخرت میں کامیابی دیتا ہے۔ اب سوال پیدا ہوتا ہے کہ محمدؐ پر مومنوں کی درود وسلام کیا ہو۔

(۳۳:۵۶) بے شک اللہ اور اس کے ملائکہ نبی پر صلوٰۃ درود بھیجتے ہیں مدد کرتے ہیں ایمان والو! (نبی کے لائے ہوئے قانون کو) پوری طرح تسلیم کرتے ہوئے اس پر صلوٰۃ اور سلام کرو (دعاء رحمت کرو خاص طور سے دین کی ترقی میں جہاد کرو) (۴:۶۵؛ ۵۷:۲۵)

आयात के दोनों भागों में एक ही वस्तु का उल्लेख है सलात एक और सूचना है कि ईश्वर और मलाईका नबी पर सलात करते है और दूसरी ओर आदेश है कि ईमान वालो! तुम भी उस पर सलात करो स्वीकार करते हुए आयात के दोनों भागों में प्रकट अन्तर है यदि थोड़ा सा विचार किया जाये तो स्पष्ट हो जाएगा, पहले भाग में जहां ईश्वर और मलाईका (फरिश्तों) की सलात का उल्लेख है वहां तसलीमन नहीं है परन्तु दूसरे भाग में जहां आस्तिकों को नबी पर सलात का आदेश दिया गया है उसके साथ शब्द तसलीमन का प्रतिबन्ध लगा दिया गया है जिससे स्पष्ट प्रकट है कि आस्तिकों को नबी पर सलात का आदेश स्वीकारण के प्रतिबन्ध के साथ दिया गया है अर्थात नबी के लाए हुए जीवन व्यतीत करने के विधान को व्यवहारतः स्वीकार करना जिसमें स्वयं इस विधान पर कर्म करते हुए नबी की सहायता करना या इस धर्म की उन्नति में जान व माल को बिना किसी भय आशंका के लगा देना और नबी पर दरूद व सलाम अर्थात उनके लिए मंगल प्रार्थना कामना करना (57:25)

(7:157) अतः जो लोग नबी पर विश्वास लाए और उसका समर्थन और सहायता की और इस प्रकार कुरआन करीम का अनुकरण किया जो उसके साथ अर्थात उन पर अवतरित किया गया है वही लोग सफलता पाने वाले है (33:39)

(33:56) में शब्द सलात के साथ सल्लिमू तसलीमा आया है जो पहले भाग में नहीं है पहले भाग में शब्द युसल्लूना सलात है जो दूसरे भाग में भी है अब देखा जाए कि इस शब्द का क्या अर्थ है,

(4:65) ऐ मुहम्मद स0 तुम्हारा ईश्वर साक्षी है वह कभी आस्तिक नहीं हो सकते जब तक कि अपने आपसी मतभेद में वह तुम को निर्णय करने वाला न मान लें फिर जो कुछ तुम निर्णय कर दो उस पर मन में भी कोई तंगी अनुभूत न करें अपितु (युसल्लिमूतसलीमन) सर्वथा स्वीकार कर लें (6:151) बात बिल्कुल स्पष्ट हो गई अर्थात ईश्वर और फरिश्तों के लिए जो शब्द सल्लू है वह आस्तिकों के लिए भी है अर्थात सहायता और मंगल कामना परन्तु मुख्यतः जो शब्द दूसरे भाग में है उसका सम्बन्ध ईश्वर और फरिश्तों से नहीं अपितु केवल और केवल आस्तिकों से है अर्थात मुहम्मद के धर्म को व्यवहारतः स्वीकार करना बिना किसी आपत्ति के और कुरआन की शिक्षा प्रचलित करना आपका समर्थन और सहायता करना और यही है आस्तिकों की क्रियात्मक तसलीम स्वीकार करना जो केवल सलाम से पूरी नहीं हो सकती, मैं निवेदन कर रहा हूं कि आयात के दूसरे भाग में आस्तिकों को नबी पर सलात का आदेश ईश्वर के विधान के क्रियात्मक तसलीम के प्रतिबन्ध के साथ दिया गया है परन्तु पहले भाग में कोई प्रतिबन्ध विद्यमान नहीं,

बस यही अन्तर है नबी पर फरिश्तों व ईश्वर की सलात और नबी पर आस्तिकों की सलात में नबी पर ईश्वर और फरिश्ते सलाम भेजते है और उसकी सहायता करते है, आस्तिकों को भी यही आदेश है कि नबी पर सलाम भेजना भी अनिवार्य है और धर्म के निर्णयों को स्वीकार करना और धर्म की सहायता करना जैसा कि ईश्वर ने आने वाली जातियों पर अनिवार्य कर दिया है कि वह सब ईशदूतों पर सलाम भेजा करें (37:79,109,120,130,181) सलामुन अल्लमुरसलीन,

कुरआन से सिद्ध हुआ कि जब रसूल का नाम नामी इस्मे गिरामी मुख पर आए या कान में पड़े तो सलाम कहा जाए अन्त में सलात का अर्थ संक्षिप्त में लिख दिया जाये,

ईश्वर की ओर से नबी पर सलात का अर्थ यह है कि आप पर अत्यन्त कृपालु है आपकी प्रशंसा करता है आपके कार्य में अधिकता देता है आपका नाम उच्च करता है आप पर अपनी अनुकम्पाओं की

آیت کے دونوں حصوں میں ایک ہی چیز مذکور ہے صلوٰۃ ایک طرف خبر ہے کہ اللہ اور ملائکہ نبی پر صلوٰۃ کرتے ہیں۔ اور دوسری طرف حکم ہے کہ ایمان والو! تم بھی اس پر صلوٰۃ کرو تسلیم کرتے ہوئے آیت کے دونوں حصوں میں نمایاں فرق ہے۔ اگر معمولی سا غور کیا جائے تو واضح ہو جائے گا۔ پہلے حصے میں جہاں اللہ اور ملائکہ کی صلوٰۃ کا ذکر ہے وہاں تسلیماً نہیں ہے۔ مگر دوسرے حصے میں جہاں مومنوں کو نبی پر صلوٰۃ کا حکم دیا گیا ہے اس کے ساتھ لفظ تسلیماً کی قید لگا دی گئی ہے۔ جس سے صاف ظاہر ہے کہ مومنوں کو نبی کے لائے ہوئے ضابطہ حیات کو عملاً تسلیم کرنا جس میں خود اس ضابطہ پر عمل کرتے ہوئے نبی کی مدد کرنا یا اس دین کی ترقی میں جان و مال کو بغیر کسی خوف وخطر کے لگا دینا اور نبی پر درود وسلام یعنی ان کے لئے دعائے خیر کرنا (۲۵:۵۷)

(۱۵۷:۷) پس جو لوگ نبی پر ایمان لائے اور اس کی تائید اور مدد کی اور اس نور قرآن کریم کی پیروی کی جو اس کے ساتھ یعنی ان پر نازل کیا گیا ہے وہی لوگ فلاح پانے والے ہیں (۳۹:۳۳)

(۵۶:۳۳) میں لفظ صلوٰۃ کے ساتھ لفظ سلموا تسلیماً آیا ہے پہلے حصہ میں نہیں ہے پہلے حصہ میں لفظ یُصَلُّون ہے جو دوسرے حصے میں بھی ہے۔ اب دیکھا جائے کہ اس لفظ کے کیا معنی ہیں۔

(۶۵:۴) اے محمد تمہارا رب گواہ ہے وہ کبھی مومن نہیں ہو سکتے جب تک کہ اپنے باہمی اختلافات میں وہ تم کو فیصلہ کرنے والا نہ مان لیں پھر جو کچھ تم فیصلہ کر دو اس پر دل میں بھی کوئی تنگی محسوس نہ کریں بلکہ (یسلموا تسلما) سر بسر تسلیم کر لیں (۱۵۱:۶)

بات بالکل صاف ہو گئی یعنی اللہ اور فرشتوں کے لئے جو لفظ صلوا ہے وہ مومنوں کے لئے بھی ہے یعنی مدد اور دعائے خیر لیکن خاص طور سے جو لفظ دوسرے حصہ میں ہے اس کا واسطہ اللہ اور فرشتوں سے نہیں بلکہ صرف اور صرف مومنوں سے ہے یعنی محمدؐ کے دین کو عملاً تسلیم کرنا بغیر کسی چوں چرا اس کے اور قرآن کی تعلیم جاری کرنا آپ کی تائید اور مدد کرنا اور یہی ہے مومنوں کی عملی تسلیم جو صرف سلام سے پوری نہیں ہو سکتی۔ میں عرض کر رہا ہوں کہ آیت کے دوسرے حصے میں مومنوں کو نبی پر صلوٰۃ کا حکم بقید عملی تسلیم ضابطہ الٰہی دیا گیا ہے لیکن پہلے حصہ میں کوئی قید موجود نہیں۔

بس یہی فرق ہے نبی پر ملائکہ واللہ کی صلوٰۃ اور نبی پر مومنوں کی صلوٰۃ میں۔ نبی پر اللہ اور ملائکہ سلام بھیجتے ہیں اور اس کی مدد کرتے ہیں مومنوں کو بھی حکم ہے کہ نبی پر سلام بھیجنا بھی لازم ہے اور دین کے فیصلوں کو تسلیم کرنا اور دین کی مدد کرنا جیسا کہ اللہ نے آنے والی قوموں پر فرض کر دیا ہے کہ وہ جملہ انبیاء کرام پر سلام بھیجا کریں (۷۹:۳۷، ۱۰۹، ۱۲۰، ۱۳۰، ۱۸۱) [سلامٌ علی المرسلین]

قرآن سے ثابت ہوا کہ جب رسول کا نام نامی اسم گرامی زبان پر آئے یا کان میں پڑے تو سلام کہا جائے آخیر میں صلوٰۃ کا مطلب مختصر لکھ دیا جائے

اللہ کی طرف سے نبی پر صلوٰۃ کا مطلب یہ ہے کہ آپ پر وہ بے حد مہربان ہے آپ کی تعریف فرماتا ہے آپ کے کام میں برکت دیتا ہے آپ کا نام بلند کرتا ہے آپ پر اپنی رحمتوں کی بارش کرتا ہے آپ کی مدد کرتا ہے فرشتوں اور مومنوں کو بھی حکم دیتا ہے کہ وہ آپ کی مدد کریں اور دعا و سلام کریں آپؐ پر اپنا کلام نازل کیا جو خیر کثیر ہے

वर्षा करता है आपकी सहायता करता है, फरिश्तों और आस्तिकों को आदेश देता है कि वह आपकी सहायता करें और प्रार्थना व सलाम करें आप स0 पर अपना कथन वाणी अवतरित किया जो प्रचुर पुण्य है,

फरिश्तों की ओर से आप पर सलात का अर्थात यह है कि वह आपसे अन्तिम सीमा का प्रेम रखते हैं, और आपके लिए ईश्वर से दुआ करते हैं कि वह आपको अधिक से अधिक उच्च पद प्रदान करें और शत्रुओं के सम्मुख आपको सफल करने के लिए ईश्वर के आदेश से आपकी सहायता करें,

आस्तिकों की सलात के विषय में ऊपर लिखा जा चुका है परन्तु जिस प्रकार इस युग में हमारे लिए सलात व दरूद की विधि प्रचलित की गई है आयत के भाव से हट कर है यदि मान लिया जाए तो फिर ईश्वर और फरिश्तों की सलात भी केवल वही है कि वह भी माला लेकर जैसे हम माला पर दरूद पढ़ते है वह भी ऐसे ही पढ़ते हैं? विचार करें तो ऐसा नहीं अपितु सत्य यही है कि क्रियात्मक रीति से कार्य किया जाए जो ईश्वर और फरिश्तें करते हैं और जिसका आस्तिकों के लिए आदेश है बस यही नबी पर दरूद व सलाम है और मंगल कामना प्रार्थना भी सलामून अल्लमुरसलीन,

आयत में आल का कोई ऐसा शब्द नहीं है कि आल पर भी दरूद सलाम करना है परन्तु आज की दरूद व सलाम में आल को भी सम्मिलित किया गया है जबकि नबी की कोई सन्तान नहीं रही अपितु हर आस्तिक अहले बैत है उन पर यदि सलाम भेजा जाए तो दूसरी रीति से अर्थात मंगल कामना प्रार्थना,

ملائکہ کی طرف سے آپ پر صلوٰۃ کا مطلب یہ ہے کہ وہ آپ سے نہایت درجہ کی محبت رکھتے ہیں اور آپ کے حق میں اللہ سے دعا کرتے ہیں کہ وہ آپ کو زیادہ سے زیادہ بلند درجے عطا کرے اور دشمنوں کے مقابلہ میں آپ کو کامیاب کرنے کے لئے بحکم الٰہی آپ کی مدد کرتے ہیں۔

اہل ایمان کی صلوٰۃ کے بارے میں اوپر لکھا جا چکا ہے مگر جس طرح اس زمانے میں ہمارے لئے صلوٰۃ و درود کا طریقہ رائج کیا گیا ہے وہ آیت کے مفہوم سے ہٹ کر ہے اگر مان لیا جائے تو پھر اللہ اور فرشتوں کی صلوٰۃ بھی صرف یہی ہے کہ وہ بھی تسبیح لے کر جیسے ہم تسبیح پر درود پڑھتے ہیں وہ بھی ایسے ہی پڑھتے ہیں؟ غور کرو ایسا نہیں ہے بلکہ حقیقت یہی ہے کہ عملی طریقے سے کام کیا جائے جو اللہ اور فرشتے کرتے ہیں اور جس کا مومنوں کے لئے حکم ہے بس یہی نبی پر درود سلام ہے اور دعا خیر بھی سلام علی المرسلین۔

آیت میں آل کا کوئی ایسا لفظ نہیں ہے کہ آل پر بھی درود و سلام کرنا ہے مگر آج کی درود و سلام میں آل کو بھی شامل کیا گیا ہے جب کہ نبی کی کوئی اولاد نہیں رہی بلکہ ہر مومن اہل بیت ہے ان پر اگر سلام بھیجا جائے تو دوسرے طریقے سے یعنی دعائے خیر۔

जिस दिन आस्तिक ईश्वर से मिलेंगे उनका उपहार (ईश्वर की ओर से) सलाम होगा और उसने उनके लिए बड़ा फल तैयार कर रखा है (44)

جس روز ایمان والے اللہ سے ملیں گے ان کا تحفہ (اللہ کی طرف سے) سلام ہوگا اور اس نے ان کے لئے بڑا ثواب تیار کر رکھا ہے (۴۴)

ऐ मुहम्मद स0 हमने तुमको भेजा है आदर्श बना कर और शुभ सूचना सुनाने वाला और डराने वाला (45)

اے محمدؐ ہم نے تم کو بھیجا ہے نمونہ بنا کر اور خوشخبری سنانے والا اور ڈرانے والا (۴۵)

(ईश्वर के आदेश से लोगों को) उसकी ओर बुलाने वाले और (हिदायत का) चमकता हुआ दीप बना कर भेजा है (ताकि इन्सानों को कुफ्र के अन्धकार से निकल कर ईमान के प्रकाश में ले आओ) (46)

(اللہ کے حکم سے لوگوں کو) اس کی طرف بلانے والا اور (ہدایت کا) چمکتا ہوا چراغ بنا کر بھیجا ہے (تا کہ انسانوں کو کفر کی تاریکی سے نکال کر ایمان کی روشنی میں لے آؤ) (۴۶)

और धर्म वालों को शुभ सूचना सूना दो कि उन पर ईश्वर की बड़ी कृपा है (इसलिए वह कष्टों में न घबराएं) (47)

اور ایمان والوں کو خوشخبری سنا دو کہ ان پر اللہ کا بڑا فضل ہے (اس لئے وہ پریشانیوں سے نہ گھبرائیں) (۴۷)

और काफिरों और कपटियों की बातों को न मानना और उनके कष्ट देने की चिन्ता न करना और हर दशा में ईश्वर पर भरोसा रखना और ईश्वर ही सहायक प्रयाप्त है (48) {7:2, 5:44-67, 15:94 -95, 21:130}

اور کافروں اور منافقوں کی باتوں کو نہ ماننا اور ان کے تکلیف دینے کی پروا نہ کرنا اور ہر حال میں اللہ پر بھروسہ رکھنا اور اللہ ہی کارساز کافی ہے (۴۸) [۷:۲، ۵:۴۴،۶۷، ۱۵:۹۴،۹۵، ۲۱:۱۳۰]

आस्तिकों! जब तुम आस्तिक स्त्रीयों से विवाह करके उनको हाथ लगाने से पहले तलाक दे दो तो तुमको कुछ अधिकार नहीं कि उनसे इद्दत पूरी कराओ परन्तु तुम्हारे इस कर्म से उनको पीड़ा पहुंची है उसके बदले में तुम उन्हें भरण पोषण देना और सम्मान के साथ विदा कर दो (49) {2:236,237,241}

مومنو! جب تم مومن عورتوں سے نکاح کر کے ان کو ہاتھ لگانے سے پہلے طلاق دے دو تو تم کو کچھ اختیار نہیں کہ ان سے عدت پوری کراؤ لیکن تمہارے اس عمل سے ان کو جو تکلیف پہنچی ہے اس کے بدلے میں تم نہیں نان نفقہ دینا اور عزت کے ساتھ رخصت کر دو (۴۹) [۲:۲۳۶،۲۳۷،۲۴۱]

ऐ नबी! हमने तुम्हारे लिए तुम्हारी वह पत्नीयां जिनको तुम ने मेहर दे दिये हैं वैध कर दी हैं और तुम्हारी वह मामलाकत यमीन जो ईश्वर ने तुम को दिला दी है विवाह करो और तुम्हारे चचा और फूफियों की पुत्रियां और तुम्हारे मामू और खालाओं की पुत्रियां जो तुम्हारे साथ प्लायन करके चली आई है, (यह भी सब वैध है उनसे विवाह कर सकते हो)

اے نبی! ہم نے تمہارے لئے تمہاری وہ بیویاں جن کو تم نے مہر دے دئے ہیں حلال کر دی ہیں اور تمہاری وہ مامکلت یمین جو اللہ نے تم کو دلا دی ہیں نکاح کرو اور تمہارے چچا اور پھوپھیوں کی بیٹیاں اور تمہارے ماموؤں اور خالاؤں کی بیٹیاں جو تمہارے ساتھ ہجرت کر کے چلی آئی ہیں (یہ بھی سب حلال ہیں ان سے نکاح کر سکتے ہو)

परन्तु प्लायन करने वालियों की परीक्षा कर लेना (60:10) कि आस्तिक हैं या नहीं और उन्होंने पापों से भी प्लायन कर लिया है या नहीं अर्थात पापों को छोड़ दिया या नहीं (क्योंकि आपकी पत्नी कोई काफिर या कपटि नहीं होनी चाहिए) और केवल आपके लिए वह आस्तिक स्त्री भी वैध है जिसने अपने आपको नबी के लिए दान कर दिया हो (अर्थात बिना मेहर लिए नबी की स्त्री बनना चाहे) यदि नबी भी उसको विवाह में लेना चाहे. यह दान वाली अनुमति केवल तुम्हारे लिए है, और मुसलमानों को नहीं, हमने उनकी पत्नीयों और मामलाकत ऐमान के विषय में जो आदेश निश्चित कर दिया है उसे हम जानते हैं और तुम्हारे ऊपर भी (यह एक से आदेश इसलिए हैं) ताकि तुम पर किसी प्रकार का आरोप न रहे (अर्थात कोई आरोप लगाए कि नबी के लिए यह छूट क्यों और हमारे लिए प्रतिबन्ध क्यों, अतः केवल दान के अतिरिक्त सबको एक ही नियम हैं) और ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (50)

مگر ہجرت کرنے والیوں کا امتحان کر لینا (۶۰:۱۰) کہ وہ مومن ہیں یا نہیں اور انہوں نے گناہوں سے بھی ہجرت کر لی ہے یا نہیں یعنی گناہوں کو چھوڑ دیا یا نہیں (کیونکہ آپ کی بیوی میں کوئی کافر اور منافق نہیں ہونی چاہیے) اور صرف آپ کے لئے وہ مومنہ عورت بھی حلال ہے جس نے اپنے آپ کو نبی کے لئے ہبہ کر دیا ہو (یعنی بغیر مہر لئے نبی کی بیوی بنا چاہے) بشرطیکہ نبی بھی اس کو نکاح میں لینا چاہے. یہ ہبہ والی اجازت صرف تمہارے لئے ہے اور مسلمانوں کو نہیں ہم نے ان کی بیویوں اور مااملکت ایمان کے بارے میں جو حکم مقرر کر دیا ہے اسے ہم جانتے ہیں اور تمہارے اوپر بھی (یہ خصوصی احکام اس لئے دئے ہیں کہ آپ کو معاملات کے سلجھانے میں دقت نہ ہو اور یہ ایک سے حکم اس لئے ہیں) تا کہ تم پر کسی طرح کا الزام نہ رہے (یعنی کوئی الزام لگائے کہ نبی کے لئے یہ چھوٹ کیوں اور ہمارے لئے پابندی کیوں. اس لئے صرف ہبہ کے علاوہ سب کو ایک ہی قانون ہے) اور اللہ بخشنے والا مہربان ہے (۵۰)

नोट- इस आयत का अनुचित अनुवाद करके मुसलमानों ने नबी के लिए अधिक पत्नीयों की समाई निकाल ली है, और अनुचरियों को भी बिना विवाह के रखने की अनुमति मानी और अपने लिए भी समाई निकाल ली, जबकि इस आयत में न नबी को छूट है और न ही बिना विवाह के अनुचरि से मैथुन की अनुमति है इस प्रकार का विश्वास रखना नबी पर आरोप है (4:25;12:38)

نوٹ:۔اس آیت کا غلط ترجمہ کر کے مسلمانوں نے نبی کے لئے زیادہ نکاح کی گنجائش نکال لی ہے اور کنیزوں کو بھی بغیر نکاح رکھنے کی اجازت مانی اور اپنے لئے بھی گنجائش نکال لی. جب کہ اس آیت میں نہ نبی کو چھوٹ ہے اور نہ ہی بغیر نکاح کے کنیز سے مباشرت کی گنجائش ہے اس طرح کا عقیدہ رکھنا نبی پر الزام ہے (۴:۲۵، ۱۲:۳۸)

आपको यह भी विशेष अधिकार है कि हर पत्नी को अलग अलग भवन का प्रबन्ध कर दो और जिसे चाहो आप उस भवन में रखें जिसमें आप रहते हैं और जब आप दूसरी को बुलाएंगे तो पहली को उसके भवन में भेजना पड़ेगा, अलग करने और दूसरी को बुलाने में आप पर कोई आरोप नहीं और यह नियमानुसार नम्बर निश्चित करने की अनुमति इसलिए है कि उनकी आंखें ठंडी रहें और वह शोकाकुल न हों और जो कुछ भी तुम उनको दो उसे लेकर सब प्रसन्न रहें और जो कुछ तुम्हारे हृदयों में है ईश्वर उसे जानता है और सहनशील है (51)

اور آپ کو یہ بھی خصوصی اختیار ہے کہ ہر بیوی کو الگ الگ حجرے کا انتظام کر دو اور جسے چاہو آپ اس حجرے میں رکھیں جس میں آپ رہتے ہیں اور جب آپ دوسری کو بلائیں گے تو پہلی کو حجرے سے بھیجنا پڑے گا الگ کرنے اور دوسری کو بلانے میں آپ پر کوئی الزام نہیں اور یہ قاعدے کے مطابق نمبر مقرر کرنے کی اجازت اس لئے ہے کہ ان کی آنکھیں ٹھنڈی رہیں اور وہ رنجیدہ نہ ہوں اور جو کچھ بھی تم ان کو دو اسے لے کر سب خوش رہیں. اور جو کچھ تمہارے دلوں میں ہے اللہ اسے جانتا ہے اور بردبار ہے (۵۱)

नोट- मुहम्मद रोज एक ही बिस्तर और एक ही भवन में सोते थे अतः ऐसी स्थिति में यह आवश्यक था कि आप इस प्रकार का क्रम बान्धते जो नियमानुसार हो और किसी को कष्ट न हो.

نوٹ:۔محمدؐ روز ایک ہی بستر اور ایک ہی حجرے میں سوتے تھے. اس لئے ایسی حالت میں یہ ضروری تھا کہ آپ اس طرح کا نمبر باندھتے جو قاعدے کے مطابق ہو اور کسی کو تکلیف نہ ہو.

ऐ रसूल! इनके अतिरिक्त और स्त्रियां तुम को वैध नहीं और न यह कि तुम इन पत्नीयों को छोड़कर और पत्नीयां कर लो चाहे उनका रूप आपको कैसा ही अच्छा लगे और विशेषतः अब आपके लिए इसके बाद मामलाकत भी वैध नहीं कि उनसे विवाह करो (क्योंकि प्रतिबन्ध सब पर ही है इस समय जो पत्नीयां हैं बस वही रहनी हैं) और ईश्वर हर वस्तु पर दृष्टि रखता है (52)

اے رسول! ان کے علاوہ اور عورتیں تم کو جائز نہیں اور نہ یہ کہ تم ان بیویوں کو چھوڑ کر اور بیویاں کر لو خواہ ان کا حسن آپ کو کیسا ہی اچھا لگے. اور خصوصاً اب آپ کے لئے اس کے بعد مااملکت بھی حلال نہیں کہ ان سے نکاح کرو (کیونکہ پابندی سب پر ہی ہے اس وقت جو بیویاں ہیں بس وہی رہنی ہیں) اور اللہ ہر چیز پر نگاہ رکھتا ہے (۵۲)

मुसलमानो! नबी के घरों में बिना आज्ञा न जाया करो, हां, यदि तुम्हें खाने के लिए अनुमति दी जाए और उसके पकने की प्रतीक्षा भी न करना पड़े परन्तु जब तुम्हारा निमंत्रण किया जाये तो जाओ और जब खाना खा चुको तो चल दो और बातों में

مسلمانو! نبی کے گھروں میں بلا اجازت نہ جایا کرو. ہاں اگر تمہیں کھانے کے لئے اجازت دی جائے اور اس کے پکنے کا انتظار بھی نہ کرنا پڑے لیکن جب تمہاری دعوت کی جائے تو جاؤ. اور جب کھانا کھا چکو تو چل دو اور باتوں میں

जी लगाकर न बैठ रहना तुम्हारे इस कर्म से रसूल को पीड़ा होगी, परन्तु वह लज्जा की वजह से कुछ नही कहेंगे, परन्तु ईश्वर सच्ची बात कहने से नही लज्जा करता और जब तुम्हें रसूल की पत्नीयों से कुछ मांगना हो तो आवरण के पीछे से मांगों यह तुम्हारे और उनके (अर्थात दोनों के) हृदयों के लिए पवित्रता की बात है और तुम्हें यह बात सज्जा नही देती कि तुम अपने कर्मों से ईश्वर के ईशदूत को कष्ट दो और न यह कि उनकी पत्नीयों से कभी विवाह करो निःसन्देह यह ईश्वर के निकट बड़ा पाप है (53)

جی لگا کر نہ بیٹھ رہنا تمہاری اس حرکت سے رسول کو تکلیف ہوگی۔مگر وہ شرم کی وجہ سے کچھ نہیں کہیں گے لیکن اللہ سچی بات کہنے سے نہیں شرماتا اور جب تمہیں رسول کی بیویوں سے کچھ مانگنا ہو تو پردے کے پیچھے سے مانگو یہ تمہارے اور ان کے (یعنی دونوں کے) دلوں کے لئے پاکیزگی کی بات ہے اور تمہیں یہ بات زیب نہیں دیتی کہ تم اپنی حرکتوں سے اللہ کے رسول کو تکلیف دو اور نہ یہ کہ ان کی بیویوں سے کبھی نکاح کرو۔بےشک یہ اللہ کے نزدیک بڑا گناہ ہے (۵۳)

यदि तुम कोई बात प्रकट करो या छुपाओ ईश्वर को हर बात का ज्ञान है (54)

अगر تم کوئی بات ظاہر کرو یا چھپاؤ اللہ کو ہر بات کا علم ہے (۵۴)

नबी की पत्नीयों पर इस बात में कोई पाप नही कि उनके घरों में उनके पिता उनके पुत्र उनके भाई उनके भतीजे उनके भान्जे उनकी प्रकार की स्त्रियां और उनकी कर्मचारी स्त्रियां आएं जाएं (नबी की पत्नीयों) ईश्वर से डरती रहो ईश्वर हर वस्तु से अवगत है (55)

نبی کی بیویوں پر اس بات میں کوئی گناہ نہیں کہ ان کے گھروں میں ان کے باپ ان کے بیٹے ان کے بھائی ان کے بھتیجے ان کے بھانجے ان کی قسم کی عورتیں اور ان کی ملازم عورتیں آئیں جائیں (نبی کی بیویو!) اللہ سے ڈرتی رہو اللہ ہر چیز سے واقف ہے (۵۵)

सत्य यह है कि ईश्वर ईशदूत की सहायता करता है और अनुकम्पा करता है और फरिश्ते भी नबी की सहायता करते है और प्रार्थना करते है कि ऐ ईश्वर नबी की सहायता कर अनुकम्पा प्रेषित कर अतः ऐ ईमान वालों तुम भी ईशदूत पर सलाम (कल्याण) प्रेषित करो और ईश्वर से प्रार्थना करो कि ऐ ईश्वर नबी पर अनुकम्पा प्रेषित कर और ऐ विश्वास वालो उसके लाए हुए धर्म को स्वीकार करो और इसकी उन्नति के लिए परिश्रम प्रयास करो और जैसा करना है यह है सलात (56) {4:65;57:25; 33:22;16:81;6:151; 2:157}

حقیقت یہ ہے کہ اللہ نبی کی مدد کرتا ہے اور رحمت بھیجتا ہے اور فرشتے بھی نبی کی مدد کرتے ہیں اور دعا کرتے ہیں کہ اے اللہ نبی کی مدد کر اور رحمت بھیج اس لئے اے ایمان والو تم بھی نبی پر سلام بھیجو اور اللہ سے دعا کرو کہ اے اللہ نبی پر رحمت نازل کر اور اے ایمان والو اس کے لائے ہوئے دین کو تسلیم کرو اور اس کی ترقی کے لئے جدوجہد کرو جیسی کرنی ہے یہ ہے صلوٰۃ (۵۶) [۴:۶۵؛ ۵۷:۲۵؛ ۳۳:۲۲؛ ۱۶:۸۱؛ ۶:۱۵۱؛ ۲:۱۵۷]

और जो लोग ईश्वर और उसके रसूल को पीड़ा पहुंचाऐ उन पर ईश्वर दुनिया और परलोक में धिक्कार करता है और उनके लिए उसने हीन करने वाला कष्ट तैयार कर रखा है (57)

اور جو لوگ اللہ اور اس کے رسول کو رنج پہنچائیں ان پر اللہ دنیا اور آخرت میں لعنت کرتا ہے اور ان کے لئے اس نے ذلیل کرنے والا عذاب تیار کر رکھا ہے (۵۷)

जो लोग आस्तिक पुरुषों और आस्तिक स्त्रियों को ऐसे कर्म के आरोप से बदनाम करेंगे जो उन्होंने न किया हो तो वह दोषा रोपण और स्पष्ट पाप का भार अपने सिरे पर रखलेंगे (58) {24:11}

جو لوگ مومن مردوں اور مومن عورتوں کو ایسے کام کی تہمت سے بدنام کریں گے جو انہوں نے نہ کیا ہو تو وہ بہتان اور صریح گناہ کا بوجھ اپنے سر پر رکھ لیں گے (۵۸) [۲۴:۱۱]

ऐ नबी अपनी पत्नीयों और पुत्रियों और धर्म वालों की स्त्रीयों से कह दो जब वह बाहर निकले तो अपने ऊपर अपनी चादरों के पल्लू लटका लिया करें, यह अधिक उचित विधि है ताकि वह पहचान ली जाए सताई न जाऐं ईश्वर क्षमावान और कृपालु है (59)

اے نبی اپنی بیویوں اور بیٹیوں اور اہل ایمان کی عورتوں سے کہدو کہ جب وہ باہر نکلیں تو اپنے اوپر اپنی چادروں کے پلو لٹکا لیا کریں یہ زیادہ مناسب طریقہ ہے تا کہ وہ پہچان لی جائیں ستائی نہ جائیں اللہ غفور اور رحیم ہے (۵۹)

यदि कपटि और वह लोग जिनके मनों में रोग है और जो मदीने में बुरी बुरी सूचनाऐं उड़ाया करते है यदि अपनी गतिविधि से न रुके तो हम आपको उनके विरुद्ध कार्यवाही करने पर तत्पर कर देंगे फिर वह कठिनता ही से तुम्हारे पड़ोस में रह सकते है (60) {33:58;24:11}

اگر منافق اور وہ لوگ جن کے دلوں میں مرض ہے اور جو مدینے میں بُری بُری خبریں اڑایا کرتے ہیں اگر اپنی حرکتوں سے باز نہ آئے تو ہم تم کو ان کے خلاف قدم اٹھانے پر آمادہ کر دیں گے پھر وہ مشکل سے ہی تمہارے پڑوس میں رہ سکتے ہیں (۶۰) [۳۳:۵۸؛ ۲۴:۱۱]

वह भी फटकारे हुए जहां कहीं पाऐ जाऐंगे पकड़े

وہ بھی پھٹکارے ہوئے جہاں کہیں پائے جائیں گے

जाएँगे और जान से मार दिये जाएँगे (61)
जो लोग पहले हो चुके हैं उनके विषय में भी ईश्वर का यही नियम रहा है और तुम ईश्वर के नियम में किसी प्रकार का परिवर्तन न पाओगे (बुराई का परिणाम बुरा होता है) (62)
(ऐ रसूल!) लोग आपसे क़यामत के विषय में ज्ञात करेंगे कह देना कि उसका ज्ञान ईश्वर ही को है, और तुम्हें क्या ज्ञात है कदाचित क़यामत निकट ही आ लगी हो (63)
निःसन्देह ईश्वर ने नास्तिकों पर धिक्कार की है और उनके लिए नर्क की आग तैयार कर रखी है (64)
उसमें सदैव रहेंगे वहां न कोई मित्र पाएँगे और न सहायक (65)
जिस दिन उनके मुख आग पर उल्टे पल्टे जाएँगे तो वह लोग कहेंगे यदि हमने ईश्वर और उसके रसूल का अनुकरण किया होता (66)
और कहेंगे ऐ हमारे रब हमने अपने नेताओं और बड़ों का कहा माना तो उन्होंने हमको मार्ग से भटका दिया (67)
ऐ हमारे रब उनको दो गुना दण्ड दे और उन पर बड़ी धिक्कार कर (68)
ऐ लोगो! जो विश्वास लाए हो उन लोगों की भांति न हो जाना जिन्होंने मूसा को (भांति-भांति की मांग करके व्याकुल किया था) कष्ट दिया था और आरोप लगाए थे फिर ईश्वर ने मूसा की सहायता की उन बातों में जो वह कहते थे और वह ईश्वर के समीप सम्मान वाले थे (69)

नोट- बनी इसराईल महामना मूसा के बताए हुए मार्ग पर न चलते हुए अपनी मांग करते थे और उनको विवश करना चाहते थे कि वह ऐसा करें परन्तु उन्होंने उन मांगों पर व्यवहार न किया अपितु जो ईश्वर ने आदेश दिया उसे किया इस बात को याद दिलाकर मुसलमानों से ईश्वर कहता है कि ऐ मुसलमानो! ऐसी अनुचित मांग न करना जैसे बनी इसराईल ने की ईश्वर को जो नियम देने हैं वह अपने आप देगा जिनकी आवश्यकता है अनावश्यक नियम देने का प्रश्न ही नहीं अतः तुम अपनी ओर से कोई प्रश्न न करना, बस नबी के बताए हुए नियम पर व्यवहार करते चले जाओ यही तुम्हारे लिए मंगल है {2:61;5:24;7:138}

आस्तिको! ईश्वर की अवज्ञा करने से डरा करो और बात सीधी किया करो (70)
(इस व्यवहार पर) वह तुम्हारे सब कार्य ठीक कर देगा और तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और जो व्यक्ति ईश्वर और उसके रसूल की आज्ञाकारी करेगा निःसन्देह बड़ी सफलता प्राप्त होगी (71)
हमने अपने जीवन नियम (धरोहर) को पृथ्वी, आकाश और पर्वतों पर प्रस्तुत किया, उन्होंने इसको स्वीकार किया, इसमें कपट करने से इनकार किया इनकार करने से वे डर गये, परन्तु जब यही नियम

پکڑے جائیں گے اور جان سے مار دئے جائیں گے (۶۱)
جو لوگ پہلے گزر چکے ہیں ان کے بارے میں بھی اللہ کا یہی قانون رہا ہے اور تم اللہ کے قانون میں کسی طرح کی تبدیلی نہ پاؤ گے (برائی کا انجام برا ہوتا ہے) (۶۲)
(اے رسول!) لوگ آپ سے قیامت کے بارے میں دریافت کریں گے کہہ دینا کہ اس کا علم اللہ ہی کو ہے اور تمہیں کیا معلوم ہے شائد قیامت قریب ہی آ گئی ہو (۶۳)
[۷:۱۸۷: ۷۹:۴۲،۴۴]
بے شک اللہ نے کافروں پر لعنت کی ہے اور ان کے لئے (دوزخ کی) آگ تیار کر رکھی ہے (۶۴)
اس میں ہمیشہ رہیں گے وہاں نہ کوئی دوست پائیں گے اور نہ مددگار (۶۵)
جس روز ان کے چہرے آگ پر الٹے پلٹے جائیں گے تو وہ لوگ کہیں گے اے کاش ہم نے اللہ اور اس کے رسول کی اطاعت کی ہوتی (۶۶)
اور کہیں گے اے ہمارے رب ہم نے اپنے سرداروں اور بڑوں کا کہا مانا تو انہوں نے ہم کو رستے سے گمراہ کر دیا (۶۷)
اے ہمارے رب ان کو دُگنا عذاب دے اور ان پر بڑی لعنت کر (۶۸)
اے لوگو! جو ایمان لائے ہو ان لوگوں کی طرح نہ ہو جانا جنہوں نے موسیٰ کو (طرح طرح کے مطالبہ کر کے پریشان کیا تھا) تکلیف دی تھی اور الزام لگائے تھے پھر اللہ نے موسیٰ کی مدد کی ان باتوں میں جو وہ کہتے تھے اور وہ اللہ کے نزدیک باعزت تھے (۶۹)

نوٹ:۔ بنی اسرائیل حضرت موسیٰ کے بتائے ہوئے رستے پر نہ چلتے ہوئے اپنے مطالبے کرتے تھے اور ان کو مجبور کرنا چاہتے تھے کہ وہ ایسا کریں مگر انہوں نے ان کے مطالبوں پر عمل نہ کیا بلکہ جو اللہ نے حکم دیا اسے کیا اس بات کو یاد دلا کر مسلمانوں سے اللہ کہتا ہے کہ اے مسلمانو! تم ایسے غلط مطالبے نہ کرنا جیسے بنی اسرائیل نے کئے اللہ کو جو قانون دینے ہیں وہ اپنے آپ دے گا جن کی ضرورت ہے بے ضرورت کے قانون دینے کا سوال ہی نہیں۔ اس لئے تم اپنی طرف سے کوئی سوال نہ کرنا۔ بس نبی کے بتائے ہوئے قانون پر عمل کرتے چلے جاؤ یہی تمہارے لئے بھلائی ہے [۲:۶۱: ۵:۲۴: ۷:۱۳۸]

مومنو! اللہ کی نافرمانی کرنے سے ڈرا کرو اور بات سیدھی کیا کرو (۷۰)
(اس عمل پر) وہ تمہارے سب کام درست کر دے گا اور تمہارے گناہ بخش دے گا اور جو شخص اللہ اور اس کے رسول کی فرمانبرداری کرے گا تو بے شک بڑی کامیابی حاصل ہوگی (۷۱)
ہم نے اپنے ضابطہ حیات (امانت) کو زمین، آسمان اور پہاڑوں پر پیش کیا تو انہوں نے اس کو قبول کیا اس میں خیانت کرنے سے انکار کیا، انکار کرنے سے وہ ڈر گئے،

मनुष्य के सामने प्रस्तुत किया तो मनुष्य स्वीकार के साथ इसमें कपट करता है इसलिए कि यह बड़ा ही अत्याचारी और मूर्ख है, ईश्वर ने अपने नियम के पालन की धरोहर को मनुष्य के अतिरिक्त दूसरी रचनाओं को समर्पित किया, उन्होंने इसमें किसी प्रकार का कपट नही किया, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ईश्वर के बनाये नियमों के आधीन पूर्ति में कार्यरत है, दूसरी रचनाएं आज्ञाकारी है, परन्तु मानव उस नियम में अपयोजन करता है क्योंकि यह अत्याचारी, मूर्ख, जल्दी करने वाला है, मानव ईश्वर के नियम, कुरआन का विरोध हर पग पर करता है, बहुत कम मानव है जो आज्ञाकारी है, (72)

لیکن جب یہی ضابطہ حیات انسان کے سامنے پیش کیا تو انسان قبول کے ساتھ اُس میں خیانت کرتا ہے اس لئے کہ یہ بڑا ہی ظالم اور نادان ہے۔ اللہ نے اپنے ضابطہ حیات کی اطاعت کی امانت کو انسان کے علاوہ دوسری مخلوق کے سپرد کیا تو انہوں نے اُس میں کسی قسم کی خیانت نہیں کی۔ تمام کائنات اللہ کے بنائے ضابطہ کے تحت تکمیل میں لگی رہتی ہے۔ خارجی کائنات اطاعت گزار ہے لیکن انسان اس قانون میں خیانت کرتا ہے کیونکہ یہ ظالم، جابر، جلد باز ہے۔ انسان اللہ کے قانون، قرآن کی مخالفت ہر قدم پر کرتا ہے۔ بہت کم انسان ہیں جو اطاعت گزار ہیں۔(۷۲)

(और इस धरोहर को इन्सान को देने का उद्देश्य ईश्वर का यह है) ताकि इसका विरोध करने वाले कपटि पुरुषों और स्त्रियों और अनेकेश्वरवादी पुरुषों और स्त्रीयों को दण्ड दे और ईश्वर इस धरोहर नियम का पालन करने वाले आस्तिक पुरुषों और स्त्रियों पर कृपा करे और ईश्वर तो क्षमा करने वाला कृपालु है (परन्तु कोई हो तो उसकी कृपा और क्षमा लेने वाला) (73)

(اور اس امانت کو انسان کو دینے کا مقصد اللہ کا یہ ہے) تا کہ اس کی مخالفت کرنے والے منافق مردوں اور عورتوں اور مشرک مردوں اور عورتوں کو عذاب دے اور اللہ اس امانت کی پابندی کرنے والے مومن مردوں اور عورتوں پر مہربانی کرے اور اللہ تو بخشنے والا مہربان ہے (مگر کوئی ہو تو اس کی مہربانی اور بخشش لینے والا)(۷۳)

यह उस नियमानुसार है जो अच्छे कर्म करता है उसको हिदायत और सम्मान मिलता है और जो बुरे कर्म करता है उसको गुमराही और अपमान मिलता है,

یہ اس قانون کے تحت کہ جو اچھے عمل کرتا ہے اس کو ہدایت اور عزت ملتی ہے اور جو بُرے عمل کرتا ہے اس کو گمراہی اور ذلت ملتی ہے۔

नोट-आयत 72 का:- चूंकि आकाश व पृथ्वी के अन्दर रहने वाली इन्सान व जिन्न के अतिरिक्त रचना जीवधारी या बेजान में कोई ऐसा अनुभव शक्ति नही है जिससे वह शुभ या अशुभ कार्य करें और इस शक्ति को वश में रखने के लिए उन्हें किसी कोड़े की आवश्यकता हो अतः उनको किसी विधान नियम की आवश्यकता नही थी और न ही ईश्वर ने उनको इस धर्म शास्त्र का दायी बनाया वह केवल निर्जीव स्पंदन हीन वस्तुऐं है ईश्वर ने उनके लिए जो नियम बना दियाहै बस उसके अनुसार अपना जीवन पूरा कर रहे है उनके उपद्रव व विकार प्रकट होने का कोई प्रश्न ही नही है, जब आवश्यकता नही तो ईश्वर ने उनको धर्म शास्त्र नियम नही दिया,

نوٹ:۔ (آیت ۷۲ کا) چونکہ آسمان و زمین کے اندر رہنے والی انسان و جن کے علاوہ مخلوق جاندار یا بے جان میں کوئی ایسی حس نہیں ہے جس سے وہ نیکی یا بدی کریں اور اس طاقت کو قابو میں رکھنے کے لئے انہیں کسی کوڑے کی ضرورت ہو اس لئے ان کو کسی شریعت قانون کی ضرورت نہیں تھی اور نہ ہی اللہ نے ان کو اس شریعت کا مکلف بنایا وہ صرف بے جان اور بے حس چیزیں ہیں اللہ نے ان کے لئے جو قانون بنا دیا ہے بس اس کے مطابق اپنی زندگی پوری کر رہے ہیں ان کے شر و فساد ظاہر ہونے کا کوئی سوال نہیں ہے۔ جب ضرورت نہیں تو اللہ نے ان کو شریعت نہیں دی۔

परन्तु यह मानव और जिन्न बड़ा अत्याचारी और भावना से परास्त हो जाने वाला है और भूल जाना इसकी प्रकृति में सम्मिलित है यह अवज्ञा भी करते है और आज्ञा पालन भी, अतः इसको किसी कोड़े की आवश्यकता थी इन गुणों को वश में रखने या न्याय पर स्थिर रहने के लिए ईश्वर ने मानव को यह अवसर प्रदान किया है कि वह इस कुरआन जिसको धरोहर कहा गया है के प्रकाश में अपनी काम इच्छा को वश में करके सदाचारी बन जाऐं अन्यथा दूसरे मार्ग पर चल कर अत्याचारी और मूर्ख बन जाएगा यही असमंजस मानव की परीक्षा है और यही उसके सम्मान का आधार भी है, यदि वह स्वतंत्रता का अधिकार रखने के पश्चात अपने रब की प्रसन्नता के लिए न्याय पर स्थिर रहता है और अपने शैतानी भाव पर नियंत्रण रखता है तो उसका मान बहुत ऊंचा है (17:70) दूसरी दशा में वह सबसे नीचा अर्थात विद्रोही है (95:5) फिर उसे हमारे नियम ने उल्टा फैंककर सब नीचों से नीचा कर दिया, सिवाए उन लोगों के जो विश्वास लाए और सत्कर्म किये, ईश्वर ने यह कुरआन इसलिए ही तो मानव को दिया है कि वह इस पर व्यवहार करके सदाचारी बन जाए

مگر یہ انسان اور جن بڑا ظالم اور جذبات سے مغلوب ہو جانے والا ہے اور بھول جانا اس کی فطرت میں شامل ہے یہ نافرمانی بھی کرتے ہیں اور فرمانبرداری بھی اس لئے اس کو کسی کوڑے کی ضرورت تھی ان صفتوں کو قابو میں رکھنے یا عدل پر قائم رہنے کے لئے۔ اللہ نے انسان کو یہ موقع دیا ہے کہ وہ اس قرآن جس کو امانت کہا گیا ہے کی روشنی میں اپنے نفس پر قابو پا کر نیک بن جائے ورنہ دوسرے رستہ پر چل کر ظالم اور جاہل بن جائے گا یہی کشمکش انسان کی آزمائش ہے اور یہی اس کے شرف کی بنیاد بھی ہے۔ اگر وہ آزادی رکھنے کے باوجود اپنے رب کی رضا کی خاطر عدل پر قائم رہتا ہے اور اپنے سفلی جذبات پر قابو رکھتا ہے تو اس کا مرتبہ بہت اونچا ہے(۱۷:۷۰) دوسری صورت میں وہ سب سے نیچا یعنی باغی ہے(۹۵:۵) پھر اسے ہمارے قانون نے الٹا پھیر کر نیچوں سے نیچا کر دیا۔ سوائے ان لوگوں کے جو ایمان لائے اور نیک عمل کئے۔ اللہ نے یہ قرآن اس لئے ہی تو انسان کو دیا ہے کہ وہ اس پر عمل کر کے نیک بن جائے۔

सूरत सबा मक्की 34

سورت سبا (مکی) ۳۴

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

सम्पूर्ण प्रशंसा ईश्वर के लिए है जो आकाशों और पृथ्वी में से सब का स्वामी है, और परलोक में भी उसी की प्रशन्सा है (इसलिए कि वह सत्कर्म करने

ساری تعریف اللہ کے لئے ہے جو آسمانوں اور زمین میں سے سب کا مالک ہے اور آخرت میں بھی اسی کی تعریف

वालों को उनके सत्कर्मों से अधिक फल दे) और वह युक्ति वाला और अवगत है (1)

ہے(اس لئے کہ وہ نیک کرداروں کو ان کی نیکی سے زیادہ اجر دے گا)اور وہ حکمت والا اور خبر دار ہے(۱)

जो वस्तु भूमि के अन्दर जाती है (जैसे पानी) और जो वस्तु पृथ्वी से निकलती है (जैसे वनस्पति इत्यादि) और जो वस्तु आकाश से उतरती है (जैसे वर्षा औला इत्यादि) और जो वस्तु उसकी (ऊंचाई की) ओर चढ़ती है (जैसे भाप धुवां कर्म त्यादि) उसको सब की सूचना है वह बहुत दया करने वाला और क्षमा वाला है (2)

جو چیز زمین کے اندر جاتی ہے(جیسے پانی)اور جو چیز زمین سے نکلتی ہے(جیسے نباتات وغیرہ)اور جو چیز آسمان سے اترتی ہے(جیسے بارش اولہ وغیرہ)اور جو چیز اس کی (بلندی کی)طرف چڑھتی ہے(جیسے بھاپ دھواں عمل وغیرہ)اس کو سب کی خبر ہے وہ بہت رحم کرنے والا اور بخشنے والا ہے(۲)

और नास्तिक कहते है कि हम पर क्यामत न आएगी आप कहो क्यों नही आएगी? मेरा रब साक्षी है जानता है जो परोक्ष ज्ञानी है महा प्रलय तुम पर आकर रहेगी एक कण के बराबर भी कोई वस्तु उस से छोटी हो या बड़ी ऐसी नही जो एक स्पष्ट पुस्तक में अंकित न हो. (अर्थात ईश्वर के ज्ञान की पुस्तक में) (3)

اور کافر کہتے ہیں کہ ہم پر قیامت نہ آئے گی آپ کہو کیوں نہیں آئے گی؟ میرا رب شاہد ہے جانتا ہے جو عالم الغیب ہے قیامت تم پر آکر رہے گی ایک ذرہ کے برابر بھی کوئی چیز اس سے چھپی ہوئی نہیں ہے نہ آسمانوں میں اور نہ زمین میں.اور کوئی چیز خواہ اس سے چھوٹی ہو یا بڑی ایسی نہیں جو ایک واضح کتاب میں درج نہ ہو(یعنی اللہ کے علم کی کتاب میں)(۳)

(और कयामत इसलिए आएगी) ताकि जो लोग विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे ईश्वर उनको बदला दे वही वह लोग है जिनके लिए क्षमा और सम्मान की जीविका है (4)

(اور قیامت اس لئے آئے گی)تاکہ جو لوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے اللہ ان کو بدلہ دے وہی وہ لوگ ہیں جن کے لئے بخشش اور عزت کی روزی ہے(۴)

और वह लोग जो हमारी आयतों के विरोध में जान तोड़ प्रयास कर रहे है उनके लिए निकृष्टतम प्रकार का पीड़ा देने वाला दण्ड है (5)

اور وہ لوگ جو ہماری آیتوں کی مخالفت میں جان توڑ کوشش کر رہے ہیں ان کے لئے بدترین قسم کا دردناک عذاب ہے(۵)

(ऐ मुहम्मद स0) जिन लोगों को (पुस्तक का) ज्ञान दिया गया है वह जानते है कि जो कुछ तेरे रब की ओर से तुझ पर अवतरित किया गया है वह (अर्थात कुरआन) सत्य है वह प्रशंसा योग्य सम्मान वाले ईश्वर की ओर मानव का मार्ग दर्शन करता है (6)

(اے محمدؐ) جن لوگوں کو (کتاب کا) علم دیا گیا ہے وہ جانتے ہیں کہ جو کچھ تیرے رب کی طرف سے تجھ پر نازل کیا گیا ہے وہ (یعنی قرآن) حق ہے وہ قابل تعریف عزت والے اللہ کی طرف انسان کی رہنمائی کرتا ہے(۶)

और कहते है वह लोग जो नास्तिक है (आपस में) हम बताए तुम्हें ऐसा व्यक्ति जो सूचना देता है कि जब तुम्हारे शरीर का कण कण अस्त व्यस्त हो चुका होगा तो फिर तुम पुनः उत्पन्न किये जाओगे (7)

اور کہتے ہیں وہ لوگ جو کافر ہیں (آپس میں) ہم بتائیں تمہیں ایسا آدمی جو خبر دیتا ہے کہ جب تمہارے جسم کا ذرہ ذرہ منتشر ہو چکا ہوگا تو پھر تم نئے سرے سے پیدا کئے جاؤ گے(۷)

या तो वह व्यक्ति ईश्वर के नाम से झूट बनाता है या उन्मक्त हो गया है? ऐसा नही है (उनका कथन मिथ्या है) अपितु जो लोग परलोक को नही मानते वह कष्ट और परले दर्जे की पथ भ्रष्टता में ग्रस्त है (8)

یا تو وہ شخص اللہ کے نام سے جھوٹ گھڑتا ہے یا دیوانہ ہو گیا ہے؟ ایسا نہیں ہے (ان کا قول غلط ہے) بلکہ جو لوگ آخرت کو نہیں مانتے وہ عذاب اور پرلے درجے کی گمراہی میں مبتلا ہیں(۸)

क्या उन्होंने इस बात पर विचार नही किया जो उनके सामने प्रकट है और उनसे छुपा है आकाशों और पृथ्वी से यदि हम चाहें तो उनको पृथ्वी में धंसा दें या उन पर आकाश के टुकड़े गिरा दें इसमें हर उस बंदे के लिए जो प्रत्यागमन करने वाला है एक चिन्ह है (9)

کیا انہوں نے اس بات پر غور نہیں کیا جو ان کے سامنے ظاہر ہے اور جو ان سے چھپا ہے آسمان اور زمین سے اگر ہم چاہیں تو ان کو زمین میں دھنسا دیں یا ان پر آسمان کے ٹکڑے گرا دیں اس میں ہر اس بندے کے لئے جو رجوع کرنے والا ہے ایک نشان ہے(۹)

हमने दाऊद को अपने यहां से बड़ा कृपा दया प्रदान किया था ऐ पर्वतों उसके साथ अपने गुणों के अनुसार कार्य करो और पक्षियों को भी यही आदेश था अर्थात अपने गुणों के साथ दाऊद के लिए कार्य करो और लोहे को उसने हमारे नियमानुसार नरम कर लिया था गर्म करके (10)

ہم نے داؤد کو اپنے یہاں سے بڑا فضل عطا کیا تھا اے پہاڑوں اس کے ساتھ ہم آہنگ ہو جاؤ اور پرندوں کو بھی یہی حکم تھا یعنی اپنی صفات کے ساتھ داؤد کے لئے کام کرو اور لوہے کو اس نے ہمارے قانون کے مطابق نرم کر لیا تھا گرم کر کے(۱۰)

(और आदेश दिया था) कि बना विशाल कवच और अनुमान से (अर्थात ठीक) जोड़ कड़ियां और करो तुम सब कार्य भले जो तुम करते हो मैं उनको देखने वाला हूं (11)

और सुलेमान के लिए हमने वायु को अर्पित कर दिया था अर्थात उसकी बेगार में लगा दिया था, और प्रातः के समय उसका चलना एक मास की यात्रा और सांय के समय उसका चलना एक मास की यात्रा तक (अर्थात उसने वायुयान और जलपोत बना लिए थे) और हमने उस के लिए पिघले हुए तांबे का स्रोत बहा दिया था (अर्थात तांबे को पिघलाना जान गया था) और हमने ऐसे जिन्न उनके लिए बैगार मं लगा दिए थे जो उसके रब के आदेश से उसके सामने उसके नियंत्रण में कार्य करते थे जो हमारे आदेश की अवहेलना करता हम उसको आग का स्वाद चखाते (12) {21:81}

(اور حکم دیا تھا) کہ بنا کشادہ زرہیں اور انداز سے (یعنی ٹھیک) جوڑ کڑیاں اور کرو تم سب کام بھلے جو تم کرتے ہو میں ان کو دیکھنے والا ہوں (۱۱)

اور سلیمان کے لئے ہم نے ہوا کو فراہم کر دیا تھا یعنی اس کی بیگاری میں لگا دیا تھا. اور صبح کے وقت اس کا چلنا ایک ماہ کی راہ اور شام کے وقت اس کا چلنا ایک ماہ کی راہ تک (یعنی اس نے ہوائی اور پانی کے جہاز بنا لئے تھے) اور ہم نے اس کے لئے پگھلے ہوئے تانبے کا چشمہ بہا دیا (یعنی تانبے کو پگھلانا جان گیا تھا) اور ہم نے ایسے جن ان کے لئے بیگار میں لگا دئے تھے جو اس کے رب کے حکم سے اس کے سامنے اس کے قابو میں کام کرتے تھے جو ہمارے حکم سے سرتابی کرتا ہم اس کو آگ کا مزہ چکھاتے (۱۲) [۲۱:۸۱؛۲۷:۱۶]

सुलेमान जो कुछ चाहता था वह उसके लिए बनाते थे ऊंची इमारतें मूर्तियां चित्र बड़े बड़े लगन जैसे जलकुंड और अपने स्थान से न हटने वाली देगें, ऐ, दाऊद की सन्तान कर्म करो आज्ञाकारी की विधि पर मेरे बन्दों में कम ही आज्ञाकारी होते हैं (13) {21:52}

سلیمان جو کچھ چاہتا تھا وہ اس کے لئے بناتے تھے اونچی عمارتیں تصویریں بڑے بڑے لگن جیسے حوض اور اپنی جگہ سے نہ ہٹنے والی دیگیں اے داؤد کی اولاد عمل کرو فرمانبر داری کے طریقے پر میرے بندوں میں کم ہی فرمانبردار ہوتے ہیں (۱۳) [۲۱:۵۲]

नोट- उपरोक्त आयात में ईश्वर ने यह बता दिया है कि ऐ मुसलमानों! तुम ज्ञान प्राप्त करके इस संसार की वस्तुओं से वह कार्य लो जो मेरे बन्दे दाऊद व सुलेमान और जुलकर नैन ने करके बताए परन्तु मुसलमान उस कार्य को न कर सका और दूसरी जातियों ने कर लिया उन्होंने इस मुसलमान को दास बना लिया, और उनको इस ज्ञान के द्वारा बेहिसाब जीविका मिल रही है, जो ईश्वर के नियम के अनुसार कार्य करता है उसको बेहिसाब जीविका मिलती है,

इस मुसलमान पर बनी इसराईल की भांति हीनता और निर्धनता छा गई इसकी दशा यह है कि टुक टुक दीदम दम न कशीदम, आज बनी इसराईल से हीनता व निर्धनता समाप्त हो गई उसका स्थान मुसलमान ने ले लिया,

نوٹ:۔ آیات بالا میں اللہ نے یہ بتا دیا ہے کہ اے مسلمانو! تم علم حاصل کر کے اس کائنات کی چیزوں سے وہ کام لو جو میرے بندے داؤد و سلیمان و ذوالقرنین نے کر کے بتائے مگر مسلمان اس کام کو نہ کر سکا اور دوسری قوموں نے کر لیا. انہوں نے اس مسلمان کو غلام بنا لیا. اور اُن کو اس علم کے ذریعہ بے حساب رزق مل رہا ہے. جو اللہ کے قانون کے مطابق کام کرتا ہے اس کو بے حساب رزق ملتا ہی ہے.

اس مسلمان پر بنی اسرائیل کی طرح ذلت اور مسکنت چھا گئی اس کی حالت یہ ہے کہ تک تک دیدم دم نہ کشیدم آج بنی اسرائیل سے ذلت و مسکنت ختم ہو گئی اس کی جگہ مسلمان نے لے لی.

फिर जब सुलेमान पर हमने मृत्यु का निर्णय लागू कर दिया तो जिन्नों को उसकी मृत्यु का पता देने वाला कोई उस कीड़े के अतिरिक्त न था जो उस की लाठी को खा रहा था, इस प्रकार सुलेमान गिर पड़ा तो जिन्नों पर यह बात खुल गई कि यदि हम परोक्ष जानते तो इस हीनता के कष्ट में ग्रस्त न होते (14)

پھر جب سلیمان پر ہم نے موت کا فیصلہ نافذ کر دیا تو جنوں کو اس کی موت کا پتہ دینے والا کوئی اس کیڑے کے علاوہ نہ تھا جو اس کا عصا کھا رہا تھا اس طرح سلیمانؑ گر پڑے تو جنوں پر یہ بات کھل گئی کہ اگر ہم غیب جانتے تو اس ذلت کے عذاب میں مبتلا نہ رہتے (۱۴)

नोट- क्या जिन्न परोक्ष जानते हैं? बहुत से इन्सान जिनमें मुर्ख भी हैं और ज्ञानी भी जिन्नों को परोक्ष ज्ञानी मानते हैं परन्तु इस आयत ने सिद्ध कर दिया कि जिन्न परोक्ष ज्ञानी नही होते यदि परोक्ष को जानते तो उनको ज्ञात हो जाता कि महामना की मृत्यु हो चुकी है अतः इस कठिन कार्य को बन्द कर दो, परन्तु उनको ज्ञात न हुआ, और जब कार्य पूरा हो गया तो मृत्यु की सूचना हो गई उनके गिरने पर अतः जिन्नों को जो परोक्ष ज्ञाता मानता है वह कुरआन पर विश्वास नहीं रखता,

दूसरी बात यह सिद्ध हो रही है कि जब शासनाध्यक्ष की मृत्यु होती है तो उसकी मृत्यु को उस समय तक गुप्त रखा जाता है जब तक उसके स्थान पर कोई प्रबन्ध न हो जाए या वह महत्वपूर्ण कार्य पूरा न हो जाए जो उनके जीवन में पूरा होना अनिवार्य है, यदि मृत्यु की सूचना पहले हो गई तो व्याकूलता होगी अतः जिन्नों को उस

نوٹ:۔ کیا جن غیب داں ہیں؟ بہت سے انسان جن میں جاہل بھی ہیں اور عالم بھی جنوں کو غیب داں مانتے ہیں مگر اس آیت نے ثابت کر دیا کہ جن غیب داں نہیں ہوتے. اگر غیب کو جانتے تو ان کو معلوم ہو جاتا کہ حضرت کی موت ہو چکی ہے اس لئے اس مشکل کام کو بند کر دو. لیکن ان کو معلوم نہ ہوا. اور جب کام پورا ہو گیا تو موت کی خبر ہو گئی ان کے گرنے پر اس لئے جنوں کو جو غیب داں مانتا ہے وہ قرآن پر ایمان نہیں رکھتا.

دوسری بات یہ ثابت ہو رہی ہے کہ جب سربراہ حکومت کا انتقال ہوتا ہے تو اس کی موت کو اس وقت تک راز میں رکھا جانا چاہیے جب تک اس کی جگہ پر کوئی انتظام نہ ہو جائے یا وہ اہم کام پورا نہ ہو جائے جو ان کی زندگی میں پورا ہونا ضروری ہے اگر موت کی خبر پہلے ہو گئی تو پریشانی ہو گی اس لئے جنوں کو اس وقت

समय तक सूचना न हुई बराबर कार्य करते रहे, जब तक वह भवन पूरा न हो गया, और यह बात भी विचारणीय है कि ईश्वर ने सुलेमान के शरीर को जो मांस का था बचाए रखा और लकड़ी जो बलिष्ठ होती है गल गई, इसमें भी वैज्ञानिकों के लिए चिन्ह है मनन करें

इसी प्रकार फारूक आजम ने मुहम्मद स0 की मृत्यु पर घोषणा की थी कि सावधान कोई यह न कहे कि मुहम्मद स0 की मृत्यु हो चुकी है, नहीं अपितु वह जीवित है यह इस लिए कि आपने जो राज्य स्थापित किया था उसके शत्रु अन्दर और बाहर बहुत थे, यदि उनको ज्ञात हो जाता कि मुहम्मद स0 की मृत्यु हो चुकी है इस समय मुसलमानों का कोई नेता नहीं है मुसलमान व्याकूलता की स्थिति में हैं अतः उन पर आक्रमण करके इस राज्य को समाप्त कर दो, इस शंका के कारण ही उमर फारूक ने घोषणा की थी वह पागल नहीं हुए थे जैसा कि हमारे यहां लिखा मिलता है कि उमर मानसिक संतुलन खो चुके थे यह मिथ्या है, अपितु चेतना में कहा था जब निर्वाचित उत्तराधिकारी जिसको मुहम्मद स0 अपने जीवन में ही परामर्श से मनोनीत कर गए थे, अर्थात अबुबकर को शासक बना दिया गया तब घोषणा की यह थी उमर र0 की प्रतिभा जिसको संसार बहुत बाद में जाना है जैसे कुछ ही दिनों की बात है कि श्रीमति इन्द्रा गांधी प्रधान मंत्री हिन्द को बिलकुल निकट से कातिलों ने गोली मार कर गिरा दिया और लगभग तीस गोली उनके शरीर में उतार दी तो कौन विश्वास कर सकता था कि वह जीवित होंगी, परन्तु उनको होस्पीटल में प्रविष्ट किया गया और घोषणा की गई कि वह जीवित हैं क्यों इसलिए कि उत्तराधिकारी दूर था जब राजीव गांधी को प्रधान मंत्री बना दिया गया तब घोषणा की कि श्रीमति की मृत्यु हो गई यह है नियम,

सबा वालों के लिए स्वंय उनके स्थान में चिन्ह विद्यमान हैं अर्थात दो उपवन दाएं और बाएं हमने कहा था खाओ अपने ईश्वर की दी हुई जीविका और आज्ञाकारी करो देखो कैसा पवित्र नगर है और क्षमा करने वाले ईश्वर की कृपा सिर पर है (15)

परन्तु वह मुख मोड़ गए तो हमने उन पर प्रचन्ड बाढ़ प्रेषित कर दी और उनके दोनों उपवनों के बदले दो ऐसे उपवन दिए जिनके फल कड़वे और कसीले थे और झाऊ के वृक्ष और थोड़ी सी झड़ बेरी (16)

यह था उनकी अवज्ञा का बदला जो हमने उनको दिया और नास्तिक उन्सानों के सिवा ऐसा फल हम और किसी को नहीं देते, (17)

नोट- जाति सबा ईश्वर की आज्ञाकारी बनी तो ईश्वर ने पुरस्कार में उनको अपने प्रसाद दिए ऐसे उपवन कि हर ओर उपवन ही उपवन और उनके फल मीठे यह प्रसाद अपने आप ही नहीं मिल गए थे, अपितु उन लोगों ने सदाचारी बन कर ईश्वर के नियामानुसार परिश्रम किया बांध बनाए उनमें पानी संग्रह किया धरती को ठीक करके उनमें वृक्ष लगाए और उन बांधों से सींचाई की तब वह उपवन तैयार हुए और उनको उन उपवनों से बहुत लाभ हुआ और चैन मिला, उस लाभ से उन्होंने ईश्वर का अधिकार भी चुकता किया,

परन्तु उस जाति को जब यह प्रसाद मिलते मिलते बहुत दिन हो गए तो वह अवज्ञाकारी हो गई और अपराधों में लिप्त हो गइ जिसका परिणाम यह भी होता है कि व्यक्ति आलसी और कायर हो जाता है और वह हर समय कुकर्म में लिप्त रहता है, क्योंकि उसको वही अच्छा लगता है, और कुकर्म करने को उसके पास पैसा भी उस

تک خبر نہ ہوئی برابر کام کرتے رہے. جب تک وہ عمارت پوری نہ ہوگئی اور یہ بات بھی قابل غور ہے کہ اللہ نے سلیمان کے جسم کو جو گوشت کا تھا بچائے رکھا اور لکڑی جو مضبوط ہوتی ہے گل گئی.اس میں بھی سائنس دانوں کے لئے نشانی ہے غور کریں.

اسی طرح فاروق اعظم نے محمدؐ کی وفات پر اعلان کردیا تھا کہ خبردار کوئی یہ نہ کہے کہ محمدؐ کا انتقال ہو چکا ہے نہیں بلکہ وہ زندہ ہیں یہ اس لئے کہ آپ نے جو سلطنت قائم کی تھی اس کے دشمن اندر اور باہر بہت تھے اگر ان کو معلوم ہو جاتا کہ محمدؐ کا انتقال ہو چکا ہے اس وقت مسلمانوں کا کوئی امیر نہیں ہے. مسلمان افراتفری کے عالم میں ہیں. اس لئے ان پر حملہ کر کے اس سلطنت کو ختم کر دو. اس خطرے کی وجہ سے ہی عمر فاروق نے اعلان کیا تھا وہ پاگل نہیں ہوئے تھے جیسا کہ ہمارے یہاں لکھا ملتا ہے کہ عمر دماغی توازن کھو چکے تھے یہ غلط ہے. بلکہ ہوش وحواس میں کہا تھا. جب منتخب جانشین جس کو محمدؐ اپنی زندگی میں ہی مشورے سے نامزد کر گئے تھے یعنی ابوبکر کی بیعت ہوگئی تب اعلان ہوا. یہ تھی عمر کی فراست جس کو زمانہ بہت بعد میں جانا ہے. جیسے کچھ ہی دنوں کی بات ہے کہ محترمہ اندرا گاندھی وزیراعظم ہند کو بالکل قریب سے قاتلوں نے گولی مار کر گرا دیا اور تقریباً تیس گولی ان کے جسم میں اتار دیں تو کون یقین کر سکتا تھا کہ وہ زندہ ہوں گی. مگر ان کو ہسپتال میں داخل کیا گیا. اور اعلان کیا گیا کہ وہ زندہ ہیں کیوں. اس لئے کہ جانشین دور تھا جب راجیو گاندھی کو وزیراعظم بنا دیا گیا تب اعلان ہوا کہ محترمہ کا انتقال ہو گیا ہے یہ ہے قاعدہ.

اہل سبا کے لئے خود ان کے مسکن میں نشان موجود تھے یعنی دو باغ دائیں اور بائیں ہم نے کہا تھا کھاؤ اپنے رب کا دیا ہوا رزق اور فرمانبرداری کرو دیکھو کیسا پاکیزہ شہر ہے. اور بخشش کرنے والے رب کا سایہ سر پر ہے (۱۵)

مگر وہ منہ موڑ گئے تو ہم نے ان پر زبردست سیلاب بھیج دیا اور ان کے دونوں باغوں کے بدلے دو ایسے باغ دئے جن کے پھل کڑوے اور کسیلے تھے اور جھاؤ کے درخت اور تھوڑی سی جھڑبیری (۱۶)

یہ تھا ان کے کفر کا بدلہ جو ہم نے ان کو دیا اور نافرمان انسانوں کے سوا ایسا بدلہ ہم اور کسی کو نہیں دیتے (۱۷)

نوٹ:۔ قوم سبا اللہ کی فرمانبردار رہی تو اللہ نے انعام میں ان کو اپنی نعمت سے نوازا. ایسے باغ کہ ہر طرف باغ ہی باغ اور ان کے پھل میٹھے یہ نعمتیں خود بخود نہیں مل گئیں تھیں بلکہ ان لوگوں نے نیک بن کر اللہ کے قانون کے مطابق محنت کی باندھ بنائے ان میں پانی اکٹھا کیا زمین کو ٹھیک کر کے ان میں درخت لگائے. اور ان باندھوں سے آبپاشی کی تب وہ باغ تیار ہوئے اور ان کو ان باغوں سے بہت آمدنی ہوئی اور آرام ملا اس آمدنی سے انہوں نے اللہ کا حق بھی ادا کیا.

لیکن اس قوم کو جب یہ نعمتیں ملتے ملتے بہت دن ہو گئے تو وہ نافرمان ہو گئے اور گناہوں میں ملوث ہو گئے جس کا نتیجہ یہ بھی ہوتا ہے کہ آدمی آرام طلب اور بزدل ہو جاتا ہے اور وہ ہر وقت فحش میں ملوث رہتا ہے کیونکہ اس کو وہی اچھا لگتا ہے اور فحش کام کرنے کو اس کے پاس پیسہ بھی اس کاروبار سے آتا ہے جو اس کو

कारोबार से आता है, जो उसको ईश्वर ने दिया था, परन्तु वह उस कारोबार की देखभाल नही करता उससे अचेत हो जाता है,

जैसे पानी के बांध का उल्लेख है उन बांधों से उपवनों को पानी मिलता था, बांध अपनी सुरक्षा चाहते थे, उनकी हर वर्ष मरम्मत होनी चाहिए थी, यदि कभी वर्षा में किसी स्थान से मिट्टी हट रही है पानी रिस रहा है तो तुरन्त वहां मिट्टी डाल दी जाए तो वह बांध स्थापित रहेगा और सिंचाई होती रहेगी आवश्यकतानुसार तो धरती उपज देगी,

परन्तु सबा समुदाय सम्पन्नता से ईश्वर के अवज्ञाकारी हो गए और बांध से अचेत हो गए कि आवश्यक्ता के समय उसका जीर्णोद्वार करे, इस असावधानी का परिणाम इसके अतिरिक्त और क्या था कि वर्षा में बांध टूट जाए और बाढ़ की आकृति बन कर सब उपवनों और उपजाऊ मिट्टी को बहा कर ले जाए और वह मिट्टी रह जाए जिसमें जंगली पौदे उग आएं, जैसे हम देखते हैं नदीयों के खादर जहां वर्षा के मौसम में तीव्र पानी बहता है, वहां पर अच्छी मिट्टी न रहने के कारण से झाड़ी इत्यादि ही उगती है, बस ऐसे ही उस बाढ़ से सबा जाति की भूमि हो गई जिसकी सूचना कुरआन की आयात दे रही है,

जो जाति सबा के साथ हुआ वही हर अवज्ञाकारी और आलसी विलासी जाति के साथ होता है, यह ईश्वर का नियम है और ईश्वर की रीति में कोई परिवर्तन नही होता, चाहे वह जाति किसी भी नबी के अनुयायी हो इतिहास उठा कर देखो हर समय यही मिलेगा,

मैं तुझको बताता हूँ तकदीरे उम्म किया है
शमशीर व सना अव्वल ताऊस व रबाब आखिर इक़बाल

और हमने उनके और उन बस्तियों के मध्य जिनको हमने सम्पन्नता दी थी गांव बसा दिये थे जो सामने दिखाई देते थे और उनमें यात्रा के पड़ाव का अनुमान निश्चित कर दिया था कि रात दिन निर्भय चलो फिरो (18)

परन्तु उन्होंने कहा ऐ ईश्वर! हमारी यात्रा में दूरी उत्पन्न कर दे, उन्होंने स्वयं अपने ऊपर अन्याय किया अन्ततः हमने उन्हें नष्ट करके कथा बना दिया और उन्हें बिल्कुल अस्त व्यस्त कर दिया, इसमें हर उस व्यक्ति के लिए जो धैर्यवान और आज्ञाकारी है चिन्ह है (19) {16:112; 16:112, 118;6:145,146;4:29,30,31}

नोट– इस आयत में जो कथन इन्सानों का है कि उन्होंने कहा कि ऐ ईश्वर हमारी यात्रा में दूरी उत्पन्न कर दे, तो यह क्या है इसको समझने के लिए सूरत नहल की आयत 112,118 को देखा जाए

(16:112) ईश्वर एक बस्ती की उपमा वर्णन करता है कि (हर प्रकार) शान्ति चैन से रहती थी हर ओर से जीविका विशालता चली आती थी, परन्तु उन लोगों ने ईश्वर के प्रसादों की कृतघ्नता (और कारोबार में धोका दिया दुष्टता की) की तो अपने नियमानुसार ईश्वर ने उनके कर्मों के कारण उनको भूक और भय का वस्त्र पहनाकर स्वाद चखाया (और वह अपनी जीविका के लिए दूर जाने लगे, पहले वहां पर आती थी,

(16:118) (ऐ ईशदूत!) और यहूदियों पर जो कुछ हमने वर्जित किया था उसे हम पहले ही आपसे सुना चुके है हमने उन पर अन्याय नही किया अपितु वह स्वयं अपने ऊपर अन्याय करते रहे,

इन आयात के प्रकाश में यह बात सामने आती है कि वह

اللہ نے دیا تھا.لیکن وہ اس کاروبار کی دیکھ بھال نہیں کرتا اس سے غافل ہوجاتا ہے.

جیسے پانی کے باندھ کا ذکر ہے ان باندھوں سے باغوں کو پانی ملتا تھا. باندھ اپنی حفاظت چاہتے تھے ان کی ہر سال مرمت ہوتی تھی.اگر کبھی بارش میں کسی جگہ سے مٹی ہٹ رہی ہے پانی رس رہا ہے تو فوراً وہاں مٹی ڈال دی جائے تو وہ باندھ قائم رہے گا.اور آبپاشی ہوتی رہے گی ضرورت کے مطابق تو زمین پیدا دے گی.

مگر قوم سبا خوش حالی سے اللہ کی نافرمان ہوگئی اور باندھ سے غافل ہوگئی کہ ضرورت کے وقت اس کی مرمت کریں، اس غفلت کا نتیجہ اس کے سوا اور کیا تھا کہ بارش میں باندھ ٹوٹ جائے اور سیلاب کی شکل بن کر سب باغوں اور زرخیز مٹی کو بہا کر لے جائے.اور وہ مٹی رہ جائے جس میں خودرو پودے اُگ آئیں، جیسے ہم دیکھتے ہیں ندیوں کے کھادر جہاں بارش کے زمانے میں تیز پانی بہتا ہے وہاں پر اچھی مٹی نہ رہنے کی وجہ سے جھاڑی وغیرہ ہی اُگتی ہیں، بس ایسے ہی اس سیلاب سے قوم سبا کی زمین ہوگئی جس کی خبر آیات قرآنی دے رہی ہیں.

جو قوم سبا کے ساتھ ہوا وہی ہر نافرمان اور آرام طلب عیاشی کے ساتھ ہوتا ہے یہ اللہ کا قانون ہے اور اللہ کی سنت میں کوئی تبدیلی نہیں ہوتی، چاہے وہ قوم کسی بھی نبی کی امت ہو تاریخ اٹھا کر دیکھو ہر جگہ یہی ملے گا.

میں تجھ کو بتاتا ہوں تقدیر امم کیا ہے
شمشیر و سنا اول طاؤس و رباب آخر (اقبالؔ)

اور ہم نے ان کے اور ان بستیوں کے درمیان جن کو ہم نے برکت دی تھی گاؤں بسا دئے تھے جو سامنے دکھائی دیتے تھے اور ان میں سفر کی منزلوں کا اندازہ مقرر کر دیا تھا کہ رات دن بے خوف وخطر چلو پھرو (۱۸)

مگر انہوں نے کہا اے پروردگار ہمارے سفر میں دوری پیدا کر دے انہوں نے خود اپنے اوپر ظلم کیا.آخر کار ہم نے انہیں نابود کر کے افسانہ بنا دیا اور انہیں بالکل تتر بتر کر دیا اس میں ہر اس شخص کے لئے جو صابر و شاکر ہے نشانیاں ہیں (۱۹) [۱۶:۱۱۲،۱۱۸؛۶:۱۴۵،۱۴۶؛۴:۲۹،۳۰،۳۱]

نوٹ:۔اس آیت مین جو قول انسانوں کا ہے کہ انہوں نے کہا کہ اے پروردگار ہمارے سفر میں دوری پیدا کر دے تو یہ کیا ہے اس کو سمجھنے کے لئے سورت نحل کی آیت ۱۱۲،۱۱۸ کو دیکھا جائے

(۱۶:۱۱۲) اللہ ایک بستی کی مثال بیان کرتا ہے کہ (ہر طرح) امن چین سے بستی تھی ہر طرف سے رزق بافراغت چلا آتا تھا.مگر ان لوگوں نے اللہ کی نعمتوں کی ناشکری (اور کاروبار میں دھوکا دیا بداخلاقی سے پیش آئے) کی تو اپنے قانون کے مطابق اللہ نے ان کے اعمال کے سبب ان کو بھوک اور خوف کا لباس پہنا کر مزہ چکھایا (اور وہ اپنی روزی کے لئے دور جانے لگے پہلے وہاں پر آتی تھی)

(۱۶:۱۱۸) (اے رسول!) اور یہودیوں پر جو کچھ ہم نے حرام کیا تھا اسے ہم پہلے ہی آپ سے سنا چکے ہیں ہم نے ان پر ظلم نہیں کیا بلکہ وہ خود اپنی جانوں پر ظلم کرتے ہیں.

ان آیات کی روشنی میں یہ بات سامنے آتی ہے کہ وہ لوگ پہلے

लोग पहले ईमानदार और अच्छे व्यवहार के साथ कारोबार करते थे तो दूर दूर से लोग उनके पास सामान लेने आते थे, इसलिए वह काफी धनी हो गए थे, परन्तु जब आदमी पर धन अधिक आता है तो वह दुराचारी और कपटि झगड़ालू हो जाता है ऐसे ही वह लोग धन के घमण्ड में हो गये थे इस व्यवहार को देखकर लोगों ने उनसे कहा कि ऐसा न करो आपके इस व्यवहार से लोग आपके पास सामान लेने नही आऐंगे तो उनको यह बात समझ में नही आई और आवेश में आकर कहने लगे कि अपने ईश्वर से कहकर हमारी जीविका रुकवा दो यहां लोगों को न आने दो न तुम आओ हम दूर जाकर अपना सामान बेचने लगेंगे,

ایمانداری اور اچھے اخلاق کے ساتھ کاروبار کرتے تھے تو دور دور سے لوگ ان کے پاس مال لینے آتے تھے اس لئے وہ کافی مالدار ہو گئے تھے. مگر جب آدمی پر پیسہ زیادہ آتا ہے تو وہ بد اخلاق اور دھوکے باز جھگڑالو ہو جاتا ہے ایسے ہی وہ لوگ پیسے کے غرور میں ہو گئے تھے. اس برتاؤ کو دیکھ کر لوگوں نے ان سے کہا کہ ایسا نہ کرو آپ کے اس برتاؤ سے لوگ آپ کے پاس سامان لینے نہیں آئیں گے تو ان کو یہ بات سمجھ میں نہیں آئی اور جوش میں آکر کہنے لگے کہ اپنے اللہ سے کہہ کر ہماری روزی رکوا دو یہاں لوگوں کو نہ آنے دو، نہ تم آؤ ہم دور جا کر اپنا سامان بیچنے لگیں گے.

कुछ दिनों के बाद उनकी जीविका तंग हो गई तब वह अपना सामान सिर पर रखकर दूर जाने लगे और पहले यदि वह कभी अपना सामान लेने के लिए बाहर जाते थे तो क्षेत्र के लोग उनका सम्मान करते थे और अपने यहां ठहरने के लिए स्थान देते थे, परन्तु फिर उनको रुकने को स्थान भी नही मिलता था क्योंकि वह हर प्रकार से दुष्ट हो गए थे और इस दुष्टता के कारण से उनकी जीविका तंग हो गई थी, इस तंगी में वह इतने चिड़चिड़े हो गए थे कि किसी के उपदेश को नही सुनते थे और कहते थे कि हां हां हमारी यात्रा दूर करा दो,

کچھ دنوں کے بعد ان کی روزی تنگ ہو گئی تب وہ اپنا سامان سر پر رکھ کر دور جانے لگے اور پہلے اگر وہ کبھی اپنا سامان لینے کے لئے باہر جاتے تھے تو علاقے کے آدمی ان کی عزت کرتے تھے اور اپنے یہاں ٹھہرنے کے لئے جگہ دے دیتے تھے مگر پھر ان کو ٹھہرنے کو جگہ بھی نہیں ملتی تھی کیونکہ وہ ہر طرح سے بد اخلاق ہو گئے تھے اور اس بد اخلاقی کی وجہ سے ان کی روزی تنگ ہو گئی تھی اس تنگی میں وہ اتنے چڑچڑے ہو گئے تھے کہ کسی کی نصیحت کو نہیں سنتے تھے اور کہتے تھے کہ ہاں ہاں ہمارے سفر دور کرا دو.

और शैतान ने उनके विषय में अपना विचार सत्य कर दिखाया कि आस्तिकों के एक दल के अतिरिक्त वह उसके पीछे चल पड़े (20)

اور شیطان نے ان کے بارے میں اپنا خیال سچ کر دکھایا کہ مومنوں کی ایک جماعت کے سوا وہ اس کے پیچھے چل پڑے (۲۰)

और शैतान का उन पर कोई बल न था परन्तु इसलिए कि हम उन लोगों को जो प्रलोक पर विश्वास रखते हैं प्रकट कर दें उन लोगों में से जो उससे शंका में हैं और आपका रब हर वस्तु का रखवला है (21)

اور شیطان کا ان پر کوئی زور نہ تھا مگر اس لئے کہ ہم ان لوگوں کو جو آخرت پر ایمان رکھتے ہیں ظاہر کر دیں ان لوگوں میں سے جو اس سے شک میں ہیں اور آپ کا رب ہر چیز پر نگہبان ہے (۲۱)

कह दो कि जिनको तुम ईश्वर के सिवा (पूज्य) मानते हो उनको बुलाओ वह आकाशों और पृथ्वी में कण भर वस्तु के भी स्वामी नही हैं और न उनमें उनका साझा है और न उनमें से कोई ईश्वर का सहायक है (22)

کہدو کہ جن کو تم اللہ کے سوا (معبود) خیال کرتے ہو ان کو بلاؤ وہ آسمانوں اور زمین میں ذرہ بھر چیز کے بھی مالک نہیں ہیں اور نہ ان میں ان کی شرکت ہے اور نہ ان میں سے کوئی اللہ کا مددگار ہے (۲۲)

और ईश्वर के पास किसी के लिए अनुशंसा लाभ न देगी, परन्तु उसके विषय में वह अनुमति दे यहां तक कि जब उनके हृदयों से भय दूर हो जाएगा तो कहेंगे कि तुम्हारे रब ने क्या कहा है वह कहेंगे कि सत्य कहा है अर्थात अनुमति नही, और वह उच्च व श्रेष्ठ और बहुत बड़ा है (23) अनुमति किसी को नही इसलिए अनुशंसा भी नही,

اور اللہ کے پاس کسی کے لئے شفارش فائدہ نہ دے گی مگر اس کے بارے میں وہ اجازت دے یہاں تک کہ جب ان کے دلوں سے خوف دور ہو جائے گا تو کہیں گے کہ تمہارے رب نے کیا فرمایا ہے وہ کہیں گے کہ حق فرمایا ہے یعنی اجازت نہیں. اور وہ بلند و بالا اور بہت بڑا ہے (۲۳) [اجازت کسی کو نہیں اس لئے شفاعت بھی نہیں]

(ऐ रसूल) उनसे यह भी ज्ञात करो तुम्हें आकाशों और पृथ्वी में जीविका कौन देता है (यह प्रश्न सुनकर वह चुप हो जाऐंगे) आप स्वयं ही कह दो "ईश्वर", अब हम में और तुम में से केवल कोई एक ही स्थित पर है और दूसरा खुली पथ भ्रष्टता में पड़ा हुआ है (24)

(اے رسول!) ان سے یہ بھی پوچھو تمہیں آسمانوں اور زمین میں روزی کون دیتا ہے (یہ سوال سن کر وہ خاموش ہو جائیں گے) آپ خود ہی کہدینا "اللہ". اب ہم میں اور تم میں سے ضرور کوئی ایک ہی ہدایت پر ہے اور دوسرا کھلی گمراہی میں پڑا ہوا ہے (۲۴)

कह दो कि न हमारे पापों के विषय में तुम से प्रश्न होगा और न तुम्हारे कर्मों के विषय में हम से प्रश्न होगा (25)

کہدو کہ نہ ہمارے گناہوں کے بارے میں تم سے پوچھا جائے گا اور نہ تمہارے اعمال کے بارے میں ہم سے پوچھا جائے گا (۲۵)

कह दो कि हमारा ईश्वर हम सबको (महा प्रलय के दिन) ऐकत्र करेगा फिर हमारे बीच न्याय के साथ निर्णय कर देगा वह बहुत बड़ा निर्णय करने वाला और अवगत है (26)
(ऐ मुहम्मद स0 उन अनेकेश्वर वादियों से) कहो तनिक मुझे उन साझियों को तो दिखाओ जिनको तुम ने ईश्वर का साझी बनाकर उससे मिला रखा है ऐसा कोई नही अपितु ईश्वर ही प्रभुत्वशाली है और युक्ति वाला है (27)
और (ऐ मुहम्मद स0) हमने जो तुमको भेजा है तो निःसन्देह सम्पूर्ण लोगों के लिए शुभ सूचना सुनाने वाला और डराने वाला बनाकर भेजा है परन्तु अधिक लोग नही जानते (28)
और कहेंगे यदि तुम सच कहते हो तो बताओ यह क्यामत का वचन कब पूरा होगा (29)
कह दो कि तुम से एक दिन का वचन है जिससे न एक घड़ी पीछे रहोगे न आगे बढ़ोगे (30)
और कहते है जो काफ़िर है कि हम न तो इस कुरआन को मानेंगे और न उन (पुस्तकों) को जो इससे पहले की सुरक्षा के मध्य थी और यदि अन्यायियों को तुम उस समय देखो जब वह अपने ईश्वर के सामने खड़े होंगे और एक दूसरे पर आरोप धरेंगे जो लोग दुनिया में दबाकर रखे गए थे वह बड़े बनने वालों से कहेंगे कि यदि तुम न होते तो हम आस्तिक होते (31)
बड़े लोग निर्बलों से कहेंगे कि क्या हमने तुम को सत्य मार्ग से रोका था जो तुम्हारे पास आया था? नही अपितु तुम स्वयं ही पापी थे (32)
वह दबे हुए लोग उन बड़े बनने वालों से कहेंगे नही अपितु तुम्हारी रात दिन की चालों ने हमें रोक रखा था, जब तुम हमसे कहते थे कि हम ईश्वर से कुफ्र करें और दूसरों को उसके बराबर बनाए फिर जब वह लोग यातना देखेंगे तो अपने हृदयों में पछताऐंगे और हम उन विरोधियों के गलों में बेड़ी डाल देंगे, क्या लोगों को इसके अतिरिक्त और कोई बदला दिया जा सकता है कि जैसे कर्म उनके थे वैसा ही दण्ड पाएं (33)
और जो भी हमने भेजा किसी बस्ती में डराने वाला तो निःसन्देह वहां के सम्पन्न लोगों ने यह ही कहा कि जो वस्तु तुम देकर भेजे गए हो हम उसका इनकार करते है (34)
और (यह भी) कहने लगे कि हम बहुत सा धन और सन्तान रखते हैं और हम को कष्ट नही होगा (35)
कह दो (यह धन का कम अधिक होना सौजन्य का प्रतिमान नही है) कि मेरा ईश्वर उसकी जीविका विस्तृत कर देता है जो स्वयं अपने व्यवहार से चाहता है और उसकी तंग कर देता है जो अपने कर्म से स्वयं तंग कर लेता है (अच्छे बुरे कर्मों से)

کہدو کہ ہمارا پروردگار ہم سب کو (قیامت کے دن) جمع کرے گا پھر ہمارے درمیان انصاف کے ساتھ فیصلہ کردے گا وہ بہت بڑا فیصلہ کرنے والا ہے اور واقف کار ہے (۲۶)
(اے محمدؐ! ان مشرکوں سے) کہو ذرا مجھے ان شریکوں کو تو دکھاؤ جن کو تم نے اللہ کا شریک بنا کر اس سے ملا رکھا ہے ایسا کوئی نہیں بلکہ اللہ ہی غالب ہے اور حکمت والا ہے (۲۷)
اور (اے محمدؐ) ہم نے جو تم کو بھیجا ہے تو یقیناً تمام لوگوں کے لئے خوشخبری سنانے والا اور ڈرانے والا بنا کر بھیجا ہے لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے (۲۸)
اور کہیں گے اگر تم سچ کہتے ہو تو بتاؤ یہ (قیامت کا وعدہ کب پورا ہوگا) (۲۹)
کہدو کہ تم سے ایک دن کا وعدہ ہے جس سے نہ ایک گھڑی پیچھے رہو گے نہ آگے بڑھو گے (۳۰)
اور کہتے ہیں جو کافر ہیں کہ ہم نہ تو اس قرآن کو مانیں گے اور نہ اُن (کتابوں) کو جو اس سے پہلے کی حفاظت کے درمیان تھیں اور کاش ظالموں کو تم اس وقت دیکھو جب وہ اپنے پروردگار کے سامنے کھڑے ہوں گے اور ایک دوسرے پر الزام دھریں گے جو لوگ دنیا میں دبا کر رکھے گئے تھے وہ بڑے بننے والوں سے کہیں گے کہ اگر تم نہ ہوتے تو ہم مومن ہوتے (۳۱)
بڑے لوگ کمزوروں سے کہیں گے کہ کیا ہم نے تم کو ہدایت سے روکا تھا جو تمہارے پاس آئی تھی؟ نہیں بلکہ تم خود ہی مجرم تھے (۳۲)
وہ دبے ہوئے لوگ ان بڑے بننے والوں سے کہیں گے نہیں بلکہ تمہاری رات دن کی چالوں نے ہمیں روک رکھا تھا. جب تم ہم سے کہتے تھے کہ ہم اللہ سے کفر کریں اور دوسروں کو اس کا ہمسر بنائیں. پھر جب وہ لوگ عذاب دیکھیں گے تو اپنے دلوں میں پچھتائیں گے اور ہم ان منکروں کے گلوں میں طوق ڈال دیں گے. کیا لوگوں کو اس کے سوا اور کوئی بدلہ دیا جا سکتا ہے کہ جیسے اعمال ان کے تھے ویسی ہی جزا وہ پائیں (۳۳)
اور جو بھی ہم نے بھیجا کسی بستی میں ڈرانے والا تو یقیناً وہاں کے خوشحال لوگوں نے یہ ہی کہا کہ جو چیز تم دے کر بھیجے گئے ہو ہم اس کا انکار کرتے ہیں (۳۴)
اور (یہ بھی) کہنے لگے کہ ہم بہت سا مال اور اولاد رکھتے ہیں اور ہم کو عذاب نہیں ہوگا (۳۵)
کہدو (کہ مال کا کم زیادہ ہونا شرافت کا معیار نہیں ہے) کہ میرا رب اس کے لئے روزی فراخ کر دیتا ہے جو خود اپنے عمل سے چاہتا ہے اور اس کے لئے تنگ کر دیتا ہے جو اپنے عمل سے خود تنگ کر لیتا ہے (اچھے بُرے عملوں سے)

परन्तु अधिक लोग नही जानते (36)
(ऐ लोगो!) तुम्हारा धन और तुम्हारी सन्तान ऐसी वस्तु नही है, जो तुम को हमारा सम्मानित बना दे (सम्मानित तो वह है) जो विश्वास लाए और जिन्होंने दुनिया में भलाई के कार्य किये उन्हें उनके कर्मों का दोगुना फल मिलेगा और वह (स्वर्ग के) उच्च भवनों में शान्ति से रहेंगे (37)
(परन्तु वह लोग जो हमारी आयतों का प्रभाव नष्ट करने के लिए बल लगा रहे है वह कठोर दण्ड में ग्रस्त किये जाऐंगे (38)
ऐ नबी उनसे कहो मेरा रब अपने बन्दों में से उसकी जीविका विस्तृत करता है जो अपने व्यवहार से स्वयं चाहता है और उसको नपा तुला देता है जो अपने व्यवहार से स्वयं चाहता है जो कुछ तुम व्यय कर देते हो उसके स्थान पर वही तुम को और देगा वह सबसे उत्तम जीविका देने वाला है (39)
और जिस दिन वह उन सबको संग्रह करेगा फिर फरिश्तों से कहेगा क्या यह लोग तुम को पूजा करते थे (40)
वह कहेंगे तू पवित्र है तू ही हमारा सहायक है न कि यह. अपितु यह जिन्नात को पूजा करते थे और अधिकांश उन्ही को मानते थे (41)
तो आज तुम में से कोई किसी को लाभ और हानि पहुंचाने का अधिकार नहीं रखता और हम अत्याचारियों से कहेंगे कि नर्क के दण्ड का जिसको तुम झूट समझते थे स्वाद चखो (42)
और जब उनको हमारी उज्जवल आयतें पढ़कर सुनाई जाती है तो कहते है यह एक (ऐसा व्यक्ति है जो चाहता है कि जिन वस्तुओं की तुम्हारे बाप दादा पूजा किया करते थे उनसे तुमको रोक दें और यह भी कहते है कि यह कुरआन तो झूट है जो इसने बना लिया है और नास्तिकों के पास जब सत्य आया तो उसके विषय में कहने लगे यह तो खुला जादू है (43)
और हमने न तो उनको कोई पुस्तकें दे रखी है जिनको पढ़ते हो और न ही तुम से पहले (इस्माईल के बाद) हमने उनके पास कोई रसूल भेजा था जो उन्हें डराता (44)
और जो लोग उनसे पहले थे उन्होंने झुटलाया सो मेरा कष्ट कैसा हुआ (45)
(ऐ मुहम्मद स0) कहो मैं तुम से केवल एक बात कहता हूँ वह यह कि थोड़ी देर के लिए दो-दो और एक-एक ईश्वर के लिए खड़े हो जाओ फिर विचार व मनन करो वह बात यह है जिसकी मैं ताकीद कर रहा हूँ यह मनन का निमंत्रण जो तुम्हें दिया जा रहा है वह इस आवाहक का उन्माद का परिणाम नही है (कि बिना कारण तुम्हारा विरोध कर रहा है परन्तु वह यह चाहता है कि) तुम पर खुला कष्ट आने से पहले तुम को सावधान कर दे (46)

لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے (۳۶)
(اے لوگو!) تمہاری دولت اور تمہاری اولاد ایسی چیز نہیں ہیں، جو تم کو ہمارا مقرب بنا دیں۔ (مقرب تو وہ ہیں) جو ایمان لائے اور جنہوں نے دنیا میں بھلائی کے کام کئے انہیں ان کے اعمال کا دُگنا بدلا ملے گا۔ اور وہ (جنت کے) بالاخانوں میں امن سے رہیں گے (۳۷)
(لیکن وہ لوگ جو ہماری آیتوں کا اثر زائل کرنے کے لئے زور لگا رہے ہیں وہ سخت عذاب میں مبتلا کئے جائیں گے (۳۸)
اے نبی ان سے کہو میرا رب اپنے بندوں میں سے اس کا رزق کھلا کرتا ہے جو اپنے عمل سے خود چاہتا ہے اور اس کو نپا تلا دیتا ہے جو اپنے عمل سے خود چاہتا ہے جو کچھ تم خرچ کر دیتے ہو اس کی جگہ وہی تم کو اور دیگا وہ سب سے بہتر روزی دینے والا ہے (۳۹)
اور جس دن وہ اُن سب کو جمع کرے گا پھر فرشتوں سے کہے گا کیا یہ لوگ تم کو پوجا کرتے تھے (۴۰)
وہ کہیں گے تو پاک ہے تو ہی ہمارا مددگار ہے نہ کہ یہ بلکہ یہ جنات کو پوجا کرتے تھے اور اکثر ان ہی کو مانتے تھے (۴۱)
تو آج تم میں سے کوئی کسی کو نفع اور نقصان پہنچانے کا اختیار نہیں رکھتا اور ہم ظالموں سے کہیں گے کہ دوزخ کے عذاب کا جس کو تم جھوٹ سمجھتے تھے مزہ چکھو (۴۲)
اور جب ان کو ہماری روشن آیتیں پڑھ کر سنائی جاتی ہیں تو کہتے ہیں یہ ایک (ایسا) شخص ہے جو چاہتا ہے کہ جن چیزوں کی تمہارے باپ دادا پرستش کیا کرتے تھے ان سے تم کو روک دے۔ اور یہ بھی کہتے ہیں کہ یہ قرآن تو جھوٹ ہے جو اس نے بنا لیا ہے۔ اور کافروں کے پاس جب حق آیا تو اس کے بارے میں کہنے لگے یہ تو کھلا جادو ہے (۴۳)
اور ہم نے نہ تو ان کو کوئی کتابیں دے رکھی ہیں جن کو وہ پڑھتے ہوں اور نہ ہی تم سے پہلے (اسماعیل کے بعد) ہم نے ان کے پاس کوئی رسول بھیجا تھا جو انہیں ڈراتا (۴۴)
اور جو لوگ ان سے پہلے تھے انہوں نے جھٹلایا تھا اور جو کچھ ہم نے اُن کو دیا تھا وہ اُس کے دسویں حصے کو بھی نہیں پہنچے تو انہوں نے میرے رسولوں کو جھٹلایا سو میرا عذاب کیسا ہوا (۴۵)
(اے محمدؐ) کہو میں تم سے صرف ایک بات کہتا ہوں وہ یہ کہ تھوڑی دیر کے لئے دو دو اور ایک ایک اللہ کے لئے کھڑے ہو جاؤ پھر غور و فکر کرو۔ وہ بات یہ ہے جس کی میں تاکید کر رہا ہوں یہ دعوت فکر جو تمہیں دی جا رہی ہے وہ اس داعی کے جنون کا نتیجہ نہیں ہے (کہ بلا سبب تمہاری مخالفت کر رہا ہے لیکن وہ یہ چاہتا ہے کہ) تم پر عذاب کھلا سخت آنے سے پہلے تم کو خبردار کر دے (۴۶)

कह दो कि मैंने तुम से कुछ प्रतिफल मांगा तो वह तुम्हारा, मेरा प्रतिफल तो ईश्वर का दायित्व है और हर वस्तु से अवगत है (47)

उनसे कहो मेरा रब (मुझ पर) सत्य का प्रेषण करता है और वह सम्पूर्ण गुप्त वास्तविकताओं का जानने वाला है (48)

कह दो कि सत्य आ गया और व्यर्थ ने न तो पहली बार कुछ पैदा किया और न पुनः पैदा कर सकता है (49)

कह दो कि यदि मैं कथानुसार तुम्हारे पथ भ्रष्ट हूं तो मेरी पथ भ्रष्टता की हानि मुझ ही को है जबकि मैं पथ भ्रष्ट नही हूं और यदि सत्य मार्ग पर हूं तो यह उसका आधार है जो मेरा रब मेरी ओर वही प्रेषित करता है, निःसन्देह व सुनने वाला और निकट है (50)

और यदि तुम देखो जब वह लोग घबराए हुए इधर उधर भागे फिरेंगे परन्तु कष्ट से नही बचेंगे और निकट ही से पकड़ लिए जाएंगे (51)

और उस समय कहेंगे कि हम विश्वास ले आए परन्तु अब तो देर हो चुकी, धर्म विश्वास से बहुत दूर हो चुके होंगे इतनी दूर से उनका हाथ विश्वास तक क्यों कर पहुंच सकता है (52)

और पहले तो दुनिया में इससे इनकार करते रहे और बिन देखे अटकल के तीर चलाते रहे (53)

उस रोज उनमें और उनकी (अर्थात विश्वास लाने की इच्छाओं के मध्य आवरण बाधक कर दिया जायेगा जैसा कि पहले उन्ही की प्रकार के लोगों के साथ किया गया वह भी (उनकी भांति) उलझन में डालने वाले भ्रम में पड़े हुए थे (54)

सूरत फातिर मक्की (35)

हर प्रकार की प्रशंसा ईश्वर ही के लिए है जो आकाशों और पृथ्वी का बनाने वाला है और फरिश्तों को जिनके दो-दो, तीन-तीन और चार-चार पर है अर्थात शक्तियां संदेश पहुंचाने वाला बनाता है वह रचनाओं की रचना में जैसा चाहता है वृद्धि कर देता है, निःसन्देह ईश्वर हर वस्तु के अनुमान बनाने वाला है, (1)

ईश्वर इन्सानों के लिए जो खोल दे अपनी कृपा तो कोई उसको बन्द करने वाला नही और जो बन्द कर दे तो इसके बाद कोई उसको खोलने वाला नही वह प्रभुत्वशाली है उसका कोई कार्य युक्ति से रहित नही (2)

लोगो! ईश्वर के जो तुम पर उपकार हैं उनको याद करो क्या ईश्वर के अतिरिक्त कोई और जनक है जो तुम को ऊपर और नीचे से जीविका दे? क्या नास्तिक कहते हैं कोई पूज्य नही, निःसन्देह ईश्वर है पस तुम कहां बहके फिरते हो (3)

(ऐ रसूल) यदि वह लोग तुमको झुठलाएं तो तुम से

کہدو کہ میں نے تم سے کچھ صلہ مانگا ہو تو وہ تمہارا میرا اجر تو اللہ ہی کے ذمہ ہے اور وہ ہر چیز سے خبر دار ہے (۴۷)

ان سے کہو میرا رب (مجھ پر) حق کا القا کرتا ہے اور وہ تمام پوشیدہ حقیقت کا جاننے والا ہے (۴۸)

کہدو کہ حق آگیا اور باطل نے نہ تو پہلی بار کچھ پیدا کیا اور نہ دوبارہ پیدا کرسکتا ہے (۴۹)

کہدو کہ اگر میں بقول تمہارے گمراہ ہوں تو میری گمراہی کا نقصان مجھی کو ہے جب کہ میں گمراہ نہیں ہوں اور اگر ہدایت پر ہوں تو یہ اس کا طفیل ہے جو میرا رب میری طرف وحی بھیجتا ہے، بے شک وہ سننے والا اور قریب ہے (۵۰)

اور کاش تم دیکھو جب وہ لوگ گھبرائے ہوئے اِدھر اُدھر بھاگے پھریں گے مگر عذاب سے نہیں بچیں گے اور قریب ہی سے پکڑ لئے جائیں گے (۵۱)

اور اس وقت کہیں گے کہ ہم ایمان لے آئے مگر اب تو دیر ہوچکی۔ ایمان سے بہت دور ہو چکے ہوں گے اتنی دور سے ان کا ہاتھ ایمان تک کیوں کر پہنچ سکتا ہے (۵۲)

اور پہلے تو دنیا میں اس سے انکار کرتے رہے اور بن دیکھے دور ہی سے اٹکل کے تیر چلاتے رہے (۵۳)

اس روز ان میں اور اُن کی (یعنی ایمان لانے کی) خواہشوں کے درمیان پردہ حائل کردیا جائے گا۔ جیسا کہ پہلے انہیں کی طرح کے لوگوں کے ساتھ کیا گیا وہ بھی (ان کی طرح) الجھن میں ڈالنے والے شک میں پڑے ہوئے تھے (۵۴)

سورت فاطر۔ مکی (۳۵)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ہر طرح کی تعریف اللہ ہی کے لئے ہے جو آسمانوں اور زمین کا بنانے والا ہے اور فرشتوں کو جن کے دو دو، تین تین اور چار چار پر یعنی طاقتیں ہیں پیغام رساں بناتا ہے وہ مخلوقات کی پیدائش میں جیسا چاہتا ہے اضافہ کردیتا ہے بے شک اللہ ہر چیز کے اندازے بنانے والا ہے (۱)

اللہ انسانوں کے لئے جو کھول دے قانون کے مطابق اپنی مہر تو کوئی اس کو بند کرنے والا نہیں۔ اور جو بند کردے تو اس کے بعد کوئی اس کو کھولنے والا نہیں وہ غالب ہے اس کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں (۲)

لوگو! اللہ کے جو تم پر احسانات ہیں ان کو یاد کرو کیا اللہ کے علاوہ کوئی اور خالق ہے جو تم کو اوپر اور نیچے سے رزق دے؟ کیا کافر کہتے ہیں کوئی الٰہ نہیں یقیناً اللہ ہے پس تم کہاں بہکے پھرتے ہو (۳)

(اے رسول!) اگر وہ لوگ تم کو جھٹلائیں تو تم سے پہلے بھی

पहले भी रसूल झुठलाए गए है, और सारे कार्य ईश्वर ही के सामने प्रस्तुत किए जाएंगे (4)

رسول جھلائے گئے ہیں اور سارے کام اللہ ہی کے سامنے پیش کئے جائیں گے (۴)

लोगो! ईश्वर का वचन सच्चा है तो तुम को दुनिया का जीवन धोके में न डाल दे और न छल देने वाला (शैतान) तुम्हें ईश्वर से कदापि धोके में न डाल दे (5)

لوگو! اللہ کا وعدہ سچا ہے تو تم کو دنیا کی زندگی دھوکے میں نہ ڈال دے اور نہ فریب دینے والا (شیطان) تمہیں اللہ سے ہرگز وہ دھوکے میں نہ ڈالدے (۵)

विश्वास करो शैतान तुम्हारा शत्रु है तुम भी उसे शत्रु ही समझो वह अपने मानने वाले दल को बुलाता है ताकि वह नर्क वालों में हो (6)

یقین کرو شیطان تمہارا دشمن ہے تم بھی اسے دشمن ہی سمجھو وہ اپنے ماننے والے گروہ کو بلاتا ہے تا کہ وہ دوزخ والوں میں ہوں (۶)

जिन्होंने कुफ्र किया उनके लिए कठोर दण्ड है जो विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे, उनके लिए क्षमा और बड़ा प्रतिदान है (7)

جنہوں نے کفر کیا ان کے لئے سخت عذاب ہے اور جو ایمان لائے اور عمل نیک کرتے رہے ان کے لئے بخشش اور بڑا ثواب ہے (۷)

भला वह व्यक्ति जिसके दुषकर्म अच्छे करके दिखाए गए और वह अच्छा समझने लगे (तो क्या वह सदाचारी व्यक्ति जैसा हो सकता है? नही) अतः ईश्वर का नियम जिसे चाहता है उसे (उसके पापों की सजा में) पथ भ्रष्टता में पड़ा रहने देता है और जिसे चाहता है (उसके सत्कर्मों के कारण जीवन का) सीधा मार्ग दिखा देता है, (तो जो विश्वास नही ला रहें है) तो उन लोगों पर दुख करके आप का जी न जाता रहे वह जो कुछ करते है, ईश्वर उससे अवगत है (8)

بھلا وہ شخص جس کے اعمال بد اچھے کر کے دکھائے گئے اور وہ اچھا سمجھنے لگے (تو کیا وہ نیک آدمی جیسا ہو سکتا ہے؟ نہیں) لہٰذا اللہ کا قانون جسے چاہتا ہے اسے (اس کے گناہوں کی سزا میں) گمراہی میں پڑا رہنے دیتا ہے اور جسے چاہتا ہے (اس کی نیکیوں کی وجہ سے زندگی کی) سیدھی راہ دکھا دیتا ہے (تو جو ایمان نہیں لا رہے ہیں) تو ان لوگوں پر افسوس کر کے آپ کی جان نہ جاتی رہے وہ جو کچھ کرتے ہیں اللہ اس سے واقف ہے (۸)

और ईश्वर ही तो है जो वायु को भेजता है तो वह बादल बन जाती है फिर हम उसे एक बेजान नगर की ओर हांक देते है, जो (शुष्क होने से) निर्जीव पड़ा हो और उससे पानी बरसा कर मृतक भूमि को जीवित (हरित) कर देते है (क्यामत के दिन) मृतकों का जीवित होना भी इसी प्रकार होगा (9)

اور اللہ ہی تو ہے جو ہواؤں کو بھیجتا ہے تو وہ بادل بن جاتی ہیں پھر ہم اسے ایک بے جان شہر کی طرف ہانک دیتے ہیں جو (خشک ہونے سے) مردہ پڑا ہوا اور اس سے پانی برسا کر مردہ زمین کو زندہ (سرسبز) کر دیتے ہیں (قیامت کے روز) مردوں کا جی اٹھنا بھی اسی طرح ہوگا (۹)

जो व्यक्ति सम्मान का इच्छुक है तो (उसे समझ लेना चाहिए कि) सारा सम्मान ईश्वर ही के लिए है (जिसको सम्मान मिलता है आज्ञाकारी पर) कुरआन के पवित्र नियमानुसार, अच्छा कर्म ऊपर को उठता है अर्थात प्रभुत्व प्राप्त करता है परन्तु उस कर्म को सत्कर्म अधिपत्य और उच्च करता है और जो लोग बुरे बुरे छल करते है उनके लिए कठोर दण्ड है और उनका मकर नष्ट हो जाएगा (अर्थात अधिपत्य नही होगा) (10)

جو شخص عزت کا طلب گار ہے تو (اسے سمجھ لینا چاہیے کہ) ساری عزت اللہ ہی کے لئے ہے (جس کو عزت ملتی ہے فرمانبرداری پر) قرآن کریم کے طیب قانون کے مطابق اچھا عمل اوپر کو اٹھتا ہے یعنی غلبہ حاصل کرتا ہے مگر اس کو عمل صالح غالب اور بلند کرتا ہے اور جو لوگ بُرے بُرے مکر کرتے ہیں ان کے لئے سخت عذاب ہے اور ان کا مکر نابود ہو جائے گا (یعنی غالب نہیں ہوگا) (۱۰)

और ईश्वर ही ने तुमको अर्थात तुम्हारे माता पिता आदम व हव्वा को मिट्टी से उत्पन्न किया फिर उनके वंश को वीर्य से फिर तुम को जोड़ा-जोड़ा बना दिया, और कोई स्त्री न गर्भवती होती है और न जनती है परन्तु उसके नियम से और न किसी बड़ी आयु वाले को आयु अधिक दी जाती है और न उसकी आयु कम की जाती है परन्तु (सब कुछ) पुस्तक में लिखा हुआ है निःसंदेह यह ईश्वर को आसान है (11)

اور اللہ ہی نے تم کو یعنی تمہارے ماں باپ آدم وحوا کو مٹی سے پیدا کیا پھر ان کی نسل کو نطفے سے پھر تم کو جوڑا جوڑا بنا دیا اور کوئی عورت نہ حاملہ ہوتی ہے اور نہ جنتی ہے مگر اس کے قانون سے اور نہ کسی بڑی عمر والے کو عمر زیادہ دی جاتی ہے اور نہ اس کی عمر کم کی جاتی ہے مگر (سب کچھ) کتاب میں لکھا ہوا ہے بے شک یہ اللہ کو آسان ہے (۱۱)

और दोनों दरया (मिलकर) एक से नही हो जाते यह तो मीठा है प्यास बुझाने वाला जिसका पानी रुचिकर है और यह खारी है कड़वा और सबसे तुम प्रफुल्ल मांस खाते हो और आभूषण निकालते हो जिसे पहनते हो और तुम दरया में नावों को देखते हो कि पानी को फाड़ती चली आती है ताकि तुम

اور دونوں دریا (مل کر) یکساں نہیں ہو جاتے یہ تو میٹھا ہے پیاس بجھانے والا جس کا پانی خوشگوار ہے اور یہ کھاری ہے کڑوا۔ اور سب سے تم تازہ گوشت کھاتے ہو اور زیور نکالتے ہو جسے پہنتے ہو۔ اور تم دریا میں کشتیوں کو دیکھتے ہو کہ پانی کو پھاڑتی چلی آتی ہیں تا کہ تم اس کے فضل کو تلاش

उसके कृपा दया को खोजो और ताकि आज्ञाकारी करो (12)

کرواورتا کہ فرمانبرداری کرو(۱۲)

वही रात को दिन में प्रविष्ट करता है और वही दिन को रात में प्रविष्ट करता है और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा को कार्य में लगा रखा है (बिना पारिश्रमिक के) हर एक निश्चित समय तक चल रहा है वही तुम्हारा ईश्वर है उसी का राज्य है और जिन लोगों को तुम उसके अतिरिक्त पुकारते हो वह खजूर की गुठली के छिलके के बराबर भी तो (किसी वस्तु के) स्वामी नहीं (13)

وہی رات کودن میں داخل کرتا ہےاوروہی دن کورات میں داخل کرتا ہےاوراسی نےسورج اورچاندکوکام میں لگارکھا ہے(بنااجرت کے)ہرایک ایک وقت مقررتک چل رہا ہےوہی تمہاراپروردگار ہے۔اسی کی بادشاہی ہے۔اورجن لوگوں کوتم اس کےسواپکارتےہووہ کھجورکی گٹھلی کےچھلکے کےبرابربھی تو(کسی چیزکے)مالک نہیں (۱۳)

यदि तुम उनको पुकारो तो वह तुम्हारी पुकार न सुने और यदि सुन भी लें तो तुम्हारी बात को स्वीकार न कर सके और क्यामत के दिन तुम्हारे अनेकेश्वरवाद से इनकार कर देंगे और हर बात की उचित सूचना ईश्वर के अतिरिक्त कोई नहीं दे सकता (14)

اگرتم ان کوپکاروتووہ تمہاری پکارنہ سنیں اوراگرسن بھی لیں تو تمہاری بات کوقبول نہ کرسکیں اورقیامت کےروزتمہارے شرک سےانکارکردیں گےاورہربات کی صحیح خبراللہ کے علاوہ کوئی نہیں دےسکتا(۱۴)

लोगो! तुम सब ईश्वर के आश्रित हो और ईश्वर (तुम्हारी पूजा से निश्चिन्त है और प्रशंसा योग्य है) (15)

لوگو! تم سب اللہ کےمحتاج ہواوراللہ (تمہاری عبادت سے)بےنیاز ہےاورحمدکےلائق ہے(۱۵)

वह चाहे तो तुम सबको समाप्त कर दे और तुम्हारी जगह एक नई रचना उत्पन्न कर दे (16)

وہ چاہےتوتم سب کوختم کردےاورتمہاری جگہ ایک نئی مخلوق پیداکردے(۱۶)

और ऐसा करना ईश्वर के लिए कोई कठिन कार्य नहीं है (17)

اورایساکرنااللہ کےلئےکوئی مشکل کام نہیں ہے(۱۷)

और कोई भार उठाने वाला दूसरे का भार न उठाएगा और कोई भार में दबा हुआ अपना भार बंटाने को किसी को बुलाएगा तो कोई उससे कुछ न उठाएगा यद्यपि सम्बन्धि ही क्यों न हो (ऐ मुहम्मद स0) तुम उन्हीं लोगों को उपदेश कर सकते हो जो बिना देखे अपने रब से डरते हैं और नमाज़ स्थापित करते हैं और जो व्यक्ति पवित्र होता है अपने ही लिए पवित्र होता है और सबको ईश्वर ही की ओर लौटकर जाना है (18)

اورکوئی بوجھ اٹھانےوالادوسرےکابوجھ نہ اٹھائےگااور کوئی بوجھ میں دباہوااپنابوجھ بٹانےکوکسی کوبلائےگاتو کوئی اس میں سےکچھ نہ اٹھائےگااگرچہ قرابت دارہی ہو (اےمحمدؐ)تم ان ہی لوگوں کونصیحت کرسکتےہوجوبن دیکھے اپنےرب سےڈرتےہیں اورنمازقائم کرتےہیں۔اورجو شخص پاک ہوتا ہےاپنےہی لئےپاک ہوتا ہےاورسب کو اللہ ہی کی طرف لوٹ کرجانا ہے(۱۸)

और अंधा और आंखों वाला बराबर नहीं (19)

اوراندھااورآنکھوں والابرابرنہیں (۱۹)

और न अंधकार और प्रकाश बराबर है (20)

اورنہ اندھیرااورروشنی برابرہیں(۲۰)

और न साया और धूप बराबर है (21)

اورنہ سایہ اوردھوپ برابرہیں(۲۱)

और न जीवित और मृतक बराबर हो सकते हैं ईश्वर का नियम जिसको चाहता है सुना देता है और तुम उनको जो समाधियों में दफ़्न हैं नहीं सुना सकते (22) {30:52;27:80}

اورنہ زندےاورمردےبرابرہوسکتےہیں۔اللہ کاقانون جس کوچاہتا ہےسنادیتا ہےاورتم ان کوجوقبروں میں دفن ہیں نہیں سناسکتے(۲۲)[۳۰:۵۲;۲۷:۸۰]

आप तो केवल मार्ग दर्शन करने वाले हो (23)

آپ توصرف ہدایت کرنےوالےہو(۲۳)

हमने तुमको सत्य के साथ शुभ सूचना सुनाने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है और निःसन्देह जो भी समुदाय हुआ है निःसन्देह उसमें सावधान करने वाला भेजा गया है (24)

ہم نےتم کوحق کےساتھ خوش خبری سنانےوالااورڈرانے والابناکربھیجا ہےاوربےشک جوبھی امت گزری ہیں یقیناً ان میں متنبہ کرنےوالابھیجاگیا ہے(۲۴)

और यदि वह तुम को झुठलाएं तो जो लोग उनसे पहले थे वह भी झुठला चुके हैं उनके पास उनके रसूल चिन्ह और सहीफे और उज्जवल पुस्तक लेकर आते रहे (25)

اوراگروہ تمہاری تکذیب کریں توجولوگ ان سےپہلےتھے وہ بھی جھٹلاچکےہیں،ان کےپاس ان کےرسول نشانیاں اورصحیفےاورروشن کتابیں لےکرآتےرہے(۲۵)

फिर मेरे नियम ने नास्तिकों को पकड़ लिया सो देख लो कि मेरा कष्ट कैसा हुआ (26)

پھرمیرےقانون نےکافروں کوپکڑلیا سودیکھ لوکہ میراعذاب کیساہوا(۲۶)

क्या तुम ने नहीं देखा कि ईश्वर ने आकाश से

کیاتم نےنہیں دیکھاکہ اللہ نےآسمان سےمینہ برسایاتو

पानी बरसाया तो हमने अर्थात ईश्वर के नियम ने उससे भांति-भांति के रंगों के मेवे उत्पन्न किये और पर्वतों में सफेद और लाल रंगों के खण्ड है कतिपय काले सियाह है (27)

इन्सानों और जानवरों और पशुओं के भी कई प्रकार के रंग है ईश्वर से तो उसके बन्दों में से वही डरते है जो ज्ञान वाले है निःसन्देह ईश्वर प्रभुत्वशाली और क्षमा करने वाला है (28)

जो लोग ईश्वर की पुस्तक पढ़ते है और नमाज स्थापित करते है और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से गुप्त और प्रकट व्यय करते है वह इस व्यापार के लाभ के आशावान है जो कभी नष्ट न होगा (29)

ہم نے یعنی اللہ کے قانون نے اس سے طرح طرح کے رنگوں کے میوے پیدا کئے اور پہاڑوں میں سفید اور سرخ رنگوں کے قطعات ہیں اور بعض کالے سیاہ ہیں (۲۷)

انسانوں اور جانوروں اور چارپایوں کے بھی کئی طرح کے رنگ ہیں اللہ سے تو اس کے بندوں میں سے وہی ڈرتے ہیں جو علم والے ہیں بے شک اللہ غالب اور بخشنے والا ہے (۲۸)[۲۷:۸۲:۲۶:۱۰:۴۵:۴:۳:۱۹۱:۲۹:۱۰]

جو لوگ اللہ کی کتاب پڑھتے ہیں اور نماز قائم کرتے ہیں اور جو کچھ ہم نے ان کو دیا ہے اس میں سے پوشیدہ اور ظاہر خرچ کرتے ہیں وہ اس تجارت کے فائدے کے امیدوار ہیں جو کبھی تباہ نہیں ہوگی (۲۹)

क्योंकि ईश्वर उनको पूरा-पूरा बदला देगा और अपने कृपा दया से कुछ अधिक भी देगा वह तो क्षमा करने वाला और कृपालु है (30)

और यह पुस्तक जो हमने तुम्हारी ओर भेजी है सत्य है और उन पुस्तकों की पुष्टि करती है (जो पहले) सुरक्षा के मध्य थी निःसन्देह ईश्वर अपने भक्तों से अवगत और देखने वाला है (31)

کیونکہ اللہ ان کو پورا پورا بدلہ دے گا اور اپنے فضل سے کچھ زیادہ بھی دے گا۔ وہ تو بخشنے والا اور مہربان ہے (۳۰)

اور یہ کتاب جو ہم نے تمہاری طرف بھیجی ہے برحق ہے اور ان کتابوں کی تصدیق کرتی ہے (جو پہلے) حفاظت کے درمیان تھیں بے شک اللہ اپنے بندوں سے خبردار اور دیکھنے والا ہے (۳۱)

फिर हमने अपने भक्तों में से विशेष बन्दों को पुस्तक का उत्तराधिकारी बनाया जिन्हें योग्य समझ कर चुना क्योंकि इन्सानों में कई प्रकार है कुछ तो (अवज्ञा करके) अपने जी पर अन्याय करते है और कुछ उनमें से मध्यवर्ती मार्ग ग्रहण करते है अवज्ञा नही करते सच्चे मुसलमान है और (ईश्वर के मुख्य है) जो ईश्वर के नियम से सत्कर्मों में सामान्य मुसलमानों से आगे निकल जाते है और यह (उन पर ईश्वर की) बहुत बड़ा कृपा दया है (32) {7:46,47; 56:7से11}

پھر ہم نے اپنے بندوں میں سے خاص بندوں کو کتاب کا وارث بنایا جنہیں اہل سمجھ کر منتخب کیا۔ کیونکہ انسانوں میں کئی قسم ہیں کچھ تو (نافرمانی کرکے) اپنی جان پر ستم ڈھاتے ہیں اور کچھ ان میں سے درمیانی راستہ اختیار کرتے ہیں نافرمانی نہیں کرتے سچے مسلمان ہیں اور کچھ (اللہ کے خاص ہیں) جو اللہ کے قانون سے نیکیوں میں عام مسلمانوں سے آگے نکل جاتے ہیں اور یہ (ان پر اللہ کا) بہت بڑا فضل ہے (۳۲)[۷:۴۶،۴۷؛ ۵۶:۷تا۱۱]

नोट- इन्सानों में तीन प्रकार होती है

(1) ईशदूत (2) आस्तिक

(3) काफिर (नास्तिक) कपटि

इस आयत में तीनों से तात्पर्य है अर्थात ईश्वर ने जिन इन्सानों को चुना वह ईशदूत है और जो अन्याय करने वाले है वह काफिर कपटि है और जिन पर दया की वह आस्तिक है,

نوٹ:۔ انسانوں میں تین قسم ہوتی ہیں۔

(۱) رسول (۲) مومن (۳) کافر منافق

اس آیت میں تینوں سے مراد ہے یعنی اللہ نے جن انسانوں کو چنا وہ رسول ہیں اور جو ظلم کرنے والے ہیں وہ کافر منافق ہیں اور جن پر رحم کیا وہ مومن ہیں۔

(जिन दो प्रकार के लोगों के लिए) इस कृपा दया में से जो मिलेगा वह सदैव रहने वाला स्वर्ग है जिसमें वह प्रविष्ट होंगे वहां उन्हें सोने के कंगन और मोतियों से सजाया जाएगा वहां उनका वस्त्र रेशम का होगा (33)

(ان دو قسم کے لوگوں کے لئے) اس فضل سے جو ملے گا وہ ہمیشہ رہنے والی جنتیں ہیں جن میں وہ لوگ داخل ہوں گے وہاں انہیں سونے کے کنگن اور موتیوں سے آراستہ کیا جائے گا۔ وہاں ان کا لباس ریشم کا ہوگا (۳۳)

और वह कहेंगे कि सब प्रशंसा उस ईश्वर के लिए है जिसने हम से हर प्रकार का क्लेश व शोक दूर कर दिया निःसन्देह हमारा रब क्षमा करने वाला और आदर करने वाला है (34)

اور وہ کہیں گے کہ تمام تعریف اس اللہ کے لئے ہے جس نے ہم سے ہر قسم کا رنج و غم دور کردیا بے شک ہمارا رب بخشنے والا اور قدردان ہے (۳۴)

जिसने हमें अपनी कृपा से अनन्त निवास स्थान में ठेहराया, यहां हमें न तो किसी प्रकार का कष्ट पहुंचेगा और न थकान होगी (35)

جس نے ہمیں اپنے فضل سے ابدی قیام گاہ میں ٹھہرایا۔ یہاں ہمیں نہ تو کسی طرح کی تکلیف پہنچے گی اور نہ تکان ہوگی (۳۵)

(अब रहे तीसरे प्रकार के मानव) अर्थात जिन लोगों ने कुफ्र और अन्याय का मार्ग अपनाया उनके लिए नर्क की अग्नि है न तो उनको मौत ही आएगी, कि मर जाऐं और न उनके दण्ड में से किसी प्रकार की कमी की जाएगी, हर अवज्ञाकारी अत्याचारी को हम इसी प्रकार कठोर दण्ड देते हैं (36)

(اب رہے تیسرے قسم کے آدمی) یعنی جن لوگوں نے کفر اور ظلم کی راہ اختیار کی ان کے لئے جہنم کی آگ ہے نہ تو ان کو موت ہی آئے گی کہ مر جائیں اور نہ ان کے عذاب میں سے کسی طرح کی کمی کی جائے گی ہر نافرمان ظالم کو ہم اسی طرح سخت عذاب دیتے ہیں (۳۶)

और वह अवज्ञाकारी उसमें चित्कार करेंगे कि ऐ हमारे ईश्वर हमको निकाल ले अब हम सत्कर्म किया करेंगे, न वह जो पहले करते थे (उत्तर दिया जाएगा) क्या हमने तुम को इतनी आयु न दी थी कि उसमें जो समझना चाहता समझ लेता और तुम्हारे पास डराने वाला भी आया, तो अब स्वाद चखो अत्याचारियों का कोई सहायक नही (37) {67:8;43:44} कुरआन नजीर है

اور وہ نافرمان اس میں چلائیں گے کہ اے رب ہم کو نکال لے اب ہم نیک عمل کیا کریں گے نہ وہ جو پہلے کرتے تھے (جواب دیا جائے گا) کیا ہم نے تم کو اتنی عمر نہ دی تھی کہ اس میں جو سمجھنا چاہتا سمجھ لیتا. اور تمہارے پاس ڈرانے والا بھی آیا تو اب مزے چکھو ظالموں کا کوئی مددگار نہیں (۳۷) [۴۳:۴۴؛ ۶۷:۸، قرآن نذیر ہے]

निःसन्देह ईश्वर ही आकाशों और पृथ्वी की गुप्त बातों का जानने वाला है वह तो हृदयों के भेदों तक से अवगत है (38)

वही तो है जिसने तुम को पृथ्वी में पहलों का उत्तराधिकारी बनाया तो जिसने कुफ्र किया उसके कुफ्र की हानि उसी को है और काफिरों के लिए उनके कुफ्र से ईश्वर के यहां अप्रसन्नता ही बढ़ती हे और काफिरों को उनका कुफ्र हानि ही अधिक करता है (39)

भला तुम ने अपने साझियों को देखा जिनको तुम ईश्वर के सिवा पुकारते हो मुझे दिखाओ कि उन्होंने पृथ्वी में कौन-सी वस्तु पैदा की है या बताओ कि आकाशों के बनाने में उनका साझा है या हमने उनको पुस्तक दी है जो वह उसका प्रमाण रखते है इनमें से कोई बात भी नही) अपितु अत्याचारी लोग जो एक दूसरे को वचन देते हैं केवल छल है (40)

ईश्वर का नियम ही है, जो आकाशों और पृथ्वी को थामे रखता है कि टल न जाए यदि टल जाए तो ईश्वर के सिवा कोई ऐसा नही जो उनको थाम सके निःसन्देह वह सहनशील क्षमा करने वाला है (41)

और वह ईश्वर की शपथें खाते हैं यदि उनके पास कोई मार्ग दर्शन करने वाला आए तो वह हर एक समुदाय से बढ़कर पथ प्रदर्शन पर हों परन्तु जब उनके पास मार्ग दर्शन करने वाला आया तो उससे उनको घृणा ही बढ़ी (42)

वह लोग पृथ्वी में घमण्ड करने और बुरी चाल चलने लगे और बुरी चाल की हानि इसके चलने वाले पर ही पड़ती है तो वह लोग अगले लोगों की नीति (और उनके दण्ड) के सिवा और किस वस्तु के प्रतीक्षक है (यदि ऐसा है तो दण्ड से बच नही सकते) तुम ईश्वर की प्रकृति में कोई परिवर्तन न देखोगे (43)

بے شک اللہ ہی آسمانوں اور زمین کی پوشیدہ باتوں کا جاننے والا ہے وہ تو دلوں کے بھیدوں تک سے واقف ہے (۳۸)

وہی تو ہے جس نے تم کو زمین میں پہلوں کا جانشین بنایا تو جس نے کفر کیا اس کے کفر کا نقصان اسی کو ہے اور کافروں کے حق میں اُن کے کفر سے پروردگار کے یہاں ناخوشی ہی بڑھتی ہے اور کافروں کو ان کا کفر نقصان ہی زیادہ کرتا ہے (۳۹)

بھلا تم نے اپنے شریکوں کو دیکھا جن کو تم اللہ کے سوا پکارتے ہو مجھے دکھاؤ کہ انہوں نے زمین میں کونسی چیز پیدا کی ہے یا بتاؤ کہ آسمانوں کے بنانے میں ان کی شرکت ہے یا ہم نے ان کو کتاب دی ہے؟ جو وہ اس کی سند رکھتے ہیں؟ (ان میں سے کوئی بات بھی نہیں) بلکہ ظالم لوگ جو ایک دوسرے کو وعدہ دیتے ہیں محض فریب ہے (۴۰)

اللہ کا قانون ہی ہے جو آسمانوں اور زمین کو تھامے رکھتا ہے کہ ٹل نہ جائیں اگر ٹل جائیں تو اللہ کے سوا کوئی ایسا نہیں جو اُن کو تھام سکے. بے شک وہ بردبار بخشنے والا ہے (۴۱)

اور وہ اللہ کی قسمیں کھاتے ہیں اگر ان کے پاس کوئی ہدایت کرنے والا آئے تو وہ ہر ایک امت سے بڑھ کر ہدایت پر ہوں مگر جب ان کے پاس ہدایت کرنے والا آیا تو اس سے ان کو نفرت ہی بڑھی (۴۲)

وہ لوگ زمین میں غرور کرنے اور بُری چال چلنے لگے اور بُری چال کا وبال اس کے چلنے والے پر ہی پڑتا ہے تو وہ لوگ اگلے لوگوں کی روش (اور ان کے عذاب) کے سوا اور کس چیز کے منتظر ہیں؟ (اگر ایسا ہے تو عذاب سے بچ نہیں سکتے) تم اللہ کی عادت قانون میں کوئی تبدیلی نہ پاؤ گے اور اس کے طریقے میں کوئی تغیر نہ دیکھو گے (۴۳)

क्या उन लोगों ने पृथ्वी में भ्रमण नही किया (यदि पृथ्वी में भ्रमण करते) तो देखते कि जो लोग उनसे पहले हो चुके है (उनकी अवज्ञा के कारण) उनका कैसा बुरा अन्त हुआ, यद्यपि वह लोग उनसे अधिक

کیا ان لوگوں نے زمین کی سیر نہیں کی (اگر زمین میں سیر کرتے) تو دیکھتے کہ جو لوگ ان سے پہلے ہو چکے ہیں (ان کی نافرمانی کی وجہ سے) ان کا کیسا بُرا انجام ہوا.

सत्कर्म अधिपत्य और उच्च शक्तिशाली थे (उनको समझ लेना चाहिए कि) ईश्वर ऐसा नहीं है कि आकाशों और पृथ्वी में से कोई वस्तु उसे विवश कर सके, वह सब कुछ जानता है और हर वस्तु के अनुमान नियम बनाने वाला है (44)

यदि ईश्वर लोगों को उनके दुषकर्मों के कारण तुरन्त पकड़ने लगता तो पृथ्वी पर किसी जीवधारी अर्थात जिन्न व इन्सान को न छोड़ता, परन्तु वह उनको एक निश्चित समय तक के लिए छूट देता रहता है (ताकि लोग बुराईयों से पश्चाताप करके अपनी दशा ठीक कर लें) फिर जब छूट का समय पूरा हो जाता है (तो उनको दुषकर्मों का दण्ड देता है इसलिए कि) ईश्वर अपने बन्दों (के कर्मों) को देखता रहता है (45)

सूरत यासीन मक्की 36

यासीनः- या सय्यद! मुहम्मद स0 (1)

युक्ति से भरा यह कुरआन साक्षी है (2)

कि ऐ मुहम्मद स0 निःसंदेह तुम रसूलों में से हो (3)

और जीवन के सीधे मार्ग पर चल रहे हो (4)

(यह कुरआन उसका) प्रेषित किया हुआ है जो सब पर प्रभुत्व शाली है और जिस की अनुकम्पा हर वस्तु को घेरे हुए है (5)

(यह कुरआन इस लिए प्रेषित किया गया है) ताकि तुम उन लोगों को दुषकर्मों के परिणाम से सावधान करो जिनके पूर्वजों को सावधान नहीं किया गया, अतः वह अचेतना में पड़े हुए हैं (6) {40:34}

उनमें से अधिकांश पर (उनकी अवज्ञा के कारण ईश्वर की) बात पूरी हो चुकी है सो वह विश्वास नहीं लाएंगे (7)

हमारे नियम ने (उनकी अवज्ञा के कारण) उनकी गर्दनों में पट्टे डाल दिए हैं जिन से वह ठोड़ियों तक जकड़े हुए हैं और इस कारण से उनके सिरे ऊपर उठे हुए हैं (8)

नोट- अर्थात वह लोग इतने अवज्ञाकारी हो गए हैं कि उनकी समझ में कोई बात आती ही नहीं जैसे घमण्डी आदमी किसी की सुनता ही नहीं और कहा जाता है कि आकाश को थूक रहा है, इधर उधर को देखता ही नहीं अर्थात कोई अच्छी बात सुनता ही नहीं और अत्याचार किए जा रहा है सिर ऊपर को उठा रखा है,

(वह इतने अवज्ञाकारी हो चुके हैं कि इस अन्धेपन ने) उनके आगे एक आवरण खड़ा कर दिया है, और एक उनके पीछे आवरण है और उनकी आंखों पर भी घमण्ड का आवरण है अतः वास्तविक्ता कैसी ही स्पष्ट हो वह देख नहीं सकते (9) {मानो उनकी आंखो और हृदय पर ताला लग गया है पश्चाताप का द्वार बन्द हो चुका है}

(ऐ मुहम्मद स0 उनकी अवज्ञा ने यह सिद्ध कर दिया है कि) आपने उनको डराया या न डराया उनके लिए बराबर है वह विश्वास नहीं लाएंगे (वह उस स्थान पर पहुंच चुके हैं कि नियम ने उनको भ्रष्ट सिद्ध कर दिया है) (10)

आपका उपदेश उसी व्यक्ति पर प्रभाव करेगा जो उपदेश (और ईश्वर की वाणी) सुनने को तैयार हो और जो बे देखे ईश्वर से डरता हो ऐसे (सदाचारी

حالانکہ وہ لوگ ان سے زیادہ طاقت والے تھے (ان کو سمجھ لینا چاہیے کہ) اللہ ایسا نہیں ہے کہ آسمانوں اور زمین میں سے کوئی چیز اسے عاجز کر سکے وہ سب کچھ جانتا ہے اور ہر چیز کے اندازے قانون بنانے والا ہے (۴۴)

اگر اللہ لوگوں کو ان کے اعمال بد کے سبب فوراً پکڑنے لگتا تو روئے زمین پر کسی جاندار یعنی جن وانسان کو نہ چھوڑتا لیکن وہ ان کو ایک مقرر وقت تک کے لئے مہلت دیتا رہتا ہے (تاکہ لوگ برائیوں سے توبہ کر کے اپنی حالت درست کر لیں) پھر جب مہلت کا وقت پورا ہو جاتا ہے (تو ان کو ان کے اعمال بد کی سزا دیتا ہے اس لئے کہ) اللہ اپنے بندوں (کے اعمال) کو دیکھتا رہتا ہے (۴۵)

سورت یٰسین مکی (۳۶)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

یٰسین۔یا سید! محمدؐ (۱) حکمت سے بھرا یہ قرآن شاہد ہے (۲)

کہ اے محمدؐ یقیناً تم رسولوں میں سے ہو (۳)

اور زندگی کے سیدھے رستے پر گامزن ہو (۴)

(یہ قرآن اس کا) نازل کیا ہوا ہے جو سب پر غالب ہے اور جس کی رحمت ہر چیز کو گھیرے ہوئے ہے (۵)

(یہ قرآن اس لئے نازل کیا گیا ہے) تاکہ تم ان لوگوں کو (اعمال بد کے نتائج سے ڈراؤ جن کے آباؤ اجداد کو متنبہ نہیں کیا گیا اس لئے وہ غفلت میں پڑے ہوئے ہیں (۶) [۳۴:۴۰]

ان میں سے اکثر پر (ان کی نافرمانی کی وجہ سے اللہ کی) بات پوری ہو چکی ہے سو وہ ایمان نہیں لائیں گے (۷)

ہمارے قانون نے (ان کی سرکشی کی وجہ سے) ان کی گردنوں میں طوق ڈال دئے ہیں جن سے وہ ٹھوڑیوں تک جکڑے ہوئے ہیں اور اس وجہ سے ان کے سر اوپر اٹھے ہوئے ہیں (۸)

نوٹ:۔یعنی وہ لوگ اتنے سرکش ہو گئے ہیں کہ ان کی سمجھ میں کوئی بات آتی ہی نہیں جیسے متکبر آدمی کسی کی سنتا ہی نہیں اور کہا جاتا ہے کہ آسمان کو تھوک رہا ہے ادھر اُدھر کو دیکھتا ہی نہیں یعنی کوئی اچھی بات سنتا ہی نہیں۔اور ظلم کئے جا رہا ہے سر اوپر کو اٹھا رکھا ہے۔

(وہ اتنے نافرمان ہو چکے ہیں کہ اس اندھے پن نے) ان کے آگے ایک پردہ کھڑا کر دیا ہے اور ایک ان کے پیچھے پردہ ہے اور ان کی آنکھوں پر بھی تکبر کا پردہ ہے اس لئے حقیقت کیسی ہی واضح ہو وہ دیکھ نہیں سکتے (۹) [مانو ان کی آنکھوں اور دلوں پر تالہ لگ گیا ہے توبہ کا دروازہ بند ہو گیا ہے]

(اے محمدؐ ان کی نافرمانی نے ثابت کر دیا ہے کہ) آپ نے ان کو ڈرایا یا نہ ڈرایا ان کے لئے برابر ہے وہ ایمان نہیں لائیں گے (وہ اس مقام پر پہنچ چکے ہیں کہ قانون نے ان کو گمراہ ثابت کر دیا ہے) (۱۰)

آپ کی نصیحت اسی شخص پر اثر کرے گی جو نصیحت (اور اللہ کا کلام) سننے کو تیار ہو اور جو بے دیکھے اللہ سے ڈرتا ہوا ایسے

व्यक्ति) व्यक्ति को क्षमा और सम्मान वाले प्रतिदान की शुभ सूचना सुना दो (11)

(نیک آدمی) شخص کو مغفرت اور باعزت ثواب کی خوشخبری سنا دو (۱۱)

निःसंदेह हम मृतकों को जीवित करेंगे और जो कुछ वह आगे भेज चुके हैं और जो उनके चिन्ह पीछे रह गए हम उनको लिख रहे हैं (अर्थात हमारे आदेश से फरिश्ते) और हर वस्तु को हमारे नियम ने पुस्तक उज्जवल में लिख रखा है (12)

بے شک ہم مردوں کو زندہ کریں گے اور جو کچھ وہ آگے بھیج چکے ہیں اور جو ان کے نشان پیچھے رہ گئے ہم ان کو قلمبند کر رہے ہیں (یعنی ہمارے حکم سے فرشتے) اور ہر چیز کو ہمارے قانون نے کتاب روشن میں لکھ رکھا ہے (۱۲)

झुटलाने वालों से बस्ती वालों की कथा वर्णन करो जब उनके पास रसूल आए (13)

اور اُن جھٹلانے والوں سے گاؤں والوں کا قصہ بیان کرو جب ان کے پاس رسول آئے (۱۳)

अर्थात जब हमने उनकी ओर दो ईशदूत भेजे तो उन्होंने उनको झुटलाया फिर हमने तीसरे से सहायता दी तो उन्होंने कहा हम तुम्हारी ओर रसूल हो कर आए हैं (14)

یعنی جب ہم نے ان کی طرف دو رسول بھیجے تو انہوں نے ان کو جھٹلایا پھر ہم نے تیسرے سے مدد دی تو انہوں نے کہا کہ ہم تمہاری طرف رسول ہو کر آئے ہیں (۱۴)

वह बोले के तुम कुछ भी नही परन्तु हमारी भांति मनुष्य हो और ईश्वर ने कोई वस्तु भी अवतरित नहीं की केवल तुम झूट बोलते हो (15)

وہ بولے کہ تم کچھ نہیں مگر ہماری طرح کے آدمی ہو اور اللہ نے کوئی چیز بھی نازل نہیں کی تم محض جھوٹ بولتے ہو (۱۵)

उन्होंने कहा कि हमारा रब जानता है कि हम तुम्हारी ओर रसूल बना कर भेजे गए हैं (16)

انہوں نے کہا کہ ہمارا رب جانتا ہے کہ ہم تمہاری طرف رسول بنا کر بھیجے گئے ہیں (۱۶)

और हमारा कार्य तो केवल इतना है कि (तुम तक ईश्वर का संदेश) स्पष्ट पहुंचा दें और बस (17)

اور ہمارا کام تو صرف اتنا ہے کہ (تم تک اللہ کا پیغام) صاف صاف پہنچا دیں اور بس (۱۷)

यह सुन कर वह बोले हम तुमको अशुभ जानते हैं और हमारे मना करने के बावजूद तुम धर्म प्रचार से नही रूके इस लिए हम तुम्हें पत्थरों से मार देंगे और तुमको हमसे कठोर कष्ट पहुंचेगा (18)

یہ سن کر وہ بولے ہم تم کو منحوس سمجھتے ہیں اور ہمارے منع کرنے کے باوجود تم تبلیغ دین سے نہیں رکے اس لئے ہم تمہیں سنگ مار کر دیں گے اور تم کو ہم سے سخت تکلیف پہنچے گی (۱۸)

रसूलों ने कहा कि तुम्हारा अपशकुन तुम्हारे साथ है (अर्थात तुम्हारे कर्मों से) क्या तुम इसलिए रूष्ट हो कि तुम को उपदेश किया गया, अपितु तुम ऐसे लोग हो जो सीमा से आगे बढ़ गए हो (19) {7:131, 27:47}

رسولوں نے کہا کہ تمہاری نحوست تمہارے ساتھ ہے (یعنی تمہارے عملوں سے) کیا تم اس لئے ناراض ہو کہ تم کو نصیحت کی گئی بلکہ تم ایسے لوگ ہو جو حد سے تجاوز کر گئے ہو (۱۹) [۷:۱۳۱، ۲۷:۴۷]

(ईशदूतों की सूचना सुन कर) और नगर के परले किनारे से एक व्यक्ति दौड़ता हूआ आया कहने लगा कि ऐ मेरी जाति ईशदूतों का अनुकरण करो (20) {40:28-33}

(رسولوں کی خبر سن کر) اور شہر کے پرے کنارے سے ایک آدمی دوڑتا ہوا آیا کہنے لگا کہ اے میری قوم رسولوں کی اطاعت کرو (۲۰) [۴۰:۲۸-۳۳]

ऐसों की जो तुम से प्रतिदान नही मांगते (कि उन पर किसी प्रकार की शंका हो) और यह लोग ईश्वर के सीधे मार्ग पर चल रहे हैं (21)

ایسوں کی جو تم سے اجرت نہیں مانگتے (کہ ان پر کسی طرح کا شبہ ہو) اور یہ لوگ اللہ کے سیدھے رستہ پر چل رہے ہیں (۲۱)

वमालिया खण्ड-23

وَمَالِیَ [پارہ ۔۲۳]

(यह रसूल यही तो कह रहे हैं कि ईश्वर की पूजा करो तो फिर) क्या कारण है कि मैं ईश्वर की पूजा न करूं जिसने मुझे (और तुम सबको) पैदा किया और उसी की ओर (मुझे और) तुम सब को लौट कर जाना है (22)

(یہ رسول یہی تو کہہ رہے ہیں کہ اللہ کی عبادت کرو تو پھر) کیا وجہ ہے کہ میں اللہ کی عبادت نہ کروں جس نے مجھے (اور تم سب کو) پیدا کیا اور اسی کی طرف (مجھے اور) تم سب کو لوٹ کر جانا ہے (۲۲)

(विचार करो) क्या (मुझे यह बात शोभा देती है कि) मैं ईश्वर को छोड़ कर ऐसे देवता बना लूं (जो इतने विवश हैं कि) यदि ईश्वर मुझे कोई कष्ट देना चाहे तो उनकी अनुशंसा मेरे कुछ काम न आए और न वह (मुझे कष्ट से) छुड़ा ही सकें (23)

(غور کرو) کیا (مجھے یہ بات زیب دیتی ہے کہ) میں اللہ کو چھوڑ کر ایسے معبود اختیار کروں (جو اتنے بے بس ہیں کہ) اگر اللہ مجھے کوئی تکلیف دینا چاہے تو ان کی شفارش میرے کچھ کام نہ آئے اور نہ وہ (مجھے عذاب سے) چھڑا ہی سکیں (۲۳)

(यदि मैं ऐसे विवश देवताओं का सहारा पकड़ू तो) यदि मैं ऐसा करूं तो स्पष्ट भ्रष्टता में जा पड़ूं (24)

(اگر میں ایسے بے بس معبودوں کا سہارا پکڑوں تو) اگر میں ایسا کروں تو کھلی گمراہی میں جا پڑوں (۲۴)

(अतः) मैं तो (अपने और) तुम्हारे ईश्वर पर

(لہٰذا) میں تو (اپنے اور) تمہارے پروردگار پر ایمان لے

विश्वास ले आया तुम भी मेरी बात सुनो (25)

और उस व्यक्ति से (इस शुभ कर्म के बदले ईश्वर के नियम ने कह दिया कि ऐ सदाचारी व्यक्ति स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाना तब उस ने कहा) यदि मेरी जाति यह जान ले (26)

कि मेरे रब ने किस वस्तु के बदले मेरी क्षमा कर दी और मुझे सम्मानित लोगों में सम्मिलित किया (27)

नोट- इन आयात के अनुवाद और टिका में कहा गया है कि उस आस्तिक पुरूष को वध कर दिया गया उस का नाम हबीब लिखा है अब देखा जाए कि क्या वास्तव में उसको वध किया गया या ईश्वर ने उसको बचा लिया.

सूरत मोमिन आयत 44 आज जो कुछ मैं कह रहा हूं निकट ही वह समय आएगा जब तुम उसे याद करोगे, और अपना प्रसंग मैं ईश्वर को समर्पित करता हूं वह अपने बन्दों का रखवाला है {40:47} अन्ततः उन लोगों ने जो बुरी से बुरी चालें उस आस्तिक के विरूद्ध चली ईश्वर ने उन सब से उसको बचा लिया और फिरऔन के साथी स्वयं निकृष्टम कष्ट के चक्कर में आ गए

इन दो आयतों से पता चलता है कि ईश्वर ने अपने आस्तिक बन्दे को बचा लिया और वास्तव में ईश्वर अपने आस्तिक बन्दों को चाहे वह नबी हों या नबी न हो अत्याचारियों के हाथों से बचाता है अतः वह आस्तिक बन्दा जिसको {36:26-27} में हर एक ने वध कर दिया लिखा है वध नही किया गया अपितु ईश्वर ने उसको बचा लिया और न ही आयत में कोई शब्द ऐसा है जिसका अनुवाद वध होना किया जाए और न ही आयत से यह सिद्ध हो रहा है कि उसको वध किया गया अपितु उस आस्तिक के कारनामों से प्रसन्न हो कर ईश्वर के नियम ने उसको एक शुभ सूचना दी स्वर्ग में प्रविष्ट होने की जिस पर उस बन्दे ने इच्छा की कि यदि मेरी जाति को ज्ञात हो जाए कि ईश्वर के नियम ने मेरे साथ यह कृपा क्यों की है और वह भी यह जान कर अच्छे कर्म करे और उनको भी ईश्वर क्षमा कर दे

कुरआन की बहुत आयात में आस्तिक बन्दों के लिए स्वर्ग की शुभ सूचना है तो क्या सब ही वह बन्दे जिनको उनके अच्छे कर्मों पर स्वर्ग की मंगल सूचना है वह स्वर्ग में प्रविष्ट हो गए? अभी तो महा प्रलय स्थापित नही हुआ अतः यह सब मंगल सूचनाएं ऐसी है कि भविष्य में पूरी होंगी जैसे क्यामत का विषय है उसको भूत काल से लिखा गया है परन्तु अर्थ भविष्य से है जो होगा निःसंदेह ऐसे ही उस आस्तिक का प्रसंग है स्वर्ग में प्रविष्ट किया नही गया अपितु किया जाएगा.

(उस आस्तिक बन्दे की बात का इनकार करते हुए उसकी जाति अवज्ञा पर लगी रही तो उसके बाद ईश्वर का निर्णय आना ही था सो वह आ गया सुनो) और हमने इसके बाद उसकी जाति पर कोई सेना नही उतारी और न ही हम उतारने वाले ही थे (28)

वह तो केवल एक चिंघाड़ थी सो वह उससे अचानक बुझ कर रह गए (29)

बन्दों पर दुख है कि जो भी उनके पास रसूल आया, निःसंदेह वह उसका उपहास करते रहे (30)

क्या उन्होंने नही देखा कि हमने उनसे पहले बहुत

آیا تم بھی میری بات سنو (۲۵)

اور اس شخص سے (اس نیک کام کے بدلے اللہ کے قانون نے کہدیا کہ اے نیک آدمی جنت میں داخل ہو جانا تب اس نے کہا) کاش میری قوم یہ جان لے (۲۶)

کہ میرے رب نے کس چیز کی بدولت میری مغفرت کر دی اور مجھے باعزت لوگوں میں شامل کیا (۲۷)

نوٹ:۔ ان آیات کے ترجمہ اور تفسیر میں کہا گیا ہے کہ اس مومن مرد کو قتل کر دیا گیا۔ اس کا نام حبیب لکھا ہے۔ اب دیکھا جائے کہ کیا حقیقت میں اس کو قتل کیا گیا یا اللہ نے اس کو بچا لیا۔

سورت مومن آیت ۴۴ آج جو کچھ میں کہہ رہا ہوں عن قریب وہ وقت آئے گا جب تم اسے یاد کرو گے اور اپنا معاملہ میں اللہ کے سپرد کرتا ہوں۔ وہ اپنے بندوں کا نگہبان ہے۔

(۴۰:۴۵) آخر کار ان لوگوں نے جو بُری سے بُری چالیں اس مومن کے خلاف چلیں اللہ نے ان سب سے اس کو بچا لیا اور فرعون کے ساتھی خود بدترین عذاب کے چکر میں آگئے۔

ان دو آیتوں سے پتہ چلتا ہے کہ اللہ نے اپنے مومن بندے کو بچا لیا اور حقیقت میں اللہ اپنے مومن بندوں کو چاہے وہ نبی ہوں یا غیر نبی ظالموں کے ہاتھوں سے بچاتا ہے اس لئے وہ مومن بندہ جس کو (۳۶:۲۶،۲۷) میں ہر ایک نے قتل کر دیا لکھا ہے قتل نہیں کیا گیا بلکہ اللہ نے اس کو بچا لیا اور نہ ہی آیت میں کوئی لفظ ایسا ہے جس کا ترجمہ قتل ہونا کیا جائے۔ اور نہ ہی آیت سے یہ ثابت ہو رہا ہے کہ اس کو قتل کیا گیا بلکہ اس مومن کے کارناموں سے خوش ہو کر اللہ کے قانون نے اس کو ایک بشارت دی جنت میں داخل ہونے کی جس پر اس بندے نے آرزو کی کہ کاش میری قوم کو یہ معلوم ہو جائے کہ اللہ کے قانون نے میرے ساتھ یہ مہربانی کیوں کی ہے۔ اور وہ بھی یہ جان کر اچھے عمل کرے اور ان کو بھی اللہ بخش دے۔

قرآن کی بہت آیات میں مومن بندوں کے لئے جنت کی بشارت ہے تو کیا سب ہی وہ بندے جن کو ان کے اچھے کاموں پر جنت کی بشارت ہے وہ جنت میں داخل ہو گئے؟ ابھی تو حشر بھی قائم نہیں ہوا؟ اس لئے یہ سب بشارتیں ایسی ہیں کہ آئندہ پوری ہوں گی جیسے قیامت کا معاملہ ہے اس کو ماضی کے صیغہ سے لکھا گیا ہے مگر مطلب مستقبل سے ہے جو ہو گا یقیناً۔ ایسے ہی اس مومن کا معاملہ ہے جنت میں داخل کیا نہیں گیا بلکہ کیا جائے گا۔

(اس مومن بندے کی بات کا انکار کرتے ہوئے اس کی قوم نافرمانی پر لگی رہی تو اس کے بعد اللہ کا فیصلہ آنا ہی تھا سو وہ آ گیا سنو) اور ہم نے اس کے بعد اس کی قوم پر کوئی لشکر نہیں اتارا اور نہ ہم اتارنے والے ہی تھے (۲۸)

وہ تو صرف ایک چنگھاڑ تھی سو وہ اس سے ناگہاں بجھ کر رہ گئے (۲۹)

بندوں پر افسوس ہے کہ جو بھی ان کے پاس رسول آیا یقیناً وہ اس کا مذاق کرتے رہے (۳۰)

کیا انہوں نے نہیں دیکھا کہ ہم نے ان سے پہلے بہت

से लोगों को वध कर दिया था अब वह उनकी ओर लौट का नही आएंगे (31)

और सबके सब हमारे सम्मुख उपस्थित किए जाएंगे (32)

और एक चिन्ह उनके लिए मृतक भूमि में है कि हमने उसको जीवित किया (अर्थात पानी से) और उसमें से अनाज उगाया फिर वह उसमें से खाते है (33)

और उसमें खजूरों और अंगूरो के उपवन उत्पन्न किए और उसमें स्रोत जारी कर दिए (34)

ताकि वह उनके फल खाएं और उनके हाथों ने तो उनको नही बनाया फिर क्या वह आज्ञाकारी नही करेंगे (35)

वह ईश्वर पवित्र है जिसने भूमि की वनस्पति के और स्वयं उनके और जिन वस्तुओं की उनको जानकारी नही सबके जोड़े बनाए (36) {35:11, 43, 51:49, 53:45, 78:8, 92:2}

और एक चिन्ह उनके लिए रात्री है उस पर से हम दिन का प्रकाश हटा लेते है तो उन पर अंधेरा छा जाता है (37)

और सूर्य अपने गंतव्य स्थान की ओर जा रहा है यह ईश्वर प्रभुत्व शाली और बुद्धिमान का निश्चित किया हुआ अनुमान है (38)

और चन्द्रमा के भी हमने पड़ाव निश्चित कर दिए है यहां तक कि वह घटते घटते खजूर की सूखी शाख की भांति हो जाता है (39)

न सूर्य का यह साहस है कि निश्चित राह का विरोध करेगा अर्थात अपनी चाल तीव्र करके चन्द्रमा को जा पकड़े और चन्द्रमा भी उसी मार्ग पर चलता है अर्थात वह भी वही पहुंचेगा विरोध न करेगा और न रात्रि ही दिन से पहले आ सकती है वह भी आबद्ध है और सब अपने आधार पर (इस प्रकार अवर्त्त कर रहे है मानो एक महासागर में) तैर रहे है (40) {14:33;21:33;31:29}

और एक चिन्ह यह है कि उनके लिए कि हमने उनकी सन्तान को भरी हुई नाव में सवार किया (41)

और उनके लिए वैसी ही और वस्तुएं पैदा की जिन पर वह सवार होंगे (42)

और यदि हम चाहें तो उनको प्लावन कर दें फिर न तो उनका कोई समर्थक हो और न उनको रिहाई मिले (43)

परन्तु यह हमारी अनुकम्पा है (कि उन्हें पार लगाती है) और वह एक समय तक (नदी की यात्रा से) लाभ उठाते है (44)

और जब उनसे कहा जाएगा कि (अपने कर्मों के परिणाम से) डरो जो तुम्हारे हाथों ने प्रकट किये और जो तुम्हारे हाथों ने छुपकर किये है ताकि तुम पर दया की जाय (और उन जातियों की बरबादी से शिक्षा प्राप्त करो जो तुम से पहले हो चुकी है) (45)

उनके सामने उनके रब की आयात में से जो आयत भी आती है निःसन्देह वह उससे मुख फेर लेते है (46)

और जब उनसे कहा जाएगा कि ईश्वर ने जो

سے لوگوں کو ہلاک کر دیا تھا اب وہ ان کی طرف لوٹ کر نہیں آئیں گے (۳۱)

اور سب کے سب ہمارے سامنے حاضر کئے جائیں گے (۳۲)

اور ایک نشان ان کے لئے مردہ زمین میں ہے کہ ہم نے اس کو زندہ کیا (یعنی پانی سے) اور اس میں سے اناج اگایا پھر وہ اس میں سے کھاتے ہیں (۳۳)

اور اس میں کھجوروں اور انگوروں کے باغ پیدا کئے اور اس میں چشمے جاری کر دئے (۳۴)

تا کہ وہ ان کے پھل کھائیں اور ان کے ہاتھوں نے تو ان کو نہیں بنایا پھر کیا وہ فرمانبرداری نہیں کریں گے (۳۵)

وہ اللہ پاک ہے جس نے زمین کی نباتات کے اور خود ان کے اور جن چیزوں کی ان کو خبر نہیں سب کے جوڑے بنائے (۳۶) [۳۵:۱۱، ۴۳، ۵۱:۴۹، ۵۳:۴۵، ۷۸:۸، ۹۲:۲]

اور ایک نشانی ان کے لئے رات ہے اس پر سے ہم دن کی روشنی ہٹا لیتے ہیں تو ان پر اندھیرا چھا جاتا ہے (۳۷)

اور سورج اپنی منزل کی طرف جا رہا ہے یہ اللہ غالب اور دانا کا مقرر کیا ہوا اندازہ ہے (۳۸)

اور چاند کی بھی ہم نے منزلیں مقرر کر دی یہاں تک کہ وہ گھٹتے گھٹتے کھجور کی سوکھی شاخ کی طرح ہو جاتا ہے (۳۹)

نہ آفتاب کی یہ مجال ہے کہ مقرر راہ کی مخالفت کرے گا یعنی اپنی رفتار تیز کر کے چاند کو جا پکڑے اور چاند بھی اسی راہ پر چلتا ہے یعنی وہ بھی وہیں پہنچے گا نافرمانی نہ کرے گا اور نہ رات ہی دن سے پہلے آ سکتی ہے وہ بھی پابند ہے اور سب اپنے اپنے مدار پر (اس طرح گردش کر رہے ہیں گویا ایک بحرا پیدکنار میں) تیر رہے ہیں (۴۰) [۱۴:۳۳، ۲۱:۳۳، ۳۱:۲۹]

اور ایک نشانی یہ ہے ان کے لئے کہ ہم نے ان کی اولاد کو بھری ہوئی کشتی میں سوار کیا (۴۱)

اور ان کے لئے ویسی ہی اور چیزیں پیدا کیں جن پر وہ سوار ہوں گے (۴۲)

اور اگر ہم چاہیں تو ان کو غرق کر دیں پھر نہ تو ان کا کوئی فریاد رس ہو اور نہ ان کو رہائی ملے (۴۳)

مگر یہ ہماری رحمت ہے (کہ انہیں پار لگاتی ہے) اور وہ ایک مدت تک (دریائی سفر سے) فائدے اٹھاتے ہیں (۴۴)

اور جب ان سے کہا جائے تا کہ (اپنے اعمال کے نتائج سے) ڈرو جو تمہارے ہاتھوں نے ظاہر کئے ہیں اور جو تمہارے ہاتھوں نے چھپ کر کئے ہیں تا کہ تم پر رحم کیا جائے (اور ان قوموں کی بربادی سے عبرت حاصل کرو جو تم سے پہلے گزر چکی ہیں) (۴۵)

ان کے سامنے ان کے رب کی آیات میں سے جو آیت بھی آئی ہے یقیناً وہ اس سے منہ پھیر لیتے ہیں (۴۶)

اور جب ان سے کہا جائے گا کہ اللہ نے جو رزق تمہیں دیا

जीविका तुम्हें दी है उसमें से कुछ ईश्वर के मार्ग में भी व्यय करो तो वह लोग जिन्होंने कुफ्र किया है विश्वास लाने वालों को उत्तर देंगे, क्या हम उनको खिलाए जिन्हें यदि ईश्वर चाहे तो स्वयं खिलाएगा? तुम तो निःसन्देह खुली भ्रष्टता में हो (47) {36:15,53}
और कहेंगे यदि तुम सच कहते हो तो यह वचन कब पूरा होगा? (48)
वह तो एक चिंघाड़ के प्रतीक्षक हैं जो उनको इस स्थिति में आ पकड़ेगी कि आपस में झगड़ रहे होंगे (49)
फिर न तो उत्तर पत्र कर सकेंगे और न अपने घर वालों में वापस जा सकेंगे (50)
और जब सूर फूंका जाएगा तो वह समाधियों से (निकाल कर) अपने रब की ओर दौड़ पड़ेंगे (51)
और चित्कार करेंगे हाए दुख किसने हमारे शयन कक्ष से हमें जगा उठाया? यह तो वही क्यामत है जिसका रहमान ने वचन किया था (अब पता चला कि) रसूलों ने सत्य कहा था (52)
वह तो केवल एक धमाका होगा और सबके सब हमारे समक्ष उपस्थित हो जाएँगे (53)
फिर (हमारा आदेश पारित होगा यह न्याय का दिन है) आज किसी पर कण बराबर अन्याय न होगा और तुम्हें उन्हीं कर्मों का फल मिलेगा जो तुम दुनिया में करते रहे थे (54)
और स्वर्ग वाले उस दिन सुख आनन्द में व्यस्त होंगे (55)
और वह और उनके पवित्र साथी सायों में सिंहासनों पर तकिया लगाए बैठेंगे (56)
वहां उनके लिए मेवे और जो चाहेंगे (विद्यमान) होगा (57)
और कृपालु ईश्वर की ओर से शाति का संदेश होगा (58)
(और आदेश होगा) और पापियों तुम आज पृथक हो जाओ (59)
ऐ आदम की सन्तान हमने तुम से कह नहीं दिया था कि शैतान को न पूजा व तुम्हारा खुला शत्रु है (60) {15:49; 39:53}
और यह कि मेरी ही पूजा करना यही सीधा मार्ग है (61)
(परन्तु तुम ने मेरी इच्छा के विरुद्ध उसका अनुकरण किया परिणाम यह निकला कि) उसने तुम में से अधिक को पथ भ्रष्ट कर दिया क्या तुम समझते नहीं थे? (62)
यह वही नर्क है जिससे तुम्हें सावधान किया गया था (63)
(सो) जो तुम कुफ्र करते रहे हो उसके बदले आज उसमें प्रविष्ट हो जाओ (64)
आज हम उनके मुखों पर मोहर लगा देंगे और जो कुछ वह करते रहे थे उनके हाथ हमसे वर्णन कर

ہےاس میں سے کچھ اللہ کی راہ میں بھی خرچ کروتو یہ لوگ جنہوں نے کفر کیا ہے ایمان لانے والوں کو جواب دیں گے کیا ہم ان کو کھلائیں جنہیں اگر اللہ چاہےتو خود کھلائے گا؟ تم تو یقیناً کھلی گمراہی میں ہو(۴۷)[۳٦:۱۵،۵۳]
اور کہیں گے اگر تم سچ کہتے ہو تو یہ وعدہ کب پورا ہوگا؟ (۴۸)
وہ تو ایک چنگھاڑ کے منتظر ہیں جو ان کو اس حال میں آ پکڑے گی کہ آپس میں جھگڑ رہے ہوں گے (۴۹)
پھر نہ تو وصیت کرسکیں گے اور نہ اپنے گھر والوں میں واپس جاسکیں گے(۵۰)
اور جب صور پھونکا جائے گا تو وہ قبروں سے (نکل کر) اپنے رب کی طرف دوڑ پڑیں گے(۵۱)
اور چیخ اٹھیں گے ہائے افسوس! کس نے ہماری خوابگاہوں سے ہمیں جگا اٹھایا؟ یہ تو وہی قیامت ہے جس کا رحمان نے وعدہ کیا تھا (اب پتہ چلا کہ) رسولوں نے سچ کہا تھا (۵۲)
وہ تو صرف ایک دھماکا ہوگا اور سب کے سب ہمارے روبرو حاضر ہو جائیں گے(۵۳)
پھر (ہمارا فرمان صادر ہوگا یہ انصاف کا دن ہے) آج کسی پر ذرہ برابر ظلم نہ ہوگا اور تمہیں انہیں اعمال کا بدلہ ملے گا جو تم (دنیا میں) کرتے رہے تھے(۵۴)
اہل جنت اس روز عیش میں مشغول ہوں گے (۵۵)
وہ اوران کے پاک ساتھی سایوں میں تختوں پر تکیے لگائے بیٹھیں گے(۵٦)
وہاں ان کے لئے میوے اور جو چاہیں گے(موجود)ہوگا(۵۷)
اورمہربان پروردگار کی طرف سے سلامتی کا پیغام ہوگا (۵۸)
(اورحکم ہوگا)اورگنہگارو! تم آج الگ ہو جاؤ(۵۹)
اے اولاد آدم ہم نے تم سے کہہ نہیں دیا تھا کہ شیطان کو نہ پوجنا وہ تمہارا کھلا دشمن ہے (٦۰)[۱۵:۴۹؛ ۳۹:۵۳]
اور یہ کہ میری ہی عبادت کرنا یہی سیدھا رستہ ہے(٦۱)
(لیکن تم نے میری مرضی کے خلاف اس کی پیروی کی نتیجہ یہ نکلا کہ) اس نے تم میں سے بہتوں کو گمراہ کردیا کیا تم سمجھتے نہیں تھے؟ (٦۲)
یہ وہی دوزخ ہے جس سے تمہیں خبردار کیا گیا تھا(٦۳)
(سو) جو تم کفر کرتے رہے ہو اس کے بدلے آج اس میں داخل ہو جاؤ(٦۴)
آج ہم ان کے مونہوں پر مہر لگادیں گے اور جو کچھ وہ کرتے رہے تھے ان کے ہاتھ ہم سے بیان کردیں گے

देखे और उनके पग साक्ष्य देंगे (65) {41:20;17:13,14;75:14,15}

और यदि हम चाहें तो उनकी आंखों को मिटाकर अन्धा कर दें फिर वह मार्ग को दौड़े तो कहां देख सकें (66)

और यदि हम चाहें तो उनके स्थान पर ही उनकी आकृति (इस प्रकार) विकृत कर दें कि न आगे बढ़ सकें न पीछे हट सकें (67)

जिस व्यक्ति को हम लम्बी आयु देते है उसकी रचना को (अर्थात शक्ति से निर्बलता) हम उलट ही देते है क्या (यह दशा देखकर) उन्हें बुद्धी नही आती (68)

और जो ज्ञान हमने उसको अर्थात मुहम्मद को समझाया है वह उसने जान लिया है वह उसका विरोध नही करेंगे निःसन्देह वह शिक्षा और स्पष्ट कुरआन है (69)

यह इसलिए प्रेषित किया गया है ताकि जो लोग (इस दुनिया में) जीवित है उन्हें (दुष्कर्मों के परिणाम से) सावधान कर दें और नास्तिकों पर बात पूरी हो जाए (70)

क्या उन्होंने देखा नही कि हमने अपने हाथों की बनाई हुई वस्तुओं में से उनके लिए चौपाए बनाए और वह उनके स्वामी है (71)

और हमने उनको उनके लिए अर्जित कर दिया तो कोई तो उनमें से उनकी सवारी है और किसी को वह खाते है (72)

और उन जानवरों में उनके लिए और लाभ है और पीने की वस्तुएं है तो यह आज्ञाकारी क्यों नही करते (73)

(हमारी आज्ञाकारी करने के स्थान पर) उन्होंने ईश्वर के अतिरिक्त और पूज्य बना लिये है कि कदाचित उनसे उनको सहायता पहुंचे (74)

परन्तु वह उनकी कदापि सहायता नही कर सकते अपितु वह मूर्ति पूजक स्वयं बुतों की सेना बनकर उनकी रक्षा के लिए उनके पास उपस्थित रहते है (75)

तो उनकी बातें आपको शोकाकुल न कर दें वह जो कुछ छुपाते और जो कुछ प्रकट करते है हमें ज्ञात है (76)

क्या इन्सान को इतना भी ज्ञात नही कि हमने उसे वीर्य से पैदा किया? फिर वह अचानक खुला झगड़ालू बन बैठ और हमारे विषय में उपमा वर्णन करने लगा और अपनी उत्पत्ती को भूल गया कहने लगा जब हड्डियां जीर्ण हो जाएगी तो उनको कौन जीवित करेगा (78)

कह दो उनको वह जीवित करेगा जिसने उनको पहली बार पैदा किया था और वह सब प्रकार का पैदा करना जानता है (79)

जिसने तुम्हारे लिए हरे वृक्ष से आग पैदा कर दी अर्थात वृक्ष की टहनी जलती है और तुम उससे अपने चूल्हे उज्जवल करते हो (80)

भला जिसने आकाशों और पृथ्वी को रचा क्या वह

اوران کے پاؤں گواہی دیں گے (۶۵) [۴۱:۲۰؛۱۷:۱۳،۱۴؛۷۵:۱۴،۱۵]

اوراگرہم چاہیں توان کی آنکھوں کومٹا کراندھا کردیں پھر وہ رستے کودوڑیں توکہاں دیکھ سکیں (۶۶)

اوراگرہم چاہیں توان کی جگہ پرہی ان کی صورتیں (اس طرح) مسخ کردیں کہ نہ آگے بڑھ سکیں نہ پیچھے ہٹ سکیں (۶۷)

جس شخص کوہم لمبی عمردیتے ہیں اس کی ساخت کو (یعنی طاقت سے کمزوری) ہم الٹ ہی دیتے ہیں کیا (یہ حالت دیکھ کر) انہیں عقل نہیں آتی (۶۸)

اورجوعلم ہم نے اس کویعنی محمدؐ کوسمجھایا ہے وہ اس نے جان لیا ہے وہ اس کی مخالفت نہیں کریں گے بے شک وہ نصیحت اورصاف صاف قرآن (۶۹)

یہ اس لئے نازل کیا گیا ہے تاکہ جولوگ (اس دنیا میں) زندہ ہیں انہیں (اعمال بد کے نتائج سے) خبردار کردے اورکافروں پر بات پوری ہوجائے (۷۰)

کیاانہوں نے دیکھانہیں کہ ہم نے اپنے ہاتھوں کی بنائی ہوئی چیزوں میں سے ان کے لئے چوپائے بنائے اوروہ ان کے مالک ہیں (۷۱)

اورہم نے ان کوان کے لئے فراہم کردیا توکوئی توان میں سے ان کی سواری ہےاورکسی کووہ کھاتے ہیں (۷۲)

اوران جانوروں میں ان کے لئے اورفائدے ہیں اور پینے کی چیزیں ہیں تویہ فرمانبرداری کیوں نہیں کرتے (۷۳)

(ہماری فرمانبرداری کرنے کے بجائے) انہوں نے اللہ کے علاوہ اورمعبودبنالئے ہیں کہ شائدان سےان کومدد پہنچے (۷۴)

مگروہ ان کی ہرگزمدد نہیں کرسکتے بلکہ وہ بت پرست خود بتوں کی فوج بن کران کی حفاظت کے لئے ان کے پاس حاضررہتے ہیں (۷۵)

توان کی باتیں تمہیں غمناک نہ کردیں وہ جوکچھ چھپاتے اورجوکچھ ظاہرکرتے ہیں ہمیں معلوم ہے (۷۶)

کیاانسان کواتنا بھی معلوم نہیں کہ ہم نے اسے نطفے سے پیدا کیا؟ پھروہ یکا یک صریح جھگڑالو بن بیٹھا (۷۷)

اورہمارے بارے میں مثالیں بیان کرنے لگا اوراپنی پیدائش کوبھول گیا کہنے لگا جب ہڈیاں بوسیدہ ہوجائیں گی توان کوکون زندہ کرےگا (۷۸)

کہہ دوان کووہ زندہ کرے گا جس نے ان کوپہلی بارپیدا کیا تھااوروہ سب قسم کا پیدا کرنا جانتا ہے (۷۹)

جس نے تمہارے لئے ہرے درخت سے آگ پیدا کردی یعنی درخت کی ٹہنی جلتی ہیں اورتم اس سے اپنے چولہے روشن کرتے ہو (۸۰)

بھلاجس نے آسمانوں اورزمین کو پیدا کیا کیا وہ اس بات

इस बात पर सामर्थ नही कि (उनको फिर) वैसे ही रच दे क्यों नही और वह तो बड़ा पैदा करने वाला ज्ञान वाला है (81)

پر قادر نہیں کہ (ان کو پھر) ویسے ہی پیدا کر دے کیوں نہیں اور وہ تو بڑا پیدا کرنے والا علم والا ہے (۸۱)

उसकी महिमा यह है कि उसने हर वस्तु को बना रखा है और जब उस वस्तु के प्रकट करने का संकल्प करता है तो उस समय उससे कह देता है कि अब हो जा तो वह हो जाती है (82)

اس کی شان یہ ہے کہ اس نے ہر چیز کو بنا رکھا ہے اور جب اس چیز کے ظہور کا ارادہ کرتا ہے تو اس وقت اس سے کہہ دیتا ہے کہ اب ہو جا تو وہ ہو جاتی ہے (۸۲)

पवित्र है वह अस्तित्व जिसके हाथ में हर वस्तु का राज्य है इसलिए हर वस्तु उसके निर्धारित किए नियमानुसार चक्कर (गर्दिश) करती है उसका हर पग उसी नियम की ओर उठता है उससे वह इधर उधर नही हट सकती {3:83} अर्थात उसके नियमानुसार उसकी ओर लौटती है (83)

پاک ہے وہ ذات جس کے ہاتھ میں ہر چیز کی بادشاہت ہے اس لئے ہر شئے اس کے مقرر کردہ قانون کے مطابق گردش کرتی ہے اس کا ہر قدم اسی قانون کی اور اٹھتا ہے اس سے وہ ادھر اُدھر نہیں ہٹ سکتی [۳:۸۳۔ یعنی اس کے قانون کے مطابق اس کی طرف لوٹتی ہے۔] (۸۳)

सूरत अस्साफ्फात मक्की (37)

سورۃ الصّٰفّٰت مکی (۳۷)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

(इस्लाम के धर्म योद्धाओं की वह) सेना साक्षी है जो धर्म के शत्रुओं से युद्ध के लिए पंक्तिबद्ध खड़े होते है (1)

(مجاہدین اسلام کے وہ) لشکر شاہد ہیں جو (دشمنانِ دین سے لڑنے کے لئے صف بہ صف کھڑے ہو جاتے ہیں (۱)

फिर (अपने घोड़ों को) डांटते डपटते शत्रुओं पर आक्रमण कर देते है (2)

پھر (اپنے گھوڑوں کو) ڈانٹتے ڈپٹتے دشمنوں پر حملہ کر دیتے ہیں (۲)

फिर युद्ध से निवृत्त होकर कुरआन के पढ़ने में लीन हो जाते है (3)

پھر جنگ سے فارغ ہو کر قرآن کی تلاوت میں مشغول ہو جاتے ہیں (۳)

इन धर्म योद्धाओं की आस्था का उद्गार (साक्षी है) कि तुम्हारा ईश्वर एक ही है (4)

(اُن مجاہدین کا جذبہ ایمانی شاہد ہے) کہ تمہارا معبود ایک ہی ہے (۴)

और जो आकाशों और पृथ्वी और जो वस्तु उनमें है सबका स्वामी है और सम्पूर्ण पूर्व दिशाओं (और पश्चिम दिशाओं का) स्वामी है (5)

اور جو آسمانوں اور زمین اور جو چیزیں ان میں ہیں سب کا مالک ہے اور تمام مشرقوں (مغربوں کا) کا مالک ہے (۵)

निःसन्देह हम ही ने आकाश दुनिया को तारों से सुसज्जित किया है (6)

بے شک ہم ہی نے آسمان دنیا کو ستاروں سے آراستہ کیا ہے (۶)

और हर प्रकार के ध्वंसात्मक तत्व अर्थात हर शैतान उद्दण्ड से उसकी सुरक्षा कर दी है (7) {41:12; 67:5}

اور ہر قسم کے تخریبی عناصر یعنی ہر شیطان سرکش سے اس کی حفاظت کر دی (۷) [۴۱:۱۲؛ ۶۷:۵]

और भ्रष्ट मानव आलमे अमर जहां निर्णय होते है उसकी सभा की ओर कान न लगा सके और हर ओर से उन पर धिक्कार फैंकी जाती है (8)

اور شیطان نما انسان عالم امر جہاں فیصلے ہوتے ہیں اس مجلس کی طرف کان نہ لگا سکیں اور ہر طرف سے ان پر لعنت پھینکی جاتی ہے (۸)

और हर ओर से भगाए जाते है और उनके लिए सदैव का कष्ट है (9)

اور ہر طرف سے بھگائے جاتے ہیں اور ان کے لئے عذاب دائمی ہے (۹)

और यदि कोई झूठा शैता कहता है खता से कि मैने यह बात सुनी ली है या उचक ली है चोरी छुपे तो उसके इस झूट को कुरआनी तर्क से एक उज्जवल तर्क उसके खण्डन को उसके पीछे लग जाती है (10)

اور اگر کوئی جھوٹا شیطان کہتا ہے خطا سے کہ میں نے یہ بات سن لی ہے اچک لی ہے چوری چھپے تو اس کے اس جھوٹ کو قرآنی دلیل سے ایک روشن دلیل اس کی تردید کو اس کے پیچھے لگ جاتی ہے (۱۰)

नोट- क्योंकि कुरआन से पहले लोगों के पास कोई तर्क न था अब कुरआन में तर्क है कि ईश्वर के निर्णय को कोई नही सुन सकता जो सुनने का वाद करता है वह झूट है कुरआन ने बता दिया.

نوٹ:۔ کیوں کہ قرآن سے پہلے لوگوں کے پاس کوئی دلیل نہ تھی اب قرآن میں دلیل ہے کہ اللہ کے فیصلے کو کوئی نہیں سن سکتا جو سننے کا دعویٰ کرتا ہے جھوٹا ہے قرآن نے بتا دیا۔

तो उनसे ज्ञात करो कि उनका बनाना कठिन है या जितनी रचना हमने बनाई है उनका? उन्हें हमने चिपकते गारे से बनाया है (11)

تو ان سے پوچھو کہ ان کا بنانا مشکل ہے یا جتنی خلقت ہم نے بنائی ہے ان کا؟ انہیں ہم نے چپکتے گارے سے بنایا ہے (۱۱)

(ऐ मुहम्मद स0!) तुम तो (उनके इनकार) पर आश्चर्य करते हो और वह तुम्हारा उपहास उड़ाते हैं (12)

(اے محمدؐ!) تم تو (ان کے انکار) پر تعجب کرتے ہو اور وہ تمہارا مذاق اڑاتے ہیں (۱۲)

और जब उन्हें समझाया जाएगा तो समझना नही चाहेंगे (13)

اور جب انہیں سمجھایا جائے گا تو سمجھنا نہیں چاہیں گے (۱۳)

और जब कोई चिन्ह देखेंगे तो उपहास उड़ाएंगे (14)
और कहेंगे यह तो खुला जादू है (15)
भला जब हम मरकर मिट्टी हो जाएंगे और हड्डियां गल जाएंगी तो क्या फिर उठाए जाएंगे? (16)
और क्या हमारे बाप दादा भी जो पहले (हो गुजरे है?) (17)
कहदो कि हां और तुम हीन होंगे (18)
वह तो एक वेग की झड़की होगी और वह उस समय देख रहे होंगे (19)
और कहेंगे हाए हमारा दुर्भाग्य यही बदले का दिन है (20)
(कहा जाएगा) यही निर्णय का दिन है जिसे तुम झुठलाया करते थे (21)
जो लोग अत्याचार किया करते थे उनको उनके साथियों को और जिनको वह पूजा करते थे सब को संग्रह कर लो (22)
(अर्थात जिनको) ईश्वर के सिवा (पूजा करते थे) फिर उनको नर्क के मार्ग पर चला दो (23)
और हां उनको ठेहराए रखो उनसे कुछ पूछना है (24)
तुमको क्या हुआ कि एक दुसरे की सहायता नही करते (25)
अपितु आज तो वह आज्ञाकारी बने है और उस समय एक दूसरे की ओर आकृष्ट हो कर प्रश्नोत्तर करेंगे (27)
कहेंगे क्या तुमही हमारे पास दाएं बांए से आया करते थे (28)
वह कहेंगे अपितु तुम ही विश्वास लाने वाले न थे (29)
और हमारा तुम पर कोई बल न था अपितु तुम उद्दण्ड लोग थे (30)
सो हमारे विषय में हमारे रब की बात पूरी हो गई अब हम स्वाद चखेंगे (आग का) (31)
हमने तुम को भी पथ भ्रष्ट किया और हम स्वयं भी पथ भ्रष्ट थे (32)
अतः वह उस दिन कष्ट में एक दूसरे के साझी होंगे (33)
(ईश्वर कहेगा) हम अपराधियों के साथ ऐसा ही किया करते है (34)
उनकी दशा यह है कि जब उनसे कहा जाएगा कि निःसंदेह ईश्वर है तो वह घमण्ड करते हुए कहेंगे कि ईश्वर नही है (35)
और कहेंगे कि भला हरएक विक्षिप्त कवि के कहने से कही अपने देवताओ को छोड़ देने वाले है (36)
(हमारा रसूल उन्मत्त कवि नही है) अपितु वह सत्य धर्म और (सत्य कुरआन) लेकर आया है और अगले रसूलों को सच्चा कहता है (37)
(यदि कहा न मानोगे तो) निःसंदेह तुम कष्ट देने वाले दण्ड का स्वाद चखोगे (38)

اور جب کوئی نشانی دیکھیں گے تو مذاق اُڑائیں گے (۱۴)
اور کہیں گے یہ تو کھلا جادو ہے (۱۵)
بھلا جب ہم مر کر مٹی ہو جائیں گے اور ہڈیاں گل جائیں گی تو کیا پھر اٹھائے جائیں گے؟ (۱۶)
اور کیا ہمارے باپ دادا بھی جو پہلے (ہو گزرے ہیں؟) (۱۷)
کہدو کہ ہاں اور تم ذلیل ہو گے (۱۸)
وہ تو ایک زور کی جھڑکی ہوگی اور وہ اس وقت دیکھ رہے ہوں گے (۱۹)
اور کہیں گے ہائے ہماری کم بختی یہی جزا کا دن ہے (۲۰)
(کہا جائے گا ہاں) یہی فیصلہ کا دن ہے جسے تم جھٹلایا کرتے تھے (۲۱)
جو لوگ ظلم کیا کرتے تھے ان کو اور ان کے ساتھیوں کو اور جن کو وہ پوجا کرتے تھے سب کو جمع کر لو (۲۲) [۷:۵۶]
(یعنی جن کو) اللہ کے سوا (پوجا کرتے تھے) پھر ان کو جہنم کے رستے پر چلا دو (۲۳)
اور ہاں ان کو ٹھہرائے رکھو ان سے کچھ پوچھنا ہے (۲۴)
تم کو کیا ہوا کہ ایک دوسرے کی مدد نہیں کرتے (۲۵)
بلکہ آج تو وہ فرمانبردار بنے ہیں (۲۶)
اور اس وقت ایک دوسرے کی طرف متوجہ ہو کر سوال و جواب کریں گے (۲۷)
کہیں گے کیا تم ہی ہمارے پاس دائیں بائیں سے آیا کرتے تھے (۲۸)
وہ کہیں گے بلکہ تم ہی ایمان لانے والے نہ تھے (۲۹)
اور ہمارا تم پر کوئی زور نہ تھا بلکہ تم سرکش لوگ تھے (۳۰)
سو ہمارے بارے میں ہمارے رب کی بات پوری ہو گئی اب ہم مزے چکھیں گے (آگ کے) (۳۱)
ہم نے تم کو بھی گمراہ کیا اور ہم خود بھی گمراہ تھے (۳۲)
پس وہ اس روز عذاب میں ایک دوسرے کے شریک ہوں گے (۳۳)
(اللہ کہیگا) ہم گنہگاروں کے ساتھ ایسا ہی کیا کرتے ہیں (۳۴)
ان کا حال یہ ہے کہ جب ان سے کہا جائے گا کہ یقیناً اللہ ہے تو وہ غرور کرتے ہوئے کہیں گے کہ اللہ نہیں ہے (۳۵)
اور کہیں گے کہ بھلا ہم ایک دیوانے شاعر کے کہنے سے کہیں اپنے معبودوں کو چھوڑ دینے والے ہیں (۳۶)
(ہمارا رسول دیوانہ شاعر نہیں ہے) بلکہ وہ حق دین اور (سچا قرآن) لے کر آیا ہے اور اگلے رسولوں کو سچا کہتا ہے (۳۷)
(اگر کہا نہ مانو گے تو) بے شک تم تکلیف دینے والے عذاب کا مزہ چکھو گے (۳۸)

और तुमको बदला वैसा ही मिलेगा जैसे तुम कर्म करते थे (39)
परन्तु जो ईश्वर के विशेष बन्दे हैं (40)
वही वह लोग है जिनके लिए जानी बुझी अच्छी जीविका है (41)
अर्थात मेवे और उनका सम्मान किया जाएगा (42)
सुख सामग्री के उपवनों में (43)
एक दूसरे के सामने सिंहासनों पर बैठे होंगे (44)
पेय के स्रोतो से पान पात्र भरभर कर उनके मध्य फिराए जाएंगे (45)
(वह पेय) सफेद और चमकते होंगे और पीने वालों के लिए स्वादिष्ट होंगे (46)
न उनके शरीर को उससे कोई हानी होगी और न उनकी बुद्धि भ्रष्ट होगी (47)
नोट- परचलित अनुवादों में (37:45) में शराब के स्रोत अनुवाद किया गया है जो मिथ्या है उचित अनुवाद पेय पदार्थों के स्रोत है.[इस आराम के जीवन में नरों के साथ सुकर्मी बड़ी बड़ी आंखों वाली नारी भी होंगी (48)} दूसरा अनुवाद यह भी हो सकता है...
उनके पास वह सुरक्षित निर्मल चश्में होंगे जिनसे उनको प्याले भरभर के दिए जाएंगे (48)
(और वह स्रोत ऐसे होंगे) मानों जैसे सुरक्षित अन्डे होते है (उनमें कोई मिलावट नही हो सकती) या वह स्त्रियां ऐसी होंगी जिनकी आंखें कभी गैर पुरुष के लिए न उठी होंगी सुरक्षित (49)
(उन सब वस्तुओ के मिलने के बाद चैन से) फिर वह एक दूसरे की ओर मुख करके प्रश्नोत्तर करेंगे (50)
एक कहने वाला उनमें से कहेगा कि मेरा एक साथी था (51)
जो मुझसे पूछा करता था क्या तू भी उन लोगों में है जो कयामत (महाप्रलय) के स्वीकारकर्ता है (52)
(क्या तुझे विश्वास है कि) जब हम मरकर मिट्टी हो जाएंगे तो (पुनः हम को जीवित किया जाएगा और) हम को (हमारे कर्मों का) फल दिया जाएगा (53)
(फिर) उससे कहा जाएगा क्या तुम उस को देखना चाहते हो (कि अब वह किस दशा में है) (54)
फिर वह स्वयं झांकेगा तो उसको नर्क के बीच में पड़ा देखेगा (55)
(इस बुरी दशा में देखकर उसे पुकार कर) कहेगा ईश्वर की शपथ तू तो मुझे बध ही कर देता (56)
और यदि मेरे ऊपर मेरे ईश्वर की कृपा न होती तो मैं भी उनमें होता जो दण्ड में उपस्थित किये गए है (57)
क्या (यह नही) कि हम मरने वाले ही नही (58)
हां (जो पहली बार मरना था (सो मर चुके और हम पर यातना भी नही होने की निःसंदेह यह बहुत बड़ी सफलता है (60)

اور تم کو بدلہ ویسا ہی ملے گا جیسے تم کام کرتے تھے (۳۹)
مگر جو اللہ کے خاص بندے ہیں (۴۰)
وہی وہ لوگ ہیں جن کے لئے جانی بوجھی عمدہ روزی ہے (۴۱)
یعنی میوے اور ان کا اعزاز کیا جائے گا (۴۲)
نعمت کے باغوں میں (۴۳)
ایک دوسرے کے سامنے تختوں پر بیٹھے ہوں گے (۴۴)
مشروب کے چشموں سے ساغر بھر بھر کر ان کے درمیان پھرائے جائیں گے (۴۵)
(وہ مشروب) سفید اور چمکتے ہوں گے اور پینے والوں کے لئے لذت ہوگی (۴۶)
نہ ان کے جسم کو اس سے کوئی نقصان ہوگا اور نہ اس سے ان کی عقل خراب ہوگی (۴۷)
نوٹ:۔ رائج الوقت تراجم میں (۴۵:۳۷) میں شراب کے چشمے ترجمہ کیا ہے جو غلط ہے صحیح ترجمہ مشروب کے چشمے ہے۔[اس آرام کی زندگی میں مردوں کے ساتھ نیک سیرت بڑی بڑی آنکھوں والی عورت بھی ہوں گی (۴۸)] دوسرا ترجمہ یہ بھی ہو سکتا ہے
ان کے پاس وہ محفوظ خالص چشمے ہوں گے (جن سے ان کو پیالے بھر بھر کے دئے جائیں گے)(۴۸)
(وہ چشمے ایسے ہوں گے) گویا جیسے محفوظ انڈے ہوتے ہیں (ان میں کوئی ملاوٹ نہیں ہوسکتی) یا وہ عورتیں ایسی ہوں گی جن کی آنکھیں کبھی غیر مرد کے لئے نہ اٹھیں ہوں گی محفوظ (۴۹)
(ان سب چیزوں کے ملنے کے بعد اطمینان سے) پھر وہ ایک دوسرے کی طرف رُخ کر کے سوال وجواب کریں گے (۵۰)
ایک کہنے والا ان میں سے کہیگا کہ میرا ایک ساتھی تھا (۵۱)
جو مجھ سے پوچھا کرتا تھا کیا تو بھی ان لوگوں میں ہے جو قیامت کے قائل ہیں (۵۲)
(کیا تجھے یقین ہے کہ) جب ہم مر کر مٹی اور ہڈیاں ہو جائیں گے تو (دوبارہ ہم کو زندہ کیا جائے گا اور) ہم کو (ہمارے اعمال کا) بدلہ دیا جائے گا (۵۳)
(پھر) اس سے کہا جائے گا کیا تم اس کو دیکھنا چاہتے ہو (کہ اب وہ کس حال میں ہے)(۵۴)
پھر وہ خود جھانکے گا تو اس کو دوزخ کے بیچ میں پڑا دیکھے گا (۵۵)
(اس بری حالت میں دیکھ کر اسے پکار کر) کہے گا اللہ کی قسم تو تو مجھے ہلاک ہی کر دیتا (۵۶)
اور اگر میرے اوپر میرے رب کی مہربانی نہ ہوتی تو میں بھی اُن میں ہوتا جو عذاب میں حاضر کئے گئے ہیں (۵۷)
کیا (یہ نہیں کہ) کہ ہم مرنے والے ہی نہیں (۵۸)
ہاں (جو پہلی بار) مرنا تھا (سو مر چکے) اور ہمیں عذاب بھی نہیں ہونے کا (۵۹)
یقیناً یہ بہت بڑی کامیابی ہے (۶۰)

ऐसी ही सफलता के लिए कर्म करने वालों को कर्म करने चाहिए (61)

दुनिया में सत्कर्म करने के बाद जो परलोक की सफलता मिलेगी वह अच्छी है या इस दुनिया में लड़ाई हराम खाने अवज्ञा करने के बाद जो दण्ड मिलेगा वह? (62)

निःसंदेह इस झगड़े और अवज्ञा को हमने अत्याचारियों के लिए विपत्ति आफत बनाया है (63)

निःसंदेह लड़ाई झगड़ा और ईश्वर की अवज्ञा वहां उत्पन्न होती है जहां क्रोध गर्मी बद कलामी होती है (64){7:53}

और जब व्यक्ति को क्रोध आता है तो ऐसा प्रतीत होता है उसका मुख जैसे शैतान का सिर या सांप का फन अर्थात उसमें विष है (65) {50:24-25, 89:11से14}

और ऐसे अवज्ञाकार झगड़ालु व्यक्ति का भोजन पीना वही होता है अर्थात वह हर समय उसी क्रोध में रहता है मानों उसका भोजन और पिना वही है अर्थात अन्याय करना और अत्याचार से अपनी जीविका कमाना (66)

अन्याय से प्राप्त की हुई दौलत से उसकी इच्छा धन संग्रह करने की बढ़ जाती है और इच्छा पूरी करने के लिए वह और अत्याचार करता है जैसे प्यासा आदमी गर्म पानी पीता है तो उसकी प्यास समाप्त नहीं होती और वह और पीता है मानो उसके अत्याचार करने की प्यास इच्छा बढ़ जाती है (67) {42:43,47; 56:51से56}

परन्तु दुनिया में उन अत्याचारों और अवज्ञा करने के बाद दण्ड में महा प्रलय में उनको नर्क की ओर ले जाया जाएगा (68) {30:16;22:4,5;35:32,37;36:8;37:22,23;27:14,48,49, 90;44:43से49;50:24,25;56:52,56}

नोट- आयत 62 से 67 तक हर आलिम ने नर्क की दशा का अनुवाद किया, यदि यह उचित माना जाए तो आयत 68 में कहा गया है कि उनको नर्क की ओर लौटाया जाएगा, तो प्रश्न उत्पन्न होता है जब सब ने उनको नर्क में माना तो उस नर्क से फिर किस नर्क की ओर ले जाया जाएगा क्या दो नर्क है?

अतः सम्भवतः प्रचलित अनुवादों में जो स्पष्ट किया गया है वह विचारणीय है सत्य यदि है तो वह वही है जो मैंने लिखा है यह हो सकता है कि मैं उसके लिए उचित शब्दों का प्रयोग न कर सका हूं, {26:55,130,227; 30:17; 28:4,39; 10:91,92; 30:16} इन आयात के देखने के बाद भाव स्पष्ट हो जाएगा.

उन्होंने अपने बाप दादा को पथ भ्रष्टता में पाया था (69)

सो (इसलिए) वह उन्ही के पग चिन्हों पर दौड़ते रहे (70)

और उनसे पहले भी बहुत से लोग भ्रष्ट हो चुके हैं (71)

और हमने उनमें सावधान करने वाले भेजे (72)

सो देख लो जिनको सावधान किया गया था (और वह न माने तो) उनका अन्त कैसा हुआ (73)

हां जो ईश्वर के निर्मल सदाचारी भक्त थे उनका परिणाम बहुत अच्छा हुआ (74)

और यह सत्य है कि हमको नूह ने पुकारा सो

ایسی ہی کامیابی کے لئے عمل کرنے والوں کو عمل کرنا چاہیے(۶۱)

دنیا میں نیک عمل کرنے کے بعد جو آخرت کی کامیابی ملے گی وہ اچھی ہے یا اس دنیا میں لڑائی جھگڑا حرام کھانا نافرمانی کرنے کے بعد جو عذاب ملے گا وہ؟(۶۲)

بے شک اس جھگڑے اور نافرمانی کو ہم نے ظالموں کے لئے فتنہ بنایا ہے(۶۳)

بے شک لڑائی جھگڑا اور اللہ کی نافرمانی وہاں پیدا ہوتی ہے جہاں غصہ گرمی بدکلامی ہوتی ہے(۶۴)[۷:۵۳]

اور جب آدمی کو غصہ آتا ہے تو ایسا ظاہر ہوتا ہے اس کا چہرہ جیسے شیطان کا سر یا سانپ کا پھن یعنی اس میں زہر ہے(۶۵)[۵۰:۲۴،۲۵، ۸۹:۱۱تا۱۴]

اور ایسے نافرمان جھگڑالو آدمی کی غذا اور پیا وہی ہوتی ہے یعنی وہ ہر وقت اسی غصہ میں رہتا ہے گویا اس کا کھانا اور پیا وہی ہے یعنی ظلم کرنا اور ظلم سے اپنی روزی کمانا(۶۶)

ظلم سے حاصل کی ہوئی دولت سے اس کی خواہش دولت اکٹھی کرنے کی بڑھ جاتی ہے اور خواہش کو پوری کرنے کے لئے وہ اور ظلم کرتا ہے جیسے پیاسا آدمی پانی پیتا ہے گرم تو اس کی پیاس ختم نہیں ہوتی اور وہ اور پیتا ہے گویا اس کے ظلم کرنے کی پیاس بڑھ جاتی ہے(۶۷)[۵۶:۵۱ سے ۵۶؛ ۴۲:۴۳،۴۷]

لیکن دنیا میں ان ظالموں اور نافرمانی کرنے کے بعد سزا میں ان کو دوزخ کی طرف لے جایا جائے گا آخرت میں(۶۸)[ان آیات کو دیکھو ۳۰:۱۶؛ ۲۲:۴،۵؛ ۳۵:۳۲،۳۷؛ ۳۶:۸؛ ۳۷:۲۲،۲۳؛ ۲۷:۱۴،۴۸،۴۹،۹۰؛ ۴۴:۴۳ سے ۴۹؛ ۵۰:۲۴،۲۵؛ ۵۶:۵۲،۵۶]

نوٹ:۔ آیت ۶۲/ سے ۶۷/ تک ہر عالم نے دوزخ کے حالات کا ترجمہ کیا ہے اگر یہ صحیح مانا جائے تو آیت ۶۸ میں کہا گیا ہے کہ پھر ان کو دوزخ کی طرف لوٹایا جائے گا تو سوال پیدا ہوتا ہے جب سب نے ان کو دوزخ میں مانا تو اس دوزخ سے پھر کس دوزخ کی طرف لے جایا جائے گا کیا دو دوزخ ہیں؟

اس لئے غالباً رائج الوقت تراجم میں جو ظاہر کیا گیا ہے وہ محل نظر ہے حقیقت اگر ہے تو وہ وہی ہے جو میں نے لکھا ہے یہ ہو سکتا ہے کہ میں اس کے لئے صحیح لفظوں کا استعمال نہ کر سکا ہوں۔[۲۶:۵۵،۱۳۰،۲۲۷؛ ۲۸:۴،۳۹؛ ۱۰:۹۱،۹۲؛ ۳۰:۱۶۔ ان آیات کو دیکھنے کے بعد مفہوم صاف ہو جائے گا]

انہوں نے اپنے باپ دادا کو گمراہی میں پایا تھا(۶۹)

سو(اس لئے)وہ انہی کے نقش قدم پر دوڑتے رہے(۷۰)

اور ان سے پہلے بھی بہت سے لوگ گمراہ ہو چکے ہیں(۷۱)

اور ہم نے ان میں متنبہ کرنے والے بھیجے(۷۲)

سو دیکھ لو جن کو متنبہ کیا گیا تھا(اور وہ نہ مانے تو)ان کا انجام کیسا ہوا(۷۳)

ہاں جو اللہ کے مخلص نیک بندے تھے ان کا انجام بہت اچھا ہوا(۷۴)

اور یہ حقیقت ہے کہ ہم کو نوح نے پکارا سو (دیکھ لو) کہ ہم دعا

(देख लो) कि हम प्रार्थना के कैसे अच्छे स्वीकार करने वाले हैं (75)	کو کیسے اچھے قبول کرنے والے ہیں (۷۵)
और हमने उनको और उनके घर वालों को बड़े कष्ट से मुक्ति दी (76)	اور ہم نے ان کو اوران کے گھر والوں کو بڑی مصیبت سے نجات دی (۷۶)
और उसकी सन्तान को हमने शेष रहने वाला बनाया (77)	اور اس کی اولاد کو ہم نے باقی رہنے والا بنایا (۷۷)
और उसके बाद आने वालों में उसका जप शेष रखा (78)	اور اس کے بعد آنے والوں میں اس کا ذکر باقی رکھا (۷۸)
अर्थात पूरे संसार (के लोगों के) मुख पर नूह के लिए शान्ति हो (79)	یعنی تمام جہاں (کے لوگوں کی) زبان پر نوح کے لئے سلامتی ہو (۷۹)
और क्यों न हो? सदाचारियों को हम ऐसा ही फल दिया करते हैं (80)	(اور کیوں نہ ہو؟) نیکوں کاروں کو ہم ایسا ہی بدلہ دیا کرتے ہیں (۸۰)
निःसन्देह वह हमारे आस्तिक भक्तों में से थे (81)	بے شک وہ ہمارے مومن بندوں میں سے تھے (۸۱)
फिर हमने दूसरों को प्लावन कर दिया (82)	پھر ہم نے دوسروں کو ڈبو دیا (۸۲)
और नूह ही की रीति पर चलने वाला इब्राहीम था (83)	اور نوح ہی کے طریقے پر چلنے والا ابراہیم تھا (۸۳)
जब वह पवित्र हृदय लेकर अपने रब की सेवा में उपस्थित हुआ (84)	جب وہ پاک دل لے کر اپنے رب کی خدمت میں حاضر ہوا (۸۴)
जब उन्होंने अपने पिता और अपनी जाति से कहा कि तुम किन वस्तुओं को पूजते हो? (85)	جب انہوں نے اپنے باپ اور اپنی قوم سے کہا کہ تم کن چیزوں کو پوجتے ہو (۸۵)
यह क्या है कि ईश्वर को छोड़कर झूटे देवताओं के पीछे पड़े हो? (86)	یہ کیا ہے کہ اللہ کو چھوڑ کر جھوٹے معبودوں کے پیچھے پڑے ہو (۸۶)
(अच्छा यह बताओ) भला विश्व पालक के विषय में तुम्हारा क्या विचार है (87)	(اچھا یہ بتاؤ) بھلا رب العلمین کے بارے میں تمہارا کیا خیال ہے؟ (۸۷)
(उस समय लोग मेले में जा रहे थे उन्होंने इब्राहीम से चलने को कहा) तो इब्राहीम ने तारों पर विवेक से एक दृष्टि डाली तो सत्यता सामने थी जो ईश्वर ने उनको समझा दी थी (88)	(اس وقت لوگ میلے میں جا رہے تھے انہوں نے ابراہیم سے چلنے کو کہا) تو ابراہیم نے ستاروں پر غور سے ایک نظر ڈالی تو حقیقت سامنے تھی جو اللہ نے ان کو سمجھا دی تھی (۸۸)
फिर कहा मैं (तुम्हारे इस अनेकेश्वर वादी कर्म से रुष्ट हूं (इसलिए नही जा सकता) (89) {21:76}	پھر کہا میں (تمہارے اس شرکانہ فعل سے) دکھی ہوں (اس لئے نہیں جا سکتا) (۸۹) [۲۱:۷۶]
तो वह लोग उनको छोड़कर चले गए (90)	تو وہ لوگ ان کو چھوڑ کر چلے گئے (۹۰)
उनके जाने के बाद इब्राहीम चुपके से बुतों के मन्दिर में घुस गया और कहा (यह चढ़ावे जो तुम्हारे सामने रखे हैं) खाते क्यों नही? (91)	ان کے جانے کے بعد ابراہیم چپکے سے بتوں (کے مندر) میں گھس گیا اور کہا (یہ چڑھاوے جو تمہارے سامنے رکھے ہیں) کھاتے کیوں نہیں؟ (۹۱)
तुम्हें क्या हुआ है तुम बोलते क्यों नही? (92)	تمہیں کیا ہوا ہے تم بولتے کیوں نہیں (۹۲)
फिर उनको शक्ति से मारना और तोड़ना आरम्भ कर दिया (93)	پھر ان کو طاقت سے مارنا اور توڑنا شروع کر دیا (۹۳)
(मेले से वापस आकर जब उन्होंने बुतों को टूटा हुआ देखा) तो उसके पास दौड़ते हुए आए (94)	(میلے سے واپس آکر جب انہوں نے بتوں کو ٹوٹا ہوا دیکھا) تو اس کے پاس دوڑتے ہوئے آئے (۹۴)
तो इब्राहीम ने कहा तुम ऐसी वस्तुओं को क्यों पूजते हो जिन्हें स्वयं (अपने हाथों से) बनाते हो (95)	تو ابراہیم نے کہا تم ایسی چیزوں کو کیوں پوجتے ہو جنہیں خود (اپنے ہاتھوں سے) بناتے ہو (۹۵)
यद्यपि तुमको और जो तुम बनाते हो उसको ईश्वर ही ने उत्पन्न किया है (96)	حالانکہ تم کو اور جو تم بناتے ہو اس کو اللہ ہی نے پیدا کیا ہے (۹۶)
वह कहने लगे कि इसके लिए (भट्टी की भांति) एक भवन बनाओ (और उसमें अलाव तैयार करो) फिर उसको आग के ढेर में डाल दो (97)	وہ کہنے لگے کہ اس کے لئے (بھٹی کی طرح) ایک عمارت بناؤ (اور اس میں الاؤ تیار کرو) پھر اس کو آگ کے ڈھیر میں ڈال دو (۹۷)
फिर उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही और हमने उन्ही को परास्त कर दिया (98)	پھر انہوں نے اس کے ساتھ ایک چال چلنی چاہی اور ہم نے انہی کو زیر کر دیا (۹۸)

और इब्राहीम ने कहा मैं तो अपने ईश्वर के मार्ग में चल पड़ा वही मेरा मार्ग दर्शन करेगा (99) [3:55]

اور ابراہیم نے کہا میں تو اپنے رب کی راہ میں چل پڑا وہی میری رہنمائی کرے گا (۹۹) [۳:۵۵]

(घर से निकलने के बाद) इब्राहीम ने प्रार्थना की ऐ रब मुझे सदाचारी सन्तान प्रदान कर (100)

(گھر سے نکلنے کے بعد) ابراہیم نے دعا کی اے رب مجھے صالح اولاد عطا کر (۱۰۰)

तो हमने उनको एक सहनशील पुत्र (की उत्पत्ति) की मंगल सूचना दी (101)

تو ہم نے ان کو ایک بردبار لڑکے (کی پیدائش) کی خوشخبری دی (۱۰۱)

फिर जब वह पुत्र इब्राहीम के साथ चलने फिरने लगा तो इब्राहीम ने कहा कि पुत्र मैं स्वप्न में देखता हूं कि मैं तुझे (ईश्वर के मार्ग में) वध कर रहा हूं अब तू बता (इस विषय में) तेरा क्या विचार है? उसने कहा पिता जी जो आपको आदेश दिया गया है उसे कीजिए ईश्वर के आदेश से आप मुझे धैर्यवानों में पाऐंगे (102)

پھر جب وہ لڑکا ابراہیم کے ساتھ چلنے پھرنے لگا تو ابراہیم نے کہا کہ بیٹا میں خواب میں دیکھتا ہوں کہ میں تجھے (اللہ کی راہ میں) ذبح کر رہا ہوں اب تو بتا (اس بارے میں) تیرا کیا خیال ہے؟ اس نے کہا ابا جان جو آپ کو حکم دیا گیا ہے کیجئے اللہ کے حکم سے آپ مجھے صابروں میں پائیں گے (۱۰۲)

जब दोनों ने आदेश मान लिया और पिता ने पुत्र को माथे के बल लिटा दिया (और वध करना चाहा) (103)

جب دونوں نے حکم مان لیا اور باپ نے بیٹے کو ماتھے کے بل لٹا دیا (اور ذبح کرنا چاہا) (۱۰۳)

तो हमने उनको पुकारा कि ऐ इब्राहीम (104)
तूने स्वप्न सच कर दिखाया (इतना प्रयाप्त है तेरा पुत्र तुझे मुबारक हो)
तू आज्ञाकारी है हम आज्ञाकारियों को ऐसा ही अच्छा फल दिया करते हैं (105)

تو ہم نے ان کو پکارا کہ اے ابراہیم (۱۰۴)
تو نے خواب سچ کر دکھایا (اتنا کافی ہے تیرا بیٹا تجھے مبارک ہو) تو فرمانبردار ہے ہم فرمانبرداروں کو ایسا ہی اچھا بدلہ دیا کرتے ہیں (۱۰۵)

इस परीक्षा से (हमारा उद्देश्य पुत्र को वध कराना न था अपितु तेरे धैर्य की खुली परीक्षा थी (सो तू सफल हुआ) (106)

اس امتحان سے (ہمارا مقصد لڑکے کو ذبح کرانا نہ تھا بلکہ) تیرے ایمان کی کھلی آزمائش تھی (سو تو کامیاب ہوا) (۱۰۶)

और हमने इस विराट बलिदान (जो इब्राहीम ने इस्माईल की आकृति में प्रस्तुत की थी) का बदला यह दिया कि (107)

<u>اور ہم نے اس ذبح عظیم (جو ابراہیم نے اسماعیل کی شکل میں پیش کی تھی) کا بدلہ یہ دیا کہ (۱۰۷)</u>

आने वाले वंशों में इब्राहीम का जप और प्रशंसा रखी (108)
कि इब्राहीम पर सलाम शान्ति हो (109)
हम सदाचारियों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (और इस बलिदान को याद रखने के लिए मुसलमान हर साल हज में जानवर बलिदान करते हैं और बहुत से अपने घरों पर भी (110)

آنے والی نسلوں میں ابراہیم کا ذکر خیر اور تعریف رکھی (۱۰۸)
کہ ابراہیم پر سلام ہو (۱۰۹)
ہم نیکوکاروں کو ایسا ہی بدلہ دیا کرتے ہیں (اور اس قربانی کو یاد رکھنے کے لئے مسلمان ہر سال حج میں جانور قربان کرتے ہیں اور بہت سے اپنے گھر پر بھی (۱۱۰)

निःसन्देह वह हमारे आस्तिक बन्दों में से थे (111)
और इसके बाद हमने इस्हाक की मंगल सूचना दी जो सदाचारियों में से एक नबी थे (112)

بے شک وہ ہمارے مومن بندوں میں سے تھے (۱۱۱)
اور اس کے بعد ہم نے اسحاق کی بشارت دی جو نیک کرداروں میں سے ایک نبی تھے (۱۱۲)

और हमने इब्राहीम और इस्हाक पर सम्पन्नता अवतरित की थी परन्तु उन दोनों की सन्तान में (अच्छे बुरे सब हैं) कोई नेक है और कोई अपने जी पर अत्याचार करने वाला है (113)

اور ہم نے ابراہیم اور اسحاق پر برکتیں نازل کی تھیں لیکن ان دونوں کی اولاد میں (اچھے بُرے سب ہیں) کوئی نیک ہے اور کوئی اپنے نفس پر ظلم صریح کرنے والا ہے (۱۱۳)

और यह वास्तविकता है कि हमने मूसा और हारून पर भी उपकार किए (114)

اور یہ حقیقت ہے کہ ہم نے موسیٰ اور ہارون پر بھی احسان کیے (۱۱۴)

और उनको और उनकी जाति को बड़ी विपत्ति से मुक्ति दी (115)
और उनकी सहायता की तो वह प्रभुत्वशाली हो गए (116)
और हमने उन दोनों को स्पष्ट पुस्तक दी (117)
और उन दोनों को धर्म का सीधा मार्ग दिखाया (118)
और उनके बाद आने वाली (जातियों) में उनका मंगल जप छोड़ा (119)

اور ان کو اور ان کی قوم کو بڑی مصیبت سے نجات دی (۱۱۵)
اور ان کی مدد کی تو وہ غالب ہو گئے (۱۱۶)
اور ہم نے ان دونوں کو واضح کتاب دی (۱۱۷)
اور دونوں کو دین کا سیدھا راستہ دکھایا (۱۱۸)
اور ان کے بعد آنے والی (امتوں) میں ان کا ذکر خیر چھوڑا (۱۱۹)

और (सबके मुख पर) मूसा और हारून के लिए सलामती शान्ति है (120)
निःसंदेह हम सदाचारियों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (121)
निःसंदेह वह दोनों हमारे आस्तिक बन्दों में से थे (122)
और इल्यास भी रसूलों में से था (123)
जब उसने अपनी जाति से कहा था तुम (दुष्कर्मों के परिणाम से) डरते क्यों नहीं (124)
यह क्या है कि तुम बअल को सहायता के लिए पुकारते हो और सब से श्रेष्ठ पैदा करने वाले ईश्वर को छोड़ देते हो (125)
अर्थात ईश्वर को जो तुम्हारा भी रब है और तुम्हारे अगले बाप दादाओं का भी रब है (126)
परन्तु उसकी जाति के लोगों ने उसे झुठला दिया, अतः उनको (एक दिन दण्ड के लिए ईश्वर के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा (127)
हां ईश्वर के सदाचारी बन्दे यातना से सुरक्षित रहेंगे (128)
और उनका मंगल जग पिछलों में शेष छोड़ दिया (129)
कि इलयासीन पर शान्ति सलाम हो (130)
हम सदाचारियों को ऐसा ही बदला देते हैं (131)
निःसंदेह वह हमारे आस्तिक बन्दों में से थे (132)
और लूत भी रसूलों में से थे (133)
जब हमने उनको और उनके घर वालों को मुक्ति दी (134)
परन्तु एक बुढ़िया को मुक्ति न दी कि वह पिछे रह जाने वालों में से थी (135)
फिर हमने शेष सब को वध कर दिया (136)
और तुमतो प्रातः होने पर उन बस्तियों के पास से गमन होते हो (137)
और रात्री को भी तो क्या तुम बुद्धि नहीं रखते (138)
और निःसंदेह यूनुस भी रसूलों में से था (139)
जब वह एक भारी नाव की ओर दोड़ कर गया (140)
फिर नाव में अपना भाग सहम (स्थान) प्राप्त (अर्थात सवार होने की) करने का प्रयास किया फिर फिसल गया (अर्थात पांव फिसल गया) या नाव में बैठ और भार अधिक होने से नाव डूब गई) और यूनुस पानी में गिर गए और मछली ने मूहं में पकड़ लिए (141)
फिर उन्हें मीन ने ग्रास बनाने का प्रयास किया और वह अन्दर ही अन्दर अपने को जल्दी करने पर धिक्कार कर रहे थे (142) {18:87, 68:48}
फिर यदि वह तैराकों में (सबाहा) से न होते तो (अवश्य मीन निगल लेती) (143)
और वह महाप्लव तक उसी के पेट में रहते (144)
{परन्तु आप ने प्रयास करके अपने को मीन से छुड़ा लिया यदि प्रयास करके अपने को न छुड़ाते और अच्छे तैराक न होते तो मीन निगल लेती और महाप्लव तक बाहर न जा सकते थे, परन्तु उन्होंने प्रयास करके अपने को बचा लिया, इस प्रयास और भय के कारण बहुत निर्बल हो गए थे बड़ी

اور (سب کی زبان پر) موسیٰ اور ہارون کے لئے سلامتی ہے (۱۲۰)
بے شک ہم نیکو کاروں کو ایسا ہی بدلہ دیا کرتے ہیں (۱۲۱)
بے شک وہ دونوں ہمارے مومن بندوں میں سے تھے (۱۲۲)
اور الیاس بھی رسولوں میں سے تھے (۱۲۳)
جب اس نے اپنی قوم سے کہا تھا تم (بد اعمال کے نتائج سے) ڈرتے کیوں نہیں (۱۲۴)
یہ کیا ہے کہ تم بعل کو مدد کے لئے پکارتے ہو اور سب سے بہتر پیدا کرنے والے اللہ کو چھوڑ دیتے ہو (۱۲۵)
یعنی اللہ کو جو تمہارا بھی رب ہے اور تمہارے اگلے باپ داداؤں کا بھی رب ہے (۱۲۶)
لیکن اس کی قوم کے لوگوں نے اسے جھٹلا دیا اس لئے ان کو (ایک روز سزا کے لئے اللہ کے سامنے پیش کیا جائے گا (۱۲۷)
ہاں اللہ کے نیک بندے عذاب سے محفوظ رہیں گے (۱۲۸)
اور اُن کا ذکر خیر پچھلوں میں باقی چھوڑ دیا (۱۲۹)
کہ الیاسین پر سلام ہو (۱۳۰)
ہم نیک لوگوں کو ایسا ہی بدلہ دیتے ہیں (۱۳۱)
بے شک وہ ہمارے مومن بندوں میں سے تھے (۱۳۲)
اور لوطؑ بھی رسولوں میں سے تھے (۱۳۳)
جب ہم نے ان کو اور ان کے گھر والوں کو نجات دی (۱۳۴)
مگر ایک بڑھیا کو نجات نہ دی کہ وہ پیچھے رہ جانے والوں میں سے تھی (۱۳۵)
پھر ہم نے باقی سب کو ہلاک کر دیا (۱۳۶)
اور تم تو صبح ہونے پر ان بستیوں کے پاس سے گزرتے ہو (۱۳۷)
اور رات کو بھی تو کیا تم عقل نہیں رکھتے (۱۳۸)
اور یقیناً یونس بھی رسولوں میں سے تھا (۱۳۹)
جب وہ ایک بھری کشتی کی طرف دوڑ کر گیا (۱۴۰)
پھر کشتی میں اپنا حصہ سہم (جگہ) حاصل (یعنی سوار ہونے کی) کرنے کی کوشش کی پھر پھسل گیا (یعنی پاؤں پھسل گیا) یا کشتی میں بیٹھا اور وزن زیادہ ہونے سے کشتی ڈوب گئی) اور یونس پانی میں گر گئے اور مچھلی نے منہ میں پکڑ لئے (۱۴۱)
پھر انہیں مچھلی نے لقمہ بنانے کی کوشش کی اور وہ اندر ہی اندر اپنے کو جلدی کرنے پر ملامت کر رہے تھے (۱۴۲) [۱۸:۸۷، ۶۸:۴۸]
پھر اگر وہ تیراکوں میں (سبّح) سے نہ ہوتے تو (ضرور مچھلی نگل لیتی) (۱۴۳)
اور وہ قیامت تک اُسی کے پیٹ میں رہتے (۱۴۴)
[لیکن آپ نے کوشش کر کے اپنے کو مچھلی سے چھوڑا لیا اگر کوشش کر کے اپنے کو نہ چھوڑاتے اور اچھے تیراک نہ ہوتے تو مچھلی نگل لیتی انہوں نے محنت کر کے اپنے کو بچا لیا۔ اس جدوجہد اور دہشت کی وجہ سے بہت کمزور ہو گئے تھے بمشکل پانی

कठिनाई से पानी से निकल कर एक वृक्ष के नीचे आकर लेट गए)

سے نکل کرایک پیڑ کے نیچے آکر لیٹ گئے]

फिर हमने उन्हें खुले मैदान में पड़े हुए पाया, क्योंकि वह (उस समय वह मीन से छूटने के प्रयास और तीव्र तैरने के कारण) निढाल हो गए थे (145)

پھر ہم نے انہیں کھلے میدان میں پڑے ہوئے پایا کیوں کہ وہ (اس وقت وہ مچھلی کی زد سے نکلنے کی کوشش اور تیز تیرنے کی وجہ سے) نڈھال ہو گئے تھے (۱۴۵)

और जहां पर वह आकर लेटे थे वहां हमने एक वृक्ष उगा रखा था जिस पर एक कद्दू की बैल चढ़ी थी (146)

اور جہاں پر وہ آکر لیٹے تھے وہاں ہم نے ایک درخت اُگا رکھا تھا جس پر ایک کدو کی بیل چڑھی تھی (۱۴۶)

और इसके बाद हमने उसे एक लाख या इससे अधिक लोगों की ओर भेजा (147)

اور اس کے بعد ہم نے اسے ایک لاکھ یا اس سے زائد لوگوں کی طرف بھیجا (۱۴۷)

नोट- प्रचलित अनुवाद से हटकर आयात के लेख और नबी के गौरव के अनुसार यह भाव लिखा गया है इस कथा का विस्तार मेरी पुस्तक "जिक्र-ए-अम्बिया" में देखो थोड़ा यहां भी लिख दूं

نوٹ:۔ رائج الوقت ترجمہ سے ہٹ کر آیات کے متن اور نبی کی شان کے مطابق یہ مفہوم لکھا گیا ہے اس واقعہ کی تفصیل میری کتاب ذکر انبیاء میں دیکھو تھوڑا یہاں بھی لکھ دوں۔

महामना यूनुस को ईश्वर ने एक क्षेत्र में कार्य करने के लिए नियुक्त किया था, अतः जब तक वहां से पलायन का आदेश न होता उनका हटना उचित न था, परन्तु समुदाय की ओर से कुछ ऐसे निराश हुए और यह समझे कि अब यह मानने वाले नही मेरा कार्य पूरा हो गया, यह अनुमान करके पलायन कर गए और नदी पार होने के लिए एक नाव में बैठे परन्तु नाव में भार अधिक होने के कारण नाव डूब गई और आप भी पानी में गिर गए तब आपको एक मीन ने मुख में पकड़ लिया और वह मीन आपको ग्रास बनाना चाहती थी (37:143) (फलतकामा) अर्थात निगलना चाहती थी, ऐसी दशा में यूनुस ने अपने को उस मीन से बचाने के लिए परिश्रम किया जो आपको निढाल कर गया, चूंकि पानी से बाहर आना था, अतः मीन से छूटने और बाहर आने तक आप बहुत निर्बल हो गए इधर आपको यह भी याद रहा कि शीघ्रता की है उसकी भी आपने क्षमा मांगी और क्षमा मांग कर बाहर मैदान में एक वृक्ष के नीचे जिस पर कद्दू की बैल भी चढ़ी थी आकर लेट गए जब चैतना ठीक हो गई और ईश्वर ने क्षमा कर दिया, फिर ईश्वर ने आदेश दिया कि जाओ अपने स्थान पर

حضرت یونس کو اللہ نے ایک محاذ پر کام کرنے کے لئے مقرر کیا تھا۔ اس لئے جب تک وہاں سے ہجرت کا حکم نہ ہوتا ان کا ہٹنا ٹھیک نہ تھا مگر قوم کی طرف سے کچھ ایسے مایوس ہوئے اور یہ سمجھے کہ اب یہ ماننے والے نہیں میرا کام پورا ہو گیا۔ یہ اندازہ کر کے ہجرت کر گئے۔ اور دریا پار ہونے کے لئے ایک کشتی میں بیٹھے مگر کشتی میں وزن زیادہ ہونے کی وجہ سے کشتی ڈوب گئی اور آپ بھی پانی میں گر گئے۔ جب آپ کو ایک مچھلی نے منہ میں پکڑ لیا اور وہ مچھلی آپ کو لقمہ بنانا چاہتی تھی (۳۷:۱۴۳) (فالتقمہ) یعنی نگلنا چاہتی تھی۔ ایسی حالت میں یونسؑ نے اپنے کو اس مچھلی سے بچانے کے لئے جدوجہد کی جو آپ کو نڈھال کر گئی۔ چونکہ پانی سے باہر آنا تھا۔ اس لئے مچھلی سے چھوٹنے اور باہر آنے تک آپ بہت کمزور ہو گئے ادھر آپ کو یہ بھی یاد رہا کہ میں نے جلدبازی کی ہے۔ اس کی بھی آپ نے معافی مانگی اور معافی مانگ کر باہر میدان میں ایک درخت کے نیچے جس پر کدو کی بیل بھی چڑھی تھی آکر لیٹ گئے۔ جب حواس درست ہو گئے اور اللہ نے معاف کر دیا پھر اللہ نے حکم دیا کہ جاؤ اپنے مقام پر۔

इस शीघ्रता को ईश्वर ने मुहम्मद स० को याद दिला कर (68:48) में कहा है कि आप मीन वाले की भांति शीघ्रता न करना अपितु धैर्य से काम करें और जब जिस कार्य का आदेश हो तब उस कार्य को करें यह है वास्तविकता परन्तु इस घटना को क्या से क्या बना रखा है, उनको मीन ने मुख में पकड़ लिया था और निगलना चाहती थी परन्तु आप परिश्रम करके बाहर आ गए

اس جلدبازی کو اللہ نے محمدؐ کو یاد دلا کر (۶۸:۴۸) میں کہا ہے کہ آپ مچھلی والے کی طرح جلدی نہ کریں بلکہ صبر سے کام کریں اور جب جس کام کا حکم ہو تب اس کام کو کریں یہ ہے حقیقت مگر اس واقعہ کو کیا سے کیا بنا رکھا ہے۔ ان کو مچھلی نے منہ میں پکڑ لیا تھا اور نگلنا چاہتی تھی مگر آپ محنت کر کے باہر آ گئے۔

वह लोग विश्वास लाए और हमने एक निश्चित समय तक उन्हें जीवन सामग्री दी (148)

وہ لوگ ایمان لائے اور ہم نے ایک وقت خاص تک انہیں سامان زندگی دیا (۱۴۸)

उनसे ज्ञात तो करो कि भला तुम्हारे रब के लिए तो पुत्री और उनके लिए पुत्र (149)

اُن سے پوچھو تو کہ بھلا تمہارے رب کے لئے تو بیٹیاں اور اُن کے لئے بیٹے (۱۴۹)

या हमने जब फरिश्तों को स्त्री बनाया वह उस समय उपस्थित थे (150)

یا ہم نے جب فرشتوں کو عورتیں بنایا وہ اس وقت موجود تھے (۱۵۰)

देखो वह अपनी झूट बनाई हुई बात कहते हैं (151)

دیکھو وہ اپنی جھوٹ بنائی ہوئی بات کہتے ہیں (۱۵۱)

कि ईश्वर के सन्तान है तो सुनों निःसंदेह वह लोग झूटे हैं (152)

کہ اللہ کے اولاد ہے تو سنو یقیناً وہ لوگ جھوٹے ہیں (۱۵۲)

क्या ईश्वर ने पुत्रों के स्थान पर पुत्रीयों को पसन्द किया है (जब कि तुम स्वयं पुत्रीयों को पसन्द नही करते) (153)

کیا اللہ نے بیٹوں کی نسبت بیٹیوں کو پسند کیا ہے (جب کہ تم خود بیٹیوں کو پسند نہیں کرتے) (۱۵۳)

तुम्हें क्या हो गया है? कैसे निर्णय करते हो (154)

تمہیں کیا ہو گیا ہے؟ کیسے فیصلے کرتے ہو (۱۵۴)

भला तुम विचार क्यों नही करते (155)
क्या तुम्हारे पास कोई स्पष्ट तर्क है (156)
यदि तुम सच्चे हो तो अपनी पुस्तक प्रस्तुत करो (जिसमें लिखा हुआ हो कि फरिश्ते ईश्वर की पुत्रीयां हैं) (157)
और उन्होंने ईश्वर में और जिन्नों में नाता निश्चित किया है यद्यपि जिन्नों को ज्ञात है वह भी (इन्सानों की भांति) ईश्वर के सामने उपस्थित होने वाले हैं (158)
वह जो कुछ वर्णन करते हैं ईश्वर उससे पवित्र है (159)
परन्तु ईश्वर के विशेष प्रमुख बन्दे (न तो ऐसी व्यर्थ बाते कहते हैं और न वह दण्ड के अधिकारी हैं) (160)
सो तुम और जिनको तुम पूजते हो (161)
(सब मिलकर) ईश्वर के विरूद्ध किसी को बहका नही सकते (162)
परन्तु उसी व्यक्ति को जो नर्क में जाने वाला हो (163)
और हममें से हर एक का एक स्थान निश्चित है (164)
और हम पंक्ति बान्धे रहते हैं (एकता रखते हैं) (165)
और उसकी पवित्रता का वर्णन करते रहते हैं(166)
और वह (नास्तिक) लोग कहा करते थे (167)
यदि हमारे पास अगलों की कोई शिक्षा की पुस्तक होती (168)
तो हम ईश्वर के प्रमुख बन्दे होते (169)
(परन्तु जब उनके पास कुरआन आ गया) इससे इन्कार करते हैं निकट ही उनको इसका परिणाम ज्ञात हो जाएगा (170)
हम अपने भेजे हुए बन्दों अर्थात रसूलों से वचन कर चुके हैं (171)
कि वही सफल रहेंगे (172)
और निःसंदेह हमारी सैना प्रभुत्वशाली रहेगी (173)
(तो ऐ रसूल) कुछ समय तक के लिए उन्हें उनके हाल पर छोड़ दो (174)
और उन्हें देखते रहो आगे चल कर वह स्वयं ही अपना परिणाम देख लेंगे (175)
क्या वह हमारे कष्ट के लिए जल्दी कर रहें हैं (176)
परन्तु जब वह उनके मैदान में उतरेगा तो जिन लोगों को डराया गया है, उनका प्रातः बड़ा अशुभ होगा (177)
और एक समय तक उनसे मुख फैरे रहो (178)
और (उनके कर्मों को) देखते रहो निकट ही वह (अपने कुफर का परिणाम) देख लेंगे (179)
और आपका रब जो सम्मान वाला है उन सम्पूर्ण बातों से जो वह वर्णन कर रहे हैं पवित्र है (180)
और सम्पूर्ण रसूलों पर सलाम (शान्ति) (181)
और हर प्रकार की प्रशंसा ईश्वर के लिए है जो सारे जहां का पालन हार है (182)

بھلاتم غور کیوں نہیں کرتے (۱۵۵)
کیا تمہارے پاس کوئی واضح دلیل ہے (۱۵۶)
اگر تم سچے ہو تو اپنی کتاب پیش کرو (جس میں لکھا ہوا ہو کہ فرشتے اللہ کی بیٹیاں ہیں) (۱۵۷)
اور انہوں نے اللہ میں اور جنوں میں رشتہ مقرر کیا ہے حالانکہ جنوں کو معلوم ہے کہ وہ بھی (انسانوں کی طرح) اللہ کے سامنے حاضر ہونے والے ہیں (۱۵۸)
وہ جو کچھ بیان کرتے ہیں اللہ اس سے پاک ہے (۱۵۹)
مگر اللہ کے خاص بندے (نہ تو ایسی لغو باتیں کہتے ہیں اور نہ وہ عذاب کے مستحق ہیں) (۱۶۰)
سو تم اور جن کو تم پوجتے ہو (۱۶۱)
(سب مل کر) اللہ کے خلاف کسی کو بہکا نہیں سکتے (۱۶۲)
مگر اسی شخص کو جو جہنم میں جانے والا ہو (۱۶۳)
اور ہم میں سے ہر ایک کا ایک مقام مقرر ہے (۱۶۴)
اور ہم صف باندھے رہتے ہیں (متحد رہتے ہیں) (۱۶۵)
اور اس کی پاکی بیان کرتے رہتے ہیں (۱۶۶)
اور وہ (کافر) لوگ کہا کرتے تھے (۱۶۷)
اگر ہمارے پاس اگلوں کی کوئی نصیحت کی کتاب ہوتی (۱۶۸)
تو ہم اللہ کے خاص بندے ہوتے (۱۶۹)
(لیکن جب ان کے پاس قرآن آگیا) اس سے انکار کرتے ہیں عنقریب ان کو اس کا انجام معلوم ہو جائے گا (۱۷۰)
ہم اپنے بھیجے ہوئے بندوں یعنی رسولوں سے وعدہ کر چکے ہیں (۱۷۱)
کہ وہی کامیاب رہیں گے (۱۷۲)
اور یقیناً ہمارا لشکر غالب رہے گا (۱۷۳)
(تو اے رسول) کچھ عرصے تک کے لئے انہیں ان کے حال پر چھوڑ دو (۱۷۴)
اور انہیں دیکھتے رہو آگے چل کر وہ خود ہی اپنا انجام دیکھ لیں گے (۱۷۵)
کیا وہ ہمارے عذاب کے لئے جلدی کر رہے ہیں (۱۷۶)
مگر جب وہ ان کے میدان میں اترے گا تو جن لوگوں کو ڈرایا گیا ہے ان کی صبح بڑی منحوس ہوگی (۱۷۷)
اور ایک وقت تک ان سے منہ پھیرے رہو (۱۷۸)
اور (ان کی حرکتوں کو) دیکھتے رہو عنقریب وہ (اپنے کفر کا انجام) دیکھ لیں گے (۱۷۹)
اور آپ کا رب جو عزت کا مالک ہے ان کی تمام باتوں سے جو وہ لوگ بیان کر رہے ہیں پاک ہے (۱۸۰)
اور تمام رسولوں پر سلام (۱۸۱)
اور ہر طرح کی تعریف اللہ کے لئے ہے جو سارے جہاں کا پالنہار ہے (۱۸۲)

साद मक्की (38)

ऐ मुहम्मद स0! साक्षी है कुरआन जो शिक्षा देने वाला है (कि तुम सत्य पर हो) (1)
अपितु जो लोग काफ़िर है वह घमण्ड और विरोध में पड़े है (2)
हमने उन से पहले बहुत सी जातियों को नष्ट कर दिया तो वह (कष्ट के समय) लगे दुहाई देने और वह क्षमा का समय नही था (3)
और नास्तिकों ने आश्चर्य किया कि उनके पास उन्हीं में से सावधानप करने वाला आया और नास्तिक कहने लगे कि यह तो जादूगर है झूठा है (4)
(इसे) क्या (हो गया कि) इसने सारे देवताओं को छोड़ कर एक ही पूज्य बना डाला यह तो बड़ी विचित्र बात है (5)
और जाति के नेता यह कहते हुए निकल गए कि चलो और डटे रहो अपने देवताओ की पूजा पर यह बात तो किसी और ही उद्देश्य से कही जा रही है (6)
यह बात हमने (ऐसी नई बात) दूसरे पहले पन्थों में कभी नही सुनी, हो न हो यह इसकी बनावटी है (7)
क्या हम में यही एक व्यक्ति रह गया था जिस पर (ईश्वर की) वाणी अवतरित कर दी गई? बात यह है कि उन्हें आरम्भ से ही हमारे कथन में शंका है (इस लिए नही मानते) अभी उन्होंने हमारे कष्ट का स्वाद नही चखा (8)
या क्या उनके पास तेरे प्रभुत्वशाली अधिक प्रदान करने वाले रब के प्रसाद के कोष है (9)
क्या उनके अधिकार में आकाश और पृथ्वी की और उन सम्पूर्ण वस्तुओं की जो उनके मध्य है राज्य है? (यदि ऐसा है) तो उनको चाहिए कि आकाश पर सीढ़ी लगा कर चढ़ जाए (10)
यहां परास्त हुए दलों में से यह भी एक सैना है (11)
उनसे पहले नूह की जाति और आद और मेखों वाला फ़िरऔन बड़ी अचल शक्तियों का स्वामी (औताद उसकी जाति के लोग) भी झुटला चुके है (12)
और समूद और लूत की जाति और बन के रहने वाले भी (झुटला चुके है) वही वह दल है (13)
उन सब ने रसूलों को झुटलाया था तो मेरा कष्ट उन पर आ गया (14)
उन्हें केवल एक ध्वनी की प्रतीक्षा है जिसमें कोई विराम नही होगा (15)
और कहते है कि ऐ हमारे रब हमको हमारा अंश (कष्ट) लेखा के दिन से पहले ही देदे (16)
(ऐ मुहम्मद स0) वह जो कुछ कहते है उस पर धैर्य करो और हमारे बन्दे दाऊद को याद करो जो बड़ी शक्ति वाला था और ईश्वर की ओर आकृष्ट था (17) {5:38}
हमने पर्वतों को उनकी बैगार में लगा दिया था कि प्रातः और सांय उनके साथ अपना कर्तव्य पूरा

سورت ص مکی (۳۸)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اے محمدؐ! شاہد ہے قرآن جو نصیحت دینے والا ہے (کہ تم حق پر ہو) (۱)
بلکہ جو لوگ کافر ہیں وہ غرور اور مخالفت میں پڑے ہیں (۲)
ہم نے ان سے پہلے بہت سی امتوں کو ہلاک کر دیا تو وہ (عذاب کے وقت) لگے فریاد کرنے اور وہ رہائی کا وقت نہیں تھا (۳)
اور کافروں نے تعجب کیا کہ اُن کے پاس ان ہی میں سے ڈرانے والا آیا اور کافر کہنے لگے کہ یہ تو جادوگر ہے جھوٹا (۴)
(اسے) کیا (ہوگیا کہ) اس نے سارے دیوتاؤں کو چھوڑ کر ایک ہی معبود بنا ڈالا؟ یہ تو بڑی عجیب بات ہے (۵)
اور سرداران قوم یہ کہتے ہوئے نکل گئے کہ چلو اور ڈٹے رہو اپنے معبودوں کی عبادت پر یہ بات تو کسی اور ہی مطلب سے کہی جا رہی ہے (۶)
یہ بات ہم نے (ایسی نئی بات) دوسرے پہلے مذہب میں کبھی نہیں سنی، ہو نہ ہو یہ اس کی من گھڑت ہے (۷)
کیا ہم میں یہی ایک شخص رہ گیا تھا جس پر (اللہ کا) کلام نازل کر دیا گیا؟ بات یہ ہے کہ اُنہیں سرے سے ہی ہمارے کلام ہی میں شک ہے (اس لئے نہیں مانتے) ابھی انہوں نے ہمارے عذاب کا مزہ نہیں چکھا (۸)
یا کیا ان کے پاس تیرے زبردست فیاض رب کی رحمت کے خزانے ہیں (۹)
کیا ان کے قبضہ میں آسمان اور زمین کی اور ان تمام چیزوں کی جو ان کے درمیان ہے حکومت ہے؟ (اگر ایسا ہے) تو ان کو چاہیے کہ آسمان پر سیڑھی لگا کر چڑھ جائیں (۱۰)
یہاں شکست کھائے ہوئے گروہوں میں سے یہ بھی ایک لشکر ہے (۱۱)
ان سے پہلے نوح کی قوم اور عاد اور میخوں والا فرعون بڑی محکم قوتوں کا مالک (اوتاد) (اور اس کی قوم کے لوگ) بھی جھٹلا چکے ہیں (۱۲)
اور ثمود اور لوط کی قوم اور بن کے رہنے والے بھی (جھٹلا چکے ہیں) وہی وہ گروہ ہیں (۱۳)
اُن سب نے رسولوں کو جھٹلایا تھا تو میرا عذاب ان پر آ گیا (۱۴)
انہیں صرف ایک چیخ کا انتظار ہے جس میں کوئی وقفہ نہیں ہوگا (۱۵)
اور کہتے ہیں کہ اے ہمارے رب ہم کو ہمارا حصہ (عذاب) حساب کے دن سے پہلے ہی دے دے (۱۶)
(اے محمدؐ) وہ جو کچھ کہتے ہیں اس پر صبر کرو اور ہمارے

करते थे (अर्थात दाऊद उनसे लाभ उठाता था, उनके अन्दर की निकली हुई वस्तुओं से) (18)

और तेज चलने वाले घोड़ों और पक्षी भी संग्रह थे और उनके लिए कार्य करते थे (19)

और हमने उसके राज्य को स्थिर कर दिया था और उनको युक्ति प्रदान की थी और निर्णय करने की क्षमता दी थी (20)

फिर आपको कुछ सूचना पहुंची है उन वाद वालों की जो दीवार चढ़ कर उसके कक्ष में घुस आए थे (21)

जिस समय वह दाऊद के पास आए तो वह उनको देख कर घबरा गया, उन्होंने कहा कि भय न करो हम दोनों का एक वाद है कि हम में से एक ने दूसरे पर अत्याचार किया है तो आप न्याय से निर्णय कर दीजिए और अन्याय न कीजिए और हमको सीधा मार्ग दिखा दीजिए (22)

(विवाद यह है) यह मेरा भाई है इसके पास निन्नावें दुम्बियां हैं और मेरे पास केवल एक दुम्बि है यह कहता है कि यह भी मुझे सर्मपण कर दे और बात चीत में मुझे दबा लेता है (23)

दाऊद ने उत्तर दिया इस व्यक्ति ने अपनी दुम्बियों के साथ तेरी दुम्बि मिला लेने की मांग करके निःसंदेह तुझ पर अत्याचार किया, और अस्तु स्थिति यह है कि मिल जुलकर साथ रहने वाले लोग अधिकांश दूसरे पर अतिक्रमण करते रहते हैं, बस वही लोग इससे बचे हुए हैं जो विश्वास रखते और अच्छा व्यवहार करते हैं, और ऐसे कम ही हैं, (यह बात कहकर) दाऊद अ0 तुरन्त समझ गए कि यहां मेरी परिक्षा थी (और मैं चूक गया) अतः उसने अपने रब से क्षमा मांगी और सजदे में गिर गए और अपने निर्णय को वापस कर लिया (अर्थात अपने निर्णय को वापस लेकर दूसरा निर्णय किया जो होना था) और ईश्वर ने उनकी वह त्रुटि क्षमा कर दी (24)

(व्याख्या मोदूदी साहब) इससे ज्ञात होता है कि महामना दाऊद अ0 से त्रुटि तो अवश्य हुई थी और वह कोई ऐसी त्रुटि थी जो दुम्बियों वाले विवाद से किसी प्रकार की समानता रखती थी अतः उसका निर्णय सुनाते समय तत्काल उनको यह ध्यान आया कि यह मेरी परिक्षा हो रही है, परन्तु अपराध की प्रकार ऐसी कठोरतम न थी कि उसे क्षमा न किया जाता या यदि क्षमा किया जाता तो वह अपने उच्च पद से गिरा दिए जाते, ईश्वर यहां स्वयं व्याख्या कर रहा है कि जब उन्होंने सजदे में गिर कर पश्चाताप किया तो न केवल क्षमा कर दिया अपितु उनके उच्च पदों में भी कोई अन्तर न आया,

मोदूदी साहब की व्याख्या पढ़ी इसमें स्पष्ट लिखा है कि कोई दुम्बियों से मिलता जुलता विवाद हुआ था जिसमे महमना स्वयं लिप्त थे अतः

بندے داؤد کو یاد کرو جو بڑی قوت والا تھا اور اللہ کی طرف مائل تھا (۱۷) [۳۸:۵]

ہم نے پہاڑوں کو ان کی بیگار میں لگا دیا تھا کہ صبح اور شام ان کے ساتھ اپنا فرض پورا کرتے تھے (یعنی داؤد ان سے فائدہ اٹھاتا تھا ان کے اندر کی نکلی ہوئی چیزوں سے) (۱۸)

اور تیز رفتار گھوڑے اور پرندے بھی کہ جمع رہتے تھے اور ان کے لئے کام کرتے تھے (۱۹)

اور ہم نے اس کی سلطنت کو مستحکم کر دیا تھا اور ان کو حکمت عطا کی تھی اور فیصلہ کرنے کی صلاحیت دی تھی (۲۰)

پھر آپ کو کچھ خبر پہنچی ہے ان مقدمے والوں کی جو دیوار چڑھ کر اس کے حجرے میں گھس آئے تھے (۲۱)

جس وقت وہ داؤد کے پاس آئے تو وہ ان کو دیکھ کر گھبرا گیا. انہوں نے کہا کہ خوف نہ کرو ہم دونوں کا ایک مقدمہ ہے کہ ہم میں سے ایک نے دوسرے پر زیادتی کی ہے تو آپ ہم میں انصاف سے فیصلہ کر دیجئے اور بے انصافی نہ کیجئے اور ہم کو سیدھا رستہ دکھا دیجئے (۲۲)

(مقدمہ یہ ہے) یہ میرا بھائی ہے اس کے پاس ننانوے دنبیاں ہیں اور میرے پاس صرف ایک دنبی ہے یہ کہتا ہے کہ یہ بھی میرے حوالے کر دے اور بات چیت میں مجھے دبا لیتا ہے (۲۳)

داؤد نے جواب دیا اس شخص نے اپنی دنبیوں کے ساتھ تیری دنبی ملا لینے کا مطالبہ کر کے یقیناً تجھ پر ظلم کیا اور واقعہ یہ ہے کہ مل جل کر ساتھ رہنے والے لوگ اکثر دوسرے پر زیادتی کرتے رہتے ہیں. بس وہی لوگ اس سے بچے ہوئے ہیں جو ایمان رکھتے اور عمل صالح کرتے ہیں اور ایسے کم ہی ہیں (یہ بات کہہ کر) داؤد فوراً سمجھ گئے کہ یہاں میری آزمائش تھی (اور میں چوک گیا) چنانچہ اس نے اپنے رب سے معافی مانگی اور سجدے میں گر گئے اور اپنے فیصلے سے رجوع کر لیا (یعنی اپنے فیصلہ کو واپس لے کر دوسرا فیصلہ کیا جو ہونا تھا) اور اللہ نے ان کا وہ قصور معاف کر دیا (۲۴)

(تفسیر مودودی) اس سے معلوم ہوتا ہے کہ حضرت داؤد سے قصور تو ضرور ہوا تھا اور وہ کوئی ایسا قصور تھا جو دنبیوں والے مقدمے سے کسی طرح کی مماثلت رکھتا تھا اس لئے اس کا فیصلہ سناتے وقت معاً ان کو یہ خیال آیا کہ یہ میری آزمائش ہو رہی ہے لیکن قصور کی نوعیت ایسی شدید نہ تھی کہ اسے معاف نہ کیا جاتا. یا اگر معاف کیا جاتا تو وہ اپنے مرتبہ بلند سے گرا دیے جاتے. اللہ یہاں خود تصریح کر رہا ہے کہ جب انہوں نے سجدہ میں گر کر توبہ کی تو نہ صرف معاف کر دیا بلکہ ان کے بلند درجوں میں بھی کوئی فرق نہ آیا.

مودودی صاحب کی تفسیر پڑھی اس میں صاف لکھا ہے کہ کوئی دنبیوں سے ملتا جلتا واقعہ ہوا تھا جس میں حضرت خود ملوث تھے اس لئے آپ نے معافی

आपने क्षमा मांगी परन्तु मोदूदी साहब ने उस अपराध का नाम अंकित नही किया? जब यह लिख दिया कि महामना लिप्त थे तो अपराध का नाम लिखना चाहिए था, तथापि न लिखने से कुछ अन्तर नही पड़ता इतना लिखने से ही स्पष्ट हो रहा है कि मोदूदी साहब का संकेत किधर है वह यह कि जो ऊपर तफसीर में है,

हमारे यहां अधिकांश तफसीरों में बाइबिल की कथाएं अंकित है, बाईबिल में दाऊद अ0 की और एक स्त्री की कथा सम्बन्धित की गई है जिसको दुक्खि से उपमा दी गई है जो बिलकुल मिथ्या है मैं उस कथा को अंकित न करते हुए केवल यह लिख रहा हूं कि महामना से क्या भूल हो गई,

वह यह कि जो फरिश्ते व्यक्ति की आकृति में एक काल्पनिक वाद लेकर आए उद्देश्य आने का यह था कि जब भी कोई वाद का निर्णय करें तो कैसे करें,

उनमें से एक ने वाद वर्णन किया महामना ने एक की बात सुनकर ही निर्णय दे दिया चूंकि आप नबी थे अतः आपको तुरन्त अपनी भूल का अनुभूत हो गया और उस निर्णय को वापस लेते हुए ईश्वर से क्षमा मांगी जो मिल गई, भूल यह हुई कि जब एक पक्ष ने अपनी बात कही थी तो दाऊद को दूसरे पक्ष की बात भी सुननी थी और फिर साक्षियों को भी मांगना था और अपने स्तर से भी पुष्टि करनी थी, परन्तु यह न हो सका इसलिए दाऊद ने अपनी भूल को अनुभूत कर लिया और तुरन्त अपने पहले निर्णय को निरस्त किया और दूसरा निर्णय किया चूंकि आप आज्ञाकारी थे,

इस घटना से हमको यह शिक्षा मिल रही है कि वाद का निर्णय कैसे करें? दोनों पक्षों की बात सुनें साक्षियों को सुनों यदि बात न बने तो गुप्त जानकारी करें पूरा विश्वास करने के बाद ही निर्णय करें न कि एक पक्ष की बात सुनकर,

आयत में प्रत्यागमन करने का अर्थ यह है कि महामना ने फिर नियामानुसार दोनों पक्षों की बात सुनी और अच्छी प्रकार समझ कर निर्णय दिया और अपनी भूल जल्दी करने पर ईश्वर से क्षमा मांगी,

एक ने लिखा है कि दाऊद अ0 के निन्नावे पत्नी थी पड़ोसी की पत्नी को भी अपने घर में मिलाना चाहते थे, और ले आए तो इस पर यह परिक्षा हुई (नऊज़) इसी प्रकार बहुत आलिमों ने लिखा है,

अतः हमने भी उनकी वह (भूल) क्षमा कर दी निःसंदेह वह हमारे निकट बड़े मान वाले और बहुत अच्छे स्थान वाले हैं (25)

(हमने कहा) ऐ दाऊद हमने तुमको पृथ्वी में उत्तराधिकारी बनाया है तो लोगों में न्याय के निर्णय किया करो और इच्छाओं का अनुकरण न करना कि वह तुम्हें ईश्वर के मार्ग से भटका देंगी जो लोग ईश्वर के मार्ग से भटके हैं उनके लिए कठोर कष्ट तैयार है कि उन्होंने लेखा के दिन को भुला दिया (26) आयत 24 में क्या है इस मंत्र 26 ने फैसले करने का शब्द देकर बता दिया,

हमने आकाशों व पृथ्वी और उन सब वस्तुओं को जो उनके मध्य है व्यर्थ पैदा नही किया तो काफिरों का विचार मिथ्या है कि वह व्यर्थ हैं तो ऐसे नास्तिक के लिए नर्क की आग का दण्ड तैयार है (27)

مانگی لیکن مودودی صاحب نے اس قصور کا نام درج نہیں کیا؟ جب یہ لکھ دیا کہ حضرت ملوث تھے تو قصور کا نام لکھنا چاہیے تھا تا ہم نہ لکھنے سے کچھ فرق نہیں پڑتا اتنا لکھنے سے ہی ظاہر ہو رہا ہے کہ مودودی صاحب کا اشارہ کدھر ہے وہ یہ کہ جو اوپر تفسیر میں ہے۔

ہمارے یہاں اکثر تفسیروں میں بائبل کے قصے درج ہیں بائبل میں داؤد کی طرف ایک عورت کا قصہ منسوب کیا گیا ہے جس کو دنبی سے مثال دی گئی ہے جو بالکل غلط ہے میں اس قصے کو درج نہ کرتے ہوئے صرف یہ لکھ رہا ہوں کہ حضرت سے کیا بھول ہو گئی

وہ یہ کہ دو فرشتے آدمی کی شکل میں ایک فرضی مقدمہ لے کر آئے غرض آنے کی یہ تھی کہ جب بھی کوئی مقدمہ کا فیصلہ کرے تو کیسے کرے۔

ان میں سے ایک نے مقدمہ بیان کیا حضرت نے ایک کی بات سن کر ہی فیصلہ دے دیا۔ چونکہ آپ نبی تھے اس لئے آپ کو فوراً اپنی بھول کا احساس ہو گیا اور اس فیصلے سے رجوع کرتے ہوئے اللہ سے معافی مانگی جو مل گئی بھول یہ ہوئی کہ جب ایک فریق نے اپنی بات کہی تھی تو داؤد کو دوسرے فریق کی بات بھی سنی تھی اور پھر گواہوں کو بھی طلب کرنا تھا اور اپنے طریقے سے بھی تحقیق کرنی تھی مگر یہ نہ ہو سکا اس لئے داؤد نے اپنی کمی کو محسوس کر لیا اور فوراً اپنے پہلے فیصلے کو رد کیا اور دوسرا فیصلہ کیا اور اپنی بھول کی اللہ سے معافی مانگی چونکہ آپ فرمانبرداری کرنے والے تھے۔

اس واقعہ سے ہم کو یہ سبق مل رہا ہے کہ مقدمہ کا فیصلہ کیسے کریں؟ دونوں فریقوں کی بات سنیں گواہوں کو سنیں اگر بات نہ بنے تو خفیہ تحقیق کریں۔ پورا یقین کرنے کے بعد ہی فیصلہ کریں۔ نہ کہ ایک فریق کی بات سن کر۔

آیت میں رجوع کرنے کا مطلب یہ ہے کہ حضرت نے پھر قاعدے سے دونوں فریقوں کی بات سنی اور خوب سمجھ کر فیصلہ دیا اور اپنی جلد بازی کی اللہ سے معافی مانگی

ایک نے لکھا ہے کہ داؤد کے ۹۹ ننانوے بیوی تھیں پڑوس کی بیوی کو بھی اپنے گھر میں ملانا چاہتے تھے اور لے آئے تو اس پر یہ آزمائش ہوئی (نعوذ) اسی طرح بہت عالموں نے لکھا ہے

پس ہم نے بھی ان کا وہ (قصور) معاف کر دیا یقیناً وہ ہمارے نزدیک بڑے مرتبے والے اور بہت اچھے ٹھکانے والے ہیں (۲۵)

(ہم نے کہا) اے داؤد ہم نے تم کو زمین میں جانشین بنایا ہے تو لوگوں میں انصاف کے فیصلے کیا کرو۔ اور خواہش کی پیروی نہ کرنا کہ وہ تمہیں اللہ کے رستے سے بھٹکا دے گی۔ جو لوگ اللہ کے رستے سے بھٹکتے ہیں ان کے لئے سخت عذاب تیار ہے کہ انہوں نے حساب کے دن کو بھلا دیا (۲۶)

آیت ۲۴ میں کیا ہے اس آیت ۲۶ نے فیصلے کرنے کا لفظ دے کر بتا دیا۔

ہم نے آسمان وزمین اور ان تمام چیزوں کو جو ان کے درمیان ہیں فضول پیدا نہیں کیا۔ تو کافروں کا گمان فاسد ہے کہ وہ فضول ہیں تو ایسے کافروں کے لئے دوزخ کی آگ کا عذاب ہے (۲۷)

जो लोग विश्वास लाए और कर्म अच्छे करते रहे क्या उनको हम उनकी भांति कर देंगे जो देश में अशान्ति करते हैं या सदाचारी लोगों को दुराचारी की भांति कर देंगे (28)

(ऐ रसूल) यह कुरआन एक सम्पन्नता वाली पुस्तक है (यह इस लिए प्रेषित की गई हैं) कि लोग इसकी आयतों में विचार करें और बुद्धि वाले इससे शिक्षा प्राप्त करें (29)

और हमने दाऊद अ0 को सुलेमान प्रदान किया बहुत अच्छे भक्त निःसंदेह वह ईश्वर की ओर प्रत्यागम करने वाले थे (30)

जब उनके सामने सायं को अच्छे सधे हुए घोड़े प्रस्तुत किए गए (31)

तो उसने कहा मैं इन घोड़ों को (अपनी बड़ाई के लिए नही अपितु) अपने ईश्वर की याद करने के लिए (अर्थात सत्य बोल उच्च करने के लिए) पसन्द करता हूं (फिर उस ने घोड़ों की परिक्षा के लिए दोड़ाया था) यहां तक कि वह आंखों से ओझल हो गए (32)

(फिर आदेश दिया) उन्हें मेरे पास वापस लाओ (जब घोड़े लाए गए तो) उनकी टांगो और गर्दनों पर स्नेह से हाथ फैरने लगा (33)

और हमने सुलेमान की परिक्षा की (वह ऐसे कि उनको कोई शोक ऐसा हो गया जिससे वह बेजान शरीर की भांति सिहांसन पर पड़ गए या पेट में दर्द के कारण से पड़ गए अर्थात उनको भी यह अनुभूत हो गया कि मैं भी रोगी) हो सकता हूं और मौत आएगी तो ईश्वर ने कहा कि हमने उनको भी एक निर्जीव शरीर की भांति डाल दिया (यह देखकर) उन्होंने ईश्वर की ओर प्रत्यागमन किया अर्थात क्षमा मांगी (34)

(यह देखने के बाद उनको भी यह अनुभूत हो गया कि जो मेरी इस समय शक्ति है इसको देखकर हर एक यही कहता है कि इस राज्य को कोई विजय नही कर सकता परन्तु यह भी ईश्वर की इच्छा के साथ ही रक्षा हो सकती है, व्यक्ति की कोई शक्ति नही तो उन्होंने ईश्वर से प्रार्थना की कि ऐ मेरे रब मुझको क्षमा कर दे (यदि मेरे मन में कोई ऐसा बुरा विचार आया हो) और मुझे ऐसा राज्य दे और उसको ऐसा शक्तिशाली कर दे कि इसको कोई विजय न कर सके और कोई विरोध न करे और मेरे बाद भी जो तेरा आज्ञाकारी हो उसके लिए भी ऐसा ही करना अर्थात आस्तिक बन्दों का राज्य भी कोई विरोध व विद्रोह करके न छीने) निःसंदेह तू बड़ा ही प्रदान करने वाला है (35) {36:40,17, 31:33}

नोट- हर अनुवाद में लिखा गया है कि सुलेमान ने प्रर्थना की कि ऐ ईश्वर जैसी मेरी सलतनत है ऐसी मेरे बाद और किसी को न देना तो यह अनुवाद अनुचित है? इस लिए कि उनके बाद उनसे भी बड़े बड़े राज्य दुनिया में स्थापित हुए और होते रहेंगे, और न ही एक ईशूदत से यह आशा की जा सकती है कि ईश्वर से ऐसा प्रतिबद्धा लगवा दें कि मेरे बाद किसी को ऐसा राज्य न देना, यदि यह प्रार्थना ठीक थी और अनुवाद ठीक किया गया है तो सुलेमान ईर्ष्यालु और स्वार्थी सिद्ध हो रहे हैं जबकि एक रसूल से ऐसी आशा नही की जा सकती कि वह ईष्सर्यालु और स्वार्थी हो अतः आपकी प्रार्थना यह न थी अपितु यही थी कि ईश्वर मुझे ऐसा राज्य दे जिसमें मेरे विरूद्ध कोई विद्रोह करके विज्य न कर सकें, और मेरे बाद भी सत्य राज्य को कोई अत्याचारी

جولوگ ایمان لائے اور عمل نیک کرتے رہے کیا ان کو ہم ان کی طرح کردیں گے جو ملک میں فساد کرتے ہیں یا نیک لوگوں کو بدوں کی طرح کردیں گے (۲۸)

(اے رسول) یہ قرآن ایک بابرکت کتاب ہے (یہ اس لئے نازل کی گئی ہے) کہ لوگ اس کی آیتوں میں غور کریں اور عقل والے اس سے نصیحت حاصل کریں (۲۹)

اور ہم نے داؤدؑ کو سلیمان عطا کئے بہت اچھے بندے بے شک وہ اللہ کی طرف رجوع کرنے والے تھے (۳۰)

جب ان کے سامنے شام کو خوب سدھے ہوئے گھوڑے پیش کئے گئے (۳۱)

تو اس نے کہا میں ان گھوڑوں کو (اپنی بڑائی کے لئے نہیں بلکہ) اپنے رب کو یاد کرنے کے لئے (یعنی کلمہ حق بلند کرنے کے لئے) پسند کرتا ہوں (پھر اس نے گھوڑوں کو آزمانے کے لئے دوڑایا) یہاں تک کہ وہ آنکھوں سے اوجھل ہوگئے (۳۲)

(پھر حکم دیا) انہیں میرے پاس واپس لاؤ (جب گھوڑے لائے گئے تو) ان کی ٹانگوں اور گردنوں پر پیار سے ہاتھ پھیرنے لگا (۳۳)

اور ہم نے سلیمان کی آزمائش کی (وہ ایسے کہ ان کو کوئی غم ایسا ہوگیا جس سے وہ بے جان جسم کی طرح تخت پر پڑگئے یا پیٹ میں درد کی وجہ سے پڑگئے یعنی ان کو بھی یہ احساس ہوگیا کہ میں بھی بیمار ہوسکتا ہوں اور موت آئے گی) تو اللہ نے کہا کہ ہم نے ان کو بھی تخت پر ایک بےجان جسد کی طرح ڈال دیا (یہ دیکھ کر) انہوں نے اللہ کی طرف رجوع کیا یعنی معافی مانگی (۳۴)

(یہ دیکھنے کے بعد ان کو بھی یہ احساس ہوگیا کہ جو میری اس وقت طاقت ہے اس کو دیکھ کر ہر ایک یہی کہتا ہے کہ اس سلطنت کو کوئی فتح نہیں کرسکتا مگر یہ بھی اللہ کی رضا کے ساتھ ہی حفاظت ہوسکتی ہے آدمی کی کوئی طاقت نہیں تو انہوں نے اللہ سے دعا کی) دعا کی کہ اے میرے رب مجھ کو معاف کردے (اگر میرے دل میں کوئی ایسا بد خیال آیا ہو) اور مجھے ایسی سلطنت دے اور اس کو ایسا مضبوط کردے کہ اس کو کوئی فتح نہ کرسکے اور کوئی مخالفت و بغاوت نہ کرے اور میرے بعد بھی جو تیرا فرمانبردار ہو اس کے لئے بھی ایسا ہی کرنا (یعنی اس مومن بندے کی بھی سلطنت کوئی مخالفت کرکے نہ چھینے) بے شک تو بڑا ہی عطا کرنے والا ہے (۳۵) [۳۶:۴۰؛ ۱۷، ۳۱:۳۳]

نوٹ:۔ ہر ترجمہ میں لکھا گیا ہے کہ سلیمان نے دعا کی کہ اے اللہ جیسی میری سلطنت ہے ایسی میرے بعد اور کسی کو نہ دینا۔ تو یہ ترجمہ غلط ہے؟ اس لئے کہ ان کے بعد ان سے بھی بڑی بڑی سلطنتیں دنیا میں قائم ہوئیں اور ہوتی رہیں گی اور نہ ہی ایک رسول سے یہ امید کی جاسکتی ہے کہ اللہ سے ایسی پابندی لگوادیں کہ میرے بعد کسی کو ایسی سلطنت نہ دینا اگر یہ دعا ٹھیک تھی اور ترجمہ ٹھیک کیا گیا ہے تو سلیمان حاسد اور خود غرض ثابت ہو رہے ہیں جب کہ ایک رسول سے ایسی امید نہیں کی جاسکتی کہ وہ حاسد اور خود غرض ہوں اس لئے ان کی دعا یہ نہ تھی بلکہ یہی تھی کہ اللہ مجھے ایسی سلطنت دے جس میں میرے خلاف کوئی بغاوت کرکے فتح نہ

हड़प न कर सकें ऐसा ही कुछ हल्का सा संकेत मरहूम शब्बीर अहमद उस्मानी साहब ने भी लिखा है,

रहा प्रश्न यह कि सुलेमान के लिए ईश्वर ने जिन्नात वायु इत्यादि को बेगार में लगा दिया था और को नही मिले यह भी उनका चमत्कार न था यह भी ईश्वर की दया थी परन्तु देखती आंखों तो कह सकते है कि यह वस्तुएं उनके लिए कार्यरत थी और के लिए नही परन्तु ऐसा नही है यह सब वस्तुऐं आज भी इन्सान की भलाई के लिएसचेष्ट कार्यरत है और बेगार में लगी हुई है जैसे सुलेमान के आदेश से कार्य होता था आज भी हो रहा है परन्तु यह उसी समय हो सकता है जब सुलेमान की भांति मानव बुद्धि से काम ले जो जाति बुद्धि और ज्ञान से काम ले रही है आज भी उनके लिए वायुयान या बिजली रेडियो इत्यादि कार्यरत है विचार करो और कुरआन को ठीक समझो और एक आस्तिक ईशदूत को ईर्ष्यालु और स्वार्थी न बनाओ {14:31,33}

ईश्वर ने कुरआन की बहुत आयात में कहा है कि इस दुनिया की हर वस्तु मानव के लिए अर्जित कर दी है अर्थात बेगार में लगा दिया है परन्तु उनसे कार्य लेने को बुद्धि की आवश्यकता है,

फिर हमने वायु को उसकी बेगार में लगा दिया कि जहां वह पहुंचना चाहते थे उनके आदेश नियम के अनुसार कार्यरत थी और चलती थी नरमी से और वायुयान मशीनों को चलाती थी (36) {14:31,33}

और शैतान उपद्रवी भी उनके लिए अर्जित कर दिये थे वह भवन बनाते थे और डुबकी मारते थे (37)

और औरों को भी उनकी बेगार में लगा दिया था जो वचन के आबद्ध अर्थात वचन की जंजीरों में जकड़े थे (38)

(ऐ सुलेमान) यह हमारी बेहिसाब कृपा है (अर्थात बहुत दिया है जिसका तू लेखा जोखा भी नही लगा सकता) अतः उसे लोगों को देकर उन पर उपकार कर और आवश्यकता के लिए उसे संग्रह भी कर सकते हो परन्तु अनुचित विधि से संग्रह करना अच्छा नही जिस प्रकार मैंने बेहिसाब दिया है तू भी बेहिसाब व्यय कर (39)

और निःसन्देह (वह हमारे आदेश के अनुसार कार्य करते थे) अतः उसके लिए हमारे यहाँ निकटता और उत्तम स्थान है (40)

और हमारे बन्दे अय्यूब का उल्लेख करो जब उसने अपने रब को पुकारा (ऐ रब मुझे शैतान ने अपने वसवसों से) बहुत कलेश और व्याकुलता पहुंचा रखी है (रोग की दशा में) (41) {21:83,84}

(जब अय्यूब अ० ने रोग की स्थिति में व्याकुल होकर ईश्वर से प्रार्थना की तो ईश्वर की करूणा आवेश में आ गई और कहा) अपने पांव से धरती को ठुकरा दो तो स्रोत निकला तो हमने कहा (ऐ अय्यूब) तुम्हारे नहाने और पीने के लिए यह ठण्डा पानी (प्रस्तुत) है (42) (62:12)

(जब महामना अय्यूब की दशा ठीक हो गई तो ईश्वर कहता है) कि हमने उनको उनके घर वाले (जो काल चक्र से बिखर गए थे और संख्या में अधिक थे चूंकि उनका परिवार बड़ा था) और उनके साथ इतने ही और अपनी विशेष कृपा से उनके निकट कर दिए प्रदान किए (जो उन पर आस्था लाए थे) (43)

(उन पर प्रचार के लिए ईश्वर ने आयत 44 में कहा है आयत 44 का अनुवाद जो आलिमों ने कर रखा है पहले वह लिखा जा रहा है जो आयत के शब्दों से हटकर है,

(और हमने उससे कहा) तिनकों का मुट्ठा ले या झाड़ू और उससे मार

کر سکے اور میرے بعد بھی حق سلطنت کو کوئی ظالم غصب نہ کر سکے ایسا ہی کچھ ہلکا سا اشارہ مرحوم شبیر احمد صاحب نے بھی لکھا ہے

رہا سوال یہ کہ سلیمانؑ کے لئے اللہ نے جنات، ہوا وغیرہ کو بیگار میں لگا دیا تھا اور کو نہیں ملے تو یہ بھی ان کا کرشمہ نہ تھا یہ بھی اللہ کی عطا تھی مگر بظاہر تو کہہ سکتے ہیں کہ یہ چیزیں ان کے لئے کام کرتیں تھیں اور کے لئے نہیں لیکن ایسا نہیں ہے یہ سب چیزیں آج بھی انسان کی بھلائی کے لئے سرگرم عمل میں اور بیگار میں لگی ہوئیں ہیں جیسے سلیمان کے حکم سے کام ہوتا تھا آج بھی ہو رہا ہے لیکن یہ اسی وقت ہو سکتا ہے جب سلیمان کی طرح انسان عقل سے کام لے جو قوم عقل اور علم سے کام لے رہی ہے آج بھی ان کے لئے ہوائی جہاز یا بجلی ریڈیو وغیرہ کام کر رہے ہیں غور کرو اور قرآن کو ٹھیک سمجھو اور ایک مومن رسول کو حاسد اور خود غرض نہ بناؤ (۳۳،۳۱:۱۴)

اللہ نے قرآن کی بہت آیات میں کہا ہے کہ اس دنیا کی ہر چیز کو انسان کے لئے مسخر کر دیا ہے یعنی بیگار میں لگا دیا ہے مگر ان سے کام لینے کو عقل کی ضرورت ہے

پھر ہم نے ہوا کو اس کی بیگار میں لگا دیا کہ جہاں وہ پہنچنا چاہتے تھے ان کے قانون حکم کے مطابق نرمی سے کام کرتی تھی اور چلتی تھی نرمی سے اور ہوائی جہاز اور مشینوں کو چلاتی تھی (۳۶) [۳۳،۳۱:۱۴]

اور شیطان فسادی بھی ان کے لئے فراہم کر دئے تھے وہ عمارت بناتے تھے اور غوطہ مارتے تھے (۳۷)

اور اوروں کو بھی ان کی بیگار میں لگا دیا تھا جو وعدے کے پابند تھے یعنی وعدے کی زنجیروں میں جکڑے تھے (۳۸)

(اے سلیمان) یہ ہماری بے حساب بخشش ہے (یعنی بہت دیا ہے جس کا تو حساب بھی نہیں لگا سکتا) پس اسے لوگوں کو دے کر ان پر احسان کر اور ضرورت کے لئے اسے جمع بھی کر سکتے ہو مگر غلط طریقے سے جمع کرنا اچھا نہیں جس طرح میں نے بے حساب دیا ہے تو بھی بے حساب خرچ کر (۳۹)

اور بے شک (وہ ہمارے حکم کے مطابق کام کرتے تھے) اس لئے اس کے لئے ہمارے یہاں تقرب اور اچھا مقام ہے (۴۰)

اور ہمارے بندے ایوب کا ذکر کرو جب اس نے اپنے رب کو پکارا (اے رب مجھے شیطان نے اپنے وسوسوں سے) بہت رنج اور تکلیف پہنچا رکھی ہے (بیماری کی حالت میں) (۴۱) [۸۴،۸۳:۲۱]

(جب ایوبؑ نے بیماری کی حالت) میں بے قرار ہو کر اللہ سے دعا کی تو اللہ کی رحمت جوش میں آ گئی اور کہا) اپنے پاؤں سے زمین کو ٹھکرا دو تو چشمہ نکلا تو ہم نے کہا (اے ایوب) تمہارے نہانے اور پینے کے واسطے یہ ٹھنڈا پانی (حاضر) ہے (۴۲) [۱۲:۶۵]

(جب حضرت ایوب کے حالات ٹھیک ہو گئے تو اللہ کہتا ہے) کہ ہم نے ان کو ان کے گھر والے (جو گردش زمانہ سے بکھر گئے تھے اور تعداد میں زیادہ تھے چونکہ ان کا خاندان بڑا تھا) اور ان کے ساتھ اتنے ہی اور اپنی خاص مہربانی سے ان کے قریب کر دئے عطا کئے (جو ان پر ایمان لائے) (۴۳)

(ان پر تبلیغ کے لئے اللہ نے آیت ۴۴ میں فرمایا) آیت ۴۴ کا ترجمہ جو عالموں نے کر رکھا ہے پہلے وہ لکھا جا رہا ہے جو آیت کے الفاظ سے ہٹ کر ہے.

(اور ہم نے اس سے کہا) تنکو کا مٹھا لے یا جھاڑو اور اس سے مار دے اور اپنی قسم کو

दे और अपनी शपथ को न तोड़, हमने उसे धैर्यवान पाया सर्वोत्तम बन्दा और अपने रब की ओर प्रत्यागमन करने वाला)

इस आयत की जो तफ्सीर (टीका) अंकित की है वह अवलोकन हो, मोदूदी साहब, इन शब्दों पर विचार करने से जो बात स्पष्ट प्रकट होती है कि महामना अय्यूब ने अपनी बीमारी की दशा में रूष्ट होकर अपनी पत्नी के लिए शपथ खा ली थी और उस शपथ में यह कहा था कि तुझको सौ कोड़े मारूंगा, जब उनको ईश्वर ने स्वस्थ कर दिया और रोग की दशा का वह क्रोध दूर हो गया जिसमें यह शपथ खाई गई थी उनको यह व्याकुलता हुई कि शपथ पूरी करता हूं, तो अनायास एक निर्दोष को मारना पड़ेगा और शपथ तोड़ता हूं तो यह भी एक पाप का व्यवहार है, इस कठिनाई से ईश्वर ने उनको इस प्रकार (निकाला) कि उन्हें आदेश दिया एक झाडू लो जिसमें इतने ही तिनके हो जितने कोड़े मारने की शपथ तुमने खाई है, और उस झाडू से उस व्यक्ति को बस एक बार मार दो ताकि तुम्हारी शपथ भी पूरी हो और उसे अनुचित कष्ट न पहुंचे, (मोदूदी साहब और लगभग हर आलिम ने यही तफ्सीर और अनुवाद किया है)

मौलाना मुहम्मद जूनागढ़ी का अनुवाद व तफ्सीर जो सऊदी अरब से दिया जा रहा है उसके पेज 1283 पर यह व्याख्या अंकित है "एक हदीस से ज्ञात होता है कि नबी स0 ने भी एक विवश निर्बल जानी को सौ कोड़ों के स्थान पर सौ तिनकों वाली झाडू मारकर दण्ड दिया, जिससे विशेष स्थिति में इसका औचित्य सिद्ध होता है,"

अनुवाद कादयानि "और अय्यूब से कहा अपने हाथ में खजूर की गुच्छेदार टहनी पकड़ ले और उसकी सहायता से तीव्रता के साथ यात्रा कर घोड़े को उस टहनी से बढ़ा और सत्य से मिथ्या की ओर आकृष्ट न हो"

ईश्वर की पुस्तक में जो इस समय धर्मशास्त्र है वही पहले नबियों की उम्मतों पर भी अनिवार्य थी {42:13;87:18,19;26:196, 197;46:6;4:83से90;4:87}

आज कुरआन के धर्मशास्त्र में शपथ खाने पर यदि कोई तोड़ता है तो उसका प्रायश्चित दास का स्वतंत्र करना, व्रत का रखना या निर्धनों को खाना खिलाना है या उस शपथ को पूरा करना है, चूंकि ईश्वर का विधान रीति बदला नही करती और न ही कोई बदल सकता है जिसका शाक्षी कुरआन है अतः शपथ को पूरा करना या बदला, इसके अतिरिक्त और कोई विधि बहाना नही, फिर ईश्वर ही अपने नियम को बदलकर अर्थापन कर रहा है क्या यह हो सकता है? कदापि नही न तो ईश्वर का नियम बदल सकता है और न ही इसकी समाई है अतः इस आयत का जो अनुवाद और तफ्सीर लिखी गई है वह मिथ्या है जो इसराईलियात से ली गई है,

महामना अय्यूब चूंकि एक धैर्यवान नबी थे और हर नबी धैर्यवान ही होता है फिर वह अपनी स्वामी भक्त पत्नी को जिसको तफ्सीर में भी निर्दोष लिखा है और वह पत्नी जो बरसों उनकी सेवा जीर्ण स्थिति में करती रही जबकि सब सम्बन्धी बिखर चुके थे और पत्नी भी एक सदाचारी व्यक्ति की पुत्री थी, यदि उनसे कभी कोई भूल हो भी जाती तो धैर्यवान और ईशदूत होने के कारण महामना उनको क्षमा कर देते जैसे ईश्वर अपने बन्दों को पश्चाताप के बाद क्षमा कर देता है फिर महामना अय्यूब अ0 उनकी भूल पर जब कि किसी भूल का आयत में संकेत तक भी नही मिल रहा है शपथ कैसे खा लेते? हां तालीमूद में अवश्य मिल रहा है जिस पर बाद में दुख करना पड़ा, और उससे निकलने के लिए ईश्वर को एक छल करना पड़ा (नऊजू) यदि कुरआन पर मनन किया जाए तो इस शपथ और उस अनुवाद व तफ्सीर के लिए कोई समाई नही है, जो आपत्ति जनक है कुरआन पर मनन करने के बाद आयत का जो भाव आता है वह लिखा जा रहा है,

نہ توڑ ہم نے اسے صابر پایا بہترین بندہ اپنے رب کی طرف رجوع کرنے والا)۔

اس آیت کی جو تفسیر درج کی ہے وہ ملاحظہ ہو. مودودی صاحب ان الفاظ پر غور کرنے سے یہ بات صاف ظاہر ہوتی ہے کہ حضرت ایوب نے اپنی بیماری کی حالت سے ناراض ہو کر اپنی بیوی کے لئے قسم کھائی تھی اور اس قسم میں یہ کہا تھا کہ تجھ کو سو کوڑے ماروں گا جب ان کو اللہ نے صحت عطا کر دی اور حالت مرض کا وہ غصہ دور ہو گیا جس میں یہ قسم کھائی گئی تھی ان کو یہ پریشانی لاحق ہوئی کہ قسم پوری کرتا ہوں تو خواہ مخواہ ایک بے گناہ کو مارنا پڑے گا اور قسم توڑتا ہوں تو یہ بھی ایک گناہ کا ارتکاب ہے. اس مشکل سے اللہ نے ان کو اس طرح نکالا کہ انہیں حکم دیا ایک جھاڑو لو جس میں اتنے ہی تنکے ہوں جتنے کوڑے مارنے کی قسم تم نے کھائی ہے اور اس جھاڑو سے اس شخص کو بس ایک ضرب لگا دو تاکہ تمہاری قسم بھی پوری ہو اور اسے ناروا تکلیف نہ پہنچے مودودی صاحب اور تقریباً ہر عالم نے یہی تفسیر اور ترجمہ کیا ہے. مولانا محمد جوناگڑھی کا ترجمہ و تفسیر جو سعودی عرب سے دیا جا رہا ہے اس کے صفہ ۱۲۸۳ پر یہ تفیر درج ہے "ایک حدیث سے معلوم ہوتا ہے کہ نبیؐ نے بھی ایک معذور کمزور زانی کو سو کوڑوں کی جگہ سو تنکوں والی جھاڑو مار کر سزا دی جس سے مخصوص صورتوں میں اس کا جواز ثابت ہوتا ہے"

ترجمہ قادیانی ۔اور ایوب سے کہا اپنے ہاتھ میں کھجور کی گچھے دار ٹہنی پکڑ لے اور اس کی مدد سے تیزی کے ساتھ سفر کر گھوڑے کو اس ٹہنی سے بڑھا اور حق سے باطل کی طرف مائل نہ ہو۔"

اللہ کی کتاب قرآن میں جو اس وقت شریعت ہے وہی پہلے نبیوں کی امتوں پر بھی فرض تھی (۴۲:۱۳؛ ۸۷:۱۸،۱۹؛ ۲۶:۱۹۶،۱۹۷؛ ۴۶:۶؛ ۴:۸۳ تا ۹۰؛ ۴:۸۷]

آج قرآن کی شریعت میں قسم کھانے پر اگر کوئی توڑتا ہے تو اس کا کفارہ غلام آزاد کرنا. روزے رکھنا یا مسکینوں کو کھانا کھلانا ہے یا اس قسم کو پورا کرنا ہے. چونکہ اللہ کی شریعت سنت بدلا نہیں کرتی. اور نہ ہی کوئی بدل سکتا ہے جس کا شاہد قرآن ہے، اس لئے قسم کو پورا کرنا یا کفارہ، اس کے علاوہ اور کوئی طریقہ بہانہ نہیں. پھر اللہ ہی اپنے قانون کو بدل کرتا ویل کر رہا ہے کیا یہ ہو سکتا ہے؟ ہرگز نہیں نہ تو اللہ کا قانون بدل سکتا ہے اور نہ ہی اس کی گنجائش ہے. اس لئے اس آیت کا جو ترجمہ اور تفسیر لکھی گئی ہے وہ غلط ہے جو اسرائیلیات سے لی گئی ہے

حضرت ایوب چونکہ ایک صابر نبی تھے اور ہر نبی صابر ہی ہوتا. پھر وہ اپنی وفادار بیوی کو جس کو تفسیر میں بھی بے قصور لکھا ہے اور وہ بیوی جو برسوں ان کو خدمت خراب حالت میں کرتی رہی جب کہ سب عزیز و اقارب بکھر چکے تھے اور بیوی بھی ایک نیک آدمی کی لڑکی تھی. اگر ان سے کبھی کوئی کوتاہی ہو بھی جاتی تو صابر اور نبی ہونے کی وجہ سے حضرت ان کو معاف کر دیتے جیسے اللہ اپنے بندوں کو توبہ کے بعد معاف کر دیتا ہے پھر حضرت ایوبؑ ان کی کوتاہی پر جب کہ کسی کوتاہی کا آیت میں اشارہ تک بھی نہیں مل رہا ہے قسم کیسے کھا لیتے؟ ہاں تالیمود میں ضرور مل رہا ہے. جس پر بعد میں افسوس کرنا پڑا. اور اس سے نکلنے کے لئے اللہ کو ایک حیلہ کرنا پڑا (نعوذ) اگر قرآن پر غور کیا جائے تو اس قسم اور اس ترجمہ و تفسیر کے لئے کوئی گنجائش نہیں ہے. جو قابل اعتراض ہے قرآن پر غور کرنے کے بعد آیت کا جو مفہوم آتا ہے وہ لکھا جا رہا ہے۔

(अब घर वाले और उनके साथ उतने ही और ऐकत्र हो गए तो फिर हमने कहा) अपने घर वालों और जो और दिए हैं उनको पूरी शक्तिबल से पकड़ लो अर्थात एकत्र कर लो और उन पर मेरा विधान वर्णन करो (ज़राबा) और व्यर्थ की ओर आकृष्ट न होना हमने उसे धैर्यवान पाया सर्वश्रेष्ठ बन्दा अपने रब की ओर प्रत्यागमन करने वाला अर्थात रब का आज्ञाकारी (44)

(جب گھر والے اور ان کے ساتھ اتنے ہی اور اکھٹے ہو گئے تو پھر ہم نے کہا) اپنے گھر والوں اور جو اور دیئے ہیں ان کو پوری طاقت قوت سے پکڑ لو یعنی جمع کر لو اور ان پر میری (شریعت) بیان کرو (ضرب) اور باطل کی طرف مائل نہ ہونا. ہم نے اسے صابر پایا بہترین بندہ اپنے رب کی طرف رجوع کرنے والا یعنی رب کا فرمانبردار (۴۴)

नोट- आयात 43 और 44 का अन्तिम भाग स्वयं बता रहा है कि महामना ने शपथ नही खाई थी और न ही ईश्वर ने उनको छल बताया था आयात में शब्द यद का अर्थ हाथ भी है और शक्ति भी है, जगासन का अर्थ संग्रह करना मिलाना है, हनांसा का अर्थ व्यर्थ की ओर को आकृष्ट होना और ला तहन्नसा का अर्थ हुआ व्यर्थ की ओर को आकृष्ट न होना, ज़राबा का अर्थ वर्णन करना भी है इसलिए इन शब्दों पर विचार करके आयत का अनुवाद होना था, न कि तालीमुद से, मैंने इन शब्दों पर विचार करने के बाद भावार्थ लिखा है,

نوٹ :۔ آیت ۴۳ اور ۴۴ کا آخری حصہ خود بتا رہا ہے کہ حضرت نے قسم نہیں کھائی تھی اور نہ ہی اللہ نے ان کو حیلہ بتایا تھا. آیت میں لفظ ید کا مطلب ہاتھ بھی ہے اور طاقت بھی ہے. ضغثاً کا مطلب جمع کرنا ملانا ہے. حَنَثَ کا مطلب باطل کی طرف کو مائل ہونا اور لاتحنث کا مطلب ہوا باطل کی طرف کو مائل نہ ہونا. ضرب کا مطلب بیان کرنا بھی ہے. اس لئے ان الفاظ پر غور کر کے آیت کا ترجمہ ہوتا تھا نہ کہ تالیمود سے میں نے ان الفاظ پر غور کرنے کے بعد مفہوم لکھا ہے.

और हमारे बन्दों इब्राहीम, इसहाक और याकूब को याद करो जो शक्ति वाले और देखने वाले थे (45)

اور ہمارے بندوں ابراہیم ، اسحاق اور یعقوب کو یاد کرو جو قوت والے اور صاحب نظر تھے (۴۵)

हमने उनको एक विशेष गुण के आधार पर सर्वश्रेष्ठ किया था और वह थी परलोक की याद जिसको वह स्वयं भी याद रखते थे और दूसरों को भी उसकी याद दिलाकर डराया करते थे (46)

ہم نے ان کو ایک خاص صفت کی بنا پر برگزیدہ کیا تھا اور وہ تھی آخرت کی یاد جس کو وہ خود بھی یاد رکھتے تھے اور دوسروں کو بھی اس کی یاد دلا کر ڈرایا کرتے تھے (۴۶)

और वह हमारे यहां चुने हुए और सदाचारी लोगों में से थे (47)

اور وہ ہمارے یہاں چنے ہوئے اور نیک لوگوں میں سے تھے (۴۷)

और इस्माईल और अलयसाआ और जलकिफ्ल को याद करो वह सब नेक लोगों में से हैं (48)

اور اسماعیل اور الیسع اور ذوالکفل کو یاد کرو وہ سب نیک لوگوں میں سے ہیں (۴۸)

यह शिक्षा है अर्थात इसको याद रखा जाए और सदाचारियों के लिए उत्तम स्थान है (49)

یہ نصیحت ہے یعنی اس کو یاد رکھا جائے اور پرہیز گاروں کے لئے عمدہ مقام ہے (۴۹)

सदैव रहने के उपवन जिनके द्वार उनके लिए खुले होंगे (50)

ہمیشہ رہنے کے باغ جن کے دروازے ان کے لئے کھلے ہوں گے (۵۰)

उनमें तकिए लगाए बैठे होंगे और (खाने पीने के लिए) बहुत से मेवे और पवित्र पेय मांग रहे होंगे (51)

ان میں تکیے لگائے بیٹھے ہوں گے اور (کھانے پینے کے لئے) بہت سے میوے اور پاکیزہ مشروب طلب کر رہے ہوں گے (۵۱)

और उनके पास सुरक्षित निर्मल पेय जल के कोष होंगे अधिक मात्रा में मानों वह धनी होंगे (52)

اور ان کے پاس محفوظ خالص مشروب کے خزانے ہوں گے زیادہ تعداد میں گویا وہ مالدار ہوں گے (۵۲)

{या उनके निकट इस सुख व विश्राम में उनके लिए हर प्रकार की जीविका होगी.}

[یا ان کے پاس اس عیش و آرام میں ان کے لئے ہر قسم کا رزق ہوگا]

यह वह वस्तुऐं हैं जिनका लेखा जोखा के दिन तुमको देने का वचन किया जा रहा है (53)

یہ وہ چیزیں ہیں جن کا حساب کے دن تم کو دینے کا وعدہ کیا جا رہا ہے (۵۳)

यह हमारी जीविका सुख सामग्री है जो कभी समाप्त न होगी (54)

یہ ہمارا رزق ہے جو کبھی ختم نہ ہوگا (۵۴)

यह है सदाचारीयों का पुरूस्कार और अवज्ञाकारों के लिए बुरा स्थान है (55)

یہ ہے پرہیز گاروں کا انعام اور سرکشوں کے لئے بُرا ٹھکانا ہے (۵۵)

(अर्थात) नर्क जिसमें वह प्रविष्ट होंगे और वह बुरा निवास स्थान है (56)

(یعنی) دوزخ جس میں وہ داخل ہوں گے اور وہ بُری قیام گاہ ہے (۵۶)

यह है (नर्कियों का परिणाम) अब खोलता हुआ पानी पीप का स्वाद चखो (57)

یہ ہے (دوزخیوں کا انجام) اب کھولتا ہوا پانی پیپ کے مزے چکھو (۵۷)

और इसी प्रकार दूसरी आकृति के कष्ट भी होंगे (52)
यह एक सैना है जो तुम्हारे साथ प्रविष्ट होगी उनको हर्ष न होगा वह नर्क में जाने वाले हैं (59)
कहेंगे अपितु तुम ही को प्रसन्नता न हो तुम ही लोग तो यह कष्ट हमारे सामने लाए हो सो यह बुरा निवास है (60)
वह कहेंगे ऐ हमारे रब जो इसको हमारे सामने लाया है उसको नर्क में दूना कष्ट दे (61)
वह कहेंगे क्या कारण है कि (यहां) हम उन व्यक्तियों को नहीं देखते जिनकी बुरों में गणना करते थे (62)
क्या हमने उनका (यूंही) उपहास उड़ाया था या फिर वह हमारी दृष्टि से लुप्त हो गए हैं (63)
निःसंदेह नर्क वालों का झगड़ना सत्य है (64)
ऐ मुहम्मद स0 उन लोगों से यह कहो जो कहते हैं कि कोई ईश्वर नहीं मैं तो एक सावधान करने वाला हूं और सुनों निःसंदेह ईश्वर है जो एक है और सब पर अधिपति (65)
जो आकाशों और पृथ्वी और जो (रचना) उनमें है सबका स्वामी है अधिपति और क्षमा करने वाला (66)
कहदो कि यह एक बड़ी सूचना है (67)
जिसको सुनकर तुम मुख फेर लेते हो (ऐ मुहम्मद स0! तुम उनसे) कहो मुझे उस समय की कोई जानकारी न थी जब उच्चमान वाले अर्थात फरिश्ते आदम के विषय में प्रश्नोत्तर कर रहे थे (और शैतान ने आदम को श्रेष्ट स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था) (69)
मुझे तो वही के द्वारा इन सब बातों का ज्ञान होता है अन्यथा मैं तो खुल्लम खुल्ला (दुष्कर्मों के परिणाम से) डराने वाला हूं (70)
जब तुम्हारे रब ने फरिश्तों से कहा कि मैं मिट्टि से मानव बनाने वाला हूं (71)
जब उसको ठीक कर लूं और अपने ज्ञान में से उसके अन्दर डाल दूं अर्थात वह ज्ञान वाला हो जाए तो उसको श्रेष्ट स्वीकार करके उसकी सहायता करना (72)
तो सब फरिश्तों ने ईश्वर का आदेश स्वीकार कर लिया और आदम को श्रेष्ट स्वीकार कर लिया (73)
परन्तु शैतान ने अवज्ञा की और अकड़ बैठा और काफिरों में हो गया (74)
(ईश्वर ने) कहा कि ऐ इबलीस जिस व्यक्ति को मैंने अपनी शक्ति से बनाया उसके विषय में मैंने जो आदेश तुझ को दिया तो क्यों इनकार किया, किस बात ने मना किया, क्या तू घमण्ड में आ गया या ऊंचे पद वालों में है? (75)
बोला कि मैं इससे श्रेष्ट हूं (कि) तूने मुझे आग से उत्पन्न किया और इसे मिट्टी से बनाया (तो इसको

اوراسی طرح دوسری شکل کے عذاب بھی ہوں گے(۵۸)
یہ ایک فوج ہے جوتمہارے ساتھ داخل ہوگی اُن کوخوشی نہ ہوگی وہ دوزخ میں جانے والے ہیں(۵۹)
کہیں گے بلکہ تم ہی کوخوشی نہ ہوتم ہی تو یہ بلا ہمارے سامنے لائے ہوسو یہ بُرا ٹھکانا ہے(۶۰)
وہ کہیں گے اے ہمارے رب جو اس کو ہمارے سامنے لایا ہےاس کودوزخ میں دونا عذاب دے(۶۱)
اورکہیں گے کیا سبب ہے کہ(یہاں)ہم ان آدمیوں کونہیں دیکھتے جن کوبُروں میں شمار کرتے تھے(۶۲)
کیا ہم نے ان کا (یونہی) مذاق اڑایا تھا یا پھر وہ ہماری نظروں سے غائب ہو گئے ہیں(۶۳)
بے شک اہل دوزخ کا جھگڑنا برحق ہے(۶۴)
اے محمدؐ ان لوگوں سے یہ کہو جو کہتے ہیں کہ کوئی اللہ نہیں میں توایک ڈرانے والا ہوں اورسنو یقیناً اللہ ہے جوایک ہے اورغالب ہے(۶۵)
جوآسمانوں اورزمین اور جو (مخلوق)ان میں ہے سب کا مالک ہےغالب اوربخشنے والا(۶۶)
کہدو کہ ایک بڑی خبر ہے(۶۷)
جس کوسن کرتم منہ پھیر لیتے ہو(۶۸)
(اے محمدؐ تم ان سے) کہو مجھے اس وقت کی کوئی خبر نہ تھی جب ملاء اعلیٰ یعنی فرشتے آدم کے بارے میں سوال وجواب کررہے تھے(اورشیطان نےآدم کوبرترتسلیم کرنے سے انکارکردیا تھا)(۶۹)
مجھےتووحی کے ذریعہ ان تمام باتوں کاعلم ہوتا ہےورنہ میں تو کھلم کھلا(اعمال بد کےنتائج سے)ڈرانےوالاہوں(۷۰)
جب تمہارے رب نےفرشتوں سے کہا کہ میں مٹی سے انسان بنانےوالاہوں(۷۱)
جب اس کو درست کرلوں اوراپنے علم میں سے اس کے اندر ڈال دوں یعنی وہ علم والا ہوجائے تو اس کوبرترتسلیم کرکےاس کی مدد کرنا(۷۲)
توتمام فرشتوں نےاللہ کاحکم تسلیم کرلیااورآدم کوبرترتسلیم کرلیا(۷۳)
مگر شیطان نے نافرمانی کی اوراکڑ بیٹھا اورکافروں میں ہوگیا(۷۴)
(اللہ نے)فرمایا کہ اےابلیس جس شخص کو میں نے اپنی قدرت طاقت سے بنایا اس کے بارے میں میں نے جوحکم تجھ کودیاتو کیوں انکارکیا کس چیز نے منع کیا.کیاتو غرور میں آگیایااونچے درجےوالوں میں ہے؟(۷۵)
بولا کہ میں اس سے بہتر ہوں(کہ)تو نے مجھے آگ سے پیدا کیا اوراسے مٹی سے بنایا(تو اس کو کیسے برترتسلیم

कैसे श्रेष्ठ स्वीकार कर लूं) (76)
निकल जा तू पतितों में से है (77)
और तुझ पर महाप्रलय के दिन तक मेरी धिक्कार पड़ती रहेगी (78)
कहने लगा कि मेरे रब मुझे उस दिन तक कि लोग उठाएं जाए छूट दे (79)
ईश्वर ने कहा तुझको ज्ञात नही कि मेरे नियम के अनुसार तुझे तो पहले से ही छूट है अर्थात तेरे कार्य की आयु क्यामत तक है सुन ले (80)
उस दिन तक जिसका समय निश्चित है (81)
यह सुनकर शैतान कहने लगा फिर मुझे तेरे सम्मान की शपथ मैं उनको बहकाता रहूंगा (82)
सिवा उनके जो उनमें से तेरे विशेष बन्दें है (83)
कहा सच (है) और मैं भी सच ही कहता हूं (84)
कि मैं तुझ से और जो उनमें से तेरा अनुकरण करेंगे सबसे नर्क को भर दूंगा (85)
ऐ मुहम्मद स० उनसे कहो कि इस सन्देश का मैं तुमसे कोई बदला नही मांगता हूं (कि तुम पर भार हो) और न मैं बनावटी व्यक्ति हूं (86)
यह (कुरआन) तो संसार वालों के लिए शिक्षा है (87)
और तुमको इसका समाचार एक समय के बाद ज्ञात हो जाएगा (88)

सूरत जुमर मक्की-39

इस पुस्तक का अवतर्ण ईश्वर शक्ति शाली और दाना की ओर से है (1)
(ऐ मुहम्मद स0!) हमने यह पुस्तक तुम्हारी ओर सच्चाई के साथ अवतरित की है तो ईश्वर की पूजा करें (अर्थात) उसकी पूजा को अनेकेश्वर वाद से निर्मल करके (2)
देखो निर्मल पूजा ईश्वर ही के लिए है और जिन लोगों ने उसके सिवा और मित्र बनाए है (वह कहते है कि) हम उनको इस लिए पूजते है कि हमको ईश्वर का समीप वर्ती बना दे तो जिन बातों में वह मतभेद करते है ईश्व उनमें उनका निर्णय कर देगा. निःसंदेह ईश्वर उस व्यक्तिको जो झूठा अवज्ञाकारी है मार्ग दर्शन नही देता (3) {5:35, 9:99, 17:57, 39:12}
यदि किसी को अपना पुत्र बनाना चाहता तो अपनी रचना में से जिसको चाहता चुन लेता वह पवित्र है वही तो ईश्वर एक और प्रभुत्व शाली है (4)
उसीने आकाशों और पृथ्वी को युक्ति के साथ पैदा किया है वह रात को दिन पर लपैटता है और दिन को रात पर लपैटता है, और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा को बेगार में लगा रखा है सब एक निश्चित समय तक चलते रहेंगे देखो वही अधिपति और क्षमा करने वाला है (5)
उसी ने तुमको अर्थात तुम्हारे पिता को एक सार से बनाया अर्थात मिट्टी से और फिर उसी मिट्टि से उस

کرلوں؟)(٧٦)
کہا تو یہاں سے نکل جا تو مردودوں میں سے ہے(٧٧)
اور تجھ پر قیامت کے دن تک میری لعنت پڑتی رہےگی(٧٨)
کہنے لگا کہ میرے رب مجھے اس روز تک کہ لوگ اٹھائے جائیں مہلت دے(٧٩)
اللہ نے کہا تجھ کو معلوم نہیں کہ میرے قانون کے مطابق تجھے تو پہلے سے ہی مہلت ہے یعنی تیرے کام کی عمر قیامت تک ہے سن لے(٨٠)
اس روز تک جس کا وقت مقرر ہے(٨١)
یہ سن کر شیطان کہنے لگا کہ مجھے تیری عزت کی قسم میں ان کو بہکاتا رہوں گا(٨٢)
سوائے ان کے جو ان میں سے تیرے خاص بندے ہیں(٨٣)
کہا سچ (ہے)اور میں بھی سچ ہی کہتا ہوں(٨٤)
کہ میں تجھ سے اور جو ان میں سے تیری پیروی کریں گے سب سے جہنم کو بھر دوں گا(٨٥)
(اے محمدؐ ان سے) کہہ دو کہ اس پیغام کا میں تم سے کوئی اجر نہیں مانگتا ہوں (کہ تم پر بار ہو) اور نہ میں بناوٹی آدمی ہوں(٨٦)
یہ (قرآن) تو اہل عالم کے لئے نصیحت ہے(٨٧)
اور تم کو اس کا حال ایک وقت کے بعد معلوم ہو جائے گا(٨٨)

سورت الزمر_مکی(٣٩)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اس کتاب کا نزول اللہ زبردست اور دانا کی طرف سے ہے(١)
(اے محمدؐ!) ہم نے یہ کتاب تمہاری طرف سچائی کے ساتھ نازل کی ہے تو اللہ کی عبادت کرو (یعنی) اس کی عبادت کو شرک سے خالص کر کے(٢)
دیکھو خالص عبادت اللہ ہی کے لئے ہے اور جن لوگوں نے اس کے سوا اور دوست بنائے ہیں (وہ کہتے ہیں کہ) ہم ان کو اس لئے پوجتے ہیں کہ ہم کو اللہ کا مقرب بنا دیں. تو جن باتوں میں وہ اختلاف کرتے ہیں اللہ ان میں ان کا فیصلہ کر دے گا بےشک اللہ اس شخص کو جو جھوٹا نافرمان ہے ہدایت نہیں دیتا(٣)[٥:٣٥، ٩:٩٩، ١٧:٥٧، ٣٩:١٢]
اگر کسی کو اپنا بیٹا بنانا چاہتا تو اپنی مخلوق میں سے جس کو چاہتا انتخاب کر لیتا. وہ پاک ہے وہی تو اللہ ایک اور غالب ہے(٤)
اسی نے آسمانوں اور زمین کو تدبیر کے ساتھ پیدا کیا ہے وہی رات کو دن پر لپیٹتا ہے اور اسی نے سورج اور چاند کو بیگار میں لگا رکھا ہے سب ایک وقت مقرر تک چلتے رہیں گے دیکھو وہی غالب اور بخشنے والا ہے(٥)
اسی نے تم کو یعنی تمہارے باپ کو ایک نفس سے بنایا یعنی مٹی سے اور پھر اسی مٹی سے اس کا جوڑا بنایا اور اسی نے تمہارے

لئے چارپایوں میں سے آٹھ جوڑے بنائے وہی تم کو تمہاری ماؤں کے پیٹ میں (پہلے) ایک طرح پھر دوسری طرح تین اندھیروں میں بناتا ہے وہی اللہ تمہارا رب ہے اسی کی بادشاہی ہے اس کے سوا کوئی معبود نہیں پھر تم کہاں پھرے جاتے ہو (۶)

اگر نافرمانی کرو گے تو اللہ تم سے بے پروا ہے اور وہ اپنے بندوں کے لئے نافرمانی پسند نہیں کرتا. اور اگر فرمانبرداری کرو گے تو وہ اس کو تمہارے لئے پسند کرے گا اور کوئی اٹھانے والا دوسرے کا بوجھ نہیں اٹھائے گا پھر تم کو اپنے پروردگار کی طرف لوٹنا ہے پھر جو کچھ تم کرتے رہے وہ تم کو بتائے گا وہ تو دلوں کی پوشیدہ باتوں تک سے آگاہ ہے (۷)

اور جب انسان کو تکلیف پہنچتی ہے تو اپنے رب کو پکارتا ہے اور اس کی طرف دل سے رجوع کرتا ہے پھر جب وہ اس کو اپنی طرف سے کوئی نعمت دیتا ہے تو جس کام کے لئے پہلے اس کو پکارتا ہے اس کو بھول جاتا ہے اور اللہ کا شریک بنانے لگتا ہے. تاکہ (لوگوں کو) اس کے رستے سے گمراہ کرے. کہدو کہ (اے کافروں) اپنی نافرمانی سے تھوڑا سا فائدہ اٹھالو تو تم دوزخیوں میں ہو گے (۸)

(مشرک اچھا ہے) یا وہ جو رات کے وقتوں میں زمین پر پیشانی رکھ کر اور کھڑے ہو کر عبادت کرتا اور آخرت سے ڈرتا ہے اور اپنے رب کی رحمت کی امید رکھتا ہے کہو بھلا جو لوگ علم رکھتے ہیں اور جو نہیں رکھتے دونوں برابر ہو سکتے ہیں؟ اور نصیحت تو وہی پکڑتے ہیں جو عقلمند ہوتے ہیں (۹)

(اے محمدؐ مسلمانوں سے) کہدو کہ اے وہ لوگو! جو اللہ پر ایمان لاکر اس کے بندے ہو گئے ہو. اپنے رب کی نافرمانی سے ڈرو. جنہوں نے اس دنیا میں نیکی کی ان کے لئے بھلائی ہے. اور اللہ کی زمین کشادہ ہے جو صبر کرنے والے ہیں ان کو بے شمار ثواب ملے گا (۱۰)

کہدو کہ مجھ سے ارشاد ہوا ہے کہ اللہ کی عبادت کو خالص کر کے اس کی بندگی کروں (۱۱)

اور یہ بھی حکم ہوا ہے کہ میں سب سے اوّل مسلمان ہوں (۱۲)

کہدو کہ اگر میں اپنے رب کا حکم نہ مانوں تو مجھے بڑے دن کے عذاب سے ڈر لگتا ہے (۱۳)

کہدو کہ میں اپنے دین کو (شرک سے) خالص کر کے اس کی عبادت کرتا ہوں (۱۴)

(اے محمدؐ کہدو) تم اس کے سوا جس جس کی بندگی کرنا چاہو کرتے رہو کہو اصل دیوالئے تو وہی ہیں جنہوں نے قیامت کے روز اپنے آپ کو اور اپنے گھر والوں کو گھاٹے میں ڈال دیا. خوب سن لو یہی کھلا نقصان ہے (۱۵)

ان کے اوپر آگ کا سائبان ہوگا اور نیچے آگ کا فرش یہ وہ

का जोड़ा बनाया और उसी ने तुम्हारे लिए चारपायों में से आठ जोड़े बनाए वही तुमको तुम्हारी माताओं के पेट में (पहले) एक प्रकार फिर दूसरी भांति तीन अंधेरों में बनाता है वही ईश्वर तुम्हारा रब है उसी का राज्य है उसके सिवा कोई ईश्वर नही फिर तुम कहां फिरे जाते हो (6)

यदि अवज्ञा करोगे तो ईश्वर तुमसे निश्चिन्त है, और वह अपने बन्दों के लिए अवज्ञा पसन्द नही करता और यदि आज्ञाकारी करोगे तो वह उसको तुम्हारे लिए पसन्द करेगा और कोई उठाने वाला दूसरे का भार नहीं उठाएगा फिर तुमको अपने ईश्वर की ओर लौटना है फिर जो कुछ तुम करते रहे वह तुमको बताएगा वह तो दिलों की गुप्त बातों तक से अवगत है (7)

और जब इन्सान को कष्ट पहुंचता है तो अपने रब को पुकराता है और उसकी ओर हृदय से प्रत्यागमन करता है फिर जब वह उसको अपनी ओर से कोई प्रसाद देता है तो जिस कार्य के लिए पहले उसको पुकारता है उसको भूल जाता है और ईश्वर का साझी बनाने लगता है ताकि (लोगों को) उसके मार्ग से पथ भ्रष्ट करें कहदो कि (ऐ नास्तिकों) अपनी अवज्ञा से थोड़ा सा लाभ उठालो फिर तो तुम नर्कियों में होंगे (8)

(अनेकेश्वर वादी अच्छा है) या वह जो रात्री के समय में धरती पर ललाट रखकर और खड़े होकर पूजा करता और परलोक से डरता है, और अपने रब की कृपा की आशा रखता है, कहो भला जो लोग ज्ञान रखते हैं और जो नही रखते दोनों बराबर हो सकते हैं? और शिक्षा तो वही पकड़ते हैं जो बुद्धिमान होते हैं (9)

(ऐ मुहम्मद स0! मुसलमानों से) कहदो कि ऐ वह लोगों! जो ईश्वर पर विश्वास ला कर उसके बन्दे हो गए हो, अपने रब की अवज्ञा से डरो जिन्होंने इस दुनिया में सत्कर्म किए उनके लिए मंगल है और ईश्वर की भूमि विशाल है जो धैर्य करने वाले हैं, उनको अंसख्य प्रतिफल मिलेगा (10)

कहदो कि मुझसे आदेश हुआ है कि ईश्वर की पूजा को निर्मल करके उस की पूजा करूं (11)

और यह भी आदेश हुआ है कि मैं सबसे प्रथम मुसलमान हूं (12)

कहदो कि यदि मैं अपने रब का आदेश न मानूं तो मुझे बड़े दिन के कष्ट से डर लगता है (13)

कहदो कि मैं (अपने धर्म को अनेकेश्वर वाद से) निर्मल करके उसी की पूजा करता हूं (14)

(ऐ मुहम्मद स0 कहदो) तुम उसके सिवा जिस जिस की पूजा करना चाहो करते रहो कहो मूल दिवालये तो वही है जिन्होंने क्यामत के दिन अपने आपको और अपने घर वालों को घाटे में डाल दिया अच्छी प्रकार सुनलो यही खुली हानी है (15)

उनके ऊपर आग का मंडप होगा और नीचे आग

का बिछोना यह वह कष्ट है जिससे ईश्वर अपने बन्दों को डराता है तो ऐ मेरे बन्दों! मेरी अवज्ञा से डरते रहो (16)

और जिन्होंने मूर्तियों की पूजा छोड़ दी और ईश्वर के धर्म की ओर वापस आ गए उनके लिए मंगल सूचना है तो मेरे बन्दों को शुभसमाचार सुना दो (17)

जो बात को ध्यान से सुनते है और अच्छी बातों का अनुकरण करते है वही वह लोग है जिन को ईश्वर ने पथ प्रदर्शन दिया है और वही लोग बुद्धि वाले है (18)

भला जिस व्यक्ति पर दण्ड की बात सिद्ध हो चुकी है तो क्या तुम ऐसे नर्की को नर्क में से छुड़ा सकते हो (19) {19:71, 26:90-91, 24:21, 29:54}

عذاب ہے جس سے اللہ اپنے بندوں کو ڈراتا ہے تو اے میرے بندو! میری نافرمانی سے ڈرتے رہو (۱۶)

اور جنہوں نے بتوں کی پوجا چھوڑ دی اور اللہ کے دین کی طرف کو واپس آگئے ان کے لئے بشارت ہے تو میرے بندوں کو بشارت سنا دو (۱۷)

جو بات کو غور سے سنتے ہیں اور اچھی باتوں کی پیروی کرتے ہیں وہی وہ لوگ ہیں جن کو اللہ نے ہدایت دی اور وہی لوگ عقل والے ہیں (۱۸)

بھلا جس شخص پر عذاب کی بات ثابت ہو چکی ہے تو کیا تم ایسے دوزخی کو دوزخ میں سے چھڑا سکتے ہو (۱۹) [۱۹:۷۱؛ ۲۶:۹۰،۹۱؛ ۲۴:۲۱؛ ۲۹:۵۴]

परन्तु जो लोग अपने रब की अवज्ञा से डरते हैं उनके लिए ऊंचे ऊंचे भवन हैं जिनके ऊपर बाला खाने बने होंगे और उनके नीचे नहरें बह रही होंगी यह ईश्वर का वचन है ईश्वर वचन के विपरीत नही करता (20)

لیکن جو لوگ اپنے رب کی نافرمانی سے ڈرتے ہیں ان کے لئے اونچے اونچے محل ہیں جن کے اوپر بالا خانے بنے ہوں گے اور ان کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی یہ اللہ کا وعدہ ہے اللہ وعدے کے خلاف نہیں کرتا (۲۰)

क्या आपने नही देखा है कि आकाश से पानी प्रेषित करता है, फिर उसको भूमि में स्रोत बना कर जारी करता है फिर उससे खेती उगाता है जिसके भांति भांति के रंग होते हैं, फिर वह शुष्क हो जाती है तो तुम उसको देखते हो कि पीली हो गई है फिर उसे चूर चूर कर देता है, निःसंदेह इसमें बुद्धि वालों के लिए उपदेश है (21)

کیا آپ نے نہیں دیکھا کہ اللہ آسمان سے پانی نازل کرتا ہے پھر اس کو زمین میں چشمے بنا کر جاری کرتا ہے پھر اس سے کھیتی اگاتا ہے جس کے طرح طرح کے رنگ ہوتے ہیں پھر وہ خشک ہو جاتی ہے تو تم اس کو دیکھتے ہو کہ زرد ہوگئی ہے پھر اسے چور چور کر دیتا ہے بے شک اس میں عقل والوں کے لئے نصیحت ہے (۲۱)

भला जिस व्यक्ति का वक्ष ईश्वर के नियम ने इस्लाम के लिए खोल दिया हो और वह अपने रब की ओर से प्रकाश पर हो तो क्या वह कठोर हृदय काफिर की भांति हो सकता है) अतः उन पर दुख है जिनके हृदय ईश्वर की याद से (अचेत होकर) कठोर हो रहे है और वही लोग खुली गुमराही में है (22) {6:125, 20:25, 94:1}

(بھلا جس شخص کا سینہ اللہ کے قانون نے اسلام کے لئے کھول دیا ہو اور وہ اپنے رب کی طرف سے روشنی پر ہو تو کیا وہ سخت دل کافر کی طرح ہو سکتا ہے) پس ان پر افسوس ہے جن کے دل اللہ کی یاد سے (غافل ہو کر) سخت ہو رہے ہیں اور وہی لوگ کھلی گمراہی میں ہیں (۲۲) [۶:۱۲۵؛ ۲۰:۲۵؛ ۹۴:۱]

ईश्वर ने उत्तम वाणी बाते प्रेषित की है अर्थात एक ऐसी पुस्तक जिसकी आयतें मिलती जुलती है और दोहराई जाती है, (एक दूसरी के समान है आपस में कोई विरोध नही उसे सुनकर) उन लोगों के रोंगटे खड़े हो जाते है फिर उनके शरीर और हृदय कोमल होकर ईश्वर की याद (जप) की ओर आकृष्ट हो जाते है, यही ईश्वर की शिक्षा है जिससे वह जिसे चाहता है सीधे मार्ग पर ले आता है और जिसे चाहता है उसकी अवज्ञा के कारण भ्रष्ट कर देता है जिसको ईश्वर का नियम भ्रष्ट कर दे उसको कोई मार्ग दर्शन देने वाला नही (23) {3:7}

اللہ نے بہترین کلام باتیں نازل فرمائی ہیں یعنی ایک ایسی کتاب جس کی آیتیں ملتی جلتی ہیں اور دہرائی جاتی ہیں (ایک دوسرے کے موافق ہیں آپس میں کوئی تضاد نہیں اسے سن کر) ان لوگوں کے رونگٹے کھڑے ہو جاتے ہیں جو اللہ (کی نافرمانی) سے ڈرتے ہیں پھر ان کے بدن اور دل نرم ہو کر اللہ کی یاد کی طرف مائل ہو جاتے ہیں وہی اللہ کی ہدایت ہے جس سے وہ جسے چاہتا ہے سیدھے رستے پر لے آتا ہے اور جسے چاہتا ہے اس کی نافرمانی کی وجہ سے گمراہ کر دیتا ہے جس کو اللہ کا قانون گمراہ کر دے اس کو کوئی ہدایت دینے والا نہیں (۲۳) [۳:۷]

क्या वह व्यक्ति जो क्यामत के दिन बुरे दण्ड की मार अपने मुख पर रोकेगा (स्वर्ग वालों की भांति हो सकता है कदापि नही) ऐसे अत्याचारियों से कहा जाएगा तुम दुनिया में जो कुछ करते रहे हो अब उसका स्वाद चखो (24)

کیا وہ شخص جو قیامت کے دن بُرے عذاب کی مار اپنے منہ پر روکے گا (اہل جنت کی طرح ہو سکتا ہے ہرگز نہیں) ایسے ظالموں سے کہا جائے گا تم دنیا میں جو کچھ کرتے رہے ہو اب اس کے مزے چکھو (۲۴)

जो लोग उनसे पहले थे उन्होंने भी झुठलाया था तो उन पर कष्ट ऐसी जगह से आया कि उनको सूचना ही न थी. (25)

फिर उनको ईश्वर ने दुनिया के जीवन में अपमान का स्वाद चखाया और परलोक का कष्ट तो बहुत बुरा है यदि वह समझ रखते. (26)

और हमने लोगों को (समझाने के) लिए इस कुरआन में हर प्रकार की उपमाएं ब्यान की है ताकि वह शिक्षा पकड़े (27)

यह कुरआन अरबी है जिसमें कोई दोष और विवाद नही ताकि वह डर माने (28)

ईश्वर एक उपमा वर्णन करता है एक व्यक्ति तो वह है जिसके स्वामी होने में बहुत से दुष्टस्वामी साझी है जो उसे अपनी अपनी ओर खींचते है और दूसरा व्यक्ति केवल एक स्वामी का दास है क्या उन दोनों की एक ही प्रकार की दशा है? नही सब प्रशंसा ईश्वर के लिए है, परन्तु अधिक लोग नही समझते (29)

निःसंदेह स्वयं आपको भी मृत्यू आएगी और वह भी सब मर जाएंगे (30)

फिर तुम सब क्यामत के दिन अपने रब के पास उपस्थित होंगे और तुम्हारा विवाद प्रस्तुत किया जाएगा और निर्णय कर दिया जाएगा (31)

फमन अजलमु खण्ड-24

उससे बढ़कर अन्यायी कौन जो ईश्वर पर झूट बोले और सच्ची बात जब उसके पास पहुंच जाए तो उसे झुठलाए क्या नर्क में काफिरों का स्थान नहीं? (32)

और जो व्यक्ति सच्ची बात लेकर आए और जिसने उसकी पुष्टि की वही लोग सदाचारी है (33)

वह जो चाहेंगे उनके लिए उनके रब के पास उपस्थित है सदाचारियों का यही बदला है (34)

ताकि ईश्वर उनसे बुराईयों को दूर कर दे जो उन्होंने की (उनकी पश्चाताप के बाद) और शुभ कर्मों का जो वह करते रहें उनको बदला दे (35)

(अनेकेश्वर वादी ईश्वर को छोड़ कर अपने बुतों से सहायता क्यों मांगते है?) क्या ईश्वर अपने बन्दों की सहायता के लिए प्रयाप्त नही है? और वह तुमको उन लोगों से जो ईश्वर के अतिरिक्त है डराते है (वह अपने दुषकर्मों के कारण पथ भ्रष्ट हो गए है अतः) ईश्वर का नियम जिसको पथ भ्रष्ट करे उसे कोई शिक्षा देने वाला नही (36)

और जिसको ईश्वर का नियम पथ प्रदर्शन दे उसको कोई भ्रष्ट करने वाला नही क्या ईश्वर प्रभुत्वशाली और बदला लेने वाला नही (37)

(ऐ मुहम्मद स0!) यदि आप उनसे पूछो वह कौन है जिसने आकाशों और पृथ्वी को बनाया? तो वह तुरन्त कह देंगे कि ईश्वर ने फिर उनसे कहो यदि ईश्वर मुझे कष्ट पहुंचाना चाहे तो क्या तुम्हारे वह देवता जिन्हें तुम ईश्वर को छोड़ कर पुकारते हो मेरी तकलीफ को दूर कर सकते है, या यदि ईश्वर मुझ पर अपना कृपा दया करना चाहे तो क्या वह

جولوگ ان سے پہلے تھے انہوں نے بھی جھٹلایا تھا تو ان پر عذاب ایسی جگہ سے آیا کہ ان کو خبر ہی نہ تھی (۲۵)

پھر ان کو اللہ نے دنیا کی زندگی میں رسوائی کا مزہ چکھایا اور آخرت کا عذاب تو بہت بُرا ہے کاش وہ سمجھ رکھتے (۲۶)

اور ہم نے لوگوں کو (سمجھانے کے) لئے اس قرآن میں ہر طرح کی مثالیں بیان کی ہیں تا کہ وہ نصیحت پکڑیں (۲۷)

یہ قرآن عربی ہے جس میں کوئی عیب اور اختلاف نہیں تا کہ وہ ڈرمانیں (۲۸)

اللہ ایک مثال بیان کرتا ہے ایک شخص تو وہ ہے جس کے مالک ہونے میں بہت سے بدمزاج آقا شریک ہیں جو اسے اپنی اپنی طرف کھینچتے ہیں اور دوسرا شخص صرف ایک شخص کا غلام ہے کیا ان دونوں کی ایک ہی طرح کی حالت ہے؟ نہیں تمام تعریف اللہ کے لئے ہے مگر اکثر لوگ نہیں سمجھتے (۲۹)

یقیناً خود آپ کو بھی موت آئے گی اور وہ بھی سب مرجائیں گے (۳۰)

پھر تم سب قیامت کے دن اپنے رب کے پاس حاضر ہو گے اور تمہارا جھگڑا پیش کیا جائے گا اور فیصلہ کر دیا جائے گا (۳۱)

فمن اظلم ۔ پارہ (۲۴)

اس سے بڑھ کر ظالم کون جو اللہ پر جھوٹ بولے اور سچی بات جب اس کے پاس پہنچ جائے تو اسے جھٹلائے کیا دوزخ میں کافروں کا ٹھکانا نہیں ہے؟ (۳۲)

اور جو شخص سچی بات لے کر آئے اور جس نے اس کی تصدیق کی وہی لوگ متقی ہیں (۳۳)

وہ جو چاہیں گے ان کے لئے ان کے پروردگار کے پاس موجود ہے نیکوکاروں کا یہی بدلہ ہے (۳۴)

تا کہ اللہ ان سے برائیوں کو دور کر دے جو انہوں نے کیں (ان کی توبہ کے بعد) اور نیک کاموں کا جو وہ کرتے رہے ان کو بدلہ دے (۳۵)

(مشرکین اللہ کو چھوڑ کر اپنے بتوں سے مدد کیوں مانگتے ہیں؟) کیا اللہ اپنے بندوں کی مدد کے لئے کافی نہیں ہے؟ اور وہ تم کو ان لوگوں سے جو اللہ کے سوا ہیں ڈراتے ہیں (وہ اپنی بدکاریوں کی وجہ سے گمراہ ہو گئے ہیں اس لئے) اللہ کا قانون جس کو گمراہ کرے اسے کوئی ہدایت دینے والا نہیں (۳۶)

اور جس کو اللہ کا قانون ہدایت دے اس کو کوئی گمراہ کرنے والا نہیں کیا اللہ غالب اور بدلہ لینے والا نہیں (۳۷)

(اے محمدؐ!) اگر آپ ان سے پوچھو وہ کون ہے جس نے آسمانوں اور زمین کو پیدا کیا؟ تو وہ فوراً کہہ دیں کے کہ اللہ نے پھر ان سے کہو اگر اللہ مجھے تکلیف پہنچانا چاہے تو کیا تمہارے وہ معبود جنہیں تم اللہ کو چھوڑ کر پکارتے ہو میری تکلیف دور کر سکتے ہیں یا اگر اللہ مجھ پر اپنا فضل وکرم

उसे रोक सकते हैं (ऐ रसूल) उनसे कह दो मेरे लिए तो बस ईश्वर ही प्रयाप्त है भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं तुम विचार तो करो (38)

کرنا چاہے تو کیا وہ اسے روک سکتے ہیں (اے رسول) ان سے کہدو میرے لئے تو بس اللہ ہی کافی ہے بھروسہ کرنے والے اسی پر بھروسہ کرتے ہیں تم غور تو کرو(۳۸)

उनसे स्पष्ट कह दो मेरी जाति के लोगों! तुम अपने स्थान पर कार्य किए जाओ मैं अपना कार्य कर रहा हूं तुम्हें शीघ्र ही ज्ञात हो जाएगा (39)

ان سے صاف کہدواے میری قوم کے لوگو! تم اپنی جگہ پر کام کئے جاؤ میں اپنا کام کر رہا ہوں تمہیں جلد ہی معلوم ہو جائے گا(۳۹)

कि किस पर (दुनिया में) कष्ट आता है कि उसे अपमानित करे और किस पर सदैव का दण्ड परलोक में अवतरित होता है (40)

کہ کس پر (دنیا میں) عذاب آتا ہے کہ اسے رسوا کرے اور کس پر ہمیشہ کا عذاب آخرت نازل ہوتا ہے(۴۰)

(ऐ मुहम्मद स0!) हमने मानव (की शिक्षा) के लिए यह पुस्तक सच्चाई के साथ अवतरित की है तो जो कोई (इससे) शिक्षा प्राप्त करेगा उसका लाभ उसको होगा और जो कोई (ऐसी पुस्तक को छोड़ कर) गुमराह होगा तो उसकी भ्रष्टता का कष्ट उसी पर होगा तुम उनके उत्तरदायी नही हो (41)

(اے محمدؐ) ہم نے انسان (کی ہدایت) کے لئے یہ کتاب سچائی کے ساتھ نازل کی ہے تو جو کوئی (اس سے) ہدایت حاصل کرے گا اس کا فائدہ اس کو ہوگا اور جو کوئی (ایسی کتاب کو چھوڑ کر) گمراہ ہوگا تو اس کی گمراہی کا وبال اسی پر ہوگا تم ان کے ذمہ دار نہیں ہو(۴۱)

लोगों के मरने के समय ईश्वर का नियम उनकी आत्मा ग्रहण कर लेता है और जो अभी नही मरे उनकी आत्मा सोते में (ग्रहण कर लेता है) फिर जिस पर मृत्यू का निर्णय पारित करता है उनको रोक लेता है और शेष आत्माओं को एक निश्चित समय तक के लिए छोड़ देता है विचार मनन करने वालों के लिए इसमें (ईश्वर की शक्ति महिमा की) बड़ी निशानियां हैं (42)

لوگوں کے مرنے کے وقت اللہ کا قانون ان کی روحیں قبض کر لیتا ہے اور جو ابھی نہیں مرے ان کی روحیں سوتے ہیں (قبض کر لیتا ہے) پھر جس پر موت کا فیصلہ صادر کرتا ہے ان کو روک لیتا ہے اور باقی روحوں کو ایک مقررہ وقت تک کے لئے چھوڑ دیتا ہے غور و فکر کرنے والوں کے لئے اس میں (اللہ کی قدرت کی) بڑی ہی نشانیاں ہیں(۴۲)

क्या उन्होंने ईश्वर के सिवा और अनुशंसक बना लिए हैं कहो कि चाहे वह किसी वस्तु का भी अधिकार न रखते हो और न समझते हों (43)

کیا انہوں نے اللہ کے سوا اور شفارشی بنالئے ہیں کہو کہ خواہ وہ کسی چیز کا بھی اختیار نہ رکھتے ہوں اور نہ کچھ سمجھتے ہوں(۴۳)

आप कहो अनुशंसा तो सारी ईश्वर ही के अधिकार में है उसी के लिए आकाशों और पृथ्वी का राज्य है फिर उसकी ओर तुम सब लौटाए जाओगे (44)

آپ کہو شفاعت تو ساری اللہ ہی کے اختیار میں ہے اسی کے لئے آسمانوں اور زمین کی بادشاہت ہے پھر اس کی طرف تم سب لوٹائے جاؤ گے(۴۴)

और जब अकेले ईश्वर का वर्णन किया जाता है तो उनके हृदय कुढ़ने लगते हैं परन्तु जब ईश्वर के अतिरिक्त दूसरे देवताओं का वर्णन किया जाता है तो हर्ष से उनके मुख चमक उठते हैं (45) {40:12}

اور جب تنہا اللہ کا ذکر کیا جاتا ہے تو ان کے دل کڑھنے لگتے ہیں لیکن جب اللہ کے علاوہ دوسرے معبودوں کا ذکر کیا جاتا ہے تو خوشی سے ان کے چہرے چمک اٹھتے ہیں(۴۵)[۴۰:۱۲]

तुम कहो ऐ ईश्वर आकाशों और पृथ्वी के बनाने वाले उपस्थित व अनुपस्थित के जानने वाले तू ही अपने बन्दों के मध्य उस बात का निर्णय करेगा जिसमें वह मत भेद करते रहें हैं. (46)

تم کہو اے اللہ آسمانوں اور زمین کے پیدا کرنے والے حاضر و غائب کے جاننے والے تو ہی اپنے بندوں کے درمیان اس بات کا فیصلہ کرے گا جس میں وہ اختلاف کرتے رہے ہیں(۴۶)

और (महाप्रलय का कष्ट इतना भयावह होगा कि) यदि उन अत्याचारियों के पास पृथ्वी का सारा धन उपस्थित हो और इतना और भी (उन्हें मिल जाए) तो वह क्यामत के बुरे कष्ट से छुटकारा पाने के लिए सब कुछ बदले में देने के लिए तैयार हो जाएंगे. परन्तु वहां ईश्वर की ओर से उनके सामने ऐसा कष्ट आजाएगा जिसका उन्हें पहले से बिलकुल अनुमान न होगा (47)

اور (قیامت کا عذاب اتنا ہولناک ہوگا کہ) اگر ان ظالموں کے پاس زمین کی ساری دولت موجود ہو اور اتنی اور بھی (انہیں مل جائے) تو وہ قیامت کے برے عذاب سے چھٹکارا پانے کے لئے سب کچھ فدیے میں دینے کے لئے تیار ہو جائیں گے مگر وہاں اللہ کی طرف سے ان کے سامنے ایسا عذاب آجائے گا جس کا انہیں پہلے سے بالکل اندازہ نہ ہوگا(۴۷)

और उनके कर्मों की (सारी) बुराईयां उन पर प्रकट

اور ان کے اعمال کی (ساری) برائیاں ان پر ظاہر ہو

हो जाएंगे और जिस (कष्ट) का वह उपहास उड़ा रहे हैं वही उनको आ घेरेगा (48)
जब व्यक्ति को कष्ट पहुंचता है तो हमें पुकारने लगता है और जब हम उसको अपनी ओर से प्रसाद देते हैं तो कहने लगता है कि यह तो मुझे मेरी योग्यता के कारण से मिली है (ऐसा नही है) अपितु यह उनकी परिक्षा है परन्तु उनमें से अधिकांश नही जानते (49)
उनसे पहले भी अधिकांश लोग ऐसी ही बाते बनाया करते थे परन्तु जो कुछ भी वह किया करते थे उनके कुछ भी काम न आया (50)
उन पर उनके कर्मों के कष्ट पड़ गए और जो लोग उनमें से अत्याचार करते रहें हैं, उन पर उनके कर्मों के कष्ट अभी पड़ेंगे और वह ईश्वर को विवश नही कर सकते (51)
क्या उनको ज्ञात नही कि ईश्वर का नियम ही जिस के लिए चाहता है जीविका को विस्तृत कर देता है, और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है, आस्था वालों के लिए इसमें बड़े चिन्ह है (52)
(ऐ मुहम्मद स०।) मेरे उन बन्दों से कह दो जिन्हों ने अपनी जानों पर अन्याय किया है ईश्वर की कृपा से निराश न हों ईश्वर तो सब पापों को (पश्चाताप के बाद) क्षमा कर देता है, निःसंदेह वह तो क्षमा करने वाला कृपालु है (53) {15:49, 17:53}
तुम सब अपने ईश्वर की ओर आकृष्ट हो जाओ उसकी आज्ञाकारी करते जाओ इससे पहले कि तुम्हारे पास कष्ट आ जाए और फिर तुम्हारी सहायता न की जाए और इससे पहले कि तुम पर अचानक कष्ट आजाए और तुमको सूचना भी न हो इस अत्यन्त अच्छी पुस्तक की जो तुम्हारे रब की ओर से तुम्हारे लिए अवतरित हुई है अनुकरण करो (55)
कि (उस समय) कोई जी कहने लगे कि इस त्रुटि पर दुख है जो मैंने ईश्वर के नियम के अनुकरण के विषय में की और मैं तो उपहास ही करता रहा (56)
या यह कहने लगे कि यदि ईश्वर का नियम मुझको पथ प्रदर्शन देता तो मैं भी सदाचारियों में होता (57)
या जब कष्ट देख ले तो कहने लगे कि यदि मुझे फिर एक बार दुनिया में जाना हो तो में सदाचारियों में हो जाऊं (58)
(उस समय ईश्वर कहेगा) क्यों नही मेरी आयतें तेरे पास पहुंच चुकी थी, परन्तु तूने घमण्ड में आ कर उनको झुटला दिया और तू काफिर बन गया (59)
और जिन लोगों ने ईश्वर पर झूट बोला तुम क्यामत के दिन देखोगे कि उनके मुख काले हो रहे होंगे क्या घमण्ड करने वालों का स्थान नर्क नही है? (60)

جائیں گی اور جس (عذاب) کا وہ مذاق اڑا رہے ہیں وہی ان کو آ گھیرے گا (۴۸)
جب انسان کو تکلیف پہنچتی ہے تو ہمیں پکارنے لگتا ہے اور جب ہم اس کو اپنی طرف سے نعمت دیتے ہیں تو کہنے لگتا ہے کہ یہ تو مجھے میری لیاقت کی وجہ سے ملی ہے (ایسا نہیں ہے) بلکہ یہ ان کی آزمائش ہے مگر ان میں سے اکثر نہیں جانتے (۴۹)
ان سے پہلے بھی اکثر لوگ ایسی ہی باتیں بکا کرتے تھے مگر جو کچھ بھی وہ کیا کرتے تھے ان کے کچھ بھی کام نہ آیا (۵۰)
اُن پر اُن کے اعمال کے وبال پڑ گئے اور جو لوگ ان میں سے ظلم کرتے رہے ہیں اُن پر اُن کے عملوں کے وبال ابھی پڑیں گے اور وہ اللہ کو عاجز نہیں کر سکتے (۵۱)
کیا ان کو معلوم نہیں کہ اللہ کا قانون ہی جس کے لئے چاہتا ہے رزق کو فراخ کر دیتا ہے اور جس کے لئے چاہتا ہے تنگ کر دیتا ہے ایمان والوں کے لئے اس میں بڑی نشانیاں ہیں (۵۲)
(اے محمدؐ) میرے ان بندوں سے کہہ دو جنہوں نے اپنی جانوں پر زیادتی کی ہے اللہ کی رحمت سے ناامید نہ ہو اللہ تو سب گناہوں کو (توبہ کے بعد) بخش دیتا ہے بےشک وہ تو بخشنے والا مہربان ہے (۵۳) [۴۹:۱۵؛ ۵۳:۱۷]
تم سب اپنے پروردگار کی طرف جھک پڑو اور اس کی فرمانبرداری کرتے جاؤ اس سے پہلے کہ تمہارے پاس عذاب آ جائے اور پھر تمہاری مدد نہ کی جائے (۵۴)
اور اس سے پہلے کہ تم پر اچانک عذاب آ جائے اور تم کو خبر بھی نہ ہو اس نہایت اچھی کتاب کی جو تمہارے رب کی طرف سے تمہارے لئے نازل ہوئی ہے پیروی کرو (۵۵)
کہ (اس وقت) کوئی نفس کہنے لگے کہ اس کوتاہی پر افسوس ہے جو میں نے اللہ کے قانون کی پیروی کے بارے میں کی اور میں تو ہنسی ہی کرتا رہا (۵۶)
یا یہ کہنے لگے کہ اگر اللہ کا قانون مجھ کو ہدایت دیتا تو میں بھی پرہیزگاروں میں ہوتا (۵۷)
یا جب عذاب دیکھ لے تو کہنے لگے کہ اگر مجھے پھر ایک دفعہ دنیا میں جانا ہو تو میں نیکوکاروں میں ہو جاؤں (۵۸)
(اس وقت اللہ فرمائے گا) کیوں نہیں میری آیتیں تیرے پاس پہنچ چکی تھیں مگر تو نے گھمنڈ میں آ کر ان کو جھٹلا دیا اور تو کافر بن گیا (۵۹)
اور جن لوگوں نے اللہ پر جھوٹ بولا تم قیامت کے دن دیکھو گے کہ ان کے منہ کالے ہو رہے ہوں گے کیا غرور کرنے والوں کا ٹھکانا دوزخ میں نہیں ہے (۶۰)؟

परन्तु जिन लोगों ने सदाचारिता की नीति अपनाई होगी उनकी नेकी और आज्ञाकारी के कारण ईश्वर उनको मुक्ति देगा और उनको न कोई कठिनाई पहुंचेगी और न वह शोका कुल होंगे (61)

لیکن جن لوگوں نے پرہیز گاری کی روش اختیار کی ہوگی ان کی نیکی اور فرمانبرداری کی وجہ سے اللہ ان کو نجات دے گا اور ان کو نہ کوئی سختی پہنچے گی اور نہ وہ غمناک ہوں گے (۶۱)

ईश्वर ही हर वस्तु का बनाने वाला है और वही हर वस्तु का रख वाला है (62)

اللہ ہی ہر چیز کا پیدا کرنے والا ہے اور وہی ہر چیز کا نگراں ہے (۶۲)

उसके पास आकाशों और पृथ्वी के कोषों की कुंजियां हैं और जिन लोगों ने ईश्वर के आदेशों की अवज्ञा की वही हानि उठाने वाले हैं (63)

اس کے پاس آسمانوں اور زمین کے خزانوں کی کنجیاں ہیں اور جن لوگوں نے اللہ کے احکام کی نافرمانی کی وہی نقصان اٹھانے والے ہیں (۶۳)

कह दो ऐ मूर्खो! तुम मुझ से कहते हो कि मैं ईश्वर को छोड़ कर ईश्वर के और की (अर्थात तुम्हारे बुतो की) पूजा करने लगूं (64)

(कौन नहीं जानता कि) तुम्हारी ओर और उन ईशदूतों की ओर जो तुम से पहले हो चुके हैं यह वही भेजी जा चुकी है कि यदि तुमने अनेकेश्वर वाद किया तो तुम्हारा सब किया धरा व्यर्थ जाएगा और तुम हानी उठाने वालों में हो जाओगे (65)

کہدو کہ اے جاہلو! تم مجھ سے کہتے ہو کہ میں اللہ کو چھوڑ کر غیر اللہ کی (یعنی تمہارے بتوں کی) پوجا کرنے لگوں (۶۴)

(کون نہیں جانتا کہ) تمہاری طرف اور ان رسولوں کی طرف جو تم سے پہلے گزر چکے ہیں یہ وحی بھیجی جا چکی ہے کہ اگر تم نے شرک کیا تو تمہارا سب کیا دھرا اکارت ہو جائے گا اور تم نقصان اٹھانے والوں میں ہو جاؤ گے (۶۵)

अपितु ईश्वर ही की बन्दगी करो और उसके आज्ञाकारी बन्दों में सम्मिलित रहो (66)

بلکہ اللہ ہی کی بندگی کرو اور اس کے فرمانبردار بندوں میں شامل رہو (۶۶)

और अवज्ञाकारों ने ईश्वर को जाना नहीं जैसा जानना चाहिए था कि उस की क्या शक्ति है क्यामत के दिन सब पृथ्वी उसकी मुट्ठी में होगी और आकाश उसके दाहिने हाथ में लिपटे होंगे (अर्थात सब कुछ उस के सामने होगा) वह उन लोगों के अनेकेश्वर वाद से पवित्र और उच्च महिमा वाला है (67)

اور نافرمانوں نے اللہ کو جانا نہیں جیسا جاننا چاہیے تھا کہ اس کی کیا طاقت ہے قیامت کے دن تمام زمین اس کی مٹھی میں ہوگی اور آسمان اس کے داہنے ہاتھ میں لپٹے ہوں گے (یعنی سب کچھ اس کے سامنے ہوگا) وہ ان لوگوں کے شرک سے پاک اور عالی شان ہے (۶۷)

और उस दिन सूर फूंका जाएगा और सब अचेत होकर गिर जाएंगे जो आकाशों और पृथ्वी में हैं, निःसंदेह जो चाहा ईश्वर ने बिलकुल ऐसा ही होगा, ईश्वर का नियम इच्छा यही है, फिर दूसरी बार फूंका जाएगा तो तुरन्त सब खड़े होकर देखने लगेंगे (68) {11:108, 87:6-7}

اور اس روز صور پھونکا جائے گا اور سب بے ہوش ہو کر گر جائیں گے جو آسمانوں اور زمین میں ہیں یقیناً جو چاہا اللہ نے بالکل ایسا ہی ہوگا اللہ کا قانون مشیت یہی ہے پھر دوسری بار پھونکا جائے گا فوراً سب کھڑے ہو کر دیکھنے لگیں گے (۶۸) [۱۰۸:۱۱، ۸۷:۶، ۷]

और पृथ्वी अपने रब के प्रकाश से चमकने लगेगी (अर्थात हर वस्तु प्रकट हो जाएगी) और कर्मों की पुस्तक खोल कर रख दी जाएगी और सब ईशदूत और (दूसरे) साक्षी (जिन्होंने ईश्वर के संदेश बन्दों तक पहुंचाए होंगे) प्रस्तुत किए जाएंगे और उनमें न्याय के साथ निर्णय कर दिया जाएगा, और किसी पर अत्याचार न होगा (69)(75:16-19)

اور زمین اپنے رب کے نور سے چمکنے لگے گی (یعنی ہر چیز ظاہر ہو جائے گی) اور اعمال کی کتاب کھول کر رکھ دی جائیں گی اور تمام رسول اور (دوسرے) گواہ (جنہوں نے اللہ کے پیغام بندوں تک پہنچائے ہوں گے) حاضر کئے جائیں گے اور ان میں انصاف کے ساتھ فیصلہ کر دیا جائے گا اور کسی پر ظلم نہ ہوگا (۶۹) [۷۵:۱۶، ۱۹]

और जिस व्यक्ति ने जो कर्म किया होगा उसको उसका पूरा पूरा बदला मिल जाएगा और जो कुछ वह करते हैं उसको सब की सूचना है और नास्तिकों को दल दल बनाकर नर्क की ओर ले जाया जाएगा यहां तक कि जब वह उसके पास पहुंच जाएंगे और उसके द्वार खोल दिए जाएंगे उस समय नर्क के निरिक्षक उनसे कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम ही में से रसूल नहीं आए थे जो तुमको तुम्हारे रब की आयतें पढ़ पढ़ कर सुनाई हों और इस दिन के प्रस्तुत होने से डराते थे कहेंगे क्यों

اور جس شخص نے جو عمل کیا ہوگا اس کو اس کا پورا پورا بدلہ مل جائے گا اور جو کچھ وہ کرتے ہیں اُس کو سب کی خبر ہے (۷۰) اور کافروں کو گروہ گروہ بنا کر جہنم کی طرف لے جائیں گے یہاں تک کہ جب وہ اس کے پاس پہنچ جائیں گے اور اس کے دروازے کھول دیے جائیں گے اس وقت دوزخ کے داروغہ ان سے کہیں گے کہ کیا تمہارے پاس تم ہی میں سے رسول نہیں آئے تھے جو تم کو تمہارے پروردگار کی آیتیں پڑھ پڑھ کر سنائی ہوں اور اس دن کے پیش آنے سے

नही परन्तु काफिरों के प्रति कष्ट का आदेश पारित हो गया (71) {42:13, 44:13, 67:8-9, 25:27, 43:45}

ڈراتے تھے کہیں گے کیوں نہیں لیکن کافروں کے حق میں عذاب کا فرمان صادر ہوگیا (۷۱)[۴۲:۱۳، ۴۴:۱۳، ۶۷:۸،۹، ۲۵:۲۷، ۴۳:۴۵]

कहा जाएगा कि नर्क के द्वारों में प्रविष्ट हो जाओ सदैव इसमें रहोगे, घमण्ड करने वालो का बुरा स्थान है (72)

کہا جائے گا کہ دوزخ کے دروازوں میں داخل ہو جاؤ ہمیشہ اس میں رہو گے تکبر کرنے والوں کا بُرا ٹھکانا ہے (۷۲)

और जो लोग अपने रब की अवज्ञा से डरते रहे, उनको दल दल बनाकर स्वर्ग की ओर ले जाएंगे, यहां तक कि जब उसके पास पहुंच जाएंगे और उस के द्वार खोल दिए जाएंगे तो उसके निरिक्षक उनसे कहेंगे कि तुम पर सलाम शान्ति हो तुम बहुत अच्छे हो अब इसमें सदैव के लिए प्रविष्ट हो जाओ (73)

اور جو لوگ اپنے رب کی نافرمانی سے ڈرتے رہے ان کو گروہ گروہ بنا کر جنت کی طرف لے جائیں گے یہاں تک کہ جب اس کے پاس پہنچ جائیں گے اور اس کے دروازے کھول دیے جائیں گے تو اس کے داروغان سے کہیں گے کہ تم پر سلام تم بہت اچھے ہو اب اس میں ہمیشہ کے لئے داخل ہو جاؤ (۷۳)

वह कहेंगे कि ईश्वर का उपकार है जिसने अपने वचन को हमसे सच्चा कर दिया और हम को इस धरती का उत्तराधिकारी बना दिया हम स्वर्ग में जिस स्थान में चाहें रहें तो अच्छे कर्म करने वालो का बदला कैसा अच्छा है (74)

وہ کہیں گے کہ اللہ کا احسان ہے جس نے اپنے وعدے کو ہم سے سچا کر دیا اور ہم کو اس زمین کا وارث بنا دیا ہم جنت میں جس مکان میں چاہیں رہیں تو اچھے عمل کرنے والوں کا بدلہ بھی کیسا اچھا ہے (۷۴)

तुम फरिश्तों को देखोगे कि सिहांसन के चारो और घेरा बान्धे हुए है अर्थात उसके नियम का पालन कर रहे होंगे और अपने रब की प्रशंसा कर रहे है और उनमें न्याय के साथ निर्णय कर दिया जाएगा और कहा जाएगा कि हर प्रकार की प्रशंसा ईश्वर ही के लिए है जो सारे संसार का स्वामी है (75)

تم فرشتوں کو دیکھو گے کہ عرش کے گرد گھیرا باندھے ہوئے ہیں یعنی اس کے قانون کی پابندی کر رہے ہوں گے اور اپنے رب کی تعریف کے ساتھ تسبیح کر رہے ہیں اور ان میں انصاف کے ساتھ فیصلہ کر دیا جائے گا اور کہا جائے گا کہ ہر طرح کی تعریف اللہ ہی کے لئے ہے جو سارے جہان کا مالک ہے (۷۵)

सूरत अलमोमिन मक्की 40

سورت المومن مکی (۴۰)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

हा मीम, ऐ मुहम्मद स० (1) इस पुस्तक कुरआन का प्रेषण किया जाना ईश्वरकी ओर से है जो सब पर प्रमुत्वशाली और सब कुछ जानने वाला है (2)

حٰم اے محمدؐ (۱) اس کتاب (قرآن) کا نازل کیا جانا اللہ کی طرف سے ہے جو سب پر غالب اور سب کچھ جاننے والا ہے (۲)

जो अपराध क्षमा करने वाला है और पश्चाताप स्वीकार करने वाला और (पापीयों को) कठोर दण्ड देने वाला (सदाचारियों पर) कृपा दया व अनुकम्पा करने वाला है यहां तक कि सब गुण करने वाले को काफिर कहते हैं ईश्वर नहीं है (तो सुनो) निःसंदेह ईश्वर है उसी की ओर सब को लोटना है (3)

جو گناہ بخشنے والا ہے اور توبہ قبول کرنے والا اور (سرکشوں کو) سخت سزا دینے والا (نیکوں پر) فضل و کرم کرنے والا ہے حتیٰ کہ سب صفات رکھنے والے کو کافر کہتے ہیں اللہ نہیں ہے (تو سنو) یقیناً اللہ ہے اسی کی طرف سب کو واپس لوٹنا ہے (۳)

ईश्वर की आयतों में वही लोग झगड़ते हैं जो काफिर है तो उन लोगों का नगरों में चलना फिरना तुम्हें धोके में न डाले (4)

اللہ کی آیتوں میں وہی لوگ جھگڑتے ہیں جو کافر ہیں تو ان لوگوں کا شہروں میں چلنا پھرنا تمہیں دھوکے میں نہ ڈالے (۴)

उनसे पहले नूह की जाति और उनके बाद और समुदायें ने भी ईशदूतों को झुटलाया था (यही नही अपितु) हर समुदाय ने संकल्प किया था कि अपने रसूल को बन्दी बना कर (वध कर डाले) और सब ने अपने व्यर्थ (साधनों) से सत्य को दबाने का प्रयत्न किया (तो सीमा से बढ़ने पर) उनको मैंने अर्थात मेरे नियम ने पकड़ लिया सो देख लो मेरा कष्ट कैसा हुआ (5)

ان سے پہلے نوح کی قوم اور ان کے بعد اور امتوں نے بھی رسولوں کو جھٹلایا تھا (یہی نہیں بلکہ) ہر امت نے ارادہ کیا تھا کہ اپنے رسول کو گرفتار کر کے (قتل کر ڈالے) اور سب نے اپنے باطل (ذرائع) سے حق کو دبانے کی کوشش کی (تو حد سے آگے بڑھنے پر) ان کو میں نے یعنی میرے قانون نے پکڑ لیا سو دیکھ لو میرا عذاب کیسا ہوا (۵)

और इसी प्रकार सब काफिरों के विषय में तेरे ईश्वर का निर्णय पूरा होकर रहा (अतः आप घबराए नही आपका विरोध करने वाले के साथ भी यही होना है) कि वह सब नर्की है (6)

اور اسی طرح سب کافروں کے بارے میں تیرے رب کا فیصلہ پورا ہو کر رہا (اس لئے آپ گھبرائیں نہیں آپ کی مخالفت کرنے والوں کے ساتھ بھی یہی ہونا ہے) کہ وہ سب دوزخی ہیں (۶)

और जो ईश्वर के विधान का पालन करने वाले है

اور جو قانون الٰہی کی پابندی کرنے والے ہیں یعنی اللہ کی

अर्थात ईश्वर की पुस्तक का भार उठाने वाले हैं, अपना कर्तव्य पूरा करने वाले हैं और इसके पालन के लिए उसके निकट है वह अपने रब की प्रशंसा के साथ पवित्रता वर्णन करते रहते हैं, और जो उसके साथ आस्था रखते हैं आस्तिकों के लिए क्षमा मांगते रहते हैं कि ऐ हमारे रब तेरी कृपा और तेरा ज्ञान हर वस्तु को घेरे हुए है तो तेरे जिन बन्दों ने पश्चाताप की और तेरे सीधे मार्ग पर चलने लगे उनको क्षमा कर दे और नर्क के दण्ड से बचा ले (7)

کتاب کا وزن اٹھانے والے ہیں حق ادا کرنے والے ہیں اور اس کی پابندی کے لئے اس کے گرداگرد ہیں وہ اپنے رب کی تعریف کے ساتھ تسبیح کرتے رہتے ہیں اور جو اس کے ساتھ ایمان رکھتے ہیں مومنوں کے لئے بخشش مانگتے رہتے ہیں کہ اے ہمارے رب تیری رحمت اور تیرا علم ہر چیز کو گھیرے ہوئے ہے تو تیرے جن بندوں نے توبہ کی اور تیرے سیدھے رستہ پر چلنے لگے ان کو بخش دے اور دوزخ کے عذاب سے بچا لے (۷)

ऐ हमारे रब उनको सदैव रहने के स्वर्ग में प्रविष्ट कर जिसका तूने उनसे वचन किया है और जो उनके बाप दादा और उनकी पत्नीयों और उनकी सन्तान में से सदाचारी हो उनको भी क्षमा कर दे निःसंदेह तू प्रभुत्व शाली युक्ति वाला है (8)

اے ہمارے رب ان کو ہمیشہ رہنے کی جنت میں داخل کر جس کا تو نے ان سے وعدہ کیا ہے اور جو ان کے باپ دادا اور ان کی بیویوں اور ان کی اولاد میں سے نیک ہوں ان کو بھی بخش دے بے شک تو غالب حکمت والا ہے (۸)

और उनको कष्ट से बचाए रख और जिसको तूने उस दिन दण्ड से बचा लिया उस पर तूने बड़ी दया की (9)

اور ان کو عذاب سے بچائے رکھ اور جس کو تو نے اس روز عذاب سے بچا لیا اس پر تو نے بڑا رحم کیا (۹)

जिन लोगों ने कुफ्र किया उनसे क्यामत के दिन पुकार कर कह दिया जाएगा कि जब तुमको (दुनिया में) धर्म की ओर बुलाया जाता था और मानते नही थे तो ईश्वर इससे अधिक रूष्ट होता था जिस प्रकार आज तुम अपने से अप्रसन्न हो रहे हो(10)

جن لوگوں نے کفر کیا ان سے قیامت کے دن پکار کر کہہ دیا جائے گا کہ جب تم کو (دنیا میں) ایمان کی طرف بلایا جاتا تھا اور مانتے نہیں تھے تو اللہ اس سے زیادہ ناراض ہوتا تھا جس قدر آج تم اپنے سے بیزار ہو رہے ہو (۱۰)

वह कहेंगे ऐ हमारे परवरदिगार तूने दो बार हमें मौत की दशा में रखा और दो बार जीवित किया आज हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो क्या अब नर्क से निकलने की कोई राह है? (11) {2:28}

وہ کہیں گے اے ہمارے پروردگار تو نے دو مرتبہ ہمیں موت کی حالت میں رکھا اور دو مرتبہ زندہ کیا آج ہم اپنے گناہوں کا اعتراف کرتے ہیں تو کیا اب دوزخ سے نکلنے کی کوئی راہ ہے؟ (۱۱) [۲۸:۲]

यह इस लिए कि जब अकेले ईश्वर को पुकारा जाता था तो तुम इन्कार कर देते थे और यदि उस के साथ साझी नियुक्त किया जाता था तो स्वीकार कर लेते थे तो आदेश तो ईश्वर के लिए है जो सबसे उच्च बड़ा है (12) {39:45}

یہ اس لئے کہ جب تنہا اللہ کو پکارا جاتا تھا تو تم انکار کر دیتے تھے اور اگر اس کے ساتھ شریک مقرر کیا جاتا تھا تو تسلیم کر لیتے تھے تو حکم تو اللہ کے لئے ہے جو سب سے بلند بڑا ہے (۱۲) [۴۵:۳۹]

वही तो है जो तुमको अपने चिन्ह दिखाता है और तुम पर आकाश से (वर्षा की आकृति में) जीविका उतारता है, और शिक्षा तो वही पकड़ता है जो उसके धर्म की ओर वापस आ जाता है (13)

وہی تو ہے جو تم کو اپنی نشانیاں دکھاتا ہے اور تم پر آسمان سے (بارش کی شکل میں) رزق اتارتا ہے اور نصیحت تو وہی پکڑتا ہے جو اس کے دین کی طرف واپس آ جاتا ہے (۱۳)

अतः (ऐ मुसलमानों!) अपने धर्म को ईश्वर के लिए निर्मल करके उसी की पुकारो यद्यपि काफ़िर कितना ही बुरा माने (14)

لہٰذا (اے مسلمانو!) اپنے دین کو اللہ کے لئے خالص کر کے اسی کو پکارو اگرچہ کافر کتنا ہی بُرا مانیں (۱۴)

(उस ईश्वर को पुकारो जो) उच्च पदों वाला सिंहासन का स्वामी है वह अपने बन्दों में से जिन पर चाहता है अपने आदेश से वही भेजता है ताकि वह साक्षात्कार के दिन से डराए (15) {58:22; 16:2; 42:52;97:4}

(اس اللہ کو پکارو جو) بلند درجہ والا عرش کا مالک ہے وہ اپنے بندوں میں سے جن پر چاہتا ہے اپنے حکم سے وحی بھیجتا ہے تا کہ وہ ملاقات کے دن سے ڈرائے (۱۵) [۲۲:۵۸؛ ۲:۱۶؛ ۵۲:۴۲؛ ۴:۹۷]

जिस दिन वह निकल पड़ेंगे उनकी कोई वस्तु ईश्वर से गुप्त न रहेगी आज किसका राज्य है? ईश्वर का जो अकेला और अधिपति है (16)

جس دن وہ نکل پڑیں گے ان کی کوئی چیز اللہ سے مخفی نہ رہے گی آج کس کی بادشاہت ہے؟ اللہ کی جو اکیلا اور غالب ہے (۱۶)

आज के दिन हर व्यक्ति को उसके कर्मों का बदला दिया जाएगा आज अन्याय न होगा निःसंदेह ईश्वर शीघ्र लेखा जोखा लेने वाला है (17)

آج کے دن ہر شخص کو اس کے اعمال کا بدلہ دیا جائے گا آج بے انصافی نہ ہوگی بے شک اللہ جلد حساب لینے والا ہے (۱۷)

उनको निकट आने वाले दिन से डराओ जबकि ह्रदय शोक से भर कर गलों तक आ रहे होंगे (और) अत्याचारीयों का कोई मित्र नही होगा और न कोई अनुशांसक होगा जिसकी बात स्वीकार की जाए (18)

ان کو قریب آنے والے دن سے ڈراؤ جب کہ دل غم سے بھر کر گلوں تک آ رہے ہوں گے (اور) ظالموں کا کوئی دوست نہیں ہوگا اور نہ کوئی شفارشی ہوگا جس کی بات قبول کی جائے (۱۸)

वह आंखो के कपट को जानता है और जो बाते वक्षों में गुप्त है उनको भी जानता है (19)

وہ آنکھوں کی خیانت کو جانتا ہے اور جو باتیں سینوں میں پوشیدہ ہیں ان کو بھی جانتا ہے (۱۹)

वह न्याय के साथ निर्णय करता है और वह लोग ईश्वर को छोड़ कर जिन को पुकराते है वह किसी प्रकार का भी निर्णय नही कर सकते (इसलिए कि न वह सुनते है और न देखते है) निःसंदेह ईश्वर सुनने वाला और देखने वाला है (20)

وہ انصاف کے ساتھ فیصلے کرتا ہے اور وہ لوگ اللہ کو چھوڑ کر جن کو پکارتے ہیں وہ کسی طرح کا بھی فیصلہ نہیں کر سکتے (اس لئے کہ نہ وہ سنتے ہیں اور نہ دیکھتے ہیں) بے شک اللہ سننے والا اور دیکھنے والا ہے (۲۰)

क्या उन्होंने पृथ्वी में भ्रमण नही किया ताकि देख लेते कि जो लोग उनसे पहले थे उनका अन्त कैसा हुआ वह उनसे बल और पृथ्वी में चिन्ह बनाने की दृष्टि से कही बढ़कर थे तो ईश्वर ने उनको उनके पापों के कारण पकड़ लिया और उनको ईश्वर के दण्ड से बचाने वाला कोई भी न था (21)

کیا انہوں نے زمین میں سیر نہیں کی تاکہ دیکھ لیتے کہ جو لوگ ان سے پہلے تھے ان کا انجام کیسا ہوا وہ ان سے زور اور زمین میں نشان بنانے کے لحاظ سے کہیں بڑھ کر تھے تو اللہ نے ان کو ان کے گناہوں کے سبب پکڑ لیا اور ان کو اللہ کے عذاب سے بچانے والا کوئی بھی نہ تھا (۲۱)

यह इसलिए कि उनके पास रसूल खुली दलीले लाते थे तो वह इनकार करते थे सो ईश्वर ने उनको पकड़ लिया निःसंदेह वह शक्तिशाली और कठोर दण्ड देने वाला है (22)

یہ اس لئے کہ ان کے پاس رسول کھلی دلیلیں لاتے تھے تو وہ کفر کرتے تھے سو اللہ نے ان کو پکڑ لیا بے شک وہ طاقتور اور سخت عذاب دینے والا ہے (۲۲)

और हमने मूसा को अपने चिन्हों और तर्क देकर भेजा (23)

اور ہم نے موسیٰ کو اپنی نشانیاں اور دلیل دے کر بھیجا (۲۳)

फ़िरऔन हामान और कारून की ओर तो उन्होंने कहा कि यह तो जादूगर है झूठा (24)

فرعون ہامان اور قارون کی طرف تو انہوں نے کہا کہ یہ تو جادوگر ہے جھوٹا (۲۴)

फिर जब वह हमारी ओर से उनके पास सत्य लेकर आया तो (उसकी बात मानने के बजाए) कहने लगे कि जो लोग ईश्वर पर विश्वास लाकर इसके साथ हो गए है (उनके लिए हमारा वही नियम जारी करो जो शत्रुओं के लिए प्रचलित है) अर्थात उनके पुत्रों को वध कर डालो और उनकी स्त्रीयों (अर्थात पुत्रीयों) को जीवित रहने दो परन्तु काफ़िरों की चाल सफल होने वाली न थी (25)

پھر جب وہ ہماری طرف سے ان کے پاس حق لے کر آیا تو (اس کی بات ماننے کے بجائے) کہنے لگے کہ جو لوگ اللہ پر ایمان لا کر اس کے ساتھ ہو گئے ہیں (ان کے لئے ہمارا وہی قانون جاری کرو جو دشمنوں کے لئے جاری ہے) یعنی ان کے بیٹوں کو قتل کر ڈالو اور ان کی عورتوں (یعنی لڑکیوں) کو زندہ رہنے دو مگر کافروں کی چال کامیاب ہونے والی نہ تھی (۲۵)

और फ़िरऔन बोला कि मुझे छोड़ दो (अर्थात मुझे कोई रोकने वाला न आए) कि मैं मूसा को वध कर दूं और वह (अपने बचाओ के लिए) अपने रब को बुला ले मुझे भय है कि वह कही तुम्हारे धर्म को न बदल दे या देश में अशान्ति पैदा न कर दे(26)

اور فرعون بولا کہ مجھے چھوڑ دو (یعنی مجھے کوئی روکنے والا نہ آئے) کہ میں موسیٰ کو قتل کر دوں اور وہ (اپنے بچاؤ کے لئے) اپنے رب کو بلا لے مجھے ڈر ہے کہ وہ کہیں تمہارے دین کو نہ بدل دے یا ملک میں فساد پیدا نہ کر دے (۲۶)

मूसा ने कहा मैं हर घमण्डी के मूकाबले में जो लेखा जोखा के दिन पर विश्वास नही रखता अपने और तुम्हारे ईश्वर की शरण में आ गया हूं (27)

موسیٰ نے کہا میں ہر متکبر کے مقابلہ میں جو حساب کے دن پر ایمان نہیں رکھتا اپنے اور تمہارے رب کی پناہ میں آ گیا ہوں (۲۷)

और फ़िरऔन के लोगों मेंसे एक व्यक्ति जो अपने धर्म को गुप्त रखता था कहने लगा क्या तुम ऐसे व्यक्ति को वध करना चाहते हो जो कहता है कि मेरा रब ईश्वर है और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की ओर से चिन्ह भी लेकर आया है और यदि वह झूठा होगा तो उसके झूट की हानी उसी को होगी

اور فرعون کے لوگوں میں سے ایک شخص جو اپنے ایمان کو پوشیدہ رکھتا تھا کہنے لگا کیا تم ایسے شخص کو قتل کرنا چاہتے ہو جو کہتا ہے کہ میرا رب اللہ ہے اور وہ تمہارے پاس تمہارے رب کی طرف سے نشانیاں بھی لے کر آیا ہے اور اگر وہ جھوٹا ہوگا تو اس کے جھوٹ کا نقصان اسی کو ہوگا اگر سچا

और यदि सच्चा होगा तो कोई सा कष्ट जिस का तुमसे वचन करता है तुम पर आ कर रहेगा, निःसंदेह ईश्वर का नियम उस व्यक्ति को पथ प्रदर्शन नही देता जो सीमा से अधिक झूठा है (28)

ہوگا تو کوئی سا عذاب جس کا وہ تم سے وعدہ کرتا ہے تم پر آ کر رہے گا بے شک اللہ کا قانون اس شخص کو ہدایت نہیں دیتا جو حد سے زیادہ جھوٹا ہے(۲۸)

ऐ जाति आज तुम्हारा ही राज्य है और तुम ही देश में अधिपति हो (परन्तु) यदि हम पर ईश्वर का कष्ट आ गया तो उसके दूर करने के लिए हमारी सहायता कौन करेगा? फिरऔन ने कहा कि मैं तुम्हें वही बात सुझाता हूं जो मुझे सूझी है और वही मार्ग देता हूं जिसमें भलाई है (29)

اے قوم آج تمہاری ہی بادشاہت ہے اور تم ہی ملک میں غالب ہو (لیکن) اگر ہم پر اللہ کا عذاب آ گیا تو اس کے دور کرنے کے لئے ہماری مدد کون کرے گا؟ فرعون نے کہا کہ میں تمہیں وہی بات سمجھاتا ہوں جو مجھے سوجھی ہے اور وہی راہ دیتا ہوں جس میں بھلائی ہے(۲۹)

तो जो आस्तिक था कहने लगा कि ऐ जाति मुझे तुम्हारे प्रति भय है कि तुम पर और समुदायों की भांति के दिन का कष्ट आजाए (30) {36:14}

تو جو مومن تھا کہنے لگا کہ اے قوم مجھے تمہاری نسبت خوف ہے کہ تم پر اور امتوں کی طرح کے دن کا عذاب آ جائے (۳۰)[۳۶:۱۴]

(अर्थात) नूह की जाति और आद और समूद और जो लोग उनके बाद हुए हैं उनकी दशा की भांति (तुम्हारी दशा न हो जाए) और ईश्वर तो बन्दों पर अन्याय करने वाला नही (31)

(یعنی) نوح کی قوم اور عاد اور ثمود اور جو لوگ ان کے پیچھے ہوئے ہیں ان کے حال کی طرح (تمہارا حال نہ ہو جائے) اور اللہ تو بندوں پر ظلم کرنے والا نہیں (۳۱)

और ऐ मेरी जाति मुझे तुम्हारे प्रति पुकार के दिन (अर्थात क्यामत के दिन जब एक दूसरे को पुकारोगे) भय है (32)

اور اے میری قوم مجھے تمہاری نسبت پکار کے دن (یعنی قیامت کے دن جب ایک دوسرے کو پکارو گے) کا خوف ہے(۳۲)

यह वह दिन होगा जब तुम (कष्ट से बचने के लिए) पीठ फैर कर भागना चाहोगे, परन्तु उस दिन ईश्वर के कष्ट से बचाने वाला कोई न मिलेगा (सत्य है) जिसे ईश्वर का नियम (उसके दुषकर्मों के कारण से) मिथ्या मार्ग पर भटकने दे उसको सीधे मार्ग पर लाने वाला कोई नही (33)

یہ وہ دن ہوگا جب تم (عذاب سے بچنے کے لئے) پیٹھ پھیر کر بھاگنا چاہو گے مگر اس روز اللہ کے عذاب سے بچانے والا کوئی نہ ملے گا (سچ ہے) جسے اللہ کا قانون (اس کے بداعمالیوں کی وجہ سے) غلط رستے پر بھٹکنے دے اسے سیدھی راہ پر لانے والا کوئی نہیں (۳۳)

और पहले यूसुफ भी तुम्हारे पास चिन्ह लेकर आए थे तो जो वह लाए थे उससे तुम सदैव शंका ही में रहे यहां तक कि जब वह मृतक हो गए तो तुम कहने लगे कि ईश्वर अब उसके बाद कभी कोई रसूल नही भेजेगा इसी प्रकार ईश्वर का नियम उस व्यक्ति को भ्रष्ट कर देता है जो सीमा से निकल जाने वाला और शंका करने वाला हो (34)

اور پہلے یوسف بھی تمہارے پاس نشانیاں لے کر آئے تھے تو جو وہ لائے تھے اس سے تم ہمیشہ شک ہی میں رہے یہاں تک کہ جب وہ فوت ہو گئے تو تم کہنے لگے کہ اللہ اب اس کے بعد کبھی کوئی رسول نہیں بھیجے گا۔ اسی طرح اللہ کا قانون اس شخص کو گمراہ کر دیتا ہے جو حد سے نکل جانے والا اور شک کرنے والا ہو(۳۴)

जो लोग बिना इसके कि उनके पास कोई प्रमाण आया हो ईश्वर की आयतों में झगड़ते हैं यह गतिविधि ईश्वर को और धर्म वालों को कठोर ना पसन्द है इस प्रकार ईश्वर का नियम हर घमण्डी और उद्दण्ड के हृदय पर मोहर लगा देता है (ऐसे लोग विश्वास नही लाते) (35)

جو لوگ بغیر اس کے کہ ان کے پاس کوئی دلیل آئی ہو اللہ کی آیتوں میں جھگڑتے ہیں یہ طریقہ اللہ کو اور ایمان والوں کو سخت ناپسند ہے اسی طرح اللہ کا قانون ہر متکبر اور سرکش کے دل پر مہر لگا دیتا ہے (ایسے لوگ یمان نہیں لاتے)(۳۵)

और फिरऔन ने कहा कि हामान मेरे लिए एक ऊंचा भवन बनाओ ताकि मैं उस पर चढ़ कर मार्गों पर (चढ़कर) मूसा के ईश्वर को देख लूं और मैं तो उसे झूठा समझाता हूं इसी प्रकार फिरऔन को उस के दुषकर्म अच्छे लगे थे और वह सत्य से (इसलिए ही) रुक गया था, और फिरऔन की चाल व्यर्थ थी (37)

اور فرعون نے کہا کہ ہامان میرے لئے ایک اونچا محل بناؤ تاکہ میں اس پر چڑھ کر راستوں کا پتہ لگاؤں (۳۶)

یعنی آسمانوں کے رستوں پر (چڑھ کر) موسیٰ کے اللہ کو دیکھ لوں اور میں تو اسے جھوٹا سمجھتا ہوں اسی طرح فرعون کو اس کے اعمال بد اچھے لگے تھے اور وہ حق سے (اس لئے ہی) رک گیا تھا اور فرعون کی تدبیر تو بیکار تھی (۳۷)

और वह व्यक्ति जो आस्तिक था उस ने कहा था

اور وہ شخص جو مومن تھا اس نے کہا بھائیو! میرے پیچھے چلو

भाईयों! मेरे पीछे चलो मैं तुम्हें भलाई का मार्ग दिखाऊंगा (38) {36:20से27}
भाईयो! यह दुनिया का जीवन तो (कुछ दिन) लाभ उठाने की वस्तु है और जो परलोक है वही सदैव रहने का घर है (39)
जो बुरे कार्य करेगा उसको बदला भी वैसा ही मिलेगा और जो सत्कर्म करेगा नर हो या नारी और वह धर्म वादी भी होगा तो ऐसे लोग स्वर्ग में प्रविष्ट होंगे वहां उनको असंख्य जीविका मिलेगी (40)
भाईयों! यह क्या बात है कि मैं तो तुमको मुक्ति की ओर बुला रहा हूं और तुम मुझको (नर्क की) आग की ओर बुला रहे हो (41)
तुम मुझे इस लिए बुलाते हो कि ईश्वर के साथ कुफ्र करूं और उस वस्तु को उसका साझी नियुक्त करूं जिसका मुझे कुछ भी ज्ञान नही और मैं तुम्हें ईश्वर प्रभुत्व शाली और क्षमा करने वाले की ओर बुलाता हूं (42)
सत्य यह है कि जिन (देवताओं) की ओर तुम मुझे बुलाते हो उनको पुकराने का कोई लाभ न इस दुनिया में है और न परलोक में (वह बिलकुल विवश है कसी को कोई लाभ नही पहुंचा सकते) और हम सबको (एक दिन) ईश्वर ही कि ओर लोटना है और सीमा से निकल जाने वाले नर्की है (43)
जो बात मैं तुम से कहता हूं तुम उसे याद करोगे और मैं अपना कार्य ईश्वर को समर्पित करता हूं निःसंदेह ईश्वर बन्दों को देखने वाला है (44)
(अतः) उस आस्तिक पुरूष को ईश्वर ने फिरऔन वालो की दुष्टता की हानी से बचा लिया और फिरऔन के साथी स्वयं निकृष्टतम कष्ट से पीड़ित हो गए (45)
अर्थात (जो फिरऔन के पद चिन्हों पर चलेंगे उनके लिए अपने पापों के कारण इस दुनिया में किसी समय चैन नही आएगा) मानों हर समय प्रातः व सांय वह नर्क की अग्नि के सामने प्रस्तुत किए जाते रहेंगे मानसिक व्याकूलता में ग्रस्त रहेंगे, और जिस दिन क्यामत स्थापित होगी (आदेश होगा कि) फिरऔन का अनुकरण करने वालों को कठोर दण्ड में प्रविष्ट करो (46)
नोट- जो व्यक्ति अवज्ञाकारी होता है, उसको इस दुनिया के जीवन में कभी शान्ति नही रहती जो वह पाप करता है वह पाप हर समय उसके मन में रहते है, और वह हर समय उसके सांप बिच्छू की भांति डंक मारते रहते है, परन्तु शैतान ने उसको यही मार्ग और कर्म सुसज्जित करके दिखाएं है अतः उनको नही छोड़ता और करता रहता है, परन्तु जब भी वह कभी फुरसत में मनन करता है तो उन पापों के दण्ड से व्याकुल अवश्य हो जाता है परन्तु उसके ह्रदय पर मोहर लग चुकी है तो उनसे पश्चाताप नही करता और अन्तिम परिणाम अर्थात नर्क का अधिकारी हो जाता है,

हर दिन देखते है कि जो अवज्ञाकारी पापी होते है वह हर समय भयभीत बड़ी सुरक्षा में रहते है और उन पापों के कारण दण्ड पाते रहते है, और उनका वध भी होता रहता है यह है प्रातः व सायं कष्ट के सामने प्रस्तुत किया जाना और बुरे आदमियों पर हर

میں تمہیں بھلائی کا رستہ دکھاؤں گا (۳۸) [۲۷:۳۶ تا ۲۷]
بھائیو! یہ دنیا کی زندگی تو (چند روزہ) فائدہ اٹھانے کی چیز ہے اور جو آخرت ہے وہی ہمیشہ رہنے کا گھر ہے (۳۹)
جو بُرے کام کرے گا اس کو بدلہ بھی ویسا ہی ملے گا اور جو نیک کام کرے گا مرد ہو یا عورت اور وہ صاحب ایمان بھی ہوگا تو ایسے لوگ جنت میں داخل ہوں گے وہاں ان کو بے شمار رزق ملے گا (۴۰)
بھائیو! یہ کیا بات ہے کہ میں تو تم کو نجات کی طرف بلا رہا ہوں اور تم مجھ کو (دوزخ کی) آگ کی طرف بلا رہے ہو (۴۱)
تم مجھے اس لئے بلاتے ہو کہ اللہ کے ساتھ کفر کروں اور اس چیز کو اس کا شریک مقرر کروں جس کا مجھے کچھ بھی علم نہیں اور میں تمہیں اللہ غالب اور بخشنے والے کی طرف بلاتا ہوں (۴۲)
حق یہ ہے کہ جن (معبودوں) کی طرف تم مجھے بلاتے ہو ان کو پکارنے کا کوئی فائدہ نہ اس دنیا میں ہے اور نہ آخرت میں (وہ بالکل بے بس ہیں کسی کو کوئی فائدہ نہیں پہنچا سکتے) اور ہم سب کو (ایک دن) اللہ ہی کی طرف لوٹنا ہے اور حد سے نکل جانے والے دوزخی ہیں (۴۳)
جو بات میں تم سے کہتا ہوں تم اسے یاد کرو گے اور میں اپنا کام اللہ کے سپرد کرتا ہوں بے شک اللہ بندوں کو دیکھنے والا ہے (۴۴)
(غرض کہ) اس مردمومن کو اللہ نے آل فرعون کی بکاریوں کے شر سے بچالیا اور فرعون کے ساتھی خود بدترین عذاب میں مبتلا ہو گئے (۴۵)
یعنی (جو فرعون کے نقش قدم پر چلیں گے ان کے لئے اپنے گناہوں کے سبب اس دنیا میں کسی وقت قرار نہیں آئے گا) گویا ہر وقت صبح وشام وہ آتش جہنم کے سامنے پیش کیے جاتے رہیں گے ذہنی پریشانی میں مبتلا رہیں گے اور جس روز قیامت قائم ہوگی (حکم ہوگا کہ) فرعون کی پیروی کرنے والوں کو سخت عذاب میں داخل کرو (۴۶)
نوٹ:۔ جو آدمی نافرمان ہوتا ہے اس کو اس دنیا کی زندگی میں کبھی چین نہیں رہتا جو وہ گناہ کرتا ہے وہ گناہ ہر وقت اس کے ذہن میں رہتے ہیں اور وہ ہر وقت اس کے سانپ بچھو کی طرح ڈنک مارتے رہتے ہیں مگر شیطان نے اس کو یہی راستے اور کام آراستہ کر کے دکھائے ہیں اس لئے ان کو نہیں چھوڑتا اور کرتا رہتا ہے مگر جب بھی وہ کبھی فرصت میں غور کرتا ہے تو ان گناہوں کی سزا سے بے قرار ضرور ہو جاتا ہے مگر اس کے دل پر مہر لگ چکی ہے تو ان سے توبہ نہیں کرتا اور آخری انجام یعنی دوزخ کا حقدار ہو جاتا ہے۔

روز دیکھتے ہیں کہ جو نافرمان گناہ گار ہوتے ہیں وہ ہر وقت خوف زدہ بڑی حفاظت میں رہتے ہیں اور ان گناہوں کی وجہ سے سزا پاتے رہتے ہیں اور ان کا قتل بھی ہوتا رہتا ہے یہ ہے صبح وشام عذاب کے سامنے پیش کیا جانا اور

آدमी प्रातः सांय धिक्कार करता रहता है.

بُرے آدمیوں پر ہر آدمی صبح وشام لعنت کرتا رہتا ہے۔

और वह इस दुनिया के कष्ट के बाद जब नर्क में जाएंगे तो वहां आपस में झगड़ेंगे और हीन पद के लोग बड़े व्यक्ति से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे अधीन थे तो क्या तुम नर्क (के दण्ड) का कुछ अंश हमसे दूर कर सकते हो? (47)

اور وہ اس دنیا کے عذاب کے بعد جب دوزخ میں جائیں گے تو وہاں آپس میں جھگڑیں گے اور ادنیٰ درجے کے لوگ بڑے آدمیوں سے کہیں گے کہ ہم تو تمہارے تابع تھے تو کیا تم دوزخ (کے عذاب) کا کچھ حصہ ہم سے دور کر سکتے ہو؟ (۴۷)

बड़े व्यक्ति कहेंगे कि तुम भी और हम भी सब नर्क में हैं ईश्वर बन्दों का निर्णय कर चुका है (48)

بڑے آدمی کہیں گے کہ تم بھی اور ہم بھی سب دوزخ میں ہیں اللہ بندوں کا فیصلہ کر چکا ہے (۴۸)

और जो लोग आग में जल रहे होंगे वह नर्क के निरिक्षकों से कहेंगे कि अपने ईश्वर से प्रार्थना करो कि एक दिन तो हमसे कष्ट हल्का कर दे (49)

اور جو لوگ آگ میں جل رہے ہوں گے وہ دوزخ کے داروغوں سے کہیں گے کہ اپنے رب سے دعا کرو کہ ایک روز تو ہم سے عذاب ہلکا کر دے (۴۹)

वह कहेंगे कि क्या तुम्हारे पास रसूल चिन्ह लेकर नहीं आए थे वह कहेंगे क्यों नहीं? तो वह कहेंगे कि तुम ही प्रार्थना करो और नास्तिकों की प्रार्थना उस दिन व्यर्थ होगी (50)

وہ کہیں گے کہ کیا تمہارے پاس تمہارے رسول نشانیاں لے کر نہیں آئے تھے وہ کہیں گے کیوں نہیں؟ تو وہ کہیں گے کہ تم ہی دعا کرو اور کافروں کی دعا اس روز بے کار ہوگی (۵۰)

हम अपने ईशदूतों की और जो लोग धर्म वाले हैं उनकी दुनिया के जीवन में भी सहायता करते हैं और जिस दिन साक्षी खड़े होंगे (अर्थात क्यामत को) होंगे सहायता करेंगे (51)

ہم اپنے رسولوں کی اور جو لوگ ایمان لائے ہیں ان کی دنیا کی زندگی میں بھی مدد کرتے ہیں اور جس دن گواہ کھڑے ہوں گے (یعنی قیامت کو) مدد کریں گے (۵۱)

जिस दिन अत्याचारी को उनकी क्षमा याचना कुछ लाभ न देगी और उन के लिए धिक्कार और बुरा घर है (52)

جس دن ظالموں کو ان کی معذرت کچھ فائدہ نہ دے گی اور ان کے لئے لعنت اور بُرا گھر ہے (۵۲)

और हमने मूसा को शिक्षा की पुस्तक दी और बनी इसराईल को उस पुस्तक का उत्तराधिकारी बनाया (53)

اور ہم نے موسیٰ کو ہدایت نامہ دیا اور بنی اسرائیل کو اس کتاب کا وارث بنایا (۵۳)

बुद्धि वालों के लिए पथ प्रदर्शन और शिक्षा है (54)

عقل والوں کے لئے ہدایت اور نصیحت ہے (۵۴)

तो (अत्याचारियों के व्याकूल करने पर) धैर्य करो निःसंदेह ईश्वर का वचन सत्य है और अपने धर्म प्रचार के कार्य में केई त्रुटि यदि हो जाए जो सम्भाव है तो उसके दुष्परिणाम से सुरक्षित रहने के लिए ईश्वर के नियम में शरण लो और प्रातः और सांय अपने रब की प्रशन्सा के साथ पवित्रता ब्यान करते रहो (55)

تو (ظالموں کے پریشان کرنے پر) صبر کرو بے شک اللہ کا وعدہ سچا ہے اور اپنے تبلیغ دین کے کام میں کوئی کمی اگر ہو جائے جو ممکن ہے تو اس کے مضر اثرات سے محفوظ رہنے کے لئے قانون الٰہی میں حفاظت طلب کرو اور صبح اور شام اپنے رب کی تعریف کے ساتھ تسبیح کرتے رہو (۵۵)

जान दी दी हुई उसी की थी ☆ हक तो यह है कि हक अदा न हुआ

جان دی دی ہوئی اسی کی تھی ☆ حق تو یہ ہے کہ حق ادا نہ ہوا

जो लोग ईश्वर के अवतरित किए हुए तर्क (और प्रमाण) के बिना ईश्वर की आयतों में व्यर्थ विवाद करेंगे उनके हृदयों में बड़े बनने का घमण्ड है, परन्तु वह इस बड़ाई को नही पा सकते तो ऐ रसूल (उनकी दुष्टता से बचने के लिए) ईश्वर की शरण मांगों वह सब की सुनता और सब कुछ देख रहा है (56)

جو لوگ اللہ کی نازل کی ہوئی دلیل (اور سند) کے بغیر اللہ کی آیتوں میں فضول بحث کریں گے ان کے دلوں میں بڑے بننے کا غرور ہے۔ مگر وہ اس بڑائی کو نہیں پا سکتے تو اے رسول (ان کے شر سے بچنے کے لئے) اللہ کی پناہ مانگو وہ سب کی سنتا اور سب کچھ دیکھ رہا ہے (۵۶)

आकाशों और पृथ्वी का उत्पन्न करना इन्सानों के उत्पन्न करने से कही बड़ा काम है (जिस ईश्वर ने आकाशों और पृथ्वी को पैदा कर दिया वह इन्सानों को अधिक सरलता से पैदा कर सकता है) परन्तु अधिकांश लोग नही जानते (57)

آسمانوں اور زمین کا پیدا کرنا انسانوں کے پیدا کرنے سے کہیں بڑا کام ہے (جس اللہ نے آسمانوں اور زمین کو پیدا کر دیا وہ انسانوں کو زیادہ آسانی سے پیدا کر سکتا ہے) لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے (۵۷)

और (हर व्यक्ति जानता हे कि) अन्धा और आंखों वाला बराबर नही है (इसी प्रकार) वह ईमान वाले जो अच्छे कर्म कर रहें है उस व्यक्ति की भांति नही हो सकते जो दुष्ट है (कैसी स्पष्ट और सच्ची बात

اور (ہر شخص جانتا ہے کہ) اندھا اور آنکھوں والا برابر نہیں ہے (اسی طرح) وہ ایمان والے جو اچھے کام کر رہے ہیں اس شخص کی طرح نہیں ہو سکتے جو بدکار ہیں (کیسی صاف

اور سچی بات ہے لیکن) تم لوگ کم غور کرتے ہو (۵۸)
یہ حقیقت ہے کہ قیامت آکے رہے گی اس میں کوئی شک
نہیں لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے (۵۹)
اور تمہارے رب نے کہا مجھے پکارو میں تمہاری دعا قبول
کروں گا لیکن جو لوگ میری بندگی سے منہ موڑیں گے جلد
ہی جہنم میں ذلیل وخوار ہو کر داخل ہوں گے (۶۰)
وہ اللہ ہی تو ہے جس نے تمہارے لئے رات بنائی تاکہ اس
میں آرام کرو اور دن کو روشن بنایا (تاکہ اس میں کام کرو)
حقیقت یہ ہے کہ اللہ لوگوں پر بڑا فضل کرنے والا ہے مگر
اکثر لوگ اللہ کی فرمانبرداری نہیں کرتے (۶۱)
وہی تو اللہ ہے جو تمہارا رب اور تمام چیزوں کا پیدا کرنے
والا ہے اس پر بھی کافر کہتا ہے کہ اللہ نہیں (تو سنو) یقیناً اللہ
ہے تو (اے بتوں کے پجاریو!) تم کدھر بہکے جارہے ہو (۶۲)
اسی طرح وہ لوگ بھٹکتے رہتے ہیں جو اللہ کی آیتوں کا انکار
کرتے ہیں (۶۳)
وہ اللہ ہی تو ہے جس نے زمین کو تمہارے لئے ٹھہرنے کی
جگہ اور آسمانوں کو تمہارے اوپر (مضبوط) چھت بنایا اور
تمہاری صورتیں بنائیں اور صورتیں بھی اچھی بنائیں اور تمہیں
پاکیزہ چیزیں کھانے کو دیں وہی اللہ تمہارا پروردگار ہے پس
اللہ بابرکت ہے جو سارے جہانوں کا رب ہے (۶۴)
وہ ہمیشہ زندہ رہنے والا ہے اتنے پر بھی کافر کہتے ہیں اللہ
نہیں ہے کہو یقیناً اللہ ہے اس لئے اپنے دین کو اس کے
لئے خالص کر کے صرف اسی کو پکارو (اور یقین کرو کہ) ہر
طرح کی تعریف اللہ کے لئے ہے جو سارے جہان کا پالنہار ہے (۶۵)
(اے محمد آں سے) کہدو کہ مجھے اس بات کی ممانعت کی گئی
ہے کہ جن کو تم اللہ کے سوا پکارتے ہو ان کی پوجا کروں اور
میں ان کی کیوں پوجا کروں جب کہ میرے پاس میرے
رب (کی طرف) سے کھلی دلیل آچکی ہیں اور مجھ کو حکم یہ
ہوا ہے کہ رب العالمین کا فرمانبردار رہوں (۶۶)
وہی تو ہے جس نے تم کو (یعنی تمہاری اصل آدم کو) مٹی
سے پیدا کیا پھر تم کو نطفہ بنا کر پھر لوتھڑا بنا کر پھر تم کو نکالتا
ہے کہ تم بچے ہوتے ہو پھر تم اپنی جوانی کو پہنچتے ہو پھر
بوڑھے ہو جاتے ہو اور کوئی تم میں سے پہلے ہی مر جاتا ہے
کچھ کو چھوڑے رہتا ہے تاکہ تم موت کے وقت مقرر تک
پہنچ جاتے ہو شاید تم سمجھو (۶۷) [۱:۴]
اور وہی تو ہے جو جلاتا ہے اور مارتا ہے اور پھر جب وہ کسی
کام کا اس کے وقت مقرر پر کرنے کا ارادہ کرتا ہے تو اس
کے لئے کہدیتا ہے کہ ہو جا تو وہ ہو جاتا ہے (ایسا نہیں ہے کہ وہ چیز ضرورت کے
تحت بنائی جاتی ہے بلکہ وہ سب پہلے سے بنی ہوئی ہیں ان کا ظہور اللہ کے حکم سے

है परन्तु) तुम लोग कम मनन करते हो (58)
यह सत्य है कि क्यामत आके रहेगी उसमें कोई शंका नही परन्तु अधिकांश लोग नही जानते (59)
और तुम्हारे ईश्वर ने कहा मुझे पुकारों मैं तुम्हारी प्रार्थना स्वीकार करूंगा परन्तु जो लोग मेरी पूजा से मुख मोड़ेंगे शीघ्र ही नर्क में अपमानित होकर प्रविष्ट होंगे (60)
वह ईश्वर ही तो है जिसने तुम्हारे लिए रात्री बनाई ताकि उसमें विश्राम करो और दिन को उज्जवल बनाया (ताकि उसमें कार्य करो) सत्य यह है कि ईश्वर लोगों पर बड़ा दया करने वाला है, परन्तु अधिकांश लोग ईश्वर की आज्ञाकारी नही करते (61)
वही तो ईश्वर है जो तुम्हारा ईश्वर और सम्पूर्ण वस्तुओं का पैदा करने वाला है इस पर भी नास्तिक कहता है कि ईश्वर नहीं (तो सुनो) निःसंदेह ईश्वर है तो (ऐ मूर्तीयों के पूजारियों!) तुम किधर बहके जा रहे हो (62)
इसी प्रकार वह लोग बहकते रहते हैं जो ईश्वर की आयतों का इनकार करते हैं (63)
वह ईश्वर ही तो है जिसने पृथ्वी को तुम्हारे लिए ठहरने का स्थान और आकाश को तुम्हारे ऊपर (सुदृढ़) छत बनाया और तुम्हारी आकृतियां बनाई और आकृतियां भी अच्छी बनाई और तुम्हें पवित्र वस्तुएं खाने को दी वही ईश्वर तुम्हारा पालन हार है, पस ईश्वर सम्पन्नता वाला है जो सारे संसार का रब है (64)
वह सदैव जीवित रहने वाला है इतने पर भी काफिर कहते हैं ईश्वर नही है कहो निःसंदेह ईश्वर है अतः अपने धर्म को उसके लिए निर्मल करके केवल उसी को पुकारो (और विश्वास करो कि) हर प्रकार की प्रशब्सा ईश्वर के जिए है जो सारे संसार का पालनहार है (65)
(ऐ मुहम्मद स0 उनसे) कहदो कि मुझे इस बात से निषेध की गई है कि जिनको तुम ईश्वर के सिवा पुकारते हो उनकी पूजा करूं और मैं उनकी क्यों पूजा करूं जबकि मेरे पास मेरे रब (की ओर) से खुली दलील आ चुकी है और मुझको आदेश यह हुआ है कि विश्वपालक का आज्ञाकारी रहूं (66)
वही तो है जिसने तुमको (अर्थात तुम्हारे मूल आदम को) मिट्टी से पैदा किया फिर तुमको वीर्य बना कर फिर लोथड़ा बना कर फिर तुमको निकालता है कि तुम बच्चे होते हो फिर बूढ़े हो जाते हो और कोई तुममें से पहले ही मृतक हो जाता है कुछ को छोड़े रहता है ताकि तुम मृत्यू के निश्चित समय तक पहुंच जाते हो, कदाचित तुम समझो (67) {4:1}
और वही तो है जब वह किसी काम का उसके निश्चित समय पर करने का संकल्प करता है तो उसके लिए कह देता है कि होजा तो वह हो जाता है (ऐसा नही है कि वह वस्तु आवश्यक्ता के अधीन बनाई जाती है अपितु वह सब पहले से

बनी हुई है उनका प्रकट होना ईश्वर के आदेश से उसके समय पर होता है जो निश्चित कर रखा है। (68)

क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो ईश्वर की आयतों में झगड़ते हैं वह कहां भटक रहे हैं? (69)

जिन्होंने ईश्वर की पुस्तक को और उन सब पुस्तकों को झुठला दिया जिन्हें हमने अपने रसूलों को देकर भेजा था वह लोग इस अपराध का दण्ड पाएंगे उनको शीघ्र ही ज्ञात हो जाएगा (70)

जबकि उनकी गर्दनों में पट्टा और श्रृंखलाएं होंगी और आग की ओर घसीटे जाएंगे (71)

(अर्थात) खौलते हुए पानी में फिर आग में झोंक दिए जाएंगे (72)

फिर उनसे कहा जाएगा वह कहां हैं जिनको तुम (ईश्वर के) साझी बनाते थे (73)

(अर्थात) ईश्वर के अतिरिक्त, कहेंगे वह तो हमसे जाते रहे अपितु हम तो पहले किसी वस्तु को पुकारते ही नहीं थे इसी प्रकार ईश्वर का नियम काफिरों को पथ भ्रष्ट करता है (74)

(फिर उनसे कहा जाएगा) यह उस बात का बदला है कि पृथ्वी में सत्य का विरोध करके प्रसन्न हुआ करते थे और उस का दण्ड है कि तुम इतराया करते थे (75)

अब नर्क के द्वार में प्रविष्ट हो जाओ तुम्हें सदैव इसी में रहना है तो देखो घमण्डियों का कितना बुरा स्थान है (76)

तो (ऐ मुहम्मद स0 उनके इनकार करने और उनकी ओर से जो कष्ट आपको पहुंच रहें हैं) उन पर धैर्य करो ईश्वर का वचन सत्य है (कि उन पर कष्ट आएगा) यदि हम उसमें से तुमको कुछ दिखादें जिसका आपसे वचन करते हैं, या तुम्हारा जीवन का समय पूर्ण कर दें तो उनको हमारी ही ओर लौट कर आना है (77)

(ऐ मुहम्मद स0!) यह वास्तविक्ता है कि हमने तुम से पहले (बहुत से) रसूल भेजे हैं उनमें कुछ तो ऐसे हैं जिनके समाचार हमने तुमको बता दिए हैं और कुछ ऐसे हैं जिनके समाचार तुमसे नहीं बताए (और जो लोग चमत्कारों की मांग कर रहें हैं उनसे कहदो) किसी रसूल में यह शक्ति न थी कि ईश्वर की अनुमति के बिना अपनी ओर से चमत्कार दिखा देता फिर जब ईश्वर की ओर से आदेश आ पहुंचा (अर्थात विरोधियों पर कष्ट अवतरित हो गया) तो न्याय के साथ निर्णय कर दिया गया और मिथ्या के पूजारी हानी में पड़ गए (78)

ईश्वर ही तो है जिसने तुम्हारे (लाभ के) लिए मवेशी बनाए ताकि तुम उनमें से किसी पर सवार हो और किसी का मांस खाओ (79)

और तुम्हारे लिए उनमें (और भी) लाभ है और इस लिए भी कि (कहीं जाने की) तुम्हारे मन में जो इच्छा हो उन पर (चढ़कर वहां) पहुंच जाओ और

ان کے وقت پر ہوتا ہے جو مقرر کر رکھا ہے)(۶۸)

کیا تم نے ان لوگوں کو نہیں دیکھا جو اللہ کی آیتوں میں جھگڑتے ہیں یہ کہاں بھٹک رہے ہیں؟(۶۹)

جنہوں نے اللہ کی کتاب کو اور ان تمام کتابوں کو جھٹلا دیا جنہیں ہم نے اپنے رسولوں کو دے کر بھیجا تھا وہ لوگ (اس گناہ کی) سزا پائیں گے ان کو جلد ہی معلوم ہو جائے گا(۷۰)

جب کہ ان کی گردنوں میں طوق اور زنجیریں ہوں گی اور آگ کی طرف گھسیٹے جائیں گے(۷۱)

(یعنی کھولتے ہوئے پانی میں پھر آگ میں جھونک دیئے جائیں گے(۷۲)

پھر ان سے کہا جائے گا وہ کہاں ہیں جن کو تم (اللہ کے) شریک بناتے تھے(۷۳)

(یعنی) غیر اللہ کہیں گے وہ تو ہم سے جاتے رہے بلکہ ہم تو پہلے کسی چیز کو پکارتے ہی نہیں تھے اسی طرح اللہ کا قانون کافروں کو گمراہ کرتا ہے(۷۴)

(پھر ان سے کہا جائے گا) یہ اس بات کا بدلہ ہے کہ زمین میں حق کی مخالفت کر کے خوش ہوا کرتے تھے اور اس کی سزا ہے کہ تم اترایا کرتے تھے(۷۵)

اب جہنم کے دروازے میں داخل ہو جاؤ تمہیں ہمیشہ اسی میں رہنا ہے تو دیکھو متکبروں کا کتنا برا ٹھکانا ہے(۷۶)

تو (اے محمدؐ ان کے انکار کرنے اور ان کی طرف سے جو تکلیف آپ کو پہنچ رہی ہیں) ان پر صبر کرو اللہ کا وعدہ سچا ہے (کہ ان پر عذاب آئے گا) اگر ہم اس میں سے تم کو کچھ دکھا دیں جس کا آپ سے وعدہ کرتے ہیں یا تمہاری مدت حیات پوری کر دیں تو ان کو ہماری ہی طرف لوٹ کر آنا ہے(۷۷)

(اے محمدؐ!) یہ حقیقت ہے کہ ہم نے تم سے پہلے (بہت سے) رسول بھیجے ہیں ان میں کچھ تو ایسے ہیں جس کے حالات ہم نے تم کو بتا دئے ہیں اور کچھ ایسے ہیں جن کے حالات تم سے نہیں بتائے (اور جو لوگ معجزوں کی فرمائش کر رہے ہیں ان سے کہدو) کسی رسول میں یہ طاقت نہ تھی کہ اللہ کی اجازت کے بغیر اپنی طرف سے معجزے دکھا دیتا پھر جب اللہ کی طرف سے حکم آ پہنچا (یعنی منکروں پر عذاب نازل ہوگیا) تو انصاف کے ساتھ فیصلہ کر دیا گیا اور باطل پرست خسارے میں پڑ گئے(۷۸)

اللہ ہی تو ہے جس نے تمہارے (فائدے کے) لئے مویشی بنائے تا کہ تم ان میں سے کسی پر سوار ہو اور کسی کا گوشت کھاؤ(۷۹)

اور تمہارے لئے ان میں (اور بھی) فائدے ہیں اور اس لئے بھی کہ (کہیں جانے کی) تمہارے دل میں جو حاجت ہو ان پر (چڑھ کر وہاں) پہنچ جاؤ اور ان پر اور کشتیوں پر سوار

उन पर और नाव पर सवार होते हो (80)

ہو۔تے ہو(۸۰)

वह तो तुम्हें अपने चिन्ह दिखाता है तो तुम किन किन स्मृतियों का इनकार करोगे (81)

وہ تو تمہیں اپنی نشانیاں دکھاتا ہے تو تم کن کن نشانیوں کا انکار کرو گے(۸۱)

क्या उन लोगों ने पृथ्वी में भ्रमण नही किया ताकि देखते कि जो लोग उनसे पहले थे उनका अन्त क्या हुआ (यद्यपि) वह उनसे कहीं अधिक और शक्तिशाली और भूमि में चिन्ह बनाने की दृष्टि से बहुत बढ़कर थे तो जो कुछ वह करते थे वह उनके कुछ काम न आया (82)

کیاان لوگوں نے زمین میں سیر نہیں کی تا کہ دیکھتے کہ جو لوگ ان سے پہلے تھے ان کا انجام کیا ہوا (حالانکہ) وہ ان سے کہیں زیادہ اور طاقتور اور زمین میں نشانات بنانے کے اعتبار سے بہت بڑھ کر تھے تو جو کچھ وہ کرتے تھے وہ ان کے کچھ کام نہ آیا(۸۲)

और जब उनके पास उनके रसूल खुले चिन्ह लेकर आए तो जो ज्ञान (उनके विचार में) उनके पास था उस पर इतराने लगे और जिस वस्तु का उपहास उड़ाते थे उसने उनको आ घेरा (83)

اور جب ان کے پاس ان کے رسول کھلی نشانیاں لے کر آئے تو جو علم (ان کے خیال میں) ان کے پاس تھا اس پر اترانے لگے اور جس چیز کا مذاق اڑاتے تھے اس نے ان کو آگھیرا(۸۳)

फिर जब उन्होंने हमारा कष्ट देखा तो कहने लगे कि एक ईश्वर पर विश्वास लाए और हम उन देवताओं का इनकार करते है जिनको हम ईश्वर के साथ साझी किया करते थे (84)

پھر جب انہوں نے ہمارا عذاب دیکھا تو کہنے لگے کہ اللہ واحد پر ایمان لائے اور ہم ان معبودوں کا انکار کرتے ہیں جن کو ہم اللہ کے ساتھ شریک کیا کرتے تھے(۸۴)

परन्तु जब वह हमारा कष्ट देख चुके (उस समय) उनके विश्वास लाने ने उनको कुछ भी लाभ न दिया (यह ईश्वर का नियम है जो उसके बन्दों के विषय में चला आ रहा है) और वहां काफिर घाटे में पड़ कर रह गए (85)

لیکن جب وہ ہمارا عذاب دیکھ چکے (اس وقت) ان کے ایمان لانے نے ان کو کچھ بھی فائدہ نہ دیا (یہ اللہ کا قانون ہے جو اس کے بندوں کے بارے میں چلا آرہا ہے) اور وہاں کافر گھاٹے میں پڑ کر رہ گئے(۸۵)

सूरत हामीम सजदा मक्की 41

سورت حٰمٓ سجدہ مکی (۴۱)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

हामीम ऐ मुहम्मद स0 (1)

यह पुस्तक ईश्वर दयालु व कृपालु की ओर से उतरी है (2)

यह ऐसी पुस्तक है जिसकी आयतों का भाव खोल कर वर्णन कर दिया गया है (इसके स्पष्टिकरण के लिए किसी हदीस या रवायत की आवश्यक्ता नही है) यह अरबी भाषा का कुरआन उन लोगों के लिए है जो ज्ञान रखते है (3)

حٰمٓ اے محمدؐ (۱) یہ کتاب اللہ رحمٰن ورحیم کی طرف سے اتری ہے(۲)

یہ ایسی کتاب ہے جس کی آیتوں کا مفہوم کھول کر بیان کر دیا گیا ہے (اس کی وضاحت کے لئے کسی حدیث یا روایت کی ضرورت نہیں ہے) یہ عربی زبان کا قرآن ان لوگوں کے لئے ہے جو علم رکھتے ہیں(۳)

मंगल सूचना सुनाने वाला और सावधान करने वाला है फिर भी उनकी अधिक्ता ने मुख फेर लिया और वह सुनते ही नही (4)

خوش خبری سنانے والا اور خوف دلانے والا ہے پھر بھی ان کی اکثریت نے منھ پھیر لیا اور وہ سنتے ہی نہیں(۴)

और कहने लगे (ऐ मुहम्मद स0!) जिस वस्तु की ओर तुम हमें बुला रहे हो उससे हमारे हृदयों पर आवरण चढ़े हुए है और (तुम्हारी ओर से) हमारे कान बहरे हो गए है और हमारे और तुम्हारे मध्य (विरोध का) एक आवरण बाधक है तो तुम अपना कार्य करो हम अपना कार्य कर रहे है (5)

اور کہنے لگے (اے محمدؐ!) جس چیز کی طرف تم ہمیں بلا رہے ہو اس سے ہمارے دلوں پر غلاف چڑھے ہوئے ہیں اور (تمہاری طرف سے) ہمارے کان بہرے ہو گئے ہیں اور ہمارے اور تمہارے درمیان (مخالفت کا) ایک حجاب حائل ہے تو تم اپنا کام کرو ہم اپنا کام کر رہے ہیں(۵)

कहदो मैं मानव तो हूं परन्तु तुम्हारे जैसा नही हूं अन्तर यह है कि मुझ पर यह वही आती है ईश्वर ने मुझे चुन लिया है इस कार्य के लिए और निःसंदेह तुम्हारा जो ईश्वर है वह अकेला ईश्वर है तो सीधे उसी की ओर आकृष्ट रहो और उसी से क्षमा मांगों और अनेकेश्वर वादीयों के लिए खराबी है (6) {18:110}

کہدو میں بشر تو ہوں مگر تمہارے جیسا بشر نہیں ہوں فرق یہ ہے کہ مجھ پر یہ وحی آتی ہے اللہ نے مجھے چن لیا ہے اس کام کے لئے اور بے شک تمہارا جو اللہ ہے وہ اکیلا اللہ ہے تو سیدھے اسی کی طرف متوجہ رہو اور اسی سے مغفرت مانگو اور مشرکوں کے لئے خرابی ہے(۶)[۱۸:۱۱۰]

जो न तो दान देते है और न परलोक पर विश्वास रखते है (7)

جو نہ تو زکوٰۃ دیتے ہیں اور نہ آخرت پر ایمان رکھتے ہیں(۷)

जो लोग विश्वास लाए और भलाई के कर्म करने लगे उनके लिए फल है जो कभी समाप्त न होगा (8)

جولوگ ایمان لائے اور بھلائی کے کام کرنے لگے ان کے لئے اجر ہے جو کبھی ختم نہ ہوگا (۸)

(ऐ मुहम्मद स0 उनसे) पूछो क्या तुम उस ईश्वर का इन्कार करते हो जिसने पृथ्वी को दो दिन में बनाया (अर्थात दो चरणों में) और दूसरों को उसका प्रतिद्वन्द्वी बनाते हो देखो वही तो सारे संसार का स्वामी है (9)

(اے محمدؐ ان سے) پوچھو کیا تم اس اللہ کا انکار کرتے ہو جس نے زمین کو دو دن میں بنایا (یعنی دو دوروں میں) اور دوسروں کو اس کا مدمقابل بناتے ہو. دیکھو وہی تو سارے جہان کا مالک ہے (۹)

और उसी ने पृथ्वी में उसके ऊपर पर्वत बनाए और पृथ्वी में सम्पन्नता रखी और उसमें जीविका की सामग्री नियत कर दी यह सब चार दिन (अर्थात चार चरणों में) सब याचको के लिए एक सी जीविका बराबर महनत पर (10)

اور اسی نے زمین میں اس کے اوپر پہاڑ بنائے اور زمین میں برکت رکھی اور اس میں سامان معیشت مقرر کردیا یہ سب چار دن میں (یعنی چار دوروں میں) تمام طلب گاروں کے لئے یکساں روزی یکساں محنت پر (۱۰)

फिर वह आकाश की ओर आकृष्ट हुआ जो उस समय धुवां था तो उसने उससे और पृथ्वी से कहा दोनों आओ प्रसन्नता से या अप्रसन्नता से दोनों ने कहा हम आज्ञाकारों की भांति उपस्थित हैं (11)
फिर यह कार्य दो दिन में (अर्थात दो चरणों में) सात आकाश बनाए और हर आकाश में उसकी व्यवस्था का नियम बना दिया और आकाश दुनिया को उसने दीपों (अर्थात नक्षत्रों से) से सुसज्जित किया और उसे सुदृढ़ कर दिया यह सब कुछ एक शक्ति शाली और जानने वाले के निश्चित किए हुए अनुमान हैं (12) भाग्य {37:7}

پھر وہ آسمان کی طرف متوجہ ہوا جو اس وقت دھواں تھا تو اس نے اس سے اور زمین سے کہا دونوں آؤ خوشی سے یا ناخوشی سے دونوں نے کہا ہم فرمانبرداروں کی طرح حاضر ہیں (۱۱)
پھر یہ کام دو دن میں (یعنی دو دوروں میں) سات آسمان بنائے اور ہر آسمان میں اس کے نظام کا قانون بنادیا اور آسمان دنیا کو اس نے چراغوں (یعنی ستاروں) سے مزین کیا اور اسے محفوظ کردیا یہ سب کچھ ایک زبردست جاننے والے کے مقرر کئے ہوئے اندازے ہیں (۱۲) تقدیر [۳۷:۷]

(ऐ मुहम्मद स0 इतना समझाने पर भी) वह लोग नही मानते तो कह दो कि जैसी कड़क आद व समूद पर हुई थी उसी प्रकार की कड़क से मैं तुम्हें सावधान कर रहा हूं (13)

(اے محمدؐ اتنا سمجھانے پر بھی) وہ لوگ نہیں مانتے تو کہدو کہ جیسی کڑک عاد و ثمود پر ہوئی تھی اسی طرح کی کڑک سے میں تمہیں خبردار کررہا ہوں (۱۳)

और जब ईशदूत आए उनके सामने और जो हो चुके उनसे पहले और सब ने यही कहा कि ईश्वर के अतिरिक्त और किसी की पूजा न करो तो कहने लगे यदि हमारा रब चाहता तो (तुम्हारे स्थान) फरिश्ते उतार देता सो जो तुम देकर भेजे गए हो हम उसको नही मानते (14)

اور جب رسول آئے ان کے سامنے اور جو گزر چکے ان سے پہلے اور سب نے یہی کہا کہ اللہ کے سوا اور کسی کی عبادت نہ کرو تو کہنے لگے اگر ہمارا رب چاہتا تو (تمہاری جگہ) فرشتے اتار دیتا سو جو تم دے کر بھیجے گئے ہو ہم اس کو نہیں مانتے (۱۴)

जो आद थे व्यर्थ में देश में घमण्ड करने लगे और कहने लगे कि हमसे बढ़कर शक्ति में कौन है? क्या उन्होंने नही देखा कि ईश्वर जिसने उनको पैदा किया वह उनसे शक्ति में बहुत बढ़कर है और वह हमारी आयतों से इनकार करते रहें (15)
तो हमने भी उन पर अनिष्ट के दिनों में प्रचण्ड वायु चलाई (जिन दिनों में वह अनिष्ट के कर्म कर रहे थे) ताकि उनको दुनिया के जीवन में अपमान के कष्ट का स्वाद चखाएं और परलोक का दण्ड तो बहुत ही अपमानित करने वाला है और उस दिन उनको सहायता भी न मिलेगी (16)

جو عاد تھے وہ ناحق ملک میں غرور کرنے لگے اور کہنے لگے کہ ہم سے بڑھ کر قوت میں کون ہے؟ کیا انہوں نے نہیں دیکھا کہ اللہ جس نے ان کو پیدا کیا وہ ان سے قوت میں بہت بڑھ کر ہے اور وہ ہماری آیتوں سے انکار کرتے رہے (۱۵)
تو ہم نے بھی ان پر نحوست کے دنوں میں زور کی ہوا چلائی (جن دنوں میں وہ نحوست کا کام کر رہے تھے) تاکہ ان کو دنیا کی زندگی میں ذلت کے عذاب کا مزہ چکھائیں. اور آخرت کا عذاب تو بہت ہی ذلیل کرنے والا ہے اور اس روز ان کو مدد بھی نہ ملے گی (۱۶)

और जो समूद थे उनको हमने सीधा मार्ग दिखा दिया था, परन्तु उन्होंने पथ प्रदर्शन के बदले में अन्धा रहना पसन्द किया तो उनके कर्मों के दण्ड

اور جو ثمود تھے ان کو ہم نے سیدھا راستہ دکھا دیا تھا مگر انہوں نے ہدایت کے بدلے میں اندھا رہنا پسند کیا تو ان کے اعمال کی سزا میں کڑک نے ان کو آ پکڑا. اور وہ ذلت کا

عذاب تھا(۱۷)

में कड़क ने उनको पकड़ा और वह हीनता का दण्ड था (17)

اور جو ایمان لائے اور پرہیزگاری کرتے رہے ان کو ہم نے بچالیا(۱۸)

और जो विश्वास लाए और सदाचारिता करते रहे उन को हमने बचा लिया (18)

اور جس دن اللہ کے قانون کے دشمن دوزخ کی طرف چلائے جائیں گے تو ترتیب وار کر لئے جائیں گے(۱۹)

और जिस दिन ईश्वर के नियम के शत्रु नर्क की ओर चलाए जाएंगे तो क्रम से कर लिए जाएंगे(19)

یہاں تک کہ جب اس کے پاس پہنچ جائیں گے تو ان کے کان اور آنکھیں اور چمڑے (یعنی ان کے دوسرے اعضا) ان کے خلاف گواہی دیں گے ان کے اعمال کی جو وہ کرتے تھے(۲۰)

यहां तक कि जब उसके पास पहुंच जाएंगे तो उन के कान और आंखे और चमड़े (अर्थात उनके दूसरे अंग) उनके विरुद्ध साक्ष्य देंगे उनके कर्मों की जो वह करते थे (20)

وہ اپنی کھالوں سے کہیں گے کہ تم نے ہمارے خلاف کیوں شہادت دی؟ وہ جواب دیں گے ہمیں اس اللہ نے گویائی دی جس نے ہر شئے کو گویائی دی ہے اور اسی نے تمہیں پہلی بار پیدا کیا تھا اور اسی کی طرف تم لوٹائے جاؤ گے(۲۱)

वह अपनी खालों से कहेंगे कि तुम ने हमारे विरुद्ध क्यों साक्ष्य दी? वह कहेंगे हमे उस ईश्वर ने वाक शक्ति दी जिसने हर वस्तु को वाकशक्ति दी है और उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया था और उसी की ओर तुम लोटाए जाओगे (21)

تم گناہ کرتے وقت جب چھپتے تھے تو تمہیں یہ گمان نہیں ہوتا تھا کہ (قیامت کے روز) تمہارے کان تمہاری آنکھیں اور تمہاری کھالیں تمہارے خلاف گواہی دیں گی بلکہ تم نے تو یہ سمجھ رکھا تھا کہ تمہارے بہت سے اعمال کی اللہ کو خبر ہی نہ ہوگی(۲۲)

तुम पाप करते समय जब छुपते थे तो तुम्हें यह ध्यान नही होता था कि (क्यामत के दिन) तुम्हारे कान तुम्हारी आंखे और तुम्हारी खालें तुम्हारे विरुद्ध साक्ष्य देंगे अपितु तुमने तो यह समझ रखा था कि तुम्हारे बहुत से कर्मों की ईश्वर को सूचना ही न होगी (22)

تمہاری یہی بدگمانی جو تم نے اپنے پروردگار کے بارے میں کی تھی تمہیں لے ڈوبی اور تم خسارہ پانے والوں میں ہوگئے(۲۳)

तुम्हारा यही भ्रम जो तुमने अपने ईश्वर के विषय में किया तुम्हें ले डूबा और तुम घाटा पाने वालों में हो गए (23)

اب وہ صبر کریں (یا نہ کریں ہر حال میں) آگ ہی ان کا ٹھکانہ ہے اور اگر (اپنے گناہوں سے) توبہ بھی کریں تو ان کی توبہ قبول نہ کی جائے گی(۲۴)

अब वह धैर्य करें (या न करें हर दशा में) आग ही उनका स्थान है और यदि (अपने पापों से) पश्चाताप भी करें तो उनका पश्चाताप स्वीकार न किया जाएगा (24)

اور وہ لوگ ہمارے قانون کی جو مخالفت کرتے تھے اس وجہ سے ان پر ہم نے ایسے ساتھی مسلط کردئے تھے یا انہوں نے خود بنالئے تھے کہ وہ جو اعمال ظاہرا اپنے ہاتھوں سے کرتے تھے یا چھپ کر کرتے تھے اُن کو اُن ساتھیوں نے خوشنما کرکے دکھائے تھے آخر ان پر بھی وہی بات صادق آئی جو ان سے پہلے گزرے ہوئے جنوں اور انسانوں پر اللہ کے عذاب کا وعدہ پورا ہوگیا تھا بے شک وہ نقصان اٹھانے والے ہیں(۲۵)

और वह लोग हमारे नियमों की जो अवहेलना करते थे इस कारण उन पर हमने ऐसे साथी नियुक्ति कर दिए थे या उन्होंने स्वयं बना लिए थे कि वह जो कर्म प्रकट करते थे या छुपकर करते थे उनको उन साथियों ने सुसज्जित कर दिखाए थे अन्ततः उन पर भी वही बात पूरी हो गई जो उनसे पहले होने वाले जिन्नों और इन्सानों पर ईश्वर के दण्ड का वचन पूरा हो गया था, निःसंदेह वह हानी उठाने वाले हैं (25)

اور جن لوگوں نے کفر کی راہ اختیار کر رکھی ہے وہ کہتے ہیں کہ اس قرآن کو نہ سنو اور (جب پڑھا جائے تو) شور مچادیا کرو تاکہ تم غالب رہو(۲۶)

और जिन लोगों ने कुफ्र का मार्ग स्वीकार कर रखा है वह कहते हैं कि इस कुरआन को न सुनों और (जब पढ़ा जाए तो) कोलाहल मचा दिया करो ताकि तुम प्रभुत्व शाली रहो (26)

سو ہم بھی کافروں کو سخت عذاب کے مزے چکھائیں گے اور ان کے بُرے عملوں کی جو وہ کرتے تھے سزا دیں گے(۲۷)

सो हम भी काफिरों को कठोर दण्ड के स्वाद चखाएंगे और उनके बुरे कर्मों की जो वह करते थे दण्ड देंगे (27)

یہ اللہ کے دشمنوں کا بدلہ ہے (یعنی دوزخ کی) آگ اس میں وہ ہمیشہ رہیں گے یہ اس جرم کی سزا ہے کہ وہ ہماری آیتوں کا انکار کرتے تھے(۲۸)

यह ईश्वर के शत्रुओं का बदला है (अर्थात नर्क की) आग उसमें वह सदैव रहेंगे यह उस अपराध का दण्ड है कि वह हमारी आयतों का इनकार करते थे (28)

जो लोग अपने कुफ्र के कारण नर्क में जाएंगे वह कहेंगे ऐ हमारे रब जिन्नों और इन्सानों में से जिन्होंने हमें पथ भ्रष्ट किया था उनको हमें दिखा दे हम उन दोनों को अपने पगों तले रोंद डालें ताकि वह अच्छी प्रकार अपमानित हों (29)

जिन लोगों ने प्रण किया कि ईश्वर ही हमारा रब है फिर अपने प्रण पर दृढ़पग रहे उन पर फरिश्ते अवतरित होंगे (और कहेंगे) कि न भय करो और न दुख करो और स्वर्ग की मंगल सूचना से प्रसन्न हो जाओ जिसका तुमसे वचन किया जाता है (30)

हम दुनिया के जीवन में तुम्हारे सहाक थे और परलोक में भी (तुम्हारे मित्र होंगे) वहां जिस (प्रसाद) को तुम्हारा मन चाहेगा वह तुम्हारे लिए उपस्थित होगी और जो वस्तु तुम मांगोगे वह तुम्हारे सामने प्रस्तुत की जाएगी (31)

यह क्षमा करने वाले कृपालु की ओर से तुम्हारी आतिथ्य है (32)

और उससे उत्तम किस की बात हो सकती है जो (लोगों को) ईश्वर की ओर बुलाए और स्वयं भी शुभ कर्म करे और प्रण करे कि मैं मुसलमान हूं (33)

भलाई और बुराई बराबर नही हो सकती बुराई का भलाई से उत्तर दो (यदि ऐसा करोगे तो तुम देखोगे कि) तुम्हारे साथ जिसकी शत्रुता थी वह तुम्हारा घनिष्ट मित्र बन गया है (34) {80:1-2, 28:84, 23:96, 42:40}

और यह बात उनही लोगों को प्राप्त होती है जो धैर्यवान होते है, और उन ही को मिलती है जो बड़े भाग्य वाले होते है (35)

यदि शैतान की ओर से तुम्हारे हृदय में कोई वस्वसा उत्पन्न हो तो ईश्वर की शरणर मांग लिया करो वह सब की सुनता और सब जानता है (36)

ईश्वर की प्रभुता के चिन्हों में से रात दिन सूर्य और चान्द है (परन्तु यह ईश्वर नही है) अतः यदि तुम को वाद है कि तुम केवल ईश्वर ही की वन्दगी करते हो तो न सूर्य को सजदा करो न चन्द्रमा को अपितु उस ईश्वर को सजदा करो जिसने उन्हें बनाया है (37)

यदि वह लोग फिर भी इन्कार करें तो (ईश्वर को भी इनकी चिन्ता नही है) जो तुम्हारे ईश्वर के निकट है (अर्थात फरिश्ते और सदाचारी लोग) वह रात दिन उसकी पवित्रता का वर्णन करते रहते है और (कभी) थकते नही (38)

और उसकी प्रभुत्ता के चिन्हों में से एक यह भी है कि तुम देखते हो कि पृथ्वी सोई (और शुष्क) पड़ी हुई है फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते है तो हरित होकर फूलने लगती है (अब मनन करो) जिस ईश्वर ने उस पृथ्वी को जीवित किया वह मृतकों को भी पुनः जीवित कर देगा निःसंदेह वह हर वस्तु के अनुमान निश्चित करने वाला है (39)

जो लोग हमारी आयात में उलट फैर करते है वह

جو لوگ اپنے کفر کی وجہ سے دوزخ میں جائیں گے وہ کہیں گے اے ہمارے رب جنوں اورانسانوں میں سے جنہوں نے ہمیں گمراہ کیا تھا ان کو ہمیں دکھا دے ہم ان دونوں کو اپنے پاؤں تلے روند ڈالیں تاکہ وہ خوب ذلیل ہوں (۲۹)

جن لوگوں نے اقرار کیا کہ اللہ ہی ہمارا رب ہے پھر اپنے اقرار پر ثابت قدم رہے ان پر فرشتے نازل ہوں گے (اور کہیں گے) کہ نہ خوف کرو اور نہ غم کرو اور اس جنت کی بشارت سے خوش ہو جاؤ جس کا تم سے وعدہ کیا جاتا ہے (۳۰)

ہم دنیا کی زندگی میں تمہارے مددگار تھے اور آخرت میں بھی (تمہارے رفیق ہوں گے) وہاں جس (نعمت) کو تمہارا جی چاہے گا وہ تمہارے لئے موجود ہوگی اور جو چیز تم طلب کرو گے وہ تمہارے سامنے پیش کی جائے گی (۳۱)

یہ بخشنے والے مہربان کی طرف سے تمہاری مہمانی ہے (۳۲)

اور اس سے بہتر کس کی بات ہو سکتی ہے جو (لوگوں کو) اللہ کی طرف بلائے اور خود بھی بھلائی کے کام کرے اور اقرار کرے کہ میں مسلمان ہوں (۳۳)

بھلائی اور برائی برابر نہیں ہو سکتی برائی کا بھلائی سے جواب دو (اگر ایسا کرو گے تو تم دیکھو گے کہ) تمہارے ساتھ جس کی عداوت تھی وہ تمہارا جگری دوست بن گیا ہے (۳۴)

[۴۰:۴۲،۹۶:۲۳،۸۴:۲۸،۲-۱:۸۰]

اور یہ بات ان ہی لوگوں کو حاصل ہوتی ہے جو صبر کرنے والے ہیں اور ان ہی کو ملتی ہیں جو بڑے صاحب نصیب ہوتے ہیں (۳۵)

اگر شیطان کی طرف سے تمہارے دل میں کوئی وسوسہ پیدا ہو تو اللہ کی پناہ مانگ لیا کرو وہ سب کی سنتا اور سب کچھ جانتا ہے (۳۶)

اللہ کی قدرت کی نشانیوں میں سے رات دن سورج اور چاند ہیں (مگر یہ اللہ نہیں ہیں) لہٰذا اگر تم کو دعویٰ ہے کہ تم صرف اللہ ہی کی بندگی کرتے ہو تو نہ سورج کو سجدہ کرو نہ چاند کو بلکہ اس اللہ کو سجدہ کرو جس نے انہیں بنایا ہے (۳۷)

اگر وہ لوگ پھر بھی انکار کریں تو (اللہ کو بھی ان کی پروا نہیں ہے) جو تمہارے پروردگار کے نزدیک ہیں (یعنی فرشتے اور نیک لوگ) وہ رات دن اس کی تسبیح کرتے رہتے ہیں اور (کبھی) تھکتے نہیں (۳۸)

اور اس کی قدرت کی نشانیوں میں سے ایک یہ بھی ہے کہ تم دیکھتے ہو کہ زمین سوئی (اور خشک) پڑی ہوئی ہے پھر جب ہم اس پر پانی برسا دیتے ہیں تو سرسبز ہو کر پھولنے لگتی ہے (اب غور کرو) جس اللہ نے اس زمین کو زندہ کیا وہ مردوں کو بھی دوبارہ زندہ کر دے گا یقیناً وہ ہر چیز کے انداز ے مقرر کرنے والا ہے (۳۹)

جو لوگ ہماری آیات میں الٹ پھیر کرتے ہیں وہ ہم سے

हमसे छुपे हुए नही हैं, भला जो व्यक्ति नर्क में डाला जाए वह उत्तम है या वह जो क्यामत के दिन सुख चैन से आए? जो चाहो सो कर लो जो कुछ तुम करते हो वह उसको देख रहा है (40) {5:22से47}

چھپے ہوئے نہیں ہیں بھلا جو شخص دوزخ میں ڈالا جائے وہ بہتر ہے یا وہ جو قیامت کے دن امن وامان سے آئے؟ جو چاہو سو کرلو جو کچھ تم کرتے ہو وہ اس کو دیکھ رہا ہے(۴۰) [۵:۲۲تا۴۷]

जिन लोगों ने शिक्षा (पुस्तक) को न माना जब वह उनके पास आई और यह तो एक उच्च पद वाली पुस्तक है (41)

جن لوگوں نے نصیحت (کتاب) کو نہ ماناجب وہ ان کے پاس آئی اور یہ تو ایک عالی رتبہ کتاب ہے(۴۱)

इस कुरआन पर मिथ्या नही आ सकता न प्रकट न गुप्त चूंकि यह सुरक्षा के मध्य है और यह ज्ञानी और श्रेष्ठता वाले ईश्वर की उतारी हुई है (42)

اس قرآن پر باطل نہیں آسکتا نہ ظاہر نہ پوشیدہ چونکہ یہ حفاظت کے درمیان ہے اور یہ دانا اور خوبیوں والے اللہ کی اتاری ہوئی ہے(۴۲)

(ऐ मुहम्मद स0!) तुमसे भी वही बात कहते हैं वह लोग जो तुमसे पहले रसूलों से कही गई थी (तो उनकी बातों पर धैर्य करो) तुम्हारा रब बड़ा क्षमा करने वाला है और दुख देने वाला कष्ट भी देने वाला है (43)

(اے محمدؐ) تم سے بھی وہی بات کہتے ہیں وہ لوگ جو تم سے پہلے رسولوں سے کہی گئیں تھی (تو ان کی باتوں پر صبر کرو) تمہارا رب بڑا درگزر کرنے والا ہے اور دردناک عذاب بھی دینے والا ہے(۴۳)

यदि हम इस कुरआन को (अरबी के स्थान पर) किसी अजमी भाषा का कुरआन बनाते तो (अरब वाले) कहते कि इसकी आयते (हमारी भाषा में) खोल कर क्यों वर्णन नही की गई (यह क्या विचित्र बात है) कि कुरआन की भाषा अजमी है और हमारी भाषा अरबी है उनसे कहो यह कुरआन विश्वास लाने वालों के लिए तो पथ प्रदर्शन और आरोग्य है, परन्तु जो लोग विश्वास नही लाते उनके लिए यह कानों की डाट आंखों की पट्टी है मानों वह दूर से पुकारे जाते हैं (44) {42:7}

اگر ہم اس قرآن کو (عربی کے بجائے) کسی عجمی زبان کا قرآن بناتے تو (اہل عرب) کہتے کہ اس کی آیتیں (ہماری زبان میں) کھول کر کیوں بیان نہیں کی گئیں (یہ کیا عجیب بات ہے) کہ قرآن کی زبان عجمی ہے اور ہماری زبان عربی ہے ان سے کہو یہ قرآن ایمان لانے والوں کے لئے تو ہدایت اور شفا ہے مگر جو لوگ ایمان نہیں لاتے ان کے لئے یہ کانوں کی ڈاٹ اور آنکھوں کی پٹی ہے گویا وہ (دور سے پکارے جاتے ہیں)(۴۴)[۴۲:۷]

और हमने मूसा को पुस्तक दी तो मत भेद किया गया और यदि तुम्हारे ईश्वर की ओर से एक बात पहले न ठहर चुकी होती तो उनमें निर्णय कर दिया जाता और वह इस कुरआन से भ्रम में उलझ रहें हैं (45)

اور ہم نے موسیٰ کو کتاب دی تو اختلاف کیا گیا اور اگر تمہارے پروردگار کی طرف سے ایک بات پہلے نہ ٹھہر چکی ہوتی تو ان میں فیصلہ کر دیا جاتا اور وہ اس قرآن سے شک میں الجھ رہے ہیں(۴۵)

जो सत्कर्म करेगा तो अपने लिए और जो बुरे कर्म करेगा तो उनकी हानी उसी को होगी और तुम्हारा ईश्वर तो बन्दों पर अत्याचार करने वाला नही है (46)

جو نیک کام کرے گا تو اپنے لئے اور جو بُرے کام کرے گا تو ان کا نقصان اسی کو ہوگا اور تمہارا رب تو بندوں پر ظلم کرنے والا نہیں ہے(۴۶)

इलेही युरद्दू खण्ड 25

اِلَیہِ یُرَد۔پارہ(۲۵)

क्यामत का ज्ञान केवल ईश्वर ही को है उसके ज्ञान (और संकल्प) बिना न तो कोई फल अपने अंकुर से निकलता है न कोई नारी गर्भवती होती है, और न जनती है और जिस दिन वह अनेकेश्वर वादियों को पुकारेगा (और पूछेगा) कहां है मेरे वह साझी (जिन्हें सहायता के लिए पुकारते थे) तो वह कहेंगे कि हम तुझ से प्रार्थना करते हैं कि हममें से तो कोई इसका साक्षी नही (47)

قیامت کا علم صرف اللہ ہی کو ہے اس کے علم (اور ارادے) بغیر نہ تو کوئی پھل اپنے شگوفے سے نکلتا ہے نہ کوئی مادہ حاملہ ہوتی ہے اور نہ جنتی ہے اور جس روز وہ مشرکوں کو پکارے گا (اور پوچھے گا) کہاں ہیں میرے وہ شریک (جنہیں مدد کے لئے پکارتے تھے) تو وہ کہیں گے کہ ہم تجھ سے عرض کرتے ہیں کہ ہم میں سے تو کوئی اس کا گواہ نہیں(۴۷)

(उस दिन) वह सारे देवता उनसे लुप्त हो जाएंगे जिन्हें वह पुकारा करते थे और वह विश्वास कर लेंगे अब उनके लिए कोई बचाओ का स्थान नही (48)

(اس روز) وہ سارے معبود ان سے غائب ہوجائیں گے جنہیں وہ پکارا کرتے تھے اور وہ یقین کرلیں گے اب ان کے لئے کوئی جائے پناہ نہیں(۴۸)

इन्सान भलाई की प्रार्थना करता तो थकता नही

انسان بھلائی کی دعائیں کرتا تو تھکتا نہیں اور اگر تکلیف پہنچ

और यदि कष्ट पहुंच जाता है तो निराश हो जाता है और आस तोड़ बैठता है (49)
और जब कष्ट के बाद हम उसे अपनी कृपा का स्वाद चखाते हैं तो कहता है कि मैं इसका अधिकारी हूं और मैं नहीं समझता कि क्यामत आएगी और यदि मैं अपने रब की ओर लौटाया गया तो तो वहां भी मेरे आनन्द होंगे पस काफ़िर जो कर्म किया करते हैं वह हम अवश्य उनको जताएंगे और उनको कठोर दण्ड का स्वाद चखाएंगे (50)
और जब हम इन्सान पर दया करते हैं तो मुख मोड़ लेता है और पहलू फैर कर चल देता है और जब उस को कष्ट पहुंचता है तो लम्बी लम्बी प्रार्थनाएं करने लगता है (51)
(ऐ मुहम्मद स0 उनसे) कहो क्या तुमने कभी इस बात पर विचार किया है कि यदि यह (कुरआन) ईश्वर की ओर से हो और तुम इसके मानने से इनकार कर रहे हो (तो यह कितनी बड़ी पथ भ्रष्टता है) तो उस व्यक्ति से बढ़ कर कौन भ्रष्ट हो सकता है जो इसके विरोध में सीमा से आगे निकल गया हो (52)

جاتی ہے تو نا امید ہو جاتا ہے اور آس توڑ بیٹھتا ہے(۴۹)
اور جب مصیبت کے بعد ہم اسے اپنی رحمت کا مزہ چکھاتے ہیں تو کہتا ہے کہ میں اس کا مستحق ہوں اور میں نہیں سمجھتا کہ قیامت برپا ہوگی اور اگر میں اپنے رب کی طرف لوٹایا گیا تو وہاں بھی میرے مزے ہوں گے پس کافر جو عمل کیا کرتے ہیں وہ ہم ضرور ان کو جتائیں گے اور ان کو سخت عذاب کا مزہ چکھائیں گے(۵۰)
اور جب ہم انسان پر کرم کرتے ہیں تو منہ موڑ لیتا ہے اور پہلو پھیر کر چل دیتا ہے اور جب اس کو تکلیف پہنچتی ہے تو لمبی لمبی دعائیں کرنے لگتا ہے(۵۱)
(اے محمدؐ ان سے) کہو کیا تم نے کبھی اس بات پر غور کیا ہے کہ اگر یہ (قرآن) اللہ کی طرف سے ہو اور تم اس کے ماننے سے انکار کر رہے ہو (تو یہ کتنی بڑی گمراہی ہے) تو اس شخص سے بڑھ کر کون گمراہ ہو سکتا ہے جو اس کی مخالفت میں حد سے آگے نکل گیا ہے(۵۲)

हम निकट ही उनको संसार में भी और स्वयं उनके अपने अस्तित्व में भी अपने चिन्ह दिखाएंगे यहां तक कि उन पर प्रकट हो जाएगा कि कुरआन सत्य है, क्यातुमको यह प्रयाप्त नही कि तुम्हारा रब हर वस्तु से अवगत है (53) {84:19, 55:32,34, 10:92}

ہم عنقریب ان کو آفاق عالم میں بھی اور خود ان کی ذات میں بھی اپنی نشانیاں دکھائیں گے یہاں تک کہ ان پر ظاہر ہو جائے گا کہ قرآن حق ہے کیا تم کو یہ کافی نہیں کہ تمہارا رب ہر چیز سے خبردار ہے(۵۳) [۸۴:۱۹، ۵۵:۳۲،۳۴، ۱۰:۹۲]

देखो वह अपने ईश्वर के समक्ष उपस्थित होने से भ्रम में है सुन रखो कि वह हर वस्तु पर परिक्रमा किए हुए है (54)

دیکھو وہ اپنے رب کے روبرو حاضر ہونے سے شک میں ہیں سن رکھو کہ وہ ہر چیز پر احاطہ کئے ہوئے ہے(۵۴)

सूरत शुरा मक्का 42

سورت الشوریٰ۔ مکی (۴۲)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

हामीम ऐ मुहम्मद स0 (1) ऐनसीन काफ ऐ मुहम्मद स0 (2)
(ऐ मुहम्मद!) ईश्वर प्रभुत्व शाली व ज्ञानी ने उसी प्रकार तुम्हारी ओर वही की है जिस प्रकार तुम से पहले रसूलों की ओर भेजा करता था (3)

حٰم۔ اے محمدؐ(۱) عسق اے محمدؐ(۲)
(اے محمدؐ) اللہ غالب و حکیم نے اسی طرح تمہاری طرف وحی کی ہے جس طرح تم سے پہلے رسولوں کی طرف بھیجا کرتا تھا(۳)

आकाशों और पृथ्वी में जो कुछ है उसी का है वह उच्चतर और विराट है (4)
निकट है कि आकाश ऊपर से फट पड़े और फरिश्ते अपने रब की प्रशंसा के साथ उसी की पवित्रता वर्णन करते रहते हैं और जो लोग पृथ्वी में हैं (फरिश्ते) उनके लिए क्षमा मांगते रहते हैं सुन रखो कि ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (5)
और जिन लोगों ने इसके सिवाय सहायक बना रखे हैं वह ईश्वर को याद हैं और तुम उन पर निरीक्षक नही हो (6)
और इसी प्रकार तुम्हारे पास कुरआन अरबी भेजा है ताकि तुम मक्का वालों को और जो उसके चारों ओर रहते हैं उनको मार्ग दिखाओ और उन्हें क्यामत के दिन से भी डराओ जिसमें कुछ शंका नही उस

آسمانوں اور زمین میں جو کچھ ہے اسی کا ہے وہ برتر اور عظیم ہے(۴)
قریب ہے کہ آسمان اوپر سے پھٹ پڑیں اور فرشتے اپنے رب کی تعریف کے ساتھ اس کی تسبیح کرتے رہتے ہیں اور جو لوگ زمین میں ہیں (فرشتے) ان کے لئے معافی مانگتے رہتے ہیں سن رکھو کہ اللہ بخشنے والا مہربان ہے(۵)
اور جن لوگوں نے اس کے سوا کارساز بنا رکھے ہیں وہ اللہ کو یاد ہیں اور تم ان پر داروغہ نہیں ہو(۶)
اور اسی طرح تمہارے پاس قرآن عربی بھیجا ہے تا کہ تم اہل مکہ کو اور جو اس کے اردگرد رہتے ہیں ان کو رستہ دکھاؤ اور انہیں قیامت کے دن سے بھی ڈراؤ جس میں کچھ شک

दिन एक पक्ष स्वर्ग में होगा और एक पक्ष नर्क में (7) {41:44}

और यदि ईश्वर चाहता तो (दुनिया के सब) लोगों को एक समुदाय बना देता (और यहां जातियों का मतभेद शेष न रहता) परन्तु (उसने यही चाहा कि दुनिया में लोग अपने अधिकार के अनुसार स्वतंत्रता से कार्य करें जो भी उसे अच्छा या बुरा करना है करते रहें) इसलिए ईश्वर जिसको चाहता है (उसके सत्कर्मों के कारण) अपनी अनुकम्पा में प्रविष्ट कर लेता है (और बुरे लोगों को दण्ड देता है) और ऐसे अत्याचारी लोगों का न कोई यार है और न सहायक (8)

क्या लोग ईश्वर को छोड़ कर और मित्र बनाऐंगे (उन लोगों से कहदो) ईश्वर ही मित्र है और वही मृतको को जीवित करेगा और वह हर वस्तु के अनुमान निश्चित करने वाला है (9)

और तुम जिन बातों में मत भेद करते हो उसका निर्णय ईश्वर के अधिकार में है वही मेरा ईश्वर है उसी पर मेरा भरोसा है मैं उसीका आज्ञाकारी हो चुका हूं (10)

वही आकाशों और पृथ्वी का पैदा करने वाला है उसी ने तुम्हारे लिए तुम्हारी ही प्रकार के जोड़े बनाए हैं और चार पायों के भी जोड़े बनाए इस प्रकार पृथ्वी पर तुम्हारी नसल बढ़ाता रहता है (संसार में) उस जैसी कोई वस्तु नही वह सब की सुनता और सब की दशा के देखता है (11)

आकाशों और पृथ्वी के कोषों की कुन्जियां उसी के पास हैं उसका नियम जिसके लिए चाहता है जीविका विस्तृत कर देता है निःसंदेह वह हर वस्तु से अवगत है (12)

ईश्वर ने तुम्हारे लिए धर्म की वही पद्धति निश्चित की है जिसका उसने नूह को आदेश दिया था और (ऐ मुहम्मद स0) यह वही धर्म है जिसकी हम ने तुम्हारी ओर वही की है, और यही आदेश ईब्राहीम मूसा ईसा को भी दिया था कि इसी धर्म को स्थापित करो, इसमे किसी प्रकार का विभेद न डालना ऐ मुहम्मद स0 जिस धर्म की ओर तुम लोगों को बुला रहे हो वह अनेकेश्वर वादीयों को कठिन लगता है और ईश्वर का नियम जिसे चाहता है अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है और जो उसकी ओर आकृष्ट होता है उसे अपना सीधा मार्ग दिखा देता है (13) {39:44 धर्म सब नबियों का एक है 33:7}

और वह लोग जो पृथक पृथक हुए हैं तो ज्ञान (सत्य) आचुकने के बाद आपस की हठ और हठ धर्मी से हुए और यदि तुम्हारे रब की ओर से एक समय निश्चित तक के लिए बात न ठहर चुकी होती तो उनमें निर्णय कर दिया जाता और जो लोग उनके बाद ईश्वर की पुस्तक के उत्तराधिकारी हुए वह मूल धर्म की ओर से भ्रम में पड़े हुए हैं (14)

तो (ऐ मुहम्मद) इसी धर्म की ओर लोगों को बुलाते

نہیں اس روز ایک فریق جنت میں ہوگا اور ایک فریق دوزخ میں (۷)

اور اگر اللہ چاہتا تو (دنیا کے تمام) لوگوں کو ایک امت بنا دیتا (اور یہاں قوموں کا اختلاف باقی ہی نہ رہتا) لیکن (اس نے یہی پسند کیا کہ دنیا میں لوگ اپنے اختیار کے مطابق آزادی سے کام کریں جو بھی اسے اچھا یا بُرا کرنا ہے کرتے رہیں) اس لئے اللہ جس کو چاہتا ہے (اس کی نیکی کی وجہ سے) اپنی رحمت میں داخل کر لیتا ہے (اور بُرے لوگوں کو سزا دیتا ہے) اور ایسے ظالم لوگوں کا نہ کوئی یار ہے اور نہ مددگار (۸)

کیا لوگ اللہ کو چھوڑ کر اور اولیا بنائیں گے (ان لوگوں سے کہدو) اللہ ہی ولی ہے اور وہی مُردوں کو زندہ کرے گا اور وہ ہر چیز کے اندازے مقرر کرنے والا ہے (۹)

اور تم جن باتوں میں اختلاف کرتے ہو اس کا فیصلہ اللہ کے اختیار میں ہے وہی میرا رب ہے اسی پر میرا بھروسہ ہے میں اسی کا فرمانبردار ہو چکا ہوں (۱۰)

وہی آسمانوں اور زمین کا پیدا کرنے والا ہے اسی نے تمہارے لئے تمہاری ہی جنس کے جوڑے بنائے اور چار پایوں کے بھی جوڑے بنائے اس طرح زمین پر تمہاری نسل بڑھاتا رہتا ہے (کائنات میں) اُس جیسی کوئی چیز نہیں وہ سب کی سنتا اور سب کی حالت کو دیکھتا ہے (۱۱)

آسمانوں اور زمین کے خزانوں کی کنجیاں اسی کے پاس ہیں اس کا قانون جس کے لئے چاہتا ہے روزی فراخ کر دیتا ہے اور جسے چاہتا ہے تنگی دیتا ہے بے شک وہ ہر چیز سے واقف ہے (۱۲)

اللہ نے تمہارے لئے دین کا وہی طریقہ مقرر کیا ہے جس کا اس نے نوح کو حکم دیا تھا اور (اے محمدؐ) یہ وہی دین ہے جس کی ہم نے تمہاری طرف وحی کی ہے اور یہی حکم ابراہیم موسیٰ عیسیٰ کو بھی دیا گیا تھا کہ اسی دین کو قایم کرو اس میں کسی طرح کا تفرقہ نہ ڈالنا اے محمدؐ جس دین کی طرف تم لوگوں کو بلا رہے ہو وہ مشرکوں کو دشوار گزرتا ہے اور اللہ کا قانون جسے چاہتا ہے اپنی طرف متوجہ کر لیتا ہے اور جو اس کی طرف متوجہ ہوتا ہے اسے اپنا سیدھا رستہ دکھا دیتا ہے (۱۳) [۴۴:۳۸] شریعت سب نبیوں کی ایک ہے (۳۳:۷)

اور وہ لوگ جو الگ الگ ہوئے ہیں تو علم (حق) آچکنے کے بعد آپس کی ضد اور ہٹ دھرمی سے ہوئے اور اگر تمہارے رب کی طرف سے ایک وقت مقرر تک کے لئے بات نہ ٹھہر چکی ہوتی تو ان میں فیصلہ کر دیا جاتا اور جو لوگ ان کے بعد اللہ کی کتاب کے وارث ہوئے وہ اصل دین کی طرف سے شک میں پڑے ہوئے ہیں (۱۴)

تو (اے محمدؐ) اسی دین کی طرف لوگوں کو بلاتے رہنا اور

रहना और जैसा तुमको आदेश हुआ है उसी पर स्थापित रहना और उनकी इच्छाओं का अनुकरण न करना और कहदो कि जो पुस्तक ईश्वर ने अवतरित की है मैं उस पर विश्वास रखता हूं और मुझे आदेश हुआ है कि तुममें न्याय करूं ईश्वर ही हमारा और तुम्हारा रब है हमको हमारे कर्मों का बदला मिलेगा और तुमको तुम्हारे कर्मों का और हममें और तुममें कुछ वितर्क व विवाद नही ईश्वर हम सब को संग्रह करेगा, और उसी की ओर लोट कर जाना है (15)

جیسا تم کو حکم ہوا ہے اسی پر قائم رہنا اور ان کی خواہشوں کی پیروی نہ کرنا اور کہدو کہ جو کتاب اللہ نے نازل کی ہے میں اس پر ایمان رکھتا ہوں اور مجھے حکم ہوا ہے کہ تم میں انصاف کروں اللہ ہی ہمارا اور تمہارا رب ہے ہم کو ہمارے اعمال کا بدلہ ملے گا اور تم کو تمہارے اعمال کا اور ہم میں اور تم میں کچھ بحث وتکرار نہیں اللہ ہم سب کو اکھٹا کرے گا اور اسی کی طرف لوٹ کر جانا ہے (۱۵)

जो लोग ईश्वर के धर्म के बारे में (उन धर्म वादी लोगों से) झगड़ते हैं जिन्होंने इस्लाम को मान लिया है ईश्वर के निकट उन का विवाद निराधार है उन पर ईश्वर का क्रोध अवतरित होगा और उनके लिए कठोर कष्ट है (16)

جو لوگ اللہ کے دین کے بارے میں (ان ایمان دار لوگوں سے) جھگڑتے ہیں جنہوں نے اسلام کو مان لیا ہے اللہ کے نزدیک ان کا جھگڑا بے بنیاد ہے ان پر اللہ کا غضب نازل ہوگا اور ان کے لئے سخت عذاب ہے (۱۶)

वह ईश्वर ही तो है जिसने सच्चाई के साथ पुस्तक (अर्थात कुरआन) जो तुला है (अर्थात कुरआन में न्याय के नियम) अवतरित किया और तुम क्या जानों हो सकता है क्यामत निकट ही आ गई हो (17) (उसका प्रबन्ध कर लो)

وہ اللہ ہی تو ہے جس نے سچائی کے ساتھ کتاب (یعنی قرآن) جو میزان ہے (یعنی قرآن میں قانون عدل) نازل کیا اور تم کیا جانو ہوسکتا ہے قیامت قریب ہی آ گئی ہو (۱۷) [اس کا انتظام کرلو]

जिन लोगों को क्यामत आने का विश्वास नही है वह उसके लिए जल्दी मचा रहे हैं, परन्तु जिन लोगों को उसके आने का विश्वास है वह उससे डरते हैं वह जानते हैं कि उसका आना सत्य है तो सुन लो जो लोग क्यामत के विषय में झगड़ते हैं वह परले दर्जे की भ्रष्टता में हैं (18)

جن لوگوں کو قیامت آنے کا یقین نہیں ہے وہ اس کے لئے جلدی مچا رہے ہیں لیکن جن لوگوں کو اس کے آنے کا یقین ہے وہ اس سے ڈرتے ہیں وہ جانتے ہیں کہ اس کا آنا برحق ہے تو سن لو جو لوگ قیامت کے بارے میں جھگڑتے ہیں وہ پرلے درجہ کی گمراہی میں ہیں (۱۸)

ईश्वर अपने बन्दों की दशा और आवश्यक्ता से अवगत और कृपालु है जो अपने कर्म से चाहता है (उसकी आवश्यक्ता के अनुसार) जीविका देता है वह शक्तिशाली है (19)

اللہ اپنے بندوں کی حالت اور ضرورت سے باخبر اور مہربان ہے جو اپنے عمل سے چاہتا ہے (اس کی ضرورت کے مطابق) روزی دیتا ہے وہ زبردست طاقتور ہے (۱۹)

जो कोई परलोक की खेती का इच्छुक है हम उसकी खेती में सम्पन्नता देते है और जो कोई दुनिया की खेती का इच्छुक है तो हम उसे (उसकी इच्छानुसार) दुनिया दे देते हैं परन्तु (वह समझ ले कि) परलोक में उसका कोई अंश न होगा (20)

جو کوئی آخرت کی کھیتی کا طالب ہے ہم اس کی کھیتی میں برکت دیتے ہیں اور جو کوئی دنیا کی کھیتی کا طالب ہے تو ہم اسے (اس کی مرضی کے مطابق) دنیا دے دیتے ہیں لیکن (وہ سمجھ لے کہ) آخرت میں اس کا کوئی حصہ نہ ہوگا (۲۰)

क्या उन लोगों के लिए ईश्वर के अतिरिक्त ऐसे साझी हैं जो उन लोगों के लिए धर्म के ऐसे नियम बनाते हैं जिनकी अनुमति ईश्वर ने उन्हे नही दी है? यदि निर्णय (के दिन) का वचन पहले से निश्चित न कर दिया गया होता तो उनके बीच (कभी का) निर्णय कर दिया गया होता उन अत्याचारीयों को निःसंदेह पीड़ा देने वाला दण्ड होगा (21) {30:31,32, 9:31;6:160}

کیا ان لوگوں کے لئے اللہ کے علاوہ ایسے شریک ہیں جو ان لوگوں کے لئے دین کے ایسے قوانین بناتے ہیں جن کی اجازت اللہ نے انہیں دی ہے؟ اگر فیصلے (کے دن) کا وعدہ پہلے سے طے نہ کر دیا گیا ہوتا تو ان کے درمیان (کبھی کا) فیصلہ کر دیا گیا ہوتا ان ظالموں کو یقیناً دردناک عذاب ہوگا (۲۱) [۶:۱۶۰؛ ۳۰:۳۱،۳۲؛ ۹:۳۱]

तुम उन अत्याचारीयों (अवज्ञाकारों अर्थात अपनी ओर से नियम बनाने वालों और उनका अनुकरण करने वालों) को देखोगे कि उन्होंने जैसी कुछ हरकते की है (और अपनी ओर से उलटे सीधे धर्म के आदेश बनाए हैं) उनकी विपत्ति से डर रहे होंगे परन्तु उनका परिणाम उनको भुगतना पड़ेगा अपितु जो विश्वास लाए और उन्होंने दुनिया में सत्कर्म किए वह स्वर्ग के

تم ان ظالموں (نافرمانوں یعنی اپنی طرف سے قانون بنانے والوں اور ان کی پیروی کرنے والوں) کو دیکھو گے کہ انہوں نے جیسی کچھ حرکتیں کی ہیں (اور اپنی طرف سے الٹے سیدھے دین کے احکام بنائے ہیں) ان کے وبال سے ڈر رہے ہوں گے لیکن ان کا نتیجہ ان کو بھگتنا پڑے گا البتہ جو ایمان لائے اور انہوں نے دنیا میں نیک عمل کئے وہ جنت کے باغوں میں

उपवनों में होंगे वह जो कुछ चाहेंगे उन्हें उनके रब के पास से मिलेगा यह (उन पर ईश्वर का) बहुत बड़ा कृपा दया है (22)

यह है ईश्वर का वह कृपा दया जिसकी मंगल सूचना वह अपने बन्दों को देता है जो विश्वास लाए और (दुनिया में) भलाई के कार्य करते रहे, ऐ रसूल उनसे कह दो (जो तुम्हारी शत्रुता पर तुले हुए हैं) कि मैं (जो संदेश तुम तक पहुंचा रहा हूं) उसका तुमसे कोई प्रतिदान नही चाहता अपितु मैं चाहता हूं (1) मैं तुम्हारा कौटुम्बिक नातेदार हूं उसका तो ध्यान करो (उसको शेष रखो और मुझे इतना न सताओ) (2) और तुम ईश्वर की निकटता प्राप्त करो (अर्थात विश्वास ले आओ और ईश्वर से स्नेह करो जैसा स्नेह करने का हक है अपने बीच ईश्वर की निकटता प्राप्त करने की इच्छा उत्पन्न करो) और जो कोई भलाई करेगा हम उसके लिए उसकी भलाई में और अधिक बढ़ोतरी कर देंगे, निःसंदेह ईश्वर बड़ा क्षमा करने वाला और भलाई का गुण गाता है (23) {9:99, 25:57, 29:25, 34:47, 9:8, 34:47}

नोट- आयत 23 में पारिश्रमिक (अजर) का अर्थ देखने के लिए आयत (25:57) लिखी जा रही है (25:57)

उनसे कहो मैं इस कार्य पर तुमसे कोई पारिश्रमिक नही मांगता मेरी पारिश्रमिक बस यही है कि जिसका जी चाहे वह अपने रब का मार्ग स्वीकार करे (42:23) का अर्थ (25:57) ने खोल कर रख दिया विचार करो (9:8, 34:47)

क्या अवज्ञाकारी यह कहते हैं कि (कुरआन ईश्वर का कथन नही है अपितु) उस व्यक्ति ने ईश्वर पर झूट बोहतान बांधा है (अर्थात स्वयं बना लिया है ऐ रसूल यदि ऐसा होता और तुम अपनी ओर से बना लेते तो) तो ईश्वर तुम्हारे हृदय पर मोहर लगा देता (अपितु तुम्हारी गर्दन काट देता {69:45-46} इस लिए तुम ऐसा नही करोगे) और ईश्वर मिथ्या को मिटाता रहता है और सत्य को शेष रखता है (इस लिए कुरआन शेष रहेगा) निःसंदेह वह वक्षों में छुपे हुए भेदों को भी जानता है (24)

ईश्वर ही तो अपने भक्तों की पश्चाताप स्वीकार करता है, और उनकी त्रुटियों को क्षमा करता है और जो कुछ तुम कर रहे हो ईश्वर उसे जानता है (25)

और जो विश्वास लाए और सत्कर्म किए उनकी प्रार्थना स्वीकार करता है और अपने कृपा दया से बढ़ाता है और जो काफिर है उनके लिए कठोर दण्ड है (26)

यदि ईश्वर अपने बन्दों की जीविका में विस्तार कर देता है तो अधिकांश पृथ्वी में उपद्रव करने लगते हैं परन्तु वह जितना चाहता है अनुमान के अनुसार अवतरित करता है निःसंदेह वह अपने बन्दों को जानता और देखता है (27)

वही तो है जो लोगों के निराश हो जाने के बाद वर्षा कर देता है और अपनी अनुकम्पा को (वर्षा की) सम्पन्नता की आकृति में फैला देता है वही सब का सहायक और प्रशन्सा योग्य है (28)

और उसी के चिन्हों में से है आकाशों और पृथ्वी

ہوں گے وہ جو کچھ چاہیں گے انہیں ان کے رب کے پاس سے ملے گا یہ (ان پر اللہ کا) بہت بڑا فضل ہے (۲۲)

یہ ہے اللہ کا وہ فضل جس کی خوشخبری وہ اپنے بندوں کو دیتا ہے جو ایمان لائے اور (دنیا میں) بھلائی کے کام کرتے رہے اے رسول ان سے کہدو (جو تمہاری دشمنی پر تلے ہوئے ہیں) کہ میں (جو پیغام تم تک پہنچا رہا ہوں) اس کا تم سے کوئی اجر نہیں چاہتا البتہ میں چاہتا ہوں (۱) میں تمہارا خاندانی رشتے دار ہوں اس کا تو لحاظ کرو (اس کو باقی رکھو اور مجھے اتنا نہ ستاؤ) (۲) اور تم اللہ کا قرب حاصل کرو (یعنی ایمان لے آؤ اور اللہ سے محبت کرو جیسا محبت کرنے کا حق ہے اپنے اندر اللہ کے قرب حاصل کرنے کی چاہت پیدا کرو) اور جو کوئی بھلائی کرے گا ہم اس کے لئے اس کی بھلائی میں اور زیادہ اضافہ کردیں گے بے شک اللہ بڑا درگزر کرنے والا اور بھلائی کا قدر دان ہے (۲۳)[۹:۹۹:۲۵:۵۷:۹:۸:۲۹:۲۵:۳۴:۴۷]

نوٹ:۔آیت ۲۳ میں اجرت کا مطلب دیکھنے کے لئے آیت (۲۵:۵۷) لکھی جارہی ہے.

(۲۵:۵۷) ان سے کہو کہ میں اس کام پر تم سے کوئی اجرت نہیں مانگتا میری اجرت بس یہی ہے کہ جس کا جی چاہے وہ اپنے رب کا رستہ اختیار کرلے. (۴۲:۲۳) کا مطلب (۲۵:۵۷) نے کھول کر رکھ دیا غور کرو (۹:۸، ۳۴:۴۷)

کیا نافرمان یہ کہتے ہیں کہ (قرآن اللہ کا کلام نہیں ہے بلکہ) اس شخص نے اللہ پر جھوٹ بہتان باندھا ہے (یعنی خود بنالیا ہے اے رسول اگر ایسا ہوتا اور تم اپنی طرف سے بنالیتے تو) تو اللہ تمہارے دل پر مہر لگا دیتا (بلکہ تمہاری گردن کاٹ دیتا (۶۹:۴۵،۴۶) اس لئے تم ایسا نہیں کروگے) اور اللہ باطل کو مٹاتا رہتا ہے اور حق کو باقی رکھتا ہے (اس لئے قرآن باقی رہے گا) بے شک وہ سینوں میں چھپے ہوئے راز کو بھی جانتا ہے (۲۴)

اللہ ہی تو اپنے بندوں کی توبہ قبول کرتا ہے اور ان کی خطاؤں کو معاف کرتا ہے اور جو کچھ تم کررہے ہو اللہ اسے جانتا ہے (۲۵)

اور جو ایمان لائے اور عمل نیک کئے ان کی دعا قبول کرتا ہے اور اپنے فضل سے بڑھاتا ہے اور جو کافر ہیں ان کے لئے سخت عذاب ہے (۲۶)

اگر اللہ اپنے بندوں کے رزق میں فراخی کردیتا ہے تو اکثر زمین میں فساد کرنے لگتے ہیں لیکن وہ جس قدر چاہتا ہے اندازے کے مطابق نازل کرتا ہے بے شک وہ اپنے بندوں کو جانتا اور دیکھتا ہے (۲۷)

وہی تو ہے جو لوگوں کے مایوس ہوجانے کے بعد مینہ برساتا ہے اور اپنی رحمت کو (بارش کی) برکتوں کی شکل میں پھیلا دیتا ہے وہی سب کا مددگار اور تعریف کے لائق ہے (۲۸)

اور اسی کی نشانیوں میں سے ہے آسمانوں اور زمین کا پیدا

का पैदा करना और उन जानवारों का जो उसने उन में फैला रखे है और वह जब चाहेगा उनको संग्रह कर लेने पर शक्ति रखता है (29)

और जो विपत्ति तुम पर प्रेषित होती है सो तुम्हारे अपने कर्मों से और वह बहुत से पाप तो क्षमा कर देता है (30)

और तुम पृथ्वी में (अपनी चालाकियों से ईश्वर को) विवश नही कर सकते और ईश्वर के अतिरिक्त न तो तुम्हारा कोई मित्र है और न सहायक (31)

और उसकी (शक्ति के) चिन्हों में से बड़े बड़े पानी के पोत है मानों जैसे पर्वत है (32)

यदि ईश्वर का नियम चाहे तो वायू को रोक दे और पोत समुन्दर के तल पर खड़े रहे जाएं इसमें हर उस व्यक्ति के लिए जो धैर्यवान और आज्ञाकारी है ईश्वर की शक्ति की बड़ी स्मृतियां है (33)

या उनको उनके दुष्कर्मों के कारण नष्ट कर दे और बहुत सी त्रुटि तो वह क्षमा कर देता है (34)

और (प्रतिशोध इसलिए लिया जाता है कि) जो लोग हमारी आयतों में झगड़ते है वह जान लें कि उनके लिए बचाव नही (35)

लोगों! जो कुछ तुमको दिया गया है वह जीवन के कुछ दिनों की सामग्री है परन्तु (तुम्हारे सत्कर्मों का जो फल) ईश्वर के पास है वह उत्तम और स्थाई है (परन्तु यह) उन्ही लोगों के लिए है जो आस्था वाले है और ईश्वर पर विश्वास रखते है (36)

(ईश्वर पर विश्वास करने वाले धर्मवादी) वह लोग जो बड़े बड़े पापों और निर्लज्जता के कर्मों से संयम करते है और उन्हें (किसी पर) क्रोध आता है तो क्षमा कर देते है (37) {4:31, 53:32, 5:65}

और जो अपने ईश्वर का हर आदेश मानते है और नमाज स्थापित करते हैं और उनके सारे कार्य आपस के परामर्श से होते है और जो धन हमने उनको दिया है उसमें से व्यय करते है (38) {3:159}

और जो ऐसे है जब उन पर अत्याचार किया जाता है तो (उचित विधि से) बदला लेते है (39)

बुराई का बदला वेसी ही बुराई है परन्तु यदि वह व्यक्ति जिस पर अत्याचार किया गया है क्षमा कर दे और संधी करे तो उसका फल ईश्वर का दायित्व है निःसंदेह वह अत्याचार करने वालों को मित्र नही रखता (40) {23:96}

और जिस पर अत्याचार हुआ हो यदि उसके बादवह बदला ले तो ऐसे लोगों पर कुछ आरोप नही (41)

आरोप तो उन लोगों पर है जो लोगों पर अत्याचार करते है और देश में अनुचित अशान्ति फैलाते है वही वह लोग है जिन को पीड़ा देने वाला कष्ट होगा (42)

और जो धैर्य करें और दोष क्षमा कर दें तो यह

کرنا اوران جانوروں کا جواس نے ان میں پھیلا رکھے ہیں اوروہ جب چاہے گاان کوجمع کر لینے پر قادر ہے(۲۹)

اور جومصیبت تم پر نازل ہوتی ہے سوتمہارے اپنے فعلوں سے اوروہ بہت سے گناہ تو معاف کر دیتا ہے(۳۰)

اورتم زمین میں (اپنی چالاکیوں سے اللہ کو) عاجز نہیں کر سکتے اوراللہ کے علاوہ نہ تو تمہارا کوئی دوست ہےاور نہ مددگار(۳۱)

اوراس کی (قدرت کی) نشانیوں میں سے بڑے بڑے پانی کے جہاز ہیں گویا جیسے پہاڑ ہیں(۳۲)

اگر اللہ کا قانون چاہےتو ہوا کوٹھہرادے اور جہاز سمندر کی سطح پر کھڑا رہ جائیں اس میں ہراس شخص کے لئے جوصابر اورفرمانبردار ہےاللہ کی قدرت کی بڑی نشانیاں ہیں(۳۳)

یا ان کوان کے بداعمال کی وجہ سے تباہ کردے اور بہت سے قصورتو وہ معاف کر دیتا ہے(۳۴)

اور(انتقام اس لئے لیا جاتا ہے کہ) جولوگ ہماری آیتوں میں جھگڑتے ہیں وہ جان لیں کہ ان کے لئے بچاؤ نہیں (۳۵)

لوگو! جو کچھ تم کودیا گیا ہےوہ زندگی کا چندروزہ سازوسامان ہےلیکن (تمہاری نیکیوں کا جواجر) اللہ کے پاس ہےوہ بہتر اور پائدار ہے(مگر یہ) انہیں لوگوں کے لئے ہے جو ایمان والے ہیں اوراللہ پر بھروسہ رکھتے ہیں(۳۶)

(اللہ پر بھروسہ کرنے والے ایماندار) وہ لوگ ہیں جو بڑے بڑے گناہوں اور بےحیائی کے کاموں سے پرہیز کرتے ہیں اورانہیں (کسی پر) غصہ آتا ہےتو معاف کر دیتے ہیں(۳۷)[۴:۳۱؛ ۵۳:۳۲؛ ۵:۶۵]

اور جواپنے رب کا ہر حکم مانتے ہیں اورنماز قائم کرتے ہیں اوران کے سارے کام آپس کے مشورے سے ہوتے ہیں اور جومال ہم نےان کودیا ہےاس میں سے خرچ کرتے ہیں(۳۸)[۳:۱۵۹]

اور جو ایسے ہیں جب ان پر زیادتی کی جاتی ہے تو (مناسب طریقے سے) بدلہ لیتے ہیں (۳۹)

بُرائی کا بدلہ ویسی ہی بُرائی ہے لیکن اگر وہ شخص جس پر زیادتی کی گئی ہےمعاف کردے اورصلح کر لےتو اس کا اجر اللہ کے ذمے ہے بےشک وہ ظلم کرنے والوں کو دوست نہیں رکھتا(۴۰)

اورجس پر ظلم ہوا ہو اگر اس کے بعدوہ بدلہ لےتو ایسے لوگوں پر کچھ الزام نہیں (۴۱)

الزام تو ان لوگوں پر ہے جولوگوں پر ظلم کرتے ہیں اور ملک میں ناحق فساد پھیلاتے ہیں وہی وہ لوگ ہیں جن کو تکلیف دینے والا عذاب ہوگا(۴۲)

اور جوصبر کرے اورقصور معاف کردے تو یہ ہمت کے کام

साहस के कार्य हैं (43)

और जिस व्यक्ति को (उसकी अवज्ञा के कारण) ईश्वर का नियम भ्रष्टता में पड़ा रहने देतो उसके बाद उसका कोई मित्र नही और तुम अत्याचारीयों को देखोगे कि जब वह (नर्क का) दण्ड देखेंगे तो कहेंगे क्या (दुनिया में) वापस जाने का कोई मार्ग है? (44)

और जब वह लोग नर्क के सामने लाए जाएंगे तो तुम देखोगे कि अपमान के कारण से झुके जा रहे होंगे और झुकी आंखो से देखते जाते होंगे (अर्थात उन्हें नर्क को देखने का साहस न होगा उनकी दशा को) धर्म वाले कहेंगे बड़े अभागे हैं वह लोग जो (भ्रष्ट होकर) महाप्रलय के दिन स्वयं भी विनष्ट हुए और (अपना बुरा आदर्श प्रस्तुत करके) अपने घर वालों को भी (नष्ट किया) तो सुन रखो अत्याचार करने वाले सदैव के कष्ट में रहेंगे (45)

और (उस दिन) ईश्वर के अतिरिक्त उनका कोई मित्र न होगा कि ईश्वर के समक्ष उनकी सहायता कर सके और जिसको ईश्वर का नियम भ्रष्ट करे उसके पथ प्रर्दशन का कोई मार्ग नही (46)

(ऐ लोगों!) उस दिन के (कष्ट) आने से पहले अपने रब का आदेश मानों जो उसकी ओर से (दुष्कर्मों के परिणाम में) प्रस्तुत होने वाला है और उसका टलना सम्भव नही उस दिन तुम्हारे लिए न तो कोई शरण का स्थान होगा और न तुम से पापों का इन्कार ही बन पड़ेगा (47)

(ऐ रसूल!) यदि (इस प्रकार समझाने पर भी) वह लोग विमुखता करें (तो करने दो) हमने तुमको उन पर निरीक्षक बना कर तो नही भेजा (कि तुम उन्हें आस्था लाने पर विवश कर दो) तुम्हारा दायित्व तो ईश्वर का संदेश पहुंचा देना है बात यह है कि जब इन्सान को हम अपनी अनुकम्पा का स्वाद चखाते हैं तो हर्षित हो जाता है और यदि उनको उन्ही के कर्म जो उन्होंने आगे भेजे हैं से कोई कठिनता पहुंचती है तो सब उपकारों को भूल जाता है निःसंदेह इन्सान बड़ा ही अवज्ञकारी है (48)

आकाश व पृथ्वी का राज्य ईश्वर ही का है वह जो चाहता है पैदा करता है जिसे चाहता है पुत्रियां देता है और जिसे चाहता है पुत्र देता है (49)

या उनको पुत्र और पुत्रीयां दोनों देता है और जिस को चाहता है वे औलाद रखता है वह तो जानने वाला शक्ति वाला है (50)

किसी व्यक्ति का यह पद नही कि ईश्वर उससे साक्षात बात करे परन्तु वह केवल वही के द्वारा ही बात करता है और स्वयं परदे में रहता है (जैसे मूसा से बात की) और अपना रसूल जिबराईल भेजता है और वह उसके आदेश से जो कुछ वह ईश्वर चाहता है वही करता है वह श्रेष्ट और ज्ञानी है (51) {2:97-253, 4:164}

(ऐ मुहम्मद स0 जिस प्रकार और रसूलों की ओर

ہیں (۴۳)

اور جس شخص کو (اس کی سرکشی کی وجہ سے) اللہ کا قانون گمراہی میں پڑا رہنے دے تو اس کے بعد اس کا کوئی دوست نہیں اور تم ظالموں کو دیکھو گے کہ جب وہ (دوزخ کا) عذاب دیکھیں گے تو کہیں گے کیا (دنیا میں واپس جانے کی کوئی سبیل ہے؟ (۴۴)

اور جب وہ لوگ دوزخ کے سامنے لائے جائیں گے تو تم دیکھو گے کہ ذلت کی وجہ سے جھکے جا رہے ہوں گے اور کن انکھیوں سے دیکھتے جاتے ہوں گے (یعنی انہیں دوزخ کو دیکھنے کی ہمت نہ ہوگی ان کی حالت کو) ایمان والے کہیں گے بڑے بدنصیب ہیں وہ لوگ جو (گمراہ ہوں) قیامت کے روز خود بھی تباہ ہوئے اور (اپنا بُرا نمونہ پیش کر کے) اپنے گھر والوں کو بھی (تباہ کیا) تو سن رکھو ظلم کرنے والے ہمیشہ کے عذاب میں رہیں گے (۴۵)

اور (اس روز) اللہ کے سوا ان کا کوئی دوست نہ ہوگا کہ اللہ کے مقابلہ میں ان کی مدد کر سکے اور جس کو اللہ کا قانون گمراہ کرے اس کی ہدایت کا کوئی راستہ نہیں (۴۶)

(اے لوگو!) اس دن کے (عذاب) آنے سے پہلے اپنے رب کا حکم مانو جو اس کی طرف سے (اعمال بد کے نتیجہ میں) پیش آنے والا ہے اور اس کا ٹلنا ممکن نہیں اس روز تمہارے لئے نہ تو کوئی جائے پناہ ہوگی اور نہ تم سے گناہوں کا انکار ہی بن پڑے گا (۴۷)

(اے رسول!) اگر (اس طرح سمجھانے پر بھی) وہ لوگ روگردانی کریں (تو کرنے دو) ہم نے تم کو ان پر داروغہ بنا کر تو نہیں بھیجا (کہ تم انہیں ایمان لانے پر مجبور کر دو) تمہارے ذمے تو اللہ کا پیغام پہنچا دینا ہے بات یہ ہے کہ جب انسان کو ہم اپنی رحمت کا مزہ چکھاتے ہیں تو خوش ہو جاتا ہے اور اگر ان کو انہی کے اعمال جو انہوں نے آگے بھیجے ہیں سے کوئی سختی پہنچتی ہے تو سب احسانوں کو بھول جاتا ہے بے شک انسان بڑا ہی نافرمان ہے (۴۸)

آسمان و زمین کی بادشاہت اللہ ہی کی ہے جو چاہتا ہے پیدا کرتا ہے جسے چاہتا ہے بیٹیاں دیتا ہے اور جسے چاہتا ہے بیٹے دیتا ہے (۴۹)

یا ان کو بیٹے اور بیٹیاں دونوں دیتا ہے اور جس کو چاہتا ہے بے اولاد رکھتا ہے وہ تو جاننے والا قدرت والا ہے (۵۰)

کسی بشر کا یہ مقام نہیں کہ اللہ اس سے روبرو بات کرے مگر وہ صرف وحی کے ذریعہ ہی بات کرتا ہے اور خود پردے میں رہتا ہے (جیسے موسیٰ سے بات کی) اور اپنا رسول جبرائیل بھیجتا ہے اور وہ اس کے حکم سے جو کچھ وہ اللہ چاہتا ہے وحی کرتا ہے وہ برتر اور حکیم ہے (۵۱) [۲:۹۷،۲۹۳، ۴:۱۶۴]

(اے محمدؐ جس طرح اور رسولوں کی طرف وحی کی گئی) اسی

वही की गई) उसी प्रकार हमने तुम्हारी ओर अपने आदेश से एक सार (अर्थात ईश्वर की पुस्तक कुरआन) प्रेषित की है इससे पहले न तो तुम पुस्तक को जानते थे और न धर्म को परन्तु हमने इस सार (वही) को एक उज्जवल पुस्तक बना दिया है जिससे हम अपने बन्दों में से जिसको चाहते है धर्म का सीधा मार्ग दिखा देते है और निःसंदेह तुम ऐ मुहम्मद स0 इस पुस्तक से लोगों को सीधा मार्ग दिखाते हो (52)

طرح ہم نے تمہاری طرف اپنے حکم سے ایک روح (یعنی اللہ کی کتاب قرآن) بھیجی ہے اس سے پہلے نہ تو تم کتاب کو جانتے تھے اور نہ ایمان کو لیکن ہم نے اس روح (وحی) کو ایک روشن کتاب بنا دیا ہے جس سے ہم اپنے بندوں میں سے جس کو چاہتے ہیں دین کا سیدھا راستہ دکھا دیتے ہیں اور بے شک تم اے محمدؐ اس کتاب سے لوگوں کو سیدھا راستہ دکھاتے ہو (۵۲)

(अर्थात) उस ईश्वर (के बताए हुए) सीधे मार्ग की ओर जो आकाशों और पृथ्वी की हर वस्तु का स्वामी है (ऐ लोगों!) भलि प्रकार सुन लो संसार की रचना का हर कार्य ईश्वर ही की ओर प्रत्यागमन होता है (53)

(یعنی) اس اللہ (کے بتائے ہوئے) سیدھے راستہ کی طرف جو آسمانوں اور زمین کی ہر چیز کا مالک ہے (اے لوگو!) اچھی طرح سن لو کائنات خلقت کا ہر کام اللہ ہی کی طرف رجوع ہوتا ہے (۵۳)

सूरत जुखरूफ मक्की 43

سورت الزخرف۔مکی (۴۳)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

हा मीम ऐ मुहम्मद स0! (1)
यह उज्जवल और स्पष्ट पुस्तक साक्षी है (2)
कि हमने इस को अरबी भाषा का कुरआन बनाया है ताकि (अरब वाले) तुम इसको समझ सको (3)

حٰم اے محمدؐ! (۱) یہ روشن اور واضح کتاب شاہد ہے (۲)
کہ ہم نے اس کو عربی زبان کا قرآن بنایا ہے تا کہ (اے اہل عرب) تم اس کو سمجھ سکو (۳)

और यह कुरआन हमारे यहां मूल पुस्तक (अर्थात सुरक्षित पट्ट ईश्वरीय ज्ञान) में विधमान है जो प्रतिष्ठवान और युक्ति से भरी हुई पुस्तक है (4)

اور یہ قرآن ہمارے یہاں اصل کتاب (یعنی لوح محفوظ) اللہ کے علم میں موجود ہے جو عالی مرتبت اور حکمت سے بھری ہوئی کتاب ہے (۴)

अब क्या हम लोगों से रूष्ट हो कर यह शिक्षा का पाठ तुम्हारे पास भेजना छोड़ दें केवल इस लिए कि तुम सीमा से आगे बढ़ गए हो (5)
और हमने पहले लोगों में भी बहुत से ईशदूत भेजे थे (6) {56:13}
(परन्तु सदैव ऐसा ही हुआ) कि जो भी उनके पास ईशदूत आया निःसंदेह उन्होंने उसका उपहास उड़ाया (7)
फिर जो लोग उनसे अधिक शक्तिशाली थे उन्हें हमने वध कर दिया और उनकी उपमाऐं बीत चुकी हैं कुछ की अब भी शेष है (8)
और यदि तुम उनसे पूछो कि आकाशों और पृथ्वी को किसने उत्पन्न किया है तो कह देंगे कि उनको प्रभुत्व शाली ज्ञान वाले ने पैदा किया है (9)

اب کیا ہم تم لوگوں سے بیزار ہو کر یہ درس نصیحت تمہارے پاس بھیجنا چھوڑ دیں صرف اس لئے کہ تم حد سے آگے بڑھ گئے ہو (۵)
اور ہم نے پہلے لوگوں میں بھی بہت سے رسول بھیجے تھے (۶)
(مگر ہمیشہ ایسا ہی ہوا) کہ جو بھی انکے پاس رسول آیا یقیناً انہوں نے اس کا مذاق اڑایا (۷)
پھر جو لوگ ان سے زیادہ طاقتور تھے انہیں ہم نے ہلاک کر دیا اور ان کی مثالیں گزر چکی ہیں کچھ کی اب بھی باقی ہیں (۸)
اور اگر تم ان سے پوچھو کہ آسمانوں اور زمین کو کس نے پیدا کیا ہے تو کہدیں گے کہ ان کو غالب اور علم والے نے پیدا کیا ہے (۹)

जिसने तुम्हारे लिए इस पृथ्वी को बिछोना बनाया और इसमें तुम्हारे लिए मार्ग बनाए ताकि तुम जहां जाना चाहो सुगमता से पहुंच सको (10)

جس نے تمہارے لئے اس زمین کو گہوارہ بنایا اور اس میں تمہارے لئے رستے بنائے تا کہ تم جہاں جانا چاہو آسانی سے پہنچ سکو (۱۰)

और जिसने एक अनुमान के अनुसार आकाश से पानी बरसाया फिर उस पानी के द्वारा मृतक और सूखी हुई भूमि को हरित करके जीवन दिया इसी प्रकार तुम (क्यामत के दिन भूमि से) निकाले जाओगे (11)

اور جس نے ایک اندازے کے مطابق آسمان سے پانی برسایا پھر اس پانی کے ذریعہ مردہ اور سوکھی ہوئی زمین کو سرسبز کر کے زندگی دی اسی طرح تم (قیامت کے دن زمین سے) نکالے جاؤ گے (۱۱)

जिसने सम्पूर्ण वस्तुओं के जोड़े बनाए और तुम्हारे लिए नाव बनाई और चौपाए जानवर बनाए जिन पर तुम सवार होते हो (12)

جس نے تمام چیزوں کے جوڑے بنائے اور تمہارے لئے کشتیاں بنائیں اور چوپائے جانور بنائے جن پر تم سوار ہوتے ہو (۱۲)

ताकि तुम जब उन पर सवार हो और उन पर बैठ जाओ फिर अपने ईश्वर के उपकार को याद करो और कहो कि वह अस्तित्व पवित्र है जिसने इसको हमारे लिए अर्जित किया और हममें शक्ति न है कि

تا کہ تم جب ان پر سوار ہو اور ان پر بیٹھ جاؤ پھر اپنے رب کے احسان کو یاد کرو اور کہو کہ وہ ذات پاک ہے جس نے اس کو ہمارے لئے فراہم کیا اور ہم میں طاقت نہ ہے کہ اس

इसको वश में करले (13)
और हम अपने ईश्वर की ओर लोट कर जाने वाले है (14)
और उन्होंने उसके कतिपय बन्दों को उसका अंश ठहरा दिया है निःसंदेह मानव खुल्लम खुल्ला अवज्ञाकारी है (15)
क्या ईश्वर ने अपनी रचना में से पुत्रीयां तो स्वयं रख ली और तुम्हें चुन कर पुत्र दिए (16)
यद्यपि जब उनमें से किसी को उस वस्तु की सूचना दी जाती है जो उन्होंने ईश्वर के लिए वर्णन की है तो उससे उसका मुंख काला स्याह हो जाता है और वह शोक से भर जाता है (17)
क्या जो आभूषण में पालन पोषण पाए और तर्क वितर्क में भी बात स्पष्ट न करें (क्या केवल वही ईश्वर की सन्तान हो सकती है?) (18)
उन लोगों ने फ़रिश्तों को जो ईश्वर कृपालु के बन्दे है स्त्रीयां समझ रखा है क्या वह लोग उन फ़रिश्तों की रचना के समय उपस्थित थे और देख रहे थे कि यह लड़कियां है अच्छा उनका साक्ष्य लिख लिया जाएगा और उनसे प्रशन होगा (19)
और कहते है यदि ईश्वर चाहता तो हम उन (बुतों) को न पूजते उनको उस का कुछ ज्ञान नही यह तो केवल उटकलें दोड़ा रहे है (20)
या हमने उनको इससे पहले कोई पुस्तक दी थी तो वह उससे प्रमाण पकड़ रहें है (21)
अपितु कहने लगे कि हमने अपने बाप दादा को एक मार्ग पर पाया है और हम उनके पद चिन्हों पर चल रहे है (22)
(ऐ रसूल) इसी प्रकार तुम से पहले भी हमने जिस बस्ती में कोई डराने वाला रसूल भेजा तो वहां के सम्पन्न लोगों ने यही कहा कि हम तो अपने उन्ही बाप दादा के पद चिन्हों पर चल रहे है जिस मार्ग पर उन को पाया (23)
ईशदूत ने कहा कि यदि मैं तुम्हारे बाप दादा की विधि से उत्तम विधि बताओ (तो क्या फिर भी तुम उसी पुरानी लकीर के फ़कीर बने रहोगे) जिस पर उनको पाया उन्होंने यही उत्तर दिया तुम जो धर्म देकर भेजे गए हो हम उसे नही मानते (24)
तो हमने उनसे बदला लिया सो देख लो कि झुटलाने वालों का अन्त कैसा हुआ (25)
और जब इब्राहीम अ0 ने अपने पिता और अपनी जाती से कहा कि मैं उन वस्तुओं से रूष्ट हूं जिनकी तुम पूजा करते हो (26)
हां उस अस्तित्व की पूजा करता हूं जिसने मुझे पैदा किया और निःसंदेह वही मुझे पथ प्रदर्शन वाला ज्ञान जानकारी अभी देगा (27)
और यही बात अपनी सन्तान में पीछे छोड़ गए ताकि वह ईश्वर की ओर आकृष्ट रहें (28)
(परन्तु अनेकेश्वर वादीयों ने इब्राहीम की विधि को छोड़ दिया फिर भी मैंने उन्हें दण्ड नही दिया)

کو بس میں کرلیں (۱۳)
اور ہم اپنے پروردگار کی طرف لوٹ کر جانے والے ہیں (۱۴)
اور انہوں نے اس کے بعض بندوں کو اس کا جز ٹھہرا دیا یقیناً انسان کھلم کھلا نافرمان ہے (۱۵)
کیا اللہ نے اپنی مخلوق میں سے بیٹیاں تو خود رکھ لیں اور تمہیں چن کر بیٹے دیئے (۱۶)
حالانکہ جب ان میں سے کسی کو اس چیز کی خبر دی جاتی ہے جو انہوں نے اللہ کے لئے بیان کی ہے تو اس سے اس کا منہ کالا سیاہ ہو جاتا ہے اور وہ غم سے بھر جاتا ہے (۱۷)
کیا جو زیور میں پرورش پائے اور بحث میں بھی بات صاف نہ کرے (کیا صرف وہی اللہ کی اولاد ہو سکتی ہے؟) (۱۸)
ان لوگوں نے فرشتوں کو جو اللہ رحمٰن کے بندے ہیں عورتیں سمجھ رکھا ہے کیا وہ لوگ ان فرشتوں کی پیدائش کے وقت حاضر تھے اور دیکھ رہے تھے کہ یہ لڑکیاں ہیں اچھا اُن کی شہادت لکھ لی جائے گی اور ان سے باز پرس کی جائے گی (۱۹)
اور کہتے ہیں اگر اللہ چاہتا تو ہم ان (بتوں) کو نہ پوجتے ان کو اس کا کچھ علم نہیں یہ تو صرف اٹکلیں دوڑا رہے ہیں (۲۰)
یا ہم نے ان کو اس سے پہلے کوئی کتاب دی تھی تو وہ اس سے سند پکڑ رہے ہیں (۲۱)
بلکہ کہنے لگے کہ ہم نے اپنے باپ دادا کو ایک رستے پر پایا ہے اور ہم ان ہی کے نقش قدم پر چل رہے ہیں (۲۲)
(اے رسول) اسی طرح تم سے پہلے بھی ہم نے جس بستی میں کوئی ڈرانے والا رسول بھیجا تو وہاں کے خوش حال لوگوں نے یہی کہا کہ ہم تو اپنے انہی باپ دادا کے نقش قدم پر چل رہے ہیں جس راہ پر ان کو پایا (۲۳)
رسول نے کہا اگر میں تمہارے باپ دادا کے طریقے سے بہتر طریقہ بتاؤں (تو کیا پھر بھی تم اسی پرانی لکیر کے فقیر بنے رہو گے) جس پر ان کو پایا انہوں نے یہی جواب دیا تم جو دین دے کر بھیجے گئے ہو ہم اسے نہیں مانتے (۲۴)
تو ہم نے ان سے بدلہ لیا سو دیکھ لو کہ جھٹلانے والوں کا انجام کیسا ہوا (۲۵)
اور جب ابراہیمؑ نے اپنے والد اور اپنی قوم سے کہا کہ میں ان چیزوں سے بیزار ہوں جن کی تم عبادت کرتے ہو (۲۶)
ہاں اس ذات کی عبادت کرتا ہوں جس نے مجھے پیدا کیا اور بے شک وہی مجھے علم ہدایت جان کاری ابھی دے گا (۲۷)
اور یہی بات اپنی اولاد میں پیچھے چھوڑ گئے تا کہ وہ اللہ کی طرف رجوع رہیں (۲۸)
(لیکن مشرکین نے ابراہیم کے طریقے کو چھوڑ دیا پھر بھی

अपितु उनको और उनके बाप दादा को दुनिया के लाभ की सामग्री दी यहां तक के उनके पास (सन्देश) सत्य और (और ईश्वर के सन्देश को) खोल खोल कर वर्णन करने वाला रसूल आ गया (29)

और जब उनके पास सत्य (अर्थात कुरआन) आ गया तो (इस पर विश्वास लाने के बजाए) कहने लगे यह तो जादू है हम इसे नही मानते (30)

उन लोगों ने यह भी कहा कि यह कुरआन दो नगरों (अर्थात मक्का या तायफ) के किसी बड़े आदमी पर क्यों नही अवतरित किया गया (31)

क्या वह लोग तेरे रब की अनुकम्पा (अर्थात ईशदौत्य) को विभाजित करना चाहते हैं? (ऐसा नही हो सकता) हमने दुनिय के जीवन में उनके बीच जीविका सामग्री वितरण कर दी है और उनमें से कतिपय के पद कतिपय से उच्च किए ताकि एक दूसरे से सेवा लें और तेरे रब की कृपा उस (सम्पत्ति) से कही अधिक उत्तम है जो वह लोग संग्रह कर रहें है (32)

और यदि यह बात न होती (कि दुनिया की सामग्री काफिरों के पास देखकर सब लोग एक ही दल अर्थात काफिर होजाएंगे) तो जो लोग मुझ ईश्वर से इनकार करते है हम उनके घरों की छतें चान्दी की बना देते और सीढ़ियां भी जिन पर वह चढ़ते (33)

और उनके घरों के द्वार भी और सिंहासन भी जिन पर तकिया लगाते है (34)

और भांति भांति की सज्जा यह तो केवल दुनिया के जीवन की सामग्री है और परलोक तेरे ईश्वर के यहां केवल सदाचारियों के लिए है (35)

और जो व्यक्ति ईश्वर के जप (अर्थात कुरआन की ओर से) आंखे बन्द कर लेता है हम उस पर एक शैतान नियुक्त कर देते है तो वह उसका (दिन रात का) साथी बन जाता है (36)

और शैतान उन लोगों को (जो कुरआन से अचेत हो जाते हैं) जीवन के सीधे मार्ग से रोक कर (मिथ्या मार्ग पर लगा देता है और वह लोग समझते है कि हम सीधे मार्ग पर है (37)

यहां तक कि जब (क्यामत के दिन भ्रष्ट) हमारे पास आएगा तो कहेगा कि ऐ काश मुझ में और तुझ शैतान में पूर्व व पश्चिम की दूरी होती, तू बुरा साथी था (38)

(उस समय उनसे कहा जाएगा यही बात तुमने दुनिया में क्यों नहीं सोची) अब जबकि तुम अत्याचार करते रहे तो आज तुम्हें यह बात लाभ नही दे सकती कि अब तुम सब दण्ड में साझी हो (39)

(ऐ मुहम्मद स0!) क्या तुम बहरे को सुना सकते हो या अंधो को मार्ग दिखा सकते हो और जो खुली भ्रष्टता में हो उसे (मार्ग पर ला सकते हो) (40)

और यदि हम तुम्हें ले जाएं अर्थात मृत्यू दे दें तो

میں نے انہیں سزا نہیں دی) بلکہ ان کو اور ان کے باپ دادا کو دنیا کے فائدے کا سامان دیا یہاں تک کہ ان کے پاس (پیغام) حق اور (اللہ کے پیغام کو) کھول کھول کر بیان کرنے والا رسول آ گیا (۲۹)

اور جب ان کے پاس حق (یعنی قرآن) آ گیا تو (اس پر ایمان لانے کے بجائے) کہنے لگے یہ تو جادو ہے ہم اسے نہیں مانتے (۳۰)

ان لوگوں نے یہ بھی کہا کہ یہ قرآن دو شہروں (یعنی مکہ یا طائف) کے کسی بڑے آدمی پر کیوں نہیں نازل کیا گیا (۳۱)

کیا وہ لوگ تیرے رب کی رحمت (یعنی رسالت) کو تقسیم کرنا چاہتے ہیں؟ (ایسا نہیں ہو سکتا) ہم نے دنیا کی زندگی میں ان کے درمیان سامان معیشت تقسیم کر دیا ہے اور ان میں سے بعض کے درجے بعض پر بلند کئے تاکہ ایک دوسرے سے خدمت لے اور تیرے رب کی رحمت اس (دولت) سے کہیں زیادہ بہتر ہے جو وہ لوگ جمع کر رہے ہیں (۳۲)

اور اگر یہ بات نہ ہوتی (کہ دنیا کا سامان کافروں کے پاس دیکھ کر سب لوگ ایک ہی جماعت یعنی کافر ہو جائیں گے) تو جو لوگ مجھ اللہ سے انکار کرتے ہیں ہم ان کے گھروں کی چھتیں چاندی کی بنا دیتے اور سیڑھیاں بھی جن پر وہ چڑھتے (۳۳)

اور ان کے گھروں کے دروازے بھی اور تخت بھی جن پر تکیہ لگاتے ہیں (۳۴)

اور طرح طرح کی آرائش یہ تو محض دنیا کی زندگی کا سامان ہے اور آخرت تیرے رب کے یہاں صرف متقین کے لئے ہے (۳۵)

اور جو شخص اللہ کے ذکر (یعنی قرآن کی طرف سے) آنکھیں بند کر لیتا ہے ہم اس پر ایک شیطان مسلط کر دیتے ہیں تو وہ اس کا (دن رات کا) ساتھی بن جاتا ہے (۳۶)

اور شیطان اُن لوگوں کو (جو قرآن سے غافل ہو جاتے ہیں) زندگی کے سیدھے رستے سے روک کر (غلط رستے پر لگا دیتا ہے اور وہ لوگ سمجھتے ہیں کہ ہم سیدھے رستے پر ہیں (۳۷)

یہاں تک کہ جب (قیامت کے روز گمراہ) ہمارے پاس آئے گا تو کہے گا کہ اے کاش مجھ میں اور تجھ شیطان میں مشرق و مغرب کا فاصلہ ہوتا تو بُرا ساتھی تھا (۳۸)

(اس وقت ان سے کہا جائے گا یہی بات تم نے دنیا میں کیوں نہیں سوچی) اب جبکہ تم ظلم کرتے رہے تو آج تمہیں یہ بات فائدہ نہیں دے سکتی کہ اب تم سب عذاب میں شریک ہو (۳۹)

(اے محمدؐ) کیا تم بہرے کو سنا سکتے ہو یا اندھے کو رستہ دکھا سکتے ہو اور جو صریح گمراہی میں ہو اسے (راہ پر لا سکتے ہو) (۴۰)

اور اگر ہم تمہیں لے جائیں یعنی وفات دے دیں تو ان

उनसे हम अवश्य बदला लेंगे (41)
या तुम्हें दिखा दें जिस दण्ड का उन्हें हमने वचन दिया है तो हम उन पर वश रखते हैं (42)
पस तुम्हारी ओर जो वही की गई है उसको दृढ़ता से पकड़े रहो (अर्थात इस कुरआन पर व्यवहार करते रहो) निःसंदेह तुम सीधे मार्ग पर हो (43)
(ऐ मुहम्मद स0!) यह कुरआन तुम्हारे लिए और तुम्हारी जाति के लिए शिक्षा है (अपितु सारे संार के इन्सानों के लिए सन्देश है) और निकट भविष्य में तुम सब से प्रश्न होगा (कि तुमने इस कुरआन को समझ कर इस पर व्यवहार किया था या नहीं) (44)

سے ہم ضرور بدلہ لیں گے (۴۱)
یا تمہیں دکھادیں جس عذاب کا انہیں ہم نے وعدہ دیا ہے تو ہم ان پر قابو رکھتے ہیں (۴۲)
پس تمہاری طرف جو وحی کی گئی ہے اس کو مضبوط پکڑے رہو (یعنی اس قرآن پر عمل کرتے رہو) بے شک تم سیدھے رستے پر ہو (۴۳)
(اے محمدؐ!) یہ قرآن تمہارے لئے اور تمہاری قوم کے لئے نصیحت ہے (بلکہ ساری دنیا کے انسانوں کے لئے پیغام) ہے اور عن قریب تم سب سے بازپرس ہوگی (کہ تم نے اس قرآن کو سمجھ کر اس پر عمل کیا تھا یا نہیں) (۴۴)

(ऐ मुहम्मद स0!) हमने तुमसे पहले जितने बाजार रसूल बशर भेजे थे और उनके साथ किताबें जो वह भी रसूल हैं उनसे ज्ञात कर लो (अर्थात उनकी पुस्तकों से ज्ञात कर लो इससे यह ज्ञात हुआ कि ईश्वर की पुस्तकें भी रसूल हैं) क्या हमने अपने अतिरिक्त कोई और रहमान बनाया है कि उसकी पूजा की जाए (45) {10:94;39:71; 44:13}

(اے محمدؐ!) ہم نے تم سے پہلے جتنے رسول بشر بھیجے تھے اور ان کے ساتھ کتابیں جو وہ بھی رسول ہیں ان سے پوچھ لو (یعنی ان کی کتابوں سے معلوم کرلو اس سے یہ معلوم ہوا کہ اللہ کی کتابیں بھی رسول ہیں) کیا ہم نے اپنے علاوہ کوئی اور رحمٰن بنایا ہے کہ اس کی عبادت کی جائے (۴۵) [۱۰:۹۴؛۳۹:۷۱؛۴۴:۱۳]

और हमने मूसा को अपनी स्मृतियां देकर फिरऔन और उसके सभासदों की ओर भेजा तो उन्होंने कहा कि मैं अपने रब का भेजा हुआ तुम्हारे पास आया हूं (46)
जब वह हमारी स्मृतियां लेकर उनके पास आया तो वह उनका उपहास करने लगे (47)
और जो चिन्ह हम उनको दिखाते वह दूसरे से बड़ा होता था और हमने उनको कष्ट में पकड़ लिया ताकि रूक जाएं और ईश्वर के नियम की ओर वापस आएं (48)

اور ہم نے موسیٰ کو اپنی نشانیاں دے کر فرعون اور اس کے درباریوں کی طرف بھیجا تو انہوں نے کہا کہ میں اپنے رب کا بھیجا ہوا تمہارے پاس آیا ہوں (۴۶)
جب وہ ہماری نشانیاں لے کر ان کے پاس آیا تو وہ ان کی ہنسی کرنے لگے (۴۷)
اور جو نشانی ہم ان کو دکھاتے وہ دوسری سے بڑی ہوتی تھی اور ہم نے ان کو عذاب میں پکڑ لیا تاکہ باز آجائیں اور اللہ کے قانون کی طرف واپس آئیں (۴۸)

परन्तु उनकी अवज्ञा की यह स्थिति थी कि जब हमारा कष्ट आया तो कहने लगते ऐ जादूगर अपने उस वचन के अनुसार जो तेरे रब ने तुझ से कर रखा है हमारे लिए प्रार्थना कर (यदि वह हट गया तो हम विश्वास ले आएंगे) और हम सत्य मार्ग पा लेंगे (49)

لیکن ان کی نافرمانی کا یہ عالم تھا کہ جب ہمارا عذاب آتا تو کہنے لگتے اے جادوگر اپنے اس عہد کے مطابق جو تیرے رب نے تجھ سے کر رکھا ہے ہمارے لئے دعا کر (اگر وہ ہٹ گیا تو ہم ایمان لے آئیں گے) اور ہم راہ حق پالیں گے (۴۹)

फिर जब हम उनसे कष्ट हटा लेते तो वह अपना प्रण तोड़ डालते फिरऔन ने एक दिन अपनी जाति के लोगों के सामने घोषणा करते हुए कहा भाईयों! क्या मिस्र की हकूमत और यह नहरें जो मेरे भवन के नीचे चल रही हैं मेरी नहीं हैं? क्या तुम्हें मेरी सत्ता नजर नहीं आती (51)
निःसंदेह मैं इस व्यक्ति से जो कुछ सम्मान नहीं रखता और अच्छा भाषण भी नहीं कर सकता कहीं अच्छा हूं (52)
इस पर आकाश से सोने के कंगन क्यों नहीं उतारे गए या फरिश्तों का दल उसकी सेवा में उपस्थित रहता (53)
उसने अपनी जाति को बहलाया फुसलाया और उन्होंने उसी की मान ली निःसंदेह वह सारे ही अवज्ञाकारी लोग थे (54)
जब उन लोगों ने (अपनी अवज्ञाकारी से) हमें रूष्ट

پھر جب ہم ان سے عذاب ہٹا لیتے تو وہ اپنا عہد توڑ ڈالتے (۵۰)
فرعون نے ایک روز اپنی قوم کے لوگوں کے سامنے اعلان کرتے ہوئے کہا بھائیو! کیا مصر کی حکومت اور یہ نہریں جو میرے محل کے نیچے بہہ رہی ہیں میری نہیں ہیں؟ کیا تمہیں میرا اقتدار نظر نہیں آتا (۵۱)
بے شک میں اس شخص سے جو کچھ عزت نہیں رکھتا اور اچھی تقریر بھی نہیں کرسکتا کہیں بہتر ہوں (۵۲)
اس پر آسمان سے سونے کے کنگن کیوں نہیں اتارے گئے یا فرشتوں کی جماعت اس کی خدمت میں حاضر رہتی (۵۳)
اس نے اپنی قوم کو بہلایا پھسلایا اور انہوں نے اسی کی مان لی یقیناً وہ سارے ہی نافرمان لوگ تھے (۵۴)
جب ان لوگوں نے (اپنی نافرمانی سے) ہمیں ناراض کردیا

कर दिया तो हमने भी उनसे कठोर बदला लिया और सबको डुबो दिया (55)

تو ہم نے بھی ان سے سخت بدلہ لیا اور سب کو ڈبو دیا (۵۵)

और उन्हें नष्ट विनष्ट करके आने वाले वंशों के लिए एक शिक्षा का उदाहरण बना दिया (56)

اور انہیں نیست و نا بود کر کے آنے والی نسلوں کے لئے نمونہ عبرت بنا دیا (۵۶)

और जब मरयम के पुत्र (ईसा) की उपमा प्रस्तुत की गई तो तेरी जाति के लोगों ने उस पर कोलाहल मचा दिया (57)

اور جب مریم کے بیٹے (عیسیٰ) کی مثال پیش کی گئی تو تیری قوم کے لوگوں نے اس پر شور مچا دیا (۵۷)

और कहने लगे कि हमारे देवता अच्छे हैं या वह (अर्थात ईसा की भी तो लोग पूजा करते हैं) यह उपमा वह अनेकेश्वरवादी तुम्हारे सामने केवल कुतर्क के लिए लाए हैं सत्य यह है कि वह हैं ही झगड़ालू लोग (58)

اور کہنے لگے کہ ہمارے معبود اچھے ہیں یا وہ (یعنی عیسیٰ کی بھی تو لوگ پوجا کرتے ہیں) یہ مثال وہ مشرک لوگ تمہارے سامنے محض کج بحثی کے لئے لائے ہیں حقیقت یہ ہے کہ وہ ہیں ہی جھگڑالو لوگ (۵۸)

रहा ईसा वह तो हमारे ऐसे बन्दे हैं जिन पर हमने ईशदौत्य का कृपा दया किया था, और बनी इसराईल के लिए आदर्श बना दिया था (59)

رہا عیسیٰ وہ تو ہمارے ایسے بندے ہیں جن پر ہم نے نبوت کا فضل کیا تھا اور بنی اسرائیل کے لئے نمونہ بنا دیا تھا (۵۹)

और यदि हम चाहते तो तुम्हारे स्थान पर फ़रिश्ते बना देते जो तुम्हारी भांति पृथ्वी में उत्तराधिकारी हो कर रहते (60)

اور اگر ہم چاہتے تو تمہاری جگہ پر فرشتے بنا دیتے جو تمہاری طرح زمین میں جانشین ہو کر رہتے (۶۰)

(और जैसा कि तुम्हारी मांग है कि नबी फ़रिश्ता क्यों न बनाया गया था नबी के साथ फ़रिश्ते क्यों न रहते हां यह बात होगी और पृथ्वी पर फ़रिश्ते आएंगे परन्तु वह समय अन्तिम होगा) और वह समय अर्थात फ़रिश्ते आने का समय वास्तव में महा प्रलय की स्मृति होगी बस तुम उसमें भ्रम न करो और मेरी बात मानों यही सीधा मार्ग है (61)

(اور جیسا کہ تمہارا مطالبہ ہے کہ نبی فرشتہ کیوں نہ بنایا گیا یا نبی کے ساتھ فرشتے کیوں نہ رہتے ہاں یہ بات ہوگی اور زمین پر فرشتے آئیں گے لیکن وہ وقت آخر ہوگا) اور وہ وقت یعنی فرشتے آنے کا وقت دراصل قیامت کی نشانی ہے بس تم اس میں شک نہ کرو اور میری بات مانو یہی سیدھا رستہ ہے (۶۱)

नोट- उलमा ने इस आयत का अनुवाद यह किया है कि इब्ने मरयम वास्तव में क्यामत का एक चिन्ह है, अर्थात ईसा को जीवित मान रखा है कि वह क्यामत के निकट आकर मुसलमानों की जीर्ण दशा को ठीक कर देंगे, इमाम मेहदी के साथ मिलकर धर्म को अधिपति करेंगे मानों अभी तक धर्म इस्लाम अधिपति नही हुआ जब कि इस्लाम अधिपति ईश्वर ने मुहम्मद स0 के साथ ही कर दिया है जिसका साक्षी कुरआन है और तब ही तो मुहम्मद स0 अन्तिम नबी है,

نوٹ:۔ علماء نے اس آیت کا ترجمہ یہ کیا ہے کہ ابن مریم دراصل قیامت کی ایک نشانی ہے یعنی عیسیٰ کو زندہ مان رکھا ہے اور یہ بھی مان رکھا ہے کہ وہ قیامت کے قریب آکر مسلمانوں کی خراب حالت کو درست کر دیں گے امام مہدی کے ساتھ مل کر دین کو غالب کریں گے گویا ابھی تک دین اسلام غالب نہیں ہوا. جب کہ اسلام کو غالب اللہ نے محمدؐ کے ساتھ ہی کر دیا ہے. جس کا شاہد قرآن ہے. اور تب ہی تو محمد آخری نبی ہیں.

यह आस्था मिथ्या है कि ईसा जीवित है और वह वापस आएंगे इस की विवेचन हो चुकी है जो पढ़ली होगी फ़रिश्तों के आने पर क्या होता है या होगा वह इन आयात में देखो {2:210, 6:8-158, 15:7-8, 25:11-24-30, 30:12-55, 43:62, 7:87, 14:8-9, 25:22-25}

یہ عقیدہ غلط ہے کہ عیسیٰ زندہ ہیں اور وہ واپس آئیں گے اس کی بحث ہو چکی ہے جو پڑھ لی ہوگی. فرشتوں کے آنے پر کیا ہوتا ہے یا ہوگا وہ ان آیات میں دیکھو (۲:۲۱۰؛ ۶:۸،۱۵۸؛ ۱۵:۷،۸؛ ۲۵:۱۱،۲۴،۳۰؛ ۳۰:۱۲،۵۵؛ ۴۳:۶۲؛ ۷:۸۷؛ ۱۴:۸،۹؛ ۲۵:۲۲،۲۵]

धर्म का प्रभुत्व {48:28} वही तो है जिसने अपने रसूल को पथ प्रदर्शन की पुस्तक और धर्म सत्य देकर भेजा ताकि उसको सम्पूर्ण मिथ्या पंथो पर प्रकट अधिपति कर दे और सत्य प्रकट करने के लिए ईश्वर ही प्रयाप्त है देखिए इस आयत में धर्म को अधिपति मुहम्मद स0 के साथ कर दिया और हमारे आलिम मान रहे है कि धर्म को अधिपति करेंगे ईसा वापस आकर क्या उल्टी गंगा बहा रखी है, अन्तिम इमाम नेता की बात क्या है इस पर भी विचार किया जाए ईसा के साथ इमाम भी एक महत्वपूर्ण कार्य करेंगे, परन्तु अन्तिम इमाम कौन है? अन्तिम इमाम हमारे हर घर में सजा हुआ ताकों में रखा है, और ईश्वर से अपवाद कर रहा है कि सितारे डूबते जाते हैं यूं तकदीर मुस्लिम के तेह करके इन्होंने भी किताबे आस्मां रख दी,

دین کا غلبہ (۴۸:۲۸) وہی تو ہے جس نے اپنے رسول کو ہدایت کی کتاب اور دین حق دے کر بھیجا تا کہ اس کو تمام باطل عقیدوں پر ظاہر غالب کر دے اور حق ظاہر کرنے کے لئے اللہ ہی کافی ہے. دیکھئے اس آیت میں دین کو غالب محمد کے ساتھ کر دیا. اور ہمارے عالم مان رہے ہیں کہ دین کو غالب کریں گے عیسیٰ واپس آکر کیا الٹی گنگا بہا رکھی ہے.

آخر امام کی بات کیا ہے اس پر بھی غور کیا جائے عیسیٰ کے ساتھ امام بھی ایک اہم کام کریں گے مگر آخری امام کون ہیں؟ آخری امام ہمارے ہر گھر میں سجا ہوا طاقوں میں رکھا ہے اور اللہ سے شکایت کر رہا ہے کہ ستارے ڈوبتے جاتے ہیں یوں تقدیر مسلم کے. کہ تہہ کر کے انہوں نے بھی کتاب آسماں رکھ دی.

यह कुरआन अन्तिम इमाम है अर्थात पहले मूसा की पुस्तक इमाम थी और अब यह कुरआन अन्तिम इमाम पुस्तक है अन्तिम नबी पर अवतरित हुई है अन्तिम इमाम नेता की खोज करने के लिए दूर न

یہ قرآن آخری امام ہے یعنی پہلے موسیٰ کی کتاب امام تھی اور اب؟ یہ قرآن آخری امام کتاب ہے. آخری نبی پر نازل ہوئی ہے. آخری امام کو تلاش

जाओ और उसकी प्रतीक्षा न करो अपितु ताक से उठा कर पढ़लो और समझ कर व्यवहार करो, निःसंदेह स्थिति ठीक हो जाएगी और इसको न देखा तो हीनता है जो हो रही है,

{46:12} पहले मूसा की पुस्तक इमाम थी और अब यह कुरआन,

और (देखो) ऐसा न हो कि शैतान तुम्हें इस मार्ग से रोक दे क्योंकि वह तुम्हारा खुला शत्रु है (62)

और जब ईसा खुले चिन्ह लेकर आए तो कहने लगे कि मैं तुम्हारे पास युक्ति की (पुस्तक) लेकर आया हूं और इसलिए कि कतिपय बाते जिनमें तुम मत भेद करते हो तुमको समझा दूं तो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानों (63)

निःसंदेह ईश्वर ही मेरा और तुम्हारा रब है अतः उसी की पूजा करो यही सीधा मार्ग है (64)

(इस स्पष्ट आदेश के होते हुए) उनमें विभित्र दल आपस में मतभेद करने लगे पस जिन लोगां ने मत भेद करके (अपने ऊपर) अन्याय किया उनके लिए एक पीड़ा देने वाले दिन का कष्टकारी विकार है (65)

(अब) उन्हें किस बात की प्रतीक्षा है? यही न कि उन पर अचानक क्यामत आजाए और उन्हें सूचना तक न हो (66)

(वह ऐसा भयावह दिन होगा) कि सदाचारीयों के अतिरिक्त सब मित्र एक दूसरे के शत्रु हो जाएंगे (67)

(हम क्यामत के दिन सदाचारीयों से कह देंगे) ऐ मेरे बन्दों! आज तुमको न तो किसी का भय होगा और न दुख (68)

(वह वह लोग होंगे) जो लोग हमारी आयतों पर विश्वास लाए और आज्ञाकारी हो गए (69)

(उनसे कहा जाएगा) कि तुम और तुम्हारे साथी और पत्नीयां सम्मान के साथ स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओ (70)

उनकी सभा में सोने की पलेटे और प्यालों का दौर चलेगा हर वह वस्तु जिसकी हृदय में इच्छा हो और जिससे आंखों को आनन्द प्राप्त हो उपस्थित होगी और तुम उसमें सदैव रहोगे (71)

और यह वही स्वर्ग है जो तुमको तुम्हारे कर्मों के बदले में दाय मं दी गई है (72)

वहां तुम्हारे लिए अधिकता से मेवे उपस्थित हैं जिन्हें तुम खा सकते हो (73)

अपराधी सदैव नर्क के कष्ट में रहेंगे (74)

उनके कष्ट में कभी कमी न होगी वह उसमें निराशा की स्थिति में पड़े रहेंगे (75)

(यह कष्ट स्वयं उनकी अवज्ञा का परिणाम है) हमने उन पर अत्याचार नही किया अपितु वही अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे (76)

वह (नर्क के निरिक्षक को) पुकारेंगे ऐ मालिक! तेरा

کرنے کے لئے دور نہ جاؤ اور اس کا انتظار نہ کرو. بلکہ طاق سے اٹھا کر پڑھلو اور سمجھ کر عمل کرو یقیناً حالت ٹھیک ہو جائے گی. اور اس کو نہ دیکھا تو ذلت ہے جو ہو رہی ہے.

(۴۶:۱۲) پہلے موسیٰ کی کتاب امام تھی اور اب یہ قرآن.

اور (دیکھو) ایسا نہ ہو کہ شیطان تمہیں اس رستے سے روک دے کیوں کہ وہ تمہارا کھلا دشمن ہے (۶۲)

اور جب عیسیٰ کھلی نشانیاں لے کر آئے تو کہنے لگے کہ میں تمہارے پاس دانائی کی (کتاب) لے کر آیا ہوں. اور اس لئے کہ بعض باتیں جن میں تم اختلاف کرتے ہو تم کو سمجھا دوں تو اللہ سے ڈرو اور میرا کہا مانو (۶۳)

بے شک اللہ ہی میرا اور تمہارا رب ہے پس اسی کی عبادت کرو یہی سیدھا رستہ ہے (۶۴)

(اس واضح حکم کے ہوتے ہوئے) ان میں مختلف گروہ آپس میں اختلاف کرنے لگے پس جن لوگوں نے اختلاف کر کے (اپنے اوپر) ظلم کیا ان کے لئے ایک درد ناک دن کی تباہ کن خرابی ہے (۶۵)

(اب) انہیں کس بات کا انتظار ہے؟ یہی نا کہ ان پر اچانک قیامت آجائے اور انہیں خبر تک نہ ہو (۶۶)

(وہ ایسا ہولناک دن ہوگا) کہ پرہیزگاروں کے علاوہ تمام دوست ایک دوسرے کے دشمن ہو جائیں گے (۶۷)

(ہم قیامت کے دن پرہیزگاروں سے کہدیں گے) اے میرے بندو! آج تم کو نہ تو کسی کا خوف ہوگا اور نہ غم (۶۸)

(وہ وہ لوگ ہوں گے) جو لوگ ہماری آیتوں پر ایمان لائے اور فرماں بردار ہو گئے (۶۹)

(ان سے کہا جائے گا) کہ تم اور تمہارے ساتھی اور بیویاں عزت کے ساتھ جنت میں داخل ہو جاؤ (۷۰)

ان کی مجلس میں سونے کی رکابیاں اور پیالوں کا دور چلے گا ہر وہ چیز جس کی دل میں خواہش ہو اور جس سے آنکھوں کو راحت حاصل ہو موجود ہوگی اور تم اُس میں ہمیشہ رہو گے (۷۱)

اور یہ وہی جنت ہے جو تم کو تمہارے اعمال کے بدلے میں میراث کے طور پر دی گئی ہے (۷۲)

وہاں تمہارے لئے کثرت سے میوے موجود ہیں جنہیں تم کھا سکتے ہو (۷۳)

مجرم ہمیشہ دوزخ کے عذاب میں رہیں گے (۷۴)

ان کے عذاب میں کبھی کمی نہ ہوگی وہ اس میں مایوسی کی حالت میں پڑے رہیں گے (۷۵)

(یہ عذاب خود ان کی سرکشی کا نتیجہ ہے) ہم نے ان پر ظلم نہیں کیا بلکہ وہی اپنے اوپر ظلم کر رہے تھے (۷۶)

وہ (دوزخ کے داروغہ کو) پکاریں گے اے مالک! تیرا

रब हमारी समापती ही कर दे तो अच्छा है वह उत्तर देगा तुम्हें सदैव इसी स्थिति में रहना है (77)

رب ہمارا کام تمام ہی کر دے تو اچھا ہے وہ جواب دے گا تمہیں ہمیشہ اسی حالت میں رہنا ہے(۷۷)

हमारे रसूल तुम्हारे पास सत्य लेकर पहुंचे परन्तु तुममें से अधिकांश सत्य को ना पसन्द करते थे (78)

ہمارے رسول تمہارے پاس حق لے کر پہنچے لیکن تم میں سے اکثر حق کو نا پسند کرتے تھے(۷۸)

क्या अनेकेश्वर वादीयों ने किसी चाल का निर्णय कर लिया है? अच्छा तो हम भी फिर एक निर्णय किए लेते है (79)

کیا مشرکوں نے کسی چال کا فیصلہ کر لیا ہے؟ اچھا تو ہم بھی پھر ایک فیصلہ کئے لیتے ہیں(۷۹)

क्या वह लोग यह समझ रहे है कि हम उनकी गुप्त बातों और गुप्त वार्ता को नही सुनते? क्यों नही? अपितु हम सब कुछ सुन रहे है (यही नही अपितु) हमारे फरिश्ते उनके पास ही (उनकी सारी बाते) लिखते जाते है (80)

کیا وہ لوگ یہ سمجھ رہے ہیں کہ ہم ان کی چھپی ہوئی باتوں اور سرگوشیوں کو نہیں سنتے؟ کیوں نہیں؟ بلکہ ہم سب کچھ سن رہے ہیں (یہی نہیں بلکہ) ہمارے فرشتے ان کے پاس ہی (ان کی ساری باتیں) لکھتے جاتے ہیں(۸۰)

ऐ मुहम्मद स० (उन अनेकेश्वर वादीयों का जो यह विचार है कि ईश्वर के सन्तान है यदि वास्तव में) कोई ऐसा हो सकता है कि उसकी सन्तान भी हो तो क्या सब से पहला व्यक्ति मैं हूंगा जो उसकी पूजा करूंगा? (यह नही हो सकता अपितु प्रथम व्यक्ति मैं हूंगा जो उसकी पूजा से इन्कार करूंगा क्योंकि रहमान संतान वाला नही हो सकता इसलिए कोई ईश्वर का पुत्र-पुत्री नही है तुम्हारा विचार ही अनुचित है) (81)

اے محمدؐ (ان مشرکین کا جو یہ خیال ہے کہ اللہ کے اولاد ہے اگر ایسا ہوتا تو) ان سے کہو اگر کوئی رحمان ایسا ہو سکتا ہے کہ اس کی اولاد بھی ہو تو کیا سب سے پہلا شخص میں ہوں گا جو اس کی عبادت کروں گا (یہ نہیں ہو سکتا بلکہ اوّل شخص میں ہوں گا جو اس کی عبادت سے انکار کروں گا کیونکہ رحمٰن اولا د والا نہیں ہو سکتا اس لئے کوئی اللہ کا بیٹا بیٹی نہیں ہیں تمہارا خیال ہی باطل ہے)(۸۱)

नोट- वाज़ह रहे कि अगर आबिदीन को अबद याअबुदू ही से फाइल माना जाये तो उसके अर्थ फरमाबरदार के होंगे, इस रूप में इस वाक्य निश्चित का अर्थ यह होगा कि अगर रहमान का कोई बेटा हो सकता है तो क्या मैं सबसे पहले उसका फरमाबरदार रहूंगा? लेकिन चूंकि उसका कोई बेटा हो ही नही सकता इसलिए उस बेटे की फरमाबरदारी करने का सवाल ही पैदा नही होता.

نوٹ:۔ واضح رہے کہ اگر عابدین کو عبد یعْبُدُ ہی سے فاعل مانا جائے تو اس کے معنٰی فرماں بردار کے ہونگے۔ اس شکل میں اس جملہ شرطیہ کا مفہوم یہ ہوگا یا اگر رحمٰن کا کوئی بیٹا ہو سکتا ہے تو کیا میں سب سے پہلے اس کا فرماں بردار رہوں گا؟ لیکن چونکہ اس کا کوئی بیٹا ہو ہی نہیں سکتا اس لئے اس بیٹے کی فرماں برداری کرنے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا۔

वह लोग जैसी अनेकेश्वरवाद की बातें कर रहे है उससे आकाश पृथ्वी और सिंहासन का स्वामी पवित्र है (82)

وہ لوگ جیسی شرک کی باتیں کر رہے ہیں اس سے آسمان وزمین اور عرش کا مالک پاک ہے(۸۲)

तो अब उन्हें इसी विवाद और खेल कूद में पड़े रहने दो यहां तक कि जिस दिन का उनसे वचन किया जाता है उसको देख लें (83)

تو اب انہیں اسی بحث اور کھیل کود میں پڑے رہنے دو یہاں تک کہ جس دن کا ان سے وعدہ کیا جاتا ہے اس کو دیکھ لیں(۸۳)

वही ईश्वर है जिसकी पूजा आकाशों में की जाती है और वही ईश्वर है जिसकी पूजा पृथ्वी में की जाती है उसका कोई कार्य युक्ति से रहित नही है वह सब कुछ जानता है (84)

وہی اللہ ہے جس کی عبادت آسمانوں میں کی جاتی ہے اور وہی اللہ ہے جس کی عبادت زمین میں کی جاتی ہے اس کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں وہ سب کچھ جانتا ہے(۸۴)

और वह बहुत अधिकता वाला है जिसके पास आकाशों और पृथ्वी और जो कुछ इन दोनों में है सब उसका राज्य है और उसी को महाप्रलय का ज्ञान है और उसी की ओर तुम सबको लोटकर जाना है (85)

اور وہ بہت بابرکت ہے جس کے پاس آسمانوں اور زمین اور جو کچھ ان دونوں میں ہے سب اس کی بادشاہت ہے اور اسی کو قیامت کا علم ہے اور اسی کی طرف تم سب کو لوٹ کر جانا ہے(۸۵)

वह लोग ईश्वर को छोड़ कर जिनको पुकारते है वह अनुशंसा का कुछ भी अधिकार नही रखते, हां वह लोग अनुशंसा कर सकते है? जो ज्ञान व विश्वास के साथ सत्य का साक्ष्य दे (86)

وہ لوگ اللہ کو چھوڑ کر جن کو پکارتے ہیں وہ شفاعت کا کچھ بھی اختیار نہیں رکھتے ہاں وہ لوگ شفاعت کر سکتے ہیں؟ جو علم و یقین کے ساتھ حق کی گواہی دیں(۸۶)

नोट- अर्थात उनको सब कुछ ज्ञात हो कि इस बन्दे ने जिसकी हम अनुशंसा करना चाहते है वह सदाचारी है उसके प्रकट और गुप्त से हम अवगत है परन्तु ऐसा नही है ऐसा तो केवल ईश्वर को ही ज्ञात है वह सब कुछ जानता है, फिर कैसी अनुशंसा? अतः कोई अनुशंसा नही कर्म

نوٹ:۔ یعنی ان کو سب کچھ معلوم ہو کہ اس بندے نے جس کی ہم شفاعت کرنا چاہتے ہیں وہ نیک ہے اس کے ظاہر اور چھپے سے ہم واقف ہیں۔ مگر ایسا نہیں ہے ایسا تو صرف اللہ کو ہی معلوم ہے۔ وہ سب کچھ جانتا ہے پھر کیسی شفاعت؟ اس لئے

पत्र ही निर्णय कर देगा.

کوئی شفاعت نہیں اعمال نامہ ہی فیصلہ کردے گا۔

और यदि तुम उनसे ज्ञात करो कि उनको किसने पैदा किया है तो कह देंगे कि ईश्वर ने तो फिर वह कहां बहके फिरते हैं (87)

اور اگر تم ان سے پوچھو کہ ان کو کس نے پیدا کیا ہے تو کہدیں گے کہ اللہ نے تو پھر وہ کہاں بہکے پھرتے ہیں (۸۷)

और ईश्वर को रसूल के इस कथन की सूचना है कि ऐ ईश्वर वह ऐसे लोग हैं कि विश्वास नहीं लाते (88)

اور اللہ کو رسول کے اس قول کی خبر ہے کہ اے پروردگار وہ ایسے لوگ ہیں کہ ایمان نہیں لاتے (۸۸)

ऐ रसूल उनसे मुख फैर लो और यह कह कर (कि मेरा तुमको) सलाम है (उनसे पृथक हो जाओ) शीघ्र ही उनको (अपनी अवज्ञाकारी का फल) ज्ञात हो जाएगा (89)

اے رسول ان سے منہ پھیر لو اور یہ کہہ کر (کہ میرا تم کو) سلام ہے (ان سے الگ ہو جاؤ) عنقریب ان کو (اپنی سرکشی کا انجام) معلوم ہو جائیگا (۸۹)

सूरत दुख्खान मक्की 44

سورۃ الدخان مکی (۴۴)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

हामीम ऐ मुहम्मद स0 (1) यह स्पष्ट पुस्तक साक्षी है कि (2)

حم! اے محمد (۱) یہ واضح کتاب شاہد ہے (۲)

कि हमने उसको मंगल व सम्पन्नता वाली रात्री में (अर्थात जो कुफ्र का अन्धकार था हमारी विशेष महिमा से वह अन्धकार सम्पन्नता बरकत हो गई) अवतरित किया है और इसलिए अवतरित किया है कि लोगों को (दुष्कर्मों के परिणाम से) सावधान कर दें (3) {97:2-1}

کہ ہم نے اس کو خیر و برکت والی رات میں (یعنی جو کفر کی تاریکی تھی ہماری خاص قدرت سے وہ تاریکی برکت ہو گئی) نازل کیا ہے اور اس لئے نازل کیا ہے کہ لوگوں کو (اعمال بد کے نتائج سے) خبردار کردیں (۳) [۹۷:۱-۲]

और (इस पुस्तक जो निर्णय करने वाली है) इसमें हर युक्ति के कार्य का निर्णय (अर्थात करने की विधि) है इसमें उन सब कामों को जो युक्ति पर आधारित है व्यर्थ कार्यों से पृथक कर दिया है (4) {2:185}

اور (اس کتاب جو فرقان ہے) اس میں ہر حکمت کے کام کا فیصلہ (یعنی کرنے کا طریقہ) ہے اس میں ان تمام کاموں کو جو حکمت پر مبنی ہیں غلط امور سے الگ کردیا ہے (۴) [۲:۱۸۵]

आदेश होता है हमारे पास से निःसंदेह हम भेजने वाले हैं (5)

حکم ہوتا ہے ہمارے پاس سے بے شک ہم بھیجنے والے ہیں (۵)

यह तुम्हारे ईश्वर की कृपा से है वह तो सुनने वाला जानने वाला है (6)

یہ تمہارے رب کی رحمت سے ہے وہ تو سننے والا جاننے والا ہے (۶)

वह आकाशों और पृथ्वी और जो कुछ उन दोनों में है सबका स्वामी है यदि तुम लोग विश्वास करने वाले हो (7)

وہ آسمانوں اور زمین اور جو کچھ ان دونوں میں ہے سب کا مالک ہے اگر تم لوگ یقین کرنے والے ہو (۷)

(रहमान का विरोधी कहता है कि) ईश्वर नहीं है (तो सुनो) निःसंदेह वह अर्थात ईश्वर है (और वह कैसा है यह भी सुनो) वही जिलाता है और मारता है वही तुम्हारा और तुम्हारे पहले पूर्वजों का रब है (8)

(منکر رحمٰن کہتا ہے کہ) اللہ نہیں ہے (تو سنو) یقیناً وہ یعنی اللہ ہے (اور وہ کیسا ہے یہ بھی سنو) وہی جلاتا ہے اور مارتا ہے وہی تمہارا اور تمہارے پہلے بزرگوں کا رب ہے (۸)

(इन कार्यों के देखने के बाद भी) वह भ्रम शंका में खेल रहे हैं (9)

(ان کاموں کے دیکھنے کے بعد بھی) وہ شک میں کھیل رہے ہیں (۹)

तो उस दिन की प्रतीक्षा करो जब आकाश में हर ओर धुंवा हो जाएगा अर्थात धुंवा लाएगा (10)

تو اس دن کا انتظار کرو جب آسمان میں ہر طرف دھواں ہو جائے گا یعنی دھواں لائے گا (۱۰)

और लोगों पर छा जाएगा वह बड़ा पीड़ा दायक होगा (11)

اور لوگوں پر چھا جائے گا وہ بڑا دردناک عذاب ہوگا (۱۱)

(जिसे देख कर सत्य के विरोधी कहेंगें) ऐ हमारे रब! हम पर से यह कष्ट टाल दे हम आस्था ले आए (12)

(جسے دیکھ کر منکرین حق کہیں گے) اے ہمارے رب! ہم پر سے یہ عذاب ٹال دے ہم ایمان لے آئے (۱۲)

(परन्तु) उस समय का याद करना उनके किस काम आएगा (अर्थात अन्तिम समय का विश्वास लाना बेसूद होगा) यद्यपि उनके पास दुनिया में रसूल आ चुके थे जो खुले आदेश लेकर आए थे और वर्णन करते थे (13)

(لیکن) اس وقت کا یاد کرنا ان کے کس کام آئے گا (یعنی آخر وقت کا ایمان لانا بے سود ہوگا) حالانکہ ان کے پاس دنیا میں رسول آ چکے تھے جو کھلے احکام لے کر آئے تھے اور بیان کرتے تھے (۱۳)

फिर भी उन लोगों ने उनसे मुख फैर लिया और कहने लगे यह तो सिखाया पढ़ाया दिवाना है (14)

پھر بھی ان لوگوں نے ان سے منہ پھیر لیا اور کہنے لگے یہ تو سکھایا پڑھایا دیوانہ ہے (۱۴)

यदि हम थोड़े दिनों को कष्ट टाल देते हैं तो तुम कुफ्र करने लगते हो (15)

اگر ہم تھوڑے دنوں کو عذاب ٹال دیتے ہیں تو تم پھر کفر کرنے لگتے ہو (۱۵)

जिस दिन हम बड़ी कठोर पकड़ पकड़ेंगे उस दिन

جس دن ہم بڑی سخت پکڑ پکڑیں گے اس روز ان سے بدلہ

उनसे बदला लेकर छोड़ेंगे (16) {3:93}

निःसंदेह उनसे पहले हमने फ़िरऔन की जाति की परिक्षा की जिनके पास ईश्वर का प्रतिष्ठावान रसूल आया था (17)

उसने उनसे कहा कि ईश्वर के बन्दों (अर्थात बनी इसराईल) को मेरे समर्पण कर दो मैं तुम्हारा विश्वासनीय ईशदूत हूं (18)

और ईश्वर के सामने उद्दण्डता न करो मैं तुम्हारे पास खुला तर्क लेकर आया हूं (19)

और इस बात से कि तुम मुझे संगसार करो मैं अपने और तुम्हारे रब से शरण ले चुका हूं (20)

और यदि तुम मुझ पर विश्वास नहीं लाएं तो मुझ से अलग हो जाओ (21)

फिर उन्होंने अपने रब से प्रार्थना की कि यह सब लोग पापी हैं (22)

(तब ईश्वर ने कहा) मेरे बन्दों को रातों रात लेकर चल दो और फ़िरऔन तुम्हारा पीछा करेगा (23)

और जो दरया तेरे लिए स्थिर कर दिया गया है उसे छोड़ अर्थात स्थिर दरिया से पार हो जा (जो शान्ति के साथ तेरी प्रतीक्षा कर रहा है) और उनकी सब सैना तल्लीन हो जाएगी (24)

वह लोग बहुत से उपवन और स्रोत छोड़ गए (25)

और खेतियां और उत्तम भवन (26)

और विश्राम की वस्तुएं जिनमें वह विश्राम किया करते थे (27)

इसी प्रकार हुआ और हमने दूसरे लोगों को उनका स्वामी बना दिया (28)

सो उन पर न तो आकाश व पृथ्वी रोए और न उनको छूट ही दी गई (29)

और निःसंदेह हमने बनी इसराईल को हीनता के कष्ट से मुक्ति दी (30)

जो फ़िरऔन की ओर से हो रही थी निःसंदेह वह उद्दण्ड और सीमा से निकला हुआ था (31)

और हमने बनी इसराईल की योग्यता को जानते हुए (उस समय की) सब जातियों पर श्रेष्ठता दी थी (32)

और हमने उनको ऐसे चिन्ह दिए थे जिनमें खुली परिक्षा थी ताकि आस्तिकों के गुण प्रकट हो जाएं (33)

वह लोग यह कहते हैं (34)

कि हमें केवल पहली बार मरना है और फिर उठना नहीं (35)

यदि तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादा को जीवित कर लाओ (36)

भला वह अच्छे हैं या तुब्बा की जाति और वह लोग जो उनसे पहले हो चुके हैं हमने उन सब को वध कर दिया निःसंदेह वह पापी थे (37)

और हमने आकाश और पृथ्वी को और जो कुछ

لے کر چھوڑیں گے(۱۶)[۹۳:۳]

یقیناً ان سے پہلے ہم قوم فرعون کو آزما چکے ہیں جن کے پاس اللہ کا با عزت رسول آیا تھا(۱۷)

اس نے ان سے کہا کہ اللہ کے بندوں (یعنی بنی اسرائیل کو میرے حوالے کر دو میں تمہارا امانت دار رسول ہوں (۱۸)

اور اللہ کے سامنے سرکشی نہ کرو میں تمہارے پاس کھلی دلیل لے کر آیا ہوں(۱۹)

اور اس بات سے کہ تم مجھے سنگسار کرو میں اپنے اور تمہارے رب سے پناہ لے چکا ہوں (۲۰)

اور اگر تم مجھ پر ایمان نہیں لائے تو مجھ سے الگ ہو جاؤ(۲۱)

پھر انہوں نے اپنے رب سے دعا کی کہ یہ سب لوگ گنہگار ہیں (۲۲)

(تب اللہ نے کہا) میرے بندوں کو راتوں رات لے کر چل دو اور فرعون تمہارا پیچھا کرے گا (۲۳)

اور جو دریا تیرے لئے ساکن کر دیا گیا ہے اسے چھوڑ یعنی ساکن دریا سے پار ہو جا (جو سکون کے ساتھ تیرا انتظار کر رہا ہے) اور ان کا سارا لشکر غرق ہو جائے گا (۲۴)

وہ لوگ بہت سے باغ اور چشمے چھوڑ گئے (۲۵)

اور کھیتیاں اور نفیس مکان (۲۶)

اور آرام کی چیزیں جن میں وہ آرام کیا کرتے تھے (۲۷)

اسی طرح ہوا اور ہم نے دوسرے لوگوں کو ان کا مالک بنا دیا (۲۸)

سو ان پر نہ آسمان و زمین روئے اور نہ ان کو مہلت ہی دی گئی (۲۹)

اور بے شک ہم نے بنی اسرائیل کو ذلت کے عذاب سے نجات دی (۳۰)

جو فرعون کی طرف سے ہو رہی تھی بے شک وہ سرکشی اور حد سے نکلا ہوا تھا (۳۱)

اور ہم نے بنی اسرائیل کی قابلیت کو جانتے ہوئے (اس وقت کی) تمام قوموں پر برتری دی تھی (۳۲)

اور ہم نے ان کو ایسی نشانیاں دی تھیں جن میں صریح آزمائش تھی تاکہ مومنانہ صفات ظاہر ہو جائیں (۳۳)

وہ لوگ یہ کہتے ہیں (۳۴)

کہ ہمیں صرف پہلی بار مرنا ہے اور پھر اُٹھنا نہیں (۳۵)

اگر تم سچے ہو تو ہمارے باپ دادا کو زندہ کر لاؤ (۳۶)

بھلا وہ اچھے ہیں یا تبع کی قوم اور وہ لوگ جو ان سے پہلے ہو چکے ہین ہم نے ان سب کو ہلاک کر دیا بے شک وہ گنہگار تھے (۳۷)

اور ہم نے آسمانوں اور زمین کو اور جو کچھ اُن کے درمیان

उनके मध्य में है इस प्रकार नही बनाया कि हम व्यर्थ कार्य करने वाले हों अर्थात खेल (38)

और जो बनाया है हमने उन दोनों को निःसंदेह सत्य के साथ अर्थात एक युक्ति के साथ बनाया है परन्तु अधिक लोग नही जानते (39)

निःसंदेह उन सबके उठने का समय निर्णय का दिन है (अर्थात क्यामत) (40)

उस दिन कोई मित्र किसी मित्र के कुछ काम न आएगा और न उनको सहायता मिलेगी (41)

परन्तु जिस पर ईश्वर ही दया करे निःसंदेह वह सब पर अधिपति अतयन्त दया वाला है (42)

निःसंदेह अप्रिय झगड़ा क्रोध (43)

यह पापीयों का भोजन अर्थात अवैध विधि से प्राप्त किया हुआ खाना जिसको वह निगलते है (44)

जिस प्रकार तांबा खोलता है पापियों के पेट भी ऐसे ही खोलते रहते है क्रोध के कारण भी और अनुचित कार्य करने को भी (45)

उनको ऐसा आवेश आता रहता है अनुचित कार्य करने को जैसे पानी गर्म होकर आवेश करता है (46) {89:11से14;37:62से67;56:51से56}

दुनिया में जो लोग अनुचित कार्य करते है वह जब क्यामत में उठाए जाएंगे तो उस दिन आदेश होगा कि फरिश्तों इनको पकड़ो और फिर घसीटते हुए नर्क के बीच तक ले जाओ (47) {56:52-56, 37:62से68}

फिर उसके सर पर प्रचण्ड गर्म पानी का कष्ट बहाव (48)

अब स्वाद चख तू बड़ी प्रतिष्ठा वाला और नेता था (49)

यह वही (नर्क) है जिसमें तुम लोग शंका किया करते थे (50)

निःसंदेह (ईश्वर की अवज्ञा से) डरने वाले लोग शान्ति के स्थान में होंगे (51)

उपवनों और स्रोतों में (52)

हरीर का बारीक और मोटा वस्त्र पहन कर एक दूसरे के सामने बैठे होंगे (53) {18:34;58:1;61:4;84:14

वहां ऐसे ही सुख होंगे और हम उनके साथी ऐसे बना देंगे जो साफ सुथरे होंगे और अच्छी बातें करेंगे (54)

वहां वह सन्तोष से हर प्रकार के स्वादिष्ट मेवों की मांग करेंगे (55)

और दुनिया की पहली मृत्यू के बाद मौत का स्वाद नही चखेंगे और ईश्वर उनको नर्क के कष्ट से बचा लेगा (56)

यह तुम्हारे ईश्वर का कृपा दया है यही तो बड़ी सफलता है (57)

हमने इस कुरआन को आपकी भाषा में सरल कर दिया है कि लोग शिक्षा प्राप्त करें (58)

अतः आप भी प्रतीक्षा करो वह भी प्रतीक्षा कर रहें है परिणाम का (59)

میں ہے اس طور پر نہیں بنایا کہ ہم عمل عبث کرنے والے ہوں یعنی کھیل (۳۸)

اور جو بنایا ہے ہم نے ان دونوں کو یقیناً حق کے ساتھ یعنی ایک نظام کے ساتھ بنایا ہے لیکن اکثر لوگ نہیں جانتے (۳۹)

بے شک ان سب کے اٹھنے کا وقت فیصلے کا دن ہے (یعنی قیامت) (۴۰)

اس روز کوئی دوست کسی دوست کے کچھ کام نہ آئے گا اور نہ ان کو مدد ملے گی (۴۱)

مگر جس پر اللہ ہی رحم کرے بے شک وہ سب پر غالب نہایت رحم والا ہے (۴۲)

بے شک ناپسندیدہ جھگڑا غصہ (۴۳)

یہ گنہگار کا رزق یعنی ناجائز طریقے سے حاصل کیا ہوا کھانا جس کو وہ نگلتے ہیں (۴۴)

جس طرح تانبا کھولتا ہے گنہگاروں کے پیٹ بھی ایسے ہی کھولتے رہتے ہیں مارے غصے کے بھی اور غلط کام کرنے کو بھی (۴۵)

ان کو ایسا جوش آتا رہتا ہے غلط کام کرنے کو جیسے پانی گرم ہو کر جوش کرتا ہے (۴۶) [۸۹:۱۱ سے ۱۴؛ ۳۷:۶۲ سے ۶۷؛ ۵۶:۵۱ سے ۵۶]

دنیا میں جو لوگ غلط کام کرتے ہیں وہ جب قیامت میں اٹھائے جائیں گے تو اس روز حکم ہوگا کہ فرشتو ان کو پکڑو اور پھر گھسیٹتے ہوئے دوزخ کے بیچوں بیچ تک لے جاؤ (۴۷) [۵۶:۵۲،۵۶]

پھر اس کے سر پر سخت گرم پانی کا عذاب بہاؤ (۴۸)

اب مزہ چکھ تو بڑی عزت والا اور سردار ہے (۴۹)

یہ ہی (دوزخ) ہے جس میں تم لوگ شک کیا کرتے تھے (۵۰)

بے شک (اللہ کی نافرمانی سے) ڈرنے والے لوگ امن کے مقام میں ہوں گے (۵۱)

باغوں اور چشموں میں (۵۲)

حریر کا باریک اور موٹا لباس پہن کر ایک دوسرے کے سامنے بیٹھے ہوں گے (۵۳) [۱۸:۳۴؛ ۵۸:۱؛ ۶۱:۴؛ ۸۴:۱۴]

وہاں ایسے ہی عیش ہوں گے اور ہم ان کے ساتھی ایسے بنا دیں گے جو صاف ستھرے ہوں گے اور اچھی باتیں کریں گے (۵۴)

وہاں وہ اطمینان سے ہر طرح کے لذیذ میوے طلب کریں گے (۵۵)

اور دنیا کی پہلی موت کے بعد موت کا مزہ نہیں چکھیں گے اور اللہ ان کو دوزخ کے عذاب سے بچالے گا (۵۶)

یہ تمہارے پروردگار کا فضل ہے یہی تو بڑی کامیابی ہے (۵۷)

ہم نے اس قرآن کو آپ کی زبان میں آسان کر دیا ہے کہ لوگ نصیحت حاصل کریں (۵۸)

پس آپ بھی انتظار کرو وہ بھی انتظار کر رہے ہیں نتیجے کا (۵۹)

सूरतुल जासिया मक्की 45

سورۃ الجاثیہ۔مکی (۴۵)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

हामीम ऐ मुहम्मद स0! (1) इस पुस्तक का अवतरित किया जाना ईश्वर की ओर से है, जो सब पर अधिपति और ज्ञानी है (2)

حٰم ۔اے محمدؐ! (۱) اس کتاب کا نازل کیا جانا اللہ کی طرف سے ہے جو سب پر غالب اور دانا ہے (۲)

निःसंदेह आकाशों और पृथ्वी में धर्म वालों के लिए चिन्ह है (3)

بے شک آسمانوں اور زمین میں ایمان والوں کے لئے نشانیاں ہیں (۳)

और स्वयं तुम्हारी रचना में भी और जानवरों में भी जिनको वह फैलाता है विश्वास करने वालों के लिए चिन्ह है (4) {27:82, 35:28}

اور خود تمہاری پیدائش میں بھی اور جانوروں میں بھی جن کو وہ پھیلاتا ہے یقین کرنے والون کے لئے نشانیاں ہیں (۴) [۲۷:۸۲، ۳۵:۲۸]

और रात दिन की विभिन्नता में और उस जीविका में (अर्थात वर्षा में) जो आकाश से बरसाता है फिर उससे मृतक भूमि को जीवित करके हरित कर देता है और वायू के विभिन्न दिशा चलने में चिन्ह है बुद्धि वालों के लिए (5)

اور رات دن کے اختلاف میں اور اس رزق میں (یعنی بارش میں) جو آسمان سے برساتا ہے پھر اس سے مردہ زمین کو زندہ کر کے سرسبز وشاداب کر دیتا ہے ہے اور ہواؤں کے مختلف سمت چلنے میں نشانیاں ہیں عقل والوں کے لئے (۵)

यह ईश्वर की आयतें है जो हम तुम को पढ़ कर सुनाते है सत्य के साथ (अर्थात आपके हृदय पर प्रेषण करते हैं) ईश्वर की इन आयतों के बाद किस बात पर विश्वास लाएंगे (6)

یہ اللہ کی آیتیں ہیں جو ہم تم کو پڑھ کر سناتے ہیں حق کے ساتھ (یعنی آپ کے دل پر القا کرتے ہیں) اللہ کی ان آیتوں کے بعد کس بات پر ایمان لائیں گے (۶)

हर झूटे पापी के लिए विनाश है (7)

ہر جھوٹے گنہگار کے لئے تباہی ہے (۷)

जिसके सामने ईश्वर की आयते पढ़ी जाती है जिन्हें वह सुनता है फिर दंभी घमण्ड के साथ (अपने कुफ्र पर) इस प्रकार अड़ा रहता है मानों उसने सुना ही नही सो ऐसे व्यक्ति को दुख देने वाले दण्ड की सूचना दो (8)

جس کے سامنے اللہ کی آیتیں پڑھی جاتی ہیں جنہیں وہ سنتا ہے پھر متکبرانہ غرور کے ساتھ (اپنے کفر پر) اس طرح اڑا رہتا ہے گویا اس نے سنا ہی نہیں. سو ایسے شخص کو دکھ دینے والے عذاب کی خبر دو (۸)

और जब हमारी आयतों में से किसी आयत की सूचना पा लेता है तो उनका उपहास उड़ाता है ऐसे लोगों के लिए अपमानित करने वाला कष्ट है (9)

اور جب ہماری آیتوں میں سے کسی آیت کی خبر پا لیتا ہے تو ان کا مذاق اڑاتا ہے ایسے لوگوں کے لئے ذلیل کرنے والا عذاب ہے (۹)

(यही नहीं अपितु उससे बढ़कर) उनके आगे नर्क है वह दुनिया में जैसे कुछ कर्म करते रहे है कुछ भी उनके काम न आएंगे और न वह (अभिभावक) ही उनके कुछ काम आएंगे जिन्हें उन लोगों ने ईश्वर को छोड़कर मित्र बना रखा है उनके लिए बड़ा कष्ट है (10)

(یہی نہیں بلکہ اس سے بڑھ کر) ان کے آگے جہنم ہے وہ دنیا میں جیسے کچھ کام کرتے رہے ہیں کچھ بھی ان کے کام نہ آئیں گے اور نہ وہ (سرپرست) ہی ان کے کچھ کام آئیں گے جنہیں ان لوگوں نے اللہ کو چھوڑ کر اولیا بنا رکھا ہے ان کے لئے بڑا عذاب ہے (۱۰)

यह कुरआन शिक्षा की पुस्तक है (जो इसे समझ कर पढ़ेगा वह जीवन का सीधा मार्ग पाएगा) और जिन लोगों ने अपने रब की आयतो से इन्कार किया (और अपने कुफ्र पर अड़े रहे) दुख देने वाले कष्ट की यातना है (11) {2:285, 3:164, 1:6}

یہ قرآن ہدایت کی کتاب ہے (جو اسے سمجھ کر پڑھے گا وہ زندگی کا سیدھا راستہ پائے گا) اور جن لوگوں نے اپنے رب کی آیتوں سے انکار کیا (اور اپنے کفر پر اڑے رہے) انہیں دردناک عذاب کی سزا ہے (۱۱) [۲:۲۸۵، ۳:۱۶۴، ۱:۶]

वह ईश्वर ही तो है जिसने समुद्र को तुम्हारे लिए बैगार में लगा दिया है अर्जित कर रखा है उसके आदेश से उसमें जलयान चले और तुम (दूर के देशों में व्यापार और आखेट के द्वारा) ईश्वर का कृपा दया खोजो और उसी की आज्ञाकारी करो(12)

وہ اللہ ہی تو ہے جس نے سمندر کو تمہارے لئے بیگار میں لگا رکھا ہے فراہم کر رکھا ہے اس کے حکم سے اس میں جہاز چلیں اور تم (دور کے ممالک میں تجارت کے ذریعہ اور شکار سے) اللہ کا فضل تلاش کرو اور اس کی فرماں برداری کرو (۱۲)

(यही नही अपितु) उसने आकाशों और पृथ्वी की सम्पूर्ण वस्तुओं को तुम्हारे लिए (अपने आदेश से) काम पर लगा दिया है अर्थात बैगार में (यह सारी

(یہی نہیں بلکہ) اس نے آسمانوں اور زمین کی تمام چیزوں کو تمہارے لئے (اپنے حکم سے) کام پر لگا دیا ہے یعنی

शिल्पशाला इसी लिए है कि मानवता की पूर्ती के लिए इससे लाभ प्राप्त करें) विचार मनन करने वालों के लिए इसमें (ईश्वर की प्रभुता की बड़ी) स्मृतियां है (13)

بیگار میں (یہ سارا کارخانہ اسی لئے ہے کہ انسان تکمیل انسانیت کے لئے اس سے فائدہ حاصل کرے) غور وفکر کرنے والوں کے لئے اس میں (اللہ کی قدرت کی بڑی) نشانیاں ہیں (۱۳)

(ऐ रसूल) विश्वास वालों से कहो कि जो लोग ईश्वर की ओर से निश्चित (कष्ट के लिए या दुषकर्मों के बदले के लिए निश्चित है) दिनों से नही डरते उनको क्षमा करें ताकि स्वयं ईश्वर उन लोगों को उनके कर्मों का बदला दे (14)

(اے رسول) ایمان والوں سے کہو کہ جو لوگ اللہ کی طرف سے مقرر (عذاب کے لئے یا اعمال کے بدلے کے لئے مقرر ہیں) دنوں سے نہیں ڈرتے ان سے درگزر کریں تاکہ خود اللہ ان لوگوں کو ان کے اعمال کا بدلہ دے (۱۴)

जो कोई सत्कर्म करेगा अपने ही लिए करेगा (अर्थात उस सत्कर्म का फल दूसरे को न मिलेगा इसी प्रकार) जो कोई बुराई करेगा उसका कष्ट भी उसी पर होगा (दूसरे को नही) फिर तुमको एक दिन अपने रब की ओर जाना है (15)

جو کوئی نیکی کرے گا اپنے ہی لئے کرے گا (یعنی اس نیکی کا ثواب دوسرے کو نہ ملے گا اسی طرح) جو کوئی بُرائی کرے گا اس کا وبال بھی اسی پر ہوگا (دوسروں کو نہیں) پھر تم کو ایک روز اپنے رب کی طرف جانا ہے (۱۵)

यह सत्य है कि हमने बनी इसराईल को पुस्तक राज्य और ईशदौत्य प्रदान किया था और पवित्र वस्तुएं प्रदान की थी और (उस काल की) सम्पूर्ण जातियों पर श्रेष्ठता दी थी (16)

یہ حقیقت ہے کہ ہم نے بنی اسرائیل کو کتاب حکومت اور نبوت عنایت کی تھی اور پاکیزہ چیزیں عطا فرمائیں تھیں اور (اس عہد کی) تمام قوموں پر فضیلت دی تھی (۱۶)

और उन्हे धर्म के स्पष्ट और खुले आदेश दिए थे फिर भी उन्होंने आपस में जो मतभेद किया वह (अनभिज्ञता के आधार पर नही अपितु सब कुछ) जानने के बाद आपस की हठ से किया जिन बातों में वह लोग मतभेद करते रहे है तेरा रब उनमें क्यामत के दिन निर्णय कर देगा (17)

اور انہیں دین کے واضح اور کھلے احکام دئے تھے پھر بھی انہوں نے آپس میں جو اختلاف کیا وہ (ناواقفیت کی بنا پر نہیں بلکہ سب کچھ) جاننے کے بعد آپس کی ضد سے کیا۔ جن باتوں میں وہ لوگ اختلاف کرتے رہے ہیں تیرا رب ان میں قیامت کے دن فیصلہ کردے گا (۱۷)

(ऐ मुहम्मद स0! उन सबके बाद) हमने आपको धर्मशास्त्र पर स्थापित किया अर्थात धर्म के विषय के खुले मार्ग पर सो आप इसी मार्ग का अनुकरण करो, और उन लोगों की इच्छाओं का अनुकरण न करना जो कुछ भी नही जानते (18)

(اے محمدؐ ان سب کے بعد) ہم نے آپ کو شریعت پر قائم کیا یعنی امر دین کی کھلی راہ پر سو آپ اسی راہ کی پیروی کرو اور ان لوگوں کی خواہش کی پیروی نہ کرنا جو کچھ بھی نہیں جانتے (۱۸)

वह ईश्वर के सामने तुम्हारे किसी काम नही आएंगे और अत्याचारी लोग एक दूसरे के मित्र होते है और ईश्वर सदाचारीयों का मित्र है (19)

وہ اللہ کے سامنے تمہارے کسی کام نہیں آئیں گے اور ظالم لوگ ایک دوسرے کے دوست ہوتے ہیں اور اللہ پرہیزگاروں کا دوست ہے (۱۹)

यह कुरआन लोगों के लिए ज्ञान की बातें है और जो विश्वास रखते है उनके लिए पथ प्रदर्शन और अनुकम्पा है (20)

یہ قرآن لوگوں کے لئے دانائی کی باتیں ہیں اور جو یقین رکھتے ہیں ان کے لئے ہدایت اور رحمت ہے (۲۰)

जो लोग बुरे काम करते है क्या वह विचार करते है कि हम उनको उन लोगों जैसा कर देंगे जो विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे या उनका जीवन और मृत्यू एक सी होगी? वह जो निर्णय करते है बुरा है (21)

جو لوگ بُرے کام کرتے ہیں کیا وہ خیال کرتے ہیں کہ ہم ان کو ان لوگوں جیسا کردیں گے جو ایمان لائے اور عمل نیک کرتے رہے یا ان کی زندگی اور موت یکساں ہوگی؟ وہ جو فیصلہ کرتے ہیں بُرا ہے (۲۱)

(ईश्वर की महिमा देखो) कि उसने आकाशों और पृथ्वी को युक्ति से रचा (यह कितना विचित्र कार्य है जब वह यह कार्य कर सकता है तो समझ लो) कि हर व्यक्ति अपने कर्मों का फल पाए और उनपर अन्याय न किया जाए (22)

(اللہ کی قدرت دیکھو) کہ اس نے آسمانوں اور زمین کو حکمت سے پیدا کیا (یہ کتنا پیچیدہ کام ہے جب وہ یہ کام کرسکتا ہے تو سمجھ لو) کہ ہر شخص اپنے اعمال کا بدلہ پائے اور ان پر ظلم نہیں کیا جائے گا (۲۲)

फिर क्या आपने कभी उस व्यक्ति की दशा पर विचार किया जिसने अपने जी की इच्छा को अपना देवता बना लिए और जानते बूझते हुए भी भ्रष्ट हो रहा है तो ईश्वर के नियम ने भी उसको पथ भ्रष्ट

پھر کیا آپ نے کبھی اس شخص کے حال پر غور کیا جس نے اپنی خواہش نفس کو اپنا معبود بنالیا اور جانتے بوجھتے ہوئے بھی گمراہ ہورہا ہے تو اللہ کے قانون نے بھی اس کو گمراہ کردیا

कर दिया, और उनके कानों और हृदय पर मोहर लगा दी, और उसकी आंखो पर अवरण डाल दिया, अब ईश्वर के सिवा उसको कौन राह पर ला सकता है तो क्या तुम शिक्षा नहीं पकड़ते? (23)

और कहते है कि हमारा जीवन तो केवल दुनिया ही का है कि यही मरते और जीते है और हमें तो काल मार देता है और उनको उसका कुछ ज्ञान नही केवल भ्रम से काम लेते है (24)

और जब उनके सामने हमारी खुली आयते पढ़ी जाएंगी तो उनकी यही उक्ति होगी कि यदि तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादा को जीवित कर लाओ (25)

कहदो कि ईश्वर ही तुमको जीवित करता है फिर वही तुमको मृत्यू देता है फिर तुम क्यामत के दिन जिस (के आने) में कुछ शंका नही वह तुमको एकत्र करेगा, परन्तु बहुत से लोग नही जानते (26)

और आकाशों और पृथ्वी का राज्य ईश्वर ही का है और जिस दिन क्यामत स्थापित होगी उस दिन व्यर्थ वाले हानी में पड़ जाएंगे (27)

और तुम हर एक दल को देखोगे कि घुटनों के बल बैठा होगा और हर एक दल अपनी कर्म पुस्तक की ओर बुलाया जाएगा जो कुछ तुम करते रहे हो आज तुमको उसका बदला दिया जाएगा (28)

यह हमारी पुस्तक तुम्हारे विषय में सच सच वर्णन कर देगी जो जो तुम किया करते थे हम लिखवाते जाते थे, (29) {75:16-17-18}

तो जो लोग विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे उनका रब उन्हें अपनी अनुकम्पा में प्रविष्ट करेगा यही खुली सफलता है (30)

परन्तु जिन्होंने कुफ्र किया (कहा जाएगा) भला क्या हमारी आयतें तुमको पढ़ कर सुनाई नही जाती थी? परन्तु तुमने घमण्ड किया और तुम अवज्ञाकारी लोग थे (31)

और जब कभी कहा जाता कि ईश्वर का वचन सत्य है और क्यामत में कुछ शंका नही तो तुम कहते थे हम नही जानते कि क्यामत क्या है हम उस को केवल कालपनिक समझते हैं और हमें विश्वास नही आता (32)

और उनके कर्मों की बुराईयां उन पर प्रकट हो जाएंगी और जिसकी वह हंसी उड़ाते थे वह उनको आ घेरेगा (33)

और कहा जाएगा जिस प्रकार तुमने इस दिन के आने को भुला रखा था उसी प्रकार आज हमने तुम्हें भुला दिया और तुम्हारा स्थान नर्क है और कोई तुम्हारा सहायक नही (34)

यह इसलिए कि तुमने ईश्वर की आयतों को उपहास बना रखा था और दुनिया के जीवन ने तुम्हें धोके में डाल रखा था सो आज वह लोग न नर्क से निकाले जाएंगे और न उनका पश्चाताप स्वीकार किया जाएगा (35)

अतः ईश्वर ही के लिए हर प्रकार की प्रशंसा है

اوران کے کانوں اور دل پر مہر لگا دی اور اس کی آنکھوں پر پردہ ڈال دیا. اب اللہ کے سوا اس کو کون راہ پر لا سکتا ہے تو کیا تم نصیحت نہیں پکڑتے؟ (۲۳)

اور کہتے ہیں کہ ہماری زندگی تو صرف دنیا ہی کی ہے کہ یہیں مرتے اور جیتے ہیں اور ہمیں تو زمانہ مار دیتا ہے اور ان کو اس کا کچھ علم نہیں صرف ظن سے کام لیتے ہیں (۲۴)

اور جب ان کے سامنے ہماری کھلی آیتیں پڑھی جائیں گی تو ان کی یہی حجت ہوگی کہ کہ اگر تم سچے ہو تو ہمارے باپ دادا کو زندہ کر لاؤ (۲۵)

کہہ دو کہ اللہ ہی تم کو جان بخشتا ہے پھر وہی تم کو موت دیتا ہے پھر تم قیامت کے روز جس (کے آنے) میں کچھ شک نہیں وہ تم کو جمع کرے گا لیکن بہت سے لوگ نہیں جانتے (۲۶)

اور آسمانوں اور زمین کی بادشاہت اللہ ہی کی ہے اور جس روز قیامت قائم ہوگی اس روز اہل باطل نقصان میں پڑ جائیں گے (۲۷)

اور تم ہر ایک فرقے کو دیکھو گے کہ گھٹنوں کے بل بیٹھا ہوگا اور ہر ایک جماعت اپنی کتاب اعمال کی طرف بلائی جائے گی جو کچھ تم کرتے رہے ہو آج تم کو اس کا بدلہ دیا جائے گا (۲۸)

یہ ہماری کتاب تمہارے بارے میں سچ سچ بیان کر دے گی جو جو کچھ تم کیا کرتے تھے ہم لکھواتے جاتے تھے (۲۹) [۷۵:۱۶،۱۷،۱۸]

تو جو لوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے ان کا رب انہیں اپنی رحمت میں داخل کرے گا یہی کھلی کامیابی ہے (۳۰)

لیکن جنہوں نے کفر کیا (کہا جائے گا) بھلا کیا ہماری آیتیں تم کو پڑھ کر سنائی نہیں جاتی تھیں؟ مگر تم نے تکبر کیا اور تم نافرمان لوگ تھے (۳۱)

اور جب کبھی کہا جاتا کہ اللہ کا وعدہ سچا ہے اور قیامت میں کچھ شک نہیں تو تم کہتے تھے ہم نہیں جانتے کہ قیامت کیا ہے اس کو محض ظنی خیال کرتے ہیں اور ہمیں یقین نہیں آتا (۳۲)

اور ان کے اعمال کی برائیاں ان پر ظاہر ہو جائیں گی اور جس کی وہ ہنسی اڑاتے تھے وہ ان کو آ گھیرے گا (۳۳)

اور کہا جائے گا جس طرح تم نے اس دن کے آنے کو بھلا رکھا تھا اسی طرح آج ہم نے تمہیں بھلا دیا اور تمہارا ٹھکانا دوزخ ہے اور کوئی تمہارا مددگار نہیں (۳۴)

یہ اس لئے کہ تم نے اللہ کی آیتوں کو مذاق بنا رکھا تھا اور دنیا کی زندگی نے تم کو دھوکے میں ڈال رکھا تھا سو آج وہ لوگ نہ دوزخ سے نکالے جائیں گے اور نہ ان کی توبہ قبول کی جائے گی (۳۵)

پس اللہ ہی کے لئے ہر طرح کی تعریف ہے جو آسمانوں اور

जो आकाशों और सम्पूर्ण संसार का पालन हार है (36)

सम्पूर्ण बड़ाई आकाशों और पृथ्वी में उसी की है और वह प्रभुत्वशाली और ज्ञानी है (37)

खण्ड हामीम 26

सूरतुल अहकाफ मक्की 46

हामीम ऐ मुहम्मद स0! (1) इस पुस्तक कुरआन का अवतरित किया जाना ईश्वर की ओर से है जो अधिपति और ज्ञानी है (2)

हमने आकाशों और पृथ्वी को और जो कुछ इन दोनों में है युक्ति के साथ एक निश्चित समय तक के लिए पैदा किया है, और नास्तिकों को जिस वस्तु से डराया जाता है उस से मुख फेर लेते है(3)

(ऐ मुहम्मद स0 उनसे) पूछो भला तुमने इस बात पर विचार किया कि तुम्हारे वह देवता जिन्हें तुम ईश्वर को छोड़ कर सहायता के लिए पुकारते हो (उनका क्या मान है) मुझे दिखाओ कि पृथ्वी में उन्होंने कौन सी वस्तु पैदा कर दी है और आकाशों की रचना में किस प्रकार वह ईश्वर के साझी हो गए यदि तुम सच्चे हो तो इस कुरआन से पहले की कोई पुस्तक या कोई ज्ञान की बात हो मेरे सामने प्रस्तुत करो (4)

और उस व्यक्ति से बढ़कर कौन भ्रष्ट हो सकता है जो ऐसे को पुकारे जो क्यामत तक उसे उत्तर न दे सके और उनको उनके पुकारने की सूचना न हो (5)

और जब लोग संग्रह किए जाएंगे तो वह उनके शत्रु होंगे और उनकी पूजा से इन्कार कर देंगे (6)

और जब उन काफिरों को हमारी स्पष्ट आयते सुनाई आएंगी और वास्तविकता उनके सामने आजाएगी तो कहेंगे यह तो खुला जादू है (7)

क्या वह कहते है कि उसने उसको स्वयं बना लिया है कह दो कि यदि मैंने इसको अपनी ओर से बनाया हो तो तुम ईश्वर के सामने मेरे (बचाओ का) कुछ अधिकार नही रखते वह इस बातचीत को भलिभांति जानता है, जो तुम इसके विषय में करते हो वही मेरे और तुम्हारे मध्य साक्षी प्रयाप्त है और क्षमा करने वाला कृपालु है (8)

कहदो कि मैं कोई नया रसूल नही आया और मैं नही जानता कि मेरे साथ क्या बरताओ किया जाएगा और तुम्हारे साथ क्या मैं तो उसी का अनुकरण करता हूं जो मुझ पर वही आती है और मेरा काम तो खुला सावधान करना है (9)

कहो भला देखो तो यदि यह कुरआन ईश्वर की ओर से हो और बनी इसराईल में से साक्षी इसी प्रकार की एक पुस्तक का साक्ष्य दे चुका और इस कुरआन पर विश्वास ले आया और तुमने अवज्ञा की (तो तुम्हारे अत्याचारी होने में क्या शंका है)

زمین کا مالک ہے اور تمام جہان کا پروردگار ہے(۳۶)

تمام بڑائی آسمانوں اور زمین میں اسی کی ہے اور وہ غالب اور حکمت والا ہے(۳۷)

پارہ حٰم (۲۶)

سورۃ الاحقاف ۔مکی (۴۶)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

حٰم ۔اے محمدؐ(۱) اس کتاب قرآن کا نازل کیا جانا اللہ کی طرف سے ہے جو غالب اور حکیم ہے(۲)

ہم نے آسمانوں اور زمین کو اور جو کچھ ان دونوں میں ہے حکمت کے ساتھ ایک وقت مقرر تک کے لئے پیدا کیا ہے اور کافروں کو جس چیز سے ڈرایا جاتا ہے اس سے منہ پھیر لیتے ہیں (۳)

(اے محمدؐ ان سے) پوچھو بھلا تم نے اس بات پر غور کیا کہ تمہارے وہ دیوتا جنہیں تم اللہ کو چھوڑ کر مدد کے لئے پکارتے ہو (ان کی کیا حیثیت ہے) مجھے دکھاؤ کہ زمین میں انہوں نے کون سی چیز پیدا کر دی ہے اور آسمانوں کی تخلیق میں کس طرح وہ اللہ کے شریک ہو گئے اگر تم سچے ہو تو اس قرآن سے پہلے کی کوئی کتاب یا کوئی علمی بات ہو میرے سامنے پیش کرو(۴)

اور اس شخص سے بڑھ کر کون گمراہ ہوسکتا ہے جو ایسے کو پکارے جو قیامت تک اسے جواب نہ دے سکے اور اُن کو اُن کے پکارنے کی خبر نہ ہو(۵)

اور جب لوگ جمع کئے جائیں گے تو وہ ان کے دشمن ہوں گے اور ان کی عبادت سے انکار کر دیں گے(۶)

اور جب ان کافروں کو ہماری واضح آیتیں سنائی جائیں گی اور حقیقت ان کے سامنے آجائے گی تو کہیں گے یہ تو کھلا جادو ہے(۷)

کیا وہ کہتے ہیں کہ اس نے اس کو خود بنالیا ہے کہہ دو کہ اگر میں نے اس کو اپنی طرف سے بنایا ہو تو تم اللہ کے سامنے میرے (بچاؤ کا) کچھ اختیار نہیں رکھتے وہ اس گفتگو کو خوب جانتا ہے جو تم اس کے بارے میں کرتے ہو وہی میرے اور تمہارے درمیان گواہ کافی ہے اور وہ بخشنے والا مہربان ہے(۸)

کہہ دو کہ میں کوئی نیا رسول نہیں آیا اور میں نہیں جانتا کہ میرے ساتھ کیا سلوک کیا جائے گا اور تمہارے ساتھ کیا میں تو اسی کی پیروی کرتا ہوں جو مجھ پر وحی آتی ہے اور میرا کام تو کھلا ڈرانا ہے(۹)

کہو بھلا دیکھو تو اگر یہ قرآن اللہ کی طرف سے ہو اور تم نے اس سے انکار کر دیا اور بنی اسرائیل میں سے گواہ اسی طرح کی ایک کتاب کی گواہی دے چکا اور اس قرآن پر ایمان لے آیا اور تم نے سرکشی کی (تو تمہارے ظالم ہونے میں کیا

निःसंदेह ईश्वर अन्यायी लोगों को पथ प्रदर्शन नहीं देता (10)

शک ہے) بےشک اللہ ظالم لوگوں کو ہدایت نہیں دیتا (۱۰)

और नास्तिक आस्तिकों से कहते हैं कि यदि यह धर्म कुछ उत्तम होता तो यह लोग इसकी ओर हम से पहले न दोड़ पड़ते और जब वह इससे मार्ग दर्शन न पा सके तो अभी कहेंगे कि यह पुराना झूट है (11)

और इससे पहले मूसा की पुस्तक थी लोगों के लिए इमाम और करूणा और यह पुस्तक कुरआन अरबी भाषा में है इसकी पुष्टि करने वाली (और अब यह इमाम है) ताकि अत्याचारीयों को डराए और सदाचारीयों को मंगल सूचना दे (12)

اور کافر مومنوں سے کہتے ہیں کہ اگر یہ دین کچھ بہتر ہوتا تو یہ لوگ اس کی طرف ہم سے پہلے نہ دوڑ پڑتے اور جب وہ اس سے ہدایت نہ پاسکے تو ابھی کہیں گے کہ یہ پرانا جھوٹ ہے (۱۱)

اور اس سے پہلے موسیٰ کی کتاب تھی لوگوں کے لئے امام اور رحمت اور یہ کتاب قرآن عربی زبان میں ہے اس کی تصدیق کرنے والی (اور اب یہ امام ہے) تا کہ ظالموں کو ڈرائے اور نیکوکاروں کو خوشخبری سنائے (۱۲)

और जो लोग कहेंगे कि हमारा रब ईश्वर है फिर वह उस पर (इस नियम के पालन पर) स्थिर रहे तो उनको न कुछ भय होगा और न वह शोका कुल होंगे (13)

اور جو لوگ کہیں گے کہ ہمارا رب اللہ ہے پھر وہ اس پر (اس قانون کی پابندی پر) قائم رہے تو ان کو نہ کچھ خوف ہوگا اور نہ وہ غمناک ہوں گے (۱۳)

वही वह लोग हैं जो स्वर्ग वाले हैं कि वह उसमें सदैव रहेंगे यह उसका बदला है जो वह किया करते थे (14)

हमने इन्सान को आदेश दिया है कि वह अपने माता पिता के साथ अच्छा बरताव करे (और अपनी माता के उपकार को न भूले) उसकी माता ने पीड़ा सहन करके अपने पैट में रखा और पीड़ा ही की दशा में उसे जना और उसको पैट में रखने और दुग्ध छुड़ाने में (लगभग) तीस माह लग जाते हैं यहां तक कि जब वह अपनी ज्वानी को पहुंचता है और चालिस वर्ष का हो जाता है तो कहता है ऐ मेरे रब! मुझे क्षमता दे कि मैं तेरी उन सुख सामग्रीयों का धन्यवाद करूं जो तूने मुझे और मेरे माता पिता को प्रदान की हैं और भलाई के ऐसे कर्म करूं जिन्हें तू पसन्द करे और मेरी सन्तान को भी सत्कर्म करने और भलाई की क्षमता दे मैं तेरे समक्ष बुराईयों से बचने का प्रण करता हूं और तेरे आज्ञाकारी बन्दों में से हूं (15) {2:233, 17:24, 31:14}

وہی وہ لوگ ہیں جو جنت والے ہیں کہ وہ اس میں ہمیشہ رہیں گے یہ اس کا بدلہ ہے جو وہ کیا کرتے تھے (۱۴)

ہم نے انسان کو حکم دیا ہے کہ وہ اپنے ماں باپ کے ساتھ اچھا برتاؤ کرے (اور اپنی ماں کے احسان کو نہ بھولے) اس کی ماں نے تکلیفیں برداشت کر کے اپنے پیٹ میں رکھا اور تکلیف ہی کی حالت میں اسے جنا اور اس کو پیٹ میں رکھنے اور دودھ چھڑانے میں (تقریباً) تیس مہینے لگ جاتے ہیں۔ یہاں تک کہ جب وہ اپنی جوانی کو پہنچتا ہے اور چالیس سال کا ہو جاتا ہے تو کہتا ہے اے میرے رب! مجھے توفیق دے کہ میں تیری ان نعمتوں کا شکرادا کروں جو تو نے مجھے اور میرے ماں باپ کو بخشی ہیں اور بھلائی کے ایسے کام کروں جنہیں تو پسند کرے اور میری اولاد کو بھی نیکی اور بھلائی کی توفیق دے میں تیرے حضور برائیوں سے بچنے کا عہد کرتا ہوں اور تیرے فرمانبردار بندوں میں سے ہوں (۱۵) [۲:۲۳۳، ۱۷:۲۴، ۳۱:۱۴]

वहीं वह लोग हैं जिनके अच्छे कर्मों को हम स्वीकार करते हैं और उनकी बुराईयों को क्षमा करते हैं वही लोग स्वर्ग के अधिकारी हैं यह सत्य वचन है, जो ऐसे लोगों से किया जाता रहा है (16)

और जिस व्यक्ति ने अपने माता पिता से कहा तुम से मैं तंग आ गया हूं तुम मुझे यह बताते हो कि मैं पृथ्वी से निकाला जाऊंगा यद्यपि बहुत से लोग मुझसे पहले गमन हो चुके हैं, और वह दोनों ईश्वर के समक्ष दुहाई देते हुए कहते हैं, कि अभागे विश्वास ला ईश्वर का वचन सत्य है तो कहने लगता है, यह तो पहले लोगों की कथाएं हैं (17)

وہی وہ لوگ ہیں جن کے اچھے کاموں کو ہم قبول کرتے ہیں اور ان کی برائی کو معاف کرتے ہیں وہی لوگ جنت کے حق دار ہیں یہ سچا وعدہ ہے جو ایسے لوگوں سے کیا جاتا رہا ہے (۱۶)

اور جس شخص نے اپنے ماں باپ سے کہا تم سے میں تنگ آ گیا ہوں تم مجھے یہ بتاتے ہو کہ میں زمین سے نکالا جاؤں گا حالانکہ بہت سے لوگ مجھ سے پہلے گزر چکے ہیں اور وہ دونوں اللہ کی جناب میں فریاد کرتے ہوئے کہتے ہیں کہ کم بخت ایمان لا اللہ کا وعدہ سچا ہے تو کہنے لگتا ہے یہ تو پہلے لوگوں کی کہانیاں ہیں (۱۷)

वही वह लोग हैं जिनके विषय में जिन्नों और इन्सानों के समुदाय में से जो उनसे पहले हो चुके उन पर दण्ड का वचन सत्य हो गया निःसंदेह वह हानी उठाने वाले थे (18)

और लोगों ने जैसे कर्म लिए होंगे उनके अनुसार

وہی وہ لوگ ہیں جن کے بارے میں جنوں اور انسانوں کی امتوں میں سے جو ان سے پہلے ہو چکیں ان پر عذاب کا وعدہ سچا ہو گیا بے شک وہ نقصان اٹھانے والے تھے (۱۸)

اور لوگوں نے جیسے کام کئے ہوں گے ان کے مطابق سب

रब के पद होंगे (यह इसलिए हैं) कि ईश्वर उनके कर्मों का पूरा-पूरा बदला दे और उन पर अन्याय न किया जाएगा (19)

کے درجے ہوں گے (یہ اس لئے ہے) کہ اللہ اُن کو اُن کے اعمال کا پورا پورا بدلہ دے اور ان پر ظلم نہ کیا جائے گا (۱۹)

और जिस दिन नास्तिक नर्क के सामने किए जाएंगे (तो कहा जाएगा) तुम अपने दुनिया के जीवन में स्वाद प्राप्त कर चुके और उनसे लाभ उठा चुके सो आज तुमको हीनता का दण्ड है कि तुम पृथ्वी में अनुचित घमण्ड किया करते थे और उसका दण्ड कि तुम दुषकर्म किया करते थे (20)

اور جس دن کافر دوزخ کے سامنے کئے جائیں گے (تو کہا جائے گا) تم اپنی دنیا کی زندگی میں لذتیں حاصل کر چکے اور ان سے فائدہ اٹھا چکے سو آج تم کو ذلت کا عذاب ہے کہ تم زمین میں ناحق غرور کیا کرتے تھے اور اس کی سزا کہ تم بدکرداری کیا کرتے تھے (۲۰)

और जाति आद के भाई (हूद) का उल्लेख करो जब उन्होंने अपनी जाति को अहकाफ देश में डराया और कहा कि तुम्हारे सामने भी हैं खुले सावधान करने वाले और तुमसे पहले भी हो चुके हैं किसी झूटे देवता की पूजा न करो परन्तु ईश्वर सच्चे की पूजा करो मुझे तुम्हारे विषय में बड़े दिन के कष्ट का डर है (21)

اور قوم عاد کے بھائی (ہود) کا ذکر کرو جب انہوں نے اپنی قوم کو سرزمین احقاف میں ڈرایا اور کہا کہ تمہارے سامنے بھی ہیں کھلے ڈرانے والے اور تم سے پہلے بھی ہو چکے ہیں کہ کسی جھوٹے معبود کی عبادت نہ کرو مگر اللہ سچے کی عبادت کرو مجھے تمہارے بارے میں بڑے دن کے عذاب کا ڈر ہے (۲۱)

कहने लगे क्या तुम हमारे पास इस लिए आए हो कि हमको हमारे देवताओ से फेर दो यदि सच्चे हो तो जिस वस्तु से हमें डराते हो उसे हम पर ले आओ (22)

کہنے لگے کیا تم ہمارے پاس اس لئے آئے ہو کہ ہم کو ہمارے معبودوں سے پھیر دو اگر سچے ہو تو جس چیز سے ہمیں ڈراتے ہو اسے ہم پر لے آؤ (۲۲)

उन्होंने कहा (उसका) ज्ञान तो ईश्वर ही को है, और मैं तो जो आदेश देकर भेजा गया हूं वह पहुंचा रहा हूं, परन्तु मैं देखता हूं कि तुम लोग मूर्खता में फंस रहे हो (23)

انہوں نے کہا (اس کا) علم تو اللہ ہی کو ہے اور میں تو جو احکام دے کر بھیجا گیا ہوں وہ پہنچا رہا ہوں لیکن میں دیکھتا ہوں کہ تم لوگ نادانی میں پھنس رہے ہو (۲۳)

फिर जब उन्होंने उस कष्ट को अपनी घाटियों की ओर आते देखा तो कहने लगे यह बादल है जो हमारी भूमि को सिंचित कर देगा (अरे बुद्धि हीनों यह बादल नहीं है) अपितु वही विपत्ति है जिसके लिए तुम जल्दी कर रहे थे अर्थात आन्धी जिसमें पीड़ा देने वाला कष्ट भरा हुआ है (24)

پھر جب انہوں نے اس عذاب کو اپنی وادیوں کی طرف آتے دیکھا تو کہنے لگے یہ بادل ہے جو ہماری زمین کو سیراب کر دے گا (ارے عقل کے اندھوں یہ بادل نہیں ہے) بلکہ وہی عذاب ہے جس کے لئے تم جلدی مچا رہے تھے یعنی آندھی جس میں درد دینے والا عذاب بھرا ہوا ہے (۲۴)

(देखो यह कैसी प्रचण्ड आन्धी है) हर वस्तु को अपने रब के आदेश नियम से नष्ट किए देती है तो वह ऐसे हो गए कि उनके घरों के सिवा कुछ दिखाई नहीं देता था पापीयों को हम इसी प्रकार दण्ड दिया करते हैं (25)

(دیکھو یہ کیسی سخت آندھی ہے) ہر چیز کو اپنے رب کے حکم قانون سے تباہ کئے دیتی ہے تو وہ ایسے ہو گئے کہ ان کے گھروں کے سوا کچھ نظر ہی نہیں آتا تھا گنہگاروں کو ہم اسی طرح سزا دیا کرتے ہیں (۲۵)

उनको हमने वह कुछ दे रखा था जो तुम लोगों को नहीं दिया और उन्हें कान और आंखे और हृदय दिए थे तो जब वह ईश्वर की आयतों से इनकार किया करते थे तो न उनपके कान ही उनके कुछ काम आ सके और न आंखे और न हृदय और जिसका उपहास किया करते थे उसने उनको आघेरा (26)

ان کو ہم نے وہ کچھ دے رکھا تھا جو تم لوگوں کو نہیں دیا اور انہیں کان اور آنکھیں اور دل دئے تھے تو جب وہ اللہ کی آیتوں سے انکار کیا کرتے تھے تو نہ تو ان کے کان ہی ان کے کچھ کام آسکے اور نہ آنکھیں اور نہ دل اور جس کا مذاق کیا کرتے تھے اس نے ان کو آگھیرا (۲۶)

और हमने तुम्हारे आस पास की बस्तियों को नष्ट कर दिया, हमने बार बार अपनी आयतों के द्वारा उन्हें समझाया कि वह अपनी हरकते करनी छोड़ दें और ईश्वर के आज्ञाकारी हो जाएं (27)

اور ہم نے تمہارے آس پاس کی بستیوں کو ہلاک کر دیا ہم نے بار بار اپنی آیتوں کے ذریعہ انہیں سمجھایا کہ وہ اپنی حرکتیں کرنی چھوڑ دیں اور اللہ کے فرمانبردار ہو جائیں (۲۷)

परन्तु उन्होंने एक न सुनी और कष्ट में लिप्त हो गए तो ईश्वर को छोड़ कर जिन देवताओ को उन्होंने उसके निकटता का साधन बना रखा था वह

(مگر انہوں نے ایک نہ سنی اور عذاب میں مبتلا ہو گئے) تو اللہ کو چھوڑ کر جن معبودوں کو انہوں نے اس کے تقرب کا ذریعہ

उनकी सहायता को क्यों नहीं आए? अपितु वह तो कहीं खो गए यह उनका झूठ था और यही वह मिथ्या रोपण किया करते थे (28)

بنا رکھا تھا وہ ان کی مدد کو کیوں نہیں آئے؟ بلکہ وہ تو کہیں کھو گئے یہ ان کا جھوٹ تھا اور وہ افترا کیا کرتے تھے (۲۸)

और जब हमने जिन्नों में से कई को आपकी ओर आकृष्ट किया कि कुरआन सुने तो जब वह उस स्थान पर आए जहां कुरआन पढ़ा जा रहा था तो आपस में कहने लगे कि चुप रहो जब पढ़ा जाना पूरा हुआ तो अपनी जाति की सहायता के लिए वापस गए कि उनको उपदेश करें (29)

اور جب ہم نے جنوں میں سے کئی کو آپ کی طرف متوجہ کیا کہ قرآن سنیں تو جب وہ اس جگہ آئے جہاں قرآن پڑھا جا رہا تھا تو آپس میں کہنے لگے کہ خاموش رہو جب پڑھنا پورا ہوا تو اپنی برادری کی مدد کے لئے واپس گئے کہ ان کو نصیحت کریں (۲۹)

कहने लगे कि ऐ जाति हमने एक पुस्तक सुनी है जो मूसा के बाद अवतरित हुई है और जो पुस्तके सुरक्षा के मध्य है उनकी पुष्टि करती है और सच्चा धर्म और सीधा मार्ग बताती है (30)

کہنے لگے کہ اے قوم ہم نے ایک کتاب سنی ہے جو موسیٰ کے بعد نازل ہوئی ہے اور جو کتابیں حفاظت کے درمیان ہیں ان کی تصدیق کرتی ہے اور سچا دین اور سیدھا راستہ بتاتی ہے (۳۰)

ऐ जाति ईश्वर की ओर बुलाने वाले की बात को स्वीकार करो और उस पर विश्वास लाओ ईश्वर तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हें दुख देने वाले कष्ट से शरण में रखेगा (31)

اے قوم اللہ کی طرف بلانے والے کی بات کو قبول کرو اور اس پر ایمان لاؤ اللہ تمہارے گناہ بخش دے گا اور تمہیں دکھ دینے والے عذاب سے پناہ میں رکھے گا (۳۱)

और जो व्यक्ति ईश्वर की ओर बुलाने वाले की बात स्वीकार न करेगा तो वह पृथ्वी में ईश्वर को विवश नहीं कर सकेगा, और न उसके सिवा उसके सहायक होंगे वह वही लोग है जो खुली भ्रष्टता में है (32)

اور جو شخص اللہ کی طرف بلانے والے کی بات قبول نہ کرے گا تو وہ زمین میں اللہ کو عاجز نہیں کر سکے گا اور نہ اس کے سوا اس کے حمایتی ہوں گے وہ وہی لوگ ہیں جو کھلی گمراہی میں ہیں (۳۲)

क्या उन्होंने नहीं देखा कि जिस ईश्वर ने आकाशों और पृथ्वी को उत्पन्न किया और उनके पैदा करने से थका नहीं वह इस बात पर भी शक्तिमान है कि मृतकों को जीवित कर दे हां वह हर वस्तु के अनुमान निश्चित करने वाला है (33)

کیا انہوں نے نہیں دیکھا کہ جس اللہ نے آسمانوں اور زمین کو پیدا کیا اور ان کے پیدا کرنے سے تھکا نہیں وہ اس بات پر بھی قادر ہے کہ مردوں کو زندہ کر دے ہاں وہ ہر چیز کے اندازے مقرر کرنے والا ہے (۳۳)

और जिस दिन इन्कार करने वाले लोग आग के सामने लाए जाएंगे और उनसे पूछा जाएगा क्या यह सत्य नहीं है? वह कहेंगे क्यों नहीं हमारे रब की शपथ यह सत्य है आदेश होगा कि तुम जो (दुनिया में) इन्कार किया करते थे अब कष्ट का स्वाद चखो (34)

اور جس دن انکار کرنے والے لوگ آگ کے سامنے لائے جائیں گے اور ان سے پوچھا جائے گا کیا یہ حق نہیں ہے؟ وہ کہیں گے کیوں نہیں ہمارے رب کی قسم یہ حق ہے۔ حکم ہوگا کہ تم جو (دنیا میں) انکار کیا کرتے تھے اب عذاب کے مزے چکھو (۳۴)

(ऐ रसूल) जिस प्रकार अगले साहसी ईशदूत (नास्तिकों के कष्ट देने पर) धैर्य करते रहे हैं तुम भी धैर्य करो और उन पर (कष्ट के लिए) शीघ्रता न करो वह लोग जिस दिन उस कष्ट को देख लेंगे जिसका उनसे वचन किया गया है तो वह ऐसा अनुभूत करेंगे मानों दुनिया में एक पल रहे होंगे अस्तु कुरआन का सन्देश उन लोगों तक पहुंच गया है नहीं मानते हैं न माने सो अब वही नष्ट होंगे जो अवज्ञाकारी हैं (35)

(اے رسول) جس طرح اگلے عالی ہمت رسول (کافروں کی ایذا رسانی پر) صبر کرتے رہے ہیں تم بھی صبر کرو اور ان پر (عذاب کے لئے) جلدی نہ کرو وہ لوگ جس دن اس عذاب کو دیکھ لیں گے جس کا ان سے وعدہ کیا گیا ہے تو وہ ایسا محسوس کریں گے گویا دنیا میں ایک پل رہے ہوں گے۔ بہرحال قرآن کا پیغام ان لوگوں تک پہنچ گیا ہے نہیں مانتے ہیں نہ مانیں سو اب وہی ہلاک ہوں گے جو نافرمان ہیں (۳۵)

सूरतुल मुहम्मद मदनी 47

سورت محمد ۔ مدنی (۴۷)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

जो लोग कुफ्र का मार्ग ग्रहण करेंगे और दूसरों को भी ईश्वर के धर्म के मार्ग (पर चलने) से रोकेंगे ईश्वर का नियम (उनके अपराध के दण्ड में) उनके कर्म नष्ट कर देगा (1)

جو لوگ کفر کی راہ اختیار کریں گے اور دوسروں کو بھی اللہ کے دین کی راہ (پر چلنے) سے روکیں گے اللہ کا قانون (ان کے جرم کی سزا میں) ان کے اعمال برباد کر دے گا (۱)

(उनके विपरीत) जो लोग ईश्वर पर विश्वास लाएंगे और भलाई के कार्य करेंगे और इस सच्ची पुस्तक पर विश्वास लाएंगे जो मुहम्मद स0 पर उसके रब

(ان کے برعکس) جو لوگ اللہ پر ایمان لائیں گے اور وہ بھلائی کے کام کریں گے اور اس سچی کتاب پر ایمان لائیں

گے جو محمدؐ پر اس کے رب کی طرف سے نازل کی جارہی
ہے اللہ ان سے ان کی بدحالیاں دور کردے گا اور ان کی حالت سنوار دے گا (۲)

की ओर से अवतरित की जा रही है ईश्वर उनसे उनकी दुर्दशा को दूर कर देगा और उनकी दशा संवार देगा (2)

یہ اچھا یا بُرا اس لئے ہوگا کہ جو لوگ کفر کریں گے اور وہ جھوٹی بات کی پیروی کریں گے ان کے ساتھ بُرا ہوگا اور جو ایمان لاکر وہ اپنے رب کی طرف سے آئے دین کی پیروی کریں گے ان کے ساتھ اچھا ہوگا اس لئے اسی طرح اللہ لوگوں سے ان کے حال بیان کرتا ہے (۳)

यह अच्छा या बुरा इस लिए होगा कि जो लोग कुफ्र करेंगे और वह झूटी बात का अनुकरण करेंगे उनके साथ बुरा होगा और जो विश्वा लाकर अपने रब की ओर से आए धर्म का अनुकरण करेंगे उनके साथ अच्छा होगा इसलिए इसी प्रकार ईश्वर लोगों से उनकी दशा वर्णन करता है (3)

تو جب کافروں سے تمہارا مقابلہ ہو تو گردنیں مارنا یعنی کاٹنا ہے (کیونکہ جنگ میں تو قتال ہوتا ہی ہے دونوں فریق ایک دوسرے کو قتل کرتے ہی ہیں) یہاں تک کہ وہ مغلوب ہوجائیں مخالفانہ کاروائیاں کرنے کی طاقت ختم ہوجائے وہ ایسی حالت میں ہوجائیں کہ وہ اپنے ہتھیار ڈال دیں تو ان کو گرفتار کرلو۔ امن ہونے کی حالت میں ان قیدیوں کو اپنے قیدیوں کے بدلے چھوڑ دو۔ یا فدیہ لے کر چھوڑ دو۔ اور اگر کسی پر رقم نہیں ہے تو رحم کر کے چھوڑ دو۔ ہر حال میں قیدیوں کو رہائی ملنی ہے۔ اور اگر اللہ چاہتا تو آپ ہی بدلہ لیتا مگر یہ آپس میں جنگ اس لئے ہوتی ہے کہ ایک دوسرے سے جانچے جاؤ کون مومن ہے اور کون منافق۔ اور جو اللہ کی راہ میں جنگ کرتے ہوئے مارے جائیں گے اللہ ہرگز ان کے عمل ضائع نہیں کرے گا (۴)

तो जब नास्तिकों से सामना हो तो गर्दने मारना अर्थात काटना है (क्योंकि युद्ध में तो वध होता ही है दोनों पक्ष एक दूसरे को वध करते ही हैं) यहां तक कि वह परास्त हो जाएं विरोध करने की शक्ती समाप्त हो जाए वह ऐसी स्थिति में हो जाए कि वह अपने शस्त्र छोड़ दें तो उनको बन्दी बना लो, शान्ति होने की दशा में उन बन्दीयों को अपने बन्दीयों के बदले छोड़ दो या प्राण मूल्य लेकर छोड़ दो और यदि किसी पर धन नही है तो दया करके छोड़ दो हर स्थिति में बन्दीयों को मुक्ति मिलनी है, और यदि ईश्वर चाहता तो आप ही बदला लेता, परन्तु यह आपस में युद्ध इस कारण होता है कि एक दूसरे से जांचे जाओ कौन आस्तिक है और कपटि कौन और जो ईश्वर की राह में युद्ध करते हुए मारे जाएंगे ईश्वर कदापि उनको नष्ट नही करेगा, (4) {8:67}

نوٹ:۔ اس آیت میں صاف ہے کہ جنگی قیدی ہر حالت میں رہا کئے جائیں گے فدیہ لے کر یا بغیر فدیہ کے یا قیدیوں کے بدلے میں قیدی، تو پھر غلام کنیز کا سوال کہاں سے آگیا۔ اور وہ بھی بغیر نکاح کے کنیز کے ساتھ مباشرت کرنا یہ تو قرآن کے خلاف ہے قرآن کا حکم صاف یہ ہے کہ کسی بھی عورت سے مباشرت نکاح کے بعد ہی ہوسکتی ہے اور ہر قیدی کو رہا کرنا ہے۔ ہاں ماملکت ایمان کا مسئلہ ہے وہ میں پہلے لکھ چکا ہوں اس کو دیکھو کہ ماملکت ایمان کیا ہے؟ ہاں یہ اور جان لو کہ جن عورتوں سے اللہ نے نکاح حرام کیا ہے ان میں سے کسی بھی عورت سے کسی بھی قیمت پر نکاح نہیں ہوسکتا نہ مباشرت۔

नोट- इस आयत में स्पष्ट है कि युद्ध बन्दि हर स्थिति में मुक्त किए जाएंगे बदला लेकर या बिना बदले के या बन्दियों के बदले में बन्दि, तो फिर दास अनुचरी का प्रश्न कहां से आ गया और वह भी अनुचरी के साथ बिना विवाह के मैथुन करना यह तो कुरआन के विपरीत है कुरआन का आदेश स्पष्ट यह है कि किसी भी स्त्री से मैथुन विवाह के बाद ही हो सकता और हर बन्दी को मुक्त करना है हां मामलाकत ऐमान का प्रसंग है वह मैं पहले लिख चुका हूं, उसको देखो कि मामलाकत ऐमान क्या है, हां यह और जान लो कि जिन स्त्रीयों से ईश्वर ने विवाह अवैध किया है उनमें से किसी भी स्त्री से किसी भी मूल्य पर विवाह नही हो सकता न मैथुन,

(بلکہ) ان کو جلد سیدھی راہ دکھائے گا اور ان کے حالات درست کردے گا (۵)

अपितु उनको शीघ्र सीधा मार्ग दिखाएगा और उनकी दशा ठीक कर देगा (5)

اور ان کو اس جنت میں لے جائے گا جس سے ان کو شناسا کر رکھا ہے (۶)

और उनको उस स्वर्ग में ले जाएगा जिससे उनको परिचित कर रखा है (6)

(مسلمانو!) اگر تم (جان و مال کی قربانی سے) اللہ کی مدد کروگے تو اللہ بھی تمہاری مدد کرے گا اور (دشمنوں کے مقابلہ) میں تمہارے قدم جمادے گا (۷)

मुसलमानों! यदि तुम (जान व माल की आहुति से) ईश्वर की सहायता करोगे तो ईश्वर भी तुम्हारी सहायता करेगा और (शत्रुओं के समक्ष) तुम्हारे पग जमा देगा (7)

اور جو کافر ہیں ان کے لئے ہلاکت ہے اور وہ ان کے اعمال کو برباد کردے گا (۸)

और जो नास्तिक है उनके लिए विनाश है और वह उनके कर्मों को नष्ट कर देगा (8)

ان کو یہ سزا اس لئے دی جائے گی کہ انہوں نے اس دین (اور قرآن) کو ناپسند کیا جو اللہ نے نازل کیا تو اللہ ان کے اعمال اکارت کردے گا (۹)

उनको यह दण्ड इस लिए दिया जाएगा कि उन्होंने इस धर्म (और कुरआन) को ना पसन्द किया जो ईश्वर ने अवतरित किया तो ईश्वर उनके कर्मों को नष्ट कर देगा (9)

کیا وہ لوگ دنیا میں گھومے پھرے نہیں کہ دیکھتے کہ جو لوگ ان سے پہلے گزر چکے ہیں ان کا کیا بُرا انجام ہوا۔ اللہ

क्या वह लोग दुनिया में घूमे फिरे नही कि देखते कि जो लोग उनसे पहले हो चुके है उनका क्या बुरा अन्त हुआ ईश्वर के नियम ने उन पर विनाश

डाल दिया और उसी प्रकार उन काफिरो का अन्त होगा (10)

کے قانون نے ان پر تباہی ڈال دی اور اسی طرح کا انجام ان کافروں کا ہوگا (۱۰)

यह इस लिए कि जो आस्तिक है उनका ईश्वर सहायक है और काफिरो का कोई सहायक नही (11)

یہ اس لئے کہ جو مومن ہیں ان کا اللہ مددگار ہے اور کافروں کا کوئی کارساز نہیں (۱۱)

निःसंदेह जो लोग विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे उनको ईश्वर स्वर्ग में जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी प्रविष्ट करेगा और जो काफिर है वह दुनिया का लाभ उठाते है और इस प्रकार खाते है जैसे है पशु खाते है और उनका स्थान नर्क है(12)

بے شک جو لوگ ایمان لائے اور عمل نیک کرتے رہے ان کو اللہ جنتوں میں جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی داخل کرے گا اور جو کافر ہیں وہ دنیا کا فائدہ اٹھاتے ہیں اور اس طرح کھاتے ہیں جیسے حیوان کھاتے ہیں اور ان کا ٹھکانا دوزخ ہے (۱۲)

(ऐ मुहम्मद स0!) बहुत सी बस्तियां तुम्हारी बस्ति (मक्काह) से जिसके निवासियों ने तुम्हें निकाल दिया बल व शक्ति में कही बढ़ कर थी हमने उनका सत्या नाश कर दिया और उनका कोई सहायक न हुवा (13)

(اے محمدؐ!) بہت سی بستیاں تمہاری بستی (مکہ) سے جس کے باشندوں نے تمہیں نکال دیا زور و قوت میں کہیں بڑھ کر تھیں ہم نے ان کا ستیاناس کر دیا اور ان کا کوئی مددگار نہ ہوا (۱۳)

तो क्या जो अपने रब के (सीधे और) खुले मार्ग पर है वह उन लोगों की भांति हो सकते है जिनके दुषकर्म उनको अच्छे कर दिखाए गए हो? और अपनी बुरी इच्छाओं के पीछे चल रहे हो (14)

تو کیا جو لوگ اپنے رب کے (سیدھے اور) کھلے رستے پر ہیں وہ ان لوگوں کی طرح ہو سکتے ہیں جن کی بدکاریاں انہیں اچھی کر کے دکھائی گئیں ہوں؟ اور اپنی بُری خواہشوں کے پیچھے چل رہے ہوں (۱۴)

सदाचारीयों से जिस स्वर्ग का वचन किया गया है उसकी महिमा यह है कि उसमें नहरें बह रही होंगी निथरे हुए पानी की नहरें बह रही होंगी ऐसे दुग्ध की जिसके स्वाद में कोई अन्तर न आया हो नहरें बह रही होंगी ऐसे प्रकृतिक मधुर पेय की जो पीने वालों के लिए स्वादिष्ट होंगे नहरें बह रही होंगी शुद्ध पारदर्शी शहद की उसमें उनके लिए हर प्रकार के फल होंगे और उनके रब की ओर से क्षमा (क्या वह) उन लोगों की भांति हो सकता है, जो नर्क में सदैव रहेंगे और जिन्हें ऐसा गर्म पानी दिया जाएगा जो उनकी आन्तों को काट देगा, (15) {107:7, 52:23, 56:19}

پرہیزگاروں سے جس جنت کا وعدہ کیا گیا ہے اس کی شان یہ ہے کہ اس میں نہریں بہہ رہی ہونگی نتھرے ہوئے پانی کی نہریں بہہ رہی ہوں۔ ایسے دودھ کی جس کے مزے میں کوئی فرق نہ آیا ہو۔ نہریں بہہ رہی ہوں گی ایسے خمیری مشروب کی جو پینے والوں کے لئے لذیز ہوں گی نہریں بہہ رہی ہوں گی صاف شفاف شہد کی اس میں ان کے لئے ہر طرح کے پھل ہوں گے اور ان کے رب کی طرف سے بخشش (کیا وہ) اُن لوگوں کی طرح ہو سکتا ہے جو دوزخ میں ہمیشہ رہیں گے اور جنہیں ایسا گرم پانی پلایا جائے گا جو ان کی آنتوں کو کاٹ دے گا (۱۵)
[۱۰۷:۷، ۵۲:۲۳، ۵۶:۱۹]

नोटः- "खमरिल्लज्जतिल्लिश्शारबीन" का अनुवाद आलिमों ने मदिरा किया है जो अनुचित है कुरआन में कही भी यह नही कहा गया कि स्वर्ग में मदिरा पीने को मिलेगी अतः जहां भी आलिमों ने अनुवाद मदिरा किया है वहां अनुवाद पेय पदार्थ मधुर पेय होना है जो मैने लिखा है,

نوٹ:۔ [خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ] کا ترجمہ عالموں نے شراب کیا ہے جو غلط ہے قرآن میں کہیں بھی یہ نہیں کہا گیا کہ جنت میں شراب پینے کو ملے گی۔ اس لئے جہاں بھی عالموں نے ترجمہ شراب کیا ہے وہاں ترجمہ مشروب شربت ہونا ہے جو میں نے لکھا ہے۔

(ऐ मुहम्मद स0!) उन (विरोधियों में) में कतिपय ऐसे भी है जो तुम्हारी ओर कान लगाते है परन्तु जब आपके पास से (उठकर) जाते है तो जिन लोगों को ज्ञान दिया गया है उनसे ज्ञात करते है, उस व्यक्ति ने अभी क्या कहा था वही लोग है जिनको (उनकी अवज्ञाकारी के कारण) ईश्वर के नियम ने उनके हृदयों पर मोहर लगा रखी है (तो वह लोग सब कुछ सुनने के बाद भी कुछ नही सुनते) और अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे है (16)

(اے محمدؐ!) ان (منکروں میں) میں بعض ایسے بھی ہیں جو تمہاری طرف کان لگائے ہیں لیکن جب آپ کے پاس سے (اٹھ کر) جاتے ہیں تو جن لوگوں کو علم دیا گیا ہے ان سے پوچھتے ہیں اس شخص نے ابھی کیا کہا تھا۔ وہی لوگ ہیں جن کو (ان کی نافرمانی کی وجہ سے) اللہ کے قانون نے ان کے دلوں پر مہر لگا رکھی ہے (تو وہ لوگ سب کچھ سننے کے بعد بھی کچھ نہیں سنتے) اور اپنی خواہشوں کے پیچھے چل رہے ہیں (۱۶)

और जो लोग सीधे मार्ग पर चल रहे है उनको ईश्वर (कुरआन पर व्यवहार करने के कारण) और अधिक पथ प्रदर्शन देता है और उन्हें सदाचारी रहने की क्षमता देता है (17)

اور جو لوگ سیدھے رستے پر چل رہے ہیں ان کو اللہ (قرآن پر عمل کی وجہ سے) اور زیادہ ہدایت دیتا ہے اور انہیں پرہیزگار رہنے کی توفیق دیتا ہے (۱۷)

तो क्या सत्य के विरोधी क्यामत ही की प्रतीक्षा कर रहे हैं कि उन पर अचानक आ पड़े, सो उसके बड़े चिन्ह तो आ ही चुके हैं जो कुरआन में अंकित हैं फिर जब वह उन पर आ अवतरित होगी उस समय उन्हें शिक्षा स्वीकार करने से कौन सा लाभ होगा (18)

تو کیا منکرین حق قیامت ہی کا انتظار کر رہے ہیں کہ ان پر اچانک آپڑے سو اس کی بڑی بڑی نشانی تو آ ہی چکی ہیں جو قرآن میں درج ہیں پھر جب وہ ان پر آنازل ہوگی اس وقت انہیں نصیحت قبول کرنے سے کونسا فائدہ ہوگا (۱۸)

अतः जान रखो कि नास्तिक जो कहते हैं कि ईश्वर नहीं निःसंदेह ईश्वर है (उनका का कथन ही मिथ्या है) और आपसे और आस्तिक नर और आस्तिक नारी से धर्म के प्रचार या दूसरे कार्य धर्म युद्ध इत्यादि में कोई त्रुटि हो जाए तो आप और वह सब मिल कर अपनी उन कमियों पर विचार करो कि ऐसा क्यों हुआ और अब तक जो त्रुटि हो गई उसकी ईश्वर से क्षमा मांगों और आगे के लिए उन त्रुटियों को दूर करके कार्य करो, और आप लोग जो धर्म का कार्य करने के लिए चलते फिरते हैं और ठहरते हैं ईश्वर उससे अवगत है (19)

پس جان رکھو کہ کافر جو کہتے ہیں کہ اللہ نہیں ہے یقیناً اللہ ہے (ان کا قول ہی غلط ہے) اور آپ سے اور مومن مرد اور مومن عورتوں سے تبلیغ دین یا دوسرے کام جہاد وغیرہ میں کوئی کمی ہو جائے تو آپ اور وہ سب مل کر اپنی ان کمیوں پر غور کرو کہ ایسا کیوں ہوا اور اب تک جو کوتاہی ہو گئی اس کی اللہ سے معافی مانگو اور آئندہ کے لئے ان کمیوں کو دور کر کے کام کرو، اور آپ لوگ جو دین کا کام کرنے کے لئے چلتے پھرتے ہیں اور ٹھہرتے ہیں اللہ اس سے واقف ہے (۱۹)

और आस्तिक लोग कहेंगे कि (धर्म युद्ध की) कोई सूरत आदेश क्यों अवतरित नहीं होती? परन्तु जब कोई स्पष्ट अर्थ की सूरत आदेश अवतरित होगा और उसमें धर्म युद्ध का उल्लेख होगा तो जिन लोगों के हृदयों में कपट का रोग है तुम उनको देखोगे, कि आपकी ओर इस प्रकार देखने लगें जिस प्रकार किसी पर मृत्यु की अचेतना हो रही हो सो उनके लिए विकार है (20)

اور مومن لوگ کہیں گے کہ (جہاد کی) کوئی سورت حکم کیوں نازل نہیں ہوتی؟ لیکن جب کوئی صاف معنوں کی سورت حکم نازل ہوگا اور اس میں جہاد کا بیان ہوگا تو جن لوگوں کے دلوں میں نفاق کا مرض ہے تم ان کو دیکھو گے کہ تمہاری طرف اس طرح دیکھنے لگیں گے جس طرح کسی پر موت کی بے ہوشی ہو رہی ہو سو ان کے لئے خرابی ہے (۲۰)

(उन लोगों का कर्तव्य था कि ईश्वर व रसूल की) की आज्ञाका पालन करते और (मृत्यू से डरने के स्थान पर) अच्छी बात कहते (और धर्म युद्ध के लिए तैयार हो जाते) फिर जब युद्ध की बात पक्की हो जाए तो यदि वह लोग (अपने कर्म से) ईश्वर के सच्चे आज्ञाकारी होते तो उनके लिए उत्तम होता (21)

(ان لوگوں کا فرض تھا کہ اللہ و رسول کی) اطاعت کرتے اور (موت سے ڈرنے کے بجائے) پسندیدہ بات کہتے (اور جہاد کے لئے تیار ہو جاتے) پھر جب جنگ کی بات پختہ ہو جائے تو اگر وہ لوگ (اپنے عمل سے) اللہ کے سچے فرمانبردار رہتے تو ان کے لئے بہتر ہوتا (۲۱)

(ऐ कपटियों!) तुमसे विचित्र नहीं कि यदि तुम शासक हो जाओ तो देश में विकार करने लगो और अपने नातों को तोड़ डालो (22)

(اے منافقو!) تم سے عجب نہیں کہ اگر تم حاکم ہو جاؤ تو ملک میں خرابی کرنے لگو اور اپنے رشتوں کو توڑ ڈالو (۲۲)

वही वह लोग हैं जिन पर ईश्वर के नियम ने धिक्कार की है और उनके कानों को बहरा और उन की आंखो को अंधा कर दिया है (कि सब कुछ सुनने और देखने के बाद भी प्रभाव स्वीकार नहीं करते) (23)

وہی وہ لوگ ہیں جن پر اللہ کے قانون نے لعنت کی ہے اور ان کے کانوں کو بہرا اور ان کی آنکھوں کو اندھا کر دیا ہے (کہ سب کچھ سننے اور دیکھنے کے بعد بھی اثر قبول نہیں کرتے) (۲۳)

भला वह लोग कुरआन में मनन नहीं करते या उन के हृदयों पर ताले लग रहे हैं (24)

بھلا وہ لوگ قرآن میں غور نہیں کرتے یا ان کے دلوں پر قفل لگ رہے ہیں (۲۴)

जो लोग अपनी पीठ के बल उल्टे फिरेंगे उसके बाद कि उनके लिए पथ प्रदर्शन स्पष्ट हो चुकी, निःसंदेह शैतान ने उनके लिए (उनके कर्म को) सुसज्जित कर दिया है और उन्हें अधिक जीवित रहने का वचन दिया है अर्थात ढील दे रखी है (25)

جو لوگ اپنی پیٹھ کے بل الٹے پھریں گے اس کے بعد کہ ان کے لئے ہدایت واضح ہو چکی یقیناً شیطان نے ان کے لئے (ان کے فعل کو) مزین کر دیا ہے اور انہیں ڈھیل دے رکھی ہے یعنی انہیں زیادہ دنوں تک زندہ رہنے کا وعدہ دیا (۲۵)

अतः उन नास्तिक लोगों ने ईश्वर के अवतरित किए हुए आदेश ना पसन्द करने वालों से कह दिया कि कतिपय बातों में हम अभी शीघ्र तुम्हारी बातें मानेंगे (परन्तु वह यह न भूले) कि ईश्वर उनके छुपे परामर्शों से अवगत है (26)

اس لئے ان کافر لوگوں نے اللہ کے نازل کئے ہوئے احکام ناپسند کرنے والوں سے کہدیا کہ بعض باتوں میں ہم بھی ابھی جلد تمہاری باتیں مانیں گے (لیکن وہ یہ نہ بھولیں) کہ اللہ ان کے چھپے ہوئے مشوروں سے واقف ہے (۲۶)

फिर उस समय उनकी कैसी गत बनेगी जब फरिश्ते उनकी आत्मा ग्रहण करेंगे और उनके मुखो और पीठें पर मारते जाएंगे (27)

پھر اس وقت ان کی کیسی گت بنے گی جب فرشتے ان کی روح قبض کریں گے اور ان کے مونہوں اور پیٹھوں پر مارتے جائیں گے (۲۷)

یہ اس لئے تو ہوگا کہ ان لوگوں نے اس طریقے کو اختیار کیا جو اللہ کو نا پسند ہے اور اس کی خوشنودی کو نا پسند کیا تو اللہ نے (اس جرم کی بنا پر) ان کے اعمال اکارت کر دئے (۲۸)

यह इस लिए तो होगा कि उन लोगों ने उस गति विधि को ग्रहण किया जो ईश्वर को अप्रिय है और उसकी प्रसन्नता को ना पसन्द किया तो ईश्वर ने (इस अपराध के आधार पर) उनके कर्म नष्ट कर दिए (28)

کیا وہ لوگ جن کے دلوں میں (نفاق کی) بیماری ہے یہ سمجھے ہوئے ہیں کہ ان کے کینوں کو اللہ ظاہر نہ کرے گا (۲۹)

क्या वह लोग जिनके हृदयों में (कपट का) रोग है यह समझे हुए है कि उनके कपटों को ईश्वर प्रकट न करेगा (29)

اور اگر ہم چاہتے تو انہیں تم کو دکھا دیتے تو آپ ان کو ان کے چہروں ہی سے پہچان لیتے (مگر اس کی ضرورت نہیں) تم انہیں ان کے انداز گفتگو ہی سے پہچان لو گے اور (خوب یاد رکھو) اللہ تم سب کے اعمال کو جانتا ہے (۳۰) [۹:۶۰، ۲۴:۶۲]

और यदि हम चाहते तो उन्हें आपको दिखा देते तो आप उनको उनके चेहरों से ही पहचान लेते (परन्तु इसकी आवश्यक्ता नही) आप उन्हें उनकी वर्णन शैली ही से पहचान लोगे और (भलि भांति याद रखो) ईश्वर तुम सबके कर्मों से अवगत है (30) {9:60, 24:62}

(اے مسلمانو!) ہم تم لوگوں کو ضرور آزمائش میں ڈالیں گے تا کہ تم میں جو لوگ جہاد کرنے والے ہیں اور جنگوں کی تکلیف کو برداشت کرنے والے ہیں ان کو ظاہر کر دیں اور تمہاری اصلی حالت کی بھی پرکھ ہو جائے (۳۱)

(ऐ मुसलमानों!) हम तुम लोगों को अवश्य परिक्षा में डालेंगे ताकि तुममें जो लोग धर्म युद्ध करने वाले है और युद्धों के कष्टों को सहन करने वाले है उनको प्रकट कर दें और तुम्हारी मूल दशा की भी परख हो जाए (31)

جن لوگوں کو سیدھا راستہ معلوم ہو گیا اور پھر بھی انہوں نے کفر کیا اور لوگوں کو اللہ کی راہ سے روکا اور رسولوں کی مخالفت کی وہ اللہ کا کچھ بھی بگاڑ نہیں سکیں گے اور اللہ ان کا سب کیا کرایا جلد اکارت کر دے گا (۳۲)

जिन लोगों को सीधा मार्ग ज्ञात हो गया और फिर भी उन्होंने कुफ्र किया और लोगों को ईश्वर के मार्ग से रोका और ईशदूतों का विरोध किया वह ईश्वर का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकेंगे और इश्वरउनका सब किया कराया शीघ्र नष्ट कर देगा (32)

مسلمانوں اللہ اور رسول کی اطاعت کرو اور اپنے عملوں کو ضائع نہ ہونے دو (۳۳)

मुसलमानों! ईश्वर और रसूल की आज्ञाकारी करो और अपने कर्मों को नष्ट न होने दो (33)

جو لوگ کافر ہوئے اور اللہ کے رستے سے روکتے رہے پھر کافر ہی مر گئے اللہ ان کو ہرگز نہ بخشے گا (۳۴)

जो लोग नास्तिक हुए और ईश्वर के मार्ग से रोकते रहे फिर काफिर ही मर गए ईश्वर उनको कदापि न क्षमा करेगा (34)

(اے مسلمانو!) تم ہمت نہ ہارو اور سلامتی اور امن یعنی اسلام کی طرف دعوت دو تم ہی غالب رہو گے اللہ تمہارے ساتھ ہے تمہارے اعمال (اور تمہاری جانبازی) کو ہرگز ضائع نہ کرے گا (۳۵) [۸:۶۱]

(ऐ मुसलमानों!) तुम साहस न हारो और कल्याण और शान्ति अर्थात इस्लाम की ओर निमन्त्रण दो तुम ही अधिपति रहोगे ईश्वर तुम्हारे साथ है तुम्हारे कर्म (और तुम्हारी निर्भीक्ता) को कदापि नष्ट न करेगा (35) {8:61}

دنیا کی زندگی تو محض کھیل اور تماشا ہے (اس پر بھروسہ نہ کرو) اگر تم میں ایمان اور پرہیزگاری موجود ہوگی تو وہ تمہیں (پورا پورا) اجر دے گا اس کو تمہارے مال کی ضرورت نہیں (۳۶)

दुनिया का जीवन तो केवल खेल और दर्शन है (इस पर भरोसा न करो) यदि तुममें धर्म और सदाचारीता विधमान होगी तो वह तुम्हें (पूरा पूरा) फल देगा उसको तुम्हारे धन की आवश्यक्ता नही (36)

اگر وہ تم سے تمہارا مال طلب کرے یا تم کو تنگ کرے تو تم بخل کرنے لگو اور وہ بخل تمہاری بدنیتی کو ظاہر کر دے (۳۷)

यदि वह तुमसे तुम्हारा धन मांगे या तुमको तंग कर तो तुम कृपणता करने लगो और वह कृपणता तुम्हारी दुराशय को प्रकट कर दे (37)

خبردار تم وہ لوگ ہو کہ اللہ کی راہ میں خرچ کرنے کے لئے بلائے جاتے ہو اور تم میں ایسے بھی ہیں جو خرچ کرنے سے بخل کرنے لگتے ہیں اور جو (جہاد کی تیاری میں خرچ کرنے سے) بخل کرتا ہے وہ اپنے آپ سے بخل کرتا ہے (یعنی خرچ نہ کرنے کی وجہ سے جنگی ساز و سامان تیار نہ ہوگا اور دشمن تم کو غلام بنا لے گا) اور اللہ بے نیاز ہے اور تم محتاج ہو اور اگر تم (خرچ سے) منہ پھیرو گے تو وہ تمہاری جگہ اور لوگوں کو لے آئے گا اور وہ تمہاری طرح نہ ہوں گے (یعنی خرچ بھی کریں گے اور فرمانبردار جانباز بھی ہوں گے) (۳۸)

सावधान तुम वह लोग हो कि ईश्वर के मार्ग में व्यय करने के लिए बुलाए जाते हो, और तुममें ऐसे भी है जो व्यय करने से कृपणता करने लगते है, और जो (धर्म युद्ध की तैयारी में व्यय करने से) कृपणता करता है, वह अपने आपसे कृपणता करता है (अर्थात व्यय न करने के कारण युद्ध की सामग्री तैयार न होगी और शत्रु तुमको दास बना लेगा) और ईश्वर धनी निश्चिंत है और तुम निर्धन हो और यदि तुम (व्यय से) मुख फेरोगे तो वह तुम्हारे स्थान पर और लोगों को ले आएगा और वह तुम्हारी भांति न होंगे (अर्थात व्यय भी करेंगे और आज्ञाकारी और साहसी भी होंगे) (38)

सूरतुल फ़तह मदनी (48)

ऐ नबी हमने आपको खुली विजय प्रदान कर दी (1)

नोट- हुदेबिया की संधि के बाद जब विज्य की यह मंगल सूचना सुनाई गई तो लोग चकित थे कि इस संधि को विजय कैसे कहा जा सकता है जिसमें स्पष्ट तय मुसलमानों ने वह सम्पूर्ण प्रतिबन्धा मान लिए जो नास्तिक मुसलमानों से मनवाना चाहते थे, परन्तु थोड़े समय के बाद ही यह ज्ञात हो गया कि यह संधि वास्तव में एक बड़ी विजय थी जिसको उस समय एक सामान्य व्यक्ति नही समझ पाया परन्तु मुहम्मद स0 ने और उनके प्रमुख साथीयों ने इसको समझा जो वास्तव में विजय थी और मुहम्मद स0 भी यही चाहते थे जो कुरैश ने स्वयं ही प्रस्तुत कर दी और ईश्वर की इच्छा पूरा हो गई जो पहले से स्वीकार थी जो निम्न में अंकित है,

(1) कुरैश ने स्पष्टतः मुसलमानों का अधिकार काबे पर स्वीकार कर लिया,

(2) इस संधि से मुसलमानों को बराबर की शक्ति स्वीकार किया,

(3) यह कि मुसलमानों की युद्ध क्षमता का लोहा मान कर दस साला जंग बन्दी की संधि की,

(4) यदि युद्ध होता तो उन मुसलमानों को हानी होने का डर था जो मुसलमान मक्काह में छुपे थे इस संधि से उनको लाभ हुआ,

(5) यह कि शान्ति के दिनों में मुसलमानों और कुरैशी आपस में मिलजुल कर रहें आपसे में लेन देन करें, और उस लेन देन में मुसलमानों का चरित्र उनके सामने आए

(6) इस समय में कुरैश को मनन करने का अवसर मिल गया,

(7) जब कुरैश मक्काह से संधि हो गई तो उसके बाद वह यहूदियों की सहायता को न आ सकेंगे और यहूदि अकेले रह कर साहस हार देंगे, ख़ेबर के अवसर पर यही हुआ और यहूदि शक्ति समाप्त हो गई,

(8) यहूदि शक्ति समाप्त होते ही अनेकेश्वर वादी मक्काह के लिए जो सहायता का स्रोत था वह भी समाप्त हो गया,

(9) सबसे बड़ा लाभ यह हुआ जो विशेषता से मुहम्मद चाहते थे कि शान्ति के दिनों में इस्लाम धर्म का प्रचार का अवसर मिलेगा मक्काह वाले और दूसरे अरब कुरआन को सुनेंगे आपस में लेन देन होगा तो मुसलमानों का चरित्र उनके सामने आएगा और वह मनन करेंगे, यदि युद्ध का वातावरण रहता तो यह अवसर कदापि न मिलता जो हुदेबिया की संधि में मिल गया, और इस काल में मक्काह वाले और दूसरे अरब कुरआन और मुसलमानों के चरित्र से प्रभावित होकर इस्लाम स्वीकार करते रहे और एक समय वह आया कि मक्काह वालों ने स्वयं ही अपने हाथों से काबा की कुन्जि मुहम्मद स0 की सेवा में प्रस्तुत कर दी और आपका और इस्लाम का नेतृत्व स्वीकार कर लिया बिना युद्ध के ही यह थी वह स्पष्ट विजय {30:1से6}

हुदेबिया की संधि पर महामना उमर र0 इत्यादि की ओर से आपत्ति करना बताया गया है जो बिलकुल मिथ्या है, वह ऐसे लोग थे जिन्होंने अपने को पूरी प्रकार से ईश्वर और मुहम्मद स0 की सेवा में डाल दिया था, उनके किसी विषय में भी आना कानी नही करते थे जैसे आदेश हो गया उसको तुरन्त स्वीकार करते थे, हां यदि परामर्शन लिया जाता था तो अपबने विवेकानुसार अवश्य परामर्श देते थे, परन्तु अन्तिम निर्णय मूहम्मद स0 का होता था उसमें कोई व्याकूलता अनुभूत नही करते थे {4:65}

और वह लोग भी तो बड़े विवेक शील थे उन्होंने भी इस संधि में मंगल अनुभूत कर लिया था और सम्भावतः कभी मुहम्मद स0 ने भी उन लोगों के सामने अपनी इच्छा को प्रकट किया होगा परामर्शन करते

سورۃ الفتح ۔مدنی (۴۸)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اے نبی ہم نے آپ کو کھلی فتح عطا کر دی (۱)

نوٹ:۔صلح حدیبیہ کے بعد جب فتح کی یہ خوشخبری سنائی گئی تو لوگ حیران تھے کہ آخر اس صلح کو فتح کیسے کہا جا سکتا ہے جس میں بظاہر مسلمانوں نے وہ تمام شرائط مان لیں جو کفار مسلمانوں سے منوانا چاہتے تھے لیکن تھوڑی مدت کے بعد ہی یہ معلوم ہو گیا کہ یہ صلح درحقیقت ایک بڑی فتح تھی جس کو اس وقت ایک عام آدمی نہیں سمجھ پایا مگر محمدؐ نے اور ان کے خاص ساتھیوں نے اس کو سمجھا.جو حقیقت میں فتح تھی.اور محمدؐ بھی یہی چاہتے تھے جو قریش نے خود ہی پیش کر دیں اور اللہ کی مشیت پوری ہو گئی جو پہلے سے منظور تھی جو ذیل میں درج ہے.

(۱)قریش نے اعلانیہ مسلمانوں کا حق بیت اللہ پر تسلیم کر لیا

(۲)اس معاہدے سے مسلمانوں کو برابر کی طاقت تسلیم کیا

(۳) یہ کہ مسلمانوں کی جنگی صلاحیت کا لوہا مان کر دس سالہ جنگ بندی کا معاہدہ کیا

(۴)اگر جنگ ہوتی تو ان مسلمانوں کو نقصان ہونے کا خطرہ تھا جو مسلمان مکہ میں پوشیدہ تھے اس صلح سے ان کو فائدہ ہوا

(۵) یہ کہ امن کے دنوں میں مسلمان اور قریش آپس میں مل جل کر رہیں آپس میں لین دین کریں اور اس لین دین میں مسلمانوں کا اخلاق ان کے سامنے آئے

(۶)اس عرصے میں قریش کو غور کرنے کا موقع مل گیا

(۷) جب قریش مکہ سے معاہدہ ہو گیا تو اس کے بعد وہ یہودی کی مدد کو نہ آسکیں گیں اور یہودی تنہا رہ کر ہمت ہار دیں گے.خیبر کے موقع پر یہی ہوا اور یہودی طاقت ختم ہو گی

(۸)یہودی طاقت ختم ہوتے ہی مشرکین مکہ کے لئے مدد جو کا چشمہ تھا وہ بھی ختم ہو گیا

(۹)سب سے بڑا فائدہ یہ ہوا جو خاص طور سے محمدؐ چاہتے تھے کہ امن کے دنوں میں دین اسلام کی تبلیغ کا موقع ملے گا مکہ والے اور دوسرے عرب قرآن کو سنیں گے آپس میں لین دین ہوگا تو مسلمانوں کا اخلاق ان کے سامنے آئے گا اور وہ غور کریں گے اگر جنگ کا ماحول رہتا تو یہ موقع ہرگز نہ ملتا جو صلح میں مل گیا.اور اس عرصے میں مکہ والے اور دوسرے عرب قرآن اور مسلمانوں کے اخلاق سے متاثر ہو کر اسلام قبول کرتے رہے اور ایک وقت وہ آیا کہ مکہ والوں نے خود ہی اپنے ہاتھوں سے کعبہ کی کنجی محمدؐ کی خدمت میں پیش کر دی اور آپ کی اور اسلام کی سیادت قبول کر لی بلا جنگ کے ہی. یہی تھی وہ فتح مبین (۳۰:۱تا۶)

صلح حدیبیہ پر حضرت عمرؓ وغیرہ کی طرف سے اعتراض کرنا بتایا گیا ہے جو بالکل غلط ہے وہ ایسے لوگ تھے جنہوں نے اپنے کو پوری طرح سے اللہ اور محمدؐ کی خدمت میں ڈال دیا تھا.ان کے کسی بھی معاملہ میں چوں وچرا نہیں کرتے تھے جیسے حکم ہو گیا آمنا وصدقنا. ہاں اگر مشورہ لیا جاتا تھا تو اپنی فہم کے مطابق ضرور مشورہ دیتے تھے مگر آخری فیصلہ محمدؐ کا ہوتا تھا اس میں کوئی پریشانی محسوس نہیں کرتے تھے (۴:۶۵)

اور وہ لوگ بھی تو بڑے فہیم تھے انہوں نے بھی اس معاہدے میں خیر محسوس کر لیا تھا اور غالباً کبھی محمدؐ نے بھی ان لوگوں کے سامنے اپنی خواہش کا اظہار

ضرور کیا ہوگا بطور مشورے کے کہ اگر قریش صلح کا موقع دیں گے تو ضرور صلح کی جائے گی جس سے امن کے زمانے میں دین کی تبلیغ کی جاسکے اور اللہ نے وہ موقع فراہم کردیا اور قریش ہی کی طرف سے پیش ہوئی اور محمدؐ اور ان کے فہیم ساتھیوں نے خوشی کے ساتھ اللہ کا احسان مانتے ہوئے فوراً قبول کرلیا۔ پھر اعتراض کیوں لکھا ہے یہ بھی منافقوں کی چال ہے جیسے اور موقعوں پر ان حضرات کو بدنام کیا ہے ایسے ہی اس موقع پر کیا مگر غور کرنے سے ہر بات صاف ہوجاتی ہے۔

(اس صلح کا ایک یہ بھی فائدہ ہے آپ کے تبلیغ دین کے کام میں اس بدامنی کے زمانہ میں جو کمی ہوئی ہے جس کو آپ محسوس کررہے ہیں اس امن کے زمانہ میں آپ کو اس کی کے تلافی کرنے کا موقع ملے) تاکہ اللہ تمہاری اگلی اور پچھلی کوتاہیاں جو تبلیغ دین کے بارے میں بدامنی کی وجہ سے ہوگئیں ہیں ان سے درگزر کرے اور تم پر اپنی نعمتوں کی تکمیل کردے اور آپ کو سیدھے رستہ پر چلائے (۲)

نوٹ:۔ یعنی اب تک تبلیغ اسلام یا جنگی معاملات میں جتنی کوتاہیاں صحابہ کی طرف سے ہوئیں اللہ نے ان سب کو معاف کردیا۔ اس سے انکار نہیں کیا جاسکتا کہ پچھلے اٹھارہ سالوں میں مسلمانوں کی طرف سے بعض کوتاہیاں ہوئی تھیں جیسے جنگ احد پر یا ایسی ہی اور اس آیت میں ان جیسی لغزشوں کی طرف اشارہ ہے۔

اور اللہ آپ کو زبردست غلبہ عطا کردے گا (۳)

وہ اللہ ہی تو ہے جس نے مومنوں کے دلوں پر تسلی نازل فرمائی تاکہ ان کے ایمان کے ساتھ اور ایمان بڑھے اور آسمانوں اور زمین کے سارے لشکر اللہ ہی کے لئے ہیں وہ سب کچھ جاننے والا ہے اس کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں (۴)

اور (مسلمانوں کو اس آزمائش میں ڈالنے کی ایک غرض یہ بھی تھی) کہ مومن مردوں اور مومن عورتوں کو ایسی جنت میں داخل کرے جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہیں جہاں وہ ہمیشہ رہیں گے (اور ایک مقصد یہ بھی تھا) کہ ان کی بدحالیوں کو ان سے دور کردے اللہ کے نزدیک یہ بہت بڑی کامیابی ہے (۵)

اور (ایک مقصد یہ بھی تھا کہ) منافق مردوں اور منافق عورتوں اور مشرک مردوں اور مشرک عورتوں کو جو اللہ کے حق میں بُرے بُرے خیال رکھتے ہیں عذاب دے انہیں پر بُرے حادثے پڑیں اور اللہ کے قانون کے مطابق ان پر غصہ ہوا اور ان پر لعنت کی اور ان کے لئے دوزخ تیار کی اور وہ بُری جگہ ہے (۶)

اور آسمانوں اور زمین کے سارے لشکر اللہ ہی کے ہیں وہ سب پر غالب اور حکمت والا ہے (۷)

(اے محمدؐ!) ہم نے تم کو دنیا میں حق کا نمونہ بنا کر (اور اچھے کام کرنے والوں کو) خوشخبری سنانے والا اور (بدکاروں کو) ڈرانے والا بنا کر بھیجا ہے (۸)

(اور اے انسانو! محمدؐ کو معبوث کرنے کا مقصد یہ ہے کہ) تم اللہ پر اور اس کے رسول پر ایمان لاؤ اور ان کا ساتھ دو اور اس

हुए कि यदि कुरैश संधि का अवसर देंगे तो अवश्य संधि की जाएगी जिस से शान्ति के दिनों मं धर्म प्रचार किया जा सके और ईश्वर ने वह अवसर अर्जित कर दिया, और कुरैश ही की ओर से प्रस्तुत किया गया और मुहम्मद और उनके विवेक शील साथियों ने प्रसन्नता के साथ ईश्वर का उपहार मानते हुए तुरन्त स्वीकार कर लिया फिर आपत्ति क्यों लिखी है यह भी कपटियों का छल है जैसे और अवसरों पर उन श्रीमानों को बदनाम किया है ऐसे ही इस अवसर पर किया परन्तु मनन करने से हर बात स्पष्ट हो जाती है,

(इस संधि का एक यह भी लाभ है आपके धर्म प्रचार कार्य में उस अशान्ति के दिनों में जो कमी हुई है जिसको आप अनुभूत कर रहे हैं इस शान्ति के दिनों में आपको इस त्रुटि की भर पाई करने का अवसर मिले) ताकि ईश्वर तुम्हारी अगली और पिछली त्रुटियां जो धर्म प्रचार के विषय में अशान्ति के कारण से हो गई हैं उनको क्षमा करे और तुम पर अपने प्रसादों की पूर्ति कर दे और आपको सीधे मार्ग पर चलाए (2)

नोट– अर्थात अब तक धर्म प्रचार या युद्ध के विषय में जितनी त्रुटियाँ सहाबा की ओर से हुई ईश्वर ने उन सबको क्षमा कर दिया इससे इनकार नही किया जा सकता कि पिछले अठरह सालों में मुसलमानों की ओर से कतिपय त्रुटियाँ हुई थी जैसे जंगे ओहद पर या ऐसी ही और इस आयत में उन जैसी विचलनों की ओर संकेत है,

और ईश्वर आपको प्रचण्ड प्रभुत्व प्रदान कर देगा(3)

वह ईश्वर ही तो है जिसने आस्तिकों के हृदयों पर सांत्वना प्रेषित की ताकि उनके विश्वास के साथ और श्रद्धा बढ़े और आकाशों और पृथ्वी की सारी सैना ईश्वर ही के लिए है वह सब कुछ जानने वाला है उसका कोई कार्य युक्ति से रहित नही (4)

और (मुसलमानों को इस परिक्षा में डालने का एक कारण यह भी था) कि आस्तिक पुरूषों और आस्तिक स्त्रीयों को ऐसे स्वर्ग में प्रविष्ट करे जिनके नीचे नहरें बह रही है जहां वह सदैव रहेंगे (और एक उद्देश्य यह भी था) कि उनकी दुर्दशाओं को उन से दूर कर दे ईश्वर के निकट यह बहुत बड़ी सफलता है (5)

और (एक उद्देश्य यह भी था कि) कपटि पुरूषों और कपटि स्त्रीयों और अनेकेश्वर वादी पुरूषों और अनेकेश्वर वादी स्त्रीयों को जो ईश्वर के लिए बुरे बुरे विचार रखते है दण्ड दे उन्ही पर दुर घटना पड़े और ईश्वर नियमानुसार उन पर अप्रसन्न हुआ और उन पर धिक्कार की और उनके लिए नर्क तैयार की और वह बुरा स्थान है (6)

और आकाशों और पृथ्वी की सारी सैना ईश्वर ही की है वह सब पर अधिपति और युक्ति वाला है (7)

(ऐ मुहम्मद स0!) हमने तुमको दुनिया में सत्य का आदर्श बना कर (और अच्छे काम करने वालों को) शुभ सूचना सुनाने वाला और (दुराचारीयों) को डराने वाला बना कर भेजा है (8)

(और ऐ इन्सानों! मुहम्मद स0 को प्रेषित करने का उद्देश्य यह है कि) तुम ईश्वर पर और उसके रसूल पर विश्वास लाओ और उसका साथ दो और उसका

سम्मान करो और प्रातः और सांय ईश्वर की पवित्रता का वर्णन करते रहो (9)

کی توقیر کرو اور صبح اور شام اللہ کی پاکی بیان کرتے رہو (۹)

जो लोग आपसे वचन करेंगे वह ईश्वर से प्रतिज्ञा करेंगे ईश्वर का हाथ उनके हाथ पर होगा फिर जो प्रण को तोड़े तो प्रण तोड़ने की हानी उसी को है, और जो इस बात को जिसका उसने ईश्वर से प्रण किया है पूरा करे तो वह उसे शीघ्र ही बड़ा फल देगा (10)

جو لوگ آپ سے بیعت کریں گے وہ اللہ سے بیعت کریں گے اللہ کا ہاتھ ان کے ہاتھ پر ہوگا پھر جو عہد کو توڑے تو عہد توڑنے کا نقصان اسی کو ہے اور جو اس بات کو جس کا اس نے اللہ سے عہد کیا ہے پورا کرے تو وہ اسے عن قریب اجر عظیم دے گا (۱۰)

(ऐ मुहम्मद स0!) देहाती परिवार के लोग जो पीछे रह गए वह तुम्हारे सामने अभि यह कारण प्रस्तुत करेंगे कि हम अपने धान और परिवार की चिन्ता में लगे रहें आप हमारे वास्ते क्षमा की प्रार्थना करे वह लोग अपने मुख से ऐसी बाते कहेंगे जो उनके हृदयों में नही है उनसे कहना यदि ईश्वर तुम्हें हानी पहुंचाना चाहे या तुमको लाभ पहुंचाना चाहे तो कौन है जो उसके सामने तुम्हारी किसी बात का भी अधिकार रखता हो? (कोई नही) अपितु बात यह है कि ईश्वर ही तुम्हारे कर्मों से जो तुम करते हो अवगत है (11)

(اے محمدؐ!) بدوی قبائل کے لوگ جو پیچھے رہ گئے وہ تمہارے سامنے ابھی یہ عذر پیش کریں گے کہ ہم اپنے مال اور اہل وعیال کی فکر میں لگے رہے آپ ہمارے واسطے دعائے مغفرت کریں وہ لوگ اپنی زبان سے ایسی باتیں کہیں گے جو ان کے دلوں میں نہیں ہیں ان سے کہنا اگر اللہ تمہیں نقصان پہنچانا چاہے یا تم کو فائدہ پہنچانا چاہے تو کون ہے جو اس کے سامنے تمہاری کسی بات کا بھی اختیار رکھتا ہو؟ (کوئی نہیں) بلکہ بات یہ ہے کہ اللہ ہی تمہارے اعمال سے جو تم کرتے ہو باخبر ہے (۱۱)

(और उनसे यह भी कहना) अपितु बात यह है कि तुम समझ रहे थे कि रसूल और आस्तिक अपने परिवार में कभी लोट कर आने के ही नही, और यही बात तुम्हारे मनों को अच्छी लगी, और इसी कारण तुमने बुरे बुरे विचार किए और तुम बड़े ही दुराचारी लोग हो (12)

(اور ان سے یہ بھی کہنا) بلکہ بات یہ ہے کہ تم سمجھ رہے تھے کہ رسول اور مومن اپنے اہل وعیال میں کبھی لوٹ کر آنے کے ہی نہیں۔ اور یہی بات تمہارے دلوں کو اچھی معلوم ہوئی۔ اور اسی وجہ سے تم نے بُرے بُرے خیال کئے اور تم بڑے ہی بد باطن لوگ ہو (۱۲)

और जो लोग ईश्वर पर और उसके रसूल पर विश्वास नही रखते ऐसे काफिरों के लिए हमने भड़कती आग तैयार कर रखी है (13)

اور جو لوگ اللہ پر اور اس کے رسول پر ایمان نہیں رکھتے ایسے کافروں کے لئے ہم نے بھڑکتی آگ تیار کر رکھی ہے (۱۳)

और आकाशों और पृथ्वी का राज्य ईश्वर ही का है उसका नियम जिसे चाहे क्षमा करे और जिसे चाहे दण्ड दे और ईश्वर तो क्षमा करने वाला कृपालु है (परन्तु यह क्षमा और कृपा योग्य को मिलती है) (14)

اور آسمانوں اور زمین کی بادشاہی اللہ ہی کی ہے اس کا قانون جسے چاہے بخشے اور جسے چاہے سزا دے اور اللہ تو بخشنے والا مہربان ہے (مگر یہ بخشش اور مہربانی اہل کو ملتی ہے) (۱۴)

(ऐ मुसलमानों! जब कपटि लोग देखेंगे कि तुम ऐसे अभियान के लिए जाने वाले हो जहां सुगमता के साथ तुमको लाभ प्राप्त होंगे तो) जब तुम लोग ऐसे धान लेने चलोगे जो तुमको धनी कर देंगे तो जो लोग पीछे रह गए थे वह अभी कहेंगे कि हमें भी अनुमति दो कि आपके साथ चलें, क्या वह यह चाहते है कि ईश्वर के कथन को बदल दें, कह देना कि तुम कदापि हमारे साथ नही चल सकते, इसी प्रकार ईश्वर ने पहले कह दिया है, फिर कहेंगे (नही) तुम तो हमसे ईर्ष्या करते हो, बात यह है कि वह लोग समझते ही नही है परन्तु बहुत कम (15)

(اے مسلمانو! جب منافق لوگ دیکھیں گے کہ تم ایسی مہم کے لئے روانہ ہونے والے ہو جہاں آسانی کے ساتھ تم کو فائدے حاصل ہوں گے تو) جب تم لوگ ایسے مال لینے چلو گے جو تم کو غنی کر دیں گے تو جو لوگ پیچھے رہ گئے تھے وہ ابھی کہیں گے کہ ہمیں بھی اجازت دیجئے کہ آپ کے ساتھ چلیں۔ کیا وہ یہ چاہتے ہیں کہ اللہ کے قول کو بدل دیں۔ کہہ دینا کہ تم ہرگز ہمارے ساتھ نہیں چل سکتے۔ اسی طرح اللہ نے پہلے فرما دیا ہے پھر کہیں گے (نہیں) تم تو ہم سے حسد کرتے ہو بات یہ ہے کہ وہ لوگ سمجھتے ہی نہیں مگر بہت کم (۱۵)

और जो कपटि नही है अपितु अपनी भूल के कारण पीछे रह गए थे) उनसे कह देना कि तुम शीघ्र ही एक योद्धा जाति से युद्ध करने के लिए बुलाए जाओगे उनसे तुम युद्ध करोगे या वह तुम्हारे आज्ञाकारी हो जाएंगे यदि तुम आदेश मानोगे तो ईश्वर तुमको अच्छा फल देगा और यदि मुख फेरोगे

(اور جو منافق نہیں ہیں بلکہ اپنی بھول کی وجہ سے پیچھے رہ گئے تھے) ان سے کہہ دینا کہ تم جلد ہی ایک سخت جنگ جو قوم سے لڑنے کے لئے بلائے جاؤ گے ان سے تم جنگ کرو گے یا وہ تمہارے فرمانبردار ہو جائیں گے۔ اگر تم حکم مانو گے تو اللہ تم کو اچھا بدلہ دے گا اور اگر منہ پھیر لو گے جیسے

जैसे पहली बार फैरा था तो वह तुमको बड़ी पीड़ा का दण्ड देगा (16)

न तो अन्धो पर पाप है और न लंगड़े पर पाप है और न रोगी पर पाप है कि युद्ध की यात्रा से पीछे रह जाएं (उनके लिए दूसरे कर्मों में ईश्वर की आज्ञाकारी प्रयाप्त है) और जो व्यक्ति ईश्वर और उसके रसूल के अदेश पर चलेगा ईश्वर उसको स्वर्ग में प्रविष्ट करेगा जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी और जो मुख फैरेगा उसे बुरे दुख का दण्ड देगा (17)

(ऐ मुहम्मद स0।) जब आस्तिक आपसे वृक्ष के नीचे प्रण कर रहें थे तो ईश्वर उनसे प्रसन्न हो गया (उनकी श्रद्धा के वेग के कारण) और जो शुद्धता उनके हृदयों में थी प्रकट हो गई तो उन पर सांत्वना प्रेषित की और उन्हें शीघ्र विजय प्रदान की (18) {30:1से6}

और बहुत से परिहार (ग़नीमतें) जो उन्होंने प्राप्त की और ईश्वर अधिपति और ज्ञानी है (19)

और ईश्वर ने अपने बहुत से परिहार अनुकम्पाएं और सहायता का वचन किया है जिनको तुम प्राप्त करोगे और तात्कालिक तो तुम्हें अपना परिहार अनुकम्पा सहायता यह प्रदान किया कि लोगों के हाथ तुम्हारे विरुद्ध उठने से रोक दिए यह ईश्वर की सहायता पुरुस्कार ही तो है उससे उद्देश्य यह था कि यह आस्तिकों के लिए एक चिन्ह हो और तुम उसकी अनुकम्पा से सीधे मार्ग पर चलो (20)

और तुम्हें और (विजय) परिहार भी देगा जो तुम्हारे वश में न थी वह ईश्वर के अधिकार में है और ईश्वर हर वस्तु के अनुमान निश्चित करने वाला है (21)

और यदि तुमसे काफ़िर लड़ेंगे तो पीठ फैर कर भाग जाएंगे फिर किसी को अपना मित्र और सहायक न पाएंगे (22)

ईश्वर के उस नियामनुसार जो पहले से चला आ रहा है और तुम ईश्वर के विधान में परिवर्तन न पाओगे और वही तो है जिसने अपनी अनुकम्पा से तुम को उन पर विजेता करने के बाद मक्काह की घाटी में उनके हाथ तुम से और तुम्हारे हाथ उनसे रोक दिए और जो कुछ तुम करते हो उसको देख रहा है यह हाथ रोक देना भी तो उपकार अनुकम्पा है (24)

वही लोग तो है जिन्होंने कुफ्र किया और तुमको सम्मानित मस्जिद से रोका भेंट कुरबनी के ऊंटों को उनके बलिदान के स्थान पर न पहुंचने दिया यदि (मक्काह में) ऐसे आस्तिक पुरुष स्त्री उपस्थित न होते जिन्हें तुम नही जानते और यह भय न होता कि अबोधता में तुम उन्हें पद दलित कर दोगे और इस से तुम पर आरोप आएगा (तो युद्ध न रोका जाता रोका इस लिए गया) ताकि ईश्वर अपनी अनुकम्पा परिहार में जिसको चाहे प्रविष्ट करे वह आस्तिक अलग हो गए होते तो जो नास्तिक थे उनको हम अवश्य दण्ड देते (25)

जब उन नास्तिकों ने अपने मनों में मूर्खता का

پہلی دفعہ پھیرا تھا تو وہ تم کو بڑی تکلیف کی سزا دے گا(۱۶)

نہ تو اندھے پر گناہ ہے اور نہ لنگڑے پر گناہ ہے اور نہ بیمار پر گناہ ہے کہ سفر جنگ سے پیچھے رہ جائیں (ان کے لئے دوسرے کاموں میں اللہ کی فرمانبرداری کافی ہے) اور جو شخص اللہ اور اس کے رسول کے حکم پر چلے گا اللہ اس کو جنت میں داخل کرے گا جس کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی اور جو روگردانی کرے گا اسے بُرے دکھ کی سزا دے گا(۱۷)

(اے محمدؐ!) جب مومن آپ سے درخت کے نیچے بیعت کر رہے تھے تو اللہ ان سے راضی ہو گیا (ان کے جوش ایمان کی وجہ سے) اور جو خلوص ان کے دلوں میں تھا وہ ظاہر ہو گیا تو ان پر تسلی نازل فرمائی اور انہیں جلد فتح عنایت کی (۱۸)[۳۰:۱تا۶]

اور بہت سی غنیمتیں جو انہوں نے حاصل کیں اور اللہ غالب حکمت والا ہے(۱۹)

اور اللہ نے اپنی بہت سے رحمت اور مدد کا وعدہ کیا ہے جن کو تم حاصل کرو گے اور فوری طور پر تمہیں اپنی رحمت یہ عطا کی کہ لوگوں کے ہاتھ تمہارے خلاف اٹھنے سے روک دئے یہ اللہ کی مدد ہی تو ہے اور اس سے غرض یہ تھی کہ یہ مومنوں کے لئے ایک نشانی ہو اور تم اس کی رحمت سے سیدھے رستے پر چلو(۲۰)

اور تمہیں اور (فتح) رحمتیں بھی دے گا جو تمہارے قبضہ میں نہ تھیں وہ اللہ کے قبضہ میں ہیں اور اللہ ہر چیز کے اندازے مقرر کرنے والا ہے(۲۱)

اور اگر تم سے کافر لڑیں گے تو پیٹھ پھیر کر بھاگ جائیں گے پھر کسی کو اپنا دوست اور مددگار نہ پائیں گے(۲۲)

اللہ کے اس قاعدے کے مطابق جو پہلے سے چلا آ رہا ہے اور تم اللہ کے قانون میں تبدیلی نہ پاؤ گے(۲۳)[۳۰:۴]

اور وہی تو ہے جس نے اپنی رحمت سے تم کو ان پر فتحیاب کرنے کے بعد وادی مکہ میں ان کے ہاتھ تم سے اور تمہارے ہاتھ ان سے روک دئے اور جو کچھ تم کرتے ہو اس کو دیکھ رہا ہے یہ ہاتھ روک دنیا بھی تو غنیمت ہے(۲۴)

وہی لوگ تو ہیں جنہوں نے کفر کیا اور تم کو مسجد حرام سے روکا ہدی کے اونٹوں کو ان کی قربانی کی جگہ نہ پہنچنے دیا اگر (مکہ میں) ایسے مومن مرد و عورت موجود نہ ہوتے جنہیں تم نہیں جانتے اور یہ خطرہ نہ ہوتا کہ نادانستگی میں تم انہیں پامال کر دو گے اور اس سے تم پر الزام آئے گا (تو جنگ نہ روکی جاتی۔ روکی اس لئے گئی) تا کہ اللہ اپنی رحمت غنیمت میں جس کو چاہے داخل کرے وہ مومن الگ ہو گئے ہوتے تو جو کافر تھے ان کو ہم ضرور سخت سزا دیتے (۲۵)

جب ان کافروں نے اپنے دلوں میں جاہلانہ محبت بٹھائی تو

स्वाभिमान विठा लिया तो ईश्वर ने अपने रसूल और आस्तिकों पर शान्ति सांत्वना अवतरित की जो परिहार गनिमत है और यह भी अनुकम्पा है कि आस्तिकों को संयम की बात का आबद्ध रखा कि वही उसके अधिक अधिकारी और उसके योग्य है ईश्वर हर वस्तु का ज्ञान रखता है कि अपनी परिहार गनिमत वह योग्य को ही देता है (26)

ईश्वर ने अपने नबी को सच्चा स्वपन दिखाया था कि निःसंदेह तुम प्रविष्ट होंगे सम्मानित मस्जिद में निःसंदेह ईश्वर यही चाहता है शान्ति के साथ अपने बाल मुंडवाओगे या कतरवाओगे, तुम्हें कोई भय न होगा वह उस बात को जानता है जिसे तुम नही जानते इसलिए इस प्रवेश के अतिरिक्त और निकट ही विजय मिलेगी (27)

वही तो ईश्वर है जिसने अपने रसूल मुहम्मद स0 को पथ प्रदर्शन (की पुस्तक) और सत्य धर्म के साथ भेजा ताकि इसको सम्पूर्ण प्रचलित काल्पनिक पंथों पर प्रकट और अधिपति कर दे और सत्य प्रकट करने के लिए ईश्वर की साक्ष्य प्रयाप्त है(28)

मुहम्मद स0 ईश्वर के ईशदूत है और उनके साथी नास्तिकों पर तो कठोर है और आपस में दयालु है तुम जब उन्हें देखोगे तो उन्हें रूकू व सजूद और ईश्वर की प्रसन्नता की मांग करने में लीन पाओगे अर्थात नमर्ता के साथ ईश्वर की आज्ञाकारी करते हुए सजूद अर्थात नमर्ता के प्रभाव उनके चहरे पर विद्यमान है जिनसे वह लोग अलग पहचान लिए जाते है यह है उनके गुण तौरात में और इन्जील में उनकी उपमा यूं दी गई है कि मानों एक खेती है जिसने पहले कोंपल निकाली फिर उसको शक्तिमिली फिर वह गदराई फिर वह अपने तने पर खड़ी हो गई कृषि करने वालों को वह प्रसन्न करती है ताकि नास्तिक उनके फूलने फलने पर जलें इस दल के लोग जो विश्वास लाए और सत्कर्म किए ईश्वर ने उनसे क्षमा और बड़े फल का वचन किया है (29)

नोट- चेहरो पर चिन्ह का अर्थ यह है कि जो व्यक्ति सदाचारी होता है उसके चेहरे से भलापन प्रकट होता है उसका चरित्र अच्छा होता है इस कारण व्यक्ति उसके निकट आते है परन्तु जो व्यक्ति दुष्ट होता है तो उसके चेहरे पर एक शैतानी झलक होती है उसका चरित्र अनुचित होता है, उसको देख कर लोग घृणा करते है,

चेहरे का जो चिन्ह बताया है वह यह है वह चिन्ह नही है जो नमाज़ी अपने माथे पर एक गढ्ढा बना लेते है उस चिन्ह से तात्पर्य सज्जनता नही है सज्जना वही है जो सदाचारी व्यक्तियों के चेहरो से प्रकट होती है आयत में रूकू और सजदे से तात्पर्य ईश्वर की आज्ञाकारी है,

सूरतुल हुजरात मदनी 49

ऐ वह लोगो! जो विश्वास लाए हो ईश्वर के वह आदेश जो रसूल के द्वारा दिए गए है और जो सुरक्षा के मध्य है उनका अनूकरण करो अपनी

اللہ نے اپنے رسول اور مومنوں پر تسکین رحمت نازل فرمائی جو غنیمت ہے اور یہ بھی رحمت ہے کہ مومنوں کو تقویٰ کی بات کا پابند رکھا کہ وہی اس کے زیادہ حقدار اور اس کے اہل ہیں اللہ ہر چیز کا علم رکھتا ہے کہ اپنی رحمت وہ اہل کو ہی دیتا ہے (۲۶)

اللہ نے اپنے نبی کو سچا خواب دکھایا تھا کہ یقیناً تم داخل ہوگے ادب والی مسجد میں یقیناً اللہ یہی چاہتا ہے امن کے ساتھ اپنے بال منڈواؤ گے یا کترواؤ گے تمہیں کوئی خوف نہ ہوگا وہ اس بات کو جانتا ہے جسے تم نہیں جانتے اس لئے اس داخلے کے علاوہ اور قریب ہی فتح ملیں گی (۲۷)

وہی تو اللہ ہے جس نے اپنے رسول محمدؐ کو ہدایت (کی کتاب) اور دین حق کے ساتھ بھیجا تاکہ اس کو تمام رائج الوقت فرضی دینوں پر ظاہر اور غالب کردے اور حق ظاہر کرنے کے لئے اللہ کی گواہی کافی ہے (۲۸)

محمدؐ اللہ کے رسول ہیں اور ان کے اصحاب کافروں پر تو سخت ہیں اور آپس میں رحمدل ہیں تم جب انہیں دیکھو گے تو انہیں رکوع وسجود اور اللہ کے فضل اور اس کی خوشنودی کی طلب میں مشغول پاؤ گے یعنی عاجزی کے ساتھ اللہ کی فرمانبرداری کرتے ہوئے سجود یعنی عاجزی کے اثرات ان کے چہروں پر موجود ہیں جس سے وہ الگ پہچان لئے جاتے ہیں یہ ہے ان کی صفت توراۃ میں اور انجیل میں ان کی مثال یوں دی گئی ہے کہ گویا ایک کھیتی ہے جس نے پہلے کونپل نکالی پھر اس کو تقویت ملی پھر وہ گدرائی پھر وہ اپنے تنے پر کھڑی ہوگئی کاشت کرنے والوں کو وہ خوش کرتی ہے تاکہ کفار ان کے پھلنے پھولنے پر جلیں۔ اس گروہ کے لوگ جو ایمان لائے اور نیک عمل کئے اللہ نے ان سے مغفرت اور بڑے اجر کا وعدہ کیا ہے (۲۹)

نوٹ:۔ چہروں پر نشانی کا مطلب یہ ہے کہ جو آدمی نیک ہوتا ہے اس کے چہرے سے بھلاپن ظاہر ہوتا ہے اس کا اخلاق اچھا ہوتا ہے اس وجہ سے آدمی اس کے قریب آتے ہیں لیکن جو آدمی بد ہوتا ہے تو اس کے چہرے پر ایک شیطانی جھلک ہوتی ہے اس کا اخلاق خراب ہوتا ہے اس کو دیکھ کر لوگ نفرت کرتے ہیں۔

چہرے کا جو نشان بتایا ہے وہ یہ ہے وہ نشان نہیں ہے جو نمازی اپنی پیشانی پر ایک گڈھ بنا لیتے ہیں اس نشان سے مراد شرافت کے آثار نہیں شرافت وہی ہے جو نیک آدمیوں کے چہروں سے ظاہر ہوتی ہے آیت میں رکوع اور سجدے سے مراد اللہ کی فرمانبرداری ہے

سورۃ الحجرات ۔ مدنی (۴۹)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اے وہ لوگو! جو ایمان لائے ہو اللہ کے وہ احکام جو رسول کے ذریعہ دیئے گئے ہیں اور جو حفاظت کے درمیان ہیں

ان کی پیروی کرو اپنی مرضی کے احکام کی پیروی نہ کرو (اگر
اپنی مرضی کی پیروی کرو گے تو) یہ اللہ و رسول سے بڑھ جانے کے مترادف ہوگا۔
اور اللہ کی نافرمانی کرنے سے ڈرتے رہو بے شک اللہ سنتا اور جانتا ہے (۱)

इच्छा के आदेशों का अनुसरण न करो (यदि अपनी इच्छा का अनुकरण करोगे तो) यह ईश्वर व रसूल से बढ़ जाने के समान होगा और ईश्वर की अवज्ञा करने से डरते रहो निःसंदेह ईश्वर सुनता और जानता है (1)

اور اے ایمان والو! اپنی آواز بھی رسول کی آواز سے اونچی
نہ کرو (یعنی کسی معاملہ میں وہ کوئی حکم دیں اور تم اس کے
مقابلہ میں اپنی مرضی چلانا چاہو یہ بھی غلط ہے) اور جس
طرح آپس میں ایک دوسرے سے زور سے بولتے ہو اس
طرح ان کے روبرو زور سے نہ بولا کرو (ایسا نہ ہو) کہ تمہارے اعمال ضائع
ہو جائیں اور تم کو خبر بھی نہ ہو (۲)

और ऐ आस्तिकों! अपनी ध्वनी भी रसूल की ध्वनी से ऊंची न करो (अर्थात किसी विषय में वह कोई आदेश दें और तुम उसकी तुलना में अपनी इच्छा चलाना चाहो यह भी अनुचित है) और जिस प्रकार आपस में एक दूसरे को वेग से बोलते हो इस प्रकार उनके समक्ष वेग से न बोला करो (ऐसा न हो) कि तुम्हारे कर्म नष्ट हो जाए और तुमको सूचना भी न हो (2)

جو لوگ اللہ کے رسول کے سامنے دبی آواز میں ادب کے
ساتھ بولتے ہیں (یعنی ان کے احکام کو مانتے ہیں) اللہ
نے ان کے دل تقوے کے لئے آزمائے ہیں ان کے لئے
بخشش اور اجر عظیم ہے (۳)
بے شک جو لوگ تم کو حجروں کے باہر سے آواز دیتے ہیں
ان میں سے اکثر بے عقل ہیں (۴)
اور اگر وہ لوگ صبر کئے رہیں یہاں تک کہ آپ خود نکل کر
آئیں ان کے پاس تو وہ ان کے لئے بہتر ہوتا اور اللہ تو
بخشنے والا مہربان ہے (۵)
مومنو! اگر کوئی بدکردار تمہارے پاس کوئی خبر لے کر آئے تو
اچھی طرح چھان بین کر لیا کرو ایسا نہ ہو کہ غلط معلومات کی
بنا پر تم کسی قوم کو نقصان پہنچا دو پھر تم کو بعد میں اپنی غلطی پر
نادم ہونا پڑے (۶) [۴:۸۳، ۴:۵۹، سورہ نور]

जो लोग ईश्वर के रसूल के सामने दबी ध्वनि से शिष्टता के साथ बोलते हैं (अर्थात उनके आदेशों को मानते हैं) ईश्वर ने उनके हृदयों की संयम के लिए परिक्षा कर ली है उनके लिए क्षमा और बड़ा फल है (3)
निःसंदेह जो लोग तुमको हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें से अधिकांश बुद्धिहीन हैं (4)
और यदि वह लोग धैर्य किए रहें यहां तक के आप स्वयं निकल कर आएं उनके पास तो वह उनके लिए उत्तम होता और ईश्वर तो क्षमा करने वाला कृपालु है (5)
आस्तिकों! यदि कोई दुराचारी तुम्हारे पास कोई सूचना ले आए तो अच्छी प्रकार छानबीन कर लिया लिया करो ऐसा न हो कि मिथ्या जानकारी के आधार पर तुम किसी जाति को हानी पहुंचा दो फिर तुमको बाद में अपनी त्रुटि पर लज्जित होना पड़े (6) {4:83, 4:59, सूरतनूर}

اور جان رکھو کہ تم میں اللہ کا رسول موجود ہے اور وہ بہت
سے معاملات میں تمہاری بات مان لیا کریں (اونچی آواز
کو) تو تم خود ہی مشکل میں پڑ جاؤ لیکن اللہ نے تمہیں
ایمان کی محبت سے نوازا اور اس کو تمہارے دلوں میں سجا دیا
اور کفر اور گناہ اور نافرمانی سے تم کو بیزار کر دیا وہی وہ لوگ
ہیں جو راہ ہدایت پر ہیں (۷)

और जान रखो तुममें ईश्वर का रसूल विद्यमान है यदि वह बहुत से प्रसंगों में तुम्हारी बात मान लिया करे (ऊंची ध्वनी को) तो तुम स्वयं ही विपत्ति में पड़ जाओ परन्तु ईश्वर ने तुम्हें ईमान के प्रेम से चुना और उसको तुम्हारे हृदयों में सजा दिया और कुफ्र और पाप और अवज्ञा से तुमको अप्रसन्न कर दिया वही वह लोग हैं जो पथ प्रदर्शन पर हैं (7)

(یعنی) اللہ کے فضل اور احسان سے اور اللہ جاننے والا اور
حکمت والا ہے (۸)
اور اگر مومنوں میں سے کوئی دو فریق آپس میں لڑ پڑیں تو
ان میں صلح کرا دو پھر اگر ایک فریق دوسرے فریق پر زیادتی
کرے تو زیادتی کرنے والے سے لڑو یہاں تک کہ وہ اللہ
کے حکم کی طرف رجوع لائے پس جب وہ رجوع لائے تو
دونوں فریق میں انصاف کے ساتھ صلح کرا دو اور انصاف
سے کام لو کہ اللہ انصاف کرنے والوں کو پسند کرتا ہے (۹)
مومن تو آپس میں بھائی بھائی ہیں تو اپنے دو بھائیوں میں
صلح کرا دیا کرو اور اللہ سے ڈرتے رہو تاکہ تم پر رحم کیا
جائے (۱۰)

(अर्थात) ईश्वर के कृपा दया और उपकार से और ईश्वर जानने वाला है और युक्ति वाला है (8)
और यदि आस्तिकों में से कोई दो पक्ष आपस में लड़ पड़े तो उनमें संधि करा दो फिर यदि एक पक्ष दूसरे पक्ष पर अधिक्ता करे तो अत्याचार करने वाले से लड़ो यहां तक कि वह ईश्वर के आदेश की ओर पलट आए पस जब वह आज्ञाकारी हो जाए तो दोनों पक्षो में न्याय के साथ संधि करा दो और न्याय से काम लो कि ईश्वर न्याय करने वालों को पसन्द करता है (9)
आस्तिक तो आपस में भाई भाई हैं तो अपने दो भाईयों में संधि करा दिया करो और ईश्वर से डरते रहो ताकि तुम पर दया की जाए (10)

ऐ लोगों! जो विश्वास लाए हो, न (जाति) पुरूष दूसरे पुरूषों का उपहास उड़ाए हो सकता है कि वह उन से उत्तम हो, और न स्त्रीयां दूसरी स्त्रीयों का उपहास उड़ाएं हो सकता है कि वह उनसे उत्तम हो आपस में एक दूसरे पर व्यंग्य न करो और न एक दूसरे को बुरी उपाधी से याद करो आस्था लाने के बाद पापचार में नाम पैदा करना बहुत बुरी बात है और जिन लोगों ने इस गतिविधि से पश्चाताप न किया वह अत्याचारी है (11)

اےلوگو! جوایمان لائے ہونہ مرد(قوم)دوسرے مردوں کا مذاق اڑائیں ہوسکتا ہے کہ وہ ان سے بہتر ہوں، اور نہ عورتیں دوسری عورتوں کا مذاق اڑائیں ہوسکتا ہے کہ وہ ان سے بہتر ہوں آپس میں ایک دوسرے پر طعن نہ کرو اور نہ ایک دوسرے کو بُرے القاب سے یاد کروایمان لانے کے بعد فسق میں نام پیدا کرنا بہت بُری بات ہےاور جن لوگوں نےاس روش سے توبہ نہ کی وہ ظالم ہیں(۱۱)

ऐ लोगों! जो विश्वास लाए हो बहुत गुमान करने से संयम करो कि कतिपय गुमान पाप होते हैं जिज्ञासा न करो और तुममें से कोई किसी की परोक्ष निन्दा न करे क्या तुम्हारे अन्दर कोई ऐसा है जो अपने मृतक भाई का मांस खाना पसन्द करेगा देखो तुम स्वयं उससे घृणा करते हो (परोक्ष निन्दा करना मृतक मांस खाना ही है) ईश्वर की अवज्ञा से डरो ईश्वर बड़ा पश्चाताप स्वीकार करने वाला और कृपालु है (12)

اےلوگو! جوایمان لائے ہو بہت گمان کرنے سے پرہیز کرو کہ بعض گمان گناہ ہوتے ہیں تجسّس نہ کرنا اورتم میں سے کوئی کسی کی غیبت نہ کرے کیا تمہارے اندر کوئی ایسا ہے جواپنے مرے ہوئے بھائی کا گوشت کھانا پسند کرے گا دیکھوتم خوداس سے گھن کرتے ہو(غیبت کرنا مردار گوشت کھانا ہی ہے)اللہ کی نافرمانی سے ڈرواوراللہ بڑا توبہ قبول کرنےوالا اوررحیم ہے(۱۲)

लोगों! हमने तुमको एक पुरूष और एक स्त्री से पैदा किया फिर तुम्हारे विभाग और परिवार बनाए इस लिए कि तुम एक दूसरे को पहचानों (तुम सब आदम की सन्तान हो अतः वशांवली से भाई भाई हो, किसी को दूसरे पर ज्येष्ठता नहीं है) ईश्वर के निकट तुममें सबसे अधिक सम्मान वाला वह है जो सबसे अधिक ईश्वर की अवज्ञा करने से डरने वाला है, अर्थात अधिक आज्ञाकारी करता है, ईश्वर सब कुछ जानता है उसे सूचना है (कि तुममें कौन सम्मान वाला है और कौन नहीं) (13)

لوگو! ہم نےتم کوایک مرداورایک عورت سے پیدا کیا پھر تمہارے شعبےاور قبیلے بنائےاس لئے کہ تم ایک دوسرے کو پہچانو(تم سب آدم کی اولادہو اس لئے نسلی اعتبار سے سب بھائی بھائی ہو کسی کو دوسرے پر برتری نہیں ہے)اللہ کے نزدیک تم میں سب سے زیادہ عزت والا وہ ہے جو سب سے زیادہ اللہ کی نافرمانی کرنے سے ڈرنے والا ہےیعنی زیادہ فرمانبرداری کرتا ہےاللہ سب کچھ جانتا ہےاسے خبر ہے(کہ تم میں کون عزت والا ہےاورکون نہیں ہے)(۱۳)

बद्दू अरब कहते हैं हम ईमान ले आए (उनसे) कहो तुम अभी ईमान नहीं लाए अपितु यह कहो कि हम शान्ति युद्ध न करने की संधि में प्रविष्ट हो गए हैं, जो शान्ति संधि तुमने मुझसे किया है, ईमान तो अभी तुम्हारे हृदयों में प्रविष्ट ही नहीं हुआ (तुमने मेरी आज्ञाकारी स्वीकार की है यह तो सब तब होगा) यदि तुम ईश्वर और रसूल के आदेश पर चलो तो ईश्वर तुम्हरे कर्मों में से कुछ भी कम न करेगा निःसंदेह ईश्वर बड़ा कृपालु और क्षमा करने वाला है (14)

بدوعرب کہتے ہیں ہم ایمان لے آئے (ان سے) کہو تم ابھی ایمان نہیں لائے بلکہ یہ کہو کہ ہم سلامتی جنگ نہ کرنے کے معاہدے میں داخل ہوگئے ہیں جو معاہدہ امن تم نے مجھ سے کیا ہےایمان تو ابھی تمہارے دلوں میں داخل ہی نہیں ہوا (تم نے میری اطاعت قبول کی ہے یہ تو تب ہوگا)اگر تم اللہ اوررسول کے حکم پر چلوتو اللہ تمہارے اعمال میں سے کچھ بھی کم نہ کرے گا بےشک اللہ بڑامہربان اوربخشنے والا ہے(۱۴)

(तो सुनों!) आस्तिक (धर्म वाले) तो वह लोग है जो ईश्वर और उसके रसूल पर विश्वास लाए और उसमें किसी प्रकार की शंका व भ्रम न किया अपितु ईश्वर के मार्ग में जान व माल से धर्म युद्ध किया वही वह लोग है जो सच्चे आस्तिक है (15)

(توسنو)مومن (ایمان والے)تو وہ لوگ ہیں جو اللہ اور اس کےرسول پرایمان لائےاوراس میں کسی طرح کا شک وشبہ نہ کیا بلکہ اللہ کی راہ میں جان ومال سے جہاد کیا وہی وہ لوگ ہیں جو سچے مومن ہیں (۱۵)

(ऐ मुहम्मद स0) तुम उनसे कहो क्या तुम ईश्वर को अपनी धर्मनिष्ठा जताते हो? (तो क्या तुमने यह समझ लिया है कि ईश्वर को तुम्हारे अन्दरूनी दशा का पता नहीं है?) ईश्र तो उन सब वस्तुओं को जानता है जो आकाशों और पृथ्वी में है, ईश्वर हर वस्तु से अवगत है (अतः वह जानता है कि तुममें कौन धर्म वाला आस्तिक है) (16)

(اےمحمدؐ!)تم ان سے کہو کیا تم اللہ کواپنی دین داری جتاتے ہو؟ (تو کیا تم نے یہ سمجھ لیا ہے کہ اللہ کو تمہارے اندرونی حالات کا پتہ نہیں ہے؟)اللہ تو ان تمام چیزوں کو جانتا ہے جوآسمانوں اورزمین میں ہےاللہ ہر چیز سے واقف ہے(اس لئے وہ جانتا ہے کہ تم میں کون ایمان دارمومن ہے)(۱۶)

वह बद्दवी लोग तुम पर उपकार रखेंगे कि हमने तुम्हारी शान्ति की संधि को स्वीकार कर लिया है कह दो कि शान्ति की संधि में सम्मिलित होने का

وہ بدوی لوگ تم پر احسان رکھیں گے کہ ہم نے تمہارے سلامتی کے معاہدے کو قبول کرلیا ہے کہدو کہ سلامتی کے

एहसान मुझ पर न रखो अपितु ईश्वर तुम पर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें आस्तिक होने का एक मार्ग दिखाया है (और इस संधि में सम्मिलित होने से तुम्हारी रक्षा भी हो गई) यदि तुम अपने धर्म वचन के वाद को सच कर दो (17)

معاہدے میں شامل ہونے کا احسان مجھ پر نہ رکھو بلکہ اللہ تم پر احسان رکھتا ہے کہ اس نے تمہیں مومن ہونے کا ایک راستہ دکھایا ہے (اور اس معاہدے میں شامل ہونے سے تمہاری حفاظت بھی (ہوگئی) بشرطیکہ تم اپنے ایمان عہد کے وعدے کو سچ کر دو (۱۷)

निःसंदेह ईश्वर आकाशों और पृथ्वी की गुप्त बातों को जानता है और जो कुछ तुम करते हो उसे देखता है (अतः ठीक मस्तिष्क से इस्लाम धर्म को स्वीकार कर लो उपकार रखने की गतिविधि छोड़ दो यह गतिविधि उपकार रखने की ठीक नही है यह संधि तो तुम्हारे भले की है कि तुम मेरे सह प्रतिज्ञा बन गए और शत्रुओं से सुरक्षित हो गए) (18)

بے شک اللہ آسمانوں اور زمین کی پوشیدہ باتوں کو جانتا ہے اور جو کچھ تم کرتے ہو اسے دیکھتا ہے (اس لئے صحیح دماغ سے اسلام دین کو قبول کرلو احسان رکھنے کی روش چھوڑ دو یہ روش احسان رکھنے کی ٹھیک نہیں ہے یہ صلح تو تمہارے بھلے کی ہے کہ تم میرے حلیف بن گئے اور دشمنوں سے محفوظ ہو گئے) (۱۸)

सूरत काफ मक्की 50

سورۃ ق۔ مکی (۵۰)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

काफ ऐ मुहम्मद स0 युक्ति से भरा कुरआन साक्षी है (कि इस कुरआन को प्रस्तुत करने वाला ईश्वर का भेजा हुआ है) (1)

ق۔ اے محمدؐ! حکمت سے بھرا قرآن شاہد ہے (کہ اس قرآن کو پیش کرنے والا اللہ کا بھیجا ہوا ہے) (۱)

परन्तु उन लोगों को आश्चर्य है कि उन्ही में से एक सावधान करने वाला (रसूल बन कर) उन के पास आया तो काफिर कहने लगे कि यह तो बड़ी विचित्र बाते करता है (2)

لیکن ان لوگوں کو تعجب ہے کہ انہی میں سے ایک متنبہ کرنے والا (رسول بن کر) ان کے پاس آیا تو کافر کہنے لگے یہ تو بڑی عجیب باتیں کرتا ہے (۲)

(वह यह कि जब तुम मर जाओगे तो पुनः जीवित किए जाओगे) भला जब हम मर जाएंगे और मिट्टी हो जाएंगे (तो फिर जीवित होंगे?) यह जीवित होना तो बुद्धि से सुदर है (3)

(وہ یہ کہ جب تم مر جاؤ گے تو دوبارہ زندہ کئے جاؤ گے) بھلا جب ہم مر جائیں گے اور مٹی ہو جائیں گے (تو پھر زندہ ہوں گے؟) یہ زندہ ہونا تو عقل سے بعید ہے (۳)

(क्या वह लोग नही जानते कि) उनके जिस्मों में से धरती जो कुछ कम करती है हम जानते है हमको सबका ज्ञान है (इसके अतिरिक्त) हमारे पास एक पुस्तक भी उपस्थित है जिसने सबको सुरक्षित कर लिया है (अर्थात हर वस्तु लिखी हुई है) (4)

(کیا وہ لوگ نہیں جانتے کہ) ان کے جسموں میں سے زمین جو کچھ کم کرتی ہے ہم جانتے ہیں ہم کو ان سب کا علم ہے (علاوہ ازیں) ہمارے پاس ایک کتاب بھی موجود ہے جس نے سب کو محفوظ کرلیا ہے (یعنی ہر چیز لکھی ہوئی ہے) (۴)

(ईशदूत का आना विचित्र नही है) अपितु विचित्र बात यह है कि जब उनके पास एक सत्य सन्देश आया जिसे उन्होंने झुटला दिया अब वह एक उलझन में पड़े हुए है (उनकी समझ में कोई बात नही आती) (5)

(رسول کا آنا عجیب نہیں ہے) بلکہ عجیب بات یہ ہے کہ جب ان کے پاس ایک حق پیغام آیا جسے انہوں نے جھٹلا دیا اب وہ ایک الجھن میں پڑے ہوئے ہیں (ان کی سمجھ میں کوئی بات نہیں آتی) (۵)

क्या उन लोगों ने आकाश की ओर दृष्टि उठा कर नही देखा कि हमने उसे किस प्रकार बनाया और किस प्रकार (तारों से) सुसज्जित किया और उसमें कही दरार तक नही (6)

کیا ان لوگوں نے آسمان کی طرف نظر اٹھا کر نہیں دیکھا کہ ہم نے اسے کس طرح بنایا اور کس طرح (ستاروں سے) سجایا اور اس میں کہیں شگاف تک نہیں (٦)

और पृथ्वी को भी हम ही ने बिछोने की भांति बिछाया और उसमें हर प्रकार के सुन्दर पौदो के जोड़े उगा दिए (7) {27:61}

اور زمین کو بھی ہم ہی نے فرش کی طرح بچھایا اور اس میں پہاڑ جما دئے اور اس میں ہر طرح کے خوشنما پودوں کے جوڑے اگا دئے (۷) [۲۷:٦۱]

ताकि हम पर आस्था लाने वाले बन्दे हमारी महिमा का तमाश देखे और शिक्षा प्राप्त करें (8)

تاکہ ہم پر ایمان لانے والے بندے ہماری قدرت کا تماشہ دیکھیں اور عبرت حاصل کریں (۸)

और हमने आकाश से सम्पन्नता वाला पानी बरसाया और उससे उपवन और खेत का अन्न उगाया (9)

اور ہم نے آسمان سے برکت والا پانی برسایا اور اس سے باغ اور کھیت کا غلہ اگایا (۹)

और लम्बे लम्बे खजूर के वृक्ष पैदा कर दिए जिन पर फलों से लदे हुए खोशे तह बतह होते है (10)

اور لمبے لمبے کھجور کے درخت پیدا کردئے جن پر پھلوں سے لدے ہوئے خوشے تہ بتہ ہوتے ہیں (۱۰)

यह सारा प्रबन्ध बन्दों की जीविका देने के लिए किया गया है उस पानी से हम मरी हुई (अर्थात

یہ سارا انتظام بندوں کو روزی دینے کے لئے کیا گیا ہے

शुष्क) भूमि को जीवन (प्रफुल्लता) प्रदान कर देते हैं (क्यामत के दिन भी) इसी प्रकार (मृतक लोगों को भूमि से) निकलना है (11)

उनसे पहले नूह की जाति और कूंवे वाले और समूद झुटला चुके हैं (12)

और आद और फिरऔन और लूत के भाई भी(13)

और बन के रहने वाले और तुब्बा की जाति उन सब ने रसूलों को झुटलाया तो हमारी (दण्ड की) धमकी पूरी हो कर रही (14)

क्या हम पहली बार पैदा करके थक गए हैं? अपितु वह पुनः पैदा करने में शंका में पड़े हुए हैं (15)

यह सत्य है कि हमने इन्सान को पैदा किया और हम जानते हैं कि उसके हृदय में कैसे कैसे विचार पैदा होते रहते हैं और हम उसकी जान से अधिक निकट हैं (16)

(उसके विचार आभास और भाव से हम अवगत हैं और हमारे इस निजी ज्ञान के अतिरिक्त खुली हुई बातों के लिखने के लिए) दो लेखक उसके दाएं बाएं बैठे हर वस्तु लिख रहे हैं (कर्म पत्र) (17)

जो बात वह मुख से निकालेगा निःसंदेह उसके पास एक लिखने वाला तैयार रहता है (18)

(ऐ इन्सान देख) मौत की अचेतना ने तेरी आंख से (अचेतना का आवरण) हटा दिया (और वास्तविकता तेरे सामने आ गई) यह वही वस्तु है जिससे तू भागता था (19) {79:1}

(क्यामत के दिन) सूर फूंका जाएगा यह वही दिन है जिससे लोगों को डराया जाता था (20)

और हर व्यक्ति (हमारे सामने) आएगा एक (फरिश्ता) उसके चलाने वाला होगा और एक साक्ष्य देने वाला (21)

(यह वह दिन है कि) इससे तू अचेत हो रहा था, अब हमने तुझ से आवरण उठा दिया तो आज तेरी दृष्टि तीव्र है (22)

और उसका साथी (फरिश्ता) कहेगा (यह कर्म पत्र) मेरे पास उपस्थित है (23)

(आदेश होगा) हर अवज्ञाकारी को नर्क में डाल दो (24) {37:68}

लोगों को भलाई के कामों से रोकने वाला सीमा से निकला हुआ और हर बात में भ्रम करने वाला था (25)

जिसने ईश्वर के साथ और देवता नियुक्त कर रखे थे तो उसको कठोर दण्ड में डाल दो (26)

(उस समय उसका साथी शैतान कहेगा ऐ मेरे रब मैंने इसको पथ भ्रष्ट नहीं किया था अपितु यह आप ही मार्ग से दूर भटका हुआ था (27)

(उनका विवाद सुनकर) ईश्वर कहेगा मेरे सामने

اس پانی سے ہم مری ہوئی (یعنی خشک) زمین کو زندگی (تروتازگی) بخش دیتے ہیں (قیامت کے دن بھی) اسی طرح (مرے ہوئے لوگوں کو زمین سے) نکلنا ہے (۱۱)

ان سے پہلے نوح کی قوم اور کنویں والے اور ثمود جھٹلا چکے ہیں (۱۲)

اور عاد اور فرعون اور لوط کے بھائی بھی (۱۳)

اور بن کے رہنے والے اور تبع کی قوم ان سب نے رسولوں کو جھٹلایا تو ہماری (عذاب کی) دھمکی پوری ہو کر رہی (۱۴)

کیا ہم پہلی بار پیدا کر کے تھک گئے ہیں؟ بلکہ وہ دوبارہ پیدا کرنے میں شک میں پڑے ہوئے ہیں (۱۵)

یہ حقیقت ہے کہ ہم نے انسان کو پیدا کیا اور ہم جانتے ہیں کہ اس کے دل میں کیسے کیسے خیال پیدا ہوتے رہتے ہیں اور ہم اس کی رگ جان سے بھی زیادہ قریب ہیں (۱۶)

(اس کے خیالات احساسات اور جذبات سے ہم واقف ہیں اور ہمارے اس ذاتی علم کے علاوہ کھلی ہوئی باتوں کے لکھنے کے لئے) دو کاتب اس کے دائیں اور بائیں بیٹھے ہر چیز لکھ رہے ہیں (اعمال نامہ) (۱۷)

جو بات وہ زبان سے نکالے گا یقیناً اس کے پاس ایک لکھنے والا تیار رہتا ہے (۱۸)

(اے انسان دیکھ) موت کی بے ہوشی نے تیری آنکھ سے (غفلت کا پردہ) ہٹا دیا (اور حقیقت تیرے سامنے آ گئی) یہ وہی چیز ہے جس سے تو بھاگتا تھا (۱۹) [۷۹:۱]

(قیامت کے روز) صور پھونکا جائے گا یہ وہی دن ہے جس سے لوگوں کو ڈرایا جاتا تھا (۲۰)

اور ہر شخص (ہمارے سامنے) آئے گا ایک (فرشتہ) اس کے چلانے والا ہوگا اور ایک گواہی دینے والا (۲۱)

(یہ وہ دن ہے کہ) اس سے تو غافل ہو رہا تھا اب ہم نے تجھ سے پردہ اٹھا دیا تو آج تیری نگاہ تیز ہے (۲۲)

اور اس کا ساتھی (فرشتہ) کہے گا (یہ اعمال نامہ) میرے پاس حاضر ہے (۲۳)

(حکم ہوگا) ہر نافرمان کو دوزخ میں ڈال دو (۲۴) [۳۷:۶۸]

لوگوں کو بھلائی کے کاموں سے روکنے والا حد سے بڑھنے والا اور ہر بات میں شبہ کرنے والا تھا (۲۵)

جس نے اللہ کے ساتھ اور معبود مقرر کر رکھے تھے تو اس کو سخت عذاب میں ڈال دو (۲۶)

(اس وقت) اس کا ساتھی شیطان کہے گا اے میرے رب میں نے اس کو گمراہ نہیں کیا تھا بلکہ یہ آپ ہی رستے سے دور بھٹکا ہوا تھا (۲۷)

(ان کی بحث کو سن کر) اللہ فرمائے گا میرے سامنے جھگڑا

झगड़ा मत करो मैं तुम्हें पहले ही (दुष्कर्मों के परिणाम से) सावधान कर चुका था (28)

हमारे यहां बात बदला नहीं करती (जो आदेश है सो है) मैं अपने बन्दों पर अन्याय नहीं किया करता (अपितु बन्दे स्वयं अपने ऊपर अन्याय करते हैं (29)

उस दिन हम नर्क से पूछेंगे क्या तू भर गई? वह कहेगी क्या (मेरे भोजन) के योग्य कुछ और भी है? (30)

और स्वर्ग सदाचारियों के लिए बिल्कुल निकट कर दी जायेगी कुछ भी दूर न होगी (31)

और कहा जाएगा यह है वह स्वर्ग जिसका तुम में से हर उस व्यक्ति के लिए वचन किया जाता था जो ईश्वर का हो रहा और (ईश्वर के नियमों की) रक्षा करता रहा (32)

जो ईश्वर से बिन देखे डरता रहा और जो (ईश्वर की ओर) आकृष्ट होने वाला हृदय लेकर आया (33)

(बधाई हो) शान्ति के साथ स्वर्ग में प्रविष्ट हो जाओ यह सदैव रहने का दिन है (34)

वहां जो वह चाहेंगे उनके लिए उपस्थित है और हमारे यहां और भी बहुत कुछ है (35)

और हमने उनसे पहले कितनी जातियां वध कर डाली जो उनसे शक्ति में कहीं बढ़ चढ़कर थी अतः उन लोगों ने (हमारे दण्ड से बचने के लिए) सब नगरों को शरण के लिए छान मारा भला कहीं भी भागने का ठिकाना है अर्थात बचाओ का स्थान (36) {17:13; 40:21,82}

इस (घटना) में उस व्यक्ति के लिए शिक्षा का पाठ है जो हृदय रखता हो या ध्यान से बात सुने (37)

यह वास्तविकता है कि हमने आकाशों और पृथ्वी को और सम्पूर्ण वस्तुओं को जो उनके मध्य है छ अय्याम (अर्थात छ चरणों) में उत्पन्न किया और हम बिल्कुल नहीं थके (38)

(ऐ मुहम्मद स0!) उन कुफ्फार की बकवास पर धैर्य करो और सुर्य निकलने से पहले और उसके डूबने से पहले अपने ईश्वर की प्रशंसा के साथ पवित्रता वर्णन करते रहो (39)

और रात्रि के समय उसकी पवित्रता का वर्णन करो और नमाज से निवृत होने के बाद भी उसकी पवित्रता वर्णन करो (40)

और सुनो! जिस दिन पुकारने वाला निकट के स्थान से पुकारेगा (अतः उस प्रकार के दण्ड से सुरक्षित रहने के लिए अपने जीवन में ईश्वर की बात सुनकर उस पर व्यवहार करो) (41)

जिस दिन (क्यामत के) कोलाहल को सत्य के साथ सुन रहे होंगे वही (मृतकों के भूमि से) निकलने का दिन होगा (42)

निःसन्देह हम ही जीवित करते है और हम ही मारते है और हमारे ही पास लौटकर आना है(43)

उस दिन भूमि उन पर से फट जायेगी और वह

مت کرو میں تمہیں پہلے ہی (اعمال بد کے نتائج سے) خبردار کر چکا تھا (۲۸)

ہمارے یہاں بات بدلا نہیں کرتی (جو حکم ہے سو ہے) میں اپنے بندوں پر ظلم نہیں کیا کرتا (بلکہ بندے خود اپنے اوپر ظلم کرتے ہیں) (۲۹)

اس دن ہم دوزخ سے پوچھیں گے کیا تو بھر گئی؟ وہ کہے گی کیا (میری غذا) کے لائق کچھ اور بھی ہے؟ (۳۰)

اور جنت پرہیزگاروں کے لئے بالکل قریب کر دی جائے گی ذرا بھی دور نہ ہوگی (۳۱)

اور کہا جائے گا یہ ہے وہ جنت جس کا تم میں سے ہر اس شخص کے لئے وعدہ کیا جاتا تھا جو اللہ کا ہو رہا اور (اللہ کے حدود کی) حفاظت کرتا رہا (۳۲)

جو اللہ سے بن دیکھے ڈرتا رہا اور جو (اللہ کی طرف) متوجہ ہونے والا دل لے کر آیا (۳۳)

(مبارک ہو) سلامتی کے ساتھ جنت میں داخل ہو جاؤ یہ ہمیشہ رہنے کا دن ہے (۳۴)

وہاں وہ جو چاہیں گے ان کے لئے حاضر ہے اور ہمارے یہاں اور بھی بہت کچھ ہے (۳۵)

اور ہم نے ان سے پہلے کتنی امتیں ہلاک کر ڈالیں جو ان سے قوت میں کہیں بڑھ چڑھ کر تھیں پس ان لوگوں نے (ہمارے عذاب سے بچنے کے لئے) تمام شہروں کو پناہ کے لئے چھان مارا بھلا کہیں بھی بھاگنے کا ٹھکانا ہے یعنی بچاؤ کی جگہ (۳۶)
[۱۷:۱۳؛ ۴۰:۲۱،۸۲]

اس (واقعہ) میں اس شخص کے لئے عبرت کا سبق ہے جو دل رکھتا ہو یا توجہ سے بات سنے (۳۷)

یہ حقیقت ہے کہ ہم نے آسمانوں اور زمین کو اور ان تمام چیزوں کو جو ان کے درمیان ہیں چھ ایام (یعنی چھ دوروں) میں پیدا کیا اور ہم بالکل نہیں تھکے (۳۸)

(اے محمدؐ!) ان کفار کی بکواس پر صبر کرو اور آفتاب نکلنے سے پہلے اور اس کے ڈوبنے سے پہلے اپنے رب کی تعریف کے ساتھ تسبیح کرتے رہو (۳۹)

اور رات کے وقت اس کی تسبیح کرو اور نماز سے فارغ ہونے کے بعد بھی اس کی پاکی بیان کرو (۴۰)

اور سنو! جس دن پکارنے والا نزدیک کی جگہ سے پکارے گا (اس لئے اس پکار کے عذاب سے محفوظ رہنے کے لئے اپنی زندگی میں اللہ کی بات سن کر اس پر عمل کرو) (۴۱)

جس روز (قیامت کے) شور کو حق کے ساتھ سن رہے ہوں گے وہی (مردوں کے زمین سے) نکلنے کا دن ہوگا (۴۲)

بے شک ہم ہی زندہ کرتے ہیں اور ہم ہی مارتے ہیں اور ہمارے ہی پاس لوٹ کر آنا ہے (۴۳)

اس دن زمین ان پر سے پھٹ جائے گی اور وہ جھٹ پٹ

झटपट निकल खड़े होंगे यह संग्रह करना भी हमें सुगम है (44)

वह लोग जो बातें बनाते है हम उन्हें भलिभांति जानते है और आपका काम बल से (मुसलमान बनाना) नही है अतः जो व्यक्ति हमारे दण्ड की कठोरता से डरता हो उसे कुरआन के द्वारा उपदेश करते रहो (45)

सूरत जारियात-मक्की (51)

वह दल साक्षी है जो सन्देश रब को वितरण करते है (अर्थात लोगों के दिलों में धर्म का बीज डालते है (1)

और ईश्वर के प्रबन्ध को स्थापित करने के उत्तरदायित्व का बड़ा भार अपने कांधों पर उठाकर(2)

सरलता से आगे बढ़े चले जा रहे है (3)

और यूं इस ईश्वर के कार्यक्रम को संसार के इन्सानों में विभाजित कर रहे है (4) (इन सब पर मनन करो)

(अतः) जिस वस्तु का तुम से वचन किया जाता है वह सत्य है (इसमें शंका नही) (5)

और न्याय का दिन अवश्य घटित होगा (6)

और उस सुदृढ़ और अनेक आकृति वाले आकाश को देखो यह भी साक्षी है (7)

(इन सब वस्तुओं को देखने के बाद भी परलोक के विषय में) तुम्हारे कथन विरोधी है भांत भांत की बोलिया बोल रहे हो (8)

उससे वही इनकार करता है जो सत्य से फिरा हुआ है (9) {61:5}

बिना प्रमाण बातें करने वाले नष्ट होते है (10)

जो अचेतना में भूले हुए है (11)

ज्ञात करेंगे कि बदले का दिन कब होगा (12)

(उनसे बता देना बदले का) दिन जब होगा जब उनको आग में दण्ड दिया जायेगा (13)

(इनसे कहा जाएगा) अब अपनी दुष्टता का स्वाद चखो यह वही है जिसके लिए तुम जल्दी मचाया करते थे (14)

निःसन्देह स्वर्ग और स्रोतों में सुख करेंगे (15)

जो कुछ उनका रब उन्हें देगा उसे हर्ष से ले रहे होंगे निःसन्देह वह उससे पहले दुनिया में सदाचारी थे (16)

रात्रि के थोड़े भाग में सोते थे (17)

फिर वही रात्रि के पिछले समय में क्षमा मांगते थे (18)

और उनके धन में मांगने वालों और न मांगने वालों का स्वत्व था (19)

पृथ्वी में बहुत से चिन्ह है (19)

विश्वास करने वालों के लिए (20)

और स्वयं तुम्हारे अपने अस्तित्व में है क्या तुम देखते नही? (21)

نکل کھڑے ہوں گے یہ جمع کرنا بھی ہمیں آسان ہے(۴۴)

وہ لوگ جو باتیں بناتے ہیں ہم انہیں خوب جانتے ہیں اور آپ کا کام جبراً (مسلمان بنانا) نہیں ہے لہٰذا جو شخص ہمارے عذاب کی سختی سے ڈرتا ہو اسے قرآن کے ذریعہ نصیحت کرتے رہو(۴۵)

سورۃ ذاریات ۔مکی (۵۱)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

وہ جماعتیں شاہد ہیں جو پیغام الٰہی کی نشر واشاعت کرتی ہیں (یعنی لوگوں کے دلوں میں دین کا بیج ڈالتی ہیں)(۱)

اور نظام الٰہی کے قیام کی ذمہ داری کے عظیم بوجھ کو اپنے کندھوں پر اٹھا کر(۲)

آسانی سے آگے بڑھے چلی جارہی ہیں(۳)

اور یوں اس الٰہی پروگرام کو عالم انسانیت میں تقسیم کررہی ہیں(۴) ان سب پر غور کرو)

(اس لئے) جس چیز کا تم سے وعدہ کیا جاتا ہے وہ سچا ہے (اس میں شک نہیں)(۵)

اور انصاف کا دن ضرور واقع ہوگا(۶)

اور اس مضبوط اور مختلف شکل والے آسمان کو دیکھو یہ بھی شاہد ہے(۷)

(ان سب چیزوں کو دیکھنے کے بعد بھی آخرت کے بارے میں) تمہارے قول مختلف ہیں بھانت بھانت کی بولیاں بول رہے ہو(۸)

اس سے وہی انکار کرتا ہے جو حق سے پھیرا ہوا ہے(۹)[۶۱:۵]

بے سند باتیں کرنے والے غارت ہوتے ہیں(۱۰)

جو غفلت میں بھولے ہوئے ہیں(۱۱)

پوچھیں گے کہ جزا کا دن کب ہوگا(۱۲)

(ان سے بتا دینا جزا کا) دن جب ہوگا جب ان کو آگ میں عذاب دیا جائے گا(۱۳)

(ان سے کہا جائے گا) اب اپنی شرارت کا مزہ چکھو یہ وہی ہے جس کے لئے تم جلدی مچایا کرتے تھے(۱۴)

بے شک پرہیزگار جنتوں اور چشموں میں عیش کریں گے(۱۵)

جو کچھ ان کا رب انہیں دے گا اسے خوشی سے لے رہے ہوں گے بے شک وہ اس سے پہلے دنیا میں نیک تھے(۱۶)

رات کے تھوڑے حصہ میں سوتے تھے(۱۷)

پھر وہی رات کے پچھلے وقت میں معافی مانگتے تھے(۱۸)

اور ان کے مال میں مانگنے والوں اور نہ مانگنے والوں دونوں کا حق تھا(۱۹)

زمین میں بہت سے نشان ہیں یقین کرنے والوں کے لئے(۲۰)

اور خود تمہارے اپنے وجود میں ہیں کیا تم دیکھتے نہیں؟(۲۱)

और तुम्हारी जीविका जिसका तुम से वचन किया जाता है ऊपर आकाश में है अर्थात वर्षा (22)

اور تمہارا رزق جس کا تم سے وعدہ کیا جاتا ہے اوپر آسمان میں ہے یعنی بارش (۲۲)

अतः मुझ ईश्वर का अस्तित्व जो आकाश और पृथ्वी का रब हूं साक्षी हूं कि यह बात सत्य है अर्थात जिस प्रकार तुम को यह विश्वास है कि मैं जीवित हूं और मैं ही बोल रहा हूं (और बोल कर दोहरा देते हो ऐसे ही ईश्वर दोबारा पैदा कर देगा) (23)

پس مجھ اللہ کی ذات جو آسمان اور زمین کا رب ہوں شاہد ہوں کہ یہ بات حق ہے یعنی جس طرح تم کو یہ یقین ہے کہ میں زندہ ہوں اور میں ہی بول رہا ہوں (اور بول کو دہرا دیتے ہو ایسے ہی اللہ دوبارہ پیدا کر دے گا) (۲۳)

भला आपके पास इब्राहीम के प्रतिष्ठित अतिथियों की सूचना पहुंची? (24)

بھلا تمہارے پاس ابراہیم کے معزز مہمانوں کی خبر پہنچی؟ (۲۴)

जब वह उनके पास आए तो सलाम कहा उन्होंने भी सलाम कहा (देखा तो) वह लोग अपरिचित ज्ञात हुए (25)

جب وہ ان کے پاس آئے تو سلام کہا انہوں نے بھی سلام کہا (دیکھا تو) وہ لوگ اجنبی معلوم ہوئے (۲۵)

तो अपने घर जा कर एक भुना हुआ मोटा बछड़ा लाए (26)

تو اپنے گھر جا کر ایک بھنا ہوا موٹا بچھڑا لائے (۲۶)

उनके आगे रख दिया (परन्तु उन्होंने नहीं खाया) कहने लगे कि आप खाते क्यों नहीं? (27)

ان کے آگے رکھ دیا (مگر انہوں نے نہیں کھایا) کہنے لگے کہ آپ کھاتے کیوں نہیں؟ (۲۷)

और मन में उनसे भय अनुभूत हुआ उन्होंने कहा कि भय न करो (हम फरिश्ते हैं) और उनको एक ज्ञानी पुत्र की मंगल सूचना सुनाई (28)

اور دل میں ان سے خوف محسوس کیا انہوں نے کہا کہ خوف نہ کرو (ہم فرشتے ہیں) اور ان کو ایک دانشمند لڑکے کی بشارت بھی سنائی (۲۸)

तो यह शुभ सूचना (कि यह आने वाले शत्रु नहीं अपितु फरिश्ते हैं और पुत्र की शुभ सूचना) सुन कर इब्राहीम की पत्नी प्रसन्न हो गई (और पहले उनके चहरे पर जो एक भय छा गया था वह दूर हो गया) उनका चेहरा हर्ष से खिल गया परन्तु आश्चर्य से माथे पर हाथ मार कर कहा यह कैसे होगा कि एक तो मैं बुढ़िया दूसरे बांझ (29) {11:71,72,73}

<u>تو یہ خوشخبری (کہ یہ آنے والے دشمن نہیں بلکہ فرشتے ہیں اور لڑکے کی خوشخبری) سن کر ابراہیم کی بیوی خوش ہو گئیں (اور پہلے ان کے چہرے پر جو ایک خوف طاری ہو گیا تھا وہ دور ہو گیا) اور ان کا چہرہ خوشی سے کھل گیا مگر تعجب سے ماتھے پر ہاتھ مار کر کہا یہ کیسے ہوگا کہ ایک تو میں بڑھیا دوسرے بانجھ (۲۹) [۱۱:۷۱،۷۲،۷۳]</u>

(यह देख कर) फरिश्तों ने कहा (हाँ) तुम्हारे रब ने ऐसे ही कहा है निःसंदेह वह युक्ति वाला और अवगत है (30)

(یہ دیکھ کر) فرشتوں نے کہا (ہاں) تمہارے رب نے ایسے ہی فرمایا ہے بے شک وہ صاحب حکمت اور خبردار ہے (۳۰)

खण्ड 27 काला फमा खतबुकुम

قال فما خطبکم ۔ پارہ (۲۷)

(इब्राहीम ने) कहा कि फरिश्तो! तुम्हारा यहां आने का उद्देश्य क्या है? (31)

(ابراہیم نے) کہا کہ فرشتو! تمہارا یہاں آنے کا مقصد کیا ہے؟ (۳۱)

उन्होंने कहा कि अपराधी समुदाय की ओर भेजे गए हैं (32)

انہوں نے کہا کہ ہم مجرم قوم کی طرف بھیجے گئے ہیں (۳۲)

ताकि उन पर पकी हुई मिट्टी के पत्थर बरसाएं(33)

تاکہ ان پر پکی ہوئی مٹی کے پتھر برسائیں (۳۳)

जिन पर आपके रब के यहां सीमा से बढ़ जाने वालों के लिए चिन्ह लगा दिए गए हैं (34)

جن پر آپ کے رب کے یہاں حد سے بڑھ جانے والوں کے لئے نشان لگا دئے گئے ہیں (۳۴)

उस बस्ति में जितने आस्तिक थे उनको हमने निकाल लिया (35)

اس بستی میں جتنے مومن تھے ان کو ہم نے نکال لیا (۳۵)

और हमने वहां मुसलमानों का केवल एक ही घर पाया (36)

اور ہم نے وہاں مسلمانوں کا صرف ایک ہی گھر پایا (۳۶)

और जो लोग बड़े कष्ट से डरते हैं उनके लिए वहां हमने चिन्ह छोड़ दिए (37)

اور جو لوگ عذاب الیم سے ڈرتے ہیں ان کے لئے وہاں ہم نے نشان چھوڑ دئے (۳۷)

और मूसा की कथा में भी चिन्ह है जब हमने उनको फिरऔन की ओर खुला चमत्कार देकर भेजा (38)

اور موسیٰ کے قصے میں بھی نشانی ہے جب ہم نے ان کو فرعون کی طرف کھلا معجزہ دے کر بھیجا (۳۸)

तो उसने अपनी शक्ति के घमण्ड में मुख मोड़

تو اس نے اپنی قوت کے گھمنڈ میں منہ موڑ لیا اور بولا یہ

लिया और बोला यह जादूगर है या दिवाना (39)

तो हमने उसको और उसकी सैना को पकड़ लिया और उनको दरया में फैंक दिया और वह कार्य ही निन्दा योग्य करता था (40)

और आद की जाति के नष्ट होने में भी चिन्ह है जब हमने उस पर एक अशुभ आन्धी भेजी (41)

वह जिस वस्तु पर चलती उसे चूर चूर किए बिना न छोड़ती (42)

और जाति समूद की कथा में भी चिन्ह है जब उन से कहा गया कि एक समय तक लाभ उठा लो (43)

परन्तु उन्होंने उस चेतावनी पर भी अपने रब के आदेश से अवज्ञा की अन्ततः उनके देखते देखते अचानक उनको एक प्रचण्ड कड़क ने आलिया (44)

फिर उनमें न तो उठने की शक्ति थी और न अपना बचाव ही कर सकते थे (45)

और उनसे पहले हम नूह की जाति को नष्ट कर चुके थे (46)

और आकाश को हमने अपनी शक्ति (बल) सत्ता से बनाया और हम उसे विस्तृत करते जा रहें हैं, अर्थात हमारी शक्ति की विशालता की सीमा अनभिज्ञ है फैलाते जा रहें हैं (47)

नोट- खगोल या सौर्य जगत विस्तृत होता जा रहा है तनिक आंखे खोल कर देखो और दुनिया को बताओ कि कुरआन यह कह रहा है आदर्श बन कर रहो,

और पृथ्वी को भी हमने बिछाया और हम कैसे अच्छे बिछाने वाले हैं (48)

और हमने हर वस्तु के जोड़े बनाए ताकि तुम मनन से काम लो (49)

अतः (ऐ लोगों! शैतान के छल से निकल कर) ईश्वर की ओर दोड़ो मैं उसकी ओर से तुम्हें खुले शब्दों में डराने वाला हूं (50)

और ईश्वर के साथ किसी और को पूज्य न बनाओ मैं उसकी ओर से तुमको दुष्कर्मों के परिणाम से डराने वाला हूं (51)

इसी प्रकार उनसे पहले लोगों के पास जो रसूल आता वह उसको जादूगर या दिवाना कहते (52)

क्या वह लोग एक दूसरे को इसी बात का आदेश करते आए हैं अपितु वह दुष्ट लोग हैं (53)

(ऐ रसूल!) उनके दुषकर्मों से मुख फैर लो वह सत्य को स्वीकार नही करते न करें आप पर कोई आरोप नही (54)

हां लोगों को समझाते रहो इसलिए के समझाना ईमान वालों को लाभ दायक है (55)

और मैंने जिन्न और इन्सान को केवल इस लिए रचा है कि वह मेरी आज्ञाकारी करें (56)

جادوگر ہے یا دیوانہ (۳۹)

تو ہم نے اس کو اور اس کے لشکر کو پکڑ لیا اور ان کو دریا میں پھینک دیا اور وہ کام ہی قابل ملامت کرتا تھا (۴۰)

اور عاد کی قوم کے ہلاک ہونے میں بھی نشانی ہے جب ہم نے اس پر ایک منحوس آندھی بھیجی (۴۱)

وہ جس چیز پر گزرتی اسے چور چور کئے بغیر نہ چھوڑتی (۴۲)

اور قوم ثمود کے قصہ میں بھی نشانی ہے جب ان سے کہا گیا کہ ایک وقت تک فائدہ اٹھالو (۴۳)

مگر انہوں نے اس تنبیہ پر بھی اپنے رب کے حکم سے سرتابی کی آخر کار ان کے دیکھتے دیکھتے اچانک اُن کو ایک زور کی کڑک نے آلیا (۴۴)

پھر ان میں نہ تو اٹھنے کی طاقت تھی اور نہ اپنا بچاؤ ہی کر سکتے تھے (۴۵)

اور اُن سے پہلے ہم نوح کی قوم کو ہلاک کر چکے تھے بے شک وہ لوگ نافرمان تھے (۴۶)

اور آسمان کو ہم نے اپنی قدرت (زور) اقتدار سے بنایا اور ہم اس کو وسیع کرتے جارہے ہیں یعنی ہماری قوت کی وسعت حدود نا آشنا ہے (۴۷)

نوٹ:۔ یہ فلک یا نظام شمسی وسیع ہوتا جارہا ہے ذرا آنکھیں کھول کر دیکھو اور دنیا کو بتاؤ کہ قرآن یہ کہہ رہا ہے نمونہ بن کر رہو۔

اور زمین کو بھی ہم نے بچھایا اور ہم کیسے اچھے بچھانے والے ہیں (۴۸)

اور ہم نے ہر چیز کے جوڑے بنائے تاکہ تم غور وفکر سے کام لو (۴۹)

پس (اے لوگو! شیطان کے فریب سے نکل کر) اللہ کی طرف دوڑو میں اس کی طرف سے تمہیں کھلے لفظوں میں ڈرانے والا ہوں (۵۰)

اور اللہ کے ساتھ کسی اور کو معبود نہ بناؤ میں اس کی طرف سے تم کو اعمال بد کے نتائج سے ڈرانے والا ہوں (۵۱)

اسی طرح ان سے پہلے لوگوں کے پاس جو رسول آتا وہ اس کو جادوگر یا دیوانہ کہتے (۵۲)

کیا وہ لوگ ایک دوسرے کو اسی بات کی وصیت کرتے آئے ہیں بلکہ وہ شریر لوگ ہیں (۵۳)

(اے رسول!) ان کی حرکتوں سے منہ پھیر لو وہ حق کو تسلیم نہیں کرتے نہ کریں آپ پر کوئی الزام نہیں (۵۴)

ہاں لوگوں کو سمجھاتے رہو اس لئے کہ سمجھانا ایمان والوں کو نفع دیتا ہے (۵۵)

اور میں نے جن اور انسان کو صرف اس لئے پیدا کیا ہے کہ وہ میری فرمانبرداری کریں (۵۶)

मैं न तो उनसे भोजन की इच्छा रखता हूं और न मैं यह चाहता हूं कि वह मुझे खिलाएं (57)

ईश्वर ही तो है जो सबसे बड़ा जीविका देने वाला प्रभुत्वशाली शक्ति वाला है (58)

कुछ शंका नही कि उन अत्याचारियों के भाग्य का वैसा ही दण्ड तैयार है जैसा उन्हीं जैसी जातियों को मिल चुका है तो वह लोग जल्दी न मचाएं (59) {75:16}

जिस दिन का उन काफिरों से वचन किया जा रहा है उससे उनके लिए तबाही है (60)

सूरत तूर - मक्की (52)

तूर पर्वत साक्षी है (1)

और पुस्तक जो लिखी हुई है (2)

विस्तृत पेजों में (3)

और देखो आबाद घर भी साक्षी है (4)

और देखो ऊंची छत भी साक्षी है (5)

और दरया जो उबलते है यह सब इस बात की साक्ष्य दे रहे है (6)

निःसन्देह आपके ईश्वर का कष्ट होकर रहेगा (7)

किसी की मजाल शक्ति नही कि उसे रोक दे (8)

(यह कष्ट उस दिन अवतरित होगा) जिस दिन आकाश प्रकंपित होगा कपकपा कर (9)

और पर्वत उड़ने लगे ऊन होकर (10)

उस दिन झुटलाने वालों के लिए नाश है (11)

जो अपनी मूर्खता में उछल कूद कर रहे है (12)

जिस दिन उन्हें धक्के मार मारकर नर्क की आग की ओर ले जाया जाएगा (13)

(कहा जाएगा) यही वह नर्क की आग है जिसे तुम झूट समझते थे (14)

अब बताओ यह जादू है या तुम्हें कुछ नजर नही आता (15)

इसमें प्रविष्ट हो जाओ और धैर्य करो या न करो तुम्हारे लिए बराबर है जो काम तुम किया करते थे यह उनही का तुमको बदला मिल रहा है (16)

जो सदाचारी हैं वह उपवनों और पसादों में होंगे (17)

जो कुछ उनका रब उनको देगा उन वस्तुओं से आनन्द ले रहे होंगे और उनका रब उनको नर्क के कष्ट से बचा लेगा (18)

अपने कर्मों के बदले में आनन्द से खाओ और पियो (19)

वह सिंहासन पर जो बराबर बिछे होंगे तकिया लगाए हुए बैठे होंगे और हम उनके साफ सुथरे साथी बना देंगे जो उस

میں نہ تو ان سے روزی کی خواہش رکھتا ہوں اور نہ میں یہ چاہتا ہوں کہ وہ مجھے کھلائیں (۵۷)

اللہ ہی تو ہے جو سب سے بڑا روزی دینے والا زبردست قوت والا ہے (۵۸)

کچھ شک نہیں کہ ان ظالموں کے حصہ کا ویسا ہی عذاب تیار ہے جیسا ان ہی جیسی قوموں کو مل چکا ہے تو وہ لوگ جلدی نہ مچائیں (۵۹) [۷۵:۱۶]

جس دن کا ان کافروں سے وعدہ کیا جا رہا ہے اس سے ان کے لئے تباہی ہے (۶۰)

سورۃ طور ۔ مکی (۵۲)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

کوہ طور شاہد ہے (۱)

اور کتاب جو لکھی ہوئی ہے (۲)

چوڑے اوراق میں (۳)

اور دیکھو آباد گھر بھی شاہد ہے (۴)

اور دیکھو اونچی چھت بھی شاہد ہے (۵)

اور دریا جو ابلتے ہیں یہ سب اس بات کی شہادت دے رہے ہیں (۶)

بے شک آپ کے پروردگار کا عذاب ہو کر رہے گا (۷)

کسی کی مجال نہیں کہ اسے روک لے (یہ عذاب اس دن نازل ہوگا) جس دن آسمان لرزنے لگے کپکپا کر (۹)

اور پہاڑ اڑنے لگیں اون ہو کر (۱۰)

اس دن جھٹلانے والوں کے لئے خرابی ہے (۱۱)

جو اپنی بے ہودگی میں اچھل کود کر رہے ہیں (۱۲)

جس روز انہیں دھکے مار مار کر دوزخ کی آگ کی طرف لے جایا جائے گا (۱۳)

(کہا جائے گا) یہی وہ دوزخ کی آگ ہے جسے تم جھوٹ سمجھتے تھے (۱۴)

اب بتاؤ یہ جادو ہے یا تمہیں کچھ نظر نہیں آتا (۱۵)

اس میں داخل ہو جاؤ اور صبر کرو یا نہ کرو تمہارے لئے برابر ہے جو کام تم کیا کرتے تھے یہ ان ہی کا تم کو بدلہ مل رہا ہے (۱۶)

جو پرہیز گار ہیں وہ باغوں اور نعمتوں میں ہوں گے (۱۷)

جو کچھ ان کا رب ان کو دے گا ان چیزوں سے لطف لے رہے ہوں گے اور ان کا رب ان کو دوزخ کے عذاب سے بچا لے گا (۱۸)

اپنے اعمال کے بدلے میں مزے سے کھاؤ اور پیو (۱۹)

وہ تختوں پر جو برابر بچھے ہوں گے تکیہ لگائے ہوئے بیٹھے ہوں گے اور ہم ان کے صاف ستھرے ساتھی بنادیں گے جو اس عیش وآرام اور جنتی

सुख व आराम और स्वर्ग के उनके साथी होंगे जो शुद्ध और पवित्र बुद्धि के स्वामी हैं इस सुख में उनके साथ पवित्र और शुद्ध स्त्रियां भी होंगी(20)

زندگی میں ان کے ساتھی ہوں گے جو صاف اور پاکیزہ عقل کے مالک ہیں اس عیش میں ان کے ساتھ پاک صاف عورتیں بھی ہوں گی (۲۰)

जो लोग विश्वास लाए और उनकी सन्तान भी विश्वास में उनके पद चिन्हों पर चली हम उनकी उस सन्तान को उनके साथ में मिला देंगे और उनके कर्म में कुछ भी कम न करेंगे, हर व्यक्ति अपने कर्म से बन्धा हुआ है (जैसा करेगा वैसा पाएगा) (21)

جولوگ یمان لائے اور ان کی اولاد بھی ایمان میں ان کے نقش قدم پر چلی ہم ان کی اس اولاد کو ان کے ساتھ میں ملا دیں گے اور ان کے عمل میں سے کچھ بھی کم نہ کریں گے ہر شخص اپنے عمل سے بندھا ہوا ہے (جیسا کرے گا ویسا پائے گا) (۲۱)

और जिस प्रकार के मैवे फल और मांस को उनका जी चाहेगा हम उन को प्रदान करेंगे (22)

اور جس طرح کے میوے پھل اور گوشت کو ان کا جی چاہے گا ہم ان کو عطا کریں گے (۲۲)

वह लोग वहां आपस में मधुर पेय पात्र लपक लपक कर ले रहे होंगे जिस (के पिने) से न अनर्गल बात होगी न कोई बुराई की बात (23)

وہ وہاں آپس میں جام شروب لپک لپک کر لے رہے ہوں گے جس (کے پینے) سے نہ بذیان سرائی ہوگی نہ کوئی بُرائی کی بات (۲۳)

और उनके लड़के साफ सुथरे उनके आस पास फिरेंगे जैसे छुपे मोती (24) {13:23;56:17}

اور ان کے لڑکے صاف ستھرے ان کے آس پاس پھریں گے جیسے چھپے موتی (۲۴) [۱۳:۲۳:۵۶:۱۷]

वह लोग एक दूसरे की ओर आकृष्ट होकर आपस में बाते करेंगे (25)

وہ لوگ ایک دوسرے کی طرف متوجہ ہو کر آپس میں باتیں کریں گے (۲۵)

और कहेंगे इससे पहले हम अपने घर वालों में (ईश्वर की अवज्ञा करने से) डरा करते थे (26)

اور کہیں گے اس سے پہلے ہم اپنے گھر والوں میں (اللہ کی نافرمانی سے) ڈرتے رہتے تھے (۲۶)

तो ईश्वर ने हम पर उपकार किया और हमें (नर्क की) झुलसा देने वाली वायू से बचा लिया (27)

تو اللہ نے ہم پر احسان فرمایا اور ہمیں (دوزخ کی) جھلسا دینے والی ہوا سے بچا لیا (۲۷)

इससे पहले हम उससे प्रार्थना किया करते थे निःसंदेह वह उपकार करने वाला कृपालु है (28)

اس سے پہلے ہم اس سے دعا کیا کرتے تھے بے شک وہ احسان کرنے والا مہربان ہے (۲۸)

(ऐ मुहम्मद स० लोगों को) समझाते रहो (और उनकी बकवास की चिन्ता न करो) तुम अपने ईश्वर की कृपा से न जादूगर हो न उन्मत्त (29)

(اے محمدؐ! لوگوں کو) سمجھاتے رہو (اور ان کی بکواس کی پروا نہ کرو) تم اپنے رب کے فضل سے نہ کاہن ہو نہ دیوانے (۲۹)

क्या वह कहते है कि यह (व्यक्ति) कवि है और हम इसके विषय में समय की दुर्घटना की प्रतीक्षा कर रहे है (30)

کیا وہ کہتے ہیں کہ یہ (شخص) شاعر ہے اور ہم اس کے حق میں زمانے کے حوادث کا انتظار کر رہے ہیں (۳۰)

कहदो कि प्रतीक्षा करते रहो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करता हूं (31)

کہدو کہ انتظار کرتے رہو میں بھی تمہارے ساتھ انتظار کرتا ہوں (۳۱)

क्या उनकी बुद्धि उन्हें यही बातें सिखाती है या वह लोग शत्रुता में सीमा से आगे बढ़े हुए है (32)

کیا ان کی عقلیں انہیں یہی باتیں سکھاتی ہیں یا وہ لوگ دشمنی میں حد سے آگے بڑھے ہوئے ہیں (۳۲)

क्या वह लोग कहते है कि इस व्यक्ति ने कुरआन स्वयं बना लिया है? (ऐसा नही है) अपितु वह लोग ईश्वर पर विश्वास ही नही रखते (33)

کیا وہ لوگ کہتے ہیں کہ اس (شخص) نے قرآن خود بنالیا ہے؟ (ایسا نہیں ہے) بلکہ وہ لوگ اللہ پر ایمان ہی نہیں رکھتے (۳۳)

यदि वह (अपनी आपत्ति में) सच्चे है तो ऐसी वाणी नियम बना तो लाएं (34)

اگر وہ (اپنے اعتراض میں) سچے ہیں تو ایسا کلام ضابطہ بنا تو لائیں (۳۴)

क्या वह लोग बिना किसी के उत्पन्न किए स्वयं ही उत्पन्न हो गए है या वह स्वयं ही अपने रचेता है (35)

کیا وہ لوگ بغیر کسی کے پیدا کئے خود ہی پیدا ہو گئے ہیں یا وہ خود ہی اپنے خالق ہیں (۳۵)

या उन्होंने आकाशों और पृथ्वी को पैदा किया है? बात यह है कि उन्हें ईश्वर पर विश्वास ही नही है (36)

یا انہوں نے آسمانوں اور زمین کو پیدا کیا ہے؟ بات یہ ہے کہ انہیں اللہ پر یقین ہی نہیں ہے (۳۶)

क्या उनके पास (मुझ ईश्वर) अर्थात तेरे रब के

کیا ان کے پاس (مجھ اللہ) یعنی تیرے رب کے خزانے

कोष है या वह निरीक्षक बना कर भेज दिए गए हैं (37)

या उनके पास कोई ऐसा साधन है जिसके द्वारा वह ईश्वर की बातें सुन लेते हों? तो जो सुन आता है वह इसका खुला प्रमाण दिखाए (38)

(फिर विचार करो) ईश्वर के तो पुत्रियां हों (जिन्हें तुम हीन समझते हो) और तुम्हारे पुत्र (यह कहां का न्याय है यद्यपि ईश्वर के न तो पुत्र है न पुत्री उसे इनकी आवश्यक्ता ही नहीं) (39)

(ऐ मुहम्मद स0) क्या तुम उनसे (धर्म प्रचार का) बदला मांगते हो कि उसके भार से दबे जा रहे हो (40)

क्या उनके पास परोक्षका ज्ञान है जिसे वह लिख लेते हैं (और उसके आधार पर रसूल को झुठला रहे हैं) (41)

क्या वह लोग (रसूल के विरुद्ध) कोई चाल चलना चाहते हैं? (यदि ऐसा है तो) काफिर स्वयं उस चाल में फंस जाएंगे (42)

क्या मुझ ईश्वर के सिवा उनका कोई और पूज्य है? जिन वस्तुओं को वह लोग (ईश्वर का) साझी बनाते हैं मैं ईश्वर उससे पवित्र हूं (43)

यदि वह आकाश (से कष्ट) का कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखे तो कहें कि यह गाढ़ बादल है (44)

अतः उनको छोड़ दो यहां तक कि वह दिन जिसमें वह अचेत कर दिए जाएंगे सामने आ जाए (45)

जिस दिन उनका कोई छल कुछ भी काम न आए और न उनको सहायता ही मिलेगी (46)

और निःसंदेह अत्याचारियों के लिए उसके सिवा और कष्ट भी है परन्तु उनमें के अधिक नहीं जानते(47)

अपने रब के आदेश की प्रतीक्षा में धैर्य किए रहो आप हमारी रक्षा और देख रेख में हो, और जिस समय कार्य के लिए उठ करो, तो अपने रब की प्रशंसा के साथ उसकी पवित्रता वर्णन किया करो (48)

और रात्री के कतिपय समय में भी उसकी पवित्रता का वर्णन करो और तारों के डूबने के बाद भी (49)

सूरतुलनजम मक्की 53

साक्षी है उज्जवल तारा (अर्थात मुहम्मद स0) जब वह इच्छा करते हैं (अर्थात जाति के सत्य मार्ग पर आने की) (1)

(उनकी इच्छा सीधे मार्ग की है) अर्थात तुम्हारा मित्र न भटका है न बहका है (2)

वह अपने जी की इच्छा से नहीं बोलते (अर्थात उन की इच्छा हर समय शुभ होती है और मुहम्मद यही चाहते हैं कि सब सीधे मार्ग पर चलें यह है उनकी इच्छा) (3)

(और क्या है उनकी इच्छा) यह तो एक वही है जो

ہیں یا وہ داروغہ بنا کر بھیجد ئے گئے ہیں (۳۷)

یا ان کے پاس کوئی ایسا ذریعہ ہے جس ذریعہ سے وہ اللہ کی باتیں سن لیتے ہوں؟ تو جو سن آتا ہے وہ اس کی کھلی سند دکھائے (۳۸)

(پھر غور کرو) اللہ کے تو بیٹیاں ہوں (جنہیں تم ذلیل سمجھتے ہو) اور تمہارے بیٹے (یہ کہاں کا انصاف ہے حالانکہ اللہ کے نہ بیٹا ہے اور نہ بیٹی اسے ان کی ضرورت ہی نہیں) (۳۹)

(اے محمدؐ!) کیا تم ان سے (تبلیغ کا) اجر مانگتے ہو کہ وہ اس کے بوجھ سے دبے جا رہے ہوں (۴۰)

کیا ان کے پاس علم غیب ہے جسے وہ لکھ لیتے ہیں (اور اس کی بنا پر رسول کو جھٹلا رہے ہیں) (۴۱)

کیا وہ لوگ (رسول کے خلاف) کوئی چال چلنا چاہتے ہیں؟ (اگر ایسا ہے تو) کافر خود اس چال کا شکار ہیں گے (۴۲)

کیا مجھ اللہ کے سوا ان کا کوئی اور معبود ہے؟ جن چیزوں کو وہ لوگ (اللہ کا) شریک بناتے ہیں میں اللہ اس سے پاک ہوں (۴۳)

اگر وہ آسمان (سے عذاب) کا کوئی ٹکڑا گرتا ہوا دیکھیں تو کہیں کہ یہ گاڑھا بادل ہے (۴۴)

پس ان کو چھوڑ دو یہاں تک کہ وہ دن جس میں وہ بےہوش کر دئے جائیں گے سامنے آ جائے (۴۵)

جس دن ان کا کوئی داؤں کچھ بھی کام نہ آئے اور نہ ان کو مدد ہی ملے گی (۴۶)

اور بےشک ظالموں کے لئے اس کے علاوہ اور عذاب بھی ہے لیکن ان میں کے اکثر نہیں جانتے (۴۷)

اپنے رب کے حکم کے انتظار میں صبر کئے رہو تم ہماری نگرانی اور حفاظت میں ہو اور جس وقت کام کے لئے اٹھا کرو تو اپنے رب کی تعریف کے ساتھ اس کی پاکی بیان کیا کرو (۴۸)

اور رات کے بعض اوقات میں بھی اس کی پاکی بیان کرو اور ستاروں کے ڈوبنے کے بعد بھی (۴۹)

سورت النجم ۔ مکی (۵۳)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

شاہد ہے روشن ستارہ (یعنی محمدؐ) جب وہ خواہش کرتے ہیں (یعنی قوم کے راہ راست پر آنے کی) (۱)

(ان کی خواہش سیدھی راہ کی ہے) یعنی تمہارا رفیق نہ بھٹکا ہے نہ بہکا ہے (۲)

وہ اپنی خواہش نفس سے نہیں بولتے (یعنی ان کی خواہش ہر وقت نیک ہوتی ہے اور محمدؐ یہی چاہتے ہیں کہ سب صراط مستقیم پر چلیں یہ ہے ان کی خواہش) (۳)

(اور کیا ہے ان کی خواہش) یہ تو ایک وحی ہے جو اس پر

उस पर प्रेषित की जाती है (पस जान लो कि मुहम्मद स0 सदैव वही से बोलते और व्यवहार करते हैं यह उनकी इच्छा है) (4)

नोट- नजम को इस प्रकार भी समझा जाए जैसे तारा अपने ईश्वर के बताए हुए नियमानुसार उस मार्ग पर चलता है जो उसके लिए निश्चित है उससे इधर उधर नहीं होता, ऐसे ही मुहम्मद स0 भी उसी मार्ग पर चलते थे जो ईश्वर ने उनके लिए अपनी वही से नियुक्त कर दिया है,

यही सीधा मार्ग है और मुहम्मद की इच्छा भी यही थी, कि सब व्यक्ति उसका अनुकरण करें सीधे होकर तारे की भांति, तारा कभी अपने निश्चित मार्ग से नहीं हटता जब हटेगा क्यामत है, ऐसे ही मानव को ईश्वर के निश्चित मार्ग पर चलना चाहिए जैसे मुहम्मद स0 चलते थे, जब भी इन्सान सीधे मार्ग से हटता है विनाश है,

और जिस प्रकार तारे से प्रकाश प्राप्त करके मानव लाभ उठाता है ऐसे ही मुहम्मद स0 से लाभ उठाया गया जो चालित है, अतः हर व्यक्ति को भी ऐसा ही व्यवहार करना चाहिए जिससे दूसरों को लाभ हो प्रकाश मिले यह है ईश्वर की इच्छा और मुहम्मद स0 की भी यही इच्छा थी ऐसे ही हर आस्तिक की यही इच्छा होनी चाहिए

उनको पूरी शक्ति वाले फरिश्ते ने शिक्षा ज्ञान दिया है (5) {81:19से24}

(अर्थात जिबराईल) जो शक्तिशाली है फिर वह सीधा खड़ा हुआ (6)

और वह (आकाश के) ऊंचे किनारे में थे (7)

फिर निकट हुए और आगे बढ़े (8)

(दोनों के बीच) दो कमानों के बराबर या उससे कम दूरी रह गई (9)

तब उस (फरिश्ते ने ईश्वर के आदेश से) ने ईश्वर के बन्दे (मुहम्मद स0) को वही पहुंचाई जो पहुंचानी थी (10)

जो कुछ उन्होंने (मुहम्मद ने) देखा उनके हृदय ने उसको झूठ न जाना (11)

तो क्या जो कुछ वह देखते हैं उसके विषय में तुम उससे झगड़ते हो (12)

उन्होंने उस फरिश्ते को एक बार और भी देखा है (13)

अर्थात उस स्थान के पास जहां आश्चर्य (विस्मय) अपने अन्तिम छोर तक पहुंच जाए (14)

और उस स्थान आश्चर्य के पास निश्चिन्त से रहने वाला स्वर्ग है अर्थात इतमिनान से रहने का स्वर्ग (15)

उस समय सिदराह {1} वही के स्रोत पर छा रहा था जो छा रहा था (16)

{1} सिदराहतुल मनतहा उस स्थान को कहते हैं जहां साधारण बुद्धि मानव काम नहीं करती, आश्चर्य छा रहा होता है, वहां सिर्फ नबी की बुद्धि ही काम करती है वह अचम्भित नहीं होती और अपना काम करती है जो वही दी जाती है वह सचेत में लेती है,

उस समय रसूल की आंखें ध्यान न किसी और की ओर आकृष्ट हुई और न सीमा से बढ़ी नबी का ज्ञान सामान्य इन्सान से बहुत अधिक होता है परन्तु ईश्वर के ज्ञान के सामने नबी के ज्ञान की एक सीमा है उसके आगे नहीं बढ़ सकती (17)

نازل کی جاتی ہے (پس جان لو کہ محمدؐ ہمیشہ وحی سے بولتے اور عمل کرتے ہیں یہ ہے ان کی خواہش) (۴)

نوٹ:۔نجم کو اس طرح بھی سمجھا جائے جیسے ستارہ اپنے رب کے بتائے ہوئے قانون کے مطابق اس راہ پر چلتا ہے جو اس کے لئے مقرر ہے اس سے ادھر اُدھر نہیں ہوتا۔ایسے ہی محمدؐ بھی اسی راہ پر چلتے تھے جو اللہ نے ان کے لئے اپنی وحی سے مقرر کر دی ہے۔

یہی صراط مستقیم ہے اور محمدؐ کی خواہش بھی یہی تھی کہ سب آدمی اس کی وحی کی پیروی کریں سیدھے ہو کر تارے کی طرح تارا کبھی اپنے مقرر راستے سے نہیں ہٹتا جب ہٹے گا قیامت ہے۔ایسے ہی انسان کو اللہ کے مقرر راستہ پر چلنا چاہیے۔جیسے محمدؐ چلتے تھے جب بھی انسان صراط مستقیم سے ہٹا ہے خرابی ہوتی ہے۔

اور جس طرح تارے سے روشنی حاصل کر کے انسان فائدہ اٹھاتے ہیں ایسے ہی محمدؐ سے فائدہ اٹھایا گیا جو جاری ہے اس لئے ہر انسان کو بھی ایسا ہی عمل کرنا چاہیے جس سے دوسروں کو فائدہ ہو روشنی ملے۔یہ ہے اللہ کی مرضی اور محمدؐ کی بھی تو یہی خواہش تھی ایسے ہی ہر مومن کی یہی خواہش ہونی چاہیے۔

ان کو پوری طاقت والے فرشتے نے تعلیم دی ہے (۵)

[۸۱:۱۹تا۲۴]

(یعنی جبرائیل) جو طاقت والا ہے پھر وہ سیدھا کھڑا ہوا (۶)

اور وہ (آسمان کے) اونچے کنارے میں تھے (۷)

پھر قریب ہوئے اور آگے بڑھے (۸)

(دونوں کے درمیان) دو کمانوں کے برابر یا اس سے کم فاصلہ رہ گیا (۹)

تب اس (فرشتے نے اللہ کے حکم سے) نے اللہ کے بندے محمدؐ کو وحی پہنچائی جو پہنچائی تھی (۱۰)

جو کچھ انہوں نے (محمدؐ نے) دیکھا ان کے دل نے اس کو جھوٹ نہ جانا (۱۱)

تو کیا جو کچھ وہ دیکھتے ہیں اس کے بارے میں تم اس سے جھگڑتے ہو (۱۲)

انہوں نے اس فرشتے کو ایک بار اور بھی دیکھا ہے (۱۳)

یعنی اس مقام کے پاس جہاں تحیر اپنے آخری کنارے پر پہنچ جائے (۱۴)

اور اس مقام تحیر کے پاس ہی اطمینان سے رہنے والی جنت ہے (۱۵)

اس وقت سدرہ ۱؎ وحی کے سرچشمہ پر چھا رہا تھا جو چھا رہا تھا (۱۶)

۱؎ سدرہ المنتہیٰ اس مقام کو کہتے ہیں جہاں عام عقل انسانی کام نہیں کرتی تحیر چھا رہا ہوتا ہے وہاں صرف نبی کی عقل ہی کام کرتی ہے وہ حیران نہیں ہوتی اور اپنا کام کرتی ہے جو وحی دی جاتی ہے وہ ہوش میں لیتی ہے۔

اس وقت رسول کی آنکھ توجہ نہ کسی اور کی طرف مائل ہوئی اور نہ حد سے بڑھی نبی کا علم عام انسانوں سے بہت زیادہ ہوتا ہے مگر اللہ کے مقابلہ میں نبی کے علم کی ایک حد ہوتی ہے اس کے آگے نہیں بڑھ سکتی (۱۷)

उन्होंने अपने ईश्वर की बड़ी बड़ी स्मृतियां देखी (18)
(और ऐ मूर्तियों के पुजारियो! विचार तो करो) तुम ने लात और उज़्ज़ा में क्या देखा है (19)
और जो तीसरी देवी मनात है (उसमें कौन सी शक्ति है? फिर तुम उन देवी देवताओं को ईश्वर क्यों समझ रहे हो?) (20)
(फिर इस पर भी मनन करो) क्या तुम्हारे लिए तो बैठे हो और ईश्वर के लिए पुत्री (जिन्हें तुम अपने लिए अपमान का कारण समझते हो) (21)
यह तो बड़े अन्याय का विभाजन है (22)
(फिर इस बात पर भी विचार करो कि यह लात उज़्ज़ा और मनात है क्या?) वह तो केवल चन्द नाम है जो तुमने और तुम्हारे बाप दादा ने घड़ लिए है ईश्वर ने तो उनका कोई प्रमाण नही दिया वह लोग केवल अनुमान और मन की इच्छाओं के पीछे चल रहे है यद्यपि उनके ईश्वर की ओर से उनके पास पथ प्रदर्शन आ चुका है (अर्थात कुरआन) (23)
क्या कभी मानव को मनमानी इच्छा के अनुसार अभिप्राय मिला है (24)
(याद रखो) परलोक और दुनिया (दोनों) ईश्वर ही के हाथ में है (25)
और आकाशों में बहुत फरिश्ते है जिनकी अनुशंसा कुछ भी लाभ नही देती परन्तु यह कि ईश्वर ने किसी को अनुशंसा करने की अनुमति दी हो अर्थात अनुमति के बाद और अनुशंसा को भी पसन्द करे परन्तु न तो किसी को आज्ञा है और न उसको किसी अनुशंसा की आवश्यकता है वह सब कुछ जानता है (26)
जो लोग परलोक पर विश्वास नहीं रखते वह फरिश्तों को (ईश्वर की) पुत्रियों के नाम से नामित करते है (27)
यद्यपि उनको उसकी कुछ सूचना नही वह केवल अनुमान गुमान पर चलते है और गुमान विश्वास के मुकाबले में कुछ भी काम नही देता (28)
तो जो व्यक्ति हमारे जप से (अर्थात कुरआन) से मुख फैरता है और दुनिया ही की जिन्दगी को सब कुछ समझता हो उससे उसकी दशा पर छोड़ दो (29)
उनके ज्ञान की पहुंच यही तक है तेरा रब उसे भी जानता है अच्छी प्रकार जो उसके मार्ग से भटक गया है और उससे भी अवगत है जो सीधे मार्ग पर चल रहा है (30)
और जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है सब ईश्वर ही का है और उसने रचनाओं को इसलिए (पैदा किया है) कि जिन लोगों ने बुरे कार्य किये उनको उनके कर्मों का बुरा बदला दे और जिन्होंने सत्कर्म किये उनको अच्छा बदला दे (31)
जो लोग बड़े बड़े पापों और निर्लज्जता की बातों से संयम करते है वही सदाचारी है रही छोटी मोटी

انہوں نے اپنے رب کی بڑی بڑی نشانیاں دیکھیں (۱۸)
(اور اے بتوں کے پجاریو! غور تو کرو) تم نے لات اور عزیٰ میں کیا دیکھا (۱۹)
اور وہ جو تیسری دیوی منات ہے (اس میں کونسی طاقت ہے؟ پھر تم ان دیوی دیوتاؤں کو اللہ کیوں سمجھ رہے ہو؟) (۲۰)
(پھر اس پر بھی غور کرو) کیا تمہارے لئے تو بیٹے ہوں اور اللہ کے لئے بیٹیاں (جنہیں تم اپنے لئے ذلت کا باعث سمجھتے ہو) (۲۱)
یہ تو بڑی ناانصافی کی تقسیم ہے (۲۲)
(پھر اس بات پر بھی غور کرو کہ یہ لات عزیٰ اور منات ہیں کیا؟) وہ تو صرف چند نام ہیں جو تم نے اور تمہارے باپ دادا نے گھڑ لئے ہیں اللہ نے تو ان کی کوئی سند نازل نہیں کی وہ لوگ محض گمان اور نفسانی خواہشوں کے پیچھے چل رہے ہیں حالانکہ ان کے رب کی طرف سے ان کے پاس ہدایت آچکی ہے (یعنی قرآن) (۲۳)
کیا کبھی انسان کو من مانی خواہش کے مطابق مراد ملی ہے (۲۴)
(یاد رکھو) آخرت اور دنیا (دونوں) اللہ ہی کے ہاتھ میں ہیں (۲۵)
اور آسمانوں میں بہت فرشتے ہیں جن کی شفارش کچھ بھی فائدہ نہیں دیتی مگر یہ کہ اللہ نے کسی کو شفاعت کرنے کی اجازت دی ہو یعنی اجازت کے بعد اور شفارش کو بھی پسند کرے (مگر نہ تو کسی کو اجازت ہے اور نہ اس کو کسی شفارش کی ضرورت ہے وہ سب کچھ جانتا ہے (۲۶)
جو لوگ آخرت پر یقین نہیں رکھتے وہ فرشتوں کو (اللہ کی) بیٹیوں کے نام سے موسوم کرتے ہیں (۲۷)
حالانکہ ان کو اس کی کچھ خبر نہیں وہ صرف ظن پر چلتے ہیں اور ظن یقین کے مقابلے میں کچھ بھی کام نہیں دیتا (۲۸)
تو جو شخص ہمارے ذکر سے (یعنی قرآن) سے منہ پھیرتا ہے اور دنیا ہی کی زندگی کو سب کچھ سمجھتا ہو اسے اس کے حال پر چھوڑ دو (۲۹)
ان کے علم کی پہنچ یہیں تک ہے تیرا رب اسے بھی جانتا ہے اچھی طرح جو اس کے رستہ سے بھٹک گیا ہے اور اس سے بھی واقف ہے جو سیدھے رستہ پر چل رہا ہے (۳۰)
اور جو کچھ آسمانوں میں ہے اور جو کچھ زمین میں ہے سب اللہ ہی کا ہے (اور اس نے خلقت کو) اس لئے (پیدا کیا ہے) کہ جن لوگوں نے بُرے کام کئے ان کو ان کے اعمال کا بُرا بدلہ دے اور جنہوں نے نیکیاں کیں ان کو اچھا بدلہ دے (۳۱)
جو لوگ بڑے بڑے گناہوں اور بے حیائی کی باتوں سے پرہیز کرتے ہیں وہی نیک کردار ہیں رہیں چھوٹی موٹی

कमियां जो बिला इरादा हो जाती है तो उनसे भी बचना ही चाहिए याद रखो तुम्हारा रब बड़ी क्षमा वाला है वह तुम को अच्छी प्रकार जानता है जब उसने तुमको (अर्थात तुम्हारे पिता को) मिट्टी से पैदा किया और जब तुम अपनी माताओं के पेट में बच्चे थे तो अपने आपको पवित्र सुथरे न जताओ (अर्थात अहंकार न करो) ईश्वर उसे भलीभांति जानता है जो तुम में सदाचारी है (32) {4:31; 42:37; 5:65}

کمیاں جو بلا ارادہ ہو جاتی ہیں تو ان سے بھی بچنا ہی چاہیے یاد رکھو تمہارا رب بڑی بخشش والا ہے وہ تم کو خوب جانتا ہے جب اس نے تم کو (یعنی تمہارے باپ کو) مٹی سے پیدا کیا اور جب تم اپنی ماؤں کے پیٹ میں بچے تھے تو اپنے آپ کو پاک صاف نہ جتاؤ (یعنی فخر نہ کرو) اللہ اسے خوب جانتا ہے جو تم میں پرہیز گار ہے (۳۲) [۴:۳۱؛ ۴۲:۳۷؛ ۵:۶۵]

भला तुमने उस व्यक्ति (अर्थात सामरी) का हाल देखा सुना जिसने विमुखता की थी अर्थात विद्रोही हो गया था (33) {20:95,96}

بھلا تم نے اس شخص (یعنی سامری) کا حال دیکھا سنا جس نے روگردانی کی تھی یعنی منحرف ہو گیا تھا (۳۳) [۲۰:۹۵،۹۶]

और वह कुछ समय के लिए आज्ञापालक हुआ था (परन्तु फिर मनन करके) सत्य से रुक गया था (क्योंकि उसको कुफ्र ही अच्छा लगा) (34) {20:95,96}

اور وہ کچھ دیر کے لئے مطیع ہوا تھا (مگر پھر غور کر کے) حق سے رک گیا تھا (کیونکہ اس کو کفر ہی اچھا لگا) (۳۴) [۲۰:۹۵،۹۶]

(क्या वास्तविकता के जानने के लिए) उसके पास परोक्ष का ज्ञान है कि वह उसे देख रहा है (और जो उसने निर्णय किया है वह ठीक है तो निकट भविष्य में उसको ज्ञात हो जाएगा) (35) {74:15-26}

(کیا حقیقت کے جاننے کے لئے) اس کے پاس غیب کا علم ہے کہ وہ اسے دیکھ رہا ہے (اور جو اس نے فیصلہ کیا ہے وہ ٹھیک ہے تو عن قریب اس کو معلوم ہو جائے گا) (۳۵) [۷۴:۱۵،۲۶]

(ऐसे अत्याचारी को) क्या उन बातों की सूचना नही पहुंची जो मूसा की पुस्तक में है (36)

(ایسے ظالم کو) کیا ان باتوں کی خبر نہیں پہنچی جو موسیٰ کے صحیفہ میں ہے (۳۶)

और उस इबराहीम की पुस्तक में वर्णन हुई है जिसने प्रतिज्ञा पूर्ती का कर्तव्य पूरा कर दिया (37)

اور اس ابراہیم کے صحیفوں میں بیان ہوئی ہے جس نے وفا کا حق ادا کر دیا (۳۷)

(वह नियम) यह है कि कोई भार उठाने वाला दूसरे के पापों का भार नही उठा सकता (38)

(وہ قانون) یہ ہے کہ کوئی بوجھ اٹھانے والا دوسرے کا گناہ کا بوجھ نہیں اٹھا سکتا (۳۸)

और यह कि मनुष्य को वही मिलता है जिसका वह प्रयत्न करता है (39)

اور یہ کہ انسان کو وہی ملتا ہے جس کی وہ کوشش کرتا ہے (۳۹)

और यह कि इन्सान का कर्म निकट भविष्य (अर्थात क्यामत में) सामने आजाएगा जो देखा जाएगा (40)

اور یہ کہ انسان کا عمل عن قریب (یعنی قیامت میں) سامنے آجائے گا جو دیکھا جائے گا (۴۰)

फिर उसको उसके कर्म का पूरा पूरा बदला दिया जाएगा (41)

پھر اس کو اس کے عمل کا پورا پورا بدلہ دیا جائے گا (۴۱)

नोट- इन आयात में स्पष्ट हो गया कि हर व्यक्ति को अपना किया हुआ अच्छा या बुरा मिलेगा उससे ही स्वर्ग व नर्क में जाना है फिर प्रतिदान देने का क्या औचित्य हे? इस पर विचार किया जाए

نوٹ:۔ ان آیات میں صاف ہو گیا کہ ہر انسان کو اپنا کیا ہوا اچھا یا برا ملے گا اس سے ہی جنت و دوزخ میں جانا ہے پھر ایصال ثواب کا کیا جواز ہے؟ اس پر غور کیا جائے

और यह कि अन्त में (क्यामत के दिन) तुम्हें अपने ही ईश्वर के पास लोटना है (42)

اور یہ کہ آخر میں (قیامت کے دن) تمہیں اپنے ہی رب کے پاس لوٹنا ہے (۴۲)

और यह कि ईश्वर का नियम हंसाता है और रुलाता है (43)

और यह कि उसका नियम ही मारता और जिलाता है (44)

और यह कि उसी ने नर और नारी का जोड़ा बनाया (45)

(अपने नियम से) अर्थात वीर्य से जो (गर्भाशय में) डाला जाता है (46)

اور یہ کہ اللہ کا قانون ہنساتا ہے اور رلاتا ہے (۴۳)

اور یہ کہ اس کا قانون ہی مارتا ہے اور جلاتا ہے (۴۴)

اور یہ کہ اسی نے نر و مادہ کا جوڑا بنایا (۴۵)

(اپنے قانون سے) یعنی نطفے سے جو (رحم میں) ڈالا جاتا ہے (۴۶)

और यह कि (क्यामत के दिन) दूसरा जीवन देना उसी पर अनिवार्य है (47)

اور یہ کہ (قیامت کے دن) دوسری زندگی دینا اسی پر لازم ہے (۴۷)

और यह कि उसी का नियम धनी बनाता है और निर्धन करता है (48)

और निःसंदेह वही शीरा अर्थात बुद्धि व विवेक का ईश्वर है (49)

और यह कि उसी के नियम ने आद प्रथम को नष्ट कर डाला (50)

और समूद को भी अर्थात किसी को शेष न छोड़ा (51)

और उनसे पहले जाति नूह को नष्ट किया कुछ

اور یہ کہ اسی کا قانون دولتمند بناتا ہے اور مفلس کرتا ہے (۴۸)

اور بے شک وہی شیعرا ی یعنی عقل و شعور کا رب ہے (۴۹)

اور یہ کہ اسی کے قانون نے عاد اول کو ہلاک کر ڈالا (۵۰)

اور ثمود کو بھی غرض کسی کو باقی نہ چھوڑا (۵۱)

اور ان سے پہلے قوم نوح کو ہلاک کیا کچھ شک نہیں کہ وہ

शंका नही कि वह लोग बड़े ही अत्याचारी और बड़े ही उद्दण्ड थे (52)

और उसी नियम ने (जाति लूत की) उल्टी हुई बस्तियों को दे पटका (53)

तो उसको ढांप लिया जिसने ढांप लिया अर्थात पत्थर बरसे (54)

तो (ऐ इन्सान) तू अपने रब के कौन कौन प्रसादों में भ्रम करेगा (55)

لوگ بڑے ہی ظالم اور بڑے ہی سرکش تھے (۵۲)

اور اسی قانون نے (قوم لوط کی) الٹی ہوئی بستیوں کو دے پٹکا (۵۳)

تو اس کو ڈھانپ لیا جس نے ڈھانپ لیا یعنی پتھر برسے (۵۴)

تو (اے انسان) تو اپنے رب کی کون کون سی نعمتوں میں شک کرے گا (۵۵)

नोट- आयात उपरोक्त 34से53 तक कुछ बाते अंकित है उनको ईश्वर की ओर संबन्धित किया गया है प्रकट में तो ऐसा ही है, परन्तु वास्तविक्ता कुछ और है वह यह कि ईश्वर ने हर वस्तु के नियम बनाए है जो काम उन नियमों के अन्तर्गत किया जाएगा वह ठीक होगा और जो उनके विरुद्ध किया जाएगा वह अनुचित होगा ऐसे ही इन्सान ईश्वर की आज्ञाकारी करते हुए कार्य करेगा तो वह दुनिया और परलोक दोनों स्थान सफल रहेगा और जो उसकी अवज्ञा करेगा वह असफल होगा, तो मूल वस्तु नियम का पालन करना है अतः अच्छा या बुरा ईश्वर के नियम में है ईश्वर किसी पर अन्याय नही करता वह न्यायी है उसका नियम यही कि जैसा करना वैसा भरना अतः हम को इन आयात में इन बातों को ध्यान में रखते हुए अनुवाद करना चाहिए

نوٹ:۔ آیات بالا ۳۴ سے ۵۳ تک کچھ باتیں درج ہیں ان کو اللہ کی طرف منسوب کیا گیا ہے بظاہر تو ایسا ہی ہے مگر حقیقت کچھ اور ہے وہ یہ کہ اللہ نے ہر چیز کے قانون بنائے ہیں جو کام اُن قانون کے تحت کیا جائے گا وہ ٹھیک ہوگا اور جو ان کے خلاف کیا جائے گا وہ خراب ہوگا ایسے ہی انسان اللہ کی فرمانبرداری کرتے ہوئے کام کرے گا تو وہ دنیا اور آخرت دونوں جگہ کامیاب رہے گا اور جو اس کی نافرمانی کرے گا وہ ناکام ہوگا تو اصل چیز ہے قانون کی پابندی کرنا اس لئے اچھا یا بُرا اللہ کے قانون میں ہے اللہ کسی پر ظلم نہیں کرتا وہ عادل ہے اس کا قانون یہی ہے کہ جیسا کرنا ویسا بھرنا اس لئے ہم کو ان آیات میں ان باتوں کا خیال کرتے ہوئے ترجمہ کرنا چاہیے۔

यह मुहम्मद स0 पहले डर सुनाने वालो में से एक डर सुनाने वाले है (56)

आने वाली घड़ी अर्थात क्यामत निकट आ पहुंची है (57)

उस (दिन के दुखों) को ईश्वर के अतिरिक्त कोई दूर नही कर सकता (58)

ऐ विरोधियों! क्या तुम इनही बातों पर आश्चर्य करते हो (59)

और हंस रहे हो रोते नही (60)

और तुम अचेतना में पड़कर अहंकार कर रहे हो (61)

(परन्तु यदि तुम अपना बचाओ चाहते हो तो) ईश्वर के विधान के आगे झुकजाओ उसके नियम का पालन करो और उसी की पूजा करो (62)

یہ محمدؐ بھی پہلے ڈرسنانے والوں میں سے ایک ڈرسنانے والے ہیں (۵۶)

آنے والی گھڑی یعنی قیامت قریب آپہنچی ہے (۵۷)

اس (دن کی تکلیفوں) کو اللہ کے علاوہ کوئی دور نہیں کرسکتا (۵۸)

اے منکرو! کیا تم ان ہی باتوں پر تعجب کرتے ہو (۵۹)

اور ہنس رہے ہو روتے نہیں (۶۰)

اور تم غفلت میں پڑ کر تکبر کر رہے ہو (۶۱)

(لیکن اگر تم اپنا بچاؤ چاہتے ہو تو) اللہ کے قانون کے آگے جھک جاؤ اس کے قانون کی پابندی کرو اور اسی کی عبادت کرو (۶۲)

सूरतुलकमर मक्की 54

سورۃ القمر_مکی (۵۴)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

क्यामत की घड़ी आ गई जब चान्द फट जाएगा(1)

और यदि काफिर कोई चिन्ह देख भी लेंगे तब भी मुख फेर लेंगे, और कहेंगे कि यह एक सदैव का जादू है (2)

قیامت کی گھڑی قریب آگئی جب چاند پھٹ جائے گا (۱)

اور کافر اگر کوئی نشانی دیکھ بھی لیں گے تب بھی منہ پھیر لیں گے اور کہیں گے کہ یہ ایک ہمیشہ کا جادو ہے (۲)

नोट- इस आयत का अनुवाद एक यह किया गया है कि चान्द फट गया, परन्तु अरबी लेख बता रहा है कि अनुवाद भविष्य मज़ारे का होना चाहिए न कि भूत काल का अतः भावार्थ किया गया है और जब चान्द फट जाएगा यह उस समय की बात बताई जा रही है जब क्यामत के हंगामे में चान्द फट जाएगा, चान्द ही नही अपितु हर ग्रह सूर्य इत्यादि भी टूट फूट जाएंगे पर्वत व आकाश बिखर जाएंगे जिसका साक्षी कुरआन है इसको देखने के लिए निम्नलिखित आयात का अवलोकन करें {25:25, 55:37, 69:16, 75:6से10, 82:1, 54:51, 17:59-93}

हकीकत खुराफात में खो गई।
यह उम्मत खायात में खो गई।। (इकबाल)

सुरत कमर की आयात (1) के बारे में एक चमत्कार बड़ा मशहूर है कि मुहम्मद स0 ने चान्द के दो टुकड़े कर दिए, वास्तिक्ता क्या है देखा

نوٹ:۔ اس آیت کا ایک ترجمہ یہ کیا گیا ہے کہ چاند پھٹ گیا لیکن عربی عبارت بتا رہی ہے کہ ترجمہ مضارع کا ہونا چاہیے نہ کہ ماضی کا اس لئے مفہوم کیا گیا ہے اور جب چاند پھٹ جائیگا۔ یہ اس وقت کی بات بتائی جا رہی ہے جب قیامت کے ہنگامے میں چاند پھٹ جائے گا۔ چاند ہی نہیں بلکہ ہر ستارہ سورج وغیرہ بھی ٹوٹ پھوٹ جائیں گے پہاڑ و آسمان بکھر جائیں گے جس کا شاہد قرآن ہے اس کو دیکھنے کے لئے آیات ذیل کو ملاحظہ کریں۔[۲۵:۲۵، ۵۵:۳۷، ۶۹:۱۶، ۷۵:۶تا۱۰، ۸۲:۱، ۵۴:۵۱، ۱۷:۵۹، ۹۳]

حقیقت خرافات میں کھوگئی یہ امت روایات میں کھوگئی (اقبال)

سورت قمر کی آیت (۱) کے بارے میں ایک معجزہ بڑا مشہور ہے کہ محمدؐ نے چاند کے دوٹکڑے کردئے حقیقت کیا ہے دیکھا جائے عالموں نے جو ترجمہ اس آیت کا کیا

जाए ज्ञानियों ने जो अनुवाद इस आयत का किया है वह अवलोकन हो क्यामत निकट आ गई और चान्द फट गया जबकि आयत में भविष्य की बात है अर्थात वह घड़ी (क्यामत) निकट आ गई और चान्द फट जाएगा.

इस चमत्कार के प्रमाण में कथन भी है उदाहरणतः शाह अब्दुल कादिर पु0 शाह वली उल्लाह मुहद्दिस देहलवी ने अपनी तफसीर में लिखा है,

मौलवी शाह अब्दुल कादिर साहब ने इस स्थान पर फायदा लिखा है कि हज के दिनों में आधी रात्री को काफिर एकत्र थे हजरत उनको समझाते थे उन्होंने मांगी कुछ निशानी महामना ने कहा देखो आकाश की ओर चान्द दो टुकड़े हो गया, एक उनमें से पूर्व को आया एक पश्चिम को जब तक उत्तम प्रकार देख लिया फिर आपस में मिल गए यह लक्षण था क्यामत का सब कुछ फटेगा,

सम्पूर्ण मुफस्सिरों की इसी पर सहमती है और चमत्कार शक्के कमर का प्रकट होना सही कथनों से प्रमाणित है, एक कथन में अंकित है कि मांग अबुजहल ने की थी और इस चमत्कार के लिए एक यहूदी ने बताया था तब मुहम्मद स0 ने यह चमत्कार दिखाया इस को देखकर यहूदी विश्वास लाया परन्तु अबुजहल विश्वास न लाया जबकि उसको विश्वास लाना चाहिए था कथन में इस घटना को बहुत मशहूर किया गया है, यहां तक कि एक भारत का राजा भी उसको देख कर मुसलमान हो गए परन्तु दुख है कि केवल एक ही, क्या औरों ने उसको नही देखा,

इस प्रकार चमत्कार दिखाने से यह सिद्ध हो रहा है कि ईश्वर के रसूल को हर प्रकार का चमत्कार दिखानेका पूरा अधिकार प्राप्त था कि जब चाहें और जिस प्रकार चाहें दिखा दें यद्यपि किसी रसूल को कभी यह अधिकार नही दिया गया कि वह बिना ईश्वर की आज्ञा के अपनी इच्छा से चमत्कार दिखा दें आयत अवलोकन हो,

सूरत रअद आयत 38 हम आपसे पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं और हमने उन सबको पत्नी बच्चों वाला बनाया था किसी रसूल से नही हो सकता कि कोई चमत्कार बिना ईश्वर की अनुमति के ले आए हर निश्चित वचन की एक लिखत है,

सूरत बकरा आयत 37 और वह लोग कहते हैं कि उन पर कोई चमत्कार क्यों नही अवतरित किया गया उनके रब के ओर से कह दीजिए कि ईश्वर को निःसंदेह पूरी शक्ति है इस पर कि वह चमत्कार अवतरित कर दे परन्तु उनमें अधिकांश अचेत हैं,

सूरत युनूस आयत 20 और वह लोग यूं कहते हैं कि उन पर उनके रब की ओर से कोई चिन्ह क्यों नही अवतरित होता सो आप कह दीजिए कि परोक्ष की सूचना केवल ईश्वर को है,

सूरत बनी इसराईल आयत 59 और हमें (दौरे मुहम्मदी में) चमत्कार भेजने से किसी वस्तु ने नही रोका परन्तु इस विचार ने कि अगली जातियों ने चमत्कारों को झुटलाया था, अर्थात ईश्वर ने ईशदूत को इसलिए चमत्कार नही दिया कि जिन कौमों को चमत्कार दिए गए थे उन्होंने उनको झुटलाया कोई लाभ नही उठाया,

सूरत रअद आयत 27 नास्तिक कहते हैं उस पर (अर्थात मुहम्मद स0) कोई चमत्कार चिन्ह क्यों अवतरित नही किया गया,

सूरत अनआम आयत ।।। और यदि हम उनके पास फरिश्तों को भेज दें और उनसे मृतक बाते करने लगें और हम सम्पूर्ण वर्तमान वस्तुओं को उनके पास उनकी आंखों के सामने लाकर एकत्र कर दें (जिनकी वह मांग कर रहें हैं) तब भी वह लोग कदापि विश्वास न लाएंगे,

अनआम आयत 7 और यदि हम कागज़ पर लिखा हुआ

ہے وہ ملاحظہ ہو. قیامت قریب آ گئی اور چاند پھٹ گیا. جب کہ آیت میں مستقبل کی بات ہے یعنی وہ گھڑی (قیامت) قریب آ گئی اور چاند پھٹ جائے گا.

اس معجزے کے ثبوت میں احادیث بھی ہیں. مثلاً شاہ عبدالقادر ابن شاہ ولی اللہ محدث دہلوی نے اپنی تفسیر میں لکھا ہے.

مولوی شاہ عبدالقادر صاحب نے اس مقام پر فائدہ لکھا ہے کہ حج کے دنوں میں آدھی رات کو کافر جمع تھے. حضرت ان کو سمجھاتے تھے انہوں نے مانگی کچھ نشانی حضرت نے فرمایا دیکھو آسمان کی طرف چاند دو ٹکڑے ہو گیا. ایک ان میں سے مشرق کو آیا ایک مغرب کو جب تک خوب طرح دیکھ لیا پھر آپس میں مل گئے. یہ نشانی تھی قیامت کی آگے سب کچھ پھٹے گا.

تمام مفسروں کا اسی پر اجماع ہے اور معجزہ شق قمر کا وقوع احادیث صحیحہ سے ثابت ہے. ایک روایت میں درج ہے کہ مطالبہ ابوجہل نے کیا تھا اور اس معجزے کے لئے ایک یہودی نے بتایا تھا تب محمدؐ نے یہ معجزہ دکھایا اس کو دیکھ کر یہودی ایمان لایا مگر ابوجہل ایمان نہیں لایا جب کہ اس کو ایمان لانا چاہیے تھا. روایات میں اس واقعہ قصہ کو بہت مشہور کیا گیا ہے. یہاں تک کہ ایک ہندوستان کا راجہ بھی اس کو دیکھ کر مسلمان ہو گیا مگر افسوس ہے کہ صرف ایک ہی کیا اوروں نے اس کو نہیں دیکھا.

اس طرح معجزہ دکھانے سے یہ ثابت ہو رہا ہے کہ اللہ کے رسول کو ہر طرح کا معجزہ دکھانے کا پورا اختیار حاصل تھا کہ جب چاہیں اور جس طرح کا چاہیں دکھا دیں حالانکہ کسی رسول کو کبھی یہ اختیار نہیں دیا گیا کہ وہ بغیر اللہ کی اجازت کے اپنی مرضی اور خواہش سے معجزہ دکھا دے آیت ملاحظہ ہو.

سورت الرعد آیت ۳۸. ہم آپ سے پہلے بھی بہت سے رسول بھیج چکے ہیں اور ہم نے ان سب کو بیوی بچوں والا بنایا تھا کسی رسول سے نہیں ہو سکتا کہ کوئی معجزہ بغیر اللہ کی اجازت کے لے آئے ہر مقررہ وعدے کی ایک لکھت ہے.

سورت بقرہ آیت ۳۷. اور وہ لوگ کہتے ہیں کہ ان پر کوئی معجزہ کیوں نہیں نازل کیا گیا ان کے رب کی طرف سے آپ فرما دیجئے کہ اللہ کو بے شک پوری قدرت ہے اس پر کہ وہ معجزہ نازل کر دے لیکن ان میں اکثر بے خبر ہیں.

سورت یونس آیت ۲۰. اور وہ لوگ یوں کہتے ہیں کہ ان پر ان کے رب کی جانب سے کوئی نشانی کیوں نہیں نازل ہوئی؟ سو آپ فرما دیجئے کہ غیب کی خبر صرف اللہ کو ہے.

سورت بنی اسرائیل آیت ۵۹. اور ہمیں (دور محمدی میں) معجزہ بھیجنے سے کسی چیز نے نہیں روکا مگر اس خیال نے کہ اگلی امتوں نے معجزوں کی تکذیب کی تھی، یعنی اللہ نے رسول اللہ کو اس لئے معجزہ نہیں دیا کہ جن قوموں کو معجزے دیے گئے تھے انہوں نے ان کو جھٹلایا کوئی فائدہ نہیں اٹھایا.

سورت الرعد آیت ۲۷. کافر کہتے ہیں اس پر (یعنی محمدؐ پر) کوئی نشانی (معجزہ) کیوں نازل نہیں کیا گیا.

سورت انعام آیت ۱۱۱. اور اگر ہم ان کے پاس فرشتوں کو بھیج دیں اور ان سے مردے باتیں کرنے لگیں اور ہم تمام موجودات کو ان کے پاس ان کی آنکھوں کے سامنے لا کر جمع کر دیں (جن کو وہ طلب کر رہے ہیں) تب بھی وہ لوگ ہرگز ایمان نہ لائیں گے.

انعام آیت ۷. اور اگر ہم کاغذ پر لکھا ہوا کوئی نوشتہ آپ پر نازل فرماتے پھر اس کو

कोई पुस्तक आप पर अवतरित करते फिर उसको वह लोग अपने हाथों से छूभी लेते तब भी वह नास्तिक लोग कहते कि यह कुछ नही परन्तु खुला जादू है,

सूरत इब्राहीम आयत ११, उनके रसूलों ने उनसे कहा कि यह सच है कि हम मानव की प्रकार से तो तुम जैसे मानव ही हैं, परन्तु ईश्वर अपने भक्तों में से जिस पर चाहता है अपना कृपा दया करता है, ईश्वर के आदेश के बिना हमारी शक्ति नही कि हम कोई चमत्कार तुम्हें ला दिखाए

सूरत आराफ आयत १८८, आप कह दीजिए कि मैं स्वयं अपने अस्तित्व के लिए किसी लाभ का अधिकार (नही रखता और न किसी हानि का, परन्तु इतना ही कि जितना ईश्वर ने चाहा हो, और यदि मैं परोक्ष की बातें जानता होता तो मैं बहुत से लाभ प्राप्त कर लेता और कोई हानि मुझको न पहुंचती मैं तो केवल डराने वाला और शुभ सूचना देने वाला हूं उन लोगों को जो विश्वास रखते हैं

सूरत मोमिन आयत ८७... और किसी रसूल की यह शक्ति न थी कि कोई चमत्कार ईश्वर की आज्ञा के बिना ला सके...

कुरआन से यह कुछ आयतें लिखी हैं वैसे कुरआन में और भी काफी आयात हैं जिनमें चमत्कार के विषय में हैं हर पाठक उनको कुरआन में पढ़ता होगा विचारणीय बात यह है कि सूरत कमर की आयत एक में एक चमत्कार नबी की ओर संबंधित किया गया है और हर प्रमुख व सामान्य लगभग उसको सत्य स्वीकार करने पर विवश है यदि इनकार करता है तो उसका मंगल नही, मानों यह हुआ और यह इतना बड़ा चमत्कार था जो ऊपर आकाश में हुआ कही किसी भवन या किसी ऐसी जगह पर नही हुआ जिसको देखने वाले कम हो उसको तो खुले आकाश में पूरे संसार में देखा होगा जिससे इनकार नही किया जा सकता,

परन्तु कुरआन की आयात में अंकित है कि अनेकेश्वर वादियों और नास्तिकों ने कहा कि यह कैसा नबी है कि इसके पास कोई चमत्कार नही ईश्वर ने इसको कोई चमत्कार नही दिया और ईश्वर ने उनके इस कथन का उल्लेख किया कही भी यह नही कहा कि वह झूट कहते है क्यों चमत्कार नही दिया, उन्होंने चान्द को फटते हुए नही देखा और उस समय दुनिया में बहुत व्यक्तियों ने चान्द को फटते देखा और चान्द फटने को देखने के बाद उन लोगों को भी झुटलाना नही चाहिए था, परन्तु वह लोग इनकार करते रहे इसलिए मुहम्मद स० ने यह चमत्कार नही दिखाया,

इसके अतिरिक्त ईश्वर स्पष्ट कह रहा है कि हमने आपको कोई चमत्कार इस कारण नही दिया कि पहले लोगों ने चमत्कारों को झुटलाया, जादू बताया और आपको सबसे बड़ा चमत्कार कुरआन दिया है और यह भी कुरआन में अंकित है किसी नबी में यह शक्ति नही थी कि वह बिना ईश्वर की आज्ञा के चमत्कार दिखा सके, अतः मुहम्मद स० ने कोई चान्द फटने का चमत्कार नही दिखाया आयत का अनुवाद अनुचित किया गया है, क्या अनुवाद किया है अवलोकन हो,

सूरत कमर आयत १, कयामत निकट आ गई और चान्द फट गया,

आयत 2, यह यदि कोई चमत्कार देखते है तो मुख फैर लेते है और कह देते है कि यह पहले से चला आता हुआ जादू है, आयत में भविष्य काल है और अनुवाद भूत का किया गया है, सत्य भावार्थ अवलोकन हो,

आयत १, वह घड़ी (अर्थात कयामत) निकट आ गई और उसका चिन्ह यह है कि चान्द फट जाएगा,

2, (रहा प्रश्न चमत्कार का जिसकी वह लोग मांग करते है तो सुनो) वह यदि कोई चमत्कार देखेंगे तो मुख फैर लेंगे और कह देंगे कि यह पहले से चला आता जादू है,

अर्थात वह लोग ऐसे हट धर्म है कि किसी बात को भी नही

وہ لوگ اپنے ہاتھوں سے چھو بھی لیتے تب بھی وہ کافر لوگ کہتے کہ یہ کچھ نہیں مگر کھلا جادو ہے۔

سورت ابراہیم آیت ۱۱ ان کے رسولوں نے ان سے کہا کہ یہ سچ ہے کہ ہم بشری طور پر تو تم جیسے بشر ہی ہیں لیکن اللہ اپنے بندوں میں سے جس پر چاہتا ہے اپنا فضل کرتا ہے اللہ کے حکم کے بغیر ہماری مجال نہیں کہ ہم کوئی معجزہ تمہیں لا دکھائیں۔

سورت اعراف آیت ۱۸۸ آپ فرما دیجئے کہ میں خود اپنی ذات خاص کے لئے کسی نفع کا اختیار نہیں رکھتا اور نہ کسی ضرر کا مگر اتنا ہی کہ جتنا اللہ نے چاہا ہو اور اگر میں غیب کی باتیں جانتا ہوتا تو میں بہت سے منافع حاصل کر لیتا اور کوئی نقصان مجھ کو نہ پہنچتا۔ میں تو محض ڈرانے والا اور بشارت دینے والا ہوں ان لوگوں کو جو ایمان رکھتے ہیں۔

سورت المومن آیت ۷۸.....اور کسی رسول کی یہ مجال نہ تھی کہ کوئی معجزہ اللہ کی اجازت کے بغیر لا سکے.....

قرآن سے یہ کچھ آیتیں لکھیں ہیں ویسے قرآن میں اور بھی کافی آیات ہیں جن میں معجزہ کے بارے میں ہے ہر قاری ان کو قرآن میں پڑھتا ہوگا۔ قابل غور بات یہ ہے کہ سورت قمر کی آیت ایک میں ایک معجزہ نبیؐ کی طرف منسوب کیا گیا ہے اور ہر خاص و عام تقریباً اس کو صحیح تسلیم کرنے پر مجبور ہے اگر انکار کرتا ہے تو اس کی خیر نہیں گویا یہ ہوا اور یہ اتنا بڑا معجزہ تھا جو اوپر آسمان میں ہوا کہیں کسی مکان یا کسی ایسی جگہ پر نہیں ہوا جس کو دیکھنے والے کم ہوں اس کو تو کھلے آسمان میں پوری دنیا میں دیکھا ہوگا جس سے انکار نہیں کیا جا سکتا۔ لیکن قرآن کی آیات میں درج ہے کہ مشرکوں اور کافروں نے کہا کہ یہ کیسا نبی ہے کہ اس کے پاس کوئی معجزہ نہیں اللہ نے اس کو کوئی معجزہ نہیں دیا اور اللہ نے ان کے اس قول کو بہت جگہ درج کیا۔ کہیں بھی یہ نہیں کہا کہ وہ جھوٹ بکتے ہیں کیوں معجزہ نہیں دیا۔ انہوں نے چاند کو شق ہوتے نہیں دیکھا اور اس وقت دنیا میں بہت انسانوں نے چاند کو پھٹتے دیکھا اور شق قمر کو دیکھنے کے بعد ان لوگوں کو بھی جھٹلانا نہیں چاہیے تھا مگر وہ لوگ انکار کرتے رہے اس لئے محمدؐ نے یہ معجزہ نہیں دکھایا۔

علاوہ ازیں اللہ صاف کہہ رہا ہے کہ ہم نے آپ کو کوئی معجزہ اس لئے نہیں دیا کہ پہلے لوگوں نے معجزوں کو جھٹلایا جادو بتایا اور آپ کو سب سے بڑا معجزہ قرآن دیا ہے اور یہ بھی قرآن میں درج ہے کہ کسی نبی میں یہ طاقت نہیں تھی کہ وہ بغیر اللہ کی مرضی کے معجزہ دکھا سکے اس لئے محمدؐ نے کوئی شق قمر کا معجزہ نہیں دکھایا۔

آیت کا ترجمہ غلط کیا گیا ہے۔ کیا ترجمہ کیا ملاحظہ ہو۔

سورت قمر آیت ۱۔ قیامت قریب آگئی اور چاند پھٹ گیا۔

(۲) یہ اگر کوئی معجزہ دیکھتے ہیں تو منہ پھیر لیتے ہیں اور کہہ دیتے ہیں کہ یہ پہلے سے چلا آتا ہوا جادو ہے۔ آیت میں زمانہ مستقبل ہے اور ترجمہ ماضی کا کیا گیا ہے۔ صحیح مفہوم ملاحظہ ہو۔

آیت (۱) وہ گھڑی (یعنی قیامت) قریب آگئی اور اس کی نشانی یہ ہے کہ چاند پھٹ جائے گا۔

(۲) (رہا سوال معجزے کا جس کا وہ لوگ مطالبہ کرتے ہیں تو سنو) وہ اگر کوئی معجزہ دیکھیں گے تو منہ پھیر لیں گے اور کہہ دیں گے کہ یہ پہلے سے چلا آتا جادو ہے۔

یعنی وہ لوگ ایسے ہٹ دھرم ہیں کہ کسی بات کو بھی نہیں مانیں گے تو

آپ کا جو کام ہے یعنی تبلیغ دین اور دین کے احکام پر عمل کرتے رہو اور ان لوگوں کو ڈراتے اور خوشخبری سناتے رہو۔

یہ ہے حقیقت شق قمر کی یعنی چاند پھٹا نہیں بلکہ قیامت میں پھٹے گا جس کی خبر اس آیت کے ساتھ اور بہت آیات میں درج ہے جو اپنی جگہ پر لکھی گئی ہیں۔

मानेंगे तो आपका जो कार्य है अर्थात धर्म प्रचार और धर्म के आदेशों पर कर्म करते रहो, और उन लोगों को डराते और शुभ सूचना सुनाते रहो, यह है वास्तविकता शक्के कमर की अर्थात चान्द फटा नही अपितु क्यामत में फटेगा जिसकी सूचना इस आयत के साथ और बहुत आयात में अंकित है जो अपने स्थान पर लिखी गई है,

اور وہ لوگ آپ کو جھٹلا کر اپنی خواہشوں کے پیچھے چل رہے ہیں (تم ان کی پروا نہ کرو کسی کی فرمائش پر کوئی معجزہ نہیں دکھایا جائے گا اس لئے کہ) ہر کام کا ایک وقت مقرر ہے (چاند بھی اپنے وقت مقررہ پر یعنی قیامت کے دن شق ہو جائے گا (۳)

और वह लोग आपको झुटला कर अपनी इच्छाओं के पीछे चल रहे है (तुम उनकी चिन्ता न करो किसी की मांग पर चमत्कार नही दिखाया जाएगा इसलिए कि) हर एक कार्य का एक समय निश्चित है (चान्द भी अपने निश्चित समय पर अर्थात क्यामत के दिन फट जाएगा) (3)

(انہیں معجزے سے کوئی فائدہ بھی نہ پہنچ سکے گا اس لئے کہ) اُن کے سامنے پچھلی قوموں کے حالات آ چکے ہیں جن میں عبرت ہے (اگر مان لیں) (۴)

(उन्हें चमत्कार से कोई लाभ भी न पहुंच सकेगा इसलिए कि) उनके सामने पिछली जातियों के समाचार आ चुके है जिनमें शिक्षा है (यदि मान लें) (4)

اور کامل دانائی کی باتیں بھی ہیں مگر ان تنبیہات سے انہیں کوئی فائدہ نہیں پہنچا (۵)

और पूर्ण युक्ति की बातें भी हैं परन्तु उन चैतावनियों से उन्हें कोई लाभ नही पहुंचा (5)

تو آپ بھی ان کی کچھ پروا نہ کرو منہ پھیر لو جس دن بلانے والا ان کو بلائے گا ایک ناگوار چیز کی طرف (۶)

तो आप भी उनकी कुछ चिन्ता न करो मुख फैर लो जिस दिन बुलाने वाला उनको बुलाएगा एक अनिष्ट वस्तु की ओर (6)

تو آنکھیں نیچی کئے ہوئے قبروں سے نکل پڑیں گے گویا بکھری ہوئی ہڈیاں ہیں (۷)

तो आंखें नीची किए हुए समाधी से निकल पड़ेंगे मानो बिखरी हुई हड्डियां हैं (7)

اس بلانے والے کی طرف دوڑتے جاتے ہوں گے کافر کہیں گے یہ تو بڑا سخت دن ہے (۸)

उस बुलाने वाले की ओर दौड़ते जाते होंगे नास्तिक कहेंगे यह तो बड़ा कठिन दिन है (8)

ان سے پہلے نوح کی قوم نے بھی جھٹلایا تھا تو انہوں نے ہمارے بندے کو جھٹلایا اور کہا کہ دیوانہ ہے اور انہیں ڈانٹا بھی (۹)

उनसे पहले नूह की जाति ने भी झुटलाया था तो उन्होंने हमारे बन्दे को झुटलाया और कहा कि दिवाना है और उन्हें डांटा भी (9)

تو اس نے اپنے رب سے فریاد کی میں (اُن کے مقابلہ میں) کمزور ہوں تو ان سے میری مدد کر (۱۰)

तो उसने अपने रब से याचना की मैं (उनके सामने) निर्बल हूं तू उनसे मेरी सहायता कर (10)

پس ہم نے موسلادھار بارش سے آسمان کے دہانے کھول دئے (۱۱)

पस हमने प्रचण्ड वर्षा से आकाश के द्वार खोल दिए (11)

اور زمین سے چشموں کو جاری کر دیا اس کام کے لئے جو مقرر ہو چکا تھا جمع ہو گیا (۱۲)

और पृथ्वी से स्रोतों को जारी कर दिया उस कार्य के लिए जो निश्चित हो चुका था संग्रह हो गया (12)

اور ہم نے نوح کو ایک کشتی پر جو تختوں اور کیلوں سے تیار کی گئی تھی سوار کیا (۱۳)

और हमने नूह को एक नाव पर जो तख्तों और कीलों से तैयार की गई थी सवार किया (13)

وہ (کشتی) ہماری نگرانی میں چلتی رہی (اور نوح کے دشمن ڈبو دئے گئے) یہ اس شخص کا بدلہ تھا جس کی ناقدری کی گئی تھی (۱۴)

वह (नाव) हमारी देख रेख में चलती रही (और नूह के शत्रु तल्लीन कर दिए गए) यह उस व्यक्ति का बदला था जिसकी उपेक्षा की गई थी (14)

اور ہم نے اس (کشتی) کو ایک نشان عبرت بنا کر چھوڑا تو کوئی ہے کہ سوچے سمجھے؟ (۱۵)

और हमने उस (नाव) को एक शिक्षा का चिन्ह बनाकर छोड़ा तो कोई है कि सोचे समझे? (15)

سو دیکھ لو کیسا تھا میرا عذاب اور میرے ڈرانے کا انجام (۱۶)

सो देखलो कैसा था मेरा कष्ट और मेरे डराने का परिणाम (16)

اور ہم نے قرآن کو سمجھنے اور عمل کرنے کے لئے آسان کر دیا ہے تو کوئی ہے سوچے سمجھے؟ (۱۷)

और हमने कुरआन को समझने और अमल करने के लिए सरल कर दिया है तो कोई है सोचे समझे? (17)

عاد نے بھی جھٹلایا تھا سو دیکھ لو میرا عذاب اور ڈرانا کیسا ہوا؟ (۱۸)

आद ने भी झुटलाया था सो देखलो मेरा दण्ड और डराना कैसा हुआ? (18)

ہم نے ان پر نحوست کے دنوں میں سخت آندھی چلائی (۱۹)

हमने उन पर अशुभ दिनों में प्रचण्ड आंधी चलाई (19)

वह लोगों को इस प्रकार उखेड़ डालती थी मानो उखड़ी हुई खजूरों के तने हैं (20)
सो देखलो मेरा कष्ट और डराना कैसा हुआ (21)
और हमने कुरआन को इसलिए सरल बनाया है कि लोग इसे समझे और अमल करे, तो है कोई जो सोचे समझे (22)
समूद की जाति ने भी सावधान करने वालो को झुठलाया (23)
और कहा कि भला एक व्यक्ति जो हम ही में से है हम उसका अनुकरण करें? यूं तो हम पथ भ्रष्टता और दिवानगी में पड़ गए (24)
क्या हम सब में से इसी पर 'वही' अवतरित हुई? (नहीं अपितु यह झूठा डींग मारने वाला है) (25)
उनको शीघ्र कल ही ज्ञात हो जाएगा कि कौन झूठा और डींग मारने वाला है (26)
हम उनकी परीक्षा के लिए ऊंटनी भेजने वाले हैं, अतः तुम उनको धैर्य के साथ देखते रहो (27)
और उनको सूचित कर दो कि उनमें पानी की बारी निश्चित कर दी गई है हर एक को अपनी बारी पर आना है (28)
अतः उन्होंने अपने साथी को पुकारा (कि उस ऊंटनी को मार डाले) तो उसने ऊंटनी पर हाथ डाला और उसकी कोंचे कटा डाली (29)
सो देखलो कि कैसा था मेरा दण्ड और कैसी थी मेरी चैतावनी (30)
हमने उन पर एक धमाके की ध्वनि भेजी तो वह बाड़ वाले की रौंधी हुई बाड़ की भांति भुस होकर रह गए (31)
और हमने कुरआन को समझने और अमल करने के लिए सरल कर दिया है तो कोई है कि सोचे समझे? (32)
लूत की जाति ने भी सावधान करने वालों को झुठलाया था (33)
तो हमने उन पर पत्थर बरसाने वाली वायु चलाई परन्तु लूत के घर वाले कि हमने उनको पिछली रात ही से बचा लिया (34)
हम अपने कृपा दया से आज्ञाकारी करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं (35)
और (लूत ने) उनको हमारी पकड़ से सावधान भी कर दिया था परन्तु उन्होंने डराने में शंका की (36)
और उनसे उनके अतिथियों को ले लेना चाहा तो हमने उनकी आंखें मिटा दी, सो मेरा कष्ट और डराने का स्वाद चखो (37)
और उन पर सुबह सवेरे ही अटल कष्ट आ अवतरित हुआ (38)
अतः मेरे कष्ट और परिणाम से डराने का स्वाद चखो (39)
और हमने कुरआन को समझने के लिए सरल कर दिया है तो कोई है कि सोचे समझे? या व्यवहार करे (40)
और फ़िरऔन की जाति के पास भी सावधान करने वाले आए (41)
उन्होंने हमारे सब चिन्हों को झुठलाया तो हमने

وہ لوگوں کو اس طرح اکھیڑ ڈالتی تھی گویا اکھڑی ہوئی کھجوروں کے تنے ہیں (۲۰)
سو دیکھلو کہ میرا عذاب اور ڈرانا کیسا ہوا (۲۱)
اور ہم نے قرآن کو اس لئے آسان بنایا کہ لوگ اسے سمجھیں اور عمل کریں تو ہے کوئی جو سوچے سمجھے (۲۲)
قوم ثمود نے بھی ڈرانے والوں کو جھٹلایا (۲۳)
اور کہا کہ بھلا ایک آدمی جو ہم ہی میں سے ہے ہم اس کی پیروی کریں؟ یوں تو ہم گمراہی اور دیوانگی میں پڑ گئے (۲۴)
کیا ہم سب میں سے اسی پر وحی نازل ہوئی ہے؟ (نہیں) بلکہ یہ جھوٹا خود پسند ہے (۲۵)
ان کو جلد کل ہی معلوم ہو جائے گا کہ کون جھوٹا اور ڈینگ مارنے والا ہے (۲۶)
ہم ان کی آزمائش کے لئے اونٹنی بھیجنے والے ہیں پس تم ان کو صبر کے ساتھ دیکھتے رہو (۲۷)
اور ان کو آگاہ کر دو کہ ان میں پانی کی باری مقرر کر دی گئی ہے ہر ایک کو اپنی باری پر آنا ہے (۲۸)
پس انہوں نے اپنے ساتھی کو پکارا (کہ اس اونٹنی کو مار ڈالے) تو اس نے اونٹنی پر ہاتھ ڈالا اور اس کی کونچیں کاٹ ڈالی (۲۹)
سو دیکھلو کہ کیسا تھا میرا عذاب اور کیسی تھی میری تنبیہات (۳۰)
ہم نے ان پر ایک دھماکہ کی آواز بھیجی تو وہ باڑ والے کی روندھی ہوئی باڑ کی طرح بھس ہو کر رہ گئے (۳۱)
اور ہم نے قرآن کو سمجھنے اور عمل کرنے کے لئے آسان کر دیا ہے تو کوئی ہے کہ سوچے سمجھے؟ (۳۲)
قوم لوط نے بھی ڈرانے والوں کو جھٹلایا تھا (۳۳)
تو ہم نے ان پر پتھر برسانے والی ہوا چلائی مگر لوط کے گھر والے کہ ہم نے ان کو پچھلی رات ہی سے بچا لیا (۳۴)
ہم اپنے فضل سے فرمانبرداری کرنے والوں کو ایسا ہی بدلہ دیا کرتے ہیں (۳۵)
اور (لوط نے) ان کو ہماری پکڑ سے خبردار بھی کر دیا تھا مگر انہوں نے ڈرانے میں شک کیا (۳۶)
اور ان سے ان کے مہمانوں کو لے لینا چاہا تو ہم نے ان کی آنکھیں مٹا دیں سو میرے عذاب اور ڈرانے کے مزے چکھو (۳۷)
اور ان پر صبح سویرے ہی اٹل عذاب آ نازل ہوا (۳۸)
پس میرے عذاب اور انجام سے ڈرانے کا مزہ چکھو (۳۹)
اور ہم نے قرآن کو سمجھنے کے لئے آسان کر دیا ہے تو کوئی ہے کہ سوچے سمجھے؟ یا عمل کرے (۴۰)
اور قوم فرعون کے پاس بھی ڈرانے والے آئے (۴۱)
انہوں نے ہماری تمام نشانیوں کو جھٹلایا تو ہم نے ان کو اس

उनको इस प्रकार पकड़ा जिस प्रकार एक शक्तिशाली और अधिपति व्यक्ति पकड़ लेता है (42)

(ऐ अरब वालो) क्या तुम्हारे काफ़िर सरदार उन लोगों से उत्तम हैं या तुम्हारे लिए (पहली) पुस्तकों में कोई क्षमादान लिख दिया गया है (43)

क्या वह लोग कह रहे हैं कि हमारा दल बदला लेने वाला है (44)

उनका दल अभी शीघ्र पराजय खा जायेगा और (मैदान से) पीठ फेरकर भागते नजर आऐंगे (45)

उनके कठोर वचन का समय तो महाप्रलय है और क़यामत बड़ी कठोर और बहुत कड़वी है (46)

निःसन्देह अपराधी लोग भ्रष्टता में पड़े हैं और उनकी बुद्धि मारी गई है (47)

उस (क़यामत के) दिन मुंह के बल नर्क में घसीटे जाऐंगे (कहा जाएगा) अब आग का स्वाद चखो (48)

हमने (संसार की) हर वस्तु अनुमान निश्चित के साथ उत्पन्न की है (49)

और हमारा आदेश तो आंख के झपकने की भांति एक बात होती है (50)

हम तुम जैसे कितने ही (उद्दण्डों) को नष्ट कर चुके हैं तो क्या एक भी ऐसा है जो सोचे समझे (51)

और जो कुछ उन्होंने किया है वह पुस्तकों में अंकित है (52)

उसमें हर छोटी और बड़ी बात लिखी हुई है (53)

निःसन्देह हमारा डर रखने वाले स्वर्गों और नहरों में होंगे (54)

(अर्थात) पवित्र स्थान में हर प्रकार की शक्ति रखने वाले राजा के दरबार में (55)

सूरतु अर्रहमान-मक्की (55)

ईश्वर जो अत्यन्त कृपालु है (1)

उसी ने क़ुरआन पढ़ना सिखाया (2) {96:4,5}

उसी ने इन्सान को पैदा किया (3)

उसी ने इन्सान को बोलना सिखाया ज्ञान देकर (4)

नोट- चूंकि क़ुरआन शब्द का अर्थ क़ुरआन पुस्तक के अतिरिक्त पढ़ना भी है अतः भावार्थ लिखा गया है क़ुरआन पढ़ना, जिस पुस्तक को हम इस समय क़ुरआन कहते हैं वह इन्सान की रचना के बहुत बाद को दिया गया और इस क़ुरआन को देने से पहले व्यक्ति को पढ़ने का ज्ञान देना अनिवार्य था, जिससे इन्सान इसको पढ़ सके और पढ़ने के लिए बोलने की क्षमता भी अनिवार्य थी, अतः ईश्वर ने पहले बोलना सिखाया था फिर पढ़ने का ज्ञान दिया और बाद में पुस्तक की आकृति में क़ुरआन दी तो अर्थ हुआ ईश्वर कृपालु ने ज्ञान पढ़ने के लिए इन्सान को उत्पन्न करके बोलने की शक्ति दी और बोलने की शक्ति से पढ़ना सिखाया तब क़ुरआन प्रदान किया (99:5)

طرح پکڑ لیا جس طرح ایک قوی اور غالب شخص پکڑ لیتا ہے (۴۲)

(اے اہل عرب) کیا تمہارے کافر سرداران لوگوں سے بہتر ہیں یا تمہارے لئے (پہلی) کتابوں میں کوئی معافی نامہ لکھ دیا گیا ہے (۴۳)

کیا وہ لوگ کہہ رہے ہیں کہ ہماری جماعت بدلہ لینے والی ہے (۴۴)

ان کی جماعت ابھی جلد شکست کھا جائے گی اور (میدان سے) پیٹھ پھیر کر بھاگتے نظر آئیں گے (۴۵)

ان کے سخت وعدے کا وقت تو قیامت ہے اور قیامت بڑی سخت اور بہت تلخ ہے (۴۶)

بے شک مجرم لوگ گمراہی میں پڑے ہیں اور ان کی عقل ماری گئی ہے (۴۷)

اس (قیامت کے) روز منہ کے بل دوزخ میں گھسیٹے جائیں گے (کہا جائے گا) اب آگ کا مزہ چکھو (۴۸)

ہم نے (کائنات کی) ہر شی اندازہ مقرر کے ساتھ پیدا کی ہے (۴۹)

اور ہمارا حکم تو آنکھ کے جھپکنے کی طرح ایک بات ہوتی ہے (۵۰)

ہم تم جیسے کتنے ہی (سرکشوں) کو ہلاک کر چکے ہیں تو کیا ایک بھی ایسا ہے جو سوچے سمجھے (۵۱)

اور جو کچھ انہوں نے کیا ہے وہ صحیفوں میں درج ہے (۵۲)

اس میں ہر چھوٹی اور بڑی بات لکھی ہوئی ہے (۵۳)

یقیناً ہمارا ڈر رکھنے والے جنتوں اور نہروں میں ہوں گے (۵۴)

(یعنی) پاک مقام میں ہر طرح کی قدرت رکھنے والے بادشاہ کی بارگاہ میں (۵۵)

سورۃ الرحمٰن ۔ مکی (۵۵)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اللہ جو نہایت مہربان ہے (۱) اسی نے قرآن پڑھنا سکھایا (۲) [۹۶:۴،۵]

اسی نے انسان کو پیدا کیا (۳)

اسی نے انسان کو بولنا سکھایا علم دے کر (۴)

نوٹ: چونکہ قرآن لفظ کا مطلب قرآن کتاب کے علاوہ پڑھنا بھی ہے اس لئے مفہوم لکھا گیا ہے قرآن پڑھنا۔ جس کتاب کو ہم اس وقت قرآن کہتے ہیں وہ انسان کی پیدائش کے بہت بعد کو دیا گیا اور اس قرآن کو دینے سے پہلے آدمی کو پڑھنے کا علم دینا ضروری تھا جس سے انسان اس کو پڑھ سکے اور پڑھنے کے لئے بولنے کی صلاحیت بھی ضروری تھی اس لئے اللہ نے پہلے بولنا سکھایا پھر پڑھنے کا علم دیا اور بعد میں کتاب کی شکل میں قرآن دی تو مطلب ہوا اللہ مہربان نے علم پڑھنے کے لئے انسان کو پیدا کر کے قوت گویائی دی اور قوت گویائی سے پڑھنا سکھایا تب قرآن عطا کیا (۵:۹۹)

सूर्य और चन्द्रमा एक विशेष प्रबन्ध के आधीन चक्र कर रहें हैं (5)
और तारे और वृक्ष भी उसी की आज्ञाकारी कर रहें हैं (6)
उसने आकाश को ऊंचा किया और जगत के प्रबन्ध को न्याय पर स्थापित किया (7)
(जिस प्रकार सूर्य, चन्द्रमा, तारे, वृक्ष और आकाश अपने अपने न्याय के प्रबन्ध पर स्थापित हैं इसी प्रकार) तुम भी उस तुला का उल्लंघन न करो (8)
और (लेन देन के विषय में) न्याय से ठीक तोलो और कम न तोलों (डंडी न मोरो) (9)
और उसी ने रचना के लिए पृथ्वी बिछाई (10)
और उसमें फल और खजूर के वृक्ष हैं जिनके फल आवरण में लिपटे हुए हैं (11)
और अन्न जिसके साथ भुस होता है और सुगन्धित फूल पौधे भी (12)
तो (ऐ जिन्नात व इन्सानों के दलो!) तुम अपने रब के किन किन प्रसादों को झुटलाओगे (13)
उसी ने इन्सान को ठीकरे की भांति खनखनाती मिट्टी से बनाया (14) {23:12, 72:20-23}
और जिन्नात को आग के अग्नि शिखा से उत्पन्न किया (15)
तो तुम अपने रब के कौन कौन प्रसादों को झुटलाओगे (16)
वह ईश्वर है दोनों पूर्व और दोनों पश्चिमों का (17)
तो तुम अपने ईश्वर के कौन कौन से प्रसादों को झुटलाओगे (18)
उसी ने (खारी और मीठे पानी के) दो समुन्दर जारी किए कि दोनों आपस में मिले हुए हैं (फिर भी एक दूसरे से अलग हैं) (19)
(क्योंकि) दोनों में एक आड़ है कि (इससे) उल्लंघन नही कर सकते (20)
तो तुम अपने रब के कौन कौन से प्रसादों को झुटलाओगे (21)
उन दोनों में से मोती और मूंगे निकलते हैं (22)
तो तुम अपने ईश्वर के किन किन प्रसादों को झुटलाओगे (23)
और जलयान भी उसी के हैं जो समुन्द्र में ऊंचे पर्वतों की भांति (दिखाई देते) हैं (24)
तो तुम अपने ईश्वर के कौन कौन प्रसादों को झुटलाओगे (25)
जितनी रचना इस पृथ्वी पर है सब समाप्त होगी (26)
और केवल तेरे ईश्वर का अस्तित्व जो तेजस्वी व महान है शेष रहेगा (27)
तो तुम अपने ईश्वर के कौन कौन से प्रसादों का इन्कार करोगे (28)
आकाश और पृथ्वी में जितने लोग हैं सब उसी के भिक्षुक हैं और उसकी महिमा हर दिन एक नई शान में कार्यरत रहती है (29)

سورج اور چاند ایک خاص نظام کے تحت گردش کر رہے ہیں (۵)
اور ستارے اور درخت بھی اسی کی فرمانبرداری کر رہے ہیں (۶)
اس نے آسمان کو بلند کیا اور نظام عالم کو عدل پر قائم کیا (۷)
(جس طرح سورج چاند تارے درخت اور آسمان اپنے اپنے نظام عدل پر قائم ہیں اسی طرح) تم بھی اس میزان عدل (پر قائم رہو اور اس) میں حد سے تجاوز نہ کرو (۸)
(اور لین دین کے معاملات میں) انصاف سے ٹھیک تولو اور کم نہ تولو (ڈنڈی نہ مارو) (۹)
اور اسی نے خلقت کے لئے زمین بچھائی (۱۰)
اور اس میں پھل اور کھجور کے درخت ہیں جن کے پھل غلافوں میں لپٹے ہوئے ہیں (۱۱)
اور اناج جس کے ساتھ بھس ہوتا ہے اور خوشبودار پھول پودے بھی (۱۲)
تو (اے گروہ جن وانس!) تم اپنے رب کی کن کن نعمتوں کو جھٹلاؤ گے (۱۳)
اسی نے انسان کو ٹھیکرے کی طرح کھنکھناتی مٹی سے بنایا (۱۴) [۲۳:۱۲، ۷۲:۲۰-۲۳]
اور جنات کو آگ کے شعلے سے پیدا کیا (۱۵)
تو تم اپنے رب کی کون کون سی نعمت کو جھٹلاؤ گے (۱۶)
وہ رب ہے دونوں مشرقوں اور دونوں مغربوں کا (۱۷)
تو تم اپنے رب کی کون کون سی نعمت کو جھٹلاؤ گے (۱۸)
اسی نے (کھاری اور میٹھے پانی کے) دو سمندر جاری کئے کہ دونوں آپس میں ملے ہوئے ہیں (پھر بھی ایک دوسرے سے الگ ہیں) (۱۹)
(کیونکہ) دونوں میں ایک آڑ ہے کہ (اس سے) تجاوز نہیں کر سکتے (۲۰)
تو تم اپنے رب کی کون کون سی نعمت کو جھٹلاؤ گے (۲۱)
ان دونوں میں سے موتی اور مونگے نکلتے ہیں (۲۲)
تو تم اپنے رب کی کن کن نعمتوں کو جھٹلاؤ گے (۲۳)
اور جہاز بھی اسی کے ہیں جو سمندر میں بلند پہاڑوں کی طرح (دکھائی دیتے ہیں) (۲۴)
تو تم اپنے رب کی کن کن نعمتوں کو جھٹلاؤ گے (۲۵)
جتنی مخلوق اس زمین پر ہے سب فنا ہوگی (۲۶)
اور صرف تیرے رب کی ذات جو صاحب عظمت ہے باقی رہے گی (۲۷)
تو تم اپنے پروردگار کی کون کون سی نعمت کا انکار کرو گے (۲۸)
آسمان اور زمین میں جتنے لوگ ہیں سب اسی کے بھکاری ہیں اور ہر روز اس کی قدرت ایک نئی شان میں مصروف رہتی ہے (۲۹)

तो तुम अपने ईश्वर के कौन कौन से प्रसादों का इन्कार करोगे (30)
ऐ दोनों दलो! हम अभी शीघ्र ही तुम्हारी ओर आकृष्ट होते हैं (31)
तो तुम اپنے ईश्वर के कौन कौन से प्रसादों को झुटलाओगे (32)
ऐ दल जिन्न व मानव यदि तुम पृथ्वी व आकाश की सीमाओं (किनारों) से निकल सकते हो तो निकलो (परन्तु वैसे ही) नही निकल सकते निःसंदेह शक्ति के साथ निकल सकते हो (प्रयास करो) (33) {41:53, 84:19}

नोट- इस आयत में ईश्वर ने एक पृथ्वी से दूसरी पृथ्वी अर्थात एक ग्रह से दूसरे ग्रह पर जाने का रहस्य बताया है कि यदि तुमको ऐसी यात्रा करनी है और तुम अवश्य करोगे (84:19; 41:53) तो तुम पृथ्वी की गति से अधिक गति का राकेट बनाओ जो शक्ति होगी (सुलतान) चूंकि एक सामान्य नियम है दो व्यक्ति या दौड़ने वाली वस्तुऐं दौड़ती हैं तो जो तीव्र दौड़ता है वह कम दौड़ने वाले से आगे निकल जाता है, बस यही बात ईश्वर ने बताई है कि तुम को जब दूसरे ग्रह पर जाना हो तो शक्ति प्राप्त करो अर्थात पृथ्वी की गति से अधिक गति से दौड़ने वाला राकेट बनाओ यही सुलतान है अर्थात सलता और इसका अर्थ तीर जैसा होता है जो राकेट बना लिया और (84:19) में बता दिया कि तुम निःसन्देह यात्रा करोगे एक ग्रह से दूसरे ग्रह को जो इन्सान कर गया और आगे को प्रयास कर रहा है,

तो तुम अपने ईश्वर के किन किन प्रसादों को झुटलाओगे (34)
(यदि तुम अवज्ञा करोगे तो परलोक में और दूसरे ग्रह की यात्रा करने में) तुम पर आग का अग्नि शिखा और धुआं छोड़ दिया जाएगा तो फिर तुम सामना न कर सकोगे (उस कष्ट दुनिया और परलोक से बचने के लिए उसके बताए हुए नियम पर व्यवहार करो नियम दोनों स्पष्ट हैं अंतरिक्ष की उड़ान के लिए वस्त्र और परलोक के कष्ट से बचने के लिए कुरआन पर कर्म अनिवार्य हैं जो बुद्धिमान होता है वह इन शिक्षाओं पर व्यवहार करता है (35)
तो तुम अपने ईश्वर की कौन कौन सी कृपा को झुटलाओगे (36)
फिर जब आकाश फट जाएगा और लाल चमड़े की भांति हो जाएगा (तो कैसा भयानक दृश्य होगा) (37) {54:1; 69:16; 75:8}
तो तुम अपने ईश्वर की कौन कौन सी दया को झुटलाओगे (38)
उस दिन न तो किसी इन्सान से उसके पापों के विषय में ज्ञात किया जाएगा और न किसी जिन्न से (39)
तो तुम अपने ईश्वर के किस किस प्रसाद का इनकार करोगे (40)
पापी अपने चेहरे ही से पहचान लिए जाऐंगे तो ललाट के बालों से और पगों से पकड़ लिए जाऐंगे (41)
तो तुम अपने ईश्वर की कौन कौन सी दया को झुटलाओगे (42)
यह वह नर्क है जिसे पापी झुटलाते थे (43)
तो वह नर्क और खोलते हुए गर्म पानी के मध्य घूमते फिरेंगे (44)

تو تم اپنے رب کی کن کن نعمتوں کا انکار کرو گے (۳۰)
اے دونوں جماعتو! ہم ابھی جلد ہی تمہاری طرف متوجہ ہوتے ہیں (۳۱)
تو تم اپنے رب کی کون کون سی نعمتوں کو جھٹلاؤ گے (۳۲)
اے گروہ جن وانس! اگر تم زمین وآسمان کی سرحدوں (کناروں) سے نکل سکتے ہو تو نکلو (مگر ویسے ہی) نہیں نکل سکتے یقیناً طاقت کے ساتھ نکل سکتے ہو (کوشش کرو) (۳۳) [۴۱:۵۳؛ ۸۴:۱۹]

نوٹ:۔ اس آیت میں اللہ نے ایک زمین سے دوسری زمین یعنی ایک سیارے سے دوسرے سیارے پر جانے کا راز بتایا ہے کہ اگر تم کو ایسا سفر کرنا ہے اور تم ضرور کرو گے (۸۴:۱۹؛ ۴۱:۵۳) تو تم زمین کی رفتار سے زیادہ رفتار کا راکٹ بناؤ جو طاقت ہوگی (سلطان) چونکہ ایک عام قاعدہ ہے دو آدمی یا دوڑنے والی چیزیں دوڑتی ہیں تو جو تیز دوڑتا ہے وہ کم دوڑنے والے سے آگے نکل جاتا ہے۔ بس یہی بات اللہ نے بتائی ہے کہ تم کو جب دوسرے سیارے پر جانا ہو تو طاقت حاصل کرو یعنی زمین کی رفتار سے زیادہ رفتار سے دوڑنے والا راکٹ بناؤ یہی سلطان ہے یعنی سلطہ اور اس کا معنی تیر جیسا ہوتا ہے جو راکٹ بنا لیا اور (۸۴:۱۹) میں بتا دیا کہ تم یقیناً سفر کرو گے ایک طبق سے دوسرے طبق کو جو انسان کر گیا اور آگے کو کمندیں ڈال رہا ہے۔

تو تم اپنے رب کی کن کن نعمتوں کو جھٹلاؤ گے (۳۴)
(اگر تم نافرمانی کرو گے تو آخرت میں اور دوسرے کے سفر کرنے میں) تم پر آگ کا شعلہ اور دھواں چھوڑ دیا جائے گا تو پھر تم مقابلہ نہ کر سکو گے (اس عذاب دنیا اور آخرت سے بچنے کے لئے اس کے بتائے ہوئے قانون پر عمل کرو قانون دونوں صاف ہیں خلائی پرواز کے لئے لباس اور آخرت کے عذاب سے بچنے کے لئے قرآن پر عمل ضروری ہیں جو عقل مند ہوتا ہے وہ ان ہدایات پر عمل کرتا ہے) (۳۵)
تو تم اپنے رب کی کون کون سی نعمت کو جھٹلاؤ گے (۳۶)
پھر جب آسمان پھٹ جائے گا اور سرخ چمڑے کی طرح ہو جائے گا (تو کیسا ہولناک منظر ہوگا) (۳۷) [۵۴:۱؛ ۶۹:۱۶؛ ۷۵:۸]
تو تم اپنے رب کی کون کون سی نعمت کو جھٹلاؤ گے (۳۸)
اس روز نہ تو کسی انسان سے اس کے گناہوں کے بارے میں معلوم کیا جائے گا اور نہ کسی جن سے (۳۹)
تو تم اپنے رب کی کس کس نعمت کا انکار کرو گے (۴۰)
گنہگار اپنے چہرے ہی سے پہچان لئے جائیں گے تو پیشانی کے بالوں اور پاؤں سے پکڑ لئے جائیں گے (۴۱)
تو تم اپنے رب کی کون کون سی نعمت کو جھٹلاؤ گے (۴۲)
یہی وہ جہنم ہے جسے گنہگار جھٹلاتے تھے (۴۳)
تو وہ دوزخ اور کھولتے ہوئے گرم پانی کے درمیان گھومتے پھریں گے (۴۴)

तो तुम अपने रब के किस किस प्रसाद का इनकार करोगे (45)
जो व्यक्ति अपने रब के सामने (उत्तर देने के लिए) खड़ा होने से डरा (और उसने अपने कर्म उचित कर लिए) उसके लिए दो उपवन हैं (46)
तो तुम अपने ईश्वर के किस किस प्रसाद का इनकार करोगे (47)
(दोनों उपवन) हरे भरे (वृक्षों की) डालियों से भरे होंगे (48)
तो तुम अपने रब के किन किन प्रसादों को झुटलाओगे (49)
दोनों उपवनों में दो स्रोत बह रहे होंगे (50)
तो तुम अपने ईश्वर की कौन कौन सी दया का इनकार करोगे (51)
उनमें सब मैवे दो दो प्रकार के होंगे (52)
तो तुम अपने ईश्वर की कौन कौन सी कृपा का इनकार करोगे (53)
स्वर्ग वाले ऐसे बिछोनों पर तकिया लगाए बैठे होंगे जिनके अस्तर अतलस के होंगे और दोनों उपवनों के फलों से लदी हुई डालियां झुकी जा रही होंगी (54)
तो तुम अपने ईश्वर के किन किन प्रसादों का इनकार करोगे (55)
उन उपवनों में सुरक्षित निर्मल पेय पदार्थ और स्वादिष्ट भोजन होंगे वह ऐसे होंगे कि उन स्वर्ग वासियों से पहले किसी जिन्न व मानव ने न तो पिये होंगे न खाया होगा न हाथ लगाया होगा अर्थात वहां के नर नारी को पहली बार मिलेंगे (56) {जो दुनिया में नही मिले थे}
तो तुम अपने ईश्वर की कौन कौन सी कृपा को झुटलाओगे (57)
मानो वह याकूत और मरजान हैं (58)
तो तुम अपने रब की किस किस दया का इनकार करोगे (59)
उपकार का बदला उपकार के अतिरिक्त और क्या हो सकता है? (60)
तो तुम अपने ईश्वर के किन किन प्रसादों का इनकार करोगे (61)
और उन दो उपवनों के अतिरिक्त दो उपवन और हैं (62)
तो तुम अपने ईश्वर के किन किन प्रसादों का इनकार करोगे (63)
दोनों उपवन अत्यन्त घने और हरे भरे (64)
तो तुम अपने ईश्वर की कौन कौन सी दया को झुटलाओगे (65)
उनमें दो स्रोत उबल रहे होंगे (66)
तो तुम अपने ईश्वर के किन किन प्रसादों का इनकार करोगे (67)
उन दोनों उपवनों में मैवे खजूर और अनार अधिकता से होंगे (68)
तो तुम अपने ईश्वर की किन किन कृपाओं का इनकार करोगे (69)
और उन उपवनों में सुन्दर मंगल है (70)
तो तुम अपने रब की किन किन कृपाओं का इनकार करोगे (71)
और उन प्रसादों की रक्षा ऐसे की होगी और ऐसी उत्तम होगी (जैसे वह सुरक्षा में रखी हुई सुन्दर स्त्रियां (72)
तो तुम अपने ईश्वर की कौन कौन सी दयाओं का इनकार करोगे (73)
उन प्रसादों को स्वर्ग वालों से पहले न किसी इनसान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न

تو تم اپنے رب کی کس کس نعمت کا انکار کرو گے (۴۵)
جوشخص اپنے رب کے سامنے (جواب دہی کے لئے) کھڑا ہونے سے ڈرا (اور اس نے اپنے اعمال درست کر لئے) اس کے لئے دو باغ ہیں (۴۶)
تو تم اپنے رب کی کن کن نعمتوں کا انکار کرو گے (۴۷)
(دونوں باغ) ہرے بھرے (درختوں کی) ڈالیوں سے بھرے ہوں گے (۴۸)
تو تم اپنے رب کی کن کن نعمتوں کو جھٹلاؤ گے (۴۹)
دونوں باغوں میں دو چشمے بہہ رہے ہوں گے (۵۰)
تو تم اپنے رب کی کون کون سی نعمتوں کا انکار کرو گے (۵۱)
ان میں سے میوے دو دو طرح کے ہوں گے (۵۲)
تو تم اپنے رب کی کون کون سی نعمت کا انکار کرو گے (۵۳)
جنت والے ایسے فرشوں پر تکیہ لگائے بیٹھے ہوں گے جن کے استر اطلس کے ہوں گے اور دونوں باغوں کے پھلوں سے لدی ہوئی ڈالیاں جھکی جا رہی ہوں گی (۵۴)
تو تم اپنے رب کی کن کن نعمتوں کا انکار کرو گے (۵۵)
ان باغوں میں محفوظ خالص مشروب اور لذیذ کھانے ہوں گے وہ ایسے ہوں گے کہ ان جنتیوں سے پہلے کسی جن وانسان نے نہ تو نوش کیا ہو گا نہ کھایا ہو گا نہ ہاتھ لگایا ہو گا یعنی وہاں کے مرد وعورت کو پہلی بار ملیں گے (۵۶) [جو دنیا میں نہیں ملے تھے]
تو تم اپنے پروردگار کی کون کون سی نعمت کو جھٹلاؤ گے (۵۷)
گویا وہ یاقوت اور مرجان ہیں (۵۸)
تو تم اپنے رب کی کس کس نعمت کا انکار کرو گے (۵۹)
نیکی کا بدلہ نیکی کے سوا اور کیا ہو سکتا ہے؟ (۶۰)
تو تم اپنے رب کی کن کن نعمت کا انکار کرو گے (۶۱)
اور ان دو باغوں کے علاوہ دو باغ اور ہیں (۶۲)
تو تم اپنے رب کی کن کن نعمتوں کا انکار کرو گے (۶۳)
دونوں باغ خوب گھنے شاداب (۶۴)
تو تم اپنے رب کی کون کون سی نعمت کو جھٹلاؤ گے (۶۵)
ان میں دو چشمے ابل رہے ہوں گے (۶۶)
ان دونوں باغوں میں میوے کھجوریں اور انار کثرت سے ہوں گے (۶۸)
تو تم اپنے رب کی کن کن نعمتوں کا انکار کرو گے (۶۹)
اور ان باغوں میں عمدہ خیر ہے (۷۰)
تو تم اپنے رب کی کن کن نعمتوں کا انکار کرو گے (۷۱)
اور ان نعمتوں کی حفاظت ایسے کی ہو گی اور ایسی بہترین ہوں گی (جیسے وہ حفاظت میں رکھی ہوئیں حسین عورتیں) (۷۲)
تو تم اپنے رب کی کون کون سی نعمتوں کا انکار کرو گے (۷۳)
ان نعمتوں کو اہل جنت سے پہلے نہ کسی انسان نے ہاتھ لگایا ہو گا اور نہ کسی جن نے (یعنی وہ ایسی نعمتیں ہوں گی) ان

ने (अर्थात वह ऐसे प्रसाद होंगे उन उपवनों में कि कभी किसी ने खाना तो दूर देखे और छुए तक न होंगे (74)

باغوں میں کہ کبھی کسی نے کھانی تو دور دیکھی اور چھوئی تک نہ ہوں گی (۷۴)

तो तुम अपने ईश्वर के किन किन प्रसादों को झुठलाओगे (75)

सब्ज़ कालीनों और उत्तम बिछोनों पर तकिया लगाए बैठे होंगे (76)

तो तुम अपने ईश्वर के किन किन प्रसादों का इनकार करोगे (77)

बड़ी सम्पन्नता है तेरे रब के नाम को जो महत्ता और सम्मान रखता है (78)

تو تم اپنے رب کی کون کون سی نعمتوں کو جھٹلاؤ گے (۷۵)

سبز قالینوں اور نفیس مسندوں پر تکیہ لگائے بیٹھے ہوں گے (۷۶)

تو تم اپنے رب کی کن کن نعمتوں کا انکار کرو گے (۷۷)

بڑی برکت ہے تیرے رب کے نام کو جو بزرگی اور عزت رکھتا ہے (۷۸)

नोट- इस सूरत में ईश्वर ने अपने प्रसादों का उल्लेख करके इन्सान और जिन्न से प्रश्न किया है कि तुम मेरे किन किन प्रसादों का इनकार करोगे और उनके विषय में ही आयत 56 और 74 में कहा है कि वह ऐसे है कि उनको स्वर्ग से पहले किसी जिन्न व इन्सान ने न तो खाया है न देखा है और न छुआ है, केवल कुरआन में पढ़ा और सुना अवश्य है वह प्रसाद कैसे है उनका पता स्वर्ग में जाकर ही चलेगा परन्तु उन पर विश्वास रखना अनिवार्य है कि वह मिलेंगे अवश्य उन नर नारियों को जो सदाचारी होंगे,

परन्तु प्रचलित अनुवादों में इन आयात में हूरों का अनुवाद किया गया है जो विचारणीय है,

نوٹ:۔اس سورت میں اللہ نے اپنی نعمتوں کا ذکر کر کے انسان وجن سے سوال کیا ہے کہ تم میری کن کن نعمتوں کا انکار کرو گے۔اوران کے بارے میں ہی آیت ۵۶ اور ۷۴ میں کہا ہے کہ وہ نعمتیں ایسی ہیں کہ ان کو جنت سے پہلے کسی جن وانسان نے نہ تو کھایا ہے نہ دیکھا ہے اور نہ چھوا ہے صرف قرآن میں پڑھا اور سنا ضرور ہے وہ نعمتیں کیسی ہیں ان کا پتہ جنت میں جا کر ہی چلے گا لیکن ان پر یقین رکھنا ضروری ہے وہ ملیں گی ضرور ان مردوعورتوں کو جو نیک کردار ہوں گے۔

لیکن رائج الوقت تراجم میں ان آیات میں حوروں کا ترجمہ کیا گیا ہے جو محل نظر ہے۔

सूरतुल वाकिआ - मक्की (56)

سورۃ الواقعہ ۔مکی (۵۶)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

(आज जो लोग क्यामत को झुठला रहे है वह समझ लें कि) जब वह घटित होने वाली (क्यामत) घटित हो जाएगी (1)

(آج جو لوگ قیامت کو جھٹلا رہے ہیں وہ سمجھ لیں کہ) وہ واقع ہونے والی (قیامت) واقع ہو جائے گی (۱)

तो कोई उस घटना को प्रकट होने वाली को झुठलाने वाला न होगा (2)

वह निम्न करने वाली और उच्च करने वाली होगी (3) {94:4}

जब पृथ्वी भूकंप से प्रकंपित होने लगेगी (4)

और पर्वत टूटकर चूर्ण चूर्ण हो जाऐंगे (5)

फिर धूल बनकर उड़ने लगेंगे (6)

उस समय तुम लोग तीन प्रकार हो जाओगे (7) {35:32;7:46,47}

تو کوئی اس وقوع کو جھٹلانے والا نہ ہوگا (۲)

وہ پست کرنے والی اور بلند کرنے والی ہوگی (۳) [۴:۹۴]

جب زمین زلزلے سے لرزنے لگے گی (۴)

اور پہاڑ ٹوٹ کر ریزہ ریزہ ہو جائیں گے (۵)

پھر غبار بن کر اڑنے لگیں گے (۶)

اس وقت تم لوگ تین قسم ہو جاؤ گے (۷) [۳۵:۳۲؛ ۷:۴۶،۴۷]

दाऐं हाथ वाले (सुब्हान अल्लाह) दाऐं हाथ वालों का क्या कहना (8)

دائیں ہاتھ والے (سبحان اللہ) دائیں بازو والوں کا کیا کہنا (۸)

और बाऐं हाथ वाले (दुख) बाऐं हाथ वालों (के दुर्भाग्य) का क्या ठिकाना (9)

اور بائیں ہاتھ والے (افسوس) بائیں بازو والوں کی (بدقسمتی) کا کیا ٹھکانا (۹)

और आगे वाले (उनका क्या कहना) वह तो सबसे आगे होंगे (10)

اور آگے والے (ان کا کیا کہنا) وہ تو سب سے آگے ہوں گے (۱۰)

वही ईश्वर के सम्मानित निकटवर्ती बन्दे है (11)

प्रसादों के स्वर्ग में रहेंगे (12)

वह बहुत से अगले लोगों में से होंगे (सम्मानित बन्दे) (13) {56:39,40;43:6}

وہی اللہ کے مقرب بندے ہیں (۱۱)

نعمتوں کی جنت میں رہیں گے (۱۲)

وہ بہت سے اگلے لوگوں میں سے ہوں گے (مقرب بندے) (۱۳) [۵۶:۳۹،۴۰؛ ۴۳:۶]

और थोड़े पिछले लोगों में होंगे (14)

اور تھوڑے پچھلے لوگوں میں ہوں گے (۱۴)

नोट- पहले युग में ईशदूत अधिक हुए और बाद में कम और फिर बिल्कुल बन्द हो गए (43:6)

نوٹ:۔یعنی پہلے زمانہ میں نبی زیادہ ہوئے اور بعد میں کم اور پھر بالکل بند ہو گئے (۴۳:۶)

और जो अच्छे होंगे वह जड़े हुए सिंहासनों पर होंगे (15)
तकिया लगाए आमने सामने बैठे होंगे (16)
उनकी सभाओं में उनके लड़के बच्चे भी आभूषण से सुसज्जित उनके आस पास फिरेंगे (17) {13:23; 52:24}
अर्थात आफ़्ताबे और पात्र लेकर मधुर पदार्थ के शुद्ध स्रोतों से (18)
जिस (के पीने) से न तो सिर चकराएगा न बुद्धि मारी जाएगी (19)
और मैवे जिस प्रकार के उनको पसन्द होंगे (20)
और पक्षियों का मांस जिस प्रकार का उनका मन चाहेगा (21)
और वह सब वस्तुऐं साफ सुथरी होंगी (22)
जैसे सुरक्षा में रखे आबदार मोती (23)
यह उनके कर्मों का फल है जो वह करते थे (24)
वहां न बेहूदा बात सुनेंगे और न गाली गलोच(25)
हां उनकी वाणी शान्ति शान्ति होगी (26)
और दाऐं हाथ वाले दाऐं हाथ वालों का क्या कहना (अर्थात कर्म पत्र जिनका दाऐं हाथ में होगा) (27)
(वह दाऐं हाथ वाले) फूलों से लदे आवरणों की छांव में (28) {53:14;56:78}
तह बतेह कैलों में (29)
दूर तक फैले हुए सायों में (30)
और पानी के झरनों में (31)
अधिकता से फलदार उपवनों में (32)
जो न कभी समाप्त हो और न उनसे कोई रोके (33)
और ऊंचे ऊंचे बिछोनों में (34)
नोट- आयत 13 से 34 तक उल्लेख उन नर नारियों का है जो स्वर्ग में जाऐंगे अब आयत 35 से उन स्त्रियों का उल्लेख विशेषतय आरम्भ होता है जो स्वर्ग में जाऐंगी.
हमने उनको पुनः पैदा किया (35)
और उनको नवयुवती बनाया अर्थात जितनी आयु कुंवारी की होती है (36)
स्वभाव में एक दूसरे से मिलती हुई और एक ही मिट्टी से बनी हुई (37)
दाऐं हाथ वालों के लिए (प्रसाद) (38)
बहुत से तो अगले लोगों में से है (39)
और बहुत से पिछले लोगों में से होंगे (40)
और बाऐं हाथ वाले दुख बाऐं हाथ वालों पर (41)
वह गर्म लपट और खोलते हुए पानी में होंगे (42)
और धुंवे के साए में होंगे (43)
जो न ठंडा होगा न तृप्ति देगा (44)

اور جو اچھے ہوں گے وہ جڑے ہوئے تختوں پر ہوں گے (۱۵)
تکیہ لگائے آمنے سامنے بیٹھے ہوں گے (۱۶)
ان کی مجلسوں میں ان کے لڑکے بچے بھی زیورات سے مزین ان کے آس پاس پھریں گے (۱۷) [۱۳:۲۳: ۵۲:۲۴]
یعنی آفتابے اور پیالے لے کر مشروب کے صاف چشموں سے (۱۸)
جس (کے پینے) سے نہ تو سر چکرائے گا نہ عقلیں ماری جائیں گی (۱۹)
اور میوے جس طرح کے ان کو پسند ہوں گے (۲۰)
اور پرندوں کا گوشت جس قسم کا ان کا جی چاہے گا (۲۱)
اور وہ سب چیزیں صاف ستھری ہوں گی (۲۲)
جیسے حفاظت میں رکھے ہوئے آبدار موتی (۲۳)
یہ ان کے اعمال کا بدلہ ہے جو وہ کرتے تھے (۲۴)
وہاں نہ بے ہودہ بات سنیں گے اور نہ گالی گلوچ (۲۵)
ہاں ان کا کلام سلام سلام ہوگا (۲۶)
اور دائیں ہاتھ والے دائیں ہاتھ والوں کا کیا کہنا (یعنی نامہ اعمال جن کا دائیں ہاتھ میں ہوگا) (۲۷)
(وہ دائیں بازو والے) پھولوں سے لدے پردوں کی چھاؤں میں (۲۸) [۵۳:۱۵: ۵۶:۷۸]
تہ بتہ کیلوں میں (۲۹)
دور تک پھیلے سایوں میں (۳۰)
اور پانی کے جھرنوں میں (۳۱)
کثرت سے پھل دار باغوں میں (۳۲)
جو نہ کبھی ختم ہوں اور نہ ان سے کوئی روکے (۳۳)
اور اونچے اونچے فرشوں میں (۳۴)
نوٹ:۔ آیت ۱۳ سے ۳۴ تک ذکر ان عورت و مردوں کا ہے جو جنت میں جائیں گے اب آیت ۳۵ سے ان عورتوں کا ذکر خاص طور سے شروع ہوتا ہے جو جنت میں جائیں گی۔
ہم نے ان کو دوبارہ پیدا کیا (۳۵)
اور ان کو ہم نے نو عمر بنایا یعنی جتنی عمر کنواری کی ہوتی ہے اور کنواری بنایا (۳۶)
عادات میں ایک دوسرے سے ملتی ہوئی اور ایک ہی مٹی سے بنی ہوئیں (۳۷)
دائیں بازو والوں کے لئے (نعمتیں) (۳۸)
بہت سے تو اگلے لوگوں میں سے ہیں (۳۹)
اور بہت سے پچھلے لوگوں میں سے ہوں گے (۴۰)
اور بائیں بازو والے افسوس بائیں بازو والوں پر (۴۱)
وہ گرم لپٹ اور کھولتے ہوئے پانی میں ہوں گے (۴۲)
اور دھوئیں کے سائے میں ہوں گے (۴۳)
جو نہ ٹھنڈا ہوگا نہ تسکین بخش (۴۴)

वह लोग पहले दुनिया में बड़े सम्पन्न थे (45)
और बड़े बड़े पापों को निर्भय होकर किया करते थे (46)
और कहा करते थे कि भला जब हम मर कर मिट्टी हो जाऐंगे और हमारी हड्डियों का सांचा ही रह जाएगा तो क्या हमें पुनः जीवित करके उठाया जाएगा? (47)
और क्या हमारे पूर्वजों को भी (जीवित किया जाएगा?) (48)
(ऐ मुहम्मद स0) उनसे कहो निःसन्देह अगले पिछले सब (49)
सब एक दिन निश्चित समय पर संग्रह किए जायेंगे (50)
फिर ऐ झुठलाने वालो पथ भ्रष्टों (51)
दुनिया में तुम्हारा भोजन झगड़ना अवज्ञा थी और अवैध विधि से जीविका कमाते थे और निगलते थे (52)
और उसी अवैध विधि से कमाई जीविका से अपना पेट भरते थे (53)
और अवैध कमाने की तुम्हारी इच्छा बहुत बढ़ गई थी जैसे गर्म पानी पीने से प्यास बढ़ जाती है(54)
उस अवैध कमाई को तुम इतना चाहते थे इस प्रकार पीते थे जैसे प्यासे ऊंट पानी पीते हैं मानो तुम्हारी इच्छा बहुत बढ़ गई थी (55)
दुनिया में जो बुरे कर्म किये थे उनके बदले में बुरी आतिथ्य होगी बदले के दिन (56) {37:62से67; 44:43,47}
(ऐ लोगो!) हम ही ने तुम्हें पैदा किया है तो तुम (हमारे कथनानुसार पुनः जी उठने को) क्यों नही मानते (57)
क्या कभी तुम ने इस बात पर विचार किया कि जो वीर्य तुम डालते हो (58)
क्या उससे बच्चा तुम बनाते हो या हमारा नियम बनाता है (59)
हमने तुम्हारे बीच मरना ठहरा दिया है और हम इस बात से विवश नही है (60)
कि तुम्हारे स्थान पर तो तुम जैसे और आदमी उत्पन्न कर दें और तुम को ऐसी आकृति में बना दें जिनको तुम न जानो अर्थात बुद्धि हीन कर दें (61)
और तुम पहली उत्पत्ति को तो जानते ही हो फिर तुम मनन क्यों नही करते (62)
क्या कभी इस बात पर विचार किया है कि जो बीज तुम बोते हो (63)
जो तुम उगाते हो या उसे उगाने वाले हम हैं(64)
यदि हम चाहें तो उसे भुस बनाकर रख दें और तुम बातें बनाते रह जाओ (65)
कि हम पर तावान पड़ गया (66)
अपितु हमारा भाग्य ही बुरा है (67)
भला विचार तो करो कि जो पानी तुम पीते हो (68)
क्या तुमने उसको बादल से अवतरित किया है या हम अवतरित करते हैं (69)
यदि हम चाहें तो उसे खारी कर दें तो फिर तुम

وہ لوگ پہلے دنیا میں بڑے خوش حال تھے(۴۵)
اور بڑے بڑے گناہوں کو بے خوف کیا کرتے تھے(۴۶)
اور کہا کرتے تھے کہ بھلا جب ہم مر کر مٹی ہو جائیں گے اور ہماری ہڈیوں کا سانچہ ہی رہ جائے گا تو کیا ہمیں (دوبارہ زندہ کر کے) اٹھایا جائے گا؟(۴۷)
اور کیا ہمارے بزرگوں کو بھی (زندہ کیا جائے گا؟)(۴۸)
(اے محمدؐ) ان سے کہو بے شک اگلے پچھلے سب(۴۹)
سب ایک روز مقررہ وقت پر جمع کئے جائیں گے(۵۰)
پھر اے جھٹلانے والے گمراہوں(۵۱)
دنیا میں تمہاری غذا جھگڑنا فرمانی تھی اور ناجائز طریقے سے روزی کماتے تھے اور نگلتے تھے(۵۲)
اور اسی ناجائز طریقے سے کمائی روزی سے اپنا پیٹ بھرتے تھے(۵۳)
اور ناجائز کمانے کی تمہاری خواہش بہت بڑھ گئی تھی جیسے گرم پانی پینے سے پیاس بڑھتی ہے(۵۴)
اس ناجائز کمائی کو تم اتنا چاہتے تھے اس طرح سے پیتے تھے جیسے پیاسے اونٹ پانی پیتے ہیں گویا تمہاری ہوس بہت بڑھ گئی تھی(۵۵)
دنیا میں جو بُرے عمل کئے تھے ان کے بدلے میں یہ بُری ضیافت ہوگی بدلے کے دن(۵۶)[۴۴:۴۳،۴۷؛ ۳۷:۶۲ سے ۶۷]
(اے لوگو!) ہم ہی نے تمہیں پیدا کیا ہے تو تم (ہمارے کہنے کے مطابق دوبارہ جی اُٹھنے کو) کیوں نہیں مانتے(۵۷)
کیا کبھی تم نے اس بات پر غور کیا کہ جو نطفہ تم ڈالتے ہو(۵۸)
کیا اس سے بچہ تم بناتے ہو یا ہمارا قانون بناتا ہے(۵۹)
ہم نے تمہارے درمیان مرنا ٹھہرا دیا ہے اور ہم اس بات سے عاجز نہیں ہیں(۶۰)
کہ تمہاری جگہ پر تو تم جیسے اور آدمی پیدا کر دیں اور تم کو ایسی صورت میں بنا دیں جن کو تم نہ جانو یعنی بے عقل کر دیں(۶۱)
اور تم پہلی پیدائش کو تو جانتے ہی ہو پھر تم غور کیوں نہیں کرتے(۶۲)
کیا کبھی اس بات پر غور کیا ہے کہ جو بیج تم بوتے ہو(۶۳)
اسے تم اگاتے ہو یا اسے اگانے والے ہم ہیں(۶۴)
اگر ہم چاہیں تو اسے بھس بنا کر رکھ دیں اور تم باتیں بناتے رہ جاؤ(۶۵)
کہ ہم پر تاوان پڑ گیا(۶۶)
بلکہ ہماری قسمت ہی خراب ہے(۶۷)
بھلا غور تو کرو کہ جو پانی تم پیتے ہو(۶۸)
کیا تم نے اس کو بادل سے نازل کیا ہے یا ہم نازل کرتے ہیں(۶۹)
اگر ہم چاہیں تو اسے کھاری کر دیں تو پھر تم فرمانبرداری

आज्ञाकारी क्यों नही करते (इस प्रसाद पर) (70)
क्या कभी इस बात पर मनन किया कि यह आग जो तुम जलाते हो (71)
क्या उसका वृक्ष तुम ने पैदा किया या उसके पैदा करने वाले हम है (72)
उसे हमने स्मरण पत्र का साधन बनाया और जंगल में यात्रियों के लाभ के लिए (73)
तो अपने महिमा वाले ईश्वर के नाम की पवित्रता का वर्णन करो (74)
हम तारों के पड़ाव को साक्ष्य में प्रस्तुत कर रहे है (मनन करो) क्या यह साक्ष्य प्रयाप्त नही है? (75)
और तुम लोग समझो तो यह बहुत बड़ी साक्ष्य है (76)
कि निःसन्देह यह बड़े मान का कुरआन है (77)
जो एक सुरक्षित पुस्तक में लिखा हुआ है (78)
इसको वह हाथ लगाते है अर्थात छूते है जो पवित्र है (79) {2:222, 3:15; 5:6; 17:32} या इससे वही हिदायत लेते है जिनके हृदय पवित्र हों,
ईश्वर की ओर से प्रेषित किया गया है (80)
तो क्या इस बात में तुम सुस्ती करते हो (81)
और तुम अपना जप और जीविका यह बनाते हो कि इसे झुटला दो (82)
भला जब जान गले में आ पहुंचती है (83)
और तुम उस समय (मरने वाले की विवशता देखते हो) (84)
(और कुछ नहीं कर सकते) उस समय तुम्हारे मुकाबिले में हम मरने वाले से अधिक निकट होते है परन्तु तुमको दिखाई नही देते (85)
अतः यदि तुम किसी के वश में नही हो (86)
और अपने वाद में सच्चे हो तो उस निकलती जान को वापस क्यों नही ले आते (87)
फिर यदि मरने वाला ईश्वर का सम्मानित बन्दों में से है (88)
तो उसके लिए सुख और अच्छी जीविका और प्रसाद के उपवन है (89)
और जो दाऐं हाथ वालों में से है (90)
तो कहा जाएगा तुझ पर दाहिने हाथ वालों की ओर से सलाम (91)
और यदि वह झुटलाने वाले पथ भ्रष्टों में से है (92)
तो (उसका) खोलते पानी से भोज है (93)
और वह नर्क में प्रविष्ट किया जाना है (94)
और यह बिल्कुल सच और विश्वसनीय है (95)
पस आप अपने महाविराट ईश्वर की पवित्रता का वर्णन करते रहो (94)

सूरतुल हदीद-मदनी (57)

(कहो) जितनी रचना आकाशों और पृथ्वी में है सब ईश्वर की पवित्रता का वर्णन करती है और वह अधिपति और युक्ति वाला है (1)

کیوں نہیں کرتے (اس نعمت پر) (۷۰)
کیا کبھی اس بات پر غور کیا کہ یہ آگ جو تم سلگاتے ہو (۷۱)
کیا اس کا درخت تم نے پیدا کیا یا اس کے پیدا کرنے والے ہم ہیں (۷۲)
اسے ہم نے یاددہانی کا ذریعہ بنایا اور جنگل میں مسافروں کے فائدے کے لئے (۷۳)
تو آپ اپنے عظمت والے پروردگار کے نام کی پاکی بیان کرو (۷۴)
ہم تاروں کی منزلوں کو شہادت میں پیش کر رہے ہیں (غور کرو) کیا یہ شہادت کافی نہیں ہے؟ (۷۵)
اور تم لوگ سمجھو تو یہ بہت بڑی شہادت ہے (۷۶)
کہ بےشک یہ بڑے رتبے کا قرآن ہے (۷۷)
جو ایک محفوظ کتاب میں لکھا ہوا ہے (۷۸)
اس کو وہی ہاتھ لگاتے ہیں یعنی چھوتے ہیں جو پاک ہیں (۷۹) [۲:۲۲۲؛ ۳:۱۵؛ ۵:۶؛ ۱۷:۳۲] یا اس سے وہی ہدایت لیتے ہیں جن کے دل پاک ہوں]
پروردگار کی طرف سے اتارا گیا ہے (۸۰)
تو کیا اس بات میں تم سستی کرتے ہو (۸۱)
اور تم اپنا وظیفہ اور رزق یہ بناتے ہو کہ اسے جھٹلا دو (۸۲)
بھلا جب روح گلے میں آ پہنچتی ہے (۸۳)
اور تم اس وقت (مرنے والے کی بےکسی) دیکھتے ہو (۸۴)
(اور کچھ نہیں کر سکتے) اس وقت تمہاری نسبت ہم مرنے والے سے زیادہ قریب ہوتے ہیں لیکن تم کو نظر نہیں آتے (۸۵)
پس اگر تم کسی کے بس میں نہیں ہو (۸۶)
اور اپنے دعوے میں سچے ہو تو اس نکلتی ہوئی جان کو واپس کیوں نہیں لے آتے (۸۷)
پھر اگر وہ مرنے والا اللہ کے مقرب بندوں میں سے ہے (۸۸)
تو اس کے لئے راحت اور اچھی روزی اور نعمت کے باغ ہیں (۸۹)
اور جو دائیں بازو والوں میں سے ہے (۹۰)
تو کہا جائے گا تجھ پر داہنے ہاتھ والوں کی طرف سے سلام (۹۱)
اور اگر وہ جھٹلانے والے گمراہوں میں سے ہے (۹۲)
تو (اس کی) کھولتے پانی سے ضیافت ہے (۹۳)
اور وہ دوزخ میں داخل کیا جانا ہے (۹۴)
اور یہ بالکل سچ اور یقینی ہے (۹۵)
پس آپ اپنے عظیم الشان رب کی تسبیح کرو (۹۶)

سورۃ الحدید۔ مدنی (۵۷)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

(کہو) جتنی مخلوق آسمانوں اور زمین میں ہیں سب اللہ کی پاکی بیان کرتی ہیں اور وہ غالب اور حکمت والا ہے (۱)

(कहो) आकाशों और पृथ्वी का राज्य उसी का है वही जिलाता है और वही मारता है वह हर वस्तु के अनुमान बनाने वाला है (2)

(कहो) वही प्रथम है वही अन्ति है वही प्रकट है वही गुप्त है वही सब कुछ जानता है (3)

(कहो) वही है जिसने आकाशों और पृथ्वी को छ दिन (छ चरण) में पैदा किया फिर सिहांसन पर स्थिर हुआ जो वस्तु पृथ्वी में प्रविष्ट होती है और जो वस्तुऐं पृथ्वी से निकलती है और जो वस्तुऐं आकाश से उतरती है और जो आकाश की ओर चढ़ती है सब उसके ज्ञान में है तुम जहां कही हो वह तुम्हारे पास होता है और जो कुछ तुम करते हो उसे देखता रहता है (4)

(कहो) आकाशों और पृथ्वी का राज्य उसी का है और सब कार्यों का प्रबन्ध उसी के अधिकार में है (5)

(कहो) वही रात को दिन में और दिन को रात में प्रविष्ट करता है वह हृदयों में छुपे हुए भेदों तक से अवगत है (6)

(सुनो!) ईश्वर और उसके रसूल पर हृदय से विश्वास लाओ और उस धन में से जिसका उसने अपनी ओर से तुमको उत्तराधिकारी बनाया है (उसके मार्ग में) व्यय करो तुम में से जो लोग विश्वास लाए और धन व्यय करते रहे उनके लिए बड़ा प्रतिदान है (7)

ऐ लोगो! तुम्हें क्या हो गया है कि मुझ ईश्वर पर विश्वास नही लाते यद्यपि ईश्वर का रसूल तुम को बुला रहा है कि अपने ईश्वर पर विश्वास लाओ और यदि तुमको विश्वास हो तो वह तुमसे इसका वचन भी ले चुका है (8)

(ऐ ईशदूत उनसे कहो) वही तो है जो अपने बन्दे (मुहम्मद) पर खुली (और स्पष्ट) आयतें प्रेषित करता है ताकि तुम को (मूर्खता और नास्तिकता के) अन्धकार से निकालकर (विश्वास और बुद्धि के) प्रकाश में ले आए और विश्वास करो ईश्वर तुम पर बड़ा स्नेही और सीमा से अधिक कृपालु है (9) (कद्र-97)

(और ऐ मेरे ईशदूत उनसे यह भी ज्ञात कर लो) ऐ लोगों! तुम को क्या हुआ है कि ईश्वर के मार्ग में व्यय नही करते यद्यपि आकाशों और पृथ्वी की दाय ईश्वर ही की है जिस व्यक्ति ने तुम में से विजय मक्काह से पहले व्यय किया और युद्ध किया वह और जिसने यह कार्य बाद में किये वह बराबर नही उनका मान उन लोगों से कही बढ़कर है जिन्होंने बाद में व्यय और धर्म युद्ध किया और ईश्वर ने सबसे वचन प्रतिदान का किया है और जो कार्य तुम करते हो ईश्वर उनसे अवगत है (10)

(उनसे कहो) कौन है जो ईश्वर को अच्छा ऋण दे? ताकि ईश्वर कई गुना बढ़कर उसे वापस करे और उसके लिए सम्मान का फल है (अर्थात स्वर्ग) (11)

जिस दिन तुम आस्तिक पुरुषों और आस्तिक स्त्रियों को देखोगे कि उनके धर्म का प्रकाश तेज उनके

(کہو) آسمانوں اور زمین کی بادشاہت اسی کی ہے وہی جلاتا ہے اور وہی مارتا ہے وہ ہر چیز کے اندازے بنانے والا ہے(۲)

(کہو) وہی اوّل ہے وہی آخر ہے وہی ظاہر ہے وہی پوشیدہ ہے وہی سب کچھ جانتا ہے(۳)

(کہو) وہی ہے جس نے آسمانوں اور زمین کو چھ دن (چھ دور) میں پیدا کیا پھر عرش پر قائم ہوا. جو چیز زمین میں داخل ہوتی ہے اور جو چیزیں زمین سے نکلتی ہیں اور جو چیزیں آسمان سے اترتی ہیں اور جو آسمان کی طرف چڑھتی ہیں سب اس کے علم میں ہیں.تم جہاں کہیں ہو وہ تمہارے پاس ہوتا ہے اور جو کچھ تم کرتے ہو اسے دیکھتا رہتا ہے(۴)

(کہو) آسمانوں اور زمین کی سلطنت اسی کی ہے اور تمام کاموں کا انتظام اس کے اختیار میں ہے(۵)

(کہو) وہی رات کو دن میں اور دن کو رات میں داخل کرتا ہے وہ دلوں میں چھپے ہوئے بھیدوں تک سے واقف ہے(۶)

(سنو!) اللہ اور اس کے رسول پر دل سے ایمان لاؤ اور اس مال میں سے جس کا اس نے اپنی طرف سے تم کو جانشین بنایا ہے (اس کی راہ میں) خرچ کرو تم میں سے جو لوگ ایمان لائے اور مال خرچ کرتے رہے ان کے لئے بڑا اجر ہے(۷)

اے لوگو! تمہیں کیا ہوگیا ہے کہ مجھ اللہ پر ایمان نہیں لاتے حالانکہ اللہ کا رسول تم کو بلا رہا ہے کہ اپنے رب پر ایمان لاؤ اور اگر تم کو یقین ہو تو وہ تم سے اس کا عہد بھی لے چکا ہے(۸)

(اے رسول ان سے کہو) وہی تو ہے جو اپنے بندے (محمدؐ) پر کھلی (اور واضح) آیتیں نازل کرتا ہے تا کہ تم کو (جہالت اور کفر کی) تاریکیوں سے نکال کر (ایمان اور عقل کی) روشنی میں لے آئے.اور یقین کرو اللہ تم پر بڑا شفیق اور حد سے زیادہ مہربان ہے (۹)[قدر ۹۷]

(اور اے میرے رسول ان سے یہ بھی معلوم کرلو) اے لوگو! تم کو کیا ہوا ہے کہ اللہ کے رستے میں خرچ نہیں کرتے حالانکہ آسمانوں اور زمین کی میراث اللہ ہی کی ہے جس شخص نے تم میں سے فتح مکہ سے پہلے خرچ کیا اور لڑائی کی وہ اور جس نے یہ کام بعد میں کئے وہ برابر نہیں.ان کا درجہ ان لوگوں سے کہیں بڑھ کر ہے جنہوں نے بعد میں خرچ اور جہاد و قتال کیا اور اللہ نے سب سے وعدہ ثواب کا کیا ہے اور جو کام تم کرتے ہو اللہ ان سے واقف ہے(۱۰)

(ان سے کہو) کون ہے جو اللہ کو قرض حسنہ دے؟ تا کہ اللہ کئی گنا بڑھا کر اسے واپس کرے اور اس کے لئے عزت کا اجر ہے (یعنی جنت)(۱۱)

جس دن تم مومن مردوں اور مومن عورتوں کو دیکھو گے کہ ان کے ایمان کا نور ان کے آگے آگے اور داہنی طرف چل

आगे आगे और दाहिनी ओर चल रहा है (तो उनसे कहा जाएगा कि) तुम को मंगल सूचना हो (कि आज तुम्हारे लिए) उपवन है जिनके नीचे नहरें बह रही हैं उनमें सदैव रहोगे यही बड़ी सफलता है (12)

رہا ہے (تو ان سے کہا جائے گا کہ) تم کو بشارت ہو (کہ آج تمہارے لئے) باغ ہیں جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہیں ان میں ہمیشہ رہو گے یہی بڑی کامیابی ہے (۱۲)

उस दिन कपटि पुरुष और कपटि स्त्रियां विश्वास लाने वालों से कहेंगे थोड़ी हमारी प्रतीक्षा करो ताकि हम तुम्हारे प्रकाश तेज से कुछ लाभ उठाएं उनसे कहा जाएगा कि पीछे को लौट जाओ और (अपने लिए कोई और) प्रकाश खोजो फिर उनके मध्य एक दिवार खड़ी कर दी जाएगी जिसमें एक द्वार होगा द्वार के अन्दरूनी ओर (जो आस्तिकों का निवास स्थान है ईश्वर की) करूणा होगी और उसके बाहर की ओर कष्ट होगा (यह कपटियों का निवास स्थान होगा) (13)

اس روز منافق مرد اور منافق عورتیں ایمان لانے والوں سے کہیں گے ذرا ہمارا انتظار کرو تاکہ ہم تمہارے نور سے کچھ فائدہ اٹھائیں ان سے کہا جائے گا کہ پیچھے کو لوٹ جاؤ اور (اپنے لئے کوئی اور) نور تلاش کرو پھر ان کے درمیان ایک دیوار کھڑی کر دی جائے گی جس میں ایک دروازہ ہوگا. دروازے کے اندرونی جانب (جو ایمان والوں کی قیام گاہ ہے اللہ کی) رحمت ہوگی. اور اس کے باہر کی طرف عذاب ہوگا (یہ منافقوں کی قیام گاہ ہوگی) (۱۳)

तो कपटि लोग आस्तिकों से कहेंगे कि क्या हम दुनिया में तुम्हारे साथ न थे वह कहेंगे क्यों नही थे परन्तु तुम ने स्वयं अपने लिए कष्ट में डाला और (हमारे विषय में दुर्घटनाओं के) प्रतीक्षक रहे और (इस्लाम में) भ्रम किया और व्यर्थ कामनाओं ने तुमको धोका दिया, यहां तक कि ईश्वर का आदेश आ पहुचां और ईश्वर के विषय में तुम से शैतान विश्वास घात करता रहा (14)

تو منافق لوگ مومنوں سے کہیں گے کہ کیا ہم دنیا میں تمہارے ساتھ نہ تھے وہ کہیں گے کیوں نہیں تھے. لیکن تم نے خود اپنے تئیں بلا میں ڈالا اور (ہمارے حق میں حوادث کے) منتظر رہے اور (اسلام میں) شک کیا اور غلط آرزوؤں نے تم کو دھوکا دیا. یہاں تک کہ اللہ کا حکم آ پہنچا اور اللہ کے بارے میں تم کو شیطان دغا دیتا رہا (۱۴)

अतः (ऐ कपटियो!) आज (कष्ट से छुटकारा पाने के लिए) न तो तुम से प्राण मूल्य स्वीकार किया जाएगा और न उन लोगों से जिन्होंने नास्तिकता का मार्ग ग्रहण किया तुम सबका स्थान नर्क है वही तुम्हारा मित्र है और वह बुरा स्थान है (15)

لہٰذا (اے منافقو!) آج (عذاب سے چھٹکارا پانے کے لئے) نہ تو تم سے فدیہ قبول کیا جائے گا اور نہ ان لوگوں سے جنہوں نے کفر کی راہ اختیار کی تم سب کا ٹھکانا جہنم ہے وہی تمہارا رفیق ہے اور وہ بری جگہ ہے (۱۵)

क्या मुसलमानों के लिए अभी तक वह समय नही आया कि ईश्वर के जप कुरआन से जो अवतरित किया गया है सत्य के साथ सुनकर उनके हृदय पिघल जाएं? और वह उन लोगों की भांति न हो जाएं जिन्हें उनसे पहले पुस्तक दी गई थी फिर उन पर एक लम्बा समय व्यतीत हो गया और (शनैः शनैः) उनके हृदय कठोर हो गए और (अब उनकी दशा यह है कि) उनमें से अधिकांश दुराचारी है (16)

کیا مسلمانوں کے لئے ابھی تک وقت نہیں آیا کہ اللہ کے ذکر قرآن سے جو نازل کیا گیا ہے حق کے ساتھ سن کر ان کے دل پگھل جائیں؟ اور وہ ان لوگوں کی طرح نہ ہو جائیں. جنہیں ان سے پہلے کتاب دی گئی تھی. پھر ان پر ایک لمبی مدت گزر گئی اور (رفتہ رفتہ) ان کے دل سخت ہو گئے اور (اب ان کا حال یہ ہے کہ) اُن میں سے اکثر فاسق ہیں (۱۶)

(ऐ मुहम्मद स0 उनसे कहो) कि वह जान लें कि ईश्वर ही पृथ्वी को उसकी मृत्यू के बाद (पानी बरसा कर) जीवन देता है (और यह हरित हो जाती है इसी प्रकार मृतक जातियों को अपनी पुस्तक से जीवित करता है) हमने अपनी स्मृतियां तुम्हारे पास खोल कर वर्णन कर दी ताकि बुद्धि से काम लो (17)

(اے محمدؐ ان سے کہو) کہ وہ جان لیں کہ اللہ ہی زمین کو اس کی موت کے بعد (پانی برسا کر) زندگی دیتا ہے (اور وہ سرسبز ہو جاتی ہے اسی طرح مردہ قوموں کو اپنی کتاب سے زندہ کرتا ہے) ہم نے اپنی نشانیاں تمہارے پاس کھول کر بیان کر دیں تاکہ عقل سے کام لو (۱۷)

निःसंदेह दान देने वाले पुरूष और दान देने वाली स्त्रीयां और जिन लोगों ने ईश्वर को (निर्मल हृदय से) अच्छा ऋण दिया (उनको उनके ऋण का) दो चन्द (अर्थात बढ़ाकर) चुकता किया जाएगा और (उसके अतिरिक्त) सम्मान का बदला मिलेगा (18)

بے شک صدقات دینے والے مرد اور صدقات دینے والی عورتیں اور جن لوگوں نے اللہ کو (خلوص دل سے) قرض حسنہ دیا ان کو (ان کو ان کے قرض حسنہ کا) دوچند (یعنی بڑھا کر) ادا کیا جائے گا اور (اس کے علاوہ) عزت کا اجر ملے گا (۱۸)

और जो लोग ईश्वर और उसके रसूल पर विश्वास लाए वही अपने ईश्वर के निकट सच्चे (ईशदूतों की पुष्टि करने वाले) और साक्षी (अर्थात सत्य की साक्ष्य देने वाले) है उनके कर्मों का प्रतिफल और उनके (श्रद्धा का) प्रकाश है परन्तु जिन लोगों ने

اور جو لوگ اللہ اور اس کے رسول پر ایمان لائے وہی اپنے رب کے نزدیک صدیق (رسولوں کی تصدیق کرنے والے) اور شہید (یعنی حق کی گواہی دینے والے) ہیں ان کے لئے ان کے اعمال کا صلہ اور ان کے (ایمان کی)

روشنی ہے۔لیکن جن لوگوں نے کفر کی راہ اختیار کی اور ہماری آیتوں کو جھٹلایا وہ دوزخی ہیں(۱۹)[۴:۶۹]

कुफ्र का मार्ग ग्रहण किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह नर्की हैं (19) {4:69}

خوب جان لو کہ یہ دنیا کی زندگی اس کے سوا کچھ نہیں کہ ایک کھیل اور دل لگی اور ظاہری ٹیپ ٹاپ اور تمہارا آپس میں ایک دوسرے پر فخر جتانا اور مال واولاد میں ایک دوسرے سے بڑھ جانے کی کوشش کرنا ہے اس کی مثال ایسی ہے جیسے بارش ہوگئی تو اس سے پیدا ہونے والی نباتات کو دیکھ کر کاشت کار خوش ہو گئے پھر وہ کھیتی پک کر تیار ہو جاتی ہے اور تم دیکھتے ہو زرد پڑ جاتی ہے اور بھس ہو کر رہ جاتی ہے۔اور آخرت میں (کافروں کے لئے) سخت عذاب ہے اور (ایمان والوں کے لئے) اللہ کی طرف سے بخشش اور خوشنودی ہے اور دنیا کی زندگی دھوکے کی ٹٹی کے سوا کچھ نہیں(۲۰)

अच्छी प्रकार जान लो कि यह दुनिया का जीवन इसके सिवा कुछ नही कि एक खेल और दिल लगी और प्रकट टीप टाप और तुम्हारा आपस में एक दूसरे पर गर्व जताना और माल व सन्तान में एक दूसरे से बढ़ जाने का प्रयत्न करना है इसकी उपमा ऐसी है जैसे वर्षा हो गई तो उससे उत्पन्न होने वाली वनस्पति को देखकर कृषक प्रसन्न हो गए फिर वह खेती पक कर तैयार हो जाती है और तुम देखते हो पीली पड़ जाती है और भुस होकर रह जाती है और परलोक में (नास्तिकों के लिए) कठोर कष्ट है और (आस्तिकों के लिए) ईश्वर की ओर से क्षमा और प्रसन्नता है और दुनिया का जीवन धोके की टट्टी के सिवा कुछ नही (20)

(لوگو!) اپنے رب کی بخشش اور اس جنت کو حاصل کرنے کے لئے ایک دوسرے سے آگے بڑھنے کی کوشش کرو جس کی وسعت آسمانوں اور زمین جیسی ہے اور جو ان لوگوں کے لئے تیار ملے گی ان کو جو اللہ پر اور اس کے رسولوں پر ایمان رکھتے ہیں یہ اللہ کا فضل ہے وہ جسے چاہتا ہے انسان کے عمل پر مرحمت فرماتا ہے اور اللہ بڑا فضل والا ہے(۲۱)[۲۱:۱۰۱]

(लोगो!) अपने ईश्वर की क्षमा और उस स्वर्ग को प्राप्त करने के लिए एक दूसरे से आगे बढ़ने का प्रयास करो जिसका विस्तार आकाशों और पृथ्वी जैसा है और जो उन लोगों के लिए तैयार मिलेगी उनको जो ईश्वर पर और उसके रसूलों पर विश्वास रखते हैं, यह ईश्वर का कृपा दया है वह जिसे चाहता है इन्सान के कर्म पर प्रदान करता है और ईश्वर बड़ा कृपा दया वाला है (21) {21:101}

دنیا میں اور خود تمہاری جان پر کوئی ایسی مصیبت نہیں آتی جسے ہم نے اس کو ظاہر کرنے سے پہلے ایک کتاب (یعنی نوشتہ تقدیر) میں لکھ نہ رکھا ہو ایسا کرنا اللہ کے لئے بہت آسان کام ہے(۲۲)

दुनिया में और स्वयं तुम्हारी जान पर कोई कष्ट नही आता जिसे हमने उसको प्रकट करने से पहले एक पुस्तक (अर्थात भाग्य की पुस्तक) में लिख न रखा हो, ऐसा करना ईश्वर के लिए बहुत सरल कार्य है (22)

(اور یہ بات اس لئے بتائی گئی ہے) تاکہ جب تمہیں کوئی نقصان پہنچ جائے تو افسوس نہ کرو۔اور جو کچھ اللہ تمہیں دے اس سے اترا نہ جاؤ اور (یاد رکھو) اللہ اترانے والوں اور فخر کرنے والوں کو دوست نہیں رکھتا (جو کام اللہ کے قانون کے مطابق ہوگا اس میں فائدہ ہوگا اور جو اس کے قانون کے خلاف کیا جائے گا اس میں نقصان ہوگا۔ چاہے وہ دنیا کا ہو یا آخرت کا اس لئے نفع نقصان پر خوشی اور افسوس کرنے کے بجائے یہ غور کرو کہ ہم سے کوئی اللہ کے قانون کی خلاف ورزی تو نہ ہوگئی ہے جو تقدیر ہے اس کے خلاف تو نہ ہو گیا)(۲۳)

(और यह बात इसलिए बताई गई है) ताकि जब तुम्हें कोई हानि पहुंच जाए तो खेद न करो और जो कुछ ईश्वर तुम्हें दे उससे इतरा न जाओ और (याद रखो) ईश्वर इतराने वालों और गर्व करने वालों को मित्र नही रखता (जो कार्य ईश्वर के नियमानुसार होगा उसमें लाभ मिलेगा और जो उसके नियम के विपरीत किया जाएगा उसमें हानि होगी, चाहे वह दुनिया का हो या परलोक का इसलिए हानि लाभ पर दुख और हर्ष करने के स्थान पर यह विचार करो कि हम से कोई ईश्वर के नियम का विरोध तो न हो गया है जो भाग्य है उसके विपरीत तो न हो गया) (23)

(ایسے وہ لوگ ہیں) جو خود بھی بخل کرتے ہیں اور دوسروں کو بھی بخل پر اکساتے ہیں (اب بھی) اگر کوئی شخص اللہ کے حکم سے روگردانی کرتا ہے تو خود اپنا ہی نقصان کرتا ہے تو اللہ کو اس کی پروا نہیں اور وہی حمد و ثنا کے لائق ہے(۲۴)

(ऐसे वह लोग हैं) जो स्वयं भी कृपणता करते हैं और दूसरों को भी कृपणता पर उकसाते हैं (अब भी) यदि कोई व्यक्ति ईश्वर के आदेश से मुख फैरता है तो स्वयं अपनी ही हानि करता है तो ईश्वर को उसकी चिन्ता नही और वही प्रशंसा व सराहना के योग्य है (24)

یہ حقیقت ہے کہ ہم نے اپنے رسولوں کو کھلی (اور واضح) نشانیاں دے کر بھیجا اور ان کے ساتھ کتاب جو میزان (عدل) ہے نازل کیا تاکہ لوگ انصاف پر قائم رہیں۔اور لوہا پیدا کیا اس میں (اسلحہ جنگ کے لحاظ سے) سخت خطرہ ہے اور لوگوں کے لئے فائدے بھی ہیں اور (خطرناک

यह वास्तविकता है कि हमने अपने रसूलों को खुले (और स्पष्ट) चिन्ह देकर भेजा और उनके साथ पुस्तक जो तुला (न्याय) है अवतरित किया ताकि लोग न्याय पर स्थिर रहें और लोहा पैदा किया उसमें (युद्ध के अस्त्र शस्त्र की दृष्टि से) अधिक भय है और लोगों के लिए लाभ भी है और

ہتھیار پیدا کرنے کا مقصد یہ بھی ہے کہ) تاکہ ظاہر کرے اللہ کہ کون اس کو دیکھے بغیر (ان ہتھیاروں سے) اس کی اور اس کے رسول کی مدد کرتا ہے یقیناً اللہ بڑی قدرت والا ہے اور سب پر غالب ہے(۲۵)

(आशंका पूर्ण हथियार उत्पन्न करने का उद्देश्य यह भी है कि) ताकि प्रकट करे ईश्वर कि कौन उसको बिना देखे (इन शस्त्रों से) उसकी और उसके ईशदूत की सहायता करता है निःसन्देह ईश्वर बड़ी शक्ति वाला है और सब पर अधिपति है (25)

اور یہ حقیقت ہے کہ ہم نے نوح اور ابراہیم کو (اپنے بندوں کی طرف) بھیجا اور اُن دونوں کی نسل میں نبوت اور کتاب (کے سلسلہ) کو جاری رکھا تو (ان کی اولاد میں) بعض تو سیدھے رستے پر رہے لیکن اکثر فاسق ہو گئے(۲۶)[۲:۱۲۴؛ ۲۱:۷۳؛ ۲۹:۲۷]

और यह सत्य है कि हमने नूह और इब्राहीम को (अपने बन्दों की ओर) भेजा और उन दोनों के वंश में ईशदौत्य और पुस्तक (के क्रम) को जारी रखा तो (उनकी सन्तान में) कतिपय तो सीधे मार्ग पर रहे) परन्तु अधिक दुराचारी हो गए (26) {2:124; 21:73;29:27}

پھر ان کے بعد انہی کے نقش قدم پر (بہت سے) رسول بھیجے ان کے پیچھے مریم کے بیٹے عیسیٰ کو بھیجا اور اسے انجیل عطا کی اور جن لوگوں نے اس کی پیروی کی ان کے دلوں میں محبت اور مہربانی ڈال دی اور رہبانیت (لذات سے کنارہ کشی خوف الٰہی کا عجیب طریقہ) انہوں نے خود اپنی طرف سے ایجاد کر لی۔ ہم نے ان کو اس کا حکم نہیں دیا تھا انہوں نے اللہ کی رضا حاصل کرنے کے لئے یہ بدعت نکالی تو لیکن جیسا اسے نباہنا چاہتے تھے نباہ نہ سکے۔ پھر بھی ان میں جو ایمان دار تھے (اس بدعت سے بچے ہوئے تھے) ہم نے ان کو ان کا پورا اجر دیا لیکن ان میں سے اکثر فاسق ہیں(۲۷)

फिर उनके बाद उन्ही के पद चिन्हों पर (बहुत से) ईशदूत भेजे उनके पीछे मरयम के पुत्र ईसा को भेजा और उसे इन्जील प्रदान की और जिन लोगों ने उसका अनुकरण किया उनके हृदयों में स्नेह और कृपा डाल दी और सन्यास (स्वादों से पृथकता ईश्वर के भय का विचित्र ढंग) उन्होंने स्वयं अपनी ओर से आविष्कार कर लिया हमने उनको उसका आदेश नही दिया था, उन्होंने ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त करने के लिए यह नई बात निकाली तो परन्तु जैसा उसे निबाहना चाहते थे निबाह न सके, फिर भी उनमें जो विश्वास वाले थे (उस अनुचित कर्म से बचे हुए थे) हमने उनको उनका पूरा फल दिया परन्तु उनमें अधिकांश दुराचारी है (27)

(ان سے کہو) مومنو! اللہ (کی نافرمانی کرنے) سے ڈرو۔ اور اس کے رسول پر ایمان لاؤ اللہ تمہیں اپنی رحمت سے دوگنا اجر دے گا۔ اور تمہیں (ایمان کا) نور عطا کرے گا جس کی روشنی میں چلو گے اور تمہارے قصور معاف کر دے گا۔ اور اللہ بخشنے والا مہربان ہے(۲۸)[قدر ۹۷]

(उनसे कहो) आस्तिको! ईश्वर (की अवज्ञा) से डरो और उसके ईशदूत पर विश्वास लाओ ईश्वर तुम्हें अपनी अनुकम्पा से दो गुना फल देगा और तुम्हें (धर्म का) प्रकाश प्रदान करेगा जिसके प्रकाश में चलोगे और तुम्हारी त्रुटियों को क्षमा कर देगा और ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (28) {कदर 97}

(اے مومنو!) یہ باتیں اس لئے (بیان کی گئی ہیں) کہ اہل کتاب جان لیں کہ اللہ کے فضل پر کچھ انہیں کا اجارہ نہیں ہے اور اللہ کا فضل خود اس کے اپنے ہاتھ میں ہے وہ جسے اہل سمجھتا ہے دیتا ہے اور اللہ بڑے فضل کا مالک ہے(۲۹)

(ऐ आस्तिको!) यह बातें इसलिए (वर्णन की गई हैं) कि पुस्तक वाले जान लें कि ईश्वर के कृपा दया पर कुछ उनका स्वत्व नही है और ईश्वर का कृपा दया स्वयं उसके अपने हाथ में है वह जिसे योग्य समझता है देता है और ईश्वर बड़े कृपा दया का स्वामी है (29)

پارہ(۲۸) سمع اللہ

سورۃ المجادلہ۔ مدنی(۵۸)

सूरतुल मुजादिला - मदनी (58)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اللہ نے سن لی اس عورت کی بات جو اپنے شوہر کے معاملہ میں آپ سے بات کر رہی ہے اور اللہ سے فریاد کر رہی ہے اللہ تم دونوں کی گفتگو سن رہا ہے بے شک اللہ سننے والا اور دیکھنے والا ہے(۱)

ईश्वर ने सुन ली उस स्त्री की बात जो अपने पति के विषय में आपसे बात कर रही है और ईश्वर से याचना कर रही है ईश्वर तुम दोनों की बातें सुन रहा है निःसन्देह ईश्वर सुनने वाला और देखने वाला है (1)

تو سنو! تم میں سے جو لوگ اپنی بیویوں سے ظہار کریں گے (یعنی) ماں کہہ دیتے ہیں تو اس سے ان کی بیویاں مائیں نہیں ہو جاتیں۔ ان کی مائیں تو وہی ہیں جنہوں نے ان کو جنا ہے وہ لوگ ایک سخت ناپسندیدہ اور جھوٹی بات کہتے ہیں اور حقیقت میں اللہ بڑا معاف کرنے والا اور درگزر کرنے والا ہے(۲)

तो सुनो! तुम में से जो लोग अपनी पत्नीयों से जिहार करेंगे (अर्थात) माता कह देते है तो इससे उनकी पत्नीयां माता नही हो जाती उनकी माताएं तो वही है जिन्होंने उनको जना है वह लोग एक कठोर अप्रिय और झूठी बात कहते है और वास्तव में ईश्वर बड़ा क्षमा करने वाला है (2)

نوٹ: تفسیر مودودی صاحب اور جملہ عالموں کی یہ آیات ایک خاتون خولہ کے

नोट- टीका मोदूदी साहब और सब आलिमों की, यह आयात एक स्त्री

खोलो के विषय में अवतरित हुई थी जिनसे उनके पति ने जिहार किया था और वह मुहम्मद स0 के पास पूछने आई थी कि इस्लाम में इसका क्या आदेश है, उस समय चूंकि ईश्वर की ओर से इस विषय में कोई आदेश नही आया था अतः मुहम्मद स0 ने कहा कि मेरा विचार है कि तुम अपने पति पर अवैध हो गई हो, इस पर वह याचना करने लगी कि मेरा और मेरे बच्चों का जीवन नष्ट हो जाएगा दूसरी दशा में जबकि वह रो रोकर मुहम्मद स0 से प्रार्थना कर रही थी कि कोई स्थिति ऐसी बताईये जिससे मेरा घर बिगड़ने से बच जाए तब ईश्वर की ओर से "वही" अवतरित हुई और इस प्रसंग का आदेश वर्णन किया गया, यह रही टीका इसमें अंकित है कि मुहम्मद स0 ने कहा कि मेरा विचार है कि तुम अपने पति पर वर्जित हो गई हो, आलिम लोग स्वयं ही स्वीकार करते है कि मुहम्मद स0 जो बोलते है वह वही से बोलते हैं तो क्या यह "वही" है? (ईश्वरीय संकेत है)

ईश्वर का आदेश तो यह है कि ऐ मुहम्मद स0 तुम मछली वाली की भांति जल्दी न करना जब ईश्वर का आदेश आ जाए तब कुछ करना कहना तो क्या इन बातों में मतभेद नही हो रहा? जबकि इस सूरत से पहले सूरत एहजाब में इस विषय का उत्तर है (33:4) न उसने तुम लोगों की उन पत्नियों को जिनसे तुम जिहार करते हो तुम्हारी माता बनाया और इस सूरत मुजादिला की आगे वाली आयत को भी देख लिया जाए क्या है, ऐसा तो नही कि आगे वाली आयात के अवतरित होने में विराम हो ऐसा भी प्रतीत नही होता,

जो लोग अपनी पत्नीयों को माता कह दें फिर अपने कथन से प्रत्यागमन कर लें तो मैथुन करने से पहले उनको एक दास स्वतंत्र करना होगा, आस्तिकों इस आदेश से तुम्हें उपदेश दिया जाता है (कि भविष्य में पत्नीयों को माता न कहना) और जो कुछ तुम करते हो ईश्वर को सबकी सूचना है (3)

और जिसके पास दास न हो तो उससे पहले कि एक दूसरे को हाथ लगाऐं वह दो माह के लगातार व्रत रखे और इस पर भी वश न रखता हो तो वह साठ निर्धनों को खाना खिलाए यह आदेश इसलिए दिया जा रहा है कि तुम ईश्वर और उसके रसूल पर विश्वास लाओ (और उसके आज्ञाकारी रहो) और यह ईश्वर की सीमाऐं हैं और न मानने वालों के लिए दुख देने वाला कष्ट है (4)

जो लोग ईश्वर और उसके रसूल के (आदेश का) विरोध करेंगे वह (इस प्रकार) अपमानित किए जाऐंगे जिस प्रकार इनसे पहले लोग अपमानित किए जा चुके हैं (अब जबकि) हमने स्पष्ट और खुले आदेश अवतरित कर दिए हैं (तो कोई कारण नही कि तुम उनका विरोध करो) वह सब अवज्ञा करने वालों के लिए अपमान का कष्ट है (5)

(और यह कष्ट) उस दिन होगा जब ईश्वर उन सबको उठाएगा तो जो कार्य वह करते रहे उनको जताएगा ईश्वर को वह सब कर्म याद है और वह उनको भूल गए हैं और ईश्वर हर वस्तु से जानकार है (6)

नोट- सूरत मुजादिला और अहजाब की आयात पढ़ने के बाद यह जानकारी हो जाती है कि जिहार के विषय में ईश्वर ने जानकारी समय से पहले और समय पर दे दी वह यह कि सूरत अहजाब में बता दिया कि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी को माता कह दे तो वह माता नही हो जाती उनकी माताऐं वह हैं जिन्होंने उनको जना है यह सूरत अहजाब पहले अवतरित हुई है और फिर जब एक स्त्री ने मुहम्मद स0 को

معاملہ میں نازل ہوئی تھیں جن سے ان کے شوہر نے ظہار کیا تھا اور وہ محمدؐ کے پاس پوچھنے آئی تھی کہ اسلام میں اس کا کیا حکم ہے اس وقت چونکہ اللہ کی طرف سے اس معاملہ میں کوئی حکم نہیں آیا تھا اس لئے حضورؐ نے فرمایا کہ میرا خیال ہے کہ تم اپنے شوہر پر حرام ہوگئی ہو۔ اس پر وہ فریاد کرنے لگیں کہ میری اور میرے بچوں کی زندگی تباہ ہوجائے گی اسی حالت میں جب کہ وہ رو رو کر حضورؐ سے عرض کررہی تھیں کہ کوئی صورت ایسی بتائے جس سے میرا گھر بگڑنے سے بچ جائے۔ تب اللہ کی طرف سے وحی نازل ہوئی اور اس مسئلے کا حکم بیان کیا گیا۔ یہ رہی تفسیر اس میں درج ہے کہ محمدؐ نے کہا کہ میرا خیال ہے کہ تم اپنے شوہر پر حرام ہوگئی ہو۔ عالم لوگ خود ہی تسلیم کرتے ہیں کہ محمدؐ جو بولتے ہیں وہ وحی سے بولتے ہیں تو کیا یہ وحی ہے؟ اللہ کا حکم تو یہ ہے کہ اے محمد تم مچھلی والے کی طرح جلدی نہ کرنا جب اللہ کا حکم آجائے تب کچھ کرنا کہنا تو کیا ان باتوں میں اختلاف نہیں ہورہا؟ جب کہ اس سورت سے پہلے سورت احزاب میں اس مسئلے کا جواب ہے (۳۳:۴) نہ اس نے تم لوگوں کی ان بیویوں کو جن سے تم ظہار کرتے ہو تمہاری ماں بنایا اور اس سورت مجادلہ کی آگے والی آیات کو بھی دیکھ لیا جائے کیا ہے ایسا تو نہیں کہ آگے والی آیات کے نازل ہونے میں وقفہ ہوا ایسا بھی نظر نہیں آتا۔

جو لوگ اپنی بیویوں کو ماں کہہ دیں پھر اپنے اس قول سے رجوع کرلیں تو ہم بستر ہونے سے پہلے ان کو ایک غلام آزاد کرنا ہوگا۔ مسلمانوں اس حکم سے تمہیں نصیحت کی جاتی ہے (کہ آئندہ بیوی کو ماں نہ کہنا) اور جو کچھ تم کرتے ہو اللہ کو سب کی خبر ہے (۳)

اور جس کے پاس غلام نہ ہو تو اس سے پہلے کہ ایک دوسرے کو ہاتھ لگائیں وہ دو مہینے کے لگاتار روزے رکھے اور جو اس پر بھی قادر نہ ہو تو وہ ساٹھ مسکینوں کو کھانا کھلائے یہ حکم اس لئے دیا جارہا ہے کہ تم اللہ اور اس کے رسول پر ایمان لاؤ (اور اس کے فرمانبردار رہو) اور یہ اللہ کی حدیں ہیں اور نہ ماننے والوں کے لئے درد دینے والا عذاب ہے (۴)

جو لوگ اللہ اور اس کے رسول کے (احکام کی) مخالفت کریں گے وہ (اس طرح) ذلیل کئے جائیں گے جس طرح ان سے پہلے لوگ ذلیل کئے جاچکے ہیں (اب جب کہ) ہم نے صاف اور صریح احکام نازل کردئے ہیں (تو کوئی وجہ نہیں کہ تم ان کی مخالفت کرو۔ یاد رکھو نافرمانوں کے لئے ذلت کا عذاب ہے (۵)

(اور یہ عذاب) اس روز ہوگا جب اللہ ان سب کو اٹھائے گا تو جو کام وہ کرتے رہے ان کو جتائے گا اللہ کو وہ سب کام یاد ہیں اور وہ ان کو بھول گئے ہیں اور اللہ ہر چیز سے واقف ہے (۶)

نوٹ:۔ سورت مجادلہ اور احزاب کی آیات پڑھنے کے بعد یہ علم ہوجاتا ہے کہ ظہار کے بارے میں اللہ نے علم وقت سے پہلے اور وقت پر دے دیا وہ یہ کہ سورت احزاب میں بتادیا کہ کوئی آدمی اپنی بیوی کو ماں کہہ دے تو وہ ماں نہیں ہوجاتی ان کی مائیں وہ ہیں جنہوں نے ان کو جنا ہے یہ سورت احزاب پہلے نازل ہوئی ہے اور پھر جب ایک عورت نے محمدؐ کو اپنا معاملہ آکر بتایا تو اللہ نے فوراً ہی کہا کہ ہم ن

अपना प्रसंग आकर बतायातो ईश्वर ने तुरन्त ही कहा कि हम सुन रहे हैं तो ऐ मुहम्मद स0 इस समस्या का समाधान यह है जो इन आयात में अंकित है और जानकारी तो सूरत अहजाब में मिल ही चुकी है और कुरआन में कही भी अंकित नही कि मुहम्मद स0 ने उससे वह कहाजो तफ़सीर में लिखा गया है,

रہے ہیں تو اے محمد اس مسئلہ کا حل یہ ہے جو ان آیات میں درج ہے اور جان کاری تو سورت احزاب میں مل ہی گئی ہے۔ اور قرآن میں کہیں بھی درج نہیں کہ محمدؐ نے اس سے وہ کہا جو تفاسیر میں لکھا گیا ہے۔

ईश्वर ने मुहम्मद स0 से कहा कि तुम जल्दी न करना कुरआन साक्ष्य दे रहा है कि मुहम्मद स0 का हर व्यवहार कथन कुरआन के अनुसार था जो वही आती थी उस पर व्यवहार था फिर मुहम्मद कैसे कह देते कि मेरा विचार है कि तू अपने पति पर वर्जित हो गई अपने विचार की तो बात ही नही थी बात तो वही की है अतः नबी ने ऐसा विचार प्रकट नही किया आपने ईश्वर के आदेश के अनुसार समाधान बता दिया जो इस विषय में पश्चाताप की विधि है और बस अतः आलिमों को अपने लिखे पर विचार करना चाहिए

اللہ نے تو محمدؐ سے کہا ہے کہ تم جلدی نہ کرنا قرآن شہادت دے رہا ہے کہ محمدؐ کا ہر عمل وقول قرآن کے مطابق تھا جو وحی آتی تھی اس پر عمل تھا محمدؐ کیسے کہہ دیتے کہ میرا خیال ہے کہ تو اپنے شوہر پر حرام ہوگئی۔ اپنے خیال کی تو بات ہی نہیں تھی بات تو وحی کی ہے اس لئے نبی نے ایسا خیال ظاہر نہیں کیا آپ نے اللہ کے حکم کے مطابق حل بتا دیا جو اس مسئلہ میں رجوع کا طریقہ ہے اور بس۔ اس لئے عالموں کو اپنے لکھے پر غور کرنا چاہیے۔

(आप कह दो) क्या तुमने देखा नही कि जो कुछ आकाशों में है और जो कुछ पृथ्वी में है ईश्वर को ज्ञात है कभी ऐसा नहीं होता कि तीन व्यक्ति आपस में गुप्त वार्ता करें और चौथा ईश्वर न हो या पांच व्यक्तियों में गुप्त वार्ता हो और उनके मध्य छठा ईश्वर न हो गुप्त वार्ता करने वाले चाहे उससे कम हो या अधिक जहां कही भी वह हो ईश्वर उनके साथ होता है फिर क्यामत के दिन वह उनको बता देगा कि उन्होंने क्या कुछ किया है ईश्वर हर वस्तु का ज्ञान रखता है (7)

(آپ کہہ دو) کیا تم نے دیکھا نہیں کہ جو کچھ آسمانوں میں ہے اور جو کچھ زمین میں ہے اللہ کو معلوم ہے۔ کبھی ایسا نہیں ہوتا کہ تین آدمی آپس میں سرگوشی کریں اور چوتھا اللہ نہ ہو یا پانچ آدمیوں میں سرگوشی ہو اور ان کے اندر چھٹا اللہ نہ ہو۔ خفیہ بات کرنے والے خواہ اس سے کم ہوں یا زیادہ جہاں کہیں بھی وہ ہوں اللہ ان کے ساتھ ہوتا ہے۔ پھر قیامت کے روز وہ ان کو بتا دے گا کہ انہوں نے کیا کچھ کیا ہے اللہ ہر چیز کا علم رکھتا ہے(۷)

(ज्ञात करो) क्या तुमने उन लोगों को नही देखा जिन्हें गुप्त वार्ता करने से मना किया गया कि जिस कार्य से उन्हें रोका गया है वही करने लगे वह लोग छुप छुपकर आपस में पाप, अत्याचार और रसूल की अवज्ञा की बातें करते हैं और जब तुम्हारे पास आते हैं तो आपको उस विधि से आशीर्वाद देते हैं जिस रीति से ईश्वर ने आपको आशीर्वाद नही दिया और अपने जीयों में कहते हैं कि हमारी इन बातों पर ईश्वर हमें यातना क्यों नहीं देता (ऐ रसूल) उन्हें नर्क का दण्ड काफी है वह उसमें जलते रहेंगे और वह बहुत ही बुरा स्थान है (8)

(معلوم کرو) کیا تم نے ان لوگوں کو نہیں دیکھا جنہیں سرگوشیاں کرنے سے منع کیا گیا تھا۔ پھر جس کام سے انہیں منع کیا گیا ہے وہی کرنے لگے۔ وہ لوگ چھپ چھپ کر آپس میں گناہ اور ظلم اور رسول کی نافرمانی کی باتیں کرتے ہیں اور جب تمہارے پاس آتے ہیں تو آپ کو اس طریقہ پر دعا دیتے ہیں جس طریقے سے اللہ نے آپ کو دعا نہیں دی اور اپنے دلوں میں کہتے ہیں کہ ہماری ان باتوں پر اللہ ہمیں عذاب کیوں نہیں دیتا (اے رسول) انہیں دوزخ کی سزا کافی ہے وہ اس میں جلتے رہیں گے اور وہ بہت ہی بُری جگہ ہے(۸)

ऐ आस्तिकों! जब तुम आपस में गुप्त वार्ता करने लगो तो पाप और अत्याचार और ईशदूत की अवज्ञा की बाते न करना अपितु संयम उपकारीता की बाते करना और ईश्वर से जिसके सामने एकत्र किए जाओगे डरते रहना (9)

اے مومنو! جب تم آپس میں سرگوشیاں کرنے لگو تو گناہ اور زیادتی اور رسول کی نافرمانی کی باتیں نہ کرنا بلکہ نیکوکاری اور پرہیزگاری کی باتیں کرنا۔ اور اللہ سے جس کے سامنے جمع کئے جاؤ گے ڈرتے رہنا(۹)

काना फूसी (कोई अच्छी बात नही है यह शत्रुओं की) एक शैतानी गति है ताकि मुसलमानों का हृदय दुखे, यद्यपि जब तक ईश्वर का आदेश न हो किसी की काना फूसीह उन्हें हानी नही पहुंचा सकती और मुसलमानों को हर दशा में ईश्वर पर ही भरोसा रखना चाहिए (10)

کانا پھوسی (کوئی اچھی بات نہیں ہے یہ (دشمنوں کی) ایک شیطانی حرکت ہے تاکہ مسلمانوں کی دل آزاری ہو۔ حالانکہ جب تک اللہ کا حکم نہ ہو کسی کی کانا پھوسی انہیں نقصان نہیں پہنچا سکتی اور مسلمانوں کو ہر حال میں اللہ پر ہی بھروسہ رکھنا چاہیے(۱۰)

आस्तिकों! जब तुम से कहा जाए कि सभा में खुल कर बेठो तो खुलकर बैठ करो ईश्वर तुम को विशालता देगा, और जब कहा जाए कि उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो, जो लोग तुममें से विश्वास लाए है और जिसको ज्ञान प्रदान किया गया है ईश्वर उनके पद उच्च करेगा और ईश्वर तुम्हारे सब

مومنو! جب تم سے کہا جائے کہ مجلس میں کھل کر بیٹھو تو کھل کر بیٹھا کرو اللہ تم کو کشادگی دے گا اور جب کہا جائے کہ اٹھ کھڑے ہو تو اٹھ کھڑے ہوا کرو۔ جو لوگ تم میں سے ایمان لائے ہیں اور جس کو علم عطا کیا گیا ہے اللہ ان کے درجے بلند کرے گا اور اللہ تمہارے سب کاموں سے

कर्मों से अवगत है (11)

ऐ लोगों! जो विश्वास लाए हो जब तुम ईशदूत से ऐकान्त में बात करो तो बात करने से पहले अपने हाथों से कुछ दान दो यह तुम्हारे लिए उत्तम और पवित्र है यदि तुम दान देने के लिए कुछ न पाओ तो ईश्वर क्षमा शील और कृपालु है (12) {4:114}

क्या तुम डर गए इस बात से कि एकान्त में बात करने से पहले तुम्हें दान देना हो? अच्छा यदि तुम ऐसा न कर सके अर्थात निर्धनता के कारण से तो ईश्वर ने तुमको क्षमा कर दिया तो नमाज स्थापित करो और पवित्रता और मंगल कल्याण का परामर्श देते रहो, और ईश्वर और उसके रसूल की आज्ञा पालन करते रहो तुम जो करते हो ईश्वर उससे अवगत है (13)

नोट- प्रचलित तफसीर यह दूसरा आदेश ऊपर के आदेश के थोड़े समय बाद ही अवतरित हो गया और उसने दान की अनिवार्यता को निरस्त कर दिया, इस बात में मत भेद है कि दान का यह आदेश कितनी देर रहा कतादा कहते हैं कि एक दिन से भी कम रहा फिर निरस्त कर दिया गया मकातिल बिन हय्यान कहते हैं दस दिन तक रहा यह अधिक से अधिक इस आदेश के जीवित रहने का समय है जो खायात में वर्णन हुआ है,

तफसीर से पता चलता है कि पहला आदेश निरस्त हो गया बाद वाला शेष है परन्तु क्या यह वास्तविक्ता है? वास्तविक्ता यह है कि ईश्वर के नियम बदला नही करते और न ही निरस्त होते हैं इस दस दिन के समय से लाभ उठा कर एक दल ने लिख दिया है कि दान देने के आदेश से सब डर गए और दस दिन तक सिवाए श्री अली के और कोई मुहम्मद स0 के पास ऐकान्त में न गया और मुहम्मद अकेले रहे परन्तु यह मिथ्या है सत्य यह है कि यह दान देने वाला आदेश और दूसरा आदेश आज भी शेष है और क्यामत तक रहेगा, अर्थात जमहूर के खिदमतगारों को यह राजे हकीकत समझा दो! परवानों के जलने से पहले खुद शमा को जलना पड़ता है,

अर्थ यह है कि जब कोई व्यक्ति मुहम्मद स0 के सामने कोई योजना ऐसी प्रस्तुत करने का संकल्प करें जो ऐकान्त में हो और जनता के भले के लिए हो तो उसमें धन का व्यय भी अवश्य होगा जिससे उसको पूरा किया जाएगा तो ऐसी स्थिति में सम्पन्न व्यक्ति पहले उस योजना के लिए दान दे और मुहम्मद या समय के नेता को लाभ वाली योजना बताए इसके अतिरिक्त बहुत व्यक्ति ऐसे होते हैं कि उनके पास दान देने को धन नही होता परन्तु बुद्धि होती है और ऐसी योजना होती है जिससे जनता को लाभ होते हैं यदि हर व्यक्ति पर दान अनिवार्य होता तो वह निर्धन व्यक्ति अपनी योजना प्रस्तुत करने से विवश रहता और उस मत से जो लाभ होने वाला है जनता उससे वंचित रहती तो ऐसी दशा के लिए ईश्वर ने दोनों आदेश दे दिए कि क्षमता वाला जब ऐकान्त में योजना बताए उसका आदेश यह है कि अपनी ओर से उस में व्यय करने को दान दे और जो निर्धन है उसके लिए दान माफ है परन्तु अपनी योजना अवश्य बताए

इन दोनों आदेशों को देखते हुए ईश्वर के लिए कार्य करना है यदि धनी है वह दान दे और निर्धन है वह न दे परन्तु इस न देनें के आदेश से धनी दान देने से न रूक जाए यदि वह रूकेगा तो पापी होगा ईश्वर तो मनों की स्थिति जानता है हां यह याद रहे कि मुहम्मद स0 की मृत्यू के बाद यह कार्य शासक के साथ होगा,

इस आयत में दान का एक अर्थ मंगल कल्याण और पवित्रता का परामर्श देना भी है अर्थात आयत में है कि ईश्वर ने क्षमा किया यह उस समय के लिए क्षमा है जब मत देने वाले पर दान देने के लिए धन न हो तो ईश्वर ने कहा है कि ऐसी स्थिति में नमाज

واقف ہے(۱۱)

اے لوگو! جوایمان لائے ہو جب تم رسول سے تخلیہ میں بات کروتو بات کرنے سے پہلے اپنے ہاتھوں سے پہلے کچھ دان دو یہ تمہارے لئے بہتر اور پاکیزہ تر ہے البتہ اگر تم صدقہ دینے کے لئے کچھ نہ پاؤ تو اللہ غفور ورحیم ہے(۱۲)[۴:۱۱۴]

کیا تم ڈر گئے اس بات سے کہ تخلیہ میں بات کرنے سے پہلے تمہیں صدقات دینے ہوں؟ اچھا اگر تم ایسا نہ کر سکے یعنی غربت کی وجہ سے تو اللہ نے تم کو معاف کر دیا تو نماز قائم کرو اور پاکیزگی خیر کا مشورہ دیتے رہو اور اللہ اور اس کے رسول کی اطاعت کرتے رہو تم جو کرتے ہو اللہ اس سے باخبر ہے(۱۳)

نوٹ:۔ رائج الوقت تفسیر، یہ دوسرا حکم اوپر کے حکم کے تھوڑی مدت بعد ہی نازل ہوگیا اور اس نے صدقہ کے وجوب کو منسوخ کر دیا۔ اس امر میں اختلاف ہے کہ صدقہ کا یہ حکم کتنی دیر رہا قتادہ کہتے ہیں کہ ایک دن سے بھی کم رہا پھر منسوخ کر دیا گیا۔ مقاتل بن حیان کہتے ہیں دس دن تک رہا یہ زیادہ سے زیادہ اس حکم کی بقا کی مدت ہے جو کئی روایت میں بیان ہوئی ہے۔

تفسیر سے پتہ چلتا ہے کہ پہلا حکم منسوخ ہوگیا بعد والا باقی ہے مگر کیا یہ حقیقت ہے؟ حقیقت یہ ہے کہ اللہ کے قانون بدلہ نہیں کرتے اور نہ ہی منسوخ ہوتے ہیں۔ اس دس دن کی مدت سے فائدہ اٹھا کر ایک گروہ نے لکھ دیا ہے کہ صدقہ دینے کے حکم سے سب ڈر گئے اور دس دن تک سوائے حضرت علی کے اور کوئی محمدؐ کے پاس تخلیہ میں نہ گیا اور اکیلے رہے۔ مگر یہ غلط ہے حقیقت یہ ہے کہ یہ صدقہ والا حکم اور دوسرا حکم آج بھی باقی ہے اور قیامت تک رہے گا یعنی جمہور کے خدمت گاروں کو یہ راز حقیقت سمجھا دو۔ پروانوں کے جلنے سے پہلے خود شمع کو جلنا پڑتا ہے۔

مطلب یہ ہے کہ جب کوئی آدمی محمدؐ کے سامنے کوئی تجویز ایسی پیش کرنے کا ارادہ کرے جو تخلیہ میں ہو اور عوام کے مفاد میں ہو تو اس میں رقم خرچ بھی ضرور ہوگی جس سے اس کو پورا کیا جائے گا تو ایسی حالت میں وسعت والا آدمی پہلے اس کام کے لئے صدقہ دے۔

اور محمدؐ یا امیر وقت کو فائدے والی اسکیم بتائے اس کے علاوہ بہت آدمی ایسے ہوتے ہیں کہ ان کے پاس صدقہ دینے کو رقم نہیں ہوتی مگر دماغ ہوتا ہے اور ایسی اسکیم ہوتی ہے جس سے عوام کو بہت فائدے ہوتے ہیں اگر ہر آدمی پر صدقہ لازم ہوتا تو وہ غریب آدمی اپنی رائے پیش کرنے سے مجبور رہتا اور اس رائے سے جو فائدہ ہونے والا ہے عوام اس سے محروم رہتے تو ایسی حالت کے لئے اللہ نے دونوں حکم دے دئے کہ صاحب وسعت جب تخلیہ میں اسکیم بتائے اس کا حکم یہ ہے کہ اپنی طرف سے اس میں خرچ کرنے کو صدقہ دے اور جو غریب ہے اس کے لئے صدقہ معاف ہے مگر اپنی اسکیم ضرور بتائے

ان دونوں حکموں کو دیکھتے ہوئے اللہ کے لئے کام کرنا ہے اگر مالدار ہے وہ صدقہ دے اور غریب ہے وہ نہ دے لیکن اس نہ دینے کے حکم سے مالدار صدقہ دینے سے نہ رک جائے اگر وہ رکے گا تو گنہگار ہوگا۔ اللہ تو دلوں کے حال جانتا ہے ہاں یہ یاد رہے کہ محمدؐ کی وفات کے بعد یہ کام امیر کے ساتھ ہوگا۔

اس آیت میں زکوٰۃ کا ایک مطلب خیر اور پاکیزگی کا مشورہ دینا بھی

ہے یعنی آیت میں معافی ہے جب مشورہ دینے والے پر صدقہ دینے کے لئے رقم نہ
ہو تو اللہ نے کہا ہے کہ ایسی حالت میں نماز قائم کرو اور زکوۃ یعنی پاکیزہ خیر کا مشورہ دو
اور اللہ اور رسول کی اطاعت کرو یہاں زکوۃ کا مطلب خیر کا مشورہ دینا آیا۔

स्थापित करो और जकात अर्थात पवित्र मंगल कल्याण का परामर्श दो और ईश्वर और ईशदूत की आज्ञा मानों यहां ज़कात का अर्थ मंगल परामर्श देना आया.

بھلا تم نے ان لوگوں کو نہیں دیکھا جو ایسوں سے دوستی کریں گے جن پر اللہ کا غضب ہوا وہ نہ تم میں ہیں نہ ان میں اور جان بوجھ کر جھوٹی باتوں پر قسمیں کھائیں گے (۱۴)
اللہ نے ان کے لئے سخت عذاب تیار کر رکھا ہے وہ جو کچھ کریں گے یقیناً برا ہے (۱۵)
انہوں نے اپنی قسموں کو ڈھال بنالیا ہے اور لوگوں کو اللہ کے رستے سے روک رہے ہیں سو ان کے لئے ذلت کا عذاب ہے (۱۶)
اللہ (کے عذاب) سے بچانے کے لئے نہ تو ان کے مال ہی کچھ کام آئیں گے نہ ان کی اولاد وہ دوزخی ہیں ہمیشہ دوزخ میں رہیں گے (۱۷)
جس دن اللہ ان سب کو (دوبارہ زندہ کرکے) اٹھائے گا وہ لوگ اللہ کے سامنے بھی اسی طرح قسمیں کھالیں گے جس طرح تمہارے سامنے کھاتے ہیں اور سمجھیں گے کہ ان کی بات بن گئی یقین کرو کہ وہ پرلے درجے کے جھوٹے ہیں (۱۸)
شیطان نے ان کو قابو میں کرلیا ہے اور اللہ کی کتاب ان کے دل سے بھلادی ہے وہ شیطان کا لشکر ہے اور سن رکھو کہ شیطان کا لشکر نقصان اٹھانے والا ہے (۱۹)
جو لوگ اللہ اور اس کے رسول کی مخالفت کرتے ہیں وہ نہایت ذلیل ہوں گے (۲۰)
اللہ تو (پہلے ہی) لکھ چکا ہے کہ میں اور میرے رسول غالب رہیں گے یقیناً اللہ طاقتور اور سب پر غالب ہے (۲۱)
جو لوگ اللہ پر اور روز قیامت پر ایمان رکھتے ہیں تم ان کو اللہ اور اس کے رسول کے دشمنوں سے کبھی دوستی کرتے ہوئے نہ دیکھو گے. چاہے وہ ان کے باپ یا بیٹے بھائی یا ان کے قریبی لوگ ہوں وہ وہ لوگ ہیں کہ اللہ نے ان کے دلوں میں ایمان کا نقش جما دیا ہے اور اپنی غیبی طاقت سے ان کی مدد کی ہے اور وہ ان کو باغات میں داخل کرے گا جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی وہ ان میں ہمیشہ رہیں گے اللہ ان سے راضی اور وہ اللہ سے خوش ہیں یقین رکھو کہ اللہ کا لشکر ہی فلاح پانے والا ہے (۲۲)

भला तुमने उन लोगों को नही देखा जो ऐसो से मित्रता करेंगे जिन पर ईश्वर का क्रोध हुआ वह न तुममें है न उनमें और जानबूझ कर झूटी बातों पर शपथ खाएंगे (14)
ईश्वर ने उनके लिए कठोर कष्ट तैयार कर रखा है वह जो कुछ करेंगे निःसंदेह बुरा है (15)
उन्होंने अपनी शपथों को ढाल बना लिया है और लोगों को ईश्वर के मार्ग से रोक रहें है सो उनके लिए अपमान का दण्ड है (16)
ईश्वर (के दण्ड) से बचाने के लिए न तो उनके माल ही कुछ काम आएंगे न उनकी सन्तान वह नर्की है सदैव नर्क में रहेंगे (17)
जिस दिन ईश्वर उन सबको (पुनः जीवित करके) उठाएगा वह लोग ईश्वर के सामने भी इसी प्रकार शपथे खाएंगे जिस प्रकार तुम्हारे सामने खाते है और समझेंगे कि उनकी बात बन गई विश्वास करो कि वह परले दरजे के झूटे है (18)
शैतान ने उनको वश में कर लिया है और ईश्वर की पुस्तक उनके ह्रदय से भुला दी है वह शैतान की सैना है सुन रखो कि शैतान की सैना हानी उठाने वाली है (19)
जो लोग ईश्वर और उसके ईशदूत का विरोध करते है वह अत्यन्त अपमानित होंगे (20)
ईश्वर तो (पहले ही) लिख चुका है कि मैं और मेरे रसूल अधिपति रहेंगे निःसंदेह ईश्वर शक्तिशाली और सब पर अधिपति है (21)
जो लोग ईश्वर पर और महाप्रलय के दिन पर विश्वास रखते हैं तुम उनको ईश्वर और उसके रसूल के शत्रुओं से कभी मित्रता करते हुए न देखोगे चाहे वह उनके पिता या पुत्र, भाई या उनके निकटवर्ती लोग हो वह वह लोग है कि ईश्वर ने उनके ह्रदयों में विश्वास का चिन्ह जमा दिया है और अपनी परोक्षीय शक्ति से उनकी सहायता की है और व उनको उपवनों में प्रविष्ट करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वह उनमें सदैव रहेंगे ईश्वर उनसे प्रसन्न और वह ईश्वर से प्रसन्न हुए वह वह लोग है जो ईश्वर की सैना है विश्वास रखो कि ईश्वर की सैना ही सफलता पाने वाली है (22)

سورت الحشر۔مدنی (۵۹)

सूरतुल हशर मदनी 59

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

کہہ دو جو چیزیں آسمانوں میں ہیں اور جو چیزیں زمین میں ہیں سب اللہ کی پاکی بیان کرتی ہیں اس لئے وہ سب پر غالب ہے اس کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں ہے (۱)

कहदो जो वस्तुएं आकाशों में है और जो वस्तुएं पृथ्वी में है सब ईश्वर की पाकी वर्णन करती है अतः वह सब पर अधिपति है उसका कोई कार्य युक्ति से रहित नही है (1)

और यह भी कह दो कि वही ईश्वर तो है जिसने पुस्तक वालों में से उन लोगों को जिन्होंने कुफ्र का मार्ग ग्रहण किया पहले ही आक्रमण में उनके घरों से निकाल बाहर किया (मुसलमानों) तुम्हारे विचार में भी न था कि वह लोग (अपने घरों से इस सरलता से) निकल जाएंगे और वह भी इस विचार में मगन थे कि उनकी गढ़ी उनको (ईश्वर की पकड़) से बचा लेंगे परन्तु ईश्वर ने उनको इस दिशा से आ लिया जहां से उनको अनुमान भी न था और उनके हृदयों में भय डाल दिया कि अपने घरों को स्वयं अपने ही हाथों के कर्मों से नष्ट कर रहें थे और यह कार्य प्रकटतः आस्तिकों के हाथों से भी हो रहा था तो ऐ देखने वालो! (उस घटना से) शिक्षा प्राप्त करो (2)

اور یہ بھی کہدو کہ وہی اللہ تو ہے جس نے اہل کتاب میں سے ان لوگوں کو جنہوں نے کفر کی راہ اختیار کی پہلے ہی حملہ میں ان کے گھروں سے نکال باہر کیا (مسلمانوں) تمہارے خیال میں بھی یہ نہ تھا کہ وہ لوگ (اپنے گھروں سے اس آسانی سے) نکل جائیں گے اور وہ بھی اس خیال میں مست تھے کہ ان کے قلعے ان کو (اللہ کی پکڑ) سے بچالیں گے لیکن اللہ نے ان کو اس رُخ سے آلیا جہاں سے ان کو گمان بھی نہ تھا، اور ان کے دلوں میں دہشت ڈال دی کہ اپنے گھروں کو خود اپنے ہی ہاتھوں کی کرتوتوں سے برباد کر رہے تھے اور یہ کام بظاہر مومنوں کے ہاتھوں سے بھی ہو رہا تھا تو اے آنکھ والو! (اس واقعہ سے) عبرت حاصل کرو (۲)

यदि ईश्वर ने उनके भाग्य में निर्वासित होना न लिख दिया होता तो दुनिया में उन्हे (दूसरी प्रकार) का दण्ड देता और परलोक में तो उनको आग का दण्ड होना ही है (3)

اگر اللہ نے ان کی تقدیر میں جلاوطن ہونا نہ لکھ دیا ہوتا تو دنیا میں انہیں (دوسری طرح) کا عذاب دیتا اور آخرت میں تو ان کو آگ کا عذاب ہونا ہی ہے (۳)

(सुन लो यह दण्ड उन्हें) इस लिए दिया गया कि उन्होंने ईश्वर और उसके रसूल का विरोध किया और जो भी ईश्वर का विरोध करेगा तो ईश्वर कठोर दण्ड देने वाला है (4)

(سن لو یہ سزا انہیں) اس لئے دی گئی کہ انہوں نے اللہ اور اس کے رسول کی مخالفت کی اور جو بھی اللہ کی مخالفت کرے گا تو اللہ سخت سزا دینے والا ہے (۴)

(मुसलमानों! यह भी एक वास्तविक्ता है) कि तुमने खजूरों के जो वृक्ष काटे या जिनको उनकी जड़ो पर खड़ा रहने दिया तो यह सब कुछ ईश्वर के उस युद्ध के नियामानुसार था (जो ईश्वर ने बुद्धि वालों को बता दिया है जहां शत्रु छुप कर घात लगाने को बैठे उसको समाप्त कर दो या जिससे लाभ हो उन को रहने दो) और उद्देश्य यह है कि वह अवज्ञाकारों को अपमानित करें (5)

(مسلمانو! یہ بھی ایک حقیقت ہے) کہ تم نے کھجوروں کے جو درخت کاٹے یا جن کو ان کی جڑوں پر کھڑا رہنے دیا تو یہ سب کچھ اللہ کے اس جنگی قانون کے مطابق تھا (جو اللہ نے عقل والوں کو بتا دیا ہے کہ جہاں دشمن چھپ کر گھات لگانے کو بیٹھے اس کو ختم کر دو یا جن سے فائدہ ہو ان کو رہنے دو) اور مقصد یہ ہے کہ وہ نافرمانوں کو رسوا کرے (۵)

और जो कुछ ईश्वर ने अपने रसूल को उनसे बे लड़ेभिड़े जो माल दिलवा दिया है (उसमें से तुम्हारा कुछ अधिकार नही क्योंकि) उसके लिए न तो तुमने घोड़े दोड़ाएं और न ऊंट परन्तु ईश्वर अपने रसूलों को जिस पर चाहे (नियामानुसार) नियुक्त कर देता है ईश्वर हर वस्तु के नियम बनाने पर शक्तिमान है(6)

اور جو کچھ اللہ نے اپنے رسول کو اُن سے بے لڑے بھڑے جو مال دلوا دیا ہے (اس میں سے تمہارا کچھ حق نہیں کیونکہ) اس کے لئے نہ تو تم نے گھوڑے دوڑائے اور نہ اونٹ لیکن اللہ اپنے رسولوں کو جس پر چاہے (قانون کے مطابق) مسلط فرما دیتا ہے اللہ ہر چیز کے قانون بنانے پر قادر ہے (۶)

ईश्वर ने जो माल बस्ती वालों से अपने रसूल को दिलवाया है वह ईश्वर का अधिकार है और वह ईश्वर के रसूल के लिए है और नाते दारों के लिए जो अपेक्षा वाले हो और अनाथों का और निर्धनों का और यात्रीयों का ताकि वह धन तुम्हारे धनी लोगों के मध्य न घूमता रहे (अतः मुसलमानों!) रसूल जो कुछ (ऐसे मालों में से) तुम को दे दे उसे ले लिया करो और जिस (के लेने) से रोक दे उससे दूर रहो और ईश्वर (की अवज्ञा) से डरते रहो निःसंदेह वह (अवज्ञाकारों को) कठोर दण्ड देने वाला है (7) {9:58-59, 8:1}

اللہ نے جو مال بستی والوں سے اپنے رسول کو دلوایا ہے وہ اللہ کا حق ہے اور وہ اللہ کے رسول کے لئے ہے اور رشتہ داروں کے لئے جو حاجت مند ہوں اور یتیموں کا اور مسکینوں کا اور مسافروں کا تاکہ وہ مال تمہارے مال داروں کے درمیان نہ گھومتا رہے (لہٰذا مسلمانو!) رسول جو کچھ (ایسے مالوں میں سے) تم کو دیدے اسے لے لیا کرو اور جس (کے لینے) سے منع کر دے اس سے دور رہو اور اللہ (کی نافرمانی) سے ڈرتے رہو یقیناً وہ (نافرمانوں کو) سخت سزا دینے والا ہے (۷) [۹:۵۸،۵۹،۸:۱]

और ऐसा माल उन देश त्याग करने वालों का अधिकार भी है जो निकाले गए अपने घरों से और जायदादों से और वह लोग ईश्वर के कृपा दया और प्रसन्नता के इच्छुक है और ईश्वर और उस के रसूल की सहायता में लगे रहते है वहीवह लोग है जो सच्चे है (8)

اور ایسا مال ان مہاجروں کا حق بھی ہے جو نکالے گئے اپنے گھروں سے اور جائدادوں سے اور وہ لوگ اللہ کے فضل اور رضا مندی کے طالب ہیں اور اللہ اور اس کے رسول کی حمایت میں لگے رہتے ہیں وہی وہ لوگ ہیں جو سچے ہیں (۸)

और ऐसा माल (उन लोगों के लिए भी है) जो पलायन करने वालों के आने से पहले विश्वास लाकर हिजरत के घर में रहते है वह उनसे प्रेम करते है जो पलायन करके उनके पास आए और पलायन करने वालों को जो कुछ मिलता है उससे वह सहायक अपने मनों में कोई अपेक्षा नही पाते और अपने से प्रमुख रखते है यद्यपि उन पर तंगी हो और जो व्यक्ति अपने जी के कृपणता से सुरक्षित रखा जाए ऐसे ही लोग सफलता पाने वाले है (9)

اور فے کا مال (ان لوگوں کے لئے بھی ہے) جو مہاجرین کی آمد سے پہلے ایمان لاکر دارالہجرت میں مقیم ہیں وہ ان سے محبت کرتے ہیں جو ہجرت کر کے ان کے پاس آئے اور مہاجرین کو جو کچھ ملتا ہے اس سے وہ انصار اپنے دلوں میں کوئی حاجت نہیں پاتے اور اپنے سے مقدم رکھتے ہیں اگر چہ ان پر تنگی ہو اور جو شخص اپنی طبیعت کے بخل سے محفوظ رکھا جائے ایسے ہی لوگ فلاح پانے والے ہیں (۹)

और उन लोगों का भी इस "फै" में स्वत्व है जो उन के बाद आए जो प्रार्थना करते है कि ऐ परवर दिगार हमको क्षमा कर दे और हमारे उन भाईयो को क्षमा कर दे जो हमसे पहले आस्था ला चुके है और हमारे हृदयों में ईमान वालों की ओर से द्वेष न होने दे और ऐ हमारे ईश्वर तू बड़ा स्नेही और कृपालु है (10)

اور ان لوگوں کا بھی اس فے میں حق ہے جو ان کے بعد آئے جو دعا کرتے ہیں کہ اے پروردگار ہم کو بخش دے اور ہمارے ان بھائیوں کو بھی جو ہم سے پہلے ایمان لا چکے ہیں اور ہمارے دلوں میں ایمان والوں کی طرف سے کینہ نہ ہونے دے اور اے ہمارے رب تو بڑا شفیق اور رحیم ہے (۱۰)

नोट- सूरत हशर की उपरोक्त आयात में ऐसे माल या जायदाद के विषय में ईश्वर का आदेश है जो बिना युद्ध के मिले उसमें कितने स्वत्व है वह यह है ईश्वर रसूल निकटता वाले जो आवश्यक्ता रखते हों, अनाथ, निर्धन, यात्री, पलायन करने वाले, अन्सार जो आवश्यक्ता रखते हो, बाद में आने वाले इसी प्रकार के मुसलमान यह कुल नौ हुए इन सब अधिकार वालों में और तो सब शेष है परन्तु रसूल शेष नही उन की मृत्यू हो चुकी है उनके स्थान पर कौन आया? चूंकि ईशदौत्य तो मुहम्मद स० पर समाप्त हो गया अतः उनके बाद कोई ईशदूत नही होगा. परन्तु मुहम्मद स० रसूल के साथ साथ एक राज्य के शासक भी थे और राज्य को समाप्त नही होना अतः आपकी मृत्यू के बाद उस राज्य का शासक ऐसे धन को उन कार्यों में व्यय करेगा जो ईश्वर ने बताए है, दूसरे अर्थ में ऐसी जायदाद मुस्लिम राज्य के लिए या राम राज्य के लिए अर्पण है न कि रसूल की नीजि जायदाद जब निजी जायदाद नही तो दाय में सन्तान को मिलने का प्रश्न ही उत्पन्न नही होता ईश्वर ने ऐसी जायदाद का व्यय बता दिया है ऐसे माल में वह भी सम्मिलत है जो (8:1) में अन्फ़ाल के नाम से बताया गया है,

यदि "बागे फ़िदक फै" रसूल की निजी जायदाद होती तो निःसंदेह मुहम्मद स० ने अन्तिम समय में जहां और बातों का निर्णय कर दिया था इस जायदाद के विषय में फरमा देते कि यह जायदाद मेरे बाद मेरी सन्तान व पत्नीयों को मिलेगी कोई व्यक्ति आपत्ति न करें परन्तु ऐसा नही था वह जायदाद रसूल की न थी अतः रसूल ने इसके विषय में कोई बात न की, यह है सत्य बात परन्तु हमारे यहां इतिहास में कुछ और लिखा है पढ़ा होगा,

वह यह कि मुहम्मद स० के देहान्त के बाद फ़ातमा र० ने अली र० के परामर्श से अबुबक्र र० के यहां इस जायदाद के लिए एक वाद प्रस्तुत कर दिया सुन्नी शीया दोनों इस वाद को मानते है कि फ़ातमा ने ऐसा किया तो यह सम्मति हुई और सम्मति का मानना अनिवार्य है परन्तु इस सम्मति के मानने से उन लोगों का कुरआन समझने का विवेक संदिग्ध होता है?

अबुबकर र० ने इस वाद के उत्तर में एक हदीस प्रस्तुत कर दी जिसका अर्थ यह है कि नबी जो भी माल छोड़ते है वह उत्तर उत्तराधिकारियों का नही होता अपितु वह दान होता है, सुन्नी उलमा का निर्णय है कि इस हदीस को सुनकर फ़ातमा ने अपना वाद वापस ले लिया परन्तु शीया उलमा का कहना है कि ऐसा नही हुआ अपितु साक्षी प्रस्तुत हुए और नियामानुसार वाद चला अन्ततः वह जायदाद फ़ातमा को

نوٹ:۔ سورت حشر کی آیات بالا میں ایسے مال یا جائداد کے بارے میں اللہ کا حکم ہے جو بغیر جنگ کے ملے اس میں کتنے حق ہیں وہ یہ ہیں، اللہ رسول قرابت دار جو ضرورت مند ہوں یتیم غریب مسافر مہاجر انصار ضرورت مند ہوں بعد میں آنے والے اسی طرح کے مسلمان یہ کل نو ہوئے، ان حقداروں میں اور تو سب باقی ہیں مگر رسول باقی نہیں ان کی وفات ہو چکی ہے اُن کی جگہ پر کون آیا؟ چونکہ نبوت تو محمدؐ پر ختم ہو گئی اس لئے ان کے بعد کوئی رسول نہیں ہوگا، لیکن محمدؐ رسول کے ساتھ ساتھ ایک ریاست کے امیر بھی تھے اور ریاست کو ختم نہیں ہونا اس لئے آپ کے انتقال کے بعد اس ریاست کا امیر ایسے مال کو ان مدوں میں خرچ کرے گا جو اللہ نے بتائے ہیں دوسرے معنی میں ایسی جائداد مسلم حکومت کے لئے یا حکومت الٰہی کے لئے وقف ہے نہ کہ رسول کی ذاتی جائداد، جب ذاتی جائداد نہیں تو وراثت میں اولاد کو ملنے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا، اللہ نے ایسی جائداد کا خرچ بھی بتا دیا ہے ایسے مال میں وہ بھی شامل ہے جو (۸:۱) میں انفال کے نام سے بتایا گیا ہے،

اگر وہ باغ فدک فے رسول کی ذاتی جائداد ہوتی تو یقیناً محمدؐ آخری وقت میں جہاں اور باتوں کا فیصلہ کر دیا تھا اس جائداد کے بارے میں فرما دیتے کہ یہ جائداد میرے بعد میری اولاد و ازواج کو ملے گی کوئی آدمی اعتراض نہ کرے لیکن ایسا نہیں تھا وہ جائداد رسول کی نہ تھی اس لئے رسول نے اس کے بارے میں کوئی بات نہ کی یہ ہے حق بات مگر ہمارے یہاں تاریخ میں کچھ اور لکھا ہے پڑھا ہوگا،

وہ یہ کہ محمدؐ کے انتقال کے بعد فاطمہؓ نے علیؓ کے مشورے سے ابوبکرؓ کے یہاں اس جائداد کے لئے ایک مقدمہ دائر کر دیا، سنی شیعہ دونوں اس دعوے کو مانتے ہیں کہ فاطمہؓ نے ایسا کیا تو یہ اجماع ہوا، اور اجماع کا ماننا ضروری ہے مگر اس اجماع کے ماننے سے ان حضرات کی قرآن فہمی مشکوک ہوتی ہے؟

ابوبکرؓ نے اس دعوے کے جواب میں ایک حدیث پیش کر دی جس کا مطلب یہ ہے کہ نبی جو بھی مال و متاع چھوڑتے ہیں وہ وارثوں کا نہیں ہوتا بلکہ وہ صدقہ ہوتا ہے، سنی علما کا فیصلہ ہے کہ اس روایت کو سن کر فاطمہؓ نے اپنا دعویٰ واپس لے لیا، لیکن شیعہ علماء کا کہنا ہے کہ ایسا نہیں ہوا بلکہ گواہ پیش ہوئے اور باقاعدہ مقدمہ چلا، انجام کار وہ جائداد فاطمہ کو نہ ملی، اس لئے علیؓ فاطمہؓ تینوں خلفاء سے

न मिली अतः अली फ़ातमा तीनों ख़ुलफ़ा से रूष्ट रहे और आज शीया लगभग सारे सहाबा से रूष्ट है परन्तु क़ुरआन के प्रकाश में देखा जाए तो जायदाद का निर्णय स्पष्ट है वह जायदाद रसूल का अधिकार नही अपितु रसूल के द्वारा ईश्वर के आदेशानुसार व्यय की जानी है और वह राज्य कोष में जाएगी चूंकि ऐसा माल राज्य का होता है अर्थात अर्पण और उसको उन्ही कार्यों में व्यय किया जाएगा जिनके लिए क़ुरआन बताता है रसूल के बाद ऐसी जायदाद का व्यय स्थानापन्न नेता करेगा,

जब क़ुरआन से यह बात स्पष्ट हो जाती है तो फिर कैसे फ़ातमा ऐसा वाद कर सकती थी और कैसे अली यह वाद करने का परामर्श दे सकते थे? क्या क़ुरआन को नही जानते थे? अबुबकर का नम्बर आने का तो प्रश्न ही पैदा नही होता, कि वह एक हदीस प्रस्तुत करते, यदि कोई वाद होता तो वह अवश्य क़ुरआन प्रस्तुत करते, अतः यह वाद हुआ ही नही,

अली और फ़ातमा क़ुरआन को जानते थे और मानते थे और यह आयात क़ुरआन में उस समय उनके सामने लिखी हुई थी जो नबी पर अवतरित हुई, जो कुछ इस वाद के विषय में लिखा मिलता है जिसको सम्मति बताया जाता है वह बिल्कुल मिथ्या है सत्य समझने की ईश्वर हमको क्षमता दे फिर सुनो यह वाद हुआ ही नही,

हां हदीस के विषय में यह है जिसमें लिखा है कि नबी जो धन दौलत अपना छोड़ते है वह उत्तराधिकारियों को नही मिलता?

क़ुरआन में तो सूरत निसा में उत्तराधिकारियों के स्वत्व अंश अंकित है, वहां या और कही तो कोई ऐसी आयत नही है कि रसूल का छोड़ा माल उसकी सन्तान को नही मिलेगा अपितु वह दान होता है ऐसा नही है अपितु रसूल का भी निजी धन इन आयात के प्रकाश में उत्तराधिकारियों को मिलेगा, परन्तु माल फै तो नबी का निजी माल नही होता जिसे अन्फ़ाल भी कहा है उसका निर्णय तो क़ुरआन में अंकित है, मनन करना अनिवार्य है,

रहा प्रश्न ईशदूत का निजी माल तो ईश्वर ने तो निजी धन रखने को वर्जित नही किया, परन्तु अन्तिम नबी की वह महिमा थी कि उन्होंने कभी अपने लिए कुछ बचाकर नही रखा जो आया सब कुछ तुरन्त व्यय कर दिया,

उनका तो खाना पीना भी बहुत सादा और कम था ऐसे ही आप की पत्नीयां थी उन्होंने ने भी कभी दुनिया की शोभा को पसन्द नही किया तो फिर निजी माल तरके में छोड़ने का भी प्रश्न नही आता,

यदि यह माल नबी का था और उनके बाद फ़ातमा को मिलना था जैसा कि वाद स्वीकार किया गया है और उनको नही मिला तो अली रा० अपनी ख़िलाफ़त के काल में उसको फ़ातमा की सन्तान को दे देते, उन्होंने ऐसा क्यों नही किया? उन्होंने ऐसा इसलिए नही किया क्योंकि वह इस धन को नबी का धन नही समझते थे इसलिए भी वाद का होना सिद्ध नही होता,

ख़लीफ़ा उमर बिन अब्दुल अजीज से भी यह बात सम्बन्धित की गई है कि उन्होंने इस जायदाद को फ़ातमा की सन्तान को दे दिया था और अबुबकर से लेकर उस समय तक का हिसाब लगा कर उसकी आय भी कोष से वापस कर दी थी तो यह भी विचारणीय है उन्होंने भी ऐसा नही किया वारिसों में पत्नियां भी होती है फिर वाद करने में पत्नीयां क्यों नज़र नही आ रही?

क्या तुमने उन कपटियों को नही देखा जो अपने नास्तिक भाईयों से जो एहले किताब है कहा करते है कि यदि तुम निर्वासित किए गए तो हम भी तुम्हारे साथ निकल चलेंगे और तुम्हारे विषय में कभी किसी का कहा न मानेंगे और यदि तुम से युद्ध हुआ तो तुम्हारी सहायता करेंगे परन्तु ईश्वर

ناراض رہے اور آج شیعہ قریب قریب سارے صحابہ سے ناراض ہیں۔

لیکن قرآن کی روشنی میں دیکھا جائے تو جائداد کا فیصلہ صاف ہے وہ جائداد رسول کا حق نہیں بلکہ رسول کے ذریعہ اللہ کے حکم کے مطابق خرچ کی جاتی ہے اور وہ بیت المال میں جائے گی چونکہ ایسا مال حکومت وقت کا ہوتا ہے یعنی وقف اور اس کو انہی مدوں میں خرچ کیا جائے گا جن کے لئے قرآن بتاتا ہے رسول کے بعد ایسی جائداد کا خرچ قائم مقام امیر کرے گا۔

جب قرآن سے یہ بات صاف ہو جاتی ہے تو پھر کیسے فاطمہ ایسا دعویٰ کر سکتی تھیں اور کیسے علی یہ دعویٰ کرنے کا مشورہ دے سکتے تھے؟ کیا قرآن کو نہیں جانتے تھے؟ ابوبکر کا نمبر آنے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا کہ وہ ایک روایت پیش کرتے اگر کوئی دعویٰ ہوتا تو وہ ضرور قرآن پیش کرتے اس لئے یہ دعویٰ ہوا ہی نہیں۔

علی اور فاطمہ قرآن کو جانتے تھے اور مانتے تھے اور یہ آیات قرآن میں اس وقت ان کے سامنے لکھی ہوئی تھیں جو نبی پر نازل ہوئیں۔ جو کچھ اس مقدمے کے بارے میں لکھا ملتا ہے جس کو اجماع بتایا جاتا ہے وہ بالکل غلط ہے حقیقت سمجھنے کی اللہ ہم کو توفیق دے پھر سنو یہ دعویٰ ہوا ہی نہیں۔

ہاں روایت کے بارے میں یہ ہے جس میں لکھا ہے کہ نبی جو مال اپنا ذاتی چھوڑتے ہیں وہ وارثوں کو نہیں ملتا؟ قرآن میں تو سورت نساء میں وارثوں کے حق درج ہیں۔ وہاں یا اور کہیں تو کوئی ایسی آیت نہیں ہے کہ رسول کا ترکہ اس کی اولاد یا بیوی کو نہیں ملے گا بلکہ وہ صدقہ ہوتا ہے ایسا نہیں ہے بلکہ رسول کا بھی ذاتی مال ان آیات کی روشنی میں اولاد اور دوسرے وارثوں کو ملے گا مگر مال فے تو نبی کا ذاتی مال نہیں ہوتا جسے انفال بھی کہا ہے اس کا فیصلہ تو قرآن میں درج ہے غور کرنا ضروری ہے۔

رہا سوال رسول کا ذاتی مال تو اللہ نے تو ذاتی مال رکھنے کو منع نہیں کیا مگر آخری نبی کی وہ شان تھی کہ انہوں نے کبھی اپنے لئے کچھ بچا کر نہیں رکھا جو آیا سب کچھ فوراً خرچ کر دیا ان کا تو کھانا پینا بھی بہت سادہ اور کم تھا۔ ایسے ہی آپ کی ازواج تھیں انہوں نے بھی کبھی دنیا کی زینت کو پسند نہیں کیا تو پھر ذاتی مال ترکہ میں چھوڑنے کا بھی سوال نہیں آتا۔

اگر یہ مال نبی کا تھا اور ان کے بعد فاطمہؓ کو ملنا تھا جیسا کہ دعویٰ تسلیم کیا گیا ہے اور ان کو نہیں ملا تو علیؓ اپنی خلافت کے زمانہ میں اس کو فاطمہ کی اولاد کو دیتے انہوں نے ایسا کیوں نہیں کیا؟ انہوں نے ایسا اس لئے نہیں کیا کیونکہ وہ اس مال کو نبی کا مال نہیں سمجھتے تھے اس لئے بھی دعویٰ کا ہونا ثابت نہیں ہوتا۔

خلیفہ عمر بن عبدالعزیز سے بھی یہ بات منسوب کی گئی ہے کہ انہوں نے اس جائداد کو فاطمہ کی اولاد کو دے دیا تھا اور ابوبکر سے لے کر اس وقت تک کا حساب لگا کر اس کی آمدنی بھی خزانے سے واپس کر دی تھی تو یہ بھی محل نظر ہے انہوں نے بھی ایسا نہیں کیا۔ وارثوں میں بیویاں بھی ہوتی ہیں پھر دعویٰ کرنے میں بیویاں کیوں نظر نہیں آ رہیں؟

کیا تم نے ان منافقوں کو نہیں دیکھا جو اپنے کافر بھائیوں سے جو اہل کتاب ہیں کہا کرتے ہیں کہ اگر تم جلاوطن کئے گئے تو ہم بھی تمہارے ساتھ نکل چلیں گے اور تمہارے بارے میں کبھی کسی کا کہا نہ مانیں گے اور اگر تم سے جنگ ہوئی تو تمہاری مدد کریں گے مگر اللہ ظاہر کئے دیتا ہے کہ وہ

प्रकट किए देता है कि वह झूटे है (11)

جھوٹے ہیں(۱۱)

यदि वह निकाले गए तो वह उनके साथ नही निकलेगें और यदि उनसे युद्ध हुआ तो उनकी सहायता नही करेगे और यदि सहायता करेंगे तो पीठ फैर कर भाग जाएगे फिर उनको कही से भी सहायता न मिलेगी (12)

اگر وہ نکالے گئےتو وہ ان کےساتھ نہیں نکلیں گےاور اگر ان سے جنگ ہوئی تو ان کی مدد نہیں کریں گےاور اگر مدد کریں گےتو پیٹھ پھیر کر بھاگ جائیں گے پھر ان کو کہیں سے بھی مدد نہ ملےگی (۱۲)

(मुसलमानों!) तुम्हारा भय उनके दिलों में ईश्वर से भी बढ़कर है यह इस लिए कि वह लोग मुर्ख है (13)

(مسلمانو!) تمہاری ہیبت ان کے دلوں میں اللہ سے بھی بڑھ کر ہے یہ اس لئے کہ وہ لوگ ناسمجھ ہیں (۱۳)

वह लोग ऐकत्र होकर भी तुमसे नही लड़ सकेंगे परन्तु गढ़ी बन्द बस्तियों में शरण लेकर या दिवारों की ओट में छुप कर वह आपस में एक दूसरे के कठोर विरोधी है तुम कदाचित विचार करते हो कि उनमें ऐका है परन्तु उनके हृदय फटे हुए है, यह इस लिए कि वह लोग बुद्धि हीन है (14)

وہ لوگ سب جمع ہو کر بھی تم سے نہیں لڑسکیں گےمگر قلعہ بند بستیوں میں پناہ لےکر یا دیواروں کی اوٹ میں چھپ کر وہ آپس میں ایک دوسرے کےسخت مخالف ہیں تم شاید خیال کرتے ہو کہ وہ اکٹھے ہیں مگر ان کے دل پھٹے ہوئے ہیں یہ اس لئے کہ وہ لوگ بےعقل ہیں (۱۴)

उनका हाल उनही लोगों जैसा है जो उनसे कुछ ही दिन पहले अपने करतूतों का स्वाद चख चुके है उनके लिए दर्दनाक कष्ट है (15)

ان کا حال ان ہی لوگوں جیسا ہے جو ان سے کچھ ہی دن پہلے اپنی کرتوتوں کا مزہ چکھ چکے ہیں ان کے لئے دردناک عذاب ہے(۱۵)

(कपटीयों की) उपमा शैतान जैसी है कि इन्सान से कहता है कि काफिर हो जाओ, जब वह नास्तिक हुआ तो कहने लगा कि मुझे तुझ से कुछ वास्ता नही मुझ को तो विश्वपालक से डर लगता है (16)

(منافقوں کی) مثال شیطان جیسی ہے کہ انسان سے کہتا ہے کہ کافر ہو جا جب وہ کافر ہوا تو کہنے لگا کہ مجھے تجھ سے کچھ مطلب نہیں مجھ کو تو رب العالمین سے ڈر لگتا ہے(۱۶)

तो दोनों का अन्त यह हुआ कि दोनों नर्क में प्रविष्ट होंगे और सदैव उसमें रहेगे और अन्यायीयों का यही दण्ड है (17)

تو دونوں کا انجام یہ ہوا کہ دونوں دوزخ میں داخل ہوں گےاور ہمیشہ اس میں رہیں گےاور بےانصافوں کی یہی سزا ہے(۱۷)

ऐ इमान वालो! ईश्वर की अवज्ञा से डरते रहो और हर व्यक्ति को देखना चाहिए कि उसने कल अर्थात क्यामत के लिए क्या भेजा है और ईश्वर की अवज्ञा से डरते रहो निःसंदेह ईश्वर तुम्हारे सब कर्मों से अवगत है (18)

اےایمان والو! اللہ کی نافرمانی سے ڈرتے رہو اور ہر شخص کو دیکھنا چاہیے کہ اس نے کل یعنی قیامت کے لئے کیا بھیجا ہے اور اللہ کی نافرمانی سے ڈرتے رہو بےشک اللہ تمہارے سب اعمال سے خبردار ہے(۱۸)

देखो उन लोगों की भांति न हो जाना जो ईश्वर को भूल गए तो ईश्वर के नियम ने उनकी ऐसी बुद्धि मारी की स्वयं अपने ही को भूल गए वह दुराचारी लोग है (19)

دیکھو ان لوگوں کی طرح نہ ہو جانا جو اللہ کو بھول گئے تو اللہ کے قانون نے ان کی ایسی مت ماری کہ خود اپنے ہی کو بھول گئے وہ بدکردار لوگ ہیں (۱۹)

स्वर्ग वाले और नर्क वाले बराबर नही स्वर्ग वाले तो सफलता प्राप्त करने वाले है (20)

جنتی اور دوزخی برابر نہیں اہل جنت تو کامیابی حاصل کرنے والے ہیں (۲۰)

(इन्सानों! कुरआन का सम्मान करो इसे साधारण पुस्तक न समझो कि चन्द रुकूअ पढ़ लिए और फल मिल गया यह हृदय दहलाने वाले पुस्तक है पाप करने से डरो) यदि हम इस कुरआन को पर्वत पर अवतरित करते (अर्थात पर्वत में समझने की शक्ति होती) तो तुम देखते कि वह ईश्वर के भय से दबा और फटा जाता है (ईश्वर की अवज्ञा करने पर या पर्वत तूर की भांति तेज से जल जाता) हम लोगों के सामने उपमा वर्णन करते है शायद वह विचार करें (21)

(انسانو! قرآن کی قدر کرو اسے معمولی کتاب نہ سمجھو کہ چند رکوع پڑھ لئے اور ثواب مل گیا یہ دل دہلانے والی کتاب ہےگناہ کرنے سے ڈرو) اگر ہم اس قرآن کو پہاڑ پر نازل کرتے (یعنی اگر پہاڑ میں سمجھنے کی طاقت ہوتی) تو تم دیکھتے کہ وہ اللہ کےخوف سے دبا اور پھٹا جاتا ہے (اللہ کی نافرمانی کرنے پر یا کوہ طور کی طرح تجلی سے جل جاتا) ہم لوگوں کے سامنے مثالیں بیان کرتے ہیں شائد وہ غور کریں (۲۱)

कहो वही ईश्वर है जिसको नास्तिक कहता है कि ईश्वर नही है तो सुनो निःसंदेह ईश्वर है और ऐसा है कि वह प्रकट और गुप्त का जानने वाला है वह

کہو وہی اللہ ہے جس کو کافر کہتا ہے کہ اللہ نہیں ہے تو سنو یقیناً اللہ ہے اور ایسا ہے کہ وہ ظاہر اور پوشیدہ کا جاننے والا

बड़ा कृपालु अत्यन्त दया वाला है (22)
कहो वही ईश्वर है जिसको नास्तिक कहता है कि ईश्वर कोई नही है तो सुनो! निःसंदेह वह है और ऐसे गुणो का स्वामी है कि राजा पवित्र अस्तित्व शान्ति देने वाला रक्षक अधिपति शक्तिशाली बड़ाई वाला ईश्वर उन लोगों के साझी नियुक्त करने से पवित्र है (23)
कहो वही पैदा करने वाला जीवन देने वाला आकृति बनाने वाला उसके सब अच्छे अच्छे नाम है जितनी वस्तुएं आकाशों और पृथ्वी में है सब उसकी पवित्रता अर्थात उसकी आज्ञाकारी करती है और वह अधिपति युक्ति वाला है (24)

ہے وہ بڑا مہربان نہایت رحم والا ہے(۲۲)
کہو وہی اللہ ہے جس کو کافر کہتا ہے کہ اللہ کوئی نہیں ہے تو سنو یقیناً وہ ہے اور ایسی صفات کا مالک ہے کہ بادشاہ پاک ذات سلامتی امن دینے والا نگہبان غالب زبردست بڑائی والا۔ اللہ ان لوگوں کے شریک مقرر کرنے سے پاک ہے(۲۳)
کہو وہی اللہ ہے پیدا کرنے والا وجود بخشنے والا صورتیں بنانے والا اس کے سب اچھے اچھے نام ہیں۔ جتنی چیزیں آسمانوں اور زمین میں ہیں سب اس کی تسبیح یعنی اس کی فرمانبرداری کرتی ہیں اور وہ غالب حکمت والا ہے(۲۴)

सूरतुल मुमतहिना मदनी (60)

سورت الممتحنہ۔ مدنی (۶۰)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ऐ वह लोगो! जो इमान लाए हो यदि तुम मेरे मार्ग में धर्म युद्ध करने के लिए और मेरी प्रसन्नता की इच्छा के लिए (देश छोड़कर घरों से) निकले हो तो मेरे और अपने शत्रुओं को मित्र मत बनाना क्या तुम उनकी ओर मित्रता का संदेह भेजोगे? यद्यपि तुम्हारे पास जो सत्य धर्म आया है वह उसको मानने से इन्कार कर चुके है और इस कारण से कि तुम अपने रब पर विश्वास लाए हो और वह रसूल को और तुमको निर्वासित भी कर देंगे (और कर भी चुके हैं) तो क्या तुम उनकी ओर गुप्त मित्रता का संदेश भेजोगे? (तुमको ऐसा नही करना है) और जो कुछ तुम छुप कर और प्रकट करते हो वह मुझे ज्ञात है और जो कोई तुममें से ऐसा करेगा वह सीधे मार्ग से भटक जाएगा (1) {58:22, 60:9-23}

اے وہ لوگو! جو ایمان لائے ہو اگر تم میری راہ میں جہاد کرنے کے لئے اور میری رضا جوئی کی آرزو میں (وطن چھوڑ کر گھروں سے) نکلے ہو تو میرے اور اپنے دشمنوں کو دوست مت بنانا کیا تم ان کی طرف دوستی کا پیغام بھیجو گے؟ حالانکہ تمہارے پاس جو دین حق آیا ہے وہ اس کو ماننے سے انکار کر چکے ہیں اور اس وجہ سے کہ تم اپنے رب پر ایمان لائے ہو۔ اور وہ رسول کو اور تم کو جلاوطن بھی کر دیں گے (اور کر بھی چکے ہیں) تو کیا تم ان کی طرف پوشیدہ دوستی کا پیغام بھیجو گے؟ (تم کو ایسا نہیں کرنا ہے) اور جو کچھ تم چھپ کر اور ظاہر کرتے ہو وہ مجھے معلوم ہے اور جو کوئی تم میں سے ایسا کرے گا وہ سیدھے رستے سے بھٹک جائے گا(۱)[۵۸:۲۲، ۶۰:۹-۲۳]

यदि वह नास्तिक तुम पर वश पालें अर्थात तुम्हारे भेद भांप ले तो तुमसे शत्रुता के लिए तैयार हो जाए अर्थात युद्ध के लिए और कष्ट देने के लिए तुम पर हाथ भी चलाएं और मुख भी और चाहते है कि तुम किसी प्रकार काफिर हो जाओ (2)
क्यामत के दिन न तुम्हारे नाते दार काम आएंगे और न सन्तान उस दिन वही तुममें निर्णय करेगा, और जो कुछ तुम करोगे ईश्वर उसको देखता है (3)
(कहो आस्तिकों! नास्तिकों का मार्ग ग्रहण न करो) तुम्हारे लिए इब्राहीम और उसके साथियों का अच्छा आदर्श है (उसी के अनुसार व्यवहार करो) जब उन्होंने अपनी जाति के लोगों से कहा कि हम तुमसे और उन मूर्तियों से जिनको तुम ईश्वर के सिवा पूजते हो सम्बन्ध नही रखते और तुम्हारे देवताओं को स्वीकार नही कर सकते और जब तक तुम एक ईश्वर पर ईमान न लाओ हम में और तुम में सदैव के लिए खुल्लम खुल्ला शत्रुता रहेगी, हां इब्राहीम ने अपने पिता से यह कहा कि मैं आपके लिए क्षमा की प्रार्थना करूंगा और मैं ईश्वर के सामने आपके विषय में किसी वस्तु का कुछ अधिकार नही रखता ऐ हमारे रब तुझ ही पर हमारा भरोसा है और तेरी ही ओर हम वापस

اگر وہ کافر تم پر قدرت پالیں یعنی تمہارے راز بھانپ لیں تو تم سے دشمنی کے لئے یعنی جنگ کے لئے تیار ہو جائیں اور ایذا کے لئے تم پر ہاتھ بھی چلائیں اور زبانیں بھی اور چاہتے ہیں کہ تم کسی طرح کافر ہو جاؤ(۲)
قیامت کے دن نہ تمہارے رشتے ناتے کام آئیں گے اور نہ اولاد۔ اس روز وہی تم میں فیصلہ کرے گا اور جو کچھ تم کرو گے اللہ اس کو دیکھتا ہے(۳)
(کہو مسلمانو! کافروں کا شیوہ اختیار نہ کرو) تمہارے لئے ابراہیم اور اس کے ساتھیوں کا اچھا نمونہ ہے (اسی کے مطابق عمل کرو) جب انہوں نے اپنی قوم کے لوگوں سے کہا کہ ہم تم سے اور ان بتوں سے جن کو تم اللہ کے سوا پوجتے ہو بے تعلق ہیں اور تمہارے معبودوں کے کبھی قائل نہیں ہو سکتے۔ اور جب تک تم ایک اللہ پر ایمان نہ لاؤ ہم میں اور تم میں ہمیشہ کے لئے کھلم کھلا عداوت رہے گی۔ ہاں ابراہیم نے اپنے باپ سے یہ کہا کہ میں آپ کے لئے مغفرت مانگوں گا اور میں اللہ کے سامنے آپ کے بارے میں کسی چیز کا کچھ اختیار نہیں رکھتا اے ہمارے رب تجھی پر ہمارا بھروسہ ہے اور تیری ہی طرف ہم رجوع

आते हैं और तेरे समक्ष हमें लौट कर आना है (4) {9:114}

کرتے ہیں اور تیرے ہی حضور میں ہمیں لوٹ کر آنا ہے(۴)[۱۱۴:۹]

ऐ हमारे ईश्वर! हमें नास्तिकों (के अत्याचार का) के अभ्यास का पट्ट न बनाना (अर्थात हम ऐसे अनुचित कार्य न करें जिनको देख कर काफिर धर्म में आने से रुक जाएं और उस रुकने का फितना कारण हम बने उससे बचाना) ऐ हमारे ईश्वर हमारे पापों को क्षमा कर निःसंदेह तू सब पर अधिपति और युक्ति वाला है (5)

اے ہمارے رب! ہمیں کافروں (کے ظلم کا) تختۂ مشق نہ بنانا (یعنی ہم ایسے غلط کام نہ کریں جن کو دیکھ کر کافر دین میں آنے سے رُک جائیں اور اس رکنے کا فتنہ ہم بنیں اس سے ہمیں بچانا) اے ہمارے پروردگار ہمارے گناہوں کو معاف کر. یقیناً تو سب پر غالب اور حکمت والا ہے(۵)

(मुसलमानों!) उन्ही लोगों की कार्य प्रणाली में तुम्हारे लिए और हर उस व्यक्ति के लिए अच्छा आदर्श है जो ईश्वर (के सामने उपस्थित होने की) और क़यामत के आने की आशा रखता हो और जो उससे विमुखता करेगा तो ईश्वर भी निश्चिन्त और प्रशंसा के योग्य है (6)

(مسلمانو!) انہیں لوگوں کے طرزِ عمل میں تمہارے لئے اور ہر اس شخص کے لئے اچھا نمونہ ہے جو اللہ (کے سامنے حاضر ہونے کی) اور روز آخرت کے آنے کی امید رکھتا ہو.
اور جو اس سے روگردانی کرے گا تو اللہ بھی بے پروا اور حمد و ثنا کے لائق ہے(۶)

विचित्र नही की ईश्वर तुम में और उन लोगों में जो तुम से शत्रुता रखते हैं मित्रता उत्पन्न कर दे (यदि तुम अच्छे कर्म करोगे) और ईश्वर हर वस्तु के अनुमान बनाने वाला है और ईश्वर क्षमा करने वाला दयालु है (7)

عجب نہیں کہ اللہ تم میں اور ان لوگوں میں جو تم سے دشمنی رکھتے ہیں دوستی پیدا کر دے (اگر تم اچھے عمل کرو گے) اور اللہ ہر چیز کے اندازے بنانے والا ہے اور اللہ بخشنے والا مہربان ہے(۷)

जिन लोगों ने तुम से धर्म के विषय में युद्ध नही किया और न तुम को तुम्हारे घरों से निकाला उनके साथ भलाई और न्याय का बरताओ करने से ईश्वर तुमको मना नहीं करता ईश्वर तो न्याय करने वालों को मित्र रखता है (8)

جن لوگوں نے تم سے دین کے بارے میں جنگ نہیں کی اور نہ تم کو تمہارے گھروں سے نکالا ان کے ساتھ بھلائی اور انصاف کا سلوک کرنے سے اللہ تم کو منع نہیں کرتا. اللہ تو انصاف کرنے والوں کو دوست رکھتا ہے(۸)

ईश्वर तुम्हें उन्ही लोगों से मित्रता करने से मना करता है जो तुम से धर्म के विषय में लड़े और जिन्होंने तुम को तुम्हारे घरों से निकाला और तुम्हारे निकालने में (तुम्हारे शत्रुओं की) सहायता की (और उस गति विधि पर स्थिर हैं) और जो उनसे मित्रता करेगा ईश्वर के आदेश से विमुखता करते हुए वही जालिम है (9) {58:22; 60:1}

اللہ تمہیں انہیں لوگوں سے دوستی کرنے کو منع کرتا ہے جو تم سے دین کے بارے میں لڑے اور جنہوں نے تم کو تمہارے گھروں سے نکالا اور تمہارے نکالنے میں (تمہارے دشمنوں کی) مدد کی (اور اس روش پر قائم ہیں) اور جو ان سے دوستی کرے گا اللہ کے حکم سے روگردانی کرتے ہوئے وہی ظالم ہیں(۹)[۱:۶۰؛۲۲:۵۸]

मुसलमानो! जो आस्तिक औरतें प्लायन करके तुम्हारे पास आऐं उनके (धर्म की) परीक्षा कर लिया करो (यूं तो) उनके धर्म को ईश्वर ही भलिभांति जानता है (तथापि तुम्हारे लिए अनिवार्य है कि अच्छी प्रकार जांच कर लो कि उन्होंने पश्चाताप कर लिया है या वह आस्तिक के साथ कपटी तो नही है क्योंकि यदि वह सहमत होंगी तो उनसे विवाह भी करना है जैसे सूरत अहजाब में है कि ऐ मुहम्मद आपके लिए वह स्त्री भी वैध है जिसने आपके साथ प्लायन किया हो अर्थात पापों से प्लायन कर लिया हो) फिर यदि तुमको विश्वास आ जाए कि वह आस्तिक है तो उन्हें नास्तिकों की ओर वापस न करो न तो वह औरतें काफिरों को वैध है न काफिर उन औरतों के लिए वैध है और जो कुछ उन्होंने उन पर व्यय किया हो वह उन्हें वापस कर दो और इसमें भी तुम पर कोई पाप नही कि तुम उन औरतों को उनके मेहर देकर उनसे विवाह कर लो और तुम भी काफिर औरतों को अपने विवाह में न रोके रहो, और जो मेहर तुमने अपनी काफिर पत्नी को दिये थे वह उनसे मांग लो और जो मेहर काफिरों ने अपनी मुसलमान पत्नी को दिये थे

مسلمانو! جو مومن عورتیں ہجرت کرکے تمہارے پاس آئیں ان کے (ایمان کی) جانچ کر لیا کرو (یوں تو) ان کے ایمان کو اللہ ہی خوب جانتا ہے (تاہم تمہارے لئے ضروری ہے کہ اچھی طرح جانچ کر لو کہ انہوں نے گناہوں سے بھی ہجرت یعنی توبہ کر لی ہے یا وہ مومن کے ساتھ منافق تو نہیں ہیں کیونکہ اگر وہ راضی ہوں گی تو ان سے شادی بھی کرنی ہے جیسے سورت احزاب میں ہے کہ اے محمدؐ تمہارے لئے وہ عورت حلال ہے جس نے تمہارے ساتھ ہجرت کی ہو یعنی گناہوں سے ہجرت کر لی ہو) پھر اگر تم کو یقین آ جائے کہ وہ مسلمان ہیں تو انہیں کفار کی طرف واپس نہ کرو. نہ تو وہ عورتیں کافروں کو حلال ہیں نہ کافر ان عورتوں کے لئے حلال ہیں. اور جو کچھ انہوں نے ان پر خرچ کیا ہو وہ انہیں واپس کر دو. اور اس میں بھی تم پر کوئی گناہ نہیں کہ تم ان عورتوں کو ان کے مہر دے کر ان سے نکاح کر لو اور تم بھی کافر عورتوں کو اپنے نکاح میں نہ روکے رہو. اور جو مہر تم نے اپنی کافر بیوی کو دئے تھے وہ ان سے طلب کر لو اور جو مہر کافروں

نے اپنی مسلمان بیویوں کو دیے تھے وہ واپس مانگ لیں. یہ اللہ کا حکم ہے جو تم میں
فیصلہ کرتا ہے اور اللہ جاننے والا حکمت والا ہے(۱۰)[۵۰:۳۳؛۲۴:۴]

वह वापस मांग लें यह ईश्वर का आदेश है जो तुम में निर्णय करता है
और ईश्वर जानने वाला युक्ति वाला है (10) {4:24; 33:50}

اور اگر تمہاری کوئی بیوی تمہارے ہاتھ سے نکل جائے اور
کافروں کی طرف چلی جائے پھر تمہیں اس کے بدلے کا
وقت مل جائے تو جن کی بیویاں چلی گئی ہیں انہیں ان کے
اخراجات کے برابر ادا کردو اور اس اللہ سے ڈرتے رہو
جس پر تم ایمان رکھتے ہو(۱۱)

और यदि तुम्हारी कोई पत्नी तुम्हारे हाथ से निकल जाए और नास्तिकों की ओर चली जाए फिर तुम्हें उसके बदले का समय मिल जाये तो जिनकी पत्नीयां चली गई है उन्हें उनके व्यय के बराबर चुका कर दो और उस ईश्वर से डरते रहो जिस पर तुम विश्वास रखते हो (11)

اے رسول جب تمہارے پاس مسلمان عورتیں آئیں اور
اس بات پر عہد کریں کہ وہ اللہ کے ساتھ کسی کو شریک نہ
کریں گی چوری نہ کریں گی زنا کاری نہ کریں گی اور اپنی
اولاد کو نہ مار ڈالیں گی اور کوئی ایسا بہتان نہ باندھیں گی جو
خود اپنے ہاتھوں اور پیروں کے درمیان گھڑ لیں اور کسی
نیک کام میں تیری بے حکمی نہ کریں گی تو آپ ان سے
بیعت کرلیا کریں اور ان کے لئے اللہ سے مغفرت طلب
کریں بے شک اللہ بخشنے والا مہربان ہے(۱۲)

ऐ रसूल जब तुम्हारे पास मुसलमान औरतें आए और इस बात पर प्रण करें कि वह ईश्वर के साथ किसी को साझी न करेंगी चोरी न करेंगी कुकर्म न करेंगी और अपनी सन्तान को न मार डालेंगी और कोई ऐसा दोषारोपण न बांधेंगी जो स्वयं अपने हाथों और पैरों के मध्य घड़ ले और किसी सत्कर्म में आपकी अवज्ञा न करेंगी तो आप उनसे वचन ले लिया करें और उनके लिए ईश्वर से क्षमा मांगा करें निःसन्देह ईश्वर क्षमा करने वाला दयालु है (12)

اے ایمان والو! اللہ نے سورت کے شروع میں جو بتا دیا
ہے کہ کافروں کو دوست نہ بنانا تو اس حکم کی خلاف ورزی نہ
کرنا کیونکہ ان پر اللہ کا غضب ہوا ہے وہ وہ ہیں جو آخرت
سے اسی طرح مایوس ہیں جس طرح مایوس تھے وہ کافر
قبروں میں جا چکے ہیں یعنی کافر دوبارہ جی اٹھنے اور آخرت کا یقین نہیں رکھتے (۱۳)

ऐ आस्तिको! ईश्वर ने सूरत के आरम्भ में जो बता दिया है कि नास्तिकों को मित्र न बनाना तो इस आदेश की अवज्ञा न करना क्योंकि उन पर ईश्वर का क्रोध हुआ है वह वह है जो परलोक से उसी प्रकार निराश है जिस प्रकार निराश थे वह काफिर जो समाधियों में जा चुके हैं अर्थात काफिर पुनः जी उठने और परलोक का विश्वास नहीं रखते (13)

سورت الصف-مدنی(۶۱)

सूरतुस्सफ - मक्की (61)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

جو چیز آسمانوں میں ہے اور جو زمین میں ہے سب اللہ کی
پاکی بیان کرتی ہیں اور وہ غالب حکمت والا ہے(۱)
اے ایمان والو! تم ایسی باتیں کیوں کہا کرتے ہو جو کرتے
نہیں (۲)
اللہ اس بات سے سخت بیزار ہے کہ کہو تو سب کچھ مگر کرو کچھ
نہیں (۳)

जो वस्तु आकाशों में है और जो पृथ्वी में है सब ईश्वर की पवित्रता वर्णन करती हैं और वह अधिपति युक्ति वाला है (1)
ऐ ईमान वालो! तुम ऐसी बातें क्यों कहा करते हो जो करते नही (2)
ईश्वर इस बात से कठोर रूष्ट है कि कहो तो सब कुछ परन्तु करो कुछ नही (3)

(زبانی جہاد کا دعویٰ کرنے اور جان و مال کی قربانی کرنے
میں آسمان و زمین کا فرق ہے) اللہ انہیں لوگوں کو دوست
رکھتا ہے جو اس کی راہ میں اس طرح صف بستہ ہو کر لڑیں گے گویا وہ ایک سیسہ
پلائی دیوار ہے(۴)

(मुख से धर्म युद्ध का वाद करने और जान व माल का बलिदान देने में आकाश व पृथ्वी का अन्तर है) ईश्वर उन्ही लोगों को मित्र रखता है जो उसके मार्ग में इस प्रकार पंक्तिबद्ध होकर लड़ेंगे मानो वह एक सीसा पिलाई दिवार है (4)

(مسلمانو! بنی اسرائیل کی کج روی سے سبق حاصل کرو دیکھو)
جب موسیٰ نے اپنی قوم سے کہا کہ بھائیو! تم مجھے کیوں
ایذا دیتے ہو یعنی جیسا میں کہتا ہوں ویسا عمل کیوں نہیں کرتے
، بہانہ کیوں بناتے ہو. حالانکہ تم جانتے ہو کہ میں تمہاری
طرف اللہ کا بھیجا ہوا آیا ہوں تو جب ان لوگوں نے کجروی کی (تو اس کی سزا میں) اللہ
نے بھی ان کے دل ٹیڑھے کر دیے اور اللہ نافرمانوں کو ہدایت نہیں دیتا (۵)[۹:۵۱]

(मुसलमानो! बनी इसराईल की कुटिल प्रकृति से शिक्षा प्राप्त करो देखो) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि भाईयो! तुम मुझे क्यों कष्ट देते हो अर्थात जैसा मैं कहता हूं वैसा कर्म क्यों नही करते, बहाना क्यों बनाते हो अर्थात जैसा मैं कहता हूं वैसा कर्म क्यों नही करते बहाना क्यों बनाते हो, यद्यपि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी ओर ईश्वर का भेजा हुआ आया हूं तो जब उन लोगों ने कुटिल स्वभाव किया (तो उसके दण्ड में) ईश्वर ने भी उनके हृदय टेढ़े कर दिए और ईश्वर अवज्ञाकारों को पथ प्रदर्शन नहीं देता (5) {51:9}

اور (وہ وقت یاد کرو) جب مریم کے بیٹے عیسیٰ نے کہا اے

और (वह समय याद करो) जब मरयम के पुत्र

ईसा ने कहा ऐ बनी इसराईल मैं तुम्हारी ओर ईश्वर का भेजा हुआ ईशदूत हूं और पुष्टि करता हूं उस पुस्तक की जो सुरक्षा के मध्य शक्ति शाली हाथों में तौरेत से तुम्हारे पास उपस्थित है और एक रसूल के आने की मंगल सूचना देता हूं जो मेरे बाद आएगा जिसका नाम मुहम्मद होगा फिर जब वह मुहम्मद उनके पास खुला चिन्ह (अर्थात कुरआन) लेकर आया तो उन्होंने कहा कि यह तो खुला जादू है (6)

بنی اسرائیل میں تمہاری طرف اللہ کا بھیجا ہوا رسول ہوں اور تصدیق کرتا ہوں اس کتاب کی جو حفاظت کے درمیان طاقتور ہاتھوں میں توریت سے تمہارے پاس موجود ہے. اور ایک اور رسول کے آنے کی بشارت دیتا ہوں. جو میرے بعد آئے گا جس کا نام محمدؐ ہوگا. پھر جب وہ محمدؐ ان کے پاس کھلی نشانیاں (یعنی قرآن) لے کر آیا تو انہوں نے کہا کہ یہ تو کھلا جادو ہے(۶)

नोट- आयत में अंकित है कि ईसा ने कहा मेरे बाद मुहम्मद आएगा अर्थात मेरे बाद, इसका स्पष्ट अर्थ है कि मौत के बाद और मुहम्मद आ गये, तो ईसा की मृत्यु के बाद ही तो आना था अतः ईसा की मृत्यु हो चुकी और यदि कथानुसार मुसलमानों के ईसा जीवित है और कयामत के निकट आकर मौत पाएंगे तो अभी मुहम्मद नही आये ईसा की मृत्यु होने के बाद आएंगे (नऊजू) देखा बात क्या से क्या हो रही है, अतः ईसा की मौत हो चुकी अब वह जीवित नही है और उनकी मृत्यु के बाद ही मुहम्मद स0 आए और वह भी मृतक हो गए इसकी विवेचना पहले हो चुकी है.

نوٹ:۔آیت میں درج ہے کہ عیسٰی نے کہا میرے بعد محمدؐ آئے گا یعنی مرے بعد. اس کا صاف مطلب ہے کہ موت کے بعد. اور محمدؐ آگئے تو عیسٰی کی موت کے بعد ہی تو آنا تھا. اس لئے عیسٰی کی موت ہو چکی اور اگر بقول مسلمانوں کے عیسٰی زندہ ہیں اور قیامت کے قریب آکر موت پائیں گے تو ابھی محمدؐ نہیں آئے عیسٰی کی موت ہونے کے بعد آئیں گے (نعوذ) دیکھا بات کیا سے کیا ہو رہی ہے. اس لئے عیسٰی کی موت ہو چکی. اب وہ زندہ نہیں ہیں اور ان کی موت کے بعد ہی محمدؐ آئے اور وہ بھی انتقال کر گئے. اس کی بحث پہلے ہو چکی ہے

और उससे बढ़कर और कौन अत्याचारी हो सकता है जिसको इस्लाम की ओर बुलाया जाए और वह (उल्टा) ईश्वर पर झूठ दोष लगाए (और कहे कि कुरआन उसका कथन नही है) ऐसे अत्याचारियों को ईश्वर पथ प्रदर्शन नही दिया करता (7)

اور اس سے بڑھ کر اور کون ظالم ہو سکتا ہے جس کو اسلام کی طرف بلایا جائے اور وہ (الٹا) اللہ پر جھوٹ بہتان باندھے (اور کہے کہ قرآن اس کا کلام نہیں ہے) ایسے ظالموں کو اللہ ہدایت نہیں دیا کرتا (۷)

वह लोग चाहते है कि ईश्वर के प्रकाश (अर्थात इस्लाम को) अपने मुखों की फूंकों अर्थात काल्पनिक कथनों से बुझा दें (परन्तु) ईश्वर ने निश्चित कर लिया है कि वह अपने प्रकाश को पूरा करके रहेगा चाहे नास्तिकों को कितना ही अप्रिय हो (8)

وہ لوگ چاہتے ہیں کہ اللہ کے نور (یعنی اسلام کو) اپنے منہوں کی پھونکوں یعنی فرضی باتوں سے بجھا دیں (لیکن) اللہ نے طے کر لیا ہے کہ وہ اپنے نور کو پورا کر کے رہے گا خواہ کافروں کو کتنا ہی ناگوار ہو (۸)

कहो वही तो है जिसने अपने रसूल मुहम्मद स0 को पथ प्रदर्शन और सच्चा धर्म देकर भेजा ताकि (इन्सानों के बनाए हुए) सब धर्मों पर प्रकट अधिपति कर दे चाहे अनेकेश्वर वादियों को बुरा ही लगे (9)

کہو وہی تو ہے جس نے اپنے رسول محمدؐ کو ہدایت اور سچا دین دے کر بھیجا تاکہ (انسانوں کے بنائے ہوئے) تمام دینوں پر ظاہر غالب کر دے چاہے مشرکوں کو برا ہی لگے (۹)

मुसलमानो! क्या तुम्हें ऐसा व्यापार बताऊं जो तुम्हें (परलोक के) पीड़ा देने वाले कष्ट से बचाले (10)

مسلمانو! کیا تمہیں ایسی تجارت بتاؤں جو تمہیں (آخرت کے) دردناک عذاب علیم سے بچا لے(۱۰)

(वह यह कि) ईश्वर पर और उसके रसूल पर विश्वास लाओ और ईश्वर के मार्ग में अपने माल और जान से प्रयास करो यदि समझो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है (11)

(وہ یہ کہ) اللہ پر اور اس کے رسول پر ایمان لاؤ اور اللہ کی راہ میں اپنے مال اور جان سے جدوجہد کرو اگر سمجھو تو یہ تمہارے حق میں بہتر ہے(۱۱)

(यदि ऐसा करोगे तो) ईश्वर तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम को ऐसे उपवनों में प्रविष्ट करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी और (तुम्हारे निवास के लिए) सदैव के स्वर्ग में पवित्र भवन में होंगे वह बड़ी सफलता है (12)

(اگر ایسا کرو گے تو) اللہ تمہارے گناہ بخش دے گا اور تم کو ایسے باغوں میں داخل کرے گا جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی اور (تمہارے قیام کے لئے) ابدی جنتوں میں پاکیزہ مکانات ہوں گے وہ بڑی کامیابی ہے(۱۲)

और दूसरी वस्तु जिसकी तुम्हारे मनों में बहुत अधिक इच्छा है (अर्थात) ईश्वर की ओर से सहायता और निकट की विजय (तो वह भी मिलेगी) ऐ मुहम्मद स0 मुसलमानों को इसकी मंगल सूचना सुना दो (13) {30:1से6}

اور دوسری چیز جس کی تمہارے دلوں میں بہت زیادہ خواہش ہے (یعنی) اللہ کی طرف سے مدد اور قریبی فتح (تو وہ بھی ملے گی) اے محمدؐ مسلمانوں کو اس کی خوش خبری سنا دو(۱۳) [۳۰:۱ سے ۶]

आस्तिको! ईश्वर के धर्म के सहायक बन जाओ जैसा कि मरयम के पुत्र ईसा ने (अपने) पवित्र साथियों से (जो उस पर विश्वास ले आए थे) कहा था ईश्वर की ओर (बुलाने में) कौन मेरे सहायक है? पवित्र साथियों ने उत्तर दिया था हम ईश्वर के

مسلمانو! اللہ کے دین کے مددگار بن جاؤ جیسا کہ مریم کے بیٹے عیسٰی نے (اپنے) حواریوں سے (جو اس پر ایمان لے آئے تھے) کہا تھا اللہ کی طرف (بلانے میں) کون میرے مددگار ہیں؟ حواریوں نے جواب دیا تھا ہم اللہ

सहायक है ईश्वर के धर्म के (परन्तु बनी इसराईल में दो दल हो गए) एक दल तो ईमान ले आया और (दूसरा) दल इनकार कर गया तो जो लोग ईमान ले आए हमने उनके शत्रु के मुकाबिले में उनका समर्थन किया तो वह अधिपति हो गए (14)

کے دین کے مددگار ہیں (لیکن بنی اسرائیل میں دو فرقے ہو گئے) ایک فرقہ تو ایمان لے آیا اور (دوسرا) فرقہ انکار کر گیا تو جو لوگ ایمان لے آئے ہم نے ان کے دشمن کے مقابلہ میں ان کی تائید کی تو وہ غالب آ گئے (۱۴)

नोट- आयत के शब्द से प्रकट हो रहा है कि ईसा से भी शत्रुओं का युद्ध हुआ और ईसा युद्ध में अधिपति रहे.

نوٹ:۔آیت کے الفاظ سے ظاہر ہو رہا ہے کہ عیسٰی سے بھی دشمنوں کی جنگ ہوئی اور عیسٰی جنگ میں غالب رہے۔

सूरतुल जुमआ - मदनी (62)

سورۃ الجمعہ۔ مدنی (۶۲)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

जो वस्तुऐं आकाशों में है और जो वस्तुऐं पृथ्वी में हैं सब ईश्वर की पवित्रता का वर्णन कर रही है जो सारे संसार का राजा पवित्र अस्तित्व शक्तिशाली युक्ति वाला है (1)

جو چیزیں آسمانوں میں ہیں اور جو چیزیں زمین میں ہیں سب اللہ کی تسبیح کر رہی ہیں جو سارے جہاں کا بادشاہ پاک ذات زبردست حکمت والا ہے (۱)

कहो वही तो है जिसने मक्का वाले उम्मीयों में एक ईशदूत उन्ही में से मुहम्मद स० को रसूल बनाकर भेजा जो उनको उसकी आयतें अर्थात कानून पढ़ते हैं और उनको पवित्र करते हैं और ईश्वर की पुस्तक और युक्ति सिखाते हैं और इससे पहले तो उनमें के कुछ लोग खुली पथ भ्रष्टता में थे और कुछ लोग सत्य की खोज में थे (2) {3:75;2:129}

کہو وہی تو ہے جس نے مکہ والے امیوں میں ایک رسول انہیں میں سے محمد کو رسول بنا کر بھیجا جو ان کے سامنے اس کی آیتیں یعنی قانون پڑھتے ہیں اور ان کو پاک کرتے ہیں اور اللہ کی کتاب اور دانائی سکھاتے ہیں اور اس سے پہلے تو ان میں کے کچھ لوگ صریح گمراہی میں تھے اور کچھ لوگ حق کی تلاش میں تھے (۲) [۱۲۹:۲:۷۵:۳]

(और ईश्वर ने उस रसूल को) और लोगों की ओर भी भेजा है जो अभी उन मुसलमानों से नही मिले (परन्तु सम्मिलित होते रहेंगे) और वह अधिपति युक्ति वाला है (3)

(اور اللہ نے اس رسول کو) اور لوگوں کی طرف بھی بھیجا ہے جو ابھی ان مسلمانوں سے نہیں ملے (مگر شامل ہوتے رہیں گے) اور وہ غالب حکمت والا ہے (۳)

यह ईश्वर की कृपा दया है जिसे चाहता है (जो योग्य होता है) उसे प्रदान करता है और ईश्वर बड़े कृपा दया का स्वामी है (4)

یہ اللہ کا فضل ہے جسے چاہتا ہے (جو اہل ہوتا ہے) اسے عطا کرتا ہے اور اللہ بڑے فضل کا مالک ہے (۴)

जिन लोगों को तौरेत पर व्यवहार करने का उत्तरदायी बनाया गया परन्तु उन्होंने उसका भार नही उठाया (अर्थात न स्वयं समझे न दूसरों को समझ कर व्यवहार करने दिया) उनकी उपमा उस गधे जैसी है जिस पर बड़ी बड़ी पुस्तकें लदी हों जो लोग ईश्वर की आयतों को झुठलाते हैं उनकी उपमा बुरी है और ईश्वर अत्याचारियों को पथ प्रदर्शन नही देता (5)

جن لوگوں کو توریت پر عمل کرنے کا ذمہ دار بنایا گیا مگر انہوں نے اس کا وزن نہیں اٹھایا (یعنی نہ خود سمجھے نہ دوسروں کو سمجھ کر عمل کرنے دیا) ان کی مثال اس گدھے جیسی ہے جس پر بڑی بڑی کتابیں لدی ہوں جو لوگ اللہ کی آیتوں کو جھٹلاتے ہیں ان کی مثال بُری ہے اور اللہ ظالموں کو ہدایت نہیں دیتا (۵)

कहो कि ऐ यहूद यदि तुमको यह वाद हो कि तुम ही ईश्वर के मित्र हो और लोग नही तो यदि सच्चे हो तो मौत की इच्छा करो (7)

کہدو کہ اے یہود اگر تم کو یہ دعویٰ ہو کہ تم ہی اللہ کے دوست ہو اور لوگ نہیں تو اگر تم سچے ہو تو موت کی آرزو کرو (۶)

और उसके कारण जो उनके हाथों ने करके आगे भेजा है कदापि उसकी कामना नहीं करेंगे और ईश्वर अत्याचारियों से भलीभांति अवगत है (7)

اور اس کے سبب جو ان کے ہاتھوں نے کر کے آگے بھیجا ہے ہرگز اس کی آرزو نہیں کریں گے اور اللہ ظالموں سے خوب واقف ہے (۷)

कह दो कि मृत्यु जिससे तुम भाग रहे हो वह तुम्हें आकर रहेगी और तुम परोक्ष और प्रकट के जानने वाले ईश्वर के सामने प्रस्तुत किये जाओगे फिर जो जो कुछ तुम दुनिया में करते रहे हो वह तुम्हें सब बताऐगा (8)

کہدو کہ موت جس سے تم بھاگ رہے ہو وہ تمہیں آکر رہے گی اور تم غیب اور ظاہر کے جاننے والے اللہ کے سامنے پیش کئے جاؤ گے جو جو کچھ تم دنیا میں کرتے رہے ہو وہ تمہیں سب بتائے گا (۸)

आस्तिको! जब जुमे के दिन नमाज के लिए अज़ान

مومنو! جب جمعہ کے دن نماز کے لئے اذان دی جائے تو

दी जाए तो ईश्वर की याद (अर्थात नमाज) के लिए जल्दी करो और क्रय विक्रय बन्द कर दो यदि समझो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है (और तुम को यह उपदेश किया जाता है कि यहूदियों की भांति न हो जाना) (9)

اللہ کی یاد (یعنی نماز) کے لئے جلدی کرواور خرید وفروخت بند کردو،اگر سمجھو تو یہ تمہارے حق میں بہتر ہے(اورتم کو یہ نصیحت کی جاتی ہے کہ یہودیوں کی طرح نہ ہوجانا)(۹)

फिर जब नमाज हो चुके तो अपनी अपनी राह लो और ईश्वर का कृपा दया खोजो और ईश्वर को बहुत याद करते रहो ताकि सफलता पाव (10)

پھر جب نماز ہو چکے تو اپنی اپنی راہ لو اور اللہ کا فضل روزی تلاش کرو اور اللہ کو بہت یاد کرتے رہو تا کہ فلاح پاؤ(۱۰)

नोट- ईश्वर ने मुसलमानों को बताया कि जुमे की अजान पर हर कार्य बन्द कर दो नमाज को आओ और नमाज से निवृत्त होकर ईश्वर का कृपा दया खोजने के लिए पृथ्वी में फैल जाओ, यह आदेश सुनने के बाद तो कोई प्रश्न उत्पन्न नही होता कि मुसलमान नमाज या भाषण में मुहम्मद स0 को छोड़कर माल क्रय करने या खेल देखने चले जाऐं इसके विपरीत ईश्वर उन नास्तिकों की पहचान बता रहा है कि मुहम्मद सुनो उनका क्या हाल है वह यह कि)

نوٹ:۔اللہ نے مسلمانوں کو بتایا کہ جمعہ کی اذان پر ہر کام بند کردو نماز کو آؤ اور نماز سے فارغ ہو کر اللہ کا فضل تلاش کرنے کے لئے زمین میں پھیل جاؤ۔یہ حکم سننے کے بعد تو کوئی سوال پیدا نہیں ہوتا کہ مسلمان نماز یا خطبہ میں محمدؐ کو چھوڑ کر مال خریدنے یا کھیل دیکھنے چلے جائیں اس کے خلاف اللہ ان کافروں کی شناخت بتا رہا ہے کہ محمد سنو ان کا حال کیا ہے وہ یہ کہ)

और जब वह नास्तिक लोग सोदा बिकता देखेंगे या खेल तो उसके लिए भाग जाऐंगे और आपको खड़ा छोड़ जाऐंगे कह दो कि जो वस्तु ईश्वर के यहां है वह दर्शन और व्यापार से कही उत्तम है और ईश्वर सबसे अच्छी जीविका देने वाला है (11)

اور جب وہ کافر لوگ سودا بکتا دیکھیں گے یا کھیل تو اس کے لئے بھاگ جائیں گے اور آپ کو کھڑا چھوڑ جائیں گے کہہ دو کہ جو چیز اللہ کے یہاں ہے وہ تماشہ اور تجارت سے کہیں بہتر ہے اور اللہ سب سے بہتر رزق دینے والا ہے(۱۱)

नोट-इस सूरत के आरम्भ में आयत एक से चार तक ईश्वर ने मुहम्मद स0 और उस समय के मुसलमानों का उल्लेख किया और 5 से 8 तक यहूद के कर्मों और उनकी दशा का उल्लेख किया, आयत 9 और 10 में जुमे की नमाज का उल्लेख किया और यह बताया कि अजान होने पर मस्जिद में आओ और नमाज पढ़ने के बाद जाओ, यह आदेश सुनने के बाद फिर कौन विरोध करेगा इसके बाद आयत 11 में फिर कपटियों और काफिरों की दशा ईश्वर बता रहा है.

نوٹ:۔اس سورت کے شروع میں آیت ایک سے ۴ تک اللہ نے محمدؐ اور اس وقت کے مسلمانوں کا ذکر کیا اور ۵ سے ۸ تک یہود کے کارناموں اور ان کی حالت کا ذکر کیا۔آیت ۹ اور دس میں نماز جمعہ کا ذکر کیا اور یہ بتایا کہ اذان ہونے پر مسجد میں آؤ اور نماز پڑھنے کے بعد جاؤ۔یہ حکم سننے کے بعد پھر کون خلاف ورزی کرے گا اس کے بعد آیت ۱۱ میں پھر منافقین اور کافروں کی حالت اللہ بتا رہا ہے۔

नोट- (62:11) का आयत में नास्तिकों की दशा का उल्लेख है परन्तु इस आयत की तफसीर में कुछ ऐसे शब्द लिखे मिलते है जिनकी कोई वास्तविकता नही और सहाबा का अपमान है और सम्भावतः यहां भी श्रीमान अली को बचा लिया गया है क्या लिखा है अवलोकन हो,

نوٹ:۔۶۲:۱۱ کا۔آیت میں کافروں کی حالت کا ذکر ہے مگر اس آیت کی تفسیر میں کچھ ایسے الفاظ لکھے ملتے ہیں جن کی کوئی حقیقت نہیں اور صحابہ کرام کی توہین ہے اور غالباً یہاں بھی حضرت علی کو بچا لیا گیا ہے کیا لکھا ہے ملاحظہ ہو۔

यह मदीने के आरम्भ समय की घटना है शाम से एक व्यापारिक दल जुमे की नमाज के समय आया और उसने ढ़ोल ताशे बजाने आरम्भ किये ताकि बस्ती के लोगों को इसके आगमन का पता चल जाऐ रसूल उस समय जुमे का भाषण दे रहे थे ढ़ोल ताशों की ध्वनि सुनकर लोग व्याकुल हो गए और बारह व्यक्तियों के अतिरिक्त शेष दल की ओर दौड़ गए मोदूदी साहब,

یہ مدینے کے ابتدائی زمانے کا واقعہ ہے۔شام سے ایک تجارتی قافلہ عین نماز جمعہ کے وقت آیا اور اس نے ڈھول تاشے بجانے شروع کئے تا کہ بستی کے لوگوں کو اس کی آمد کا پتہ چل جائے۔رسول اللہ اس وقت جمعہ کا خطبہ ارشاد فرما رہے تھے۔ ڈھول تاشوں کی آوازیں سن کر لوگ بے چین ہو گئے اور ۱۲/آدمیوں کے علاوہ باقی قافلہ کی طرف دوڑ گئے(مودودی صاحب)

एक व्याख्या में लिखा है कि मुहम्मद स0 नमाज पढ़ रहे थे तब दल की ध्वनि आई और 12 व्यक्तियों को छोड़कर सब भाग गए.

ایک تفسیر میں لکھا ہے کہ محمدؐ نماز پڑھا رہے تھے تب قافلہ کی آواز آئی اور ۱۲/آدمیوں کو چھوڑ کر سب بھاگ گئے۔

आयतों का अवतरित क्रम 110 लिखा गया है मानो इस सूरत के बाद केवल 4 सूरतें और अवतरित हुई और ऊपर आप पढ़ चुके है कि मदीने के आरम्भिक समय की घटना है तो मानो बाद को लगभग 7 सालों में केवल चार सूरतें ही अवतरित हुई, इसके अतिरिक्त कुछ आलिमों का कथन है कि सूरत अन्नास और फ़लक कुरआन की सूरत नही तो इस प्रकार सूरत जुमा के बाद केवल दो सूरतें ही रह जाती है जो अवतरित हुई, उनमें से एक नसर है, परन्तु इतिहास में लिखा है कि सूरत जुमा के बाद चौदह सूरतें अवतरित हुई तो इस हिसाब से सूरत जुमा का अवतरित क्रम 98 होता है अब बताओ क्या ठीक है और क्या मिथ्या, क्या लिखते समय यह विचार नही किया कि इसका अवतरण क्रम क्या है? दूसरी बात यह कि आयत 9 और 10 में आस्तिकों को जुमे के नियम बताए जा रहे है कि नमाज जुमा के लिए अजान पर आओ और जब तक नमाज पूरी न हो मस्जिद में

آیتوں کا نزولی نمبر ۱۱۰ لکھا گیا ہے گویا اس سورت کے بعد صرف چار سورتیں اور نازل ہوئیں۔اور اوپر آپ پڑھ چکے ہیں کہ مدینے کے ابتدائی زمانے کا واقعہ ہے تو گویا بعد کو تقریباً ۷ سالوں میں صرف ۴ سورتیں ہی نازل ہوئیں۔ علاوہ ازیں کچھ عالموں کا قول ہے کہ سورت الناس اور فلق قرآن کی سورت نہیں تو اس طرح سورت جمعہ کے بعد صرف دو سورتیں ہی رہ جاتی ہیں جو نازل ہوئیں۔ ان میں سے ایک النصر ہے لیکن تاریخ میں لکھا ہے کہ سورت جمعہ کے بعد ۱۴ سورتیں نازل ہوئیں تو اس حساب سے سورت جمعہ کا نزولی نمبر ۹۸ ہوتا ہے۔
اب بتاؤ کیا صحیح ہے اور کیا غلط۔
کیا لکھتے وقت یہ غور نہیں کیا کہ اس کا نزولی نمبر کیا ہے؟ دوسری بات

रहो, नमाज पूरी होने पर मस्जिद से जाओ तो ऐसी स्थिति में कोई भी मुसलमान अवज्ञा कैसे कर देता, और यह भी खेद जनक बात है कि केवल 12 व्यक्ति बचे और सम्भावतः वही हो जिनको शिया लोगों ने आस्तिक लिखा है, चूंकि मुहम्मद स0 के देहान्त के बाद उनका मानना है कि कुछ को छोड़कर सब विमुख हो गये थे तो शायद वह चन्द व्यक्ति यही हों (नऊज़ू) विचार करो.

वास्तविकता यह है कि मुहम्मद स0 को छोड़ने वाले मुसलमान नही थे न वह ऐसा कर सकते थे अपितु ईश्वर ने काफ़िरों के विषय में बताया है जो मुहम्मद स0 की बात सुनना ही नही चाहते थे और यदि कभी मुहम्मद स0 को यह अवसर मिल जाता था कि कुछ लोग एक जगह एकत्र हैं तो मुहम्मद स0 अपनी बात आरम्भ कर देते थे तथापि वह लोग इस ताक में रहते थे कि कोई बहाना मिले और वह भागें, उसको ही बताया है कि ऐ मुहम्मद स0 जब वह लोग कोई खेल तमाश देखेंगे तो आपको खड़ा छोड़कर भाग जाऐंगे वह काफ़िर अब तक भी ऐसा ही करते रहे हैं, आप कोई चिन्ता न करें अपना कार्य जारी रखें आपका कार्य धर्म पहुंचा देना है.

नमाज या भाषण का तो आयत में उल्लेख नही है और नमाज में नास्तिक लोग कब आते थे यदि लोगों के जाने के बाद का उल्लेख होता तो कहा यह जाता कि ऐ मुहम्मद स0 वह लोग आपको छोड़कर चले गये परन्तु आयत में है कि वह चले जायेंगे और आपको खड़ा छोड़ जायेंगे अतः जिनकी सूचना है वह अनेकेश्वर वादी और काफ़िर हैं और आज भी ऐसे व्यक्ति धर्म की बात सुनना नही चाहते और मोमिन तो उठकर जाते ही नही ऊपर जो लिखा गया है उस पर विचार करो और आयत के शब्द देखकर अनुवाद करो.

یہ کہ آیت ۹ اور دس میں مومنوں کو جمعہ کے آداب بتائے جا رہے ہیں. کہ نماز جمعہ کے لئے اذان پر آؤ اور جب تک نماز پوری نہ ہو مسجد میں رہو نماز پوری ہونے پر مسجد سے جاؤ تو ایسی حالت میں کوئی بھی مسلمان خلاف ورزی کیسے کر دیتا. اور یہ بھی افسوس ناک بات ہے کہ صرف ۱۲ آدمی بچے اور غالباً وہی ہوں جن کو شیعہ حضرات نے مومن لکھا ہے. چونکہ محمدؐ کی وفات کے بعد ان کے عقیدے کے مطابق چند کو چھوڑ کر سب مرتد ہو گئے تھے شائد وہ چند آدمی یہی ۱۲ ہوں (نعوذ) غور کرو.

حقیقت یہ ہے کہ محمدؐ کو چھوڑنے والے مسلمان نہیں تھے نہ وہ ایسا کر سکتے تھے بلکہ اللہ نے ان کافروں کے بارے میں بتایا ہے جو محمدؐ کی بات سننا ہی نہیں چاہتے تھے اور اگر کبھی محمدؐ کو یہ موقع مل جاتا تھا کہ کچھ لوگ اکٹھے ہیں تو محمدؐ اپنی بات شروع کر دیتے تھے تاہم وہ لوگ اس تاک میں رہتے تھے کہ کوئی بہانہ ملے اور وہ بھاگیں. اس کو ہی بتایا ہے کہ اے محمدؐ جب وہ لوگ کوئی کھیل تماشہ دیکھیں گے تو تم کو کھڑا چھوڑ کر بھاگ جائیں گے وہ کافر اب تک بھی ایسا ہی کرتے رہے ہیں آپ کوئی فکر نہ کریں اپنا کام جاری رکھو آپ کا کام دین پہنچا دینا ہے.

نماز یا خطبہ کا تو آیت میں ذکر نہیں ہے اور نماز میں کافر لوگ کب آتے تھے اگر لوگوں کے جانے کے بعد کا ذکر ہوتا تو کہا یہ جاتا کہ اے محمدؐ وہ لوگ آپ کو چھوڑ کر چلے گئے. لیکن آیت میں ہے کہ وہ چلے جائیں گے. اور آپ کو کھڑا چھوڑ جائیں گے. اس لئے جن کی خبر ہے وہ مشرک اور کافر ہیں اور آج بھی ایسے آدمی دین کی بات سننا نہیں چاہتے اور مومن تو اٹھ کر جاتے ہی نہیں اوپر جو لکھا گیا ہے اس پر غور کرو اور آیت کے الفاظ دیکھ کر ترجمہ کرو.

सूरतुल मुनाफ़िक़ून - मदनी (63)

سورت المنافقون ۔ مدنی (۶۳)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

(ऐ मुहम्मद स0) जब कपटी आयेंगे आपके पास तो कहेंगे हम मानते हैं तुम ईश्वर के रसूल हो और मैं ईश्वर जानता हूं कि आप निःसन्देह ईश्वर के ईशदूत हैं परन्तु मैं ईश्वर प्रकट किये देता हूं कि वह लोग कपटी अवश्य झूटे हैं (ऐसे व्यक्तियों से सावधान रहना सूचित किया जाता है) (1)

(اے محمدؐ) جب منافق آئیں گے آپ کے پاس تو کہیں گے ہم قائل ہیں تم اللہ کے رسول ہو اور میں اللہ جانتا ہوں کہ آپ یقیناً اللہ کے رسول ہیں مگر میں اللہ ظاہر کئے دیتا ہوں کہ وہ لوگ منافق ضرور جھوٹے ہیں (ایسے آدمیوں سے ہوشیار رہنا خبردار کیا جاتا ہے) (۱)

वह लोग अपनी शपथों को ढाल बना रहे हैं और उनके द्वारा लोगों को ईश्वर के धर्म से रोक रहे हैं निःसन्देह जो कार्य वह कर रहे हैं वह बुरे हैं (2)

وہ لوگ اپنی قسموں کو ڈھال بنا رہے ہیں اور ان کے ذریعہ لوگوں کو اللہ کے دین سے روک رہے ہیں بےشک جو کام وہ کر رہے ہیں وہ بُرے ہیں (۲)

यह बुराई उनमें इसलिए हुई कि वह लोग पहले विश्वास लाए फिर कुफ़्र का मार्ग ग्रहण कर लिया (और आस्तिकों के विरुद्ध कपट करने लगे) तो ईश्वर के नियम ने (उनके कुफ़्र के कारण) उनके हृदय व मस्तिष्क पर मोहर लगा दी तो (अब सच्ची बात) उनकी समझ में नही आयेगी (3)

یہ بُرائی اُن میں اس لئے ہوئی کہ وہ لوگ پہلے تو ایمان لائے پھر کفر کا شیوہ اختیار کر لیا (اور مسلمانوں کے خلاف سازش کرنے لگے) تو اللہ کے قانون نے (ان کے کفر کی وجہ سے) ان کے دل و دماغ پر مہر لگا دی تو (اب سچی بات) ان کی سمجھ میں نہیں آئے گی (۳)

और जब आप उनको देखोगे तो उनके शरीर आपको बहुत अच्छे लगेंगे और यदि बात करोगे तो ऐसी कि आप ध्यानसे सुनो (परन्तु बुद्धि से रहित) मानो दीवार से लगाई हुई बेकार लकड़ियां हैं (कायर इतने कि) हर वेग की ध्वनि को समझेंगे कि उनही पर आ पड़ी व तुम्हारे शत्रु हैं आप उनसे बचे रहो ईश्वर का नियम उन्हें मार डालेगा वह कहां बहके फिरते हैं(4)

اور جب آپ ان کو دیکھو گے تو ان کے جسم آپ کو بہت اچھے لگیں گے اور اگر گفتگو کریں گے تو ایسی کہ آپ توجہ سے سنو (مگر عقل سے خالی) گویا دیوار سے لگائی ہوئی بےکار لکڑیاں ہیں (بزدل اتنے کہ) ہر زور کی آواز کو سمجھیں گے کہ ان ہی پر آ پڑی وہ تمہارے دشمن ہیں آپ ان سے بچے رہو اللہ کا قانون انہیں مار ڈالے گا وہ کہاں بہکے پھرتے ہیں (۴)

और जब उनसे कहा जाएगा कि आओ ईश्वर का रसूल तुम्हारे लिए क्षमा की प्रार्थना करें तो वह लोग अपने सिर फेरेंगे और तुम उनको देखोगे कि दंभ करते हुए मुख फेर लेते हैं (5)

اور جب ان سے کہا جائے گا کہ آؤ اللہ کا رسول تمہارے لئے مغفرت کی دعا کریں تو وہ لوگ اپنے سر پھیریں گے اور تم ان کو دیکھو گے کہ تکبر کرتے ہوئے منہ پھیر لیتے ہیں (۵)

(ऐ रसूल हम जानते हैं कि आप यह चाहते हैं कि यह लोग किसी प्रकार तबाही से बच जाएं) इसलिए आपने उनके लिए क्षमा की प्रार्थना भी की और समझाया भी परन्तु ईश्वर उन्हें कदापि क्षमा न करेगा ईश्वर ऐसे दुष्ट लोगों को सीधा मार्ग नहीं दिखाता (6) {9:81,84}

(اے رسول ہم جانتے ہیں کہ آپ یہ چاہتے ہیں کہ یہ لوگ کسی طرح تباہی سے بچ جائیں) اس لئے آپ نے ان کے لئے دعاء مغفرت بھی کی اور سمجھایا بھی مگر اللہ انہیں ہرگز نہ بخشے گا اللہ ایسے فاسق لوگوں کو سیدھی راہ نہیں دکھاتا (۶) [۹:۸۰ سے ۸۴]

ऐसे ही लोग तो हैं जो लोगों से कहेंगे कि जो लोग रसूल के पास रहते हैं उन पर व्यय न करना यहां तक कि वह (व्याकुल होकर) भाग जाएंगे यद्यपि आकाशों और पृथ्वी के कोष ईश्वर ही के हैं परन्तु कपटी न समझेंगे (7)

ایسے ہی لوگ تو ہیں جو لوگوں سے کہیں گے کہ جو لوگ رسول کے پاس رہتے ہیں ان پر خرچ نہ کرنا یہاں تک کہ وہ (پریشان ہوکر) بھاگ جائیں حالانکہ آسمان اور زمین کے خزانے اللہ ہی کے ہیں لیکن منافق نہیں سمجھیں گے (۷)

और यह भी कहेंगे कि यदि हम लौटकर मदीने पहुंचे तो सम्मान वाले हीन लोगों को वहां से निकाल बाहर करेंगे, यद्यपि सम्मान ईश्वर का है और उसके रसूल का और आस्तिकों का परन्तु कपटी नहीं समझेंगे (8)

اور یہ بھی کہیں گے کہ اگر ہم لوٹ کر مدینے پہنچے تو عزت والے ذلیل لوگوں کو وہاں سے نکال باہر کریں گے حالانکہ عزت اللہ کی ہے اور اس کے رسول کی اور مومنوں کی لیکن منافق نہیں سمجھیں گے (۸)

नोट- इस सूरत का नाम मुनाफिकून (कपटी) है और इसमें आयत 1 से 8 तक ईश्वर ने अपने रसूल को कपटियों की ऐसी पहचान बता दी कि उनके प्रकाश में उनको पहचानने में कोई भूल न हो और बताया कि ऐ मुहम्मद स० कपटी ऐसे हैं उनकी बोल-चाल ऐसी होगी वह तुमको धोका देना चाहेंगे अतः समय से पहले आपको उनसे सावधान किया जाता है उनको जान लेना इसके बाद आयत 9 से आस्तिकों को कुछ बताया जा रहा है जो वास्तविकता है.

نوٹ:۔ اس سورت کا نام منافقون ہے اور اس میں آیت ا سے ۸ تک اللہ نے اپنے رسول کو منافقوں کی ایسی شناخت بتادی کہ ان کی روشنی میں ان کو پہچاننے میں کوئی غلطی نہ ہو اور بتایا کہ اے محمدؐ منافق ایسے ہیں ان کی بول چال ایسی ہوگی وہ تم کو دھوکا دینا چاہیں گے اس لئے وقت سے پہلے آپ کو ان سے ہوشیار کیا جاتا ہے ان کو جان لینا اس کے بعد آیت ۹ سے مومنوں کو کچھ بتایا جارہا ہے جو حقیقت ہے۔

ऐ आस्तिको! तुम्हारे माल और तुम्हारी सन्तान तुमको ईश्वर के जप से (अर्थात कुरआन से) अचेत न कर दे और जो ऐसा करेगा अर्थात अचेत होगा तो वही लोग घाटे में रहेंगे (9)

اے مومنو! تمہارے مال اور تمہاری اولاد تم کو اللہ کے ذکر سے (یعنی قرآن سے) غافل نہ کردے اور جو ایسا کرے گا یعنی غافل ہوگا تو وہی لوگ گھاٹے میں رہیں گے (۹)

और जो धन हमने तुम को दिया है उसमें से इससे पहले व्यय कर लो कि तुम में से किसी को मृत्यु आ जाए तो कहने लगे कि ऐ मेरे ईश्वर तूने मुझे थोड़ी सी छूट क्यों न दी ताकि मैं दान कर लेता और सदाचारी लोगों में प्रविष्ट होता (10)

اور جو مال ہم نے تم کو دیا ہے اس میں سے اس سے پہلے خرچ کرلو کہ تم میں سے کسی کو موت آجائے تو کہنے لگے کہ اے میرے رب تو نے مجھے تھوڑی سی مہلت کیوں نہ دی تاکہ میں خیرات کرلیتا اور نیک لوگوں میں داخل ہوتا (۱۰)

(तो सुनो) जब किसी की मृत्यु आ जाती है तो ईश्वर उसको कदापि छूट नहीं देता और जो कुछ तुम करते हो ईश्वर उससे अवगत है (11)

(تو سنو!) جب کسی کی موت آجاتی ہے تو اللہ اس کو ہرگز مہلت نہیں دیتا اور جو کچھ تم کرتے ہو اللہ اس سے خبردار ہے (۱۱)

नोट- इस सूरत का जो अनुवाद प्रचलित है वह ऐसा किया गया है मानो यह कार्य भूतकाल में हुआ, परन्तु ऐसा नहीं है अपितु सीगा मज़ारे से भविष्य के लिए ईश्वर ने मुहम्मद स० को अवगत किया है इसलिए मैंने भावार्थ दूसरा लिया है मनन करो.

نوٹ:۔ اس سورت کا جو ترجمہ رائج ہے وہ ایسا کیا گیا ہے گویا یہ کام ماضی میں ہوا لیکن ایسا نہیں ہے بلکہ صیغہ مضارع ہے مستقبل کے لئے اللہ نے محمدؐ کو خبردار کیا ہے اس لئے میں نے مفہوم دوسرا کیا ہے غور کرو۔

सूरतुत्तग़ाबुन - मदनी (64)

سورت التغابن ۔ مدنی (۶۴)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

(कहो कि इन्सानो सुनो) जो वस्तु आकाशों में है और जो वस्तुएं पृथ्वी में है सब ईश्वर की पवित्रता वर्णन करती है उसी का सत्य राज्य है और उसी की प्रशंसा है और वह हर वस्तु के अनुमान नियम बनाने वाला है (1)

(کہہ دو کہ انسانوں سنو!) جو چیز آسمانوں میں ہے اور جو چیز زمین میں ہے سب اللہ کی تسبیح کرتی ہیں اُسی کی سچی بادشاہت ہے اور اسی کی تعریف ہے اور وہ ہر چیز کے اندازے قانون بنانے والا ہے (۱)

और घोषणा कर दो वही तो है जिसने तुम को पैदा किया फिर कोई तुम में काफिर है और कोई मोमिन और जो कुछ तुम करते हो ईश्वर उसको देखता है (2)

اوراعلان کردووہی تو ہےجس نےتم کو پیدا کیا پھر کوئی تم میں کافر ہےاورکوئی مومن اور جو کچھ تم کرتے ہو اللہ اس کو دیکھتا ہے(۲)

और साथ ही यह भी बता दो कि उसने आकाशों और पृथ्वी को सत्य और एक प्रबन्ध के आधीन उत्पन्न किया है उसने तुम्हारी आकृतियां बनाई और आकृतियां भी कैसी अच्छी बनाई और उसी की ओर (तुम सब को) लौटकर जाना है (3)

اور ساتھ ہی یہ بھی بتادو کہ اس نے آسمانوں اورزمین کو حق اورایک نظام کے تحت پیدا کیا ہےاس نے تمہاری صورتیں بنائیں اورصورتیں بھی کیسی اچھی بنائیں اوراسی کی طرف (تم سب کو) لوٹ کر جانا ہے(۳)

और कहो जो कुछ तुम छुपाकर करोगे और जो खुल्लम खुल्ला करोगे वह उससे भी अवगत है और जो कुछ आकाशों और पृथ्वी में है वह ईश्वर सब जानता है और ईश्वर तो हृदय के भेदों तक से अवगत है (4)

اور کہو جو کچھ تم چھپا کر کروگےاور جو کھلم کھلا کروگے وہ اس سے بھی آگاہ ہےاور جو کچھ آسمانوں اورزمین میں ہے وہ اللہ سب جانتا ہےاوراللہ تو دلوں کے بھیدوں تک سے واقف ہے(۴)

और उनसे यह भी ज्ञात कर लो क्या तुमको उन लोगों का समाचार ज्ञात न हुआ जिन्होंने पहले कुफ्र किया था फिर उन्होंने (दुनिया में ही) अपने बुरे कर्मों का स्वाद चख लिया और परलोक में उनके लिए पीड़ा देने वाला दण्ड है (5)

اوران سے یہ بھی معلوم کرلو کیا تم کو ان لوگوں کا حال معلوم نہ ہوا جنہوں نے پہلے کفر کیا تھا پھر انہوں نے (دنیا میں ہی) اپنی شامت اعمال کا مزہ چکھ لیااورآخرت میں ان کے لئے دردناک عذاب ہے(۵)

यह (दण्ड) उन्हें इसलिए दिया जायेगा कि उनके पास उनके रसूल खुली खुली निशानियां लेकर आते रहे और वह लोग (सदैव) यही कहते रहे कि क्या (हम जैसे) व्यक्ति हमें सीधा मार्ग दिखा सकते हैं? यहां तक उन्होंने उनकी बात मानने से इनकार कर दिया और मुख फेर लिया तो ईश्वर भी उनसे निश्चिन्त हो गया, ईश्वर लालसा रहित और प्रशंसा के योग्य है (6)

یہ (عذاب) انہیں اس لئے دیا جائے گا کہ ان کے پاس ان کے رسول کھلی کھلی نشانیاں لے کرآتے رہےاور وہ لوگ (ہمیشہ) یہی کہتے رہے کہ کیا (ہم جیسے) بشر ہمیں سیدھی راہ دکھا سکتے ہیں؟ غرض کہ انہوں نے ان کی بات ماننے سے انکار کر دیا اورمنہ پھیر لیا تو اللہ بھی ان سے لاپرواہ ہو گیا اللہ بےنیاز ہےاورسزاوارحمد ہے(۶)

जो लोग काफिर हैं उनका वाद यह है कि वह (क्यामत के दिन) कदापि न उठाए जाऐंगे आप कहो हां हां मेरा रब साक्षी है कि तुम को जरूर उठाया जायेगा फिर जो जो कार्य तुम करते रहे हो वह तुम्हें बताये जायेंगे और यह बात ईश्वर को सरल है (7)

جولوگ کافر ہیں ان کا دعویٰ یہ ہے کہ وہ (قیامت کے روز) ہرگز نہ اٹھائے جائیں گےآپ کہو ہاں. ہاں میرا رب شاہد ہے کہ تم کو ضرور اٹھایا جائےگا پھر جو جو کام تم کرتے رہے ہو وہ تمہیں بتائے جائیں گےاور یہ بات اللہ کو آسان ہے(۷)

तो (ऐ लोगो!) ईश्वर पर उसके रसूल पर और उस प्रकाश (अर्थात कुरआन) पर जिसे हमने अवतरित किया है विश्वास ले आओ और (विश्वास करो कि) जो कुछ तुम करोगे ईश्वर को सबकी सूचना है (8)

تو (اے لوگو!) اللہ پر اس کے رسول پر اوراس نور (یعنی قرآن) پر جسے ہم نے نازل کیا ہےایمان لے آؤ اور (یقین کرو کہ) جو کچھ تم کروگے اللہ کو سب کی خبر ہے(۸)

(उसका परिणाम तुम को उस दिन ज्ञात होगा) जब ईश्वर महाप्रलय के दिन तुम सबको संग्रह करेगा वही हार जीत का दिन होगा और जो व्यक्ति ईश्वर पर विश्वास लाएगा और (दुनिया में) भलाई के कार्य करेगा हम उसकी बुराईयां दूर कर देंगे और उसे (स्वर्ग के) ऐसे उपवनों में प्रविष्ट करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी वह लोग उसमें सदैव रहेंगे यही सबसे बड़ी सफलता है (9)

(اس کا نتیجہ تم کو اس روز معلوم ہوگا) جب اللہ حشر کے روز تم سب کو جمع کرےگا وہی ہار جیت کا دن ہوگااور جو شخص اللہ پرایمان لائےگااور (دنیا میں) بھلائی کے کام کرے گا ہم اس کی برائیاں دور کر دیں گےاوراسے (جنت کے) ایسے باغوں میں داخل کریں گے جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی وہ لوگ اس میں ہمیشہ رہیں گے یہی سب سے بڑی کامیابی ہے(۹)

परन्तु जिन लोगों ने कुफ्र किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह नर्की हैं सदैव नर्क में रहेंगे और वह बुरा स्थान है (10)

لیکن جن لوگوں نے کفر کیااور ہماری آیتوں کو جھٹلایا وہ دوزخی ہیں ہمیشہ دوزخ میں رہیں گےاوروہ بُرا ٹھکانا ہے(۱۰)

कोई कष्ट ईश्वर के नियम के बिना अवतरित नही होता और जो व्यक्ति ईश्वर पर विश्वास रखता है ईश्वर उसके हृदय को पथ प्रदर्शन प्रदान करता है ईश्वर को हर बात का ज्ञान है (11)

کوئی مصیبت اللہ کے قانون کے بغیر نازل نہیں ہوتی اور جو شخص اللہ پرایمان رکھتا ہے اللہ اس کے دل کو ہدایت بخشتا ہےاللہ کو ہر بات کا علم ہے(۱۱)

(ऐ इन्सानों सुनो) और ईश्वर की आज्ञा पालन करो और उसके रसूल की आज्ञा पालन करो और यदि तुम मुख मोड़ते हो तो हमारे रसूल का उत्तर

(اے انسانو! سنو) اور اللہ کی اطاعت کرواوراس کے رسول کی اطاعت کرو اوراگر تم منہ موڑتے ہو تو ہمارے رسول

दायित्व तो केवल संदेश का खोल खोलकर पहुंचा देना है (12)
(कहो) वह ईश्वर है (क्या काफिर कहता है) ईश्वर नही है तो सुनो निःसन्देह ईश्वर है अतः आस्तिकों को ईश्वर ही पर विश्वास रखना चाहिए (13)
आस्तिको! तुम्हारी औरतों और सन्तान में से कतिपय तुम्हारे शत्रु भी है सो उनसे बचते रहो और यदि क्षमा कर दो तो ईश्वर ही क्षमा करने वाला कृपालु है (14)
तुम्हारा माल और सन्तान तो परीक्षा है (यदि तुम परीक्षा में पूरे उतरे) तो ईश्वर के यहां बड़ा फल है (15)
तो जहाँ तक तुम्हारे वश में हो ईश्वर (की अवज्ञा के परिणाम) से डरते रहो, और उसका आदेश सुनो और उसका अनुकरण करो और (उसके मार्ग में) व्यय करते रहो यह तुम्हारे अपने लिए अच्छा है और जो कोई स्वभाव की कृपणता से बचा लिया गया तो ऐसे ही लोग सफल है (16)

کے ذمہ تو صرف پیغام کا کھول کھول کر پہنچا دینا ہے (۱۲)
(کہو) وہ اللہ ہے (کیا کافر کہتا ہے) اللہ نہیں ہے تو سنو! یقیناً اللہ ہے لہٰذا مومنوں کو اللہ ہی پر بھروسہ رکھنا چاہیے (۱۳)
مومنو! تمہاری عورتوں اور اولاد میں سے بعض تمہارے دشمن بھی ہیں سو ان سے بچتے رہو اور اگر معاف کر دو اور درگزر کرو تو اللہ ہی بخشنے والا مہربان ہے (۱۴)
تمہارا مال اور اولاد تو آزمائش ہے (اگر تم آزمائش میں پورے اترے) تو اللہ کے یہاں بڑا اجر ہے (۱۵)
تو جہاں تک تمہارے بس میں ہو اللہ (کی نافرمانی کے نتائج) سے ڈرتے رہو اور اس کا حکم سنو اور اس کی پیروی کرو اور (اس کی راہ میں) خرچ کرتے رہو یہ تمہارے اپنے لئے بہتر ہے اور جو کوئی طبیعت کے بخل سے بچالیا گیا تو ایسے ہی لوگ کامیاب ہیں (۱۶)

यदि तुम ईश्वर को अच्छा ऋण दोगे तो वह तुम्हें कई गुना बढ़ाकर वापस करेगा और तुम्हारे पाप भी क्षमा कर देगा ईश्वर तो गुण ज्ञाता और सहनशील है (17)
वह गुप्त और प्रकट सबका जानने वाला सब पर अधिपति है उसका कोई कार्य युक्ति से रहित नही है (18)

اگر تم اللہ کو قرض حسنہ دو گے تو وہ تمہیں کئی گنا بڑھا کر واپس کرے گا اور تمہارے گناہ بھی معاف کر دے گا اللہ تو قدردان اور بردبار ہے (۱۷)
وہ پوشیدہ اور ظاہر سب کا جاننے والا سب پر غالب ہے اس کا کوئی کام حکمت سے خالی نہیں (۱۸)

सूरत तलाक - मदनी (65)

سورت طلاق ۔ مدنی (۶۵)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ऐ नबी (मुसलमानो से कह दो) जब तुम औरतों को तलाक देना चाहो तो उनको इद्दत (अर्थात तीन महीने) के लिए तलाक दो और इद्दत (के दिन) गिनते रहो और अपने ईश्वर की अवज्ञा के परिणाम से डरते रहो (उस काल में) न तो तुम उनको उनके घरों से निकालो और न वह स्वयं ही (क्रोध में आकर) निकल जायें हां यदि वह खुली निर्लज्जता करें (तो उन्हें घर से निकाला जा सकता है) और यह ईश्वर की निश्चित की हुई सीमाऐं है जो कोई इन सीमाओं का उल्लंघन करेगा वह अपने ही ऊपर अन्याय करेगा (ऐ तलाक देने वाले) तू क्या जाने? हो सकता है कि इसके बाद (इद्दत के समय में) ईश्वर सहमति की कोई स्थिति पैदा कर दे (1)
फिर जब वह (मुतल्लका औरतें) अपनी (इद्दत के) समय की समाप्ती पर पहुंचे तो या तो उन्हें सज्जनता के साथ अपने विवाह में रोक रखो या सज्जनता के साथ उनको (अपने घर से) विदा कर दो और अपने लोगों में से दो (न्यायिक) व्यक्तियों को साक्षी कर लो जो न्याय करने वाले हों और साक्षियों ईश्वर के लिए उचित साक्ष्य देना यह (शिक्षा की बातें) तुम में से उन लोगों को समझाई जाती है जो ईश्वर पर और क्यामत के दिन पर विश्वास रखता है और जो व्यक्ति ईश्वर (की अवज्ञा) से डरता है ईश्वर उसे (आपस के लड़ाई झगड़े से)

اے نبی (مسلمانوں سے کہدو) جب تم عورتوں کو طلاق دینا چاہو تو ان کو عدت (یعنی تین مہینے) کے لئے طلاق دو اور عدت (کے دن) گنتے رہو اور اپنے رب کی نافرمانی کے نتائج سے ڈرتے رہو (اس زمانے میں) نہ تو تم ان کو ان کے گھروں سے نکالو اور نہ وہ خود ہی (غصہ میں آکر) نکل جائیں ہاں اگر وہ کھلی بے حیائی کریں (تو انہیں گھر سے نکالا جا سکتا ہے) اور یہ اللہ کی مقرر کردہ حدیں ہیں جو کوئی ان حدوں سے تجاوز کرے گا وہ اپنے ہی اوپر ظلم کرے گا (اے طلاق دینے والے) تو کیا جانے؟ ہوسکتا ہے کہ اس کے بعد (عدت کے زمانے میں) اللہ موافقت کی کوئی صورت پیدا کر دے (۱)
پھر جب وہ (مطلقہ عورتیں) اپنی (عدت کی) مدت کے خاتمے پر پہنچیں تو یا تو انہیں شرافت کے ساتھ اپنے نکاح میں روک رکھو یا شرافت کے ساتھ ان کو (اپنے گھر سے) رخصت کر دو اور اپنے لوگوں میں سے دو (منصف) آدمیوں کو گواہ کر لو جو صاحب عدل ہوں۔ اور گواہو اللہ کے لئے درست گواہی دینا۔ یہ (نصیحت کی باتیں) تم میں سے ان لوگوں کو سمجھائی جاتی ہیں جو اللہ پر اور آخرت کے دن پر یقین رکھتا ہے اور جو شخص اللہ (کی نافرمانی) سے ڈرتا ہے اللہ اسے (آپس کے لڑائی جھگڑے سے)

निकलने की स्थिति उत्पन्न कर देगा (2)

نکلنے کی شکل پیدا کردے گا (۲)

और उसे ऐसे स्थान से जीविका देगा जिसका उसको भ्रम व अनुमान भी न होगा, और जो व्यक्ति ईश्वर पर विश्वास रखेगा तो ईश्वर (उसकी जटिलता को सुलझाने के लिए) प्रयाप्त है ईश्वर ने हर वस्तु का एक अनुमान नियम निश्चित कर रखा है (3)

اور اسے ایسی جگہ سے روزی دے گا جس کا اس کو وہم وگمان بھی نہ ہوگا اور جو شخص اللہ پر بھروسہ رکھے گا تو اللہ (اس کی مشکلات کو حل کرنے کے لئے) کافی ہے اللہ اپنے کام کو پورا کر کے رہتا ہے اللہ نے ہر چیز کا ایک اندازہ قانون مقرر کر رکھا ہے (۳)

और तुम्हारी (मुतल्लका) औरतें जो रज से निराश हो चुकी हों यदि तुमको (उनकी इद्दत के विषय में) शंका हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है और जिनको अभी रज नही आने लगा (उनकी इद्दत भी यही तीन महीने हैं) और गर्भ वाली औरतों की इद्दत शिशु प्रसव तक है और जो ईश्वर से डरेगा ईश्वर उसके कार्य में सरलता उत्पन्न कर देगा (4) {15:87;9:31;71:23}

اور تمہاری (مطلقہ) عورتیں جو حیض سے ناامید ہو چکی ہوں اگر تم کو (ان کی عدت کے بارے میں) شبہ ہو تو ان کی عدت تین مہینے ہے اور جن کو ابھی حیض نہیں آنے لگا (ان کی عدت بھی یہی تین مہینے ہے) اور حمل والی عورتوں کی عدت وضع حمل (بچہ جننے) تک ہے اور جو اللہ سے ڈرے گا اللہ اس کے کام میں سہولت پیدا کرے گا (۴) [۱۵:۸۷؛۹:۳۱؛۷۱:۲۳]

यह ईश्वर के आदेश है जो उसने तुम्हारी ओर भेजे हैं और जो ईश्वर से डरेगा वह उससे उसके पाप दूर कर देगा और उसे बड़ा फल देगा (5)

یہ اللہ کے حکم ہیں جو اس نے تمہاری طرف بھیجے ہیں اور جو اللہ سے ڈرے گا وہ اس سے اس کے گناہ دور کر دے گا اور اسے اجر عظیم بخشے گا (۵)

उनको (इद्दत के काल में) उस स्थान पर रखो जहां तुम रहते हो, जैसी कुछ भी जगह तुम्हें उपलब्ध हो और उसी प्रकार रखो जैसे स्वयं तुम रहते हो हर प्रकार का व्यय उनको दो, भोजन इत्यादि और उन्हें तंग करने के लिए उनको न सताओ और यदि वह गर्भ से हो तो उन पर उस समय तक व्यय करते रहो जब तक उनका शिशु प्रसव न हो जाये फिर यदि वह तुम्हारे लिए (बच्चे को) दूध पिलाऐं तो उनका पारिश्रमिक उन्हें दो और भले ढंग से (पारिश्रमिक का विषय) आपसी बातचीत से निर्धारित कर लो परन्तु यदि तुम ने (पारिश्रमिक निश्चित करने में) एक दूसरे को तंग किया तो बच्चे को कोई और स्त्री दूध पिलायेगी (6)

ان کو (زمانہ عدت میں) اس جگہ رکھو جہاں تم رہتے ہو، جیسی کچھ بھی جگہ تمہیں میسر ہو اور اسی طرح رکھو جیسے خود تم رہتے ہو ہر طرح کا خرچ ان کو دو کھانا وغیرہ اور انہیں تنگ کرنے کے لئے ان کو نہ ستاؤ اور اگر وہ حاملہ ہوں تو ان پر اس وقت تک خرچ کرتے رہو جب تک ان کا وضع حمل نہ ہو جائے پھر اگر وہ تمہارے لئے (بچے کو) دودھ پلائیں تو ان کی اجرت انہیں دو، اور بھلے طریقے سے (اجرت کا معاملہ) آپس بات چیت سے طے کر لو لیکن اگر تم نے (اجرت طے کرنے میں) ایک دوسرے کو تنگ کیا تو بچے کو کوئی اور عورت دودھ پلائے گی (۶)

सम्पन्न आदमी अपनी सम्पन्नता के अनुसार व्यय देगा और जिसको जीविका कम दी गई हो वह उसी धन में से व्यय करेगा जो ईश्वर ने उसे दिया है ईश्वर ने जिसको जितना कुछ दिया है उससे अधिक का वह उसे भारित नही करता, हो सकता है ईश्वर दीनता के बाद सम्पन्नता प्रदान कर दे (7)

خوش حال آدمی اپنی خوشحالی کے مطابق خرچ دے گا، اور جس کو رزق کم دیا گیا ہو وہ اسی مال میں سے خرچ کرے گا جو اللہ نے اسے دیا ہے اللہ نے جس کو جتنا کچھ دیا ہے اس سے زیادہ کا وہ اسے مکلف نہیں کرتا. ہو سکتا ہے اللہ تنگ دستی کے بعد فراخ دستی عطا فرما دے (۷)

और बहुत सी बस्तियों के रहने वालों ने अपने रब और उसके रसूलों के आदेशों से अवज्ञा की तो हमने उनको जटिल लेखा जोखा में पकड़ लिया और उन पर ऐसा कष्ट प्रेषित किया जो न देखा था न सुना था (8)

اور بہت سی بستیوں کے رہنے والوں نے اپنے رب اور اس کے رسولوں کے احکام سے سرکشی کی تو ہم نے ان کو سخت حساب میں پکڑ لیا اور ان پر ایسا عذاب نازل کیا جو نہ دیکھا تھا نہ سنا تھا (۸)

सो उन्होंने अपने कर्मों के दण्ड का स्वाद चख लिया और उनका परिणाम हानि ही तो था (9)

سو انہوں نے اپنے کاموں کی سزا کا مزہ چکھ لیا اور ان کا انجام نقصان ہی تو تھا (۹)

कहो ईश्वर ने उनके लिए कठोर दण्ड तैयार कर रखा है तो ऐ बुद्धि वालो जो विश्वास लाए हो ईश्वर की अवज्ञा से डरो ईश्वर ने तुम्हारे पास शिक्षा की पुस्तक भेजी है (10)

کہو اللہ نے ان کے لئے سخت عذاب تیار کر رکھا ہے تو اے عقل والو جو ایمان لائے ہو اللہ کی نافرمانی سے ڈرو اللہ نے تمہارے پاس نصیحت کی کتاب بھیجی ہے (۱۰)

और रसूल भी भेजा जो तुम्हारे सामने ईश्वर की खुली खुली आयतें पढ़ते है ताकि जो लोग विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे है उनको अंधकार से निकाल कर प्रकाश में ले आयें और जो व्यक्ति

اور رسول بھی بھیجا جو تمہارے سامنے اللہ کی کھلی کھلی آیتیں پڑھتے ہیں تا کہ جو لوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے ہیں ان کو اندھیرے سے نکال کر روشنی میں لے

ईमान लाएगा और सत्कर्म करेगा उनको ईश्वर स्वर्ग के उपवनों में प्रविष्ट करेगा जिनके नीचे नहरे बह रही होंगी सदैव उनमें रहेंगे ऐसे व्यक्ति के लिए अच्छी जीविका तैयार कर रखी है (11) (कदर-97)

آئیں اور جو شخص ایمان لائے گا اور نیک عمل کرے گا ان کو اللہ جنت کے باغوں میں داخل کرے گا جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی ہمیشہ ان میں رہیں گے ایسے شخص کے لئے اچھی روزی مہیا کر رکھی ہے (۱۱) (قدر ۹۷)

कहो वह ईश्वर ही तो है जिसने सात आकाश पैदा किये और वैसी ही पृथ्वी बनाई उनमें (ईश्वर की ओर से) आदेश अवतरित होते रहते हैं ताकि तुम लोगों को ज्ञात हो जाए कि ईश्वर हर वस्तु के अनुमान नियम निश्चित करने वाला है और यह कि ईश्वर अपने ज्ञान से हर वस्तु को घेरे हुए है (12) {38:43}

کہو وہ اللہ ہی تو ہے جس نے سات آسمان پیدا کئے اور ویسی ہی زمین بنائی ان میں (اللہ کی طرف سے) احکام نازل ہوتے رہتے ہیں تاکہ تم لوگوں کو معلوم ہو جائے کہ اللہ ہر چیز کے اندازے قانون مقرر کرنے والا ہے اور یہ کہ اللہ اپنے علم سے ہر چیز کو گھیرے ہوئے ہے (۱۲) [۳۸:۴۳]

सूरत तहरीम - मदनी (66)

سورت تحریم ۔ مدنی (۶۶)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ऐ नबी किस लिए और क्यों आप अवैध करोगे उसको जो ईश्वर ने आपके लिए वैध की है (निःसन्देह आप कदापि ईश्वर के वैध को अवैध नही करोगे वाक्य प्रश्न वाचक जिज्ञासा) आप इसलिए भी वैध को अवैध न करोगे कि आप अपनी पत्नीयों को प्रसन्न करो? यद्यपि आपकी पत्नीयां भी ऐसा करने को न कहेंगी यदि वह ईश्वर पर विश्वास रखने वाली हैं (आप वैध अवैध ईश्वर का मानते हो अपनी इच्छा से अवैध वैध नही करते) (1) {33:38}

اے نبیؐ کس لئے اور کیوں آپ حرام کرو گے اس کو جو اللہ نے آپ کے لئے حلال کی ہے (یقیناً آپ ہرگز اللہ کے حلال کو حرام نہیں کرو گے جملہ استفہام) آپ اس لئے بھی حلال کو حرام نہ کرو گے کہ آپ اپنی بیویوں کو راضی کرو؟ حالانکہ آپ کی بیویاں بھی ایسا کرنے کو نہ کہیں گی، اگر وہ اللہ پر ایمان رکھنے والی ہیں (آپ حرام وحلال اللہ کا مانتے ہیں اپنی مرضی سے حرام حلال نہیں کرتے) (۱) [۳۸:۳۳]

ईश्वर ने तुम्हारे लिए यह अनिवार्य क्या है कि तुम ने अपनी प्रतिज्ञा से ईश्वर के विधान के पालन की जो गांठ बांधी है उस गांठ का सम्मान व आदर करना उसको पूरा करना वैध करना है उस वचन के अनुसार कर्म करना है इस कार्य पर यदि कोई व्याकुलता आये तो ईश्वर तुम्हारा सहायक है और वह ज्ञानी है और युक्ति वाला है और आस्तिक की प्रतिज्ञा यह है कि ईश्वर के वैध अवैध को माने (2) {10:59;5:87,89; 16:116} (इसलिए भी आप ईश्वर के वैध को अवैध नही करोगे)

اللہ نے تمہارے لئے یہ فرض کیا ہے کہ تم نے اپنے عہد سے اللہ کی شریعت کی پابندی کی جو گرہ باندھی ہے اس گرہ کی عظمت واحترام کرنا اس کو پورا کرنا حلال کرنا ہے اس عہد کے مطابق عمل کرنا ہے (گرہ کھولنا ہے) اس کام پر اگر کوئی پریشانی آئے تو اللہ تمہارا مددگار ہے اور وہ دانا حکمت والا ہے (اور مومن کا عہد یہ ہے کہ اللہ کے حرام حلال کو مانے) (۲) [۵۹:۱۰؛ ۸۹:۵؛ ۸۷:۵؛ ۱۱۶:۱۶] [اس لئے بھی آپ اللہ کے حلال کو حرام نہیں کرو گے]

और याद करो जब रसूल ने अपनी एक पत्नी से एक भेद की बात बताई तो उसने दूसरी को बता दी जब उसने उसको प्रकट कर दिया और ईश्वर (की दी हुई बुद्धि) ने उससे रसूल को अवगत कर दिया तो रसूल ने (उस पत्नी को वह बात) कुछ तो बताई और कुछ न बताई तो जब वह उनको जताई तो पूछने लगी कि आपको किसने बताई उन्होंने कहा कि मुझे उसने बताया है जो जानने वाला सूचित है (3)

اور یاد کرو جب رسول نے اپنی ایک بیوی سے ایک بات بھید کی بتائی تو اس نے دوسری کو بتا دی جب اس نے اس کو ظاہر کر دیا اور اللہ (کی دی ہوئی عقل) نے اس سے رسول کو آگاہ کر دیا تو رسول نے (اس بیوی کو وہ بات) کچھ تو بتائی اور کچھ نہ بتائی تو جب وہ ان کو جتائی تو پوچھنے لگی کہ آپ کو کس نے بتائی انہوں نے کہا کہ مجھے اس نے بتایا ہے جو جاننے والا خبردار ہے (۳)

यदि तुम रसूल की प्रसन्नता के लिए ईश्वर की आज्ञाकारी करो तो यह तुम्हारे लिए उत्तम है जिस प्रकार रसूल तुम्हारी सहानुभूति करते हैं तो यही बात तुमसे प्रत्याशित है क्योंकि तुम्हारे हृदय तो उसकी ओर आकृष्ट ही हैं (और जान लो) यदि रसूल को व्याकुल करने के लिए तुम कोई दल बन्दी करोगी तो ईश्वर उसका स्वामी है और जिबरईल और सदाचारी आस्तिक उसके सहायक हैं और इनके अतिरिक्त और फरिश्ते भी सहायक हैं (4)

نوٹ- इन आयात का स्पष्टीकरण सूरत अहजाब में कर दिया गया है अवलोकन हो,

اگر تم رسول کی رضا جوئی کے لئے اللہ کی فرمانبرداری کرو تو یہ تمہارے لئے بہتر ہے جس طرح رسول تمہاری دلداری کرتے ہیں تو یہی بات تم سے متوقع ہے کیونکہ تمہارے دل تو اس کی طرف مائل ہی ہیں (اور جان لو) اگر رسول کو پریشان کرنے کے لئے تم کوئی جتھہ بندی کرو گی تو اللہ اس کا مولیٰ ہے اور جبرئیل اور نیک کردار مومن ان کے حامی ہیں اور ان کے علاوہ اور فرشتے بھی مددگار ہیں (۴)

نوٹ: ان آیات کی وضاحت سورت احزاب میں کر دی گئی ہے ملاحظہ ہو۔

(इसके अतिरिक्त और सुन लो) यदि ऐसा हो जाए कि रसूल तुम को तलाक दे दे तो विचित्र नही कि उनका रब तुम्हारे बदले उनको तुम से उत्तम पत्नीयां दे दे, मुसलमान, धर्मवादी, आज्ञाकारी,

(علاوہ ازیں اور سن لو) اگر ایسا ہو جائے کہ رسول تم کو طلاق دے دیں تو عجب نہیں کہ ان کا رب تمہارے بدلے ان کو تم سے بہتر بیبیاں دیدے مسلمان باایمان فرمانبردار،

पश्चाताप करने वालियां पूजा करने वालियां, निर्लज्जता के कार्यों से बचने वालियां, विधवा और कुंवारियां (5)

توبہ کرنے والیاں عبادت گزار، بے حیائی کے کاموں سے بچنے والیاں بن شوہر اور کنواریاں (۵)

आस्तिको! अपने आपको और अपने परिवार वालों को नर्क की अग्नि से बचाओ जिसका ईन्धन आदमी और पत्थर है और जिस पर परख़र स्वभावी फरिश्ते नियुक्त है जो आदेश ईश्वर उनको देता है उसकी अवज्ञा नही करेंगे और जो आदेश उनको मिलता है उसका पालन करते है (6)

مومنو! اپنے آپ کو اور اپنے اہل وعیال کو آتش جہنم سے بچاؤ جس کا اندھن آدمی اور پتھر ہیں اور جس پر تندخو اور سخت مزاج فرشتے مقرر ہیں جو حکم اللہ ان کو فرماتا ہے اس کی نافرمانی نہیں کریں گے اور جو حکم ان کو ملتا ہے اسے بجالاتے ہیں (۶)

ऐ वह लोगो! जिन्होंने कुफ्र किया है आज बहाने न बनाओ जो कर्म तुम किया करते थे आज तुम्हें वैसा ही बदला दिया जा रहा है (7)

اے وہ لوگو! جنہوں نے کفر کیا ہے آج بہانے نہ بناؤ جو عمل تم کیا کرتے تھے آج تمہیں ویسا ہی بدلہ دیا جا رہا ہے (۷)

आस्तिको! ईश्वर के आगे शुद्ध ह्रदय से पश्चाताप करो आशा है कि वह तुम्हारे पाप तुम से दूर कर देगा और तुमको स्वर्ग के उपवनों में प्रविष्ट करेगा जिसके नीचे नहरे बह रही होंगी उस दिन ईश्वर ईशदूत को और उन लोगों को जो उसके साथ श्रृद्धा लाए है अपमानित नही करेगा, अपितु उनका तेज उनके कर्मों का जो उन्होंने अपने हाथों से प्रकट किये थे और उनका ईमान (प्रकाश करता हुआ) चल रहा होगा और वह ईश्वर से प्रार्थना करेंगे कि ऐ हमारे रब हमारे लिए हमारा प्रकाश पूरा कर दे और हमें क्षमा कर निःसन्देह ईश्वर हर वस्तु के नियम बनाने वाला है (8)

مومنو! اللہ کے آگے صاف دل سے توبہ کرو امید ہے کہ وہ تمہارے گناہ تم سے دور کر دے گا اور تم کو جنت کے باغوں میں داخل کرے گا جس کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی. اس دن اللہ رسول کو اور ان لوگوں کو جو اس کے ساتھ ایمان لائے ہیں رسوا نہیں کرے گا بلکہ ان کا نور ان کے اعمال کا جو انہوں نے اپنے ہاتھوں سے ظاہر کئے تھے اور ان کا ایمان (روشنی کرتا ہوا) چل رہا ہوگا اور وہ اللہ سے التجا کریں گے کہ اے رب ہمارے لئے ہمارا نور پورا کر دے اور ہمیں معاف فرما. بے شک اللہ ہر چیز کے قانون بنانے والا ہے (۸)

ऐ रसूल नास्तिकों और कपटियों से धर्म युद्ध करो और उन पर कठोरता करो उनका ठिकाना नर्क है और वह बहुत बुरा स्थान है (9)

اے رسول! کافروں اور منافقوں سے جہاد کرو اور ان پر سختی کرو ان کا ٹھکانا دوزخ ہے اور وہ بہت بُری جگہ ہے (۹)

ईश्वर ने नास्तिकों के लिए नूह की पत्नी और लूत की पत्नी की उपमा वर्णन की है दोनों हमारे दो नेक बन्दों के घर में थी और दोनों ने उनसे कपट किया तो वह ईश्वर के सामने उन स्त्रियों के कुछ भी काम न आए और उनको आदेश दिया जायेगा कि और प्रविष्ट होने वालों के साथ तुम भी नर्क में प्रविष्ट हो जाओ (10) {24:26}

اللہ نے کافروں کے لئے نوح کی بیوی اور لوط کی بیوی کی مثال بیان کی ہے. دونوں ہمارے دو نیک بندوں کے گھر میں تھیں اور دونوں نے ان کی خیانت کی. تو وہ اللہ کے مقابلے میں ان عورتوں کے کچھ بھی کام نہ آئے اور ان کو حکم دیا جائے گا کہ اور داخل ہونے والوں کے ساتھ تم بھی دوزخ میں داخل ہو جاؤ (۱۰) [۲۶:۲۴]

और आस्तिकों के लिए एक उपमा फिरऔन की पत्नी की वर्णन की उसने ईश्वर से प्रार्थना की कि ऐ मेरे ईश्वर मेरे लिए स्वर्ग में अपनी छाया में एक घर बना और मुझे फिरऔन और उसके बुरे कर्मों से मुक्ति दे और अत्याचारी लोगों से मुझे मुक्ति दे (11)

اور مومنوں کے لئے ایک مثال فرعون کی بیوی کی بیان فرمائی کہ اس نے اللہ سے التجا کی کہ اے میرے رب میرے لئے جنت میں اپنے سایہ میں ایک گھر بنا اور مجھے فرعون اور اس کے بُرے اعمال سے نجات دے اور ظالم لوگوں سے مجھے نجات دے (۱۱)

और दूसरी इमरान की पुत्री मरयम की है जिसने अपने गुप्तांग की रक्षा की तो हमने उसमें अपनी ओर से एक आत्मा अर्थात अपनी कृपा फूंक दी और वह अपने ईश्वर के कथन और उसकी पुस्तकों को सत्य समझती थी और आज्ञाकारों में से थी (12)

اور دوسری عمران کی بیٹی مریم کی ہے جس نے اپنی شرم گاہ کی حفاظت کی تو ہم نے اس میں اپنی طرف سے ایک روح یعنی اپنی رحمت پھونک دی اور وہ اپنے پروردگار کے کلام اور اس کی کتابوں کو برحق سمجھتی تھی اور فرمانبرداروں میں سے تھی (۱۲)

तबारकल्लजी - खण्ड (29)

सूरत मुलक - मक्की (67)

कहो सम्पन्नता वाला अस्तित्व है वह जिसके वश में जगत की सत्ता है वह हर वस्तु के नियम बनाने वाला है (1)

जिसने मृत्यु और जीवन को पैदा किया और तुम्हें मृत्यु और जीवन (का अबाद्ध बनाया है) ताकि तुम लोगों की परीक्षा करे कि तुम में कौन अच्छे कर्म करता है (और कर्म के अनुसार बदला पाएगा) वह शक्तिशाली भी है और क्षमा करने वाला भी (2) {18:7}

जिसने सात आकाश ऊपर तले बनाए (ऐ लोगो!) क्या तुम जगत में कोई कमी देखते हो फिर पलट कर देखो (कहीं तुम्हें कोई विकार दिखाई देता है) तुम्हारी दृष्टि थककर असफल पलट आएगी (3)

फिर दोबारा (बार-बार) देख तो दृष्टि (हर बार) तेरे पास असफल और थककर वापस आयेगी (4)

हमने तुम्हारे निकट के आकाश को भव्य दीपों (तारों) से सुसज्जित किया है और बनाया है उसको सुरक्षित शैतानों की उत्पाद से कि वह अटकल बच्चू बात करें (यदि वह) अटकल बच्चू (व्यर्थ) बात करेंगे तो उनके लिए भड़कती आग का दण्ड प्रखर अग्नि शिखा तैयार कर रखा है (अर्थात कुरआन का चमकदार तर्क) भी जो उनको पालेगा परलोक में यदि पश्चातापन न करेंगे (5) {37:6,7;72:8} आकाश के तारे भाग्य का हाल बताने के लिए नहीं है परन्तु शैतान जैसे मानव उनको ऐसा ही मानते है शरारत करते है.

(और यह भी कह दो) और जिन लोगों ने अपने ईश्वर के विधान मानने से इनकार कर दिया उनके लिए नर्क का दण्ड है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है (6)

जब वह उसमें डाले जाएंगे तो उसके दहाड़ने की भयावह ध्वनि सुनेंगे और वह आवेश में होगी (7)

मानो मारे आवेश के फट पड़ेगी जब जब कोई दल उसमें डाला जाएगा तो उसके निरीक्षक उन लोगों से पूछेंगे क्या तुम्हारे पास (अवज्ञा के परिणाम से) सावधान करने वाला कोई न आया था (8)

वह उत्तर देंगे उपदेश देने वाला अवश्य आया था परन्तु हमने उसको झुठला दिया और कहा कि ईश्वर ने तो कोई वस्तु अवतरित ही नहीं की तुम तो बड़ी भूल में (पड़े हुए) हो (9)

और वह (फ़रिश्तों से) कहेंगे यदि हम (रसूलों की) बात सुनते या (कम से कम) बुद्धि ही से काम लेते तो हम नर्क वालों में सम्मिलित न होते (10)

अतः वह अपने पापों को स्वयं स्वीकार करेंगे नर्कीयों पर ईश्वर की कृपा से दूरी है (11)

(परन्तु) जो लोग वे देखे अपने रब की अवज्ञा से

تبارک الذی ۔ پارہ (۲۹)

سورت ملک ۔ مکی (۶۷)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

کہو بابرکت ذات ہے وہ جس کی قدرت میں کائنات کی بادشاہت ہے وہ ہر چیز کے قانون بنانے والا ہے (۱)

جس نے موت وزندگی کو پیدا کیا اور تمہیں موت اور زندگی (کا پابند بنایا ہے) تاکہ تم لوگوں کو آزمائے کہ تم میں کون اچھے عمل کرتا ہے (اور عمل کے مطابق بدلہ پائے) وہ زبردست بھی ہے اور معاف کرنے والا بھی ہے (۲) [۱۸:۷]

جس نے سات آسمان اوپر تلے بنائے (اے لوگو!) کیا تم کائنات میں کوئی کمی دیکھتے ہو پھر پلٹ کر دیکھو (کہیں تمہیں کوئی خلل نظر آتا ہے) تمہاری نگاہ تھک کر نامراد پلٹ آئے گی (۳)

پھر دوبارہ (بار بار) نظر کر تو نظر (ہر بار) تیرے پاس ناکام اور تھک کر واپس آئے گی (۴)

هم نے تمہارے قریب کے آسمان کو عظیم الشان چراغوں (تاروں) سے آراستہ کیا ہے اور بنایا ہے اس کو محفوظ شیطان کی شرارت سے کہ وہ اٹکل پچو بات کریں (اگر وہ) اٹکل پچو (لغو) بات کریں گے تو ان کے لئے بھڑکتی آگ کا عذاب تیز شعلہ تیار کر رکھا ہے (یعنی قرآن کی چمکدار دلیل بھی) جو ان کو پالے گا آخرت میں اگر توبہ نہ کریں گے (۵) [۳۷:۶،۷؛۷۲:۸] آسمان کے تارے قسمت کا حال بتانے کے لئے نہیں ہیں مگر شیطان نما انسان ان کو ایسا ہی مانتے ہیں شرارت کرتے ہیں.

(اور یہ بھی کہہ دو) اور جن لوگوں نے اپنے رب کے قانون ماننے سے انکار کر دیا ان کے لئے دوزخ کا عذاب ہے اور وہ بہت ہی برا ٹھکانا ہے (۶)

جب وہ اس میں ڈالے جائیں گے تو اس کے دہاڑنے کی ہولناک آوازیں سنیں گے اور وہ جوش مار رہی ہوگی (۷)

گویا مارے جوش کے پھٹ پڑے گی. جب جب کوئی گروہ اس میں ڈالا جائے گا تو اس کے کارندے ان لوگوں سے پوچھیں گے کیا تمہارے پاس (نافرمانی کے نتائج سے) خبردار کرنے والا کوئی نہ آیا تھا (۸)

وہ جواب دیں گے ہدایت کرنے والا ضرور آیا تھا. لیکن ہم نے اس کو جھٹلا دیا اور کہا کہ اللہ نے تو کوئی چیز نازل ہی نہیں کی تم تو بڑی غلطی میں (پڑے ہوئے) ہو (۹)

اور وہ (فرشتوں سے) کہیں گے اگر ہم (رسولوں کی) بات سنتے یا (کم سے کم) عقل ہی سے کام لیتے تو ہم دوزخ والوں میں شامل نہ ہوتے (۱۰)

پس وہ اپنے گناہوں کا خود اقرار کریں گے دوزخیوں پر اللہ کی رحمت سے دوری ہے (۱۱)

(لیکن) جو لوگ بے دیکھے اپنے رب کی نافرمانی سے

डरते हैं उनके लिए क्षमा और बड़ा फल है (12)
और तुम लोग बात गुप्त कहो या प्रकट कर के कहो (ईश्वर के लिए सब बराबर है) वह तो हृदयों के (छुपे हुए) भेदों तक से अवगत है (13)
क्या वही न जानेगा जिसने उसको पैदा किया है? यद्यपि वह तो (बड़ा) सूक्ष्मदर्शी है उसे हर बात की सूचना है (14)
(और यह भी बता दो कि लोगो!) वही ईश्वर तो है जिसने पृथ्वी को तुम्हारे लिए पस्त व समतल बनाया है तो उसके मार्गों में चलो फिरो और ईश्वर की दी हुई जीविका खाओ और उसे न भूलो कि (एक दिन) उसकी की ओर जीवित होकर जाना है (15)
(ऐ अवज्ञाकारो!) क्या तुम इस बात से बेखौफ हो कि वह (ईश्वर) जो आकाश में है (तुम्हारी अवज्ञा कारी के कारण से) तुम्हें जमीन में धंसा दे और वह झकोले खाती रहे (16)
क्या तुम उस (ईश्वर) के क्रोध से जो आकाशों में है निर्भय हो कि वह तुम पर पत्थराओ करने वाली वायु भेजदे तुम्हें अभी शीघ्र ज्ञात हो जायेगा कि मेरा डराना कैसा था (17)
जो लोग उनसे पहले थे उन्होंने भी झुटलाया था सो (देख लो कि) मेरा कैसा कष्ट हुआ (18)
क्या उन लोगों ने पक्षियों पर दृष्टि नही की जो उनके सिरों पर उड़ते रहते है वह (कभी अपने पर) फैला देते है और (कभी) सुकेड़ लेते है ईश्वर के अतिरिक्त उन्हें कोई थाम नही सकता निःसन्देह वह हर वस्तु को देख रहा है (19)
भला ऐसा कौन है जो तुम्हारी सैना होकर ईश्वर के सिवा तुम्हारी सहायता कर सके काफिर तो धोके में है (20)
भला यदि वह अपनी जीविका बन्द कर ले तो कौन है जो तुम को जीविका दे? परन्तु यह उत्पात और घृणा में फंसे हुए है (21)
भला सोचो जो व्यक्ति मुख औंधाए चल रहा हो वह अधिक सत्य मार्ग पाने वाला है या वह जो सिर उठाए सीधा एक समतल मार्ग पर चल रहा हो? (22)
वह ईश्वर ही तो है जिसने तुम को पैदा किया और तुम्हारे कान और आंखें और हृदय बनाए (कि उनसे तुम काम लो) परन्तु तुम कम उपकार मानते हो (23)
कह दो कि वही है जिसने तुम को पृथ्वी में फैलाया और उसी के सामने तुम संग्रह किये जाओगे (24)
और नास्तिक कहेंगे कि यदि तुम सच्चे हो तो बताओ यह वचन कब पूरा होगा (25)
कह दो कि इस का ज्ञान ईश्वर ही को है और मैं तो खोल खोलकर डर सुनाने वाला हूं (26)

ڈرتے ہیں ان کے لئے مغفرت اور بڑا اجر ہے(۱۲)
اور تم لوگ بات پوشیدہ کہو یا پکار کر کہو (اللہ کے لئے سب برابر ہے) وہ تو دلوں کے (چھپے ہوئے) بھیدوں تک سے واقف ہے(۱۳)
کیا وہی نہ جانے گا جس نے اس کو پیدا کیا ہے؟ حالانکہ وہ تو (بڑا) باریک بین ہے اسے ہر بات کی خبر ہے(۱۴)
(اور یہ بھی بتا دو کہ لوگو!) وہی اللہ تو ہے جس نے زمین کو تمہارے لئے پست وہموار بنایا ہے تو اس کی راہوں میں چلو پھرو اور اللہ کی دی ہوئی روزی کھاؤ اور اسے نہ بھولو کہ (ایک روز) اس کی طرف زندہ ہو کر جانا ہے(۱۵)
(اے نافرمانو!) کیا تم اس بات سے بےخوف ہو کہ وہ (اللہ) جو آسمان میں ہے (تمہاری نافرمانی کی وجہ سے) تمہیں زمین میں دھنسا دے اور وہ جھکولے کھاتی رہے(۱۶)
کیا تم اس (اللہ) کے غضب سے جو آسمان میں ہے بے خوف ہو کہ وہ تم پر پتھراؤ کرنے والی ہوا بھیج دے تمہیں ابھی جلد معلوم ہو جائے گا کہ میرا ڈرانا کیسا تھا(۱۷)
جو لوگ ان سے پہلے تھے انہوں نے بھی جھٹلایا تھا سو (دیکھ لو کہ) میرا کیسا عذاب ہوا(۱۸)
کیا ان لوگوں نے پرندوں پر نظر نہیں کی جو ان کے سروں پر اڑتے رہتے ہیں وہ (کبھی اپنے پر) پھیلا دیتے ہیں اور (کبھی) سکیڑ لیتے ہیں اللہ کے علاوہ انہیں کوئی تھام نہیں سکتا بےشک وہ ہر چیز کو دیکھ رہا ہے(۱۹)
بھلا ایسا کون ہے جو تمہاری فوج ہو کر اللہ کے سوا تمہاری مدد کر سکے کافر تو دھوکے میں ہیں (۲۰)
بھلا اگر وہ اپنا رزق بند کر لے تو کون ہے جو تم کو رزق دے؟ لیکن یہ سرکشی اور نفرت میں پھنسے ہوئے ہیں (۲۱)
بھلا سوچو جو شخص منہ اوندھائے چل رہا ہو وہ زیادہ صحیح راہ پانے والا ہے یا وہ جو سر اٹھائے سیدھا ایک ہموار راہ پر چل رہا ہو؟(۲۲)
وہ اللہ ہی تو ہے جس نے تم کو پیدا کیا اور تمہارے کان اور آنکھیں اور دل بنائے (کہ ان سے تم کام لو) مگر تم کم احسان مانتے ہو(۲۳)
کہہ دو کہ وہی ہے جس نے تم کو زمین میں پھیلایا اور اسی کے روبرو تم جمع کئے جاؤ گے(۲۴)
اور کافر کہیں گے کہ اگر تم سچے ہو تو بتاؤ یہ وعدہ کب پورا ہوگا(۲۵)
کہہ دو کہ اس کا علم اللہ ہی کو ہے اور میں تو کھول کھول کر ڈر سنانے والا ہوں(۲۶)

सो जब वह देख लेंगे कि वह वचन आ गया तो नास्तिकों के मुख बुरे हो जाएंगे और उनसे कहा जाएगा कि यह वही है जिसके तुम इच्छुक थे (27)
कहो कि भला देखो तो यदि ईश्वर मुझको और मेरे साथियों को वध कर दे या हम पर कृपा करे तो कौन है जो नास्तिकों को दुख देने वाले कष्ट से शरण दे (28)
कह दो कि जो रहमान है हम उस पर विश्वास लाए और उसी पर विश्वास रखते हैं तुम को अभी शीघ्र ज्ञात हो जाएगा कि खुली भ्रष्टता में कौन पड़ रहा था (29)
उनसे पूछो कभी तुम ने यह भी सोचा है कि यदि तुम्हारे (दरयाओं और कुंवो का) पानी शुष्क हो जाए तो कौन है जो पानी के बहते हुए स्रोते निकाल लाए? (30)

सूरतुलकलम - मक्की (68)

नून-ऐ मुहम्मद स0 साक्षी है कलम और वह जिसको लिखने वाले लिख रहे हैं (अर्थात पुस्तक) (1)
कि ऐ मुहम्मद स0 आप अपने ईश्वर की कृपा से दीवाने नही हो (2)
(और आप इन्सानों के सुधार के लिए जैसे कष्ट सहन कर रहे हो) आपके लिए उसका बेहिसाब फल है (3)
और निःसन्देह आपका चरित्र बहुत महान है (4)
सो अभी शीघ्र आप भी देख लोगे और वह भी देख लेंगे (5)
कि तुम में से कौन दीवाना है (6)
आपका रब उसको भी बहुत जानता है जो उसके मार्ग से भटक गया और उनको भी भलिभांति जानता है जो सीधे मार्ग पर चल रहे हैं (7)
अतः आप झुट्लाने वालों की न मानना (8)
वह तो चाहते हैं कि आप थोड़ा ढीला हो जाऐं तो वह भी ढीले पढ़ जाऐं (9)
और आप किसी ऐसे व्यक्ति का कहना न मानना जो बहुत शपथ खाने वाला निम्न पद वाला हो(10)
और व्यंग करता है दोषान्वेषी और निन्दा करने वाला हो (11)
भलाई के कर्मों से लोगों को रोकने वाला अत्याचार व अन्याय में सीमा से बढ़ जाने वाला (12)
प्रचण्ड कुकर्मी और अन्याय करने वाला है (13)
यह सब इसलिए है कि रखता है धान और सन्तान (14)
जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि यह अगले लोगों की कथाऐं हैं (15)
हम अभी शीघ्र उसकी नाक पर दाग लगाएंगे अर्थात अपमानित करेंगे (16)

سو جب وہ دیکھ لیں گے کہ وہ وعدہ آ گیا تو کافروں کے منہ بُرے ہو جائیں گے اور ان سے کہا جائے گا کہ یہ وہی ہے جس کے تم طلب گار تھے (۲۷)
کہو کہ بھلا دیکھو تو اگر اللہ مجھ کو اور میرے ساتھیوں کو ہلاک کر دے یا ہم پر مہربانی کرے تو کون ہے جو کافروں کو دکھ دینے والے عذاب سے پناہ دے (۲۸)
کہہ دو کہ وہ جو رحمٰن ہے ہم اسی پر ایمان لائے اور اسی پر بھروسہ رکھتے ہیں تم کو ابھی معلوم ہو جائے گا کہ صریح گمراہی میں کون پڑ رہا تھا (۲۹)
(ان سے) پوچھو کبھی تم نے یہ بھی سوچا ہے کہ اگر تمہارے (دریاؤں اور کنوؤں کا) پانی خشک ہو جائے تو کون ہے جو پانی کی بہتی ہوئی سوتیں نکال لائے (۳۰)

سورۃ القلم۔مکی (۶۸)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ن۔اے محمد! شاہد ہے قلم اور وہ جس کو لکھنے والے لکھ رہے ہیں (یعنی کتاب) (۱)
کہ اے محمد آپ اپنے اللہ کے فضل سے دیوانے نہیں ہو (۲)
(اور آپ انسانوں کی اصلاح کے لئے جیسی کچھ تکلیفیں برداشت کر رہے ہو) تمہارے لئے اس کا بے حساب اجر ہے (۳)
اور بے شک آپ کے اخلاق بڑے عالی ہیں (۴)
سو ابھی جلد آپ بھی دیکھ لو گے اور وہ بھی دیکھ لیں گے (۵)
کہ تم میں سے کون دیوانہ ہے (۶)
آپ کا رب اس کو بھی خوب جانتا ہے جو اس کے رستے سے بھٹک گیا اور ان کو بھی خوب جانتا ہے جو سیدھے رستے پر چل رہے ہیں (۷)
پس آپ جھٹلانے والوں کی نہ ماننا (۸)
وہ تو چاہتے ہیں کہ آپ ذرا ڈھیلا ہو جائیں تو وہ بھی ڈھیلے پڑ جائیں (۹)
اور آپ کسی ایسے شخص کا کہنا نہ ماننا جو بہت قسمیں کھانے والا ذلیل اوقات ہو (۱۰)
اور طعنے دیتا ہے عیب گو چغل خور ہو (۱۱)
بھلائی کے کاموں سے لوگوں کو روکنے والا ظلم و زیادتی میں حد سے بڑھ جانے والا (۱۲)
سخت بد اعمال اور جفا کار ہے (۱۳)
یہ سب اس لئے ہے کہ رکھتا ہے مال اور اولاد (۱۴)
جب اس کو ہماری آیتیں پڑھ کر سنائی جاتی ہیں تو کہتا ہے کہ یہ اگلے لوگوں کے فسانے ہیں (۱۵)
ہم ابھی جلد اس کی ناک پر داغ لگائیں گے یعنی ذلیل کریں گے (۱۶)

हमने उनको उसी प्रकार परीक्षा में डाला है जिस प्रकार एक उपवन के स्वामियों को परीक्षा में डाला था जब उन्होंने शपथ खाई कि प्रातः अवश्य अपने उपवन के फल तोड़ेंगे (17)

और उन्होंने उसमें से निर्धनों और मिसकीनों के लिए थोड़ा सा अंश भी अलग करने का इरादा न किया था (अर्थात वह कोई इस्तसना नहीं कर रहे थे) (18) {अर्थात मिसकीनों को दान देने के लिए}

सो अभी सो ही रहे थे कि तुम्हारे रब की ओर से (रातो रात) उस पर एक विपत्ति फिर गई (19)

तो वह ऐसा हो गया जैसे कटी हुई खेती (20)

प्रातः होते ही उन्होंने एक दूसरे को पुकारा (21)

कि यदि तुम को काटना है तो अपनी खेती पर सवेरे ही जा पहुंचो (22)

तो वह चल पड़े और आपस में चुपके चुपके कहते जाते थे (23)

कि आज कोई निर्धन तुम्हारे उपवन में न आने पाए (24)

वह प्रातः होते ही उपवन में जा पहुंचे मानो वह कृपणता पर प्रभुत्व शाली ही तो थे (25)

परन्तु जब उपवन देखा तो (वीरान) तो कहने लगे कदाचित हम मार्ग भूल गये (26)

नहीं अपितु हम वंचित रह गए (27)

उनमें जो सबसे उत्तम व्यक्ति था उसने कहा मैंने तुम से कहा न था कि तुम ईश्वर की आज्ञाकारी क्यों नहीं करते अर्थात उसकी पवित्रता वर्णन करो (28)

वह पुकार उठे पाक है हमारा रब वास्तवमें हम पापी हैं (29)

फिर उनमें से हर एक दूसरे की भर्त्सना करने लगा (30)

और कहने लगा खेद है हमारी दशा पर निःसन्देह हम उद्दण्ड हो गए थे (31)

आशा है कि हमारा रब इसके बदले हमें इससे अच्छा उपवन देगा हम अपने ईश्वर की ओर आकृष्ट होते हैं (पश्चाताप करके) (32)

(देखो) दण्ड यूं होता है और परलोक का कष्ट इससे कहीं बढ़कर है यदि वह लोग जाने (33)

यह सत्य है कि सदाचारियों के लिए उनके रब के यहां प्रसादों के उपवन हैं (34)

तो क्या हम (अपने) आज्ञाकारी बन्दों को अपराधियों के बराबर कर देंगे? (35)

तुम्हें क्या हो गया है? कैसे (बेतुके) निर्णय कर रहे हो (36)

क्या तुम्हारे पास कोई (आसमानी) पुस्तक है जिसमें तुम यह पढ़ते हो (37)

कि (क़यामत के दिन) तुम्हें वही मिलेगा जिसे तुम पसन्द करते हो (38)

या तुमने हम से वचन ले रखा है जो क़यामत के दिन तक चलेगा कि जिस वस्तु का तुम आदेश

ہم نے اُن کو اُسی طرح آزمائش میں ڈالا ہے جس طرح ایک باغ کے مالکوں کو آزمائش میں ڈالا تھا جب انہوں نے قسم کھائی کہ صبح سویرے ضرور اپنے باغ کے پھل توڑیں گے (۱۷)

اور انہوں نے اس میں سے محتاجوں اور مسکینوں کے لئے ذرا سا حصہ بھی الگ کرنے کا ارادہ نہ کیا تھا (یعنی وہ کوئی استثنا نہیں کر رہے تھے) (۱۸) [یعنی مسکینوں کو خیرات دینے کے لئے]

سو وہ ابھی سو ہی رہے تھے کہ تمہارے رب کی طرف سے (راتوں رات) اس پر ایک آفت پھر گئی (۱۹)

تو وہ ایسا ہو گیا جیسے کٹی ہوئی کھیتی (۲۰)

صبح ہوتے ہی انہوں نے ایک دوسرے کو پکارا (۲۱)

کہ اگر تم کو کاٹنا ہے تو اپنی کھیتی پر سویرے ہی جا پہنچو (۲۲)

تو وہ چل پڑے اور آپس میں چپکے چپکے کہتے جاتے تھے (۲۳)

کہ آج کوئی محتاج تمہارے باغ میں نہ آنے پائے (۲۴)

وہ صبح ہوتے ہی باغ میں جا پہنچے گویا وہ بخیلی پر قادر ہی تو تھے (۲۵)

مگر جب باغ دیکھا تو (ویران) تو کہنے لگے شاید ہم رستہ بھول گئے (۲۶)

نہیں بلکہ ہم محروم رہ گئے (۲۷)

ان میں جو سب سے بہتر آدمی تھا اس نے کہا میں نے تم سے کہا نہ تھا کہ تم اللہ کی فرمانبرداری کیوں نہیں کرتے یعنی اس کی تسبیح کرو (۲۸)

وہ پکار اٹھے پاک ہے ہمارا رب واقعی ہم گناہگار ہیں (۲۹)

پھر ان میں سے ہر ایک دوسرے کو ملامت کرنے لگا (۳۰)

اور کہنے لگے افسوس ہمارے حال پر بے شک ہم سرکش ہو گئے تھے (۳۱)

امید ہے کہ ہمارا رب اس کے بدلے ہمیں اس سے بہتر باغ دے گا ہم اپنے رب کی طرف مائل ہوتے ہیں (توبہ کر کے) (۳۲)

(دیکھو) عذاب یوں ہوتا ہے اور آخرت کا عذاب اس سے کہیں بڑھ کر ہے کاش وہ لوگ جانیں (۳۳)

یہ حقیقت ہے کہ پرہیزگاروں کے لئے ان کے رب کے یہاں نعمت کے باغ ہیں (۳۴)

تو کیا ہم (اپنے) فرمانبردار بندوں کو مجرموں کے برابر کر دیں گے؟ (۳۵)

تمہیں کیا ہو گیا ہے؟ کیسے (بے تکے) فیصلے کر رہے ہو (۳۶)

کیا تمہارے پاس کوئی (آسمانی) کتاب ہے جس میں تم یہ پڑھتے ہو (۳۷)

کہ (قیامت کے روز) تمہیں وہی ملے گا جسے تم پسند کرتے ہو (۳۸)

یا تم نے ہم سے عہد لے رکھا ہے جو قیامت کے دن تک چلے گا

करोगे वह तुम्हारे लिए प्रस्तुत होगी (39)
(ऐ रसूल!) उनसे पूछो कि उनमें से उसका कौन दायित्व लेता है (40)
क्या (इस कथन में) उनके और भी साझी हैं यदि वह सच्चे हैं तो अपने साझियों को प्रस्तुत करें (41)
जिस दिन साक़ अर्थात बड़ी विपत्ति महाप्रलय से आवरण उठाया जाएगा अर्थात महाप्रलय का उद्घाटन होगा और ईश्वर का तेज सामने आएगा उस दिन सजदा के लिए पुकारा जाएगा, परन्तु जो दुनिया में अवज्ञाकार थे वह सजदा करने पर सामर्थ्य न रख सकेंगे क्योंकि आज्ञापालन दुनिया में करनी थी जो समय निकल जाएगा (42)
[इस विपत्ति को ऐसे भी देखा जाए कि कभी किसी को दुनिया में किसी भय के समय भागना पड़ता है तो पाजामा धोती इत्यादि को ऊपर उठा कर पिंडली खोल कर भागता है इसलिए साक़ को बड़ी विपत्ति महाप्रलय कहा गया है.
उनकी आंखें झुकी हुई होंगी और उन पर हीनता छा रही होगी इसलिए कि जब पहले उनको बुलाया जाता था तो इनकार कर देते थे जबकि वह ठीक थे (43)
(तो ऐ मुहम्मद स0) पस इस कथन कुरआन के झुठलाने वालों का प्रसंग हमारे समर्पित है मुझ पर छोड़ दो हम ऐसे ढंग से उन्हें शनैःशनैः तबाही की ओर ले जाएंगे कि उन्हें सूचना भी न होगी (44)
और मेरा नियम उन्हें छूट दिए जाता है मेरी युक्ति शक्तिशाली है (45)
क्या आप उनसे कुछ बदला मांगते हो जिसके भार तले दबे जा रहे हैं (46)
या उनके पास परोक्ष की सूचनाएं हैं कि लिखते जाते हैं (47)
(ऐ रसूल) आप अपने ईश्वर के आदेश के लिए दृढ़ रहें और मीन वाले की भांति न हो जाना वह समय उल्लेखनीय है जब उसने पुकारा और वह रोष को पिये हुए था (48) {21:87;37:139से146;20:114}
यदि उसे उसके रब की कृपा न पा लेती (तो उसे मीन ग्रास बना लेती) निःसन्देह उसे खुले मैदान में पड़े हुए पाया गया था और वह शरण सुरक्षा में लिया गया था (49)
फिर उसके रब ने पुनः चुन लिया और उसे सुधार करने वालों में पाया (50)
और निकट है कि काफ़िर अपनी तीव्र निगाहों से आपको फुसला दें जब कभी कुरआन सुनेंगे तो कह देंगे यह तो दीवाना है (51)
और यह (कुरआन) संसार वालों के लिए शिक्षा है (52)

सूरतुल हाक्क़ा - मक्की (69)

वह सचमुच होने वाली (1)
वह सचमुच होने वाली क्या है (2)
और आपको ईश्वर से बढ़कर और कौन बता

جس شے کا تم حکم کرو گے وہ تمہارے لئے حاضر ہوگی (۳۹)
(اے رسول!) ان سے پوچھو کہ ان میں سے اس کا کون ذمہ لیتا ہے (۴۰)
کیا (اس قول میں) اُن کے اور بھی شریک ہیں اگر وہ سچے ہیں تو اپنے شریکوں کو پیش کریں (۴۱)
جس دن ساق یعنی بڑی مصیبت قیامت سے پردہ اٹھایا جائے گا یعنی قیامت کا انکشاف ہوگا اور اللہ کی تجلی سامنے آئے گی اس دن سجدے کے لئے پکارا جائے گا مگر جو دنیا میں نافرمان تھے وہ سجدہ کرنے پر قدرت نہ رکھ سکیں گے کیوں کہ فرمانبرداری دنیا میں کرنی تھی جو وقت نکل جائے گا (۴۲)
[اس مصیبت کو ایسے بھی دیکھا جائے کہ کبھی کسی کو دنیا میں کسی خطرے کے وقت بھاگنا پڑتا ہے تو پاجامہ دھوتی وغیرہ کو اوپر اٹھا کر پنڈلی کھول کر بھاگتا ہے۔اس لئے ساق کو بڑی مصیبت قیامت کہا گیا ہے]
ان کی آنکھیں جھکی ہوئی ہوں گی اور ان پر ذلت چھا رہی ہوگی اس لئے کہ جب پہلے ان کو بلایا جاتا تھا تو انکار کر دیتے تھے جب کہ صحیح وسالم تھے (۴۳)
(تو اے محمدؐ) پس اس کلام قرآن کے جھٹلانے والوں کا معاملہ ہمارے سپرد ہے مجھ پر چھوڑ دو ہم ایسے طریقے سے انہیں آہستہ آہستہ تباہی کی طرف لے جائیں گے کہ انہیں خبر بھی نہ ہوگی (۴۴)
اور میرا قانون انہیں مہلت دیئے جانا ہے میری تدبیر قوی ہے (۴۵)
کیا آپ ان سے کچھ اجر مانگتے ہو جس کے بوجھ تلے دبے جا رہے ہیں (۴۶)
یا ان کے پاس غیب کی خبریں ہیں کہ لکھتے جاتے ہیں (۴۷)
(اے رسول!) آپ اپنے رب کے حکم کے لئے مستقل مزاج رہیں اور مچھلی والے کی طرح نہ ہو جانا وہ وقت قابل ذکر ہے جب اس نے پکارا اور وہ غصے کو پیے ہوئے تھا (۴۸) [۲۱:۸۷؛ ۳۷:۱۳۹تا۱۴۶؛ ۲۰:۱۱۴]
اگر اسے اس کے رب کی نعمت نہ پالیتی (تو اسے مچھلی لقمہ بنا لیتی) یقیناً اسے کھلے میدان میں پڑے ہوئے پایا گیا تھا اور وہ ذمہ حفاظت میں لیا گیا تھا (۴۹)
پھر اس کے رب نے پھر چن لیا اور اسے اصلاح کرنے والوں میں پایا (۵۰)
اور قریب ہے کہ کافر اپنی تیز نگاہوں سے آپ کو پھسلا دیں جب کبھی قرآن سنیں گے تو کہہ دیں گے یہ تو ضرور دیوانہ ہے (۵۱)
اور یہ (قرآن) اہل عالم کے لئے نصیحت ہے (۵۲)

سورت الحاقہ ۔ مکی (۶۹)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

وہ سچ مچ ہونے والی ہے (۱) وہ سچ مچ ہونے والی کیا ہے؟ (۲)
اور آپ کو اللہ سے بڑھ کر اور کون بتا سکتا ہے کہ وہ سچ مچ

सकता है कि वह सचमुच होने वाली क्या है (3)
(वही) उस खड़ खड़ाने वाली (जिस) को समूद और आद (दोनों) ने झुठलाया (4)
तो समूद तो एक जोर की कड़क से नष्ट कर दिये गये (5)
और आद उनको प्रचण्ड आंधी से नष्ट कर दिया गया (6)
ईश्वर ने उसको उन पर बराबर सात रात और आठ दिन चलाए रखा तो (तुम वहां होते तो) देखते कि वहां (उनकी लाशें) इस प्रकार बिखरी पड़ी हैं मानों खजूर के जीर्ण तने (पृथ्वी पर पड़े) हों (7)
क्या उनमें से कोई भी तुम को नजर आ रहा है (8)
और इसी प्रकार फ़िरऔन और जो लोग उनसे पहले थे और जो उन बस्तियों में रहते थे जो उलट दी गई सब पाप के कर्म करते थे (9)
और उन्होंने अपने रब के रसूलों की नाफ़रमानी की तो ईश्वर ने भी उन्हें जब (नूह के समय में) पानी का तूफ़ान आवेश में आया तो हमने तुम को (अर्थात तुम्हारे पूर्वजो को) नाव में सवार कर लिया (11)
ताकि इस घटना को तुम्हारे लिए यादगार बनाऐं और याद रखने वाले कान (मस्तिष्क) उसे याद रखे (12)
तो जब सूर में एक बार फूंक मार दी जाएगी (13)
और पृथ्वी और पर्वतों को उठाकर (और टकराकर) एक ही चोट में चूर्ण चूर्ण कर दिया जाएगा (14)
तो उस दिन घटित होने वाली (क़यामत) हो पड़ेगी (15)
और आकाश फट जायेगा तो वह उस दिन बोदा होगा (16) {54:1;55:37}
और फ़रिश्ते उसके चारों ओर उपस्थित होंगे और उस दिन आठ फ़रिश्ते उसके सिंहासन को उठाए होंगे (17) {या उसके कानून को लागू करेंगे}
उस दिन सब प्रस्तुत किये जाओगे और तुम्हारी कोई बात ईश्वर से छुपी न रहेगी (18)
तो जिसका कर्म पत्र उसके दाऐं हाथ में दिया जाएगा वह (दूसरों से) कहेगा कि लो मेरा कर्म पत्र पढ़ो (19)
मुझे विश्वास था कि मुझको मेरा लेखा अवश्य मिलेगा (20)
अतः वह व्यक्ति मनमाने सुख में होगा (21)
ऊंचे ऊंचे उपवनों में (22)
जिनके फल मेवे झुके हुए होंगे (23)
(उनसे कहा जाएगा) जो कर्म तुम ने दुनिया के जीवन में किये थे उनके बदले में आज चैन से खाओ (24)
और जिनका कर्म पत्र उनके बाऐं हाथ में दिया

ہونے والی کیا ہے(۳)
(وہی) اس کھڑ کھڑانے والی (جس) کو ثمود اور عاد (دونوں) نے جھٹلایا (۴)
توثمود تو ایک زور کی کڑک سے ہلاک کردئے گئے (۵)
اور عاد ان کو نہایت تیز آندھی سے غارت کر دیا گیا (۶)
اللہ نے اس کو ان پر مسلسل سات رات اور آٹھ دن چلائے رکھا تو (تم وہاں ہوتے تو) دیکھتے کہ وہاں (ان کی لاشیں) اس طرح بکھری پڑی ہیں گویا کھجور کے بوسیدہ تنے (زمین پر پڑے) ہوں (۷)
کیا ان میں سے کوئی بھی تم کو نظر آرہا ہے(۸)
اور اسی طرح فرعون اور جو لوگ ان سے پہلے تھے اور جو ان بستیوں میں رہتے تھے جو الٹ دی گئیں سب گناہ کے کام کرتے تھے(۹)
اورانہوں نے اپنے رب کے رسولوں کی نافرمانی کی تو اللہ نے بھی انہیں بڑی سختی سے پکڑا(۱۰)
اور جب (نوح کے زمانہ میں) پانی کا طوفان جوش میں آیا توہم نے تم کو (یعنی تمہارے بزرگوں کو) کشتی میں سوار کرلیا(۱۱)
تاکہ اس واقعہ کو تمہارے لئے یادگار بنائیں اور یاد رکھنے والے کان (دماغ) سے یاد رکھیں (۱۲)
توجب صور میں ایک بار پھونک ماردی جائے گی (۱۳)
اور زمین اور پہاڑوں کو اٹھا کر (اور ٹکرا کر) ایک ہی ضرب میں ریزہ ریزہ کردیا جائے گا(۱۴)
تو اس دن واقع ہونے والی (قیامت) ہو پڑے گی (۱۵)
اور آسمان پھٹ جائے گا تو وہ اس دن بودا ہوگا (۱۶)
[۳۷:۵۵؛۱:۵۴]
اور فرشتے اس کے چاروں طرف موجود ہوں گے اور اس روز آٹھ فرشتے اس کے عرش کو اٹھائے ہوں گے (۱۷)
[یا اس کے قانون کو نافذ کریں گے]
اس روز تم سب پیش کئے جاؤ گے اور تمہاری کوئی بات اللہ سے چھپی نہ رہے گی (۱۸)
توجس کا نامہ اعمال اس کے داہنے ہاتھ میں دیا جائے گا وہ (دوسروں سے) کہے گا کہ لو میرا نامہ اعمال پڑھو(۱۹)
مجھے یقین تھا کہ مجھ کو میرا حساب ضرور ملے گا(۲۰)
پس وہ شخص من مانے عیش میں ہوگا(۲۱)
بلند وبالا باغوں میں(۲۲)
جن کے پھل میوے جھکے ہوئے ہوں گے(۲۳)
(ان سے کہا جائے گا) جو عمل تم نے دنیا کی زندگی میں کئے تھے ان کے بدلے میں آج مزے سے کھاؤ(۲۴)
اور جن کا نامہ اعمال ان کے بائیں ہاتھ میں دیا جائے گا وہ

जाएगा वह कहेगा यदि मुझे मेरा कर्म पत्र न दिया जाता (25)
और मुझे ज्ञात न होता कि मेरा लेखा क्या है(26)
यदि मृत्यु मेरा काम तमाम कर चुकी होती (27)
मेरे धन ने भी मुझे कुछ लाभ न दिया (28)
मेरा प्रभुत्व भी मुझ से जाता रहा (29)
(आदेश होगा कि) उसे पकड़ लो और पट्टा पहना दो (30)
फिर नर्क की आग में झोंक दो (31)
फिर उसे ऐसी जंजीर में जिसकी नाप सत्तर हाथ हो जकड़ दो (32)
(यह इसलिए कि) वह न तो ईश्वर श्रेष्ठ पर विश्वास लाता था (33)
और न मिसकीन के खाना खिलाने पर तत्पर करता था (34)
सो आज उसका भी यहां कोई समर्थक नही (35)
और अत्यन्त गर्म पानी जख़्मों की पीप के अतिरिक्त उसके लिए और कोई खाना है (36)
जिसको पापियों के अतिरिक्त कोई नही खाएगा(37)
अतः उनका साक्ष्य प्रयाप्त नही जो तुम्हें नजर आती है? (तो मनन करो) (38)
और उनमें भी मनन करो जो तुमको दिखाई नही देती (39)
(अर्थात जगत की हर वस्तु साक्ष्य देती है कि) यह कुरआन ईश्वर की वाणी है एक सम्मानित फ़रिश्ते का (लाया हुआ) कथन (40)
यह किसी कवि की वाणी नही है परन्तु तुम लोग बहुत कम विश्वास लाते हो (41)
और न किसी काहिन का कथन है परन्तु तुम लोग बहुत कम मनन करते हो (42)
यह तो संसार के स्वामी की ओर से प्रेषित किया हुआ है (43)
यदि यह (रसूल) हमारे बारे में अपनी ओर से कोई बात घड़ कर लाता (44)
तो हम उसको दाहिने हाथ से अर्थात पूरी शक्ति से पकड़ लेते (45)
फिर उनकी रग गर्दन काट डालते (46)
फिर तुम में से कोई हमें इस काम से रोकने वाला न होता (47)
सत्य यह है कि यह कुरआन सदाचारियों के लिए शिक्षा है (48)
हम अच्छी प्रकार जानते है कि तुम में से कतिपय उसको झुठलाने वाले है (49)
ऐसे काफ़िरों के लिए संताप का कारण है (50)
और इसमें कुछ शंका नही कि यह सत्य है (51)
पस ऐ नबी अपने प्रतिष्ठ वाले रब के नाम की पवित्रता का वर्णन करते रहो (52)

کہے گا اے کاش مجھے میرا نامہ اعمال نہ دیا جاتا (۲۵)
اور مجھے معلوم نہ ہوتا کہ میرا حساب کیا ہے (۲۶)
کاش موت میرا کام تمام کرچکی ہوتی (۲۷)
میرے مال نے بھی مجھے کچھ نفع نہ دیا (۲۸)
میرا غلبہ بھی مجھ سے جاتا رہا (۲۹)
(حکم ہوگا کہ) اسے پکڑلو اور طوق پہنا دو (۳۰)
پھر دوزخ کی آگ میں جھونک دو (۳۱)
پھر اسے ایسی زنجیر میں جس کی پیائش ستر ہاتھ ہو جکڑ دو (۳۲)
(یہ اس لئے کہ) وہ نہ تو اللہ عظیم پر ایمان لاتا تھا (۳۳)
اور نہ مسکین کے کھانا کھلانے پر آمادہ کرتا تھا (۳۴)
سو آج اس کا بھی یہاں کوئی حمایتی نہیں (۳۵)
اور انتہائی گرم پانی زخموں کی پیپ کے سوا اس کے لئے اور کوئی کھانا ہے (۳۶)
جس کو گنہگاروں کے علاوہ کوئی نہیں کھائے گا (۳۷)
پس ان کی شہادت کافی نہیں جو تمہیں نظر آتی ہیں؟ (تو غور کرو) (۳۸)
اور ان میں بھی غور کرو جو تم کو نظر نہیں آتیں (۳۹)
(یعنی کائنات کی ہر شئی گواہی دیتی ہے کہ) یہ قرآن اللہ کا کلام ہے ایک معزز فرشتہ کا (لایا ہوا) قول (۴۰)
یہ کسی شاعر کا کلام نہیں ہے مگر تم لوگ بہت کم یقین لاتے ہو (۴۱)
اور نہ کسی کاہن کا قول ہے مگر تم لوگ بہت کم غور کرتے ہو (۴۲)
یہ قول پروردگار عالم کی طرف سے نازل کیا ہوا ہے (۴۳)
اگر یہ (رسول) ہمارے بارے میں اپنی طرف سے کوئی بات گھڑ کر لاتا (۴۴)
تو ہم اس کو داہنے ہاتھ سے یعنی پوری قوت سے پکڑ لیتے (۴۵)
پھر اُن کی رگِ گردن کاٹ ڈالتے (۴۶)
پھر تم میں سے کوئی ہمیں اس کام سے روکنے والا نہ ہوتا (۴۷)
حقیقت یہ ہے کہ یہ قرآن پرہیزگاروں کے لئے نصیحت ہے (۴۸)
ہم اچھی طرح جانتے ہیں کہ تم میں سے بعض اس کو جھٹلانے والے ہیں (۴۹)
ایسے کافروں کے لئے موجب حسرت ہے (۵۰)
اور اس میں کچھ شک نہیں کہ یہ برحق ہے (۵۱)
پس اے نبی اپنے باعظمت رب کے نام کی پاکی بیان کرتے رہو (۵۲)

सूरतुल मआरिज - मक्की (70)

एक प्रश्नकर्ता ने (कष्टके अस्वीकारी) कष्ट की मांग की जो वास्तव में होने वाला है (1)

नास्तिकों पर जिसे हटाने वाला कोई नही वह हीन हो जाएंगे उनको उत्थान नही (2)

उसके आने में विलम्ब इसलिए हो रहा है कि उसे ईश्वर के नियमानुसार घटित होना है उसकी हर योजना उन्नति की श्रेणी तै करके पूर्ति तक पहुंचती है वह अपने आरम्भ से पूर्ति तक एक दम नही पहुंचती अपितु क्रमशः ऐसा होता है (3)

पापियों का कोई कार्य स्थाई नही होता और न ही पूर्ति तक पहुंचता है हर व्यर्थ कार्य नष्ट हो जाता है जमाना और कुरआन साक्षी है उसका अंकन यह है कि ईश्वर अपनी स्कीम का आरम्भ उसके निम्न बिन्दु से करता है और वह उन्नति प्राप्त कर लेता है इस उत्थान के प्राप्त करने का एक नियम है वह मनन करने से दिखाई देगा अर्थात जगत में कार्यरत शक्तियां अर्थात फरिश्ते और सदाचारी इन्सान हर कार्य को ईश्वर के दिए हुए ज्ञान "वही" से निम्न बिन्दु से उच्च स्तर तक पहुंचाने के लिए कार्य में क्रियाशील रहते है यह दौर बड़े दीर्घ काल में पूर्ण होते है जिनका काल हजार हजार अपितु पचास पचास हजार साल का होता है उनके इस कार्य को उनके सत्कर्म (35:10) उच्च करते चले जाते है और वह इतनी जल्दी अच्छे परिणाम सामने लाते है मानो एक यौम में ही वह कार्य हो गया यद्यपि उसके होने में कुछ समय लगता है वह समय कम भी हो सकता है और पचास हजार वर्ष तक भी दीर्घ हो सकता है, अतिरिक्त इसके जो दुष्ट होते है और ईश्वर के दिए हुए ज्ञान के विपरीत कार्य करते है तो उनके लिए परिणाम बुरा होता है चाहे वह पचास हजार अर्थात कितने ही दीर्घ समय महाप्रलय तक कार्य करते रहें उस उच्चता उत्थान को नही पहुंच सकते असफल होते रहेंगे (4) {32:5;35:10;16:2; 22:47;78:38; 97:4}

नोट- जिसकी ओर से ऐसा प्रगतिशील कार्य होता है उसके क्या गुण है उन पर विचार किया जाए जो अस्तित्व ऐसा कार्य कर सकता है वह नास्तिकों को कष्ट देने पर प्रभुत्वशाली है या नही? निःसन्देह प्रभुत्व-शाली है तो आयत चार को पढ़ने से पहले यह काम कैसे हुए या होता है उसको देखा जाए

इस समय जिस जगत को हम देख रहे है आरम्भ में यह इस स्थिति में नही था अपितु

(21:30) क्या नास्तिकों ने यह नही देखा कि आकाश व पृथ्वी आपस में मिले जुले थे, फिर हमने इन्हें पृथक किया और हर जीवित वस्तु को पानी से स्थापित किया अर्थात पानी से जीवित है,

(41:9) आप कह दें क्या तुम उसका इनकार करते हो जिसने पृथ्वी को दो यौम (दो चरण) में उत्पन्न किया और तुम उसके साझी बनाते हो, वही है सारे जहानों का रब,

(41:10) और उसने इसमें इसके ऊपर पर्वत बनाऐं और इसमें सम्पन्नता रखी, और इसमें चार अय्याम (अर्थात यहां तक चार चरण अय्याम हो गए) दौरों में ऐसा हो गया कि उनका आहार निर्धारित किया एक जैसा प्रश्न व परिश्रम करने वाले के लिए

سورۃ المعارج۔مکی (٧٠)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ایک سائل (منکر عذاب) نے عذاب کا سوال کیا جو حقیقت میں ہونے والا ہے(١)

کافروں پر جسے کوئی ہٹانے والا نہیں اور وہ ذلیل ہو جائیں ان کو عروج نہیں (٢)

اس کے آنے میں دیر اس لئے ہو رہی ہے کہ اسے اللہ کے قانون کے مطابق واقع ہونا ہے اس کی ہر اسکیم ارتقائی مدارج طے کر کے تکمیل تک پہنچتی ہے وہ اپنے نقطۂ آغاز سے تکمیل تک یک لخت نہیں پہنچتی بلکہ بتدریج ایسا ہوتا ہے (٣)

نافرمانوں کا کوئی کام پائیدار نہیں ہوتا اور نہ ہی تکمیل تک پہنچتا ہے ہر باطل کام برباد ہو جاتا ہے زمانہ اور قرآن شاہد ہے اس کا انداز یہ ہے کہ اللہ اپنی اسکیم کا آغاز اس کے پست ترین نقطہ سے کرتا ہے اور وہ عروج حاصل کر لیتا ہے مگر اس عروج کے حاصل کرنے کا ایک قانون ہے جو بتدریج کام کرتا ہے وہ غور کرنے سے نظر آئے گا یعنی عالم خلق میں کارفرماں کائناتی قوتیں یعنی فرشتے اور نیک انسان ہر کام کو اللہ کے دیئے ہوئے علم "وحی" سے پست ترین نقطہ سے تکمیل تک پہنچانے کے لئے سرگرم عمل رہتے ہیں یہ مراحل بڑے طویل وقفوں میں طے ہوتے ہیں جن کی مدت ہزار ہزار بلکہ پچاس پچاس ہزار سال کی ہوتی ہے اور ان کے اس کام کو ان کے نیک عمل (٣٥:١٠) بلند کرتے چلے جاتے ہیں اور وہ اتنی جلدی اچھے نتائج سامنے لاتے ہیں مانو ایک یوم میں ہی وہ کام ہو گیا۔ حالانکہ اس کے ہونے میں کچھ وقت لگتا ہے وہ وقت کم بھی ہو سکتا ہے اور پچاس ہزار سال تک بھی طویل ہو سکتا ہے بخلاف اس کے جو بد ہوتے ہیں اور اللہ کے دیئے ہوئے علم کے خلاف کام کرتے ہیں تو ان کے لئے انجام خراب ہونا ہے چاہے وہ پچاس ہزار یعنی کتنی ہی طویل مدت قیامت تک کام کرتے رہیں اس بلندی عروج کو نہیں پہنچ سکتے ناکام ہوتے رہیں گے (٤) [٣٢:٥؛٣٥:١٠؛١٦:٢؛٢٢:٤٧؛٧٨:٣٨؛٩٧:٤]

نوٹ:۔ جس کی طرف سے ایسا ارتقائی کام ہوتا ہے اس کی کیا صفات ہیں ان پر غور کیا جائے جو ذات ایسا کام کر سکتی ہے وہ منکروں کو عذاب دینے پر قادر ہے یا نہیں؟ یقیناً قادر ہے تو آیت چار پڑھنے سے پہلے یہ کام کیسے ہوا یا ہوتا ہے اس کو دیکھا جائے

اس وقت جس کائنات کو ہم دیکھ رہے ہیں شروع میں یہ اس حالت میں نہیں تھی بلکہ

(٢١:٣٠) کیا کافروں نے یہ نہیں دیکھا کہ آسمان و زمین باہم ملے جلے تھے پھر ہم نے اس انہیں جدا کیا اور ہر زندہ چیز کو پانی سے قائم کیا یعنی پانی سے زندہ ہے

(٤١:٩) آپ فرمادیں کیا تم اس کا انکار کرتے ہو جس نے زمین کو دو یوم (٢ دور) میں پیدا کیا اور تم اس کے شریک ٹھہراتے ہو، وہی ہے سارے جہانوں کا رب۔

(٤١:١٠) اور اُس نے اس میں اس کے اوپر پہاڑ بنائے اور اس میں برکت رکھی، اور اس میں چار ایام (یعنی یہاں تک چار دور ایام ہو گئے) دوروں میں ایسا ہو گیا کہ ان کی خوراکیں مقرر کیں یکساں سوال محنت کرنے والوں کے لئے۔

(41:11) फिर आकाश की ओर आकृष्ट हुआ और वह धुंवा सा था, पस उससे और पृथ्वी से कहा कि तुम दोनों प्रसन्नता से आओ या अप्रसन्नता से, दोनों ने निवेदन किया हम प्रसन्नता के साथ उपस्थित हैं, हमारा तो कर्तव्य ही तेरी आज्ञापालन करता है तो प्रसन्नता और अप्रसन्नता का अर्थ ही नही.

(41:12) फिर उसने दो यौम (दो चरणों) में सात आकाश बनाए और हर आकाश में उसके कार्य की वही (आदेश वाणी) कर दी, और हमने आकाश दुनिया को सितारों से सज्जा दी और सुरक्षा के लिए भी, यह अधिपति ज्ञान वाले ईश्वर का निर्णय विधि है, यह पूरे छै अय्याम छै दौर हो गए इन दौरों का कुछ संकेत (79:27 से32तक) नजर आता है अवलोकन हो.

(79:27,28) क्या तुम्हारा बनाना अधिक कठिन है या आकाश का, उसने उसको बनाया, उसकी छत को उच्च किया फिर उसको ठीक किया (एक यौम) "1"

(79:29) उसकी रात्रि को अन्धाकारपूर्ण कर दिया (एक यौम) "2" और निकाला दिन का प्रकाश (एक यौम) "3"

(79:30) और उसके बाद पृथ्वी को बिछाया (एक दौर) "4"

(79:31) इससे उसका पानी निकाला और उसका चारा (एक दौर) "5"

(79:32,33) और पर्वतों को स्थापित किया तुम्हारे और तुम्हारे चौपायों के लाभ के लिए (एक दौर) यह कुल छै दौर अय्याम हो गए

इन आयात से यह सिद्ध हुआ कि जब आरम्भ में पृथ्वी व आकाश को बनाया तो यह इस योग्य न थे कि पृथ्वी पर कोई जीवधारी रह सके, क्योंकि जीव को जीवित रहने के लिए अच्छी जलवायु, खाना, पानी और रहने का प्रबन्ध होना चाहिए अतः इस पृथ्वी को इस स्थिति में लाने के लिए जिसको हम देख रहे हैं एक दीर्घ युग की आवश्यकता थी, जिन से गुजर कर यह इस योग्य हो गई, वह क्रिया कैसे हुई उसको (79:27से32तक) और दूसरी आयतों में बताया गया है, अर्थात छै अय्याम दौर जिनका चक्र काल बहुत दीर्घ था, फिर ईश्वर ने कहा,

सूरत आराफ आयत 54, निःसन्देह तुम्हारा रब ईश्वर है जिसने पृथ्वी व आकाश को छै अय्याम (छै दौर) में बनाया और जब इस जगत को इस स्थिति में कर दिया कि इसमें चेतनाशील रचना रह सके तो फिर उसने अपना नियम भी दे दिया, और फिर इसका नियम इस जगत में चलने लगा और स्वयं उसको देखने के लिए अपने उच्च स्थान पर स्थापित होकर अपने नियम और विश्व की देख रेख करने लगा,

(32:4) हर वस्तु को अधिकार में रखा यद्यपि आरम्भ से ही उसका नियम चल रहा है जिसको कहा है कि पहले उसका नियम पानी पर था अर्थात पहले सब पानी थी,

वैज्ञानिक अनुसंधान खोज कर रहे हैं कि आरम्भ में यह पृथ्वी आग का गोला थी इसमें जीवधारी नही रह सकते थे, अतः इस पर वर्षा का दौर आरम्भ हुआ वह कितने समय तक रहा वह एक दिन या दस दिन नही था अपितु काफ़ी दीर्घकाल रहा, वह पचास हजार वर्ष भी हो सकता है और इससे कम अधिक भी हो सकता है, इस प्रकार ईश्वर का नियम छै अय्याम (दौरों) में यह कार्य करता रहा, और यह पृथ्वी इस योग्य हो गई कि इस पर जीवधारी आबाद हो सके तब ईश्वर ने अपनी और रचना को उत्पन्न किया फिर जिन्नात को और उनके बाद इन्सान को उत्पन्न किया,

यह विश्व एक दीर्घ काल में इस स्थिति में आया और यह सब ईश्वर के नियम के अनुसार हुआ, इससे सिद्ध हुआ कि हर वैध विषय की पूर्ति पूर्ण होने के लिए ईश्वर के नियमानुसार समय आवश्यक है वह काल अल्प भी हो सकता है और बहुत दीर्घ भी हो सकता है इसको ही आयात में अय्याम कहा है वह समय एक दिन या कम या एक हजार या पचास हजार साल या इससे भी अधिक हो

(۴۱:۱۱) پھر آسمان کی طرف متوجہ ہوا اور وہ دھواں سا تھا۔ پس اس سے اور زمین سے فرمایا کہ تم دونوں خوشی سے آو یا ناخوشی سے، دونوں نے عرض کیا ہم بخوشی حاضر ہیں ہمارا تو کام ہی تیری اطاعت ہے تو خوشی اور نا خوشی کا مطلب ہی نہیں۔

(۴۱:۱۲) پھر اس نے دو یوم (۲ دوروں) میں سات آسمان بنائے اور ہر آسمان میں اس کے کام کی وحی کر دی اور ہم نے آسمان دنیا کو ستاروں سے زینت دی اور حفاظت کے لئے بھی، یہ غالب علم والے اللہ کا فیصلہ ضابطہ ہے یہ پورے چھ ایام چھ دور ہو گئے۔ ان دوروں کا کچھ اشارہ (۷۹:۲۷ سے ۳۲ تک) نظر آتا ہے ملاحظہ ہو۔

(۷۹:۲۷،۲۸) کیا تمہارا بنانا زیادہ مشکل ہے یا آسمان کا، اس نے اس کو بنایا، اس کی چھت کو بلند کیا پھر اس کو درست کیا (ایک یوم) ۱

(۷۹:۲۹) اس کی رات کو تاریک کر دیا (ایک یوم) ۲ اور نکالی دن کی روشنی (ایک دور) ۳

(۷۹:۳۰) اور اس کے بعد زمین کو بچھایا (ایک دور) ۴

(۷۹:۳۱) اس سے اس کا پانی نکالا اور اس کا چارہ (ایک دور) ۵

(۷۹:۳۲:۳۳) اور پہاڑوں کو قائم کیا تمہارے اور تمہارے چوپایوں کے فائدے کے لئے (ایک دور) یہ کل چھ دور ایام ہو گئے۔

ان آیات سے یہ ثابت ہوا کہ جب شروع میں زمین و آسمان کو بنایا تو یہ اس لائق نہ تھے کہ زمین پر کوئی جاندار رہ سکے۔ کیوں کہ جاندار کو زندہ رہنے کے لئے اچھی آب و ہوا، کھانا، پانی، اور رہنے کا انتظام ہونا چاہیے۔ اس لئے اس زمین کو اس حالت میں لانے کے لئے جس کو ہم دیکھ رہے ہیں ایک طویل مدت ایام کی ضرورت تھی۔ جن سے گزر کر یہ اس لائق ہو گئی۔ وہ عمل کیسے ہوا اس کو (۷۹:۲۷ سے ۳۲) اور دوسری آیتوں میں بتایا گیا ہے یعنی چھ ایام دور جن کا دورانیہ بہت طویل تھا۔ اللہ نے فرمایا۔

سورت اعراف۔ آیات ۵۴۔ بے شک تمہارا رب اللہ ہے جس نے زمین و آسمان کو چھ ایام (چھ دور) میں بنایا اور جب اس کائنات کو اس حالت میں کر دیا کہ اس میں باشعور مخلوق رہ سکے تو پھر اس نے اپنا قانون بھی دے دیا، اور پھر اس کا قانون اس کائنات میں چلنے لگا اور خود اس کو دیکھنے کے لئے اپنے بلند مقام پر قائم ہو کر اپنے قانون اور کائنات کی نگرانی کرنے لگا۔

(۳۲:۴) ہر چیز کو اپنے کنٹرول میں رکھا حالانکہ شروع سے ہی اس کا قانون پانی پر تھا یعنی پہلے سب پانی تھا۔

سائنس داں تحقیق کر رہے ہیں کہ شروع میں یہ زمین آگ کا ایک گولا تھی اس میں جاندار نہیں رہ سکتے تھے اس لئے اس پر بارش کا دور شروع ہوا وہ کتنی مدت رہا وہ ایک دن یا دس دن نہیں تھا بلکہ کافی طویل مدت رہا وہ پچاس ہزار سال بھی ہو سکتا ہے اور اس سے کم زیادہ بھی ہو سکتا ہے اس طرح اللہ کا قانون چھ ایام (دوروں) میں یہ کام کرتا رہا اور یہ زمین اس لائق ہو گئی کہ اس پر جاندار آباد ہو سکیں۔ تب اللہ نے اپنی اور مخلوق کو پیدا کیا پھر جنات کو اور ان کے بعد انسان کو پیدا کیا۔

یہ کائنات ایک طویل مدت میں اس حالت میں آئی اور یہ سب اللہ کے قانون کے مطابق ہوا، اس سے ثابت ہوا کہ ہر جائز امر کی تکمیل مکمل ہونے کے لئے اللہ کے قانون کے مطابق مدت درکار ہے وہ مدت قلیل بھی ہو سکتی ہے اور بہت طویل بھی ہو سکتی ہے اس کو ہی آیات میں ایام کہا ہے۔ وہ مدت ایک دن یا کم یا ایک ہزار یا پچاس ہزار سال یا اس سے بھی زیادہ ہو سکتی ہے مگر جیسا کام ہو گا وہ

اللہ کے قانون کے مطابق اپنی مدت کے اندر ہو ضرور جائے گا۔

مثلاً آج کائنات کے اندر ہر علاقہ اپنی علاقائی زبان بول رہا ہے اور ترقی یافتہ حالت میں بول رہا ہے مگر جب ان زبانوں کی شروعات ہوئی تو اس حالت میں نہیں تھیں بلکہ پہلے کوئی آواز نکالی پھر ان کے مطابق حروف وجود میں آئے پھر ان کو ملایا گیا اور پھر کچھ الٹی سیدھی عبارت وجود میں آئی ہوگی اور رفتہ رفتہ وہ الفاظ ہی ترقی کرتے ہوئے اپنے آخری مقام پر پہنچ گئے۔ جیسا آج دیکھا جا رہا ہے مگر اس مقام تک آنے کے لئے کافی وقت لگا ہوگا۔ ایسے ہی بہت زبانیں دھیرے دھیرے ختم بھی ہوگئی ہوں گی۔ یا آج دنیا جس ترقی یافتہ مقام پر قائم ہے کیا یہ شروع سے ہی ہے؟ ایسا نہیں ہے بلکہ شروع میں یہ انسان کچھ بھی نہیں جانتا تھا ننگا کھلے آسمان میں غاروں یا درختوں پر رہتا تھا پھر رفتہ رفتہ عقل آتی گئی اور یہ ترقی کرتا گیا کبھی اس کے پیر میں جوتا جسم پر کپڑا تک نہ تھا اور آج یہ ہوائی جہاز میں اڑ رہا ہے گویا ترقی کر رہا ہے مگر یہ کام ایک دو سال میں نہیں ہوگیا بلکہ ہزار ہا برس لگے ہیں جتنے دن میں جو کام ہوگیا وہ اس کا ایک یوم دور ہے ایسے ہی اور کام ہیں مگر یہ سب ترقی اللہ کے دیے ہوئے علم وعقل سے ممکن ہیں۔

بصورت دیگر اگر کوئی طاقت اللہ کے قانون سے ہٹ کر اس کائنات کو بنانا چاہتی تو ہرگز نہ بنا سکتی، چاہے وہ قیامت تک ہی محنت کرے کیوں کہ اللہ کے علم سے ہٹ کر جو کام کیا جائے گا وہ مکمل اور پائدار نہیں ہوگا وہ فانی ہوگا مخلوق کو نقصان دے گا جو ہم روز دیکھتے ہیں اور جو کام اللہ کے علم یعنی وحی کے مطابق ہوگا وہ پائدار اور مکمل ہوگا ان میں کچھ کام ایسے بھی ہیں جو بہت جلد اپنے نتائج دے دیتے ہیں اور کچھ ایسے بھی ہیں جن کو ایک مدت لگتی ہے مگر ہو ضرور جاتے ہیں۔

یا جیسے قرآن کے اندر متعدد آیات ہیں جن میں کہا گیا ہے اگر انسان اللہ کا شکر ادا کرتا رہے یعنی اس کے قانون کی پابندی فرمانبرداری کرتا رہے تو اللہ ان کو باقی رکھے گا اور بہت انعام دے گا۔ علاوہ ازیں اگر قوم نافرمانی کرے گی تو اس کو ختم کر دیا جائے گا اور ان کی جگہ اور کو جانشین بنا دیا جائے گا ان آیات میں قائم رہنے کی کوئی مدت نہیں بتائی گئی صرف یہ کہا گیا ہے کہ جب تک قوم فرمانبرداری کرتی رہے گی شان وعزت کے ساتھ باقی رہے گی تو یہ باقی رہنے کی مدت ہزار سال یا دس ہزار سال یا پچاس ہزار سال بھی ہو سکتی ہے اس شرط کے ساتھ کہ قوم فرمانبرداری کرے نافرمانی کرنے پر ختم کر دی جائے گی جب تک باقی رہے گی وہ اس کا ایک یوم دور ہوگا۔

فی زمانہ ان آیات سے کچھ آدمی اس کائنات کی عمر تلاش کر رہے اور سابق میں بھی ایسا ہی کرتے رہے ہیں اور ثابت کرتے ہیں کہ کائنات کی عمر پچاس ہزار سال ہے مگر یہ عقیدہ محل نظر ہے کیوں کہ سائنس داں اپنی تحقیق میں کچھ اور بتا رہے ہیں اس لئے ہم کو ان آیات سے اس طرح کی تحقیق نہ کرتے ہوئے اور ہی کام کرنا چاہیے۔ جن کے لئے آیات میں اشارات مل رہے ہیں یعنی اللہ کی رضا کے کام اور بُرے کاموں سے بچنا۔

اگر ہماری یہ تحقیق غلط ثابت ہوگئی جو غلط ہے، تو بد انسان قرآن کا مذاق اڑائیں گے۔ چونکہ جدید تحقیق سے اس کائنات کی عمر کروڑوں سال بتائی جا رہی ہے ہنوز تحقیق جاری ہے کیا سامنے آتا ہے اس کا انتظار کیا جائے لیکن یہ طے ہے کہ ان آیات سے کائنات کی عمر کو ثابت نہیں کیا جا سکتا اور نہ ہی کرنا چاہیے۔

सकता है परन्तु जैसा कार्य होगा वह ईश्वर के नियमानुसार हो अवश्य जाऐगा.

उदाहरणतः आज विश्व के अन्दर हर क्षेत्र अपनी क्षेत्रीय भाषा बोल रहा है और समुन्नत स्थिति में बोल रहा है परन्तु जब इन भाषाओं का आरम्भ हुआ था तो इस दशा में नही थी अपितु पहले कोई नाद निकला फिर उनके अनुसार अक्षर अस्तित्व में आए फिर उनको मिलाया गया और फिर कुछ उल्टा सीधा लेख अस्तित्व में आया होगा और क्रमशः वह शब्द ही उन्नति करते हुए अपने स्थान पर पहुंच गए जैसा आज देखा जा रहा है, परन्तु इस स्थान तक आने के लिए काफी समय लगा होगा, ऐसे ही बहुत भाषाऐं शनैःशनैः समाप्त भी हो गई होंगी, या आज दुनिया जिस उन्नत स्थान पर स्थापित है क्या यह आरम्भ से ही है? ऐसा नही है अपितु आरम्भ में यह मानव कुछ भी नही जानता था, नंगा खुले आकाश में या गुफाओं या वृक्षों पर रहता था फिर शनैःशनैः विवेक आता गया और यह उन्नति करता गया कभी इसके पैर में जूता जिस्म पर कपड़ा तक न था और आज यह वायुयान में उड़ रहा है मानो उन्नति कर रहा है, परन्तु यह कार्य एक दो साल में नही हो गया अपितु हजार हा साल लगे है जितने समय में जो काम हो गया वह उसका एक यौम दौर है ऐसे ही और कार्य है परन्तु यह सब उन्नति ईश्वर के लिए हुए ज्ञान व बुद्धि से सम्भव है.

अतिरिक्त इसके यदि कोई शक्ति ईश्वर के नियम से हटकर इस जगत को बनाना चाहती तो कदापि न बना सकती चाहे वह महाप्रलय तक ही परिश्रम करे, क्योंकि ईश्वर के ज्ञान से हटकर जो कार्य किया जाऐगा वह पूर्ण और स्थाई न होगा नाशवान होगा, रचना को हानि देगा जो हम प्रतिदिन देखते है और जो कार्य ईश्वर के ज्ञान अर्थात "वही" के अनुसार होगा वह स्थाई और पूर्ण होगा, इनमें कुछ कार्य ऐसे भी है जो बहुत शीघ्र अपने परिणाम दे देते है और कुछ ऐसे भी है जिनको एक दीर्घ काल लगता है परन्तु हो अवश्य जाते है.

या जैसे कुरआन के अन्दर बहुत आयात है जिनमें कहा गया है कि यदि मानव ईश्वर का धन्यवाद करता रहे अर्थात उसके नियम का पालन करता रहे तो ईश्वर उनको शेष रखेगा और अधिक पुरस्कार देगा इसके अतिरिक्त यदि जाति अवज्ञा पाप करेगी तो उसको समाप्त कर दिया जाऐगा और उनके स्थान पर और उत्तराधिकारी बना दिया जाऐगा, इन आयात में स्थापित रहने का कोई समय नही बताया गया, केवल यह कहा गया है कि जब तक जाति आज्ञा पालन करती रहेगी मान सम्मान के साथ शेष रहेगी, तो यह शेष रहने का समय हजार साल या दस हजार साल या पचास हजार साल भी हो सकता है इस शर्त के साथ कि जाति आज्ञापालन करें अवज्ञा पाप करने पर समाप्त कर दी जाऐगी जब तक शेष रहेगी वह उसका एक यौम दौर होगा,

इस समय इन आयात से कुछ आदमी इस विश्व की आयु खोज रहे है और पहले भी ऐसा ही करते रहे है और सिद्ध करते है कि विश्व की आयु पचास हजार वर्ष है, परन्तु यह विश्वास विचारणीय है क्योंकि वैज्ञानिक अपनी खोज में कुछ और बता रहे है, अतः हम को इन आयात से इस प्रकार की खोज न करते हुए और ही कार्य करने चाहिए जिनके लिए आयात में संकेत मिल रहे है अर्थात ईश्वर की प्रसन्नता के कार्य और बुरे कार्यों से बचना,

यदि हमारी यह खोज मिथ्या सिद्ध हो गई जो मिथ्या है, तो दुष्ट मानव कुरआन का उपहास उड़ाऐंगे चूंकि नवीन खोज से विश्व की आयु करोड़ों साल बताई जा रही है, अभी खोज जारी है क्या सामने आता है उसकी प्रतीक्षा की जाए परन्तु यह निश्चित है कि इन आयात से विश्व की आयु सिद्ध नही की जा सकती और न ही करना चाहिए

मैंने भी इन आयात और दूसरी आयात के प्रकाश में इनका और सूरत मआरिज की आयात का एक भावार्थ लिखा है, तथापित मेरा यह वाद नही है कि यही उचित है सत्य कुछ और भी हो सकता है और यह भी वास्तविकता हो सकती है अवलोकन हो,

میں نے بھی ان آیات اور دوسری آیات کی روشنی میں ان کا اور سورت معارج کی آیات کا ایک مفہوم لکھا ہے تاہم میرا یہ دعویٰ نہیں ہے کہ یہی درست ہے درست کچھ اور بھی ہوسکتا ہے اور یہ بھی درست ہوسکتا ہے ملاحظہ ہو۔

इस या दूसरी आयात में जिस विधि से यह प्रगतिशील कार्य वह पवित्र अस्तित्व ईश्वर करता है इनको देखकर नास्तिकों को बुद्धि आनी चाहिए और समझ लेना चाहिए कि जिस यातना की वह मांग कर रहे हैं वह अवश्य होगा परन्तु नही समझते न समझने पर वह यातना कब आएगी वह पढ़ जाए

اس آیت یا دوسری آیات میں جس طریقے سے یہ ارتقائی کام وہ ذات باری تعالیٰ کرتی ہے ان کو دیکھ کر منکروں کو عقل آنی چاہیے اور سمجھ لینا چاہیے کہ جس عذاب کا وہ مطالبہ کر رہے ہیں وہ ضرور ہوگا مگر نہیں سمجھتے نہ سمجھنے پر عذاب کب آئے گا وہ پڑھا جائے۔

(35:10) जो व्यक्ति सम्मान चाहता है तो (उसे समझ लेना चाहिए कि) सारा सम्मान उत्थान ईश्वर ही के लिए है (जिसको भी सम्मान मिलता है उसको आज्ञापालन पर मिलता है) कुरआन करीम के पवित्र नियम "वही" के अनुसार अच्छा कर्म ऊपर को उठता है अर्थात प्रभुत्व प्राप्त करता है परन्तु उस प्रभुत्व को सत्कर्म अधिपति और उच्च करता है और जो लोग बुरे बुरे मकर करते हैं उनके लिए कठोर दण्ड है और उनका छल नष्ट हो जाएगा (अर्थात अधिपति नही होगा) चाहे वह कितने ही समय महाप्रलय तक सचेष्ट कर्म रहें,

(۳۵:۱۰) جو شخص عزت کا طلب گار ہے تو (اسے سمجھ لینا چاہیے کہ) ساری عزت عروج اللہ ہی کے لئے ہے (جس کو بھی عزت ملتی ہے اس کو فرمانبرداری پر ملتی ہے) قرآن کریم کے طیب قانون وحی الٰہی کے مطابق اچھا عمل اوپر کو اٹھتا ہے یعنی غلبہ حاصل کرتا ہے مگر اس غلبہ کو عمل صالح غالب اور بلند کرتا ہے اور جو لوگ بُرے بُرے مکر کرتے ہیں ان کے لئے سخت عذاب ہے اور ان کا مکر نابود ہو جائے گا (یعنی غالب نہیں ہوگا) چاہے وہ کتنی ہی مدت قیامت تک سرگرم عمل رہیں۔

नोट:- ईश्वर ने इस उपमा से सत्य की सफलता और व्यर्थ की असफलता को समझाया है कही एक योम एक हजार साल के बराबर और कही पचास हजार साल के बराबर कहा है, यद्यपि "वही" के ज्ञान के अतिरिक्त किसी भी ज्ञान से महाप्रलय तक सफलता उत्थान मिलने वाला नही "वही" इलाही से वह सफलता मुहम्मद स0 को कुछ सालों में मिल गई और हिया हत्तामतला इलफज़र हो गया ऐसे ही और रसूलों को सफलता मिली, और फिरऔन, नमरूद, अबुजहल इत्यादि असफल हो गए और होते रहेंगे तब्बत यदा अबी लहबिंवतब, ऐसे ही आज विज्ञान की उन्नति हो रही है परन्तु यह याद रखने की बात है यदि इस उन्नति को ईश्वर के बताए हुए ढंग से प्रयोग न किया तो यही असफलता की आकृति में प्रकट होगी और यदि उचित ढंग से प्रयोग किया गया तो यह सफलता प्राप्त होगी,

نوٹ:۔ اللہ نے اس مثال سے حق کی کامیابی اور باطل کی ناکامی کو سمجھایا ہے کہیں ایک یوم ایک ہزار سال کے برابر اور کہیں پچاس ہزار سال کے برابر کہا ہے حالانکہ وحی کے علم کے علاوہ کسی بھی علم سے قیامت تک کامیابی عروج ملنے والا نہیں۔ وحی الٰہی سے وہ کامیابی محمدؐ کو کچھ سالوں میں مل گئی اور ھِیَ حَتّٰی مَطْلَعِ الْفَجْرِ ہوگیا۔ ایسے ہی اور نبیوں کو کامیابی ملی اور فرعون نمرود ابوجہل وغیرہ ناکام ہوگئے اور ہوتے رہیں گے تَبَّتْ یَدَآ اَبِیْ لَهَبٍ وَّتَبَّ۔ ایسے ہی آج سائنسی ترقی ہے یہ بھی اللہ کی دی ہوئی عقل سے ترقی ہو رہی ہے مگر یہ یاد رکھنے کی بات ہے کہ اگر اس ترقی کو اللہ کے بتائے ہوئے طریقے سے استعمال نہ کی تو یہی ناکامی کی صورت میں ظاہر ہوگی اور اگر صحیح طریقے سے استعمال کیا گیا تو یہ کامیابی حاصل کر لے گی۔

परन्तु उनकी हठधर्मी और अनुचित गति और चमक दमक से आप व्याकुल न हों साहस और धैर्य से कार्य करो आपका कार्य बहुत जल्द पूर्ण होगा (5)

لیکن ان کی ہٹ دھرمی اور غلط روش اور چمک دمک سے آپ پریشان نہ ہوں ہمت اور ثابت قدمی سے کام کرو آپ کا کام بہت جلد تکمیل تک پہنچے گا (۵)

वह लोग इस विनाश और कष्ट को बहुत दूर समझते हैं अर्थात उनके विचार में यह कष्ट होने वाला नही केवल धमकी समझ रहे हैं (6)

وہ لوگ اس تباہی اور عذاب کو بہت دور سمجھتے ہیں یعنی ان کے خیال میں یہ عذاب ہونے والا نہیں محض دھمکی سمجھ رہے ہیں (۶)

परन्तु हम उसे बहुत निकट और सत्य देखते हैं अर्थात बहुत शीघ्र आएगा और अस्थाई कष्ट तो आता ही रहता है (7)

لیکن ہم اسے بہت قریب اور یقینی دیکھتے ہیں یعنی بہت جلد آئے گا اور عارضی عذاب تو آتا ہی رہتا ہے (۷)

परन्तु स्थाई कष्ट उस दिन आरम्भ होगा जिस दिन आकाश तेल की तलछट के समान हो जाएगा अर्थात महाप्रलय (8)

لیکن دائمی عذاب اس دن شروع ہوگا جس دن آسمان مثل تیل کی تلچھٹ کے ہو جائے گا یعنی قیامت (۸)

और पर्वत (ऐसे) जैसे धुन्की हुई रंगीन ऊन (9)
और कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा (10)
यद्यपि एक दूसरे को सामने देख रहे होंगे (उस दिन) पापी इच्छा कामना करेगा कि किसी प्रकार इस दिन के कष्ट के बदले में सब कुछ दे दे (अर्थात) अपने पुत्र (11)
और अपनी पत्नी और अपने भाई (12)
और अपना परिवार जिसमें वह रहता था (13)
और पूरे संसार के सम्पूर्ण लोगों को उस दिन के कष्ट के बदले में देकर अपने को छुड़ाना चाहेगा (14)
परन्तु ऐसा कदापि न होगा (पापी जिस आग में डाला जाएगा) वह भड़कती हुई आग होगी (15)
खाल उधेड़ डालने वाली (16)
उन लोगों को पुकार कर (अपनी ओर) बुलाएगी जिन्होंने सत्य से मुख मोड़ा और विमुखता की (17)
और धन संग्रह किया और बन्द रखा (18)
निःसन्देह मानव कम साहस उत्पन्न हुआ है (19)
जब उसे कष्ट पहुंचता है तो घबरा उठता है (20)
और जब सम्पन्नता होती है तो कृपणता करता है (21)
परन्तु (वह लोग इन बुराईयों से पवित्र हैं) जो नमाज स्थापित करने वाले हैं (22)
नोटः- जो अपना जीवन ईश्वर के नियमानुसार व्यतीत करते हैं वह हैं नमाजी केवल मस्जिद में नमाज पढ़कर शेष जीवन अवज्ञा में व्यतीत करने वालों को नमाजी नहीं कहते आगे नमाजी की पहचान बताई जा रही है कि कौन है नमाजी और नमाजी के कार्य क्या है.
और सदैव अपने कर्तव्य (और उत्तर दायित्व) को पूरा करने वाले हैं (23)
और जिनके मालों में (ईश्वर के मार्ग में देने के लिए) अंश निश्चित है (24)
मांगने वाले का भी और न मांगने वाले का भी (25)
और जो लोग प्रतिदान दिवस को सत्य मानते हैं (26)

اور پہاڑ (ایسے) جیسے دھنکی ہوئی رنگین اون (۹)
اور کوئی دوست کسی دوست کو نہ پوچھے گا (۱۰)
حالانکہ ایک دوسرے کو سامنے دیکھ رہے ہوں گے (اس روز) گنہگار خواہش کرے گا کہ کسی طرح اس دن کے عذاب کے بدلے میں سب کچھ دیدے (یعنی) اپنے بیٹے (۱۱)
اور اپنی بیوی اور اپنے بھائی (۱۲)
اور اپنا خاندان جس میں وہ رہتا تھا (۱۳)
اور روئے زمین کے تمام لوگوں کو اس دن کے عذاب کے بدلے میں دے کر اپنے کو چھڑانا چاہے گا (۱۴)
لیکن ایسا ہرگز نہ ہوگا (مجرم جس آگ میں ڈالا جائے گا) وہ بھڑکتی ہوئی آگ ہوگی (۱۵)
کھال ادھیڑ ڈالنے والی (۱۶)
ان لوگوں کو پکار کر (اپنی طرف) بلائے گی جنہوں نے حق سے روگردانی کی اور منہ موڑا (۱۷)
اور مال جمع کیا اور بند رکھا (۱۸)
بے شک انسان کم حوصلہ پیدا ہوا ہے (۱۹)
جب اسے تکلیف پہنچتی ہے تو گھبرا اٹھتا ہے (۲۰)
اور جب خوشحالی نصیب ہوتی ہے تو بخیل ہوتا ہے (۲۱)
مگر (وہ لوگ ان برائیوں سے پاک ہیں) جو نماز قائم کرنے والے (۲۲)
نوٹ:۔ جو اپنی زندگی اللہ کے قانون کے مطابق گزارتے ہیں وہ ہیں نمازی صرف مسجد میں نماز پڑھ کر باقی زندگی نافرمانی میں گزارنے والوں کو نمازی نہیں کہتے۔ آگے نمازی کی پہچان بتائی جارہی ہے کہ کون ہے نمازی اور نمازی کے کام کیا ہیں۔
اور ہمیشہ اپنے فرائض (اور ذمہ داریوں) کو پورا کرنے والے ہیں (۲۳)
اور جن کے مال میں (اللہ کی راہ میں دینے کے لئے) حصہ مقرر ہے (۲۴)
مانگنے والے کا بھی اور نہ مانگنے والے کا بھی (۲۵)
اور جو لوگ روز جزا کو حق مانتے ہیں (۲۶)

और जो अपने रब के कष्ट से डरते रहते हैं (27)
निःसन्देह उनके रब का कष्ट निर्भय होने की वस्तु नहीं है (28)
और जो लोग अपने गुप्तांगों की अवैध से रक्षा करते हैं (29)
परन्तु अपनी पत्नीयों या वह मामलाकत ऐमान जिनसे विवाह कर लिया हो कि (उनके पास जाने पर) उन्हें भर्त्सना नहीं (30) {60:10}
अपितु जो लोग उनके अतिरिक्त और (औरतों) की ओर आकृष्ट होंगे वह सीमा से निकल जाने वाले हैं (31) {23:5,6}
और (वह लोग भी बुराईयों से पवित्र हैं) जो अपनी धरोहरों और वचनों का पालन करते हैं (32){4:58}
और जो लोग अपनी साक्ष्य पर (सत्य के साथ) स्थिर रहते हैं (33)
और जो अपनी नमाज अर्थात कर्तव्य से सचेत रहते हैं (34) {6:92;23:1,9}
वही लोग स्वर्ग के उपवनों में सम्मान से रहेंगे(35)
(ऐ रसूल!) उन काफिरों को क्या हो गया है कि आपकी ओर दौड़े चले आते हैं (आपका उपहास उड़ाने के लिए) (36)
कि दाऐं और बाऐं से दल दल बनकर एकत्रित हो जाते हैं (37)
क्या उनमें से हर व्यक्ति यह आशा रखता है कि प्रसादों के उपवनों में प्रविष्ट किया जाएगा (कदापि नहीं प्रविष्ट किया जाएगा) (38)
सुनो! हमने जिस वस्तु से उनको बनाया है वह उसे जानते हैं (39)
क्या मुझ पूर्वों व पश्चिमों के रब का साक्ष्य प्रयाप्त नहीं कि हम शक्ति रखते हैं कि (40) {15:92;42:45}
अर्थात इस बात की (क्षमता रखते हैं) कि उनसे उत्तम लोग बदल लाऐं और हम विवश नहीं हैं(41)
अतः (ऐ रसूल!) उन्हें उनके व्यर्थ बातों और खेल में पड़ा रहने दो यहां तक कि जिस दिनका उनसे वचन किया जाता है वह उनके सामने आ उपस्थित हो (42)
उस दिन वह समाधियों से निकल कर इस प्रकार दौड़ रहे होंगे जैसे अपने बुतों के स्थानों की ओर दौड़ रहे हों (43)
उनकी आंखें झुक रही होंगी और अपमान उन पर छा रहा होगा और वह दिन होगा जिसका उनसे वचन किया जाता था (44)

सूरत नूह – मक्की (71)

निःसन्देह हमने नूह को उसकी जाति की ओर भेजा ताकि वह उससे पहले कि उन पर कष्टदायक यातना आए उन्हें (अवज्ञा करने के परिणाम से) डराए (1)
नूह ने उनसे कहा भाईयो! मैं तुम्हें (बुराईयों के परिणाम से) खुले तौर पर सावधान कर रहा हूं (2)

اور جو اپنے رب کے عذاب سے ڈرتے رہتے ہیں (۲۷)
بے شک ان کے رب کا عذاب بے خوف ہونے کی چیز نہیں ہے (۲۸)
اور جو لوگ اپنی شرم گاہوں کی حرام سے حفاظت کرتے ہیں (۲۹)
مگر اپنی بیویوں یا وہ ماملکت ایمان جن سے نکاح کرلیا ہو کہ (ان کے پاس جانے پر) انہیں ملامت نہیں (۳۰) [۶۰:۱۰]
البتہ جو لوگ ان کے علاوہ اور (عورتوں) کی طرف راغب ہوں گے وہ حد سے نکل جانے والے ہیں (۳۱) [۲۳:۵،۶]
اور (وہ لوگ بھی برائیوں سے پاک ہیں) جو اپنی امانتوں اور عہدوں کا پاس کرتے ہیں (۳۲) [۴:۵۸]
اور جو لوگ اپنی گواہی پر (سچائی کے ساتھ) قائم رہتے ہیں (۳۳)
اور جو اپنی نماز یعنی فرائض کی خبر رکھتے ہیں (۳۴) [۶:۹۲؛ ۲۳:۱،۹]
وہی لوگ جنت کے باغوں میں عزت سے رہیں گے (۳۵)
(اے رسول!) ان کافروں کو کیا ہوگیا ہے کہ آپ کی طرف دوڑے چلے آتے ہیں (آپ کا مذاق اڑانے کے لئے) (۳۶)
کہ دائیں اور بائیں سے گروہ گروہ بن کر جمع ہو جاتے ہیں (۳۷)
کیا ان میں سے ہر شخص یہ توقع رکھتا ہے کہ نعمت کے باغوں میں داخل کیا جائے گا (ہرگز نہیں داخل کیا جائے گا) (۳۸)
سنو! ہم نے جس چیز سے ان کو بنایا ہے وہ اسے جانتے ہیں (۳۹)
کیا مجھ مغربوں اور مشرقوں کے رب کی شہادت کافی نہیں کہ ہم طاقت رکھتے ہیں کہ (۴۰) [۱۵:۹۲؛ ۴۲:۴۵]
(یعنی) اس بات کی (قدرت رکھتے ہیں) کہ ان سے بہتر لوگ بدل لائیں اور ہم عاجز نہیں ہیں (۴۱)
لہٰذا (اے رسول) انہیں ان کی بے ہودہ باتوں اور کھیل میں پڑا رہنے دو یہاں تک کہ جس دن کا ان سے وعدہ کیا جاتا ہے وہ ان کے سامنے آموجود ہو (۴۲)
اس دن وہ قبروں سے نکل کر اس طرح دوڑے جارہے ہوں گے جیسے اپنے بتوں کے استھانوں کی طرف دوڑ رہے ہوں (۴۳)
ان کی آنکھیں جھک رہی ہوں گی اور ذلت ان پر چھا رہی ہوگی وہی وہ دن ہوگا جس کا ان سے وعدہ کیا جاتا تھا (۴۴)

سورت نوح۔ مکی (۷۱)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

یقیناً ہم نے نوح کو اس کی قوم کی طرف بھیجا تا کہ وہ اس سے پہلے کہ ان پر دردناک عذاب آئے انہیں (نافرمانی کے نتائج سے) ڈرائے (۱)
نوح نے ان سے کہا بھائیو! میں تمہیں (برائیوں کے نتائج سے) کھلے طور پر خبردار کررہا ہوں (۲)

ईश्वर की पूजा करो और उस (की अवज्ञा के परिणाम) से डरते रहो और मेरा अनुकरण करो (3)

(यदि ऐसा करोगे तो) ईश्वर तुम्हारे पापों को क्षमा कर देगा और तुम्हें एक निश्चित समय तक के लिए शेष रखेगा विश्वास करो जब ईश्वर का निश्चित किया हुआ समय आ जाएगा तो देर न होगी यदि तुम्हें इसका ज्ञान हो जाए (4)

नूह ने निवेदन किया ईश्वर मैंने दिन रात अपनी जाति को सत्य का निमंत्रण दिया (5)

परन्तु मेरे बुलाने से वह और अधिक दूर भागते रहे (6)

और जब जब मैंने उन्हें पुकारा कि (वह पश्चाताप करें और) तू उन्हें क्षमा कर दे तो उन्होंने कानों में उंगलियां ठूंस ली और ऊपर से अपने कपड़े ओढ़ लिए मानो वह आवरण में हो गए वह लोग कठोर हठधर्मी और घमण्ड का प्रकाशन करते रहे (7)

फिर उन्हें पुकार कर तेरा सन्देश पहुंचाया (8)

फिर प्रकट और छुपा हर प्रकार से समझाया (9)

और मैंने उनसे कहा अपने ईश्वर से क्षमा मांगो वह बड़ा क्षमा करने वाला है (10)

वह तुम पर बराबर आकाश से वर्षा बरसाएगा(11)

और धन और पुत्रों से तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे लिए उपवन बना देगा और तुम्हारे लिए नहरें बना देगा (12)

तुम्हें क्या हो गया है कि तुम ईश्वर की महिमा की आशा नही रखते (13)

और सत्य यह है कि उसने तुमको (माता के पेट में) भांति भांति से बनाया (14) {23:12से16}

क्या तुमने नही देखा कि ईश्वर ने सात आकाश कैसे ऊपर तले बनाए (15)

और उनमें चन्द्रमा को (पृथ्वी का) प्रकाश बनाया है और सूर्य को दीप बनाया है (16)

और ईश्वर ने तुम को बनाया बढ़ाया ऐसे जैसे पृथ्वी से पौधा (पालन पोषण होता है) (17)

फिर उसी में तुम्हें लौटा देगा और उसी से तुम को निकाल खड़ा कर देगा (18)

और ईश्वर ही ने तुम्हारे लिए पृथ्वी को बिछोने की भांति बिछा दिया (19)

ताकि उसके खुले मार्गों में चलो फिरो (20)

(इसके बाद) नूह ने निवेदन की कि मेरे ईश्वर वह लोग मेरे कहने पर नही चले और ऐसों के आधीन हुए हैं जिनको उनके धन और सन्तान ने हानि के सिवा कुछ लाभ न दिया (21)

और वह बड़ी बड़ी चालें चले (22)

और कहने लगे कि अपने देवताओं को कदापि न छोड़ना और वद और सुवा और यगूस और यऊक

اللہ کی بندگی کرو اور اس (کی نافرمانی کے نتائج) سے ڈرتے رہو اور میری پیروی کرو (۳)

(اگر ایسا کروگے تو) اللہ تمہارے گناہوں کو معاف کر دے گا اور تمہیں ایک مقررہ وقت تک کے لئے باقی رکھے گا یقین کرو جب اللہ کا مقرر کیا ہوا وقت آجائے گا تو دیر نہ ہوگی کاش تمہیں اس کا علم ہو جائے (۴)

نوح نے عرض کیا اللہ میں نے دن رات اپنی قوم کو دعوت حق دی (۵)

لیکن میرے بلانے سے وہ اور زیادہ دور بھاگتے رہے (۶)

اور جب جب میں نے انہیں پکارا کہ (وہ توبہ کریں اور) تو انہیں معاف کر دے تو انہوں نے کانوں میں انگلیاں ٹھونس لیں اور اوپر سے اپنے کپڑے اوڑھ لئے گویا وہ پردے میں ہو گئے وہ لوگ سخت ہٹ دھرمی اور گھمنڈ کا اظہار کرتے رہے (۷)

پھر انہیں پکار کر تیرا پیغام پہنچایا (۸)

پھر ظاہر اور پوشیدہ ہر طرح سے سمجھایا (۹)

اور میں نے ان سے کہا اپنے رب سے معافی مانگو وہ بڑا معاف کرنے والا ہے (۱۰)

وہ تم پر برابر آسمان سے مینہ برسائے گا (۱۱)

اور مال اور بیٹوں سے تمہاری مدد کرے گا اور تمہارے لئے باغ بنادے گا اور تمہارے لئے نہریں بنادے گا (۱۲)

تمہیں کیا ہو گیا ہے کہ تم اللہ کی عظمت کی امید نہیں رکھتے (۱۳)

اور حقیقت یہ ہے کہ اس نے تم کو (ماں کے پیٹ میں) طرح طرح سے بنایا (۱۴) [۲۳:۱۲تا۱۶]

کیا تم نے نہیں دیکھا کہ اللہ نے سات آسمان کیسے اوپر تلے بنائے (۱۵)

اور اُن میں چاند کو (زمین کا) نور بنایا ہے اور سورج کو چراغ بنایا ہے (۱۶)

اور اللہ نے تم کو بنایا بڑھایا ایسے جیسے زمین سے پودا (پرورش پاتا ہے) (۱۷)

پھر اسی میں تمہیں لوٹا دے گا اور اسی سے تم کو نکال کھڑا کر دے گا (۱۸)

اور اللہ ہی نے تمہارے لئے زمین کو فرش کی طرح بچھا دیا (۱۹)

تاکہ اس کے کھلے رستوں میں چلو پھرو (۲۰)

(اس کے بعد) نوح نے عرض کی کہ میرے رب وہ لوگ میرے کہنے پر نہیں چلے اور ایسوں کے تابع ہوئے ہیں جن کو ان کے مال اور اولاد نے نقصان کے سوا کچھ فائدہ نہیں دیا (۲۱)

اور وہ بڑی بڑی چالیں چلے (۲۲)

اور کہنے لگے کہ اپنے معبودوں کو ہرگز نہ چھوڑنا اور ود اور سواع اور یغوث اور یعوق اور نسر کو کبھی ترک نہ

کرنا (۲۳) [۸۷: ۱۵: ۳۱: ۹: ۴: ۶۵]

انہوں نے بہت لوگوں کو گمراہ کردیا اور نہیں بڑھتے ظالم (کسی اچھائی میں) یقیناً گمراہی میں بڑھتے ہیں (۲۴)

وہ اپنے گناہوں کے سبب غرقاب کردئے گئے پھر آگ میں ڈال دئے جائیں گے تو انہوں نے اللہ کے مقابلہ میں کسی کو اپنا مددگار نہ پایا (۲۵)

اور نوح نے دعا کی کہ میرے رب کسی کافر کو زمین پر بستا نہ رہنے دے (سب کو ایمان والا بنادے) (۲۶)

اگر تو ان کو کافر ہی رہنے دے گا تو تیرے بندوں کو گمراہ کریں گے اور ان سے جو اولاد ہوگی وہ بھی بدکار اور نافرمان ہوگی (۲۷)

اے میرے رب مجھ کو اور میرے ماں باپ کو اور جو ایمان لاکر میرے گھر میں آئے اس کو اور تمام ایمان والے مردوں اور عورتوں کو معاف کردے اور نہ بڑھا ظالم لوگوں کو مگر تباہی میں (۲۸)

سورت الجن ۔مکی (۷۲)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

(اے محمدؐ) تم کہو میری طرف وحی بھیجی گئی ہے جنوں کے ایک گروہ نے اس (قرآن) کو سنا پھر (جب لوٹ کر اپنی قوم میں گئے تو ان سے) کہا ہم نے ایک عجیب قرآن سنا ہے (۱)

جو بھلائی کا رستہ بتاتا ہے سو ہم اس پر ایمان لے آئے اور اب ہم اپنے رب کے ساتھ کسی کو شریک نہ کریں گے (۲)

اور ہمارے رب کی شان بہت بڑی ہے وہ نہ بیوی رکھتا ہے نہ اولاد اور نہ مددگار (۳)

اور ہم میں بعض بیوقوف ایسے بھی ہیں جو اللہ کے بارے میں الٹی سیدھی باتیں کرتے ہیں (۴)

اور ہم تو یہ سمجھتے رہے کہ انسان اور جن کبھی اللہ کے بارے میں جھوٹ نہیں بولتے (۵)

اور یہ کہ انسانوں میں سے کچھ لوگ بعض جنات کی پناہ مانگتے رہے ہیں اس طرح انہوں نے جنوں کا غرور اور بڑھادیا (۶)

اور جیسا تمہارا گمان ہے اسی طرح انسان کا بھی گمان ہے کہ اللہ کسی کو نہیں اٹھائے گا (۷)

اور یہ کہ ہم نے آسمان یعنی خلا کو ٹٹولا تو اس کو مضبوط حفاظت کی چیزوں اور شعلوں سے بھرا ہوا پایا (۸)

(اور یہ کہ اس قرآن کے نازل ہونے سے پہلے علم کم ہونے کی وجہ سے لوگوں کو ہم دھوکا دیا کرتے تھے) کہ ہم نے آسمان میں بیٹھ کر اللہ کے فیصلے سن لئے ہیں مگر اب اگر ہم ایسا کہیں گے کہ ہم سنتے ہیں تو (قرآن کے علم کا شعلہ ہمارے اس جھوٹ کو) بتادے گا اور اس جرم کی سزا کے لئے ہمارے پیچھے ایک عذاب کا شعلہ لگ جائے گا جو آخرت میں پالے گا (۹)

और नस्र को कभी न छोड़ना (23) {65:4:9:31:15:87}

उन्होंने बहुत लोगों को भ्रष्ट कर दिया और नहीं बढ़ते अत्याचारी (किसी अच्छाई में) निःसन्देह भ्रष्टता में बढ़ते हैं (24)

वह अपने पापों के कारण तल्लीन कर दिए गए फिर आग में डाल दिए जाऐंगे तो उन्होंने ईश्वर के सामने किसी को अपना सहायक न पाया (25)

और नूह ने प्रार्थना की कि मेरे ईश्वर किसी काफिर को पृथ्वी पर बसता न रहने दे (सबको आस्तिक बना दे) (26)

यदि तू उनको काफिर ही रहने देगा तो तेरे बन्दों को पथ भ्रष्ट करेंगे और उनसे जो सन्तान होगी वह भी दुराचारी और अवज्ञाकारी होगी (27)

ऐ मेरे ईश्वर मुझ को और मेरे माता-पिता को और जो विश्वास लाकर मेरे घर में आए उसको और सम्पूर्ण आस्था वाले पुरुषों और स्त्रियों को क्षमा कर दे और न बढ़ा अत्याचारी लोगों को परन्तु तबाही में (28)

सूरतुल जिन्न - मक्की (72)

(ऐ मुहम्मद स0) तुम कहो मेरी ओर वही भेजी गई है कि जिन्नों के एक दल ने इस (कुरआन) को सुना फिर (जब लौटकर अपनी जाति में गए तो उनसे) कहा हमने एक विचित्र कुरआन सुना है (1)

जो भलाई का मार्ग बताता है सो हम इस पर विश्वास ले आए और अब हम अपने रब के साथ किसी को साझी न करेंगे (2)

और हमारे ईश्वर की महिमा बहुत बड़ी है वह न पत्नी रखता है न सन्तान और न सहायक (3)

और हम में कतिपय मूर्ख ऐसे भी हैं जो ईश्वर के विषय में उल्टी सीधी बातें करते हैं (4)

और हम तो यह समझते रहे कि इन्सान और जिन्न कभी ईश्वर के विषय में झूट नहीं बोलते (5)

और यह कि इन्सानों में से कुछ लोग कतिपय जिन्नात की शरण मांगते रहे हैं इस प्रकार उन्होंने जिन्नों का घमंड और बढ़ा दिया (6)

और जैसा तुम्हारा अनुमान है इसी प्रकार इन्सान का भी विचार है कि ईश्वर किसी को नहीं उठाएगा (7)

और यह कि हमने आकाश अर्थात अंतरिक्ष को टटोला तो उसको सुदृढ़ सुरक्षा की वस्तुओं और अग्नि शिखा से भरा हुआ पाया (8)

(और यह कि इस कुरआन के अवतरित होने से पहले ज्ञान कम होने के कारण लोगों को हम धोका दिया करते थे) कि हमने आकाश में बैठकर ईश्वर के निर्णय सुन लिए हैं परन्तु अब यदि हम ऐसा कहेंगे कि हम सुनते हैं तो (कुरआन के ज्ञान की अग्नि शिखा हमारे इस झूट को) बता देगा और इस अपराध के दण्ड के लिए हमारे पीछे एक यातना का अग्नि शिखा लग जायेगा जो परलोक में पालेगा (9)

और हम यह नहीं जानते कि इससे पृथ्वी वालों के लिए बुराई चाही है या उनके रब ने उनकी भलाई का इरादा किया है (क्योंकि हम परोक्ष नहीं जानते) (10)
और यह कि हम में कतिपय जिन्न सदाचारी हैं और कतिपय दुष्ट हम अनेक रीति और दलों में बंटे हुए हैं (11) {23:17;20:63}
और यह कि हमने समझ लिया है कि हम पृथ्वी में ईश्वर को हरा नहीं सकते ओर न भाग कर उसको थका सकते हैं (12)
और जब हमने सीधा मार्ग दिखाने वाली आयतें सुनी तो हम उन पर विश्वास ले आए तो जो व्यक्ति अपने रब पर विश्वास लाता है उसको न हानि का भय है न अत्याचार का (13)
हम में कतिपय आज्ञाकारी और कुछ पापी हैं तो जो आज्ञाकारी हुए वह सीधे मार्ग पर चले (14)
और जो अत्याचारी हैं वह नर्क का ईंधन बनेंगे(15)
और कह दो यदि वह सीधे मार्ग पर दृढ़ पग से चलेंगे तो हम उनके पीने को बहुत सा पानी देंगे (16)
ताकि उससे उनकी परीक्षा हो और जो व्यक्ति अपने ईश्वर की याद से मुख फेरेगा वह उसको कठोर कष्ट में प्रविष्ट करेगा (17)
और यह कि मस्जिदें ईश्वर की पूजा के लिए हैं तो ईश्वर के साथ किसी और की पूजा न करना (18)
और जब ईश्वर का बन्दा (मुहम्मद स0) ईश्वर की पूजा करने के लिए (उसमें) खड़ा हुआ तो लोग टूट पड़ने को थे (19)
आप कह दो कि मैं तो अपने रब ही की पूजा करता हूं और किसी को उसका साझी नहीं बनाता (20)
और यह भी कह दो कि मुझे तुम्हारे किसी लाभ हानि का अधिकार नहीं है (21)
(यह भी) कह दो कि ईश्वर (के कष्ट) से मुझे कोई शरण नहीं दे सकता और मैं उसके सिवा कहीं शरण नहीं देखता (22)
(मेरा बचाओ तो इसी में है कि) ईश्वर की ओर से जो आदेश और सन्देश मेरे पास आया है उसे लोगों तक पहुंचा दूं और जो व्यक्ति ईश्वर और उसके रसूल की अवज्ञा करेगा उसके लिए नर्क की आग है ऐसे सम्पूर्ण लोग उसमें सदैव रहेंगे (23)
(उनकी आंख न खुलेगी) यहां तक कि जब वह लोग वह दिन देख लेंगे जिसका उनसे वचन किया जाता है तब उनको ज्ञात हो जाएगा कि किसके सहायक निर्बल हैं और दल संख्या में किसका थोड़ा है (24)
कह दो कि जिस दिन का तुम से वचन किया जाता है मैं नहीं जानता कि वह बहुत निकट होने वाला है या मेरे रब ने उसके काल को दीर्घ कर दिया है (25)
वही परोक्ष की बात जानने वाला है और किसी पर अपने परोक्ष प्रकट नहीं करता (26) {6:59;

اور ہم یہ نہیں جانتے کہ اس سے اہل زمین کے حق میں بُرائی مقصود ہے یا ان کے رب نے ان کی بھلائی کا ارادہ کیا ہے (کیوں کہ ہم غیب نہیں جانتے) (۱۰)
اور یہ کہ ہم میں بعض جن صالح ہیں اور بعض غیر صالح ہم مختلف طریقوں اور گروہوں میں بٹے ہوئے ہیں (۱۱) [۲۳:۱۷؛۲۰:۶۳]
اور یہ کہ ہم نے سمجھ لیا ہے کہ ہم زمین میں اللہ کو ہرا نہیں سکتے اور نہ بھاگ کر اس کو تھکا سکتے ہیں (۱۲)
اور جب ہم نے سیدھی راہ دکھانے والی آیتیں سنیں تو ہم ان پر ایمان لے آئے تو جو شخص اپنے رب پر ایمان لاتا ہے اس کو نہ نقصان کا خوف ہے نہ ظلم کا (۱۳)
ہاں ہم میں بعض فرمانبردار ہیں اور کچھ گنہگار ہیں تو جو فرمانبردار ہوئے وہ سیدھے رستے پر چلے (۱۴)
اور جو ظالم ہیں وہ دوزخ کا ایندھن بنیں گے (۱۵)
اور کہدو اگر وہ سیدھے رستے پر ثابت قدمی سے چلیں تو ہم ان کے پینے کو بہت سا پانی دیں گے (۱۶)
تاکہ اس سے ان کی آزمائش ہو اور جو شخص اپنے رب کی یاد سے منہ پھیرے گا وہ اس کو سخت عذاب میں داخل کرے گا (۱۷)
اور یہ کہ مسجدیں اللہ کی عبادت کے لئے ہیں تو اللہ کے ساتھ کسی اور کی عبادت نہ کرنا (۱۸)
اور جب اللہ کا بندہ (محمدؐ) اللہ کی عبادت کرنے کے لئے (اس میں) کھڑا ہوا تو لوگ اس پر ٹوٹ پڑنے ہی کو تھے (۱۹)
آپ کہدو کہ میں تو اپنے رب ہی کی عبادت کرتا ہوں اور کسی کو اس کا شریک نہیں بناتا (۲۰)
اور یہ بھی کہدو کہ مجھے تمہارے کسی نفع نقصان کا اختیار نہیں ہے (۲۱)
(یہ بھی) کہدو کہ اللہ (کے عذاب) سے مجھے کوئی پناہ نہیں دے سکتا اور میں اس کے سوا کہیں جائے پناہ نہیں دیکھتا (۲۲)
(میرا بچاؤ تو اسی میں ہے کہ) اللہ کی طرف سے جو حکم اور پیغام میرے پاس آیا ہے اسے لوگوں تک پہنچا دوں اور جو شخص اللہ اور اس کے رسول کی نافرمانی کرے گا اس کے لئے دوزخ کی آگ ہے ایسے تمام لوگ اس میں ہمیشہ رہیں گے (۲۳)
(ان کی آنکھ نہ کھلے گی) یہاں تک کہ جب وہ لوگ وہ دن دیکھ لیں گے جس کا ان سے وعدہ کیا جاتا ہے تب ان کو معلوم ہوجائے گا کہ کس کے مددگار کمزور ہیں اور گروہ تعداد میں کس کا کمزور ہے (۲۴)
کہدو کہ جس دن کا تم سے وعدہ کیا جاتا ہے میں نہیں جانتا کہ وہ عن قریب آنے والا ہے یا میرے رب نے اس کی مدت دراز کر دی ہے (۲۵)
وہی غیب کی بات جاننے والا ہے اور کسی پر اپنے غیب ظاہر

نہیں کرتا (۲۶)[۶:۵۹؛۷:۱۸۸]

7:188;27:65}

مگر اس رسول پر جسے اس نے اس کام کے لئے پسند فرمایا ہے (اتنا ہی نہیں بلکہ) اس کے ظاہر کاموں جو ظاہر ہاتھ کرتے ہیں اور جو چھپ کر کرتے ہیں ان کے دیکھنے کے لئے نگہبان مقرر کر دیتا ہے (اور بھیدوں کو خود بھی دیکھتا ہے) (۲۷)

परन्तु उस रसूल पर जिसे उसने इस कार्य के लिए पसन्द किया है (इतना ही नही अपितु) उसके प्रकट कार्यों जो प्रकट हाथ करते है और जो छुपकर करते है उनको देखने के लिए रक्षक नियुक्त कर देता है (और भेदों को स्वयं भी देखता है)(27)

تاکہ ظاہر ہو جائے کہ انہوں نے اپنے رب کے پیغام پہنچا دئے ہیں یا نہیں اور اس نے ان کی سب چیزوں کو ہر طرف سے قابو میں کر رکھا ہے یعنی ہر شے کو گنتی میں شمار کر رکھا ہے (۲۸)

ताकि प्रकट हो जाए कि उन्होंने अपने रब के सन्देश पहुंचा दिए है या नही और उसने उनकी सब वस्तुओं को हर ओर से वश में कर रखा है अर्थात हर वस्तु को गिनती में गिन रखा है (28)

سورت المزمل۔مکی (۷۳)

सूरतुल मुजम्मिल - मक्की (73)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اے امر عظیم یعنی قرآن کا بوجھ اٹھانے والے (۱)

ऐ बड़ा सन्देश अर्थात कुरआन का भार उठाने वाले

رات کو (تہجد میں) نماز میں کھڑے رہا کرو مگر تھوڑی سی رات (۲)

रात को (तहज्जुद में) नमाज में खड़े रहा करो परन्तु थोड़ी सी रात (2)

آدھی رات یا اس سے بھی کم (۳)

आधी रात या उससे भी कम (3)

یا اس سے کچھ زیادہ اور قرآن کو ٹھہر ٹھہر کر پڑھا کرو (۴)

या उससे कुछ अधिक और कुरआन को ठहर ठहरकर पढ़ा करो (4)

[۲۵:۳۲]

(ابھی تو کچھ ہی قرآن نازل ہوا ہے آئندہ) ابھی جلد ہم آپ پر بھاری فرمان (یعنی مکمل قرآن) نازل کرنے والے ہیں (۵)

(अभी तो कुछ ही कुरआन अवतरित हुआ है भविष्य में) अभी शीघ्र ही हम आप पर भारी पुस्तक (अर्थात सम्पूर्ण कुरआन) अवतरित करने वाले हैं (5)

(اس بار عظیم کو اٹھانے کے لئے قوت برداشت اور نفس پر قابو پانے کی سخت ضرورت ہے) اور نفس پر قابو پانے کے لئے رات کا اٹھنا بہت کارگر ہے اور (یہ وقت) قرآن پڑھنے کے لئے بھی زیادہ موزوں ہے (۶)

(इस विराट भार को उठाने के लिए सहन शक्ति और काम पर वश पाने की कठोर आवश्यकता है) और काम पर वश पाने के लिए रात्रि का उठना बहुत प्रभावी है और (यह समय) कुरआन पढ़ने के लिए भी अधिक उचित है (6)

(علاوہ ازیں) دن کے وقت میں تو آپ کے لئے اور بھی مصروفیت ہیں (۷)[۳۶:۴۰]

(इसके अतिरिक्त) दिन के समय में तो आपके लिए और भी कार्य है (7) {36:40}

اور اپنے رب کے نام کا ذکر کرتے رہا کرو اور سب سے کٹ کے اسی کے ہو رہو (۸)

और अपने ईश्वर के नाम का जप करते रहा करो और सबसे कटकर उसी के हो रहो (8)

کہہ دو وہ شرق اور مغرب کا مالک ہے کافر کہتا ہے کہ اللہ نہیں ہے تو سنو یقیناً اللہ ہے اس لئے اسی کو اپنا کارساز بناؤ (۹)

कह दो वह पूर्व और पश्चिम का स्वामी है काफिर कहता है कि ईश्वर नही है तो सुनो निःसन्देह ईश्वर है इसलिए उसी को अपना सहायक बनाओ (9)

اور جیسی کچھ بکواس کر رہے ہیں (ہم اسے خوب جانتے ہیں) اس پر صبر کرو اور اچھے طریقے سے ان سے کنارہ کش رہو (ان سے کوئی جھگڑا نہ ہو) (۱۰)

और जैसी कुछ बकवास कर रहे है (हम उसे अच्छा जानते है) उस पर धैर्य करो और अच्छी विधि से उनसे पृथक रहो (उनसे कोई झगड़ा न हो) (10)

اور مجھے ان جھٹلانے والوں سے جو دولتمند ہیں سمجھ لینے دو بس تھوڑی مہلت ان کو دو (۱۱)

और मुझे झुठलाने वालों से जो धनी है समझ लेने दो बस थोड़ी छूट उनको दो (11)

بے شک ہمارے پاس بیڑیاں ہیں اور بھڑکتی آگ ہے (۱۲)

निःसन्देह हमारे पास बेड़ियां है और भड़कती आग है (12)

حلق میں پھنسنے والا کھانا اور دردناک عذاب ہے (۱۳)

गले में फंसने वाला खाना और दर्द देने वाला कष्ट है (13)

(یہ عذاب اس دن ہوگا) جس دن زمین اور پہاڑ کانپنے لگیں اور پہاڑ ایسے بھر بھرے گویا ریت کے ٹیلے ہوں (۱۴)

(यह कष्ट उस दिन होगा) जिस दिन पृथ्वी और पर्वत कांपने लगे और पर्वत ऐसे भुर भुरे मानों रेत के टीले हों (14)

(اے اہل مکہ) جس طرح ہم نے فرعون کی طرف ایک

(ऐ मक्का वालो) जिस प्रकार हमने फिरऔन की ओर एक रसूल भेजा था उसी प्रकार तुम्हारे पास

भी (मुहम्मद) रसूल भेजे जो तुम्हारे मुकाबिले में साक्षी होंगे (15)
सो फ़िरऔन ने रसूल का कहना न माना तो हमने उसको बड़े बवाल में पकड़ लिया (16)
यदि तुम भी न मानोंगे तो उस दिन से क्यों कर बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर देगा (17)
(और) जिससे आकाश फट जाएगा यह उसका कथन पूरा होकर रहेगा (18)
यह (कुरआन) तो एक शिक्षा की पुस्तक है सो जो चाहे (इसके द्वारा) अपने रब तक पहुंचने का मार्ग ग्रहण करे (19)
और आपका रब अच्छा जानता है कि आप और आपके साथी कभी दो तिहाई रात से कम और कभी आधी रात और कभी तिहाई रात खड़े रहते हैं और ईश्वर तो रात और दिन का अनुमान रखता है परन्तु ईश्वर जानता है कि तुम उसको निबाह न सकोगे तो उसने आप पर कृपा की पस जितना सरलता से हो सके उतना कुरआन पढ़ लिया करो उसको ज्ञात है कि कुछ तुम में बीमार भी होते हैं और कुछ ईश्वर के कृपा दया की खोज में देश में यात्रा करते हैं और कुछ ईश्वर के लिए युद्ध करते हैं तो जितना आसानी से हो सके उतना पढ़ लिया करो और नमाज पढ़ते रहो और दान देते रहो और ईश्वर को अच्छा ऋण देते रहो और जो सत्कर्म तुम आगे भेजोगे उसको ईश्वर के यहां पाओगे वह बहुत ही उत्तम है और उसका फल बहुत बड़ा है ईश्वर से क्षमा मांगते रहो ईश्वर क्षमा करने वाला कृपालु है (20)

सूरतुल मुदस्सिर - मक्की (74)

अच्छा प्रबन्ध करने वाले ईशदौत्य और उसका उत्तर दायित्व का भार उठाने वाले (1)
उठो और सावधान कर दो (जाति को मलिनता और अनुचित गति विधियों के बुरे परिणाम से) (2)
और अपने ईश्वर ही की बड़ाईयां वर्णन करो (3)
अपने हृदय व चरित्र और अपने कपड़ों को शुद्ध रखा करो (4) {और आपके साथी भी ऐसा ही करें}
और निर्बलता और व्याकुलता को झटक कर अलग कर दो जो उठने में लड़खड़ाहट उत्पन्न कर दे (5) {8:11}
और किसी पर उपकार करके अधिक लेने की इच्छा न करो (किसी पर उपकार इसलिए न करो कि उससे तुम यह इच्छा करो कि वह मेरे साथ अधिक उपकार करे) (6)
और अपने ईश्वर के मार्ग में (व्याकुलताओ पर) धैर्य करो (7)
पस जब सूर में फूंक मारी जाएगी (8)
तो वह दिन बड़ा कठिन होगा (9)
जो नास्तिकों पर आसान न होगा (10)

رسول بھیجا تھا اسی طرح تمہارے پاس بھی (محمدؐ) رسول بھیجے جو تمہارے مقابلے میں گواہ ہوں گے (۱۵)
سو فرعون نے رسول کا کہنا نہ مانا تو ہم نے اس کو بڑے وبال میں پکڑ لیا (۱۶)
اگر تم بھی نہ مانو گے تو اس دن سے کیوں کر بچو گے جو بچوں کو بوڑھا کر دیگا (۱۷)
(اور) جس سے آسمان پھٹ جائے گا یہ اس کا وعدہ پورا ہو کر رہے گا (۱۸)
یہ (قرآن) تو ایک نصیحت کی کتاب ہے سو جو چاہے (اس کے ذریعہ) اپنے رب تک پہنچنے کا رستہ اختیار کرے (۱۹)
اور آپ کا رب خوب جانتا ہے کہ آپ اور آپ کے ساتھی کبھی دو تہائی رات سے کم اور کبھی آدھی رات اور کبھی تہائی رات قیام کرتے ہیں اور اللہ تو رات اور دن کا اندازہ رکھتا ہے مگر اللہ جانتا ہے کہ تم اس کو نباہ نہ سکو گے تو اس نے آپ پر مہربانی کی پس جتنا آسانی سے ہو سکے اتنا قرآن پڑھ لیا کرو اس کو علم ہے کہ بعض تم میں بیمار بھی ہوتے ہیں اور کچھ اللہ کے فضل کی تلاش میں ملک میں سفر کرتے ہیں اور کچھ اللہ کی راہ میں لڑتے ہیں تو جتنا آسانی سے ہو سکے اتنا پڑھ لیا کرو اور نماز پڑھتے رہو اور زکوٰۃ ادا کرتے رہو اور اللہ کو قرض حسنہ دیتے رہو اور جو عمل نیک تم آگے بھیجو گے اس کو اللہ کے یہاں پاؤ گے وہ بہت ہی بہتر ہے اور اس کا اجر بہت بڑا ہے اللہ سے معافی مانگتے رہو اللہ بخشنے والا مہربان ہے (۲۰)

سورۃ المدثر۔مکی (۷۴)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

<u>اچھا انتظام کرنے والے نبوت اور اس کی ذمہ داریوں کا بوجھ اٹھانے والے (۱)</u>
اٹھو اور خبردار کردو (قوم کو گندگی اور غلط روش کے بُرے نتائج سے) (۲)
اور اپنے رب ہی کی بڑائیاں بیان کرو (۳)
اپنے قلب و سیرت اور اپنے کپڑوں کو پاک رکھا کرو (۴) [اور آپ کے ساتھی بھی ایسا ہی کریں]
اور کمزوری اضطراب کو جھٹک کر الگ کردو جو اٹھنے میں لڑکھڑاہٹ پیدا کردے (۵) [۸:۱۱]
اور کسی پر احسان کر کے زیادہ لینے کی خواہش نہ کرو (کسی پر احسان اس لئے نہ کرو کہ اس سے تم یہ خواہش کرو کہ وہ میرے ساتھ زیادہ احسان کرے) (۶)
اور اپنے رب کی راہ میں (پریشانیوں پر) صبر کرو (۷)
پس جب صور میں پھونک ماری جائے گی (۸)
تو وہ دن بڑا سخت ہوگا (۹)
جو کافروں پر آسان نہ ہوگا (۱۰)

(ऐ मुहम्मद जो लोग आपको तंग करते हैं तो) उनका विषय मुझ पर छोड़ दो (मैं उससे समझ लूंगा क्या उसे यह ज्ञात नही कि) मैंने अकेला पैदा किया है (11)

और उसे बहुत माल दिया (12)

और मैंने उसके पास उपस्थित रहने वाले पुत्र दिए (13)

और मैंने उसे बहुत कुछ विशालता दे रखी है (14)

फिर भी उसकी इच्छा है कि मैं उसे और दूं (15)

तो सुनो जो वह चाहता है कभी नही होगा क्योंकि वह हमारी आयात से वैर रखता है (16)

शीघ्र ही मैं उसे एक कठिन चढ़ाई चढ़ाऊंगा (17)

उसने सोचा और अनुमान किया (अर्थात अपने हृदय में एक बात निश्चित की (18)

तो उस पर धिक्कार हो कैसा अनुमान किया (19)

फिर उस पर धिक्कार हो कैसा अनुमान किया (20)

फिर दृष्टि उठाकर देखा (अर्थात फिर ईश्वर के नियम पर विचार किया परन्तु अपने ही बनाए अन्दाजे पर स्थिर हो गया) (21)

और (मुहम्मद की बताई हुई विधि से) फिर तियोरी चढ़ाई और मुंह बनाया (ईश्वर के नियम को पसन्द नही किया) (22)

फिर पीठ फेर कर चल दिया (और दीन सत्य धर्म को स्वीकार नही किया) और घमंड किया (23)

और कहने लगा यह (कुरआन) तो केवल जादू है जो पहले से नकल होता चला आया है (24)

यह कुछ नही निःसन्देह मानव का कथन है (25)

मैं अभी शीघ्र उसको नर्क में डालूंगा (26)

और आपको ईश्वर से बढ़कर और कौन बता सकता है कि सकर क्या वस्तु है (27)

(वह नर्क की आग है) न शेष रखेगी और न छोड़ेगी (28)

और बदन को झुलस कर सियाह कर देगी (29)

और उस पर उन्नीस रक्षक है (30)

और हमने नर्क में रक्षक जो बनाए है निःसन्देह वह फरिश्ते है और हमने जो उनकी संख्या बताई है वह निःसन्देह नास्तिकों के लिए परीक्षा है और इसलिए कि जिन्हें पुस्तक दी जा रही है विश्वास कर ले और धर्म वादी धर्म में बढ़ जाएं और जिन्हें पुस्तक दी जा रही है जो आस्तिक है भ्रम न करें और जिनके हृदय में रोग है वह और काफिर कहें कि इस उपमा से ईश्वर का क्या उद्देश्य है (तो सुनो) इससे ईश्वर का नियम जिसे चाहता है पथ भ्रष्ट करता है और जिसे चाहता है पथ प्रदर्शन देता है तेरे रब की सैनाओं को उसके सिवा कोई नही जानता और वह जो है कुल मानव वंश के लिए एक स्मरण पत्र है (31)

(اے محمدؐ جولوگ آپ کو تنگ کرتے ہیں تو) ان کا معاملہ مجھ پر چھوڑ دو (میں اس سے سمجھ لوں گا کیا اسے یہ معلوم نہیں کہ) میں نے اکیلا پیدا کیا ہے (۱۱)

اور میں نے اسے بہت مال دیا (۱۲)

اور اس کے پاس حاضر رہنے والے بیٹے دئے (۱۳)

اور میں نے اسے بہت کچھ کشادگی دے رکھی ہے (۱۴)

پھر بھی اس کی چاہت ہے کہ میں اسے اور دوں (۱۵)

تو سنو جو وہ چاہتا ہے کبھی نہیں ہوگا کیونکہ وہ ہماری آیات سے عناد رکھتا ہے (۱۶)

جلد ہی میں اسے ایک سخت چڑھائی چڑھاؤں گا (۱۷)

اس نے سوچا اور اندازہ کیا (یعنی اپنے دل میں ایک بات مقرر کی) (۱۸)

تو اس پر لعنت ہو کیسا اندازہ کیا (۱۹)

پھر اس پر لعنت ہو کیسا اندازہ کیا (۲۰)

پھر نظر اٹھا کر دیکھا (یعنی پھر اللہ کے قانون پر غور کیا مگر اپنے ہی بنائے اندازے پر قائم ہو گیا) (۲۱)

(اور محمدؐ کے بتائے ہوئے طریقے سے) پھر تیوری چڑھائی اور منہ بنایا (اللہ کے قانون کو پسند نہیں کیا) (۲۲)

پھر پشت پھیر کر چل دیا (اور دین حق کو قبول نہیں کیا) اور غرور کیا (۲۳)

اور کہنے لگا یہ (قرآن) تو صرف جادو ہے جو پہلے سے نقل ہوتا چلا آتا ہے (۲۴)

یہ کچھ نہیں یقیناً بشر کا کلام ہے (۲۵)

میں ابھی جلد اس کو دوزخ میں ڈالوں گا (۲۶)

اور آپ کو اللہ سے بڑھ کر اور کون بتا سکتا ہے کہ سقر کیا چیز ہے (۲۷)

(وہ دوزخ کی آگ ہے) نہ باقی رکھے گی اور نہ چھوڑے گی (۲۸)

اور بدن کو جھلس کر سیاہ کر دے گی (۲۹)

اور اس پر انیس محافظ ہیں (۳۰)

اور ہم نے دوزخ کے محافظ جو بنائے ہیں یقیناً وہ فرشتے ہیں اور ہم نے جو ان کا شمار بتایا ہے وہ یقیناً کافروں کے لئے آزمائش ہے اور اس لئے کہ جنہیں کتاب دی جا رہی ہے یقین کر لیں اور ایمان دار ایمان میں بڑھ جائیں اور جنہیں کتاب دی جا رہی ہے جو مومن ہیں شک نہ کریں اور جن کے دلوں میں بیماری ہے وہ اور کافر کہیں کہ اس مثال سے اللہ کی کیا مراد ہے (تو سنو) اس سے اللہ کا قانون جسے چاہتا ہے گمراہ کرتا ہے اور جسے چاہتا ہے ہدایت دیتا ہے۔ تیرے رب کے لشکروں کو اس کے سوا کوئی نہیں جانتا اور وہ جو ہے کل بنی آدم کے لئے ایک یاد دہانی ہے (۳۱)

देखो यह कोई साधारण बात नही चन्द्रमा साक्षी है (और यह सब सच है) (32)

(دیکھو یہ کوئی معمولی بات نہیں چاند شاہد ہے (اور یہ سب سچ ہے) (۳۲)

और रात जब वह पीछे हटे (33)
और प्रातः जब वह उज्ज्वल हो जाए (34)
निःसन्देह वह (नर्क) बड़ी वस्तुओं में से एक है(35)
मानव को डराने के लिए (36)

اور رات جب وہ پیچھے ہٹے (۳۳)
اور صبح جب وہ روشن ہو جائے (۳۴)
یقیناً وہ (دوزخ) بڑی چیزوں میں سے ایک ہے (۳۵)
بنی آدم کو ڈرانے کے لئے (۳۶)

नोट- जिस प्रकार रात का अन्धाकार सूर्य के उज्ज्वल होने से दूर हो जाता है ऐसे ही ऐ इन्सान तू जो पाप कर रहा है और यह समझ रहा है कि यह प्रकट न होंगे तो यह तेरी समझ अनुचित है तेरे पाप इस प्रकार प्रकट होंगे जैसे दिन उज्ज्वल हो जाता है ऐसे ही तेरे पापों से आवरण हटा दिया जाएगा तो उस दिन से डर कर चेतना में आ और ईश्वर की प्रसन्नता के कार्य कर

نوٹ:۔ جس طرح رات کا اندھیرا سورج کے روشن ہونے سے دور ہو جاتا ہے ایسے ہی اے انسان تو جو گناہ کر رہا ہے اور یہ سمجھ رہا ہے کہ یہ ظاہر نہ ہوں گے تو یہ تیری سمجھ غلط ہے تیرے گناہ اس طرح ظاہر ہوں گے جیسے دن روشن ہو جاتا ہے ایسے ہی تیرے گناہوں سے پردہ ہٹا دیا جائے گا تو اس دن سے ڈر کر ہوش میں آ۔ اور اللہ کی رضا کے کام کر۔

तुम में से हर उस व्यक्ति को डराने के लिए पर्याप्त है जो (भलाई की ओर) आगे बढ़ना चाहे या (बुराई की ओर से) पीछे हटना चाहे (37)

تم میں سے ہر اس شخص کو ڈرانے کے لئے کافی ہے جو (بھلائی کی طرف کو) آگے بڑھنا چاہے (برائی کی طرف سے) پیچھے ہٹنا چاہے (۳۷)

हर व्यक्ति अपने कर्मों के बदले गिरवी है (38)
(हर जीव जो बोएगा वह काटेगा बाएं बाजू वाले नर्क में होंगे) परन्तु दाऐं हाथ वाले (39)

ہر شخص اپنے اعمال کے بدلے گروی ہے (۳۸)
(ہر نفس جو بوئے گا وہ کاٹے گا بائیں بازو والے دوزخ میں ہوں گے) مگر دائیں ہاتھ والے (۳۹)

कि वह स्वर्ग में होंगे और पूछते होंगे (40)
नर्क में जाने वाले पापियों से (41)
किस वस्तु ने तुम्हें नर्क में डाला (42)
वह उत्तर देंगे कि हम सलात स्थापित करने वालों में से नही थे (43) {23:1से11;70:22से35}
वह यह कि और न निर्धनों को भोजन खिलाते थे (44)

کہ وہ جنت میں ہوں گے اور پوچھتے ہوں گے (۴۰)
دوزخ میں جانے والے گنہگاروں سے (۴۱)
کس چیز نے تمہیں دوزخ میں ڈالا (۴۲)
وہ جواب دیں گے کہ ہم صلوٰۃ قائم کرنے والوں میں سے نہیں تھے (۴۳) [۲۳:۱،۱۱؛۷۰:۲۲،۳۵]

और सत्य के विरुद्ध बाते बनाने वालों के साथ मिलकर हम भी बातें बनाते थे (और सत्य का) इनकार कर रहे थे (45)
और न्याय के दिन को झुटलाते थे (46)

وہ یہ کہ اور نہ مسکینوں کو کھانا کھلاتے تھے (۴۴)
اور حق کے خلاف باتیں بنانے والوں کے ساتھ مل کر ہم بھی باتیں بناتے تھے (اور حق کا) انکار کر رہے تھے (۴۵)

यहां तक कि हमें विश्वसनीय वस्तु अर्थात मृत्यु आ गई (47)
अतः उन्हें अनुशंसा करने वालों की अनुशंसा कुछ लाभ न दे सकेगी (48)

اور روزِ جزا کو جھٹلاتے تھے (۴۶)
یہاں تک کہ ہمیں یقینی چیز یعنی موت آ گئی (۴۷)
پس انہیں شفاعت کرنے والوں کی شفاعت کچھ نفع نہ دے گی (۴۸)

उन्हें क्या हो गया है? कि उपदेश से मुख मोड़ रहे हैं (49)
मानो वह गधे है बिदके हुए (50)
जो शेर (कुरआन) से भागते है (51)
अपितु उनमें से हर व्यक्ति चाहता है कि उसे खुली हुई पुस्तके दी जाऐं (52)
तो सुनो उनकी इच्छा कभी पूरी न होगी और वास्तविकता यह है कि उनको परलोक का भय ही नही (53)

انہیں کیا ہو گیا ہے؟ کہ نصیحت سے منہ موڑ رہے ہیں (۴۹)
گویا کہ وہ گدھے ہیں بدکے ہوئے (۵۰)
جو شیر (یعنی قرآن) سے بھاگتے ہیں (۵۱)
بلکہ ان میں سے ہر شخص چاہتا ہے کہ اسے کھلی ہوئی کتابیں دی جائیں (۵۲)
تو سنو ان کی خواہش کبھی پوری نہ ہو گی اور حقیقت یہ ہے کہ ان کو آخرت کا خوف ہی نہیں (۵۳)

सच्ची बात तो यह है कि यह (कुरआन) एक शिक्षा है (54)
तो जो चाहे उसे याद रखे (55)
और जो याद रखेंगे (सफल होंगे) निःसन्देह ईश्वर यही चाहता है (कि कुरआन को याद रखा जाए) और वह ईश्वर ऐसा है कि उसकी अवज्ञा करने से

سچی بات تو یہ ہے کہ یہ (قرآن) ایک نصیحت ہے (۵۴)
تو جو چاہے اسے یاد رکھے (۵۵)
اور جو یاد رکھیں گے (کامیاب ہوں گے) یقیناً اللہ یہی چاہتا ہے (کہ قرآن کو یاد رکھا جائے) اور وہ اللہ ایسا ہے کہ اس کی

डरा जाए और वह क्षमा का स्वामी है (56)

सुरतुल क्यामा - मक्की (75)

साक्ष्य में प्रस्तुत है प्रलय का दिन (क्या तुमको विश्वास नही) (1)

और भर्त्सना करने वाला जीव भी साक्ष्य में प्रस्तुत है (जो इन्सान को बुराई से रोके क्या इसका भी विश्वास नही) (2)

क्या इन्सान ने यह समझ रखा है कि हम उसकी हड्डियों को एकत्र न करेंगे (3)

क्यों नही? अपितु हम तो उसकी उंगलियों के पोर पोर तक (अर्थात उंगलियों के वह चिन्ह जिन से आज अपराधी की पहचान होती हैं) उन चिन्हों तक को ठीक ठीक बना देने पर अधिपति है (4)

अपितु इन्सान चाहता है कि आगे भी उसकी दृष्टि के सामने अवज्ञा करता रहे (और मुख चलाए) (5)

और पूछे कि वह प्रलय का दिन क्या है (6)

(अर्थ इसका यह है कि यदि यह सब बातें ठीक है तो उनको शीघ्र लाओ मैं देख लूं और जो मेरा कर्म पत्र संपादित हो रहा है उसको पढ़ाओ, ईश्वर कहता है कि सुन वह कब आएगी)

जिस समय आंखें पथरा जाएेंगी (7)

और चन्द्रमा प्रकाश रहित हो जाएगा (8)

और सूर्य और चन्द्रमा (दोनों) एक जगह संग्रह कर दिए जाएेंगे (9)

उस दिन वही व्यक्ति (जो मुख चला रहा है) कहेगा कि भाग कर कहां जाऊं (10)

सुनले कही बचाओ नही (11)

उस दिन तेरे रब ही के सामने जाकर ठहरना होगा (12)

उस रोज इन्सान को उसका सब अगला पिछला किया कराया बता दिया जाएेगा (13)

अपितु व्यक्ति स्वयं ही अपनी दशा पर पूरी दृष्टि रखता है (जो किया है वह उसको ज्ञात है) (14)

और उसके पास जितने बहाने हों सब ला डाले जब भी न सुना जाएगा (चाहे कितनी ही जबान दराजी करले) (15)

(तो सुन) अब अपनी जबान दराजी न कर अर्थात जबान न चला और जल्दी न कर (16) {51:59; 20:51,52;18:49}

(और ऐ मानव कान खोल के सुन ले अब दुनिया के जीवन में अवसर है अच्छे कर्म कर ले या बुरे) निःसन्देह जो हम तेरे ऊपर कर्म पत्र जमा कर रहे है उसको हम पढ़वा देंगे(17){17:13,14;7:7,8,9}

और जब तेरे सामने पढ़ने को प्रस्तुत होगा तो तू उसको स्वीकार करने पर विवश होगा तू उसका अनुकरण करेगा(18) {7:7,8,9;17:13,14;18:49}

(यह भी एक सत्य है) कि उस कर्म पत्र का खोल खोलकर बयान कर देना तेरे ऊपर हमारा कार्य है (19)

نافرمانی سے ڈرا جائے اور وہ بخشش کا مالک ہے(۵۶)

سورۃ القیامہ۔مکی(۷۵)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

شہادت میں پیش ہے قیامت کا دن (کیا تم کو یقین نہیں)(۱)

اور ملامت کرنے والا نفس بھی شہادت میں پیش ہے (جو انسان کو برائی سے روکے کیا اس کا بھی یقین نہیں)(۲)

کیا انسان نے یہ سمجھ رکھا ہے کہ ہم اس کی ہڈیوں کو جمع نہ کریں گے(۳)

کیوں نہیں؟ بلکہ ہم تو اس کی انگلیوں کے پور پور تک (یعنی انگلیوں کے وہ نشان جن سے آج مجرم کی شناخت ہوتی ہے) ان نشانوں تک کو ٹھیک بنا دینے پر قادر ہیں(۴)

بلکہ انسان چاہتا ہے کہ آگے بھی اس کی نگاہ کے سامنے نافرمانیاں کرتا رہے (اور زبان چلائے)(۵)

اور پوچھے کہ وہ قیامت کا دن کیا ہے؟(۶)

(مطلب اس کا یہ ہے کہ اگر یہ سب باتیں صحیح ہیں تو ان کو جلدی لاؤ میں دیکھ لوں اور جو میرا نامہ اعمال مرتب ہو رہا ہے اس کو پڑھاؤ اللہ فرماتا ہے کہ سن وہ کب آئے گی)

جس وقت آنکھیں پتھرا جائیں گی(۷)

اور چاند بے نور ہو جائے گا(۸)

اور سورج اور چاند (دونوں) ایک جگہ جمع کر دیے جائیں گے(۹)

اس دن وہی انسان (جو زبان چلا رہا ہے) کہے گا کہ بھاگ کر کہاں جاؤں(۱۰)

سن لے کہیں بچاؤ نہیں(۱۱)

اس روز تیرے رب ہی کے سامنے جا کر ٹھہرنا ہوگا(۱۲)

اس روز انسان کو اس کا سب اگلا پچھلا کیا کرایا بتا دیا جائے گا(۱۳)

بلکہ آدمی خود ہی اپنے حال پر پوری نگاہ رکھتا ہے (جو کیا ہے وہ اس کو معلوم ہے)(۱۴)

اور اس کے پاس جتنے بہانے ہوں سب لا ڈالے جب بھی نہ سنا جائے گا (چاہے کتنی ہی زبان درازی کر لے)(۱۵)

(تو سن) اب اپنی زبان درازی نہ کر یعنی زبان نہ چلا اور جلدی نہ کر(۱۶)[۵۱:۵۹؛۲۰:۵۱،۵۲؛۱۸:۴۹]

(اور اے انسان کان کھول کے سن لے اب دنیا کی زندگی میں موقع ہے اچھے عمل کر لے یا برے یقیناً جو ہم تیرے اوپر نامہ اعمال جمع کر رہے ہیں اس کو ہم پڑھوا دیں گے(۱۷)[۱۷:۱۳،۱۴؛۷:۷،۸،۹]

اور جب تیرے سامنے پڑھنے کو پیش ہوگا تو اس کو تسلیم کرنے پر مجبور ہوگا تو اس کی اتباع کرے گا(۱۸)[۷:۷،۸،۹؛۱۷:۱۳،۱۴؛۱۸:۴۹]

(یہ بھی ایک حقیقت ہے) کہ اس نامہ اعمال کا کھول کھول کر بیان کر دینا تیرے اوپر ہمارا کام ہے(۱۹)

तो सुनो तुम यह चाहते थे कि वह जल्दी आ जाए (20)
और प्रलय में उसके भय से बचाने में जो कर्म काम आएंगे उनको छोड़ रहे थे (अर्थात भूले हुए हो) (21)

تو سنو تم یہ چاہتے ہو کہ وہ جلدی آجائے (۲۰)
اور آخرت میں اس کے خطرے سے بچانے میں جو اعمال کام آئیں گے ان کو چھوڑ رہے ہو (یعنی بھولے ہوئے ہو) (۲۱)

नोट- सूरत क्यामा में मुख जल्दी चलाने वाला मुहम्मद स0 को लिखा गया है कि मुहम्मद स0 वही के समय उसको याद करने के लिए जल्दी जल्दी मुख चलाते थे तो ईश्वर ने उनको मना किया परन्तु यह वास्तविकता नहीं है इसका स्पष्टीकरण (20:114) में पहले कर दिया गया है यहां पर कुछ और आयात लिखी जा रही हैं वैसे भी हर व्यक्ति को सोचना चाहिए कि इस सूरत में उल्लेख क्यामत का हो रहा है फिर बीच में वही को जल्दी याद करने का उल्लेख और फिर एकदम प्रलय का वर्णन क्या अर्थ? इसलिए वही का विषय नहीं है अपितु क्यामत का ही वर्णन है अवलोकन हो.
सूरत जारियात (51) आयत 59, अतः जिन लोगों ने अत्याचार किया है उन्हें भी उनके साथियों के अंश के समान अंश मिलेगा अतः वह मुझ से जल्दी याचना न करें.
(51:60) अतः विकार है विरोधियों को उनके उस दिन का जिसका वचन उन्हें दिया जाता है.

نوٹ:۔سورت قیامہ میں زبان جلدی چلانے والا محمدؐ کو لکھا گیا ہے کہ محمدؐ وحی کے وقت اس کو یاد کرنے کے لئے جلدی جلدی زبان چلاتے تھے تو اللہ نے ان کو منع کیا لیکن یہ حقیقت نہیں ہے اس کی وضاحت (۲۰:۱۱۴) میں پہلے کردی گئی ہے یہاں پر کچھ اور آیات لکھی جارہی ہیں ویسے بھی ہر آدمی کو سوچنا چاہیے کہ اس سورت میں ذکر قیامت کا ہو رہا ہے پھر بیچ میں وحی کو جلدی یاد کرنے کا ذکر اور پھر ایک دم قیامت کا ذکر کیا مطلب؟ اس لئے وحی کا معاملہ نہیں ہے بلکہ قیامت کا ہی ذکر ہے ملاحظہ ہو۔
سورت ذاریات (۵۱) آیت ۵۹۔ پس جن لوگوں نے ظلم کیا ہے انہیں بھی ان کے ساتھیوں کے حصہ کے مثل حصہ ملے گا لہٰذا وہ مجھ سے جلدی طلب نہ کریں۔
(۵۱:۶۰) پس خرابی ہے منکروں کو ان کے اس دن کی جس کا وعدہ انہیں دیا جاتا ہے۔

उस दिन बहुत चेहरे प्रफुल्ल और शोभावान होंगे (22)
और अपने रब के तेज की ओर देख रहे होंगे(23)
और बहुत से मुख उस दिन उदास होंगे (24)
समझते होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देने वाला प्रसंग किया जाएगा (25)

اس روز بہت چہرے تروتازہ اور بارونق ہوں گے (۲۲)
اور اپنے رب کی تجلی کی طرف دیکھ رہے ہوں گے (۲۳)
اور بہت سے چہرے اس دن اداس ہوں گے (۲۴)
سمجھتے ہوں گے کہ ان کے ساتھ کمر توڑ دینے والا معاملہ کیا جائے گا (۲۵)

देखो जब जान गले तक पहुंच जाए और लोग कहने लगे कोई झाड़ फूंक करने वाला है अर्थात झाड़ फूंक करके जान बचाले (27)
और उसने जान लिया कि यह समय जुदाई का है (28)
और पिंडली से पिंडली लिपट जाएगी अर्थात बड़ा कष्ट मृत्यु आ जाएगी (29)

دیکھو جب جان گلے تک پہنچ جائے (۲۶) یعنی آخری وقت اور لوگ کہنے لگیں کوئی جھاڑ پھونک کرنے والا ہے یعنی پھونک کر کے جان بچالے (۲۷)
اور اس نے جان لیا کہ یہ وقت جدائی کا ہے (۲۸)
اور پنڈلی سے پنڈلی لپٹ جائے گی یعنی بڑی مصیبت موت آجائے گی (۲۹)

उस दिन तुझे अपने रब की ओर चलना है (30)
उस नास्तिक ने न तो ईश्वर के कथन की पुष्टि की और न आज्ञाकारी की (31)
अपितु झुटलाया और विमुखता की (32)
फिर अपने घर वालों के पास इतराता हुआ गया (33)
खेद है तुझ पर संताप है तुझ पर (34)
फिर दुख है तुझ पर फिर संताप है तुझ पर (35)
क्या इन्सान विचार करता है कि उसे यूं ही छोड़ दिया जाएगा (36)
क्या वह (पैदायश से पहले) एक गाढ़े पानी की बून्द न थी जो गर्भाशय में डाली जाती है (37)
फिर लोथड़ा हुआ फिर ईश्वर ने उसे पैदा किया और ठीक बना दिया (38)
फिर उसकी दो प्रकार बनाईं एक नर और एक नारी (39)
क्या (मैं ईश्वर) इस पर प्रभुत्वशाली नहीं हूं कि मृतक को जीवित कर दूं सुन लो उस पर प्रभुत्व शाली हूं (40)

اس دن تجھے اپنے رب کی طرف چلنا ہے (۳۰)
اس کافر نے نہ تو کلام الٰہی کی تصدیق کی اور نہ فرمان برداری کی (۳۱)
بلکہ جھٹلایا اور روگردانی کی (۳۲)
پھر اپنے گھر والوں کے پاس اتراتا ہوا گیا (۳۳)
افسوس ہے تجھ پر حسرت ہے تجھ پر (۳۴)
پھر افسوس ہے تجھ پر پھر حسرت ہے تجھ پر (۳۵)
کیا انسان خیال کرتا ہے کہ اسے یونہی چھوڑ دیا جائے گا (۳۶)
کیا وہ (پیدائش سے پہلے) ایک گاڑھے پانی کا قطرہ نہ تھا جو رحم میں ڈالا جاتا ہے (۳۷)
پھر لوتھڑا ہوا پھر اللہ نے اسے پیدا کیا اور درست بنادیا (۳۸)
پھر اس کی دو قسمیں بنائیں ایک مرد اور ایک عورت (۳۹)
کیا (میں اللہ) اس پر قادر نہیں ہوں کہ مردے کو زندہ کر دوں سن لو اس پر قادر ہوں (۴۰)

सूरत दहर - मक्की (76)

سورت دہر۔مکی(۷۶)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

निःसन्देह इन्सान पर एक ऐसा समय बीता है कि वह कोई उल्लेखनीय वस्तु न था (1) {19:67}

بے شک انسان پر ایک ایسا وقت گزرا ہے کہ وہ کوئی قابل ذکر چیز نہ تھا(۱)[۱۹:۶۷]

नोट- आदम को पैदा करके एक उपवन में रखा वहां उसके सन्तान भी हुई परन्तु आरम्भ में आदम और उसकी सन्तान में कोई सूझ बूझ न थी अपितु उस स्वर्ग में रहते रहते आती गई और बुद्धि वाला हो गया, तब ईश्वर ने आदम को फरिश्तों के सामने प्रस्तुत किया, विस्तार के लिए मेरी पुस्तक जिक्रए अंबिया अवलोकन हो.

نوٹ:۔آدم کو پیدا کر کے ایک جنت میں رکھا وہاں اس کے اولاد بھی ہوئی مگر شروع میں آدم اور اس کی اولاد میں کوئی سوجھ بوجھ نہ تھی بلکہ اس جنت میں رہتے رہتے آتی گئی اور وہ عقل والا ہو گیا تب اللہ نے آدم کو فرشتوں کے سامنے پیش کیا تفصیل کے لئے میری کتاب ذکر انبیاء ملاحظہ ہو۔

निःसन्देह हमने मानव को मिश्रित वीर्य से उत्पन्न किया ताकि हम उसके अच्छे बुरे गुण प्रकट करें और हमने उसे सुनता और देखता बनाया (अर्थात बुद्धि वाला) (2)

بے شک ہم نے انسان کو مخلوط نطفہ سے بنایا تاکہ ہم اس کی اچھی بری صفات ظاہر کریں تو ہم نے اسے سنتا اور دیکھتا بنایا (یعنی عقل دی)(۲)

(इन्सान को बुद्धि देकर) हमने उस पर कर्म का मार्ग खोल दिया चाहे वह आज्ञाकारी बने या कुफ्र करने वाला बने (3) {20:50;80:19,20;87:3}

(انسان کو عقل دے کر) ہم نے اس پر راہ عمل کھول دی خواہ وہ فرمانبردار بنے یا کفر کرنے والا بنے (۳)[۲۰:۵۰؛ ۸۰:۱۹،۲۰؛۸۷:۳]

नोट- इस आयत पर विचार करने के बाद इस परिणाम पर ही आना पड़ता है कि ईश्वर ने मानव को अपना नियम और बुद्धि देने के बाद कर्म में उसको स्वतंत्र छोड़ दिया है वह क्या करता है वह लिखा जा रहा है और उसके अनुसार ही हिसाब होगा, अतः जहां ऐसी आयात का अनुवाद आलिमों ने यह किया है कि ईश्वर जिसे चाहे पथ भ्रष्ट करे जिसे चाहे पथ प्रदर्शन दे तो वह आयतें अनुरूप (मुताशाबाह) हैं अतः हर स्थान पर ऐसी आयतों का अर्थ दृढ़ आयतों के आधीन ही करना है और वास्तविकता यही है कि ईश्वर पथ प्रदर्शन उसको देता है जो स्वयं अपने कर्म से चाहता है मानों सम्मान उसको मिलता है जो स्वयं अच्छे कर्म करके सम्मान पाता है या अपमान उसको मिलता है जो स्वयं बुरे कर्म करता है अर्थात जैसा कर्म होता है ईश्वर का नियम उसके अनुसार ही दण्ड या पुरस्कार देता है, ईश्वर किसी को स्वयं पथ भ्रष्ट करके अत्याचार नही करता, यदि ईश्वर ही पथ भ्रष्ट करने लगे तो फिर दण्ड कैसा अतः ईश्वर पथ भ्रष्ट नही करता स्वयं इन्सान ही भ्रष्ट होता है और स्वयं ही पथ प्रदर्शन पर आता है जिसका साक्ष्य कुरआन की बहुत सी आयात दे रही है विचार करो ईश्वर न्यायशील है इसी सूरत की आयत 30 देखो.

نوٹ:۔اس آیت پر غور کرنے کے بعد اس نتیجہ پر ہی آنا پڑتا ہے کہ اللہ نے انسان کو اپنا قانون اور عقل دینے کے بعد عمل میں اس کو آزاد چھوڑ دیا ہے وہ کیا کرتا ہے وہ لکھا جا رہا ہے اور اس کے مطابق ہی حساب ہوگا اس لئے جہاں ایسی آیات کا ترجمہ عالموں نے یہ کیا ہے کہ اللہ جسے چاہے گمراہ کرے جسے چاہے ہدایت دے تو وہ آیتیں متشابہ ہیں اس لئے ہر جگہ ایسی آیتوں کا مطلب محکم آیتوں کے تحت ہی کرنا ہے اور حقیقت یہی ہے کہ اللہ ہدایت اس کو دیتا ہے جو خود اپنے عمل سے چاہتا ہے اور اللہ گمراہ اس کو کرتا ہے جو خود اپنے عمل سے گمراہ ہوتا ہے یا عزت اس کو ملتی ہے جو خود اچھے عمل کر کے عزت پاتا ہے یا ذلت اس کو ملتی ہے جو خود برے عمل کرتا ہے یعنی جیسا عمل ہوتا ہے اللہ کا قانون اس کے مطابق ہی جزا یا سزا دیتا ہے اللہ کسی کو خود گمراہ کر کے ظلم نہیں کرتا۔اگر اللہ ہی گمراہ کرنے لگے تو پھر سزا کیسی اس لئے اللہ گمراہ نہیں کرتا خود انسان ہی گمراہ ہوتا ہے اور خود ہی ہدایت پر آتا ہے جس کی شہادت قرآن کی بہت سی آیات دے رہی ہیں غور کرو اللہ عادل ہے اسی سورت کی آیت ۳۰ دیکھو۔

निःसन्देह हमने नास्तिकों के लिए श्रृंखलाऐं और पट्टा और दहकती आग तैयार कर रखी है (4)

یقیناً ہم نے کافروں کے لئے زنجیریں اور طوق اور دہکتی آگ تیار کر رکھی ہے(۴)

निःसन्देह सदाचारी लोग वह मधुर पेय पात्र पियेंगे जिसका मिश्रण काफूर का होगा (5)

بے شک نیک لوگ وہ جام مشروب پئیں گے جس کی آمیزش کافوری ہوگی(۵)

एक बहता हुआ स्रोत होगा उससे ईश्वर के सदाचारी बन्दे पियेंगे और जहां चाहेंगे उसकी शाखें निकालेंगे (6) {ऐसे ही मानव को इस जीवन में ईश्वर के प्रसादों को चारो ओर फैलाना चाहिए उन को बन्द करना पाप है}

ایک بہتا ہوا چشمہ ہوگا اس سے اللہ کے نیک بندے پئیں گے اور جہاں چاہیں گے اس کی شاخیں نکالیں گے(۶)[ایسے ہی انسان کو اس زندگی میں اللہ کی نعمتوں کو چاروں اور پھیلانا چاہیے ان کو بند کرنا گناہ ہے]

वह वह लोग होंगे जो भेंट पूरी करते हैं और उस दिन से डरते हैं जिसकी कठोरता चारों ओर फैल जाने वाली है (7)

وہ وہ لوگ ہوں گے جو نذر پوری کرتے ہیں اور اس دن سے ڈرتے ہیں جس کی سختی چاروں طرف پھیل جانے والی ہے(۷)

और ईश्वर के प्रेम में खाना खिलाते हैं निर्धन अनाथ और बन्दियों को (8)

اور اللہ کی محبت میں کھانا کھلاتے ہیں مسکین یتیم اور قیدیوں کو(۸)

हम तो तुम्हें केवल ईश्वर की प्रसन्नता के लिए खिलाते हैं न तुम से बदला चाहते हैं न धन्यवाद (9)

ہم تو تمہیں صرف اللہ کی رضا مندی کے لئے کھلاتے ہیں نہ تم سے بدلہ چاہتے ہیں نہ شکر گزاری(۹)

हमें तो अपने ईश्वर के उस दिन (के कष्ट) से डर लगता है जो चेहरों को बिगाड़ देगा और (हृदयों को) कठिन कष्ट में पीड़ित कर देगा (10)
तो ईश्वर भी उन्हें उस दिन की कठिनता से बचा लेगा और (मुखों की) प्रफुल्लता और (हृदय की) प्रसन्नता प्रदान करेगा (11)
और उनके धैर्य के बदले उनको स्वर्ग के उपवन और रेशम के वस्त्र प्रदान करेगा (12)
उनमें वह तख्तों पर तकिये लगाए बैठे होंगे वहां न धूप देखेंगे न शीत की उग्रता (13)
उपवनों का साया उन पर झुका हुआ साया कर रहा होगा और उसके फल हर समय उनके वश में होंगे (कि जिस प्रकार चाहें उन्हें तोड़ लें) (14)
उनके आगे चान्दी के बर्तन और शीशे के पात्र आवर्त कराए जा रहे होंगे (15)
शीशे भी वह जो चान्दी की प्रकार के होंगे और उनको (पिलाने वाले ने) अनुमान से नाप कर भरा होगा (16)
और उन्हें वहां वह मधुर पेय पात्र पिलाए जाएंगे जिनका मिश्रण सोंठ का होगा (17)
स्वर्ग की एक नहर से जिसका नाम सलसबील होगा (18)
और उनके चारों ओर घूमते फिरते होंगे उनके वह अल्पायु बच्चे जो सदैव रहने वाले हैं जब तुम उनको देखो तो विचार करो कि वह बिखरे हुए मोती हैं (19) {56:17}
और यदि स्वर्ग को देखो तो वहां तुम्हें हर प्रकार की सुख सामग्री और एक बड़ा राज्य का सामान नजर आएगा (20)
और उनके शरीरों पर हरित बारीक और मोटे वस्त्र होंगे और उन्हें चान्दी के कंगन का आभूषण पहनाया जाएगा और उन्हें उनका रब पवित्र शुद्ध मधुर पेय पिलाएगा (21) {6:70;16:69} (शरबत)
(कहा जाएगा) कि यह है तुम्हारे कर्मों का फल और तुम्हारा प्रयास सराहा गया (22)
(ऐ मुहम्मद स0) यह सत्य है कि हम ही ने इस कुरआन को थोड़ा थोड़ा करके अवतरित किया है (23)
आप अपने रब के आदेशानुसार (अपना कर्तव्य पूरा करते रहो और इस मार्ग में जो कष्ट पहुंचे उस पर) धैर्य करते रहो और उनमें से किसी पापी और अवज्ञाकार की कही हुई बात को न मानो (24) {18:28;33:1}
और अपने ईश्वर के नाम का प्रातः व सायं जप किया करो (25)
और रात के समय उसके सामने सजदे किया करो और बहुत रात तक उसकी पवित्रता का वर्णन किया करो (26)
निःसन्देह वह लोग शीघ्र मिलने वाली (दुनिया) को

ہمیں تو اپنے پروردگار کے اس دن (کے عذاب) سے ڈر لگتا ہے جو چہروں کو بگاڑ دیگا اور (دلوں کو) سخت مصیبت میں مبتلا کر دے گا (۱۰)
تو اللہ بھی انہیں اس دن کی سختی سے بچا لے گا اور (چہروں کی) تازگی اور (دل کی) خوشی عنایت کرے گا (۱۱)
اور ان کے صبر کے بدلے ان کو جنت کے باغ اور ریشم کے لباس عطا کرے گا (۱۲)
ان میں وہ تختوں پر تکیے لگائے بیٹھے ہوں گے وہاں نہ دھوپ دیکھیں گے نہ سردی کی شدت (۱۳)
جنت کی چھاؤں ان پر جھکی ہوئی سایہ کر رہی ہوگی اور اس کے پھل ہر وقت ان کے بس میں ہوں گے (کہ جس طرح چاہیں انہیں توڑ لیں) (۱۴)
ان کے آگے چاندی کے برتن اور شیشے کے پیالے گردش کرائے جا رہے ہوں گے (۱۵)
شیشے بھی وہ جو چاندی کی قسم کے ہوں گے اور ان کو (ساقی نے) اندازے سے ناپ کر بھرا ہوگا (۱۶)
اور انہیں وہاں وہ جام مشروب پلائے جائیں گے جن کی آمیزش سونٹھ کی ہوگی (۱۷)
جنت کی ایک نہر سے جس کا نام سلسبیل ہوگا (۱۸)
اور ان کے اردگرد گھومتے پھرتے ہوں گے ان کے وہ کم سن بچے جو ہمیشہ رہنے والے ہیں جب تم ان کو دیکھو تو خیال کرو کہ وہ بکھرے ہوئے موتی ہیں (۱۹) [۵۶:۱۷]
اور اگر جنت کو دیکھو تو وہاں تمہیں ہر طرح کی نعمتیں اور ایک بڑی سلطنت کا سامان نظر آئے گا (۲۰)
اور ان کے جسموں پر سبز باریک اور موٹے کپڑے ہوں گے اور انہیں چاندی کے کنگن کا زیور پہنایا جائے گا اور انہیں ان کا رب پاک صاف مشروب پلائے گا (۲۱) [۶:۷۰؛۱۶:۶۹] (شربت)
(کہا جائے گا) کہ یہ ہے تمہارے اعمال کا بدلہ اور تمہاری کوشش کی قدر کی گئی (۲۲)
(اے محمدؐ) یہ حقیقت ہے کہ ہم ہی نے اس قرآن کو تھوڑا تھوڑا کر کے نازل کیا ہے (۲۳)
آپ اپنے رب کے حکم کے مطابق (اپنا فرض انجام دیتے رہو اور اس راہ میں جو تکلیف پہنچے اس پر) صبر کرتے رہو اور ان میں سے کسی گناہ گار اور نافرمان کی کہی ہوئی بات کو نہ مانو (۲۴) [۱۸:۲۸؛۳۳:۱]
اور اپنے رب کے نام کا صبح و شام ذکر کیا کر (۲۵)
اور رات کے وقت اس کے سامنے سجدے کیا کر اور بہت رات تک اس کی تسبیح کیا کر (۲۶)
بے شک وہ لوگ جلدی ملنے والی (دنیا) کو چاہتے ہیں اور اپنے

चाहते हैं और अपने पीछे एक बड़े भारी दिन को छोड़ देते हैं (27)
हम ही ने उनको पैदा किया है और उनके जोड़ बन्द सुदृढ़ किये हैं और यदि हम चाहें तो उनके बदले उन ही जैसे और आदमी ला बसाएं (28)

پیچھے ایک بڑے بھاری دن کو چھوڑ دیتے ہیں (۲۷)
ہم ہی نے ان کو پیدا کیا ہے اور ان کے جوڑ بند مضبوط کئے ہیں اور اگر ہم چاہیں تو ان کے بدلے ان ہی جیسے اور آدمی لا بسائیں (۲۸)

निःसन्देह यह कुरआन तो एक शिक्षा है अतः जो चाहे अपने रब का मार्ग ले ले (29)
और जो तुम चाहोगे (पथ प्रदर्शन या पथ भ्रष्टता) निःसन्देह वही चाहेगा ईश्वर (अर्थात भ्रष्टता और सत्य मार्ग तुम्हारे अपने कर्म पर हैं उसका नियम ऐसा ही निर्णय करेगा) निःसन्देह ईश्वर ज्ञान वाला युक्ति वाला है (30) {76:2,3;81:29}

یقیناً یہ قرآن تو ایک نصیحت ہے بس جو چاہے اپنے رب کی راہ لے لے (۲۹)
اور جو تم چاہو گے (ہدایت یا گمراہی) یقیناً وہی چاہے گا اللہ (یعنی گمراہی اور ہدایت تمہارے اپنے عمل پر ہے اس کا قانون ایسا ہی فیصلہ کرے گا) بے شک اللہ علم والا باحکمت ہے (۳۰) [۷۶:۲،۳؛۸۱:۲۹]

प्रविष्ट हो जाएं उसकी अनुकम्पा में जो चाहे और (यह भी सुन लो कि) अत्याचारियों के लिए उसने कष्ट देने वाला दण्ड तैयार कर रखा है (31)

داخل ہو جائے اس کی رحمت میں جو چاہے اور (یہ بھی سن لو کہ) ظالموں کے لئے اس نے دردناک عذاب تیار کر رکھا ہے (۳۱)

सूरतुल मुरसलात - मक्की (77)

سورت المرسلات ۔ مکی (۷۷)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

साक्षी है वह अस्तित्व अर्थात रसूल जो दुनिया को मंगल व सुकर्म का सन्देश सुनाते हैं (1)
वह सन्देश जो पापों के तिनकों व तृण को आंधी बनकर उड़ा देते हैं (या जिनमें बढ़ने फूलने की क्षमता न हो उनको तिनको व तृण की भांति जीवन की रण भूमि से उड़ाकर दूर फैंक देते हैं) (2) {13:17}

شاہد ہیں وہ ہستیاں یعنی رسول جو دنیا کو خیر و معروف کا پیغام سناتی ہیں (۱)
وہ پیغام جو گناہوں کے خس و خاشاک کو آندھی بن کر اڑا دیتے ہیں (یا جن میں بڑھنے پھولنے کی صلاحیت نہ ہو ان کو خس و خاشاک کی طرح رزم گاہ حیات سے اڑا کر دور پھینک دیتے ہیں) (۲) [۱۳:۱۷]

जो अच्छी हवाओं की भांति करूणा की घटाओं को अर्थात नियम ईश्वर को जगत के हर कौने में प्रसार करती हैं (3)

جو اچھی ہواؤں کی طرح رحمت کی گھٹاؤں کو یعنی قانون الٰہی کو کائنات کے ہر گوشے میں نشر کرتی ہیں (۳)

जो सत्य और मिथ्या को पृथक पृथक कर देने वाले हैं (4)
जिससे ईश्वर के नियम का प्रभुत्व हो जाए और उसके प्रमाणित और नकारात्मक पार्श्व की अनुभूति अच्छी प्रकार हो जाए (5) {13:17}

جو حق و باطل کو جدا جدا کر دینے والے ہیں (۴)
جس سے قوانین الٰہی کی بالاتری ہو جائے اور اس کے مثبت اور منفی پہلو کا احساس اچھی طرح ہو جائے (۵) [۱۳:۱۷]

ताकि मानव जाति डर कर अनुचित गतिविधि छोड़कर अपने बचाओ का प्रबन्ध करे अर्थात अच्छे कर्म करे (6)

تاکہ انسان ڈر کر غلط رویہ چھوڑ کر اپنے بچاؤ کا انتظام کرے یعنی اچھے کام کرے (۶)

क्योंकि जिसका वचन दिया जा रहा है वह अवश्य होने वाली है अर्थात क्यामत (7)

کیونکہ جس کا وعدہ کیا جا رہا ہے وہ ضرور ہونے والی ہے یعنی قیامت (۷)

नोट- आयत एक में मुरसलात का अनुवाद आलिमों ने हवाओं का किया है जो अनुचित है ठीक भाव मुरसल रसूल है.

نوٹ:۔ آیت ایک میں مرسلات کا ترجمہ عالموں نے ہواؤں کا کیا ہے جو غلط ہے صحیح مفہوم مرسل رسول ہے۔

(वह कब आएगी) जब तारों की चमक जाती रहे (8)
जब आकाश फट जाएगा (9)
और जब पर्वत टुकड़े टुकड़े होकर उड़े फिरेंगे (10)
और जब रसूलों को निश्चित समय पर लाया जाएगा (11)
भला किस दिन के लिए (उन सब में) विलम्ब किया गया है? (12)
निर्णय के दिन के लिए (कि व्यक्ति सत्कर्म कर लें) (13)
और आपको ईश्वर से बढ़कर और कौन बता सकता है कि निर्णय का दिन क्या है (14)

(وہ کب آئے گی) جب تاروں کی چمک جاتی رہے (۸)
جب آسمان پھٹ جائے گا (۹)
اور جب پہاڑ ٹکڑے ٹکڑے ہو کر اڑتے پھریں گے (۱۰)
اور جب رسولوں کو وقت مقررہ پر لایا جائے گا (۱۱)
بھلا کس دن کے لئے (ان سب میں) تاخیر کی گئی ہے؟ (۱۲)
فیصلے کے دن کے لئے (کہ آدمی نیک عمل کر لے) (۱۳)
اور آپ کو اللہ سے بڑھ کر اور کون بتا سکتا ہے کہ فیصلے کا دن کیا ہے (۱۴)

(तो सुनो) उस दिन झुटलाने वालों के लिए विकार है (15)

(تو سنو!) اس دن جھٹلانے والوں کے لئے خرابی ہے (۱۵)

क्या हमने पहले अवज्ञाकारी लोगों को वध नही किया? (16)

(तो फिर बाद में आने वाले क्यों निश्चिन्त बैठे हैं) फिर उन्ही के पीछे हम बाद वालों को चलता करते है (17)

हम अपराधियों के साथ ऐसा ही करते है (18)

उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है (19)

(तुम अपनी उत्पत्ति पर विचार क्यों नही करते) क्या हमने तुम को तुच्छ पानी से पैदा नही किया (20) {23:12;55:14,15}

(पहले) उसको एक सुरक्षित स्थान में रखा (21)

एक निश्चित समय तक (22)

फिर हमने अनुमान निश्चित किया और हम क्या अच्छा अनुमान निश्चित करने वाले है (अर्थात इन्सानों की उत्पत्ति में) (23)

उस दिन झुठलाने वालों का विनाश है (24)

क्या हमने पृथ्वी को समेटकर रखने वाली नही बनाया? (25)

अर्थात जीवित और मृतकों को (26)

और उस पर ऊंचे भारी पर्वत बना दिए और पहाड़ी स्रोतों से तुम को मीठा पानी पिलाया (27)

(अब भी यदि नही मानते तो याद रखो) उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है (28)

(कहा जाएगा) उस नर्क की ओर चलो जिसे तुम झुठलाते रहे थे (29)

चलो तीन शाखाओं वाले साए की ओर जो ऊपर, दाएं, बाएं से घेर लेगा (30)

जो वास्तव में न ठंड देने वाला है और न अग्नि शिखा से बचा सकता है (31)

निःसन्देह नर्क चिंगारीयां फैंकेगा जो भवन के समान है (32)

मानो वह पीले ऊंट है (33)

उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है (34)

यह वह दिन होगा कि वह बोल भी न सकेंगे(35)

न उनको अनुमति दी जाएगी कि आपत्ति कर सके (36)

उस दिन झुठलाने वालों के लिए विनाश है (37)

(कहा जाएगा) यह है निर्णय का दिन हमने तुम को और अगलों सबको संग्रह कर लिया है (38)

अतः यदि तुम मुझ से कोई चाल चल सकते हो तो चल लो (39)

उस दिन झुठलाने वालों का विनाश है (40)

निःसन्देह सदाचारी सायों और स्रोतों में होंगे (41)

और उन मेवों में जो उनको पसन्द हो (42)

खाओ पियो आनन्द से अपने किए हुए कर्मों के बदले में (43)

निःसन्देह हम सत्कर्म करने वालों को ऐसा ही बदला दिया करते है (44)

उस दिन झुठलाने वालों का विनाश है (45)

(ऐ झुठलाने वालो) तुम दुनिया में थोड़ा खाओ और

کیا ہم نے پہلے نافرمان لوگوں کو ہلاک نہیں کیا؟ (۱۶)

(تو پھر بعد میں آنے والے کیوں مطمئن بیٹھے ہیں) پھر انہی کے پیچھے ہم بعد والوں کو چلتا کرتے ہیں (۱۷)

ہم (یعنی ہمارا قانون) مجرموں کے ساتھ ایسا ہی کرتے ہیں (۱۸)

اس روز جھٹلانے والوں کے لئے تباہی ہے (۱۹)

(تم اپنی پیدائش پر غور کیوں نہیں کرتے) کیا ہم نے تم کو حقیر پانی سے پیدا نہیں کیا (۲۰) [۲۳:۱۲؛۵۵:۱۴،۱۵]

(پہلے) اس کو ایک محفوظ جگہ میں رکھا (۲۱)

ایک مقررہ وقت تک (۲۲)

پھر ہم نے اندازہ مقرر کیا اور ہم کیا خوب اندازہ مقرر کرنے والے ہیں (یعنی انسانوں کی پیدائش میں) (۲۳)

اس دن جھٹلانے والوں کی خرابی ہے (۲۴)

کیا ہم نے زمین کو سمیٹ کر رکھنے والی نہیں بنایا؟ (۲۵)

یعنی زندوں اور مردوں کو (۲۶)

اور اس پر بلند بھاری پہاڑ بنا دئے اور پہاڑی چشموں سے تم کو میٹھا پانی پلایا (۲۷)

(اب بھی اگر نہیں مانتے تو یاد رکھو) اس روز جھٹلانے والوں کے لئے تباہی ہے (۲۸)

(کہا جائے گا) اس دوزخ کی طرف چلو جسے تم جھٹلاتے تھے (۲۹)

چلو تین شاخوں والے سائے کی طرف جو اوپر دائیں بائیں سے گھیر لے گا (۳۰)

جو در اصل نہ سایہ دینے والا ہے اور نہ شعلے سے بچا سکتا ہے (۳۱)

یقیناً دوزخ چنگاریاں پھینکے گی جو مثل محل کے ہیں (۳۲)

گویا کہ وہ زرد اونٹ ہیں (۳۳)

اس دن جھٹلانے والوں کے لئے خرابی ہے (۳۴)

یہ وہ دن ہوگا کہ وہ بول بھی نہ سکیں گے (۳۵)

نہ ان کو اجازت دی جائے گی کہ عذر کر سکیں (۳۶)

اس دن جھٹلانے والوں کے لئے خرابی ہے (۳۷)

(کہا جائے گا) یہ ہے فیصلے کا دن ہم نے تم کو اور اگلوں سب کو جمع کر لیا ہے (۳۸)

پس اگر تم مجھ سے کوئی چال چل سکتے ہو تو چل لو (۳۹)

اس دن جھٹلانے والوں کی خرابی ہے (۴۰)

بے شک پرہیزگار سایوں اور چشموں میں ہوں گے (۴۱)

اور ان میووں میں جو ان کو پسند ہوں (۴۲)

کھاؤ پیو مزے سے اپنے کئے ہوئے عملوں کے بدلے میں (۴۳)

یقیناً ہم نیکی کرنے والوں کو ایسا ہی بدلہ دیا کرتے ہیں (۴۴)

اس دن جھٹلانے والوں کی خرابی ہے (۴۵)

(اے جھٹلانے والو!) تم دنیا میں تھوڑا کھاؤ اور فائدہ اٹھا لو

लाभ उठालो निःसन्देह तुम पापी हो (46)

उस दिन झुटलाने वालों के लिए विनाश है (अर्थात क्यामत के दिन) (47)

और जब उनसे कहा जाएगा कि रुकूअ नम्रता करो तो रुकूअ अर्थात आज्ञाकारी नहीं करेंगे (48)

विनाश है उस दिन झुटलाने वालों के लिए (49)

अब इस कुरआन के बाद किस बात पर विश्वास लाऐंगे (50)

पारा अम्मा (30)

सूरतुन्नबा - मक्की (78)

लोग आपस में किस बात के लिए प्रश्न कर रहे हैं (1)

क्या बड़ी खबर के विषय में (2)

जिसमें वह मतभेद कर रहे हैं (3)

निःसन्देह वह अभी जान लेंगे (4)

फिर सुनो उन्हें बहुत जल्द ज्ञात हो जाएगा (5)

क्या हमने पृथ्वीको बिछोना नहीं बनाया (6)

और (उस पर) पर्वतों को जमा दिया (7)

और हमने तुम्हें जोड़ा जोड़ा पैदा किया (8)

और हमने तुम्हारी निद्रा को विश्राम का साधन बनाया (9)

और रात्रि को आवरण बनाया (10)

और दिन को जीविका कमाने का समय बनाया(11)

और तुम्हारे ऊपर हमने सात सुदृढ़ आकाश बनाए (12)

और (सूर्य का) उज्जवल दीप बनाया (13)

और बदलियों से हमने बहता हुआ पानी बरसाया (14)

ताकि हम उससे अनाज, सब्जी पैदा करें (15)

और घने घने उपवन भी (16)

निःसन्देह निर्णय के दिन का समय निश्चित है(17)

जिस दिन सूर फूंका जाएगा तो फिर तुम सैना सेना आ उपस्थित होंगे (18)

और आकाश खोल दिया जाएगा तो उसमें द्वार बन जाऐंगे (19)

और पर्वत चलाए जाऐंगे तो रेत होकर रह जाऐंगे (20)

निःसन्देह नर्क घात में है (21)

उद्दण्डों का वही स्थान है (22)

उसमें युग युग पड़े रहेंगे (23)

उसमें किसी प्रकार की ठंडक और पीने योग्य वस्तु चखने को न मिलेगी (24)

(यदि कोई वस्तु मिलेगी) तो गर्म पानी और बहती पीप (25)

यह पूरा पूरा बदला होगा जो दुनिया में करते रहे थे (26)

بے شک تم گنہگار ہو(۴۶)

اس دن جھٹلانے والوں کے لئے تباہی ہے(یعنی قیامت کے دن)(۴۷)

اور جب ان سے کہا جائے گا کہ رکوع عاجزی کروتو وہ رکوع یعنی فرمانبرداری نہیں کریں گے(۴۸)

خرابی ہے اس دن جھٹلانے والوں کے لئے(۴۹)

اب اس قرآن کے بعد کس بات پر ایمان لائیں گے(۵۰)

پارہ عم ۔(۳۰)

سورت النّبا ۔مکی(۷۸)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

لوگ آپس میں کس بات کے لئے پوچھ رہے ہیں(۱)

(کیا)بڑی خبر کے متعلق(۲)

جس میں وہ اختلاف کر رہے ہیں(۳)

یقیناً وہ ابھی جان لیں گے(۴)

پھر سنو انہیں بہت جلد معلوم ہو جائے گا(۵)

کیا ہم نے زمین کو فرش نہیں بنایا(۶)

اور (اس پر) پہاڑوں کو جما دیا(۷)

اور ہم نے تمہیں جوڑا جوڑا پیدا کیا(۸)

اور ہم نے تمہاری نیند کو آرام کا سبب بنایا(۹)

اور رات کو پردہ بنایا(۱۰)

اور دن کو روزی کمانے کا وقت بنایا(۱۱)

اور تمہارے اوپر ہم نے سات مضبوط آسمان بنائے(۱۲)

اور (آفتاب کا) روشن چراغ بنایا(۱۳)

اور بدلیوں سے ہم نے بہتا ہوا پانی برسایا(۱۴)

تا کہ ہم اس سے اناج اور سبزہ پیدا کریں(۱۵)

اور گھنے گھنے باغ بھی(۱۶)

بے شک فیصلے کے دن کا وقت مقرر ہے(۱۷)

جس دن صور پھونکا جائے گا تو پھر تم فوج در فوج آموجود ہو گے(۱۸)

اور آسمان کھول دیا جائے گا تو اس میں دروازے بن جائیں گے(۱۹)

اور پہاڑ چلائے جائیں گے تو ریت ہو کر رہ جائیں گے(۲۰)

بے شک دوزخ گھات میں ہے(۲۱)

سرکشوں کا وہی ٹھکانا ہے(۲۲)

اس میں مدتوں پڑے رہیں گے(۲۳)

اس میں کسی طرح کی ٹھنڈک اور پینے کے لائق چیز چکھنے کو نہ ملے گی(۲۴)

(اگر کوئی چیز ملے گی) تو گرم پانی اور بہتی پیپ(۲۵)

یہ پورا پورا بدلہ ہوگا جو دنیا میں کرتے رہے تھے(۲۶)

उन्हें तो लेखा जोखा की आशा ही नहीं थी (27)
और हमारी आयतों को बड़े दुस्साहस से झुटला दिया करते थे (28)
हमने हर एक वस्तु को लिखकर गणना कर रखी है (29)
(कहा जाएगा) अब (अपने कर्मों का) स्वाद चखो हम दण्ड बढ़ाते ही जाऐंगे (30)
निःसन्देह सदाचारी लोगों के लिए सफलता है (31)
अर्थात उपवन और अंगूर (32)
जो स्वाद स्वभाव व एतबार में एक दूसरे से मिलते जुलते होंगे (33)
और आवेश मारते हुए छलकते हुए पात्र (34)
वहां वह लोग कोई व्यर्थ और झूटी बात न सुनेंगे (35)
तेरे ईश्वर की ओर से (सत्कर्म का) यह फल मिलेगा (36)
(उस ईश्वर की ओर से) जो आकाशों और पृथ्वी का और जो इन दोनों में है सबका स्वामी है बड़ा कृपालु किसी को उससे बात करने का अधिकार न होगा (37) {21:28}
जिस दिन रूह अर्थात ईश्वर का ज्ञान पाने वाले बनी आदम और फरिश्ते पंक्तिबद्ध खड़े होंगे तो कोई बात न कर सकेगा परन्तु जिसे रहमान अनुमति देदे और वह ठीक बात (मुख से निकाले) (38)
वह दिन सत्य है पस जो व्यक्ति चाहे अपने रब के पास (सत्कर्म करके) ठिकाना बनाले (39) {73:19}
हमने तुम्हें निकट आने वाले कष्ट से डरा दिया है (और चोकन्ना कर दिया है) जिस दिन इन्सान अपने हाथों की कमाई को देख लेगा और काफिर कहेगा कि यदि मैं मिट्टी हो जाता (40)

सुरतुन्नाजिआत - मक्की (79)

देखो साक्षी है मृत्यु के समय की अचेतना जब वह छा जाती है अर्थात मृत्यु मूरछा (1) {50:19}
और आत्मा तीव्रता से निकल जाती है (2)
और फिर शरीर मानों सो गया परिश्रम, सचेष्ट कर्म से निवृत्त होने के बाद (3)
और आत्मा को फरिश्ते तीव्रता के साथ लेकर चले जाते हैं (4)
और देखो उन फरिश्तों का काम ही ईश्वर के आदेश से कार्यों की युक्ति करना है (5)
(यह सब देखते हुए भी तुम विश्वास नहीं करते कि वह दिन आएगा) जिस दिन पृथ्वी को भूचाल आएगा (6)
उसके बाद एक और भूचाल आएगा (7)
बहुत से हृदय उस दिन धड़कते होंगे (8)
जिनकी दृष्टि नीची होगी (9)

انہیں تو حساب کی امید ہی نہیں تھی (۲۷)
اور ہماری آیتوں کو بڑی بےباکی سے جھٹلایا کرتے تھے (۲۸)
ہم نے ہر ایک چیز کو لکھ کر شمار کر رکھا ہے (۲۹)
(کہا جائے گا) اب (اپنی حرکتوں کا) مزہ چکھو ہم عذاب بڑھاتے ہی جائیں گے (۳۰)
بےشک نیک لوگوں کے لئے کامیابی ہے (۳۱)
یعنی باغ اور انگور (۳۲)
جو لذت عادت و اطوار میں ایک دوسرے سے ملتے جلتے ہوں گے (۳۳)
اور جوش مارتے چھلکتے ہوئے جام (۳۴)
وہاں وہ لوگ کوئی لغو اور جھوٹی بات نہ سنیں گے (۳۵)
تیرے رب کی طرف سے (نیک کام کا) یہ بدلہ ملےگا (۳۶)
(اس رب کی طرف سے) جو آسمانوں اور زمین کا اور جو ان دونوں میں ہے سب کا مالک ہے بڑا مہربان کسی کو اس سے بات کرنے کا اختیار نہ ہوگا (۳۷) [۲۸:۲۱]
جس دن روح یعنی اللہ کا علم پانے والے بنی آدم اور فرشتے صف باندھ کر کھڑے ہوں گے تو کوئی کلام نہ کر سکے گا مگر جسے رحمٰن اجازت دیدے اور وہ ٹھیک بات زبان سے نکالے (۳۸)
وہ دن حق ہے پس جو شخص چاہے اپنے رب کے پاس (نیک عمل کر کے) ٹھکانا بنالے (۳۹) [۱۹:۷۳]
ہم نے تمہیں عنقریب آنے والے عذاب سے ڈرایا ہے (اور چوکنا کر دیا) جس دن انسان اپنے ہاتھوں کی کمائی کو دیکھے گا اور کافر کہیگا کہ کاش میں مٹی ہو جاتا (۴۰)

سورت النازعات۔ مکی (۷۹)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

دیکھو شاہد ہے موت کے وقت کی غفلت جب وہ چھا جاتی ہے یعنی سکرات (۱) [۱۹:۵۰]
اور روح تیزی سے نکل جاتی ہے (۲)
اور پھر جسم مانو سو گیا پوری پوری جد وجہد سرگرمی عمل سے فارغ ہونے کے بعد (۳)
اور روح کو فرشتے تیزی کے ساتھ لے کر چلے جاتے ہیں (۴)
اور دیکھو ان فرشتوں کا کام ہی اللہ کے حکم سے کاموں کی تدبیر کرنا ہے (۵)
(یہ سب دیکھتے ہوئے بھی تم یقین نہیں کرتے کہ وہ دن آئے گا) جس دن زمین کو زلزلہ آئے گا (۶)
اس کے بعد ایک اور زلزلہ آئے گا (۷)
(بہت سے) دل اس دن دھڑکتے ہوں گے (۸)
جن کی نگاہیں نیچی ہوں گی (۹)

(इन बातों को सुनकर काफिर) कहेंगे क्या हम मरने के बाद पहली की सी स्थिति की ओर फिर लौटाए जाऐंगे (10)
भला जब हम खोखली हड्डियां हो जाऐंगे (तो फिर जीवित किये जाऐंगे) (11)
कहेंगे कि फिर तो वह लौटना हानिकारक होगा(12)
(ज्ञात होना चाहिए) वह तो केवल एक (भयावह) डांट होगी (13)
और वह सब एकदम मैदान में एकत्र हो जाऐंगे (14)
(ऐ मुहम्मद स0) क्या आपको मूसा अ0 का समाचार पहुंचा (15)
जब उसके ईश्वर ने तूवा की ओर पवित्र घाटी में उसे पुकारा था (16)
(और आदेश दिया) कि फिरऔन के पास जाओ वह उद्दण्ड हो रहा है (17)
और (उससे) कहो क्या तू चाहता है कि पवित्र हो जाए (18)
और मैं तुझ को तेरे रब का मार्ग दिखाऊं ताकि उससे तू डरने लगे (19)
अतः उसे बड़ा चिन्ह दिखाया (20)
तो उसने झुठलाया और अवज्ञा की (21)
फिर पलटा और उपाए करने लगा (22)
फिर सबको एकत्र करके भाषण दिया (23)
कहने लगा कि तुम सब का बड़ा रब मैं ही तो हूं (24)
तो ईश्वर ने उसको दुनिया और परलोक के दण्ड में पकड़ लिया (25)
निःसन्देह इस कथा में उस व्यक्ति के लिए शिक्षा है जो डरे (26)
क्या तुम्हारा पैदा करना अधिक कठिन है या आकाश का? ईश्वर ने उसको बनाया (27)
उसकी छत को ऊंचा किया फिर उसे बराबर किया (28)
उसकी रात को अन्धकार किया और दिन को धूप निकाली (29)
और उसके बाद पृथ्वी को फैला दिया (30)
उसी ने उसमें से उसका पानी निकाला और चारा उगाया (31)
और उस पर पर्वतों का भार रख दिया (32)
यह सब कुछ तुम्हारे और तुम्हारे चारपायों के लिए किया (33)
अतः जब वह बड़ी विपत्ति आ जाएगी (34)
उस दिन मानव अपने किए हुए कर्मों को याद करेगा (35)
और देखने वाले के सामने नर्क प्रकट किया जाएगा (36)
तो जिसने अवज्ञा की होगी (37)
और दुनिया के जीवन को मुख्य समझा होगा (38)
उसका स्थान नर्क होगा (39)
और जो अपने ईश्वर के सामने खड़ा होने से डरता रहा होगा और अपने जी को बुरी इच्छाओं से रोकता रहा (40)
उसका स्थान स्वर्ग होगा (41)

(ان باتوں کو سن کر کافر) کہیں گے کیا ہم مرنے کے بعد پہلی کی سی حالت کی طرف پھر لوٹائے جائیں گے (۱۰)
بھلا جب ہم کھوکھلی ہڈیاں ہوجائیں گے (تو پھر زندہ کئے جائیں گے) (۱۱)
کہیں گے کہ پھر تو وہ لوٹنا نقصان دہ ہوگا (۱۲)
(معلوم ہونا چاہیے) وہ تو صرف ایک (خوفناک) ڈانٹ ہوگی (۱۳)
اور وہ سب ایک دم میدان میں جمع ہوجائیں گے (۱۴)
(اے محمدؐ) کیا آپ کو موسیٰ کی خبر پہنچی (۱۵)
جب اس کے رب نے طویٰ کی طرف مقدس وادی میں اسے پکارا تھا (۱۶)
(اور حکم دیا) کہ فرعون کے پاس جاؤ وہ سرکش ہورہا ہے (۱۷)
اور (اس سے) کہو کیا تو چاہتا ہے کہ پاک ہوجائے (۱۸)
اور میں تجھ کو تیرے رب کی راہ دکھاؤں تاکہ اس سے تو ڈرنے لگے (۱۹)
پس اُسے بڑی نشانی دکھائی (۲۰)
تو اس نے جھٹلایا اور نافرمانی کی (۲۱)
پھر پلٹا اور تدبیریں کرنے لگا (۲۲)
پھر سب کو جمع کیا اور پکارا (۲۳)
کہنے لگا کہ تم سب کا بڑا رب میں ہی تو ہوں (۲۴)
تو اللہ نے اس کو دنیا اور آخرت کے عذاب میں پکڑ لیا (۲۵)
بے شک اس قصہ میں اس شخص کے لئے عبرت ہے جو ڈرے (۲۶)
کیا تمہارا پیدا کرنا زیادہ مشکل ہے یا آسمان کا؟ اللہ نے اس کو بنایا (۲۷)
اس کی چھت کو اونچا کیا پھر اسے برابر کیا (۲۸)
اس کی رات کو تاریک کیا اور دن کو دھوپ نکالی (۲۹)
اور اس کے بعد زمین کو پھیلا دیا (۳۰)
اسی نے اس میں سے اس کا پانی نکالا اور چارا اگایا (۳۱)
اور اس پر پہاڑوں کا بوجھ رکھ دیا (۳۲)
یہ سب کچھ تمہارے اور تمہارے چارپایوں کے لئے کیا (۳۳)
پس جب وہ بڑی آفت آجائے گی (۳۴)
اس دن انسان اپنے کئے ہوئے کاموں کو یاد کرے گا (۳۵)
اور دیکھنے والے کے سامنے دوزخ ظاہر کی جائے گی (۳۶)
تو جس نے سرکشی کی ہوگی (۳۷)
اور دنیوی زندگی کو مقدم سمجھا ہوگا (۳۸)
اس کا ٹھکانا دوزخ ہوگا (۳۹)
اور جو اپنے رب کے سامنے کھڑے ہونے سے ڈرتا رہا ہوگا اور اپنے جی کو بری خواہشوں سے روکتا رہا (۴۰)
اس کا ٹھکانا جنت ہوگا (۴۱)

लोग आपसे क्यामत के घटित होने का समय ज्ञात करेंगे (42)
आपको उसके वर्णन करने से क्या सम्बन्ध (43) {7:187;33:63}
उसके ज्ञान का अन्त तो ईश्वर की ओर है (44)
आप तो केवल उस व्यक्ति को सावधान करने वाले हो जो उससे डरता हो (45)
जब वह उसको देखेंगे (तो ऐसा विचार करेंगे) कि मानो (दुनिया में केवल) एक शाम या प्रातः रहे थे (46)

सूरत अ ब स - मक्की (80)

वह अप्रसन्न हुआ और पीठ फेरी (1) {74:22; 6:52,55;11:29,33;26:111,114;41:34,36; 18:28}
इस बात पर कि एक नेत्रहीन उसके (अर्थात मुहम्मद स0 के) पास आया (2)
आपको ईश्वर से बढ़कर और कौन बता सकता है? कदाचित वह नेत्रहीन (जिसको वह झड़क रहा है सुधर जाए) (3)
या शिक्षा पर ध्यान दे और उपदेश करना उसके लिए लाभकारी हो जाए (4)
और जो चिन्ता नही करता (5)
क्या आप उसकी ओर ध्यान देंगे? (6)
यद्यपि आप पर कुछ पाप नही कि वह न संवरे (7)
(आप पूरा ध्यान उसकी ओर दें) जो स्वयं तुम्हारे पास दौड़ता आता है (8)
और डर रहा होता है (ईश्वर के भय से) (9)
क्या आप उससे मुख मोड़ेंगे? कदापि नही आप उससे मुख नही मोड़ेंगे (10)
तो सुनो यह तो एक शिक्षा है (11)
जिसका हृदय चाहे इसे स्वीकार करे (12)

لوگ آپ سے قیامت کے واقع ہونے کا وقت دریافت
کریں گے (۴۲)
آپ کو اس کے بیان سے کیا تعلق (۴۳) [۷:۱۸۷؛ ۳۳:۶۳]
اس کے علم کی انتہا تو اللہ کی جانب ہے (۴۴)
تم تو صرف اس شخص کو خبردار کرنے والے ہو جو اس سے ڈرتا ہو (۴۵)
جب وہ اس کو دیکھیں گے (تو ایسا خیال کریں گے) کہ گویا
(دنیا میں صرف) ایک شام یا صبح رہے تھے (۴۶)

سورت عَبَس ۔ مکی (۸۰)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

وہ ترش رو ہوا اور بے رخی برتی (۱) [۷۴:۲۲؛ ۶:۵۲،۵۵؛
۱۱:۲۹،۳۳؛ ۲۶:۱۱۱،۱۱۴؛ ۴۱:۳۴،۳۶؛ ۱۸:۲۸]
اس بات پر کہ ایک نابینا اس کے (یعنی محمدؐ کے) پاس آیا (۲)
آپ کو اللہ سے بڑھ کر اور کون بتا سکتا ہے؟ شاید وہ نابینا
(جس کو وہ جھڑک رہا ہے) سدھر جائے (۳)
یا نصیحت پر دھیان دے اور نصیحت کرنا اس کے لئے مفید ہو
جائے (۴)
اور جو پرواہ نہیں کرتا (۵)
کیا آپ اس کی طرف توجہ کریں گے؟ (۶)
حالانکہ آپ پر کچھ گناہ نہیں کہ وہ نہ سنورے (۷)
(آپ پوری توجہ اس کی طرف دیں) جو خود تمہارے پاس
دوڑتا آتا ہے (۸)
اور ڈر رہا ہوتا ہے (اللہ کے خوف سے) (۹)
کیا آپ اس سے بے رخی برتیں گے؟ ہرگز نہیں آپ اس
سے بے رخی نہیں کریں گے (۱۰)
تو سنو یہ تو ایک نصیحت ہے (۱۱)
جس کا دل چاہے اسے قبول کرے (۱۲)

नोट- इस सूरत के विषय में एक प्रेषण महिमा लिखी मिलती है जो बहुत उचित बताई जाती है और लगभग सब ही उसको स्वीकार करते है वह यह कि मुहम्मद स0 के पास कुरैश के नेतागण बैठे थे आप उनसे बात कर रहे थे एक नेत्रहीन आपके पास आया, आपको उसका आना अरुचिकर लगा और मुहम्मद स0 ने तेवरी चढ़ाई और पीठ फेर ली इस व्यवहार पर ईश्वर ने ताड़ना के लिए यह आयतें प्रेषित करके बताया कि आपने यह कार्य अनुचित किया है (नऊज़ु) परन्तु आयात से पुष्टि कुछ और हो रही है वह यह कि आयात में शब्द अ ब स पर विचार किया जाये, इस शब्द के सम्बोधित सीधे मुहम्मद स0 नही है यदि मुहम्मद स0 से तात्पर्य होता तो ज़मीर (का या ता) आती और अ ब स के स्थान पर अबस्ता आता परन्तु यह नही है तो प्रकट यह हुआ कि इससे तात्पर्य कोई और है जिसकी सूचना ईश्वर ने आयात के द्वारा मुहम्मद स0 को दी है जिसको अरबी जानने वाले अच्छी प्रकार जानते है परन्तु जानने के बाद भी अ ब स का कार्य मुहम्मद स0 की ओर सम्बन्धित कर दिया, जो नही होना चाहिए था, अ ब स से तात्पर्य उन व्यक्तियों में से कोई है जो मुहम्मद स0 के पास थे,

प्रश्न तेवरी चढ़ाने और मुख फेरने का है तो मुहम्मद स0 से

نوٹ:۔ اس سورت کے بارے میں ایک شان نزول لکھی ملتی ہے جو بہت صحیح
بتائی جاتی ہے اور تقریباً سب ہی اس کو تسلیم کرتے ہیں وہ یہ کہ محمدؐ کے پاس
امرائے قریش بیٹھے تھے آپ ان سے بات کر رہے تھے ایک نابینا آپ کے
پاس آیا آپ کو اس کا آنا ناگوار لگا اور محمدؐ نے تیوری چڑھائی اور بے رخی برتی۔
اس عمل پر اللہ نے بطور تنبیہ یہ آیتیں نازل فرما کر بتایا کہ آپ نے یہ کام غلط کیا
ہے (نعوذ)۔ لیکن آیات سے تصدیق کچھ اور ہو رہا ہے وہ یہ کہ آیت میں لفظ
عَبَس پر غور کیا جائے۔ اس لفظ کے مخاطب سیدھے محمدؐ نہیں ہیں اگر محمدؐ سے مراد
ہوتی تو ضمیر (ک یا ت) آتی اور عَبَس کی جگہ عَبَسْتَ آتا لیکن یہ نہیں ہے تو
ظاہر یہ ہوا کہ اس سے مراد کوئی اور ہے جس کی خبر اللہ نے آیت کے ذریعہ محمدؐ
کو دی ہے جس کو عربی داں اچھی طرح جانتے ہیں مگر جاننے کے باوجود بھی
عَبَس کا فعل محمدؐ کی طرف منسوب کر دیا۔ جو نہیں ہونا چاہیے تھا عَبَس سے مراد ان
آدمیوں میں سے کوئی ہے جو محمدؐ کے پاس تھے۔

سوال تیوری چڑھانے اور منہ پھیرنے کا ہے تو محمدؐ سے اس کام کی

इस कार्य की आशा नहीं की जा सकती कि वह एक आस्तिक से या किसी भी व्यक्ति से मुख फेरे और भृकुटि चढ़ाऐं आप तो सत्य के विरोधी से भी बड़े प्रेम से मिलते थे, फिर एक सत्य के इच्छुक से कैसे मुख फेर सकते थे, चूंकि आपकी नैतिकता सबसे उच्च है (68:4) और निःसन्देह आप नैतिकता के बड़े पद पर हैं अर्थात आपका स्वभाव सबसे श्रेष्ठ है,

और ईश्वर का क्या आदेश है वह भी अवलोकन हो,

(3:159) (ऐ मुहम्मद स0) यह ईश्वर ही की बड़ी अनुकम्पा है कि आप उन लोगों को कोमल हृदय मिल गए हो, अन्यथा यदि कहीं आप प्रखर स्वभावी और क्रूर होते तो वह सब आपके पास से पृथक हो जाते सो आप क्षमा करो और उनके लिए क्षमा मांगो और उनसे परामर्श करो कार्य में,

(6:52) और मत दूर कर उन लोगों को जो पुकारते हैं अपने रब को प्रातः और सायं और चाहते हैं उसकी प्रसन्नता, आप पर नहीं है उनके लेखा में से कुछ और न आपके लेखा में से उन पर है कुछ तो उनको दूर करने लगो तो हो जाओगे अत्याचारियों में,

(11:30) और ऐ जाति कौन छुड़ाए मुझको ईश्वर से यदि इनको भगादूं अपने पास से क्या तुम ध्यान नहीं करते?

इन आयात को पढ़ने के बाद कौन कह सकता है कि मुहम्मद स0 किसी पर अप्रसन्न होते? फिर नेत्रहीन पर अप्रसन्न होने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता और शब्द अ ब स भी इस आरोप का खण्डन कर रहा है? यह कर्म अ ब स का है जो मुहम्मद स0 के पास बैठा हुआ बातें कर रहा था उसको आस्तिक का आना अप्रिय लगा और उसने उसको डांटा और तैवरी चढ़ाई,

कुरैशी के नेतागणों का उद्देश्य यह रहता था कि मुहम्मद स0 का समय नष्ट करें और अपने विवादों में ही उलझाए रखें, और यह भी चाहते थे कि हमारे मुकाबिले में किसी निर्धन दरिद्र आस्तिक से बात न करे और यही व्यवहार भूतपूर्व विरोधियों ने भी अपने ईशदूतों से किया था तो ईश्वर ने कहा कि ऐ मुहम्मद स0 आपसे यह आशा नहीं है कि आप किसी सत्य के खोजी को छोड़ेंगे या झड़क देंगे,

एक कुरैशी ने जो व्यवहार नेत्रहीन के साथ किया था वह ईश्वर ने मुहम्मद स0 को बताकर कहा ऐ मुहम्मद स0 यह नास्तिक अपने अन्दर इतनी क्षमता नहीं रखते कि सत्य बात उनके हृदयों में जल्दी उतर सके वह तो केवल आपको व्याकुल करने और आपका मुल्यवान समय नष्ट करने के लिए आते हैं आप उन धनी लोगों की बिल्कुल चिन्ता न करें, वह स्वयं विवश होकर धर्म स्वीकार करेंगे या नर्क में जाऐंगे, आप पूरी शक्ति से उनकी ओर ध्यान दें जो सत्य धर्म को स्वीकार करने को बेचैन हैं और उनके हृदय ईश्वर के भय से कांप रहे हैं,

अब बात स्पष्ट हो गई कि तैवरी चढ़ाने वाला कोई कुरैशी था जो विश्वास नहीं लाया था मुहम्मद स0 ने तैवरी भृकुटी नहीं चढ़ाई आयात यही बता रही है और मुहम्मद स0 के चरित्र से भी यही आशा है और ईश्वर का आदेश भी यही है अ ब स का क्या अर्थ है देखो,

(74:22) सुम्मा अ ब स व बसारा-फिर तैवरी चढ़ाई और मुख बनाया, क्या यहां भी तात्पर्य मुहम्मद स0 है? कदापि नहीं है अतः सूरत अ ब स में तैवरी चढ़ाने वाले मुहम्मद स0 नहीं है अपितु कोई कुरैशी है जो उस समय आपके पास बैठा हुआ था, विचार करो,

फिर विचार करें सम्पूर्ण कुरआन में देख लिया जाए जहां भी मुहम्मद स0 से सम्बोधन है वह उपस्थित के सीगा या उपस्थित की जमीर से है परन्तु अ ब स एक वचन भूतकाल है जो बैठा था और

امید نہیں کی جا سکتی کہ وہ ایک مومن سے یا کسی بھی آدمی سے منہ پھیریں اور تیوری چڑھائیں آپ تو منکر حق سے بھی بڑے خلوص سے ملتے تھے. پھر ایک حق کے متلاشی سے کیسے منہ پھیر سکتے تھے چونکہ آپ کا اخلاق سب سے اعلا ہے (۶۸:۴) اور بے شک آپ اخلاق کے بڑے درجے پر ہیں یعنی آپ کا اخلاق سب سے بلند ہے.

اور اللہ کا کیا حکم ہے وہ ملاحظہ ہو (۳:۱۵۹) (اے محمدؐ) یہ اللہ ہی کی بڑی رحمت ہے کہ آپ ان لوگوں کو نرم دل مل گئے ہو ورنہ اگر کہیں آپ تند خو اور سنگ دل ہوتے تو وہ سب تمہارے پاس سے متفرق ہو جاتے. سو آپ معاف کرو اور ان کے واسطے بخشش مانگو اور ان سے مشورہ کرو کام میں.

(۶:۵۲) اور مت دور کر ان لوگوں کو جو پکارتے ہیں اپنے رب کو صبح اور شام. اور چاہتے ہیں اس کی رضا. آپ پر نہیں ہے ان کے حساب میں سے کچھ اور نہ آپ کے حساب میں سے ان پر ہے کچھ تو ان کو دور کرنے لگو تو ہو جاؤ گے بے انصافوں میں.

(۱۱:۳۰) اور اے قوم کون چھڑائے مجھ کو اللہ سے اگر ان کو بھگا دوں اپنے پاس سے کیا تم دھیان نہیں کرتے؟

ان آیات کو پڑھنے کے بعد کون کہہ سکتا ہے کہ محمدؐ کسی پر ترش ہوتے؟ پھر نابینا پر ترش رو ہونے کا سوال ہی پیدا نہیں ہوتا اور لفظ عَبَس بھی اس الزام کی تردید کر رہا ہے. اب سوال پیدا ہوتا ہے یہ فعل کس کا ہے؟ یہ فعل عَبَس کا ہے جو محمدؐ کے پاس بیٹھا ہوا باتیں کر رہا تھا. اس کو ایک مومن کا آنا ناگوار لگا اور اس نے اس کو ڈانٹا اور تیوری چڑھائی.

امرائے قریش کا مطلب یہ رہتا تھا کہ محمدؐ کا وقت برباد کریں اور اپنے جھگڑوں میں ہی الجھائے رکھیں. اور یہ بھی چاہتے تھے کہ ہمارے مقابلے میں کسی غریب خستہ حال مسلمان سے بات نہ کریں اور یہی سابق منکروں نے بھی اپنے نبیوں سے کہا تھا تو اللہ نے کہا کہ اے محمدؐ آپ سے یہ امید نہیں ہے کہ آپ کسی حق کے متلاشی کو چھوڑ دیں گے یا جھڑک دیں گے.

ایک قریش نے جو فعل نابینا کے ساتھ کیا تھا وہ اللہ نے محمدؐ کو بتا کر کہا اے محمدؐ یہ کفار اپنے اندر اتنی صلاحیت نہیں رکھتے کہ حق بات ان کے دلوں میں جلدی اتر سکے وہ تو صرف آپ کو پریشان کرنے اور آپ کا قیمتی وقت خراب کرنے کے لئے آتے ہیں آپ اُن امیروں کی بالکل پروا نہ کریں، وہ خود مجبور ہو کر دین قبول کریں گے یا جہنم رسید ہوں گے آپ پوری طاقت سے ان کی طرف توجہ دیں جو دین حق کو قبول کرنے کو بے چین و بیقرار ہیں اور ان کے دل خوف الٰہی سے لرز رہے ہیں.

اب بات صاف ہو گئی کہ تیوری چڑھانے والا کوئی قریشی تھا جو ایمان نہیں لایا تھا محمدؐ نے تیوری نہیں چڑھائی. آیت یہی بتا رہی ہے اور محمدؐ کے اخلاق سے بھی یہی امید ہے اور اللہ کا حکم بھی یہی ہے عَبَس کا کیا مطلب ہے دیکھو.

(۷۴:۲۲) [ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ] پھر پیشانی چڑھائی اور منہ بنایا۔ کیا یہاں بھی مراد محمدؐ ہیں؟ ہرگز نہیں ہیں. اس لئے سورت عَبَس میں تیوری چڑھانے والے محمدؐ نہیں ہیں بلکہ کوئی قریشی ہے جو اس وقت آپ کے پاس بیٹھا ہوا تھا غور کرو.

پھر غور کریں پورے قرآن میں دیکھ لیا جائے جہاں بھی محمدؐ سے خطاب ہے وہ حاضر کے صیغہ یا حاضر کی ضمیر سے ہے لیکن عَبَس واحد ماضی ہے جو

यह कार्य किया था या कार्य करके चला गया था.
यह कुरआन ऐसी पुस्तकों में लिखा है जो सम्मान के योग्य है (13)
जो उच्च और श्रेष्ठ और पवित्र व शुद्ध स्थान में है (14)
ऐसे लिखने वालों के हाथों में है (15)
जो महान और सदाचारी है (16)
ईश्वर की मार मानव पर कैसा अवज्ञाकार है (17)
(कम से कम वह यह तो सोचे) कि ईश्वर ने उसे किस वस्तु से पैदा किया (18)
वीर्य से ईश्वर ने उसे पैदा किया फिर उस(की सब प्रकट और छुपी क्षमताओं) का अनुमान निश्चित कर दिया (19)
फिर उस पर (जीवन का) कर्तव्य का मार्ग सरल कर दिया (20) {20:50;82:3;76:3}
फिर उसे मृत्यु दी और समाधी में रखवा दिया(21)
फिर जब चाहेगा उसे (क्यामत के दिन पुनः) उठा खड़ा करेगा (22)
तो सुनो इन्सान ने अब तक पूरा न किया जो उसे आदेश हुआ था उसके रब का (अर्थात नास्तिक ने आस्था लाकर अभी तक ईश्वर के आदेश को पूरा न किया) (23)
(कम से कम) इन्सान अपने भोजन पर ही दृष्टि करे विचार करे (24)
(जो दिन में कई बार खाता है) उसके लिए (पहले) हम (पृथ्वी पर) पानी बरसाते है (25)
फिर फाड़ते है पृथ्वी को अच्छी प्रकार (26)
फिर उसमें से अन्न उगाते है (27)
और अंगूर और तरकारी (28)
और जैतून और खजूर (29)
और घने घने उपवन (30)
और मैवे और चारा भी उगाते है (31)
(यह सब कुछ) तुम्हारे और तुम्हारे चारपायो के लिए बनाया (32)
तो जब (क्यामत का) कोलाहल होगा (33)
उस दिन व्यक्ति अपने भाई से दूर भागेगा (34)
और अपनी माता और अपने पिता से (35)
और अपनी पत्नी साथी और अपनी सन्तान से भागेगा (36)
और उस दिन उनमें हर व्यक्ति की दशा यह होगी कि अपने सिवा किसी की चेतना न होगी (37)
और कितने मुख उस दिन चमक रहे होंगे (38)
जो हंसते हुए प्रसन्न चित होंगे (39)
और कितने मुखों पर धूल उड़ रही होगी (40)
और जिन पर सियाही चढ़ी होगी (41)
वह नास्तिक और दुराचारी होंगे (42)

بیٹھا ہوا تھا اور یہ کام کیا تھا یا یہ کام کر کے چلا گیا تھا۔
(یہ قرآن) ایسے صحیفوں میں لکھا ہے جو قابل تعظیم ہیں (۱۳)
جو بلند و بالا اور پاک صاف مقام میں ہیں (۱۴)
ایسے لکھنے والوں کے ہاتھوں میں ہیں (۱۵)
جو بزرگ اور نیک ہیں (۱۶)
اللہ کی مار انسان پر کیسا نافرمان ہے (۱۷)
(کم سے کم وہ یہ تو سوچے) کہ اللہ نے اسے کس چیز سے پیدا کیا (۱۸)
نطفے سے اللہ نے اسے پیدا کیا پھر اس (کی تمام ظاہری اور باطنی قوتوں) کا اندازہ مقرر کر دیا (۱۹)
پھر اس پر (زندگی کی) راہ عمل آسان کر دی (۲۰) [۲۰:۵۰؛ ۸۲:۳؛ ۷۶:۳]
پھر اسے موت دی اور پھر قبر میں رکھوا دیا (۲۱)
پھر جب چاہے گا اسے (قیامت کے روز دوبارہ) اٹھا کھڑا کرے گا (۲۲)
تو سنو انسان نے اب تک پورا نہ کیا جو اسے حکم ہوا تھا اس کے رب کا (یعنی کافر ایمان لا کر ابھی تک حکم الٰہی بجا نہ لایا) (۲۳)
(کم سے کم) انسان اپنی غذا پر ہی نظر کرے غور کرے (۲۴)
(جو دن میں کئی مرتبہ کھاتا ہے) اس کے لئے (پہلے) ہم (زمین پر) پانی برساتے ہیں (۲۵)
پھر پھاڑتے ہیں زمین کو اچھی طرح (۲۶)
پھر اس میں سے اناج اگاتے ہیں (۲۷)
اور انگور اور ترکاری (۲۸)
اور زیتون اور کھجور (۲۹)
اور گھنے گھنے باغ (۳۰)
اور میوے اور چارہ بھی اگاتے ہیں (۳۱)
(یہ سب کچھ) تمہارے اور تمہارے چارپایوں کے لئے بنایا (۳۲)
تو جب (قیامت کا) شور ہوگا (۳۳)
اس دن آدمی اپنے بھائی سے دور بھاگے گا (۳۴)
اور اپنی ماں اور اپنے باپ سے (۳۵)
اور اپنی بیوی ساتھی اور اپنی اولاد سے بھاگے گا (۳۶)
اور اُس روز ان میں سے ہر شخص کی یہ حالت ہوگی کہ اپنے سوا کسی کا ہوش نہ ہوگا (۳۷)
اور کتنے چہرے اس دن چمک رہے ہوں گے (۳۸)
جو ہنستے ہوئے ہشاش بشاش ہونگے (۳۹)
اور کتنے چہروں پر خاک اڑ رہی ہوگی (۴۰)
اور جن پر سیاہی چڑھی ہوگی (۴۱)
وہ کفار اور فاجر ہوں گے (۴۲)

सूरत तकवीर - मक्की (81)

जब सूर्य लपेट लिया जाएगा (1)
और जब तारे प्रकाश रहित हो जाऐंगे (2)
और जब पर्वत चलाए जाऐंगे (3)
और दस माह की गर्भवती ऊंटनियां बेकार समझकर अपने हाल पर छोड़ दी जाएगी (4)
और जब घबराए मानव एकत्र किये जाऐंगे (5) {6:38}
और जब एक एक प्रकार के जी ऐकत्र किये जाऐंगे (7)
और जब उस लड़की से पूछा जाएगा जो जीवित गाड़ दी गई थी (8) {16:57,59; 43:17}
कि वह किस पाप पर मार दी गई थी? (9)
और जब कर्म पत्र खोले जाऐंगे (10)
और जब आकाश का आवरण हटा लिया जाएगा (11)
और जब नर्क (की आग) भड़काई जाएगी (12)
और जब स्वर्ग निकट लाया जाएगा (13)
उस रोज हर व्यक्ति को ज्ञान हो जाएगा कि वह क्या लेकर आया है (14)
क्या वह तारे साक्षी नही है जो छुप जाते है (15)
जो चलते फिरते और छुप जाते है (16)
और साक्षी है रात्री जब वह विदा होने लगे (17)
और प्रातः जब वह प्रकट हो (18)
कि यह कुरआन एक उच्च पद वाले फरिश्ते के द्वारा लाया हुआ (ईश्वर का) कथन है (19)
जो बड़ी शक्ति वाले और सिंहासन वाले के निकट बड़े मान वाला है (20) {53:5से10}
माना हुआ नेता और विश्वासनीय है (21)
और तुम्हारा साथी (मुहम्मद स0) उन्मत्त नही है (22)
निःसन्देह उन्होंने उस फरिश्ते को उज्जवल किनारे पर देखा है (जब ही तो वह विश्वास के साथ उसके गुण बता रहे है) (23)
और वह नबी गुप्त बातों के (जो उनको बताई जाती है बताने) में कृपण नही है (24)
और वह शैतान पतित का कथन नही है (25)
फिर तुम (कुरआन को) छोड़कर किधर बहके जा रहे हो (26)
वह जिक्र संसार के लोगों के लिए मार्ग दर्शक है (27)
तुम में से हर उस व्यक्ति के लिए जिसे (जीवन के) सीधे मार्ग की खोज हो (28)
(और याद रखो) जो तुम चाहोगे (अच्छा मार्ग चलना या बुरा मार्ग चलना) निःसन्देह वही चाहेगा ईश्वर जो सारे विश्व का स्वामी है (29) {76:1,3,30}

سورت تکویر۔مکی (۸۱)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

جب سورج لپیٹ لیا جائے گا(۱)
اور جب ستارے بےنور ہو جائیں گے(۲)
اور جب پہاڑ چلائے جائیں گے(۳)
اور جب دس ماہ کی حاملہ اونٹنیاں بےکار سمجھ کر اپنے حال پر چھوڑ دی جائیں گی (۴)
اور جب گھبرائے انسان اکٹھے کیے جائیں گے(۵)[۳۸:۶]
اور جب سمندر بھڑکا دیے جائیں گے(۶)
اور جب ایک ایک قسم کے نفس جمع کیے جائیں گے(۷)
اور جب اس لڑکی سے پوچھا جائے گا جو زندہ دفنا دی گئی تھی(۸)
کہ وہ کس گناہ پر ماری گئی تھی؟(۹)
اور جب اعمال نامے کھولے جائیں گے(۱۰)
اور جب آسمان کا پردہ ہٹا لیا جائے گا(۱۱)
اور جب دوزخ (کی آگ) بھڑکائی جائے گی(۱۲)
اور جب جنت قریب لائی جائے گی(۱۳)
اس روز ہر شخص کو معلوم ہو جائے گا کہ وہ کیا لے کر آیا ہے(۱۴)
کیا وہ ستارے شاہد نہیں جو چھپ جاتے ہیں(۱۵)
جو چلتے پھرتے اور چھپ جاتے ہیں(۱۶)
اور شاہد ہے رات جب وہ رخصت ہونے لگے(۱۷)
اور صبح جب وہ نمودار ہو(۱۸)
کہ یہ قرآن ایک عالی مقام فرشتے کے ذریعہ لایا ہوا (اللہ کا) قول ہے(۱۹)
جو بڑی قوت والا عرش والے کے نزدیک بڑے مرتبہ والا ہے(۲۰)[۵۳:۵تا۱۰]
مانا ہوا سردار اور امانت دار ہے(۲۱)
اور تمہارا ساتھی (محمدؐ) دیوانہ نہیں ہے(۲۲)
بےشک انہوں نے اس فرشتے کو روشن افق پر دیکھا ہے (جب ہی تو وہ یقین کے ساتھ اس کی صفات بتا رہے ہیں)(۲۳)
اور نبی پوشیدہ باتوں کے (جو ان کو بتائی جاتی ہیں بتانے) میں بخیل نہیں ہے(۲۴)
اور وہ شیطان مردود کا کلام نہیں ہے(۲۵)
پھر تم (قرآن کو) چھوڑ کر کدھر بہکے جا رہے ہو(۲۶)
وہ ذکر جہان کے لوگوں کے لئے رہنما ہے(۲۷)
تم میں سے ہر اس شخص کے لئے جسے (زندگی کے) سیدھے رستے کی تلاش ہو(۲۸)
(اور یاد رکھو) جو تم چاہو گے (اچھی راہ چلنا یا بری راہ چلنا) یقیناً وہی چاہے گا اللہ جو سارے جہان کا رب ہے(۲۹)
[۷۶:۱،۳،۳۰]

(चूंकि उसने मानव को कर्म की स्वतंत्रता दी है और अपना विधान भी इसलिए इन्सान जैसे कर्म चाहे कर ले ईश्वर जबरदस्ती किसी के साथ नहीं करता)

(چونکہ اس نے انسان کو عمل کی آزادی دی ہے اور اپنا قانون بھی۔ اس لئے انسان جیسے عمل چاہے کر لے اللہ زبردستی کسی کے ساتھ نہیں کرتا)

सूरतुल इनफितार – मक्की (82)

سورت الانفطار۔مکی (۸۲)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

आकाश फट जाएगा (1)
जब तारे झड़ जाएँगे (2)
और जब समुद्र बह निकलेंगे (3)
और जब समाधियों से (मृतक) उठ पड़ेंगे (4)
(उस दिन) इन्सान को उसका अगला पिछला सब किया धरा ज्ञात हो जाएगा अच्छा व्यक्ति हंसेगा बुरा व्यक्ति रोएगा (5)

جب آسمان پھٹ جائے گا (۱)
جب ستارے جھڑ جائیں گے (۲)
اور جب سمندر بہہ نکلیں گے (۳)
اور جب قبروں سے (مردے) اٹھ پڑیں گے (۴)
(اس روز) انسان کو اس کا اگلا پچھلا کیا آگے بھیجا کیا پیچھے چھوڑا سب کیا دھرا معلوم ہو جائے گا (اچھا آدمی ہنسے گا برا آدمی روئے گا) (۵)

ऐ इन्सान तुझे अपने कृपालु ईश्वर से किस वस्तु ने धोका दिया (6)

اے انسان تجھے اپنے رب کریم سے کس چیز نے دھوکا دیا (۶)

वह ईश्वर जिसने तुझे पैदा किया फिर तुझे ठीक किया फिर संतुलन व अनुपात स्थापित कर दिया (7)
और जिस आकृति में चाहा तुझे जोड़ दिया (8)
परन्तु सुनो अपितु तुम तो दण्ड व फल के दिन को झुटलाते हो (9)
निःसन्देह तुम पर निरीक्षक नियुक्त हैं (10)
सम्मानित लिखने वाले (11)
वह तुम्हारे सब कर्मों को जानते हैं (12)
ईश्वर के आज्ञाकारी बन्दे सुख सामग्री के स्वर्ग में होंगे (13)

وہ پروردگار جس نے تجھے پیدا کیا پھر تجھے درست کیا پھر اعتدال و تناسب قائم کر دیا (۷)
اور جس صورت میں چاہا تجھے جوڑ دیا (۸)
مگر سنو بلکہ تم تو سزا و جزا کے دن کو جھٹلاتے ہو (۹)
بے شک تم پر نگہبان مقرر ہیں (۱۰)
عالی قدر لکھنے والے (۱۱)
وہ تمہارے سب اعمال کو جانتے ہیں (۱۲)
اللہ کے اطاعت گزار بندے نعمتوں کی جنت میں ہوں گے (۱۳)

और निःसन्देह दुराचारी लोग नर्क में डाले जाएँगे (14)
बदले के दिन उसमें डाले जाएँगे (15)
और वह उससे कभी लुप्त न होने पाएँगे (16)
और आपको ईश्वर से बढ़कर और कौन बता सकता है कि बदले का दिन क्या है (17)
फिर आपको ईश्वर से बढ़कर और कौन बता सकता है कि बदले का दिन क्या है (18)
(वह दिन है वह) जिस दिन कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के लिए किसी वस्तु का अधिकारी न होगा और सब आदेश उस दिन ईश्वर के ही होंगे (19)

اور یقیناً بدکردار لوگ نرک میں ڈالے جائیں گے (۱۴)
بدلے کے دن اس میں ڈالے جائیں گے (۱۵)
اور وہ اس سے کبھی غائب نہ ہونے پائیں گے (۱۶)
اور آپ کو اللہ سے بڑھ کر اور کون بتا سکتا ہے کہ بدلے کا دن کیا ہے (۱۷)
پھر آپ کو اللہ سے بڑھ کر اور کون بتا سکتا ہے کہ بدلے کا دن کیا ہے (۱۸)
(وہ دن ہے وہ) جس دن کوئی شخص کسی شخص کے لئے کسی چیز کا مختار نہ ہوگا اور تمام تر احکام اس روز اللہ کے ہی ہوں گے (۱۹)

सूरतुल मुतफ्फेफीन – मक्की (83)

سورت المطففین۔مکی (۸۳)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

बड़ा विकार है नाप तोल में कमी करने वालों की (1)
जिन (की अधर्मी की) दशा यह है कि लोगों से नाप कर लेते हैं तो पूरा लेते हैं (2)
परन्तु जब नाप तोलकर देने का समय आता है तो कम नापते और तोलते हैं (3)
क्या उन्हें अपने मरने के बाद जी उठने का विश्वास नहीं है (कि दण्ड के लिए क्यामत के दिन उठाए जाएँगे) (4)

بڑی خرابی ہے ناپ تول میں کمی کرنے والوں کی (۱)
جن (کی بے ایمانی) کا حال یہ ہے کہ لوگوں سے ناپ کر لیتے ہیں تو پورا لیتے ہیں (۲)
لیکن جب ناپ تول کر دینے کا وقت آتا ہے تو کم ناپتے اور کم تولتے ہیں (۳)
کیا انہیں اپنے مرنے کے بعد جی اٹھنے کا یقین نہیں ہے (کہ سزا کے لئے قیامت کے دن اٹھائے جائیں گے) (۴)

अर्थात एक बड़े दिन में (5)
उस दिन जब सब इन्सान (अपने कर्मों का उत्तर देने के लिए) ईश्वर के सामने खड़े होंगे (6)
सुनो कि दुराचारियों का कर्म पत्र सिज्जीन में है(7)
और आपको ईश्वर से बढ़कर कौन बता सकता है कि सिज्जीन क्या है (8)
यह तो एक पुस्तक है लिखी हुई (9)
उस दिन झुटलाने वालों की बड़ी ख़राबी है (10)
(अर्थात) जो न्याय के दिन को झुटलाते हैं (11)
और उसे केवल वही झुटलाता है जो सीमा से निकल जाने वाला पापी है (12)
उसे जब हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो कहता है यह अगले लोगों की कहानियां हैं (13)
यूं नहीं है अपितु सत्य यह है कि उनके हृदयों पर उनके दुष्कर्मों का मुर्चा चढ़ गया है मानो ताला लग गया है (14)
(अर्थात उनके दुष्कर्मों ने उनके स्वीकार करने की क्षमता नष्ट कर दी इसलिए) निःसन्देह वह लोग उस दिन अपने रब के दर्शन से ओट में होंगे (15) (अर्थात ईश्वर की प्रसन्नता कृपा उनको प्राप्त न होगी)
फिर वह नर्क में झोंक दिए जाएंगे (16)
फिर उनसे कहा जाएगा कि यह वही वस्तु है जिसे तुम झूट समझते थे (17)
यह भी सुन लो निःसन्देह सदाचारी लोगों का कर्म पत्र इल्लीन में है (18)
और आपको ईश्वर से बढ़कर कौन बता सकता है कि इल्लीन क्या है? (19)
एक पुस्तक है लिखी हुई (20)
सम्मानित फ़रिश्ते उसके साक्षी हैं (21)
निःसन्देह सदाचारी लोग चैन में होंगे (22)
सिंहासनों पर बैठे देख रहे होंगे (23)
तुम उनके मुख मण्डलों ही से सुख की प्रफुल्लता प्रतीत कर लोगे (24)
उनको उत्तम सर बन्द (मोहर लगी) किया हुआ सुगन्धित मधुर पेय पिलाया जाएगा (25)
जिस पर कस्तूरी की मोहर लगी होगी जो लोग अग्रसरता ले जाना चाहें वह उसमें अग्रसरता करें (26)
और उसमें तसनीम की मिलावट होगी (27)
वह एक स्रोत है जिससे सम्मानित लोग पियेंगे(28)
जो पापी लोग धर्म वादियों की हंसी उड़ाया करते हैं (29)
और जब उनके पास से गमन करें तो घृणा से संकेत करें (30)
और जब अपने घर वालों की ओर लौटें तो उपहास करते हुए लौटें (31)

یعنی ایک بڑے دن میں (۵)
اس روز جب تمام انسان (اپنے اعمال کی جواب دہی کے لئے) اللہ کے سامنے کھڑے ہوں گے (۶)
سنو کہ بدکرداروں کا اعمال نامہ سجّین میں ہے (۷)
اور آپ کو اللہ سے بڑھ کر کون بتا سکتا ہے کہ سجّین کیا ہے (۸)
یہ تو ایک کتاب ہے لکھی ہوئی (۹)
اس دن جھٹلانے والوں کی بڑی خرابی ہے (۱۰)
(یعنی) جو انصاف کے دن کو جھٹلاتے ہیں (۱۱)
اور اسے صرف وہی جھٹلاتا ہے جو حد سے نکل جانے والا گنہگار ہے (۱۲)
اسے جب ہماری آیتیں سنائی جاتی ہیں تو کہتا ہے یہ اگلے لوگوں کی کہانیاں ہیں (۱۳)
یوں نہیں ہے بلکہ حقیقت یہ ہے کہ ان کے دلوں پر ان کے اعمال بد کا زنگ چڑھ گیا ہے گویا تالہ لگ گیا ہے (۱۴)
(یعنی ان کے بداعمال نے ان کے قبول کرنے کی صلاحیت زائل کردی اس لئے) بے شک وہ لوگ اس روز اپنے رب کے دیدار سے اوٹ میں ہوں گے (۱۵) (یعنی اللہ کی رضا ان کو حاصل نہ ہوگی)
پھر وہ دوزخ میں جھونک دیئے جائیں گے (۱۶)
پھر ان سے کہا جائے گا کہ یہ وہی چیز ہے جسے تم جھوٹ سمجھتے تھے (۱۷)
یہ بھی سن لو یقیناً نیک لوگوں کا اعمال نامہ علیین میں ہے (۱۸)
اور آپ کو اللہ سے بڑھ کر کون بتا سکتا ہے کہ علیین کیا ہے؟ (۱۹)
ایک کتاب ہے لکھی ہوئی (۲۰)
مقرب فرشتے اس کے گواہ ہیں (۲۱)
بے شک نیک لوگ چین میں ہوں گے (۲۲)
تختوں پر بیٹھے دیکھ رہے ہوں گے (۲۳)
تم ان کے چہروں ہی سے راحت کی تازگی معلوم کرلو گے (۲۴)
ان کو نفیس ترین سربند (مہر لگا) کیا ہوا خشبودار شروب پلایا جائے گا (۲۵)
جس پر مشک کی مہر لگی ہوگی جو لوگ سبقت لے جانا چاہیں وہ اس میں سبقت کریں (۲۶)
اور اس میں تسنیم کی آمیزش ہوگی (۲۷)
وہ ایک چشمہ ہے جس سے مقرب لوگ پئیں گے (۲۸)
جو گنہگار لوگ ایمان والوں کی ہنسی اڑایا کرتے ہیں (۲۹)
اور جب ان کے پاس سے گزریں تو حقارت سے اشارہ کریں (۳۰)
اور جب اپنے گھر والوں کی طرف لوٹیں تو دل لگی کرتے ہوئے لوٹیں (۳۱)

और जब उन आस्तिकों को देखे तो कहें यह तो भ्रष्ट हैं (32)
यद्यपि वह उन पर निरीक्षक बनाकर नहीं भेजे गए (33)
तो आज आस्तिक नास्तिकों पर हंसेंगे (34)
और सिंहासनों पर बैठे हुए उन (नर्कीयों) की दशा देख रहे होंगे (35)
कि अब उन विरोधियों ने जैसा वह करते थे पूरा पूरा बदला पा लिया (36)

सूरतुल इनशिकाक - मक्की (84)

जब आकाश फट जाएगा (1) {54:1;55:27;69:1}
और अपने ईश्वर के आदेश पर कान लगाएगा (अर्थात आदेश का पालन करेगा) और उसके योग्य यही है (2)
और जब पृथ्वी फैला दी जाएगी (3) {20:106, 107}
और उसमें जो कुछ है निकाल कर बाहर डाल देगी और स्वयं खाली हो जाएगी (4)
और सुनेगी अपने ईश्वर के आदेश को अर्थात उसके आदेशानुसार होगा और उसको यही मानना है (5)
ऐ व्यक्ति निःसन्देह तुझे परिश्रम करने के लिए पैदा किया गया है अपने ईश्वर के आदेशानुसार खूब परिश्रम करले तू मिलने वाला है उससे (6)
तो जिसका कर्म पत्र उसके दाहिने हाथ में दिया जाएगा (7)
उसका लेखा शीघ्र ही बड़ी सरलता से लिया जाएगा (8)
और वह अपने जैसे लोगों में प्रसन्न चित्त वापस आएगा (9)
और हां जिसका कर्म पत्र उसकी पीठ के पीछे से दिया जाएगा (10)
(वह कष्ट से बचने के लिए) मृत्यु को पुकारेगा(11)
(परन्तु उसका पुकारना व्यर्थ होगा) और वह भड़कती हुई आग में जा पड़ेगा (12)
निःसन्देह वह अपने स्वजनों में आनन्दित रहता था (13)
उसका विचार था कि ईश्वर की ओर लौटकर न जाएगा (14)
(क्यों नहीं पलटना तो था) इसलिए कि उसका ईश्वर उसके कर्मों को देख रहा था (15)
क्या शफक की लालिमा की साक्ष्य प्रयाप्त नहीं है (जब उसकी लाली पृथ्वी पर फैल जाए) (16)
और रात्रि और जिन वस्तुओं को वह एकत्र कर लेती है वह भी साक्षी हैं देखो (17)
और चन्द्रमा भी प्रस्तुत है जब वह पूर्ण हो जाता है (18)
निःसन्देह तुम आरोही (सवार) होंगे एक पृथ्वी से दूसरी पृथ्वी को (एक तल से दूसरे तल को) (19){55:33,34;41:53}
नोट- इस आयत का अनुवाद जो प्रचलित है अनुचित किया गया है अवलोकन हो, "तुम को अवश्य दर्जा बदर्जा एक स्थिति से दूसरी स्थिति

اور جب ان مومنوں کو دیکھیں تو کہیں یہ تو گمراہ ہیں (۳۲)
حالانکہ وہ ان پر نگراں بنا کر نہیں بھیجے گئے (۳۳)
تو آج مومن کافروں پر ہنسیں گے (۳۴)
اور تختوں پر بیٹھے ان کا حال دیکھ رہے ہوں گے (۳۵)
کہ اب ان منکروں نے جیسا وہ کرتے تھے پورا پورا بدلہ پالیا (۳۶)

سورت الانشقاق ۔ مکی (۸۴)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

جب آسمان پھٹ جائے گا (۱) [۵۴:۱:۵۵:۲۷:۶۹:۱]
اور اپنے پروردگار کے حکم پر کان لگائے گا (یعنی حکم کی پابندی کرے گا) اور اس کے لائق یہی ہے (۲)
اور جب زمین پھیلا دی جائے گی (۳) [۲۰:۱۰۶،۱۰۷]
اور اس میں جو کچھ ہے نکال کر باہر ڈال دے گی اور خود خالی ہو جائے گی (۴)
اور سنے گی اپنے رب کے حکم کو یعنی اس کے حکم کے مطابق ہوگا اور اس کو یہی ماننا ہے (۵)
اے آدمی بے شک تجھے محنت کرنے کے لئے پیدا کیا ہے اپنے رب کے حکم کے مطابق پس خوب محنت کر لے تو ملنے والا ہے اس سے (۶) [۴:۹۰]
تو جس کا نامہ اعمال اس کے داہنے ہاتھ میں دیا جائے گا (۷)
اس کا حساب جلد ہی بڑی آسانی سے لیا جائے گا (۸)
اور وہ اپنے جیسے لوگوں میں خوش خوش واپس آئے گا (۹)
اور ہاں جس کا اعمال نامہ اس کی پیٹھ کے پیچھے سے دیا جائے گا (۱۰)
وہ (عذاب سے بچنے کے لئے) موت کو پکارے گا (۱۱)
(لیکن اس کا پکارنا بے کار ہوگا) اور وہ بھڑکتی ہوئی آگ میں جا پڑے گا (۱۲)
بے شک وہ اپنے متعلقین میں مست رہتا تھا (۱۳)
اس کا خیال تھا کہ اللہ کی طرف لوٹ کر نہ جائے گا (۱۴)
(کیوں نہیں پلٹنا تو تھا) اس لئے کہ اس کا پروردگار اس کے کرتوتوں کو دیکھ رہا تھا (۱۵)
کیا شفق کی سرخی کی شہادت کافی نہیں ہے (جب اس کی سرخی زمین پر پھیل جائے) (۱۶)
اور رات اور جن چیزوں کو وہ اکٹھا کر لیتی ہے وہ بھی شاہد ہیں دیکھو (۱۷)
اور چاند بھی پیش ہے جب وہ کامل ہو جاتا ہے (۱۸)
یقیناً تم سوار ہو گے (سفر کے لئے) ایک زمین سے دوسری زمین کو (ایک طبق سے دوسرے طبق کو) (۱۹) [۵۵:۳۳،۳۴:۴۱:۵۳]
نوٹ :۔ اس آیت کا ترجمہ رائج الوقت غلط کیا گیا ہے ملاحظہ ہو۔ تم کو ضرور درجہ

को गमन होते चले जाना है"
तफ्सीर- अर्थात तुम्हें एक दशा पर नही रहना है अपितु जवानी से बुढ़ापा, बुढ़ापा से मौत, मौत से मृतलोक, मृतलोक से पुनः जीवन लेखा जोखा, नर्क, जन्नत इत्यादि... मोलाना मोदूदी.
और लगभग सब आलिमों का यही विचार है, परन्तु यह प्रचलित अनुवाद और तफ्सीर अनुचित है उचित भाव वह है जो मैंने लिखा है और इस पर विस्तार से विवेचना सूरत रहमान में हो चुकी है अवलोकन हो.

بدرجہ ایک حالت سے دوسری حالت کی طرف گزرتے چلے جانا ہے۔
تفسیر۔یعنی تمہیں ایک حالت پر نہیں رہنا ہے بلکہ جوانی سے بڑھاپے، بڑھاپے سے موت،موت سے برزخ، برزخ سے دوبارہ زندگی حساب کتاب دوزخ جنت وغیرہ وغیرہ.....مولانا مودودی اور تقریباً سب عالموں کا یہی خیال ہے لیکن یہ رائج ترجمہ اور تفسیر غلط ہے صحیح مفہوم وہ ہے جو میں نے لکھا ہے اور اس پر تفصیل سے بحث سورت رحمٰن میں ہوچکی ہے ملاحظہ ہو۔

(इन सबको देखने के बाद भी) उनको क्या हो गया है कि विश्वास नही लाते (20)

(ان سب کو دیکھنے کے بعد بھی) اُن کو کیا ہوگیا ہے کہ ایمان نہیں لاتے (۲۰)

और जब उनके सामने कुरआन पढ़ा जाता है तो इसमें अंकित आदेशों को स्वीकार करके पालन क्यों नही करते अर्थात सजदा क्यों नही करते (21)

اور جب ان کے سامنے قرآن پڑھا جاتا ہے تو اس میں درج احکام کو تسلیم کرکے عمل کیوں نہیں کرتے یعنی سجدہ کیوں نہیں کرتے (۲۱)

अपितु नास्तिक लोग (कुरआन को) झुटलाते हैं (22)
और ईश्वर उन बातों को जो वह अपने हृदयों में छुपाते हैं जानता है (23)

بلکہ کافر لوگ (قرآن کو) جھٹلاتے ہیں (۲۲)
اور اللہ ان باتوں کو جو وہ اپنے دلوں میں چھپاتے ہیں جانتا ہے (۲۳)

तो उनको दुख देने वाले दण्ड की सूचना सुना दो (24)
परन्तु वह लोग जो विश्वास लाए और उन्होंने सत्कर्म किये उनके लिए न समाप्त होने वाला प्रतिदान है (25)

تو ان کو دکھ دینے والے عذاب کی خبر سنادو (۲۴)
مگر وہ لوگ جو ایمان لائے اور انہوں نے نیک عمل کئے ان کے لئے نہ ختم ہونے والا اجر ہے (۲۵)

सूरतुल बुरूज - मक्की (85)

سورت البروج۔مکی (۸۵)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

देखो साक्षी है आकाश जिसमें तारे (आवर्त कर रहे) हैं (1)

دیکھو شاہد ہے آسمان جس میں سیارے (گردش کررہے) ہیں (۱)

और यह भी सुनो वह दिन (अर्थात क्यामत का) भी साक्षी है जिसका वचन किया जा रहा है (2)

اور یہ بھی سنو وہ دن (یعنی قیامت کا) بھی شاہد ہے جس کا وعدہ کیا جارہا ہے (۲)

और साक्षी हैं अर्थात खाई वाले और जिनको वह देख रहे थे अर्थात आस्तिकों को दोनों को देखो और विचार करो एक असफल अर्थात खाई वाले और दूसरा सफल अर्थात आस्तिक (3)

اور شاہد ہیں یعنی خندق والے اور جن کو وہ دیکھ رہے تھے یعنی مومنوں کو دونوں کو دیکھو اور غور کرو ایک ناکام یعنی خندق والے اور دوسرا کامیاب یعنی مومن (۳)

कि खाई खोदने वाले वध कर दिए गए (4)
(वह खाई वाली) वह एक आग थी ईंधन वाली (5)
जबकि वह अन्यायी खाई के किनारे बैठे थे (6)
और जो कुछ वह विश्वास वालों के साथ कर रहे थे उसे देख रहे थे (7)

کہ خندق کھودنے والے ہلاک کردیے گئے (۴)
(وہ خندق والی) وہ ایک آگ تھی ایندھن والی (۵)
جب کہ وہ ظالم گڑھے کے کنارے بیٹھے تھے (۶)
اور جو کچھ وہ ایمان والوں کے ساتھ کررہے تھے اسے دیکھ رہے تھے (۷)

उन लोगों ने ईमान वालों पर अन्याय व अत्याचार इसलिए किया कि वह एक ईश्वर पर विश्वास रखते थे जो सब पर अधिपति और प्रशंसा योग्य है (8)
जिसके लिए आकाशों और पृथ्वी का राज्य है और ईश्वर के सामने हर वस्तु है वह अवगत है (9)
(वह उनसे समझ लेगा) जिन लोगों ने आस्तिक पुरुषों और आस्तिक औरतों पर अत्याचार किया और फिर उससे पश्चाताप न किया उनके लिए (दुनिया में भी) जलने का कष्ट है और परलोक में नर्क में जलाए जाने का दण्ड भी है (10)

ان لوگوں نے ایمان والوں پر ظلم وستم اس لئے توڑا کہ وہ ایک اللہ پر ایمان رکھتے تھے جو سب پر غالب اور قابل حمد ہے (۸)
جس کے لئے آسمانوں اور زمین کی بادشاہت ہے اور اللہ کے سامنے ہر چیز ہے وہ واقف ہے (۹)
(وہ ان سے سمجھ لے گا) جن لوگوں نے مومن مردوں اور مومن عورتوں پر ظلم توڑا اور پھر اس سے توبہ نہیں کی ان کے لئے (دنیا میں بھی) جلنے کا عذاب ہے اور آخرت میں دوزخ میں جلائے جانے کا عذاب بھی ہے (۱۰)

परन्तु जो लोग ईमान लाए और उन्होंने (दुनिया में)

لیکن جو لوگ ایمان لائے اور انہوں نے (دنیا میں) نیک

सत्कर्म किए निःसन्देह उनके लिए स्वर्ग के उपवन हैं जिसके नीचे नहरे बह रही होंगी यह (उनकी) बहुत बड़ी सफलता है (11)
(नास्तिक इस बात को न भूले कि) निःसन्देह तेरे ईश्वर की पकड़ बहुत कठोर है (12)

عمل کئے یقیناً ان کے لئے جنت کے باغ ہیں جس کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی یہ (ان کی) بہت بڑی کامیابی ہے (۱۱)
(کافر اس بات کو نہ بھولیں کہ) بے شک تیرے رب کی پکڑ بہت سخت ہے (۱۲)

वही पहली बार पैदा करता है और वही पुनः जीवित करेगा (13)
वह क्षमा करने वाला और प्रेम करने वाला है (14)
सिंहासन का स्वामी बड़ी महिमा वाला (15)
और जो चाहा वह कर देता है (16)
भला तुम को सैनाओं का समाचार ज्ञात हुआ (17)
(अर्थात) फिरऔन और समूद का (18)
अपितु काफिर झुटलाने में लगे हुए है (19)
और ईश्वर भी उन्हें हर ओर से घेरे हुए है (20)
अपितु वह कुरआन उच्च महिमा वाला है (21)
और ईश्वरीय ज्ञान (सुरक्षित पट्ट) में लिखा हुआ है (22)

وہی پہلی بار پیدا کرتا ہے اور وہی دوبارہ زندہ کرے گا (۱۳)
وہ بخشنے والا اور محبت کرنے والا ہے (۱۴)
عرش کا مالک بڑی شان والا (۱۵)
اور جو چاہا وہ کر دیتا ہے (۱۶)
بھلا تم کو لشکروں کا حال معلوم ہوا ہے (۱۷)
(یعنی) فرعون اور ثمود کا (۱۸)
بلکہ کافر جھٹلانے میں لگے ہوئے ہیں (۱۹)
اور اللہ بھی انہیں ہر طرف سے گھیرے ہوئے ہے (۲۰)
بلکہ وہ قرآن عظیم الشان ہے (۲۱)
اور لوح محفوظ میں لکھا ہوا ہے (۲۲)

सूरत तारिक – मक्की (86)

سورۃ الطارق۔مکی (۸۶)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

आकाश साक्षी है और अन्धकार को दूर करने वाला तारिक (1)
और आपको ईश्वर से बढ़कर और कौन बता सकता है कि रात्रि में प्रकट होने वाला क्या है, अर्थात अन्धकार को दूर करने वाला क्या है? (2) (कद्र)
वह एक चमकता हुआ तारा है (3) अर्थात मुहम्मद स०

آسمان شاہد ہے اور تاریکی کو دور کرنے والا طارق (۱)
اور آپ کو اللہ سے بڑھ کر اور کون بتا سکتا ہے کہ رات میں نمودار ہونے والا کیا ہے یعنی اندھیروں کو دور کرنے والا کیا ہے؟ (۲) [قدر]
وہ ایک چمکتا ہوا تارا ہے (۳) یعنی محمدؐ

नोट– मुहम्मद स० जब ईशदौत्य के आकाश पर प्रकट हुए तो उस समय चारो ओर अधर्म का अन्धकार ही अन्धकार था, मुहम्मद स० के प्रकट होने से वह अन्धकार इस प्रकार दूर हो गया जैसे रात्रि में उज्ज्वल तारे या चन्द्रमा के प्रकट होने से अन्धकार दूर हो जाता है, और सूर्य के प्रकट होने से तो रात्रि ही समाप्त हो जाती है और प्रकाश ही प्रकाश हो जाता है, ऐसे ही मुहम्मद स० ने इस कुरआन के द्वारा इस दुनिया से अधर्म का अन्धकार दूर कर दिया, इसलिए वास्तव में मुहम्मद स० एक उज्ज्वल तारा है (तारिक) और उनके साथ कुरआन को भी प्रकाश कहा गया है और मुहम्मद स० को भी प्रकाश कहा गय है अतः इस आयत में तारिक अर्थात अन्धकार को दूर करने वाला कोई और नही केवल मुहम्मद और उनके साथ कुरआन है विचार अनिवार्य है, ईश्वर हमें बुद्धि दे

نوٹ:۔محمدؐ جب آسمان نبوت پر نمودار ہوئے تو اس وقت چاروں طرف لادینی کا اندھیرا ہی اندھیرا تھا محمدؐ کے نمودار ہونے سے وہ اندھیرا اس طرح دور ہو گیا جیسے رات میں چمکدار تارے یا چاند کے نمودار ہونے سے اندھیرا دور ہو جاتا ہے اور سورج کے نمودار ہونے سے تو رات ہی ختم ہو جاتی ہے اور روشنی ہی روشنی ہو جاتی ہے ایسے ہی محمدؐ نے اس قرآن کے ذریعہ اس دنیا سے لادینی کا اندھیرا دور کر دیا اس لئے حقیقت میں محمدؐ ایک چمکدار تارا ہیں (طارق) اور ان کے ساتھ قرآن کو بھی نور کہا گیا ہے اور محمدؐ کو بھی نور کہا گیا ہے اس لئے اس آیت میں طارق یعنی اندھیروں کو دور کرنے والا کوئی اور نہیں صرف محمدؐ اور ان کے ساتھ قرآن ہے غور ضروری ہے اللہ ہمیں عقل دے۔

कोई जी ऐसा नही जिस पर देख रेख करने वाला फरिश्ता नियुक्त न हो (4)
इन्सान इस बात पर तो विचार करले कि वह किस वस्तु से पैदा किया गया है (5)

کوئی نفس ایسا نہیں جس پر نگہبان فرشتہ مقرر نہ ہو (۴)
انسان اس بات پر تو غور کر لے کہ وہ کس چیز سے پیدا کیا گیا ہے (۵)

वह उछलते हुए पानी से पैदा हुआ है (6)
जो पीठ और सीने के बीच में से निकलता है (7)
(जिस ईश्वर ने एक तुछ बून्द को इन्सान बना दिया) वह इस बात पर भी प्रभुत्वशाली है कि उसे पुनः जीवित कर दे (8)

وہ اچھلتے ہوئے پانی سے پیدا ہوا ہے (۶)
جو پیٹھ اور سینے کے بیچ میں سے نکلتا ہے (۷)
(جس اللہ نے ایک حقیر قطرے کو انسان بنا دیا) وہ اس بات پر قادر ہے کہ اسے دوبارہ زندہ کر دے (۸)

(उस दिन) जिस दिन हृदयों के भेद प्रकट हो जाऐंगे (9)
(उस दिन कष्ट से बचने के लिए) न तो उसका कुछ बल चलेगा और न कोई सहायक होगा (10)

(اس دن) جس دن دلوں کے بھید ظاہر ہو جائیں گے (۹)
(اس روز عذاب سے بچنے کے لئے) نہ تو اس کا کچھ زور چلے گا اور نہ کوئی مددگار ہوگا (۱۰)

आकाश को देखो जो वर्षा करता है (11)
और पृथ्वी साक्षी है देखो जो फट जाती है (12)
निःसन्देह (मतभेद को दूर करने के लिए) कुरआन एक निर्णायिक कथन है (13)
यह उपहास और व्यर्थ बात नही है (14)
अपितु वह लोग अपनी चालों में लगे हुए है (15)
और हम अपनी युक्ति कर रहे है (16)
तो (ऐ मुहम्मद) उन काफिरों को छूट दो (अधिक नही बस) थोड़ी छूट तो (उनका बल स्वयं ही टूट जाऐगा) (17)

آسمان کو دیکھو جو مینہ برساتا ہے(۱۱)
اور زمین شاہد ہے دیکھو جو پھٹ جاتی ہے(۱۲)
بے شک (اختلافات کو دور کرنے کے لئے) قرآن ایک قول فیصل ہے(۱۳)
یہ ہنسی اور بے ہودہ بات نہیں ہے(۱۴)
البتہ وہ لوگ اپنی تدبیروں میں لگے ہوئے ہیں(۱۵)
اور ہم اپنی تدبیر کر رہے ہیں(۱۶)
تو (اے محمدؐ) ان کافروں کو مہلت دو (زیادہ نہیں بس) تھوڑی مہلت دو (ان کا زور خود بخود ہی ٹوٹ جائے گا)(۱۷)

सूरतुल आला - मक्की (87)

سورت الاعلیٰ ۔مکی (۸۷)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

अपने उच्च महिमा वाले ईश्वर की पवित्रता का वर्णन करो (1)
जिसने (सम्पूर्ण रचनाऐं) पैदा की और (सबको उनकी आवश्यकतानुसार) ठीक ठीक बनाया (2)
और जिसने हर एक के लिएएक अनुमान नियम (भाग्य) निश्चित कर दिया फिर उस पर व्यवहार का मार्ग खोल दिया (अर्थात दिखा दिया) (3) {76:3; 80:19,20}
और जिसने चारा उगाया (4)
फिर उसने उसको सुखा कर काले रंग का कूड़ा कर दिया (5)
हम आपको अभी पढ़ाऐंगे फिर आप न भूलेंगे (6)
निःसन्देह जो चाहा ईश्वर ने और ईश्वर ने यही चाहा है कि आप कदापि न भूलेंगे निःसन्देह वह जानता है हर खुले और छुपे को (7) {17:86,87}

اپنے عالی شان رب کی پاکی بیان کرو(۱)
جس نے (تمام مخلوقات) پیدا کی اور (سب کو ان کی ضرورت کے مطابق) ٹھیک ٹھیک درست کر دیا(۲)
اور جس نے ہر ایک کے لئے ایک اندازہ قانون (تقدیر) مقرر کر دیا پھر اس پر راہ عمل کھول دی (یعنی دکھائی)(۳)
[۷۶:۳؛ ۸۰:۱۹،۲۰]
اور جس نے چارہ اگایا(۴)
پھر اس نے اس کو سکھا کر سیاہ رنگ کا کوڑا کر دیا(۵)
ہم آپ کو ابھی پڑھائیں گے پھر آپ نہ بھولیں گے(۶)
یقیناً جو چاہا اللہ نے اور اللہ نے یہی چاہا ہے کہ آپ ہرگز نہ بھولیں گے بے شک وہ جانتا ہے ہر کھلے اور چھپے کو(۷)
[۱۷:۸۶،۸۷]

नोट- प्रचलित अनुवादों में यह मिलता है कि आप नही भूलेंगे परन्तु जो ईश्वर भुलाना चाहे, तो प्रश्न उत्पन्न होता है कि यदि ईश्वर को भुलाना ही होता तो प्रेषित करने की क्या आवश्यकता थी, वही प्रेषित करता जो याद रहना था और ईश्वर व्यर्थ कार्य करता नही, अतः ईश्वर ने जो अवतरित किया वह याद रहा, ईश्वर यही चाहता है इस आयत में ईश्वर ने यह कहा है कि आपको कुरआन की शिक्षा जो दी जा रही है वह आपको ऐसी याद हो जाएगी कि आप कदापि न भूलेंगे,

धोका इल्ला से लगा है कही इल्ला परन्तु के लिए आता है परन्तु इस आयत में निःसन्देह पुष्टि के लिए आया है, यदि परन्तु के लिए मान लिया जाए तो प्रश्न उत्पन्न होता है कि कितनी वही थी जो मुहम्मद स0 को भुला दी गई? क्यों अवतरित हुई थी जितनी की आवश्यकता थी बस वही अवतरित होती, इन सब बातों को देखो और विचार करो, अतः इस आयत में इल्ला का अर्थ निःसन्देह है, इसको देखने के लिए इन आयात को देखो, (12:31;11:107,108;32:68; 3:93;10:49) इत्यादि इन आयात में इल्ला को देखते हुए अनुवाद होना है,

नोट- व्यवहार का मार्ग क्या है? ईश्वर ने इन्सान को जीवन व्यतीत करने के लिए अनुमान माप विधि निश्चित किये है उन पर कैसे कर्म करना है तो ईश्वर ने ईशदूतों के द्वारा वही की आकृति में पथ प्रदर्शन अर्थात अपनी पुस्तक दी जिसमें बताया गया है कि इन अनुमानों नियमों को इस प्रकार पूरा करो, यदि इन्सान ने इस पथ प्रदर्शन के आधीन कार्य किया तो सफल हो गया और यदि इसके विपरीत किया

نوٹ:۔ رائج الوقت ترجموں میں یہی ملتا ہے کہ آپ نہیں بھولیں گے مگر جو اللہ بھلانا چاہے تو سوال پیدا ہوتا ہے کہ اگر اللہ کو بھلانا ہی منظور ہوتا تو نازل کرنے کی کیا ضرورت تھی وہی نازل کرتا جو یاد رہنا تھا اور اللہ عبث کام کرتا نہیں اس لئے اللہ نے جو نازل کیا وہ یاد رہا اللہ یہی چاہتا ہے اس آیت میں اللہ نے یہ کہا ہے کہ آپ کو قرآن کی تعلیم جو دی جارہی ہے وہ آپ کو ایسی یاد ہو جائے گی کہ آپ ہرگز نہ بھولیں گے۔

دھوکا الا سے لگا ہے کہیں الا مگر کے لئے آتا ہے اگر مگر کے لئے مان لیا جائے تو سوال پیدا ہوتا ہے کہ کتنی وحی تھی جو محمدؐ کو بھلا دی گئی؟ کیوں نازل ہوئی تھی۔ جتنی کی ضرورت تھی بس وہی نازل ہوتی۔ ان سب باتوں کو دیکھو اور غور کرو۔ اس لئے اس آیت میں الا کا مطلب یقیناً ہے اس کو دیکھنے کے لئے ان آیات کو دیکھو(۱۲:۳۱؛ ۱۱:۱۰۷،۱۰۸؛ ۳۲:۶۸؛ ۳:۹۳؛ ۱۰:۴۹) وغیرہ ان آیات میں بھی الا کو دیکھتے ہوئے ترجمہ ہونا ہے۔

نوٹ:۔ راہ عمل کیا ہے؟ اللہ نے انسان کو زندگی گزارنے کے لئے پیمانے طریقے اندازے مقرر کئے ہیں ان پر کیسے عمل کرنا ہے تو اللہ نے نبیوں کے ذریعہ وحی کی صورت میں ہدایت یعنی اپنی کتاب دی جس میں بتایا گیا ہے کہ ان قدروں کو اس طرح پوری کرو اگر انسان نے اس ہدایت کے تحت کام کیا تو کامیاب ہو گیا۔ اور

तो असफल हो गया, ईश्वर ने जीवन में काम आने वाला हर प्रसंग बड़े विस्तार के साथ वर्णन किया है बस यही पैमाना अनुमानहै और यही कर्म का मार्ग है जो खोल दिया गया है और मुहम्मद स0 ने उस पर व्यवहार करके बता दिया है यही वास्तविकता है.

हम आपके लिए आसानी उत्पन्न कर देंगे (8)

तो जब तक उपदेश से लाभ की आशा हो उपदेश करते रहो (9)

इससे वही व्यक्ति अभि शिक्षा लेगा जिसके हृदय में ईश्वर का भय हो (10)

परन्तु इससे इनकार वह अभागा करेगा (11)

जो (क़यामत को) बड़ी आग में डाला जाएगा (12)

फिर वहां न मरेगा न जिएगा (13)

निःसन्देह वह सफल हो गया जो पवित्र हुआ (14)

और जिसने अपने ईश्वर का नाम याद रखा (अर्थात जो उसने अवतरित किया उसे याद रखा कर्म किया) और नमाज़ को स्थापित किया (15)

परन्तु तुम लोग दुनिया के जीवन को (परलोक पर प्रमुखता देते हो) (16)

यद्यपि परलोक में सफलता अधिक उत्तम और शेष रहने वाली है (17)

यही बातें पहली पुस्तकों में भी अंकित हैं (18)

अर्थात इब्राहीम व मूसा की पुस्तकों में (19)

सूरतुल गाशियह - मक्की (88)

(ऐ मुहम्मद स0) क्या आपको उस छा जाने वाली विपत्ति (अर्थात प्रलय) की सूचना पहुंची है? (1)

उस दिन बहुत से मुख अपमानित होंगे (2)

कठिन परिश्रम के कारण थककर चूर हो रहे होंगे (3) {94:7}

वह दहकती हुई आग में जाएंगे (4)

खौलते हुए स्रोत का पानी पीने को मिलेगा (5)

कांटेदार झाड़ी के सिवा कोई खाना उन्हें प्राप्त न होगा (6)

जो न मोटा करे न भूक मिटाए (7)

उस दिन कितने मुख प्रसन्न होंगे (8)

अपने कर्म (का अच्छा बदला पाकर उससे) प्रसन्न हो रहे होंगे (9)

उच्च उपवनों में होंगे (10)

वहां किसी प्रकार की बकवास न सुनेंगे (11)

उसमें स्रोत जारी होंगे (12)

और उसमें ऊंचे ऊंचे सिंहासन होंगे (13)

पेय पदार्थ पीने के पात्र (ठीक से) रखे होंगे (14)

और तकियों की पंक्ति लगी होंगी (15)

और सुन्दर बिछोने बिछे होंगे (16)

वह लोग ऊंटों की ओर नहीं देखते कि कैसे पैदा

اگر اس کے خلاف کیا تو ناکام ہوگیا، اللہ نے زندگی میں کام آنے والا ہر مسئلہ بڑی تفصیل کے ساتھ بیان کیا ہے بس یہی پیمانہ اندازہ ہے اور یہی راہ عمل ہے جو کھول دی گئی ہے اور محمدؐ نے اس پر عمل کر کے بتا دیا ہے یہی حقیقت ہے۔

ہم آپ کے لئے آسانی پیدا کردیں گے (۸)

تو جب تک نصیحت سے فائدے کی امید ہو نصیحت کرتے رہو (۹)

اس سے وہی آدمی ابھی نصیحت لے گا جس کے دل میں اللہ کا خوف ہو (۱۰)

لیکن اس سے انکار وہ بدبخت کرے گا (۱۱)

جو (قیامت کو) بڑی آگ میں ڈالا جائے گا (۱۲)

پھر وہاں نہ مرے گا نہ جئے گا (۱۳)

بے شک وہ کامیاب ہوگیا جو پاک ہوا (۱۴)

اور جس نے اپنے رب کا نام یاد رکھا (یعنی جو اس نے نازل کیا اسے یاد رکھا عمل کیا) اور نماز کو قائم کیا (۱۵)

لیکن تم لوگ دنیا کی زندگی کو (آخرت پر) ترجیح دیتے ہو (۱۶)

حالانکہ آخرت میں کامیابی زیادہ بہتر اور باقی رہنے والی ہے (۱۷)

یہی باتیں پہلی کتابوں میں بھی درج ہیں (۱۸)

یعنی ابراہیم وموسیٰ کی کتابوں میں (۱۹)

سورت الغاشیہ۔مکی (۸۸)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

(اے محمدؐ!) کیا آپ کو اس چھا جانے والی آفت (یعنی قیامت) کی خبر پہنچی ہے؟ (۱)

اس دن بہت سے چہرے ذلیل ہوں گے (۲)

سخت محنت کی وجہ سے تھک کر چور ہو رہے ہوں گے (۳)

[۹۴:۷]

وہ دہکتی ہوئی آگ میں جائیں گے (۴)

کھولتے ہوئے چشمہ کا پانی پینے کو ملے گا (۵)

خاردار جھاڑی کے سوا کوئی کھانا انہیں نصیب نہ ہوگا (۶)

جو نہ موٹا کرے نہ بھوک مٹائے (۷)

اس روز کتنے چہرے خوش ہوں گے (۸)

اپنے عمل (کا اچھا بدلا پا کر اس سے) خوش ہو رہے ہوں گے (۹)

بلند باغوں میں ہوں گے (۱۰)

وہاں کسی طرح کی بکواس نہ سنیں گے (۱۱)

اس میں چشمے رواں ہوں گے (۱۲)

اور اس میں اونچے اونچے تخت ہوں گے (۱۳)

اور آبخورے (قاعدے سے) رکھے ہوں گے (۱۴)

اور گاؤ تکیے کی قطاریں لگی ہوں گی (۱۵)

اور نفیس مسندیں بچھی ہوں گی (۱۶)

وہ لوگ اونٹوں کی طرف نہیں دیکھتے کہ کیسے پیدا کیے گئے

किये गये है अर्थात रेगिस्तान में एक हफ्ता तक बिना पानी के यात्रा कर सकता है और बड़ा धैर्यवान है तो ऐ मानव तू भी धैर्यवान बन (17)

और आकाश की ओर कि कैसा ऊंचा किया गया है बिना स्तम्भों के (18)

और पर्वतों की ओर कि किस प्रकार खड़े किये गये है (19)

और पृथ्वी की ओर कि किस प्रकार बिछाई गई है (20)

पस आप समझा दिया करें (क्योंकि) आपका कार्य केवल समझा देना है (21)

आप उन पर निरीक्षक नही हो (22)

हां जो व्यक्ति मुख फैरे और कुफ्र करे (23)

तो ईश्वर उसको बड़ा कष्ट देगा (24)

निःसन्देह उनको हमारी ओर लौटकर आना है (25)

फिर निःसन्देह हमारा उत्तरदायित्व है उनसे लेखा जोखा लेना (26)

सूरतुलफज्र – मक्की (89)

देखो उस प्रकाश को जो अधर्म के अन्धकार के बाद आने वाला है जैसे रात्रि के अन्धकार के बाद प्रभात का प्रकाश आता है (1) {सूरत कदर}

और देखो चन्द्रमा की दस रातें पहली और बीच और बाद की है इनमें उन्नति और पतन होता है ऐसे ही मानव के जीवन की उन्नति और पतन है (2)

नोट-(1) इस आयत में प्रभात फज्र से तात्पर्य अधर्म के बाद जो धर्म का प्रकाश आता था या आता रहेगा उससे तात्पर्य है जब व्यक्ति धर्म पर व्यवहार करता है और उसके फैलाने में प्रयास करता है तो प्रभात होता है अर्थात प्रकाश और जब व्यवहार कुरआन के विपरीत होता है तो अन्धकार अधर्म की रात होती है.

(2) आयत दो में दस रातें बताई है तो इन रातों में मानव के जीवन का रहस्य भी है जैसे चन्द्रमा के आरम्भ की दस रातें धीरे-धीरे उज्ज्वल होती जाती है ऐसे ही व्यक्ति का बचपन होता है वह इस बचपन में धीरे धीरे जवान होता जाता है जैसे चान्द दस दिन के बाद अच्छा उज्ज्वल हो जाता है और फिर चान्द की यह रोशनी लगभग दस रातों तक रहती है ऐसे ही मानव की जवानी का समय भी है फिर चान्द अन्त की दस रातों में धीरे धीरे घटकर बिल्कुल लुप्त हो जाता है ऐसे ही जब आदमी जवानी से बुढ़ापे की ओर चलता है तो धीरे धीरे बिल्कुल निर्बल हो जाता है और एक दिन मौत के मुंह में चला जाता है तो आदमी को विचार करना चाहिए कि वह दस रातों की जवानी में ईश्वर की आज्ञाकारी से अचेत न हो और जैसे ईश्वर ने आदेश दिया है तीनों काल में व्यवहार करे.

और देखो हम पुरुष और स्त्री जुफ्त जोड़े से भी पैदा करते है और केवल अकेली मरयम से ईसा को पैदा किया (और बिना जुफ्त व ताक के भी पैदा करते है जैसे आदम व हव्वा को पैदा किया) यह भी हमारी शक्ति के चिन्ह है और रचना में जोड़े है और ईश्वर अकेला है (3) जुफ्त व ताक

और इस पर भी विचार करो कि अन्धकार रात्रि के बाद प्रकाश अर्थात व्याकुलता के बाद सम्पन्नता सरलता आती है अर्थात रात्रि व्याकुलता चली जाती है (4)

क्या इन बातों में बुद्धिमानों के लिए प्रयाप्त चिन्ह

ہیں یعنی ریگستان میں ایک ہفتہ تک بنا پانی کے سفر کرسکتا ہے اور بڑا صابر ہے تو اے انسان تو بھی صابر بن (۱۷)

اور آسمان کی طرف کہ کیسا بلند کیا گیا ہے بغیر ستونوں کے (۱۸)

اور پہاڑوں کی طرف کہ کس طرح کھڑے کئے گئے ہیں (۱۹)

اور زمین کی طرف کہ کس طرح بچھائی گئی ہے (۲۰)

پس آپ سمجھا دیا کریں (کیونکہ) آپ کا کام صرف سمجھا دینا ہے (۲۱)

آپ ان پر داروغہ نہیں ہو (۲۲)

ہاں جو شخص منہ پھیر لے اور کفر کرے (۲۳)

تو اللہ اس کو بڑا عذاب دے گا (۲۴)

بے شک ان کو ہماری طرف لوٹ کر آنا ہے (۲۵)

پھر بے شک ہمارے ذمہ ہے ان سے حساب لینا (۲۶)

سورۃ الفجر۔مکی (۸۹)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

دیکھو اس روشنی کو جو لادینی کی تاریکی کے بعد آنے والی ہے جیسے رات کے اندھیرے کے بعد فجر کی روشنی آتی ہے (۱) [سورت قدر]

اور دیکھو چاند کی دس راتیں پہلی اور بیچ اور بعد کی ہیں ان میں عروج وزوال ہوتا ہے ایسے ہی انسان کی زندگی کا عروج وزوال ہے (۲)

نوٹ:۔(۱) اس آیت میں فجر سے مراد لادینی کے بعد جو دین کی روشنی آتی تھی یا آتی رہے گی اُس سے مراد ہے جب آدمی دین پر عمل کرتا ہے اور اس کے پھیلانے میں محنت کرتا ہے تو فجر ہوتا ہے یعنی روشن اور جب عمل قرآن کے خلاف ہوتا ہے تو اندھیرا لادینی کی رات ہوتی ہے

(۲) آیت ۲ میں دس راتیں بتائی ہیں تو ان راتوں میں انسان کی زندگی کا راز بھی ہے جیسے چاند کی شروع کی دس راتیں رفتہ رفتہ روشن ہوتی جاتیں ہیں ایسے ہی آدمی کا بچپن ہوتا ہے وہ اس بچپن میں دھیرے دھیرے جوان ہوتا جاتا ہے جیسے چاند دس دن کے بعد خوب روشن ہو جاتا ہے اور پھر چاند کی یہ روشنی تقریباً دس راتوں تک رہتی ہے ایسے ہی انسان کی جوانی کا وقت بھی ہے پھر چاند آخیر کی دس راتوں میں دھیرے دھیرے گھٹ کر بالکل ختم ہو جاتا ہے ایسے ہی جب آدمی جوانی سے بوڑھاپے کی طرف چلتا ہے تو دھیرے دھیرے بالکل کمزور ہو جاتا ہے اور ایک دن موت کے منہ میں چلا جاتا ہے تو آدمی کو غور کرنا چاہیے کہ وہ دس راتوں کی جوانی میں اللہ کی فرمانبرداری سے غافل نہ ہو. اور جیسے اللہ نے حکم دیا ہے تینوں زمانوں میں عمل کرے۔

اور دیکھو ہم آدمی اور عورت جفت سے بھی پیدا کرتے ہیں اور صرف اکیلی عورت طاق سے بھی پیدا کرتے ہیں جیسے مریم سے عیسیٰ کو پیدا کیا (اور بغیر جفت وطاق کے بھی پیدا کرتے ہیں جیسے آدم وحوا کو پیدا کیا) یہ بھی ہماری قدرت کی نشانی ہیں اور مخلوق میں جوڑے ہیں اور اللہ اکیلا ہے (۳) [جفت وطاق]

اور اس پر بھی غور کرو کہ تاریکیوں رات کے بعد روشنی یعنی پریشانیوں کے بعد خوشحالی آسانی آتی ہے یعنی رات پریشانی چلی جاتی ہے (۴)

کیا ان باتوں میں عقلمندوں کے لئے کافی نشانی اور شہادت

और साक्ष्य है? निःसन्देह है (5)
क्या तुमने इस बात पर विचार नही किया कि तुम्हारे ईश्वर ने आद के साथ क्या किया? (6)
ऊंचे सतूनों वाले इरम के साथ क्या किया (7)
जिनके समान (कोई जाति) नगरों में पैदा नही की थी (8)
और (इसी प्रकार) समूद के साथ भी बरताओ किया जो घाटी में पत्थर काट कर घर बनाते थे (9)
और (इसी प्रकार) फ़िरऔन के साथ भी व्यवहार किया जो तंबू और मैखें रखता था (10)
उन लोगों ने नगरों में सिर उठा रखा था (11)
और नगरों में बहुत उपद्रव मचा रखा था (12) {37:65,66;44:45,46}
तो तुम्हारे ईश्वर ने उन पर यातना का कोड़ा बरसाया (13)
निःसन्देह आपका रब (उद्दण्डों की) घात में है (14)
परन्तु इन्सान की विचित्र स्थिति है जब ईश्वर सम्मान देकर उसे प्रकट करता है और सुख सामग्री देता है तो वह कहने लगता है कि मेरे रब ने मुझे सम्मान दिया (15)
और जब वह उसको (दूसरी प्रकार) प्रकट करता है तो उसकी जीविका तंग कर देता है तो कहता है कि मेरे ईश्वर ने मुझे अपमानित कर दिया (16)
तो सुनो (ईश्वर तुम्हें अपमानित नही करता अपितु तुम्हारे कर्म तुम्हें अपमानित करते है जो तुम करते हो वह यह कि) अपितु तुम लोग अनाथों का सम्मान नही करते अर्थात उनकी सहायता नही करते (17)
और न निर्धन को भोजन कराने की प्रेरणा देते हो (18)
और पैत्रिक सम्पत्ति का वह माल (जो अनाथों को मिलना चाहिए) स्वयं समेट कर खा जाते हो (19)
और धन के प्रेम में दीवाने हो रहे हो (20)
निःसन्देह जब पृथ्वी को कूट कूटकर बराबर कर दिया जाएगा (21)
और जब तुम्हारे रब का तेज आएगा और फ़रिश्ते उसके सामने शिष्टता से पंक्ति बांधकर खड़े होंगे (22)
और जिस दिन नर्क सामने लाया जाएगा उस दिन इन्सान को समझ आएगी परन्तु उस दिन समझने से क्या लाभ (23)
कहेगा यदि मैंने अपने इस जीवन के लिए कुछ आगे भेजा होता (24)
अतः उस दिन ईश्वर के कष्ट जैसा कष्ट किसी का न होगा (25)
और न कोई वैसा जकड़ना जकड़ेगा (26)
(उस दिन सदाचारी आत्मा से कहा जाएगा) ऐ शान्ति पाने वाली आत्मा (27)
अपने ईश्वर की ओर लौट चल तू उससे प्रसन्न वह तुझ से प्रसन्न (28)

نہیں ہیں؟ یقیناً ہیں (۵)
کیا تم نے اس بات پر غور نہیں کیا کہ تمہارے رب نے عاد کے ساتھ کیا کیا (۷)
جن کے مانند (کوئی قوم) شہروں میں پیدا نہیں کی گئی تھی (۸)
اور (اسی طرح) ثمود کے ساتھ بھی برتاؤ کیا جو وادی میں پتھر تراش کر گھر بناتے تھے (۹)
اور (اسی طرح) فرعون کے ساتھ بھی برتاؤ کیا جو خیمے اور میخیں رکھتا تھا (۱۰)
ان لوگوں نے شہروں میں سر اٹھا رکھا تھا (۱۱)
اور شہروں میں بہت فساد مچا رکھا تھا (۱۲) [۳۷:۶۵،۶۶؛۴۴:۴۵،۴۶]
تو تمہارے رب نے ان پر عذاب کا کوڑا برسایا (۱۳)
بے شک آپ کا رب (سرکشوں کی) گھات میں ہے (۱۴)
مگر انسان کا عجیب حال ہے جب اللہ عزت دے کر اسے ظاہر کرتا ہے اور نعمت دیتا ہے تو وہ کہنے لگتا ہے کہ میرے رب نے مجھے عزت دی (۱۵)
اور جب وہ اس کو (دوسری طرح) ظاہر کرتا ہے تو اس کی روزی تنگ کر دیتا ہے تو کہتا ہے کہ میرے رب نے مجھے ذلیل کر دیا (۱۶)
تو سنو (اللہ تمہیں ذلیل نہیں کرتا بلکہ تمہارے اعمال تمہیں ذلیل کرتے ہیں جو تم کرتے ہو وہ یہ کہ) بلکہ تم لوگ یتیموں کی عزت نہیں کرتے یعنی ان کی مدد نہیں کرتے (۱۷)
اور نہ مسکین کو (خود کھلاتے ہو) اور نہ دوسروں کو کھانا کھلانے کی ترغیب دیتے ہو (۱۸)
اور میراث کا وہ مال (جو یتیموں کو ملنا چاہیے) خود سمیٹ کر کھا جاتے ہو (۱۹)
اور مال کی محبت میں دیوانے ہو رہے ہو (۲۰)
یقیناً جب زمین کوٹ کوٹ کر برابر کر دی جائے گی (۲۱)
اور جب تمہارے رب کی تجلی آئے گی اور فرشتے اس کے سامنے ادب سے قطار باندھ کر کھڑے ہوں گے (۲۲)
اور جس دن دوزخ سامنے لائی جائے گی اس دن انسان کو سمجھ آئے گی مگر اس دن سمجھنے سے کیا فائدہ (۲۳)
کہے گا کاش میں نے اپنی اس زندگی کے لئے کچھ آگے بھیجا ہوتا (۲۴)
پس اس دن اللہ کے عذاب جیسا عذاب کسی کا نہ ہوگا (۲۵)
اور نہ کوئی ویسا جکڑنا جکڑے گا (۲۶)
(اس دن نیک روح سے کہا جائے گا) اے اطمینان پانے والی روح (۲۷)
اپنے رب کی طرف لوٹ چل تو اس سے راضی وہ تجھ سے راضی (۲۸)

अतः मेरे मुख्य बन्दों में सम्मिलित हो जा (29)
और मेरी जन्नत में प्रविष्ट हो जा (30)

پس میرے خاص بندوں میں داخل ہوجا (۲۹)
اورمیری جنت میں داخل ہوجا (۳۰)

सुरतुल बलद - मक्की (90)

سورت البلد۔مکی (۹۰)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

क्या इस सम्मानित नगर की साक्ष्य प्रयाप्त नही है (1)
तुम इस नगर में आबाद हो अर्थात तुम्हारे लिए यहां रहना वैध है (और तुम इस नगर को भलिभांति जानते हो कि इसका क्या इतिहास है किसी दूर के नगर को साक्ष्य में प्रस्तुत नही किया जा रहा है तो विचार करो) (2) {14:35,36}
और साक्ष्य में प्रस्तुत है बाप (अर्थात आदम) और उसकी सन्तान जो उससे पैदा हुई (3)
वास्तव में इन्सान को परिश्रम के लिए उत्पन्न किया गया है अर्थात उसको धर्म का भार वाहक बनाया गया है (और धर्म शास्त्र का पालन करने में परिश्रम करना ही पड़ता है) (4) {84:6}
क्या मानव यह विचार रखता है कि उस पर कोई वश न पाएगा अर्थात कोई लेखा जोखा न होगा (बस यही जीना और मरना है जो होता चला आ रहा है) (5)
और कहता है कि मैंने बहुत सा धन व्यय कर दिया (6)
तो क्या वह विचार रखता है कि मैंने जो धन व्यय किया है उसको किसी ने देखा नही (क्या वह उचित मार्ग में व्यय किया है? उसको स्वयं ही सोचना चाहिए) (7)
(वह यह कि) क्या हमने उसको दो आंखें नही दी? (किस लिए वह यह कि वह देखे कि मुझे क्या करना है जो मुझे धन मिला है उसको निर्धनों पर व्यय करूं और इन आंखों से बुराईयों को न देखूं और ईश्वर की स्मृतियों को देखकर शिक्षा प्राप्त करके सत्कर्म करूं) (8)
औरएक जिह्वा और दो होंट दिए (होंट और मुख से काम लेकर धर्म दूसरों तक पहुंचाए और मुख से अनुचित बात न निकाले) (9)
(यह प्रसाद देकर ही ईश्वर ने अपनी अनुकम्पा के द्वार बन्द नही किए अपितु) इन्सान को शुभ उपकार और दुराचार की दोनों स्पष्ट घाटियां दिखा दी (कि वह बुद्धि से काम लेकर कार्य करे (10) {76:3; 91:7,8}
परन्तु उसने कठिन घाटी में चलने का साहस न किया (11)
और आपको ईश्वर से बढ़कर और कौन बता सकता है कि वह घाटी क्या है (12)
(सुनों वह कठिन घाटी) व्यक्ति की गर्दन को दासता के फन्दे से छुड़ाना (13)
और खिलाना भूक के दिन आवश्यकता वाले को (14)
जो अनाथ नाते दार हो (15)
और तुच्छ रंक को (16)
फिर उन लोगों में से हो जाता जो विश्वास लाते और एक दूसरे को धैर्य और दया करने का आदेश करते है (17)
यही वह लोग है दाएं बाजू वाले (अर्थात पुल सिरात

کیااس عزت والے شہر کی شہادت کافی نہیں ہے (۱)
تم اس شہر میں آباد ہو یعنی تمہارے لئے یہاں رہنا حلال ہے (اورتم اس شہر کو اچھی طرح جانتے ہو کہ اس کی کیا تاریخ ہے کسی دور کے شہر کو شہادت میں پیش نہیں کیا جارہا ہے تو غور کرو) (۲) [۳۶،۳۵:۱۴]
اورشہادت میں پیش ہے باپ (یعنی آدم) اوراس کی اولاد جواس سے پیدا ہوئی (۳)
درحقیقت انسان کو مشقت کے لئے پیدا کیا گیا ہے یعنی اس کو حامل شریعت بنایا گیا ہے (اورشریعت کی پابندی میں مشقت کرنی ہی پڑتی ہے) (۴) [۶:۸۴]
کیاانسان یہ خیال رکھتا ہے کہ اس پر کوئی قابو نہ پائے گا یعنی کوئی حساب کتاب نہ ہوگا (بس یہی جینااورمرنا ہے جو ہوتا ہے چلا آرہا ہے) (۵)
اورکہتا ہے کہ میں نے بہت سامال خرچ کردیا (۶)
تو کیاوہ خیال رکھتا ہے کہ میں نے جو مال خرچ کیا ہے اس کو کسی نے دیکھا نہیں (کیا وہ صحیح راہ میں خرچ کیا ہے؟ اس کو خود ہی سوچنا چاہیے) (۷)
(وہ یہ کہ) کیا ہم نے اس کو دوآنکھیں نہیں دیں؟ (کس لئے وہ یہ کہ وہ دیکھے کہ مجھے کیا کرنا ہے جو مجھے دولت ملی ہے اس کو غریبوں پرخرچ کروں اوران آنکھوں سے بُرائیوں کو نہ دیکھوں اوراللہ کی نشانیوں کو دیکھ کر عبرت حاصل کرکے عمل نیک کروں) (۸)
اورایک زبان اور دو ہونٹ دئے (ہونٹ اورزبان سے کام لے کراللہ کا دین دوسروں تک پہنچائے اورمنہ سے غلط بات نہ نکالے) (۹)
(یہ نعمتیں دے کر ہی اللہ نے اپنی رحمت کے دروازے بند نہیں کئے بلکہ) انسان کو نیکی اوربدی کی دونوں نمایاں گھاٹیاں دکھادیں (کہ وہ عقل سے کام لے کر کام کرے) (۱۰) [۷۶:۳:۹۱:۷،۸]
مگراس نے دشوارگھاٹی سے گزرنے کی ہمت نہ کی (۱۱)
اورآپ کواللہ سے بڑھ کراورکون بتا سکتا ہے کہ وہ گھاٹی کیا ہے؟ (۱۲)
(سنووہ دشوارگھاٹی) انسان کی گردن کوغلامی کے پھندے سے چھڑانا (۱۳)
کھلانا بھوک کے دن ضرورت مندکو (۱۴)
جویتیم رشتہ دار ہو (۱۵)
اورخاک نشین محتاج کو (۱۶)
پھران لوگوں میں سے ہوجاتا جو ایمان لائے اورایک دوسرے کو صبرکی اوررحم کرنے کی وصیت کرتے ہیں (۱۷)
یہی وہ لوگ ہیں دائیں بازووالے (یعنی پل صراط گھاٹی

घाटी से पार होने वाले) (18)
और जिन लोगों ने हमारी आयात को मानने से इनकार किया (अर्थात परिश्रम में पड़ने से इनकार किया) वह बाऐं हाथ वाले हैं (19)
उन्हीं पर आग होगी जो चारो ओर से घेरे होगी (20)

नोट– हमारे यहां एक विश्वास प्रचलित है कि जब प्रलय में लेखा जोखा हो जाएगा और कर्म पत्र दाऐं बाऐं हाथ में दे दिया जाएगा फिर एक पुल सिरात पर चलाया जाएगा तो जो जन्नती होगा वह तीव्रता के साथ तीर की भांति पार हो जाएगा और जो नर्की होगा व कटकर नर्क में गिर जाएगा, क्योंकि वह पुल सिरात (मार्ग का सेतु) तलवार से अधिक तीव्र और बाल से अधिक बारीक होगा तो मानो ईश्वर ने जो लेखा जोखा किया होगा वह संदिग्ध होगा? जिसकी वास्तविकता उस पुल सिरात पर प्रकट होगी (ईश्वर की शरण)

परन्तु मूल निर्णय पुल सिरात पर भी न होगा यह भी संदिग्ध होगा क्योंकि उसके बाद फिर अनुशंसा होगी और अनुशंसा करने वाले अपने चाहने वाले पापियों को नर्क से निकाल लेंगे उसके बाद भी एक क्रम और चलेगा वह यह कि बहुत से पापियों को अपने पापों की सजा काटनी पड़ेगी और जब दण्ड पूरा होगा तब नर्क से निकल कर स्वर्ग में आऐंगे देखा कितना रोचक दृश्य है क्या यह वास्तविकता हो सकती है,

दोस्तो! यह एक छल है कर्म पत्र मिलने के बाद कोई कसौटी नही है फिर तो सीधे स्वर्ग या नर्क में जाना है क्योंकि ईश्वर कर्म पत्र के अनुसार न्याय कर देगा और उस पर अमल होगा, ईश्वर के निर्णय के बाद फिर और कोई कसौटी नही है,

तथापि पुल सिरात है और अवश्य है परन्तु वह प्रलय के बाद नही वह इस दुनिया के जीवन में है जो सूरत बलद में घाटी के नाम से बता दिया गया है,

पहले पुल सिरात पर विचार अनिवार्य है सिरात कहते है मार्ग को यदि मार्ग में कोई रुकावट आती है जैसे नाला, नदी, घाटी या कोई लाइन इत्यादि तो उस रुकावट को दूर करने के लिए लकड़ी या लोहे इत्यादि से कोई वस्तु बनाते है जिससे उस मार्ग में आई रुकावट को दूर किया जाता है उस वस्तु को ही पुल सेतु कहते है सूरत में दो घाटी या मार्ग अच्छे और बुरे बताए गए है उनसे पार होने या न होने के कार्य बताए है जो अच्छे या बुरे कामों के नाम से आयतों में स्पष्ट है जिसने अच्छे कर्म किए वह उस घाटी से पार हो गया और जिसने बुरे कर्म किए वह घाटी से पार न हुआ और वह आग में गिर गया, मानो नर्क में गिर गया,

चूंकि शैतान इन्सान के साथ लगा हुआ है वचन के अनुसार वह हर समय मनुष्य को बुराई की ओर आकृष्ट करता है यदि इन्सान आकृष्ट हो गया तो व्याकुलता में पड़ गया क्योंकि बुराई में जी को आनन्द मिलता है और सुख अनुभूत करता है परन्तु वह अस्थाई (आरज़ी) है और यदि शैतान की पकड़ में न आया तो उस घाटी से पार हो गया परन्तु उस मार्ग पर चलने में उसे परिश्रम करना पड़ेगा, जी काम का विरोध होगा और व्याकुलता भी आएगी, यदि वह उस मार्ग पर स्थिर रहा तो पार हो गया और सफल हो गया,

अतः यह प्रकट हुआ कि पुल सिरात प्रलय के बाद नही है अपितु इस दुनिया में वही दो घाटी या मार्ग है जिन पर इन्सान को चलना है और कब तक चलना है वह यह कि इन्सान जब से चेतना में आता है और जब तक चेतना में रहता है उसका हर पग उस घाटी अर्थात पुल सिरात पर है यदि ईश्वर के आदेशों का पालन किया तो पार हो गया और अवज्ञा की तो पुल सिरात से पार न हुआ और नर्क

سے پار ہونے والے)(۱۸)
اور جن لوگوں نے ہماری آیات کو ماننے سے انکار کیا (یعنی مشقت میں پڑنے سے انکار کیا) وہ بائیں بازو والے ہیں (۱۹)
انہیں پر آگ ہوگی جو چاروں طرف سے گھیرے ہوگی (۲۰)

نوٹ:۔ ہمارے یہاں ایک عقیدہ یہ رائج ہے کہ جب حشر میں حساب کتاب ہو جائے گا اور نامہ اعمال دائیں بائیں ہاتھ میں دیدیا جائے گا پھر ایک پل صراط پر چلایا جائے گا تو جو جنتی ہوگا وہ تیزی کے ساتھ تیر کی طرح پار ہو جائے گا اور جو دوزخی ہوگا وہ کٹ کر دوزخ میں گر جائے گا کیونکہ وہ پل صراط تلوار سے زیادہ تیز اور بال سے زیادہ باریک ہوگا تو گویا اللہ نے جو حساب کیا ہوگا وہ مشکوک ہوگا؟ جس کی حقیقت اس پل صراط پر ظاہر ہوگی (نعوذ باللہ)

مگر اصل فیصلہ پل صراط پر بھی نہ ہوگا یہ بھی مشکوک ہوگا کیونکہ اس کے بعد پھر شفاعت ہوگی اور شفاعت کرنے والے اپنے چاہنے والے گنہگاروں کو دوزخ سے نکال لیں گے اس کے بعد بھی ایک سلسلہ اور چلے گا وہ یہ کہ بہت سے گنہگاروں کو اپنے گناہوں کی سزا کاٹنی پڑے گی اور جب سزا پوری ہوگی تب دوزخ سے نکل کر جنت میں آئیں گے دیکھا کتنا دلچسپ منظر ہے کیا یہ حقیقت ہو سکتی ہے

دوستو! یہ ایک فریب ہے نامہ اعمال ملنے کے بعد کوئی کسوٹی نہیں ہے پھر تو سیدھے جنت یا دوزخ میں جانا ہے کیونکہ اللہ نامہ اعمال کے مطابق فیصلہ کر دے گا اور اس پر عمل ہوگا، اللہ کے فیصلے کے بعد پھر اور کوئی کسوٹی نہیں ہے۔

تاہم پل صراط ہے اور ضرور ہے مگر وہ حشر کے بعد نہیں وہ اس دنیا کی زندگی میں ہے جو سورت بلد میں گھاٹی کے نام سے بتا دیا گیا ہے۔

پہلے پل صراط پر غور ضروری ہے صراط کہتے ہیں راستے کو اگر راستے میں کوئی رُکاوٹ آتی ہے جیسے نالا ندی وادی یا کوئی لائن وغیرہ تو اس رکاوٹ کو دور کرنے کے لئے لکڑی یا لوہے وغیرہ سے کوئی چیز بناتے ہیں جس سے اس راستے میں آئی رکاوٹ کو دور کیا جاتا ہے اس چیز کو ہی پل کہتے ہیں۔

سورت میں دو گھاٹی یا راہیں اچھی اور بُری بتائی گئیں ہیں، ان سے پار ہونے یا نہ ہونے کے کام بتائے ہیں جو اچھے یا بُرے کاموں کے نام سے آیتوں میں ظاہر ہیں۔ جس نے اچھے کام کئے وہ اس گھاٹی سے پار ہو گیا اور جس نے بُرے کام کئے وہ گھاٹی سے پار نہ ہوا اور وہ آگ میں گر گیا گویا دوزخ میں گر گیا۔

چونکہ شیطان انسان کے ساتھ لگا ہوا ہے وعدے کے مطابق وہ ہر وقت انسان کو بُرائی کی طرف راغب کرتا ہے اگر انسان راغب ہو گیا تو پریشانی میں پڑ گیا کیونکہ بُرائی میں نفس کو لذت ملتی ہے اور آرام محسوس کرتا ہے مگر وہ عارضی ہے اور اگر شیطان کی پکڑ میں نہ آیا تو اس گھاٹی سے پار ہو گیا مگر اس راہ پر چلنے میں اسے مشقت کرنی پڑے گی نفس کی مخالفت ہوگی اور پریشانی بھی آئے گی اگر وہ اس راہ پر قائم رہا تو پار ہو گیا اور کامیاب ہو گیا۔

پس یہ ظاہر ہوا کہ پل صراط حشر کے بعد نہیں ہے بلکہ اس دنیا میں وہی دو گھاٹی یا راہ ہیں جن پر انسان کو چلنا ہے اور کب تک چلنا ہے وہ یہ کہ انسان جب سے ہوش میں آتا ہے اور جب تک ہوش میں رہتا ہے اس کا ہر قدم اُس گھاٹی یعنی پل صراط پر ہے اگر اللہ کے احکام کی پابندی کی تو پار ہو گیا اور نافرمانی کی تو پل صراط

में गिर गया जो महा प्रलय में ज्ञात हो जाएगा ईश्वर दया करें

सूरतुशशम्स - मक्की (91)

साक्षी है सूरज और चमकता हुआ दिन (1)
और साक्षी है चन्द्रमा जब वह उसके पीछे पीछे लगे (2)
और दिन जब उसे चमका दे (3)
और रात्रि कि जब उसे छुपा ले (4)
और साक्षी है आकाश और जैसा कुछ उसको बनाया (5)
और पृथ्वी जैसा कुछ उसको बिछाया (6)
और आत्मा जी जैसा कुछ उसको संवारा (इन सब बातों पर विचार करो) (7)
और यह बात भी विचार योग्य है कि मानव की रचना इस अनुमान से हुई है कि इसके अन्दर वह शक्तियां रख दी गई हैं जिन से इन्सानी जी टुकड़े टुकड़े हो जाते हैं और वह शक्तियां भी जिनसे वह टुकड़े होने से बच जाती है जो ईश्वर का भय रखता है (8)
अतः सफल रहा वह जिसने अपने स्वभाव को पवित्र रखा और सत्कर्म का मार्ग अपनाया (9)
और जिसने उसे धूल में मिला दिया वह असफल हुआ (10)
समूद ने अपनी अवज्ञा के कारण ईशदूत को झुटला दिया (11)
जबकि उनमें बड़ा अभागा उठ खड़ा हुआ (12)
तो ईश्वर के रसूल ने लोगों से कहा ईश्वर की ऊंटनी को हाथ न लगाना और उसको पानी पीने से न रोकना (13)
परन्तु उन्होंने रसूल को झुटला दिया और ऊंटनी की कूंचे काट दी तो ईश्वर ने उनके पापों के कारण उन पर विपत्ति अवतरित की और सबको नष्ट कर दिया (14)
और वह नही डरता कि उसके पीछे क्या होगा (15)

सुरतुल लेल - मक्की (92)

साक्षी है रात्रि जबकि छा जाती है (1)
और दिन कि जब चमक उठता है (2)
और साक्षी है नर व नारी की उत्पत्ति (3)
कि तुम्हारी कमाई अलग अलग है (कोई सदाचारी है और कोई भ्रष्ट) (4)
सो जिसने व्यय किया धन ईश्वर के मार्ग में और ईश्वर की अवज्ञा से डरता रहा (5)
और (इन्सान के साथ) भलाई को सच जाना (6)
तो उसे हम सरल मार्ग पर चलने की क्षमता देंगे (7)
और जिसने कृपणता किया और निश्चिन्त रहा ईश्वर के आदेश से (8)
और भलाई करने को झूट समझा (9)
उसे हम भी कठिन (और कष्ट देने वाले) मार्ग पर सरलता से पहुंचा देंगे (10)

سے پار نہ ہوا اور دوزخ میں گر گیا جو حشر میں پتہ چل جائے گا اللہ رحم کرے.

سورۃ الشمس ۔مکی (۹۱)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

شاہد ہے سورج اور چمکتا ہوا دن (۱)
اور شاہد ہے چاند جب وہ اس کے پیچھے پیچھے لگے (۲)
اور دن جب اسے چمکا دے (۳)
اور رات کے جب اسے چھپا لے (۴)
اور شاہد ہے آسمان اور جیسا کچھ اس کو بنایا (۵)
اور زمین جیسا کچھ اس کو بچھایا (۶)
اور نفس جیسا کچھ اس کو سنوارا (ان سب باتوں پر غور کرو) (۷)
اور یہ بات بھی غور کرنے لائق ہے کہ انسان کی تخلیق اس انداز سے ہوئی ہے کہ اس کے اندر وہ قوتیں بھی رکھ دی گئیں ہیں جن سے انسانی ذات ٹکڑے ٹکڑے ہو جاتی ہے اور وہ قوتیں بھی جن سے یہ انتشار سے بچ جاتی ہے جو اللہ کا خوف رکھتا ہے (۸)
پس کامیاب وہ رہا جس نے اپنی فطرت کو پاک رکھا اور نیکی کی راہ اختیار کی (۹)
اور جس نے اسے خاک میں ملا دیا وہ ناکام ہوا (۱۰)
ثمود نے اپنی سرکشی کی بنا پر نبی کو جھٹلا دیا (۱۱)
جب کہ ان میں بڑا بد بخت اُٹھ کھڑا ہوا (۱۲)
تو اللہ کے رسول نے لوگوں سے کہا اللہ کی اونٹنی کو ہاتھ نہ لگانا اور اس کو پانی سے نہ روکنا (۱۳)
مگر انہوں نے رسول کو جھٹلا دیا اور اونٹنی کی کونچیں کاٹ دیں تو اللہ نے ان کے گناہ کے سبب ان پر عذاب نازل کیا اور سب کو برباد کر دیا (۱۴)
اور وہ نہیں ڈرتا کہ اس کے پیچھے کیا ہوگا (۱۵)

سورت لیل ۔مکی (۹۲)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

شاہد ہے رات جب کہ چھا جاتی ہے (۱)
اور دن کہ جب چمک اٹھتا ہے (۲)
اور شاہد ہے نر و مادہ کی پیدائش (۳)
کہ تمہاری کمائی الگ الگ ہے (کوئی نیک ہے اور کوئی بد) (۴)
سو جس نے خرچ کیا مال اللہ کی راہ میں اور اللہ کی نافرمانی سے ڈرتا رہا (۵)
اور (انسان کے ساتھ) بھلائی کو سچ جانا (۶)
تو اسے ہم آسان رستہ پر چلنے کی توفیق دیں گے (۷)
اور جس نے بخل کیا اور بے پروا رہا اللہ کے حکم سے (۸)
اور بھلائی کرنے کو جھوٹ سمجھا (۹)
اسے ہم بھی سخت (اور تکلیف دہ) راستے پر آسانی سے پہنچا دیں گے (۱۰)

اوراس کے کیا کام آئے گااس کامال جب وہ کھڈ میں گرے گا(۱۱)
بے شک راہ دکھا دینا ہمارے ذمہ ہے(سو قرآن کے ذریعہ دکھادی اورمحمدؐ نے سمجھادی)(۱۲)
(ماننا نہ ماننا تمہارا کام ہے)اوریقین کروکہ آخرت اوردنیا (دونوں کے)ہم ہی مالک ہیں(۱۳)
ہم نے تمہیں بھڑکتی ہوئی آگ سے خبردار کردیا ہے(۱۴)
اس میں نہیں جائے گامگروہ انتہائی بدبخت ہو(۱۵)
جس نے جھٹلایا اور(اس کے قانون کی پیروی سے)منہ موڑا(۱۶)
اوردوزخ کی آگ سے وہ محفوظ رہے گا جواللہ کی نافرمانی سے ڈرا(۱۷)
جو(اللہ کی راہ میں)اپنامال اس لئے دیتا ہےتا کہ(اس کا دل)پاک ہوجائے(۱۸)
اوریہ(اللہ والا)اس لئے خیرات نہیں کرتا کہ اس پرکسی کا احسان ہےاوروہ اس کابدلہ اتاررہا ہے(۱۹)
وہ توصرف اپنے رب برترکی رضاجوئی کے لئے یہ کام کرتا ہے(۲۰)
اورجلد ہی(اللہ اس کواتنا کچھ دے گا)کہ وہ خوش ہوجائے گا(۲۱)

और उसके क्या काम आएगा उसका माल जब वह खड में गिरेगा (11)
निःसन्देह मार्ग दिखा देना हमारा दायित्व है (सो कुरआन के द्वारा दिखा दिया और मुहम्मद ने समझा दिया) (12)
(मानना न मानना तुम्हारा काम है) और विश्वास करो कि परलोक और दुनिया (दोनों के) हम ही मालिक है (13)
हमने तुम्हें भड़कती हुई आग से सावधान कर दिया है (14)
उसमें नही जाएगा परन्तु वह जो चरम अभागा हो (15)
जिसने झुटलाया और (उसके नियम के अनुकरण से) मुख मोड़ा (16)
और नर्क की अग्नि से वह सुरक्षित रहेगा जो ईश्वर की अवज्ञा से डरा (17)
जो (ईश्वर के मार्ग में) अपना माल इसलिए देता है ताकि (उसका हृदय) पवित्र हो जाए (18)
और यह (ईश्वर वाला) इसलिए दान नही देता कि उस पर किसी का उपकार है और वह उसका बदला उतार रहा है (19)
वह तो केवल अपने रब श्रेष्ठ की प्रसन्नता के लिए यह काम करता है (20)
और जल्द ही (ईश्वर उसको इतना कुछ देगा) कि वह प्रसन्न हो जाएगा (21)

سورۃ الضحیٰ ۔ مکی(۹۳)

सूरतुज्जुहा - मक्की (93)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

شاہد ہےچاشت کاوقت یعنی چمکتادن(۱)
اورشاہد ہےرات جب وہ سکون کےساتھ چھاجائے(۲)

साक्षी है चाश्त का समय अर्थात चमकता दिन (1)
और साक्षी है रात्रि जब वह शान्ति के साथ छा जाए (2)

نوٹ:۔قرآن کےاندر بہت جگہ اللہ نے چاند سورج دن رات تارے وغیرہ کو شہادت میں پیش کیا ہےاور بہت زوردارالفاظ میں ذکر کیا ہےتواپنے اندرکوئی خاص مقصدرکھتا ہے پہلے یہ دیکھا جائے کیا یہ سب اپنے آپ بن کرگردش کررہے ہیں ایسانہیں ہے بلکہ ان کواللہ نے بنایااوران کوخاص مقصد کے لئے بنایا اوران کو ایک ضابطہ کاپابند کیا ہےاس ضابطہ کے تحت یہ گردش کررہے ہیں اورہرجاندارکو فائدہ پہنچارہے ہیں اوردعوت فکربھی دےرہے ہیں ان سیاروں کی گردش کا ہی یہ نتیجہ ہے کہ دن رات کاوجودسامنے آتا ہے جب تک سورج سامنے رہتا ہے زندگی کا کاروباراس دن میں جاری رہتا ہےاورجب سورج اپنی گردش کے نتیجے میں سامنے سے ہٹ جاتا ہےتورات یعنی اندھیراہوجاتا ہےاورآدمی مجبورہوکراپنا کام چھوڑکراپنے مسکن میں پناہ لیتا ہے اگراس کوضروری کام کرنا ہوتا ہےتواس اندھیرےکودورکرنے کے لئے روشنی کرنی پڑتی ہے۔

توظاہرہواکہ زندگی کی سرگرمیاں جاری رکھنے کے لئے روشنی کاہونا ضروری ہےبس یہی غورکامقام ہے۔

دنیامیں اللہ نےاپنی مخلوق میں ایک مخلوق ایسی بھی بنائی ہےجوبہت سی مخلوق سےاکرم ہےاوراللہ چاہتا ہےکہ وہ کامیاب رہےاس سےمحبت بھی زیادہ ہےتواس کوکامیاب کرنے کے لئے اللہ نےاپنےنبیوں کے ذریعہ اپناایک ضابطہ دیااورحکم دیا کہ اےانسان اس کے مطابق عمل کرکے وہ کام کردے جومیں چاہتا ہوں یعنی تیری کامیابی جس کے نتیجے میں توجنت میں جائےاوراس پرعمل کرانے

नोट- कुरआन के अन्दर बहुत स्थान पर ईश्वर ने चान्द, सूर्य, दिन, रात्रि, तारे इत्यादि को साक्ष्य में प्रस्तुत किया है और बहुत प्रबल शब्दों में वर्णन किया है तो प्रकट हो रहा है कि उनका उल्लेख जरूर अपने अन्दर कोई मुख्य उद्देश्य रखता है पहले यह देखा जाए क्या यह सब अपने आप बनकर आवर्त कर रहे है ऐसा नही है अपितु उनको ईश्वर ने बनाया और उनको मुख्य उद्देश्य के लिए बनाया और उनको एक नियम का आबद्ध किया है, इस नियम के आधीन यह आवर्त कर रहे है और हर जीवधारी को लाभ पहुंचा रहे है और चिन्तन का निमंत्रण भी दे रहे है उन नक्षत्रों के चक्र का ही यह परिणाम है कि रात दिन का अस्तित्व सामने आता है जब तक सूर्य सामने रहता है जीवन का कारोबार उस दिन में प्रचलित रहता है और जब सूर्य अपनी आवर्त में परिणाम स्वरूप सामने से हट जाता है तो रात अर्थात अन्धेरा हो जाता है और व्यक्ति विवश होकर अपना कार्य छोड़कर अपने निवास स्थान में शरण लेता है यदि उसको आवश्यक कार्य करना होता है तो उस अन्धेरे को दूर करने के लिए प्रकाश करना पड़ता है,

तो स्पष्ट हुआ कि जीवन के परिश्रम संचारित रखने के लिए प्रकाश का होना अनिवार्य है बस यही मनन का स्थान है,

दुनिया में ईश्वर ने अपनी रचनाओं में एक रचना ऐसी भी बनाई है जो बहुत सी रचनाओं से सम्मानित है और ईश्वर चाहता है कि यह सफल रहे इससे प्रेम भी अधिक है तो इसको सफल करने के लिए ईश्वर ने अपने ईशदूतों के द्वारा अपना एक विधान दिया और आदेश दिया कि ऐ इन्सान इसके अनुसार व्यवहार करके वह कार्य कर दे जो मैं चाहता हूं अर्थात तेरी सफलता जिसके परिणाम में तू स्वर्ग में

जाए और इस पर कार्य कराने के लिए ईश्वर ने कुरआन में हर प्रकार से उपमा देकर समझा दिया इन उपमाओं में ही सूर्य चन्द्रमा दिन, रात तारे इत्यादि की उपमाऐं है अवलोकन हो.

अर्थात दिन और रात्रि की बात दिन और रात्रि से उजाला और अन्धाकार अर्थ है और प्रकाश और अन्धाकार कब होता है यह तब होता है जब सूर्य सामने होता है तो प्रकाश और सूर्य के लुप्त होने से अन्धेरा प्रकाश में शान्ति है और अन्धाकार में व्याकुलता तो प्रकट हुआ कि महत्वपूर्ण वस्तु सूर्य है बस यही ईश्वर चाहता है कि इन्सान इन बातों पर विचार करे.

जिस प्रकार दुनिया में प्रकाश और अन्धाकार का आधार सूर्य से है ऐसे ही इन्सान की दुनिया और परलोक के जीवन में प्रकाश की निर्भरता कुरआन के अनुसार कर्म करने पर है.

मानव जितनी देर कुरआन पर व्यवहार करता है उसके लिए प्रकाश अर्थात दिन रहता है और जब कुरआन से मुख मोड़ता है तो अन्धाकार अर्थात रात्रि हो जाती है मानो कुरआन सूर्य दीप है और कुरआन को ईश्वर ने नूर तेज ही तो बताया है और कुरआन के लेने वाला अर्थात मुहम्मद स0 भी नूर तेज सिराजन मुनीरा है अतः इन्सान अपनी सफलता के लिए इस पर व्यवहार करे.

तो सिद्ध हुआ कि ईश्वर ने जो दिन, रात्रि, सूर्य, चन्द्रमा, तारे इत्यादि को साक्ष्य में प्रस्तुत किया है इससे तात्पर्य इन्सान को सावधान करना है विचार व मनन का निमंत्रण देना है और इन ग्रहों से जो लाभ मिलते है उनको भी ज्ञान प्राप्त करके लेना है और दुनिया को शान्ति का गहवारा बना देना है इस प्रकार परलोक भी उज्ज्वल होगा.

और समय काल साक्षी है कि जब जब ईश्वर की पुस्तक के अनुसार कर्म होता रहा दुनिया में प्रकाश दिन रहा और जब जब ईश्वर की पुस्तक को छोड़ा अन्धेरा अर्थात रात्रि हो गई और ऐसा ही होता रहेगा इस कुरआन जैसे प्रकाश तेज को अपने जीवन में संचारित करने से ही सफलता है और यही दिन प्रकाश है और इसके प्रतिकूल रात्रि अर्थात अन्धाकार है ईश्वर हम को यह क्षमता दे कि हम कुरआन के तेज प्रकाश को अपने जीवन में बसा ले.

आज की दुनिया को देखकर यदि कोई कहे कि आज तो कुरआन पर कोई मुख्य व्यवहार नही हो रहा, गेर मुस्लिम तो दूर रहे स्वयं मुसलमान भी कुरआन पर बहुत कम कर्म कर रहे है परन्तु दुनिया बहुत उन्नति कर रही है प्रकाश प्रकाश है फिर यह कैसे माना जाए कि कुरआन पर व्यवहार ही दुनिया में उजाला दिन लाता है तो सुनो आज जिस दुनिया को हम देख रहे है उसका ऊपरी भाग तो बहुत उज्ज्वल ज्ञात हो रहा है परन्तु अन्दर बहुत अन्धाकार है कोई व्यक्ति शान्ति में नही है आज हर ओर दुराचार और कुकर्म, अश्लीलता का धन्दा उन्नति पर है जिसका परिणाम बहुत जल्द ज्ञात हो जाएगा तब आदमी विचार करेगा कि वास्तव में कुरआन पर ही व्यवहार जीवन में दिन लाता है प्रकाश लाता है.

(ऐ मुहम्मद स0) आपके रब ने आपको कदापि नही छोड़ा और न वह रूष्ट हुआ (3)

(हर दशा में उसकी कृपा आपके साथ है अपितु) निःसन्देह आपके लिए बाद का काल पहले समय से उत्तम है (आज से कल अच्छा है इस वर्ष से अगला वर्ष उत्तम है इस दुनिया से दूसरी दुनिया अच्छी है यही नही अपितु) (4)

निकट ही आपका ईश्वर आपको इतना देगा कि आप प्रसन्न हो जाओगे (आज मक्का के व्यक्ति अधिकांश आपके शत्रु है कल सारा अरब आपका मित्र होगा) (5) {30:1 से4}

کے لئے اللہ نے قرآن میں ہر طرح سے مثال دے کر سمجھا دیا ان مثالوں میں ہی سورج چاند، دن رات، تارے وغیرہ کی مثالیں ہیں ملاحظہ ہو۔

یعنی دن اور رات کی بات دن اور رات سے اجالا اور اندھیرا مراد ہے اور اندھیرا اور اجالا کب ہوتا ہے تب ہوتا ہے جب سورج سامنے ہوتا ہے تو اجالا اور سورج کے غائب ہونے سے اندھیرا۔ اجالے میں سکون ہے اور اندھیرے میں پریشانی تو ظاہر ہوا کہ اہم چیز سورج ہے بس یہی اللہ چاہتا ہے کہ انسان ان باتوں پر غور کرے۔

جس طرح دنیا میں اجالے اور اندھیرے کا دارومدار سورج سے ہے ایسے ہی انسان کی دنیوی اور آخرت کی زندگی میں روشنی کا انحصار قرآن کے مطابق عمل کرنے پر ہے۔

انسان جتنی دیر قرآن پر عمل کرتا ہے اس کے لئے روشنی یعنی دن رہتا ہے اور جب قرآن سے منہ موڑتا ہے تو اندھیرا یعنی رات ہو جاتی ہے گویا قرآن سورج چراغ ہے اور قرآن کو اللہ نے نور ہی تو بتایا ہے اور قرآن کو لینے والا یعنی محمدؐ بھی نور سراجا منیرا ہیں۔ اس لئے انسان اپنی کامیابی کے لئے اس پر عمل کرے تو اس کی زندگی میں دن (اجالا) ہوگا ورنہ رات اندھیرا ہوگا۔

تو ثابت ہوا کہ اللہ نے جو دن رات سورج چاند ستارے وغیرہ کو شہادت میں پیش کیا ہے اس سے مراد انسان کو خبردار کرنا ہے غور وفکر کی دعوت دینی ہے اور ان سیاروں سے جو فائدے ملتے ہیں ان کو بھی علم حاصل کر کے لینا ہے اور دنیا کو امن کا گہوارہ بنا دینا ہے اس طرح آخرت بھی روشن ہوگی۔

اور زمانہ شاہد ہے کہ جب جب اللہ کی کتاب کے مطابق عمل ہوتا رہا دنیا میں اجالا دن رہا اور جب جب اللہ کی کتاب کو چھوڑا اندھیرا یعنی رات ہوگئی اور ایسا ہی ہوتا رہے گا اس قرآن جیسے نور کو اپنی زندگی میں جاری وساری کرنے سے ہی کامیابی ہے اور یہی دن روشنی ہے اور اس کی ضد رات یعنی اندھیرا ہے اللہ ہم کو یہ توفیق دے کہ ہم قرآن کے نور کو اپنی زندگی میں بسالیں۔

آج کی دنیا کو دیکھ کر اگر کوئی کہے کہ آج تو قرآن پر کوئی خاص عمل نہیں ہو رہا غیر مسلم تو دور رہے خود مسلمان بھی قرآن پر بہت کم عمل کر رہے ہیں مگر دنیا بہت ترقی کر رہی ہے روشنی ہے پھر یہ کیسے مانا جائے کہ قرآن پر عمل ہی دنیا میں اجالا دن لاتا ہے تو سنو آج جس دنیا کو ہم دیکھ رہے ہیں اس کا اوپری حصہ تو بہت روشن معلوم ہو رہا ہے مگر اندر بہت تاریکی ہے کوئی آدمی سکون میں نہیں ہے آج ہر طرف بداخلاقی اور فحش کا کاروبار ترقی پر ہے جس کا نتیجہ بہت جلد معلوم ہو جائے گا تب آدمی غور کرے گا کہ حقیقت میں قرآن پر ہی عمل زندگی میں دن لاتا ہے روشنی لاتا ہے۔

(اے محمدؐ) آپ کے رب نے آپ کو ہرگز نہیں چھوڑا اور نہ وہ ناراض ہوا (۳)

(ہر حال میں اس کا کرم آپ کے ساتھ ہے بلکہ) یقیناً آپ کے لئے بعد کا دور پہلے دور سے بہتر ہے (آج سے کل بہتر ہے اس سال سے اگلا سال بہتر ہے اس دنیا سے دوسری دنیا بہتر ہے یہی نہیں بلکہ (۴)

عن قریب آپ کا رب آپ کو اتنا دے گا کہ آپ خوش ہو جاؤ گے (آج مکہ کے آدمی زیادہ تر آپ کے دشمن ہیں کل سارا عرب آپ کا دوست ہوگا) (۵) [۳۰:۱ سے ۴]

क्या उसने आपको अनाथ और बेसहारा न पाया फिर स्थान दिया (6)

کیا اس نے آپ کو یتیم اور بے سہارا نہ پایا پھر ٹھکانا دیا (۶)

और आपको अदृश्य मार्ग की (धर्म की) खोज में दुखी सचेष्ट पाया तो फिर वह मार्ग दिखा दिया अर्थात मूल धर्म शास्त्र दे दिया (7) {12:95;3:164; 4:26;42:53;12:3}

اور آپ کو گم شدہ راہ کی (شریعت کی) تلاش میں سرگرداں پایا تو پھر وہ راہ دکھادی یعنی اصل شریعت دے دی (۷) [۱۲:۹۵؛۳:۱۶۴؛ ۴:۲۶:۴۲:۵۳:۱۲:۳]

और आपको धर्म शास्त्र का अपेक्षित पाया फिर (धर्म शास्त्र देकर) सम्पन्न कर दिया (8) {2:269} (अर्थात सत्य का खोजी पाया)

اور آپ کو شریعت کا حاجت مند پایا پھر (شریعت دے کر) غنی کر دیا (۸) [۲:۲۶۹] (یعنی جویائے حق پایا)

(और जिस प्रकार ईश्वर आपकी सहायता कर रहा है इसी प्रकार आप भी दूसरों की सहायता करें) अतः अनाथ पर कठोरता न करना (9) {89:19} (जो धर्म नहीं जानता वह भी अनाथ है)

(اور جس طرح اللہ آپ کی مدد کر رہا ہے اسی طرح آپ بھی دوسروں کی مدد کریں) لہٰذا یتیم پر سختی نہ کرنا (۹) [۸۹:۱۹] (جو دین نہیں جانتا وہ بھی یتیم ہے)

और प्रश्नकर्ता को न झड़कना (10)

اور سائل کو نہ جھڑکنا (۱۰)

(और देखो ईश्वर ने आपको कितनी सुख सामग्रियां दी हैं) अपने रब की निधियों को दूसरों के सामने वर्णन करते रहना और ईश्वर के बन्दों तक उसका सन्देश पहुंचाते रहना (फिर सुन लो प्रकाश के बाद अन्धेरा और अन्धकार के बाद प्रकाश परन्तु प्रकाश शीघ्र लुप्त हो सकता है और अन्धकार देर तक शेष रह सकता है अतः प्रकाश को शान्ति के साथ शेष रखने के लिए सत्कर्म में अधिक परिश्रमकरना है जिससे अच्छा समय रहे) (11)

(اور دیکھو اللہ نے آپ کو کتنی نعمتوں سے نوازا ہے لہٰذا) اپنے رب کی نعمتوں کو دوسروں کے سامنے بیان کرتے رہنا اور اللہ کے بندوں تک اس کا پیغام پہنچاتے رہنا (پھر سن لو روشنی کے بعد تاریکی اور تاریکی کے بعد روشنی مگر روشنی جلد غائب ہو سکتی ہے اور تاریکی سکون کے ساتھ طاری رہ سکتی ہے اس لئے روشنی کو سکون کے ساتھ باقی رکھنے کے لئے نیک عمل میں زیادہ محنت کرنا ہے جس سے اچھا دور رہے) (۱۱)

सूरत अलम नशराह - मक्की (94)

سورت الم نشرح ۔مکی (۹۴)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

(ऐ नबी) क्या हमने आपका वक्ष आपके लिए खोल नहीं दिया? निःसन्देह खोल दिया (1) {6:125; 39:22;20:25,26} (अर्थात कठिन कार्य आसान कर दिया)

(اے نبیؐ) کیا ہم نے آپ کا سینہ آپ کے لئے کھول نہیں دیا؟ یقیناً کھول دیا (۱) [۶:۱۲۵؛۳۹:۲۲؛۲۰:۲۵،۲۶] (یعنی مشکل راہیں آسان کردیں)

और आप पर से वह भारी बोझ उतार दिया (2) {20:1,3}

اور آپ پر سے وہ بھاری بوجھ اتار دیا (۲) [۲۰:۱،۳]

जो आपकी कमर तोड़े डाल रहा था अर्थात आप बहुत व्याकुल थे (3)

جو آپ کی کمر توڑے ڈال رہا تھا یعنی آپ بہت بے چین تھے (۳)

और हमने आपका जप अर्थात धर्म श्रेष्ठ कर दिया (4)

اور ہم نے آپ کا ذکر یعنی دین کا غلبہ بلند کیا (۴)

निःसन्देह कठिनाई के साथ सरलता है (5)

بے شک مشکل کے ساتھ آسانی ہے (۵)

हां निःसन्देह कठिनता के साथ सरलता है (6)

ہاں بے شک مشکل کے ساتھ آسانی ہے (۶)

अतः जब निवृत हो जाया करो धर्म के प्रचार के परिश्रम से (7) {35:35;15:48;88:3}

پس جب فارغ ہو جایا کرو تبلیغ دین کی مشقت سے (۷) [۳۵:۳۵؛۱۵:۴۸؛۸۸:۳]

तो अपने ईश्वर की ओर आकृष्ट हो जाया करो अर्थात उसकी पूजा में लीन हो जाओ (8) {110:1,3}

تو اپنے پروردگار کی طرف متوجہ ہو جایا کرو یعنی اس کی عبادت میں مشغول ہو جاؤ (۸) [۱۱۰:۱،۳]

सूरतुत्तीन - मक्की (95)

سورت التین ۔مکی (۹۵)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

साक्षी है वह स्थान जहां इन्जीर और जैतून पैदा होते हैं (1)

شاہد ہیں وہ جگہ جہاں انجیر اور زیتون پیدا ہوتے ہیں (۱)

और तूर सीनीन (2) {2:126} (अर्थात इन स्थानों से ईशदूतों ने सत्य की आवाज बुलन्द की तो उनका भी विरोध हुआ ऐसे ही आपका होगा)

اور طور سینین (۲) [۲:۱۲۶] (یعنی ان مقاموں سے نبیوں نے حق کی آواز بلند کی تو ان کی بھی مخالفت کی گئی ایسے ہی آپ کی ہوگی)

और यह शान्ति वाला नगर अर्थात मक्का (3)

اور یہ پرامن سرزمین یعنی مکہ (۳)

कि हम ईश्वर ने इन्सान को अपने आदेशों पर जो (संतुलन) के साथ है अच्छी विधि पर व्यवहार करने को पैदा किया है कि ईश्वर की आज्ञाकारी की जाए जैसे कुरआन में लिखे हैं जो संतुलन है (4)

کہ ہم اللہ نے انسان کو اپنے احکام پر جو توازن کے ساتھ ہیں اچھے طریقے پر عمل کرنے کو پیدا کیا کہ اللہ کی فرمانبرداری کی جائے جیسے قرآن میں لکھے ہیں (۴) [جو توازن ہے]

और यदि मानव अवज्ञा करता है सन्तुलन बिगाड़ता

اور اگر انسان نافرمانی کرتا ہے توازن بگاڑتا ہے تو اس نے

है तो उसने अपनी उत्पत्ति के उद्देश्य को फौत कर दिया अहसनी तकवीम को भूल गया और असफल हो गया (5) इस विषय में एक हदीस और आयत भी है, इन्नल्लाहा खलाका आदमा अला सूरतिही (मुस्लिम) ईश्वर सन्तुलन स्थापित करने वाला है अतः इन्सान को भी यही आदेश है

परन्तु जो लोग विश्वास लाए और सत्कर्म किये तो उनके लिए ऐसा प्रतिदान है जो कभी समाप्त न होगा (6)

अतः (ऐ मुहम्मद स0!) इस सत्य के समझ लेने के बाद कौन (है जो सत्कर्म के उत्तम और दुराचार के बुरे परिणाम से इनकार करे और) हिसाब के दिन के बारे में आपको झुठलाए (7)

क्या ईश्वर सब शासकों का शासक और आदेश करने वाला नहीं है? (8)

सूरतुल अलक - मक्की (96)

जिबराईल ने रसूल से कहा निकट आ और सुन और अपने रब के नाम के साथ जिसने मख़लूक को पैदा किया घोषणा कर दे धर्म प्रचार कर जो वही के द्वारा दिया जा रहा है (1)

उत्पन्न किया इन्सान को रक्त की फुटकी से (2)

और जो वही से दिया जा रहा है उसको पढ़ते भी रहो यह उसकी दया है कि आपको ज्ञान दे रहा है आपका रब बड़ा दयालू है (3)

जिसने कलम के द्वारा (इन्सान को) ज्ञान सिखाया (4)

उसने इन्सान को ज्ञान दिया जिसे वह नहीं जानता था (5) {55:2}

निःसन्देह इन्सान तो आपे से बाहर हो जाता है (6)

इसलिए कि वह अपने को निश्चिन्त (धनी) समझता है (7)

निःसन्देह सबको लौटना आपके रब अर्थात मुझ ईश्वर की ओर है (8)

(ऐ रसूल!) आपने उस व्यक्ति को देखा जो एक बन्दे को रोकता है (9)

जबकि वह बन्दा नमाज अर्थात ईश्वर के आदेशों को चुकता करता है और दूसरों तक उनको पहुंचाता है (10)

भला देखो तो यदि वह बन्दा सत्य मार्ग पर हो (11)

या सत्कर्म का आदेश करने वाला हो (12)

(क्या ऐसे व्यक्ति को भलाई करने से रोकना वैध है?) और विचार करो यदि (वह व्यक्ति जो रसूल और सदाचारी व्यक्ति को भलाई करने नमाज पढ़ने और धर्म प्रचार करने से रोक रहा है) उसको झुठला रहा हो और (सत्य की ओर से) मुख फेर रहा हो (13)

(उसकी यह हरकत कितनी अनुचित है) क्या वह नहीं जानता कि ईश्वर (उसकी गतिविधियों को देख रहा है) (14)

देखो समझाने पर वह (अपनी गतिविधियों से) न रुका अतः हम उसकी झूठी दोषी ललाट के बाल पकड़ कर घसीटेंगे (15)

वह ललाट जो झूठी और दोषी है (16)

(यदि बच सकता है तो हमारे मुकाबिले के लिए) अपने सहायक बुलाले (17)

हम भी अपने दण्ड देने वाले फरिश्तों को बुलाते हैं (18)

(फिर देखेंगे कि वह किस प्रकार सामना करता है ऐ रसूल!) देखो उसका कहा कदापि न मानना सजदा आज्ञाकारी करते

اپنی پیدائش کے مقصد کو فوت کر دیا احسن تقویم کو بھول گیا اور اسفل ہو گیا (۵)
(اس ضمن میں ایک حدیث اور آیت بھی ہے [اِنَّ اللّٰہ خَلَقَ آدَمَ عَلٰی صورتِہٖ] اللہ توازن قائم کرنے والا ہے اس لئے انسان کو بھی یہی حکم ہے (مسلم)

لیکن جو لوگ ایمان لائے اور نیک عمل کئے تو ان کے لئے ایسا اجر ہے جو کبھی ختم نہ ہوگا (۶)

پس (اے محمدؐ) اس حقیقت کے سمجھ لینے کے بعد کون (ہے جو اعمال صالح کے بہتر اور اعمال بد کے بُرے نتائج سے انکار کرے اور) روز جزا کے بارے میں آپ کو جھٹلائے (۷)

کیا اللہ سب حاکموں کا حاکم اور حکم کرنے والا نہیں ہے؟ (۸)

سورت العلق _ مکی (۹۶)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

جبرئیل نے رسول سے کہا قریب آ اور سن اور اپنے رب کے نام کے ساتھ جس نے مخلوق کو پیدا کیا اعلان عام کردے تبلیغ دین کر جو وحی کے ذریعہ دیا جا رہا ہے (۱)

پیدا کیا انسان کو خون کی پھٹکی سے (۲)

اور جو وحی سے دیا جا رہا ہے اُس کو پڑھتے بھی رہو یہ اُس کا کرم ہے کہ آپ کو علم دے رہا ہے آپ کا رب بڑا کریم ہے (۳)

جس نے قلم کے ذریعہ (انسان کو) علم سکھایا (۴)

اس نے انسان کو وہ علم دیا جسے وہ نہیں جانتا تھا (۵) [۵۵:۲]

یقیناً انسان تو آپے سے باہر ہو جاتا ہے (۶)

اس لئے کہ وہ اپنے کو بے پروا (تونگر) سمجھتا ہے (۷)

بے شک سب کو لوٹنا آپ کے رب یعنی مجھ اللہ کی طرف ہے (۸)

(اے رسولؐ) آپ نے اس شخص کو دیکھا جو ایک بندے کو روکتا ہے (۹)

جبکہ وہ بندہ نماز یعنی اللہ کے احکام کو ادا کرتا ہے اور دوسروں تک ان کو پہنچاتا ہے (۱۰)

بھلا دیکھو تو اگر وہ بندہ راہ راست پر ہو (۱۱)

یا نیکی کا حکم کرنے والا ہو (۱۲)

(کیا ایسے انسان کو بھلائی کرنے سے روکنا جائز ہے؟) اور غور کرو اگر (وہ شخص جو رسول اور نیک آدمی کو بھلائی کرنے نماز پڑھنے اور تبلیغ کرنے سے روک رہا ہے) اس کو جھٹلا رہا ہو اور (حق کی طرف سے) منہ پھیر رہا ہو (۱۳)

(اس کی یہ حرکت کتنی غلط ہے) کیا وہ نہیں جانتا کہ اللہ (اس کی حرکتوں کو) دیکھ رہا ہے (۱۴)

دیکھو سمجھانے پر وہ (اپنی حرکتوں سے) باز نہ آیا اس لئے ہم اس کی جھوٹی خطا کار پیشانی کے بال پکڑ کر گھسیٹیں گے (۱۵)

وہ پیشانی جو جھوٹی اور خطا کار ہے (۱۶)

(اگر بچ سکتا ہے تو ہمارے مقابلے کے لئے) اپنے مدد گاروں کی ٹولی بلا لے (۱۷)

ہم بھی اپنے عذاب دینے والے فرشتوں کو بلاتے ہیں (۱۸)

(پھر دیکھیں گے کہ وہ کس طرح مقابلہ کرتا ہے اے رسول!) دیکھو اس کا کہا ہرگز نہ ماننا سجدہ فرمانبرداری کرتے رہو اپنے رب کا

रहो और अपने ईश्वर की निकटता प्राप्त करते रहो (19)

सूरतुल कदर - मक्की (97)

नोट- इस संसार में दो वस्तुऐं अस्तित्व, कर्तार और रचना है जनक कर्तार प्रथम व अन्त अर्थात न उसका आरम्भ है और न अन्त परन्तु रचना का आरम्भ भी है और अन्त भी है, ऐसे ही ईशदौत्य का प्रसंग है ईशदौत्य का आरम्भ भी है और अन्त भी, आरम्भ महामना आदम अ0 से हुआ और अन्त महामना मुहम्मद स0 पर, ईश्वर ने ईशदौत्य का क्रम इसलिए आरम्भ किया था कि वह इस मानव रचना को दुनिया और परलोक में सम्मान वाला बनाना चाहता है यह अलग बात है कि अभागा इन्सान सम्मान वाला बनना न चाहे.

ईश्वर नबी को कब प्रेषित करता था? नबी को प्रेषित उस समय करता था जब मनुष्य पहले नबी की शिक्षा को भुलाकर शैतानी चक्कर में पड़कर व्याकुलता में ग्रस्त होकर अन्धकार में डूब जाता था और फिर इन्सान ईश्वर से याचना करता था तो ईश्वर फिर दुनिया में अपना अगला नबी प्रेषित करता था और जिस अन्धकार रात से वह लोग व्याकुल थे वह उससे निकाल देता था अर्थात प्रभात हो जाता था यह क्रम उस समय तक चलता रहा जब ईश्वर का उद्देश्य पूरा हो गया अर्थात इन्सानी बुद्धि ऐसी हो गई कि वह आसानी से ईश्वर के सन्देश सुनकर कर्म करने लगे और एक स्थान से दूसरे स्थान तक संदेश पहुंचने के साधन भी अच्छे हो गए और वह समय आ गया.

जब वह समय आया तो उस समय पूरी दुनिया में शैतान ने अपना अधिकार जमा रखा था मानवता परास्त हो चुकी थी हर प्रकार के अत्याचार हो रहे थे पूरी दुनिया अधर्म की अन्धेरी रात में डूबी थी, मानवता चित्कार कर रही थी अत्याचारी अन्याय कर रहे थे, वध, विनाश, लूटमार, बलात्कार सामान्य था जीवित लड़की को दफ़्न किया जा रहा था और कोई किसी की नहीं सुन रहा था.

तो उस समय उस अत्याचार की अन्धेरी रात में ईश्वर ने मानवता की याचना को सुना और उसकी करूणा आवेश में आ गई तो ईश्वर ने उस अन्धेरी रात्रि में अपने एक अन्तिम नबी मुहम्मद स0 को चुना और उन पर उस अन्धेरी रात में अपनी अनुकम्पा के प्रकाश का प्रेषण आरम्भ कर दिया जिस करूणा के नूर प्रकाश ने प्रभात का दृश्य प्रस्तुत कर दिया और मानव उस अन्धकार से निकल कर एक प्रकाश में आ गई और ऐसी कि क्यामत तक इस अनुकम्पा के प्रकाश से चमकती रहेगी वह सदैव प्रभुत्व शाली रहेगी यह अलग बात है कि कभी मानवता अपने पापों के कारण परास्त हो जाए परन्तु वही प्रकाश उसे फिर सफल करता रहेगा और मानवता भी अधिपति होती रहेगी.

इस प्रकाशका आना प्रमुखता से अरब जाति के लिए और सामान्यतः पूरे संसार के लिए मानो अन्धकार अधर्म की रात्रि में धर्म के प्रकाश का आना था अरब पहले प्रकाश से जीवित हुआ, अरब वाले चरवाहों की निर्धन जाति थी और जब से दुनिया बनी थी अरब के पत्थरीले मैदानों में फिरा करती थी और किसी व्यक्ति को उनका कोई ध्यान भी न था, उस जाति में एक साहसी रसूल जिस पर वह विश्वास करते ऐसी वाणी प्रकाश के साथ प्रेषित किया गया जिसके कारण वह जाति सम्पूर्ण संसार में परिचित हो गई और छोटी वस्तु अत्यन्त बड़ी बन गई.

एक चिंगारी ऐसे देश में पड़ी जो अन्धकार में छुपा हुआ मरूस्थल था परन्तु देखो उसने वेग से उड़ जाने वाली बारूद की भांति नीले आकाश तक उठते हुए अग्नि शिखा के द्वारा पूरी दुनिया में प्रभात प्रकाश का दृश्य स्पष्ट प्रकट कर दिया और उत्पीड़ित मानवता उस प्रकाश से प्रसन्न हो गई जिस अनुकम्पा का उल्लेख ईश्वर ने अपनी आदर वाली आयात में बड़े सुभाषण के साथ किया है अवलोकन हो और यह अनुकम्पा उस समय ही तो अवतरित हुई जब मानवता अन्याय की रात्रि में चित्कार कर रही थी अतः वह अंधेरी रात अनुकम्पा और आदर वाली मुल्यवान सिद्ध हुई (14:1;44:3) सूरत 'कदर' का भावार्थ लिखने से पहले कुरआन की कुछ और आयात लिखी जा रही है जिनमें इसी भाव की ओर संकेत हो रहा है.

सूरत इब्राहीम 14, आयत-1, ऐ मुहम्मद स0 यह उच्च महिमा वाली पुस्तक हमने आपकी ओर उतारी है कि आप लोगों को अन्धकार से प्रकाश की ओर लाऐं (रात्रि से प्रभात की ओर) उनके

قرب حاصل کرو(۱۹)

سورت القدر۔مکی (۹۷)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

نوٹ:۔اس کائنات میں دو چیزیں خالق ومخلوق ہیں خالق اوّل وآخر یعنی نہ اس کا شروع ہے اور نہ آخر لیکن مخلوق کا شروع بھی ہے اور آخر بھی ہے.ایسے ہی نبوت کا معاملہ ہے.نبوت کی شروعات بھی ہے اور آخر بھی شروعات حضرت آدمؑ سے ہوئی خاتمہ حضرت محمدؐ پر اللہ نے نبوت کا سلسلہ اس لئے شروع کیا تھا کہ وہ اس انسانی مخلوق کو دنیا اور آخرت میں عزت والا بنانا چاہتا ہے یہ الگ بات ہے کہ بدبخت انسان عزت والا بننا نہ چاہے.

اللہ نبی کو کب معبوث کرتا تھا؟ نبی کو معبوث اس وقت کرتا تھا جب انسان پہلے نبی کی تعلیم کو بھلا کر شیطان چکر میں پڑ کر پریشانی میں مبتلا ہو کر تاریکی میں ڈوب جاتا تھا اور اللہ پھر دنیا میں اپنا اگلا نبی بھیجتا تھا اور جس تاریک رات سے وہ لوگ پریشان تھے وہ اس سے نکال دیتا تھا یعنی فجر ہو جاتا تھا یہ سلسلہ اس وقت تک چلتا رہا جب اللہ کا مقصد پورا ہو گیا یعنی انسانی ذہن ایسا ہو گیا کہ وہ آسانی سے اللہ کا پیغام سن کر عمل کرنے لگے اور ایک جگہ سے دوسری جگہ پیغام رسانی کے ذرایعے بھی اچھے ہو گئے اور وہ وقت آ گیا.

جب وہ وقت آیا تو اس وقت پوری دنیا میں شیطان نے اپنا قبضہ جما رکھا تھا انسانیت مغلوب ہو چکی تھی ہر طرح کے ظلم ہو رہے تھے پوری دنیا لادینی کی تاریک رات میں ڈوبی تھی انسانیت چیخ رہی تھی ظالم ظلم کر رہے تھے قتل غارت گری لوٹ مار زنا عام تھا زندہ لڑکی کو دفن کیا جا رہا تھا اور کوئی کسی کی نہیں سن رہا تھا.

تو اس وقت اس ظلم کی تاریک رات میں اللہ نے انسانیت کی پکار کو سنا اور اس کی رحمت جوش میں آ گئی تو اللہ نے اس تاریک رات میں اپنے ایک آخری نبی محمدؐ کو چنا اور ان پر اس تاریک رات میں اپنی رحمت کے نور کا نزول شروع کر دیا جس رحمت کے نور نے فجر کا نظارہ پیش کر دیا.اور انسانیت اس تاریکی سے نکل کر ایک روشنی میں آ گئی.اور ایسی کہ قیامت تک اس رحمت کے نور سے چمکتی رہے گی وہ ہمیشہ غالب رہے گا یہ الگ بات ہے کہ کبھی انسانیت اپنے گناہوں کی وجہ سے مغلوب ہو جائے مگر وہی نور اسے پھر کامیاب کرتا رہے گا اور انسانیت بھی غالب آتی رہے گی.

اس نور کا آنا بالخصوص عرب قوم کے لئے اور بالعوم پوری دنیا کے حق میں گویا تاریک لادینی کی رات میں دین کے نور کا آنا تھا.عرب پہلے اس روشنی سے زندہ ہوا،اہل عرب گلہ باتوں کی غریب قوم تھی اور جب سے دنیا بنی تھی عرب کے چٹیل میدانوں میں پھیرا کرتی تھی اور کسی شخص کو ان کا کوئی خیال بھی نہ تھا.اس قوم میں ایک اولوالعزم رسول جس پر وہ یقین کرتے ایسے کلام نور کے ساتھ بھیجا گیا جس کی وجہ سے وہ قوم پوری دنیا میں معروف ہو گئی اور چھوٹی چیز نہایت بڑی بن گئی.

ایک چنگاری ایسے ملک میں پڑی جو ظلمت میں چھپا ہوا ریگستان تھا مگر دیکھو اس نے زور شور سے اڑ جانے والی بارود کی طرح نیلے آسمان تک اٹھتے ہوئے شعلوں کے ذریعہ پوری دنیا میں فجر روشنی کا سماں نمایاں کر دیا.اور مظلوم انسانیت اس نور سے نہال ہو گئی.جس رحمت کا ذکر اللہ نے اپنی قدر والی آیات میں بڑی فصاحت بلاغت کے ساتھ کیا ہے ملاحظہ ہو اور یہ رحمت اس وقت ہی تو نازل ہوئی جب انسانیت ظلم کی رات میں چیخ رہی تھی اس لئے وہ اندھیری رات رحمت اور قدر والی ثابت ہوئی (۱۴:۱؛۴۴:۳).سورت قدر کا مفہوم لکھنے سے پہلے قرآن کی کچھ اور آیات لکھی جا رہی ہیں،جن میں اسی مفہوم کی طرف نشان دہی ہو رہی ہے.

سورت ابراہیم ۱۴،آیت،۱۔اے محمدؐ یہ عالی شان کتاب ہم نے آپ کی طرف اتاری ہے کہ آپ لوگوں کو اندھیروں سے اجالے کی طرف لائیں (رات سے فجر کی طرف) ان کے پروردگار کے حکم سے،زبردست و تعریفوں والے اللہ کی طرف

पालनहार के आदेश से, प्रभुत्वशाली और प्रशंसा योग्य ईश्वर की ओर
(5) (याद रखो जब कि) हमने मूसा को अपने चिन्ह देकर भेजा कि तू अपनी जाति को अन्धकार से प्रकाश में निकाल और उन्हें ईश्वर के उपकार याद दिला.....
सूरत अहज़ाब 33, आयत 46, और ईश्वर के आदेश से उसकी ओर बुलाने वाला और उज्ज्वल दीप,
सूरत दुख़ान 44, आयत 3, निःसन्देह हमने इस कुरआन को उस अधर्म की अन्धकार रात्रि में उतारा है जो इसके कारण सम्पन्नता वाली हो गई निःसन्देह हम डराने वाले हैं,
(4) और इस कुरआन में हर युक्ति वाले कार्य का निर्णय है,
सूरत तलाक 65, आयत 11, अर्थात रसूल जो तुम्हें ईश्वर के स्पष्ट आदेश नियम पढ़कर सुनाता है ताकि उन लोगों को जो विश्वास लाएं और शुभ कार्य करें वह अन्धकार से प्रकाश की ओर ले आएं
सूरत अलहदीद 57, आयत 9, वह ईश्वर ही है जो अपने बन्दे पर स्पष्ट आयतें उतारता है ताकि वह तुम्हें अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाए अर्थात अधर्म की रात्रि से धर्म के प्रभात तक, निःसन्देह ईश्वर तुम पर नर्मी करने वाला दया करने वाला है,
सूरत तारिक 86, आयत 2, और आपको ईश्वर से बढ़कर और कौन बता सकता है कि रात्रि अन्धकार में प्रकट होने वाला क्या है अर्थात अन्धकार को दूर करने वाला क्या है,
(3) वह एक चमकता हुआ तारा है अर्थात कुरआन और मुहम्मद स0
सुरतुलफजर 89, आयत 1, देखो इस प्रकाश को जो अधर्म के अन्धकार के बाद आने वाला है जैसे रात्रि के अन्धकार के बाद प्रभात का प्रकाश आता है
(2) और इस पर भी मनन करो कि अन्धकार रात्रि के बाद प्रकाश अर्थात व्याकुलताओं के बाद सम्पन्नता आसानी आती है रात्रि व्याकुलता चली जाती है

इन आयात के लिखने का तात्पर्य यह है कि इनमें ईश्वर ने यह बताया है कि यह कुरआन इसलिए अवतरित किया गया है कि इसके द्वारा मुहम्मद स0 अधर्म की अन्धकार रात्रि को दूर कर दें और धर्म का प्रकाश अर्थात प्रभात हो जाए इस प्रकार की कुरआन में और भी आयात है जो वाचक कुरआन की दृष्टि से गुप्त नही है अब इन आयात के प्रकाश में सूरत 'कदर' का भावार्थ अवलोकन हो,

(۵)(یاد رکھو جب کہ) ہم نے موسیٰ کو اپنی نشانیاں دے کر بھیجا کہ تو اپنی قوم کو اندھیروں سے روشنی میں نکال اور انہیں اللہ کے احسانات یاد دلا...
سورت احزاب ۳۳ آیت ۴۶۔ اور اللہ کے حکم سے اس کی طرف بلانے والا اور روشن چراغ سورت دخان ۴۴ آیت ۳۔ یقیناً ہم نے اس قرآن کو اُس لادینی کی اندھیری رات میں اتارا ہے جو اس کی وجہ سے بابرکت ہوگئی بے شک ہم ڈرانے والے ہیں۔
(۴)اور اس قرآن میں ہر حکمت والے کام کا فیصلہ ہے
سورت طلاق ۶۵۔ آیت ۱۱۔ یعنی رسول جو تمہیں اللہ کے صاف صاف احکام پڑھ کر سناتا ہے تا کہ ان لوگوں کو جو ایمان لائیں اور نیک عمل کریں وہ تاریکیوں سے روشنی کی طرف لے آئے....
سورت الحدید ۵۷۔ آیت ۹۔ وہ اللہ ہی ہے جو اپنے بندے پر واضح آیتیں اتارتا ہے تا کہ وہ تمہیں اندھیروں سے نور کی طرف لے جائیں یعنی لادینی کی رات سے دین کے فجر تک یقیناً اللہ تعالیٰ تم پر نرمی کرنے والا رحم کرنے والا ہے
سورت طارق ۸۶۔ آیت ۲۔ اور آپ کو اللہ سے بڑھ کر اور کون بتا سکتا ہے کہ رات کے اندھیرے میں نمودار ہونے والا کیا ہے یعنی اندھیروں کو دور کرنے والا کیا ہے
(۳)وہ ایک چمکتا ہوا تارا ہے یعنی قرآن اور محمدؐ۔
سورت الفجر ۸۹۔ آیت ۱، دیکھو اس روشنی کو جو لادینی کی تاریکی کے بعد آنے والی ہے جیسے رات کے اندھیرے کے بعد فجر کی روشنی آتی ہے
(۲)اور اس پر بھی غور کرو کہ تاریک رات کے بعد روشنی یعنی پریشانیوں کے بعد خوشحالی آسانی آتی ہے رات پریشانی چلی جاتی ہے ان آیات کے لکھنے کا مقصد یہ ہے کہ ان میں اللہ نے یہ بتایا ہے کہ یہ قرآن اس لئے نازل کیا ہے کہ اس کے ذریعہ محمدؐ لادینی کی تاریک رات کو دور کردیں اور دین کی روشنی یعنی فجر ہو جائے اس طرح کی آیات قرآن میں اور بھی ہیں جو قرآن کے قاری کی نظر سے پوشیدہ نہیں ہیں اب ان آیات کی روشنی میں سورت قدر کا مفہوم ملاحظہ ہو۔

हमने इस पुस्तक करूणा का प्रेषण उस अन्धेरी रात में आरम्भ किया जो बहुत महत्वपूर्ण हो गई अर्थात उस अन्धकार और अत्याचार को देखकर ही हमारी अनुकम्पा आवेश में आई (1) {44:3,4: 2:185,155,156;2:256;5:33;6:123;33:43;14:15;5: 7:9,5:33}

ہم نے اس کتاب رحمت کا نزول اس تاریک رات میں شروع کیا جو بہت اہم ہوگئی۔ یعنی اس تاریکی اور ظلم کو دیکھ کر ہی ہماری رحمت جوش میں آئی (۱) [۴۴:۳،۴: ۲:۱۸۵،۱۵۵: ۱۴:۱:۴۴:۳۳: ۵:۳۳: ۶:۱۲۳: ۳۳:۴۳:۱۴:۵:۵۷:۹]

आपको ईश्वर से बढ़कर और कौन बता सकता है कि यह नई मूल्य और पैमानों की रात्रि जिसमें यह अवतरित हुआ है किस प्रकार सम्मानित है (2) {86:3;89:1}

آپ کو اللہ سے بڑھ کر اور کون بتا سکتا ہے کہ یہ نئی اقدار اور نئے پیمانوں کی شب جس میں یہ نازل ہوا ہے کس قدر باعظمت ہے (۲) [۸۶:۳:۸۹:۱]

वह अधर्म की अंधेरी रात्रि जिसमें सबसे बड़े दाना ज्ञानी हकीम की करूणा आवेश में आई और वह अंधेरी रात बहुत महत्वपूर्ण रात हो गई वह उस ज्ञानी की युक्ति भरी पुस्तक से उज्ज्वल हो गई जो हजारहा अर्थात सब ज्ञानियों की बुद्धिमत्ता से बेहतर मंगल है अर्थात वह दाना सबसे उत्तम कल्याण है यह दानाई हिकमत उस अधर्म की रात्रि में आई जिसमें दुनिया वही के प्रकाश से वंचित थी (3) {86:3;89:1}

وہ لادینی کی اندھیری رات جس میں سب سے بڑے دانا حکیم کی رحمت جوش میں آئی اور وہ اندھیری رات بہت اہم رات ہوگئی وہ اس دانا کی حکمت بھری کتاب سے روشن ہوگئی جو ہزاروں یعنی سب داناؤں کی دانائی سے بہتر خیر ہے یعنی وہ دانا سب سے بہتر خیر ہے یہ دانائی حکمت اس لادینی کی رات میں آئی جس میں دنیا وحی کی روشنی سے محروم تھی (۳)[۸۶:۳:۸۹:۱]

उस अधर्म की अन्धकार रात्रि के अंधकार को दूर करने के लिए फरिश्ते ज्ञान वही रूह के साथ ईश्वर के आदेश से अवतरित होते रहेंगे (मुहम्मद स0 पर) जिसमें हर कार्य को पूरा करने की जानकारी होगी (4)

اس لادینی کی تاریک رات کے اندھیرے کو دور کرنے کے لئے فرشتے علم وحی روح کے ساتھ اللہ کے حکم سے نازل ہوتے رہیں گے (محمدؐ پر) جس میں ہر امر کو انجام دینے کی معلومات ہوگی (۴)

और ज्ञान वही के साथ नबी पर अवतरित होते रहेंगे यहां तक कि अधर्म का अन्धकार अर्थात काली रात्रि दूर होकर धर्म का प्रकाश प्रकट हो जाए अर्थात धर्म का प्रभात हो जाए (5)

اور وہ علم وحی کے ساتھ نبی پر نازل ہوتے رہیں گے یہاں تک کہ لادینی کا اندھیرا یعنی کالی رات دور ہو کر دین کا نور روشن ہو جائے یعنی دین کا فجر ہو جائے (۵)

नोट- प्रचलित अनुवादों और अहादीस में इस सूरत में एक शबे कदर मानी गई है जो हर साल रमजान के महीने में आती है परन्तु उलमा ने उस रात में इतना मतभेद किया है कि कोई विश्वास के साथ नहीं कह सकता कि वह रात कौन-सी है व्यक्ति व्याकुल है, यदि रात पर भी विश्वास कर लिया जाए कि वह सताईसवीं रात है तब भी काम नहीं बनता क्यों? फिर प्रश्न उत्पन्न होता है कि वह समय कौन-सा है क्योंकि दुनिया के हर क्षेत्र में किसी न किसी समय में रात होती है भारत में जब रात होती है तो अमरिका में दिन है जब वहां दिन है तो यहां रात ऐसे ही बहुत से क्षेत्र ऐसे हैं जहां रात ही होती है बहुत ऐसे हैं कि वहां दिन ही होता है,

और जहां पर कुरआन का अवतरण हुआ था क्या वही समय माना जाएगा तो यह भी एक उलझा हुआ प्रसंग है अतः विचार करो वास्तविकता क्या है?

वास्तविकता वही है जो मैंने लिखी है अर्थात अन्याय अत्याचार की अन्धेरी रात जिसमें मानवता चित्कार कर रही थी तो ईश्वर की अनुकम्पा आवेश में आई और अपने नूर प्रकाश से मुहम्मद स0 के द्वारा उनके पूरे ईशदौत्य के जीवन में अधर्म अत्याचार का अन्धकार दूर कर दिया और प्रभात हो गया,

बहुत क्षेत्र ऐसे हैं जहां पर लगभग सत्ताईसवीं रात 24 घंटे बाद आती है जैसे अरब, इंडिया,

आयत में मलाइका और रूह का उल्लेख है, कि वह अवतरित होते हैं अपने रब के आदेश से तो उनका कार्य क्या है क्या वह उस रात्रि में किसी व्यक्ति से मिलते हैं? उनको मिलना चाहिए परन्तु कोई नहीं बता सकता,

परन्तु मुहम्मद स0 और सम्पूर्ण ईशदूत यह बता सकते थे और बताया है कि जिबराईल अमीन हमारे पास वही लेकर आते रहे हैं और जब उनका देहान्त हो गया तो यह सिलसिला बन्द हो गया, अतः इस सूरत का सम्बन्ध उस शब-ए-कदर से नहीं जिसको मुसलमान हर रमजान में तलाश करते हैं, अपितु इसका सम्बन्ध उस प्रसंग से है जिसको भावार्थ में मैंने लिखा है वैसे मलाइका इस जगत में हर समय कर्मशील हैं ईश्वर के आदेश से,

नوٹ:۔ رائج الوقت تراجم اور احادیث میں اس سورت میں ایک ایک شب قدر مانی گئی ہے جو ہر سال رمضان کے مہینے میں آتی ہے مگر علماء نے اس رات میں اتنا اخلاف کیا ہے کہ کوئی یقین کے ساتھ نہیں کہہ سکتا کہ وہ رات کونسی ہے آدمی پریشان ہے. اگر رات پر بھی یقین کرلیا جائے کہ وہ ستائسویں رات ہے تب بھی کام نہیں بنتا کیوں؟ پھر سوال پیدا ہوتا ہے کہ وہ وقت کونسا ہے کیونکہ دنیا کے ہر خطے میں کسی نہ کسی وقت میں رات ہوتی ہے ہندوستان میں جب رات ہے تو امریکہ میں دن ہے جب وہاں دن ہے تو یہاں رات ایسے ہی بہت سے علاقے ایسے ہیں جہاں رات ہی ہوتی ہے بہت ایسے ہیں کہ وہاں دن ہی ہوتا ہے

اور جہاں پر قرآن کا نزول ہوا تھا کیا وہی وقت مانا جائے گا تو یہ بھی ایک الجھا ہوا مسلہ ہے اس لئے غور کرو حقیقت کیا ہے

حقیقت وہی ہے جو میں نے لکھی ہے یعنی ظلم و زیادتی کی تاریک رات جس میں انسانیت چیخ رہی تھی تو اللہ کی رحمت جوش میں آئی اور اپنے نور سے محمدؐ کے ذریعہ ان کی پوری نبوت کی زندگی میں لادینی ظلم کی تاریکی کو دور کردیا اور فجر ہوگیا.

بہت سے علاقے ایسے ہیں جہاں پر تقریباً ستائسویں رات ۲۴ گھنٹے بعد آتی ہے جیسے عرب انڈیا.

آیت میں ملائکہ اور روح کا ذکر ہے کہ وہ نازل ہوتے ہیں اپنے رب کے حکم سے تو ان کا کام کیا ہے؟ کیا وہ اس شب قدر میں کسی آدمی سے ملے ہیں؟ ان کو ملنا چاہیے مگر کوئی نہیں بتا سکتا.

مگر محمدؐ اور سارے رسول یہ بتا سکتے تھے اور بتایا ہے کہ جبرائیل امین ہمارے پاس وحی لے کر آتے رہے ہیں اور جب ان کا انتقال ہوگیا تو یہ سلسلہ بند ہوگیا اس لئے اس سورت کا تعلق اس شب قدر سے نہیں جس کو مسلمان ہر رمضان میں تلاش کرتے ہیں بلکہ اس کا تعلق اس مسلہ سے ہے جس کو مفہوم میں میں نے لکھا ہے ویسے ملائکہ اس کائنات میں ہر وقت سرگرم عمل ہیں اللہ کے حکم سے.

सूरत बय्यिनह - मक्की (98)

पुस्तक वाले और अनेकेश्वर वादियों में से जिन्होंने इनकार किया वह अपनी हठ से रुकने वाले न थे यहां तक कि उनके पास स्पष्ट प्रमाण आ जाएं (1) {4:135;74:52}

अर्थात ईश्वर का ईशदूत पवित्र पन्ने पढ़ता हुआ(2)

जिनमें उचित और सत्य बातें लिखी हों (3)

यद्यपि पुस्तक वाले खुली हुई स्मृति आ जाने के बाद ही मतभेद में पड़े और विविध हो गए (4)

और उनको जो आदेश हुआ था निःसन्देह यही हुआ था कि वह ईश्वर ही की पूजा करेंगे उसके धर्म को निर्मल रखे और नमाज स्थापित करें और दान दें और यही सच्चा धर्म है (5) {6:161}

पुस्तक वाले और अनेकेश्वर वादियों में से जिन लोगों ने कुफ्र का मार्ग ग्रहण किया (उनका स्थान) नर्क की अग्नि में है जिसमें वह सदैव रहेंगे वह लोग निकृष्टतम रचना हैं (6)

और जो लोग विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे

سورت البینۃ۔مکی (۹۸)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

اہل کتاب اور مشرکین میں سے جنہوں نے انکار کیا وہ اپنی ہٹ سے باز آنے والے نہ تھے یہاں تک کہ ان کے پاس کھلی ہوئی دلیل آجائے (۱) [۴:۱۳۵؛۷۴:۵۲]

یعنی اللہ کا رسول پاکیزہ اوراق پڑھتا ہوا (۲)

جن میں درست اور معقول باتیں لکھی ہوں (۳)

حالانکہ اہل کتاب کھلی ہوئی نشانی آجانے کے بعد ہی اختلاف میں پڑے اور متفرق ہوگئے (۴)

اور ان کو جو حکم ہوا تھا یقیناً یہی ہوا تھا کہ وہ اللہ ہی کی عبادت کریں اس کے لئے دین کو خالص رکھیں اور نماز قائم کریں اور زکوۃ دیں اور یہی سچا دین ہے (۵) [۶:۱۶۱]

اہل کتاب اور مشرکین میں سے جن لوگوں نے کفر کی راہ اختیار کی (ان کا ٹھکانا) دوزخ کی آگ میں ہے جس میں وہ ہمیشہ رہیں گے وہ لوگ بدترین مخلوق ہیں (۶)

اور جو لوگ ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے وہ لوگ

بہترین مخلوق ہیں(۷)
ان کی نیکیوں کا صلہ ان کے رب کے پاس ہیشگی کے باغ ہیں جن کے نیچے نہریں بہہ رہی ہوں گی وہ ان میں ہمیشہ رہیں گے اللہ ان سے راضی وہ اللہ سے راضی یہ صلہ ان کے لئے ہے جو اپنے رب کی نافرمانی کرنے سے ڈرا (۸)[۱۰۰:۹]

سورت الزلزال ـ مدنی (۹۹)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

جب زمین ہلا دی جائے گی جس طرح اس کو ہلانا ہے(۱)
اور اپنے اندر کے سارے بوجھ نکال کر باہر ڈال دے گی (۲)[۸۴:۴]
انسان کہیگا اسے کیا ہو گیا ہے(۳)[۲۷:۸۲;۱۷:۱۳]
اس دن زمین اپنی سب خبریں بیان کر دے گی (۴)[۴۱:۲۱]
کیوں کہ اسے تیرے رب کا یہی حکم ہوگا (۵)
اس دن لوگ گروہ گروہ ہو کر آئیں گے تا کہ ان کو ان کے اعمال دکھائے جائیں (۶)[۶:۹۴;۱۹:۹۵]
تو جس نے ذرہ بھر نیکی کی ہوگی دیکھ لےگا (۷)[۱۰۱:۶،۹]
اور جس نے ذرہ بھر برائی کی ہوگی وہ اسے دیکھ لےگا (۸)

سورت العدیٰت ـ مکی (۱۰۰)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

ذرا ان لوٹ مار کرنے والے ڈاکوؤں اور قزاقوں کو دیکھو لوگ اطمینان سے گہری نیند سو رہے ہوتے ہیں کہ وہ اپنے گھوڑوں کو سرپٹ دوڑاتے ان پر حملہ آور ہو جاتے ہیں (۱)
گھوڑوں کو اس تیزی سے دوڑاتے ہیں کہ ان کے سموں سے آگ کی چنگاریاں نکلتی ہیں (۲)
اور صبح کے وقت جب سونے والوں پر نیند کا غلبہ ہوتا ہے تو وہ لوٹ مار اور قتل و غارت گری کے لئے آ پہنچتے ہیں (۳)
اور ایسا گرد و غبار اڑاتے ہیں کہ اس سے دہشت طاری ہو جائے اور کوئی چیز صاف دکھائی نہ دے (۴)
اور اس طرح ان سونے والوں کی جمعیت کے اندر گھس کر طوفان برپا کر دیتے ہیں (۵)
[مگر یہ لوٹ مار اور قتل و غارت گری اللہ کی نافرمانی ہے]
(یعنی قومیں ایک دوسرے پر ناحق چڑھائی کرتی ہیں اور ملک گیری کی ہوس میں کشت و خون کرتی ہیں ان کا کشت و خون کرنا اور ملک میں فساد برپا کرنا اس بات پر شاہد ہے کہ) انسان اپنے رب کا بڑا ہی ناشکرا ہے (۶)
اور انسان جانتا بھی ہے کہ یہ کام اللہ کی نافرمانی ہے (مگر جاننے کے باوجود بھی وہ دولت اور ملک گیری کی ہوس میں یہ کر رہا ہے) (۷)
اور انسان دولت کی محبت میں بری طرح سے گرفتار ہے (۸)
تو کیا یہ نافرمان اس وقت کو نہیں جانتا جب وہ مردے جو

वह लोग उत्तम रचना है (7)
उनके सत्कर्मों का फल उनके रब के पास सदैव के उपवन है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी वह उनमें सदैव रहेंगे ईश्वर उनसे प्रसन्न वह ईश्वर से प्रसन्न यह बदला उनके लिए है जो अपने रब की अवज्ञा करने से डरा (8) {9:100}

सूरतुल ज़िलज़ाल - मदनी (99)

जब धरती हिलादी जाएगी जिस प्रकार उसको हिलाना है (1)
और अपने अन्दर के सारे भार निकाल कर बाहर डाल देगी (2) {84:4}
इन्सान कहेगा इसे क्या हो गया है (3) {27:82;17:13}
उस दिन पृथ्वी अपने सब समाचार वर्णन कर देगी (4) {41:21}
क्योंकि उसे तेरे रब का यही आदेश होगा (5)
उस दिन लोग दल दल होकर आएँगे ताकि उनको उनके कर्म दिखाए जाऐं (6) {6:94;19:95}
तो जिसने कण भर सत्कर्म किया होगा देख लेगा (7) {101:6,9}
और जिसने कण भर बुराई की होगी वह उसे देख लेगा (8)

सूरतुल आदियात - मक्की (100)

तनिक उन लूट मार करने वाले डाकुओं और लुटेरों को देखो लोग सन्तोष से गहरी नींद सो रहे होते हैं कि वह अपने घोड़ों को सरपट दौड़ाते उन पर आक्रमण कर देते हैं (1)
घोड़ों को इस तीव्रता से दौड़ाते हैं कि उनके सुमों से चिंगारियां निकलती हैं (2)
और प्रातः के समय जब सोने वालों पर निद्रा का अधिक्रमण होता है तो वह लूट मार और वध के लिए आ पहुंचते हैं (3)
और ऐसी धूल उड़ाते हैं कि उससे आतंक छा जाए और कोई वस्तु स्पष्ट दिखाई न दे (4)
और इस प्रकार उन सोने वालों के दल के अन्दर घुसकर तांडव उत्पन्न कर देते हैं (5)
(परन्तु यह लूट मार और वध, विनाश ईश्वर की अवज्ञा है)
(अर्थात जातियां एक दूसरे पर अनुचित आक्रमण करती हैं और सत्ता की लोलुपता में रक्तपात करती हैं उनका रक्तपात करना और देश में उपद्रव उत्पन्न करना इस बात पर साक्षी है कि) इन्सान अपने ईश्वर का बड़ा ही कृतघ्न है (6)
और इन्सान जानता भी है कि यह काम ईश्वर की अवज्ञा है (परन्तु जानने के बाद भी वह धन और सत्ता की लोलुपता में यह कर रहा है) (7)
और इन्सान धन के प्रेम में बुरी प्रकार से बन्दी है (8)
तो क्या यह अवज्ञाकारी उस समय को नही जानता

जब वह मृतक जो समाधियों में दबे हैं बाहर निकाल लिए जाऐंगे (9)
और दुनिया में जो भेद वक्षों में छुपा रखे थे उसे प्रकट कर दिया जाएगा (10)
उस दिन उनका ईश्वर उनसे भलिभांति अवगत होगा (वह अपने पापों के दण्ड से बच न सकेंगे) (11)

सूरत अलकारिअह – मक्की (101)

खड़ खड़ा देने वाली (1)
क्या है वह खड़ खड़ा देने वाली (2)
और ईश्वर से अधिक और कौन बता देने वाला है आपको कि वह खड़ा खड़ा देने वाली क्या है (3)
(वह कयामत है) जिस दिन इन्सान बिखरे हुए परवानों की भांति हो जाऐंगे (4) {99:6}
और पर्वत ऐसे हो जाऐंगे जैसे धुनकी हुई रंग बिरंगी ऊन (5)
फिर जिनके पल्ले भारी होंगे (6) {23:101,103}
वह तो अच्छे सुख में होंगे (7)
और जिनके पल्ले हलके होंगे (8) {21:47,7:8,9}
उसका स्थान हाविया होगा (9) {70:10,14}
और आपको ईश्वर से बढ़कर और कौन बता सकता है कि हाविया क्या है (10)
वह दहकती हुई अग्नि होगी (11)

सूरत तकासुर – मक्की (102)

(लोगो!) तुम को माल की अधिकता की चाहत ने अचेत कर दिया है (1)
यहां तक कि तुम इसी चाहत में समाधियों को जा देखोगे (2)
देखो सुनो तुम्हें बहुत जल्द ज्ञात हो जाएगा (3)
फिर सुनो तुम्हें बहुत जल्द ज्ञात हो जाएगा (4)
देखो यदि तुम दृढ़ विश्वास से जान लो (5)
तुम अवश्य नर्क को देखोगे (6)
फिर उसको ऐसा देखोगे कि आंख का विश्वास आ जाएगा (7)
फिर उस दिन तुम से अवश्य प्रसाद के विषय में प्रश्न होगा (8)

सूरतुल असर – मक्की (103)

समय साक्षी है (अर्थात समय से ज्ञात कर लो जो इतिहास में लिखा हुआ है) (1)
निःसन्देह इन्सान घाटे में है (2) {20:128}
सिवाए उन लोगों के जो विश्वास लाए और सत्कर्म करते रहे और एक दूसरे को सत्य का उपदेश और शान्ति का प्रचार करते रहे और स्वयं भी धैर्य करते रहे और दूसरों को भी धैर्य करने को कहते रहे वह हानि में नहीं है (3) {2:177}

قبروں میں دفن ہیں باہر نکال لئے جائیں گے (۹)
اور دنیا میں جو بھید سینوں میں چھپا رکھا تھا اسے ظاہر کر دیا جائے گا (۱۰)
اور اس روز ان کا پروردگار ان سے اچھی طرح واقف ہوگا (وہ اپنے جرموں کی سزا سے بچ نہ سکیں گے) (۱۱)

سورت القارعہ۔مکی (۱۰۱)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

کھڑکھڑا دینے والی (۱)
کیا ہے وہ کھڑکھڑا دینے والی (۲)
اور اللہ سے زیادہ اور کون بتا دینے والا ہے آپ کو کہ وہ کھڑکھڑا دینے والی کیا ہے (۳)
(وہ قیامت ہے) جس دن انسان بکھرے ہوئے پروانوں کی طرح ہو جائیں گے (۴) [۹۹:۶]
اور پہاڑ ایسے ہو جائیں گے جیسے دھنکی ہوئی رنگ برنگ کی اون (۵)
پھر جس کے پلے بھاری ہوں گے (۶) [۲۳:۱۰۱،۱۰۳]
وہ تو دل پسند آرام میں ہوں گے (۷)
اور جن کے پلے ہلکے ہوں گے (۸) [۲۱:۴۷،۷:۸،۹]
اس کا ٹھکانا ہاویہ ہوگا (۹) [۷۰:۱۰،۱۴]
اور آپ کو اللہ سے بڑھ کر اور کون بتا سکتا ہے کہ وہ ہاویہ کیا ہے (۱۰)
وہ دہکتی ہوئی آگ ہوگی (۱۱)

سورت التکاثر۔مکی (۱۰۲)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

لوگو! تم کو مال کی زیادتی کی چاہت نے غافل کر دیا (۱)
یہاں تک کہ تم اسی چاہت میں قبروں کو جا دیکھو گے (۲)
دیکھو سنو تمہیں عنقریب معلوم ہو جائے گا (۳)
پھر سنو تمہیں عنقریب معلوم ہو جائے گا (۴)
دیکھو اگر تم یقینی طور پر جان لو (۵)
تم ضرور دوزخ کو دیکھو گے (۶)
پھر اس کو ایسا دیکھو گے کہ آنکھ کا یقین آ جائے گا (۷)
پھر اس دن تم سے ضرور نعمت کے بارے میں سوال ہوگا (۸)

سورت العصر۔مکی (۱۰۳)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

زمانہ گواہ ہے (یعنی زمانہ سے معلوم کر لو جو تاریخ میں لکھا ہوا ہے) (۱) بے شک انسان خسارے میں ہے (۲) [۲۰:۱۲۸]
سوائے ان لوگوں کے جو ایمان لائے اور نیک عمل کرتے رہے اور ایک دوسرے کو حق کی نصیحت اور خیر کی تلقین کرتے رہے اور خود بھی صبر کرتے رہے اور دوسروں کو بھی صبر کرنے کو کہتے رہے وہ نقصان میں نہیں ہیں (۳) [۲:۱۷۷]

समीक्षा :- समय साक्षी है से अर्थ यह है कि जिन लोगों ने सत्कर्म किए वह लाभ में रहे और जिन्होंने दुष्कर्म किये वह समाप्त हो गए इसको जानने के लिए इतिहास को पढ़ लिया जाए क्योंकि जातियों के समाचार उसने सुरक्षित कर रखे हैं और कुछ जबानी भी याद हैं उनसे ज्ञात कर लो.

और यदि इतिहास न पढ़े तो अपनी कुरआन ही उठाकर देख लो इसने हर काल को अपने अन्दर छुपा रखा है नष्ट हुए नगरों के चिन्ह देख ले पुराने लोगों से ज्ञात कर ले और बहुत सी घटना तो तेरे सामने भी होती रहती हैं उन बातों से तुझे ज्ञान हो जाएगा कि पाप करने वाले यातना से नष्ट हो जाते हैं अतः इन्सान का लाभ आज्ञाकारी में है अवज्ञा में घाटा है सोच ले और अच्छे कर्म कर ले चूंकि कर्म में तू स्वतंत्र है परन्तु मानव की स्मरण शक्ति निर्बल है (20:128)

نوٹ:۔زمانہ شاہد ہے سے مطلب یہ ہے کہ جن لوگوں نے اچھے عمل کئے وہ فائدے میں رہے اور جنہوں نے بُرے عمل کئے وہ ختم ہو گئے۔اس کو جاننے کے لئے تاریخ کو پڑھ لیا جائے کیونکہ قوموں کے حال اس نے محفوظ کر رکھے ہیں اور کچھ زبانی بھی لوگوں کو یاد ہیں ان سے معلوم کرلو۔

اور اگر تاریخ نہ پڑھے تو اپنی قرآن ہی اٹھا کر دیکھ لے اس نے ہر زمانے کو اپنے اندر چھپا رکھا ہے۔برباد شدہ بستیوں کے نشان دیکھ لے پرانے لوگوں سے معلوم کر لے اور بہت سے واقعات تو تیرے سامنے بھی ہوتے رہتے ہیں ان باتوں سے تجھے معلوم ہو جائے گا کہ گناہ کرنے والے عذاب سے برباد ہو جاتے ہیں اس لئے انسان کا فائدہ فرمانبرداری سے ہے نافرمانی میں خسارہ ہے سوچ لے اور اچھے عمل کر لے چونکہ عمل میں تو آزاد ہے مگر انسان کا حافظہ کمزور ہے(۲۰:۱۲۸)

सुरत हुमुजाह - मक्की (104)

سورت الھمزہ۔مکی(۱۰۴)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

विनाश है हर उस व्यक्ति के लिए जो दोष टटोलने वाला और पीछे निन्दा करने वाला है (1)
जो धन एकत्र करता है और उसको गिन गिनकर रखता है (2)
और विचार करता है कि उसका धन उसे सदैव जीवित रखेगा (3) {26:128,129}
(परन्तु ऐसा) कभी न होगा वह निःसन्देह हुतमा नर्क में डाला जाएगा (4)
और आपको ईश्वर से बढ़कर और कौन बता सकता है कि हुतमा क्या है? (5)
और वह ईश्वर की भड़काई हुई आग है (6)
जो हृदयों तक पहुंच जाएगी (7)
(और) वह उसमें बन्द कर दिए जाएंगे (8) {69:30,34}
अर्थात अग्नि के लम्बे लम्बे स्तम्भों में (9)

تباہی ہے ہر اس شخص کے لئے جو عیب ٹٹولنے والا اور غیبت کرنے والا ہے(۱)
جو مال جمع کرتا ہے اور اس کو گن گن کر رکھتا ہے(۲)
اور خیال کرتا ہے کہ اس کی دولت اسے ہمیشہ زندہ رکھے گی(۳)[۲۶:۱۲۸،۱۲۹]
(لیکن ایسا) بھی نہ ہوگا وہ یقیناً حطمہ دوزخ میں ڈالا جائے گا(۴)
اور آپ کو اللہ سے بڑھ کر اور کون بتا سکتا ہے کہ حطمہ کیا ہے(۵)
اور وہ اللہ کی بھڑکائی ہوئی آگ ہے(۶)
جو دلوں تک پہنچ جائے گی(۷)
(اور) وہ اس میں بند کر دئے جائیں گے(۸)[۶۹:۳۰،۳۴]
یعنی آگ کے لمبے لمبے ستونوں میں(۹)

सुरतुल फील - मक्की (105)

سورت الفیل۔مکی(۱۰۵)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

क्या तुमने नहीं देखा कि तेरे रब ने हाथी वालों के साथ क्या किया है? (1)
क्या उसने उसकी गुप्त चालों को अकारत नहीं कर दिया (2)
और उन पर झुण्ड के झुण्ड पक्षी भेजे ताकि उनके मृतक मांस को खा जाएं (3)
और तुम उनपर कंकर के पत्थर फैंकते थे (4) {8:17,67:16}
तो उनको चबाए हुए भुस की भांति नष्ट कर दिया (5)

کیا تم نے نہیں دیکھا کہ تیرے رب نے ہاتھی والوں کے ساتھ کیا کیا؟(۱)
کیا اس نے اس کی خفیہ تدبیر کو اکارت نہیں کر دیا(۲)
اور ان پر جھنڈ کے جھنڈ پرندے بھیجے تاکہ ان کے مردہ گوشت کو کھا جائیں(۳)
اور تم ان پر کنکر کے پتھر پھینکتے تھے(۴)[۸:۱۷،۶۷:۱۶]
تو ان کو چبائے ہوئے بھس کی طرح تباہ کر دیا(۵)

समीक्षा- इस सूरत के अनुवाद और तफसीरों में कुछ विचित्र बातें लिखी मिलती हैं हाथी वाली सैना को अबाबील पक्षियों के पत्थरों से भुस होते लिखा है और अरबों को मुख्यतः कुरैश को वहां से फरार होकर पर्वतों में जाकर छुपना लिखा है जबकि यह बात वास्तविकता के विपरीत है.

अबरहा ने मक्काह पर उस समय आक्रमण किया जब अरब हज कर रहे थे ऐसी दशा में सब अरब काबे की सुरक्षा को छोड़कर पर्वतों में छुपकर बैठने को कैसे सहन कर लेते उस समय तो पर्याप्त

نوٹ:۔اس سورت کے ترجمہ اور تفسیروں میں کچھ عجیب باتیں لکھی ملتی ہیں ہاتھی والے لشکر کو ابابیل پرندوں کے پتھروں سے بھس ہوتے لکھا ہے اور عربوں کو اور خاص طور سے قریش کو وہاں سے فرار ہو کر پہاڑوں میں جا کر چھپنا لکھا ہے جب کہ یہ بات حقیقت کے خلاف ہے۔

ابرہہ مکہ پر اس وقت حملہ آور ہوا جب عرب مناسک حج ادا کر رہے تھے ایسی صورت میں سب عرب کعبہ کی حفاظت سے دست بردار ہو کر پہاڑوں

संख्या में थे, परन्तु इसके अतिरिक्त थोड़ी थोड़ी संख्या में अरबों ने अबरहाको मार्ग में रोका और लड़े और वहां से आगे अबरहा उस समय बढ़ा जब वह संख्या समाप्त हो गई इतिहास साक्षी है,

वास्तव में अरब भागे नही थे अपितु कूटनीति के अन्तर्गत उन्होंने छापा मार युद्ध अपनाया था, चूंकि खुले मैदान में अबरहा से मुकाबिला सम्भव न था और भागना भी सम्भव न था वह युद्ध तीन दिन तक चलता रहा उन तीन दिनों में अरबों के आक्रमणों के साथ साथ ईश्वर की भेजी हुई हासिब वायु जो अरबों की सहायता कर रही थी ने अबरहा की सैना को चूरचूर करके रख दिया,

हासिब वह वायु होती है जिसमें पत्थर धूल सब होता है जैसी खन्दक युद्ध के अवसर पर आई थी, जिन पक्षियों का उल्लेख है वह केवल उनके मृतक शवों का मांस खाने के लिए प्रकट हुए थे जैसे आज भी मृतक जीवधारियों को खाने के लिए चील कव्वे गिद्ध आते हैं जो झुण्ड के झुण्ड आते हैं यदि वह पक्षी न आते तो इतनी बड़ी संख्या को कौन ठिकाने लगाता,

शब्द अबाबील का अर्थ झुण्ड गोल जत्था है न कि वह छोटा सा पक्षी और पक्षी पत्थर गिरा सकता है न कि फैंकना, आयत में रमी है और यह जब ही सम्भव है जब किसी वस्तु को शक्ति के साथ फैंका जाए और फैंक व्यक्ति सकता है या कोई यंत्र न कि पक्षी, पक्षी तो हर वस्तु को छोड़ सकता है गिरा सकता है, अतः शक्ति के द्वारा चारो ओर को फैंकने को रमी कहते हैं हाथ में या चोंच में पकड़कर गिराने को रमी नही कहते अरबी भाषी जानते हैं,

एक बात विचारणीय यह है कि ईश्वर इन्सान की सहायता जब ही करता है जब मनुष्य अपनी सहायता स्वयं करता है अतः अरबों ने अबरहा से युद्ध किया और ईश्वर ने उनकी सहायता की और अबरहा को खाया हुआ भुस बना दिया जो कुरआन में आया है,

अब से पहले इस सूरत का अनुवाद और तफसीर जो लिखी गई है उससे सिद्ध हो रहा है कि इन्सान कुछ भी न करे और ईश्वर पर विश्वास करके बैठ जाए ईश्वर अपने आप सब काम कर देगा जैसे काबा को बचा लिया, परन्तु यह विश्वास कुरआन और ईश्वर के नियम के विपरीत है अतः अरबों ने अबरहा का सामना बुद्धि से किया और ईश्वर ने सहायता की यह ईश्वर का नियम है और मुहम्मद स० ने हर अवसर पर ईश्वर के नियमानुसार प्रबन्ध किया और युद्ध किया,

इस सूरत का आरम्भ अलम तरा से हुआ है क्या तुमने नही देखा मानों उस समय इस घटना के प्रत्यक्ष दर्शी साक्षी उपस्थित थे मुहम्मद स० से इस शब्द को इसलिए सम्बंधित नही किया जा सकता कि मुहम्मद स० की उत्पत्ति इस घटना के बाद की है मुहम्मद स० उस समय विद्यमान न थे जो उपस्थित था उसको सूचना दी जा रही है मुहम्मद स० के द्वारा और बहुत व्यक्तियों ने अपने पद्यों कविता में इस घटना का वर्णन किया है और हासिब वायु का उल्लेख भी अधिकता से किया है इसलिए अरबों के पत्थरों के साथ साथ ईश्वर ने उन पर वह प्रचण्ड वायु चला दी जिसको हासिब कहते हैं जिसमें पत्थर के कण भी होते हैं जो विनाश मचा देते हैं जो खन्दक युद्ध में हुआ,

प्रसिद्ध कवि अबु कैस ने उल्लेख किया है और अबु हश्शाम इत्यादि ने अपनी पुस्तकों में उन साक्ष्यों को उद्धरण किया है और मौलाना फराही साहब ने भी अपनी तफसीर में विस्तार के साथ विवेचना की है कवि अबू कैस का पद्य,

फ़ा उर सिला मिन रब्बिहिम हासिबुन-यलुफ़्फ़ुहुम मिसला कफ़िल क़ज़म

میں چھپ کر بیٹھنے کو کیسے گوارہ کر سکتے تھے اس وقت تو کافی تعداد میں تھے مگر اس کے باوجود تھوڑی تھوڑی تعداد میں عربوں نے ابرہہ کو رستے میں روکا اور لڑے اور وہاں سے آگے ابرہہ اس وقت بڑھا جب وہ تعداد ختم ہوگئی تاریخ شاہد ہے۔

حقیقت میں عرب فرار نہیں ہوئے تھے بلکہ حکمت عملی کے تحت انہوں نے چھاپا مار جنگ اختیار کی تھی۔ چونکہ کھلے میدان میں ابرہہ سے مقابلہ ممکن نہ تھا۔ اور فرار بھی ممکن نہ تھا وہ جنگ تین دن تک جاری رہی ان تین دنوں میں عربوں کے حملوں کے ساتھ ساتھ اللہ کی بھیجی ہوئی حاصب ہوا جو عربوں کی مدد کر رہی تھی نے ابرہہ کے لشکر کو پامال کر کے رکھ دیا۔

حاصب وہ ہوا ہوتی ہے جس میں سنگ، گرد و غبار سب ہوتا ہے جیسی ہوا جنگ خندق کے موقع پر آئی تھی۔ جن پرندوں کا ذکر ہے وہ صرف ان کی مردہ لاشوں کا گوشت کھانے کے لئے نمودار ہوئے تھے جیسے آج بھی مردہ جانوروں کو کھانے کے لئے چیل کوے، گدھ آتے ہیں۔ جو جھنڈ جھنڈ آتے ہیں۔ اگر وہ جانور نہ آتے تو اتنی بڑی تعداد کو کون ٹھکانے لگاتا۔

لفظ ابابیل کا مطلب جھنڈ غول، جتھا ہے نہ کہ وہ چھوٹا سا پرندہ اور پرندہ پتھر گرا سکتا ہے نہ کہ پھینکنا۔ آیت میں رمی ہے اور یہ جب ہی ممکن ہے جب کسی چیز کو طاقت کے ساتھ پھینکا جائے اور پھینک آدمی سکتا ہے یا کوئی مشین نہ کہ پرندہ۔ پرندہ تو ہر چیز کو چھوڑ سکتا ہے گرا سکتا ہے اس لئے طاقت کے ذریعہ چاروں طرف کو پھینکنے کو رمی کہتے ہیں ہاتھ میں یا چونچ میں پکڑ کر گرانے کو رمی نہیں کہتے عربی داں جانتے ہیں۔

ایک بات قابل غور یہ ہے کہ اللہ انسان کی مدد جب ہی کرتا ہے جب انسان اپنی مدد خود کرتا ہے اس لئے عربوں نے ابرہہ سے جنگ کی اور اللہ نے ان کی مدد کی اور ابرہہ کو کھایا ہوا بھس بنا دیا۔ جو قرآن میں آیا ہے۔

سابق میں اس سورت کا ترجمہ اور تفسیر لکھی گئیں ہیں اس سے ثابت ہو رہا ہے کہ انسان کچھ بھی نہ کرے اور اللہ پر بھروسہ کر کے بیٹھ جائے اللہ اپنے آپ سب کام کر دے گا جیسے کعبہ کو بچا لیا لیکن یہ عقیدہ قرآن اور اللہ کی سنت کے خلاف ہے۔ اس لئے عربوں نے ابرہہ کا مقابلہ عقل سے کیا اور اللہ نے مدد کی۔ یہ اللہ کی سنت ہے اور محمدؐ نے ہر موقعہ پر اللہ کی سنت کے مطابق انتظام کیا اور جنگ کی۔

اس سورت کا آغاز الم ترا سے ہوا ہے کیا تم نے نہیں دیکھا۔ گویا اس وقت اس واقعہ کے چشم دید گواہ موجود تھے محمدؐ سے اس لفظ کو اس لئے منسوب نہیں کیا جا سکتا کہ محمدؐ کی پیدائش اس واقعہ کے بعد کی ہے محمدؐ اس وقت موجود نہ تھے۔ جو موجود تھا اس کو خبر دی جا رہی ہے محمدؐ کے ذریعہ اور بہت آدمیوں نے اپنے شعروں میں اس واقعہ کا ذکر کیا ہے۔ اور حاصب ہوا کا ذکر بھی کثرت سے کیا ہے۔ اس لئے عربوں کے پتھروں کے ساتھ ساتھ اللہ نے ان پر وہ طوفانی ہوا چلا دی جس کو حاصب کہتے ہیں جس میں سنگ ریزے بھی ہوتے ہیں جو تباہی مچا دیتے ہیں جو جنگ خندق میں ہوا۔

مشہور شاعر ابو قیس نے ذکر کیا ہے اور ابو ہشام وغیرہ نے اپنی کتابوں میں ان شہادتوں کو نقل کیا ہے اور مولانا فراہی صاحب نے بھی اپنی تفسیر میں تفصیل کے ساتھ بحث کی ہے۔ شاعر ابو قیس کا شعر

فَاَرسَلَ مِنْ رَبِّهِمْ حَاصِبٌ ☆ يَلُفُّهُمْ مِثْلَ كَفِّ الْقَزَمْ

फिर ईश्वर की ओर से उन पर हासिब (पत्थर के कण बरसाने वाली आंधी) चली जो तिनकों की भांति उनको लपेट लेती

इसी प्रकार सेफ़ी बिन आमिर ने भी साफ और हासिब का उल्लेख किया है

फ़लम्मा अजाजु बतना नुमाना रद्दाहुम
जुनुदुल इलाही बैना साफ़िन व हासिब

ज्यूंही वह बतन नुमान से आगे बढ़े ईश्वर की सैनाओं ने साफ और हासिब के मध्य प्रकट होकर उनको परास्त कर दिया,

इन सब बातों को देखते हुए मानना पड़ेगा कि अबरहा का मुकाबिला अरबों ने किया ईश्वर ने सहायता की, पक्षियों ने अपने पत्थरों से उनको नही मारा वह पक्षी तो उनका मांस खाने आए थे और इस सूरत के प्रेषण के समय बहुत व्यक्ति ऐसे उपस्थित थे जिन्होंने उस युद्ध में भाग लिया और वह पत्थर फैंक रहे थे (अलम तरा तरमीहिम)

इस घटना को ईश्वर ने मक्का वालों से और सारे संसार के लोगों से इसलिए बताया है कि ऐ इन्सानों तुम मेरी आज्ञाकारी करो और मैं तुम्हारी सहायता करूंगा तुम को प्रभुत्वशाली रखूंगा यदि तुम अपनी सहायता आप करोगे, और यदि अवज्ञा करोगे तो जान लो जैसा अबरहा या और अवज्ञाकारों के साथ हुआ है वह सब अवज्ञाकारों के साथ होगा चाहे वह अपने को किसी भी नबी के अनुयायियों में बताते हों पक्षियों के बारे में अवलोकन हो,

(1) अकरमा से तैरन अबाबील के बारे में रवायत है कि यह चिड़ियां सियाही माइल खाकी रंग की थी समुद्र की दिशा से आई थी उनके सिर शिकारी चिड़ियों के सिर की भांति थे,

(2) मुहम्मद बिन सीरीन से रवायत है कि इब्न अब्बास ने तैरन अबाबील के विषय में कहा कि इससे अर्थ चिड़िया है उनके चिड़ियों की भांति सूंड़ और कुत्ते के समान चंगुल थे,

(3) सईद बिन जुबैर ने तैरन अबाबील के विषय में कहा यह चिड़िया सियाही माइल खाकी रंग की थी और पीली चोंचों से उनका मांस खाती थी वह घोड़ी, शिकारी उकाब की भांति है जिसकी चोंच करछे के समान है,

(तफ़सीर इब्ने जरीर)
{तफ़सीर निज़ामुल कुरआन पन्ना 390,392}

सूरत कुरैश – मक्की (106)

(ख़ाना काबा के प्रबन्धक होने के कारण) कुरैश हर दिशा से निर्भय यात्रा से इष्ट (परिचित) हो गए (1) अर्थात जाड़े और गर्मी की यात्रा से परिचित हो गए (2)

(वह ईश्वर का उन पर उपकार है) अतः उनको चाहिए कि इस घर के ईश्वर की पूजा करे आज्ञाकारी करें (3)

जिसने उन्हें भूक के समय खाने को दिया और (यात्रा के) भय से बचाकर शान्ति प्रदान की (4)
{14:35,37; 2:155;28:57;29:67}

नोट– अरब के अन्दर व्यापारिक दल सुरक्षित नही रहते थे अधिकांश

پھر اللہ کی طرف سے ان پر حاصب (سنگ ریزے برسانے والی آندھی) چلی جو خس وخاشاک کی طرح ان کو لپیٹ لیتی۔

اسی طرح صیفی بن عامر نے بھی ساف اور حاصب کا ذکر کیا ہے۔

فَلَمَّا اَجَا زُوْابَطْنَ نُعْمَانَ رَدّ ھُمْ
جُنُوْدُالْاِلٰہِ بَیْنَ سَافٍ وحَاصِبٍ

جونہی وہ بطن نعمان سے آگے بڑھے اللہ کی فوجوں نے ساف اور حاصب کے درمیان نمودار ہو کر ان کو پسپا کر دیا۔

ان سب باتوں کو دیکھتے ہوئے ماننا پڑے گا کہ ابرہہ کا مقابلہ عربوں نے کیا۔ اللہ نے ان کی مدد کی۔ پرندوں نے اپنے پتھروں سے ان کو نہیں مارا وہ پرندے تو ان کا گوشت کھانے آئے تھے اور اس سورت کے نازل ہوتے وقت بہت آدمی ایسے موجود تھے جنہوں نے اُس جنگ میں حصہ لیا اور وہ پتھر پھینک رہے تھے جو سورت کے لفظ بتا رہے ہیں (الم ترا۔ ترمیھم)۔

اس واقعہ کو اللہ نے مکہ والوں سے اور سارے جہاں کے لوگوں سے اس لئے بتایا ہے کہ اے انسانوں تم میری فرمانبرداری کرو اور میں تمہاری مدد کروں گا تم کو غالب رکھوں گا اگر تم اپنی مدد آپ کرو گے اور اگر نافرمانی کرو گے تو جان لو جیسا ابرہہ یا اور نافرمانوں کے ساتھ ہوا ہے وہ سب نافرمانوں کے ساتھ ہوگا چاہے وہ اپنے کو کسی بھی نبی کی امت میں بتاتے ہوں چڑیوں کے بارے میں اور ملاحظہ ہو۔

(۱) عکرمہ سے طیر اًابابیل کے بارے میں روایت ہے کہ یہ چڑیا سیاہی مائل خاکی رنگ کی تھیں سمندر کی سمت سے آتی تھیں ان کے سر شکاری چڑیوں کے سر کی طرح تھے

(۲) محمد بن سیرین سے روایت ہے کہ ابن عباس نے طیر اًابابیل کے بارے میں فرمایا کہ اس سے مراد چڑیاں ہیں ان کے چڑیوں کی طرح کے سونڈ اور کتے کے پنجوں کے مانند چنگل تھے

سعید بن جبیر نے طیر اًابابیل کے بارہ میں فرمایا۔ یہ چڑیاں سیاہی مائل خاکی رنگ کی تھیں اور زرد گوں چونچوں سے ان کا گوشت کھاتی تھیں۔

[کانھا لقوۃ حلسلوب کان خرطو مھا منشال]

وہ (گھوڑی) شکاری عقاب کی طرح ہے جس کی چونچ کرچھے کی مانند ہے

(تفسیر ابن جریر، تفسیر نظام القرآن۔ ص۔ ۳۹۲،۳۹۰)

سورت قریش۔مکی (۱۰۶)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

(خانہ کعبہ کے متولی ہونے کی وجہ سے) قریش ہر طرف سے بےخوف وخطر سفر سے مانوس ہو گئے (۱)

یعنی جاڑے اور گرمی کے سفر سے مانوس ہو گئے (۲)

(یہ اللہ کا ان پر احسان ہے) لہٰذا ان کو چاہیے کہ اس گھر کے رب کی عبادت کریں (۳) [فرمانبرداری کریں]

جس نے انہیں بھوک کے وقت کھانے کو دیا اور (سفر کے) خوف سے بچا کر امن عطا کیا (۴) [۱۴:۳۵،۳۷؛ ۲:۱۵۵؛ ۲۸:۵۷؛ ۲۹:۶۷]

نوٹ:۔ عرب کے اندر تجارتی قافلے محفوظ نہیں رہتے تھے زیادہ تر تجارتی قافلے

व्यापारिक दल सम्मानित महीनों में चलते थे या शक्तिशाली दल ही सुरक्षित रहता था, दूसरी स्थिति में दलों के लुट जाने का भय रहता था अतः व्यापारिक यात्रा निश्चित समय पर ही होती थी इस कारण लोगों को व्याकुलता रहती थी.

चूंकि कुरैश काबा के प्रबन्धक थे इस कारण से अरब उनका सम्मान करते थे अतः वह हर ऋतु में व्यापारिक यात्रा कर सकते थे उनको कोई भय नहीं था इस कारण उनको भोजन सुख सामग्री के विषय में कोई भय न था न अधिक कष्ट होता था.

इसके अतिरिक्त इब्राहीम की प्रार्थना का भी प्रभाव था जिसको ईश्वर ने कुरआन में और स्थान भी याद दिलाया है इन बातों को याद दिलाकर ईश्वर कुरैश को बता रहा है कि ऐ कुरैश तुम पर मेरे यह उपकार हैं इस काबे के कारण से हैं और उसका मैं रब हूं और मैंने ही मुहम्मद स० को प्रेषित किया है अतः मेरे इस उपकार के बदले में मेरे ईशदूत का विरोध न करो याद करो अपनी स्थिति और दूसरे अरब परिवारों की स्थिति में क्या अन्तर है?

तुम्हारे सामने पास से दूसरे व्यक्ति लूट लिए जाते हैं, उठा लिया जाता है और तुम सुरक्षित रहते हो तुम को सारा सम्मान धन इस काबे से मिला है अतः तुम भी इस उपकार को याद करो.

सूरतुल माऊन - मक्की (107)

तुम ने उस व्यक्ति के हाल पर नजर की जो बदले (क्यामत के दिन) को झुठलाता है (1) {92:5,10}

और (परलोक के कष्ट का डर नहीं) अतः वह अनाथ को धक्के देता है (2)

(और न स्वयं खिलाता है और न दूसरों को) प्रेरणा देता है कि निर्धन को भोजन खिलाए (3)

तो ऐसे नमाजियों का विनाश है (4){14:37,8:35}

जो अपने कर्तव्य सलात (उत्तरदायित्व) से अचेत होते हैं (5)

और जो पाखण्ड करते हैं (6)

(और ऐसे स्वार्थी हैं कि) प्रतिदिन में प्रयोग की वस्तुओं को भी (निर्धनों को) देने से मना करते हैं (7)

सूरतुल कौसर - मक्की (108)

(कौसर) मक्के में इतना व्याकुल किया गया कि यह आभास होने लगा था कि आपको अपना देश तक भी छोड़ना पड़ेगा तो ठीक उस कठिनाई के समय में आपसे कहा गया (30:1से6) कि आप संतोष रखें, ईश्वर की व्यवस्था के निर्माण का आरम्भिक दौर (युग) शीघ्र समाप्त होने वाला है इसके बाद इसके परिणाम संपादित होने आरम्भ हो जाएंगे और आपको जीवन की खुश गवारियां बड़ी अधिकता से मिलेंगी और दे भी दी हैं अर्थात अधिक पुण्य कुरआन और काबा और स्वर्ग के प्रसाद प्रदान किए (1) {2:269;3:96;17:36;3:58,36:2; 30:1से6;7:86,188;11:34;6:126;3:13;57:20;83:26}

और यह कब मिलेगी तो सुनो और इस प्रोग्राम से

حرام مہینوں میں چلتے تھے یا طاقت ورقافلہ ہی محفوظ رہتا تھا. دوسری حالت میں قافلوں کے لٹ جانے کا خطرہ رہتا تھا اس لئے تجارتی سفر وقت مقررہ پر ہی ہوتے تھے اس وجہ سے لوگوں کو پریشانی رہتی تھی.

چونکہ قریش کعبہ کے متولی تھے اس وجہ سے دنیائے عرب ان کی عزت کرتے تھے اس لئے وہ ہر موسم میں سفر تجارت کر سکتے تھے ان کو کوئی خوف نہیں تھا اس وجہ سے ان کو کھانے کے معاملہ میں کوئی خوف نہ تھا نہ زیادہ دقت ہوتی تھی.

علاوہ ازیں ابراہیم کی دعا کا بھی اثر تھا جس کو اللہ نے قرآن میں اور جگہ بھی یاد دلایا ہے ان باتوں کو یاد دلا کر اللہ قریش کو بتا رہا ہے کہ اے قریش تم پر میرے یہ احسان ہیں اس کعبہ کی وجہ سے ہیں اور اس کا میں رب ہوں. اور میں نے ہی محمدؐ کو معبوث کیا ہے اس لئے میرے اس احسان کے بدلے میں میرے نبی کی مخالفت نہ کرو یاد کرو اپنی حالت اور دوسرے عرب قبائل کی حالت میں کیا فرق ہے؟ تمہارے سامنے تمہارے پاس سے دوسرے آدمی لوٹ لئے جاتے ہیں اٹھا لیا جاتا ہے اور تم محفوظ رہتے ہو تم کو ساری عزت دولت اس کعبہ سے ملی ہے اس لئے تم بھی اس احسان کو یاد کرو.

سورت الماعون۔مکی (۱۰۷)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

تم نے اس شخص کے حال پر نظر کی جو جزا (قیامت کے دن) کو جھٹلاتا ہے (۱) [۹۲:۵، ۱۰]

اور (آخرت کے عذاب کا ڈر نہیں) اس لئے وہ یتیم کو دھکے دیتا ہے (۲)

اور (نہ خود کھلاتا ہے اور نہ دوسروں کو) ترغیب دیتا ہے کہ مسکین کو کھانا کھلائیں (۳)

تو ایسے نمازیوں کی تباہی ہے (۴) [۱۴:۳۷؛ ۸:۳۵]

جو اپنے فرائض صلاۃ (ذمہ داریوں) سے غفلت برتتے ہیں (۵)

اور جو ریاکاری کرتے ہیں (۶)

(اور ایسے خودغرض ہیں کہ) روزمرہ کے استعمال کی چیزوں کو بھی (غریبوں کو) دینے سے انکار کرتے ہیں (۷)

سورت الکوثر۔مکی (۱۰۸)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

(کوثر) مکہ میں اتنا پریشان کیا گیا کہ یہ نظر آنے لگا تھا کہ آپ کو اپنا وطن تک بھی چھوڑنا پڑے گا تو عین اس عسرت کے زمانے میں آپ سے کہا گیا (۳۰:۱ سے ۶) کہ آپ اطمینان رکھیں، نظام اللہ کی تشکیل کا ابتدائی دور عنقریب ختم ہوا چاہتا ہے اس کے بعد اس کے نتائج مرتب ہونے شروع ہو جائیں گے اور آپ کو زندگی کی خوش گواریاں بڑی افراط سے ملیں گی اور دے بھی دی ہیں یعنی خیر کثیر قرآن اور کعبہ اور جنت کی نعمتیں عطا کیں (۱) [۲:۲۶۹؛ ۳:۹۶؛ ۱۷:۳۶؛ ۳:۵۸؛ ۳۰:۱ سے ۶؛ ۷:۸۶، ۱۸۸؛ ۱۱:۳۴؛ ۶:۱۲۶؛ ۳:۱۳؛ ۵۷:۲۰؛ ۸۳:۲۶؛ ۳۶:۲]

اور یہ کب ملیں گی تو سنو! اور اس پروگرام کے متعلق تمام

सम्बन्धित सम्पूर्ण अमूर पर ज्ञान व बुद्धि और अनुभव व अर्न्तदृष्टि से पूरी तरह प्रभुत्वशाली होकर उन पर अत्यंत मजबूती से कार्यरत रहो पस आप अपने रब के लिए सलात स्थापित करो और अपने कर्तव्य प्रचार धर्म करने में सीना तानकर अर्थात साहस से काम लो किसी से न डरो (2)

امور پر علم وعقل اور تجربہ وبصیرت سے پوری طرح حاوی ہوکر ان پر نہایت مضبوطی سے عمل پیرا رہو پس آپ اپنے رب کے لئے صلوٰۃ قائم کرو اور اپنا فرض تبلیغ دین کرنے میں سینہ تان کر یعنی ہمت سے کام لو کسی سے نہ ڈرو (۲)

निःसन्देह आपके शत्रु ही जड़ कटे हैं उनका नाम ही मिट जाएगा (3) {14:24,25}

یقیناً آپ کے دشمن ہی جڑ کٹے ہیں ان کا نام ونشان ہی مٹ جائے گا (۳) [۱۴:۲۴:۲۵]

समीक्षा- सूरत रूम में जो बताया गया है और एक शुभ सूचना दी गई है उसके बारे में इस सूरत में दिलासा दिया गया है इस उद्देश्य को पाने के लिए कार्य करने का ढंग बताया गया है.

نوٹ :۔ سورت روم میں جو بتایا گیا ہے اور ایک خوشخبری دی گئی ہے اس کے بارے میں ہی اس سورت میں دلاسہ دیا گیا ہے اس مقصد کو پانے کے لئے کام کرنے کا طریقہ بتایا گیا۔

सूरतुल काफिरून - मक्की (109)

سورت الکفرون ۔مکی (۱۰۹)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

(ऐ रसूल!) उनसे कह दो ऐ अवज्ञाकारो नास्तिको(1)
जिन मूर्तियों को तुम पूजते हो मैंने उनको कभी नही पूजा (2)
और जिस ईश्वर की मैं पूजा करता हूं उसकी पूजा तुम नही करते दोनों के मार्ग अलग अलग है (3)
और (मैं फिर कहता हूं कि) मैं उन मूर्तियों की पूजा करने वाला नही हूं जिनकी तुम पूजा करते हो (4)
(और अब अन्तिम बात सुनलो कि) यदि तुमने उस ईश्वर की पूजा न की जिसकी मैं पूजा करता हूं तो हानि में रहोगे (5)
(इतने पर भी यदि तुम नही मानते तो समय अपना निर्णय कर देगा कि कौन सत्य पर है झगड़ा किस बात का) मेरा धर्म मेरे लिए और तुम्हारा पंथ तुम्हारे लिए (6) {60:4;68:9}

(اے رسول!) ان سے کہو اے نافرمانو! کافرو (۱)
جن بتوں کو تم پوجتے ہو میں نے ان کو کبھی نہیں پوجا (۲)
اور جس اللہ کی میں عبادت کرتا ہوں اس کی عبادت تم نہیں کرتے دونوں کے راستے الگ الگ ہیں (۳)
اور (میں پھر کہتا ہوں کہ) میں ان بتوں کی عبادت کرنے والا نہیں ہوں جن کی تم پوجا کرتے ہو (۴)
(اور اب آخری بات سن لو کہ) اگر تم نے اس اللہ کی بندگی نہ کی جس کی میں عبادت کرتا ہوں تو نقصان میں رہو گے (۵)
(اتنے پر بھی اگر تم نہیں مانتے تو وقت اپنا فیصلہ کردے گا کہ کون حق پر ہے جھگڑا کس بات کا) میرا دین میرے لئے اور تمہارا دین تمہارے لئے (۶) [۶۰:۴:۶۸:۹]

सूरत नसर - मदनी (110)

سورت النصر ۔مدنی (۱۱۰)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

जब (तुम्हारे कुरआनी कर्मों के परिणाम में) ईश्वर की सहायता आ जाए और मंगल के द्वार खुल जाऐं और निर्णय आ जाए (1) {12:110,6:33; 61:13;57:10}
तो (ऐ रसूल!) आप देखेंगे कि लोग ईश्वर के धर्म में सैना की सैना प्रविष्ट होंगे (2)
आप अपने ईश्वर की प्रशंसा के साथ अपना कर्तव्य पूर्ण करते रहें और उससे अपने कर्मों के द्वारा बचाओ मांगते रहें निःसन्देह वह पश्चाताप स्वीकार करने वाला है (3) {48:1,4;108:1,3}

جب (تمہارے قرآنی اعمال کے نتیجہ میں) اللہ کی مدد آجائے اور خیر کے دروازے کھل جائیں اور فیصلہ آجائے (۱) [۱۲:۱۱۰:۶:۳۳:۶۱:۱۳:۵۷:۱۰]
تو (اے رسول!) آپ دیکھیں گے کہ لوگ اللہ کے دین میں فوج درفوج داخل ہوں گے (۲)
آپ اپنے رب کی حمد کے ساتھ اپنا فرض منصبی ادا کرتے رہیں اور اس سے عملاً بچاؤ طلب کرتے رہیں بلاشبہ وہ توبہ قبول کرنے والا ہے (۳) [۴۸:۱:۴:۱۰۸:۱:۳]

सूरतुललहब - मक्की (111)

سورت الہب ۔مکی (۱۱۱)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

टूट गई अबु लहब की शक्ति इस कारण से कि उसका दल बरबाद हो गया (अर्थात अबुलहब व्यर्थ के विनाश की सूचना है) वह अवश्य बध होगा सत्य के मुकाबिले में और स्वयं असफल हो गया अर्थात ढेह गया (1) {38:11} (मक्का के विजय की मंगल सूचना)
उसका धन और जो कुछ उसने कमाया वह उसके काम न आएगा (2) {104:2:3;6:31;16:25}
अभी निःसन्देह वह भड़कती आग में प्रविष्ट होगा(3)

ٹوٹ گئی ابولہب کی طاقت اس وجہ سے کہ اس کی جماعت برباد ہوگئی (یعنی ابولہب باطل کی بربادی کی خبر ہے) وہ ضرور ہلاک ہوگا حق کے مقابلہ میں اور خود نامراد ہوگیا یعنی ڈھ گیا (۱) [۳۸:۱۱] (فتح مکہ کی خوشخبری)
اس کا مال اور جو کچھ اس نے کمایا وہ اس کے کام نہ آئے گا (۲) [۱۰۴:۲:۳:۶:۳۱:۱۶:۲۵]
ابھی وہ ضرور بھڑکتی آگ میں داخل ہوگا (۳)

और उसकी पत्नी और उसके साथी भी जोड़ी दार जो लगाई बुझाई करने वाले और अपने पापों के साथ दूसरों के पाप भी उठाने वाले (4) {64:14} (अर्थात हर पुरुष व स्त्री जो अवज्ञाकारी है उनके साथ ऐसा ही होगा)

اوراس کی جورو بھی اوراس کے ساتھی بھی جوڑی دار جو لگائی بجھائی کرنے والےاوراپنے گناہوں کے ساتھ دوسروں کے گناہ بھی اٹھانے والی (۴)[۶۴:۱۴] (یعنی نافرمان ہرآدمی وعورت کے ساتھ ایسا ہی ہوگا)

महाप्रलय में उसके और हर अवज्ञाकारी की गर्दन में मूंझ की रस्सी होगी अर्थात अपमान वाला पट्टा (5) {69:27,28; 92:1;96:7;108:3}

حشر میں اس کےاور ہرنافرمان کی گردن میں مونجھ کی رسی ہوگی یعنی ذلت والاطوق (۵)[۶۹:۲۷،۲۸؛۹۲:۱؛۹۶:۷؛۱۰۸:۳]

सूरत अखलास - मक्की (112)

سورۃالاخلاص۔مکی (۱۱۲)

بسم اللہ الرحمٰن

(ऐ मुहम्मद स0 जो लोग सैंकड़ों मूर्तियों को पूजते हैं उनसे) कहो कि वह ईश्वर एक है (1)

(اے محمدؐ! جولوگ سینکڑوں بتوں کو پوجتے ہیں ان سے) کہو کہ وہ اللہ ایک ہے(۱)

सत्य ईश्वर लालसा रहित (2)

معبودبرحق بےنیاز ہے(۲)

न किसी का पिता न किसी का पुत्र (3)

نہ کسی کاباپ نہ کسی کا بیٹا (۳)

और न कोई उसका समकक्ष है (4)

اورنہ کوئی اس کاہمسر ہے(۴)

सूरतुल फलक - मक्की (113)

سورۃالفلق۔مکی(۱۱۳)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

(ऐ रसूल अपनी रक्षा के लिए क्या विधि गृहण करनी है सुनो यह क्रान्ति जिस नए चरण में प्रविष्ट हो रही है अर्थात जिस चरण में अब विरोधी शक्तियों से संघर्ष होगा उसमें तुम्हें बहुत अधिक सतर्क रहने की आवश्यकता है इस प्रकार सतर्क रहने की जिस प्रकार एक नवजात शिशु को हर समय अपनी माता के साथ साथ रहने की आवश्यकता होती है अतः तुम अपने दल से कह दो) मैं अपने विकास देने वाले के उस पालन पोषण व्यवस्था की कोल रक्षा में शरण लेता हूं जिसका नियम सृजन विकास यह है कि ध्वंसात्मक और रचनात्मक शक्तियों के संघर्ष से एक नई वस्तु प्रकट होती है दाना फटता है तो उसमें कोंपल निकलती है प्रकट होती है (1) {6:96}

(اے رسول! اپنی حفاظت کے لئے کیا طریقہ اختیار کرنا ہے سنو یہ انقلاب جس نئے مرحلہ میں داخل ہورہا ہے یعنی جس مرحلہ میں اب مخالف قوتوں سے تصادم ہوگا اس میں تمہیں بہت زیادہ محتاط رہنے کی ضرورت ہےاس طرح محتاط رہنے کی جس طرح ایک نوزائیدہ بچے کو ہروقت اپنی ماں کے ساتھ ساتھ رہنے کی ضرورت ہوتی ہے لہٰذا تم اپنی جماعت سے کہدو کہ) میں اپنے نشوونما دینے والے کے اس نظام ربوبیت کے آغوش حفاظت میں پناہ لیتا ہوں جس کا قانون تخلیق وارتقاء یہ ہے کہ تخریبی اورتعمیری قوتوں کے تصادم سے ایک نئی چیز کی نمود ہوتی ہے دانہ پھٹتا ہے تو اس میں سے کونپل نکلتی ہے نمودار ہوتی ہے(۱)[۶:۹۶]

उसने विश्व में जो कुछ उत्पन्न किया है उसके नियुक्त किए हुए स्थिर अनुमानों के अनुसार व्यय में लाया जाए तो वह वस्तु ही मंगल है परन्तु यदि उसका प्रयोग अनुचित विधि से किया जाए तो उससे उपद्रव पैदा होता है अतः हमें इस प्रकार के उपद्रवसे सावधान रहने की बड़ी आवश्यकता है अर्थात इस सावधानी की कठोर आवश्यकता है कि विश्व की शक्तियों का प्रयोग वही के विरुद्ध विधि से न होने पाए यदि ठीक प्रयोग करेंगे तो उसकी दुष्टता से सुरक्षित रहेंगे (2)

اس نے کائنات میں جوکچھ پیدا کیا ہےاس کی متعین کردہ مستقل اقدار کے مطابق استعمال میں لایا جائے تو وہ چیز ہی خیر ہےلیکن اگر اس کا استعمال غلط طریق سے کیا جائے تو اس سے شر پیدا ہوتا ہے لہٰذا ہمیں اس طرح کے شر سے محتاط رہنے کی بڑی ضرورت ہے یعنی اس احتیاط کی سخت ضرورت ہے کہ کائناتی قوتوں کا استعمال وحی کے خلاف طریق سے نہ ہونے پائے اگر صحیح استعمال کریں گے تو اس کے شر سے محفوظ رہیں گے (۲)

तथा हमें उन वस्तुओं के प्रति भी विशेष सावधानी बरतने की आवश्यकता है जिनके न होने से विकास रुक जाता है अर्थात अधर्म का अन्धकार छा जाता है अतः उस अधर्म की रात्रि में जो आशंकाऐं आती है उनसे बचने के लिए कार्य करना है अर्थात ईश्वर के दिए हुए धर्म के अनुसार कर्म करके अधर्म के अन्धकार आने को रोकना है और अन्धकार के उपद्रव से ईश्वर की शरण में आना है (3)

نیز ہمیں ان چیزوں کے متعلق بھی خاص احتیاط برتنے کی ضرورت ہے جن کے نہ ہونے سے نشوونمارک جاتی ہے یعنی لادینی کی تاریکی چھاجاتی ہےاس لئے اس لادینی کی رات میں جوخطرات آتے ہیں ان سے بچنے کے لئے کام کرنا ہے یعنی اللہ کے دئے ہوئے دین کے مطابق عمل کرکے لادینی کے اندھیرا آنے کو روکنا ہےاوراس اندھیرے کے شر سے اللہ کی پناہ میں آنا ہے(۳)

इस व्यवस्था के विरोधी दल यह भी करेंगे कि षड्यंत्र का अभियान आरम्भ कर दें ताकि उसके मनोविज्ञानिक प्रभाव से हमारे पक्के संकल्पों में निर्बलता उत्पन्न हो जाए हमारे साहस निम्न हो जाएँ हमारे मनों में ऐसे भ्रम व शंका पैदा हो जाए जिससे हमारे दृढ़ विश्वास में कंपन पैदा हो जाए हमें ऐसे दलों और उनकी इस प्रकार की गतिविधियों से भी सावधान रहने की आवश्यकता होगी (4)

اس نظام کی مخالف جماعتیں یہ بھی کریں گی کہ سازشوں کی مہم شروع کردیں تاکہ اس کے نفسیاتی اثرات سے ہمارے پختہ ارادوں میں کمزوری پیدا ہوجائے۔ ہماری ہمتیں پست ہوجائیں ہمارے دلوں میں ایسے شکوک وشبہات پیدا ہوجائیں جس سے ہمارے یقین محکم میں لرزا پیدا ہوجائے ہمیں ایسی جماعتوں اوران کی اس قسم کی حرکات سے بھی محتاط رہنے کی ضرورت ہوگی (۴)

फिर ऐसे लोग भी होंगे जो हमारी सफलताओं से जल भुन जाऐंगे और हमसे ईर्ष्या करने लगें हमें उन ईर्ष्यालुओं से भी सावधान रहने की आवश्यकता है (5) {17:62,63}

यह हैं वह ध्वंसात्मक शक्तियां जिनसे हमें सावधान रहने की आवश्यकता होगी और इसका उपाय यह होगा कि हम अधिक से अधिक ईश्वर के विधान का अनुकरण करें और इस प्रकार उसकी रक्षा की गोद में आ जाऐं

कहो मैं शरण लेता हूं प्रकट करने वाले ईश्वर की (1)

हर उस वस्तु की दुष्टता से जो उसने उत्पन्न की (2)

और अधर्म के अन्धकार से जब वह छा जाए (3)

और षड्यंत्र करने वालों की विपत्ति से (4)

और द्वेष करने वाले के द्वेष से जब वह द्वेष करे (5)

सूरतुन्नास - मक्की (114)

(उस उद्देश्य के लिए जिसका उल्लेख गत सूरत में किया गया है) हमें उस ईश्वर के विधान से और अधिक निकट हो जाना चाहिए उसका पालन करना चाहिए जिसके पालन से (किसी मुख्य दल परिवार समुदाय या जाति की नही अपितु) पूरी की पूरी मानवता का विकास है वह लोगों का ईश्वर रब है (1) {1:1}

अर्थात उस ईश्वर के विधान से निकट जिसके अतिरिक्त किसी को अधिकार प्राप्त नहीं कि इन्सानों से अपना आज्ञापालन कराए सम्पूर्ण संसार में सत्ता उसी की है और उसी के विधान की पराधीनता इन्सान को अपनानी चाहिए वह मानव का स्वामी है (2)

और वही है जिसका सुरक्षा नियम सम्पूर्ण मानवता को शरण दे सकता है उसी से मानवता सब आशंकाओं से सुरक्षित रह सकती है वह मानवों का ईश्वर है (3)

उस ईश्वर के विधान का अधिक से अधिक पालन करके हमें सावधान रहना होगा उन लोगों के भ्रम डालने से जो दबे पांव आते हैं और चुपके ही चुपके कानों में कुछ फूंककर पिछले पांव उलट जाते हैं (4)

और इस प्रकार लोगों के हृदयों में वसवसे उत्पन्न करके दृढ़ संकल्प को निर्बल कर देते हैं (5)

यह कुछ जाने पहचाने लोगों की ओर से भी होता है अर्थात मानव और ऐसे लोगों की ओर से भी जो अपरिचित होते हैं अर्थात जिन्न, तथा ऐसी गुप्त शक्तियों के अनुचित प्रभाव से भी जो नजर नही आती (6)

इस नए पड़ाव में प्रविष्ट होते समय उन सम्पूर्ण ध्वंसात्मक शक्तियों की दुष्टता से सावधान रहना होगा यह सावधानी उसी दशा में हो सकती है कि हम अधिक से अधिक ईश्वर के नियमों का पालन करें

कह दो कि मैं लोगों के ईश्वर की शरण में आता हूं (1)

अर्थात लोगों के स्वामी की (2)

लोगों के पूज्य की (3)

शैतानी वसवसा भ्रम डालने वाले की बुराई से जो पीछे हट जाते हैं (4) {17:65;58:16;8:48}

जो लोगों के वक्षों में वसवसे शंकाऐं डालता है (5)

चाहे वह जिन्नों में से हो या इन्सानों में से (6)

پھر ایسے لوگ بھی ہوں گے جو ہماری کامیابیوں سے جل بھن جائیں اور ہم سے حسد کرنے لگیں ہمیں ان حاسدوں سے بھی محتاط رہنے کی ضرورت ہے (۵) [۱۷:۶۲،۶۳]

(یہ ہیں وہ تخریبی قوتیں جن سے ہمیں محتاط رہنے کی ضرورت ہوگی اور اس کی شکل یہ ہوگی کہ ہم زیادہ سے زیادہ قوانین الٰہی کی اطاعت کریں اور اس طرح اس کی حفاظت کی آغوش میں آجائیں۔

کہو میں پناہ مانگتا ہوں نمودار کرنے والے اللہ کی (۱)

ہر اس چیز کے شر سے جو اس نے پیدا کی (۲)

اور لادینی کے اندھیرے سے جب وہ چھا جائے (۳)

اور سازش کرنے والوں کی آفت سے (۴)

اور حسد کرنے والے کے حسد سے جب وہ حسد کرے (۵)

سورت الناس۔مکی (۱۱۴)

بسم اللہ الرحمٰن الرحیم

(اس مقصد کے لئے جس کا ذکر سابقہ سورہ میں کیا گیا ہے) ہمیں اس اللہ کے قانون سے اور زیادہ قریب ہو جانا چاہیے اس کی پابندی کرنی چاہیے جس کی پابندی (کسی خاص گروہ قبیلہ جماعت یا قوم کو نہیں بلکہ) پوری کی پوری انسانیت کی نشوونما ہے وہ رب الناس ہے (۱)

یعنی اس اللہ کے قانون سے قریب تر جس کے سوا کسی کو حق حاصل نہیں کہ انسانوں سے اپنی اطاعت کرائے ساری کائنات میں اقتدار اسی کا ہے اور اسی کے قوانین کی محکومیت انسان کو اختیار کرنی چاہیے وہ ملک الناس ہے (۲)

اور وہی ہے جس کا قانون حفاظت تمام نوع انسان کو پناہ دے سکتا ہے اسی سے انسانیت تمام خطرات سے محفوظ رہ سکتی ہے وہ الٰہ الناس ہے (۳)

اس اللہ کے قوانین کے ساتھ زیادہ سے زیادہ متمسک رہ کر ہمیں محتاط رہنا ہوگا ان لوگوں کی وسوسہ انگیزیوں سے جو دبے پاؤں آتے ہیں اور چپکے ہی چپکے کانوں میں کچھ پھونک کر پچھلے پاؤں الٹ جاتے ہیں (۴)

اور اس طرح لوگوں کے دلوں میں وساوس پیدا کر کے ان کے عزم راسخ کو کمزور کر دیتے ہیں (۵)

یہ کچھ جانے پہچانے لوگوں کی طرف سے بھی ہوتا ہے یعنی انسان اور ایسے لوگوں کی طرف سے بھی جو اجنبی اور بیگانے ہوتے ہیں یعنی جن نیز ایسی مخفی قوتوں کے غلط اثرات سے بھی جو نظر نہیں آتیں (۶)

[اس نئی منزل میں داخل ہوتے وقت ان تمام تخریبی قوتوں کی شرانگیزیوں سے محتاط رہنا ہوگا یہ احتیاط اسی صورت میں ہو سکتی ہے کہ ہم زیادہ سے زیادہ قوانین الٰہی کی اطاعت کریں]

کہہ دو کہ میں لوگوں کے رب کی پناہ میں آتا ہوں (۱)

یعنی لوگوں کے مالک کی (۲) لوگوں کے معبود کی (۳)

(شیطان وسوسہ ڈالنے والے کی برائی سے جو پیچھے ہٹ جاتے ہیں (۴)

[۱۷:۶۵؛۵۸:۱۶؛۸:۴۸]

جو لوگوں کے سینوں میں وسوسے ڈالتا ہے (۵)

خواہ وہ جنوں میں سے ہوں یا انسانوں میں سے (۶)

28 फरवरी, 2006 में { पूर्ण }

بتاریخ ۲۸ فروری ۲۰۰۶ء [تمت]

رَبِّی تَقَبَّلْ مِنِّی اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ